

विषुवकोष

(षष्ठ भाग)

) खडिक चातुरयिक इल् । खडिक

खाडिक (५
 सम्बन्धीय (स्त्री))
 खाडी (हिंदी)
 जमीनसे । २ परछरका कोई घंड । यह खाडी होता
 की खाडीखिरी रह ।
 है । ३ ५० पु०) खपडे कानेका एक टाट । इसमें पतली
 खाडू (हिन्दी)
 पतली ल स० पु०) खहरखापत्यम् खहर टक ।
 खाडूरीय प्रक पटयिके अपत्य ।
 । खहर गध (स० पु०) खानेकताया अपत्यम् खडो
 खाडोभते । खडोभताके अपत्य ।
 असा टय स० त्रि०) खटाना समूहः खाद्य खाद्या
 खाडिक (५) खटपारी, रानवारभट्ट ।
 । अस्त्यये (स्त्री) खण्डस्य भाव, खण्ड पथ । 'अन्व
 खाण्ड (संज्ञा) १ खण्डःका भाव, टुकडपन ।
 भाव च २) १ खण्डविकाय, खोनीकी खोज ।
 खण्डस्य विधि०) खाण्ड खण्डविकार वाणि, वा क ।
 खाण्डव (संज्ञा, खोनीका वंश टुपा । (पु०)
 १ खण्डविकारके (स्त्री) खाण्ड व्याप्तदाम्यया पति
 २ खाण्डव । अणम्, खाण्डवी पण । ३ कोई प्रसिद्ध वन
 हाया नगर्वां धनियु है कि इस वन में पूर्वकालको
 कासिकापुराणः वाट रहा । अन्तर्गतीय सुदर्शन
 प्रक पादि देखे ।

नामक किसी राजाने इन्द्रक-आदेशसे उस वनकी
 प्रावाद करके खाण्डवी नामकी कोर पुगी बसायी थी ।
 इसी खाण्डवीपुरीने गुणगरिमाने उस समयकी समय
 पुरियोंमें ब्रेष्टता पायी । खाण्डवी १०० योजन दीर्घ
 और ५० योजन विस्तार थी । दिन दिन सुदर्शनकी
 बड़ा भी बटने लगी । एक एक करके सब राजा हार
 कर उनके अधीन हो गये । सुदर्शनने देवताओं पर भी
 अपना अधिकार फैलाया और अधीन प्रजा पर कुछ कुछ
 पन्थाय प्राचरण भी बनाया था । छोटे दिनोंमें ही
 उनमें सब लोग बिगड़ पड़े । सुदर्शनने कायिराज
 विजयमें सन्धि स्थापन करके उनको अपना भन्धो बनाया
 था । काशीराजने सबकाय मिलने पर सुदर्शनके
 पणित करनेकी चेष्टा की । सुदर्शन यह गुप्त सवाद
 पाकर उनमें सहने लगे । इस लड़ाईमें सुदर्शनकी हार
 हुई । काशीराजने खाण्डवीपुरी लूट करके तोड़ फोड़
 डाली । फिर इन्द्रने आकर काशीराजसे कहा था कि
 उस स्थानमें पीछेकी एक वन रहा । उसमें देव और
 गन्धर्व सुग्ने विचरण करतें थे । सुदर्शनने उनके सुग्ने
 बाधा डाल खाण्डवीपुरी बनायी । उनकी दृष्ट्या ही
 किंकिर वह स्थान बन जाय तो पच्छा हो । चायी
 राज विजयने देवोंके प्रादेशमें वहाँ एक वनबाड़ी
 लगवा दी और प्रजाको प्रपने साथ राख्यमें ले गये ।
 इसी वनका नाम खाण्डव है । (अण्वान् ५० ५०)

जापरके अन्तमें अन्विते व्याघ्रणके अंशमें अर्जुनके पास जा कर खाण्डव वन जला देनेके लिये प्रन्ताव दिया। अश्विनी प्रार्थनासे मध्यम पाण्डवने उसमें सन्तति दी और श्रीकृष्णके सहारसे खाण्डव वन जलाना प्रारम्भ किया। देवराजने द्रुपदसे खाण्डवटाड़की बात सुन अर्जुनसे नडाई ठान दी। युधमें सेनापोंके साथ देवतापोंकी पराजय ज्योकार करना पडा। अर्जुनने विना किसी बाधासे खाण्डव दहन करके अपना अक्षय जीर्ति ल्यापन की। (वाल्मीकिपुराण १० पं०)

बहुत पुराने समयसे भारतवासी खाण्डव-वनको जानते हैं। यजुर्वेदके तैत्तिरीय गारण्यक (५। १। १) और पञ्चविंशब्राह्मणमें (२५। ३) उसका उल्लेख हुआ है। पाण्डवोंने धृतराष्ट्रसे पांच गांवोंमें यही खाण्डव-प्रस्य मिला था, अन्तकी उन्हींमें यहीं इन्द्रप्रस्य स्थापन किया। (भारत, आदिपर्व) इन्द्रप्रस्य देखो।

खाण्डवक (सं० त्रि०) खण्डु चातुर्यिक-वुण्। खण्ड-खण्डव्यय।

खाण्डवप्रस्य (सं० पु०) इन्द्रप्रस्य, मौजूदा दिल्लीका एक किलारा। (भारत १। ५१ पं०)

खाण्डवायन (सं० पु०) खाण्डवं तन्नामकं वनं त्रयनं आययः यस्य, बहुव्री०। खाण्डववनमें रहनेवाले ऋषि। (भारत १। १० पं०)

खाण्डविक (सं० पु०) खाण्डवं मोदकादिशिल्पमस्य खाण्डव-ठञ्। लड्डू बनानेवाला, हलवाई।

(भारत, पाद० १ पं०)

खाण्डवी (सं० स्त्री०) एक पुरी। इसे चन्द्रवंशीय ऋद्ध नराजने हिमालयके निकट बसाया था।

खाण्डव देखो।

खाण्डवीरणक (सं० त्रि०) खण्डवीरणेन निवृत्तम्, बुण्। खाण्डवीरणनिवृत्त।

खाण्डिक (सं० पु०) खण्डं मोदकादिकं शिल्पमस्य, ठञ्। १ हलवाई, कंठोई, मिठाई बनानेवाला। (स्त्री०)

खण्डिकानां समूहः, खण्डिक-पञ्। खण्डिकादिभ्यः। पा ३। ३। २ खण्डिक समूह।

खाण्डिकीय (सं० पु०) खाण्डिकेन प्रोक्तमधीयते, खण्डिक कृण्। विचित्रवर्तनु खण्डिकीखाण्डिक। पा ३। ३। २।

खण्डिकोक्त-शास्त्र पढ़नेवाले।

खाण्डिका (सं० पु०) १ विभिन्न शक्योंकोई राजा। इन्-खाण्डिका नाम सितध्वज रथा। खाण्डिका घड़े कर्म-तत्त्वज्ञ थे। (स्त्री०) खण्डिकस्य भावः कर्म या, खण्डिक-यत्। पञ्चपुरोहितारण्य। पा ३। ३। २। खण्डिकका भावः खण्डिकता, गुच्छा, नाराजगी। २ खण्डिकका कर्म। खाण्डिकि (सं० त्रि०) खण्डिक-१०। खण्डिकका मन्त्रि-दित (देशादि)।

खाण्डिकार (सं० त्रि०) खण्डिक-चातुर्यिक-व्य। खण्डिकि देखो।

खान् (सं० अष्ट०) खण्डक ग-समभ्रमें न जानेवाली सावाण।

खान (सं० स्त्री०) खण्ड भावे ल-। १ खनन, खोदाई। कर्मणि ल। २ पक्षरिणी, ताला- ३ कृण्, कृषां। ४ गतं, गड्ढा। (त्रि०) पू- ५- ६- ७- ८-

खान (त्रि० स्त्री०) १ मच्छवे-रा यज्ञ ग-नाथ बनाने-के लिये उखा जाता है। २ दुआ रखने-की जगह। ३ खाट, पांस। (त्रि०) ४ रिष्कत, मै-ना।

खानक (सं० स्त्री०) खान-शायं कन्। १ परिखा, खाईं। (पु०) २ अक्षय-शुक्ली, आसाम-तो, रूपया उधार लेनेवाला। ३ गत-शोय सेना विदार-ण करने-वाना, जो दुश्मनकी फौज-न टिकने दे।

खानभू (सं० स्त्री०) खण्डिता भूः। १ परि-खा, खाईं। २ प्रतिकूप, कूप-का गड्ढा।

खानमा (फा० पु०) १ त, अखीर। २ म-सुख, मौत। ३ सिरा।

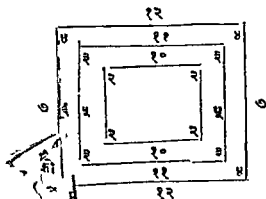
खातव्यवहार (सं० पु०) खातस्य पुष्करिण्याः व्यवहारः दैर्घ्यं विस्तारवेधादिभि-यत्ता निर्णयः ६-तत्। गणित-विशेष, एक हिमाव-इससे तालाब आदि-का क्षेत्रफल निकलता है। लौना-नौमें खातव्यवहारकी प्रणाली इस प्रकारसे-निखी है-

जिस गणितसे खातका परिमाण-राज-जाता, खातव्यवहार कह-जाता है। क्षेत्रकी त-के-नाथ भी चौकोना, त्रिकोना-धीर गोल कई प्रका-कीता है। परन्तु लौनावती-टीकाकार सुनी-रने इसे विशेष करके २ भागों-में बांटा है-विष-धीर सम। खातका ऊप-री भाग सुख-धीर नीचा हिस्सा तल (पेदा) कह-जाता है। जिस गड्ढेके मु-ंडकी लम्बाई

चौड़ाई पेंटेकी लम्बाई चौड़ाईसे मिलती, इसको जनता सम वा चमवार कहलाती है। फिर जिसका मुख तलके बराबर लम्बा चौड़ा नहीं रहता, उसको सब कोई विमखात कहता है। खातके गाम्भीर्यकी विध कहते हैं। जिस गड्ढेकी सब जगहकी लम्बाई, चौड़ाई और गहराई बराबर नहीं आते, उसकी सममिति निकाल कर प्रक्रिया की जाती है। खानाघरीमें सममिति करनेका उपाय दम प्रकारसे निखा है—

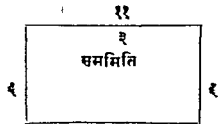
गड्ढेमें जो कई एक जगहें छोटी बड़ी नगें, उनको सूतसे नापके पलग पलग रखना चाहिये। फिर सबको मिलाकर स्थानसख्या पर्यात् नापी जानिवाली जगहोंके जोड़से भाग लगाते हैं। इसमें जो लम्ब आता, गड्ढेकी लम्बाईकी सममिति माना जाता है। इसी प्रकारसे चौड़ाई और गहराईकी असमानता होने पर उनकी भी सममिति बनानी पड़ती है।

उदाहरण—जिस गड्ढेकी लम्बाई तीनों जगहोंमें १२, ११ और १० हाथ, चौड़ाई ३ स्थानों ०, ६ और ५ हाथ और वेध ३ सुकामी पर ४, ३ तथा २ हाथ हैं, उसकी सममिति बनाइये।



प्रक्रिया—तीनों जगहोंकी लम्बाई १२, ११ और १० का जोड़ ३५ है। इसको स्थानसख्या ३से भाग करने से ११ २/३ मिलता है। इसका अंश ११ है। इसी प्रकार स्थानसख्याके विस्तार ७ ६ और ५का योगफल १८ है। इसको स्थानसख्या ३से बाँटने पर ६ लम्ब होगा। सुनरा गड्ढेके विस्तारकी सममिति ६ निकली। फिर तीनों स्थानोंके वेध ४, ३ और २का योगफल ९ होता है। इसकी ३

से भाग देने पर ३ ही लम्ब पायेगा। इसलिये गहराईकी सममिति ३ ठहरती है। सममिति करनेसे इस खातका आकार नीचे निखा जैसा होगा—



११

खातफल निर्णय करनेका उपाय—खातके क्षेत्रफलकी वेधसे गुण करने पर जो फल आता, खातका घनफल कहलाता है।

उदाहरण—दिखनाये हुए खातका फल स्थिर करो। प्रक्रिया—प्रदर्शित खातकी सममिति करने पर आमतौरके नियमानुसार क्षेत्रफल ६६ ठहरता है। इसके वेधकी सममिति ३से गुण करने पर १९८ निकलता है। इसलिये खातका फल १९८ घनहस्त है।

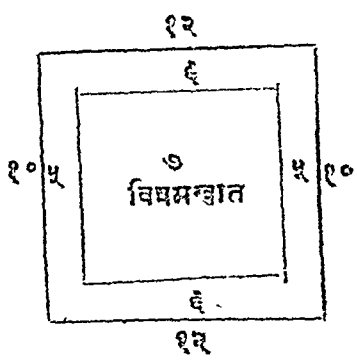
घनहस्त १९८

वियमखातके फलनिर्णय करनेका नियम—मुख-क्षेत्रफल, तलक्षेत्रफल और युजित क्षेत्रफल (सुइकी लम्बाई और पेंटेकी लम्बाईके जोड़को लम्बाई और सुइकी चौड़ाई तथा पेंटेकी चौड़ाईके जोड़का चौड़ाई मान करके हिसाब लगानेसे जो फल आता, युजित क्षेत्रफल कहलाता है।) तीनों क्षेत्रफलोंको जोड़नेसे जो पायेगा, उसे बह बाँट दिया जायेगा। इससे जो लम्ब निकलता, समक्षेत्रफल ठहरता है। फिर समक्षेत्रफलकी वेधसे गुण करने पर मिलनेवाला फल ही खातका घनफल होता है।

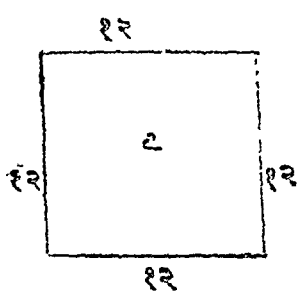
उदाहरण—जिस वियम खातके मुखका विस्तार १०, तथा टैर्च १२ और तलका विस्तार ५, टैर्च ६ और वेध ७ है—उसका घनफल ठीक करो।

प्रक्रिया—मुखका क्षेत्रफल १२०, तलका क्षेत्रफल ३०, मुखका टैर्च १२ और तलका टैर्च ६ तथा दोनोंका योगफल १८, मुखका विस्तार १० और तलका विस्तार ५ तथा दोनोंका योगफल १५ है। १८को दोनो योगफलोंको घटाकर टैर्च ३ और विस्तार ६ लगाकर

से युक्ति क्षेत्रफल २७० निकलता है। इनका योग फल (१२ + ३० + २७० = ४२०) ४२० है। इसको ६ से बांटनेसे सप्तक्षेत्रफल ७० आवेगा। इसको वेध ७से पूर्य करने पर ४९० फल मिला। इसलिये खातिका परिमाण ४९० बनचक्य होगा। बावड़ी, तानाव बादिका परिमाण प्रायशः इसीप्रकार निकालते हैं। क्योंकि उखका मुक्त और तल बराबर नहीं रहता।

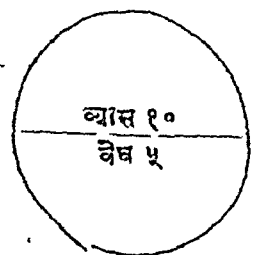


सत्सुख सप्तखातका उदाहरण—जो गज १२ हाथ लम्बा, १२ हाथ चौड़ा और ७ हाथ गहरा है—उसका क्षेत्रफल क्या आवेगा।



प्रक्रिया—क्षेत्रफल १४४को वेध ७ द्वारा गुण करनेसे फल २०१६ बनचक्य होगा।

उदाहरण का उदाहरण—जिस गोल गड्ढेका व्यास १० और गड्ढा ५ हाथ है, उसका फल स्थिर करो।



प्रक्रिया—उत्तरेकके नियमानुसार प्रक्रिया करने पर सूत्रपरिधि $\frac{22}{7} \times 10$ और सूत्र-क्षेत्रफल $\frac{22}{7} \times 10 \times 5$ पाता है।

इसको वेध ५से गुण करने पर क्षेत्रफल $\frac{22}{7} \times 10 \times 5$ होता है। जो गज आपने सुंछते घेरि घेरि घटकर एकवारगो ही गुम हो जाता, सूचीखात कहलाता है। इस गड्ढेको समखात माननेसे पानिपानि फलका अंग ही सूचीखातका फल समझना चाहिये।

उदाहरण—११ हाथ लम्बे, १२ हाथ चौड़े और ८ हाथ गहरे सूचीखातका फल कितना होगा ?

प्रक्रिया—इस समखातके फल १२८६को ३से भाग करने पर ४२२ फल मिलता है। इसलिये ४२२ ही उक्त सूचीखातका फल है।

जिस गोल तनावका व्यास १० और वेध ५ है, फल कितना निकलेगा ?

पहले दिखलाये हुए समस्त खातके क्षेत्रफल $\frac{22}{7} \times 10 \times 5$ का ३से भाग करने पर $\frac{22}{7} \times 10 \times 5$ उस गोलतनावका फल निकला। (लोगको-पाठपाठ)

खाता (हिं० पु०) १ बड़ी खता, जो २ डिमाज दितावकी बड़ी। इसमें १रेख समानो या कारबारीका डिमाज रोज रोज बोरिवार निया जाता है। २ दिमाज, मट।

खाति (सं० खी०) खुन भावे किन् प्राञ्च। खुनन, खोदाई, खोटेनका काम।

खातिक—दाण्डिणात्वकी एक जाति। बम्बई प्रदेशके विजयपुर शोलापुर जिल्लामें यह लोग रहते हैं। कहीं कहीं खातिक सूर्यवंशी नाड भी कहलाते हैं। सम्भवतः यह गुजरातके सूर्यवंशियोंकी त्वासा होगी।

यह लोग मराठी भाषामें बातचीत करते हैं। और महाराष्ट्रसे या कर इस जिल्लामें ही हैं। इनमें सूर्यवंशी नाड और सुलतानी नाम खोदियां होती हैं। इन दोनों विभिन्न विभागोंमें खानगीना या शादी विवाह नहीं चलता।

खातिकोंमें बिलगीकर, वुजरुनर, बंदूकाल, धर्म-कम्बला, गोविन्दकर, प्रभुकर, राजपुरी प्रभृति उपाधि होते हैं। वरकन्या दोनोंका एक ही उपाधि रहनेसे विवाह नहीं करते।

परन्तु कोइ कोई कर्पाटी या चिन्ही भी बोल सकता है। खातिक वकरी, भेड, भेंम चाटि जन्तु पालते हैं। पत्थर और मट्टीसे घर बनाये जाते हैं। सबको साफ सुथरा रहना अच्छा लगता है। मैला कपड़ा कोइ नहीं पहनता।

खेत बीतनेके लिये बिसान खातिक बेल और घोडे रखते हैं। रोटी, दाल, मात और तरकारी इनका प्रधान आहार है। सब लोग थोडा बहुत मांस मछली खा लेते हैं। इन्हें भेड, चिरन खरगोश, उखू, मुर्गी वगैरहका मांस खानेमें भी कोई आपत्ति नहीं। आग्नि मासकी 'कामी नवमी' (महानवमी) तिथि इस जातिके महापर्वका दिन है। उस भवसर पर कितने ही लोग भवानीदेवीको पूजाके लिये भेड बलि चटाते और बडे समादरसे प्रसादी मांस खाते हैं। आग्नि मासके नवरात्रको अर्थात् महानवमी महानवमी पर्यन्त बड़ी धूमधाम रहती है। शिवरात्र और प्रति एकादशीको यह अपनी दूजाने बन्द रखते हैं। भाद्र मासकी गणेश चतुर्थीको गणेशदेवकी प्रति मूर्ति बना कर पूजा जाती है। दुर्गा, धामा, मावती सिधराय चादि इनकी कुलदेवता हैं। हिन्दूयाज्ञोक्त पर्वके दिन यह भी उपासना चादि नियम पालन करते हैं। किसी देवताकी पूजा करनेसे पहले खातिक खान करके यह होजाते और जन चन्दन, पुष्प नारि बेल, पूगकल शर्करा, गुड, छांहारा, कपूर और धूपदीप लेकर पूजा चटाते हैं। उपर कछे हुए देव देवियोंको छोड यह सूर्यनारायणकी भी उपासना करते हैं। इनमें प्राय सभी मादरुसेवी (नद्यावाज) हैं। पूजा पार्षण चादिक समय हसीखिनके लिये श्राव, भांग, गाजा और अफीम न मिलनेसे भला किरकिरा पड जाता है। पुरुष मस्त्रक पर जोटे रखते हैं। स्त्रियोंको साल या काला कपडा और गहना पहनना अच्छा लगता है। सधवा स्त्रियां विवाहके पीछे शरावर 'मद्रलसूत्र' पहने रहती हैं।

इनको स्त्रिया प्रसवके मौखि १ पक्षसे १३ मास तक सोवसे नहीं निकलतीं। इस अवस्थामें प्रसूतिकी गर्भ रखनेके लिये चारपाईके नीचे पहले १५ दिन

बरोषीमें पाग रखाते और गुड, गिरी, सोंठ, पीपल गींद तथा छोहारा बुझनी करके मक्खनके साथ खिलाते हैं। घरकी बृद्धा स्त्रो ६० दिन पढीमाताकी पूज लेतीं और उसी रोज धावीकी विदा कर देती हैं। बहुतोंके घरमें छठीकी भाईवन्द और मातेदार रिश्टेदारी का भोज होता है। १३वें दिनको पुत्रका नामधरण किया जाता है और पहवानी स्त्रिया सुहमें पक्षधान्य रखके लडकेकी गोद खिलाते पट्ट चतो हैं। ३ मास या ६ मासको उन्ममें बच्चेका पूडाकरण होता है। विवाहका कोई समय बधानर्हा है। १ मासकी वानिकासे लेकर १८ वर्षको युवती तक ब्याहीजातो है। सब लोग वायुविणहकी अच्छे समझते हैं। कन्याको प्रथम ऋतुमती होने पर यह पशुचि नहीं मानते। पहले ५ दिनों चन्द्रकी घो कर कन्याके अच्छी तरह हलदी लगाते और ६ठे दिन नहलाते हैं। फिर शुभदिन देख कर उसे स्वामीका सहवास करनेकी प्राप्तादीजाती है। इनका विवाहकी बातचीत ठहरानेमें पहले कन्याकर्ताका मतामत लेना पडता है। उनके कन्याका विवाह करने पर खीछत होनेसे वरकर्ता कन्याकर्ताकी कुलदेवताके धामने २ नारियल तीन पाव गिरी और ५ सेर चीनी भेंट करके उपस्थित स्त्रजातीयोंको सम्बोधन करके इस प्रकार वाक्य दान करते हैं—मेरे पुत्रक साथ इनकी कन्याका विवाह होगा। फिर उपस्थित प्राति कुटुम्ब चादिकी शकर और पान देकर विदा करमा पडता है। शुभदिनको लग्न ठहराते हैं। इसी ^३च ^३च परकन्या दोगे एक दूमेरेक घर पात जाते रहते हैं। वरकर्ता को ४ सेर शकर, ४ सेर गिरी ३ पाव पोस्तदान, ३ पाव सुपारी, २०० पान, कन्याके लिये ४ 'भद्रियाय' चादीकी बानियां और हमेल और पहनेके कपडे देने पडते हैं। कहीं कहीं कन्याकर्ता अपनी लडकीको यहदेवताके सामने विठना उसकी गोदमें ५ सुपारी, ५ छोहर, गिरीके ५ कुडे, ५ बेल और ५ सेर चावन डालते और दामादको १ रुपया और एक पनडो देते और भाये हुए भोगी का पान और शकर चटते हैं। ज्योतिषी विवाहका शुभदिन ठहराता और कागजके

दो टुकड़ों पर वरकन्याका नाम लिख कर वरके नामका कागज परजती और कन्याके नाम का कागज कन्याकर्ताकी प्रकृष्टता है। यही दोनों कागज विदाह के समय तावीजमें रखके वर और कन्याके गलेमें बांध दिये जाते हैं। विदाहसे ४५ दिन पहले, एक और कुरख बनाने उसमें चांगे कीचनें पर चारही कलपात्र रखके सूते उसकी चांगे और नपेट डोने हैं। उसके शरीरमें इनदी लगा उग कुरख पाणीम ही उसका महत्वाया जाता है। इसी दिन वरकन्याके कन्याणकी पूजा होती है। विदाहके दिन कुरख खोद कर हर तथा कन्याका महत्वाते नये सफेद कपड़े पहनाते हैं। वर घोड़े पर चढ़के विदाह करने जाता है। वर सगणके नीचे पहुंचे कन्याके सामने टोकरी पर और कन्या वहीं पर खड़ी होती है। छनटा नगाके लान, कनिका कुरख, त्रिख सुलभे नपेटते, उमीकी कन्याके चांगे और वरके दाहने हाथमें बांध देते हैं। विदाहके समय वर और कन्याके बीचमें कपड़े का एक परदा लगा दिया जाता है। पुरोहित पुन पाठ शेष करके आये हुए लोगो के साथ नवदसतीको खान्य छोड़के आगेवाट देते हैं। दूसरे दिन कन्याको वर कन्या दोनों वैज पर चढ़के निकलते हैं। चलते समय राहमें आन्यदेवताको प्रणाम करना पड़ता है। वरके घर पहुंचने पर कन्याकी माता अपनी लहरी में लि कर समविन (वरकी माता) को सौंप जाती है। विदाहके पीछे तीसरे दिन कन्याके पिता काशिमोज करके और वरकी पितामाताको कपड़े और दिखावके लिये एक रुपया देते हैं। पूरे दिन वरकर्ताकी भी इसी प्रकारसे जातिभोज और सर्यादाने दूना रुपया देना पड़ता है।

इनमें बहुविदाहकी चाल तो है, किन्तु विधवा-विवाह नहीं होता। मराठोंके बीचमें रहनेवाले सभी खानिक शवद्राह करते, परन्तु विजयपुरके लोग सृत-देह गाड़ देते हैं। सुदंकी कन्नू दे करके शववाहक दूबकी हाथमें ली वरकी लौट आवे और सृत व्यक्तिके प्राणवायु निकलनेकी जगह उसकी छोड़ जाते हैं। तीसरे दिन मृतव्यक्तिके आत्मीय करके ऊपरी पत्थर पर

पातपत्रकुल, लुगा, छोडारा, गिरी, गुड, भाग और रोटी आकार रखते हैं। फिर लामने साथ पानेवाला छरे क मखम उस पर घोटा थोड़ा धूस छोड़ता है। यदि कीश गानर इन चीजोंको नहीं खाता, इन्हे ठठा कर भायकी खिलाया जाता है और लाम ले जानेवाले हाथे पर वी और दर्दी मन्ना करके गुह हीने है। इनमें ११ दिन पीछे मर्देकी रोष्य प्रतिमूर्ति बनानेकी चाल है। सूति बन जाने पर कपड़ोंमें सजाके पूज्यपाद पूवदरपोंकी प्रतिमूर्तियोंके साथ पूजाके घरमें ठठाकर रख दी जाती है। वैशान्व मासकी अश्वयुजायाको नदीके तीर पर कम्बत बिछा और उस पर इन सर्मा प्रतिमूर्तियोंकी रख कर धूस धड़किसे आह, पूजा और तपण आदि करते हैं। इस पिठकायमें जा जो व्यक्ति उपास्यत रहता, उसको निमन्त्रण करने खिन्ताना पड़ता है।

- खातिर (फ० स्त्री०) १ ससादर, समान, इज्जत, मनुहार। (अव्य०) २ अर्थ, निर्मित, कारण, भास्ते, लिये।
- खातिरखोद (फा०, अव्य०-क्रि० वि०) इच्छानुस्य, मर्जाके सुत्राफिल।
- खातिरजमा (फ० स्त्री०) विश्वास, समीप, तसही भरोसा।
- खातिरदार (फा० वि०) खातिर करनेवाला, जो खातिर करता हो।
- खातिरदारी (फा० स्त्री०) अनुहार, भावभंगन, खातिर करनेका काम।
- खातिरी, खातिर देकी :
- खातिरी (हिं० स्त्री०) नदी किनारेकी एक फसल। यह खादके जोरसे या सोंच सींच कर तैयार की जाती है।
- खाती (हिं० स्त्री०) १ खत्ती, गट्टा, खों। २ छुद्र पुष्प-रिणी, तलैया। ३ भूमिकी खनन करनेवाली कोई जाति। ४ रुढ़ई। (वि०) ५ खानेमें लगी हुई, जा खा, रही हो।
- खाती—एक हिन्दू जाति। यह लोग लकड़ीकी चीज बनाते हैं। युक्तप्रदेशमें इन्हें वढ़ई और दाक्षिणात्यमें सुतार कहा जाता है। खाती शब्द राजपूतानेमें व्यवहृत है। इनकी विशेषता, सिवाड़ी, पूर्विया, दिन्नीवाल, जांगड़ी और वढ़ई आदि उेषियां प्रधान हैं। फिर विशेष-

नरे १२०, मिवाडे ५६, पूर्विये ५५, दिक्षीवाज ५६, बट
 ८५८ और लांगडू १४४४ गावाओंमें विमल रूप है।

खाती खाता देवो।

खात्र (म० स्त्री०) खन दून क्रिय। करिउनिवां विम।
 ७५५११। १ खनिज, खना। २ खात, गड्डा। ३ वन
 लक्षण। ४ सूत्र, धागा। ५ लसाधारविशेष, पानी रखने
 का कोर पात्र।

खाद (म० पु०) खाद भाये घलू। मक्षण, खुआई।

खाद (हि० स्त्री०) प्राय, खेतो में डाला जानेवाला
 गोबर इत्यादि। चूना, खडिया खादि चीजे भी खाद का
 काम देती है। खाद डालनेसे खेतकी उपज बढ जाती
 है। खेतकी जरूरत धालके लिये पलग पनग खाद
 पडती है। गहरो की खु निमवालिठिया- पपना कूड़ा
 ककट इकड़ा कर खाद जैसा बरनती है।

खादक (म० त्रि०) खाद-खुलू। १ मखक, खानिवाला
 (मग ३५१) २ षण्यपहीता, कजे लेनेवाला।

खाती विमल खात मखक विमल वनि।
 मखक मखेदेवम् (मग)

यदि षण्य लेनेवाला निर्धन और देनेवाला धनवान्
 हो, तो उसे मून ही देना पडता है।

खादतमोदता (म० स्त्री०) खादत मोदत इत्युच्यते
 यस्यां क्रियायां मयूरव्य मखादित्वात् समाम। एक
 क्रिया, खाना उडाना। इसमें भोजन और हर्षयकाम
 करनेकी अनुमति रहती है।

खादतवमता (म० स्त्री०) खादत वमत इत्युच्यते यस्यां
 क्रियायां मयूरव्य मखादित्वात् समाम। एक क्रिया खाना
 उगजना। इसमें भोजन और वमतकी अनुमति होती है।

खादन (म० पु०) खादत्यनेन, खाद करके खुट्ट।
 १ दल, दांत। (क्रि०) भाये खुट्ट। २ खाहार, खाई।

खादनकोठक (म० स्त्री०) पागवादिहस्तोयत भोजन-
 पात्र, छोटे की टाका, घास खाने का टो डाय उ वा
 बतन।

खादनीय (म० त्रि०) खाद पनीय। भोजनीय, खाया
 जानेवाला।

खादर (हि० पु०) १ तपई, कहार, मोषे जमीन। इसमें
 बरमानका पानी बहुत दिन ठहरता है। खादर माय-

मदी, भील खादिये तोर पडता है। २ चरागाह, गोधर
 भूमि।

खादि (म० त्रि०) खाद कर्मणि दन्। १ मध्य, खाया
 जानेवाला। (पु०) २ पनद्वारविशेष, कोरि गडना।
 (मग १११११८) ३ वाणकता, दाता, बचानेवाला।
 (मग १११११८)

खादि (दि० स्त्री०) दीय, बुराई।

खादिन (म० त्रि०) खाद कर्मणि क्त। मक्षिण, खाया
 हुआ।

खादिन्य (म० त्रि०) खाद तथ्य। खादनीय, मध्य,
 खाने लायक।

खादिम (म० पु०) मखक, खिडमत करनेवाला। दर-
 गाह खौरकहा रखना भी खादिम कहनाता है।

खादिम इमेन खा—नवान गोरज उद-दीनाके समय
 परनियाके एक सुवेदार। इन्होंने मीरजाफरके विद्रोही
 होने पर परामर्शमें घुमने न दिया था। इससे मीरजा-
 फरके नवाब होने पर उनके पुत्र मीरन फोरके माय
 खादिमको धाकतप करने चले, यह हर कर भाग
 छोडे हुए। किन्तु पवानक डरेमें बिलनो गिरनेमें
 मीरन मर मिटे।

खादिर (म० त्रि०) खदिरस्य विकार, खदिर पलू।
 १ खदिर निर्मित, खैरका बना हुआ। २ खदिर। (पु०)
 खदिरस्य पचयय। ३ खदिरसार, कला। ४ खिद-
 खदिर, पापरी कला।

खादिरक (म० त्रि०) खदिर चातुर्यिक दुष्प्र। खदिर
 निष्क, लोभे पैटा होनेवाला।

खादिरवार (म० पु०) खदिर विचारि पच, तत-
 कर्मधी०। खदिरहचगिर्वांस, कला। इसका मूलत
 पर्याय—खादिर, पद्म, तपार, मत्तपार, इन्द्र पोर इन्द्र
 है। कला कड़वा, तीता, उष्ण, कषिकर, दीवम और
 कफ, धात, त्रय तथा कण्ठका रोग दूर करनेवाला है।
 (सर्वस्व)

खादिरायक (म० पु०) खदिरस्य गोवाद्रसम्, ख दर
 पल। खदिर नामक खदिये मर्म मखकपच करने-
 वाले।

खादिरिय (म० त्रि०) खादिरि टक। खदिरस्य
 मखक खादिरिये पचय।

खादिहय (सं० लि०) खादिरंजहारविशेषः जलो
यस्य, बहली० । कटकशुभ्र । (अ० ३४८२)

खादी (सं० लि०) खादति, खाट-गिनि । १ मत्तवा,
खानिवाला । (अ० ४०१) २ शत्रुओंकी टिंसा करने-
वाला, जो दुश्मानकी सारता हो । ३ कटकशुभ्र ।

खादी (हिं० स्त्री०) गली, एक प्रकारका मोटा देगी
पंपडा । आज काल खादीका सन्धान बहुत बढ़ गया
है । लोग विनायती मन्त्रमन्त्र और तनजिव छोड़ इसे
घड़ने लगे हैं । (वि०) २ खादि निकालनेवाला, जो
ऐस दूँढता है । ३ दूषित, ऐसी, खराब ।

खादुक (सं० लि०) खाद-उन् संज्ञायां कन् । हिंसालु,
खूँखार, सार-काट करना ही जिसकी आदतमें दाखिल
हो ।

खादीप्रणस् (वै० स्त्री०) खाद कर्मणि षसुन् खादः
खाद्यं ण्यो जलं यस्य, बहली० । नदी, दरया ।

(अ० ४४५२)

खाद्य (सं० लि०) खाद कर्मणि ष्यत् । १ भक्षण्योय,
खाया जाने वाला । (ली०) अष्टविध आहारोंमें अत्य-
न्तम आहार, खानेकी चीज ।

खाद्यपत्नी (सं० स्त्री०) खदिरवृक्ष, खैरका पेड़ ।

खाद्यु, खाद्युक—खाद्य देवी ।

खान्, खा देखो ।

खान (सं० स्त्री०) खे धातूनां पनेकार्यत्वात् भक्त्ये भावे
खान् । १ भोजन, खाना । २ खनन, खोदाई
हे हिंसल, सारवाट ।

खान (हिं० स्त्री०) १ आकर, खान, खदान । २ लोहहूजा
घर । इसमें सेलघन वगैरह डाल कर पेशा जाता है ।

खान—बंगालके वर्धमान जिलेका एक गांव । यह
अक्षा० २३° २०' उ० और देशा० ८७° ४६' पू०की
अवस्थित है । आबादी की० १६०० होगी । खाद्य प्रैष्ट-
व्यवस्थाके तत्वेका बड़ा महत्त्व है । यहां कार्ट लाइन
लेपे लाइनके आखारूपमें फूट चली है ।

खानक (सं० लि०) खन-खुल । खनक, खोदनेवाला ।
(अ०) २ सेवार, राज ।

खानकाह (सं० स्त्री०) मंड, सुसज्जमान फकीरोंके
रहनेकी जगह ।

खान्खाना—हिन्दीके एक सुखमय नाम । यह बेराम
खानके बेटे थे । २५५६ ई०की बनजा जय शूषा ।
यह बंदन अरबी, फारसी, तुर्की खादि भाषाओंके ही
विद्वान् थे, परन्तु मंगोल और ब्रजभाषा भी पढ़ें थे ।
अबदर वादशाह उन्हें बहुत चाहते थे । गिबसिंहने
लिखा है कि यह लोग भी मनाते थे । उनके कवित्व
और दोहे प्रशंसा योग्य हैं । नीतिके धर्मोंमें प्रथम
अच्छे दोहे कहे हैं । उनकी समासें मिथिलाके लक्ष्मी-
नारायण कवि उपस्थित रहते थे । इनका नाम पद्य, ल-
रहीम खान्खाना नवाब था ।

खान्खानान् (फा० पु०) १ सरदारोंका सरदार, उच्च-
पदाधिकारी । २ उपाधिविशेष, एक उपाधि । यह
सुसज्जमान सरदारोंकी लगनोंकी धमलदारोंमें मिलता
था ।

खानगाह डीगरां—१ पञ्जाब प्रान्तके गुजरान्वाला जिले-
की एक तहसील । यह अक्षा० ३१° २१' तथा ३१° ५८'
उ० और देशा० ७३° १४' एवं ७४° ५' पू०के बीच
पड़ती है । क्षेत्रफल ८७३ वर्गमील और लोकसंख्या
प्रायः २३०८४३ है । इस तहसीलकी जमीन अच्छी
और चिनासकी नहरसे सिंचली है ।

२ पञ्जाब प्रान्तोय गुजरान्वाला जिलेकी खानगाह
तहसीलका सदर । यह अक्षा० ३१° ४६' उ० और
देशा० ७३° ४१' पू०में पड़ता है । यहां प्रति वर्ष
जून मासकी सुसज्जमानोंके मेकरेका मेला लगता है ।
लोकसंख्या प्रायः ५३४६ है । इसमें कपास बीटनेका
एक कारखाना भी है ।

खानगी (फा० लि०) १ सपना, घर, दूसरेके सरोकार
में रखनेवाला । (स्त्री०) २ छोटी रस्ती ।

खानजादा (फा० पु०) १ धनवान्का पुत्र, समीरका
बडका । २ उच्च कुलका व्यक्ति ।

खानदान (फा० पु०) बंध, घराना ।

खानदानी (फा० लि०) १ छोटी, अच्छे घरानेवाला ।
२ पैटक, शुश्रूषा, सौरुषी ।

खान्देह—बम्बहे प्रान्तके मध्यस्थ विभागका एक जिला ।
यह अक्षा० २०° १६' तथा २२° २' उ० और देशा० ७३°
३५' एवं ७६° २४' पू०के बीच पड़ता है । इसका क्षेत्र-

फन १०४१ वर्गमील है। खानदेशके उत्तर सतपुरा पहाड़ और नर्मदा नदी, पूर्व की वरार और मध्यप्रदेशका नोमार जिला, दक्षिणकी सातमाला, चादौर या अजन्टा पहाड़, दक्षिण पश्चिम नासिक जिला और पश्चिमकी बड़ोदा राज्य तथा देवाकांडा एजन्सोकी छोटी रियासत सागवारा है। ताप्ती नदी इस जिलाके उत्तर पूर्व कोणमें जाके पश्चिमकी ओरकी बहती और इसके दो छोटे बड़े टुकड़े करती है। इनमें बड़ा टुकड़ा दक्षिणको पडता ओ गिरना, चोरी और पाभर नदियोंके पानीसे सिंचता है। यहा खान्देशका १५० मील लम्बा मैदान है। यह भीमारके किनारेसे नन्दुरवार तक चला गया और उपजाऊ भूमिसे भरा है। इस प्रान्तमें बड़े बड़े शहर और गांव बसे लिनमें आमके चारो ओर बागबगोचे लगे हैं। धौपशतुको छोड़ कर सभी समय में खेत विभिन्न फसको से लहराया करते हैं। उत्तरको सातपुरा पहाड़की तल जमीन् ज भी हो गयी है। बीचमें और पूर्वदिककी भूमि प्रायः समान है। उत्तर और पश्चिममें घना जङ्गल है। उसमें भीन लोग रहते, जो जङ्गली कन्दमूल फल खाकर जीवन निर्वाह और लकड़ी, काट कर धनोपाजन करते हैं। तामो खान्देशमें घूम घूम १८० मील तक बड़ी और १३ सहायक नदियों की धारा उसमें मिली है। परन्तु किसी नदीमें अहाजया नाव नहीं चल सकती और तामो इतनी गहरी बहती है कि खेत सि चनेको, पानी लेनेमें बड़ी श्रमपत्र पडती है। सुषाधनमें रक्षवेपुलके नीचे ऊपर दो भ्ररने हैं। वर्षा शतुमें तामोको भन्ना, नहीं सकती, सुषाधनके रक्षवेपुलसे चलते फिरते हैं। इस जिलेके उत्तर पश्चिम कोणमें ४५ भीन तक नर्मदा फेकी है। समयानुसूल नर्मदाकी राहसे नकडो सतुद्र किनारे पडु चायी जाती है। इस जिलेके नालो में भी, वारहो, मधीने पानी भरा रहता है। चार बड़े पहाडो के नाम—सातपुरा हत्ती, सातमाल, चादौर या अजन्टा और पश्चिमघाट। पूर्व गालना पर्वत खान्देशको नासिकसे अलग करता है। खान्देशका जङ्गल बहुत अच्छा है। इसमें कई प्रकारकी कीमती लकडी होती है।

बन्य पशु भी बहुत हैं। किन्तु शिकारकी भरमार

घोनेसे अब चाते चलने नहीं देख पडते। १७वें शताब्द तक इस जिलेके उत्तर पहाडी भूमिमें अङ्गरी चायी बचे देते रहे।

उंचाई भेदसे खान्देश जिलेका जलवायु विभिन्न पडता है। पश्चिमी पहाडों और जङ्गलोंमें और सत पुरामें पानी बहुत बरसता है, परन्तु बीचमें और दक्षिणको उसकी कमी रहती है। धुनिया नगरमें बौसतकी देखते २२ इंच ठण्डि होती है। नोगीका स्वास्थ्य शीत कालको सबसे अच्छा और धौपशतुको बुरा रहता है। वर्षाके पीछे भूमि सूखनेसे मलेरिया बढता है। पश्चिममें गर्मीकी छाड कर दूसरे मौसम पर भावहवा बहुत विगड जाता है।

खान्देशका पूर्व कालोन इतिहास ई०के १५० वर्ष पडलेसे १२८५ ई० तक लगा है। प्रथमोक्त समय यहुत पुराने शिलाफलकको पढके निकाला गया है, फिर १२८५ ई०की एकाएक सुसलमान बादशाह पला उट्-दीन् दिल्लीसे खान्देश पडुचे थे। महाभारतमें तृणमाल और पचीरगड नामक पावंत्य दुर्गों की बात लिखी है। तृणमालके राजा पाण्डनेसे लडु थे। असोरगड अश्वत्यामाका पूष्यपीठ जैसा माना जाता है। लोगोंने प्रवाद है कि ई०से बहुत पडले वर्षों अथवासे नये राजपूत राज्य करते थे। आर्युको उन्हीं राजपूतोंकी अश्वर मानते हैं। थोडे दिनके लिये पश्चिमके आर्यियों ने आर्युको देवादिया था। ई० पूर्व शताब्दको चातुक्वयम ने बक पकडा फिर स्थानीय राजाघो का राज्य चला। पला उट् दीनुके खान्देश पडु वते समय अचीरगडके चोहान राजा राजत्व करते थे।

१७६० ई०को मराठो के अचीरगड अधिकार करते समय यहा सुसलमानो अमनदारी रही। इसके बीचमें दिल्लीसे सुवेदार मुकरर होकर खान्देश शासन करते पाते थे। सुषयद बीन तुगलकके अघोन १३२३से १३४६ तक वरारके अलिचपुरसे इसका शासनकार्य चला। १३७०में १६०० ई० तक खडकी यशके परधान इस प्रान्तका प्रबन्ध किया। यह नाममात्र मुगलराजके लसुतानीकी वशता मानते थे, वरुत यह स्वाधीन रहे। १५८८ ई०को मुगल खान्देश पडुचे थे। इसी

वर्ष की अक्रवर्तन अपनी फौजके साथ खान्देश पर चढ़ाई की थी। उन्होंने असीरगढ, अधिदार किया और शासकता राजा बहादुर खाँकी गिरफ्तार करके खानियरके दरखानेमें भेज दिया। फिर खान्देश दिल्ली साम्राज्यमें मिलाया गया। १७वें शताब्दके अन्त्यभागकी इसकी बड़ी बढ़ती हुई। १६७० ई०से अठारठा आक्रमण प्रारम्भ हुए और सौ वर्षसे अधिदा समय तक इसकी भीनरो बाहरी सब प्रकारकी विपद् धोखेनो पड़ी। शिवजीके दूसरी बार मुरतकी तहस नहस करके चौथ मांगनेके लिये अपना एक अफसर खान्देश भेजा था। मराठोंने सालहेर किना जीत कर अपने कले गिया और खाड़ेराव दाभाडेने पश्चिमी घाटोंमें अड्डा जमा दिया। फिर इस जिलेमें कई बार कूटमार रहे। शिवजी, शम्भुजी और औरङ्गजेबने दारो वारी इसकी खूब नुटा खुसोटा था। १७२० ई०की निजाम-उल्-मुल्कने खान्देश अपने राज्यमें मिलाया था। परन्तु १७६० ई०की मराठोंने उनके लड़केको सहासे निकाल बाहर किया और पेशवाने इसका कुछ भाग होलकर और कुछ भाग संधियाकी दे दिया।

१८०२ ई०की होलकारकी सेनाने इसका तहस नहस किया था। दो सान तक जमीनकी कोई परवा व की गयी और बरवादीके लवसे कठोर दुर्भिक्षकी नीवत आ पड़ी। फिर दूसरे साल पेशवाकी बंद इस्त-लासीसे इनका दारिद्र्य और भी व गया। लोगोंने अपना अन्नमन्नीका काम काज छोड दल बांधा और चारो ओर घूम घूम कर खूब लूटा मारा था। १८१८ ई०की इसी हालतमें यह जिता अंगरेजोंके हाथ आया। बहुत सालों तक बलवाइ भील तहस करते रहे। १८२५ ई० की आउटरामने भीलोंकी फौज खड़ी करके यह छप छव मिटाया था। १८५२ ई०की फिर सख्त बलवा उठ खड़ा हुआ और १८५७ ई०की भागीली और काजरसिंह नायकके नेतृत्वमें भील लोग बिगड पडे। किन्तु यह उपद्रव दवानेमें कोई बडो तकलीफ नहीं हुई।

खान्देशमें पत्थरके मन्दिर, कुण्ड और झूएँ बहुत हैं। इनमें अधिकांश सन्धवनः १२वें या २३वें शताब्द-

के बने हैं। यह सब इसारते पहाड़ोंकी काट काट कर बनायी गयी हैं। कुछ खानोंके पत्थर इतने बड़े हैं, कि लोग देवताओंके हाथका बना समझते हैं। सिवा इसके खान्देशमें कुछ सुसज्जानी इसारते भी हैं, जिनमें सबसे बड़ी एरन्डोजकी मसजिद है। चालीसगांव तान्तुककी पीतलखोरा हथियारोंमें एक टूटा फूटा चैत्य और विहार है। यह दोनोंका बहुत ही पुरानी इसारत है और सम्भवतः इससे २०० वर्ष पहले बनी होगी। दररेके नीचे पाटनका उजाड़ नगर है, जिसमें पुरानी कारीगरोंके मन्दिर और 'गिनालिपियां' वर्तमान हैं। फिर मामनेधी और पहाड, पर दूसरी बार पीछेली बनी गुहाएँ हैं। बाघनीके कश्मन्दिरमें टालानकी भोतरी दीवार पर तीन बटिया खुदा हुईं तखतियां लगी हैं।

इस जिलेमें ३१ गहर और २६१४ गांव बने हैं। लोकसंख्या १४२७३८२ होगी। प्रधान नगरोंके नाम हैं—धूलिया, सुमावल, धारनगांव, नसीराबाद, नन्दुरवार, चालीसगांव, भडगांव, जामनेर, अदाबाद, चोपडा, जलगांव, पारोन, एरन्डोज, अमलनेर, फौजपुर, पावोड, नगरदेवर, भोडवार। खान्देश जिलेके पश्चिमी भागकी आवादी बहुत हलकी है। परन्तु यावल और जनगांवकी बसती सबसे घनी जगती है। गुजराती खान्देशकी व्यापारिक भाषा है। किन्तु सरकारी दफतरो और स्कूलोंमें चलनेसे मराठी जवानोंका पादर बढ़ता जाता है। घरमें लोग खान्देशी या अछिपानी बोलते हैं, जो गुजराती, मराठी, नेमाडी और हेन्दुस्थानीकी खिचडी है।

कुनबी, भील, महार, मराठा, मान्डी, कोली, ब्राह्मण, बानी, राजपूत, धांगड, यनजारा, तेली, सोनार, नाई, चमार, सुतार (अच्छे), शिम्पी (दरजी) और मांग—खान्देशकी प्रधान जातियां हैं। कुनबी, पारंवी, राजपूत और गुजरानी खेती करते हैं। यहांके व्यापारी अधिकांश दूसरे प्रांतोंसे आ आकर बसे हैं। आवादीमें आदिम अधिवासी और खानबदोश बहुत हैं। बहुतसे भील पुलिस कान्टोविलों और चौकीदारोंका काम करते हैं। निरधी सातमानाके नीचे रहनेवाले हैं।

पहले लोग उनसे बहुत डरते थे। बनविके समय उन्होंने बड़े बड़े प्रत्याचार किये हैं। रैनवे और गाडिया के बननेसे बनजारे की वही शक्ति हुई है। खान्देशके अधिकांश मुसलमान ग़ैब कहलाते हैं। सैकड़ों पीढ़े पूर्व ज्यादा पाटनी खेती किसानी करते हैं।

भूमि विभिन्न प्रकारकी मिट्टी, कहीं डपलाऊ और कहीं रनकी पडती है। स्थानोय लघुम हमे चार भागों में बाँटते हैं—पानी पाठनी (मफेद), खारन और नुरकी (मफेद तथा नीमिया)।

खान्देशमें खार और बाजरा बहुत बोया जाता है। तासी उपत्यका और पश्चिम पक्षमें गेहूँ भी खूब होता है। दालों में चरहर, चना, उदद और मूँगकी खेती की जाती है। तनहनमें तिन और भनमी प्रधान है। रुई हाँगनघाट और धारवाडके बीचसे उत्पन्न होती है। जराँ-सौँचनेकी पानी मिजता, साख योड़ी बहुत लगा दी जाती है। मिर्च, मौँफ और घनिया खास मसाले हैं। फुनवाडियोंमें पानके भीट खूब लगाये जाते हैं।

खान्देश जिलेमें मोमार और वरारसे मगाये गये पच्छे पच्छे गाय बेल देख पडते हैं। घोड़े छोटे और बेकाम होते हैं।

खेतीकी सिधाइ गिरमा और पाँभर नदीके बाँधों, और भीरो और तानाशे मे की जाती है। पश्चिम ऐसो कोई नदी नहीं है, जिनमें बांधके विह्न न मिले। इससे मानूम होता है कि पहले वर्षा कितने ही बाध थे। कई एक नहरे भी निकाली गयी हैं। जिलेके बाँध काम भागमें पानी ऊपर ही मिजता है। किन्तु सात पुरांमें और तासीमें ८१० मीलके बीच १०० हाय गहर तक कूप खोदने पडते हैं।

खान्देश कनाडाके पास बम्बई प्रांतका सबसे बड़ा जङ्गली जिला है। कितना ही जङ्गल-सरकारने लकड़ों और घासके लिये सुरक्षित रखा है। परन्तु यहाँ लकड़ोंका खर्च पैदायामसे ज्यादा है। मधुवा, साखू, बबून और शोगम बहुत उता है।

यहाँ खनिज पदार्थ बहुत कम निकलते हैं। इमारती पत्थर, हरिक जगह होता है। भुसावनके पास

बाहर नदीगर्भमें भवसे बड़ी पत्थरको खान है। काटो महीमें घुनका कट्टा निकलता है। रुईको गाँठे बाँधने और कपास थोडनके कई कारखाने खान्देशमें चलते हैं। ऊतका मोटा कम्बल इस जिलेमें लगभग सब जगह बना जाता है। १८०४ ई०की जनगाँवमें रुई कानने और कपडा बुननेका एक कारखाना खुला था। भुसावनमें रैनवेका कारखाना है।

रफतनोकी सबसे बड़ी चीज रुई है। बम्बईके भाटिये स्थानोय व्यापारियों और किसानोंसे उसे खरीद गाँठे बाँध बाँध सीधे विनायत भेज देते हैं। बाहर भेजी लांनवाकी टुमरी चीजी में घनाज, तेलहन, मक्खन नील, मोम और गहद प्रधान है। बाहरमें नमक, मसाले, धातुओं के फुडे, सूत और गहरकी घामदनी होती है। जनगाँव और भुसावनमें व्यापार बढ़ रहा है।

पहले खान्देशमें बड़ी सड़के न थीं। पहले पहल बम्बई बागरा रोड बनाया गया, जो इस जिलेमें माली गाँव, धूलिया और औरपुर होकर निकलता है। धूलिया से सूत और गहरवाडकी भी सड़क लगी है। यहाँ कुल ८५३ मील राह बनी; ३२५ मील पक्की है। ८५० मील तक लकड़ी दोना तफ पैडोंका कतारें लगायी गयी हैं। इस जिलेके दक्षिणभागमें नापडो गाँव भुसावन तक १३० मील घंट इण्डियन पेंजिनसुला रैनसे चलती है। भुसावनमें उसके बट जानेसे एक शाखा लवलपुर और दूसरी नागपुरकी जाती है। १८०० ई०की जनगाँवमें तामलनर भी। घालोसगाँवसे सूत में रैनवे खुनो था। तासी सेनो रैनवे सुरतसे घामल नरकी पानी है।

तासी और छोटी छोटी नदियोंमें एकाएक भयानक बाढ आ सकती है। १८७ गताष्टकी ६ बार बाढ आयी, जिससे इस जिलेमें बड़े हाजि लडायी। १८२२ ई०की तामोने ६५ गाँव बहाये और पचास लुवाये थे इससे ढाढ़ लाख रुपयेका घना लगा, १८०२ ई०की पाँभरमें बाढ घामेसे धूलियाके ५०० घर बह गये। नदीके सामनेका एक गाँव गुम हुआ था। कुल १५२ गाँवोंका नुकसान उठाना पडा और १६ लाखका माल बसबाब दिगड गया।

दुर्गा देवी दुर्भिक्षी छोड़ कर जिसके कारण, कफते है, खान्देशकी आबादी बहुत घटी थी, १६२६ ई०की फिर अन्नकष्ट हुआ। १८०२-४ ई०को गेहूं रपये सेर बिका था। कितने ही लोग मरे और बहुत प्वित डकड गये। खान्देशकी यह दशा हीनकारके हमले-से हुई थी। १८६६ ई०को पानी न बरसनेसे ७६००० आदमी और ३८५००० मवेशी मौसतसे घ्यादा काम प्राये।

खान्देश जिला २७ तालुकीमें बंटा है। सिहवास राज्यका प्रबन्ध भी इकी जिलेमें होता है। धूलियाके जिल्ला और दौराजजके नीचे १० छोटे जज काम करते हैं। फौजदारी फ़ैसलेके लिये ५० सजिस्ट्रेट हैं। अपराधोंमें चोरी, चंघ और डाका बहुत चलता है। किसान सीधे मालगुजारी सरकारको देते हैं। १८५२ ई०को इर्षाजिलेकी पैसायब होनेके समय बलया खडा हुआ था, परन्तु सुखियोंके पकड़े जाने पर बन्द हो गया।

खान्देशमें २१-स्युनिसप्राकटियां हैं—आमलनेर, पारील, एरखोत, धरनगांव, भाडगांव, चोपडा, गीरपुर, सिन्धखेड, वेटवाड, सवाड, यावल, जलगांव, धूलिया, सोनगीर, तलीड, शाहाड, प्रकाश, नन्दुरवार, फ जपुर और रावेर। इनकी मौसत आमदनी ३ लाख रुपया है।

जिला पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्टकी सहायता ३ असिस्टेण्ट सुपरिण्टेण्डेण्ट, १ उच्चेदवारी करनेवाले असिस्टेण्ट सुपरिण्टेण्डेण्ट और ४ इन्स्पेक्टर करते हैं। कुल ३७ थाने हैं। जिला जेल धूलियामें बना हैं। बम्बई प्रान्तके २४ जिलेमें लिखने पढ़नेके वारिमें खान्देशका दरजा बारहवां है। १८२१ ई०की सीमें प्रायः ५ आदमी साक्षर थे। अब शिक्षाकी बडी उन्नति हुई है।

खानपान (सं० ली०) धातू नामनेकार्यत्वात् ख अक्षणे ख ट् खाना पा पाने ल्युट्, पानं खानश्च पानश्च तयोः समाहारः। भोजन और पान, खाना पीना।

(गारुड १०६ अ०)

खानपुर—बहावलपुर राज्य और पंजाबके अन्तर्गत

खानपुर गिजामतका सदर तहसील। यह पक्षा० २७° ४३' तथा २६° ४' ६० और देशा० ७०° २७' एवं ७०° ५३' पू० सिन्ध नदीके किनारे अवस्थित है। भूपरिमाण २४१५ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः १२०८१० है। यहां खानपुर, गरही इत्यादि नगर और गीरपुर शहर हैं। इसने दक्षिणमें बालुका प्रदेश, उत्तरमें लसर लमीन और सिन्धु-नदी-तटस्थ उर्धरा निम्नभूमि है। यह तहसील खजूर (खजूर) के लिये प्रसिद्ध है और उक्त राज्यका एक मन्डविधानी स्थान है। यहांकी आमदनी प्रायः एक लाखसे कुछ अधिक होगी।

खानसामा (फा० पु०) भाख्तखानी, रमोदया। यह अंग-रेजी और तुसफसामाके पास रहता है।

खाना (हिं० लि०) १ आहार करना, पेट भरना, बुझमें डालना। २. मार डानना, शिकार करना। ३ चाटना। ४ झुतरना, काटना। ५ चवाना। ६ विगाडना, मिटाना। ७ उड़ाना। ८ हड़पना, मार बैठना। ९ खर्च करना, नगाना। १० रिशवत लेना, अधर्मसे रुपया कमाना। ११ अंटना, खपना। १२ छोडना, भूलना। १३ झेलना, उठाना।

खाना (फा० पु०) १ भोजन, जगह, घर। २ थोटक। ३ सन्दूक।

खानाकुल—बहाल प्रान्तीय हुगली विलेके पारामवाग उपविभागका एक गांव। यह अक्षा० २२° ४३' ६० और देशा० ८७° ५२' ५०में खाना नदीके पश्चिमतट पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ८८६ होगी। पीतलकी कुछ चीजोंका यहां कारवार चलता और पास ही बटिया चूनी कपड़ा बनता है। नदीके तट पर महादेवका एक बड़ा मन्दिर है।

खाना खराब (फा० वि०) १ चौपटचरन, घर विगाडनेवाला। २ आवारा, इधर उधर घूमनेवाला, जिसके रहनेकी जगह न हो।

खानाजङ्गी (फा० स्त्री०) गृहयुद्ध, आपसकी लड़ाई।

खानाजाद (फा० वि०) १ गृहजात, घरका पैदा। (पु०) २ दास, गुलाम।

खानातलाशी (फा० स्त्री०) घरकी ढूँढ खोज या देख

मान। खानातलागी किसो द्विपो बीजको टूटनेके लिये होते है।

खानादारी (फा० स्त्री०) गार्हस्थ्य गृहस्थी।

खानाघोना (द्वि०) खानपान देवी।

खानापुरी (द्वि० स्त्री०) खानो जगहका मराव।

खानापुर—१ बम्बई प्रान्तके बेलगाव जिलेका एक तालुक। यह पचा० १५° २२' तथा १५° ७' ७०' और देशा० ७४° ५' एव ७४° ४४' के बीच पडता है। खानापुरका रकबा ६३३ वर्गमील और आवादी लगभग ८५५८६ है। इस देशमें दक्षिण तथा दक्षिण पश्चिम को पहाड और जङ्गल है। खेतीका कही नाम नहीं। इसके उत्तर पश्चिमस्थ पर्वत प्रधानत उच्च लगते है। केन्द्रस्थान, उत्तरपूर्व और पूर्वमें जमीन बहुत अच्छी है।

२ बम्बईके सतारा जिलेका एक तालुक। यह पचा० १० ८' तथा १०° २० स० और देशा० ७४ १४' एव ७४° ५१' पूर्वके मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ५१० वर्गमील और लोकसंख्या ८५८३१ है। यहाँ बहुत कम जङ्गल है। यरना नदी खानापुरके उत्तरसे दक्षिणको लुणासि मिलनेके लिये निकल गयी है।

३ बम्बई प्रान्तोय सतारा जिलेके खानापुर तालुकका एक गांव। यह पचा० १० १५' ७०' और देशा० ७४ १३' पूर्वमें बोटासे लगभग १०' पूर्वकी अवस्थित है। इसकी जनसंख्या प्राय ३०२८ है। भूपालगडके पास पड़नेसे यह पुराने समयमें अपने निकटस्थ प्रदेश का सदर रहा। नगरमें पत्थर और मटीकी दीवारों और दुर्जटार फाटकीका मन्दावर्षीय विद्यमान है। इस गांवकी मसजिदमें चरबी और कनाडो भाषाके शिलाफलक लगे है।

खानावदीय (फा० वि०) गृहहोन, उड्डू, जहा तर्हि रट जानैवाला।

खानागुदारी (फा० स्त्री०) गृहगणनाकाय, मकानोंका गुमार लगानेका काम।

खानि (सं० स्त्री०) खनिरेष प्रयोदादिवत् द्वि। खनि, खदान।

खानिक (सं० स्त्री०) खानेन खननेन निर्हंसन्, खन

ठन्। १ कुस्यच्छेद्य, दीवारका गड्ढा। २ रत्न, उपाहारात।

खानिक (सं० त्रि०) खान खनन गिष्यत्वेनास्तरस्य, खान वाहनकात् इत्यच्। सन्धिघोर, नक्षत्रजन, संघ लगानेवाला।

खानिक (सं० स्त्री०) अति शुष्क मांस, बहुत सूखा हुआ गोश्त।

खानी (सं० स्त्री०) खनि या खोल्। खनि, खदान।

खानुवा—राजपूतानाके भरतपुर राज्यकी रूपवास तहसीलका एक गांव। यह पचा० २७ २ स० और देशा० ७०° ३३' पूर्वमें वापगड्ढाके नदीके यामतट निकट भरतपुर नगरसे प्राय १३ मील दक्षिण अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय १८५० होगी। यहाँ १५२० इ०के मार्च मासकी वाजर और मियाड राणासयामसिद्धक प्रधान राजपूत राजाओंके बोल घोर पुत्र हुआ। प्रथमत वादशाहने हारने पर शराव न पानेका शपथ लिया और सोने चांदीके आभूषणों और पियालीका तोड करके गरीबीमें बांट दिया था। परन्तु पीछेकी राजपूतोंके हारने पर राणा जस्रमी भी करके सुदिकलसे भाग पाये और डूंगरपुरके रावल उदयसिंह काम पाये।

खानोदक (सं० स्त्री०) खानाय पानाय उदकं यच्च, बहुवी०। मारिकेलफल, मारियल, हाम।

खान्य (वै० त्रि०) खन स्यात्। खनन किया जानेवाला, जो खुदने सायक है। (भाषा० श्रो० पाराशर)

खापगा (सं० स्त्री०) खस्य प्राकायस्य खापगा, इत्तत्। गन्ना, सुरमरि।

खापट (द्वि० स्त्री०) भूमिविगेष, किमी किष्मकी जमीन्। इसमें लोहका भाग अधिक रहता है। खापटकी मटी कही और भारी पडती और पानी पटनेमें लमनघाने लगती है। इसकी केवल वर्षा ऋतुमें ही प्राकर्षण कर सकते हैं। खापटमें मिया धानके और कुछ नहीं उध जाता। इसकी मटी कपमा या कायिम कहलाती है। कायिमसे कुम्हार वर्तन बनाया करते हैं।

खापा—मध्यप्रदेशके नागपुर जिलेकी रामटेक तहसीलका एक नगर। यह पचा० २१° २३' ७०' और देशा० ७८°

खारिका (सं० पु०-ली) एक वृक्ष और उमका फल । यह पुष्करतीर्थके पास सहापारिवत कहलाता है ।

खारिज (अ० वि०) १ वहिर्भूत, अलग किया हुआ । २ जो सुना न गया हो । एक असामीसे लेकर दूसरे असामीकी जमीन देनेका काम 'दाखिल खारिज' कहलाता है ।

खारिन्धम (सं० त्रि०) खारीं धमति, खारी-धा-खग् ऋस्त्रः सुमादेशश्च । शस्यपरिमाणकारक, अनाज नापने या तोलनेवाला ।

खारिन्धय (सं० त्रि०) खारीं धयति, खा-धा-खग् ऋस्त्रः सुमागमश्च । खारी परिमित पान करनेवाला, जो ४ द्रोण पीता हो ।

खारियां—पञ्जाब प्रान्तके गुजरान जिलेकी एक तहसील । यह अक्षा०-३२° ३१' तथा ३३° १' उ० और देशा० ७३° ३५' एवं ७४° १२' पू०के बीच अवस्थित है । उत्तरपूर्वमें फैलमनदी इसको फैलम जिलेसे अलग करती है । इसका अधिकांश जड़ली, जरायती और नालोंमें भरा है । पन्वीपहाड फैलम नदीके साथ साथ उत्तरपूर्व और दक्षिण-पश्चिमकी चला गया है । लोकसंख्या प्रायः २४२-६६७ है ।

खारिश (फा० स्त्री०) १ कण्डू, खुजली । २ खरखरा-हट ।

खारिश्त, खारिश्त देवी ।

खारिन्धच (सं० त्रि०) खारीं खारीपरिमितधान्यादिकं पचति, खारी-पच-खग् ऋस्त्रः सुमादेशश्च । परिमाणे पचः । पा १।१।२१ । खारीपरिमित धान्यादिक पाक करनेवाला, जो ४ द्रोण भोजन बनाता हो ।

खारी, खाति देवी ।

खारी (हिं० स्त्री०) १ लवणभट, किसी किसका नमक । २ छोटा खारा । (वि०) ३ नमकीन, खारा ।

खारीक (सं० त्रि०) खारां खारीवापमर्हति, खारी-इकन् । अर्था ईकन् । पा १।१।३३ । १ खारीवाला, जिसमें ४ द्रोण बीज डाला जा सके । २ खारी-परिमित धान्यादि द्वारा क्रीत, ४ द्रोण अनाजसे खरीदा हुआ ।

खारीमाट (हिं० पु०) नौलका रङ्ग बनानेका एक तरीका ।

किमी बड़े वर्तनमें ४ मन पानी भरके एक एक मेर नोल, चूना और मञ्जी छोड़ते और गुड़ डालकर उठाते हैं । गर्मीको २ दिन और जाड़ेको २ दिनमें खारीमाट उठ आता है । अति गीतकालको इसे आग पर भी चढाया जाता है ।

खारीवाप (सं० त्रि०) खारीं तत्परिमितं धान्यं उच्यते वप् आवारे घञ् । १ खारी परिमित धान्यादि वपन करने योग्य, जिसमें ४ द्रोण बीज पड़ सके । २ खारी-परिमित धान्य वपन करनेवाला, जो ४ द्रोण अनाज बीता हो । मिदान्तकौमुदीके मतानुसार स्त्रीलिङ्गमें खारीवाप गण्टके उत्तर टाप् होता है, परन्तु सुश्रवोधमें डीप्का विधान है ।

खारिपाटन—वस्वरं प्रान्तोय रत्नगिरि जिलेके देवगड, सब-डिवीजनका एक नगर । इसको लोकसंख्या कोड २६०० थीगी । विजयदुर्गा नदीके कई सौन छट जानिसे अब यह नगर बन्दरगाह नहीं रहा । नदीके किनारे किनारे बहुत दूर तक एक मड़क चनी गयी है । सम-की घागे पीर सुसनमानोंकी कर्म चनी है । पहले यह सुसनमानोंका एक बड़ा शहर था ।

यहां प्रधानतः नमकका कामकाज होता है । सोमवारकी बाजारमें बड़, भीड़ी लगती है । अहरेकी शासनके आरम्भसे १८६८ ई० तक यह एक छोटे विभागका सदर रहा, परन्तु १८६८ ई०को देवगड विभागका सदर बन गया । १६वीं शताब्दीके आरम्भ-काल (१५१४ ई०) बारबोसाके कणनानुमार वह एक छोटा स्थान था और मन्वारके जराजसे सस्ता चावल और तरकारी वहांसे खरीद ले जाते थे । उसी समय यहांका व्यापार बड़ा खारिपाटन हाकुपीका लक्ष्य बना था । १५७१ ई०को पोर्तगीजोंने उसको जला डाला । १७वीं शताब्दीको कई बार वह कोडण सागर-तटका सबसे अच्छा बन्दर बनाया गया । १७१३ ई०को वह खण्डोजीराव अहिरियाके हाथ नगा और १७५६ ई० तक उन्हींके हाथमें रहा । १८१८ ई०को यह अहरेजांकी सौंपा गया ।

नगरके सामने किसी छोटी पहाड़ी पर एक एकड़ परिमित दुर्ग अवस्थित है । १८५० ई०के उसके बुर्ज और दीवारें तोड़ दी गयीं । जामा मस्जिदका धंसा-

श्रीय देवनेसे समझ पड़ता, कि यह एक बहुत बड़ी इमारत रही। वर्तमान नगरसे बाहर देहका एक बड़ा झोंक है। इसके गिनाफैलकेने निखा है कि १६५८ ई०को किसी धातुपने उसे बनाया था। नगरके मध्यमें जो एक पत्थर गडा, हिन्दू और मुसलमानोंके मस्जिदोंकी सीमा समझा जाता है। नगरके मध्य कर्णाटकेको का निवास और एक जन मन्दिर है।

खारवा (हि० पु०) १ किसी किष्कका रङ्ग। यह पालने बनता और मोटे कपड़े रगनेमें लगता है। २ मोटा नाम कपड़ा। यह काशयोंमें बहुत बनता है। खारिजा (हि० पु०) कुसुमभेद। यह पञ्चावमें बहुत लज्जता और कटीला रहता है। खारिजाका दाना छोटा पड़ता और किमी काममें नहीं लगता। इसके बड़े बड़े फूल पाने जो देखनेमें बहुत सुहाते हैं। खारिजाका हिन्दी पर्याय—कटियारी, बनवररे और बनकुसुम है।

खारपयार—पूना जिलेकी एक पधित्यका। यह पुरम्बर गिरिदुर्गसे १४ मील पूर्व जेजुरी नामक गांवके पास एक पर्वतमें पड़ती है। इस पर बहुत पुराने समयका खंडोवा देवका मन्दिर है। लोग भक्तिसे इन खंडोवा देवकी पूजा करते हैं। पूनाके रहनेवालोंको विखास है कि वह षायमें तखवार जे सबकी रक्षा करते हैं। खंडोवाकी मूर्तके पास ही उनकी स्त्री मनसाबाईकी प्रतिमूर्ति है।

खारोद—मध्यप्रदेशके रायपुर जिलेका एक गांव। यह श्रीहरिनारायणनगरसे ३ मील उत्तर पड़ता है। यहाँ लक्ष्मणेश्वर शिवलिंग है। मन्दिर ऊँचे चयुतीरे पर खुदा है। इसमें ईश्वर सेदि सवत्की एक गिनालिपि मिली है। कोई कोई कहता कि रायपुरके राजा ताम्र ध्वजके भारे परभ्रजने यह मन्दिर बनाया था। यहाँ बहुतसे मन्दिरोंका ध्व सावग्रीष पडा है। एक मन्दिरमें पादित्यदेव ७ घोड़ी पर सदे विराज रहै है। मन्दिर ईंट और पत्थरका बना है। कहते हैं कि रावणके भ्राता खर और दूषण वहाँ रहते थे। उन्को नामा मुसारे 'खारोद' नाम भी निकसा है।

खारार (स० पु०) खरव्य दट खर एवं खार करीति

प्रकाशयति, खार छ भण् प्रभोदरादिभत् प्रकार कोपे साधु। गढभजातिका शब्द, गढ़ोंका रेकना।

(मानवत १७११)

खार्जूर (स० स्त्री०) खजूरखेदम्, खजूर-फल। १ मध्य विदेश, किसे किष्ककी शराब। इसको बनानेकी शयाली यह है—कटहल, पक्षी खजूर, बदरक और मोमलताका रस मिला, कर शराब पकानेके तरिकेसे पकाने पर जो शराब बनती खार्जूर ठहरती है। २ खजूरमद्य, खजूरका शराब। खार्जूर वातकोपन शय्य, कफघ्न, लघु, कपाय, मधुर, हृद्य, सुगन्धि और इन्द्रियगोचन होता है। (पुस्त)

खार्जूरकर्म (स० पु०) खजूरकर्म्यापत्यम्, खजूरकर्म-फल। खजूरकर्म श्रयिके अपत्य।

खार्जूरसुरा (स० स्त्री०) खार्जूरशो।

खार्जूरशय्य (स० पु०) खजूरशय्य शोत्रापत्यम्, खजूर शय्य। खजूर नामक श्रयिके मात्रापत्य।

खार्जुसिंघ (स० वि०) खजुरं जखेदम्, खजुरं ज-ठक। १ खर्बज सम्बन्धीय। (स्त्री०) २ रसालविशेष।

(भाष्यकार)

खाल (हि० स्त्री०) १ त्वक, चमड़ा, मनुष्य पशु पादिके देहका बहिरावरण। २ पयोही, पाधा बरसा। ३ भावी धौकनी। ४ शव, सुदा। ५ निम्बधूमि, नीचो लमीम्। ६ खाड़ी। ७ शयकाग, पाली जगह। ८ गाथीयें, गहराई। (पु०) ९ नामा।

खालत्य (स० स्त्री०) खलसर्भाय, खनति खज्। कपालरोग, खोपड़ीको एक बीमारी। यह बालोंकी जसा देता है। (परब)

खालफूला (हि० पु०) धौकनी बसानेवाला, जो भायी जगता हो।

खालसा (हि० वि०) १ एकाधिकत, जो एक हीके इग्तियारमें हो। २ सरकारो।

खालसा—पञ्चावका सिध सम्प्रदाय। सिध सम्प्रदाय नामकेने बनाया था। मोरिन्दने नामकेकी बनाया शीत मोतिमें फिर मस्हार किया। १ इस तरह विनोंमें दो टक हो गये। कुछ लोग मोरिन्दके गये पश्यत

विधानोंको मानते और कुछ पुराने सतके अनुमार ही चले जाते हैं। गोविन्दके नये विधानोंको माननेवाले ही 'खालसा' सम्प्रदायभुक्त हैं। परन्तु यह प्रभेद आज-काल उठ गया है। 'खालसा' शब्द अरबीके 'खालिस' का अपभ्रंश है। इसका अर्थ पवित्र एवं शुद्ध है। सुतरां खालसा कहनेसे शुद्ध पवित्र और विशिष्ट व्यक्तिका बोध होता है। सिख इस शब्दका अर्थ कोई देवदहस्यपूर्ण जैसा मानते हैं। यह भी नानकके आदि ग्रन्थकी अज्ञाप्रति करते हैं। अब गोविन्दके संस्कृत नियमों पर लोगोंका उतना दृढ़ विश्वास नहीं रहा।

खालसा सम्प्रदायके लिये गोविन्दने जो नियम बनाये थे, उनमें 'पहल' अर्थात् अभिषिक्तक्रिया ही सबसे बड़ी है। पहलकी चाल आज भी जारी है सिख धर्म प्रवर्तन करनेसे पहले पात्रकी सब बान्ध रखाना चाहते हैं। दो-एक महीने बाद जब बान्ध बड़े बड़े हो जाते, पात्र नीचे रङ्गके कपड़े पहन कर उपस्थित होता और उसे एक तलवार, एक बन्दूक, धनुर्वाण और साला देना पड़ता है। फिर गुरु और पात्र शर्वतसे हाथ-पांव धोते हैं। इसी शर्वतमें चीनी डालके तलवार का धुरीके-धारसे चलानेका नाम पहल है। इसके छोड़े आदिग्रन्थसे पांच श्लोक पढ़ाये जाते हैं। प्रति श्लोक एक ही निश्वासमें पढ़ना और धुरीसे बड़ी पानी मथना-पड़ता है। फिर पात्र हाथ जोड़ कर ग्रन्थी वा पुरोहितका दिया हुआ बड़ी पानी ग्रहण करता और उसे लेकर कपाल, मस्तक तथा दाढ़ी मूँहमें लगाता और कक्षा करता है—'वाह गुरुजीका खालसा, वाह गुरुजीकी फतेह।' गोविन्द गुरु अपने आप पांच लोगोंके साथ इसी प्रथामे सिख धर्ममें अभिषिक्त हुए थे। फिर उन्होंने परस्परका पदघौत पहल-जल पीया भी था। स्त्रियां भी इसी प्रकार पहलके पानीसे अभिषिक्त की जाती हैं। उन्हें केवल शर्वत उलटो धुरीसे चलाना पड़ता है। सिखोंके बच्चोंका बहुत छोटी अवस्थामें ही यह अभिषेक हुआ करता है।

सिख, रणजित् सिंह, पंजाब साहि देखो।

खालसा (हिं० वि०) निरत, नीला।

खालसा (अ० स्त्री०) मौसी, मांकी बहन।

खालिक (सं० वि०) खल-इव, खल-ठक्। अत्र, व्यादिभा ठक्। पाश १०८। खलके सदृश-पाजो-जैसा।

खानिक (अ० पु०) स्रष्टा, दुनियाको बनानेवाला।

खानिस (अ० वि०) विशुद्ध, खरा, बेमेल।

खानौ (अ० वि०) १ रिक्त, रिता, जो भरा न हो।

२ बेकाम, निठला। ३ व्यर्थ, फिजूल। (क्रि० वि०)

४ प्रकंले, विना किसीकी मददके। (पु०) ५ कोई तान।

खाल (फा० पु०) मोना, मोनिया, मांकी बहनका स्त्री।

खाने (हिं० क्रि०-वि०) नाचे, तले, गढ़ेंमें।

खाल्यकायनि (सं० पु०-स्त्री०) खुल्यकाया अपत्यम्, खुल्यका-फिज्। खुल्यकाका अपत्य।

खाल्यायनि (सं० पु० स्त्री०) खुल्या-फिज्। खुल्याका अपत्य।

खाव (हिं० स्त्री०) १ शून्य, खाली जगह। २ जहाजमें साल रखनेको कोठरी।

खावन्दमीर—खावन्द शाह अमीरका एक पुत्र। इनका अमन नाम गयासुद्दीन सुहस्रद-विन्-हमीद-उद्दीन् खावन्द अमीर था।

किसीका मत है कि इनका जन्म १४७५ ई०को हिरात नगरमें हुआ। १४८८ ई०को इन्होंने 'रीजत् उग्र शफा' नामक फारसी ग्रन्थका सारसंग्रह करके 'खुला-सत्-उल्-अखवार' नामक एक सुन्दर ग्रन्थ प्रणयन किया था। इस ग्रन्थके अतिरिक्त और कई एक ग्रन्थ बनाये यथा १ 'हबीब उग्र-आर' २ 'मसोर उल सुलुक' ३ 'अखवार-उल्-अखवार' ४ 'दस्तूर-उल नजरा' ५ 'मुकारिम-उल-अखलाक' ६ 'मूलखिव तारीख', ७ 'वास गाफा' दगरायव-उल्-असवाव' ८ 'जवाहिर, उल्-अखवार'। १५२७ ई०की जन्मभूमि हिरातमें घोर विप्लव हुआ, इसलिये हिरात छोड़ कर मोलाना साहब उद्दीन और मिर्जा इनासीम कानूनी नामक दो विद्वानोंके साथ ये भारतवर्ष आये। १५७८ ई०को आगरा नगर आकर मन्नाट् वावरसे इन्होंने भेंट की और मन्नाट्से सम्मान प्राप्त किया। तत्पश्चात् जब वावर बङ्गाल पर आक्रमण करनेके लिये आये, तो खावन्दमीर भी उनके साथ थे। वावरकी मृत्युके बाद इन्होंने हुमायूँके नामानुसार

कानून हुआ' नामक ग्रन्थ रचना किया। यह ग्रन्थ अतुल फजलके अकबीर नाममें उद्धृत है। ये सम्राट् हुआयु के साथ गुजरात भी गये थे। राजमें १५३५ ई०की इनका मृत्यु हुआ। शव दिल्ली ले जा करके अमीर खुशरूकी कब्रके पास इनका लडा गया।

खाविन्द (फा० पु०) १ पति, खुसम। २ स्वामी, मालिक। खाधी (हि० स्त्री०) वर्षके आरम्भमें नोकरी की पहलीसे दिया जानिवाना धन वा अन्न।

खासरी (म० स्त्री०) गाम्भीरी वृक्ष। कागरो देखो।

खास (अ० वि०) १ मुख्य, बडा। २ खाय, अपना। ३ शय, खुद। ४ खानिम, विशुद्ध, ठेठ। (स्त्री०) ५ मोटे कपड़ेको कोड़े चेनी। इसमें चीनो डाल कर पोंके जोरमें भवते हैं। ६ वनियोके तमक चीनो खगेरह रखनेकी घैनी।

खासबनम (अ० पु०) अपना खेवक, निराना सु गो, प्रायवेष्ट संकेटगी।

खासगी (हि० वि०) मानिकका, निजका, निराना।

खासतराय (फा० पु०) राजनापित, वादगाह या राजके खान बनानेवाना लाट।

खासतहसोन (अ० स्त्री०) जिना तहसोन, जिस तहसोनमें बडा हाकिम रहता हो।

खामदान (हि० पु०) पानदान, पान रखनेका डब्बा।

खामवीस (अ० पु०) खासकलम, अपना ही निज्जा पटो करनेका रखा हुआ सु गो।

खासपुर—पाषाण प्रान्तीय कछार जिलेके मिस्रधर उपविभागका एक ग्राम। यह अक्षा० २४° ५५' उ० और देशा० ८२° ५०' पूर्वमें वरायत पहाडके दक्षिण मुख पर अवस्थित है। १८वीं शताब्दीके आरम्भसे अन्तिम राजाके १८३०में मरने तक खासपुर कछार के राजाओंकी राजधानी रहा। १७८० ई० की कछार के राजा और उनके भाई ताम्रमथो गो प्रतिमामें प्रवेग करके हिन्दू सन्निध बन गये। पहली राजधानी का निदग्रम ४ मन्दिरो, २ अन्य भवनी और ३ खरोबरी के भग्नावशेषमें मिलता है।

खासबरदार (फा० पु०) राजाकी सयारीके चामी चागी अस्त्रनेवाला मोहर।

खासबाजार (फा० पु०) राजाके महनाके पासका बाजार। राजा खास बाजारसे ही चीजे खरोदते हैं।

खाना (अ० पु०) १ राजभोग, वादगाहो का खाना। २ राजाके घटनेका हाथो घाडा, वादगाहकी अपनी सवारी का जानवर। ३ वस्त्रविशेष, कोई सुनो कपडा। यह पतला और सफेद होता है। ४ पिष्टकविशेष, किसी क्षिप्रकी मोवनपडी पुरी।

खासा (हि० वि०) १ उत्तम, अच्छा। २ नीरोग, तन्दुरुस्त। ३ सम्भोना। ४ सुन्दर, सुडोना, देखनेमें भना। ५ सम्पूर्ण, पूरा। ६ उपयोगी, कामद।

खासियत (अ० स्त्री०) १ स्वभाव, आदत। २ गुण, खूबी खासियत—पाषाणका एक जिन्ना यह अक्षा० २४° ५८' तथा २६° ७' उ० और देशा० ८०° ४५' एव ८२° ५१' पूर्वके बीच पडता है। इसका क्षेत्रफल ६०२० वर्ग मील है। खासियाका २१६० वर्ग मील भूभाग अगरेजो के अधिकारमें है। साकस ख्या प्राय २ लाख निकलेगी। खासिया जिलेका बडा शहर गिरह है।

खासिया और जयन्ती दो पहाड मध्यपूर्व तथा सुर्मा नदीकी अववाहिकाके बीच पडते हैं। आजकल दोनों एक जिले जैसे दिने जाते हैं। खासिया जिनाके उत्तर कामरूप तथा नवगांव, पूर्वको नवगांव और कछार, दक्षिणको थोहट (बिलहट) और पश्चिमको गारो पहाड है। फिर यह जिला ३ बड़े भागोंमें बटा है—साधीन खासिया पहाड, ग्राम और बहदादार। सरदार और सिन्धो नामक कुछ एक अधिनायक खासिया अखण्ड शासन करते हैं।

अगरेजोके अधिकृत खासिया पहाडमें चौबेस परगने हैं—जिम्पड, नायत, निटोट, नायतकरी, यशरुहा या वाहलड, नोसकादिह माव से करकार, माव समार, मिनतेह, मावमनुह, माव पुमकिर्तियह नोह जिरी, नोहनिमकिन, नोहवा, नोहरियात, नोहररी, तुमिया, रामदायत, सायतभोपेन, तिहरियाह, तिहराह, तिरना, समानिया, मरविष् और सतिमा।

जयन्तीमें नोचे छिटे २५ परगने लगते हैं—घमबी, चपटुक (कुकी), दरह, जोबाई जङ्गलसूट, सन्तमी, साकादोह, मीनोराम, (मिकिर), मूलभोई (कुबो)

सासङ्गट, कीर्नमोव, नोङ्गलकी, नोङ्गलुल, नोङ्गलासीङ्ग, नरपू, नरतियाङ्ग, नोङ्गवा, नोङ्गजिङ्गी, रलीङ्ग, रिम-वादे, साङ्गुङ्ग (कुकी), सीतिङ्ग, सिखियङ्ग, सीन-तङ्ग, सातपाथर और शङ्गपूङ्ग।

खासिया पहाड़में सिएम नामक अधिनायकी-के अधीन भवान या वरवा, चैरा, खायमिम, लङ्ग-किन, मलाई नोहमत, सघाराम, मारीव, मावईवङ्ग, माव सिनराम, मिधिएम, नोङ्गसोफी, नोङ्गखुनव, नोङ्गमपूङ्ग, नोङ्ग सतायन और रामवराई १५ प्ररगने है। वङ्ग दादारीके अधीन गिला आता है। सरदारोके अधीन द्वारा नोङ्ग तिरलेन, जिरङ्ग, भाषनङ्ग और मावदीन नोङ्गलोङ्ग पांच और नहुदोयोके अधीन सनयवङ्ग, मावफलङ्ग नोङ्गलिवाई और मोहिवङ्ग है।

खासिया पहाड़में वैसा जङ्गल नहीं है। नदीकी चालके अनुसार यहाँ एकके बाद दूसरी उपत्वक्षा लगी है। यह सभी अधित्वकाएँ केवम घासफूससे ढंकी है, बड़े बड़े पेड़ देख नहीं पड़ते। समुद्रपृष्ठसे २००० हाथ ऊँचे एक प्रकारका देवदारु वृक्ष मिलता है। पहाड़की ऊँची चोटी पर कड़ियोंके लायक यथेष्ट वृक्ष होते हैं। फिर भी खासियाके जङ्गलसे प्रायः छोनका लुभीता नहीं पड़ता। पहाड़ोंके बीच बीच नदी नाले बहते हैं। उनमें डोगियों पर लोग आया जाया करते हैं।

खासिया पहाड़का दक्षिण भाग चूनेके कण्डसे भरा है। पुराने समयसे खासियाका चूना बङ्गालमें कामकाजके लिये आता है। यहाँसे प्रति वर्ष बीई २ लाख रुपयेका चूना बाहर भेजा जाता है। खासियाके चैरापूँजी, ठाकादोङ्ग और नावड आदि स्थानोंमें बढिया लोहा मिलता है। परन्तु उसे इकट्ठा करने और स्थानान्तरकी भेजनेमें बहुत व्यय पडनेसे लोगोंका प्रयोजन नहीं निकलता। पहाड़ोंके बीच बीच मिला-वटी कच्चा लोहा पाया जाता है। यहाँके लोग पानीकी धार और कोयलेके सहरि लोहा शुद्ध कर लेते हैं। पुराने समयसे खासिया लोग लोहा मलानके लिये विख्यात हैं। विलायती लोहकी आमदनीसे इनका यह काम काज भी महीमें मिल गया है। यहाँ

गहद, नाह आदि यथेष्ट उपजनां है। वनमें बाघी, मेंडे, चीत, भैले, सुरागाय और नाना प्रकारके हिरन देखे पड़ते हैं।

खासिया पहाड़में विविध गुहाएँ और गहरें हैं। उनमें चैरापूँजी और रूपनाथकी गुहा धर्मेनाथ है। रूपनाथमें एक प्रकाण्ड गहर है। बहुतेको धिमाय है कि उसकी राह चीनकी चले जाती है। लोग कहा करते कि उसी गहरेमें हीकर चीमां मैन्स भारत पर सटा था। इसके पास गुहामन्दिर है। उसमें हिन्दू देवदेवियोंकी नानाविध मूर्तियाँ खोदा गयी हैं।

कछारकी सीमा पर कपिली नदीके तीरे एक ऊँचा भरना है।

यहां अधिकांश खासिया और सनतेङ्ग नामक जङ्गली लोग रहते हैं। दोनों जातियाँ असभ्य होने भी उच्चतिगील लगती हैं।

खासिया जिलेमें प्रायः २ लाख लोगोंका वास है। इसमें खासिया और सनतेङ्गोंकी संख्या १५ लाखमें भी अधिक है।

खासिया और जयन्ती मिला कर पात्र जंज एक जिला बन जाते भी पढ़ने टीनों स्वतन्त्र-राज्य जैसे हो प्रसिद्ध थे। खासिया पहाड़ सिएम सरदार आदिके अधीन रहा, परन्तु जयन्तीमें कोई राजा राजत्व करते थे। स्वन्ती देखा।

१७६५ ई०की वङ्गालकी दीवानी मिलने पर अङ्गरेज कम्पनीकी दृष्टि श्रीहृदकी ओर गयी। उस समय इस प्रदेशमें केवल ऊँहली लोग रहते थे। उनका आचार व्यवहार भारतके दूसरे लोगोंसे अलग था। उनका धर्म विश्वास दूसरे किसी जानिसे नहीं मिलता था। युरोपके वनियोंको यह देख कर लालच नगा कि वह प्रकृतिक कीलक्षैत्रमें प्राकृतिक मन्हाय्य द्रव्य भोग करते थे। उन्होंने भी यहाँसे चूना और नारङ्गी इकट्ठी करके काम काज खोला था। बहुतसे लोग कहा करते कि कनकत्तके बाजारमें 'सिलहट चून' नाम सुन करके युरोपीय वणिकोंने खासिया लोगोंमें सिलहटकी चेष्टा की थी।

१८२६ ई० की नोङ्गखलाव नामक स्थानके सरदारने

उत्तर पासाम और सुर्मा उपत्यकाके बीच पानि जानकी राज बनानेकी कई एक भगरेजी के साथ कोई प्रबन्ध किया था। उसी समय कुछ भङ्गरेज नोङ्गखलाव नगरमें जाकर रहने लगे। उनके साथ थोड़े बङ्गाली भी थे, जिनके दुष्टवद्धारसे खासिया लोग बिगड़ पड़े। इसीसे १८२८ ई० की धयो भपरेलकी खासियाधोनि भङ्गरेजोंको भागमण किया था। इस युद्धमें भङ्गरेज कम्पनौके दो खेकटीनष्ट और कई एक सिपाही मारे गये। फिर खासियोंका उत्थात धीरे धीरे बढ़ा था। छटिया गवर्नमेंटके अधिक ठहर न सकी। खासियाधो'की दबानेके लिये दलका दल छटिया सैन्य भेजा गया, परन्तु साहसी खासिया जागोने सहजमें वश्र्यता स्वीकार न की। धनुर्वाण मात्र उनका हथियार है। उसीके बल पर खासियाधोनि सैकड़ो भङ्गरेजोंको मार डाला था। धनिक कछोके पीछे १८३१ ई०का खासियाधोनि वश्र्यता मानी।

१८३५ से १८५४ ई० तक नोङ्गखलाव नगरमें एक राजनीतिक भङ्गरेजो कर्मचारी रहा, फिर वध चैरापूजीको उठ गया।

जयन्ती पहाड़के लोग धपना परिचय 'वनार' जसा देते और खासिया उन्हें 'धनतेङ्ग' जैसा पुकारते है। १८३५ ई० से वध भी छटिया प्रजा जैसे समझे जाते है। इसी वर्षको जयन्तीराज राजेन्द्रसिंहने नवगांधसे कई लोगोंको पकड़ मगा कर कालीमन्दिरमें बलि किया था। इसो दोषपर भङ्गरेज सरकारने उन्हें राज्यसे हटा दिया।

खासिया—पासाम विभागके धन्तगत खासिया पर्वतकी रहनेवाली एक जाति। इनके सु ह और सारे भङ्गरेजो बनापट देख बहुतसे लोग मङ्गोलीय या तुरानो जाति की ग्राखा जसा अनुमान करते है। इसके शरीरका रङ्ग गहरा काभाभिसा पीला लगता है। नाक चपटी, सु ह घेठा और ठीक बना हुआ, बालि कोठी और कासी, पुननौके पास पीलावण और हॉट मोटे होते है। इनमें स्त्रीपुत्र्य दोनों बड़े बड़े शासक वृत्ते, जेवन निधेन लोग मिर सुडा डालते है। खासिया तेजस्वी और वनिष्ठ है। यह खमावसे ही विनयो, धीर और

हास्यमुख होते है। इन्हे सदा सधेदा परियम करना पच्छा लगता है। खासिया उत्तने चतुर और गिस्ती नहीं है, परन्तु सीखगेसे सभी प्रकारके काम कर सकते है। दरिद्र लोग सनी कपडकेका घुटने तक कुर्ता पहनते है। जो अपेक्षालत धनी है, मत्थे पर सूती या रेश्मी कपडा बांधते और लहर डालते है।

इनमें साधारणत १५से १८ तक स्त्रियों और १८से २४ वर्ष तक पुर्षोंका विवाह हो जाता है। विवाहकी चाल बहुत सीधी है। किसी किसी स्थानमें वरकर्ता और कन्याकर्ता हो विवाह पक्का कर लेते है। सगाईके पीछे वर धपने भाईबन्दी और कुटुम्बियोंकी साथ लेकर कन्याके घर जाता वार वहीं भोजन करके रातकी छेठ लगता है। दूसरे दिन वध कन्याको धपने घर ले जाता है। कन्याके साथ भी उसके कुटुम्बी आदि वर घर पहुच वैसे ही खाते पीते है। दो दिन वरके वर रहकर नव दम्पता कन्याके घर पहुचते है। विवाह हो जाने पर वरको जोते ली खरकरके घर पर ही रहना पठता है। कई विशेष कारण न धानसे इनका विवाह बन्धन कैसे टूट सकता है। स्त्री यदि बाँध हो, ती मावाप या दसके सरदारके सामने कारण दिखा करके विवाहका बन्धन तोडते है। इसो मधसर पर स्त्रीपुत्र्यका पाच कौडिया पदल बदल करनेको दो जाती है। फिर दोनोंसे पूछ कर उन्हें के क देते है। कौडिया फेक देने पर विवाहका बन्धन सदाके लिये टूट जाता है। एक वार स्त्रीपुत्र्यका विवाह बन्धन टूट जानेसे फिर उनका एक दूसरेके साथ विवाह नहीं हो सकता। परन्तु भिष परिवारमें विवाह करनेकी क्षमता दोनोंकी होती है। खासियाधोनि विधवा विवाह चलता है। किन्तु वध विवाहकी प्रथा एकवारगो ही निविह है। छिनारा इनमें मङ्गापाव माना जाता है। जो ऐसे तुरे काममें लगा रहता, विशेष ताडना सहता है।

विवाहके पछि पति खरकरके घर जाकर रहता स्त्रीको धममार्दाकी बटाया करता है। उसके पुत्र भी मातुल वध सम्भूत जसा परिचय देते है। पिताके व मका कोई मान नहीं रहता। विवाहम

दूल्हा जो कुछ पाता, उसके घरवालोंकी मिल जाता है।

घनी खासिया ईंटकी दीवारों खड़ी करके घर आदि बनाते हैं। साधारण लोगोंके घर पत्थर, सट्टी या लकड़ीकी दीवारसे ही तैयार हो जाते हैं। खासिया चावल, मछली, सूअर आदिका मांस और शाक भाजी खाते हैं। स्त्रीपुरुष दोनोंको दिन रात पान खाना अच्छा लगता है।

यह हिन्दुओंके धर्म ग्रन्थवा ब्राह्मणोंकी बड़ाई विलकुल नहीं मानते। सब लोग उपदेवताकी पूजा किया करते हैं। रोग होनेसे किसी प्रकारका औषध नहीं लिया जाता। जिस उपदेवताके प्रकोपसे रोग लगता, उस ही शान्तिके लिये वलि चढा करता है। किसीका सत्य होनेसे यह शव दाह करते और उसका शस्त्र किसी बर्तन आदिमें भर कर सट्टीमें गाड़ रखते हैं। जहां यह शस्त्र गाड़ा जाता, चारों कानों पर चार पत्थर खड़े करके ऊपरसे एक चपटा पत्थर दबा देते हैं। खासिया आत्माकी देहान्तर प्राप्तिको मानते हैं। वे बताते कि मानव-जाति सत्यके पीछे बन्दर, बिल्ला, कछुवा, मेंढक आदिके रूपमें परिणत हो जावेगी। इनमें जातिभेद नहीं होता।

यदि कोई खासिया ममानिमें रहता, उसके मरने पर उसका धन आदि मांकी, मां न रहनेसे नानो, नानीके अभावमें बहन और उसके बाद भानजीको मिनता है। बचन न होनेसे भाई, भाईके अभावमें मामी या मौसी या उसके लड़के आदि मृत व्यक्तिकी सम्पत्ति पाते हैं। यदि भाई या मौसाके भी पुत्र आदि न रहे, तो नानीकी बहनें या उसके बेटे ही उक्त सम्पत्तिके अधिकारी होते हैं। किसी स्त्रिके मरने पर उसका विषय उसकी मांकी प्राप्य, माताके न रहनेसे उसके भाई या बहन या भानजी पाया करते हैं। जा व्यक्ति मामाके घर न रहके श्वशुरके घर पर ठहरता, उसका विषय उसकी स्त्रीकी मिलता है; स्त्रिके मर जाने पर उसके बेटे पाया करते हैं। मृत व्यक्तिका पद वा उपाधि उसके भाईको ही मिलती है, भाई न रहनेसे मौसेरा भाई उसका अधिकार करता है।

मौसेरे भाईके अभावमें बड़ा भानजा उक्त पद वा मर्यादा पाता है। कोई उत्तराधिकारी न होनेसे राजाकी सारा विषय मिल जाता है। क्योंकि शवको जला करके भस्म गाड़नेका भार अकेले राजा पर ही पड़ता है। सेना पहाडके खासियोंकी सम्पत्ति दो भागोंमें बंटती है। पहले पुरखोंकी मिली सम्पत्ति अन्येष्टि क्रिया करनेवाला आत्मीय पावेगा। दूसरे मृत व्यक्तिका अपना कमाया धन आदि उसके पुत्रोंकी मिलेगा और जितने दिन उसकी मां फिर विवाह नहीं करती, उसके खिलाने पिलानेका भार पुत्रको ही उठाना पड़ेगा।

खासियोंमें कोई कोई वेल्स मिशनरियों द्वारा ईसाई धर्मकी दीक्षा ग्रहण करता है। उनके साहाय्यसे यह लोग कुछ कुछ विद्यानुशीलन करने लगे हैं। खासियाओंकी कोई अपनी भाषा या लिखी पोथी न थी। देशीय लोग कहा करते, जब वह समतल भूमि पर रहते थे, बाद उनका सबकुछ बहा ले गयी। फिर उसीसे वह उक्त पहाडी जङ्गलमें जाकर बसे थे।

खासियाना (हिं० पु०) मञ्जिष्ठाभेद, किसी किसमका संजीठ। इसका वर्ण प्रति उत्तम रहता है। यह खासियासे मंगाया जाता है।

खासिया क्षत्रिय—एक पहाडी क्षत्रिय जाति। यह लोग विशेषतः 'नेपाल और कुमाऊं', गढ़वाल आदि जिलोंमें रहते हैं। इनके २० भेद तक पाये जाते हैं। अपनेकी क्षत्रिय बतलाते भी यह लोग यज्ञोपवीत कम पहनते हैं। बस-देखो।

खासिया ब्राह्मण—पार्वत्य ब्राह्मणजातिभेद। इनकी २५० श्रेणियां तक होती हैं, जैसे—धोबल, घटयारी, कनयारी, गरवाल, मुनवाल, पपानोई, उपरती, चोनाना, कुठारी, सुसरी, दौर्वास, सनवाल, धुनीला, पानड़ी, लेमडारी, चवनराल, फुलोरिया, शीलिया, ननियाल, चौदासी, दलाकोटी, बुदलाकोटी, धुराली, धुराता, पंचोली, बनेरिया, गरमाला, बलौनिया, विरारिया, वनारी इत्यादि।

खासी (पु० स्त्री०) १ अच्छा, बढ़िया, (स्त्री०) २ राजा या आदेशाहके अपने आप वांधनेको तलवार, ढाल या बन्दूक।

खासा (५० पु०) आविषय देखी।
 खिग (फा० पु०) श्वेतवर्ष शश्वमेद, तुकारा, सफेद रङ्गका एक घोडा। इसके मुँहने पट्टे चौर चारों सुमा का रङ्ग कुछ कुछ गुलाबी चौर सफेद होता है।
 खिगरी (हि० स्त्री०) मिष्टकभेट, मठगी, किसी किछका मीयनदार पूरी। यह मैदेको बनती चौर बहुत पतनी तथा छोटी/रहती है।
 खिचना (हि० क्रि०) १ आकषित होना, खिच जाना, घसिटना। २ निकलना, बाहर होना। ३ तनना, कडा पहना। ४ लाना, बढना। ५ खपना, खुसना। ६ भङ्गकेसे घनना, उतरना। ७ कलमसे निकलना। ८ रुकना, बन्द होना। ९ पडुं/वना, चला जाना। १० विगडना, घच्छा न लगना। ११ चटना, मङ्गना पहना।
 खिचवाना (हि० क्रि०) खिचाना, खींचनेका काम कराना।
 खिचार् (हि० स्त्री०) १ खोंब, आकर्षण, कखिग। २ खींचनेकी सजरत या मजदूरी।
 खिचाना, खिचवाना देखी।
 खिचाव (हि०) खिचार् देखी।
 खिंचाघट, खिचार् देखी।
 खिचाहट, खिचार् देखी।
 खिंचाना (हि० क्रि०) हतस्पात निचोप करना, फौलाना, विखेरना।
 खिचिद (हि० पु०) १ किष्किन्ध्या परत। यह पहाड महिसुर राज्यके उत्तरभागमें पडता है। २ बीड्ड जमीन।
 खिचि (स० पु०) खिरित्यव्यक्तमष्टेन, खेटति भीरुषां भद्रमुत्पादयति, खि-खिट्-ड। प्रयोदरादिवत् साधु। शुगलविशेष, मोमडी। 'खिचि'के अक्षर पर किछो पाठ देख पडता है।
 खिचिर (स० पु०) खिचिर प्रयोदरादिवत् साधु। मोमड।
 खिचिरं (स० पु०) निमित्यव्यक्तमष्टे निरति कृ क प्रयोदरादिवत् खल्व न साधु। १ खिचिं २ खारियालक, एक शुभ्रदार चीज। ३ छट्वाङ्ग, महाटेवका पकू हयियार। इनका उपाहार 'खिचिर' भी होता है।

खिचडवार (हि० पु०) खिचराही, खिचड़ी दान करनेका दिन, मकर-सक्रान्ति।
 खिचडी (हि० स्त्री०) १ दाल चौर चावसका मिन। २ दान चौर चावसकी मिला कर पकाया हुआ भोजन। ३ विवाहकी एक प्रथा, भात। ४ मिश्रित पदार्थद्वय, दो मिश्री हुई चीजें। ५ खिचराही, मकरसक्रान्ति। ६ वदरपुष्प, वेरीका फूल। ७ बयाना, साईं। (वि०) ८ मिश्रित, मिला हुआ।
 खिचिङ्ग—उडीला प्रान्तके करद राज्य मयूरभञ्जका एक गाव। यह अक्षां २१ ५५' उ० चौर ८५ १०' पू०में अवस्थित है। भावादी कोड २६८ हीगो। इसमें मूर्तिर्घो, स्तूपों चौर इष्टक तथा प्रस्तर निर्मित कई मन्दिरों का धर्मावशेष मिनता है। ग्राम ससम्पन्न एक मन्दिरावकी देखने लायक चीज है। मालम होता है कि अक्षरक मनापति मानमिहने इनमें किसी शिवमन्दिर का संस्कार कराया था।
 खिचड (हि० पु०) खिचडी।
 खिचा (स० स्त्री०) खिचरिकाच, पिचडो।
 खिचना, खोना देखी।
 खिचनाना (हि० क्रि०) १ खीजना, विगडना। २ खिनाना, छिहना।
 खिचार् (फा० स्त्री०) १ पतभार, पत्ते गिर जानेका मोसम। २ चपलति, गिराव।
 खिजादिया नगानियो—काठियावाड़के असावा विभाग का एक मध्यवर्ती राज्य। यहां एक गांव है। समका एक अधिकाारी रहता है। चामदनी २००० रुपया है। इसमें ५२) ६० गायकवाडकी टेने पडते हैं। लोक-संख्या १५६ है।
 खिजाव (स० पु०) केगकल्प, शत केरीकी लक्ष्मणचं प्रान्तका चोपध।
 खिजारिया—काठियावाड़के गोडनवाड विभागका एक छोटा राज्य, यह राज्य दो भागमें बटा है। इनमें एक टकडा २ वर्ग मील चौर दूसरा एक वर्ग मील पडता है। प्रत्येक अयका पाय प्राय छिट हजार रुपया है। इनमें बडोटाके गाणकवाड़की १-०, ६० चौर लुनावटके नवावकी ४०) ६० देना पडता है। खिजारिया दोन

गढसे ६ कोस दक्षिण-पूर्व और दोलासे २१ कोस उत्तर पश्चिम अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ४०० है।

खिझना (हिं० झिं०) खोजना, चिड़ना। (वि०) विगड़े-टिन्न, चिड़ जानेवाला।

खिझाना (हिं० झिं०) चिड़ना, तड़कना, छोड़ना।

खिड़कना (हिं० झिं०) खिसकना, सरकना, चना-जाना।

खिड़काना (हिं० झिं०) टकराना, छटाना, टालना।

खिड़की (हिं० झीं०) १ लुट्टा द्वार, छोटा दरवाजा।

यह दीवारोंमें प्रकाश और वायु आने जानेके लिये लगायी जाती है। २ फाटकका छोटा दरवाजा। फाटक बन्द करके लोगोंके आनेजानेको इसे खोल देते हैं। गुप्तद्वार, और-दरवाजा।

खिताब (अ० पु०) उपाधि, पदवी।

खिताबी (अ० वि०) उपाधिधारी, खिताब पाया हुआ।

खित्ता (अ० पु०) प्रांत, सूबा।

खिदमत (फा० खीं०) सेवा, टहल, नौकरी।

खिदमतगार (फा० पु०) सेवक, टहलुवा, नौकर।

खिदमतगारी (फा० खीं०) सेवलाई, नौकरी।

खिदमती (फा० वि०) १ सेवामें संलग्न, खिदमत करनेवाला। २ सेवा सख्तबीय, खिदमतके सुतपत्रिका।

खिदरापुर—बखई प्रांतीय कोल्हापुर राज्यका एक ग्राम। यह शीरोलसे दक्षिण-पूर्व पड़ता और शम्भेश्वर खासीके अधिकारमें रहता है। इसमें कपेश्वर महादेवका मन्दिर विद्यमान है। दीवारें लुप्त हुईं हुए काले पत्थरकी बनी हैं। गुम्बज पर पस्तुरकारी की हुई है। प्रधान भवनमें दो दो नकाशीदार मण्डप लगे हुए हैं। मण्डपोंमें दो चौकें हैं। उनसे बाहरमें बीस और भीतरीमें १२ तरायंदार खम्भे खड़े हैं। मन्दिरके सामने खुला हुआ स्वयंभू है। बाहर की ओर आड़की छटी दीवारमें ३६ छोटे और भीतर घेरे की शकलमें १२ खम्भे लगे हैं। मन्दिरसे बाहर नक्कारखाना है। मन्दिरके दक्षिण द्वारमें एक पार्श्व पर देवतांगराधरोमें सिंहदेवकी देवगिरि यादव शिलालिपि लगी है। इसके अनुसार १२३५ शककी मीराजका खण्डलेश्वर ग्राम कोपेश्वरकी पूजाके उद्देश्यसे उत्सर्ग किया गया। यहां

एक जैन मन्दिर भी है। प्रति वर्ष पोषमासकी कोपेश्वरका मेला होता है।

खिदिर (सं० पु०) खिद्यते कृष्णापक्षेण दुःखेन तपसा वा खिद-किरन् । शम्भिसिद्धि सिद्धौपदि । उ० ११५१ १ चन्द्र, चन्द्रमा । २ दौन । ३ तापस ।

खिदिरपुर—कसकत्तेके दक्षिण एक उपनगर। यह अक्षा० २२° ३२' २५" उ० और देशा० ८८° २२' १८" प०में अवस्थित है। यहाँ जहाजोंका बड़ा कारखाना है।

कमलका शिखी।

खिद्यमान (सं० वि०) खिद ताच्छीत्ये चानम् । १ खिद-युक्त, रक्षीदा । २ सेन्यप्रस्त, फौजमें घिरा हुआ । ३ उप-तप्त, खस्ता हुआ ।

खिद (सं० पु०) खिद-रक्त । शम्भिसिद्धि सिद्धौपदि श्रुतो-त्यादि उ० ११११ १ रोग, बीमारी । २ दरिद्र, गुर्वत । ३ भेदन, कटाव ।

खिदन् (सं० वि०) खिद अन्तभूत षिजये खनिप् । खिदकारक, रुझानेवाला ।

खिन्न (सं० वि०) खिद-क्त । १ दैन्ययुक्त, गरीबीका मारा हुआ । २ शालस, सुस्त । ३ खिदयुक्त, ग्राह्य ।

खिपरा—१ सिन्धु प्रदेशके थर और परकर उपविभागका एक तालुक। यह अक्षा० २५° २६' तथा २६° १५' उ० और देशा० ६६° ३' एवं ७०° १६' पू० बीच पड़ता है। क्षेत्रफल २२४६ वर्गमील है। इसमें १२५ गांव लगे हैं जिसमें कोई ५४६८१ लोग बसते हैं।

२ खिपरा तालुकका बड़ा शहर। यह प्रायः ११० वर्ष पहले स्थापित हुआ था। खिपरा पूर्ण नाराके किगारे अक्षा० २५° ४८' ३०" और देशा० ७६° २५' पू०में बसा है। यहां प्रधानतः किसान लोगोंका वास है। कपास, जूत, नारियल, बीनी, तम्बाकू और अनाज आदिका व्यापार होता है। कपड़ा बुनने और छापनेका काम भी खूब है। खिपरामें दीवानो फौजदारी प्रदानत, थाना, डाकघर और धर्मशाला विद्यमान है।

खिमलासा—मध्यप्रदेशके सागर जिलेकी कुराई तहसीलका एक शहर। यह अक्षा० २४° १२' ३०" उ० और देशा० ७८° ३४' ३०" पू०में सागर नगरसे २१ कोस उत्तर-पश्चिम पड़ता है। आवादी कोई-३ हजार है।

शहरकी चारों तरफ १४ हाथ ऊँची चहारदीवारी लगी है। बीचमें एक दुर्ग है। उसमें दो बटिया घर बने हैं। खिमलासाका 'बीस मइल' (भाईनाघर) नामक हिन्दू राजभवन और गुम्बजदार समाधिमन्दिर देखने योग्य है। सीसमइलकी पहले जैसी तहक मडक अब नहीं रही सही, परन्तु आज भी दृढ़ता और तितलके कमरे भाईनेवे जडे है।

पहले यह नगर दिल्लीके बादशाहके अधीन रहा। परन्तु १६८५ ई०को नि सन्तान पतनराजका मत्तु होने पर पेशवाके प्रतिनिधि खिमलासाका किला अधिकार कर बैठे। १८१८ ई०को सागर जिलेके साथ यह स्थान ब्रिटिश गवर्नमेण्टका अधिकारभुक्त हो गया। १८५० ई०के जुलाई महीनेमें जब सिपाहियोंका विद्रोह हुआ, भानपुरके राजाने इस स्थानके आक्रमण किया था। विद्रोहियोंके अत्याचारसे नगरकी विशेष क्षति हुई। उस समय बहुतसे अधिवासी शहर छोड़ भागे। आज भी वजनसे टूटे फूटे और खाली मकान पडे हैं।

खियाना (हि० क्लि०) १ विस जाना, रगड खाना, मिटना। २ खिलाना, भोजन कराना।

खिर (स० क्लि०) नगर, जोलाहोंकी टरकी। इसमें बानेका सत रहता है। बुनते समय खिरकी एक तरफ से दूसरी ओर चलाना पडता है।

खिरडरी (हि० क्लि०) कत्येकी एक गोभी। इसमें खुशबूदार मसाला डाला जाता है।

खिरन—युद्धप्रदेशके रायबरेकी जिलेकी दक्षमऊ तहसीलका एक परगना। इस परगनेके उत्तर मोरवा, पूर्वकी दक्षमऊ तहसील और रायबरेली, दक्षिणकी सरनी और पश्चिमकी पनहा, भगवन्तनगर, विहार और पाटन आदि कई एक विभाग हैं। खिरनका क्षेत्रफल १०२ वर्गमील है। इसमें १२३ गांव या मौजे लगते हैं। सबसे ७८ मौजे ताहकदारी बीस लमीन्दारी और बीसवा पटोदारीके बन्दोबस्तमें हैं। सबसे पहले इस परगने पर मऊ लोगोंका अधिकार रहा, किन्तु कोई ७१० वर्ष हुए पेशेस वंशके राजा अमयचन्द्रने उनके हाथसे क्शन अपने राज्यमें मिला लिया। उनके बादमें पुरुष राजा सातनने खिरन परगनेके

बीच सातनपुर नामक एक नगर स्थापन किया था। फिर अथकने नवाब अथक उद्दौलाके राजत्व समय किसी तहसीलदारने यहा एक दुर्ग बनाया। किलेके पास ही खिरन शहर और तहसीलदारी है। खिरनमें एक पाठशाला और साप्ताहिक बाजार है। हिन्दू राजाओंके अधिकारकालकी महीका जो किला बना था, उसका ध्व सावशेष आज भी देख पडता है।

खिरनी (हि० क्लि०) चौरिषीहद, एक पेड। यह दरखत लंबा और सदाबहार होता है। खिरनीका काष्ठ रक्तवर्ण, चिकण, कठिन तथा सुष्ट निकलता और कोरह और घर बनानेमें लगता है। उसको बड़ी सुगन्धसे खराद भी कहते हैं। २ चौरिषीफल। यह निमकोडी जैसा दूबिया और मोठा रहता और प्रीष ऋतुको पकता है।

खिरपाई—बङ्गालके मेदिनीपुर जिलेका एक कसबा। यह अ० २२ ४३' अ० और देश० ८७ १०' पू० पर अवस्थित है। लोकसंख्या ५०४५ है। यहां बहुतसे जुलाहे रहते, जो एक तरहका बटिया और कीमती कपडा तैयार करते हैं।

खिरहो (स० क्लि०) महासम्राट नाम चुप, एक भांडी।

खिराज (अ० पु०) खर मासगुजारी, राजा प्रजाको शत्रुसे बचाता है, इसीसे वह जमीनकी पैदावारका कुछ भाग कर स्वरूप राजाको अर्पण करती है। इसी राजमागका सुचलमानी नाम खिराज है।

खिरास—कठियावाड़के हला विभागका एक छोटा राज्य। इसका भूपरिमाण १३ वर्गमील है। खिरासरके राजा अहमद सरकारको २३६५) और जूना गढके नवाबका ३५०) रु० खिराज जसा देते हैं। इसमें १३ गांव लगते हैं। लोकसंख्या ३११७ है। सालाना आमदनी १५४३२ रु० है।

खिरिरना (हि० क्लि०) १ पनालकी सीक सीकके हालमें हालकर जानना। २ खुरचना।

खिरैटी (हि० क्लि०) बरियारा, धीजबन्ध।

खिल (स० त्रि०) खिलक। १ पकट, जो जाता न गया हो। २ अस्त्र, लकड़ा हुआ। (पु०) ३ विष्णु।

उ परिशिष्ट। षट्शतिका श्रीसूक्त आदि, अजुर्वेदका शिवसङ्घस्य प्रथिति और महाभारतका हरिवंश 'खिन' कहनाता है।

खिनप्रस (अ० स्त्री०) सरोपाव, वादगाह या राजासि मिलनेवाली पोशाक यगैरह। यह सम्मान सूचनाके ली जाती है।

खिनकृत (अ० स्त्री०) १. सृष्टि, दुनिया। २. जनसमूह-भीड़।

खिनकौरी (हिं० स्त्री०) खिलवाड़, खिलकूट, हंसी, दिहायी।

खिलखिलाना (हिं० क्रि०) षट्हास करना, कड़कना मारना, जोरसे हसना।

खिलचीपुर—भारतवर्षकी भूपान एजेन्सीका एक देगी राज्य। यह अक्षा० २३° ५२' तथा २४° १७' ३०' और देशा० ७६° २६' एवं ७६° ४२' पू०के बीच पड़ता है। क्षेत्रफल २७३ वर्गमील है। इसके उत्तर राजपूताना एजन्सीका कोटा राज्य, पूर्वको राजगढ़, पश्चिमको इन्दौर और दक्षिणको नरसिंहगढ़ है। इसका पुराना नाम 'खीचीपुरपाटन' है। पहले खिलचीपुर उत्तरका गागौर, दक्षिणकी सारङ्गपुर और पश्चिम तथा पूर्वको कुमराज तक चला गया था। परन्तु पठानोंके आक्रमणसे धीरे धीरे घट पड़ा। मालवेका यह प्रान्त खिनचीवाड़ा कहलाता है। यहांकी भावहवा अच्छी है।

खिलचोपुरके राजा खीची चौहान है। १५४६ ई० को संघसेलने यह राज्य स्थापित किया। गागौरकी खीची राजधानीसे उन्हें चंराज अगड़े कारण भाग जाना पड़ा था। दिल्लीसंघाटने उन्हें ली वीकेको समद दी, उसमें अब इन्दौरमें लगनेवाला जीरापुर तथा माचलपुर परगना और खालियरका अजालपुर भी था। १७७० ई०की यह प्रान्त खीचियोंके हाथसे निवाल गया। कारण अभयसिंहको सिंधियासे सन्धि कर लेना पड़ा था। १८०३ ई०को खिलचीपुरके राजा अभयसिंहको 'राव बहादुर' का पुरस्कार खिलचोपुर मिला। १८२२ ई०की भवानीसिंहकी सिंहासनारूढ़ हुए। राव बहादुर दुर्जनसलसिंह साहेब बहादुर वर्तमान अधीश्वर हैं। राजाकी २ तोपोंकी सहायता मिलती है।

लोकरनरया ३२१७३ है। राज्यके उत्तरकी भूमि पठरीली, परन्तु दक्षिणपश्चिमकी उपजाऊ है। वापिक-आय १ लाख १० हजार और वृष्टिग गवर्नेसिष्टकी दिया जानियाला कर १२६२५) रु० है।

२ मध्यभारतके खिनचीपुर राज्यका प्रधान नगर। यह अक्षा० २४° ३' ३०' और देशा० ३६° ५५' पू०में अवस्थित है। आर्देन-ई-अफगरीमें इस नगरका नाम 'खिनजीपुर' लिखा है। लोकसंख्या प्रायः ५१२२ है। यहां डाकखाना, मकान, जेल और अस्पताल बना है।

खिलजी (फा० पु०) अफगानस्तानकी सीमा पर रहनेवाले पठानोंकी एक जाति। अला-उद-दीन इमरान-दानमें खूब सशस्त्र वादगाह हो गये हैं। खिनजी घरानेने भारतमें १२८८ ई०से १३२१ ई० तक राज्य किया।

खिलना (हिं० क्रि०) १ फूटना, फटना, कली भी पंख-दियां खुलना। २ प्रमत्त होना, सीजमें आना। ३ अलगना, ठीक जंघना। ४ बीचसे फटना, दरकना।

खिनवत (अ० स्त्री०) एकान्त, तनहाई, अलाहिदगी। खिनवतखाना (फा० पु०), एकान्त, स्थान, निराली जगह।

खिनवाड (हिं० पु०) हंसी खेल, ठट्टा।

खिलवाना (हिं० क्रि०) १ भोजन करना, खाना टिनवाना। २ खुग कराना। ३ टुटाना, खूब अच्छी तरह भुंजाना। ४ खीले लगवाना; गठना।

खिलाई (हिं० स्त्री०) १ भोजनक्रिया, खाना पीना। २ खिलानेकी क्रिया। ३ लड़कोंको खेलानेवाली दाई।

खिलाड़, खिलाड़ी देखो।

खिलाड़ी (हिं० पु०) १ खेल करनेवाला, कलावाज। खिलाड़ीकावान पकड़ लड़ना, पटा बनेठी सुमाना और ऐसी ही दूसरी कसरते करना है। २ जादूगर, हाथकी सहाई दिखानेवाला। ३ बेलोंकी एक जाति।

खिलारी देखो।

खिलात—बलूचस्तानकी राजधानी। इसका ठीक नाम किलात है। बलूचस्तानके राजा खिलातके खान कहलाते हैं। यह नगर अक्षा० २८° ५६' ३०' और देशा०

६६° २८' पू० में बसा थी। समुद्रसतह से ४५१२ हाथ ऊँचा था। खिलात शहर शाहमदीन नामक चूनाके पहाड़की चोटी पर बनाया गया है। इसमें ३ फाटक बने हैं। नगरमें दो दुर्ग हैं। पुराने किल्लेका नाम मिरा है। यहाँ आजकल खान्दानों महल बन गया है। शहरकी चहारदीवारा महीबे बनो, जिसके बीच सुरवे लगे हैं। चहारदीवारी और भीरचो में गोली चमकानेके लिये छिद बने हैं। शहरकी राहें बहुत परार हैं। बाजार बड़ा और सब चीजों में भरा है। नगरमें एक बख्शमन्सिमा नदी बहती है। मिरा दुर्गमें बहुतसी मस्जिदें हैं। इसे वर्तमान मुसलमान राजघरके पूर्ववर्ती हिन्दू राजाघोने निर्माण किया था। खिलातकी राजसभा बहुत बढिया है। राजसभाके सामने ही बरामदा लगा है। यहाँमें नगर और चारो ओरोंके पहाड़ोंका दृश्य बहुत अच्छा देख पडता है। नगरके पूर्व और पश्चिमकी दो उपकण्ठ हैं। इनको मिलाकर शहरके बागिचोंका प्रसार कोई १४ हजार है। खान् बहुरई कान्तिके बादमी है। नगरकी पूर्व ओर कितनी ही सुस्थ उद्यान विभिन्न उपत्यकाएँ हैं। उनमें खानकोह सबसे बडा है।

बनार और बख्तखान शिको।

खिलात नगर—बलूचस्थानके खिलात राज्यकी राजधानी। यह २६° २' ३०' और देशां ६६° ३५' पू०में कोटामें ८८ मील दूर पडता है। लोकसंख्या दो हजार से अधिक नहीं। अधिवासियोंमें कुछ हिन्दू व्यवसायी भी हैं। नगर प्राचीनस्थित है। मिरा नामक दुर्गमें खां शाहम रहा करते हैं। ई० १५वीं शताब्दीकी यह भीरवारियोंके हाथ लगा और यहमदजाई खानोंकी राजधानी बना। १५०८ ई०की इसने यहमद शाह दुरानीका आक्रमण रोका और १८६८ ई०की अंगरेजोंके हाथ लगा। एक वर्ष पीछे फिर सरवां विद्रोहियोंने इसको अधिकार लिया। किम्बे कीचे कान्डीकीका एक मन्दिर है, जो मुसलमानों तारोफसे पहलकेका बना हुआ मान्य पडता है। देवकी मूर्ति समृद्धिका विष्णु धारण किये हुए दो दीपकोंके सामने जो निरन्तर लका करते हैं, पडी है।

खिलात (हि० क्लि०) १ खेलमें खगना। २ भोजन करना। ३ फुलाना।

खिलाफ (५० वि०) विरुद्ध उभरना।
खिलाफत (५० स्त्री०) १. मुहम्मदके प्रतिनिधिका धार्मिक उत्तराधिकार, धर्मसंस्थानके प्रतिनिधित्व। २ खलीफाका स्तथा, खलीफाका बख्त। प्रधानतः इस शब्दका अर्थ दामादकष और बगदादमें मुहम्मदके पुत्राकालके समय तक राजत्व करनेवाले राजाघोँला उत्तराधिकार है। ३ मुसलमान जगत्के धार्मिक प्रतिनिधिका पद।

पूर्वमें राज्य करनेवाले मुसलमान लोगोंका इतिहास, जो खलीफा कहलाते थे, प्रधानत तीन बडे भागोंमें बाटा है— (१) मुहम्मदके ठीक पीछेवाले उत्तराधिकारी पहले चार खलीफे। (२) उमैयद खलीफे और (३) अब्बासिद खलीफे।

१—पहले ४ खलीफे।

मुहम्मदके मरनेपर मश्र उठा था—कोन उनका उत्तराधिकारी होगा। अमर नामक किसी प्रदेहीने बाइरी मुसलमान जाकर मदीनाके बागिचोंकी दवाया और मुहम्मदके मित्र तथा मश्रर अनुचरकी खलीफा बनाया।

पर यहका शासन—पहलेकने उस समय वही खलीफे

दिखनाथी थी। मुहम्मदने युनानियोंके विरुद्ध जो लड़ाई करनेका तैयारी की थी, इन्होंने उसकी बुफेसे भेज दिया और अपने आप मदीना नगरको रखा किया। फौज वापस आने पर अबूबक्र बनबाइरी पर आक्रमण करनेकी आगे बदे। परब मैदान लोड़ भागे थे। सिर्फ प्रथममें ही कड़ी लड़ाई हुई। अपने सिद्धपुत्र सुमेकिमाके अधीन बानू हनीफ लूच नडे थे। परन्तु क्षीत न सके।

पडोमी देगी पर धर्मयुद्धकी घोषणा भी मुहम्मद कर गये थे, नडे इसनाम-धर्मकी परबीमें सर्वप्रिय बनानेके लिये खासे जरिया थी। क्योंकि इसमें झूठ मारने मान भी मिल जानेका मौका था।

मध्य पूर्व-उत्तरपूर्व परबस्थानकी पधोनय करके खलीफाभी फाज निम्न युद्धेक पर लडे थे, शहीने यह बनवा होने पर औरियाको बुलायी गयी। ६३५

ई०की ग्रीष्म ऋतुमें दामासकसत्ता पतन हुआ और ६३६ ई०की २०वीं अगस्तको यारमुककी बड़ी सडाई लड़ी गयी। जिससे सल्ताट इराकियसको सीरिया छोड़ना पडी। इसी बीच इराकमें इरानिकी विद्रोह भी हो रहा था। ६३७ ई०की कदीसियाभी लड़ाईमें हार होवानसे उन्हें भी अपने साम्राज्यका पश्चिम अंश छोड़ना और खास इरानमें ही रहना पडा। सुसलमान सदाइनेके प्रभु बन बैठे और बिलकूल पिछले सालों ही यूफ्रिस और टिगरिस दोनों नदियोंके देशको उर्दोंने जीत लिया। ६३८ ई०की मेसोपोटेमियामें सीरिया और इराककी फौजोंका सामना पडा था। थोड़े ही समयमें उर्दोंने प्रायोंसे प्राचीन ऐतिहासिक देश पैन्टियाइन, सीरिया, मेसोपोटेमिया, पसीरिया और बाबिलोनिया जीत लिया था। इसके बाद ६४० ई०में मिसर भी जीता गया। गखन और होराकी रियासतें अरबोंके अड्डे बनो, नये साम्राज्यके केन्द्र कूफा और बसरामें थे। फिर भी कुछ दिनों मदीना ही इस नाम धर्मकी राजधानी रहा। जीतके पीछे पहली शताब्दीमें कितने ही ईसाई सुसलमान हो गये। परन्तु उर्दोंने ऐसा सुसलमान नागरिकोंके अधिकार पानेको ही किया था, वह जबदंस्तीसे सुसलमान नहीं बनाये गये। ६४१ ई०को नेहावन्दमें जो लड़ाई हुई, उससे इरान दबा था। अन्तकी ससानीद साम्राज्यका प्रत्येक प्रांत सुसलमानोंके हाथ लगा और नौजवान राजा अब यज्दगर्दकी अपने देशके कोर्नेमें इट कर बुी तरह मरना पडा। परन्तु इरानी अपने पवित्र अधिकारों, राष्ट्रीयता और धर्मके वचावको अरबोंसे लड़ते जाते थे।

२ जमरका शासन—६३४ ई०की १२वीं अगस्तको अबू बक्रके मरने पर जमरकी खिलाफत मिली। इन्हींके १० वर्षके राजत्वमें खास कर बड़ी बड़ी जीत हुई थीं। यह कभी मैदानमें नहीं गये, सिवा ६३८ ई०की सीरिया घूमने पहुँचनेके मदीनामें ही बने रहे। ऊसर-बड़े बुद्धिमान् थे। अपने राज्यमें अमन-चैन कायम करनेको इन्हींने सुसलमानो जीत और प्रांगी न बटायी। उर्दोंने जो वाक्य कह कर राज्यभार ग्रहण किया था, कभी न

भूलीगा—ईश्वर माफी है; आप लोगोंमें जो सबसे कमजोर होगा, जब तक मैं उसको अपने हक न टिक्का लूँगा, मेरी निगाहमें सबसे ताकत पर रहेगा। परन्तु जो सबसे मजबूत है, जब तक कानूनको नहीं मानता, सबसे कमजोर समझा जावेगा। मदीनाकी मसजिदमें किसी कूफां मजदूरने जमरकी कुरी भोक दी और ६४४ ई०के नवम्बर महीनेमें मर गये।

३ जतहमानका शासन—अपने मृत्युसे पहले जमरने निम्नलिखित ६ मोहाजिरों (परदेगियों) को उर्दोंमें-से किसीको खलीफा नामजद करनेको कहा था—जतहमान, अली, जुबैर, तालह, 'सैयद और अबदुर-रहमान। अबदुर-रहमानने निर्वाचनमें खड़े होनेसे इनकार करके जतहमानको खलीफा बनानेके लिये अपना मत दिया था। इन्हींको खिलाफत मिल गयी। परन्तु यह बहुत कमजोर बादशाह थे, इसनाम सरकार बिलकूल कुरेश सुभाइवोंके हाथ जा पड़ी थी। वह अपने आप इराक प्राप्तकी कुरेशोंकी फुजवारी बताने लगे।

अली, जुबैर और तालहने विरोध किया था। उनके दलमें अच्छे अच्छे लोग थे। उर्दोंने कहा कि कुरेशोंने इसनामका कोई काम नहीं किया, वह कैसे अमीरकी आकर अपना प्रभुत्व जमा सकते हैं। प्रायोंमें सब जगह लोग खलीफा और उनके सुवेदारोंके विरोधी बन गये, केवल सीरीयामें जतहमानके भतीजे मोआवियाने अपने सुप्रबन्धसे शान्ति भङ्ग होने न दी। इराक और मिसरमें बड़े जोरकी हलहल थी। इसका मुख्य उद्देश्य जतहमानकी राज्यच्युत करके अलीको सिंहासन पर बैठाना था, जिन्होंने अपने आप काम किया और जो सुहम्मादके निकटस्थ सम्बन्धोय थे; कुछ उल्ताही लोग उन्हें एक तरहका मसीहा भी मानते थे। विद्वेष्टियोंने बलपूर्वक अपना काम निकालना चाहा। वह झुण्डके झुण्ड मर्दाना पड्डे और जतहमानके कई रियायतें लखरन् मांगने लगे। यद्यपि खलीफाकी फौज सिन्ध और ओक्सससे अटलाण्टिक तक मारकाट मचा रही थी, मदीनामें उसकी बहुत कम थी। इन्हींने बलवाइयांकी रियायतोंसे खुश कर दिया; परन्तु जैसे

को वह वापस चले गये, काम फिर पुराने ढंग पर ही होने लगा। इससे जालत विगडते ही रही। ६५६ ई० को दोबारा बलवाइयोके सरदार मिसर और ईराक से बहुत ज्यादा हिमायती लेकर मदीना पहुँचे। खलीफाने फिर भूटे वादे करके उन्हें टानना चाहा था परन्तु बलवाइयोंने इन्हें इनके घरमें ही घेरके पकड़ लिया और राज्य छोड़ देनेको कहा। दाके राज्य छोड़ने पर राजी न होनेसे उन्होंने ८० वर्ष की अवस्थामें इनको बंध किया था।

४. पत्नीका शासन—पधिकांश विद्रोहियों ने पत्नीको खलीफा बनाया दिया। तानह और जुबैरको भी इनका सम्मान करना पडा था। परन्तु यह दोनों वफादारकी मा एेगाके साथ इराकको भाग निकले और बसरामें जाकर बलबेका भ्रष्टा चला किया। परन्तु ६५६ ई०के नवम्बर मासको बसरामें भी लड़ाई हुई, तबह और जुबैर काम भाये पर एेगा पकड़ ली गयीं। फिर भी पत्नी शान्ति स्थापन न कर सके। मोपावियाने दामम कसबी मसजिदमें जनहमानके महुतुहाम कपडाको देखाया और अपने सिरीयो की बटला लेने पर उसकाया था। अन्तको पत्नी मार डाले गये और इससे सुसममान जगत्में उनका बडा नाम हुआ।

२—उमैयद वश।

मदीना जातनेसे मुहम्मदके दुश्मनो को भी उन्हें 'इश्गरदून' मानना पडा था। मुहम्मदने देखा कि मदीनाके लोगो की वनिस्वत उनके दुश्मनो में ज्यादा कायिल पादनी थे। इसीसे मक़े और यमनकी सूबेदारी उमैयदो या मखज़ूमो और दूसरे कुरैशियो का सौंधी गयी। अबूबक़ने भी मुहम्मदकी ही बाल रही। मुहम्मदके मरने पर परबीत लो बलवा लिया और सुसममान लो ईराक और सीरोया पर चढ़े, धनापति उमैयद पादि ही थे। खमर इस वखसे चलन न हुए। छद्मनि ही अबू सुफियानूक अंडके यजीद और यज़ीदके मरन पर उनके भाई यूपावियाको मोरा याका सुबेदार बनाया और मिसर प्रान्त अम्न इब्न अल पासके नीचे लगाया था। उमैयदोंके राजशासन का वर्णन बहुत कठिन है।

Vol VI. 8

१. मोपावियाका शासन—मुहम्मदके मक़ा फतह करने पर मक़ाके सरदार अबू सुफियानूके जहके मोपावियाने अपने वाप और भाई यज़ीदके साथ इसनाम धर्म पध्प किया और वह मुहम्मदका एक मन्त्री चुना गया था। जब अबूबक़ने सीरोया जीतनेका फौज भेजी, अबू सुफियानूके बडे जहने यज़ीद एक सुबेदार और मोपाविया उनके नायब थे। ६५६ ई०को खमरने उन्हें दामासकम और पैलेस्टाइनका गवर्नर बनाया और जनहमानने इस अधिकारमें सीरियाका दक्षिण पक्ष और मेसोपोटामिया भी मिलाया था। खोजनताइन सम्राट्से इन्होंने खल और जल दोनों जगह युद्ध किया। ६५५ ई०को लसियाकी अन्धधुन्ध लडाईमें यूना-सम्राट् २य जीतएानका जहाजी बेटा पूरे तौर पर हारा था। किन्तु पत्नीसे भगदा होने पर उत्तरमें इनकी तरकी रुक गयी।

मापाविया एक प्रकृत शासक थे और समय साम्राज्यमें सोरोयाका प्रबन्ध अच्छेसे चल्ता था। इनको मियोय इतना चाहते और मानते थे, जब जनहमानके खूनका बटला लेनेको कहा गया, वह एक खर-सं बोल उठे दुका देना थावका और उसको मानना हमारा काम है। ६५० ई०को यूफ़्टिसके पास लो मुह हुआ, मोपाविया कुरानकी' दोहाई दे कर जीते थे। इस पर कई सरपक्ष सुकरे हुए। उन्होंने पत्नीसे राज्य छोड़ने और दूसरा उत्तराधिकारी निर्वाचन करनेको कहा था। पत्नीके इनकार करने पर मोपावियाने राज्यशासन अपने हाथमें ले लिया और मिसर पर पाक-मण किया। फिर पत्नीके उत्तराधिकारी अबूबक़ पुत्र मुहम्मद पर लोग विगड खड़े हुए लो, जनहमान वचक नेता थे। मुहम्मद खदेरे और भागते भागते पकड़े और कियो कियोके कथमानुसार एक गधेकी खालमें सोये जाकर जला दिये गये।

पत्नी वीच मापावियाने यह देखा कि पत्नी उन्हें कुचल छामनेको चिटा करेगे, यूनाियोसे प्रति वर्ष बहुत रुपया देनेको कह सन्धि कर ली। इनमें यह शर्त थी कि यूनायी शान्तिमन्त्र न करेगे और उसके घोर वन्धक देंगे। पहले पत्नी खरीजाइतदोंसे जहनेमें

लगे रहे, परन्तु सिफोनकी लड़ाई जीत आधाविद्या पर
 अदनीवी तैयार हुए। किन्तु उनकी फौजने पैसा करना
 न चाहा। अर्थात् ही एक विररीत नामक आदमी
 इस बात पर विगड़ खड़े हुए कि उन्होंने मरपद्धीका
 फौसदा न माना था और कितने ही लोगोंको कर-
 खादि न देनेकी उलटाने लगे। अलीने वड़ी शुकुनमें
 उन्हें दबाया था। परन्तु मोआविद्याने लड़ने उनके
 खाई शक्ति तक न गये। मोआविद्याने अपनी तरफसे
 एलीके राज्यमें जगातार हमले किये और अपने
 गुमाशतीके जरिये बसगामे खीफनाक बमबा खडा करा
 दिया। फिर मदीना और मक्के पर चढ़ाई होनेमें लोग
 मोआविद्याकी खनीफा मानने पर मजबूर किये गये।
 ६३२ ई०की एलीके मार डाले जाने पीछे उनके लड़के
 इसन खिलाफतके लिये चुने गये थे, परन्तु मोआ-
 विद्याके साथ लड़ाई होनेके भयसे वह सिकुड रहे।
 मोआविद्याने बसरा लूट मारा सरकारी खजाना हिफा-
 जतके साथ मक्के भेज दिया था। जब इनके वंशज गद्दी
 पर बैठे और यह पक्ष विरक्त साधु बन गये, इसनने
 कुफाके खजानेका माल, जिसमें ५० लाख अथर्फियां
 थीं और ईरानी सूवे दरावकी मालगुजारी अपनी
 हुकूमतके बदले मांगी थी। जब यह बात चीत खुली,
 इसनके खीमेंसे बलया फूट पड़ा। इसन अपने आप
 जल्मी हुए और मदीनेकी पीछे हट गये, जहां वह
 आठनी वर्ष पीछे चल बसे। यह प्रवाद कि मोआविद्याने
 उन्हें लहर दिलाया था, बेतुनवाद है।

६६१ ई०की ग्रीस ऋतुमें मोआविद्या कुफामें
 दाखिल हुए और अनुयायियोंके सम्राट्जैसे स्वीकार
 किये गये। इस वर्ष को एकाका साल कहते हैं।

मोआविद्याके एक कट्टर दुश्मन जियाद वचे रहे।
 १४ वर्ष की अवस्थामें उन्हें बसराकी फौजका मानी
 काम सांपा गया था। वह एलीके एक वफादार नौकर
 रहे और बसरामें मोआविद्याको तरफसे जो बलवा
 खडा हुआ था, उन्होंने दबा दिया। फिर वह फारस
 और किरमान पहुंचे, जहां उन्होंने शान्तिरक्षा की
 और लोगोंकी अलीके पक्षमें बना रखा। एलीके मरने
 पर जियाद इसखारमें किला बांध बैठ रहे और
 आक्समपण करनेकी राजी न हुए।

जैसे ही मोआविद्याका हाथ खाली हुआ, उन्होंने
 युनाके विरुद्ध अपनी सैन्य चालना दी। इसाकके
 अधीनस्थ होते ही उन्होंने मौजूदा मुलहामे न मान
 अलानों और यूनानीयों पर अपनी फौज चढाये थी।
 उस समयसे कोई ऐसा वर्ष कहीं आया, जिसमें जड़
 न हुए हो। ६६६ और ६७४ ई०की मोआविद्याने
 कुमुनतुनिया जीतनेकी कोशिश की। उनके लडाई
 वेड़ेने सारजिकस अधिकार किया था। प्रकरी कामें
 भी मुसलमान राज्य बढ़ानेका काम जोरसे चना।
 ६७० ई०की इन्होंने कैरवानकी नींव डाली जहां आज
 भी उनके नामकी बड़ी मसजिद खड़ी है।

आखिरकी कुफाके शाकिमने जियाद का नटखुटपन
 विगाड डाना, परन्तु मोआविद्याने उन्हें पदू सृफियान्-
 का पुत्र और अपना भाई जैसा मान दूसरे वर्ष बसरा
 और उसमें लगनेवाले पूर्व प्रान्तोंका अधिकारी बनाया
 था। जियादने शीघ्र ही वहां फिर शान्ति प्रतिष्ठा की।
 ६६३ ई०की खरिजाइतोंके बलबेमें उनके मरदार मारे
 गये। परन्तु शीया जोग नाखुश थे। जियादने, अम्सकी
 अपना सचकारी बनाया था, जिन पर सुकवारकी बड़ी
 मसजिदमें नमाज पढनेके समयपत्थर फेंक गये। इस
 पर जियादने अपने आप जा शीयाओंके नेताथी गिर-
 फ्तार किया और १४ बन्वाइयोंको जिनमें कई
 सम्वान्त व्यक्ति थे, दामासकस पकड़के भेज दिया।
 उनमें सात जिहोंने वश्यता स्वीकार न की, मार डाले
 गये। शीयाओंने उनकी शहीद जैसा तसव्वर किया
 और मोआविद्या पर बहुत बंधा पाप करनेका इत्तहाम
 लगाया। फिर पूर्व की साम्राज्य फैलानेका काम हाथ-
 में लिया गया। इसके लिये इसको सबसे बड़ी फौज
 देनी पड़ी थी। जियादकी सुरासानको मिजी हुई
 पहली फौजने पुनर्वार सर्व, हिरात और बलखकी
 अधिकार किया, तोखारिस्तान जीत लिया और शीन्-
 सस तक कदम बढ़ा दिया। ६७३ ई०की जियादके
 लड़के अबदुल्लाने उल्लानदी पार करके चीखारा अधिकार
 किया और लूटका मान्नाद फांद जो द्रान्स प्राक्कि-
 आगके आबारा तुर्कोंसे मिला था, बच वापस आये।
 अबदुल्ला अपने साथ बसराकी २०० तुर्कों तीरन्दाज

1. सोये थे। खलीफा अतहमानके लडकेने जिन्हे मोपा
 2. विधाने खुरासानका हाकिम नियुक्त किया था, ६०४
 3. ई०को समरकन्दके ऊपर चढ़ाई की। दूसरे सेनापति
 4. सिन्ध तक घुस गये और काबुल, चीजस्तान, मकरान
 5. और खन्दाहारको उर्दने जीत लिया। ६०२-६०३ ई०
 6. को जिवाद्के मरने पर ऐसा अमन चैन बढ़ा, किसीकी
 7. अपनी जान या मानका खोफ न रहना और अपने
 8. धीरत भी अपने घरमें खुले 'किवाडा' मरफूज्यो।
 9. मोपाविद्या एक पादशं परब सैयद था। निम्न
 10. लिखित प्रवादसे खमी बुद्धिमत्ताका पूर्ण परिचय
 11. मिलता है—मोपाविद्याका एक प्रान्त भवदुहा वी०
 12. लुवैरके मुक्तसे मिला था। उन्होने एक सख्त
 13. चिट्ठेमें मोपाविद्याके गुनामोकी यह शिकायत की
 14. कि वह उनके राज्यमें अनधिकार प्रवेश करते थे।
 15. मोपाविद्याने इसके जवाबमें अपने धेटे यजीदकी यह
 16. बात न मान कि उस श्रेष्ठजीके लिये लुवैरको मारी
 17. सजा मिलनी चाहिये। एक खुयामदी चिट्ठी लिखी,
 18. जिसमें अनधिकार प्रवेश पर खेद प्रकट किया और
 19. गुनामो और राज्य दोनो को लुवैरके लिये छोड़ दिया।
 20. इस पर लुवैरने राजभक्तिका चापछ दिखाया था।
 21. इससे यजीदकी शिकाके लिये भी एक नीति निकल
 22. पाया।
 23. मोपाविद्या पर अपने कई दुश्मनो को लहर देनेका
 24. इराजाम लगाया जाता है। परन्तु उसका कोई प्रमाण
 25. नहीं मिलता। ६८० ई०को इनका मृत्यु हुआ। उनके
 26. पत्निस शब्द यह थे—तुम परमेस्वरसे डरना, जो बड़ा
 27. और शक्तिशाली है, क्योंकि परमेस्वर जिसकी प्रशंसा
 28. सबको करनी चाहिये, उससे हरनेवालेको बचाता है,
 29. जो परमेस्वरसे नहीं डरता, कैसे बच सकता है। ऐसी
 30. स्थितिमें यह बात नहीं मानी जा सकती कि वह
 31. शराबखोर, पिशाच और मजहबसे ऊपरवाह थे। उनके
 32. समय मदीनाकी बहचमकीके खिलाफ दामासकस
 33. और सीरीयामें पूरा अमन न रहा।
 34. ६९० ई०के मरने—मोपाविद्या मरते ही, विरोधका
 35. सङ्घठा हुआ। यजीद गहो बैठे थे। उन्होंने सबको
 36. राजभक्तिकी शपथ देनेकी सिखा। अपनीके बंगरो

हुसेनका यह कह कर खूफा बुनाया कि उन्हें पूराकका
 1. सुवेदार बनाया जावेगा। खली इस पर तैयार हो गये।
 2. यजीदने मगहूर जिवाद्के धेटे थोबैदलाको खूफामें
 3. शान्ति स्थापन करने भेजा था। हुसेन मक्कासे अपने
 4. खानदानके साथ खूफाको खाना हुए, परन्तु जब वह
 5. युफे टिसके पश्चिम करवनामें पहुँचे, ऊमरकी फोन देख
 6. कर हलके छूट गये। हुसेन इस उम्हद पर लडने लगे
 7. कि खूफासे उन्हें मदद मिलेगी और ६४० ई० १०
 8. अतुवरको प्राय अपने सभी साथियोंके साथ खेत
 9. रहे। परन्तु खूफामें हुसेनके तरफदार रहे एक
 10. चाफत समझा और ऊमर, थोबैदना और यजीदकी
 11. इत्यारा विधोपित किया। शीघ्र आज भी उन्हें बड़ी
 12. घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं। मुहरम्मका १०वां शीयापोमें
 13. दिन 'कतूनकी रात' कहलाता है। रातकी लगभ
 14. लगभ जहाँ ताबिये रखे जाते, लोग मरगिये पडते और
 15. रो रो देते है। करवना, जहाँ हुसेनकी काय है, शीया
 16. पो का सबसे पवित्र थायस्थान माना जाता है। उधेय
 17. दुसने हुसेनका सर उनके बालबर्षोंके साथ दामा-
 18. सकस पहुँचाया था। यजीद इस पर बहुत रछोदा
 19. हुए और कैदियोंकी सही समामत मदीना भेजा।
 20. लोग शीयापोके बलधेको खुरा बतलाते थे। लुवैरने
 21. हुसेनके मरने पर अपनेकी ईश्वरीय बशका एक शरणा
 22. मत, व्यक्त कैसा परिचित किया और खुपके खुपके
 23. खलीफाभी कह दिया। मदीनाकी सज्जिदमें लोगोंने
 24. यजीदसे लडनेकी प्रतिज्ञा की थी। यजीदने इसके
 25. खिलाफ अपने फौज भेजी। ६८३ ई०के शरफत मदीने
 26. सिपाहियोंन जाकर मदीना नगरके प्राङ्गण
 27. छात्रा और बहुत कडने सुनने पर भी लडने न हुआ
 28. सिरीयोको छल बन्से नगर देखल किया और तीन
 29. दिन तक लूट मार होती रही, मागरिकोभी वाप्य हो
 30. यजीदकी बशता माननी पडो। सम्भवतः ६८३ ई०
 31. १२ नवम्बरको यजीद मरें थे। फिर लुवैरने खुबकर
 32. अपनेको खलीफा बतलाया और लोगोको राजभक्तिका
 33. शपथ उठानेको बुनाया। वह शीघ्र ही परग, निगर
 34. और ईराकमें खलीफा खीलत हुए, और मदीनाको
 35. वापस हुए। उमैयद निकान बाहर किये गये।

३ द्वितीय मोघाविया—ठीक नहीं, इन्होंने कितने दिन राजत्व किया; परन्तु थोड़े ही दिनोंमें रोगसे ग्रसित हो प्राणत्याग दिया। ६८४ ई०की मराज राहतमें दामासकसके पास जो घोर युद्ध हुआ, दह्हाक और जुफैरकी एक बड़ी सेना रखते भी हारना पड़ा और हन्दोंमें इसका बड़ा वखान हुआ।

४ प्रथम सरवांका शासन—इन्होंने यजौदकी विधवा-पत्नीका पाणिग्रहण करके अपनी परिस्थिति सुधारी और अपने बेटे अबदुलमनिकके लिये खिलाफतकी राह निकाली थी। मराज-राहतकी लड़ाईके पीछे इन्होंने मिस्त्र जीत अपने दूधरे लड़के अबदुल अजीरकी उसका सुवेदार बनाया था। परन्तु हजाजकी भेजी हुई फौजके टुकड़े टुकड़े उड़ा दिये गये। अवैयदुस्सकी भेजी एक फौजके जिसके सेनापति इब्राहीम थे, सिरीयोंकी मोसलके पास हरा दिया। फिर जुवैयरने अपने भाई सुसअवकी वसराका भाला हाकिम बनाया और कूफा पर उसकी चढ़नेका हुक्म लगाया। सुखतार जिनका कूफामें बड़ा जोर था, पराजित हुए।

५ अबदुल मलिकका शासन—६८५ ई० ७ मईकी मेरवान सर गये। प्रवादानुसार उनकी स्त्रीने ही उनका गला घोट दिया, क्योंकि उन्हींने उसकी और उसके लड़के खलीदकी मारापीटा था। अबदुल मलिक आसानीसे तख्त पर बैठ गये, परन्तु कुछ दिन उत्तर सीरीयाके शरगड़ीमें फंसे रहे। लेवाननमें जराजिम सुस पड़े। इन्हें पहले उनसे और फिर कुस्तुनतनियाकी बादशाहसे एक नासुवाफिर सुलह करनी पड़ी। ६८८ ई०की अब इन्होंने सुसअव पर चढ़नेके लिये वोटनान हदीबमें डेरा डाला, इनके भतीजे इब्र अशदाकने खलीफा बनना चाहा था। इन्हें पीछे लौट अपनी ही राजधानी घेरनी पड़ी। अशदाक आत्मसमर्पण करने पर वाध्य हुए। इन्होंने उन्हें अपने महलमें बुलवा अपने ही हाथों मार डाला था। फिर इन्होंने ईराककी चढाई पर ध्यान दिया। बालीमैरामें सुसअवकी छावनी लगी थी। परन्तु इनका पहला काम जुफैर और सुखतारके सहायकोंको नीचा देखाना था। इसी बीच मसअवकी वसराका खतरनाक बलवा दवाना पड़ा। ६९१

ई०के मध्य भागकी अबदुल मलिककी छावनी देर-अन-जयलीकमें लगी थी। मसअव अपने प्रधान-सेनापति इब्राहीमके साथ नारि गये। इसमें खलीफाके लिये ईराककी राह खुली। इन्होंने हज्जाजकी २००० सिरीयोंके साथ मक्का जुवैयरसे लड़ने पड़नाया और वादी-अल कुराके पास ५००० आदमियोंके साथ पड़े तारीकको संवाद भेजा कि वह मदीना अधिकार करके हज्जाजसे जा मिलते। ६९२ ई० २५ मार्चकी मक्का घिरा था। छ महीने तक घेरा पड़ा रहा। अखीरकी हज्जाजने जुवैयरक सरकाट, दामासकस भेज दिया। इब्र जुवैयरके साथ ही वह प्रभाव भी मिट गया, जो मुहम्मदने इसलाम पर डाल रखा था। मक्काके घिरते समय कावामें राग लगने पीछे इब्र जुवैयरने दरगाहकी फिर बना कर बढ़ा दिया। परन्तु हज्जाजने नया हिस्सा तोड़ कावेकी पहले हो जेसा रख छोड़ा। १० साल तक सीरोया और मेसोपोटामियाके रेगस्तानमें हमलों पर हमले होते रहे और इनका भीषणता पर कितने ही हन्द प्रवन्ध लिखे गये।

४० दिन ठहरके जब अबदुल मलिक ईराकके सारिया लीटे, कूफा और वसरामें अपने दो प्रतिनिधि जैसे उमैयद शाहजादे छोड़, चले। मोहम्मद खलीफाके कहने पर खरीजीतसे लड़ते थे, परन्तु उक्त दोनों शहजादोंके उनकी मदद न कर सकने पर खरीजीता एकसे ज्यादा लड़ाई जीत गये। मुहम्मदकी फौज उन्हें छोड़, अपने अपने घर चली गयी और कितना ही सम्भाने बुझाने पर भी न लीटी। फिर हज्जाजने कूफा का सैन्य संग्रह किया और सहायता पा कर मोहम्मदने खरीजीतोंकी दवा दिया। वह ६९७ ई०के आरम्भमें हज्जाजके पास वसरा वापस पड़चे। उन्हींने इन्हें खुरासानका अधिकारी बना ट्रान्स-भाकसियाना पर कई चढ़ाईयां की थीं। ६९५ और ६९६ ई०की अपने पाप हज्जाजकी शकीयसे लड़ना और उनकी दवाना पड़ा। उन्हांने कूफा जीत अपनेकी नवा बतलाया था। फिर सीजस्तानका सुवेदार अशअव बलवाई हो गया और सूस्तारके पास हज्जाजकी मार भगाया और वसरामें प्रवेश किया। इसके बाद वह कूफा पर चढ़ा था,

जिसको उसने अधिकार कर लिया। हज्जाजने कूफामे १८ मील पश्चिम टैरकुरामे डेरा डाला जहाँ खलीफाके भाई मुहम्मद और उसके लडके अबदुल्ला उसके भिये नई फौज ले पहुँचे। ७०२ ई०के जुलाई मास फौजलेकी एक लड़ाई हुई। हज्जाज जोते और इबन पगबट बसराकी भागी थे। वहा उन्हेने नयी फौज इकट्ठा की, परन्तु मामकिनकी खूखारजङ्गमें फिर डार होनेसे वह अहम्याजमें जा क्रिपे, जहामे हज्जाजकी फौजने उन्हें जस्ट निकाल बाहर किया। फिर बन्धार्ई सीजी स्तानकी इटा और फिर काबुल पमीरके पास जाकर रहा था। उसके साथी खुरासान भाग गये, जहाँ यजीद सूबेदारने उनके इधियार छीन लिये। काबुलके पमीरने धीरेबाजकी छलसे मार डाला था। उसका सर पहले हज्जाजके पास और वहासे दामसकस भेजा गया। यह ७०३ या ७०४ ई०की घटना है। फिर यजीद से खुरासानका अधिकार छीन लिया गया। हज्जाजने उन पर बलवाइयोकी तरफटांगे करनेका इतजाम लगाया था हज्जाजने पहले अपने भाई सुफहलकी और फिर कुतैयबकी खुरासानका सूबेदार बनाया और तीन तक इसनाम धर्म फैलानेकी पादश दिया। ७०२ ई०की हज्जाजने बसरा और कूफाके बीच नया यासखाम निर्माण किया, जहाँ उनके विरीय सन्धकी दोनों राजधानियोंके बिगडे नागरिकोंसे सडने भिडने का डर न था और हमेशा किसी भी बलवेकी जो उठ खडा हो, दबानेका मोका था। अबदुल मलिकने अपने गव्यारअ कानकी लेटसलममें जमरकी बनायी मसजिदमें एक शानदार गुम्बज चढाया था, जो ६८२ ई०की पूरा हुआ। ६८२ ई०की सिदासके बाध मीषो-पोटामिया और परमेनियाके मेरवागने जो खलीफाका भाई था २५ जुलानोवकी युगानी फौजकी गिकस्य दी थी। ६८६ ई०की अबदुल मलिकने एक बहुत बडा फौज पकरीश भेजी। उसने कैरवान् अधिकार किया, कारयेन तक समुद्रतटके उजाडा और युनानियोंका सारी क्रिमेवन्दिशे से निकाल भगाया था। फिर फौज बगुरी पर चडी, जिसेने उसे दिसा मारा कि वारकाकी पीछे कोटना पड़ा। ३ वर्ष पीछे फिर इसी फौजने

वरवरीकी पराजय करके अपने पधोनख्य किया। अबदुल मलिकके मरने पीछे तक इसन कैरवाके शासक बने रहे। अबदुल मलिकने सुसलमानी सिद्धा बनाया था। ६८४ ई०की हज्जाजने कूफामे चांदीके दरिम टाले। परधी राजभावा बनी थी। पारिस्कार दामसकससे प्रात्तीय राजधानिया तक वासायदे सरकारी डाक भेवनेका इतजाम किया गया। अबदुल मलिक अपनी कन्याका विवाह खनीदके माय करके उन्हें और अन्ध पगदकके लडकीकी राजी करनेमें कामयाब हुए। उन्हेने अपने पाप यजीदकी लडकीसे शादी कर ली थी। अबदुल मलिकने अपने बेटोंकी तालोम पर बडी निगरानी रखी। उनके भाई अबदुल पजीज को मिसरके शासक थे, ७०३ या ७०४ ई०का मर गये। उन्हेने पहले अपने लडके वलीद और उसके पीछे दूसरे लडके सुनेमानकी चपना उत्तराधिकारी चुना था। ७०५ ई० ८ अक्टूबरकी वह अपने पाप ६० सालकी उम्रमें चल बसे। उनके दर वारमें शायरी का हुजूम रहता था।

६ पवन बन्देबा शान—यह इसनामके इतिहासका एक बडा शानदार बल था। एशियामाइनर और परमेनियामें खलीफाके भाई मसलम युनानियों से कई जगह जीत गये, तियाना फतेह हुआ और कुसतुन तुनिया पर चढ़नेका बडी तैयारी रही। पफोसामें भी फतहयायी हुई थी। ७१० ई०की तमजियरके शासक तारोने स्पेन पर बढाई की और रोडेरिककी गिकस्य दी। कितने ही पीछे सुट गये, परन्तु राजाका पता न लगा। फिर तारोके कई जगह विजय करते हुए पागे बढे, परन्तु अपनी हासत मालुक देख मूसामे मदद मांगी थी। ७१२ ई० अवरैल महीनेको वह १८००० पादसिपैडि माय लहाज पर बठ स्पेनमें जा उत्तरे और टेमनेमसे योडी दूर पर जो सडाई हुए, खानके राजा हारे और मारे गये। मूसामे फिर तीसरी जा जीता और धूमधामसे राजधानीमें प्रवेश किया। उन्हेने घोषणा की कि उस प्रायोद्योगके एक माय राचा दामसकसके गृहीका थे। इसा वर्ष मूसामे मुसलमानी सिद्धे भी टासे, जिस पर सेटिन भाषावा

ग्रहण था। फिर वलीदने उन्हें दामासकस वापस बुला लिया। वह अपने लड़के अबदुल अजीजको शासक बना लौट पड़े। इन्होंने रोडेरिक राजाकी बेवसे शादी करके अपनी शक्तिकी सङ्गठन किया था। ७१४ ई०के अगस्त मास मूसाने खोन छोडा और दामासकस वलीदके मरनेसे कुछ ही पहलै जा पहुंचे। लूटका बहुतसा माल ले जाते भी उनका समुचित पुरस्कार न मिला। उन पर गवनका इलजाम लगाया और १००००० अशर्फी जुर्माना न देने पर कैद किये जानेकी धमकाया गया था। परन्तु उन्हें सुलेमान खलीफाके मित्र यलीदकी सिफारिश पर छुटकारा मिला। ७१६ ई०का मक्का जाते राहमें वह मर गये। उन्हेके लड़के अबदुल अजीजका कोई २ साल सलतनत करनेके पीछे कत्ल हुआ।

पूर्वमें मुसलमानों फौजांकी अचम्भेकी कामयाबी हुई। थोड़े ही सालोंमें चीनकी सरहद तक कई मुल्क जीत लिये गये। इसी बीच मुहम्मद कासिम मकरान आक्रमण किया और देवलकी लेकर सिन्धुके पार उतरे और हिन्दुस्थानी राजा दाहिरकी घरा मुनतान पर चढ़ गये। वह सुलतान जीत लूटका कितना ही माल ले चलेते वने।

वलीदने दानासके आधे गिरजा घरमें मुसलमानी मसजिद बनायी थी। इनके समयको भीरियामें बहुतसे आलीशान लहल और देहातोंमें प्रसीरोंके रहनेकी सुवसूरत इमारतें तैयार हुईं। इन्होंने मदीनाकी मसजिद भी बढायी थी। इसके लिये नवी और इनकी बीबीके कसरे गिराये गये। खेतीके नये तरीके निकले और जङ्गल आवाद हुए थे। सीं वनेके जिये नहरें खोदी गयीं। रैगस्तानमें भी जानमालके जानिका खोफ न रहा।

० सुलेमानका शासन—७१५ ई०के फरवरी महीने अपने भाईके मरनेसे यह आसानीके साथ गद्दी पर बैठ गये। सुलेमान हज्जाजसे नाराज थे। इन्होंने उनके रखे कितनों ही प्रान्तीय-शासकोंकी निकाल बाहर किया और हज्जाजके दुश्मन यलीद मुहल्लवकी ईराकका सूबेदार बना दिया। फिर यलीद सर्वमें जा

वने और खुगामानकी सूबेदारी मिलने पर जेरजान और तबरिस्तान कई बार चढ़े, परन्तु कुछ ही कुछ कामयाब हुए। ७१५ ई०को सुलेमानके अहर्न पर ममलमने एशिया माइनरकी आक्रमण किया और जमर होवरान एक अच्छे जहाजी वेड्डेके साथ उनके पृष्ठपोषक बने। पहलै सान चढाई खानी गयी। असोरिअमका घेरा टूटा था, परन्तु परगामम और मरदीस पधिकात हुआ। ७१६ ई० २५ अगस्तको कुस्तुन्तु-नियाका अवरोध खुशकीकी राह आरम्भ किया गया और २ सप्ताह पीछे समुद्रकी ओरमें भी ऐसा ही देख पडा। एक साल तक घेरा रहा, परन्तु घेरते वालोंकी सर्दोंमें तड़ आकर चठाना पडा। ममलम अपनी टूटी फूटी फौज किसी न किसी तरह वापस लाये और जहाजी वेडी भी तुफानमें लोटते बल्ल तवाह हो गया। तोअसके युद्धमें चार्लस मार्टेल भी विजयी हुए। मसलम वापस ही आ रहे थे, कि दावीकमें सुलेमान मर गये। इनका चानचलन वलीद जैसा पडा और किफायती न था। परन्तु वह एक धर्मपरायण व्यक्ति रहे।

८ द्वितीय जमर—यह एक भीषे सादे और कम सुर्व-करनेवाले व्यक्ति थे। इन्होंने अपने रिश्तेदारोंसे भी किफायतका तकाजा किया, जिससे लोगोंमें नाराजगी और बेचैनी फैल गयी। लोग मुसलमान बनने पर बाध्य हुए। जुल्मकी शिकायत फौरन सुनी जाती थी। मुसलमानी इतिहासमें यह साधु राजा-जैसे प्रसिद्ध हैं। शमा अबदुल्ला नामक शासक पौरीनीज पर्वत पार करके नारवोन ले लिया था, परन्तु ७२० ई०के जुलाई मास वह तोलोसमें हारे और मारे गये।

९ द्वितीय यमीद—जमरने बहुत थोड़े दिनों राजत्व किया और ७२० ई० ६ फरवरीको उनका मृत्यु हुआ। बिना किसी भगडे बखेडेके अबदुल मलिकके लड़के २रे यजीद तख्त पर बैठ गये। देशमें बल्लवा फूट पड़नेसे इन्हें अपने मशहर भाई मसलमसे लश्को दवानेके लिये कहना पडा। बल्लवके प्रक्रममें लडाई हुई, जिसमें बल्लवाई यजीदकी हार होनेसे भारत तक भागते भागते आना पडा। मसलमको ईरानी और

सुरासानकी सूबेदारो मिली थी। परन्तु दामासकस मालगुनारी न भेजनेके इलजाम पर उनकी जगह पर कमर छोडैरा सुकरर किये गये। उन्हेने कितने हो सुरासानियासे बहुतसा रुपया रिगवत लिया था। इसी ताराजगीसे उमेययो को जड हिन गयो।

अफ्रीकामे भी इसी कारण बडा उपद्रव हुआ। वरवरोने सूबेदारको मार भूतपूर्व सूबेदार मुहम्मद यजीदको उनके पासन पर बैठाया था। खलीफाने पहले इनसे मान लिया, परन्तु पीछेसे महम्मदकी निकाल विगरको सूबेदार बना दिया। उन्हेने सिमिलीके विरुद्ध एक अभियान भेजा था।

२य यजीदने कत्रिना और गीनविद्याका बडा सम्मान किया। ७२४ ई०की २६ जनवरीको उनका मृत्यु हुआ। उन्हेने अपना उत्तराधिकारी पहले हिशम और उनके पीछे अपने बेटे यजीदको नियत किया था।

१० दिनका शासन—हिशम एक बुद्धिमान और योग्य राजा थे। ईराकके सूबेदार खलीफा वनाये गये और १५ वर्ष तक उन्हेने साम्राज्यके अर्धपूर्व प्रान्तको शासन किया। किन्तु यह बडी तडक भडकसे रहते थे। अन्तको शिकायत होने पर खलीद निकाले गये और यूफ सूबेदार बने। फिर खलीद दामासकसमें जाकर बसे और यूनानियोंसे खूब लडे भिडे। ७४० ई०की ६ जनवरीको इराकमें वनवा फूटा। यूफ मार डाले गये। उनका सर दामासकस और पहले मदीना भेजा था। सुरामानमें भी बडा उपद्रव हुआ। परन्तु ७३६ ई०को खलीदके भाई अमदने हारोतको हरा तुर्क पर बडा विजय पाया था। हिशम के राज्यशासनकालको मरने हारोत और तुर्कके विरुद्ध एक फफन अभियान किया। भारतमें कितन ही प्रान्त फिर आधीन हो गये। इससे भारतका पूर्वाय भाग स्वामी कर देना पडा। ७३० ई०की मुसलमान बुरो तरफ चारे, परन्तु पारसिनिया अजर-बेखनके सूबेदारो ने गुजरो को पराभूत करके गालि स्थापित की। हिशमके सम्पूर्ण शासनकाल बेसिप्टा इसी ही मृत्यु युद होता रहा। ७३६ ई० तक हिशमके

सडके मोपाविद्या सेनापति थे, जो अशिशानाइनमें अपने घोडे परसे एकाएक गिर कर मर गये। उनके मरने पर खलीफाने दूमरे जहक सुत्तेमान फोजके अफसर बने। परन्तु पूरे वीर अजदुला थे, जिन्होंने ७३२ ई०की अम्साद कानटेण्टेनीकी गिरफ्तार किया। किन्तु उनानियाने मराय और मनाशियाको फिरसे जीत लिया।

हिशम राज्य शासनके दूमरे वर्ष अनेके सूबेदार अन्वस पीरेनीज पर्वत पार करके जड्डी चटाई की थी। ७२५ ई०को उनके मर जानेसे मामना ठपटा पड गया। ७३२ ई०को चालीस मारटेनने मुसलमानोंको रोका था। इब्राहीम मार डाले गये और मुसलमान पीछेकी जल्द जल्द लौट पडे। ७३८ ई०की अनेके नये सूबेदार जहक फिर गालमें दाखिल हुए और लियस तक बडे, परन्तु फूँकों द्वारा दोबारा नारवीन तक खुदेर टिपे गये।

अफ्रीकामें वनवा फूटनेसे ७४० ई०की हिशमने कोलयूम और वनजने अधोन ३००० फौज भेजी थी। परन्तु बलवाइयो ने उसे परास्त किया और कीजधूमको मार डाला। वनज बाको मेना नेकर खूटा पडु से और वहांसे ७४१ ई०के अन्तकी अने गये जहां उन्हेने वरवरो का भोवण विद्रोह दबाया था। ७४२ ई०को उनका मृत्यु हुआ। अफरीकामे वरवरोने कौरवान लेनेकी कोशिश की थी, परन्तु हनजाताके सूबेदारने उनकी फौजको पूरी शिकस्त दी।

७४३ ई०के फरवरो मास २० वर्षे राजत्व करके हिशम चल बसे। वह कोजप्रिय न थे। इनके समय मुसलमान राज्यका अंध पतन आरम्भ हुआ।

११ तिलोव खलीदका शासनकाल—दिलीय वलीद खूबखुरत, ताकतवर और एक मजहूर गायर थे। परन्तु यहीदने साजिश करके दामासकस अधिकार किया और २य वलीदके त्रिताक २००० चादमी भेज दिये जो कियो देहातमें रहते थे और जितने पास दो मोषे ज्वादा मरनेवाले सिपाही न थे। ७५६ ई०की १० अक्टोबको उनका वध हुआ। उनका सर दामासकस पडु बाया और अन्तिमको नोक पर सबके दिवनेकी आजारमें निहाला गया।

खलीफाकी मौतकी खबर पा कर होसमके नागरिकों-
ने अबू सुहय्यदकी अपना सेनापति बना दामासकस
पर चढ़े थे। राजधानीसे १२ मील दूर सुलेमानने
उन्हें परास्त किया। अबू सुहय्यद अपने कितने ही
साथियोंके साथ गिरफ्तार हुए। पैलेस्टाइनकी भी दो
एक बलबे आसानीसे दबा दिये गये।

१२ वतीय यजीदका गामज—इन्होंने तख्त पर बैठते
ही एक बढिया वक्तूता दी, परन्तु वलीदने सिपा-
हियोंकी जो तनखाह बढ़ायी थी, काट डाली।
इसीसे लोगोंने उनका नाम 'नाकिस' रखा था। मन-
सूर नामक कालवाइत ईराकके सूबेदार बनाये गये और
उन्होंने पहिले गवर्नर यूसुफकी पकड़ खटरामें की
किया। सिन्धु और सीजस्तानकी छोड कर दूसरे सुदूर-
वली प्रान्तोंने खलीफाकी हुकुमत न मानी और अफ-
रकामें अबदुर रहमान आजाद-जैसे हो गये। खेनमें
सब अमीरोंने इस हुकूमतसे अपनी जान बचानी
चाही थी। ७४४ ई०की २५ सितम्बरकी ३य यजीदका
मृत्यु हुआ।

१३—३य यजीद अपने भाई इब्नाहीमको उत्तरा-
धिकारी बना गये थे। २ महीने सनतनत करने पीछे
वह २य सरवान द्वारा राज्य परित्याग करने पर बाध्य
हुए।

१४—द्वितीय सरवान् एक यज्ञियाली पुत्र्य थे।
अपने बेटे अबदल मलिकको ४०००० आदमियोंके साथ
सफामें छोड़ वह ८०००० आदमी लेकर मेसोपोटामिया-
में टाखिल हुए। १२०००० फौजके साथ सुलेमान
हारे थे। फिर २य सरवान दामासकस पर चढ़े और
७४४ ई०की ७ दिसम्बरको उसके अधीश्टर बन बैठे।
परन्तु पैलेस्टाइनमें फिर बलवा फूट पडा और दामास-
कसकी यजीदने जा घेरा। सरवानको ईराक पर चढ़ाई
करनेका विचार छोड़ सीरोयाका विद्रोह दबाना
पडा। उन्होंने १०००० सिरियोंको युद्ध सज्जासे सुसज्जित
करके २०००० किन्नेसरिन और मेसोपोटेमियाके
सिपाहियोंके साथ यजीदके अधीन ईराक भेजा था।
परन्तु रुसाफा पहुँचने पर यजीदने उन्हें ममभा बुझा
अपनेकी खलीफा स्वीकार कराया और अपनेको

किन्नेसरिनका अधिकारी बनाया। फिर यन्नादकी
फौजमें कोई ७०००० सिरिय भरती हो गये। सरवानने
अपनी प्रधान सेनाके साथ आगे बढ़ खोसाफमें सुले-
मानकी पूरी शिकस्त दी थी। फिर होमभो उन्होंने
५ महीने तक घेर रखा। फतेह होने पर होमस,
बालबक, दामासकस, जेरुसलम और दूसरे शहरोंकी
दीवारें गिरा दी गयीं।

ईराकमें अबदुल्ला नामक एक साहसी पुरुषने अपने-
की शाशवात और मुजाश्रीके एक दलका सरदार
बना कूफा ले लिया और हीराकी कदम बढ़ा दिया
था। किन्तु बलवाई हार गये और ७४४ ई०के अक्टू-
बर मास कूफाने आत्मसमर्पण किया। फिर अब-
दुल्लाने भेटिया (लब्बान) पहुँच कर अपना दल
लुटाया था, जिनकी मददसे वह एक बड़ी सनतनतका
हाकिम बन बैठा। बहुतसे खरीजीतोंकी मददसे
शैवान कोमके सरदार कूफा पर चढ़े थे। इब्र ह्मर
और इब्र सईद पूरे तीर पर हारे और ७४५ ई०के
अगस्त महीने हीराको भी आत्मसमर्पण करना पडा।

जब सरवान होमसको घेरे थे, दह्लहाक मेसोपोटे-
मियाकी लोट पड़े और मोसल दख्न कर बैठे। फिर
सरवानके बेटे अबदुल्लाकी निषीविसमें रहना दुखार हो
गया। सुलेमान भी खवारिज पहुँचे थे, जहां उनके पास
१२०००० आदमी रहे। अखीरकी सरवान दुश्मन पर
भपटे थे। ७४६ ई०के सितम्बर मास काफरतूयाकी
समासान सडाईमें खवारिज हार गये। इस युद्धके पीछे
ही यजीदने अपनी सेना ईराककी सञ्चालित की थी।
७४७ ई०के मई या जून महीने उन्होंने खरीजाइतोंकी
परास्त करके कूफा अधिकार किया। इब्र होबैराने
अखीरकी मेसोपोटेमिया फौज भेजी थी। खरीजाइत
उसको देख भाग खड़े हुए। सुलेमान और मन्सूरने
भारतको पलायन किया था। परन्तु इमी बीच खुरा-
सानमें एक ऐसा तूफान चल पडा, जिसमें किसीकी
पल्लने काम न किया। अन्तमें ७४८ ई० २८ नवम्बर-
की कूफाकी बड़ी मसजिदमें अबुल अब्बास खलीफा
बनाये गये।

अब्बासी।

अबुल अब्बास ने अपनी घोषणामें प्रशंशा करते

भो कृपावालीका विश्वास न किया। उन्होंने मन्सूरके पास हीरा और हाथीमिया नामक दो स्थान बनवाये थे। ७५४ ई० ५ जूनको मन्सूर अन्वेषका मृत्यु हुआ। इनके दाहने हाथ मन्सूर लहम और सनाहकार भाई मन्सूर जाफर थे।

२ मन्सूर—मन्सूर अन्वेषके मरनेकी खबर सुन मन्सूरका एक बड़ी फौजके साथ हरन पड़ोसे और खलीफा बन बैठे। किन्तु ७५४ ई० २८ नवम्बरको मन्सूर मुसलियने उन्हें शिकस्त दी और वह बसराकी भाग गये। फिर उन्हें ने मन्सूर खलीफाकी राजभक्ति स्वीकार की थी, मन्सूरने मन्सूर मुसलियको मदा इनमें सुफकेसे बुला मरवा डाला। इसी प्रकार अन्वेषी घराने प्रतिष्ठाभा मारे गये। इनकी लोग साहब उद दोला कड़ा करते थे।

८०० ई० सानसे मन्सूरकी कछने सुननेको अन्वेषी सिधोके मातहत रही। इसी बीच अनेम पायात्त उमैयदोकी अलग खिलाफत बन गयी। इशाम खलीफाके पीते मन्सूर रहमान खलीफा हुए। ७५७ ई०को ७०००० फौजके साथ मुसलमानो ने धावा करके कानछे पड़ेनीके हाथी गिराया हुआ मालाधिया जा बनाया था। ७५८ ई०को कूफासे थोड़ी दूर खलीफाके रहनेकी जगह ६०० राबेदी फकीर सम्मानप्रदर्शन कराने गये थे, परन्तु भगड़ा हो जानेसे सबके सब कत्ल हुए।

मन्सूरको बड़ा डर यह था कि उमैयदोके समय उन्होने मुहम्मदकी वय्यता मानो थी। ७६२ ई०को मुहम्मदने मदीना छोड़ अपनेको खलीफा बनाया था। परन्तु कूफाके सूबेदारने युद्ध करके उन्हें मार डाला। उनका सर काट करके मन्सूरके पास भेजा गया। मुहम्मदने मरते वक्त नबीकी मयज़र तल बाएँ एक सोदागरकी दी थी, जो पीछेको हाफ पल् रसीदकी मिन गयी। इसी बीच इब्नाफीम बसरा चह बाज, फारम और वहीतके मालिक बन बैठे। समतनत चकी आनेके जोफते मन्सूरने ५० दिन तक कपले न मदले और न पाराम ही किया। बाखमरामे कड़ी सजाई हुई। इब्नाफीमका मेदाक काट करके मन्सूरकी

पड़ोचाया गया। कूफामे अपना बचाव न देख मन्सूरने बगदादको अपने राजधानी बनाया था। तीन वर्षोंमें ७६६ ई०को उसका निर्माणकार्य समाप्त हुआ।

मुहम्मदके एक लडकेने भारतको भाग किसे राजका शरण लिया था। मन्सूरने पता लगा उन्हें मरवा डाला। ७७५ ई०को मन्सूरके हजको जाने राहमें मन्सूरका मृत्यु हुआ। उनका वयस ६५ वर्ष रहा और उन्होंने २५ वर्ष राजत्व किया था। मन्सूरने मन्सूर दफनाये गये। यह बड़े उस्ताही बमशान् हृदयके मनुष्य थे। उन्हें काविल अफसर सुननेकी अच्छी सुझ थी। वह क़िफायतो रहे और अपने लडकेको मरा खजाना छोड़नेकी उन्हें फिक्र थी।

३ मन्सूरका शासन—मन्सूरके मरने पर मुहम्मद पन्सू मेहदी खलीफा बनाये गये। इसके दूसरे ही वर्ष कौय भीर मखमवमें मोकना नामक एक खारिजिने बलवा किया था। कितनी ही वार कीतने पीछे वह समाप्त किलिमें घिरा और लहर खाकर मरा था। उसका सर काट कर मेहदीके पास भेजा गया। फिर मेहदी मन्सूरके हजको चले। उनके लिये जटों पर लडकर वर्षों मरवा गया था। उन्हें ने कावाको लाकर फिर बनवाया और उसमें खूब वेद्यकीमत सामान लगवाया। मन्सूरने मदीना पड़ोच मेहदीने सभजिदकी इमारत बट्टायी थी। उन्होंने हजकी राहमें कूफ खुदवाये, मन्सूरके बनवाये, धराये सुधाराये और हाजियोके सुभीतेके कई काम करवाये।

मन्सूरके शासन समय बेनअन्नाहदों पर बराबर हमले होते रहे और लाओडीमिया नगर अधिकार किया गया। परन्तु मास बदहान पड़ोच मन्सूर ८३ सालकी उम्रमें एकाएक चल बसे। कोई उनकी मृत्युका कारण शिकारकी दुर्घटना और कोई लहर दिया जाना वतसाता है।

मेहदीके शासनमें खूब बहाली रही। हजम् साम्राज्य सङ्गठनका बडा उद्योग हुआ, हाथिकार्य, व्यापार, वाणिज्य तथा राजस्व बढा और लोगोका हाक अच्छा था। सुदूर पूर्वतक साम्राज्य फैल पडा। लोग सम्मान, तिम्वतके नामा, और भारतीय नरेशोने खलीफासे मुलहनामा किया था।

४ शहीदा शासन—सोहदीके मरने पर सुसा अल्-हादीके नामसे खिलाफतके तख्त पर बैठ गये। हुसैन-सदीनासे बनवा खड़ा करके खलीफा बने थे। परन्तु कारसमें सुलेमानने युद्ध करके उन्हें विनाश किया। ७८६ ई०की १४ सितम्बरकी हादी माने अपने आप पश्चिम-कारागिरीके लिये उन्हें जहर दे दिया था। तीन वर्ष पीछे वह भी मर गयीं।

हारुन् अल्-रशीदका शासन—हारुन् वेखटके तख्त पर बैठे थे। उन्होंने अपने उस्ताद वफादार पहियाकी अपना बलीर बनाया। पहियाने राज्यकी अच्छी उन्नति की थी। ७९२-९३ ई०की अली घरानेके एक आदमीने खिलाफत पानेका दावा किया। हारुन्ने फदलके अधीन ५०००० आदमी भेजे थे। फदलने उससे मुलाहक कर ली। बगदाद पहुँचने पर उसका अच्छा स्वागत हुआ, परन्तु कुछ महीनों बाद उस पर साजिशका इलाज लगा और उसे कैदखानेमें भूखी मरना पड़ा। फिर हारुन् पत्नीके दूसरे वंशधर काजिमकी बगदाद भेजवाये, जिसने जगह दिये जानेसे अपने प्राण बचाये। हादथका किला तैयार ही जाने पर खलीफाने फारज नामक तुर्ककी तारसस शहर फिरसे बनाने का काम सौंपा था। ७९७ ई०में उन्होंने हमला करके इरीमकी मुलाहक करके पर मजबूर किया। फिर दो सेनापतियोंके अरमेनियासे खजरीकी निकल भगाया जिन्हींके १००००० मुसलमान आर ईसाई पकड़ लिये थे।

दूसरे वर्ष हारुन्ने सब बरमेसाइडोंकी विनाश किया; सिर्फ अहयाके भाई मुहम्मद बचे जा ७९५ ई० तक खलीफाके दीवान् रहें। इसी वर्ष कुस्तुन्तुनियामें अन्नाजी इरीमकी निकाल निकोफोरस वादशाह बने थे। उन्होंने हारुन्की कर देनेसे इनकार किया। हारुन्ने अपनी फौजके साथ एशिया-माइनरमें दाखिल हो मारकाट शुरु की और कितने ही मकानोंमें आग लगा दी। निकोफोरसकी डर कर सन्धि करनी पड़ी थी। ८०५ ई०की पहले पहल लेमसमें मुसलमान कैदी छूटे। किन्तु खुरासानमें गड़बड़ देखे निकोफोरसने फिर सन्धि भङ्ग करके कितने ही लोगोंको कैद किया

था। इस पर हारुन् १३५००० लड़ाका फौज लेकर एशिया-माइनर पहुँचे। हेराक्लिया और दूसरी कितने ही जगहें देखन कर ली गयीं। इसीसे साथ सेनापति सोमैयदने साइप्रस जाता था। ८०८ ई०की फिर लेमसमें मुसलमान और यूनानी कैदी छोड़े गये। दूसरे वर्ष समरकन्दमें राफीने बनवा मचा फनोकी हराया और उनका खजाना लुटाया था। खलीफाने यह खबर पा कि बनवा अलीके सुल्तसे दुआ था, हरथ-साकी उनको जगह भेज दिया। ८०९ ई०के मार्च मास खुरासान जाते बीमारीसे हारुन्का ४५ सालकी उम्रमें मृत्यु हुआ। हारुन्की समलदारोंमें अफरीकाके सुन्दार इम्राहीम इस बात पर आजाद किये गये कि वह सामाना खुराज खलीफाकी पहुँचाते रहेंगे। हारुन् खलीफाके वक्तमें ही पहले पहल बगदादमें कागजके कारखाने खुले थे।

५ अमीनका अमलदारी—हारुन्के मरने पर अमीनकी खिलाफत मिठी थी। अमीनने अपने उत्तराधिकारी भाई मामून्को खुरासानसे बगदाद बुलाया, परन्तु वह इस डरसे न गये कि वहाँ मार डाले जाते। ८०९-८१० ई०की अमीनने अपने पांच सालके लड़के मूसाकी अपना उत्तराधिकारी बना दिया। मामून्ने इस पर विगड खलीफाका नाम खुरासानके सब कामोंसे अलग किया था। अमीनने ४०००० फौज खुरासान उनके खिलाफ रवाना की। ८११ ई०के मई महीने राहमें दोनों फौजें भिड़ गयीं। किन्तु मामून्के सेनापति ताहिरने एकाएक दुश्मन पर हमला करके उसे भगाया था। मामून् फिर खलीफा बन बैठे।

अपनी चारकी खबर सुन अमीनने २०००० आदमी इमादान् भेजे थे। ताहिरने उन्हें गिकस्त दे मीदियाकी सब पोख्ता जगहें देखन कर लीं। दूसरे वर्ष फिर अमीनने नई फौज मैदानमें उतारी थी, परन्तु ताहिरने उन्हें भी हरा होलवान् खीन लिया जिससे बगदादका रास्ता खुला। फिर ताहिरने अहवाल, वासित और सदाइनकी ले राजधानीके पास अपना खीमा जा लगाया। चारों आरसे विरा रहते भी बगदाद शहरने ३ साल तक अपनेकी बड़ी बहादुरीसे बचाया था।

अखीरमें यमान ताहिरके हाथ अपनेको सौंपने पर मजबूर हुए। ताहिरने उन्हें पकड़ कर कत्ल किया था। १९३ ई०के सितम्बर महीने उनका सर काट कर मामून्के पास भेज दिया गया।

० मामून्की सभ्यता—यमानके मरने पर ताहिरने बगदादमें मामून्की खलीफा बनाया। इनके समय कलाक्रीम, विज्ञान और साहित्यकी अच्छी उन्नति हुई परन्तु शरूपात पूरू तुफानी थी। ताहिर मेसोपोटेमिया और हीरीयाके सुबेदार बनाये गये और उन्हें बनवाई नगरकी दवानेका काम मिला। अलीद भी बिगड़ उठे थे। झूफामें इसन टवाटवाने खेतमें एक फौज उतार दी। इसनकी भेजी फौज उससे हारी थी। फिर इराकके बसरा, बसौत और मैदहन नगर भी दुश्मनके हाथ लगे। अलीदीने मका, मदीना और यमनको दबा लिया। झूफामें शत्रुदलके सेनापतिने नया सिक्का टाला और राजधानी पर आक्रमण करनेका भयदेखाया। इसनने अपनी मददके लिये हर थमकी बुलाया था, जिन्होंने पड़ुवते ही दुश्मनका पालो बदना रोक दिया। इराकके सब शहर फिर अन्धकारियोंके हाथ आ गये। अफरीकाका नरबदा भी दबा था। हरमय मर्यादा खलीफामें मिलने गये, परन्तु नोगीके महाकामसे मामून्ने उन्हें कैदखाने में डाला था, जहाँ वह कुछ ही दिनमें मर गये। १९७ ई०की मामून्के अपना उत्तराधिकारी अली पर रिदाकी बनाने मारे अन्धारी ताजुबमें पाये थे। बगदादकी नोगीने इस पर बिगड़ मामून्को राज्यभूत किया और उनके सचा इम्राहीमकी खुलेफा बना दिया। इस पर मामून्ने मनही मन सोचा कि फतल उन्हें कठपुतली जैसा समझते थे। एक दिन फतल मरे मिले और अली एकाएक चल बसे। मामून्ने इस पर अत्यन्त शोक प्रकाश करके फतलके मारे इसनको अपना वजौर बनाया और उनकी बेटोसे अपनी शादी भी कर ली। इसपर इम्राहीम खलीफाकी ताकत घट गयी और उन्हें क्षिप कर अपना ज्ञान बचाने पड़े। १९८ ई०के बगदाद महीनेसे मामून्की पसकी हुकूमत शुरू हुई। ताहिरने अपने लिये असगराज्य

स्थापन करने का विचार किया था, परन्तु १२२ ई०का उनके मर जानेसे मनकी बात मनमें ही रह गयी। ताहिरके लहके शबदुल्लाने मेसोपोटेमिया और मिसरकी बजवा दवाया था। फिर इम्राहीम खलीफा को भागे थे पकड़े गये, परन्तु खलीफाने उनकी माफ कर दिया। वह गाने बजानेकी तरकी दरवारमें पारामसे रह कर करने लगे।

सुल्तनमें यमान सेन होने पर मामून्ने अपना ध्यान विज्ञान और साहित्य पर लगाया था। उन्होंने गणित, ज्योतिष, वैद्यक और विज्ञानकी पुस्तक तुगानो भाषासे अनुवाद करायी और बगदादमें एक विशालघर खोला जिसमें एक पुस्तकालय और एक विशाला भी थे। अर्धके आदेशसे दो सुविन्न गणित ग्राहियोंने पृथिवीके प्रकृता भूगणित निर्धारण करनेका काम अपने हाथमें लिया। धार्मिक सिद्धान्तोंमें भी मामून्की दिलचस्पी रही। १९३ ई०को एक हुकूमताना निकाल उन्होंने सब विद्वानोंको यह समझानेके लिये बुलाया था कि कुरान ईश्वर वाक्य नहीं; जिसने यह बात नहीं मानी, कैद खानेमें डाला गया। मामून्ने इन प्रपगण्डियोंकी बगदादसे अपने पास मजाशब होनेकी तलब किया था, परन्तु वह मुश्किलसे अदन पहुँचे हीं कि खलीफाने मरनेकी खबर लगी। १९३ ई०के बगदाद मास ठहरेके दरवामें मजानेसे उन्हें बुखार चठा और ४८ वर्षे उम्रमें उनका मृत्यु हुआ।

मामून् निरालो विफनके पादमी थे और मन्सूरके बाद उनके जैसा खलीफा बिरला ही हुआ।

० मातासिमता राजत—मामून्के मरने पर अमू दयात अल-मोतासिम खिलाफतके मानिक हुए। और १९३ ई० २० मितम्बरकी बगदादमें जा पहुँचे। उनके शरीर रक्त कुर्की गुनाम रहे, जो ज्यादा जोर लुप्त करने पर बगदादियोंके हाथों, जहाँ तक ही सक्त मारे गये। मातासिमने बगदाद छोड़ घामराम पारने रहने की इमारात बनवायो थी।

महदुल्लके समय बसरा और वासितके मोष दलदल वाले मुकामकी बहुलसे जाट नामक भारतवासिगने अधिकार किया और टिगरिस नदीमें पाने जाने वाले

जहाजों पर महसूल लगा दिया। मोतासिमने ७ महीने जौरी से लड़ उनके आत्मसमर्पण करने पर बाध्य बनाया था। ८३५ ई०के जनवरी महीने वहांसे वह लोग अनजरवाकी निकाले गये। ८३५ ई०को ही मोतासिमने एक तुर्की राजकुमार अफगोंकी मौदियाका सूत्रदार मुकरर किया और बावकसे लड़नेकी कूट दिया। तीन साल लड़ाई होनेके पीछे बावक पकड़े गये और समारा पहुंचने पर जल्लाटीने उनके हाथ पांव काट डाले। उनका गिर खुरासान भेजा गया। ८३७ ई०को थियोफिलसने सरहदी शहर जिवतराकी मिसमार किया था। मोतासिमने बदला लेनेकी गरजसे वही फौजके साथ चढ़ाई की और अमोरियम नगर दखल करती वक्त खूब लूट उनके हाथ लगे। ८४२ ई० के जनवरी महीने मोतासिमका मृत्यु हुआ।

२ वातहिककी समलदारी—मोतासिमके मरने पर उनके बेटे वातहिक खलीफा हुए। इन्होंने भी इत्मका बड़ा शौक था। उसको पूरा करनेके लिये वातहिकने अपने पफसरोसे रुपया मांगा और उनके इनकार करने पर रिशवतखोरीके लिये उनके कैदखानेमें डाला और जमाना किया। खलीफा कुरानको भी ईश्वरवाक्य न मानते थे। इस पर बगदादमें बलवा होनेकी खबर लगी। बलवाइयोंके सरदार अहमद पकड़े और समारा भेजे गये, जहां वातहिकने अपने हाथसे उनका गिर काट डाला। मदीनाके पासपास अरबोंने जो बलवा खड़ा किया था, तुर्की अफसरोने उसे दबा दिया। ८४६ ई०को वातहिक मर गये।

१० मोतवकिलकी खिलाफत—वातहिकके मरने पर उनके भाई जाफर अल्-मोतवकिल नामसे खिलाफतकी सालिक हुए। इन्होंने वजीर जय्यातको जिन्होंने इनकी खिलाफतकी सुखालिफत की थी, पकड़ कर देरहमीसे मार डाला। इसी बीच महमूद नामक किसी जालसाजने अपनेकी नबी बतलाता और २७ आदमियोंकी अपना पैरो बनाया था। खलीफाने उससे और उसके साथियोंको पकड़ संभाया और खूब कोडी से पीटा। फिर उसके सब साथियोंको हुक

दुआ कि उसके गिर पर सबके सब दग दग मुक्रे लगाते। ८५० ई० को वह सुफीके सारे मर गया।

मोतवकिलने करबलामें इमैनकी कब्रका इमारत गिरवा दी थी। ८६४ ई०को इमैनके एक वंगधर यद्यथा जो पकड़ कर कोडीसे पीटे गये थे, चुपकेसे भगे और कूफामें बलवा खड़ा करने पर मारे गये। कहते हैं कि खलीफाने अपने एक भांडकी अपनीकी नकल करनेका भी हुकम दिया था। ८४८-८४९ ई०को इव वाइतने बलवा किया, किन्तु वोवा नामक तुर्की सेनापतिने उसे पकड़ कैद कर लिया जहां उसे मरना पड़ा। ८५१-८५२ ई०को अरमेनियामें बलवा फूटा था। वोवाने उसे भी दबा दिया। ८५२-८५३ ई०को बैजन्ताइन ३०० जहाजोंके साथ मिसरमें उत्तर पड़े। फोसतात राजधानी लूटा और जनायी गयो। यूनानी फिर टिमिसके पास गारज नदीके मुंहानेकी सारी किले-बन्दी तोड़ कैदियों और लूटके साथ नीट पड़े। ८५६ ई०को वह अमीद तक पहुंच १०००० कैदी ले गये थे। किन्तु ८५८ ई०को मुसलमानोंने यूनानियाके कितने ही आदमी और जानवर पकड़े और उनके जहाजी वेड़ेने अनेटोनियाकी विध्वस्त कर डाला।

८५५ ई०को रोमसमें बलवा हुआ, कारण खलीफाने ईसाइयों और यहूदियों पर बहुत सभ्यती की और बैचैनी बढ़ी थी। यह बलवा बड़ी मुश्किलमें दबा ईसाइयों, और यहूदियोंके धर्ममन्दिर तोड़े, बहुतसे बड़े आदमी कोडीकी मार मार डाले और सब ईसाई निकाल बाहर किये गये। ८५१ ई०को वोजा नामकी जङ्गली कोमने सीने और पर्वकी खानों पर हमला किया था, जिसे ८५६ ई०को सुहमद अल् कोमीने दबा दिया। फिर मोतवकिलने २० लाख अगरीफी लगा सामराके पास एक बटियो महल्ला बनाया था। ८६२ ई०के दिसम्बर मास यह मार डाले गये।

११ मोतासिरका शासन—बापके मरते ही मोन्तासिरने अपनेकी खलीफा बतलाया था। यह बहुत कमजोर और अहमद इबन् खव्व नामक वजीर और तुर्की सेनापतियोंके हाथकी कठपुतली बने हुए थे। कहते हैं कि ६ महीने पीछे जहरके जरिये मोन्तासिर मर गये।

१२ सुह्रतको हकूमत—मोस्तासिरके मरने पर उनके लड़के चचेरे भाई अल महसूदैन नामसे खिलाफतके तपत पर बैठे थे। परन्तु ८६५ ई०की वृद्ध बगदाद भाग गये और मोताज खलीफा हुए।

१३ मोताजका राज—८८६ ई०के जनवरी मास बगदादमें यह तख्त गद्दीन हुए और अपनी खिलाफतकी सुत्रान्निपत करनेवाले तुर्की सेनापति वषीद और घोषाफे पजिस छूटनेकी कोशिश करने लगे। इन्होंने अपने एक भाई मुयय्यदको मार डाला और दूसरे मुयफ्फकको मुल्कसे बाहर बगदाद को निकाला था। परन्तु उन्हें फौजकी कोई २०००००० अशरफियातनखाह देनेी थी। इनकी बडी तनखा सुना न सकनेसे वह पकड़ लिये गये और ८६८ ई०के जलाई मास कैदखानेमें भूखों मरे। इसी बीच सोस्तान और मिसरके सुवेदार अजाद हुए।

१४ सुह्रतकी मिनकियत—मोताजके गिरफ्तार होते ही वातिरके लडके अन्सुह्रतदी खिलाफके साथ खलीफा धने थे। वह शरोफतवा, सबी और जोरादर गधूस रहे। उन्होंने कलावतो और गवैयो की निजान बाहर किया और सब खेल कूद वन्द कर दिया। वह मुनसिफीकी तर्द मुतबच्छा हुए और लोगो को शिक्षा यत्ने दूर करनेको उनसे खुले तौर पर मिन्नने लगे। ८७० ई०के जून महीने तुर्की सिवाहियो ने मुह्रतदी को मार डाला।

१५ मोतमीदकी मिनकियत—सुह्रतदीके मारे जाने पर सुत वकिलके लडके मोतमीदकी खिलाफत मिली थी। परन्तु याकूबने बनवा खडा करके जीयापुरकी दरून कर लिया और इराक पर भी धावा कर टिया। खलीफा खुदबखुद नबीका जामा पहन उससे लहने गये। आखीरमें सुयफ्फकने उसे मार भगाया। ८६८से ८८३ ई० तक बमरामे अशरियाका बनवा डबाना पडा था, जिसमें बहुतसा रुपया खर्च हुआ। ८८२ ई०की खलीफाको मीरीया और मेमोपोटेमियाके राजा अहमदके वजीरने कैद करके सामरा भेजा था। ८८६ ई०की अहमदकी पोती मोतमिदसे ब्याही गयी। दगवर्ष पीछे खलीफाके सेनापति मुकतफीने मिसर विजय किया।

इनके शासन कालको सम्बद्द १म बसील सुमन्मानोमे कामयाबीके साथ लडे, किन्तु ८८४ ई०की बुरे तीरसे हारने पर उनकी फौज, सेनापति और कितने दूसरे साथी मर मिटे।

१६ मोतमीदका शासन—८८९ ई०को मोतमिदके मरने पर उनके लडके अबूल अब्बास अन्सु मोतदिद नामसे तख्त गीन हुए। यह बहुत सायक और ताकत वर थे। हमदानकी मददसे मेमोपोटेमियाके खरीजीय कुचल डाले गये। दक्षिण-पश्चिम मदीया अबू दोनाफ घराना दबा दिया गया। अजरबैजान और अरमेनियाके तुर्की सुवेदारोंने बनवा खडा करना चाहा था, परन्तु उनकी एक न चल सकी और इस माजिगमे शरीक होनेवाले तारमसके वाशियदे मजायाव हुए और उनके जहाज जना डाले गये।

१७ मोकतफीकी खिलाफत—८०२ ई०को मोतदिदके मरने पर उनके बेटे मोकतफी खलीफा हुए। यह अपने आप फौज लेकर सीरीयाके कारमेथीयो पर चढ़े थे। खलीफाके सेनापति सुह्रतने दुश्मनकी पूरे तीर पर शिकस्त दी। परन्तु इस हारका बटना सुकानिको (८०६ ई०) मकामे लौटनेवाले कारवाके २०००० आटमियोंको मार डाला और बहुतसा माल असवाव नृट लिया।

मोकताफीकी राजत्व कालको वेनजातीयोंसे बडा युद्ध हुआ। ८०५ ई०को यूनानी सेनापति अराइोनिकसने मरया अधिकार किया और हलपतक दबा लिया था, परन्तु ८०७ ई०को समुद्रमें सुमनमान फतेहयाव हुए और इकोनियमको दबा बैठे। अन्तकी वेनस्तनीय मन्ब्राटकी बगदाद दूत भेज सुनह करनी पडी।

१८ मोकतादिरका शासन—८०८ ई०के अगस्त मास मोकताफीके एकाएक मरने पर मोकतादिरके खिलाफत मिली थी। यह मोकताफीके भाई थे। तप्तनगीनीके वक्त इनकी उम्र ११ साल ही रही। बगदादके बहुतसे बडे आटमियोंने बनवा करके अपने खलीफा मोताजके बेटे अयदुजाको खिलाफत सौंपी थी, परन्तु मोतादिदके घरवानोंने उन्हें मार डाला। मोकतादिरमें अचछे गुणोका अभाव न होते भी उन्होंने शासनकार्य अपनी

मां, अपनी महिलाओं और खवाजोंको सौंप रखा था। इन्होंने खजानिका खूब रूपया उड़ाया और अमीर आदमियोंको लूटा मारा। १२३ ई०को कारमेथीयोंने बमरा देखल किया और इसके दूसरे ही वर्ष मक्कासे लौटते एक कारवाको दबा लिया था। फिर कूफा उनके हाथ लग गया। बगदाद सरकारने कारमेथीयोंको दवाना चाहा था, परन्तु उन्होंने (१२७ ई०) एक बड़ी फौजको जगाया और बगदाद पर भी अपना हाथ बढ़ाया। दूसरे वर्ष मक्का लट लिया गया। दुश्मन काला पत्थर भी लहामा उठा ले गये, परन्तु १५० ई०को इमामके कहनेसे वह कावे वापस आया १२८ ई०को मोकतादिरको तख्तसे उतारनेकी साजिश हुई, परन्तु उनके सेनापति सूनिसने उन्हें अपने घर ले जाकर छिपा रखा। फिर वह गद्दी बैठाले गये थे। १३२ ई०की सूनिस अपने खिलाफ साजिश होते देख मोमल चले गये और वहांसे बहुतमी फौज इकट्ठी करके बगदाद पर चढ़े। अक्टूबर मासको जो युद्ध हुआ, मोकतादिर मारे गये। मरते वक्त इनकी उम्र ३८ वर्ष थी।

१८ काहिरका हुकूमत—मोकतादिरके खेत रहने पर काहिर खलीफा बने थे। यह शराबी थे और अपने खर्च के लिये लोगोंकी जायदादें जबत् करके रूपया वसूल करते थे। किन्तु १३४ ई०के अफरेल महीने इनकी आखे फोड़ डाली गयीं और तख्तसे उतार दिये गये, सात वर्ष पीछे गुर्वतमें इनके प्राण निकले।

२० रादीका राजत्व—काहिरके मरने पर मोकतादिरके बेटे अल् रादी विल्लाने खिलाफत पायी थी। इनकी ताकत देखने लायक रही। खजाना खाली था, सिपाही तनखाह मांगते थे और बगदादमें बलवा उठ खड़ा हुआ था।

२१ सुतकीका मरना—१४० ई०को रादीके मरने पर मोकतादिरके दूसरे लड़के अल सुतकीविल्ला खलीफा हुए। बसराके किसी बरीदीने धंवा करके बगदाद देखल किया था, किन्तु सेनापति कुर्तकीनने उसे निकाल भगाया। बरीदीके फिर बगदाद पर चढ़नेसे सुतकीने मोमल भाग नसीर-उद्-दौलाकी पनाह ली, जिन्होंने जाकर बगदादसे बरीदीको हटाया था। परन्तु बजकामके पहले

कप्तान तूजून १४४ ई०को खलीफाकी आंगें निकलवा लीं।

२२ सुमतकीका हुकूमत—तूजूनने सुतकीका उत्तराधिकारी सुकतफीके लड़के अन् सुमतकी विल्लाको चुना था। १४५ ई०को एक बड़े सरदारने बगदाद आक्रमण किया और खलीफाने उन्हें सुलतान उपाधिके अनुमाग सखाट मान लिया। फिर खलीफाके साजिश करने पर उन्होंने इनकी आंगें फोडवा डालीं।

२३ मोतीकी मरना—सुमतकीके पीछे मोकतादिरके एक लड़के अल्मोती विल्ला खिलाफतके मानिक हुए। यह नाममात्रको ही खलीफा रहे, गियामतका मज काम सुलतान करते और इन्हें ५०००० टिन्डम रोज पेनशन देते थे। फिर तुर्की सिपाहियोंने बलवा मचा दिया और १७४ ई०के अगस्त मास मोतीको तख्तसे उतार निकाल बाहर किया।

२४ ताईका अधिकार—मोती खलीफाका खाली खिताब अपने बेटे ताईको दे गये थे, जिन्हें तुर्कीने तख्त नगीन किया। उधर बगदादमें अद्-उद्-दौलाने बख्तियारका उत्तराधिकार पाया था। इन राजाके समय बृद्धेकी ताकत बहुत बढ़ी। उन्होंने, जहां तक हो सका गिरी हुई मसजिदों और दूसरी इमारतोंकी मरम्मत करायी, अस्पताल तथा पुस्तकालय स्थापित किये और आव-पाशीको तरकी दी। शीराजमें उन्होंने जो पुस्तकालय खोला था, जगत्का एक आश्चर्य रहा। उन्होंने कारवलासे हुसेन और कूफामें अलीका मकबरा भी बनवाया था। किन्तु १८३ ई०को उनके मरने पर उनके तीनों लड़के आपसमें लड़ने लगे। १८० ई०को ऊंटे लड़के बाहा-उद्-दौला जीते और उन्होंने खलीफा ताईको (१८१ ई०) तख्तसे उतार दिया।

२५ काहिरकी हुकूमत—फिर मोकतादिरके एक पोते अल् कादिर विल्लाके नाम पर खलीफा बनाये। १७६ ई०को सुबकतगीनने सीजिस्तानके बोस्त और बलूचिस्तानके कोसदारको अधिकार किया और भारतके राजा दयापालको हरा दिया था। वह सिन्धुके पश्चिम प्रान्तके राजा माने गये। उनके मरने पर उनके बेटे महम्मूदने सारा खुरामान और सीजिस्तान माथ भारतके एक बड़े

भागको जीता था। १०३१ ई०के नवम्बर महीने कादिर मर गये। वह कुछ आध्यात्मिक ग्रन्थोंके रचयिता थे।

१६ कायमको खिलाफत—कादिरके मरने पर उनके बेटे

कायम नामसे खलीफा बने। बगदादकी हालत बिगड़ जानिसे इन्होंने तुगरलको अपनी मददके लिये बुलाया था। उन्होंने बगदाद पहुँच वुईदोंके खानदानको निकाल बाहर किया। परन्तु १०५८ ई०को तुगरलकी अदम मौजूदगीमें शीयान्नी बगदाद राजधानी अधिकार करके सुमतनमीरकी खलीफा बना दिया। तुगरलने जल्द नौचा देखा खलीफाको अपनी लड़कीकी शादी कर देने पर मजबूर किया था। परन्तु शादी होनेसे पहले ही वह मर गये। १०७५ ई०के अप्रैल महीने कायमकी भी मौत हुई।

१७ सुक्तताकी इस्लाम—कायमके मरने पर उनके पोते

सुकतादीकी खिलाफत मिली थी। १०८७ ई०को इन्होंने मन्कि शाहकी बेटोंसे अपने शादी को, परन्तु अच्छा बर्तान न करनेकी शिकायत पर उसको पोछे मोटना पडा। मरनेसे कुछ ही दिन पहले सुलतानने इन्हें बगदादसे निकाल बसराम रहने पर मजबूर किया था। १०८४ ई०के फरवरी मास बरकियारोकके बगदादमें फतेह्याबीके साथ दाखिन होने पर शायद खलीफा जहर खा कर चल बसे।

१८ सुमतजहीरकी मिलाफत—मोफतादीके मरने पर उनके

लडके सुमतजहीर खलीफा हुए। उस समय इनकी उम्र १६ साल ही थी। ११०४ ई०को बरकिया रोकके मरने पर उनके भाई मुहम्मदने १११८ ई० तक सुमतनत की। इनके पीछे १० महीने बाद सुमतजहीर भी मर गये।

१९ सुगरकी राजत—१११८ ई०के अगस्त मास सुगर

रगीद अपने बाप सुमतजहीरकी जगह खलीफा हुए। इन्होंने बफायदा खलीफाके पुनर्गर्धिकार प्रतिष्ठाकी चेष्टा की थी। ११२४ ई०के अक्टूबर महीने यह अपने महल में रहते थार कभी खेत न लहने पर मजबूर किये गये। फिर थोड़े दिन बाद इनका कत्ल हुआ।

२० रामकी राजत—मोस्तरगीदके मरने पर उनके बेटे

रागिदकी खिलाफत मिली। इन्होंने मोमलकें राजा

जङ्गीके साथ अपने बापका अनुसरण करना चाहा था। परन्तु सुलतान ममजदने उनकी फौजको मार भगाया और बगदाद देखल करके रागिदको ११३६ ई०में तख्तसे उतार दिया। रागिद बच कर निकल भगे, परन्तु २ वर्ष बाद कत्ल कर डाले गये।

२१ सुक्तताकी मिशकियत—रागिदके पीछे सुस्ताजिरके लडके सुमतफीकी खिलाफत मिली थी। इन्होंने अमलमें बगदाद जिले और इराकमें भी हुकूमत की। ११६० ई०के मार्च मास इनका मृत्यु हुआ।

२२ सुक्तताकी राज्य—सुकताफीके मरने पर उनके बेटे

सुस्तानजिदकी खिलाफत हासिल हुई। इन्होंने हिलामें मजयदियोंका राज्य समाप्त करके खिलाफतकी इट बढायी। मोसलके नुरूद्दीनकी फौजने मिमर जीता, फातिमाका घराना उखडा और मलादीनका दबदबा बढा था। ११७० ई०के टिमम्बर मास यह अपने सेना पति डोमोके हाथों मारे गये।

२३ सुगरकी इस्लाम—सुमतनजिदकी मौत होने पर

उनके लडके और वारिध सुस्तदी खलीफा हुए, परन्तु कोइ असली हुकूमत हासिल कर न सके। ११८३ ई०के मार्च मास सुस्तदीकी मौत हुई।

२४ नागिरकी सुमतनत—सुस्तदीके पीछे उनके बेटे

नागिर खिलाफतके मानिक हुए। ११८७ ई० अक्टूबरको मालादीनने फिर जेरुसलम देखल किया था। नागिर बड़े सौमलमन्द थे। उन्होंने खोजस्तानकी अपनी खिलाफतमें मिलाया और मोदियाके मानिक भी बन बैठना चाहते थे। परन्तु खिवाके खारिजमने अब्बासियोंको निकाल अलीके किसी वगधरको खलीफा बना बगदादके तख्त पर बैठानेकी ठान ली। उधर जङ्गीज खानने चीनका उत्तर प्रान्त जीता और अपना राज्य टैम् श्रोक्सिमिथन मीमा तक बढाया था। सुमतमानां के इमामने उन्हें एक सट्टया दिया कि वह जाकर खिवाके राज पर जिनने उनके दूतोंका चपमान किया था चढ जाते। १२२५ ई०की नागिरके मरने पर मुहम्मदके मुहम्मद वगधगी लोगोंने खिलाफतके पूर्ण भागको कुचन डाला, गहरोंको जमा दिया और मोंगोंको धरममीने मार डाला।

२५ जाहिरनामा राज्य—नामिरके मरने पीछे उनके बेटे जाहिर खलीफा हुए, परन्तु १२२६ ई०के मार्च मास मर गये।

२६ सुस्तनमिरको निरक्रियत—जाहिरके पीछे १२४२ ई०के दिसम्बर मास तक सुस्तनमिरने खिलाफत की, जब कि वह भी चल बसे। १२२७ ई०को जङ्गीज खान मरे, परन्तु मङ्गोलीय खिलाफत पर हमला करनेसे न सके। खीवाके अतिरिक्त राजा जलालुद्दीन उनसे बराबर लड़ते रहे।

२७ सुल्तानमिरको इकमत—अपने बाप सुस्तनमिरके मरने पर सुल्तानमिरको खिलाफत मिली थी। यह बगदादके आखिरी खलीफा रहे इनके रहनुमां अच्छे आदमी थे। १२५६ ई०के जनवरी महीने हलाकूने ओक्मस नदीको पार किया और इस्माइलियोंकी किलेबन्दीकी गिराना शुरू कर दिया था। फिर १२५८ ई०के जनवरी मास वह खिलाफतकी राजधानी बगदादके पास आ पहुँचे। सुल्तानमिरने वेफायदा आरजूमिन्नतके साथ सुलह करनेको कहा था। शहरमें लुटपाट और मारकाट मच गयी। खलीफा सारी छिपी हुई दौलत लानेको मजबूर किये और पीछे अपने २ बेटों और बहुतसे रिश्तेदारोंके साथ मार डाले गये। सार्वजनिक भवनोमें आग लगी थी। इन्हींके साथ अब्बासियांकी पृथ्वीय खिलाफत खत्म हुई, जो अबुल अब्बासके कूफामें टाखिल होनेके समयसे ५२४ वर्ष तक बराबर चलती रही।

तीन वर्ष पीछे अबुल कासिमने जो भाग कर मिसरमें जा छिपे थे, वेफायदा अब्बासियोंकी खिलाफतको वापस लाना चाहा। वह एक फौज लेकर बगदाद पर चढ़े, परन्तु राहमें ही वह युद्ध होने पर हारे और मार डाले गये। यह अल सुस्तनमिर विन्ना नामसे खलीफा बन चुके थे। अब्बासियोंके कोई दूररे वंशधर भी मिसरमें जा छिपे थे। कैरोमें वह अल् हाकिम नामसे खलीफा विधोषित हुए। उनके लड़कोंको भी खलीफाका खिताब मिला था, परन्तु किसीका कुछ प्रभाव न पड़ा। खिलाफतकी यह नाजुक हालत बहुत दिन तक चलती रही। अन्तको तुर्कस्तानके सुलतान १म सलेमने मिसरको फतेह करके आखिरी खलीफा सुतवकिलको अपने

नाम पर खिलाफतमें अलग कर दिया। १५३८ ई०को कैरोमें वह मर गये।

अब्बासी घरानेके दूररे वारिस मुस्तनमिरके पोते सुहृग्मदर्न पीछेको भारत अपनाहली थी। दिल्लीके सुलतानने उन्हें बड़ी इज्जतसे बिठाया, 'मग्वदूमजादा' बनाया और राजा-जैसा व्यवहार लगाया था। इनके लड़के बगदादमें १ दिनस रोज पर इमामका काम करते थे।

खिलारी—बम्बई प्रदेशके एक जातीय गोरू या सर्वेगी। दक्षिणात्यस्थ खानदेशके पश्चिम अञ्चलमें खिलारी नामक गोपालक रहते हैं। उन्हींके नाम पर इन पशुओंको भी खिलारी कहा जाता है। यह देगनेमें बहुत सुन्दर, बलवान् और द्रुतगामी होते हैं। इनका पग्वाटि ज्ञान इतना तीक्ष्ण है, जिस कामके सिक्वनाते, मानो महजमें ही समझ जाते हैं। खिलारी बैलोंकी एक जोड़ी हमीन घण्टेके हिमावसे दो-तीन दिन तक बराबर गाड़ी खींच सकती है। गायोंका रङ्ग दूध-जैसा सफेद रहता और बैलोंके कर्नोंके पास थोड़ी ललाईका मेल रहता है। सींग सोटो और सीधे होते हैं। केवल गायके सींग टेढ़े-मेढ़े चलते हैं। मतारे और परदर-पुरके बीच पहाड़ी प्रदेशमें इन पशुओंकी जन्मभूमि है।

खिलाल (हि० पु०) बाजीकी परी हार। यह ताश वर्ग-रहके खेलमें हुआ करता है।

खिलाह (सं० पु०) अश्वमेद, किमी किस्मका घोड़ा। यह पाण्डुकेसरपुच्छ और कपिलवर्ण होता है। (अश्वमेध) खिलौकत (सं० लि०) खिलचि-कत। १. दुर्गम बनाया हुआ, जो आने जानेके लिये मुश्किल कर दिया गया हो। २. निरुद्ध, घिरा हुआ।

खिलीभूत (सं० लि०) खिलचि-भू-कत। दुर्गम बना हुआ, जो आने जानेके लिये मुश्किल हो गया हो।

खिलेयु (सं० पु०) खिलस्य हर्गेर्विष्णोर्गुणो यत्, बहुव्री०। हरिवंश। (हरिवंशमासिपुष्पिकः)

खिलौना (हिं० पु०) क्रीडाद्रव्य, खेलकी जगह। यह बच्चोंके खेलनेको लकड़ी, मोम, मट्टी, कपड़े आदिसे बनाया जाता है। लखनऊके खिलौने मशहूर हैं।

खिलौरी (हिं० स्त्री०) धनिया, खरबूजा, ककड़ी वगैरह-

की भुने हुए बोज। इसकी भोजनके पीछे सुखशुद्धिके लिये व्यवहार करते हैं।

खिन्य (सं० त्रि०) खिने भव, खिल यत्। १ खिलसे उत्पन्न। २ परिग्रहितपठित, परिग्रहितमें पढा जानेवाला।

३ प्राणियोंके गमनयोग्य। (अ० १०१४११)

खिनी (हि० स्त्री०) १ इमी, ठोली २ गिल्लीरी, पानका बीडा। ३ कौन काटा।

खिनी (हि० स्त्री०) कभोडी, खून खिला कर इसने वाली।

खिवाही (हि० स्त्री०) इच्छुंमेद किसी किछकी ऊपर।

खिनाव (हि० पु०) खिचकनेकी स्थिति, जिस हान तमें किचक पड़े।

खिनावट (हि० स्त्री०) खिनाव देवी।

खिनारा (फा० पु०) क्षति, घटो, लुकसान।

खिसियाना (हि० क्रि०) १ लज्जा खाना, शर्म खाना।

२ क्रोध करना, नाराज होना। (वि०) ३ सज्जित।

खिसियावट (हि० स्त्री०) १ लज्जा, शर्म। २ क्रोध, गुस्सा।

खिषीर—पञ्चावके छेराद्वारादल खांजिनाकी एक गिरिमाका, इसका दूसरा नाम 'रत्तारो रत्तमयगिरि' है।

यह अक्षांश ३२° १३' से ३२° ३४' उ० और देशांश ७०° ५६' से ७१° २१' पू०के बीच अवस्थित है।

यह गिरिमाला १४०० हाथसे २२३४ तक ऊँची है। इसकी लम्बाई ५० मील और चौड़ाई ६ मील है। इसके गिरिशिखर पर कई एक प्राचीन हिन्दू दुर्गके खण्डहर हैं और बहुतसे भग्न देवमन्दिर हैं। वे भवपाजकन "काफिरकोट" नामसे विख्यात हैं। इस गिरिमाला पर विकीत नामके स्थानमें सेथ्यद पोरकी महिद है, यह निकटस्थ मनुष्यके निकट प्रतिप्रसिद्ध है।

ऐसा कहा जाता है कि वह पौराणिकी लोका पर बढ़ कर सिन्धु पर होते थे। उनके समुद्र मधुदूम भवनीकी आगीर भोग करते हैं। यहके चूना पहाड पर बहुतसे पुर्गीके प्राचीन प्रस्तीमू' जीवदेह पाये जाते हैं। इसमें स्थान स्थान पर लष्पापक्षिपण हैं, उनमेंसे खिमाके निकट गीशा नामका भरना प्रधान है।

पहाडके ऊपर लुपियोग्य बहुतसी खर्वरा लमीन है। यथेष्ट वर्षा होने पर गेहूँ और बाजरा बहुत होता है। पहाडके नीचेके देशमें तम्बाकू उत्पन्न होती है।

खिषी, खिषावट देखो।

खीच (हि० स्त्री०) १ पाकपण, खिचाव। २ कनकैया लडानेका एक ढाच। इसमें चपना पतङ्ग दूसरे पतङ्गके नीचे से जा कर सलटा घुमा कर खीचते हैं। खीचका

ढाच ऐसा सधा होता है, कि दूसरेको कनकैया कटनेसे नहीं बचती। इसमें डोर खीचते खीचते पीछेकी भी हटा जाता है।

खीचतान (हि० स्त्री०) १ लैवदेव, लप्पा भूपी। ३ उनट पसट, धौंगा धौंगी।

खीचना (हि० क्रि०) १ पाकपण करना, चमीट लेना। २ निकालना, खोलना। ३ भरना। ४ बनाना, छिलाना ५ वगोभूत करना, गुनाम बनाना। ६ जगाना। ७ पीना। ८ टपकाना, चुवाना। ९ निहार करना, खा जाना। १० लिखना। ११ खिच बनाना। १२ रोकना। १३ मगाना।

खीखर (हि० पु०) वना जन्तुविषय, किसी किछका वन बिनाव। इसकी कटास भी कहा जाता है।

खीचीचोहान—चोहान राजपुतोंकी एक शाखा। कोई कोई कहते हैं कि इन्होंने किसी समय देवी भगवतीकी एक पाव खीचडी भोग लगाया था। देवी मत्तुट होकर इनकी किसी स्थानमें जाने कहाँ यहा इन्होंने बहुतसा सोना और चादी पाया। तभीसे वे खीचडी नहीं खाते हैं। इसी खीचडीसे खीची नाम हुआ। किसी किसीका मत ऐसा है कि खिचरी वा खीच स्थानमें ये बाम करते थे इसीसे ये खीच कहलाये और वह स्थान "खीचोवार" नामसे विख्यात हुआ।

खीची चोहान लोग कहलाते हैं। शांभरका राजा प्राणिकरायके २४ लडके थे। उनमेंसे एकका नाम अजयराव था। यही अजयराव उनकी पुत्र्य पुत्र्य थे। उनके १६य पुत्रोंमें गयासिंहने जन्म ग्रहण किया था। उनके प्रसन्नराव और पिन्पन्नराव नामके दो पुत्र थे। ये दोनों खीचीपुर पाटनमें रहते थे और दिनीपति छपी राजके समामयिक थे। छपीराजने उन दोनोंको मानावारमें अठारह अठार धाम युक्त गागरोन् परगणा प्रदान

किया। ज्येष्ठ भ्राता निःसन्तान था। छोटेको चूड़पाल नाम का एक लड़का था जो माउमटयानमें राज करते थे। सिंहराव, रतनसिंह और मन्नसिंह ये तीनों चूड़पालके वंशधर थे। मन्नसिंहने अपने तीन लड़कोंके बीच राज बांट दिया। बड़े जत्पाल या चैत्पालके हिस्सामें गागरोम, मध्यम अदलजीके भागमें अमलवाट और छोटे विलासके भागमें रामगढ़ पड़ा। छोटे लड़के विलासके कोई पुत्र नहीं होनेके कारण उसका हिस्सा दोनों भाइयोंके बीच बराबर २ बांट लिया। अतुलफजलने आइन अकबरीमें लिखा है कि जैत्पालने कमाल उद्दीनका नाश कर मालवराज्य (१३२४ ई० में) अधिकार किया था।

जैत्पालके उत्तराधिकारी पांच मनुष्य थे—१ सावतसिंह, २ राव कण्डवा, ३ राजा पिपाजी, ४ महाराज द्वारिकानाथ, ५ महाराज अचलदास। अचलदासके राजत्व कालमें सुसलमानोंने गागरात्पर आक्रमण किया। अचलदास खिरिराजकी पुगनी राजधानी खिचीपुरघाटन आत्मरक्षाके लिये भाग गये लेकिन पितृराज्यकी रक्षाके लिये १४४० ई०में ये रणस्थल गये और सुसलमानोंके हाथसे मारे गये। इन्हींके साथ साथ गागरीनके ज्येष्ठ खीचो राजवंशका भी शेष हो गया।

जैत्पालका छोटा भाई अदलजीके लड़केका नाम धारुजी था। ये अलाउद्दीन धारके समसामयिक थे। खीची वंशमें धारुजी सविशेष भक्ति और अहंताके पात थे। राजपूत भाट आज तक भी उनका कीर्तिगात्र करते हैं। अष्ट अर्थमें लिखा है कि प्रधान प्रधान राजपूत राजागण सुलतान अलाउद्दीनके साथ अपनी अपनी लड़कियोंका आदान प्रदान करते थे। किन्तु धारुजी प्रवल प्रतापी सुलतानके प्रादेशको नहीं मानते थे। इसीसे राजा धारुजी अपना राज्य खोकर वनवासी हो गये थे। अन्तमें सुलतानने उन पर संतुष्ट हो कर खीचीवारके २४, जिला इन्हें प्रदान किये। उनके वारह लड़के थे। जिसमेंसे परिसिंह ज्येष्ठ था। इसके शासनकालमें खीचीवार राज्य दक्षिणमें शारङ्गपुर और सुजालपुर तक और पूर्वमें भिलसा तक फैला हुआ था। राजपूत भाट ऐसा कहा करते हैं कि अरिसिंह

साठ लाख हिन्दू और अठारह लाख मुसलमानके उपर शासन करते थे। उनके बाद इसी वंशके सात मनुष्य राजा हुये। यथा सातावजी, हेमजी, आमलजा, रङ्गमल, रोडितास, दुर्गादास और हामिरसंस। इन सात राजाओंके समय कोई घटना न हुई थी। राजा हामिरका लड़के नारायणदासने हुमायूँकी सहायता की थी इस लिये उन्हें पांच हजार समन्दवार का पद मिला था। अकबर बादशाहने उनके लड़के गनिवाहनको आसिरगढ़ दिया था। गनिवाहनका लड़का दीपशाह था। सम्राट् शाहजहां दीपशाहका बहुत मानते थे। उन्होंने दीपका वारह जिनाकी जागीर और सुलतान अधिकार प्रदान किया था। दीपशाहके लड़के गरीबदासको दो लड़के थे। बड़े लालसिंहने १६७७ ई०में राघवगढ़ स्थापित किया।

लालसिंहके तीन लड़के थे—धीरत्, सूनन, और केशरी, ये तीनों भाई क्रमानुसार राघवगढ़, रामनगर, और गढ़ामें राज्य करते थे।

धीरत्के दो लड़के—गजसिंह और विक्रमादित्य थे। औरङ्गजेबके राज्यकालके अन्तिम समयमें जब सब वीर राजपूत उनके विपत्तमें थे और जिस उद्देशमें वाटशाह की मृत्यु हुई थी उस समय राजा गजसिंह भी उस पड़यत्नमें लिप्त थे और अपना पितृसिंहासन छोटे भाईको अर्पण कर अपने राज्यके संध्यासिंहके यहां आश्रय लिया था।

विक्रमादित्यके दो लड़के—वलभद्र और बुधसिंह थे। वलभद्रने पितृसिंहासन पाया और बुधसिंहने ईशागढ़की जागीर। आजतक भी ईशागढ़ बुधसिंहके वंशधरोंके आधीन है। राजा वलभद्रका पुत्र वलवन्त सिंह और उसका लड़का जयसिंह था। जयसिंहके राज्यकालमें महाराष्ट्र सेनाने खीचीराज पर चढ़ाई की। उनसे जयसिंहने ५२ वार लड़ाई की। १८१६ ई०को सेनापति वसस्ता पांच हजार अश्वारोही और ढदल पैदल सिपाही और बहुत गोलागोली लेकर वजरङ्गगढ़ और जयनगर पर अधिकार जमाया और उसके बाद राघवगढ़के राजा जयसिंहके विरुद्ध अग्रसर हुये। वीर-वर चोहान राजाने अदम्य साहससे कुछ समय तक

राजधानीकी रक्षा की। किन्तु उनका वेसा साइस और
 पश्चिमसाय स्थित हुआ। उनके घरहीके किसी शत्रुके
 पहचान्धस राक्षसगत विपक्ष सेन्के हाथ प्रा गया।
 जयसि इ वीर जङ्गलमें अपना प्राण बचानेके लिये
 भाग गया। १८२६ ई०को उसी धिन्तासे उनकी स्यु
 हुई। उनके लड़केका नाम दुकूनमि इ थे। इन्होंने अप-
 पिल्लराज्यको उधार करनेके लिये बहुत स्थानोंसे सेन्य
 संग्रह कर शत्रुओंके विरुद्ध आक्रमण किया। इस समय
 वृटिशगवर्नेमण्टने १८२० ई०में राजा दूकूल सिंहको
 राक्षसगत और वानभट जिला दिला दिया। तभीसे वह
 स्थान उन्हेंके वंशधरीके प्रधेन प्रा रहा है। वहां की
 आमदनी ३७५०० रुपये है। उसी समयसे वह स्थान
 ग्वालियर राजका करदराज्य हुआ।

खोज (हि० खी) १ चिट, भ्रूज्जाहट । २ चिटनेकी
 वात, भ्रूज्जाहट पैटा करनेवाली चीज ।

खोजना (हि० क्लि०) १ चिटना, उकताना, विगडना ।

खोप (हि० पु०) १ वृक्षविशेष, कोई पेड़। यह मचन
 तथा मरन रहता और पञ्जाब, राजपूताना तथा अफ-
 गानस्तानमें उपजता है। पत्र छुट्ट एव लम्बे लगते और
 शीतकालकी छोटे छोटे फूल खिलते हैं। यह पशुओंके
 खिलाने और रस्सिया बनानेमें काम आता है। २ लाज-
 वन्ती । ३ गमधारा ।

खीर (हि० स्त्री०) दुग्धवत् तण्डुल, जाउर, तममड़ ।
 पहले चावल चुन त्रिन करके सुखा लेते हैं। फिर उसे
 गर्म घीमें डाल अच्छी तरह भुना जाता है। चावल
 भुनते भुनते लाल हो जाने पर विग्रह दूध डालते हैं।
 जब दूधमें पकते पकते चावल फूल आता, चीनी देकर
 कड़ाही उतार ली जाती है। शीतल होने पर दूधमें
 बना हुआ यही भात 'खीर' 'जाउरि' 'तममड़' आदि
 नाम धारण करता है। खीर खानेसे फिर किसी चीज
 पर मन नहीं चलता ।

खीरघटारं (हि० स्त्री०) अन्नप्राशन, पानी, त्रिम दिन
 गिरुका भवेप्रथम पत्र पिनाया जाय ।

खीरमोहन (हि० पु०) एक यज्ञना मिठारं। यह दिनका
 बनता है।

खोरा (हि० पु०) फलविशेष। खोरा कर्कटीजातीय एक

फल है। यह वर्षा ऋतुमें उपजता और मोटा मोटा एक
 एक चित्ते तक लम्बा लगता है। खोराका सिरा काट
 दोनों कटे टुकड़ोंकी छुरीसे गोद करके एक दूधने पर
 रगडते हैं। इससे उसके मुत्र पर फिन उमड आता है।
 फिर पहली कटी जगहके एक अङ्गुल नीचेसे दीवारा
 काटते हैं। कहते हैं, ऐसा करने पर खीरेका कडवापन
 निकल जाता है। अन्तकी छुरीसे बकना छील करके
 खोरा नमक और काली मिर्चकी चुकनीके साथ खाते हैं।
 यह खानेमें बहुत अच्छा लगता और उकार आने पर
 अपना ही मजा रखता है। खीरेकी तरकारी भी
 बनती है इसके बीज ठण्डाईमें पीम कर पीये जाते हैं।
 खोरा शीतल होता और बहुत खानेमें शीतल्वर उत्पन्न
 कर देता है।

खोरो (हि० स्त्री०) बाख, चोपायोंके घनके ऊपरका
 भाग। इसमें दुग्ध उत्पन्न होकर पचखान करता है।

खोन (सं० पु०) कौल प्रथोदशादिवत् माधु, कौलक,
 कांटा ।

खोन (हि० स्त्री०) १ लाई, भुमा पोर खिना हुआ
 धान । २ कौल, कांटा । ३ अन्नहारविशेष, कोई
 क्षेत्र या गहना । खियां इसे नाकमें पहनती पोर लोग
 भी कहते हैं। ४ मुहांसकी कौन । ५ भूमिविशेष,
 कोई जमीन। बहुत दिन पीछे जौनी जानेवाली भूमि
 'खौल' कहलाती है।

खोलना (हि० क्लि०) खोल खाना, गांठना ।

खोली (हि० स्त्री०) पानका बीड़ा, लगा जगाया
 पान ।

खोवन (हि० स्त्री०) उष्णसत्ता, मस्ती ।

खोबर (हि० पु०) वीरपुरुष, बहादुर पादमी ।

खोस (हि० वि०) १ नष्ट, बरबाद, उखाड़ । (स्त्री०)
 २ खिसियाष्ट, खिट । ३ खोप, गुफा । ४ बिगाड,
 नाराजगी । ५ सजा, गर्म । ६ दांत निकालनेका भाव,
 ७ विमारा घाटा । ८ दुग्धमेद। खानेके पीछे ७ दिन
 तक खोसियाका गावका दूध 'खोस' कहलाता है। इस
 का चपर नाम पेडस है।

खोसा (हि० पु०) १ खोसा, खेर । २ किसी बिगममें
 घेरी । यह कपड़ेकी बनती है। इसको हाथमें हाथ

कर शरीर धोया मला जाता है। ३ खोस, होठोंके
1हर दांतोंका निकास।

खुंटकढ़वा (हिं० पु०) कानमैलिया, कानका खूंट
निकालनेवाला।

खुंटफारी (हिं० वि०) प्रति-दुष्ट, निहायत पाजी, बड़ा
बदमाश।

खुंड (हिं० पु०) १ लक्षणविशेष, एक वास। यह मोटा
रहता और काली जमीनमें खूब उपजता है। खुंड दो
हाथ तक बढ जाता और मोटा डगठल आता है।

इसका दूसरा नाम गुंड या गूनर भी है। पशु खुंड
बहुत कम खाते हैं। २ गूठ, गुठा, कोई पहाड़ी टट्ट।

खुंडला (हिं० पु०) क्षुद्र गृहमेद, टूटा फूटा या गिरा-
पड़ा भीपड़ा।

खुंदाना (हिं० क्रि०) कुदाना, नचाना, घोडे पर चढ़के
उसकी कायदेशे चलाना फिराना।

खुक्ख (हिं० वि०) १ खाली, कूका, जो रुपया पैदा खो
या हार बैठा हो। २ खिलाल खाये हुआ, जो ताशके
खेलमें हार गया हो।

खुखंड (हिं० पु०) राजकाभेद, किसी किस्मकी राई।

खुखड़ा (हिं० पु०) सड़ा हुआ पैड, खोखला दरमूत।

खुखड़ी (हिं० स्त्री०) १ कुकड़ी, आंडी, तकुवा पर
लपेटा हुआ घागा। यह बुननेमें लगती है। २ कुरीका-
भेद, किसी किस्मकी बड़ी कुरी। यह प्रायः नेपालमें
तैयार होती है।

खुखुन्द—एक पुराना नगर। यह युक्तप्रदेशमें गोरख-
पुरसे १६ कोस दक्षिण-पश्चिम अवस्थित है। किसी
समय खुखुन्दमें बहुतसे लोग रहते और पुण्यस्थान-
जैसा समझते थे। आज भी इसमें भूईं-भूरि प्राचीन
कीर्तियां पडी हैं। धाराविद् कनिङ्गहाम साहबने लिखा
है—नालन्दाकी स्टेड करे इतना प्राचीन ध्वंसावशेष
कहीं देखनेमें नहीं आया।

आजकल इस नगरमें उतने लोग नहीं रहते।
जगह जगह हिन्दुओंकी बहुतसी देवदेवियों और जैन
तीर्थक्षेत्रोंके तथा प्रतिमूर्तियां पडी हैं। परन्तु
एक भी जैन देव नहीं पड़ता। बीचबीच गोरख
पुर और पटनेसे आबक और जैन बनिये यहां देव-

दर्शनका आ जाते हैं। खुखुन्दमें हिन्दुओंके देवालय
तथा देवमूर्तियां अधिकतर टूट गयी हैं।

खुगीर (फा० पु०) १ नमदा, घोड़ोंके चारजामेमें नीचे की
ओर लगनेवाला कपड़ा। २ जीन, चारजामा। वैकाम
चांजाका जमाव 'खुगीरकी भरती' कहलाता है।

खुज्राह (स० पु०) खुमित्यशक्तं गव्यं कृत्वा गावते,
गाह-अच्। श्वेतपीतवर्णाव, सफेद पीले रङ्गका घोडा।

खुचर (हिं० स्त्री०) व्यर्थ दोपारोप, झूठी देवजोई।

खुजदार—खलूचिस्तानके कलात राज्यका प्रधान स्थान
और कलात खां नायबके देशी सहायकीका सदर। यह
अक्षा० २७° ४८' ४०" और देशा० ६६° ३७' पू०में
पड़ता है। सिन्धी लोग इसकी 'कोहियार' कहते हैं।
इसके ऊपर सिरे पर १८७० ई०की एक किला बना
था। यहां उत्तरसे कलात, दक्षिणसे कराची तथा वेना
पूर्वसे कच्छो और पश्चिमसे मकरात तथा खैरानकी
सडक आ करके मिली है। ग्रीष्म ऋतुमें स्वास्थ्य अच्छा
नहीं रहता।

खुजलाना (हिं० क्रि०) १ रगड़ना, नाखूनसे घिसना।
२ खुजनी सठना, सुरसुरी चलना।

खुजलाहट (हिं० स्त्री०) खुजली, सुरसुरी, जुन्न।

खुजली (हिं० स्त्री०) १ खुजलाहट, सुरसुरी। २ कण्ठ-
रोग, खारिश, खाजको बीमारी।

खुजिस्तान—ईरानके दक्षिण-पश्चिम अवस्थित एक प्रदेश।
इसके उत्तर लादिस्तान तथा बख्तियारी पर्वत, दक्षिण
ईरानकी खाड़ी और पश्चिम बाटवल आरव है। खुज-
स्तानका शासन कार्य अब अरब और अफगानके शैखोंमें
बंटा है। अफगान नगरमें ही इसकी राजधानी है।
करुण, दिजफुल, जुराही, केरखा आदि बड़ी नदियां
हैं। यहां बहुतसे लोगोंके घर नहीं, वह खीमीमें ही
रहते हैं। खोजस्तानमें सुगर्भस्य गृह भी हैं। समीदा
नामकी बड़ी जलामूमि पहले कालखियेने सीलका
एक टुकड़ा थी। ट्रावोने इसका नाम 'सुसियाना' और
हिरोदोतासने 'सिसा' लिखा है। केरसमाके पास
पुराने शहरका भग्नावशेष है।

खुज्जाक (स० पु०) खुज आक निपातनात् जकारस्य
द्वित्वम्। देवताइ वृत्त।

खुम्भर (हि० पु०) उत्तरमूलभेद, पेंडकी एक लड। यह भूमिके भीतर न चम ऊपर हो जपर चारो ओर फैल जाती है।

खम्बि—मध्यप्रदेशके रायपुर जिलामें दुर्ग तहसीलके पश्चिम एक जमींदारी। यह रायपुरसे ३५ कोस दक्षिण पश्चिममें अवस्थित है। पचा० २१' ५०" उ० और देशा० ८१ ५०' ३०" पू०में है। क्षेत्रफल (परिमाण) ७१ वर्ग-मील है। इसमें ३२ ग्राम और ३४५६ घर हैं।

खम्बाक, खम्बाक दीकी।

खुटक (हि० स्त्री०) १ खुटकनेका काम, ऊपरी तोड फोड। २ खुटका, फिल।

खुटकना (हि० स्त्री०) उपरिभाग तोडना, सिरा कापटना। २ खुटका छोना, खडखडाना।

खुटना (हि० क्ति०) १ उद्घाटित छोना, खुलना। २ भग्न रहना, साथ छोडना। ३ पुराना, बाकी न रहना।

खुटपमा (हि० पु०) सदोपता, ऐवीपन, बुराई।

खुटाई (हि० स्त्री०) खोटापन, बुराई, ऐव।

खुटाना (हि० क्ति०) पुराना, बाकी न रहना।

खुटिया (हि० पु०) कर्णालद्वारभेद, कारनफूल।

खुटिया—युद्धप्रदेशीय फतेहपुर जिलेकी खलुहा तहसीलका एक गांव। यह ३० पारस रिलवेके विंदकीरोड छेगनसे ३७ कोस दक्षिण पडता है। इसमें कई एक देवमन्दिर वने और हिन्दो सर्दूकी एक पाठशाला भी है।

खुटेरा (हि० पु०) खदिरवृक्ष, खैरका दरख्त।

खुह (हि० वि०) ग्रथक, भग्न।

खुही (हि० स्त्री०) १ कीर्ति मिठाई। यह तिल और चीना या गुह मिला कर बनायी जाती है। २ सम्बन्ध-विच्छेद, पलाइदगी।

खुही (हि० स्त्री०) खुरड, जख्मकी पपड़ी। यह जख्मका मयद है, जो छी पर जम जाया करता है।

खुहमेरा (हि० पु०) धामभेद, किसी किष्का कोटा घान।

खुड (स० पु०) वातरक्तारोग, बाईके खुमका बीमारी।

खुडक (स० पु०) खुनक लकारव्यङ्कार। शुद्ध,

दखना। खडक देखा।

खुडक (हि० स्त्री०) खुटक, खुटका।

खुडला (हि० पु०) विडियाखाना, सुर्गियोंका दवा।

खुडवान (स० पु०) वायुरोगभेद, बाईकी एक बीमारी।

खुडवा (हि० पु०) चौबी, सर पर तेहरा चौहरा करके डाला जानेवाला कम्बल या कोई दूसरा कपडा। पानी या सर्दीसे बचनेके लिये खुडवा लगाया जाता है।

खुडडाक (स० त्रि०) १ खुद, नाचोज। २ फल, छोटा। ३ कनिष्ठ, पिछला।

खुडडाकपडतैल (स० स्त्री०) वातरक्तका एक तैल, बाईके खुनकी बीमारी पर लगाया जानेवाला एक तैल।

खुडी (हि० स्त्री०) सख्तास, पाखानेका गड्ढा।

खुण्डावाड—बम्बई प्रान्तके भावनगर राज्यका एक नगर। यह महुवासे उत्तर-पश्चिम १३ मील दूर पडता है। इस स्थानसे एक मीलकी दूरी पर विद्याघार नामकी एक बौद्ध गुहा है। नोग उसकी पथरी वावाकी गुफा कहते हैं। किसी सुन्दर दुर्गका ध्वसाशेष भी यहां विद्यमान है। मालूम होता है कि मुसलमानोंकी भ्रमलदारीमें यहां एक धाना भी रहा। दुर्गके ऊपको 'पाव बोमोनी कुवो' कहते हैं। जैनो केष्णवी और स्वामी भाराथणके पनुयायियोंके अच्छे अच्छे मन्दिर बने हैं। खण्डावाडमें व्यागर भी बहुत होता है। यह मालन नदीके दक्षिण तट पर अवस्थित है। इसकी पूर्व ओर पाध मीलकी दूरी पर मासन, रोभकी और लिनियो तोमनदियों का सङ्गम है। इसी सङ्गमका नाम त्रिवेणी है और वहां विवेकेश्वर महादेवका मन्दिर बना है। आश्व ऋणा भ्रमावस्थाकी वहां एक बड़ा मेला लगता है। यहां चाम पौर नारियलकी उपज अच्छी है।

कहते हैं कि चम्पाराजवालके भादरोडमें राज्य शासन करते समय वह भूभाग निर्जन था। उनके २ पुत्र रहें—हेमगन और गांगायत। उन्हेंने अपने पितासे विवाद करके वहां एक भीषण का बनाया। उठी समय मांगरोजके भूतपूर्व गवर्नर फतेह खान अपने बापसे विगड झूटमारका कितना हो खजाना से अपनी ५ बीबियों के साथ वहां पहुचे। उन्को न रह

दोनों भाइयों से मैनजीन बटाया था। परन्तु इनमें से प्रत्येक उनके वधही गुप्त चेष्टा में लगा रहता और बिना दूसरेकी कोई खबर दिये रूपया ले लेना चाहता। अखीर जो आपसमें भगडा बटनेमें हेमगनने उनकी गांगायतके दुर्भावकी सूचना दी। फतेहखाने गङ्गा बतही जहर दे एक किला बनाया। अहमदशाहने फौज भेज करके किला घेरा था। पहले भी फतेहखानों की तोड़ करके छोड़े, परन्तु पीछेसे शियाबहीपकी भाग खड़े हुए। उनकी ५ बीबियोंने जूएँ गिर करके प्राणत्याग किया था। उससे उक्त कूएँ 'पाच बीबो नो कुआ' नाम पर अभिहित हुआ है। सुलतानकी फौजने पीछा करके फतेह खानकी पकड़ लिया और अहमदाबादमें कैद कर दिया। वहाँ उनका मृत्यु हुआ था। फिर हेमगनजीने उसे अधिकार किया और कुछ पीढ़ियों तक उनके वंशज यहाँ रहे। इस वंशके बाल खेंगारजी अन्तिम वीर थे। उनकी नौकरीमें बहुतसे बनार अहीर रहे। परन्तु यह उनको बहुत सताया करते थे। इसीसे उन्होंने खेंगारजीकी जी जायता पकड़ करके हालीमें डाल दिया और उनका कास तमाम किया। अहीरोंने मालिक बन करके टूमार सचायी थी। परन्तु मुसलमानोंने उन्हें कीत करके यहाँ एक घाना बैठाया। मुगल साम्राज्य नष्ट होने पर कुण्डलके रमानोंने इसे लूटा और मार उजाडा। १७८५-८६ ई०को ठाकुर वख्त सिंहकीने बहुआ विजय करने पीछे इसे फिर बसाया था। उसी समयमें यह भावलगर राज्यमें लगता है। लोकसंख्या प्रायः दो मजस है।

खुतन—पूर्व तुर्कस्थानके मध्यवर्ती एक जनपद। यह इयरकन्दके दक्षिण-पूर्व खुतन और काराकास नदियोंके सङ्गमस्थान पर अक्षा० ३७° १५' ३०" और देशा० ७२° २५' ५०"में अवस्थित है।

मध्य एसियामें यह जनपद अतिप्राचीनकालसे ही सभ्यताकी जैसा प्रसिद्ध है। ई०से १४० वर्ष पहले इसका चीनके साथ बड़ा सङ्घाट था। उस समय चीन-सभ्यताका अधिक प्रचार था।

खुतन नगर चारों ओरसे दुर्भेद्य प्राचीरसे घिरा

हुवा है। यहाँ अठारह हजार घर हैं और डेढ़ लाख मनुष्य रहते हैं। विदेशी वणिक्के ठहरनेके लिये दग सराय हैं। बहुतसे मनुष्य व्यापार करनेके लिये यहाँ आते हैं।

खुतना (अ० पु०) १ प्रधंभा, तारीफ। २ राजाके यगकी घोषणा।

खुताहन—युक्तप्रदेशके जौनपुर जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० २५° ५०' एवं २६° १२' ३०" और देशा० ८२° २१' तथा ८२° ४६' ५०"के मध्य अवस्थित है। इनका रकबा ३६२ वर्गमील है। खुताहनमें ५ परगने और ७०० गांव लगते हैं। लोकसंख्या २६८४३८ है। किसानोंकी ५१७०५०, ६० मानगुजारी देनी पड़ती है। इसमें २७७०००, ६० राजस्व है। इस तहसीलमें गोमती नदी बहती है। इसी नदीकी राह लोग आते जाते हैं। खुताहन ग्राममें कचहरी लगती है। यह स्थान अक्षा० २५° ५८' ७" उ० और देशा० ८२° ३६' ५८" पू०में गोमती नदीके किनारे जौनपुर शहरसे ८कोस उत्तर-पश्चिम पड़ता है। गांवमें कोई १ हजार लोग बसते हैं। बुधवार और शनिवारकी बाजार भरता है।

खुत्य (हिं० पु०) ठूँठ, बीटा, पेड़का एक हिस्सा। पेड़ काट डालने पर जड़का जो ऊपरी भाग बच जाता, खुत्य कहलाता है।

खुयी (हिं० स्त्री०) १ खूशी, खोभर। यह चार अरहर आदिका बड़ अंश है, जो फसल कट जाने पर भी भूमिमें लगा रहता है। २ धरोहर, अमानत, धाती। ३ बसनी, रूपया रखनेकी थैली। खुयीको रूपया भर करके कमरमें बांध लेते हैं। ४ सम्पत्ति, दौलत, रूपया, पैसा।

खुद (फा० अर्थ०) स्वयं, अपने आप।

खुदकाश (फा० स्त्री०) कृषिभूमिभेद, खेतीकी एक जमीन। जिस भूमिकी उसका प्रभु अपने आप जोतता जाता, खुदकाश कहा जाता है। परन्तु खुदकाश सीर नहीं होती।

खुदकुशी (फा० स्त्री०) आत्महत्या, अपने आपको मार डालनेका काम।

खुदगरज (फा० वि०) स्वार्थपर, मतनकी, अपना काम बनानेवाला ।
 खुदगरजी (फा० स्त्री०) स्वार्थीपन, अपना मतलब देखनेकी बात ।
 खुदना (हि० क्रि०) विदीर्ण होना खुद जाना ।
 खुदमुखनार (फा० वि०) खतन्त्र, जो किसीसे दुश्मता न हो ।
 खुदमुख्तारी (फा० स्त्री०) स्वातन्त्र, आजादी, दूसरेके दबावमें न रहनेकी बात ।
 खुदरा (हि० पु०) छुद्र वस्तु, फुटकर चीज । फुटकर चीजे वेचनेवालीको 'खुदरा फरीश' कहा जाता है ।
 खुदराय (फा० वि०) मनबना, अपने तबीयतके मुवाफक काम करनेवाला ।
 खुदरायो (फा० स्त्री०) स्वेच्छाचारिता, अपनी मर्जीके मुताबिक काम करनेकी बात ।
 खुदवाना (हि० क्रि०) खोदनेके काममें दूसरेकी नगाना, खनन कराना ।
 खुदवायो (हि० स्त्री०) १ खुदवानेका काम । २ खोदनेकी मजदूरी ।
 खुदा (फा० पु०) परमेश्वर, ईश्वर ।
 खुदाई (फा० स्त्री०) १ ऐशभाव, खुदाकी सफत । २ छट्टि, दुनिया ।
 खुदाई (हि० स्त्री०) १ खोदनेका काम । २ खोदनेकी बात । ३ खोदनेकी उजरत ।
 खुदागञ्ज—युद्धप्रान्तके शाहजहाँपुर जिलेकी तिलहर तहसीलका एक नगर । यह अक्षां २८ ८' ४०" और देशां ७७ ४४' ४५" पूर्वमें अवस्थित है । लोकसंख्या कोई ६२५६ है । कहते हैं कि १८वीं शताब्दीके मध्यभागकी यहाँ एक बाजार बनाया गया, यहाँ १८५० ई० तक अगरेजोंके अधीन अपना तहसीलका सदर रहा ।
 खुदागन्ध (फा० पु०) १ परमेश्वर । २ अस्वभाव, मालिक । ३ महाशय, हज़ूर ।
 खुदागन्ध खान्—पमीर वल हमरा गायका खान्के लडके । यह अपने बापके जित्तोको एक हजार मसनदार और घरदारके शासनकर्ता थे । १६८४ ई०की अपने पिताके मरने पर इन्होंने दिल्ली पाकर जमायत

वल मुलुक असद खाकी लडकोसे गदो की । १७०० ई०में पोरब्रजेवने रहे विदर और धोजापुर-कर्णाटका शासनकर्ता और अटार्डे हजारी मनसदवारका पद प्रदान किया । बादगाहके मृत्यु समय ये तीन हजारी मनसदवार हुये थे । बादगाहके मरने पर उनके लडकोंके विवादमें यह आजिमशाहका पक्षान्वयन कर लडे थे और १७०१ ई०की लडाईमें भागत हो कर पखलकी प्राप्त किया ।

खुदावाद—भारतका एक प्राचीन नगर । यह सिन्धुप्रदेशके कराँची विभागके अन्तर्गत दादू तालुकके बीचमें है । दादूसे ४ कोस दक्षिण-पश्चिम और सेहवानसे ८ कोस उत्तर-पूर्व है । अक्षां २६ ४०' ४०" और देशां ६७ ४६' पूर्वमें अवस्थित है । आजकल यह नगर खोटीन हो गया है । सत्तर वर्ष पहले तनपुरके मीर यहाँ वास करते थे । उस समय यह सन्धि-शाली था और बहुतसे मनुष्य रक्षा करते थे । तनपुरके मोरोंका मकबरा आज भी इसकी पहली बटनीका परिचय देता है ।

खुदियाँ—पञ्जाब-प्रान्तके जाँघर जिलेकी सुनियाँ तहसीलका एक नगर । यह अक्षां ३० ५६' ४०" और देशां ७४ १७' पूर्वमें मूलतान फिरोजपुर रोड पर पडता है । आवादी लगभग ३४०१ है । नगरके पास ही एक नहर बहती है । १८७५ ई०की यहाँ सैन्य नि सपालिटी पडी । नगरमें एक अस्पताल है ।

खुदी (फा० स्त्री०) १ अहम्यता, अपनी धुन । २ धर्म मान, गिरी ।

खुदा (हि० स्त्री०) १ कथा, किन्की । २ तलछट, अशुभके रसके नीचे बैठ जानेवाला मेल ।

खुनकी (फा० स्त्री०) शीतलता, सरदी ।

खुनखुना (हि० पु०) बानकीका एक विन्कीमा । इसे खुनखुना या कुनकुना भी कहते हैं । हाथमें पकड कर हिनानेसे यह खुनखुनाने जगता है । छोटिसे दस्तेमें लकडा, मोटे या किछो दूसरी धातुका छोटासा पोलो लडू गीठ दिया जाता है । छठीमें छोटि छोटि ककड या दूसरे कडे दाने भरे रहते, जो खुनखुनके टिकते ही आवाज देने लगते हैं ।

खुमती—१ विहारके राँची जिलेका एक उपविभाग। यह अक्षा० २२° ३८' तथा २३° १८' उ० और देशा० ८५° ३६' एवं ८५° ५४' पू०के बीच पड़ता है। क्षेत्रफल ११४० वर्गमील है। लोकसंख्या १८८०३० होगी। १८०५ ई०में उसकी उपविभाग बनाया गया।

२ विहार-राँची जिलेके खुमती उपविभागका सदर। यह अक्षा० २३° ५' उ० और देशा० ८५° १६' पू०में अवस्थित है। आबादी प्रायः १४४६ है। अपने प्रान्तमें यह केन्द्रीय व्यापारका स्थान है।

खुमदलु—पञ्जाबके हिन्दू राज्योंके बीच एक झर (Lake) यह शतद्रुवे शिवालिक तक फैला हुआ है और १३८ फीट गहरा है। समुद्रपृष्ठसे २८०० फीट ऊँचा है।

खुम (हिं० स्त्री०) विगाड़, नाराजगी, अमयन।

खुमसाना (हिं० क्रि०) विगडना, नाराज होना।

खुमसी (हिं० वि०) गुस्सावर, विगड़ उठनेवाला।

खुफिया (फ्रा० वि०) छिपा हुआ, पोशीदा।

खुफिया पुलिस (हिं० स्त्री०) सफेद पुलिस, सी० आई० डी०।

खुमना (हिं० क्रि०) खुमना, धंसना, खुमना, लगना

खुमी (हिं० स्त्री०) १ कर्णालझारविशेष, कानमें पहननेकी लौंग। २ खमी।

खुमरा (फ्रा० पु०) किसी किसके फकीर। यह भीख मांगते और सुसलमान होते हैं। खुमरा अधिकतर पश्चिममें ही देख पड़ते हैं।

खुमान—चित्तौरके एक राणा। यह वाप्याके पुत्र, अपराजितके पौत्र और राणा कालभोजके प्रपौत्र थे। इनका अपर नाम कर्म था। योगीवर हारीतके तपस्या स्थल पर एकलिङ्गका प्रसिद्ध मन्दिर बनाया था। ८वीं शताब्दीके आरम्भ हीमें पिताके मरने पर यह चित्तारके सिंहासन पर बैठे। इनके राजत्वकालमें ८१२-३६ ई०का सुसलमानोंने कई बार चित्तौर पर आक्रमण किया। खुरासानके अधिपति मुहम्मद शह्रदुलके अधिनायक थे।*

खुमान चौबीस बार अदम्य उम्माइसे शत्रु विश्वर मडे। फिर इन्होंने ब्राह्मणोंके परामर्शसे अपने छोटे लड़के जगराजकी राजा बनाया किन्तु छोड़े दिनके बाद ही उनकी बुद्धि पलटी। परामर्शदाता ब्राह्मणोंकी माग कर फिर भी राजगद्दी पर बैठे।

इस समय ये बहुत दिन तक राजा न रहे। पापका प्रायश्चित्त पडा। ईश्वरकी इच्छासे उनके दूसरे पुत्र मद्रन-ने उनको गौतम ही राजस्थित और निहत करके पितृसिंहासन आरोहण किया। खुमान स्वजातीयोंमें ऐसे गौरव और सम्मानभाजन हुए थे कि आजतक भी उदयपुरमें किसी व्यक्तिके पद मद्रनन होने या विधकी ज्ञाने पर पार्श्वस्थ मनुष्य "खामान तुम्हारी रक्षा करे" कह कर आशीर्वाद दिया करते हैं।

खुमान—बुंदेलखण्डस्य चरखारी राज्यके एक हिन्दी कवि। इनका जन्म १६८३ ई०को हुआ। यह अन्धान्य और बिलकुल अशिक्षित थे। कहते हैं—कोई साधु पुरुष एकवार उनके घर गये और ४ मास वहाँ निवास करके जब जाने लगे, बहुतसे सम्मान पुरुष उन्हें चरखारीसे बाहर पहुँचाने लगे। थोड़ी दूर पहुँचने पर दसरे लोग तो लौट पडे, परन्तु साधुके प्रत्यावर्तनका बहुत कहने पर भी खुमान उन्हींके पास ठहर गये। खुमानकी दलील थी—'मैं क्यों अपने घर वापस जाऊँ ? मैं अन्ध, अशिक्षित और घरके किसी कामका नहीं। मरुल मशहूर है—धीवीका कुत्ता घरका न घाटका' साधुने इस पर सन्तुष्ट हो उनकी लिखा पर सरस्वती-मन्त्र लिख दिया और उनसे एहनि अपने कमलुकी वर्णनामें कविता बनानेको कहा। उन्होंने इसकी प्रशंसामें गीत ही २५ कवित्त बनाये, फिर साधुके चरण छू करके घर वापस आये। यह संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओंकी कविता करते थे।

एकवार इन्होंने खालियरमें सेंधिया राजाके कहनेसे रात भरमें ७०० श्लोक लिखे। 'लक्ष्मणशतक' और 'हनुमान् नखसिख' इनके प्रधान ग्रन्थ हैं।

खुमान सिंह—इनका उपनाम खुमान रावत गुहलौत था। यह मेवाड प्रान्तीय चित्तौरके राजा थे। ८१० ई० इस्वीके सम्मानमें 'खुमान रायसा' ई० १८वीं

* खलीफा हाद' सल्तनतने अपने पुत्र उस साधुकी खुमानसिख और भारतीय यमन राज्य दे डाला था। वही साधु महाराज खुमानके समकालवर्ती रहे। संतरा स्पष्ट ही अनुमित होता है कि लिपिकारोंने अमयनतः साधुके वक्षे मुहम्मद लिख दिया होगा।

गर्भशोका निखा गयो। उषमें खुमान रावत पौर
उभके बमका इतिहास दिया हुआ है।

खुमार (स० पु०) १ नगा, मद। २ नर्मिका उतार।
खुमारी (हि० स्त्री०) खुमार देवी।

खुमी (हि० स्त्री०) १ छुद्र उद्विर्दोकी एक जाति।
इनमें पत्ते या फूल नहीं लगते। भूफोड, डिगरी,
कुङ्कुमुना प्रागयाधन बां। खुमो कहलाते हैं।

यह हरित कोमाणुमें शून्य रहते, दूसरे वर्णोंकी भांति
वृत्तिका प्रथम पदार्थोंमें अपने गरीरकी पुष्टि नहीं
कर सकते, देखनेमें सफेद या भदसीले लगते पौर अन्य
वर्णों वा जीवोंको पाहार करते हैं। यथा ऋतुनी सड़े

बाद काष्ठ पर गोन गोन छोटी खुमी जग जाती है।
इसे कठफूल कहा जाता है। इसमें जहर होता है।

खुमोका शरीरकीय अन्य वर्णोंसे विभिन्न रहता है।
इसके कोमाणु सत लेखे लम्ब निकलते हैं। खुमी दो
प्रकारकी होती है—हरे भरे वर्णोंके रससे पसनेवासी

पौर सड़े गले सुट्टे ख निजाला। पड़ली तो गिरईकी
शक्ति बनाजा पर लग जाती पौर दूसरी कठफूल,
भूफोड आदिका रूप बनाती है। इसके पत्र रश्मि छेद

रश्मि पाठ दम रश्म तक बढते, छूनेमें कोमल लगते
पौर कानि लेखे देख पडते हैं। इसीसे खुमीका चंछता
नाम आता है। इसकी छतरोमें कई परत रहते हैं।

भूफोड, डिगरी आदिकी खाया भी जाता है। मास्त्राशु
२ दांतोंमें लडी जानैवाली सीनेकी कील। ३ बाघी
के दांतों पर चढ़ाया जानैवाला धातुका बना हुआ

पात्र।
खुंड (हि० स्त्री०) जम्बूकी खुखी पत्रको।
खुर (स० पु०) खुरक। १ शफ, सुम, टाप। यह
पशुपतिके पाशका निष्पन्न भाग है पौर इनके उचित
धोने पर भूमिसे संलग्न रहता है। सींगवाले घोषाओंके
खर बीबड़ फटे होते हैं। २ कांसदल, धरकी पत्ती।
३ नवीनाम मन्त्रद्रव्य। ४ पट्टादि पादुक, पाशके
नीचका हिया।

खुरक (स० पु०) खुरक आपति, कोक। १ तिलहल।
२ कोकलाक्षत्रव। (स्त्री०) ३ उत्तम वस्त्र।
खुरक रांगा (हि० पु०) रङ्गधातुपीद, धरनखरी

रांगा। यह मृदु, श्वेतवर्ण तथा शीघ्र गलनेवाला
होता है।

खुरका (हि० स्त्री०) १ लणविषय, किसी किष्करो
घास। यह अफीमकी विगाह देती है।

खुरखुर (हि० पु०) १ कण्ठव्यथेद, गर्नेको एक
पावाज। यह कफाधिक्यके कारण खास लेते समय
कण्ठसे निकलता है। इसे 'घरघर' भी कहते हैं।
२ धीरे धीरे खरोवनेकी पावाज। ३ दमे पावों
बसनेका शब्द।

खुरखुरा (हि० वि०) खुरदरा, नीवाक वा, गढ़ने
वाला।

खुरखुराना (हि० स्त्री०) १ खुरखुर करना। २ घर-
खुराना। ३ गहना, नीवा कचा पहना।

खुरखुराइट (हि० स्त्री०) १ शासप्रशासके समय कण्ठ-
स्त्रकी कफ आदिसे उत्पन्न होनेवाली एक विकृति।
२ खादरावन, नाहमशरी।

खुरखन (हि० पु०) १ कोई मिठाई। दूधकी कड़ाहीमें
थडा करके गर्म करते पौर मलाईको कड़ाहीकी चारा
पौर एक मोखसे चढ़ाते चलते हैं। इसी प्रकार जब
दूधका सब पानी जल जाता पौर कड़ाहीकी चारा

पौर नगी मलाई जम जाती, कड़ाहीकी मोखे उतार
ठण्डो कर देते पौर मलाईको छुरीसे खुरखनेते हैं।
इसमें चीनो डाननेसे खुरखन तैयार बनता है। यह
खानिमें बहुत अच्छा लगता है। २ कड़ाहसे खुरख
हुपा शुद्ध। ३ खुरख कर निकाली जानवाली कोई
चीज।

खुरखना (हि० स्त्री०) करीषणा, करीना, किसी जसो
हुई खुखी चीजको छुरीसे निखालना।

खुरखनी (हि० स्त्री०) १ कमेरोंका कोई पोजार। यह
छेनो जैसा रहता पौर बरतन बाफ करनेमें चलता है।
२ चर्मकारीका कोई यन्त्र। ३ खुरखनेका काम देने
वाली कोई चीज।

खुरखान (हि० स्त्री०) कुत्तावरण, गुरा काम,
पाजीपण।

खुरखी (हि० वि०) चमदावासी, बदमाश, बुरेदिवा।
खुरखी (हि० स्त्री०) चमारा, बड़ा सेरा। यह कपड़ेकी

बल्ही बल्ही बनती है। बीचमें दोनों ओर घावस्थक बलु रखनेके लिये खुं ह होता है। यह सुजाफिरोंके बड़े कासकी बीज है। दो छेले रहनेसे इसे प्रनायास छोड़े पर रख या कन्वे पर डाल सकते हैं। जैसा प्रागम खुरजीमें सामान रख कर चलनेसे मिलता, वैग या टूटने देख नहीं पडता।

खुरट (हिं० पु०) खुरोगविशेष, बीपार्थके सुमकी एक बीमारी। इसे खुरा, खुरा या खुरपका भी कहते हैं। नावदानके कीचड़में जानवरों को खानेमें खुरट सिट जाता है।

खुरपस (सं० त्रि०) खुर इव नासिका अस्य बहुव्री० -नसादेशः टच् णत्वञ्च । चिपिटनामिक, नक्रचपटा ।

खुरतार (हिं० स्त्री०) खुरका आघात, टापकी चोट

खुरधी (हिं० स्त्री०) कुलत्व, कुलधी ।

खुरदा (खुरधा) उड़ीसाके अन्तर्गत पूरी जिलाका एक उपविभाग। यह अक्षा० १८° ४१' एवं २०° २६' उ० और देशा० ८६° ५६' तथा ८५° ३३' प०के मध्य अवस्थित है। इसका परिमाण फल ६७२ वर्गमील है। लोकसंख्याप्रायः ३५८२३६ है, जिसमें हिन्दुओंकी संख्या अधिक है। वहाँ १२१२ गांव वसते हैं। यह उपविभाग दो ज़ानोंमें विभक्त है। खुरदा और वाणपुर।

उड़ीसाके प्राचीन हिन्दुराजाओंके अक्षयतन होने पर शेष राजा यही क्षुद्र उपविभाग मात्र लेकर थोड़े समय तक स्वाधीन थे। इसके जङ्गल और पर्वतादि बहाराष्ट्र अखागेही सेनासे दुर्भेद्य और दुरारोह होनेकी कारण वे अपनी स्वाधीनताको रक्षा करने आये थे। अन्तमें १८०४ ई०की यहांके राजाने अङ्गरेज-राज्य के विरुद्ध अस्त्र धारण किया, इसका परिणाम यह हुआ है कि अङ्गरेज-राजाने इनका राज्य हीन लिया। तभीसे यह अङ्गरेजोंके अधीन चला आ रहा है।

गौराङ्गमहाप्रभुके सुमसामयिक सूर्यवंशीय राजा प्रताप रूद्रदेवका १५२४ ई०की स्वर्गवास हुआ। इसके साथ साथ सूर्य वंशका गौरव भी नष्ट हो गया। उनके मरने पर उनके ३२ लड़कोंमेंसे बड़ा लड़का राजा बना। लेकिन बंध प्रभूत क्षमतामाली मंत्री गोविन्द-विद्याधरके आग्रहसे मारा गया। उसके बाद दूसरा लड़का राजा

हुवा। वरण मन्त्रोंके कौशलसे मन्त्रिपुत्र मधु श्रीचन्दनके आग्रहसे प्रतापरुद्रके अवशिष्ट शक्तियोंमें लड़के मार डाले गये। राज्यके अनेक क्षमतामाली मनुष्योंकी मार कर संतुष्टी गोविन्दविद्याधर अकण्ठ रूपसे राज्य पाकर १५३३ ई०में राजा गोविन्ददेव नाम अक्षय कर राज-सिंहासन पर बैठा। उस समय मुकुन्द हरिचन्दन नामका एक तैलप्री और प्रधान मन्त्री दनाई विद्याधर विशेष विख्यात थे। मुकुन्द कटकके शासनकर्ता हो कर राजा उपनामसे विख्यात थे।

उस समय बङ्गालके सुमन्मान शासनकर्ता और दक्षिणमें गोलकुण्डाके सुमन्मान राजाओंने उड़ीसाके विरुद्ध अस्त्र धारण किया। राजमन्त्री प्रभूमि गोदावी तीर्थस्थ स्थान लेकर गोलकुण्डा राजाके साथ विशाट टाना। इस विशाटके लिये युद्ध प्रारम्भ हुआ। राजा गोविन्द देव राज्य छोड़ कर आठमास तक सालिगण्डा नामक स्थानमें रहनेके लिये बाध्य हुवे। इस समय इनके दो भ्रातृपुत्र रघुमञ्ज छोठरा और बलही श्रीचन्दनने जगन्नाथजीके मन्दिरके पापदोंकी विनाश किया और कटकके शासनकर्ता मुकुन्द हरिचन्दनको कटकसे भगा कर राज-सिंहासनको अक्षय किया। राजा गोविन्ददेवने इस संवादको पा कर गङ्गातीरमें अपने दोनो भ्रातृपुत्रको परास्त किया। आप गङ्गातीर पर मृत्युके करालप्राप्तमें फँस गये और तत्पश्चात् मन्त्री दनाईविद्याधरने प्रतापरुद्रदेश नामके एक मनुष्यको राजसिंहासन पर बैठाया। यह बहुत अत्याचारी राजा थे। सिर्फ मन्त्री हीके बलसे आठ वर्ष राज्य करने बाद निःसन्तान अवस्थासे इन्होंने देह त्याग किया। उसके बाद नरसिंहजाना नामका एक साहसी सरदार मुकुन्द हरिचन्दनको सहायतासे दनाई-विद्याधरको कारावद्ध कारके आप सिंहासन पर बैठ गये। उस समय राजा गोविन्ददेवका भ्रातृपुत्र रघुमञ्ज छोठरने सेन्य संग्रह करके राज्य पर हमला किया; किन्तु मुकुन्द हरिचन्दनने उसे कैद कर डाला। एक वर्षके बाद नरसिंहजाना सिंहासनसे च्युत किया गया। अन्तमें मुकुन्द हरिचन्दनने तैलप्री मुकुन्ददेव नामसे १५५० ई०में राज-सिंहासन अक्षय किया। ये बड़े विवेक आर्

दयालु राजा रहे। अपने बुद्धिबलसे इन्होंने त्रिवेणी तकके देग अधिकार कर त्रिवेणीमें घाट चौर मन्दिर स्थापन किया। इन्हींके समय बङ्गालका नवाब सुलेमानके सेनापति क्लालापहाडने १५५८ ई०में राजाको परास्त और मार कर उड़ीसाभी अपने अधिकारमें कर लिया।

सुकुन्ददेवके बाद दो मनुष्य नामही मावके राजा हुए और वे दोनो सुमलमानोंके हाथम मारे गये। तत्पश्चात् उड़ीस-राज्य २१ वर्ष तक पराजक चडखाम सुमलमानोंके अधिकारमें रहा। नामकी भी एक राजा नहीं था। उसके बाद बहूतभी गडबडीके पीछे 'दनाई मन्त्रीके पुत्र रयाई रामचन्द्रदेवने १५८० ई० को मदर्भिके अभिप्रायानुसार-उड़ीसा महाराज नामसे सिंहासन ग्रहण किया। दनाई विद्याधर गजपति बंशके थे, इसलिये इनकी उपाधही 'गजपतिवध' नामसे विख्यात थी। उनके पूर्वजगौरव नष्ट होने पर भी यह 'जमिन्दार वध' नामसे पुकारा जाता है। महाराज रामचन्द्रदेवहीने कालापहाडके ध्वंसावगिण देवमन्दिरादिका निर्माण, संस्कार चौर देवमूर्तियोंका उद्धार किया। लजसाधदेवकी मूर्ति भी इसी समय नूतन प्रस्तुत की गयी। १५८२ ई० की राजा मानसिंह, यहाँके शासनकर्ता होकर आये। इस समय तैलङ्ग सुकुन्ददेवके दो लटक चौर राजा रामचन्द्रके वीर भाव्य पानेको तत्कार उठो। राजा मानसिंहने मध्यम्य होकर इस गडबडीको इस मतपर शास्य कर दिया कि सुादा प्रदेश चौर पुरुयोत्तमक्षेत्र विना करके महा राज रामचन्द्र भोग करेंगे और महाराजकी उपाधि इन्हेंकी रहेगी। किन्तु पास चौर उसके पक्षीन चन्दास्य स्थान तैलङ्ग सुकुन्द देवके ज्येष्ठ पुत्र रामचन्द्र रायके अधिकारमें और मारणगड् चकीरी सुकुन्द के द्वितीय पुत्रके अधिकारमें रहेगा। ये भी राजा कह- पायेगे किन्तु महाराज रामचन्द्र ही १२८ किन्तुके लपर बहुमत करेगी और मर्ममें इन्हेंकी प्रधानता रहेगी।

खुरदामें निम्नलिखित राजा राज्य करते थे—

रामचन्द्रदेव	१५८० ई०
पुरुयोत्तमदेव	१६०८
नरसिंहदेव	१६३०
गङ्गाधरदेव	१६५५
वल्लभद्वेव	१६५६
सुकुन्ददेव	१६६४
द्रशसिंहदेव	१६८२
लण्य वा हरिलण्यदेव	१७१५
गोपीनाथदेव	१७२०
रामचन्द्रदेव (२रा)	१७२७
वीरकिशोरदेव	१७४९
द्रशसिंह देव (२रा)	१७८६
सुकुन्ददेव (२रा)	१७८८

इनो पन्तिम राजाने फ्रेंचोंके विद्रोही हो कर अपना राज्य नष्ट किया। इस वधके राजगण पन्तमें नामही मात्रके 'लजसायका राजा' वा 'उड़ीसारज' कहलाकर राजदरवारमें सम्मानित होते थे, किन्तु यद्यर्थमें ये सिर्फ साधारण जमींदार।

चन्दास्य विभिन्न विवरण उत्तर मध्य देशी।

खुरदायं (हि० पु०) बँलानि चनाज मांडनका काम।
 खुरदस् (स० त्रि०) विकल्पेन टप् चत्वच। परवच देशी।
 खुरपशा (हि० पु०) पद्योगमेद, खोवायकी, एक बीमाणि। इसमें उनके सुख तथा सुगोंमें दूनि उभर पाते, मुखमें सानास्त्राव होता, देह गर्म पड जाता, उष्ण खास चलता और पाव रखना कठिन पडता है।
 खुरवा (हि० पु०) १ वही खुरपी। यह खोजार ओछिका चलता और पकड़नेके निये काठका दस्ता भगता है। इसका घास खोवने और जसोन गोडनेमें व्यवहार करते हैं। २ बर्मकार यन्त्रमेद। इसमें खील कर चन्दा माफ किया जाता है।
 खुरम (स० पु०) खुर इव प्राति, ख। प्रा क। वाप विभेय, क्षिषी जियका मार।
 खुरक (हि० पु०) कुलका, एक वाग। यह सोनिया- जेसा होता है।

खुरमा (आ० पु०) १ खारक, छोटा। २ कोई पकवान। खुरमा सौटा और नमकीन दोनों तरहका बनता है। पहले सौटा आटा सोयन डाल कर घूँघमें साना और उसी समय इच्छानुसार चीनी या नमक डाला जाता है। फिर सौटी रोटी जसा उसकी बेल कर छोटे छोटे लम्बे तिकोने या चौकीर टुकड़े उतारते और उन्हें घीमें लाल करके भुजते हैं। कोई कोई सादे खुरमे बना कर ही चीनीमें पाग लेता है।

खुरही (सं० स्त्री०) खुरे: सह दाति धीनःपुन्येन यत्, ला-क गौःदित्वात् ङीष् । १ शस्त्रप्रयोग, अस्त्रशिक्षा, छद्मियार चलानेकी तानीस । २ विपक्षके आक्रमणसे आत्तरक्षा करनेका अभ्यास, दुश्मनके हमलेसे अपनेकी बचानेकी महारत।

खुरसाना (सं० स्त्री०) १ यमानीभेद, खुरासानी राजवायन । (पु०) २ खुरासानी घोड़ा।

खुरसीटा, खुरका देखो।

खुरहर (हिं० स्त्री०) १ खुरोंके चिह्न, सुमके निगान् । २ जङ्गलमें पशुओंके चलनेको खुरोंकी बनी हुई कोई राह । ३ पगडण्डी।

खुरहा, खुरका देखो।

खुरा (हिं० पु०) १ खुरपका । २ हलमें फाल या कुमियाकी मजबूतीके लिये लगाया जानेवाला लोहेका एक कांटा।

खुराई (हिं० स्त्री०) चौपायोंके दानों पैर बांधनेकी एक रस्सी।

खुराई—अध्य प्रदेशके सागर जिलेकी उत्तर-पश्चिम तहसील। यह अक्षा० २३° ५१' तथा २४° २७' उ० और देशा० ७८° ४' एवं ७८° ४१' पू०के मध्य अवस्थित है। इसका रकबा ८४० मर्गमोल और आबादी कोई ८३७८२ है।

२ सागर जिलेकी खुराई तहसीलका सदर। यह अक्षा० २४° ३' उ० और देशा० ७८° २०' पू०में बीनाकी रेलवे लाइन पर पड़ता है। आबादी लगभग ६०१२ है। अब तहसीली एक पुराने किलेमें लगती है। यहां बहूतसे जैन वसते और उनके अच्छे अच्छे मन्दिर देख पड़ते हैं। १८६७ ई०को यहां म्यूनिसिपालिटी हुई।

प्रतिपत्ताइ सवेगियोंका बड़ा बाजार लगता है। खुराक (सं० पु०) खुर-आकन् । १ पशु, चौपाया । २ यवनाग, कुआर।

खुराक (फा० स्त्री०) आहार-भोजन, खाना।

खुराकी (फा० स्त्री०) १ खानेके लिये दिया जानेवाला नकद पैसा। (वि०) २ पेट, बहुत खानेवाला।

खुराफान (अ० स्त्री०) १ अस्वीकृत तथा अकिञ्चन विषय, बुरी बात। २ निन्दावाद, गालीगुफ्ता। ३ उपद्रव, भगड़ा।

खुरायल (हिं० पु०) वपनके लिये प्रसृत वृक्ष, जो खेत बोनेके लिये तैयार हो।

खुरानक (सं० पु०) खुर इव पलति पर्याप्नोति, अम-खुन । लौहमय बाण, लोहेका तीर।

खुरालिक (सं० पु०) खुरायां आनिभिः कायति प्रका-गते, कै-क । नापितभण्डी, कुरहरी। २ नाराच अस्त्र। ३ उपधान, तकिया।

खुरासनीवचा (सं० स्त्री०) खुरासानी या सफेद वच। खुरासान—एक विस्तृत जनपद, कोई बड़ा मुल्क।

“हिंदु पीठं समासाय नञ्जगत् सुरहरी।

खुरासानाभिधो वीजो खेच्छमानं पराधयः ॥” (दक्षिणमन्त्रन

हम लोग जिसको अफगानिस्तान वलूचिस्तान बोलते हैं, अफगान, वलूची और बड़ई जातियाँ इसे खुरासान कहती हैं; किन्तु यह बहुत बड़ादेग है, कोई पूरा पता नहीं लगा सकता कि यह ठीक कितना बड़ा है। किसी किसीके मतमें खुरासानके उत्तरमें आरब और काष्पीय ज़दके बीचकी मरुभूमि दक्षिणमें लवण मरुभूमिसे पारसके दूसरे दूसरे भागोंमें पृथक् हुआ है, पूरवमें अफगानिस्तानकी सीमापर असभ्य जातियोंका निवास और उर्वरा भूमि तथा पश्चिममें रूसीधरत अहमदाबाद राज्य है। इसकी लम्बाई ५०० मील, चौड़ाई ४०० मील और क्षेत्रफल प्रायः दो लाख वर्गमील है। यह सीमा लेकर कईबार खुरासानके उपर विदेशियोंने आक्रमण किया। इसके नाना खानमें बहुत दफा नाम परिवत न हुआ है। आजकल भी सीमास्तवासी भिन्न भिन्न जाति इसे भिन्न भिन्न नामसे कहा करती है। सुगलसन्नाट् बाबरने

रूपको जोधनीमें लिखा है “भारतवासी सिन्धु नदीके पश्चिमी किनारेके समस्त सुल्कीको खुरासन कहते हैं।” यहाँ प्रायः १२ या १३ लाख अनुष्य रहते हैं। यह विस्तीर्ण प्रदेश पहले पारस भार अफगानिके अधिकारमें था। आजकल इसका अधिकारग रुसाखिज़त या रुसियोंके अधिकारमें है। प्रजा भी पारसकी अपेक्षा रुसकी अधीनतामें सन्तुष्ट हैं। यहाँ अरब, बलूच, येयत्, खलई, कराय, खूरसाही, खैक, लेयर, मरदी, मुजदरपी, मेखा और तेमूर प्रभृति जातियां रहती हैं। यहाँ बहृतपी नदी और नाला हैं जिनमेंसे आर्द्रक नदी प्रधान है। इन्हींके जलसे यहाँकी जमीन उर्वरा और शस्यशाही हुई है। ग्यान ग्यान पिर कुञ्जवन, छपवन, सुललित द्राक्षावन और चारणक्षेत्र हैं। यहाँकी शोभा देखते ही मन मोहित हो जाता है। जिस समय पारस राज्यमें अन्तर्विशिष्ट हुआ था, उसी समय तुर्कानि भीषण नदी पार होकर खुरासनको अधिकारमें लाया था। इस समय महावीर रुसामने अपने मुजवल्सि आम्ना-सियावककी परास्त कर देगरचा की थी। जङ्घिस खाँ और तेमूरकी चढ़ाईसे खुरासनकी दशा शोचनीय हो गई। सुफावियोंके राजत्वकालमें उज्जवकने प्रति वर्ष शस्यक्षेत्र और नगरकी लूटते यहाँ आते थे। उसके भयसे एक दिन भी प्रजा आनन्दसे धैर न करती थी।

खुरासानके कई एक भाग पारसके अधीन हैं जिनमेंसे मरुधेद नगर सुप्रसिद्ध है। इस नगरके बीचमें एक सुन्दर नेत्रवैलिकर समाधि-मन्दिर है। जिसमें इमाम और राजा हाइन अर-रसोदकी हड्डियां संरक्षित हैं। पारस के अन्तर्गत खुरासानके मनुष्य अतिवलिष्ठ और दुग्ध हैं। सेकड़ों वार इन्होंने शत्रुओंको प्राकाम्यकी सङ्घर्ष करके अशरम्यराशि युद्धप्रिय प्रजा बन गयी है। इसी लिये नादिरशाहन एक दिन कहा था ‘यहो लोग पारसकी तन्वार हैं’।

खुरासानी (का० वि०) खुरासानदेशीय, खुरासान सुल्कीके सुताजिक।

खुरासानी यमानी (सं० स्त्री०), यमनीभेद, खुरासानो अजवायन। यह कठवी, रुखी, पाषक, पाही, छप्य, सादक, भारे, वात बटाने और पित्तका मिटानेवाली

होती है। (च्यवनचिण्ट)

खुराही (हि० स्त्री०) नीची जगहोंको राह, बव करके चलनेकी जगह।

खुरिकापव (सं० पु०) केने नामक पशुप्राक, एक सव्त्री।

खुरिया (हि० स्त्री०) १ कटोरी, छोटा प्याना। २ फूटनेकी जोडकी मोलहल्ली।

खुरिया—मध्यप्रदेशके जयपुर राज्यकी अधिव्यक्ता। यह अक्षा० २३° तथा २३° १४' ४०" और देशा० ८३° १०' एव ८३° ४४' पू०के मध्य अवस्थित है। यह उत्कृष्ट गोबरभूमि प्रदान करती है। मिर्जापुर प्रादि अनेकान्य स्थानोंके पहोर या गडरिये अपने भवेयी यहाँ चारनेकी नाते हैं।

पुरी (हि० स्त्री०) १ खुरबा विष्णु, सुमका निधान। २ द्रुतगामी नदीस्रोत, जोरसे बहनेवाला पानी। खुरीमें नाव चलाना कठिन पड जाता है। ३ मासहीपवासियोंकी कोई नाव। मासहीपी पच्छी हवामें इसी पर अट करके भारत आये थे।

खुरचनी (हि० स्त्री०) १ खुरची जानैवाली बीज। २ खुरचनेका यन्त्र।

खुरु (हि० पु०) १ खुरसे भूमि खोदनेका काम। इसमें चौपाये प्रायः लकारा या राभा करते हैं। कौधवा पाखादके समय ही खुरु होता है। २ उपद्रव, भ्रगहा, बखेडा। ३ ध्वस, बरवादी।

खुरु (हि० स्त्री०) नारिकेलगण्य, छोपरेकी गरी।

खुर्जा—युक्तप्रदेशके बुन्दयध्वरमें एक तहसील। जिसके बीच पुर्जा, जैवर और पञ्चामू नामके तीन परगना हैं। यह अक्षा० २८° ४' एव २८° २०' उ० और देशा० ७७° २८' तथा ७८° १२' पू०के मध्य अवस्थित है। यह यमुनासे काली नदी तक विस्तृत है। भूपरिमाण ४६२ वर्ग मील। लोकसंख्या ३६६८३८ है। यहाँ १८४ गाँव और ७ शहर बसते हैं। इसकी आमदनी ३३५६१० रुपये हैं। इस तहसीलमें एक दिवानो, एक कौजदारी पदावत और पाँच थाना हैं।

२ वक्खुर्जा तहसीलका प्रधान नगर और बुन्दयध्वर जिलाके प्रधान वाणिज्यस्थान। अक्षा० २८° १६

७० बीर देशा० ७७° ५१' पू० में बुलन्दशहरसे पांच-कोश दक्षिणमें अवस्थित है। लोकसंख्या २६२७७ है।

दिल्ली और मेरठ जानेकी बड़ा बड़ी रास्ता यहां आकर मिलता है और नगरकी छिद्र कीस दक्षिणमें इष्ट इण्डियन रेलवेका स्टेशन है।

इस नगरमें अधिकांश चुड़वाल वणिया और केसगी पठान वास करते हैं। चुड़वाल वणिया जैनमतावलम्बी हैं, यही लोग आजकाल यहांके प्रधान व्यवसादार हैं। इन्हींके यज्ञसे यहां पर एक सुन्दर जैन-मन्दिर बनाया गया है। मन्दिरके भीतर और बाहर भागमें सोनेका काम किया हुआ है। मन्दिरके शिल्पनैपुण्य देखनेसे आश्चर्य पड़ता है कि आजतक जो भारतवर्षमें शिल्प और चित्र-विद्याका लोप नहीं हुआ है। इस नगरके बीचमें एक सुन्दर सरदावर है। नगरके बड़ा बाजार गिल्ग्राण करनेमें एक लाखसे अधिक रूप्य व्यय हुये थे।

खुद (फा० वि०) क्लस, छोटा।

खुदवीन (फा० स्त्री०) सूक्ष्म दर्शनयन्त्र, वारीक चीजोंके देखनेका एक औजार (Microscope)। यह किसी प्रकारके खास बीजसे तैयार होती है। इसको 'लगाकर देखनेसे छोटी चीज बहुत बड़ी लगती है।

खुदबुद (फा० वि०) नष्टभ्रष्ट, टूटाफूटा, गया गुजरा।

खुर्दा (फा० पु०) सामान्य द्रव्य, छोटी मोटी चीज।

खुर्दाफरीश (फा० पु०) सामान्य वस्तुविक्रेता, छोटी मोटी चीजोंका सौदागर।

खुर्रांट (हिं० वि०) १ बुझा, पुराना। २ अनुभवी, भरा-सुगता। ३ काइयां, होशियार।

खुलक (सं० पु०) खुर-कुन् स्वार्थकन्। जह्वा और पादकी सन्धि, जांघ और पांवका जोड़।

खुलका (सं० स्त्री०) नाभिगुह्य, तींदीका गड्ढा।

खुलदावाद—हैदराबाद राज्यके औरंगाबाद जिलेका एक तालुक। इसकी आबादी की ई १४५१२ है। पूर्व तथा उत्तरकी यह देश पहाड़ी है।

२ हैदराबाद राज्यका औरंगाबाद जिलेके खुलदावाद तालुकका गांव। यह अक्षा० २०° १' ७०" और देशां० ७५° १२' पू० में अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः २८४५ है। यहां औरंगजेब उनके लड़के आजम शाह,

निजामशाह्य प्रतिष्ठाता अफजाए, नासरजङ्ग, अहमदनगरके नवाब निजामशाह, निजामशाहों वजार मलिक अख्तर, कुतुबशाही नवाबोंके अस्तिम तानशाह और बहुतसे सुप्रसिद्ध साधुओंकी कब्रें बनी हैं। पहले उसे 'रीजा' कहते थे। यहां लोग स्वास्थ्यरक्षाके लिये आग्रा करते हैं।

खुलना (हिं० क्रि०) १ उद्घाटित होना, खुल जाना।

२ हटना, उघड़ना। ३ फटना, चिरना, विदीर्ण होना।

४ झटना, निकलना। ५ छूट पड़ना, सरकना,।

६ लगना, ठहरना, मोलूम पड़ना। ७ जारी होना,

सलना। ८ भेद कहना, कच्चा हाल बताना। ९ सजना,

अच्छा लगना।

खुलना—मङ्गलके दक्षिण-पूर्व दिशामें एक जिला। यह अक्षा० २१° ३८' एवं २३° १' उ० और देशा० ८८° ५४' तथा ८९° ५८' पू० में अवस्थित है। क्षेत्रफल २६८८ वर्ग मील है। लोकसंख्या १२५३०४३ है। इसके उत्तर यमोरा जिला, पूर्वमें वाखरगञ्ज जिला, दक्षिणमें वङ्गोपसागर और पश्चिममें २४ परगना जिला हैं। इस जिलाका सदर खुलना शहर है। एक तरफमें पद्मा और ब्रह्मपुत्र दूसरी ओर भागीरथी, इन दोनोंके बीच असमान चतुर-स्त्राकारमें खुलना जिला अवस्थित है। यहां पर नदी और नाला यद्येष्ट हैं। समस्त जिला प्रधान तीन भागोंमें बांटा गया है। उत्तर-पूर्व विभाग यमोरा जिलाकी सीमासे बाघेरहाट तक है। यहांकी जमीन नीची और जलमयी है।

दक्षिण विभाग—खुलना-सुन्दरवनमें सर्वत्र नदी और जलमय प्रदेश हैं और सामान्य परिमाणकी उपज होती है। उत्तर-पश्चिम विभागकी जमीन अधिक ऊंची और वासके लिए भी उत्तम है। यहांपर खजूरका जंगल है और धान्यक्षेत्र भी अधिक है, यहां खजूरके रससे गुड प्रसृत होता है जो अत्यन्त उष्ण लगता है। यहाँ-से अनेक देशोंमें चीनीकी रफ्तनी होती है। पूर्वांशकी जमीन वास करनेके लिये अत्यन्त उपयोगी है। नदी किनारे घनी वस्त्रियां अवस्थित है। यहांकी प्रधान नदियां मधुमती, भैरव, कपोताक्ष, भद्रा, पाठारवांका, यमुना, इच्छामती, गलघसिया, वांशजना और शिरसा हैं। इन

नदियोंके किनारेकी जमीन कुछ कंधी है।

१८८२ ई० की पहिले खुलना स्वतन्त्र जिला नही था, किन्तु यशोर जिलाका उपविभाग था। तत्पश्चात् २४ परगनासे सातघोरा उपविभाग और यशोरसे वाचेर घाट नामक दूसरा उपविभाग लेकर खुलनाके साथ एकत्र करने पर एक नवीन जिलाकी सृष्टि हुई। यशोर और नदीयाके शासनकार्य सुविधा करने की के अति प्रायसे ऐसी व्यवस्था की गई। यशोरसे दो उपविभाग स्वतन्त्र करके नदिया जिलाका भार कम करनेके लिये उससे वनगांव उपविभाग लेकर यशोर जिलामें मिला दिया गया। वस्तुतः वनगांव भौगोलिक अवस्थिति अतः सार यशोरके मध्य में जानिसे सुविधा प्राप्त हुई।

१८८२ ई०की पहली जूनकी यह परिवर्तन हुआ।

खुलनामें भी अन्ध्यान्ध जिलाकी तरह सुन्धकी, सव लज, लज मजिस्ट्रेट, ज्वाइण्ट मजिस्ट्रेट, कलेक्टर, तथा, सिविल सर्जन हैं।

इस जिलामें १३ तैरह थाने, ११ चौकी और एक निम्नक पासका एक पञ्छा है। इस जिलाका सदर खुलना शहर है। और नदी जिन जगह सुन्दरवनमें प्रवेश करती है ठीक उसी स्थानपर खुलना अवस्थित है। इसलिये इसकी सुन्दरवनकी राजधानी वा प्रधान शहर कहते हैं। पहिले यह शहर सप्त प्रस्तुत करनेका प्रधान स्थान था।-पाजकन भी निम्नकका कारवार-यहां-यथेष्ट होता है।-इसके सिवा सातघोरा, कासामोया, कामीगञ्ज, देवघाट, चन्दनीया, वाचेरघाट, कपिलमुनि, दोलतपुर, मोरेनग ज प्रकृति स्थान ही प्रधान है। सातघोरामें अनेक हिन्दू मन्दिर हैं। वाचेरघाटमें साठगुम्बज प्रकृति खाँ जहान् पानीका बनाया भग्नावशेष है। [सातघोरान्तर्गत] कपिलमुनिमें सागरयात्रियोंकी भीड़ होती है। (कपिलमुनि देखा।)

खुलना, सातघोरा और वाचेरघाटमें गवर्नमेण्टका दातव्य औपप्रधान्य है। उनके साथ साथ छोटा अन्धताल भी है। मोरेनगजमें माहव जमीन्दारसे स्थापित किया हुआ दोनतपुरमें महमोमकोपसे स्थापित और सातघोरामें नवीनकी जमीन्दारसे २ पित औपधान्य है। इस जिलामें आठस, आमन और बोरो तीन

प्रकारके धान होते हैं। उसके अनाथे मटर, पाट, कसू, खजूर भी यथेष्ट होते हैं। सुन्दरवनमें बाघादूरी काठ, जलानिका काठ, मधू, कडी (बीम) इत्यादि पाये जाते हैं। चीनी, गुड़, नील और चावलकी यहासे रफ्तारी होती है और लोहेकी चीज विलायतसे आती है। सातघोरा सर्वापेक्षा अस्वास्थ्यकर स्थान है। हैजा और च्वर यहाँ बहुत होते हैं।

इस जिलामें हिन्दुधर्मकी अपेक्षा मुसलमानोंकी संख्या अधिक है।

खुलना शहर अक्षा० २२° ४८' ०" और देशा० ८८° ३४' ०" पूर्णमें अवस्थित है। यहाँ होकर टाका और वाखरगंजसे चावल, ओइसे चूना, और कमला नीबू, पावना, राजवाही और फरिदपुरसे सरसो, नीलीदास कलाई, पावनासे धी और सुन्दरवनसे लकड़ी कटाकते जाते हैं।

खुलवा (हि० पु०) द्रवीभूत घातुकी संचिमं भरनेवाला। खुलवाना (हि० क्रि०) खोलनेका काम दूसरेसे कहना, खुलाना।

खुला (हि० वि०) १ अवह, जो बधा न हो। २ अव रोधरहित, बेरोक। ३ स्पष्ट, जाहिर।

खुलापञ्जा (हि० पु०) मृदङ्ग वा तबला बजानेकी एक रीति। इसमें दोनों हाथों या केवल वामहस्त द्वारा तबले पर खुली थाप लगा बजाना पारम्भ करते हैं।

खुलासा (अ० पु०) निचोड़, मतलब।

खुलासा (हि० वि०) १ खुला, जो बन्द न हो। २ साफ, बेरोक। ३ स्पष्ट, जाहिर। ४ सक्षिप्त, सुस्पष्ट।

खल (अ० क्री०) नवी नामक गन्धद्रव्य, गन्ध।

खलक (अ० क्रि०) खुल्ला खार्च कन्। १ खल्य, योडा। २ नीच, कमीना। ३ कनिष्ठ, छोटा। ४ दरिद्र, गरीब। ५ मिष्ट, वैरजम। ६ खल, पाजी।

खुलतात (अ० पु०) खुल्ला कनिष्ठ तातस्य पितु, पूर्व निगत। पिताका कनिष्ठ भ्राता, बच्चा।

खुलना—लक्षपति वपिककी कथा और सप्तपति वपिककी पत्नी। यह स्वर्गकी अप्सरा रत्नमाला इहीं। दुर्गाके शापसे इन्हें मालवी होना पडा। इनके स्वामी सप्तपति लव गौडराज्यमें वापिल्य करने गये थे, सप्तकी इन्हें

बड़ा कष्ट दिया। धनपति वाणिज्य करके लीट आने पर खुशनाली बहुत चाहने लगे। इनकी पुत्रका नाम श्रीमन्त था। (कविकवण-चण्डी)

खुशम (सं० पु०) खुशने मीयते, मा बाहुलकात् क। पद्य, राह।

खुशमखुला (हि० क्रि०-वि) प्रकाशरूपसे, खुले तौर पर, सबके सामने।

खुश (फ्रा० वि०) मीत, प्रसन्न, जो दुःखी न हो।

खुशकिन्मत (फ्रा० वि०) भाग्यशाली, अच्छे नसीबवाला।

खुशकिस्मती (फ्रा० स्त्री०) सौभाग्य, अच्छा नसीब।

खुशखत (फ्रा० वि०) सुलेखक, अच्छा लिखनेवाला।

खुशखबरी (फ्रा० स्त्री०) अच्छी खबर, भला समाचार।

खुशदिल (फ्रा० वि०) १ प्रसन्नचित्त, मिसती। २ दिव्यगी वाज, हंसैया।

खुशनवीस (फ्रा० पु०) सुलेखक, अच्छा लिखनेवाला।

खुगनवीमी (फ्रा० स्त्री०) सुलेख्य, अच्छे पत्रोंकी लिखावट।

खुशनसीब, खुशकिमत देखो।

खुशनसीबी, खुशकिस्मती देखो।

खुशनुमा (फ्रा० स्त्री०) देखनेमें अच्छा जगनेवाला, जो उम्दा देख पडता हो।

खुशनुमाई (फ्रा० स्त्री०) देखनेकी वहार, सजावट, सुधराई।

खुशदू (फ्रा० स्त्री०) सुगन्ध, अच्छीघी गमक।

खुशबूदार (फ्रा० वि०) सुगन्धि, खुद-मचकनेवाला।

खुशरङ्ग (फ्रा० वि०) १ खूब रङ्गदार, २-रङ्गवाना, चटकीला। (पु०) २ देखनेमें अच्छा लगनेवाला। रङ्ग।

खुशरङ्ग—हिन्दीके एक प्राचीन कवि। इनकी कविताका नमूना नीचे लिखते हैं—

गुलशनमें देखता हूँ सब गुलशानमें वृक्ष।

तुम्हें गुलशनकी प्यारे सारे चमकते हैं वृक्ष॥

जिस गुलकी तूने खाँदा किया खुशोसि सारू।

हर फूलों कीकलीमें गुलशूँ सभीमें वृक्ष॥

इस तपान पर चमकते हैं गुल तरह तरहके।

सब है जङ्गलों तेरा सब रक्षियोंमें वृक्ष॥

द्वैनाजनी वृक्षों साँची तेरा न कोई।

गुलाब गुलशनका इन्हीं चमकते वृक्ष॥

जलवा तेरे गुलशानका हर गुलमें है मलयवा।

हरशाव वन करता सदा गुलशानमें वृक्ष॥

खुशरू—हिन्दीके एक कवि। इनकी कविता बहुत मीठी होती थी।

‘बहुत रवी बाजुल पर दुःखिन सदा तोरे सोमै नुवार।

मनुत रीत खेती सखियनसो बनकरा परभायो॥

नदाप धीयके वग चहरे मय ही मङ्गल बनायो।

विदा करनको कुटुम्ब मय कवे मारे लीन मनायो॥’

• • • • •

गदगो गदगो कोलतो पागल मी पदामल पङ्कज खेतायो।

वेठन मलमल कवरे पदमाये शिखर तिन्क मयायो॥

गुण नदी एक अपगुण बहुतेरे जेसे मोमा रिफायो।

गुणद सखे समररो मजतो मङ्ग नही कोई बायो॥’

खुशरू प्रमीर (प्रमीर खुशरू) दिल्लीके सुमनमान बादशाहोंकी सभामें रहनेवाले एक विख्यात कवि। यह जातिके तुर्की रहे। खुशरूके बापका नाम प्रमीर मुहम्मद सैफ उद्दीन था। वह बाघ्नोक देगसे भारतके उत्तर-पश्चिम पटियाना नगरमें पाकर बस गये। १२५३ ई०की जन्म हुआ। जब बादशाह गयासुद्दीन तुगलक भारतके सिंहासनको उजलाते थे, इन्होंने ‘तुगलकनामा’ नामक एक इतिहास बनाया। खुशरूने सब मिलाकर १८६ कितानें लिखी है। उनमें इस्तीवदियत, सिकन्दरनामा आदि कई पोथियां सुमनमान जोगामें बड़ी इज्जत पाती है। सिवा इसके इन्होंने कुछ छोटी छोटी कविताएँ भी बनायीं हैं। खुशरू रचित कतिपय पुस्तकोंके नाम यह हैं—पञ्चगुल, लेला-मजनू, हीरोन, ऐजाज खुशरोवी, भाईना सिकन्दरी, खिलखानो, इनशा प्रमीर खुशरू, जवाहिर-उल्-बहर।

लोग कहते हैं कि उनकी और वीरवलकी प्राप्तिमें खूब होड़ा होडी होनी थी, परन्तु वीरवलके सामने उन्हें शरमाना ही पड़ना था। कोई कोई इन्हें पकवान बादशाहका साला भी बतनाता है। परन्तु यह निश्चि नहीं—बहुत यही खुशरू थे या कोई दूसरे।

खुशरू परवीज—१ शासन घरानेके ईरानी बादशाह हरमूजके लड़के। इनके बापके मरने पर, सेनाबदशरामने सुल्तानकी शरणमें कलिया था। यह रोमक-सम्राट् लरीसकी मददसे सिपहसालारकी हरा ५८१

ई०को बापके तख्त पर बैठ गये। बादशाही सिमने पोछे इन्होंने सबके सामने मरीसको धर्मपिता-जैसा कबूल किया। ६०३ ई०को मरीस कत्ल किये गये। यह उसी वक्त अपने धर्मपिताका बदला सुकानेकी रोमक राज्य पर जुड़े थे। दारा, एदेगा वगैरह कई सुकाम लखे जाय था गये। निरीया और पालेष्टाइन लूट कर तख्त नख्त कर डाली। जेरुसलम शीतने पर चीनेका घसनी सनीव (Cross) महीसे निकाल फतेहमन्दकी नगानीके तोर पर अपने राज्यमें ले पाये। कुछ दिन पीछे रोमके बादशाह हिराक्रियासने पाकर ईरान पर हमला किया था। उन्होंने कासरीय प्रदेश स्फहान गहरके बीच सभी सुकाम तोंड फोड़ डाले। सरकारी खजाना लूटा और अच्छे अच्छे मजहरीका तख्तनख्त किया गया। सुकाना ऐसा मटियामेट देख रैयत परवीज पर विगडी और राजद्रीही बन गयी। इनके व्योष्ट पुत्रने इन्हे बाधलिया था। परवीजके १८ लड़के इनके सामने ही कत्ल किये गये। इसके बाद वे कैदमें रखे गये। ६२८ ई०को इनका खत्यु हुआ। परवीजके साथ ही नौशेरवानका घराना भी गुम हो गया।

खुशरूमलिक—कोई शीतदाय या गुलाम। यह खुशरूमलिक काह कहलाते थे। बादशाह सुवारककी मिहरवानोसे खुशरूमलिकके बड़े प्यार और वजीर बन गये। उन्होंने कैस ही अपने पाप मराठा देय जीतके लोटे, इन्हे लसका खूबदार (शासनकर्ता) बनाके दिल्लीसे दक्षिणकी भेज दिया। मालिकने लूट मार करके एक ही सालके बीच कितना ही दौलत इकट्ठी कर डाली। फिर इनका हीसना इतना बूढ़ गया कि अपने अन्नदाता सुवारककी भी सुपकेसे मार डालनेमें जी न हिचका। ६२१ ई०को यह नधीर उदू दोनु नामसे दिल्लीके तख्त पर बैठे थे। इसी वर्ष राज्यके बड़े पादमिर्षीन निवहसानार गालीबेग तुगलकसे मिलके इनके शीरकावलेसे लडाईं लड़ी कर दी। पछीरकी यह दुश्मनीके शायमें पड़ मारे गये।

२ बादशाह मुहम्मद तुगलककी भांजनी। अन्नाटने अपनी राज्यसामिच्छा बढ़ने पर एक साथ फाजके साथ

खुशरूमलिकने नेपाल जीतने भेजा था। यह बडी मुयकिलसे पछाईकी पाकर १३० ई०को चीनको सरहद पर जा पहुँचे। इन्ही जगह एक तर्फसे चीना फौज और दूसरी तर्फसे नेपालको पहाडी फौजने पाकर इनपर हमला किया और रसदका सारा सामान नेट लिया। सात दिन तक ऐसी ही तहतलोफसे लड़ने भिड़ने पर इनके सिवाही घबरा उठे। इसी मौके मर गिहतकी वारिष पडी थी। पहाडकी उन्ही खानो जगहमें चारों तर्फका पागो जाकर जमा हो गया। यह साथ अपने सिवाहिर्षीके मर मिटे और मुहम्मदकी जूबी शम्मीद मारो पडी।

३ गजनवी ग्राही खानदानके पाखिरो बादशाह। इनके बापका नाम खुशरूमलिक था। वित्तके मरने पर ११६० ई०को यह लाहोरके तख्त पर रौनक भफरीज हुए। ११८४ ई०को सुलतान मुहम्मद गोरोंने जहलाहोर पर हमला किया, हारने पर खुशरूमलिक खिये गये। मुहम्मद गोरोंने इन्हे बालबर्षीके साथ अपने भाई गयासुउदू दोनुके पास फीरोजकी नगर भेजा था। वहाँ खुशरूमलिकपरिवार मार डाले गये।

४ दिल्ली—अन्नाट मुहम्मद-वीन तुगलककी बहनोई और खुदाबन्द जादाके खाविन्द। इन्होंने एक वक्त मुहम्मदके उत्तराधिकारी सुलतान फौराज ग्राहकी मार डालनेके लिये छिप छिप कर साजिश की थी। हिनतु इनके घेरे दावर मालिकने सुलतानकी जल्द पानेवासी सुभोवतकी बात बतला दी। सुलतानने भाग कर अपना प्राण बचाया था।

खुशरूमलिक—गजनवी बादशाह बहराम ग्राहके लड़के। इनका घसलो नाम निजामु उदू दोनु था। ११५२ ई०को अपने वालिदक मरने पर इन्होंने लाहोरका तख्त हासिल किया और सात वर्ष तक सुनतनत करके ११६० ई०का शरार छोड़ दिया।

खुशरूमलिक—सुलतान-सुलत बादशाह अर्हानीके लड़के। यह राजा मानसिहकी बहनके गर्भसे १५८० ई०को लाहोरमें उत्पन्न हुए थे। फिर १५९२ ई०की दक्षिणमें इनका खत्यु हुआ। दक्षिणपात्यसे नाम साकर इलाहाबादके खुशरूमलिकमें गाड़ी गये थे। फारसकी एक कितारमें

दिया है कि उनके छोटे भाई शाहवाहानने रजा नाम-
का कोई दरकारा भेजा था, जिसने गदा दयाकर उन्हें
सार डाला।

खुशरोज—इसका दूसरा नाम नौरोज अर्थात् नव वर्ष का
प्रथम दिन। जिस दिन सूर्य क्षैपराग्निमें जाती है उस-
दिन फारसके सुसलमान राजगण आनन्द उत्सव मनाते
हैं। दिल्लीके मनुष्योंका ऐसा विचार है कि भारतवर्षमें
पृथ्वीराजहीने पहली पहलू खुशरोज उत्सवका प्रचार
किया था। किन्तु अबुल फजलने लिखा है कि अकबर
बादशाहने इस उत्सवकी निकाला। वे सुसलमानके
जवमी दिनमें राजकीय समस्त कर्मचारीको बुला कर
आनन्द-उत्सव करते थे। उस दिन सम्राटके अन्तःपुरकी
स्त्रियां भी शौकमें बाजार खोलती थीं। जहां राजपूत
महिलाय भी आनन्दसे उपस्थित होती थीं। अन्तः-
पुरकी स्त्रियां उनसे मनमानी चीज खरीदती थीं।
उस समय अकबर बादशाह एकान्तमें राज्यकी सम्भान्त
महिलाओंके सुखसे राज्यकी तथा वाणिज्यकी अवस्था
सुनते थे। कोई कोई ऐसा कहते हैं कि अकबर बुरे
अभिप्रायकी इच्छासे यह खुशरोज मनाते थे। वे उस
समय राज्यकी सुन्दर महिलाओंकी उपमाधुरी पान
करते थे। ऐसा सुना जाता है कि अकबर बादशाह
राजपूत राजाओंकी अपने अधीन कर लेने पर भी
शान्त न रहे किन्तु खुशरोज उपलक्षमें समागत कुल-
वधुओंकी अतीव भी नष्ट कर डालते थे। वे इस व्यव-
हारमें पृथ्वीराजकी स्त्रीके ह्रास पकड़े गये। अकबर
उस अहितीय स्त्रीके सान्द्र्य पर विमुग्ध होकर चतुरता-
से एक गुप्तकर्ममें वन्द कर बैठे। वह स्त्री उस कर्ममें
प्रवेश कर गोलकुधमें पड गई। बाहर होनेका रास्ता
देख न पडा; सामनेमें सिर्फ अकबर बादशाह ही देख
पड़े। सम्राट अकबरने प्रेमभिलाकी इच्छासे उन्हें कई
वार प्रलोभन दिया। किन्तु वह पतिव्रता राजपूत स्त्री
योड़े ही समयमें अपनी अवस्था जान गई और अपने
कटिदेशसे तेज छुरी निकाल कर अकबर पर आघात
करनेके लिये प्रांगे बढ़ी। यह देखकर बादशाहका मुख
सूख गया और करवह ही चर्माके लिये प्राथना करने
लगे। इस पर वह साहसी स्त्री बोली "दिल्लीखर। तुम

अपनी इष्टदेवका गण्य खाकर प्रतिष्ठा करो कि कभी
इस-तरहका अन्याय व्यवहार स्त्रीयांके प्रति न करोगे।
नहीं तो तुम्हाग निस्तार नहीं है।" अकबरने प्राण-
नागके भयमें वैसा ही स्वीकार किया और अपने मुख-
की नीचे कर उस राजपूत-स्त्रीकी बाहर निकाला पथ
दिलना दिया। सभी दिनमें अकबर बादशाहने खुश-
रोजके उपलक्षमें आमोद प्रमाद करना एकदम बन्द कर
दिया। आजतक भी राजपूत भाटगण उस पतिव्रता
राजपूत-स्त्रीकी सुख्याति गाते हैं।

खुशवक्त गय—एक चतुर राजनैतिक। १८०८ ई०की
महाराज रणजितसिंहके माथ हटिश गवर्नमेंगणकी
सन्धिके समय ये हटिश एजेंट और सम्वाददाता हो
कर अस्तगहरमें रहते थे।

खुशखान (फा० वि०) सम्मान, मजमें, जिसकी कोई
तकलीफ न हो।

खुशखानो (फा० स्त्री०) आराम, सुख, समनचैन,
अच्छी गुजर।

खुशाव (फा० पु०) धान निरानेका एक टकर, धानकी
कोई निरीनी। यह कश्मीरमें चलता है।

खुशाव—१ पन्नावके शाहपुर जिनाभी एक तहशील।
मेलम् नदीके किनारे अक्षा० ३१° ३२' एवं ३२°
४२' उ० और देगा० ७१° ३०' तथा ७२° ३८' पू०के
मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल २५३६ वर्गमैल है।
लोकसंख्या प्रायः १६१८८५ है।

पन्नावके लवण पहाड़के द्वारा यह तहशील विभक्त
है। यहां पर नदीकी धार कहार किनारा छोड़ कर
दूसरी जगह वैसा शस्य नहीं उपजता है। इसमें २०६
ग्राम हैं। यहां एक फौजदारी एक-टीवानी अदालत
और ६ थाना हैं। इसका राजस्व २ लाखसे अधिक है।

२ तहशीलका प्रधान नगर। मेलम् नदीके
दक्षिणमें और शाहपुर नगरमें ४ कोस दूरमें
अक्षा० ३२° १८' उ० और देगा० ७२° २२' पू० पर
अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ११४०३ है, जिनमेंसे
अधिकांग सुमनमान है। यहां पर म्यूनिस्पैलिटी
भी है। प्रत्येक मनुष्यको एक एक ६० टैक देना
पड़ता है। यहां सूखतान, अफगानिस्तान प्रभृतिके

साथ बाणिलय व्यवसाय चलाता है। गन्ध, कपास, पत्रम, दूत और देशीय वस्तु की बिक्री तथा विहायती कपड़ा, धातु, शुष्क फल, चीनी और गुड़ की खुशामदनी होती है। यहां सुन्दर मोटा कपड़ा तथा रेशमी कपड़ा प्रस्तुत होता है। छह सातवीं करवा बराबर चलते हैं।

खुशामद (फा० खो०) प्रथम मनुतिवाद, झूठी तारीफ, चापलूसी, किन्हींकी मत्तलबकी भाँतीसे खुश करनेका काम।

खुशामदी (फा० खो०) खुशामद करनेवाला, चापलूस। दूसरेकी खुशामद करके अपना काम चलानेवाला 'खुशामदी टट्टू' कहलाता है।

खुशाल—हिन्दी भाषाके एक कवि। इनकी कविता बड़ी समोहारिणी रहीं—

“दिय धारो मोर हो भीर निहारि।

नखरियाँ अलखाने मेगा मोमा सन्य चपारि।

रखि खुशाल करत निजिवासर। कुप्रतिफुल निहारि ॥”

खुशाल—(पण्डित) दि० जैन स प्रदायके एक ग्रन्थकर्ता इन्होंने 'मुक्तावलयुद्यापन' और "कांजीदादशयुद्यापन" नामक दो ग्रन्थ लिखे हैं।

खुशाल खान्—खटकजातीय एक सदाँर, मालिक आकोरका पुत्र। अकबरके समयमें अफकी पार्वती जाति क्राउनके कई स्थानोंमें लूट पाट करती थी, उस समय मालिक आकोरने अकबर बादशाहके निकट रक्षाभार प्राप्त किया। उनके मरने पर उनके लड़के खुशालखान्ने यह भार ग्रहण किया। जब औरङ्गजेबने पठानोंकी दमन करनेके लिये अपनी सेना अफगान सीमा पर भेजी उस समय खुशालखान्ने अपनी जन्म भूमिको रक्षाके लिये जोजल्वनी भाषामें एक कविता अपनी रचना की थी जिसके पाठ करनेसे खटक जाति उत्तेजित हो जाती थी। आजकल भी खटक पत्थर आदर और भक्तिके माध्य खुशालकी कविता गाया करते हैं। खुशालको ५२ लड़के थे। जिनमेंसे ल्येठपुत्र बेरामखान् था। इसने खटकके ग्रेव रक्षक नामक एक साधुके लड़केको मार डाला था। इसी अपराधमें

औरङ्गजेबने खुशालखान्की वारस वर्ष तक दिल्लीके कारागारमें बन्द किया था।

खुशालचद—दिल्लीपति मुहम्मदशाहके दिवानी कार्यालयके एक कर्मचारी। इन्होंने 'तारीख दू मुहम्मद शाही, या 'तारीख दूनादिर उजजमाना' नामकी किताब फारसी भाषामें रचना की है। इस ग्रन्थमें इम्राहम लोदीसे मुहम्मद शाहके राजत्वकाल तक हाल वर्णन किया है।

खुशालचन्द्रकाना—दिगम्बर जैनप्रदायके ग्रन्थकर्ता। ये सांगानरके रहनेवाले खखेलखान य। खास इनके रचित ग्रन्थ तो कोई महत्वपूर्ण मिला नहीं है। पर इनने बड़े बड़े ग्रन्थोंका पद्यानुवाद कर डाला है। इन्होंने 'हरिवंशपुराण' स० १७८०में 'पद्मपुराण' स० १७८३में और 'उत्तरपुराण' स० १७८८में बनाया है। धन्यकुमारचरित्र, व्रतकथाकोष, जम्बूचरित्र, और चौबीसो पाठपूजा—ये भी इन्होंने बनाये हैं। बम्बईके जैन मन्दिरमें एक यमोघरचरित्र है, जिसको इनने १७८१ वि० स०में बनाया था। मालूम नहीं कि, इसके कर्ता 'हरिवंश' आदिके कर्तासे मिले हैं या एक ही हैं। इनने अपनेको सुन्दरका पुत्र और दिल्ली शहरके जयसिंघपुरामें रहनेवाला बतलाया है।

खुशाल पाठक—युक्तमालीय रायवरेनी नगरके एक हिन्दी कवि। इन्होंने गृह्यारसको कविता लिखी।

खुशी (फा० खो०) प्रसन्नता, आनन्द, दिलकी कुशादमी।

खुशक (फा० वि०), शुष्क, सूखा। २ रविकतारहित, सूखा। (क्रि० वि०) ३ सृष्टि, सिर्ज।

खुशकाली (फा० खो०) पनाहटि, हठिका पमाव, जिस हाल पानो न बरसे।

खुरका (फा० पु०) भात, पानीका पका चावल।

खुरी (फा० खो०) १ शुष्कता सुखापन, सुखाई। २ भूमि, जमीन्। ३ पक्षियन, कोई या पेट्टे काटनका सूजा पाटा। ४ पनाहटि, पानो न बरसनेकी हालत।

खुसखुस (दि० पु०) १ खुसुर खुसुर, आभासूनी, गुणवृद्धी वातप्रीत। (क्रि० वि०) २ खुफके खुफके, भीभी आभासमें।

खुसुरफुसुर, नुसनुस देखो ।

खुड़ी (हिं० स्त्री०) खुडुआ, घोघी, खोड़ी, पानी या आड़े से बचनेके लिये काखलकी सर लपेट कर डालनेका एक ढंग ।

खूंखार (फा० वि०) १ रक्तपायी, खून पीनेवाला । २ खीफनाक, भयानक । ३ क्रूर, भगडालू ।

खूंट (हिं० पु०) १ प्रान्तभाग, छोर । २ चतुष्कोण प्रस्तरविशेष, कोई चौकोर पत्थर । यह बहुत बजनी रहता आर घरकी दृढताके लिये कौनों पर लगता है । ३ भाग, हिस्सा । ४ देवी देवताका एक प्रवाद । इसमें कई छोटी छोटी पूरियां रहती है । ५ काष्ठशुष्क, लकड़ीका सत्सूल । ६ कर्णालद्वारविशेष, कानका एक गड़ना । यह गोन दिये जैसा बनाया जाता है । इसे 'विरिया' और 'ठार' भी कहते हैं । ७ कानका मैल । (स्त्री०) ८ रोक टोक, पूछताछ ।

खूंटना (हिं० क्रि०) १ टोंकना, पूछताछ करना । २ छोड़ना । ३ घटना, कम पड़ना ।

खूटा (हिं० पु०) मेख, गोल लकड़ोका छोजकन नोकदार बनाया हुआ टुकड़ा । इसमें किसी भी चीजको रस्सेसे बांध देते हैं ।

खूटाफागी (हिं० स्त्री०) १ विगाड़, अलगाव, मन-मोटाव । (वि०) २ द्वेषमूलक, फूट, डालनेवाली । इस अर्थमें यह शब्द प्रायः 'बात'का विशेषण होता है ।

खूटी (हिं० स्त्री०) १ छोटा खूटा, छोटी मेख । २ कटी फसलका उण्डल । ३ पण्टी, गुत्ती । ४ निकलनेवाली बाणोंका सिगा । यह बड़न कडी पड़ती और छूनेसे गड़ती है । ५ नीलकी देरिजी फसल । यह गोल कट जाने पर उसकी डण्डनसे उपजती है । ६ सीमा, छोर । छोटी खूटीको 'खूटिया' कहते हैं ।

खूटी-उखाड़ (हिं० पु०) अश्वका एक अशुभचिह्न, घोड़ेकी कोई भीरी । यह पांवमें पुट्टेके पास पडती और अपना संह जपरती रखती है । खूटी-उखाड़ रहनेसे घोड़ा बड़ा बदमाश होता है ।

खूटीगाल (हिं० पु०) अश्वका एक अशुभचिह्न, घोड़ेके पैरकी कोई भीरी । यह पुट्टेके पास नीचेकी संह किये रहती है । इसके होनेसे घोड़ा कम ऐबी निकलता है ।

खूंड़ा (हिं० पु०) लोहदण्डविशेष, लोहेकी एक कड़ । इसमें सरा लगा कर ताना डाला जाता है ।

खूंड़ी (हिं० स्त्री०) सुध्न काष्ठखण्डविशेष, एक पतली लकड़ी । इसके छोर पर काँचका चुप्पा फोड़ कर बांधा आर इसमें रंगमका बागीक धागा डाल ताना जाता है ।

खूंथी (हिं० स्त्री०) खूथो, कटी फसलकी छोटी खूटी ।

खूंद (हिं० पु० स्त्री०) थोड़ीसी जगहमें घोड़ेकी चम फिर, कुदोटी ।

खूंदना (हिं० क्रि०) १ पैर उठा उठा कर उभी जगह रखना, नाचना । २ रौंदना, चम फिर करके विगाड़ना । ३ झुचलना ।

खूंखी (हिं० स्त्री०) कृमिविशेष, एक कीड़ा । यह भीतकालकी रबीका फसल विगाड़ देती है । इसका चलता नाम 'गिरुई' है ।

खूंखू (हिं० पु०) खूक, सूपर ।

खूच (हिं० स्त्री०) मंयोगजल, प्राणनाय, पानीकी गर्दन । इसे 'अलसंयोगक' या 'अल-डमरूमध्य' भी कहते हैं ।

खूभा (हिं० पु०) खोभरा, निकम्मा रोग ।

खूटना (हिं० क्रि०) १ खण्डित होना, कटना, रकना । २ चूकना, कम पड़ना । ३ चिटाना, चंसी उड़ाना, दिक् करना ।

खूतगांव—मध्यप्रदेशके चांदा जिलेकी एक जमीन्दारी । इसमें ४२ गांव लगते हैं, क्षेत्रफल १५७ वर्ग मील है ।

खूदर (हिं० पु०) मैल, तलछट, फीक । इसका हिन्दो पर्याय—खूद और खूदड है ।

खून (फा० पु०) १ रक्त, लह । २ पध, कत्तल ।

खून—बम्बई प्रेसिडेन्सीके अहमदाबाद जिलामें दण्डक नामक उपविभागके अन्तर्गत एक बन्दर । यह भादर वा धोलेवासि ढाई कोस भादर खाड़ीके प्रवेशपथमें अजा० २२° ३' २०" उ० और देशा० ७२° १७' ३०" पू०में एक आलोकवर है । इस घरके प्रायः ३४ हाथ काँचमें दीपमाला है । आठ कोससे उसका आलोक (प्रकाश) देखा जाता है ।

खूनखुरादा (हि० पु०) १ रत्नपात, मारकाट। २ क्रिषी
 किष्काका रङ्ग या वानिग। यह लकड़ों पर चढ़ता है।
 खूनी (फा० वि०) १ हिंसाकारी, कातिक। २ निर्दय
 बरहम। ३ क्रूर, बदमाश। ४ अत्याचारी, दस्तानाज।
 ५ रत्ताण, खाल।

खून (फा० वि०) १ अच्छा, बटिया। (सि० वि०)
 २ अच्छी तरह, भली भांति, सफाईसे।

खूनकला (फा० खो०) खाकसीर, किसी घासका दाना।
 यह किसी घासका, जो फारसमें जगती, पीछे जैसा
 गुनाबी बीज है।

खूनचन्द—मारवाड़के एक हिन्दो कवि। इंदरराज
 गभीरग्राहीकी प्रशंसामें इन्होंने एक काव्य बनाया था।

खूनचन्द सोधिया—हिन्दोके एक अच्छे लेखक। इन्होंने
 "सफलचरित्र" नामक एक पुस्तक लिखी है।

खूनच खावड (हि० वि०) असमतल, नीचा ऊँचा, चट,
 छतार।

खूनचूरत (फा० वि०) सुन्दर, सुहावना।

खूनचूरती (फा० खो०) सौन्दर्य, रौनक, चमक दमक।

खूनी (फा० खो०) फलविशेष, किसी किष्कासे ग।
 इसका दूमरा नाम जरदाखू भी है। यह काबुलके
 पहाड़ोंमें उपजती है। खूनी सूखी और ताजी भी
 खायी जाती है। इसका तेल 'कहवे बादामका तेल'
 कहलाता है। खूनीसे कतीरे—जैसा गीद भी निक
 जाता है। खूनीमें मईसे सितम्बर तक पक जाते हैं।
 शोग इसकी गुठलीका बादाम भी फोड़ कर खा
 जाते हैं।

खूनी (फा० खो०) १ गुण, पिफत। २ भलाई, अच्छाई
 ३ समृद्धि, सफाई।

खूमडा—युक्तप्रदेशकी एक सुसलमान जाति। पहले
 यह हिन्दू रहते, पीछेकी सुसलमान हो गये। कैंनों पर
 पत्थरकी चक्रियां बाद करके बैठते फिरना इनका प्रधान
 व्यवसाय है। रामपुर रियासतमें यह चटाइयां बी
 पक भी बनाते हैं। विजऔर और सुरादावाद जिनमें
 इनकी संख्या अधिक है।

खून (हि० खो०) हस्तिपादगत रोगविशेष, हाथों
 पैरोंकी एक बीमारी। इसमें हाथोंके लख फट जाते

हैं और उसमें कुछ कुछ पीडा होती है। खूनमें
 हाथी जन्म करने लगता है।

खूमट (हि० पु०) १ उलूक, धुगधु। (वि०)
 २ गवार, बेसमझ। ३ डोकरा, गया गुजरा बुडडा।

खुगम (वै० खो०) तनुवाण, शरीररक्षक। (चर० शाय०)
 खुदान, ईशारे देना।

खुदीय (हि० वि०) ईसवी, ईसकी सुताहिक।

खुडरा—इसका नाम मेडखान (Mayo mines) है।
 पञ्जाब भ्रूलम् जिलाके पिण्डदादनखोर्में एक विषद्वत
 लवणकी खान। यह अक्षां ३२ ३६ ६० और देशां
 ७३ ३० पूर्णमें अवस्थित है।

यह नामकका पहाड़ नामकी जो गिरिचणी है, उसी-
 की बीच लाल चिकण सृष्टिका और रेतिले पत्थरके ऊपर
 उठा हुआ कच्चा नमक देखा जाता है। यहां भारो जगह
 में तह तह पर लवण आकर है। यह पर्वतके आकार-
 की नमककी खान कई सौ वर्षसे मनुष्यके व्यवहारमें आ-
 रही है। तोभी इसका कोई भ्रग घटा नहीं। मानूम
 पडता है। अकबरके समयमें यहां पर गड्डा खनना करके
 नमक निकाला जाता था। सिख राजाके शासनकालमें
 यहांके मनुष्य जहां पर सुविधा देखते, गड्डा करके नमक
 सफ़्त करते थे। ब्रिटिश गवर्नरका अधिकार होने पर
 अब मामूनी लोग नमक निकाल नहीं सकते।

यहांके लवणकी भी उसने अपने एकाधिकारमें कर
 लिया है। लवण उठानेके लिये नानाप्रकारके यन्त्र और
 राजकर्मचारी नियुक्त हैं। आजकल खेतराकी सिर्फ
 वगी और सुजावनखानुमें काम होता है। प्रति वर्ष
 एक लाख मनमें भी अधिक नमक सफ़्त किया जाता
 है। इससे सरकारकी प्राय सताईय लाख रु०की आम
 दनी है।

१८०० ई०का बड लाट मेधो यहां पाये थे, इसी
 लिये इसका नाम मेधो खान पडा।

खेक (हि० पु०) हवाविशेष, एक सडा पेड। यह
 ब्रह्म श्याम और मत्स्यपुरके जङ्गलोंमें उत्पन्न होता
 है। इसका बड उत्तम निकलता भी (रडू यने बनाये
 रडू केसा लगता है।

खेकना (हि० पु०) एक फल। यह परब० कंठा

धीता है। इसकी तरकारी बगायी जाती है। जंगली आड़ियों पर इसकी लता अपने प्राप फूल खड़ती, जो कुंदरूपे मिलती है। खेकसीका फूल पीला होता और हरा फल, पकने पर लाल पड़ जाता है। इसके ऊपर रूय या कांटे होते हैं। खेकसा पानिमें करेला-जैसा लगता है। इसे 'ककोड़ा' और 'वन-करेला' भी कहते हैं।

खेकरा—युक्तप्रदेशके मेरठ जिलाकी बागपत तहसीलका एक नगर। यह पचा० २८' ५२" उ० और देशा० ७७° १७' पू० पर अवस्थित है। खेकरा मेरठ नगरसे १३ कोस पश्चिम पड़ता है।

यह नगर अति प्राचीन है। ऐसा प्रवाद है कि प्रायः पौने दो हजार वर्ष पहले यह नगर अहीरोंने पत्तन किया। फिर वे सिकन्दरपुरकी जाट जातिसे भगाये गये। सिपाही विद्रोहके समय यहाँके जमोदार भी विद्रोही हुए। उनको जायदाद जब्तकरके किसी ब्रिटिश राजभक्त जमीन्दारकी दी गयी है।

यहाँ एक सुन्दर जैनमन्दिर और पुनीष स्तूपन हैं। प्रति वर्ष खेकरामें मेला लगता है। लोकसंख्या प्रायः ८८१८ है। इस नगरकी आमदनी २०००० रु० है।

खेखीरक (सं० पु०) खे आकाशे खोलक इव, लस्य रत्वम्। शब्दयुक्त यष्टि, आवाजदार छडी।

खेखीलक (सं० पु०) आवाजदार छहो, वजनेवाला छहडा।

खेगमन (सं० पु०) खे आकाशे गमनं यस्य, बहुव्री०। खासकरुणपक्षी, एक चिडिया।

खेचर (सं० पु० स्त्री०) खे आकाशे चरति, चर ट श्रुत्कुसमा०। १ शिव। २ विद्याधर। ३ पारद, पारा। ४ सूर्य आदि ग्रह। ५ मेष आदि द्वादश राशि। ६ काशी, कसीस। ७ पत्नी, चिडिया। ८ लण, घास। ९ घोटक, घोडा। (वि०) १० आकाशगामी, आसमानमें चलनेवाला।

खेचरा (सं० स्त्री०) आकाशवल्ली, अमरबेली।

खेचराञ्जन (सं० स्त्री०) काशीष, कसीस।

खेचरान्न (सं० स्त्री०) खेचरं हिदलादिमिश्रितं पन्नम्।

हिदलादि सहित एक अन्न, ग्विषही। (पाकरानिचर)
खेचरी (सं० स्त्री०) खेचर-टीप्। १ योगाङ्ग मुद्रा-विशेष। काशीखण्डके मतानुसार लीमकी छनट कर कपानके फुहर और ट्टिकी ऊपर उठा भौंरके बीचमें लगानेका नाम खेचरी मुद्रा है। खेचरी मुद्रा कर सकने पर कोई रोग नहीं होता और कर्मका फल भी मिट जाता है। चित्त और जिज्ञा दोनों आकाशमें अवस्थान करनेसे जो इसकी खेचरीमुद्रा कहते हैं। सभी मुनीोंने इस मुद्राके वन सिद्धि पायी है। विन्दुके देहमें स्थिरभावसे रहने पर मृत्यु का भय तिरोहित होता है। इस मुद्राकी लगानेसे विन्दु ठहर जाता है। (शशोवल् ४५०)

२ पूजाकी कोई तन्त्रोक्त मुद्रा। बायें हाथकी दाहनी और और दाहने हाथकी बायीं पार रखके दोनों हाथ परिवर्तन करना चात्रिये। फिर पना-मिकाकी मिला करके तर्जनीमें जगाते पार बीच की उंगली चटा या सटा करके अगूठे पर जमाते हैं। इसीका नाम खेचरी मुद्रा है। (तन्त्रसार)

खेचरी गुटिका (सं० स्त्री०) गुटिकाविशेष, एक गोभी। यह मन्त्रसिद्ध होती है। इसकी सुँडमें डाल लेनेसे मनुष्य पत्नीकी भांति आकाशमें उड सकता है।

खेजडी (हिं० स्त्री०) शर्माहृत्, एक पेड़।

खेजिरि—बङ्गाल-प्रान्तके मेदिनीपुर जिलाका एक नगर। यह भागीरथीके सुहानापर पचा० २१' ५२' ५०" और देशा० ८७° ५८' पू०में अवस्थित है। पहले यहाँ टेलीग्राफ आफिस था। अङ्गरेजोंके जहाज यहाँ आ करके ठहरते थे। आजकल कई एक अङ्गरेजोंके मकरवे देख पड़ते हैं। लोकसंख्या १४५७ है।

खेजिल—यूफ्रेटिस नदीके तोरमें रहनेवाली योद्ध जाति। इनकी रमणियां परमासुन्दरी होती हैं।

खेट (सं० पु० स्त्री०) खे अटति, अट्-प्रच् खिट्-प्रच् वा। १ सूर्य आदि ग्रह। २ कर्पकग्राम, खेडा। ३ अन्नविशेष, -एक हथियार। ४ चर्म, चमड़ा। ५ मृगया, शिकार। ६ लण, घास। ७ कुणपासुका अवस्थित फलकाकार कोई काष्ठ, डालके नीचेकी एक लकड़ो। हेमाद्रिके परिशिष्टखण्डमें लिखा है कि

बालकके लिये कुण्णपात्रका खेट १२ अङ्गुल उत्तम, १० अङ्गुल मध्यम और ८ अङ्गुल निम्न होतो है। किन्तु बलवानके लिये वट २०, १८ और १६ अङ्गुल रहनेसे यथाक्रम उत्तम, मध्यम तथा निम्न कछा है। ८ बलदेवकी गदा। ८ कफ, बलगम। १० घोट रु, घोहा। (त्रि०) ११ सुनिन्दक, सुराई करनेवाला। १२ अधम, कमीना। १३ धनवृद्धिजीवी, सुदखोर। १४ भक्षक, खा डालनेवाला।

खेटक (स० पु०) खेट स्त्रार्थ कन्। १ ग्रामविशेष, किसानोंका गांव। २ फलक, टाल। ३ अस्त्रविशेष, कोई हथियार। ४ धनवृद्धिजीवी, सुदखोर।

खेटकी (स० पु०) १ ज्योतिषी, भडवरी। २ शिकारी। ३ वधिक, वहेलिया।

खेटाङ्ग (स० पु०) खेटमङ्ग यन्त्र, बहुरी०। ८ पट्टावक जन्तुविशेष, पपदेवता। (बालीवर्ष ११४०)

खेटितान (स० पु०) खेटि: तानोऽस्य, खिट्-इन्, बहुरी०। पैतालिक।

खेटी (स० पु०) खिट् पिमि। १ नागर। २ कासुक। खेट (स० क्ली०) टण, खर, घास।

खेड (स० क्ली०) गम्बटण, एक खुयबूदार घास।

खेड—१ बम्बई प्रेसिडेन्सीके अन्तर्गत रत्नगिरि जिलाका एक उपविभाग। यह अक्षा० १७ ३१' एव १७' ५४' उ० और देशा० ७३ २०' तथा ७३ ४२' पू०के मध्य अवस्थित है। इसके उत्तरमें कोलावा जिला पूर्वमें सातारा जिला, दक्षिणमें चिपलून और पश्चिममें दाफोली है। क्षेत्रफल १८२ वर्ग मील। लोकसंख्या ८५५८४ है। यहाँ १५६ गाँव बसे हैं। यहाँ धान्यादि मूख्य चार नानाप्रकार मटर होता है। यहाँ तीन थाना और दो फौजदारो भदासत है। राजस्व ८२००० रु० केन पडता।

२ उक्त खेड उपविभागका प्रधान नगर। यह अक्षा० १७ ४३' उ०, और देशा० ७३ २४' पू०में जयवदी नदी किनारे अवस्थित है। इसकी चारो तरफ पाहाड है। लोकसंख्या प्राय ५०५३ है। यहाँ डाकघर, पोठ्याना और सराय हैं। नगरके पूर्वमें तीन पत्थरके मन्दिर है, जिनमें कडे एक कुठरोगी रहते हैं।

३ पूना जिलाके अन्तर्गत एक नगर। भीमा नदीक वायें किनारे अक्षा० १८ ५१' उ० और देशा० ७३ ५५' पू० पर अवस्थित है। लोकसंख्या ३८३२ है। यहाँ पर म्युनिसिपालिटी, डाकघर, औषधालय, तहमीलदारी और पुनीस अदालत है। यहाँकी आस पासकी जमीन लेकर खेड ग्रामका क्षेत्रफल लगभग २० वर्गमील होगा। इस ग्राममें बहुतेसी प्राचीन कीर्तिया पडी है। जिनमेंसे भीमा नदी किनारे सिद्धेश्वरका मन्दिर, दिनावर-खाकी मसजिद और कन्न देखने लायक है।

४ बम्बई प्रदेशके पूना जिलेका एक तालुका। यह अक्षा० १८ ३७' तथा १८ १३' उ० और देशा० ७३ ३१' एव ७४ १०' पू०के मध्य अवस्थित है। इसका क्षेत्रफल ८७६ वर्गमील और लोकसंख्या प्राय १५६२७५ है। उत्तर और दक्षिणको २ बडी गिरियेणिया लगी है। अधिकांश भूमि माल या भूरी है। जनवास्य स धारणत अच्छा रहता है।

खेडब्रह्म—गुजरातके माहीकाठ राज्यकी एक तहसील और थाना। यह इंदर नगरसे प्राय ३० मील उत्तरकी हरनाई नदीके दक्षिण तट पर अवस्थित और प्राचीनकालकी एक पुण्यक्षेत्र रहनेके लिये सुप्रसिद्ध है। यहाँ बहुतेसे पुराने मन्दिरोंका ध्व सावयेप देख पडता है। ब्रह्मपुराणके मतानुसार ब्रह्माने वहाँ अपने आपको पापोंसे मुक्त करना चाहा था। विशुने पूरुने पर उन्हें इसके लिये जम्बूद्वीपके भरतखण्डमें किसी पवित्र स्थान पर जा यज्ञाहुतान करनेकी सभ्यति दी। ब्रह्मके आदेशसे विम्बकमाने आवू पहाडसे दक्षिण भावरमतीके दाहने तट पर ४ कोस चरका एक नगर बनाया था। यह स्वर्णप्राचीरवैदित और २४ द्वारयुक्त रहा। हिर खाल (हरनाई) नदी उसमें प्रवाहित होती थी। फिर उर्ध्वनि यज्ञके लिये ८०० ब्राह्मणोंकी सृष्टि की। यज्ञ पूर्ण और पाप दूर होने पर ब्रह्माने अपने ब्राह्मणोंकी रक्षाके लिये १८००० वैश्योंको उत्पादन किया और ब्राह्मणोंमें कछा तुम मेरे उर्ध्वमें एक मन्दिर बनायो और उसमें मेरी चतसुर्ज मूर्ति लगायो।

बहुतेसे मन्दिर वर्तमान नगरकी सीमाके भीतर ही

बहुत विगड़ गये हैं, उनकी कोई देख भाल नहीं करता। नगरसे उत्तरकी जङ्गलमें जो ध'सावशेष पड़ा, सबसे अधिक लाभदायक लगा है। उसमें एक सूखे भील पर अनेक कारुकार्यविशिष्ट मन्दिर देखने-योग्य है। ब्रह्मपुराणमें लिखा है कि उसकी ब्रह्माके पुत्र भृगुने, जब वह यह अन्वेषण करनेको ऋषियों कर्तक प्रेरित हुए कि त्रिदेवमें कौनसे बड़ा है, निर्माण किया था। ब्रह्मा और रुद्र अपनी निन्दा सुनके विगड़े और भृगुको टगड़ देने पर उद्यत हुए। फिर इहोने विष्णुकी जा करके परीक्षा ली और साहसपूर्वक उनकी छाती पर अपनी लात रख दी। परन्तु विष्णु भगवान् क्रुद्ध होनेके बटले उनसे अपने वचनःखलकी कठोरताके कारण क्षमा सांगने लगे—आपके पैरमें चोट तो नहीं लगी? भृगुने लौट कर विष्णुको सबसे बड़ा बतलाया था। देवताओंके अपमान करनेका पाप छोड़ानेको भृगु ब्रह्म क्षेत्र गये और हिरण्यक्षमें स्नान करके अपने आश्रममें महादेवकी स्थापना की और कठिन तपश्चर्यामें लग गये। अन्तको शिवने प्रसन्न हो उनका पाप दूर कर दिया।

उक्त स्थानको भृगु ऋषिका आश्रम कहा जाता है। इसके भीतर किसी स्तम्भसे निकलती हुई एक देवी मूर्ति खोदित है। यह सत्तावन लम्बा, तोस चौड़ा और ३६ फुट ऊँचा है। इसमें ब्रह्माकी मूर्ति प्रतिष्ठित है। लोग उसकी पूजा किया करते हैं। नगरके निकट ही पोल पहाड़ है। प्रति वर्ष माघ शुक्ल चतुर्दशीको मेला लगता है। इसमें गुजरात और मेवाड़के सभी भागोंसे व्यापारी आया करते हैं।

खेड़ा (हिं० पु०) १ लुद्रग्राम, पुरवा। २ नानाप्रकार मिश्रित अन्न। यह निष्कष्ट तथा सुलभ रहता और पालित पक्षियोंमें विशेषतः कपोतोंके खानेमें लगता है। गावका मुखिया और पुरोहित 'खेड़ापति' कहलाता है। खेड़िताल (सं० पु०) गायक, गवैया।

खेड़ी (हिं० स्त्री०) १ लौहभेद, किसी किसका देशी लोहा। इसके बने अस्त्र अतितीक्ष्ण होते हैं। खेड़ी नेपालमें बहुत तैयार की जाती है। इसका दूसरा नाम 'भरकुटिया' है। २ मांसखण्डविशेष, गोशतका एक टुकड़ा। यह जरायुज शिशुओंके नालमें दूसरे प्रा पर संलग्न होता है।

खेत (हिं० स्त्री०) १ क्षेत्र, जौतने-बोर्नकी जमीन्। २ खेतकी फसल। ३ स्थान, जगह। ४ समग्रभूमि, लड़ाईका मैदान। ५ पत्नी, जोड़ू।

खेतिहर (हिं० पु०) क्षपक, किसान।

खेती (हिं० स्त्री०) १ क्षपि, काम, खेतका कामकाज। २ खेतमें लगी हुई फसल।

खेतीवारी (हिं० स्त्री०) क्षपिकार्य, किसानी।

खेतुर—ब्रह्माल प्रान्तके राजगार्ही जिलेका एक गांव। यह अक्षा० २४' २४' उ० और देशा० ८८' २५' पू०में अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ४४० होगी। ई० १६वीं शताब्दीको चैतन्यदेवके आगमनसे यह स्थान पुण्यक्षेत्र जैसा प्रसिद्ध है। उन्हींके सम्मानार्थ गांवमें एक मन्दिर भी बनाया गया है। प्रति वर्ष अकतूदर मासको यहां बड़ा मेला लगता है।

खेत्रि—राजपूतानाके जयपुर राज्यके अधीन एक सामन्त राज्य। यह अक्षा० २८' उ० और देशा० ७५' ४७' पू०में जयपुर शहरसे ८० मील उत्तरको अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ८५३७ है। राज्यकी चारो ओर छोटे छोटे पहाड़ हैं। समुद्रतलसे २३३७ फीट ऊँचे पहाड़की चोटी पर एक दुर्ग बना है। यहां एक एंग्लो-वर्नाकुलर हाइ-स्कूल, एक अस्पताल और पांच देशी विद्यालय हैं; जिनमें डाक और तारके आफिस भी लगे हुए हैं। शहरके आस पास ताँबेकी खान हैं। जिनसे प्रति वर्ष ३०००० रुपयेकी आमदनी होती है। इसमें खेत्रि, चिड़ावा और कोट-पुतली नामके तीन शहर हैं और कुल २५५ ग्राम लगते हैं। महाराष्ट्रकी लड़ाईके समय यहांके सर्दार राजा अभयचन्दने ब्रिटिश-सेनापति लार्ड लेकके पक्ष ही बहुत सहायता दी थी, इसी लिए ब्रिटिशराजने उक्त सर्दारको प्रत्युपकारस्वरूप एक लाख रुपये आमदनीका 'कोटपुतली' नामक एक खेतन्त्र परगना दान दिया था। राज्यकी आय लगभग पांच लाख रुपये है। खेत्रिके सामन्त प्रति वर्ष जयपुर राजाके ७३७८० रु० कर दिया करते हैं। यहां प्रायः ६५० हाथ ऊँचे गिरिदुर्गमें सामन्त राजका वास-भवन है। खेद (सं० पु०) खिद भावे घञ्। १ शोक, अपसोस।

२ श्रवसाद् अफसुर्दगो, यकावट। ३ रोग, बोमारो।
साहित्यदर्पणके मतमें रति अथवा पद्यगतिसे उत्पन्न होने
वाला भ्रम भुगवा। यह लम्बी मास थाने और भी
जानिका कारण है। (साहित्य १०७ १५०)

खेदन (म० क्ली०) खिद ख्युट खेद, रञ्ज, अफसोस।

खेदना (हि० क्रि०) खदेरना, भगाना, पीछा करना।

खेदा (वै० स्त्री०) रगिस रज्जु। (चक्र ८००७१)

खेदा (हि० पु०) १ आखेटमें किमी वन्य पशुको वध
करने या पकड़नेके लिये खदेर करके एक उपयुक्त स्थानमें
ले जानिका ढङ्ग। इसमें नोग टोम वजाते और झन्ना
मचाते है २ गिकार, अहोर।

खेदाई (हि० स्त्री०) १ खदेर, पीछा। २ खदेरनेकी
उज्जरत या मजदूरी।

खेटि (म० पु०) खिद अयादाने इन्। किरण, भलक।

खेटितय्य (म० क्ली०) खिद भावे तय्य। खेद, अफसोस।

खेदिनी (म० स्त्री०) अग्रनपर्णहिच, एक वेल।

खेद्य (म० द्वि०) खिद गिच् एत्। कलाया जानिवाना,
जिमें अफसोस करना पडे

खेना (हि० क्रि०) १ नाव आदि जलयान चलाना,
जहाजरानी करना। विधेयत नौकादण्डका परि-
चालन खेना कहनाता है। २ निर्वाह करना, पार
नगाना।

खेनेवाना (हि० यि०) खेवैया, नाव चलानेवाना।

खेप (हि० स्त्री०) १ भरती, नदान, चालान। एक
धारमें जितनी धोज मे जायी जाती; खेप कहलाती
है। २ टांड, पच, रवानगी।

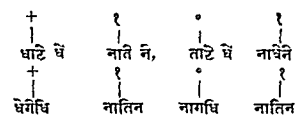
खेपडो (हि० स्त्री०) १ नावकी बन्नी। २ नौकादण्ड,
डांड।

खेपना (हि० क्रि०) काटना, पट्टुचाना गुजारना
खेपरिभ्रम (म० क्ली०) १ धाकागर्भमें विचरण, धामसामर्भ
धनफिर। (वि०) २ धाकागर्भ विचरण करनेवाना,
जो जवामें उडता हो।

खेमकण्—पञ्चायके लाहोर जिलेकी कछुए तख्तीनका
एक नगर। यह कसूर नगरमें ३३ कोस अक्षा ०१ ८'
७" और रेखा ०७४ ३४' ५०"में विपागा नदीके प्राचीन
किनारे अवस्थित है। यहाँकी लोकसंख्या ६०८२ है।

नगर चारो ओर चहारदीवारीसे घिरा हुआ है। पहले
समयमें यह एक सख्दिगानी नगर था। आजकलभी
कई एक खण्डहर पूर्व गौरवका परिचय देते हैं। यहाँ
स्युनिवर्सिटीभवन, विद्यालय, थाना और पाय-
निवाम हैं।

खेमटा (हि० पु०) छह मात्राओंका एक ताल। कोई
कोई चार मात्रावैकितानकी भी 'खेमटा' करता है।
जैसे—



(* धि० म०)

इस तालका नाच गाना भी 'खेमटा' ही कहा जाता
है। बहुतेसे दादरे इसी तानमें गाते हैं।

खेमा (अ० पु०) गिविर, डेरा, तख्जू कनात।

खेय (म० त्रि०) खन्त्यते खन् कर्मणि क्वप इकारसादेश्।
१ खननोय, खोदा जानेवाना। (क्ली०) २ परिववा,
खार्इ। ३ घरनई।

खियोङ्गधा—चटग्राम और आराकानवामी जातिविगिप।
माधारणत मनुष्य इन्के 'सुनिमघ' कहकर पुकारते
हैं। इनमें बारह शाखायें हैं,—१ रियाइत्ता, २ पनेइत्ता,
३ पनेइत्ता ४ कोकदिनत्ता, ५ वैयनत्ता ६ मरुइत्ता
७ फुङ्गोयत्ता ८ कोकपियत्ता, ९ खेइत्ता,
१० मरोत्ता, ११ मावकोत्ता, १२ क्रीइत्ते उट्टत्ता, १३
टेइइत्त्यात, १४ कौकमात्ता, १५ महलेइत्ता। जिस
नदी किनारे याममें ये दलबाध कर रहते हैं उर्मा नदी-
के नाममें अपनी अपनी शाखाका नाम रखते हैं। कर्ण
फूनी नदीके दक्षिणभागमें जो रहते हैं उर्मा मद्रू नदी
किनारे यन्दार वनवामी बोमोइत्तको कर देना पडता है।
और जो कर्णफूनी नदीके उत्तरभागमें रहनेवाने 'मोइ'
शाखाकी कर देते हैं। यामवामी दाग निर्वाचित किमी
मण्डलको राजाका कर वसूल करनेके लिये नियुक्त
करते हैं। यही मण्डल वर्नाके छोटे छोटे सुकदमैंका
विचार करते हैं जिममें इनको दोनों पक्षमें कुछ कुछ
मिन प्राया करता है।

जितने रुपये यह प्रजामे लेकर राजा या महारको देते हैं उनमेंसे कुछ १० शालके अन्तमें कमिगन काट कर उन्हें मिल जाता है। प्रत्येक परिवारको चारमे लेकर आठ १० तक प्रतिवर्षमें कर देना पड़ता है। उन लोगोंको कुछ भी कर नहीं देना पड़ता है जो अविवाहित पुरुष, पुरोहित, विधवा, पत्नीर्जन व्याक्त हैं अथवा जो मन्मूर्खी रूपमें गिकारही के ऊपर अपनी जीवन निर्वाह करते हैं।

पहले पहल यह जाति भी अन्यान्य पार्वतीय जाति-को तरह भूत प्रतीकों खुश करनेके लिये पूजा करती थी। आजकल इस जातिके मनुष्य गौतम बुद्धकी पूजा करते हैं जिसके लिये प्रत्येक ग्राममें एक धर्म-मन्दिर है। साधारणतः कई एक वृक्षोंकी छायामें चार हाथ ऊंचा मन्दिर बनता है। मन्दिरके बाहर और भीतर अकेले बांसका काम किया जाता है।

प्रत्येक प्रातः और मध्याह्नमय ग्रामके समस्त पुरुष दल बांध बांध कर आते और मिरसे पगड़ी उतार कर घुटनें टेक बुद्धदेवकी उपासना करते हैं और प्रतिष्ठित मूर्तिकी पार्श्वस्थित घण्टाको बजाते हैं। इन लोगोंका विश्वास है कि घण्टा बजानेसे देवता जाग उठते और हमारे भजनको सुनते हैं।

मध्याह्नमय ग्रामके युवक वहीं खेलते कुदते और नाचते हैं। भजन-मन्दिरके भीतर ऊंचे बांसके मञ्च पर गौतम बुद्धकी मूर्ति रहती है। प्रतिदिन प्रातः समय ग्रामको लड़कियां, मन्दिर आतीं और फूल आदिसे बुद्धदेवको पूजा करतीं हैं। यह उपस्थित अतिकाल्हा दैनिक आहारोपयोगी खाद्यद्रव्य साथ ही लिये और थियङ्गके बाहर चारो ओरकी टिवार पर है। तत्पश्चात् लटका करता है और इसी स्थानमें ग्रामके मरुत बालक बालिका आकर लिखना पढ़ना सीखते हैं।

प्रतिवर्ष इन लोगोंमें खेतीकी बीनीसे पहले 'सियाङ्ग-ग्रहपा' व्रत होता है। इस व्रतमें आठ या नौ वर्षके लड़कोंका सर मुंडाया और पुरोहितोंका जैसा पीला कपड़ा पहनाया जाता है, उनमेंसे प्रत्येक दक्षिणास्वरूप चावल या कपड़ा लेकर पुरोहितके चारो ओर बैठता है। इस समय प्रत्येकके सामने एक एक दीपक जला करता है।

फिर लड़के सात दिन तक पुरोहितके कथनानुसार खाते पीते और पहनते आदते हैं। यही उनकी दांजा है। मिय्या इस व्रतकी नहीं कर सकतीं। जब कोई प्रिय व्यक्तिकी मृत्युतः पीडा वा आश विपदमें रक्षा प्राप्ता है, तो उसे ईश्वरको रस्य करनेके लिये यह व्रत करना पड़ता है।

इस लुट लुट मन्दिर व्यतीत इनके दो मन्दिर प्रधान हैं। एक वीमोङ्गके राजाकी राजधानी बुन्दावन-नगरमें, दूसरा चट्ट्यामके गवजान ग्रामके अन्तर्गत है। इन दो स्थानोंमें बुद्धदेवके दर्शनके लिये अनेक यात्री वैशाख मासको आते हैं।

खेरीझथा बहुत सामान्य भावमें वस्त्रादि परिधान करते हैं। साधारण मनुष्य घुटने तक लम्बा सूती वस्त्र पहनते हैं, किन्तु बड़े आठमों रंगम या वारीक सलमल व्यवहार करते हैं। सब लोग अद्भरवा और टोपी पहनते हैं इनमेंसे कोई भी मनुष्य जूता व्यवहार नहीं करता। स्त्रीजाति साधारणतः अपनी छातीमें एक खण्ड कपड़ा बांधते हैं। समय समय पर अङ्गा भी पहनते और टोपीके बदले मिर पर रुमान लपेटते हैं। ये अलङ्कार पहनना रीत पसन्द करती हैं।

लड़कीकी शादी १७ या १८ वर्षकी अवस्थामें होती है। पुत्रके योग्य एक सुपाती पिताकी खोजनी पड़ती है। तत्पश्चात् वरकर्ता एक घटक स्वरूप आत्मोयकी कन्याकर्ताके निकट विवाह सम्बन्ध स्थिर करनेके लिये भेजते हैं। यदि कन्याकर्ताकी मन्मति हुई तो एक दिन वरकर्ता जाकर कन्या देखते और यौतुक स्वरूप एक अङ्गा और चांदीकी एक अंगूठी देते हैं। बाद उसके शुभनक्षत्र देखकर विवाहका शुभलग्न स्थिर होता है। दोनों पक्षवाले अपने अपने कुटुम्बको निमन्त्रणपत्र और एक सुरगी भेजते हैं। किमी किमी स्थानमें आजकल सुरगीके बदले पैसा दिया जाता है। विवाहके दिन वर और यात्री बहुत धूमधामके साथ लड़कीके घर जाते हैं, जहां वर और वरातके टिकनेके लिये बांसके छोटे छोटे घर बनाये जाते हैं। इन घरोंमें एक घर वरके लिये सजा हुआ रहता है। मध्याह्नमय वर लड़कीके घर जाता है। जहां लड़के और लड़कीको एक सतसे लपेट

देंते हैं और पुनोहित आरु विवाहकी मन्दादि पाठ करते हैं। उसके बाद मात वार लडका और लडकीके हाथमें भात रखा जाता है और लटकेका दाचना हाथ उठा करके लटकीके हाथ पर रखते हैं और पुनवार मन्दादि पाठ किया जाता है। इसके बाद विवाह शीप हो जाता है और वरात बडी धूमधामके साथ भोजन करती है।

ये मुर्दाकी जलाते हैं। अपनी जातिके किमी मनुष्य के मरने पर उनमेंसे एक व्यक्ति टोल बजाता और भिन्ना उच्चैस्वरसे रोती हैं। टोलकी आवाज सुनने पर सब पडोसी एक जगह इकट्ठे होते हैं और मुर्दाकी जलानेके लिये ले जाते हैं। इस काममें इन्हे २४ घंटे लगते हैं। जब ये सब जलानेके लिये जाते हैं, तो धागे धागे पुरोहित, उसके बाद गिथगण, उनके पीछे कुटुम्बादि और मक्के पीछे शयकी लिये हुए सत मनुष्यके जातिवर्ग रहते हैं। एक निकट आत्मीय मुर्दाके सुखमें अग्नि देता है। मुर्दाके जल जाने पर उसका भस्म मट्टीमें गाडा जाता है और इस कदके ऊपर वाममें निमान बाध कर खडा कर देते हैं। मरनेके मात दिन बाद पुरोहित आ सतवर्तिके कल्याणार्थ स्वस्त्रायन करते हैं।

यह लोग आराकानो भाषामें बातचोत करते और ब्रह्मदेगीयोंके जैसे अक्षरोंमें लिखते पढते हैं।

एक समय यह जाति बहुत प्रबल हो गयी थी। इनका आत्याचार आज भी वल्लुवामियों स्वाम कर पूर्व-वद्वान और चट्टग्रामके लोगोंकी नहीं भूलता।

उम समयके मघ राजा या राज राजादेवमें नहीं करते थे। वे दल बाध बाध कर भूटते और देग जलाया करते थे। इसी कारण सुन्दर वनके कुछ अंग और वाग्दरगञ्ज, चट्टग्राम प्रभृति ध्यानमें बहुत मनुष्य प्राण लेकर भागे। मघोंके टौराकामे घबरा करके १६६४ ई०में वद्वानके शासनकर्ता शायस्ता खां आराकान राजाके विरुद्ध युद्धके लिये शयमर हुए उम समय चट्टग्राम मघ राजाके अधीन था।

इस युद्धमें मघ पूर्णरूपमें पराजित होकर भाग गये और चट्टग्राम फिर वद्वानके अधीन हो गया। उम समय यद्वानक प्राय सभी स्थानोंमें मघ वाम करते हैं। १५६०।

खिरकीरिया—भूटानमें लक्ष्मी नदीका निकटस्थ एक ग्राम। यह दरङ्ग जिल्लाके उत्तर प्रान्तमें अवस्थित है। यहां प्रतिवर्ष एक बडा मेला लगता है, जिसमें दूर दूर देगके मनुष्य आते हैं। कितने ही रुपयोंका मान बिका करता है

खिरडी—काठियावाड प्रान्तके राजकोट राज्यका एक ग्राम। यह राजकोट नगरसे ८ मील पूर्वकी अवस्थित और सुप्रसिद्ध लोमा खुमानके निवासस्थान जैसा परिचित है। इन्हीं गुजरातके सुलतान मुजफ्फरकी आयय दिया, जिन्हेने अरुबर बाटशाहके तत्प्राप्तिये स्वैदारसे अपने भापकी छिपा लिया था 'मीरात मिन्दरो में' उमको भरदार परगनेका गाव निखा है। विश्वासघातकतामें लोमा खुमानके नवानगरमें मरने पर मानम होता है कि उनके वधघराने खिरडीका अधिकार गवा दिया और जाम माहवने उन्हें निकाल बाहर किया। फिर वह थोड़े दिनों जमदानमें रहे परन्तु १६६० ई०की वीका खाचरने लोमाखुमान आता भोकारके पौव नय खुमानसे जगटान विजय किया और यह लोग मोलियानाकी पीछे हट गये। खिरडी नगरकी लोकमग्या प्राय १३४८ ई०।

खिरवा (हि० पु०) मासुद्रिक नाविक, मसुद्रमें जहाज रानी करनेवाला मझार।

खिरवाल—१ मज विभागकी एक छावनी। यह अक्षा० २३ ५८ उ० और देगा० ७३ ३६ पू०में उदयपुर नगरसे ५० मील दक्षिण गोदावरी नद्यी सुद्र नदीके तटों पर अवस्थित है। लोकमग्या प्राय २२८८ हैमी। १८४० और १८४४ ई०को खडी की हुई मेवाड भीन सेनाका यह सटर सुकाम है।

खिरवाडी—छोटीनागपुरकी एक भाषा। इसकी बहुतमी गाव्वाए भ्रमवश स्वतन्त्र ममभी जाती हैं उनक नाम है—मन्तानी, मुण्डारी, भूमिज, विरहार, कोडा, जो, मुरी पासुरी पगरिया और कोरवा।

खेरवान—(खिडवान) गुजरातके ब्राह्मणोंकी एक गावा। यह थैडा जिन्में बहुत पाये जाते हैं। इनका बडा स्थान पानन्द उपविभागके उमठठ ग्राममें है। यह अपनी

उत्पत्ति विप्रवरी और पद्मप्रवरी ब्राह्मणोंमें उत्पन्नते और कहते हैं कि चन्द्रवंशीय राजपूत राजा मोरभद्रके शासन कालको वह शहर जीर्ण और जोड़ देखके नैराश्रम सन्निभस्य और पट्टनमें जा करके रहे थे। और पट्टनमें आज भी इनका मस्यभ लगा है। यह खलार (वित) और वल्लर (वाज) दो नं गिर्धोंमें विभाज है। कहते हैं, किमी समयको पहाके राजा पुत्रकामनामि ब्राह्मणोंको बहुतसा दान दिया, परन्तु अधिकारा ब्राह्मणों ने उसको अयाज्ञ समझ नगरमें बाहर जा करके निवास किया था। इसीमें दान लेनेवाले भीतरों और न लेनेवाले बाहरी कहलाये हैं। यह हृदकाय, पश्चिमो, मितश्रयी और उन्नतिशील है। इनकी स्त्रिया विद्यापीठको वा ज्ञातिभोजोंमें सम्मिलित नहीं होतीं। विधवाएं सफेद कपड़े पहनती हैं। वित या भीतरों बहुत कम देख पड़ते और दरिद्रावस्थामें नाड तनिशोंका कुलपोंमेंहित्य करते हैं। परन्तु वाज लोग दान ग्रहण न करनीका गर्व रखते और धनी होते हुए जमान्टारी, सहाजनी और सौदागरीमें लगे रहते हैं। मार्गिकांठोंमें भो खुदवालीकी टोनों ये गियां मिलती हैं।

खैराटि सूरमल—भील जातिमें एक प्रधान धर्मप्रचारक इनका प्रधान उद्देश्य यह था, कि श्रीरामचन्द्रजी इंग्ररावतार हैं। भीलोंके "भक्त" नामक गुरु अपनेको खैराटि सूरमलका गिष्यवतलाते हैं। और इम।

खैराली—काठियावाड़के भालावाड़ विभागमें एक चूड़ राज्य। खैराली और वाटला नामक ग्राम इस राज्यके अन्तर्गत हैं इसका क्षेत्रफल ११ वर्गमील है। लोकसंख्या प्रायः १६३८ है। इस राज्यकी आमदनी २५८८० रु० और मालगुजारी ६७८ रु० इटिश गवर्नमेण्टकी देना पड़ता है।

खैरातु—१ बड़ोटा राज्यके काडी प्रान्तका एक तालुका। इसका क्षेत्रफल २४६ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः ७६४६३ है। यह इस कोरसे उम कोर तक समतल और जङ्गलसे भरा हुआ है। खारी इसके भीतर पूर्वसे पश्चिमकी बहती है।

२ गुजरातमें बड़ोटा राज्यके काडी विभागके अन्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २३' ५४ उ० और देशा०

७२' ३२ पूर्वमें स्थित है। मीरसंज्ञा प्रायः ५६१२ है। यह स्थान यद्यथायथे प्रतिष्ठित मीरसंज्ञाके अन्तर्गत वारण प्रसिद्ध है। यहाँ दोपार्थी घटा-नत, याना, ओपानाथ, मीरसंज्ञा और गुजराती घाट-गाना है।

खैरी (खैर) खैरी १२ दिशा प्रचारका मंत्र है यह उद्देश्यमें बहुत उपजकी और अधिक भया रूपमें खरी है। २ खैरिगोठ, खैरि घाम। ३ खैरिगोठ, खैरि खिल्ला। यह टलटलमें खरी और कानू परिशेषमें समय शरणा धामस्थान बढकती है। खैरी खैरीमें दे'तमें लक्ष है। खैरी—यह प्रदेसमें अत्यन्त विस्तारका एक उत्तरीय जिला। पश्च २३' ५४ एवं २८' ५०" उ० और देशा० ७०" ० तथा ७२' २८, ५०" ० मध्य स्थित है। इस जिलाके उत्तरमें मोहन नदी, पूर्वमें खैरियाला नदी, दक्षिणमें सीतापूर तथा खरटोई जिला और पश्चिममें पालीभीत तथा गाजपानपुर जिला है। यह जिला सीतापुरमें २६ मील उत्तर और मरगडमें ७५ मील उत्तर स्थित है। इसका क्षेत्रफल २८२० वर्गमील है और लोकसंख्या प्रायः ८७५२६८ है। यह जिला पश्चिम-कामें विभक्त है, जिलमें जोकर खैरियाला, खैरीया टला-वर, खैरा, कुल, जसवारि, कटना, मोभती और मुरीता नदियां बहती हैं। कुल नदीके उत्तरमें तराई बहुत अस्वास्थ्यकर है। खैरियाला और खैरा नदीके मध्यमें जमीन गन्धगालिनी और उर्वरा है। जिलाका प्रायः ६५० वर्गमील स्थान जंगलसे भरा है। इस वनमें मन्दर शाल, और शीगाकी लकड़ी पायी जाती है, इसलिये लगभग ३०३ वर्गमील जमीन सरकारकी खान धरनी है। इस जिलाके उत्तरमें मनेगिया ल्वर प्रबल है। दक्षिणांग स्वास्थ्यकर है। यहाँ अधिक मूल्यवान् खनिज पदार्थ नहीं हैं, सिर्फ खैरीगट्ट परगनामें मिट्टीका तेल निकलता है। गोला नामक स्थानमें अच्छा कहर और घोराडामें उकूट गौरा मिलता है। यहाँ जंगलमें बाघ, हरिण, चित्तूरग, शूकर और नीलगाय देखे जाते और विपैले सप तथा कुभीर भी यद्येष्ट पाते हैं। यहाँ की उपज कोटो, काकुन, बाजरा, उड.ट. मूंग, रोह, यव, सरसों, जख, कपास, तम्बाकू, अफीम, नील, और नाना प्रकार शाक सबी हैं।

यह जिला तीन तहसीलों और १७ परगनाओं में विभक्त है। प्रथम, लखीमपुर तहसीलके अधीन खैरी, श्रीनगर, भूर, पाड़ना और कुजुरामैलानी परगना है। दूसरी निधामन तहसीलके अधीन फीरोजाबाद, धोराडा, निधामन, खैरोगढ और पलिया परगना, तीसरी, मूह-श्वदी तहसीलके अधीन मुहश्वदी, परगवान, औरझावाद, काठा, हैदराबाद, बग्दापुर और अतवा पिपरिया परगना है। यह जिला डिप्टी कमिश्नरके शासनाधीन है,

यह अकबरके समयमें बहुत जमीन्दारोंके अधिकारमें था। मुहश्वदीके राजाने अकबर बादशाहसे पांच ग्राम और ३०० बीघा जमीन प्राप्त की थी। एक समय वे समस्त जिलाके अधिकारी थे। वर्तमान समयमें जाङ्गीरी, शंकरवार, सूर्यवंश, जन्वाके, राजपूत सिख, और सैयद यहाँके जमींदार हैं। यहाँ विद्यालय, धाना, अस्सतान और औषधालय हैं।

२ उक्त जिलाके अन्तर्गत एक नगर। यह अक्षां २७ ५४' उ० और देशां ८०° ४८' पू० पर अवस्थित है। यहाँकी लोकसंख्या ६२२३ है। यहाँ १४ हिन्दू मन्दिर, १० मस्जिद और तीन इमामवाडा हैं। इस शहरमें एक विद्यालय भी है। १५६३ ई०को मरे सैयद खुर्दका मकबरा देखनेकी चीज है।

खेल (म० त्रि०) खेलति, खेल अच्। १ अति सुन्दर भावमें गमन करनेवाला, जो बहुत अच्छी तरह चलाता हो। (पु०) २ वैदप्रसिद्ध कोई राजा। अगस्त्य इनके पुत्रोद्भूत रहे। इनकी पत्नी 'विश्वपत्नी' कहलाती थी। किसी समय खेल राजासे शत्रु पत्नीय धाररूपमें लड पडें। इसी युद्धमें राजपत्नी विश्वपत्नीके दोनों पैर कटे थे। पुत्रोद्भूत अगस्त्यने अश्विनैकुमारदयको उसके प्रतीकारका अपरोध किया, उन्होंने रात्रिको जा करके लोहेके दूसरे दो पैरोंको विश्वपत्नीके टूटे पैरोंकी जगह लगा दिया। (अ० १११६१५)

खेल (हि० पु०) १ केलि, क्रीडा, मन बहलाना, उड़न कूद चलाकर, होड धूप। इसीमें आधुनिकी, कुई कुबीवर, नञ्जोनीय, अंधेरियाउज्जेरिया, लुकी लुकीभर, कयझी, अटई डग्गा, नंडी गेट, गोनी गुठिया, ताग

शतरंज, गवडा, सुरवगा आदि बहुतसे मनबहलानाका बोध होता है। २ काम, बात। ३ खिलवाड, हलका काम। ४ अभिनय, स्वाग, तमाशा। ५ अनीकिकता, निरालापन, अज्ञत लीला। ६ कोई सुद्र सरोवर। इसमें पण्ड जल पीते हैं।

खेलन (म० स्त्री०) खेल-न्य ट्। १ क्रीडा, खेल, मन बहलाना। २ खेलनेकी चीज, जिसमें खिला जावे। जैसे—गेद, बग्गा गोट ताग आदि।

खेलना (हि० क्रि०) १ मन बहलाना, खेल करना। २ देखी आना, भूत चटना इसमें मनुष्य अपने हाथ पैर और सर हिलाने लगता है। ३ घूमना फिरना। ४ अभिनय दिखाना स्वाग बनाना, तमाशा करना। इसका प्रेरणार्थक रूप 'खिलवाना' है।

खेलना (म० स्त्री०) खिलवाड, खेल आधारि न्योट ततो डीप्। शारिफलक, मोहरा, गोट।

खिलवाड (हि० पु०) १ इसी दिग्गो, खेलकूद, मन बहलाना। २ खेलकूद करनेवाला, दिग्गोवाज। खेला (म० स्त्री०) खेलेयट्-टाप्। खनामव्यात सुप्, एक भाडी। यह मधुर, ठण्डी, दूध बटानिवानी और कचिकार होती है। (राजनिषट्)

खेलाई (हि० स्त्री०) क्रीडन, खेल। खेलाडी (हि० वि०) १ खेलैया, खेलनेवाला। २ दिग्गोवाज, खेलैया। (पु०) ३ क्रीडा करनेवाला व्यक्ति। ४ पाठ, अभिनेता, तमाशा देखनेवाला। ५ परमेस्वर, दुनियाको जगाने बिगाडनेवाला।

खेलात—बलूचस्तानका देशी राज्य। यह अक्षां २५° १' तथा ३०° ८' उ० और देशां ६१° ३७' एव ६८° २२' पू०के बीच पडता है। इसका पूरा क्षेत्रफल ७१५८३ वर्गमील है। इसके उत्तर इरान, पूर्व बोलान गिरिसड्ट, मरी तथा बुगाली पर्वत एवं सिन्धु, उत्तर झागई और कटा-पिगीन् जिले और दक्षिणको मसबेन तथा अरब सागर है। यह देश बहुत पहाडी है।

नदिया प्राय दक्षिणको बहती हैं। मसुद्रतट १६० मील विस्तृत और पमनी बन्दर प्रधान है। शुवादरकी चारों ओर मस्कटके सुलतानका अधिकार है।

उत्तरके उद्भिद् दक्षिणमें विभिन्न हैं। जनबायुकी

अवस्थामें भी बड़ी विभिन्नता दृष्ट होती है। भीतरी भागमें गर्मी बहुत पड़ती सर्दी कम रहती है। वृष्टि सभी जगह अनियमित रूपसे होती और अल्प तथा स्थानीय रहती है। यथाक्रम अरबों, गजनवियों, गोरियों, मझोलीं और फिर सिन्धुवासियोंके अधिकारमें आ यह दिल्लीके सुगल-मखाट्का अधिलत हुआ। अहमदजाई शक्ति ई० १५वीं शताब्दीको उलथित हुई और १८वीं शताब्दीको अपनी चरम सीमा पर पहुंच, परन्तु यह सदा दिल्ली या कन्दहारके अधीन रही। प्रथम अफगान युद्धके बाद यह अंगरेजोंके अधीन हो गया। इसका आधिपत्य १८५४ और १८७६ ई०की सन्धियोंमें विवेचित और विस्तारित हुआ है। मकरानमें कारंजका ध्वंसावशेष और 'गन्नबन्द' (आतंगपरशतोंके पुत्रों) भूतस्त्ववेत्ताओंके देखने योग्य है।

खिलातके अधिवासी चटाइयोंके भोपड़ो या कम्बली-के डेरोंमें रहते हैं। लोकसंख्या प्रायः ४७०२३६ है। प्रधानतः बराहुड़े, बलूची, दिहवारी और सिन्धी भाषाएं प्रचलित हैं।

भूमि अधिकांश बालुकामय है। गेहूं और ज्वार प्रधान खाद्य है। मकरानमें खजूरका बड़ा खर्च है। बागोंमें अनार बहुत देख पड़ता है। नारी और काछीसे बहुत अच्छे मवेशी आते हैं। सरवान और काछीमें बलूचस्थानके सबसे अच्छे घोड़े पैदा होते हैं। खिलात नगरके पास बड़े बड़े गधे उपजते और मकरानके गधे अपनी द्रुतगतिके लिये प्रसिद्ध रहते हैं। भेड़ और बकरे बहुत हैं। काछी, पाव पहाड़ और खारामें ऊंट बहुत होते और सब जगह माल असबाब टोनेके लिये जानवर मिलते हैं। सब लोग अपने अपने घरमें सुर्गियां रखते हैं। अमीरोंके पास अच्छे अच्छे ताजी कुत्ते रहते हैं।

ग्रहों रुपये पैसेका चलन बहुत कम है। मालगुजारी और मजदूरी क्षिप्रजात द्रव्योंमें दी जाती और खरीद फरोख्त विनियमसे चलती है। जनता अति दरिद्र है। परन्तु अब गये कई सालोंसे लोग अच्छे कपड़े पहनने लगे हैं। मकरानियोंमें भिन्नान्ति अधिक प्रचलित है। सोर पहाड़में कोयलेकी खान है। दलदलोंकी सटीसे अच्छा नमक निकालता है। काछीमें

सोटा रंगमी कपड़ा बना जाता और मकरानमें कभी रंगमकी चीजे बनती हैं। सभी बराहुड़े भियां अंडके काममें हाथियां हैं और ग्रहोंकी कारचोवी उम्दा और देखने लायक होती है। भियां काले ऊनके टिकाऊ लबादे तैयार करती हैं। खजूरकी चटाइयां, धनियां, रम्भियां और दूसरे चीजे भी बनायी जाती हैं।

अवमाय महसूलकी अधिकता और ऊंटोंके किरायेमें कमी है। राज्यके पूर्व और उत्तरपूर्व नार्थवेष्टने रेलवे चलती है। कौटामि खेलात नगर तक बेलगाड़ी आने जानेकी राह और तारभी लगा है। अंगरेज गवर्नमेण्ट खेलातके खांकी प्रजा और दूसरे स्वाधीन लोगोंके भागड़ोंमें ही हस्तक्षेप करती है। राज्यका पूरा आय प्रायः साढ़े मात और ८॥ लाख रुपयेके बीच और खर्च कोई साढ़े तीन या ४ लाख रुपया वार्षिक है। अंगरेज सरकार को आटिकी कितना ही रुपया प्रति वर्ष शान्ति बनाये रखनेकी देती है। किसानोंकी खांके किलेकी मरम्मत और घोड़ेकी हिफाजत करनी पड़ती है। मेनाकी व्यवस्था ठीक नहीं।

अभी तक शिक्षाकी अवहोना ही रही है। मसजिदके मटरसोमें कुछ लड़के पढ़ते और हिन्दू अपने घर पर ही मातापिता कर्तक शिक्षित हुवा करते हैं। खेलाना (हिं० क्रि०) १ क्रीड़ामें किसी अन्य व्यक्तिद्वारा प्रवृत्त करना। २ क्रीड़ामें मन्मिलित करना खेकी मिलाना। ३ बहलाना, चुप करना, बहटाना। प्रायः खेलि (सं० स्त्री०) खे आकाशे अलति पर्याप्रोति सुन्दर अल्-इन्। १ गान, गाना। २ वाण, तीर। ३ अलिये ४ पत्नी। ५ जन्तु।

खेलुआ (हिं० पु०) यन्त्रविशेष, एक औजार। देखनेमें घाली-जैसा होता है। इससे चर्मको मुलायम बनाते, खारी नमक रगड़, रगड़ करके खिलाते हैं। खेव (हिं० पु०) लणविशेष, एक घास। इसका अपर नाम 'पलञ्जी' है। प्रथम वृष्टिमें ही यह खूब जग आता और घोड़ेको खानेमें बहुत सुहाता है।

खेवट (हिं० पु०) १ पट्टीदारोंकी जमीनके हिसाबका एक कागज। इसमें पटवारी उनकी जमीन और मालगुजारीकी कैफियत लिखता है। २ मन्नाह, मांभी।

खेवनाव (हि० पु०) वृक्षविशेष, एक पेड़। यह पेड़ बड़ा होता और भारतके कई प्रान्तोंमें उपजता है। इनके भीतने रेश्मी रखी बनती हैं। खेवनावमें नाइ भी निकलती है। म्यानविशेषमें इसको 'दुबराखेव' भी कहा जाता है।

खेवा (हि० पु०) १ नावका किराया, किशोकी मजदूरी। २ नावकी खेप। ३ बार, भरतवा। ४ भरी नाव। खेवाई (हि० स्त्री०) १ नौकापरिचालनकाय, जहाजरानी नाव चलाई। २ नाव पर चढ़नेका भाड़ा या किराया। ३ कोई रक्षी। इससे दण्ड नोकामे आवद्ध किया जाता है।

खेम (हि० पु०) वस्त्रविशेष, एक कपड़ा। यह मोटे देसी सूतका बनता और चादर जैसा लम्बा रहता है। इसको विक्रीनिमें व्यवहार करते हैं।

खैबर (म० पु०) खे आकाशे इय शीघ्रगामित्वात् सरति, स्रुट प्रलुक् समा०। अथतर, खैबर। यह घोड़ीके पेटमें गंधिका उत्पन्न किया हुआ एक जन्तु है। पर्याय—अश्व खरज, सज्जदगभे, अश्वग, समी, सन्तुष्ट, मिश्रद, मिश्र शब्द, घतिभारग।

खैसारी (हि० स्त्री०) चट्टी, किन्तु किम्बका मटर इसकी फलिया चपटी रहती है। खैसारीकी दान बनाया करते हैं। यह समी विकती और भारतमें प्रायः सब त (नैवेमि उपजती है खैसारीकी कार्तिक प्रपहायण मास में पैया जाता है। यह प्रायः साठे तीन मासमें तैयार भाँती है, प्रवादानुसार अधिकतासे इसको व्यवहार करने को मत्तुप्य पन्न बन जाता है। खैसारी बहुत दस्तावर पुँगीती है।

खि (हि० स्त्री०) धूलि खाक, मट्टी। खिनी (हि० स्त्री०) काष्ठखण्डभेद, टैयदार लकड़ीकी एक तखती इस पर तैयार डाल करके भीजादोंको साफ किया जाता है।

खैबर-उत्तर पश्चिम सीमान्त प्रदेशमें अफगानस्थानको जानिमाना एक ऐतिहासिकगिरि मण्डल (घाटी) इसका केन्द्र स्थान पन्ना०३४ ई० ७० पौर देगा० ७१ ५ पू०में स्थित है। इस घाटीके पहाड़ भी खैबर ही कहलाते हैं। खैबर घाटी अफगानस्थानमें भारत आनेकी उत्तर की बड़ा राह है। यह घाटी पेशावरमें १०० मील

पश्चिमकी आरम्भ होती और ३३ मील पन्नाडि रॉमिं घूमती हुई डकामे जाकर निकलती है। कादिममें वृत्तनी शुरुआत है और उसकी पश्चिम सीमाके वापर वीह धर्म तथा प्राचीन सभ्यताके अनेक निदर्शन विद्यमान हैं। जुलाई, अगस्त, दिसम्बर और जनवरी महीने खैबरकी नदियोंमें एकाएक बाढ़ आ जाती है। यहाँ लटे हुए जानवरोंको आने जानेमें बड़ी तकलीफ पड़ती है।

यह घाटी सदा सबदा भारतवर्षका एक प्रधान मार्ग रही है। मकदूनियाके मिक्न्दरने इसी राह अपनी सेना भारत भेजी थी। महमूद गजनवीने भी जयपाल चढाई करते समय खैबर घाटीसे काम लिया। सुगन बादशाह वावर और हुमायूँ कई बार इस राह होकर गुजर गये। नादिर शाहने खैबर घाटीमें जा कर जम्शुदके पाम काबुलके सूबेदार नामरखानको हराया था। अहमदशाह दुरानी और उनके पीछे शाह जमाने प जाब पर आक्रमण करते समय कई बार खैबर-सड्डट मार्गका अनुसरण किया। सुगन बादशाहोंने इस घाटीके अधि कार पर बड़ा जोर डाला, परन्तु वह इसे ख मी रख न सके। इस पर अफरीदियोंका अधिकार है। बादशाह जलाल उद् दीन अकबरने इसकी मड ककी एमा सुधारा या कि गाडि या मजिने आती जाती रह्यीं। परन्तु उस समय भी खैबरमें रोगानिया लोगीका टवटवा था। १५६६ ई०की अपने भाई मिर्जा मुहम्मद इकीमके मरने पर जब अकबरने काबुल अधिकार करना चाहा राज पुत वीर मानसि इकी रोगानियोंने मज करके भागे बटना पड़े। १६७२ ई०की औरङ्गजेब अधीन सुबेदार सुह म्द अमीन खाँकी लोगीने खैबरकी राहमें भटका दिया और उनके ४०००० पादमी सार काट करके मय रजाने जायियों स्त्रियों और बर्षोंकी मृत लिया।

१८२८ ई०की पहलमें पहल अङ्गरेज माहबजादा लम् रकी खैबरकी राह काबुल में गये थे। प्रथम अफगान युद्धके खैबरमें कई लडाइयाँ हुए और अंगरेजों सेनाकी कट भी मिलने पडे। १८४२ ई० ६ अफगानकी जगरन पोन्क अपनी सेनाके साथ खैबरकी राह पार्य बर्ष थे। काबुलमें पीछे लटने पर उनकी सेनाके दो भागों पर

आक्रमण किया गया। १८७८ ई०को मर नेवली चैखर लेनने जो किलतासूचक दल अमीर शेर अली खाँके पास भेजा था, अली समजिदमें एक रहा। उसे धमकाया और हटाया गया था। इस पर खैरकी राज अंगरेजोंने तोसरो बार काबुल पर चढ़ाई की। १८७९ ई०को सन्धिक अनुसार खैरके लोग अंगरेजों अधिकारमें आये अब खैर घाटी ख ली रहती और नमाहमें दो बार काबुल आमदरफ तक लिये फौज पहरा दिया करती है।

खैरकी पोलिटिकल एजेन्सीके उत्तर काबुल नदी तथा मफेद कोह पहाड़, पूर्व पेशावरजिला, दक्षिण अकाखेल और औरकजाई देश और पश्चिमकी चकमनी तथा मसूजाई देश है। प्रकृत पक्षमें जमरूटे और लण्डी कोतलके बीच खैर पर शिनवारियों, जकाखेल, कूकी खेल और औरकजाइयोंका अधिकार रहा। परन्तु सिख राज्य बढ़ने पर अफरीदियोंने यह प्रान्त उनसे छीन लिया।

१८९७ ई० अगस्त मासको अफरीदियोंने खैरकी चौकीयां पर आक्रमण किया और लण्डीकोतलकी सुरक्षित मरायको तोड़ फोड़ दिया था। परन्तु १८९६ ई० अक्टोबर मासको जो सन्धि हुई, अफरीदियोंने अंगरेजोंको छोड़ करके किमी दूरसे राजासे सम्बन्ध न रखनेकी प्रतिज्ञा की और सरक तथा रेल निकलने पर कोई आपत्ति न करनेको सम्वत हो गये।

खैरख (सं० पु०) खै आकाशे कतवयो मखः, स्वार्थे अन्। आकाश कर्तव्य यज्ञ विशेष। (अथ० १।१।१५)

खैर (हि० पु०) १ खदिरवृक्ष, वबूलकी जातिका कोई पेड़। यह अति बृहत् रहता और लगभग सम्पूर्ण भारतमें प्रचुर परिमाणसे उपजता है। इसका भीतरी काठ भूरा होता, काम धुनता और गृहनिर्माण तथा कृषियन्त्रोंमें लगता है। खैरका डण्डा बहुत अच्छा समझा जाता है। इसमें उपयोगी गोट निकलता। २ खैरकी लकड़ीका जमा हुआ रस, कृत्या। यह खदिर काठखण्डोंको उबालनेसे निकलता है। ३ पंचविशेष, कोई चिडिया। इसका रङ्ग भूरा और दृष्य एक वित्ता होता है। खैर दक्षिणालयमें कुटीरों वा लुट्ट वृक्षों पर घासला लगाता और उसकी भूमितक पहुँचाता है।

कण्ठ तथा चंद्रका वर्ण किञ्चित् श्वेत रहता है। खैर (फा० स्त्री०) १ कुशल, भन्नाई, चैन। (अथवा २ अनु, अच्छा, भला। ३ क्या चिन्ता, परवा न छोड़ी।

खैर—युक्तप्रदेशके अलीगढ़ जिल्लाके पश्चिम विभागमें तहसील। इसके पश्चिममें यमुना नदी है। खैर तहसीलके भीतर तीन परगना हैं। तथा खैर चन्दौसी, तथ्यल यह अक्षा० २७° ५१' एवं २८° ११' उ० देशा० ७७° २९' तथा १८° १' पू०के मध्य अवस्थित क्षेत्रफल ४०७ वर्ग मील है। लोकसंख्या १,७८८६७ है। इस तहसीलमें २७२ ग्राम और तीनगहर हैं। प्रधान नगर खैर अलीगढ़में १४ मील उत्तर-पश्चिम यहाँकी आमदनी ४७७००० रु० है। इस तहसील बहुत जगह खादर मैदान है। जहाँ बड़ी बड़ी घ अतिरिक्त और कुछ उत्पन्न नहीं होता है। इस मैदान बहुतसे जङ्गली शूकर पाये जाते हैं।

खैर—इस तहसीलमें ४ ग्राम और १ फौजदारी अट है। खैर तहसील प्रधान नगरका नाम भी खैर ही इसमें तहसील दारी, ग्रामा, सुन्मिफी, डाक खाना स्कूल बना है। गहरमें पुलिस और मफाईका निकालनेको प्रत्येक घर पीछे एक कर लगता है। १ ई०को मिपाहियोंने जब विद्रोह उठाया था, चौहा इस नगरको अधिकार किया और राव भूपालसिं राजा बना दिया। परन्तु जून मासके प्रथम ही आ मिख-सेनादलने खैर नगर आक्रमण करके राजाको प लिया और मैनिक अदालतने विचार करके उन्हें प पर चढ़ा दिया। कई दिनों पीछे चौहानोंने जाटोंके सम्मिलित हो नगर आक्रमण और महाजनी कीर्त लुण्ठन किया था। शिपको उन्हीने नगरके गृहादि फोड़ भूमिसात् कर दिये।

खैर आफियत (फा० स्त्री०) खैमकुशल, चैनचान, खुशी।

खैरखाह (फा० वि०) शुभचिन्तक, भला चाहनेवा खैरखही (फा० स्त्री०) शुभचिन्तकी, भला मनाहासत।

खैरगढ़ी—उत्तर-पश्चिम सोमान्त प्रदेशके हजारा जि

एक छोटी कानूनी। यह अक्षा० ३३ ५५ उ० और देश्या० ७३.२० पृ०में अयोटाबाद और मरीकी मड़क पर पड़ती है। जार्जेस रावलपिण्डोमें रहनेवाले अंग रंजी पहाड़ी तोपखानोंमेंसे एक शीषकटतुमें यहा रखा जाता है।

खैरपुर—उत्तरसिन्धुप्रदेशके अन्तर्गत एक देशी राज्य। यह अक्षा० २६ १० से २७ ४६' उ० और देश्या० ६८ २० से ७० १४ पृ०के बीच अवस्थित है। इसके उत्तरमें शिकारपुर जिला, दक्षिणमें हैदराबाद जिला, पूर्वमें जैगलमीर और पश्चिममें सिन्धुनद है। इस राज्यकी लम्बाई ६० कोस और चौड़ाई ३५ कोस और क्षेत्रफल ६००० वर्गमील है यहाकी जनसंख्या १८८३१३ है।

खैरपुरका इतिहास सिन्धु राज्यके इतिहासके साथ लगा हुआ है। शि० ६७। १०८३ ई०की वलूच वशीय मीर फतेह अली खान तलपुर सिन्धुदेशके राजा हुए। उनके थोड़े दिन राज्य करनेके बाद उनके भानजे शोराब खा तलपुरने, अपने दो लड़के मीर रुस्तम और अलीसुरादके साथ खैरपुरमें राज्य स्थापन किया। उससे मीरशोराबके अग्रमें खैरपुर पड़ा। उस समय राजकर अफगानिस्तानके अमीरकी दिया जाता था। १८११ ई०की शोराब खाने राज्यभार अपने बड़े पुत्र रुस्तमकी अर्पण किया १८१३ ई०की काबुलमें वरकजाद वगैरे राज्य लाभ करते समय नाना प्रकारका गडबड हुआ था उसी समय मीर रुस्तमने काबुलकी अधीनता छोड़ी थी थोड़े दिनोंके बाद मीर रुस्तम और अलीसुराद दोनों भाइयोंमें विवाद होने पर अंगरेजोंकी मध्यस्थ बनाना पड़ा। १८३० ई०में अंगरेजोंके साथ एक संधि हो गई जिसमें यह नियत हुआ कि सिन्धुनदी और सिन्धुप्रदेशके, रास्ते में अंगरेज लोग ना विरोक टोकके जा सकते हैं और अंगरेजों सेना जब काबुल जायेगी तो उस समय वहाके मोरोंकी सहायता देना पड़ेगी। इस पर बहुतसे राजा महमत न हुवे, उस समय अली सुरादन खैरपुरमें अपना प्रभुत्व स्थापन कर लिया था। उन्होंने अंगरेजको यद्यारोति सहायता दी थी। इसका फल यह हुआ कि मियानो और दशोरको नडाईके बाद जब ममस्त सिन्धुप्रदेश अंगरेजोंके हाथ

आया, उस समय खैरपुरमें अंगरेजोंके अधीन वह एक स्वतन्त्र राजा रहे। १८६६ ई०की अंगरेज गवर्नमेंगटने राजाको एक सनद दी जिसमें कहा गया कि सुसलमानो आइने अनुसार तलपुर मीर राजत्व कर सकते हैं। गवर्नमेंगट इस पर कोई आपत्ति न डालेगी। मीर अलीसुराद १८८४ ई०में मर गये और उनके लड़के मीर फैज महमूद खानकी राजगद्दी मिली, १५ तोपोंकी सलामी है। Lt Col हिज हाईनेम मीर सर इमाम बकम खान तलपुर जी० पी० आइ० वर्तमान अधीश्वर है

इस राज्यमें एक शहर और १५३ ग्राम है जिनमें लगभग ३६००० हिन्दू और १६३००० मुसलमान बसे है। यहाके मेकड़े पीछे ६८ मनुष्य क्षपि और शेष नौकरी तथा वाणिज्य व्यवसाय करते हैं। खैरपुरकी जमीन बहुत उपजाऊ है। यहाँ जौवार, बाजरा, गेहूँ, चना तथा अनेक प्रकारकी दाल और कपासकी उपज प्रधान है। यहा फलवृक्ष भी यथेष्ट हैं। यथा—आम, सेब, अनार, खजूर तथा शहतूत। यहाके पाल पशु ऊट, घोड़ा भैंस, बैल भेड़, गदम और खच्चर है। इस राज्यमें ३३१ वर्गमील जमीन जङ्गलोंमें भरी है उन्हाँको देख भाल करनेके लिये राज्यकी ओरसे थोड़े कर्मचारी नियत किये गये हैं जङ्गलोंमें प्राय २६०००, १००की आम-दानी है। यहामें कपास, रेशम, अनाज, नील हाथका बुना कपड़ा चमड़ा तथा तम्बाकूकी रफ्तानी होती है।

विचारके लिये यहा दो अदालत है, एक खैरपुरमें दूसरी मीरके साथ। जब मीर कहीं जाते तो अदालत भी उनके साथ ही रहती है खैरपुरकी स्थायी अदालतमें एक हिन्दू और मीरके साथ दो मीलकी न्यायकर्ता रहते हैं इस राज्यकी यद्यपि मृत्यु दण्ड विधानका सम्पूर्ण अधिकार भी है तथापि मीर किसीकी मृत्यु दण्ड की आज्ञा नहीं देते दीवानो अदालतमें बाटीकी अदालतके व्ययकी भांति प्रार्थित शर्यका चतुर्थांश राजकीयमें देना होता है। इस लिये सुकदमाकी सन्धा अल्प ही रहा करती है। वे पचासत हीके द्वारा अपने अपने विवादकी मोमामा कर लेते हैं। यहाका मैन्य-संख्या प्राय पाच सौ हैं जिनमेंसे थोड़े अंगारोहा और थोड़े पैदान हैं; जिनके पास तनवार और बन्दूक

रखा करती हैं। इस राज्यमें शिक्षाका बहुत अभाव है। यहाँ सिर्फ छ विद्यालय हैं जिनमें, प्रायः ढाई हजार लड़के पढ़ते हैं यहाँ एक शिल्प स्कूल भी है जिसमें कुम्हार, लोहार, बढई, जुलाहे और दर्जीके काय सिखाये जाते हैं।

मालगुजारी बटाईके रीतिसे क्षेत्रजात द्रव्योंमें हो लो जाती है। मीर साहबकी उमका तृतीयश मिलाता है। कुल आमदनी कोई १३ लाख है। इसमें १८५००० रुकी जागीर भी आ जाती है। १८०२ ई० तक यह देशी सिक्का चला, परन्तु अब अंगरेजी रुपयेके उसका स्थान अधिकार कर लिया। मीर साहब गवर्नमेण्टको कोई कर नहीं देते।

इसराज्यमें छ अस्पताल हैं। यहाँ आठ मास तक कठिन गर्मी पड़ता है, वृष्टि बहुत कम होती है। स्थायी और संविराम च्चर, आँख उठना, और चमरोग यहाँ प्रायः बहुतोंको हुआ करते हैं।

२ खैरपुर राज्यका प्रधान नगर। यह अक्षा० २७° ३' ३०" और देशा० ६८° ४८' पूमें सिन्धुनदीसे १५ मील पूर्व और रोहरीसे १७ मील दक्षिण, मीरवाह नहरकी बगलमें अवस्थित है। यहाँको जनसंख्या प्रायः १४०१४ है, जिसमें विशेष कर सुमलमान है। इसका निर्माण कौशल कुछ भी नहीं है। अधिकांश घर यहाँ मिट्टीके हैं, बहुत थोड़े ईंटोंके बने हैं। राजभवन नानाप्रकारके रङ्गसे चित्रित है। यहाँका कलवायु उपयुक्त नहीं होनेके कारण राजा अपने राजभवनमें नहीं, सदा कोटदौगीमें रहा करते हैं। नगरके बाहरमें पार रेहान्, जियाउद्दीन् तथा हाजोतफर गद्दीदकी २ मसजिदें हैं। इस शहरमें दो औषधालय हैं जिनमें एक स्त्रियोंके लिये है।

तलपुरराजके प्राधान्य समयमें यहाँ प्रायः १५००० मनुष्य रहते थे परन्तु इसकादिनों दिन क्लाम होनेके कारण आजकल सिर्फ ८००० ही मनुष्य हैं। यह आजकल कुछ शिल्पकर्म भी होते हैं, यथा बुनना, बहुत प्रकारके कपड़ा रङ्गाना, सोनारकी काम, और बन्दूक आदि बनाना। गलिचा बुननेका काम भी थोड़े दिनसे आरम्भ

हुवा है। इसके कायकत्तां पञ्जाबी शिक्षक द्वारा सिखाये जाते हैं। खैरपुरसे नील जोआर, बाजरा और तीलकी रफ्ताना होती है।

खैरपुर—पञ्जावके अन्तर्गत भावलपुर राज्यकी मौनचीनावट निजामतमें एक तहसील। यह अक्षा० २८° ४८' एवं ३०° ३०" और देशा० ७२° ०' तथा ७३° १८' पू०के मध्य सतलज नदीके बायें किनारे पर अवस्थित है। इसका क्षेत्रफल २३०० वर्ग मील है। जनसंख्या प्रायः ८१८००की है। यहाँकी आमदनी दो लाख रुपये है।

खैरपुर—पञ्जावके अन्तर्गत मुजफ्फरगढ़, जिलामें अलीपुर तहसीलका एक शहर। यह अक्षा० २८° २०' ३०" देशा० ७०° ४८' पू०में मुजफ्फरगढ़ शहरसे ५० मील दक्षिणमें अवस्थित है। यहाँकी लोकसंख्या प्रायः २२५७ है। यह शहर खैरशाहका निर्माण किया हुआ है। इस लिये इनका नाम खैरपुर पड़ा। यह निम्नभूमिमें अवस्थित होनेके कारण चन्द्रभागा नदीकी बाढ़में प्रावित हुआ करता है। इस शहरके प्रायः बहुत घर ईंटोंके बने हैं। यहाँका रास्ता इतना सकीर्ण है कि उममें हो कर गाड़ी नहीं चल सकती। यहाँमें कपास, रेशम और अनेक प्रकारके शस्य रफ्तानी होते हैं। और बहुत प्रकारके कपड़े विदेशमें यहाँ आते हैं।

खैरवा—भासाके आमपाम रहनेवाली एक हिन्दू जाति। इनका विश्वास है कि पन्नानरेश स्वर्गवामी छत्रपालमिंह जीके राजत्वकालमें यह जाति १७०० ई०के लगभग भासीको आयी थी। यह जाति क्षत्रियवर्णमें गिनी गयी है।

इस जातिकी विवाहप्रणाली उच्च जातियों की सी है। ये स्वगोत्रमें विवाह नहीं करते परन्तु तीन कुल छोड़कर विवाह करते हैं। इनलोगोंमें भांग, गाँजा और अफीम विशेष रूपसे प्रचलित है। ये सक्ली खाते और शराव भी पीते हैं। खैर या खदिरखचसे मामान बना कर बेचना ही इनकी मुख्यवृत्ति है।

जब ये लोग अपने संबन्धियोंसे मिलते तो राम राम, जय श्रीकृष्ण, जय राधाकृष्ण कहा करते हैं। ये देवीके उपासक होते और उनके नाम पर बकरे बलिदान करते हैं।

खैरखान (हि० पु०) वृक्षविशेष, कोलियाघ पेड़ ।
 खैरसार (हि० पु०) कल्या, खैरका जमा हुआ रस ।
 खैरा (हि० वि०) १ कयूर, खैर-जैसा लाल खैरके
 रङ्गका कबूतर, घोडा और बगला भी 'खैरा' ही कह
 लाता है (पु०) २ धान्यकृमि, रोगमिट, धानकी एक
 बीमारो । इसमें उमक मख्खरी पोतवर्ण पड़ जाती
 है । ३ एक तानाकी दून । ४ मत्स्यविशेष, कोई मछली ।
 यह बङ्गालकी नदियोंमें बहुत होते है ।

खैरा—मैदिनोपुर जिलाकी एक प्राचीन षाति । इस
 जातिके अधोन एक समय वलरामपुर, खैरगपुर, और
 फेदारकुण्ड परगना थे । वलरामपुरमें खैराराजके
 वासस्थान और उनके प्रतिष्ठित देवमन्दिरादिका भग्नावशेष
 विद्यमान है । बहुतांका मत है कि वलरामपुर और कर्ण
 गढके राजाओंके पूर्वपुरुष खैराराजके दोवान और
 गढके मदार थे । उन्हींके पड़यन्त्रसे खैराके राजा मारे
 गये और उनकी साती रानिया सती हुई । रानियोंने
 चितारोहण कालमें उन्हें यह कष्टकर श्राप दिया कि
 "जिन्होंने पडयन्त्र रचकर हमलोगोंका नाश किया हम
 सतियोंके अभिशापसे उनकी भी सात पुरुषके बोचमें हो
 मन्तान नष्ट होंगे ।" सतीकी वात कदापि मिथ्या नहीं
 होती और ऐसा सुना जाता है कि वलरामपुरके राज्यव्यज
 में भोमसेन महापात्रने मगम पुरुषमें राजा वोरप्रसाद
 और कर्णगढ राजवंशके प्रथम राजा लक्ष्मणसिंहसे
 समम पुरुष अजितसिंह निर्वहण रहे ।

कोई कोई कहते है कि मैदिनोपुर शहरसे पांच या
 ६ कोस दूर जगन्नाथ ज्ञानिके रास्तेके वनलमें अयोध्या
 गढमें खैराके राजा रहते थे । इस गढके ऊपर जाइ,
 वाङ्गना नामका एक मन्दिर है जिसमें खैराराजकी
 कुलदेवी भगवती सिद्धवाहिनीकी मूर्ति है । इसके अति
 रिक्त खैरा राजाकी और भी कई कर्तियां है

भाजकन भी मैदिनोपुर जिलामें बहुत जगह खैरि
 नाम जाति रहते है ।

खैरागढ़—१ शुक्रप्रान्तोय आगरा जिलेकी दक्षिण-पश्चिम
 तहसील । यह अक्षा० २६ ४५' तथा २७ ४ ७०' और
 देशा० ७७ २६ एव ७८' ७ पु० में अवस्थित है । क्षेत्रफल

३०८ वर्ग मील और लोकसंख्या प्राय १२७६८२ है ।
 खैरागढ़ तहसीलका एक छोटा ही गांव है । उतङ्गन
 नदी इसकी दो भागोंमें बाटती है । यहाँके पहाडका लाल
 पत्थर भकान बनानेके लिये बहुत अच्छा रहता और
 कामती उठरता है

२ इसी नगरकी तहसीलका एक नगर । यह
 आगरासे ८ काम दक्षिण—पश्चिममें उतङ्गन नदी
 किनारे अवस्थित है । यहां थाना, डाकघर और
 विद्यालय हैं ।

३ मध्यप्रदेशका एक जागीरदारो राज्य । यह
 अक्षा० २१ ४ तथा २१ ३४' ७०' और देशा० ८०' २७'
 एव ८१ १२' ५०'के मध्य अवस्थित है । क्षेत्रफल ८३१
 वर्ग मील और लोकसंख्या प्राय १३७५५४ है । खैरागढ़
 ष्टग जिलेके पश्चिम मोमा पर पडता है । इसमें ३ टकडे
 है पहले खैरागढके राजाओंका अधिकार केवल
 खुलवा नामके छोटेसे परगनेमें रहा । ई० १८वीं शता-
 ब्दीके शेषकालकी एक षण्णके बदले खवर्धा राज्यसे
 खमरिया ले नी गये और राज्यका प्रधान क्षेत्र खैरागढ
 मण्डलाके राजाओंसे मिला । फिर डोंगरगढ उस
 जमोनदारकी आधी भूमिका भाग है, जिसने मराठोंके
 विरुद्ध विद्रोह किया या । खैरागढ और नाद गावके
 राजाओंकी बलबेकी दबा करके उसका राज्य आपसमें
 बाट लिया खैरागढ शहर कोई ४६५६ भोगोंकी
 एक बसती है । बङ्गाल नागपुर रेलवेके डोंगरगढ और
 नादगाव दोनों छे शनसे यह २३ मील दूर पडता है ।
 राज्यके पश्चिम भागमें पहाड है । खैरागढके राजा
 नागवश राजपूत समके जाते हैं । १८८० ई०की २३
 वर्ष वयसमें राजा कमलनारायण सिंह अभिषिक्त और
 १८८८ ई०का मीरुसो राजा उपाधि प्राप्त हुये । नोग
 पूर्वी हिन्दूकी एक शाखा भाषा व्यवहार करते है । खैत
 मीचनेके लिये २२४ तालाब हैं । खैरागढ नगरमें
 पीतलका बर्तन और लकड़ीका सामान बनता है ।
 बोडिया तैयार करनेमें बहुतसे नोग लगे रहते हैं ।
 राज्यके दक्षिण भगसे हो वरके बङ्गाल नागपुर रेल
 निकली है- इस राज्यको वापिक अ य प्राय १०३०००

रु० है। गवनमेंगटकी ७००००) रु० प्रति दफे कर दिया जाता है।

४ उक्त खैरात राज्यका प्रधान नगर। यह अक्षा० २१° २५' ३०" उ० और देशा० ८१° २' पू०में अङ्ग और पिपरिया नद सङ्गम पर अवस्थित है यहाँकी जनसंख्या २८८७ है।

खैरात (अ० पु०) दानपुरख, निछावर, वखुशिश।
खैरावाट—बङ्गालके वाखरगञ्ज जिलामें एक नदी। यह वरोशालसे निकल रानीहाटमें जा कर वाखरगञ्ज नगर नीतो हुई अङ्गरियाहाट तक पहुँची है। फिर महालिया गुलाचिया और राणावट आदि नाम धारण कर बङ्गोपसागरमें गिरी है।

२ युक्तप्रादेशिक सीतापुर जिलेका एक नगर। यह अक्षा० २७° ३२' उ० और देशा० ८०° ४६' पू०में लखनज बरेलो छोट रेलवे पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः १३७४४ होगी। पहले यह एक बड़ा स्थान रहा कहते हैं कि ई० ११वीं शताब्दीकी कंरा नामक किसी पांसीने उसको बसाया था। लोग इसकी प्राचीन मसख्त नामक पुख तोर्य समझते हैं। दिल्लीके पहले बादशाह यहाँ एक सूबादार रखते थे। अकबरके समयकी खैरावाट एक सरकारकी राजधानी रहा। ई० १८वीं शताब्दीके प्रथम अर्धभागमें यहाँ अवधकी निजामत लगती थी। अंगरेजी राज्यमें मिलाया। इसीके नाम पर एक डिविजन बन गया। यहाँ कई एक मन्दिर और मसजिदें खड़े हैं १८६८ ई०से म्युनिसिपालिटी चल रही है। खैरावाटमें दैनिक बाजार लगता और कपड़ा बंधता है। जनवरी मासकी बड़ा मेला लगता है।
खैरियत (फा० खो०) १ कुशल, राजी, खशी। २ मङ्गल भलाई

ख रोमूरत—पञ्जाब अटक जिलेकी फतेहजङ्ग तहसीलका एक पहाड़। यह अक्षा० ३३° २५' से ३३° ३०' उ० और देशा० ७२° ३७' से ७२° ५६' पू० पर्यन्त विस्तृत है और मिन्युसे प्रायः ३० मील दूर उठ करके २४ मील पूर्व की चला गया है। पहले इसमें बड़ा जङ्गल था, परन्तु अब पशुओंके अधिक चरनेसे उसका कहीं चिह्न

तक देख नहीं पड़ता पहाड़का दक्षिण भाग बहुत भयानक है

खैलर (हि० पु०) मन्यनदगड, मथानी
खैला (हि० पु०) बछड़ा, काममें न लगा हुआ छोटा बेल

खैलायन (स० त्रि०) खिल चातुर्यिक अण्। खिल-निर्वृत्त, खिलसन्निहित।

खैलिक (स० त्रि०) खिल वा परिशिष्ट सम्बन्धीय।

खोंखनों (हि० क्रि०) खासना, खों खों करना।

खोंखा (हि० स्त्री०) कास, ख सी।

खोंखों (हि० पु०) खांसनेकी आवाज, कासजनित शब्द।

खांगा (हि० पु०) १ अवरोध, रुकावट। २ बछड़ा, नया बेल जो काममें न लगा हो। ३ अनभिन्न व्यक्ति, नावा-किफ शख्स

खोंचा (हि० पु०) १ खुरच, छिलावे २ फटन ३ मुष्टि, मुझे। ४ मुष्टि परिमित कोई द्रव्य, मूठा। ५ वकभेद, किसी किसका बगला।

खोंची (हि० पु०) १ वहेलियोंकी एक लम्बी लम्बी। इसके छोर पर लामा लगाते और पक्षियोंकी फंसाते है। २ आघात, खोंच।

खोंची (हि० स्त्री०) परजा या भिखमङ्गीकी दिया जान-वाला थोडास अनाज।

खोंटना (हि० क्रि०) कपटना, फुनगी फुनगी तोटना।

खोंड—द्राविड वंशके अन्य जातिको भाषा।

खोंड(कन्ध)—मन्द्राजके गञ्जम जिला और उड़ीषाके कारद राज्यमें रहनेवाला द्राविड जाति। इनको कुल संख्या लगभग ७०११४ है।

खोंड अपनेको किलोक या क्लिनजू कहते हैं। इन दो शब्दोंकी व्युत्पत्ति 'को' या 'कू' से है। तेलङ्ग भाषामें इसका अर्थ 'पहाड़' है।

इनमें ववाहका कोई दृढ़ नियम नहीं है। इनके दो प्रधान भेद हैं, प्रथम 'कुटिया खोंड' जो सदा पर्वत पर रहा करते, द्वितीय ममभूमि पर रहनेवाले खोंड। ये कुछ कुछ हिन्दू धर्मानुसार चलते हैं। द्वितीय अर्णीके खोंड फिर कई एक शाख में बंट गये हैं। राज

ख ड टाल, तोनल, पोरखिया, कन्धरा, गौरिया, मगला प्रभृति इमी यंणीके हैं राजखोंड ही सर्भके अधीश्वर मानि जाते, जबतक उन्हें छोडी जमीन न रहे तब तक वे राजखोंड नहौं कहला सकते। जब कोई राजखोंड किस दूरमे यंणीमे विवाह करता तो वह भी उसो यंणी म मिला लया जाता है। 'दल जो बलमुदिया भी कहलाता सेनिकमे' भर्ती होते है। पोरखिया भैस खाते कन्धरा हरिद्रा (हलदो) उपजाते। जोगा रिया मवेशो चराते है। खोंड अपने यंणीमे विवाह नही करते परन्तु ये म'भाकी लडकीसे मादी कर सकते है।

अधिक अवस्था आने पर ये विवाह करते। लडकीके लिये इन्हें पण देने पडते हैं दण या धारण मवेशोके शिर ही इन लोगो का पण है। किन्तु आजकल दो या तीन मवेशोके मुण्ड अथवा एक रुपया पण काहकार लेते है। वारात लडकीके घरमे वरके घरको ज ती है। विवाहकाल वर और कन्या बाहर निकल अपने किसी एक कुटुम्बके कन्धे पर बैठते है। वर कन्याको अपने और खीचता और एक वस्त्र उन दोनों के अङ्गको रहता है। एक मुर्गा भी इस समय बलिदान किया जाता। समस्त रात्रिको वरामटा में ही रह व्यतीत करते और प्रात कालको वर तथा कन्या किसे एक पोखर पर जाते है। वरके शरोरमें तीर और धनुष बधे रहते हैं। वर को रखी दुई सात गोबरकी रांटियों पर निगाना करना पडता है और प्रति निगानक वाद कन्या आ वरको पहिने दतवन और पीछे मिठाइ देतो है। यह प्रथा उनके भविष्य कार्यको याद दिलातो है

पुत्र जन्मके छठे दिन उसको माता तीर और धनुष ले लडकीके सामने खडो रहती है। युवावस्थामें पुत्र को आखेटमें चतुर होनेका यह भकेत है

ये श्रतगरीरकी पृथ्वीमें गाडते है। एक रुपया या एक पैसा उसके वस्त्रके एक कोनेमें बाध देते जिमसे श्रतदेह रिक्त हाथमे दूररा लोक न जाय। मूर्दाके माथ कभो कभो उसके कपड़े तीर और धनुष पृथ्वीम गाड देते हैं।

खोंड और मी देवको मानते है जिनमेंमे 'धरणी

देवता' या पृथ्वी प्रसिद्ध है। प्रतिवर्ष ये तोन ल्योहार मानते है। चार या पांच वर्षामें एक बार पृथ्वी देवता को मन्त्रिय बलिदान देते है। पूर्व समयमे मन्त्रियके बदले मनुष्य बलिदान देते रहे। काला हनुदीमें में इ धरणी माताको चढाया जाता है और इसका मांस अपने पडोसियोंके मध्य बाट देते है आखिरमे जानके पडले ये तीर और धनुषकी पूजा कर लेते है। उनको विश्वास है कि मनुष्योंके मर जाने पर उसकी आत्मा पुन कोटे कोटे बच्चोमे जन्म लेतो है।

खोंड गृहस्त्री, आखेट और लडाइ वृत्तिके अतिरिक्त दूररा कर्त्य नहौं करते।

खोंडर (हि० पु०) हजका अभ्यन्तरस्थ शून्य भाग, पेडके भीतरका पोला हिस्सा।

खोंडा (हि० वि०) १ भग्नअङ्ग, टूटे अङ्गवाला। बहुधा यह शब्द उस व्यक्तिके लिये व्यवहारमे लाते, जिमके सामनेवाले दो तीन दात टूटे दिखलाते है।

खोंत (हि० पु०) धौमला, चिडियाका घर।

खोंप (हि० स्त्री०) १ पसुजन, सलझा, सिनाईका मर्या टाका। २ फटन।

खोंपना (हि० क्रि०) गाचना, सुमाना, धाम देना।

खोंपा (हि० पु०) १ जलकी कोइ नकड़ी। इसमें पान लगता है। २ कपूरका कोन। ३ भूसा रसनेकी जगह। इसको कपूरसे का देते हैं।

खोंपी (हि० स्त्री०) हजामतके खतका कोना, बालाका एक बनाव। २ खोंपा।

खोंसना (हि० क्रि०) अटकाना, लगाना, घुसेडना।

खों—१ मध्यप्रदेशमें एक प्राचीन ग्राम। यह उचहरा नगरसे डेढ कोश पश्चिममें अवस्थित है। एक समय यहां बहुत वर और देवमन्दिर थे। आजकल उनका भग्नावशेष मात्र है। इस ग्राममें गुमराज इस्तनीका गिलानिष्ठ पाया गया है। यहांके भग्नमन्दिरमें हहदाकार दणवतारकी भग्न प्रस्तरमूर्ति पनी हुई है।

खों—पूर्व उपदीपके काश्मीरराज्य अधिवासी एक प्रबल जाति। इसकी संख्या प्राय चार लाख है। इनका आचार व्यवहार चीन और ब्रह्मवासीके सदृश है।

खोंडकार (हि० पु०) कोइहमें खोंड एकटा करनीकी जगह

खोइलर (हि० पु०) वंशदण्डविशेष, वांमकी एक छडी। इससे कोल हके गरडे चलाये जाते हैं।

खोइहा (हि० पु०) खोई उठाने या फेंकनेवाला मजदूर।
खोई (हि० स्त्री०) १ ऊखके रस निकाले हुए टुकड़े।
२ लाई, खोलें। ३ कखलकी घुग्घी।

खोकरो—बस्वई प्रदेशस्थ जंजीरराज्यके किलाके आम पासका एक बुद्र ग्राम। यहां तीन बृहत् प्रस्तरकी समाधि (कब्र) है जिनमेंसे जञ्जीरका प्रधान मीटो सुरुनवाँकी समाधि बड़ी है। कहा जाता है कि सुरुन खाँकी समाधि उनके जीवनकालमें बनो थी। प्रति बृहत्-सर्वातवारकी उक्त कब्रके पास कुरान पढ़े जाते हैं।

खोन्ना (खन्न) बस्वई प्रदेशस्थ कच्छ जिलेके अन्तर्गत एक सुल्त। यह कच्छकोटसे १ मील दक्षिण-अवस्थित है। इसके नष्ट भ्रष्ट चुपविशेष स्थानमें दो जीर्ण शैव-मन्दिर हैं।

खोखर (हि० पु०) एक राग। इसको मालकोसका पुत्र बतलाते और दिनकी प्रथम प्रहर गाते हैं।

खोखर—सिन्धुप्रदेशवासी जाटजातिकी एक शाखा। एक समय सिन्धु और पञ्जाव प्रदेशमें इनका बल और पराक्रम बहुत बढ गया था। सुहम्द गोरी जब हिन्दुस्तानकी लूट कर स्वदेश जा रहे थे, रास्तामें इसी खोखर जातिके हाथसे उनकी मृत्यु हुई। अनेक ग्रन्थकारोंने इन्हें 'गकर' या 'गोकर' नामसे भी उल्लेख किया है, किन्तु 'खोखर' और 'गकर' ये दो स्वतन्त्र जाति हैं। पहिले पञ्जाव, सिन्धु और काठियावाड़में इसी खोखर जातिकी प्रधानता थी, उस समय मूलतान प्रभृति अनेक स्थान इन्हींके शासनाधीन थे।

खोखरा (हि० पु०) भग्न जलपोत, टूटा फूटा जहाज।

खोखरी—बस्वई प्रदेशस्थ काठियावाड़ जिलेके गोन्दल राज्यका एक नगर—यह गोन्दल राज्यसे ८ मील उत्तर तथा सुलतानपुर ग्रामसे ६ मील उत्तर-पश्चिममें अवस्थित है। यह महाल या आय उपविभागका सदर है। खोखरीमें ४ मील दक्षिण-पश्चिममें गोन्दलो नदी भादर नदीसे मिली है। यहाँको लोकसंख्या प्रायः २६६५ होगी।

खोखला (हि० वि०) १ पोला, खाँदी, जिसके भीतर सुख न रहे। (पु०) २ रिक्तस्थान, खाली जगह। ३ टंघ छिद्र, बड़ा स्राव।

खोखा (हि० पु०) १ दुग्धी निम्बा हुआ कागज, मकारी हुई दुग्डी। २ बालक, लड़का।

खोहाह (सं० पु०) ख आकाशे उड् इत्यथक्तगण्ट कुर्वन् ग्राहते, ग्राह-अच् पृषोढराटिवत् गकारस्य कर्त्वे माधुः श्वेत पिङ्गलवर्णं अश्व, सफेद पीना घोडा।

खोझाह गोघ्रां दपो।

खोज (हि० स्त्री०) १ अनुसन्धान, तलाश। २ चिह्न, पता।

खोजक—बलुचिस्तानके कोटा पिशीन जिलामें, तीवकाकर-का एक ऐतिहासिक गिरि-मठ। यह अक्षा० ३०° ५१' ३०" और देशा ६६° ३४' ५०" के टासे रेनद्वारा ७० मीलकी दूरी पर अवस्थित है। यह रास्ता दक्षिणमें किलाबन्द न-से शेलवाघ तक चला गया है; शेलवाघमें नन्वे खोजक घाटो होकर गयी है जिसे बनानेमें ७० लाख रुपये शय हुवे थे। यह १८८८ और १८८९ ई०के मध्य निर्माण किया गया था, इसकी दूरी लगभग २॥ मीलकी होगी। विजेता, सैनिक तथा मीटागर कई बार इस पथसे आये गये।

खोजक—पठान जातिकी एक शाखा। ये मेखतर काकर पठानोंकी एक अन्यतम शाखा है।

खोजदार—बलुचिस्तानमें उपत्यका मध्यस्थ एक बुद्र नगर। यह खप्पर राधानीसे १० मील दक्षिणमें अवस्थित है यह नगर पहले मच्छिशाली था इस स्थानसे रूढखाना नदीतीर तक अनेक भग्नावशेष चिह्नादि देख पड़ते हैं यह पथरकी कुरमो पर २५ फुट ऊँचे स्तम्भ ग्रथित है

खोजनखिर—मध्यभारतमें मालवा एजन्सीका बुद्र राज्य।

भूपरिमाण ५ वर्गमील और जनसंख्या ५४८ है। इस जमीन्दारोंकी आमदनी प्रायः ६००० रु० है।

खोजना (हि० क्रि०) अनुसन्धान करना, दूटना।

खोजा (हि० पु०) १ ख्वाजा, मुसलमानोंके रनवासका द्वारपाल या नौकर। यह पुरुषत्वहीन होता है। २ सरदार, सुखिया। ३ नौकर।

खोजा अहमद-यसेवि—मध्यएशियाके अन्तर्गत अनुर्वर समतल भूमिके ऊपर भ्रमणकारी नोसाट जातिके मध्य एक पगखर धर्म और नीति सम्बन्धमें इनकी बनायी हुई कविताये खिरघिज और उजवक कुरान को जैसे भक्ति करते हैं।

खोजी (हि० वि०) अनुसन्धानकारक, दूढनेवाला ।
 खोट (स० पु० लो०) रमजारण द्रव्यभेद, कुगता बनाने की एक चीज । इसको 'यमक' या 'फुट' भी कहते हैं ।
 खोट (हि० स्त्री०) १ दूषण, घेव । २ उत्तम द्रव्यमें अधम द्रव्यका मिश्रण, अच्छी चीजमें बुरीका मिलाव । ३ अच्छीमें मिलायो जानैवानो कोई करवाव चीज । (वि०) ४ खोटा । 'खोट कुमार खोट शति मारो' (तुमको)
 खोटक (स०) ऋट देशी ।
 खोटन (स० स्त्री०) लगडाई, लगडी चाल ।
 खोटा (हि० वि०) दूषित, खराब, जो खरा न हो ।
 खोटाई (हि० स्त्री०) खटापन ।
 खोटापन (हि० पु०) १ दोष, नुकस । २ फर्गव, धोका, ढल । ३ दुष्टता, बदमासी । ४ सुद्रता, ओझापन ।
 खोटि (स० स्त्री०) खोट इन् । १ कन्दुकखोटी । २ पालङ्गीपत्र । ३ चतुरा स्त्री, होशियार औरत ।
 खोटो, खाटि ।
 खोदिग—द्वितीय कृषके उत्तराधिकारी । यह कृषके छोटे भाई थे । इन्हें 'महाराजाधिराज' 'परमेश्वर और 'परम भदारक को उपाधि मिली थी । ८७१ ई०के अकबूर माममे सौथक हर्ष नामक मालवके परमार राजाने युद्ध कर इनका राज्य ले लिया धरवार जिलाके अदर गुल्होमे खोत्तिगके राजत्वको एक शिलालिपि है ।
 खोड (स० लि०) खोडति, खोड-अच । खज, लगडा ।
 खोड (हि० स्त्री०) देवकोप, भूतप्रेतका फेर ।
 खोडकगोर्षक (स० स्त्री०) खोड छेपे गवन खोडक गोर्ष मस्य, बहुती० कप । १ कपिगोपहज । २ हिङ्गुल ।
 खोडरा (हि० पु०) पुरातन हजका शून्य स्थान, पुराने दरखतका खोखला हिम्मा ।
 खोडमाल—उ० नामें अयुल जिलाका एक उपविभाग । यह अक्षा० २० १३' से २० ४१' उ० और देशा० ८३ ५०' से ८४ ३६' पू० पर अवस्थित है । भूपरिमाण ८०० वर्गमील और जनसंख्या प्राय ६४२१४ है । इस उपविभागमें १७०० फीट ल चौ एक अधिव्यका है । इसका बहुभाग जङ्गलमें भरा है । गिरिमाला खोडमालमें गन्नाम तथा द लो है और ज चाई लगभग तीन हजार फीटकी गभी । फुलवाी इस उपविभागका मद्र है ।

यह मिर्फा द्राविड वंशके खोडजातिके मनुष्य वाम करते हैं । ग्राम छोटे छोटे पहाड और घने जङ्गलोंसे विभक्त है । पूर्वकालमें चार पाच वर्षमें एक बार खोड धरणी देवताकी मनुष्य बलिदान देते रहे । इन्हीका म्याल था कि झलदो जो उनको प्रधान गृहस्थी रहो, परिपूर्ण रूपमें उपज नहीं मकती जबतक पृथ्वीके भीतर मनुष्यका रक्त न जाय । किन्तु यह प्रथा गवर्नमेंगटने सदाके लिये बन्द कर दी । आजकल वे मिर्फा महिप या मेप बलिदान देते हैं । खोड किसी जमींदार या राजाके अधीन रहते नहीं आये हैं वे मिर्फा खाम गवर्नमेंगटकी जमीन जोतते जिमके लिये उरु कर भी देना नहीं पडता है । किन्तु हरक हलके पीछे तीन आने मडक आदिकी उन्नतिके लिये देने पडते हैं । इनमें धान्य तथा मोट विवाह प्रचलित है । वान्यविवाहमें कन्यावरमें बडो रहती है । मार देवा । खोत—कोलया जिलेमें रहनेवाली एक जाति । ये पैन, रोह और भोतो ग्राममें रहते हैं । प्राचीनकालमें ये निन्ने को तहमीलके कर्मचारी रहे और सुमलमान बादशाहमें इन्हें कररहित ग्राम मिले थे । महाराष्ट्रके समयमें भो इन्हें जागोर मिली थी । किन्तु आजकल इन्हें ग्राम्यकर देने पडते जिमे ये चारकिस्तम चुकाया करते हैं । खोटीकी संख्या ४३० है । हिन्दुधर्म ब्राह्मणको ही अधिक ह सरकारकी औरसे आजतक भी ग्रामोंका प्रबन्ध इन्हीं लोगीके हाथमें है । ग्राम प्रबन्ध करनेके लिये प्रतिवर्ष ये अपनेमें से किसी एकको नियत करते हैं कभी कभी कलेक्टरेसे भी कोई व्यक्ति नियुक्त किया जाता है । विवाहादिमें ये बहुत रूपसे व्यय करते जिसके लिये इन्हें जमोन्दारो भी कभी कभी वेचनो पडी है ।
 खोत उत्तम पका मकानमें रहते और बहुतसे भवेगी पालते हैं ।
 खोदई (हि० पु०) हजविशेष एक दरखत । यह हिमा-सयकी तराईमें उपजता और रगने खादि कई कामोंमें लागता है ।
 खोदना (हि० क्रि०) १ खनन करना गद्दा करनेके लिये कुदान खादिसे जमीनकी मर्दा निकानना । २ कौचना, उमकाना । ३ उपहास करना, छेडना । ४ नकाशी करना ।

खोदनी (हिं० स्त्री०) खननयन्त्रविशेष, खोदनेका एक औजार। यह छोटी होती है।

खोदसी (खोची)—बम्बई प्रदेशमध्य कोल्हापुर राज्यके अलत उपविभागका एक ग्राम। यह कोल्हापुरसे उत्तर-पूर्व १३ मील वारन पर अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः १७३८ है। यहां भैरव क्षेत्रपालका एक मन्दिर है जो २५० वर्ष पूर्व १६०० ई० को अलत उपविभागके सुलतान राव नामक एक इनामदार द्वारा निर्माण किया गया था। चैत्र मासमें प्रतिवर्ष यहां मेला लगा करता है।

खोदाई (हिं० स्त्री०) खननकाय, खोदनेका व्यापार।

२ खननका पारिश्यमिक, खोदनेकी उजरत। ३ नकाशी।

खोदु—बम्बईके अन्तर्गत काठियावाड़ राज्यका एक ग्राम। यह बधवानसे उत्तर-पश्चिम १५ मीलकी दूरी पर बसा है। यह महाल या आय उपविभागका सदर है। यहां उपविभागके कर्मचारी आ रहते हैं। खोदुमें उत्तम प्रस्तरकी एक खान है। प्राचीन कालमें सुलतान जी और राजोजीने वांकानर परगना विजय किया था। सुलतानजी इसके मुख्य सदरमें और राजोजी रती देवली नामक एक खुद्र ग्राममें रहने लगे। राजोजीने अस्तुष्ट हो उक्त ग्रामकी छोड़ दिये और खोदु विजय कर वहां राजत्व करने लगे। राजोजीके पिता पृथ्वीराजके मरने पर बधवान इलाहाबाद राज्यमें मिला दिया गया और राजोजी खोदु छोड़कर बधवानमें रहने लगे यहां एक सतीस्तम्भ है जो लगभग १००६ शकमें निर्माण किया गया था। जनसंख्या प्रायः १६०० है।

खोनचा (हिं० पु०) १ कोई थाल या परात। इसमें मिठाई आदि खाने पीनेकी चीजें भर करके रखते हैं।

२ फेरीवालोंकी थाली। इसमें मिठाई रख करके बेचते हैं,

खोना (हिं० स्त्री०) १ गंवाना, जाया करना। २ भूलना छोड़ना। ३ विगड़ना, खराब करना। ४ कूटना, रफ्त जाना।

खोनोमा—आसामके अन्तर्गत नागापहाड़जिलामें एक बड़ा और सभ्यशाली अग्रामी नागाका ग्राम। यह अक्षा० २५ ३८ उ० और देशा० ८४ १ पू०में अवस्थित है। १८७८ ई०में सि० दमन्त नामक एक सरकारी अफसर वड़ी निर्दयतासे अपने ३५ साथियोंके साथ इस ग्राममें मारे गये।

वाट उसके यह ग्राम घेर लिया गया और १८७८ ई०के नवम्बर मासमें अङ्गरेजोंके हाथ आया, किन्तु। इस चढ़ाईमें दो युरोपीय अफसरोंका प्राणान्त हुआ। यहाँके ग्राम ग्रामी नागा लोग जापूभो पहाड़के शिखरपर भाग गये और १८८० ई०के जनवरी मासमें अदम्य उत्साह और धैर्यसे कच्छारमें वात्साधन बाग पर हमला किया; जो ८० मीलकी दूरी पर था। वहाँ जाकर उन्होंने मैनेजर व्लाडय और १६ कुलीयोंकी मार डाला।

खोन्दकार—सुमलमान धर्मावलम्बी फारसी शिक्षक। इनका दूसरा नाम “सुगिट” अर्थात् धर्ममार्ग प्रदशक और “आगवन्द” अर्थात् शिक्षक है। ५८ वर्ष पञ्चसे सुमलमान लड़कोंकी शिक्षा और कलमा पाठ विना इनके न वनता था। सुमलमान शिष्योंकी ऐसी धारणा है कि जिसपर इनकी कृपा होती उसका रोग क्षणमात्रमें दूर हो सकता है। इसलिये जब किसीको पौड़ा होती, तो शीघ्रही खोन्दकार बुलाये जाते हैं। किसीको च्वर वा ताप चढ़ने पर वह कागजके एक टुकड़े पर कुरानके दो चार मन्त्र लिख देते जिनकी रोगी बाध लेते हैं। पूर्व बङ्गालके हिन्दू और सुमलमानका दृढ़ विश्वास है कि इनका प्रदत्त फूका हुआ पानी वात और स्नायवीय वेदनाकी अत्यर्थ मद्दोष है।

खोपड़ा (हिं० पु०) १ कपाल, सर। २ नारियल। ३ नारियलकी गरी ४ नारियलका गोला। ५ भिक्षापात्र-विशेष, भौख लेनेका कोई बतन। यह दरयायी नारियलका अर्धभाग होता है। ६ गाड़ीकी एक लकड़ी। यह मोटी रहती और दोनों पहियोंके मध्यभागमें धुरीसे मिल करके लगती है।

खोपड़ी (हिं० स्त्री०) कपाल, सर।

खोपा (हिं० पु०) १ दण्डकोण, कृपरका गोशा। २ गृहकोणविशेष, मकानका कोई कोना। यह किसी मार्गकी ओर पड़ता है। ३ बालोंका एक बनाव। यह तिकोना कटता और खोपड़ी पर पड़ता है। ४ ग्रथित बेणी, गूथी हुई लट। ५ नारियल, गरीका मोला।

खोपीवली—बम्बईके अन्तर्गत थाना जिलेका एक खुद्र ग्राम। यह खालापूरसे ५ मील दक्षिण-पूर्वमें अवस्थित है।

जनसंख्या ५१५ है। यहाँ पेनिन्सुला रेलवेकी एक शाखा है। १८। एकर क्षेत्रफलका एक उत्तम जलाशय होनेके कारण यह स्थान प्रसिद्ध है। पेगवाके मन्त्री नाना फडनिस कटक के निर्मित एक शिवजीका मन्दिर है। खोवा (हि० पु०) चापी, गन्ध या पलस्तर कूटनेका एक छोटी और चपटी सुगरी।

गोभार (हि० पु०) गतविशेष, एक गद्दा इसमें कूड़ा ककट और भाइन भूँड न डाला जाता है।

खोय (हि० स्त्री०) खू, आदत, स्वभाव बान टैव।

खोया (हि० पु०) मावा, खोवा, लोईकी शक्लमें थोड़ा हुआ दूध पेठा, बरफो और लड्डू खोयेसे बनते हैं। यह खानेमें मधुर और पुष्टिकारक होता है।

खोर (स० त्रि०) खोर अक्ष। खञ्ज, लगडा।

खोर (हि० स्त्री०) १ मञ्जीर्णपथ तद्ग गली, कूचा । २ पातविशेष, कोई नाट। इसमें पशुश्रीकी चारा डाल करके खिलाने है।

खोर (हि० पु०) वृक्षविशेष, एक पेड़। यह सिन्धु-प्रदेशकी मरुभूमिमें उपजता और देखनेमें कचा तथा सुन्दर रहता है। खोरका काष्ठ पीतश्वेतवर्ण, गुरु तथा कठिन होता और परिकार करने पर शक्ति चिक्रण निकलता है। इसको क्षुपियन्त निर्माणमें व्यवहार करते हैं। खोरका अपर नाम 'साहीकाटा' और 'वनरीठा' भी है। खोरक (स० पु०) खोर स्वावै कन्। गर्दभज्वर, गधेकी चढ़नेवाला बुखार।

खोरनी (हि० स्त्री०) भडभूजेकी एक लकड़ी। इससे भांडमें भौंका जानेवाला बचा खुचा ई धन, उसमें जलनेके लिये भीतरकी सरका दिया जाता है।

खोरा (हि० पु०) १ पातविशेष, फटोरा। (वि०) २ विकृताङ्ग, लङ्गडा, लूना।

खोराक (फा० स्त्री०) १ खाद्यद्रव्य, खानेकी चीज। २ आहारकी मात्रा। ३ औषधमात्रा।

खोराकी (फा० वि०) १ अधिक मात्रामें भोजन करने वाला, पेट जो ज्यादा खाता है।

खोराकी (हि० स्त्री०) खोराकका दाम, खानेके लिये दिया जानेवाला पैसा।

खोरास—बम्बईके काठियावाड प्रान्तका एक गाँव। यह

ग्राम पाटन शोमनाथसे १० मील उत्तर पश्चिम पडता है। लोकसंख्या प्राय १०६६ है। कहते हैं खोरासके नागनाथ महादेवके मन्दिरमें जो शिलाफलक रखा है, खोराममेंही बचा गया था। उसमें सवत् १४४५ (१३८६ ई०) पडा और ऐतिहासिक वृत्तान्त लिखा है—खोरामके राजमन्दिरका जीर्णोद्धार माल नामक किसी व्यक्तिने कराया था। माल मकवानाजातीय रहैना चित्रिय रहे। युवराज शिवराजने उन्हें खोरामका स्थानीय शासक बनाया। इस ग्रामके दक्षिण कालीपात नदी बहती है। खोराममें २ शरीर हैं। उनमें एकको जाम्बवालु कहा जाता है।

खोरि (हि० स्त्री०) १ मञ्जीर्ण पथ, तद्ग राह। २ दूषण, तुलस।

खोरिया (हि० स्त्री०) १ बेलिया, कटोगिया। २ भ्रवरक वगैरहके छोटे छोटे बुन्दे। यह चमकीलो रहती और स्त्रियों और स्त्रांगके रूपके मुखपर गोभाके लिये लगती है। ३ झूप की पैटीका मध्यभाग। यह तरसा खीचनेमें बेलोके पडू चनेसे कूपके मुखपर आ उपस्थित होता है।

खोल (स० त्रि०) खोल अक्ष। खञ्ज लगडा।

खोस (हि० स्त्री०) १ गिलाफ, भल। २ कीट आदिका उपरि चर्मावरण। यह समय समय पर बदल जाती है। ३ मोटी पिछौरी या चादर।

खोसक (स० पु०) खोल अक्ष मन्नाया कन्। १ पातविशेष, डेगची। २ वस्त्रीक, दीमककी पहाडी। ३ शिरफ्राण, पगडो, टोपी। ४ धृगकोष, सुपारीका क्लिन्का।

खोलना (हि० क्लि०) १ छद्मघाटन करना, भवरोध हटाना, छद्मघाटन। २ छेदना, विगाड देना। ३ तोड़ना, काटना। ४ मुक्त करना, छोड़ना। ५ मगाना, उड़ाना। ६ जारी करना, चलाना ७ म्यापन करना। ८ धारण करना। ९ प्रकाश करना, बतलाना। १० पृथ्वना, प्रथ्य करना।

खोलपेटुआ—वडमें एरुचना जिलामें प्रवाहित एक नदी। आशास्त्रीके निकट कपोताचसे यह नदी निकली है। पहिले यह नदी कुछ पश्चिम घोर जाकर गुदादागावमें मिल गई है और उसके बाद दक्षिण मुड़ करके हुवे सुन्दरवनमें फिर भी कपोताचनदीमें गिरी है।

खोलवी—मध्यभारतके अन्तर्गत एक छद्म ग्राम। यह आगरा नगरसे १५ कोस उत्तर-पश्चिम अवस्थित है। इस ग्रामके उत्तर-पूर्व लाल पत्थरका एक पहाड़ देखा जाता है। समतल जेदसे यह पहाड़ प्रायः २०० हाथ ऊँचा है। वहाँ लोगोंने अजरगटा और कार्नीकी तरफ इस ग्रामसे पर्वत काट कर बहुतसे स्तूप, चैत्य और गुहा-मन्दिरादि निर्माण किये थे। स्थानीय द्रष्टा और ब्राह्मण कहते हैं कि पाण्डुतनय भीम, अर्जुन प्रभृति पाण्डुवंशके इन ममस्त गिरिगुहाओंको काटा था। आजकल भी अधिवासी दो, एक गुहाओंकी अर्जुनगृह, भीमगृह जैसा कहा करते हैं। इस खोलवी पहाड़के दक्षिण भागमें बड़े बड़े ११ गुहा-मन्दिर हैं जिनमें एक या दो घर हैं। घरके बाहरी औरभीतरी भागका आयतन क्रमशः २२७ और ११६ फुट है। यही अर्जुनगृह है। दूसरा घर भीम-मन्दिर कहलाता है, जिसकी लम्बाई ४२ फुट और चौड़ाई २२ फुट है। एक और मन्दिर है, जिसमें बुद्ध-देवकी चार मूर्तियाँ हैं। इसके अतिरिक्त पहाड़की उत्तर और पूर्व दिशामें कई एक बौद्धस्तूपोंका ध्वंसावशेष देख पड़ता जिसका गठनकीशल आश्चर्यजनक है प्रत्येक स्तूप पर्वत पर ही गठित है। अन्यान्य स्थानोंकी भांति इसका अन्तर्भाग किसी गुहासे संलग्न नहीं इस स्थानकी स्तूपभित्तिका निम्न गृह खोद करके निकालने पर देखा गया है कि समय स्तूप मन्दिर-जैसा है और उसमें बुद्धदेवकी प्रतिमूर्ति प्रतिष्ठित है। डाक्टर कनिंगहाम माहबके मतमें खोलवीके वह स्तूप ७००से ८०० ई०के बीच निर्मित हुवे।

खोलापुर—वगर-अमरावती जिलाके अन्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २०° ५७' ३०" और देशा० ७७° ३३' ५०"में अमरावती नगरीसे ८ कोस-पश्चिममें अवस्थित है। एक समय यह स्थान 'रेशम'के व्यवसायके लिये प्रसिद्ध था। १८०८ ई०में एलिचपूरके सूबादार विठलभाग देवने इस नगरसे एक शास्त्र रूपया मांगा, परन्तु उन्होंने अपना आदेश ग्राह्य न होने पर, मसैन्य नगर आक्रमण किया पहिले यहाँ प्रतिवर्ष राजपूत और सुसलमान लडते रहे। इसी उत्पातसे इस नगरका काम होने लगा

आजकल यहाँ प्रायः ५३७३ मनुष्य रहते हैं।

खोलि (सं० स्त्री०) खोल-इन् । वृण, घाम।
खोलिया (हि० स्त्री०) तक्षयन्त्रभेद, एक पनानोदार रुखानी। इससे बटई लकड़ी पर बलवृट बनाने हैं।
खोम्बुख (सं० पु०) ख आकाशे उन्नसुख इव रक्तवर्णत्वात् । मङ्गलग्रह।

खोवई—आसामकी एक नदी। यह त्रिपुरा राज्यमें निकल श्रीहृद् जिलाके हर्षीगञ्ज उपविभाग होकर उत्तर-पश्चिमकी ओर बहती हुई हर्षीगञ्जके निकट बराकमें गिरती है। नदीकी लम्बाई लगभग ८४ मील होगी।

खोवा, लोभादंशो।

खोपा (सं० पु०) जीवशाक, एक भव्जी।

खोह (हि० स्त्री०) १ गुफा, कोल, टराज २ पर्वत-मध्यस्थ गभीर गत, पहाड़का गहरा गड्ढा। ३ टो पर्वतोंका मध्यस्थ महीण स्थान।

खोही (हि० स्त्री०) १ पत्रकव, पत्तोंका काना। २ खुँवा, घोषी।

खौ (हि० स्त्री०) १ गत, गड्ढा। २ खत्ती, अनाज रखनेका गहरा गड्ढा।

खौचा (हि० पु०) १ साध पड् गणना भेद, साढ़े कड़का पहाड़। २ कोई मन्दूक। इसमें मिठाई आदि स्वाद्य द्रव्य रखते हैं।

खौफ (आ० पु०) भय, दहशत, डर।

खौर (हि० स्त्री०) १ त्रिपुरगड्, चन्दनका आडा टीका। २ स्त्रियोंका कोई अलङ्कार, औरतोंका एक गहना। यह आडी खौर जैसी सोनेकी बनती और मथ्ये पर लगती है। ३ किसी किम्बका जाल। इससे मकलियाँ पकड़ी जाती हैं।

खौरना (हि० स्त्री०) खौर लगाना, चन्दनका टीका बनाना, तिलक निकालना।

खौरहा (हि० वि०) १ गञ्जा, जिसके सरके बाल उड़ गये हों। २ खजहा, जिमके खुजली हो गयो हो।

खौरा (हि० पु०) १ कण्डुभेद, किसी किम्बकी खाज। इसमें चर्म रुखा पड़ और बाल झड़ जाता है। खौरा कुत्ते विंसीकी भी होता है। (वि०) २ खौरहा।

खोरी (हि० खी०) १ कपाल, खोपड़ी । २ भय, राव ।
खोर (हि० पु०) हृषभशब्द, बलकी बोली या डकार ।
खोलना (हि० खि०) उबलना गम होकरके चुरने
लगाना ।

खोलना (हि० पु०) उबलाना, धानो वगैरहको इतना
गम करना कि वज्र बोलने लगे ।

खोड़ा (हि० वि०) १ खोराकी, पेट, व्यादा खानेवाला ।
२ खानेका लालची मरभुखा । ३ अन्य व्यक्तिका उपार्जित
धन व्यय करनेवाला, जो मृमरका रूपया पैसा उड्डाता हो
ख्यात (० त्रि०) ख्यात । १ कथित, कहा हुआ ।
२ विद्युत्, सुना हुआ । ३ ख्यातियुक्त, मगहूर । इसका
सम्बन्ध पर्याय—प्रतीत, प्रथित, विस्त, विज्ञात और
विद्युत् है ।

ख्यातगर्हण (स० त्रि०) ख्याता प्रसिद्धा गर्हणा निन्द्या
यस्य, वदुत्री० । अवगीत, यदनाम, जिमकी वदुतमे
आदमी बुरा कहते हैं ।

ख्यातश्च (स० त्रि०) वक्तव्य, बतलाया जानेवाला ।
ख्याति (स० त्रि०) ख्याति । १ प्रशमा, तारीफ ।
२ प्रसिद्धि, नामवरी । ३ कथन, बातचीत । ४ प्रकाश,
रोगनी । ५ ज्ञान, समझ । ६ महत्त्व ।

“मनो मन्वानं मातं त्र। पूर्वादि ख्यातिरत्र ।” (शांख्यभाष्य)

ख्यातिकार (स० त्रि०) प्रशसा करनेवाला जो तारीफ
करता हो ।

ख्यातिघ्न (स० त्रि०) ख्यातिको नाम करनेवाला, जो
नामवरोको मिटाता हो ।

ख्यातिमत् (स० त्रि०) ख्याति मत्तु । ख्यातियुक्त,
नामवर ।

ख्यात्यापन्न (स० त्रि०) ख्यात्या आपनो युक्त, ३ तत् ।
ख्याति प्राप्त करनेवाला जो ग्रीहरत शामिल कर
सुका हो ।

ख्यान—अथवायी और छविजोवो जातिविशेष । उत्तर
वङ्गमें यह ख्येन और आसाममें कीर्तिना कहलाते हैं ।
ये अपनेको कायस्थ मन्तान जैसे बतलाते हैं । इनके
पूर्वपुरुष कोचविहारराज सरकारमें देवज्ञका काम
करते थे । ये देखनेमें सुयी हैं । इनका मुख चौड़ा
मथ्या गोम, नाक क दिशा श्रीमो और चक्षु आमकी

फाक जैसा होता है । इनमें कड़े एक गोत्र
हैं । इनका विवाह सगोत्रमें नहीं होता । इन लोगोंने
यान्धविवाहकी प्रथा प्रचलित है । पाचमें १३ वर्षकी
अवस्था तक लडकोका विवाह होता है । विवाहके
कार्यकनापादि उच्च यथेके हिन्दुकी तरह हैं ।
विवाहके पहले कन्या वरकी उपहार भेजतो है, वरकी
उपहार यक्ष्ण करने पर विवाह-बन्धन टूट हो जाता
है । इन लोगोंने भी विधवा विवाह और विवाह
बन्धनच्छेद निषिद्ध है । पूजा विवाह प्रभृति महान
कार्यमें ये ब्राह्मणकी नियुक्त करते हैं ब्राह्मण, कायस्थ,
और वैश्य इनके हाथका जल और मिष्टान्न खाया
करते हैं ।

ख्यापक (स० त्रि०) ख्या गिच् म्बु ल । १ ज्ञापक, बतला-
नेवाला । २ प्रकाशक, जाहिर करनेवाला

ख्यापन (स० त्रि०) ख्या गिच्-न्थ ट् । प्रकाशन, जहूर ।

ख्यान (अ० पु०) १ ध्यान, तवज्जीह । २ अनुमान, अट-
कल । ३ विचार, समझ । ४ आदर, सम्मान, निहाज ।
५ गीतमेट, किमी किम्मका गाना । इसमें एक मुखड़ा
और एक अन्तना लगता तथा विगीपत श्रुद्धार इसका
वर्णन रचता है । ६ लावनीके गानेका कौडुग ।

ख्यान खुगाल—एक विख्यात कवि तथा गायक । इनकी
कवितायेमें एक यों है —

मन्वशा निवरा धतिहो डिगना खामसलाना

रीक रिमोना बाको चितवममै डे टोना ।

६७ उजातर रनके भागर म च भागर नटनावर

रविच प्रोतम मन मोह निशो डे मोडे म भावे

खाना खोना खोना रचना भोना ॥

ख्यानी (फा० वि०) १ फर्जी, कल्पित, अटकलपथ ।
२ खसती, पागल, सनकी ।

खिदान (हि० पु०) ईर्झाई, किरणदान ।

खिटीय (हि० वि०) ईसवी, ईसाके मुतालिक ।

खीट (हि० पु०) ईसा, मसोह । ईसा १७०० :

खुआ (फा० पु०) १ प्रभु, खानिन्द । २ प्रधान, सरदार ।
३ सुप्रसिद्ध व्यक्ति, मगहूर शब्द । ४ प्रतिष्ठित वर्णिक,
बड़ा मीटागर । ५ मुमनमान भापुमेट कोई मुमनमान
फकीर । ६ अन्त पुरका शीव दाम, जनानखानेका नामदे
नीकर ।

ख्वाज कुतब—एक मशहूर गायक। इनकी बनाई बहुतसी कवितायें हैं जिनमें से एक इस तरह है :—

सिदनी सब आईली सुन सरस पैरका ख्वाज कुतब देहरी।
शेष नमायक श्रीलौया वन आए नवो छे रमूल सन र ग नवीलाझादर
रहीम एसाइव डुलसन नजर वनेलिया
एस दरवाज दरवनेलिशमें ॥

ख्वाजो खिदर—एक प्रसिद्ध कवि और गायक। इनकी कविताओंमें से एक यह है—

आज रथो कारतार टोक बनुष होय
श्वतरयो छत कश्यपसत इत इमायु'धी नन्द।
बेतिफिर हरपतू टुख दारिद्र दूर करण
वाको तेज तेरो तप किति छायो एकछो संग ॥

ख्वाजो टीन शकरगञ्ज—एक नामी कवि तथा गायक। इन्होंने अच्छी अच्छी कवितायें रचना की हैं जिनमें से एक यों है :—

गेमें घाल' पाऊ' इकरत ख्वाजदीन शकरग'ज
मुलतान मसायक मरुबूव इलाही।
गिजामदीन जोलिवा अमीर गोसरोकेवल वलजाही ॥

ख्वाजे मीर—एक प्रसिद्ध कवि। इनकी एक कविता इस तरह है—

धन धन राग यनाथी धन धन गोकुव गांस।
धन धन नन्द योगमति जहा प्रगटे सुन्दरश्याम ॥

ख्वाजे मौतदीन कुतबदीन—एक मशहूर सुसलमान कवि, इन्होंने बहुती कवितायें रची हैं जिनमें से एक यों है—

दम दम मदार लाडिले खवाज पीर मेरे
तिनकी विधा दूर करो निहोर।
खवाज मौतदीन कुतबदीन तुरकमान
राखले तुम अपनी ओर ॥

खाव (फा० पु०) १ निद्रा, नींद। २ स्वप्न, सपना।
खार (फा० वि०) १ भ्रष्ट, बर्बाद, खराब। २ अपमानित, वदनाम।
खारी (फा० स्त्री०) १ भ्रष्टता, बर्बादी। २ तिरस्कार, वैद्वज्जती।

ग

ग—कवगेका तीसरा व्यञ्जनवर्ण। इसका उच्चारण स्थान कण्ठ है। इसका आभ्यन्तर प्रयत्न जिह्वामूल स्पर्श और वाह्यप्रयत्न संवार नाद घोष है। गकार अल्पप्राण वर्णके मध्य गिना जाता है। मातृकान्यासके टक्षिण मणिबन्धमें इसका न्यास करना चाहिये। इसकी लिप्यन-प्रणाली तन्त्रके मतसे इस प्रकार है—गकारमें सर्वममेत तीन रेखायें होती हैं, पहली अधोगत वक्र-रेखा है इस रेखाके ऊर्ध्व स्थित अग्रभागसे एक दूसरी सरल रेखा खींचनी पड़ती है। इस सरल रेखाके दक्षिणाग्रसे अर्धोदिकको फिर एक सरल रेखा खींचते हैं। वर्तमान समयमें गकारमें भी एक मात्रा दी जाती है, किन्तु तन्त्रमें उसका कोई उल्लेख नहीं मिलता। इसकी

प्रथम रेखाको अधिष्ठात्री लक्ष्मी तथा तीसरी रेखाके अधिष्ठाता स्वयम् ईश्वर हैं। गकारको दाडिम कुसुमके सदृश रक्तवर्णा, चतुर्वाहु, रक्तवस्त्र धारिणी और रत्नलङ्कार-से सुशोभित ब्राह्मणीके सदृश ध्यान करना पड़ता है। इसका नाम गो, गौरी, गौरव, गङ्गा, गणेश, गोकुलेश्वर, शार्ङ्गी, पञ्चात्मक, गाथा, गन्धर्व्व, सर्व्वग, स्मृति, सर्व्व-सिद्धि, प्रभा, धूम्रा, द्विजास्य, श्रिवदर्शन, विश्वात्मा, गौ, बालवज्र, त्रिलोचन, गौत, सरस्वती, विद्या, भोगनी, नन्दन, धरा, भोगवती, हृदय, ज्ञान, जालन्धर और लव है। (वर्णामधान) तान्त्रिक मतसे हृदयमें जो द्वादशदल पद्म है, उसके तृतीय दलमें गकार अवस्थित है। काव्या-दिके प्रथममें गकार हानिसे रचयिताकी आकांक्षा बढ़ती

है, किन्तु किमी दूसरे व्यञ्जनके साथ युक्त होने पर विपरीत फल होता है । (अणुवाक्यटोषा)

ग (स स्त्री०) गैक । १ गीत । २ गणेश । ३ गन्धर्व । ४ एक गुरुवर्ण ।

गगई (हि० स्त्री०) गलगनिया । मैना जानिकी एक चिडिया जो ग्यारह डच लखी भूर रङ्गकी होती और भारतके प्राय सभी प्रान्तोमें मिलती है । यह खेतों, मैदानों और जङ्गलोंमें फिरती है । इसका अण्डा टेनेका कोड़े ठिकाना नहीं है । यह भांडमें घोसला बना लेती और चार अण्डे देती है । ग गई-बोलनेमें खूब तेज है ।

गगङ्गरिया (हि० स्त्री०) हरिद्राभद्र एक प्रकार लखी और बडी गाठवाली हलदी यह कटकमें होती है ।

गगतिरिया (हि० स्त्री०) वृक्षविशेष जलपीपर । यह सजल भूमिमें होती है । इसकी पत्तिया नुकीली निकलती है । इसमें पीपल जैसी बाल आती है । इसका दूसरा नाम पनिमिगा है । जलपिषकी शब्दा ।

गगवरा (हि० पु०) गङ्गा या किमी दूसरी नदीकी धारा या वाढके जटनेसे निकली रुद्र भूमि । इस पर नदीकी मिट्टी जमी रहती है

गगरी (हि० स्त्री०) वनी नामकी एक कषाम । इसके पत्र, दीर्घ, तथा विस्तृत और तन्तु सूत्र एव कोमल लगते है । पृथके नोचेकी कमरवी पत्तिया दीर्घ और बैंगनी होती है । इसे विहारमें जठो बंगलामें भोगला, बरारमें टिकडी जुडी आदि कहा जाता है ।

गगला (हि० पु०) एक प्रकारका शलगम । यह गङ्गाके किनारे होता और आकारमें दीर्घ और अक्षता लगता है ।

गगवा (हि० पु०) वृक्षविशेष । यह दलिनमें समुद्र किनारे तथा जङ्ग अन्दामान और मिज़लम उपजता है । यह चिर हरित रहता है । इसमें खेतवर्ण दुध नि सत होता जो वायु लगनेमें जमता और काला लगता है । ताजा दूधका स्वाद खटा होता और बहुतांता मत है कि जहरीला भी है । इसके काठमें दियासलाई आदि बनायी जाती है ।

गंगशिकस्त (हि० पु०) नदीमें काटी हुई जमीन ।

ग गेटो (स० स्त्री०) शोषधिविशेष, एक पत्ती । यह पिडकाकी प्रवाहित करती और मलमूलम रहती है ।

ग गेरन (हि० स्त्री०) गोरक्षतण्डुला, गुणधकारो । इसके पर्वामे दो नोके रहतीं और पुष्प पाटलवर्ण लगते है ।

ग गेरनका फल परिपक्व होने पर फट कर पाच टुकड़े हो जाता है । गाहो इको २४ ।

ग गेरुआ (हि० पु०) काकाएडीसुप एक भाट्टी । इसके पत्र ये गौरूपमें मीकामि सुमजित रहते और सुद्र सुद्र फल लगते है । गाङ्गीरुक एक पार्वत्य वृक्ष है ।

ग गोटी (हि० स्त्री०) गङ्गातीरस्थ सत्तिका, गङ्गाकी मट्टी ।

ग गौलिया (हि० पु०) निम्बुकभेद, किमी किष्मका नीवू । यह खटा और दानेदार होता है ।

ग जिया (हि० स्त्री०) १ खारी, कोइ जानीदार थैली । इसमें घमियारे घास डालते है । २ पात्रविशेष, कोइ बर्तन । यह मट्टीका बनता, मु ह तङ्ग रहता और देखनेमें चपटा लगता है । ३ रूपया डालनेकी कोइ थली । यह सूतसे जानीदार बनायी जाती है

ग जेडो (हि० वि०) गाजाखोर, गाजा पीनेवाला ।

ग ठकटा (हि० पु०) गाठ काट लेनेवाला, जो कमरमें बंधे रूपये पैमें चाकू या किमी दूसरी चीजसे कापड़को काट कर निकाल लेता हो ।

ग ठजोडा, गठवन्ध १ ।

गठवन्धन (हि० पु०) १ यन्त्रवन्धन, खूटजोडाई । यह पति तथा पत्नीका उत्तरीय बस्त्रका प्रान्तभाग परस्पर बाधनेमें होता है । विवाहमें ही इसका आरम्भ है ।

ग ठवन्धन आनदान और पूजाचर्चनादिके समय किया जाता है । २ विवाह, शादी । ३ मैत्री, दोस्ती ।

ग ठिवन (हि० स्त्री०) शक्तिपथ शब्दा ।

ग ठवा (हि० पु०) धागोंका एक जोड । इसमें तानेवाणे या नयी पायीका तागा पुराने कपड़ेके तागिसे मिलाया जाता है

गडधिमनी (हि० स्त्री०) १ चाटकारिता, खुगामद, आपनूमी । २ सख्त मिहनत, कडी मयकत । ३ बैठक, बैठार ।

ग डतरा (हि० पु०) ग तरा, यज्ञोंके नीचे विहाया जाने वाला कपडा ।

ग डनी (हि० स्त्री०) गण्डाला, भरहटा ।

गंडरा (हि० पु०) तृणविशेष, एक घास। यह सूज जैसा रहता और आर्द्र भूमिमें उपजता है। इसके पत्र अर्ध अङ्गुलि प्रशस्त और हस्त वा सार्धहस्त विन्नृत होती हैं। गंडरा २ फुटसे ६ फुट तक बढ़ जाता है। इसकी शाखाके मध्यभागकी उड़ दो हाथ दीघ पतली पतली सीक सुखानेसे सुनहली निकलती है। इसी सीकके उपरिभागसे आग्निन मासकी मञ्जरी आती है। पौषसे पहले ही गंडरा सुखने लगता है। लोग इसके हरे सीके निकाल करके विविध पात्र प्रस्तुत करते हैं। फ़ाल्गुन चैत्र मासको कट करके गंडरा कानो छप्परसे लगता है। इसकी भाङ्गू और चटाई भी बनती है। गंडराका मूल ही 'खस' नामसे विख्यात है। २ कोई धान। यह भाद्र आग्निन मासको पकता है।

गंडासा (हि० पु०) १ अस्त्रविशेष, एक हथियार। इससे प्रायः काटिया या हरियारी काटी जाती है। गंडामा प्रायः एक हस्त परिमित दीर्घ होता है। जाली नामक काष्ठमें लौहका एक प्रशस्त तीक्ष्ण खण्ड लगा करके इसे बनाते हैं। पर्याय—गंडाम, गंडसी, गडमिया है। गंडेरो (हि० स्त्री०) १ इक्षुखण्ड, जखसे पोर पोर टुकड़े २ छिले हुए पौंडिका छोटा छोटा टुकड़ा। यह चूसनेके काम आता है।

गंडोरा (हि० पु०) हरित् आमखजूर, हरी और कच्ची खजूर।

गंदना (हि० पु०) १ बदबूदार कोई मसाला। यह रसुनपिण्डालु जैसा रहता है। २ तृणविशेष, कोई घास। यह रसुन ग्रन्थिको यव स्थापन करके वपन करनेसे उगता है। पर्याय—दंदना है।

गंदला (हि० वि०) मलिन; अपरिष्कृत, मैना, ढबेल। २ अपवित्र नापाक।

गंदीला (हि० पु०) तृणविशेष, एक घास। यह वर्षा ऋतुमें उपजता पतले पतले पत्र रखता है। इस मध्य भागमें एक सीक भी होती है। बुंदेलखण्डमें गंदीला अधिक देख पड़ता है।

गंधाना (हि० क्रि०) दुर्गन्ध छोड़ना, बदबू देना, बुरी वास आना।

गंधिया (हि० स्त्री०) १ कृमिभेद, कोई कीड़ा, गुलुवा।

यह वर्षा ऋतुकी उड़ता और बुरी तरह मझकता है। २ हरितवर्ण कीटभेद, कोई बुरा कीड़ा। यह भुनगे जैसा होता और धान, मकई आदिको बिगाड़ता है। ३ कोई घास गंदोना देखो।

गंज (हि० स्त्री०) तृणविशेष, कोई घास। पर्याय—अगिया है।

गंधेल (हि० पु०) वृक्षविशेष, कोई पेड़। यह त्रुद्राकार रहता और हिमालयके तीरमें उपजता है। बड़देग और टाक्षिणाव्यमें भी इसका अभाव नहीं। गंधेलके पत्र तथा कुड्मल लोमश होती हैं। इसकी रुई बहुत मझकती है। गंधेलके मीके आठ दश इंच तक बढ़ते और उनमें उड़ दो इंच दीघ तीक्ष्ण पत्र निकलते हैं। इनके पुष्प श्वेतवर्ण और फल दीर्घाकार वर जैसे होते हैं। गंधेलकी पत्ती मसाले और छाल तथा जड़को औषधमें व्यवहार करते हैं।

गंधैला (हि० पु०) १ पक्षिविशेष, कोई चिड़िया। (वि०) २ दुर्गन्धि, बदबूदार, गंधानेवाला।

गंधौली (हि० स्त्री०) कपूरकचरी।

गंव (हि० स्त्री०) १ अवसर, मौका। २ युक्ति, दग। ३ प्रयोजन, मतलब। ४ टांव, घात।

गवई (हि० स्त्री०) १ सुद्रयाम, छोटा गाव।

गंवरदल (हि० पु०) १ गवारोंकी भीड़। (वि०) २ देहाती, गंधार। ३ गंवारू, महा; अच्छा न लगनेवाला।

गंवहियां (हि० पु०) अतिथि, अभ्यागत, मेहमान, किसी दूसरे गांवसे आया हुआ आदमी।

गंवाना (हि० क्रि०) १ खोना, छाल देना, विमराना, भूलना। २ व्यतीत करना, काटना, विताना।

गंवार (हि० वि०) १ ग्रामीण, देहाती। २ मूर्ख, बेवकूफ। ३ अनजान, नावाक़िफ।

गंवार (गंवारिया) राजपूतानेका जातिभेद। यह मूंजकी रस्सियां मिरकियां, मींगकी कंगिया आदि बना करके बेचते और किसी स्थानपर स्थायी रूपसे न ठहर करके भ्रमण ही किया करते हैं। गंवारिये अपना परिचय राजपूत जैसा देते हैं।

गंवारी (हि० स्त्री०) १ ग्राम्बता, गंवारपन।

२ अज्ञानता, नाममभी। ३ मूर्खता, वेवजूकी। ३ ग वार श्रोरत। ४ ग वागपन-निये हुई, जो मूर्खताये भरी हो। ५ भद्दी, वेठ गी।

ग वारू (हि० वि०) ग्रामोण, देहाती, वेठ गा, भद्दा।

ग स (हि० स्त्री०) १ हेषे, दुग्मने। २ लगने वात। ३ वाणकी अनी, तीरकी नोक, गासी।

ग सना (हि० क्रि०) १ कसना जड करके बाधना। २ बानेकी खूब कडा करना। सूतको ग स देनेसे बुनावटमें छेद नहीं रहता। ३ गठना, कटा पडना। ४ भरना। ५ चुभना, छिदना, घुसना।

ग मीला (हि० वि०) तीक्ष्ण, नोकदार। २ चुभोला, धंस जानिवाना। ३ ठोस, ठस, जिसमें छेद न रहे।

गइया, गड देण।

गई करना (हि० क्रि०) टालना, बराना, सुनौ धनसुनी करना।

गईवहोर (हि० वि०) विगडीको बनानेवाला।

गठ थ (हि० स्त्री०) दृणविशेष, एक घाम। यह अफ-गानस्तान और बलूचस्तानमें अपने आप उपजा करती है, किन्तु भारतमें चीपायोकी विलानिके निले लगायी जाती है। इसका बीज थापिन कार्तिक मास खेतकी मैडों पर डाला और जलसे अच्छी तरह सींचा जाता है। गठ थ ६ मासमें प्रसुत होता है।

गज (हि० स्त्री०) गौ, गाय।

गकार (स० पु०) ग स्वरूपे कार। ग स्वरूप वर्ण, 'ग' अक्षर।

गकर (हि० पु०) जातिविशेष, एक कोम। इस जातिके लोग पञ्जाबके उत्तर पश्चिममें निवास करते हैं।

गगन (स० क्लो०) गच्छत्यस्मिन्, गम-युच् गगान्ताडिग। नदीय व। लघु-रा० १ आकाश, आममान, चलने फिरनेकी खानो जगह। समसा संस्कृत पर्याय—वह्नि, धन्व, आप, पृथिवी, भू, स्वर्धु, अक्षा, भागर, समुद्र और अध्वर है। इनसे उपाय आकाश शब्दमें जो। गगनका गुण—व्याप कत्व, छिद्रत्व, अनायय अनालस्य, आशयान्तरशून्य, अव्यक्त और अधिकांशता है।

'चिति जगत्पदक गगन समीरा। (तुषठी)

गगन शब्दके नकारका णत्व भो हुआ कृता है। बहुतौके मतमें मूठ ध्यति हो गकारको खोकार करते हैं, वास्तविक गकार नहीं बनता। किन्तु आचार्य-मञ्जरोके निम्नलिखित श्लोकमें णत्वका प्रमाण पाते हैं—
'(गगनको गनको परिगमने)'

२ शून्य खानो जगह। ३ लगनको अपेक्षा दशम राशि, कुण्डलोका १०वा घर। ४ अश्वघातु, अक्षरक। ५ मेष वादन। ६ छन्दोविशेष। यह कृष्यका एक भेद है।

गगनगति (स० त्रि०) गगने गतिर्यस्य, चन्द्रो०। १ आकाशगामी हवामें उड़नेवाला। (पु०) २ देवता। ३ सूर्यदि ग्रह। (स्त्री०) ४ आकाशगमन, आममानो चाल, उड़ान।

गगनचर (स० त्रि०) गगने चरति चर-टच्। आकाश गामी आममानमें चलने फिरनेवाला। २ विद्याधर। (पु०) ३ पत्नी।

गगनचरो—विजयार्द पथ तको दक्षिण श्रेणीमें स्थित साठ नगरोंमें एक नगर।

गगनधूल (हि० स्त्री०) १ किसी किष्कका कुकुरमुत्ता। यह गोलाकार रहती और वर्षा ऋतुको मैडोंके नीचे या खुले मैदानमें उपजती है। इसका वर्ण श्वेत आता और नूतन पुष्पका शक बनाया जाता है। शुष्क हो जाने पर इसमें मध्यभागसे मलिन हरितवर्ण रज निकलता है। यह धूलि कान बहनेकी प्रति लाभदायक औषध है। २ केतकीपुष्परज केवडेके फूलकी धूल।

गगनध्वज (स० पु०) गगने गगनस्य वा ध्वज इव। १ मेष, वादन। २ सूर्य।

गगनन्दन—विजयार्द पर्वतकी उत्तर श्रेणीमें स्थित पचास नगरोंमें से एक नगर

गगनप्रिय (स० पु०) एक दैत्य। (हरिवंश ४२ च)

गगनमंड (हि० स्त्री०) पतिविशेष, एक चिडिया। यह जलके निकट निवास करती है। पर्याय—कज, कराकुल है।

गगनमण्डल (स० क्लो०) गगनस्य मण्डलम्, ६ तत्त्वं। आकाशमण्डल, आममानका घेरा।

गगनमारकगण (स० पु०) अश्वमारकद्रव्य, अक्षरकको कुशा बनानेवाली चोखे।

गगनवल्लभ, गगननन्दन टं स्त्री ।

गगनविहारी (स० त्रि०) गगने विहर्तुं शीलं यस्य, वि-हृ-णिनि । १ आकाशपथमें विचरण करनेवाला, जो आसमानमें घूमता हो । (पु०) २ खेचर, पक्षी । गगनसदृ (स० त्रि०) गगने सौदति गच्छति, गगन-सदृ-क्षिप् । १ आकाशगामी, हवामें उड़नेवाला । (पु०) २ सूर्य आदि ग्रह । ३ देवता ।

गगनमिन्धु (स० स्त्री०) गगनस्य मिन्धुः-इ-तत् । मन्दा-किनी; गङ्गा ।

गगनस्पश (स० पु०) वायु, हवा ।

गगनाङ्गना (स० स्त्री०) गगनगता अङ्गना । टिवराङ्गना अप्सरा, परो ।

गगनादिलीह (स० स्त्री०) एक औषध । अभ्रक त्रिफला लीह कुटज, त्रिकटु, पारा, गन्धक, सङ्घिया, सोहागा, सञ्जीवदो, दालचोनी इलायची, तेजपत्र वङ्ग दोनों जोरा सबको चर्ण करना और उसमें सबसे आधा चित्रकचर्ण मिलाना चाहिये इसीका नाम गगनादिलीह है । इसको २ तोली मधुके साथ लेहन करने पर सोमरोग और सूत्रातिमार अच्छा हो जाता है । (रसेन्द्रमारमं०)

गगनादिवटी (स० स्त्री०) वातरोगका एक औषध । अभ्रक, पारद, गन्धक, ताम्र, सुगडलीह, तोच्णलीह और स्वर्णमाचिक बराबर बराबर ले करके सुलहटी वासक, द्राक्षा तथा शूकुष्माण्डके काथमें घोटना चाहिये । इसको २ रस्ती घी और शहदके साथ खाने पर कठिन वातरोग, पित्तरोग, क्षय, भ्रस, मद, कफ, शोष, दाह और दृष्या मिट जाती है । (रसेन्द्रमारमं०)

गगनाध्वग (स० पु०) गगनाध्वना गच्छति, गम-ड । सूर्य ।

गगनानङ्ग (स० स्त्री०) मातावृत्तमेद । इसके आदिमें रगण लगता और प्रत्येक पादको १६वीं मात्रा पर विश्राम पड़ता है । फिर गगनानङ्गके प्रतिपादमें ५ गुरु और १५ लघु लगते हैं । कोई कोई १२ मात्राओंके बाद भी यति निर्देश करता है ।

गगनाम्बु (स० स्त्री०) गगनस्याम्बु, इ-तत् । गगनीदक, बरपाती पानी । यह वल्य, रसायन, मेध्य, शीतल, आह्ला-दक और तिदोष, ज्वर, दाह, विष तथा रजोघ्न होता है ।

दृष्टिके जलका यह स्वाभाविक गुण रहती भी उमके अप-वित स्थान वा अपवित पावमें पतित होनेसे उमका पीना या उसमें नहाना अतिशय अहितकर और अ-वहाय है । पावके दोष गुण अनुसार जनकी भी भला बुरा समझते है । (पृष्ठ)

गगनेचर (स० पु०) गगने चरति, अणुक्म० । १ देवता २ सूर्यादि ग्रह । ३ राशिचक्र । (त्रि०) ४ गगन-चारी, आसमानमें उड़नेवाला ।

गगनोत्सुक (स० पु०) गगने उत्सुक इव । महल-ग्रह ।

गगर—युक्तप्रदेशके नैनोताल और अलमो । जिलेकी एक पवतर्यगी । यह अक्षा० २६° १४' तथा २६° ३०' उ० और देशा० ७६° ७' एवं ७६° ३७' पूर्वके बीच पड़ती है । इसका प्रकृत नाम गर्गाचल है । इसमें तुन, मनौ-वर आदि अच्छी अच्छी लकड़ियाँ होती हैं ।

गगरा (हिं० पु०) कलमा, घड़ा । यह ताँबे, पीतल, लोहे, मटो आदिका बनता है ।

गगरा (हिं० स्त्री०) कलम, छोटा घड़ा ।

गगली (हिं० स्त्री०) अग्रभेद, किसी किम्बका अग्र ।

गगोरी (हिं० स्त्री०) कृमिविषेप, एक कीड़ा । यह भूमिके भीतर बिल तैयार करके रहती है ।

गगनु (स० स्त्री०) वाक्य, गुफ्तगू, वात ।

गग्न (स० पु०) हाम, हंसी ।

गङ्ग (हिं० पु०) १ एक मातावृत्त । इसके प्रतिपादमें ८ मात्राएं लगती हैं, अन्तको २ गुरु रहना चाहिये ।

गङ्ग—हिन्दी भाषाके एक प्रसिद्ध कवि । यह अकबरके समयमें विद्यमान थे । इनका प्रकृत नाम गङ्गाप्रसाद रहा ।

गङ्ग (हिं०) गङ्गा देखा ।

गङ्गकवि,—गङ्गाप्रसाद देखा ।

गङ्गकीर्ति—दि० जैन ग्रन्थकर्ता । ये वि० स० ११७७में हुए थे ।

गङ्गदेवकवि—दि० जैन ग्रन्थकर्ता । इन्होंने “श्रावकप्राय-श्चित्त” रचा था ।

गङ्गा (सं० स्त्री०) गम्यते ब्रह्मपदमनया गच्छतीति वा, गम्-गन् टाप् । एक प्रसिद्ध नदी । इसका पर्यायः—

विष्णुपदो, जङ्ग—तनया, सुरनिम्बगा, भागोरथो, त्रिपथगा, विषोता, भ अक्षु, अश्वतोर्थ, तीर्थराज, विदग्दोषिका, कुमारसू, सरिहरा, मिहापगा, स्वर्गपगा, स्वापगा, ऋषि कल्प, हैमवतो, स्वर्गपो, हरशेखरा, सुरापगा, धर्मद्रवी, सुधा, जङ्गकन्या, गान्दिनी, रुद्रशेखरा, नन्दिनी, श्रलकनन्दा, सितसिन्धु, अश्वगा, उग्रशेखरा, मिहसिन्धु, स्वर्गसरिहरा, मन्दाकिनी, जाङ्गवे, पुन्या, समुद्रसुभगा स्वनदो, सुरदोषिका, सुरनदो, खरधुनी ज्येष्ठा, जङ्ग-सुता, भ'भजननी, शुभ्रा, शैलेन्द्रजा, अर भवायना । वैद्यक राजनिघण्टु के मतमें इसका जल शीतल, स्वादित, खच्छ, श्रत्यन्त रुचिकर, पथ, पवित्र, पापनाशक, लघ्ना और मोहनाशक, दोषन एव प्रसाधद्विकारो है ।

गङ्गा श्रत्यन्त प्राचोन पुण्यसलिला नदो है । हिन्दुश्री का ऐसा दृढ विश्वास है कि पृथ्वीके सर्वतोर्थीमें गङ्गा हो प्रधान है । गङ्गामि न्यु, होनेसे मनुष्यजातिसे लेकर निरुद्धजाति कोट, पतङ्ग तक भी मोच लाभ करते है । (अक्षर १ lex ५), कात्यायन, श्रौतसूत्र, शतपथ, ब्राह्मण-प्रभृति प्राचोन ग्रन्थोमें गङ्गा नाम है । पुराण, उपपुराण, इतिहास, इन सब प्राचोन पुस्तकेंमें गङ्गाको थोड़ी बहुत कथा लिखी हुई है । वाल्मीकि रामायणके गङ्ग हिमालयका कन्या है । सुमेरुतनया मनोरमा वा मनाके गभसे इनको उत्पत्ति है । देवताद्यैनि किमा काय वगसे हिमालय पहाड़के निकट गङ्गाकी भिजाकर लिया है । तभामे यह ब्रह्माके कण्ठलुप्त रहने लगी । इधर सगर राजाके दुष्कर्मी पुत्र कपिल मुनिके शापसे भय हो जानैके कारण, सगर वशके राजा पवित्र गङ्गाको पृथो पर लानेको चेष्टा करने लगे । किन्तु उनका कितना हो चेष्टाय निष्फल हुई । बहुत दिनके बाद सगरव शज राजा भगोरथ अपने म त्रियोकें ऊपर राज्यका भार अर्पण कर पहने पहल ब्रह्माको तपस्या करने लगे । उनको कठोर तपस्याके हजार वर्षके बाद ब्रह्माजो सतुष्ट हुए । ब्रह्माजो सब देवताओंको साथ लेकर राजा भगोरथके निकट पध चे । भगोरथने अपनी

इच्छा (अग्निप्राय) प्रगट की । भगोरथका यह अग्नि-प्राय था कि गङ्गाजोकी पृथ्वी पर लानेसे उनके पूर्वपुरुष मोल पा जायें । ब्रह्माके स्वीकृत होते भी वे अपनी कठोर तपस्यामें लगे रहें । राजा भगोरथने सोचा, जब गङ्गा स्वर्गसे पृथ्वी पर आवेंगो तो यह निश्चय है कि उनका भार पृथ्वी सह न सकेंगो । इसलिये गङ्गाधारणको महादेवको तपस्व, करनी पडे । शिवजोकी सन्तुष्ट करनेमें उन्हें अधिक परिश्रम न पडा । एक वर्षके भोतरहो शिवजी उनकी तपस्यासे सतुष्ट होकर वर देनेके लिये उपस्थित हुए । तब भगोरथने अपना अग्निप्राय प्रगट किया और शिव-जीने गङ्गाकी अपने ऊपर धारण करनेका भार ले लिया । गङ्गाजीने सोचा कि यह अच्छा हो हुवा । इस समय महादेवजी भेरे हाथमें आ जायगे । क्यों कि मैं इतने जोरसे स्वर्ग से गिरू गो कि पृथ्वी छिदन करती हुई शिव-जोके साथ पातालमें प्रवेश कर जाऊंगी । महादेवजी गङ्गाकी आन्तरिक इच्छाको जान कर पहनेहीसे सचेत हो गये । यथासमय गङ्गाजी स्वर्गसे शिवजोके मन्तक पर पतित हुई । शिवजीके असाधारण कौशलसे उनकी धारा जटाके मध्यहीमें रुक गई, किमी प्रकार बाहर न जा सकी । भगोरथ गङ्गाजीकी न टंग कर पुन तपस्या करने लगे । उनकी तपस्यासे सतुष्ट होकर गङ्गाको भूत-पतिने छोड दिया और वह विन्दुसरोवरमें गिर गई ।

विन्दुसरोवरमें गिरनेसे गङ्गाको सात धारायें हो गई यथा झादिनो, पावनी और नलिनी ये तीनीं पूर्व और, वक्षु, सीता और सिन्धुसरो तौन पर्वत, याम, वन, उपवनादि की बहती हुई पश्चिमकी और और एक धारा भगोरथ-को बतलाई गई राहसे चली । इसी कारण इनका नाम भागोरथो पडा । भागोरथीके समुद्रमें जा करके गिरनेसे भस्मोभूत सगरके लक्षके पवित्र होकर स्वर्गको सिधारै । भगोरथको इच्छा पूर्ण हुई । (रामायण भादि ३१ ५३, ५४ सर्ग)

गङ्गाका दूसरा नाम विष्णुपदी है । इसो नाम अथवा दूसरेहो किमी कारणसे हो, बहुतांता विश्वास है कि गङ्गा वैकुण्ठयासो भगवान् विष्णुके पदसे उत्पन्न हुई है । किन्तु विष्णुपुराणक पाठ करनेसे ऐसा मान म पडता है

- कपिलजीको रामायणके मतमें देवत्व सिद्ध होना आचरनेके विधि गङ्गाके से गये । वाशको शिवजीके गङ्गाके म ईश्वर उल्लसको होवना शय दिशा ।

• हो मोमवतके मतमें गङ्गाको धारण करनेके लिये वक्षु धरत गङ्गा-द वधो वाधयना को ।

कि आकशमण्डलमें ध्रुवकी अवलम्बन करके समस्त ज्योतिष्क मण्डल अवस्थान करता है। उसी ज्योतिष्क मण्डलमें सेव अवस्थित है। पौराणिकगण इसे ही विष्णु भगवानका तृतीय पद जैसा वणन करते हैं। (विष्णुगण (२८) सेवसे वृष्टि हांतो है और उसीसे गङ्गाकी उत्पत्ति है।

गङ्गाका और एक नाम जाङ्गवी है। रामायण और विष्णुपुराणमें इनकी कथा इस प्रकार लिखी हुई है :— महाराज भगीरथ स्वपर चढ़ कर आगे आगे चलने लगे। स्त्रोतस्वती गङ्गाने भी ग्राम, नगर, वन, उपवनादिकी वहाते हुए उर्ध्वके पीछे पीछे प्रवलवेगसे गमन किया। महासुनि जङ्ग अपने आश्रममें बैठकर एक यज्ञका आयोजन कर रहे थे। गङ्गाके जलसे यज्ञस्थल डूब गया, यज्ञमें विघ्न पड़ा। किन्तु सुनि तनिक भी न हटे, वरन क्रुद्ध हो कर गङ्गाकी टवानिका विचार किया। सोच यमभ करके अन्तमें वह गङ्गाको योगवल्से पान कर गये। देवता, गन्धर्व, मनुष्यादि सबके सब विस्मयापन्न हुए। गङ्गाके नहीं, रहनेसे हम लोगोंकी ऐसी दग्गा होगी इस प्रकार चिन्ताकर सभी घबरा उठे और सुनिसे गङ्गाको छोड़ देनेकी प्रायना करने लगे। तब सुनिने अपने कर्णरन्ध्र द्वारा गङ्गार्जीकी परित्याग किया। इसीसे गङ्गाका नाम जाङ्गवी वा जङ्गसुता पया। (रामायण १।१३ सुः)

देवीभागवतमें किमी जगह लिखा है कि नक्ष्त्री, सरस्वती, गङ्गा ये तीनों नारायणकी पत्नी हैं और वैकुण्ठवासी विष्णु भगवान्के निकट ही रहते थीं। एक दिन गङ्गा उन्मुक्तसे वार वार विष्णु भगवान्की ओर दृष्टिपात करने लगीं। भगवान् भी उसे देख कर हंस पड़े, किन्तु सरस्वती इस पर बहुत चिढ़ीं। उन्होंने भगवान्को कुछ उलटी सौधो सुना दी। किन्तु भगवान् कुछ न बोल कर बाहर निकल गये। इधर गङ्गा और सरस्वतीमें कलह उत्पन्न हो गया। पद्मा मध्यस्थ वन लडाईकी शान्त करने गईं। इसका फल उलटा हुआ। सरस्वतीने पद्माकी ही पहले श्राप दिया—“तुम नदी रूप धारण करके प्रापियेकि आवामस्यान् मर्त्य लोकमें जावो।” गङ्गामें स्थिर न रहना गया, वे बोल उठीं “पद्मा! जिस तरह सरस्वतीने विना दोषकेही आपको श्राप दिया है, उसे भी

नदी रूपमें मर्त्य लोक जाकर पापगणि ग्रहण करना पड़ेगा।” सरस्वती भी क्रुद्ध होकर गङ्गामें बोली “तुमको भी इसी तरह फल भोगना पड़ेगा।”

इसो समय विष्णु भगवान् आकर उपस्थित हुये और कहने लगे “जाओ, वैकुण्ठविपाकमें तुम भारतमें नदी बनो। देखो नक्ष्त्री! तुम्हारा पूर्ण अंश वैकुण्ठमें वाम करंगा और अथा अंश धर्मभञ्ज राजाके वरमें कन्यारूपमें जन्म लेगा। वही वादकी तुलसी नामसे विख्यात होगी। दूसरे अंशमें पश्चावती नदी नामसे अवतीर्ण हो। गंगे! तुम भी विष्णुपावनी मर्त्यके रूपमें अवतीर्ण हो। भगीरथ अति आराधना करके तुमकी ले जावेगा। वहाँ पर मेरा अंश समुद्र और मेरे अंशके अंशमें उत्पन्न शान्तनुराज तुम्हारे पति होंगे।” (देवीमा. २.२८)

महाभारताय दानधर्मके मतमें गङ्गाके गर्भमें १५० त्राय तक गङ्गार्तीर कहा जाता है। प्राण कण्ठगत अर्थात् अर्थात् अभावसे क्षुधा और तृणामे कातर होने पर भी किमोका दान इस ध्यान पर ग्रहण नहीं करना चाहिये। गङ्गाके किनारेसे दो कोस तक “क्षेत्र” कहलाता है। गङ्गाक्षेत्रमें बैठकर दान, जप या क्षीम करनेसे असीम फल हांता है। (श्रु.) किमी किमी पुराणके मतमें भाद्र सामको कृष्णचतुर्दशी तिथिकी गङ्गाजन जितनी दूरतक प्रावित होता है, “गर्भ” और उसके दूसरे भागकी तार कहते हैं। (श्रु.) गङ्गाके उद्देश्यमें जानि पर पारदार्य, परद्रव्यहरण, परद्रोह इत्यादि पाप विनष्ट होते हैं। गङ्गाके देग न करनेसे शान, ऐश्वर्य, आयु, प्रतिष्ठा, और सम्मान आदि प्राप्त होते हैं। गङ्गाजल स्पर्श करनेसे ब्रह्महत्या, गोहत्या, गुरुहत्या इत्यादि ममस्तु पाप कूट जाते हैं। मित्रको देखकर जिस तरह नृगण भयसे विह्वल हो कर भागते हैं, उसी तरह गङ्गाज्ञाननिरत मनुष्यको देख कर यमके दूत भयभीत होकर चल देते हैं, उमको यमका कोई भय नहीं रहता। गङ्गामें अज्ञात स्नान करनेसे सर्व पाप नष्ट होते हैं, ज्ञानपूर्वक स्नान करे तो सुक्ति मिला करती है। अथवा नक्षत्रयुक्त हादशी पुष्यायुक्त अष्टमी और आर्द्रा नक्षत्रयुक्त चतुर्दशी तिथिमें गङ्गा स्नान करना प्रशस्त है। वैशाख, कार्तिक और माघ मासकी पूर्णिमा, माघ

महीनेकी अमावस्या, कृष्णपक्षीय अष्टमी तिथिको गङ्गा स्नान करनेसे प्रचुर फल होता है। चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण और व्यतीपातसे गङ्गास्नान करनेसे सद्ब्रह्म गुण फल है। (३३५२१०) गङ्गाभूतिका मिर पर धारण करनेसे सूर्यसे भी अधिक तेजगाली हो सकती है। (३५३२१०) गङ्गामें किमी रूप पुण्यकार्य करनेसे सद्ब्रह्म गुण फल होता है। अन्न, गो, सुवस्त्र, रथ घोड़ा और गजदान करनेसे जो फल मिलता है, गङ्गाजल दान करनेसे उससे भी गुना अधिक फल है। गण्डूप मात्र गङ्गाजल पान करनेसे अश्व मेघयज्ञ करनेका फल होता है, स्वच्छन्दरूपसे पान करने पर मुक्तिलाभ है। जो मनुष्य मात रात अथवा तीन ही रात गङ्गा तीर पर वाम करता है, उसकी नरकका कष्ट भोगना नहीं पड़ता। तपस्या, यज्ञ, ब्रह्मचर्य और दान करनेसे जो सुख नहीं मिलता, केवल गङ्गातीरमें वास करने पर मनुष्य वही सुख अर्थात् मोक्ष पा सकता है। (३३५२१०)। ६०००० विघ्न सब टा गङ्गाकी घेरे रहती है। अभक्त अथवा कुकर्म मनुष्य जब गङ्गाके तीरमें उपस्थित होते हैं तो उनके हृदयमें काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि रिपु आ करके भर जाते और गङ्गास्नान करने नहीं देते हैं। (३५३२१०) मातृविक्रय तथा पित्रविक्रयसे भी गङ्गाका दान ग्रहण करना निन्दनीय है। गङ्गाके भीतर कभी दान नहीं लेना चाहिये (३३५२१०) जिसको गङ्गासे अधिक दूसरे तीर्थमें भक्ति है और जो गङ्गाकी उतनी भक्ति नहीं करता उसको कठिन नरकयातनाका अनुभव करना पड़ता है। (३५३२१०) ज्ञान ध्रुव का गङ्गाके किनारे श्रुत्य होने पर मुक्ति होती है और अज्ञान श्रुत्य स्वप्नभना है। मनुष्यके विषयमें क्या कहना है—कर्म, कीट, पतङ्ग, आदि जिम जन्तुका श्रुत्य गङ्गामें होतो अथवा जो हस्त उभय कर गङ्गामें भी गिर जाता, यह परमगति पाता है। (३५३२१०) जिसका आधा शरीर श्रुत्य कालको गङ्गाजलमें डूबा रहता, उसको भी पुन जन्म नहीं, ब्रह्मसापुत्र्य मिलता है। (३३५२१०) मनुष्यकी जितनी इन्द्रिया गङ्गाजलमें रहती, उतने ही हजार वर्ष पय न उमका ब्रह्मलोकमें वाम होता है। इसी कारण भारतीयामी मृत धरतिको अस्थि गङ्गामें डाल देते हैं। (३०६५१०)

जिमका केग, रोम और नन्दादि भी गङ्गाजलमें

निक्षिप्र होता, उसको मद्गति मिलती है। काशी-खण्डमें गङ्गामाहात्म्य अथवात्त सुन्दर रूपसे वर्णित है। उसके मतमें स्वर्ग, मर्त्य और पातालमें जितने तीर्थ हैं, सबसे गङ्गा तीर्थ प्रधान माना जाता है। ऐसा कोई पटाइ ही नहीं है जिमके साथ गङ्गाको उपमा वा उपमेय भाव हो सके। समस्त याग, यज्ञ करनेसे जो फल होता है, गङ्गाके अनेके दानसे उसका शतगुण फल मिल जाता है। ऐसा कोई भी पाप नहीं, जो गङ्गाजल स्पर्शसे विनष्ट न हो। ऐसा कोन श्रमोष्ठ है जो गङ्गा स्नानसे पूर्ण न हो। शीघ्र, आचमन, नेक, निर्मान्य, मलघषण, गावमर्दन, क्रीडा, दानग्रहण, अभक्ति, अन्य तीर्थोंके भक्ति वा प्रशसा, विद्या, भूवपरित्याग और सन्तरण ये १३ कार्य गङ्गामें करना निषिद्ध है।

किमी पुराणके मतमें वैशाख मासकी तृतीया तिथिको ब्रह्मलोकसे हिमालय पहाड़ पर गङ्गा अवतरण हुआ है। ब्रह्मपुराणके मतमें ज्यैष्ठ्य मासके शुक्लपक्षकी दशमी तिथि मगनवारको गङ्गा हिमालय पहाड़से पृथ्वी पर गिरी। भेष और दान प्रथम कर्म (विश्व ३३५२१०)।

पौराणिक मतमें विष्णु, गङ्गा और श्यामदेवता, आदि-का एक स्मृतिकाल निरूपित है। आग्निाक हिन्दुओं का विश्वास है कि वह निर्दिष्ट समय व्यतीत होनेसे, विष्णु, गङ्गा आदि धरातल छोड़ कर देवलोक चले जायेंगे मनुष्योंको दुर्दशाकी सीमा न रहेंगे। देवभागवतके मतमें कलियुगके पाँच हजार वर्ष व्यतीत होने पर गङ्गा, मरुत्वतो और पद्मावतीका शाप मोचन होगा, ये तीनों अपनी २ मूर्तिको भारत कर विष्णुलोक चली जायेंगी। यह ङाह कर विष्णुको एक घोर अनुमति है कि विष्णु लोक जाते समय काशी और हृन्दावन भिन्न दूसरे तीर्थ अपने साथ लेतो जायेंगी। (३३५२१० २ १२१)

ब्रह्मवैवर्तपुराणका मत है कि जब मरुत्वतोने गङ्गाको वैकुण्ठ परित्याग करने और भारत पर अवतीर्ण होनेका शाप दिया, तो गङ्गाने रोते हुए श्रवणमा आकुलतामें विष्णु भगवान्‌क निकट शापमोचनकालनिर्णय करनेका अनुरोध किया। विष्णुने उन्हें श्रवणमा कातर दक्ष कर कहा —

“अथ प्रथमि देवेभिः । ऋषेः पथ सरश्चकम् ।

‘वद’ स्थित्तिं भारताः अपि भारतवेभुषि ॥

देवेभिः ! सरस्वतीके शापसे कलिके पांच हजार वर्ष पर्यन्त तुम्हें मर्त्यलोक भारतवर्षमें रहना होगा, उसके बाद फिर तुम मेरे निकट आवोगी। इसी प्रकार दूसरे दूसरे पुराणोंमें भी गङ्गाकी स्थितिके मन्वन्थसे लिखा है। इसीसे मालूम होता है कि वर्तमान कलिके पांच हजार वर्ष पर्यन्त गङ्गाकी स्थिति है; उसके बाद चली जावेगी। वाराणपुराणमें लिखा है—

“शपिषो गंगानदीना मविषयत्वनिमी कथी”

अन्तिम कलि अर्थात् प्रलयसे पूर्व कलिमें पृथिवी पर गङ्गा न रहेगी। आधुनिक धर्ममीमांसक हिन्दू पंडित वाराणपुराणके वचनके साथ दूसरे पुराणोंके वचनोंकी मिलाकर ऐसी मीमांसा करते हैं कि अन्तिम कलिको गङ्गा चली जावेगी, अभी नहीं। टार्गनिक भो कहते हैं कि प्रलयकालके पूर्व एक भयानक सूर्य उदय होगा और उसके तेजसे पृथ्वीका समस्त जल सूख जायगा पृथ्वीपर नद, नदी कुछ भी नहीं रहेगा।

संस्कृतिकालके भौगोलिकोंका मत है कि गङ्गा हिमालय पहाड़से निकली हुई है। हिमालयके शिमला नगरसे दक्षिण-पूर्व इसकी उत्पत्तिका खान है। वह गढ़वाल राज्यके अन्तर्गत अक्षा ३४° ५६' ४" उ० और देशा ७८° ६' ३०" पू०में अवस्थित है। हिमसे आवृत उसी खानको गङ्गीक्षेत्र कहते हैं। गङ्गाक्षेत्री समुद्रतलसे ८२०० फीट ऊँचा है।

उस तुषारमण्डित गहरी खाईके चारों तरफ पत्थरका खण्ड और सृष्टिकाका अंश आधा कीस तक फेला हुआ है। यह खात पथ तकके ऊपरी भागसे क्रमशः अवतरण करके एक गहरमें आ गिरा है। उसी गहरसे गङ्गा पृथ्वीपर उतरी है। इसीका नाम गोमुखी वा गङ्गीक्षेत्री है। इस स्थानसे ७७८ कीस पथ भ्रमण करके गङ्गा बङ्गोपसागरमें मिल गई है। तुषारमयी गङ्गीक्षेत्रीके निकट गङ्गाका विस्तार १८ हाथसे अधिक नहीं होगी। उस जगह इसकी गहराई एक हाथसे भी कम है। क्रमशः नीचे आते आते दूसरी दूसरी नदियां मिल जानेसे

इसका आयतन बढ़ता गया है। उत्तर-पश्चिमसे जाऊँगी और उसके बाद अलकनन्दा आकर मिली है। यहीसे खान देवप्रयाग तीर्थ कहा जाता है। उस जगहमें दक्षिण-पश्चिम त्रिहदार है। त्रिहदारमें देहरादून, गाहरामपुर, सुजफरनगर और कुलन्द गहर होती हुई फरुखाबादमें रामगङ्गा नामक नदी आकर गङ्गामें गिरी है। गङ्गाके उत्पत्तिस्थानसे ३३४ कोसकी दूरीपर इलाहाबादमें प्रयागतीर्थ है। इस जगह जमुना आकर गङ्गामें मिल गई। यही ३३४ कोस राह गङ्गाने संकीर्ण भावमें चल प्रयाग तीर्थमें दिगाल विस्तृत रूप धारण किया है। प्रयागसे वाराणसी होते हुए बिहार आने पर पहले शोण नदी और पीछे गण्डकी और कौशिकी नदी इसमें पतित हुई है। तत्पश्चात् राजमहल होकर प्राचीन गौड़ नगरके भगनावशेषको घेती हुई गङ्गा पूर्व मुखकी गई है। राजमहलमें दश कोस पूर्वमें इसकी एक शाखा निकलकर सुर्गिदाबाद, बहरामपुर, नटिया, कालना, हुगली, चन्दननगर और कलकत्ता होती हुई पश्चिम, दक्षिणकी ओर बङ्गोपसागरमें मिल गई है। यही शाखा गङ्गा वा भागीरथी नामसे प्रसिद्ध है। मूल नदी सङ्गम स्थानसे पद्मा नाम धारण कर पावना और गोआलन्द होती हुई गई है। गोआलन्दके निकट ब्रह्मपुत्रकी यमुना नामक शाखा आकर इसमें गिरी है। उसके बाद मूल नदीने ब्रह्मपुत्रके साथ मिल कर ‘मिघना’ नाम धारण किया है और नोआखालीके निकट समुद्रमें मिल गई है। अंगरेज लोग इस मूल नदीको Ganges और जो शाखा कलकत्ता होकर गई है, उसे हुगली कहते हैं। मोहानासे ६३० कोसकी दूरी पर यमुना, ३३३ की दूरी पर घघरा २४१ की दूरी पर गोमती २३२॥० कोस दूर शोण, २२५ कोस दूर गण्डकी, १८६॥० की दूरी पर रामगङ्गा, १६२ को दूरी पर कौशी, १२० का दूरी पर महानदी, ७० की दूरी पर कर्मनाशा, ११५ को दूरी पर यमुना, ४० की दूरी पर अलकनन्दा, २० की दूरी पर भीलङ्ग ये सब नदियां मूल गङ्गामें मिली हैं

अंगरेज जिसकी हुगली नदी कहते हैं, इस लोग

उसे प्रकृत गङ्गा कहते हैं। जिस स्थानमें गंगा और यमुना विभिन्न मुखको गङ्गे है, वहासे गंगाका वहीप (डेल्टा) आरम्भ हुआ है। इस डेल्टामें गङ्गाने भिन्न भिन्न मुखसे समुद्रमें प्रविष्ट किया है। उममें गङ्गा पश्चिम प्रान्तमें और मेघना पूर्व प्रान्तमें अवस्थित है। इसका क्षेत्रफल २८००० वर्गमील है। गङ्गा-सा मुहाना सागर-तीर्थसे पूर्व चटग्राम तक १३५ कोस हीगा। इस स्थानके बीच ८ प्रधान शाखाये समुद्रमें पतित हुई है यथा गङ्गा मेघना, वा ब्रह्मपुत्र हरिणहट पुस्कर, मुर्जाटा वा कागना बडपुग, मलिन्ध, रायम गल वा यमुना, इगली। सिवा इसके अनेक शाखाएँ भूखण्डमें प्रविष्ट हो गयी हैं और नदीमुख न होनेसे अपेक्षात गभीर हैं। गङ्गाको प्रकृत सम्प्राप्ति सागरतीर्थसे ७५४॥ कोस तथा मेघनाके मुखसे ८४० कोस है। त्रीसकालमें साधारणतः गंगाका विस्तार कहीं पर आध मील, कहीं पर एक मील और कहीं पर, दो मीलसे कुछ अधिक रहता है। समुद्राय गङ्गा जिम स्थान पर अपना अधिकार जमाये हुए है, उसका क्षेत्रफल ३८११०० वर्ग मील है। वर्षाकालमें नदीका जल कितना जो बढा करता है। समुद्रके निकटवर्ती प्रदेशमें ज्वार और भाटा होता है। समय समय जिम स्थानमें जितना जल बढता, उसका परिमाण निम्नलिखित है।

	वर्षाकाल	श्रीषकाल
	फु० ६	फु० ६
इलाहाबाद	४५ ६	२८
बाराणसी	४५ ०	३४
कहलगाव	२८ ६	२८ ३
जैलघी	२६ ०	२५ ६
कुमारखाली	२२ ६	२२
अग्रहीप	२३ ८	२३
कलकत्ता (भाटाके समय)	७	६ ७
ढाका	१४	

हरिद्वारमें गङ्गाकी चौडाई बहुत कम है। वहा ३००० बाराणसीमें १८००० राजमहल सत्र समय २०७००० पर ज्वारके समय १८०००० घनफुट जल प्रति सेकेंड निकलता है। परोक्षा करके देखा गया है कि इलाहाबादसे बाराणसी तक १५५ कोस पथ प्रति कोस १ फुटके हिमा

वसे निम्न हुआ है। बाराणसीसे कहलगाव तक प्रति कोस १० इंच, कहलगावसे हुगली नदीके आरम्भ तक प्रति कोस ८ इंच वहासे कलकत्ता तक प्रति कोस ८ इंच और कलकत्तासे समुद्र पथ तक २से ४ इंच तक जल नोचा पड गया है।

अन्यान्य नदियाँकी भूति गङ्गा अपने उत्पत्ति स्थानसे जितनी दूर गई है उनका वेग घटा है। प्रथम उनका वेग प्रस्तर खण्ड और श्रुतिकाको बहा कर ले जाता है। वेगकी न्यूनता और माध्याकर्षणके प्रावण्यसे प्रस्तरखण्ड और श्रुतिका तलदेश पर गिरती है। इसी कारण नदी जितना समुद्रके समीप पहुँचती है, गभीरता घटती है, बीचमें रेत पड जाती है। वर्षा समय उसके ऊपर रेत जम जाती है। इसी प्रकार रेत इतनी उठ आती कि नदी बहा तक नहीं पहुँच पाती, उसके पार्श्व होकर अपना राह बनाती और एक ओरकी राह तोड करके दूसरी ओर दिखाती है। इसी प्रकार नदीके मुखमें सागर बच पर प्रकाण्ड भूखण्ड निमित्त होता है और डेल्टा कहलाता है। भूतत्त्ववित् अनुमान करते हैं, जिस स्थानमें गङ्गा पट्टामसे स्वतन्त्र होकर प्रवाहित हुई है, उसी स्थानसे गङ्गाके डेल्टा आरम्भ हैं। उसी स्थानसे आजतक जहा समुद्र है समस्त प्रदेश पहले समुद्र ही था। वही समुद्र आजकल मनुष्योंके वासोपयोगी भूमि बग गया है। इस समस्त जनपदकी श्रुति गङ्गाकी ही क्षपाका फल है। हिमालय अञ्चलको सहीसे उनका निर्माणकार्य सम्यक् हुआ है। कलकत्तमें नदीकी श्रुतिकी २५० हाय नीचे जीवकहान काठ, कोयला आदि निकलते हैं। प्राय ८६ वर्ष पहले गाजीपुरमें एक समय परीक्षा करके देखा गया कि वहा पर प्रति वष गङ्गा ६३६८०००० टन श्रुतिका लाकर जमा करतो है। एक टन (२७ मन १८ सेर)के बराबर है। इसीसे समस्त पडता, कितनी श्रुतिका गंगा प्रतिवष बढतो है। गंगाको उत्पत्तिकाल सेहा यह काम चल आता है। इससे कितने स्थान पर कितनी नवोन भूमि निर्मित हुई, वह कोन बणन कर सकता है। गंगा जिम राहसे चली है उसका पार्श्वव्य प्रदेश मम धिक उबरा है। गंगाका रेतोत्पा जल दूहनम प्रवा-

हित होकर जमीनको उर्वरा बना देता है। अथच अन्यान्य नदियोंको तरह इसकी प्रबल बाढ़ ग्राम, नगर बहा करके मनुष्योंका सर्वनाश नहीं करती है। रेलवे होनेके पूर्व गंगा समस्त देशीय वाणिज्यके समुदय द्रव्यादि वहन करती थीं। रेलवे होने पर भी वह काम विलकुल बन्द नहीं है। पहले युक्तप्रदेशका पर्यट्य गंगापर्यसे ही समुद्रको जाता था। अब भी चावल, दाल, तीसी, सरसों आदि द्रव्य गंगा वलसे रेलसे रफ्तनी होता है।

अंगरेजोंके समयमें गंगासे कई एक नहरें निकाली गई हैं। वे नहर गंग (Ganges Canal) कहलाती हैं। गंगाकी नहरें प्रधानतः दो भागोंमें विभक्त हैं—उत्तर (Upper) और निम्न (Lower)। गङ्गा तथा यमुनाके मध्यवर्ती प्रदेशको दोआब कहते हैं। १८३७-३८ ई० में इस दोआबमें एक भयानक दुर्भिक्ष हुआ था जिससे प्रजाकी अधिक हानि हुई रही। भविष्यत्में इस तरहका अकाल न पड़े और कृषिकार्यके लिये प्रचुर जल पाया जाय, इसके लिये मनुष्योंने नहरोंका होना परमावश्यक समझा।

१८४२ ई०में हरिद्वारके निकटसे नहर कटाना आरम्भ हुआ। १८५४ ई०के द्वाँ अंग्रेजको यह काम सम्पूर्ण हो गया। हरिद्वारके उत्तर गणेशघाटमें यह नहर गंगासे निकल सहारनपुर, मुजफ्फरनगर होती हुई फतेहगढ़ तक चली गई है। वहाँ फिर उसीमें एक शाखा निकल पश्चिममुख होती हुई, मीरट लाई गई है। वेगमावादके पास दक्षिण-पूर्वमुख बुलन्दशहर और अलीगढ़ होती हुई, अकवरावादमें आ यह दो शाखाओंमें विभक्त हो गई है। एक शाखा डटावा और दूसरी कानपुरको गई है। इस नहरकी लम्बाई २२२॥-कोस है। इसके बनानेमें २ कोटि २४ लाख २४ हजार रुपये व्यय हुये थे। इस खाड़ीके तैयार होने पर इजिनियर कटली साहबके सम्मानार्थ तोप छोड़ी गई थी गंगाकी दक्षिणी नहर भी उपरोक्त नहरसे बड़ी है। यह नहर नदरई स्थानमें काली नदी और एटाके पश्चिममें ईशास स्थान होकर गोपालपुर, कानपुर, शाखा और जैरा नामके स्थानमें डटावासे मिल गई है। तत्प-

श्चात् शिकोहाबाद पार होकर दक्षिण-पूर्वमें इष्ट इण्डियन रेलवेके साथ समान्तर भावमें जाकर कानपुर जिलाके दक्षिण शिकन्दरा और भगिनीपुर होती हुई यमुनामें मिली है

विहारमें शीण और गङ्गाके बीच कुछ नहरें हैं। कलकत्ताके पूर्व दिशामें एक नहर गई है। इन नहरोंमें हम लोगोंको यथेष्ट लाभ है। जहाँ जलके अभावसे उपज नहीं होती वहाँ नहरों द्वारा कृषिकार्यमें सुविधाये होने लगे हैं। वृष्टि नहीं होने पर भी नहरका जल कृषिकार्यमें लाभ पहुंचाता है।

गंगाका माहात्म्य इसी तरह क्रमशः बढ़ा है। पृथ्वीके किसी नदीतीर पर उतने तीर्थस्थान नहीं हैं, जितने गंगाके किनारे देखे जाते हैं।

जिस स्थान पर गङ्गा समुद्रमें मिली है उसीका नाम गंगासागरसंगम है। अत्यन्त प्राचीन कालमें ही यह स्थान हिन्दुओंके अतिपवित्र तीर्थस्थान माना गया है। (मागत ३८५ पः हरिवंश १०८ प.) किन्तु पहले इस सागरसंगमकी स्थितिके विषयमें बहुतोंका मतभेद रहा। भूतत्वविद् पण्डितोंका अनुमान है कि एक समय समुद्रका स्रोत राजमहल तक प्रवाहित हुआ था। ऐसी दृश्यामें स्वीकार करना पड़ेगा कि, वर्तमान स्थानसे प्रायः १५० कोस उत्तरमें सागरमङ्गल था। २४ परगना, नदिया, यशोर वर्धमान प्रभृति जिला गंगा नदीके गर्भमें उत्पन्न हुए थे।

महाभारतके तीर्थयात्रापूर्वाध्यायमें लिखा है कि “कौशिकी तीर्थ में (गंगा और कोशो नदीके संगम स्थान राजा युधिष्ठिर उ पण्डित होकर क्रमशः सभी मन्दिरोंमें गये थे। उसके बाद उन्होंने पञ्चशत नद्युक्त गंगासागरसंगम देखा और तब सागरके किनारे कलिङ्ग देश था।”

(वनपर्व ११३ प०)

रघुवंशमें रघु राजाके दिग्विजय-वर्णनके पढ़नेसे मालूम पड़ता है कि उस समय वह देशके पश्चिम भागमें गङ्गाजी बहती थी और इनके बीचमें कई एक बड़े बड़े होप थे। (रघु ४३५-१०)

सातवीं शताब्दीमें एनचुयाङ्ग कामरूपसे १०० कोस दक्षिणकी ओर समतट नामक स्थानमें गये थे। उनके वर्णनसे यह मालूम होता है कि वह स्थान वर्तमान ढाका जिला के उत्तरीय भागमें है और समुद्रके किनारे अवस्थित है।

वह्मशासो जिसको आजकल गङ्गा कहते हैं उसका प्रकृत नाम भागीरथी है। भौगोलिकके मतमें यह मूल गङ्गा नहीं है वरन् गङ्गाकी एक शाखाभाव है। गौडनगरके दक्षिणमें गङ्गामें यह शाखा निकली हुई है। वर्तमानके मानचित्रसे देखा जाता है कि गौड के दक्षिण जो कर पूर्व मुख होती हुई जो नदी पहले पद्मा कहलाती थीर पीछे कौतिनाशा कहना कर समुद्रमें मिल गई है, वही नदी आजकल प्रकृत गङ्गा नदी कहकर पुकारी जाती है। ० वर्ष पहले जिस स्थान हो कर गङ्गा बहती थी, आजकल वहा जल नहीं है। कुछ दिन पहले ठीक वही स्थान सागरमङ्गल था, आजकल वहा स्थान भूभाग है।

२४ परगनामें इस तरहका परिवर्तन बहुत जगह देखा जाता है। आजकल जिम कालीघाट हो कर मुद्रा कार आदिगङ्गा प्रवाहित होते हैं, किसी समय वहा स्थान हो कर विस्तीर्णा भागीरथी बहती थी। आजकल काली-घाटके थोडा दक्षिण जानसे बोध होता है कि वहा ग कि गभ के प्रतिरिक्त और कोई दूसरा चिह्न नहीं रह गया है। किन्तु दो मो वष पहले उस स्थान जो कर खोत खती गङ्गा बहती थी। समुद्रके साथ गङ्गाका समग था। बड़ी बड़ी नावें वहां होकर जाती आती थीं। कालीघाट कुछ दूर दक्षिण यद्यपि आदि गङ्गा अदृश्य हो गई है तथापि आजकल उस स्थानके रहनेवाले अपनेको गङ्गा तीरवासी बतलाते हैं। गङ्गागभ कट जानसे जो सय तालाव बन गये हैं, उन्हींके जलको गङ्गा जल समझ कर पुजादि सकल कार्यमें व्यवहार करते हैं।

आजकल आदिगङ्गा अर्थात् वङ्गदेशकी प्रकृत गङ्गा समुद्रसे मिली नहीं है। इस आदिगङ्गाके इसतरह अपूर्व परिचय तब देख कर प्रसिद्ध स्मार्त रघुनन्दनने लिखा है—

“ववाहमथ विच्छेदे तु यत्र धर्मिभवाहिस्रार दीध ।

चक्षुषा इदानीं गङ्गाशा सागरभगित्वात् ५८५ ३”

आजकल जहा गङ्गाका प्रवाह नहीं है वहा गङ्गाकी धन्त मन्दिना जैसा स्वीकार करनेमें कोई दोष नहीं है। नहीं तो वर्तमान समयमें गङ्गाका सागरमें जाना यह अमिद्ध बोध होगा।

२ हिमवत् और मैनाकी बड़ी लङ्की ।

३ शान्तनुकी स्त्री और भीष्मकी माता या धर्मकी स्त्रियोंने से एक। ४ आकाशगङ्गा। ५ पाताल गङ्गा। ६ नोलकण्डकी स्त्री और शंकरको नानी। (हि ० पु ०) ७ नारायणका पुत्र जो बृहदारण्यकोपनिषदकी टीकाके रचयिता थे।

गङ्गाका (स० स्त्री०) गङ्गा एव गङ्गा स्वार्थे कन टाप् आकारस्य विकल्पेन ऋत्वत्वम् भाषितप्रक्याय ० १३४८ गङ्गा । गङ्गाकृत—विजयाद्यै पवतके कूर्टो (म दिरो) मेंसे एक कृत । गङ्गाक्षेत्र (६० स्त्री०) गङ्गाया क्षेत्र, ६ तत्पु ० । गङ्गा तीरसे दोनों पार्श्वकी दो कोम तककी जमीन।

“तीराद् अथ नृत्तमान्न वरित चैत्रमुच्यते । (कन्द०)

गङ्गाखैर—हैदराबादराज्यके परभनी जिलाकी एक जागीरका मंदर । यह अक्षा० १८ ५८ उ० और देशा० ७६ ४५ पू० में गोदावरीतीर पर अवस्थित है। लोकमख्या लगभग ५००० होगी। यहा दो विद्यालय, एक स्थानीय डाकघर और एक सरकारी डाकघर तथा पुनिम इन्स पेक्टर और सब रजिस्ट्रारका आफिस है।

गङ्गागोविन्दसिंह—पाडकपाडा राजव शके प्रतिष्ठित और सुप्रसिद्ध वारेन हेटि गम्के दीवान। उनके पिताका नाम गोरारह था। गङ्गागोविन्द उत्तरराटीय कायस्थ समाजके मान्यगण कुलोन लक्ष्मोधरके व श्रीय थे। वे १७६८ ई० के पहले अपने बड़े भाई राधागोविन्दसिंहके स्थलाभिषिक्त होने पर वङ्गदेशके नायव सुवादार महश्वद रजा खांके अधन कानूनगोका काम करते थे। महश्वद रजा खांके पश्चात् वे न पर उनको भो नोकरी छूट गई थी। उसके बाद वह कलकत्ता आकर कायलाभकी भाशासे रहने लगे। क्रमय नाट हेटि गमकी कर्जाहटि उनपर पडे। बहुत थोडे ही दिनेमें कायदक्षता और चतुरता गुणके कारण वे हेटि ग मके दोवान हो गये कोई कोई कहते हैं कि कान्त वावूके यदसे गङ्गागोविन्द हेटि ग्म के दीवान हुए थे

दोवान होनेके बाद राजस्व विभागके समस्त कार्या का भार उन्हींके ऊपर भोपा गया। वे देशो मनुष्योंमें धूम मेने लगे। उन्हींके द्वारा बडे नाट हेटि गमकी भो यथेष्ट धूम मिलने लगा। १७७५ ई०के पहले मङ्गलाममें धूम मेनेके अपगधसे उनको नोकरी छूट गई।

किं एतद्व्यवस्थायै ज्ञानं मन्दिरे

किन्तु शीघ्र ही उनका भाग्य फिर भी चमक उठा। मोनसन साहबके मृत्यु के बाद हैष्टिंग्सका एकाधिपत्य बढ़ गया और उनने फिर भी १७७६ ई०के आठवीं नवम्बरकी गंगागोविन्दकी टोवानके पद पर नियुक्त किया। इस समय गंगा गोविन्दकी ही चली बनी थी। वड़े बड़े देशीय जमीन्दार तालुकदार और जमीन्दारके नायब गुमस्ता भेंट ले जाकर उनके निकट सर्वदा खड़े रहते थे। उस समय इस तरहका दशसाला बन्दोवस्त नहीं था, पांच ही वर्षका मियादी बन्दोवस्त रहा। इस तरह पूर्ण होने पर जिसके साथ नया बन्दोवस्त करनेकी इच्छा होती थी, गंगागोविन्द उमीके साथ कर देते थे। ऐसी उच्च क्षमता हाथमें पाकर वे जिस तरहका अत्याचार और स्वजातीयका ऐसा अनिष्ट कर गये है उसका बर्णन नहीं किया जा सकता है; उन्हींके प्रबल प्रताप के समय दिनाजपुरके राजाका देहान्त हुआ था। उनके नावालिग पुत्रका रक्षाभार गवर्णमेंटके हाथ रहा। गङ्गागोविन्दके यत्नसे देवीसिंह उनके राज्यके कार्यकर्त्ता बनाये गये। उस समय देवीसिंह दिनाजपुरराजकी कई एक जमीन्दारियोंका अन्यायसे दखल कर गंगा गोविन्दको भेंट देने लगे इस तरह बहुत थोड़े ही दिनोंमें गंगा गोविन्द वंगदेशमें एक मान्यगण और प्रसिद्ध व्यक्ति गिने जाने लगे। उनकी प्रभुता यहां तक बढ़ गई कि राजा कृष्णचन्द्र भी उनके भयसे कांपते थे।

१७८१ ई०की कलकत्तामें एक राजस्व-समिति (Committee of Revenue) स्थापित हुई। इस समयसे लार्डकानवालिसके आगमनकाल पर्यन्त राजस्व विभागमें गङ्गागोविन्दहीकी प्रधानता थी। उल्कीचप्रिय हैष्टिंग्स विना गङ्गागोविन्दकी अनुमतिसे कोई कार्य नहीं करते थे। उन्हींने नानाप्रकारके अन्याय पय अवलम्बन कर प्रचुर धन उपाजन किया। ऐसा सुन जाता है कि उन्हींने अपनी माताके आड़में लगभग बारह तेरह लाख रुपये व्यय किये थे। उस तरहका महा-आड बङ्गदेशमें और कभी भी नहीं हुआ था। उस आड़में बङ्गदेशके सभी राजे और प्रधान जमींदार पस्थित थे तथा कृष्णनगराधिपति राजा शिवचन्द्र उनके घरमें भोजन करनेके लिये बाध्य किये गये थे।

(कान्दी देवा)

हैष्टिंग्स नौकरी छोड़कर स्वदेश लौट गये। गङ्गागोविन्द भी कर्मच्युत हुए। प्रसिद्ध वारमी एडमण्ड वार्क जिसममय विलायतको पार्लियामेन्ट-महासभा में हैष्टिंग्सके विपक्ष वक्तृता देते थे, उस समय वे गंगागोविन्दकी खूब निन्दा करते थे। गङ्गागोविन्दने बहुतसे जमींदारोंका नाश भी किया और अन्तमें अच्छी सत्कीर्ति भी प्राप्तकर देहत्याग किया।

गङ्गाचित्री (सं० स्त्री०) गङ्गास्थिता चित्री। चित्रविशेष, काला (सरवाला एक जलपत्ती, एक जल चिड़िया जिसका मिर काला होता। इसका पर्याय देवह, बगवत् और जलकुतुड़ी है।

गङ्गाज (सं० पु०) गङ्गाया जायते, जन + ड। १ भीष्म. २ काति केय।

गङ्गाजमुनी (हिं० वि०) १ मिला हुआ, दो रंगा। २ सोने चांदी, पीतल तांबे दंगे धतुओंके मूनहले रूपके तारोंका बना हुआ। ३ काला उजला, स्याह सफेद। गङ्गाजल (सं० स्त्री०) गङ्गाया जलं इ-तत्। १ गङ्गाका जल। २ एक कपड़ेका नाम जिसका रंग उजला और सूत महीन होता है।

गङ्गाजली (सं० स्त्री०) जल भरनेकी शीशी, वह शीशी जिसमें यात्री गङ्गाजल भरते हैं।

गङ्गाजली (हिं० पु०) मछली पक नैका जाल, जो रोड़ा घासका बना हुआ रहता है।

गङ्गाटये (सं० पु०) गङ्गातटे याति पृथोदरादिवत् तकारलोपे साधुः। मस्यप्रविशेष, एक तरहकी मछली जो चिड़ी मछली भी कहलाती है।

गङ्गातीर (सं० स्त्री०) गङ्गायास्तोरं इ-तत्। गङ्गा गर्भसे १५० हाथ तककी जमीन।

“साहं हस्तगतं यावत् गर्भं तस्मैरुच्यते। (शतधर्म)।

गङ्गादत्त (सं० पु०) गङ्गया दत्तः इ-तत्। १ भीष्म।

“मत्प्रसूतं विशानोहि गंगादत्तमिमं सुतम्। (भारत १।८८ अः)

२ एक प्राचीन संस्कृत कवि। ३ चातुर्वर्ण्य विचार नामक ग्रन्थप्रणेता।

गङ्गादयाल दुवे—हिन्दीके एक कवि। युक्तप्रदेशस्थ राध-बरेलीके निसगर ग्राममें किसी कान्यकुल ब्राह्मणके घर इनका जन्म हुआ। १८८३ ई०की यह जीवित थे।

गङ्गादास—१ छन्दोगीविन्द नामक सस्कृत ग्रन्थप्रणीता ।
२ उक्त छन्दोगीविन्द नामक ग्रन्थप्रणीताका शिष्य गोपाल
दामका लडका, अश्वत्थचरित काव्य और छन्दोमञ्जरी
नामक ग्रन्थ बनानेवाला । ३ वेदान्तदीपिकाके प्रणीता ।
४ वाक्यपदी नामक व्याकरण रचयिता । ५ पौविरका
पुत्र दूमरा नाम ज्ञानानन्द । इन्होंने सस्कृत भाषाको
तिलकखण्डप्रभासिकी रचना की है । ६ हिन्दीके
एक कवि । इनको भक्तिरसविषयक कविता मिलती है ।

“मज्जम वतल माही मज सोवलो ।

खलियो तो बन्हा नोता और ठण्ण पावो ।

पावको मिळीरो चरिये और पोबदावो ।

दायो सोका रच चरिये और तण्ण पावमावो ।

सेज तो चण्णो चरिये वपणतो पावो ।

बिला तो चट्टे चरिये और मइवावो ।

पूत तो सपूत चरिये कुणको निमावो ।

७ छे गङ्गादास दुनिया मायामि सुचलो ।”

७ दिगम्बर जैन ग्रन्थकर्ता । इनको रचा हुई पुस्तकामिसि
पञ्चवैखपाल पूजा, सुगन्धिदग्गम्य व्यापन, सम्मोदशिखर
पूजा, सम्मोदविलास—ये पुस्तकें मिलती हैं ।

गङ्गादित्य (स० पु०) काशीमें विजयेश्वरके दक्षिणस्थित
आदित्यविशेष । इनके दर्शन करनेसे समस्त पाप-विनाश
होती है ।

“गङ्गादास एत गृहाना विजये शब्दविशेष स्थित ” (काशोत्तर ५१५)

गङ्गाधार (स० स्त्री०) गङ्गाया भूम्यवतरणधार, है तत् ।
इसका दूमरा नाम मायापुरी और हरिधार नामसे
प्रसिद्ध है । इसी स्थानसे गङ्गा भारतवर्षमें प्रविष्ट हुई
है । किमोके मतसे इस स्थान पर दक्षयज्ञ होता था ।
ऋषिगण सर्वदा इस स्थान पर वास करते थे ।

गङ्गाधर (स० पु०) गङ्गा धरति, धृ, अच् । १ शिव
सूर्यवशीय भगोरथके प्रार्थना करने पर शिवजीने
गङ्गाकी भक्तक पर धारण किया था इस लिये
इन्का नाम गङ्गाधर पडा । २ एक प्राचीन कौपकार ।
३ एक प्राचीन माध्यन्दिनोय शाखाध्यायी स्मृत पण्डित
रामाग्निहोत्रका पुत्र । इन्होंने अनेक सस्कृत ग्रन्थ प्रण
यन किये हैं । ४ काठकाञ्चिक नामक गृह्यमन्त्रग्रन्थकार ।
५ इन्द्रप्रकाश नामक शब्दन्दुगीवरका टीकाकार ।

६ एक उपादिशक्तिकार । ७ आचारतिलक नामक
स्मृतिसंग्रहकार । ८ चन्द्रमानतन्त्र नामक ज्योति शास्त्र-
कार । ९ तर्कदीपिकाका एक टीकाकार । १० कायस्थो-
त्पत्ति और चातुर्वर्ष्यविवरण नामका सस्कृत ग्रन्थकार ।
११ तिथिनिर्णय और सर्वलिङ्ग । मन्यामनिर्णयप्रणेता
और दायभागका एक टीकाकार । १२ न्यायकुतूहल
और न्यायचन्द्रिकाप्रणीता । १३ निर्णयमञ्जरी नामक
ग्रन्थकार । १४ एक विख्यात वैयाकरण, इन्होंने सस्कृत
भाषामें व्याकरण परिभाषा, हृत्तदपण नामक छन्दो-
ग्रन्थ और शब्दपाठको रचना की है । १५ प्रतिष्ठा-
चिन्तामणि और प्रतिष्ठानिर्णय नामक ग्रन्थकार ।
१६ बदरिकामाण्डव सग्रहरचयिता । १७ योगरत्नावली
प्रणीता । १८ भास्वतोका टीकाकार ।

१८ रसपद्माकर नामक अलङ्कारशास्त्ररचयिता ।

२० वसुमतोचित्रामन नामक सस्कृत काव्यकार ।

२१ विधिरत्न नामक धर्मशास्त्रकार ।

२२ विजयेश्वरस्तुतिपारिजात नामक ग्रन्थकार ।

२३ वेदान्त्युतिमारम ग्रह नामक दर्शनशास्त्र—
रचयिता ।

२४ चिद्विषयमरचित व्याकरणटीपका “व्याकरणप्रभा”
नामको टीका बनानेवाला ।

२५ ‘शकुन्तीप्रश्न’ नामका एक शकुन्तलाप्रणीता ।

२६ पौडगकर्मपडति और मस्कारभस्कर नामका
संग्रहकार ।

२७ सद्गीतरत्नाकरका ‘सद्गीतमेषु नामका टीका-
कार ।

२८ किमी नैयायिक पण्डित, इन्होंने सामय्रीवाद
नामसे न्यायग्रन्थ प्रणयन किया है ।

२९ सूर्यशतकका एक टीकाकार ।

३० आत्तपदार्थमंथन और स्मृतिचिन्तामवि-
रचयिता ।

३१ डाहनराज कर्णकी सभाके एक कवि, विद्वान्-
ने इन्की कवित्वमें पराजय किया था ।

३२ भैरव देयप्रका पुत्र, इन्होंने प्रश्नभैरव और
सुहर्तभैरव नामका ज्योति शास्त्रकी रचना की है ।

३३ रामचन्द्रका पुत्र और याज्ञिकनारायणका भाई, १६०६ ई०से पहले स्तम्भतीर्थमें ये रहते थे। इन्होंने अनेक संस्कृत ग्रन्थ बनाये हैं।

३४ शिवप्रसादका पुत्र, सेतुसंग्रह नामका सुग्ध-बोधका टीकाकार।

३५ एक प्रसिद्ध संस्कृत ग्रन्थकार ये वीरेश्वर महाशयकके पौत्र, मदाशिवके पुत्र और अहैतानन्द यतिके शिष्य थे। इन्होंने बहुतसी संस्कृत पुस्तकें बनाई हैं। जिनमेंसे कुछ निम्नलिखित हैं—आरामादिप्रतिष्ठापद्धति, गङ्गास्तोत्र, तर्कचन्द्रिका, तोष काशिका, तैत्तिरीय-सारायं चन्द्रिका, ध्यानवल्लरी, नामकौमुदी, नारायण-तत्त्ववाद, प्रपञ्चमारविवेक, भावमारविवेक, मणिकणिका-स्तोत्र, मन्त्रवल्लरी, मन्त्रमहोदधिटीका, रामस्तुति, विष्णु-सहस्रनाम, शारीरकसूत्रसारायं चन्द्रिका।

३६ हिन्दी भाषाके एक कवि। इन्होंने 'विहारो सत-सई'को एक उपसत्सैया नाम्नी टोका कुण्डलियो और दोहोंमें लिखी है। यह भजन आदि भी बनाते थे। यथा—

“रचना कौमूनी हरिनाम।

या देहियाकी गर्वन कौजि ज्यों वादलकी घाम ॥

सट रस मौजन खाट बतावे कौधी रूपटी काम।

गंगाधरके बसवांमो बोधे आतम राम ॥”

३७ देवलाचनविधिरचयिता। ३८ इनका दूसरा नाम लक्ष्मीधर है। ये जब्बुसर नगरवासी दिवाकरके पौत्र गोविन्दके पुत्र और विष्णुके कनिष्ठभ्राता थे। इन्होंने संस्कृत ग्रन्थ रचना की है।

गङ्गाधर कविराज—बङ्गदेशके एक असाधारण पण्डित। इन्होंने १७२० शताब्दीके आषाढ़ कृष्ण पक्षीय अष्टमी तिथिमें यशोर जिल्लाके मागुरा ग्राममें, जन्मग्रहण किया था। इनके पिताका नाम भवानीप्रसाद राय था। गङ्गाधर पांच ही वर्षकी अवस्थासे जन्मभूमिस्थ गोपीकान्त चक्रवर्तीके निकट विद्याध्ययन करते थे और दस वर्ष तक उन्हींसे शिक्षा लाभ करते रहे। चक्रवर्ती महाशय उस छात्रकी मेधा और स्वभाव-चरित्र देख कर विस्मित हो गये और भवानीप्रसादसे बोले, “गङ्गाधर एक कविराज

और पण्डित होगा।” तत्पश्चात् गङ्गाधर अपने पिताद्वारा नन्दकुमार सेनके निकट सुग्धबोध व्याकरणके बहुतसे अंश पाठ करने लगे और अर्वाग्रष्ट भाग माणिकचन्द्र विद्यामागरसे समाप्त किया। इसके बाद ये यशोरके वार्हङ्गशाली ग्रामनिवासी रामरत्नचूड़ामणिके निकट अभिधान, अलङ्कार, काव्य इत्यादि पढ़ने लगे। अठारह वर्षकी अवस्थामें ये राजगार्ही बेलवरिया ग्रामनिवासी रामकान्त सेनसे आयुर्वेदीय चरकादि ग्रन्थ पाठ करते थे। वे प्रत्येक दिन १० पृष्ठ पाठ लेते थे और उसे अभ्यास कर मनमें दृढ़ाङ्कित करनेके लिये तथा लिपि-कार्यमें पटता सम्पादनके लिये प्रतिदिन उन दस पृष्ठोंकी लिपिवद्ध करते थे। वे रामकान्त अध्यापकके दूसरे शिष्योंको व्याकरण, अभिधान और साहित्यादिमें पाठ देते थे। इस समय उन्हींने सुग्धबोध व्याकरणकी एक टीका की थी।

यहां आयुर्वेदका पाठ समाप्त करके ये नाटोर नगरको चले गये उस समय इनका पिता कविराज भवानीप्रसाद राय नाटोर महाराजोंके प्रधान चिकित्सक थे। नाटोर राजधानीमें उस वक्त लक्ष्मी नामके प्रसिद्ध अध्यापक आये थे। उन्हींने गङ्गाधरकी वात्स्यायन्याकी लिखित टीका पढ़ कर भवानीप्रसादसे कहा कि आपने यह प्राचीन टीका कहाँ पाई? इस टीकाका तो प्रचार नहीं है। यह सुन कर भवानीप्रसाद कुछ सुसङ्गुराये। इस पर अध्यापकको विरक्त होते देख उन्हींने हास्यका प्रकृत कारण प्रकाश किया। जब अध्यापकने जाना कि वह टीका उनके पुत्रका प्रणीत है तो वे अवाक हो गये और गंगाधरकी अनेक आशीर्वाद देने लगे। गङ्गाधर नाटोरमें अपने पिताके पास बहुत थोड़े दिन रहनेके बाद कलकत्ता चले गये। उस समय कलकत्ता अंगरेजोंके अनुकरणमें संलग्न था और पाश्चात्य डाक्टरीकी भरमार थी। इस लिये वहां इन्हे विद्यावधन तथा व्यवसाय विस्तारकी विशेष सुविधा देख न पड़ी जब इन्होंने सुना कि पुरानी राजधानी मर्शिदाबादमें दुर्दशाग्रस्त होने पर भी प्राचीन कालसे ही बहुत अध्यापकोंका वास है। संस्कृतकी चर्चा और आयुर्वेदोक्त चिकित्साका समादर प्रचुर है तो वे वहीं चले गये। उस समय उनकी अवस्था सिर्फ २१ वर्षकी थी।

गङ्गाधर उसी अल्पवयसम प्रधान प्रधान चिकित्सक और अध्यापकके साथ वाटानुवाद द्वारा अपना मत स्थापन कराते गये और अनेक तरहके कठिन रोगग्रस्तको शरीरग्य करते हुए नाना म्यानेमे उनकी ख्याति फैल गई।

इन्होंने वाक्यकालकी पाठशावस्थामे सुग्धबोधकी जो टीका रची थी उसे देख कर नाटोरके एक प्रसिद्ध अध्यापकने उनकी अमित प्रशंसा की। उस टीकाकी शोकसमया दगमहस्र थी। इसके बाद बीपदेव गोस्वामे सुग्धबोध-व्याकरणके जिनमे अशकी अपूर्ण हो गए थे, उसकी इन्होंने पूर्ण किया और फिर सम्पूर्ण सुग्धबोधकी टीका की। व्याकरणमे इन दो टीकाओंमे इनकी बुद्धि, विद्या और अद्भुत कीर्ति और अधिक बढ गई।

उस समय उन्होंने दो महाकाव्य लिखे थे, एकका नाम "नोकालोकपुरुषीय" और दूसरेका नाम "दुर्ग-बधकाव्य" था।

बुद्धिमान और मेधावी मनुष्य जिस और बुद्धि चलाया करते हैं उसी और वे पारदर्शिता और उन्नति प्रदर्शन मे समर्थ हो सकते हैं। गङ्गाधर चित्रविद्याकी भी सेवा कर उसने उत्तकाम्य हुए थे। देवदेवीकी मूर्ति बनानेमे भी इनकी सपटुता थी। इनका पिता दुर्गाख्य करते थे। प्रतिमा निर्माताको मृत्यु होनेके बाद गङ्गाधर ने अपनेमे ही एक मूर्ति बनाई थी।

गङ्गाधरकाव्य (म० पु०) शौचविशेष। कष्टदकगाक, बनार, जामुन, मिथाडा, वल्गूठ, वाला, मोया और सोडका काव्य तैयार करनेकी प्रणालीमे इनका काव्य करनेमे उनकी तरहके जो इशत होते हैं वे भा मित जाते हैं।

गङ्गाधरचूर्ण (म० झी०) जोर्षालिसाररोगनाशक शौचविशेष, एक तरहकी न्या जिममे पुराना पतिमार रोग जाता रहता है। इसकी प्रमुख प्रणाली—धायफूल, आम मको, यक्रीधर, शकगादि, श्लोनाक, यटिमधु, श्री विष, अम्य, और चाम्पयौत्र, भौंड, विष, वाला मोध, कृत्त प्रत्येकका समभाग लेकर चच्छी तरह चूर्ण करनेके बाद मिना देना चाहिये। इसीकी गङ्गाधरचूर्ण कहते हैं। शायनक धीये हुए अनरु माघ इमका सेवन करनेमे

जीर्षालिसाररोग नाश होता है। (बंशच) ,

गङ्गाधरचक्रवर्ती—य गदेशका एक श्रार्त पण्डित। इन्होंने आदित्यभावाथ टीपिकाकी रचना की है।

गङ्गाधरदेव—उडोमाके एक राजा। उल्लेख ११०।

गङ्गाधरनाथ—रममारमयह नामक वैद्यक ग्रन्थकार।

गङ्गाधरभट्ट—१ विद्वतकीमुदी नामक जटापटलका टीकाकार। २ भाईचिन्तामणि नामक मौसामासुवका टीकाकार। ३ हलरचित समयतोका समयतकभाव-लेगप्रकाशिका नामक टीकाकार।

गङ्गाधर यति—एक प्रसिद्ध वेदान्तिक। रामचन्द्र मरस्वतीके शिष्य सव श्र मरस्वतीके प्रशिय और योग वाशिष्ठतात्पय प्रकाय रचयिता भानन्दबोधेन्दु मरस्वतीके गुरु। ये गङ्गाधर भिष्ठ, गङ्गाधर मरस्वती पयवा गङ्गाधरचन्द्र यति नाममे विख्यात है। इन्होंने कई एक सख्तकी किताबें रचना की है। जिनमेमे कुछ ये हैं—चन्द्रकीशार नामक वेदान्तमिहान्तचन्द्रिकाकी टीका, प्रणवकल्पप्रकाश, वेदान्तमिहान्तमञ्जरी और प्रकाश नामक उसकी टीका शान्वाच्यमिदि तथा मोच नामकी उसकी टीका, मिहान्तमयह और उसकी टीका, श्वाराच्यमिदि एव कैवल्यकल्पद्रुम नामक उसकी टीका

गङ्गाधर वाजपेयी—अधैदिकदगनसयह और रमिकरञ्जनी नामके अनह्वारग्राह्य रचयिता।

गङ्गाधर शर्मा—सुग्धबोधके एक प्रसिद्ध टीकाकार।

गङ्गाधर शास्त्री—क्षत्रराज चम्प के प्रणेता। इनकी कार्य दक्षता देख बरोदाके राज्य-परिचालक (Minant) और गायकवाडक भार्द फते सिहने इनकी अपना प्रधान कर्म चारी बनाया। इनकी प्रखरबुद्धि और दक्षतामे मनुज हो शैलेष्टण्ट नेकिटष्टण्ट कर्षन साकारने इन्हे बरोदाके प्रधान मन्त्रीके पदमे प्राभूयित किया। १८१४ ई०में पंगया बाजीराव पुनाके गायकवाड एजिष्टमें महबूदो होनेके कारण ये ठीक ठीक क्रिमाव किताब देनेके लिये पुना गये। गायकवाडने पंगयाके शरित और विश्राम घातकतामे मन्दिष्य हो प्रतियागवर्षमेंकी मन्थन किया। गङ्गाधरके पुना पधुधने पर पेशवानी भादर पुर्बक जनता मन्कार किया और कुछ दिन पुनामे रहनेके लिये अनु-

रोध किया। वाट १८१५ ई०के जुलाई सहितमें पेशवा गङ्गाधरको साथ लेकर तीर्थ यात्राके लिये पुरन्धरपुरको गये। वहां १४वीं जुलाईके मध्यम समय त्रिम्बकजी पेशवाके साथ मिलनेके लिये उन्हें विठोवाके मन्दिरमें ले गये आराधना करनेके वाट गंगाधर पेशवासि मिले इसके वाट जब वे दोनों अपने डेरे पर लौटे आरहे थे, तो रास्तेमें त्रिम्बकजीसे रखे हुए गुप्त हत्याकारियोंके हाथ इनकी मृत्यु हुई।

गङ्गाधर सरस्वती (गंगाधर चेत देखो)

गङ्गाधर सुनू—राघवभ्यूदय नामक संस्कृत काव्यप्रणेता।
गङ्गाधरिन्द्र (गंगाधर चेत देखो)

गङ्गानदी—जैनमतानुसार जम्बूद्वीपकी गङ्गा, सिन्धु आदि चौदह नदियोंमेंसे एक नदी। यह नदी भारतक्षेत्रमें बहती हुई पूर्व मसुद्रमें जा मिली है। इस नदीसे चौदह हजार शाखाएँ निकली हैं; जो भारतक्षेत्रके तीन खण्डमें प्रवाहित हैं। (ता० सु० ३ ५०)

गङ्गापति—३ हिन्दी भाषाके एक धार्मिक कवि। १७१८ ई०को इनका अभ्युदय हुआ। इन्होंने विज्ञानविलास नामक ग्रन्थ बनाया है। उसमें विभिन्न भारतीय शास्त्रोंके धर्मोंका सन्निवेश है और वेदान्तदर्शनकी प्रतिष्ठा की गयी है। गुरु और शिष्यके संवाद द्वारा यह धर्मोपदेश प्रदान करता है।

२ हिन्दीके कोई कवि। १८८७ ई०को इनका जन्म हुआ था।

गङ्गापत्नी (स० स्त्री०) गङ्गावत् पवित्रम् पत्रमस्याः, बहुव्री०। वृक्षविशेष, एक तरहका पेड़ जिसके पत्ते अत्यन्त सुगन्धित होते हैं। इसका पर्याय—पत्नी, सुगन्धा और गन्धपत्रिका है। इसका गुण कटु उष्ण, वातनाशक और व्रणका चतुर्थोपधनकारी है। (राजनिः)

गङ्गापथ (स० पु०) गगन, आकाश।

गङ्गापाट (हिं० पु०) घोड़ेके तंगके नीचेकी भौरी। बहुतांका ख्याल है कि यदि वह भौरी तंगसे बाहर हो जाय तो शुभ माना जाता और यदि तंगके नीचे पड़े तो अशुभ होता है।

गंगापुत्र (स० पु०) गंगायाः पुत्रः, इ-तत्। १ भीष्म।
२ कार्तिक। ३ वर्षसङ्कर जातिविशेष। इसे सुरेन्द्र-

फरोम कहते हैं। ब्रह्मवैवर्तपुराणके अनुसार यह जाति लैट जातीय पुरुषके औरममें और घावर जातीय कन्याके गर्भमें पैदा हुई है।

“किंवात् गङ्गायाः गङ्गा पुत्र इति पृ० त्” (ब्रह्मवैवर्त)।

इस जातिके लोग सर्वदा गंगा किनारे रहते और घाटों पर दान लेते हैं। इसी लिये ये गंगापुत्र कहे जाते हैं। ४ काशी प्रभृति स्थानोंमें गङ्गातीरपर रहनेवाला होन ब्राह्मण जब कोई क्रिया करनी होता है तो ये ही ब्राह्मण उस कायको कर देते हैं। इसी लिये गङ्गापुत्र कहलाये। ये तीर्थयात्रियोंका हमेशा बतलाया करते हैं कि किन स्थानोंमें कैसी २ क्रियायें करनी चाहिये। उस तीर्थ पर न पर कोई यात्री बिना गङ्गापुत्रकी पूजे कोई धर्म कर्मा नहीं कर सकता है। गङ्गा स्नानके समय गङ्गापुत्र यात्रियोंके हाथमें जल और कुण्ड देकर मन्त्र पढ़ाते हैं। इसके बाद वे स्नान करते हैं। स्नान करनेके बाद वे यात्रियोंके मिर पर चन्दन लगाते हैं। यात्री ब्राह्मणको यथाशक्ति कुछ द्रव्य देकर विटा करते हैं। काशीमें गङ्गाघाट पर सभी गंगापुत्रोंका अपना २ स्थान निश्चित किया हुआ है। दूसरे दूसरे ब्राह्मण भी गङ्गापुत्रके कार्य करते हैं। गङ्गापुत्र दूसरे ब्राह्मणोंकी अपेक्षा निम्न अर्णीत गिने जाते हैं।

गङ्गापुर—१ राजपूतानाके अन्तर्गत जयपुर राज्यका एक नगर। इसकी जनसंख्या प्रायः ५८८० है।

२ राजपूतानाके जयपुर राज्यमें इसी नामके तहसील और निजामतका मदेर। यह अक्षा० २६° २८' ३०" और देशा० ७६° ४४' ५०", जयपुर शहरसे ७० मीलकी दूरी पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ५१५५ है। यहां दो विद्यालय और एक अस्पताल है।

३ सारन जिलाके अन्तर्गत एक नगर। लोकसंख्या लगभग २६६६ है। ४ हंटरावाटके औरंगाबाद जिलाका दक्षिण-पूर्वीय तालुक। भूपरिमाण ५१४ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः ५१४१३ है। इस तालुकमें १८० ग्राम लगते हैं जिनमेंसे १५ जागोर हैं। गंगापुर इसका मुख्य सदर है। तालुककी आमदनी प्रायः तीन लाख रुपये है।

५ युक्तप्रदेशमें बनारस जिलाका पूर्वीय तहसील।

यह अक्षा० २५ १०' से २५ २४' उत्तर और देशा० ८२ ४२ से ८२ पू० में अवस्थित है। भूपरिमाण ११८ वर्गमील तथा जनसंख्या प्राय ८६७०३ है। इसमें २८० ग्राम लगते हैं लेकिन शहर एक भी नहीं है। तहसीलकी आमदनी लगभग १२५००० है। वरना नदी तीर पर अवस्थित होनेके कारण यहाँ उपज बहुत होता है।

गङ्गापूजा (स० स्त्री०) विवाहके बादकी एक रीति। इसमें आमकी स्त्रियाँ वर और वधूके साथ गीत गाती, किन्हीं तालाव पर जाती हैं और ग्रामके देवताकी पूजा कर लीट आती हैं। इसी दिन दम्पतीके हार्याम विवाहकगन खोला जाता है।

गङ्गाप्रसाद - हिन्दी भाषाके एक सुप्रसिद्धकवि। साधारणतः इनको गङ्गाकवि कहते हैं। १५३८ ई०की इनका जन्म हुआ। यह युक्तप्रदेशके इटावा जिलेके इकानौरवासी एक ब्राह्मण थे और अकबर बादशाहकी सभामें उपस्थित रहते थे। वीरबल खान खानान और दूसरोंसे इन्हें बहुतसा पुरस्कार मिला। परन्तु 'आईन अकबरोमें' इनका उल्लेख नहीं।

२ युक्तप्रदेशके सीतापुर जिलेके एक हिन्दी कवि। इन्हें भी गङ्गाकवि ही कहा जाता है। १८३३ ई०की ब्रह्मण्यय शर्म इनका जन्म हुआ। अपने उल्लूक काव्यके कारण इन्हें सुपौनी ग्राम निष्कर मिला था। इन्होंने दूतविनास नामके शृङ्गार रसकी पुस्तक रचना की। गङ्गाप्रामि (स० स्त्री०) ग गाया प्राप्ति ३ तत्। १ ग गालाभ वा ग गामि जाना। आत्रकल ग गाम्राप्ति मृत्युका ही बोध होता है।

गङ्गावाह्ये—एक विख्यात महाराष्ट्र महिला। यह पेशवा नारायण रावकी पत्नी रहीं। १७७३ ई० ३० अगस्तकी कई एक सिपान्द्रियोंने खेतन न मिलनेसे क्रोधमें उन्मत्त हो अष्टादश वर्षीय नारायण रावको मार डाला। लोगोंको विश्वास है कि रघुनाथ राव और राघवाकी उत्तंजनासे ही उक्त काण्ड हुआ था। कोई कोई कहता कि रघुनाथकी पत्नी आनन्द बाईके कोशलिसे वह निष्ठर कार्य किया गया। नारायण राव ने जो नारायण रावके मरने पर रघुनाथ राव पेशवा ही वहि शत्रुओंके साथ

युद्धविपक्षमें व्यापृत हुए। उनके बहुतेरे प्रधान व्यक्तिके बहाने करके युद्धस्थलसे फिर लौट पड़े। सखाराम बापू, त्र्यम्बक राव मामा, नाना फडनवीस, मरोबा फडनवीस, बजावा पुरन्धर, आनन्द राव जीवाजी, हरिपन्थ फडके आदिको ले करके फिर एक मन्त्रिमहा बनी गयी। उसमें नाना फडनवीस और हरिपन्थ फडके प्रधान रहे। वह रघुनाथके विपक्ष थे। थोड़े दिनोंमें प्रकाश हुआ कि नारायण रावके मरनेसे पहले उनको पत्नी ग गावाई गर्भवती हुई थीं। मन्त्रियोंने परामर्श करके उन्हें पुरन्धर भेजनेका प्रवन्ध किया, पीछेकी जिसमें कोई उनका अनिष्ट न करे। १७७४ ई० ३० जनवरीकी नाना फडनवीस और हरिपन्थ फडके इन्हें पुरन्धर ले गये। सदायिब रावकी विधवा प्रभावती नोगोमि अद्याप्य रहें। वह भी ग गावाईके साथ भेजी गयीं। पुरन्धरका दुर्ग ११३२ छायज से एक पर्वत पर अवस्थित है। इसमें उन्हें पहु चानेके नाना कारण थे। पूनाकी चारों ओर शत्रुपक्षीय लोग थे। उसीसे विधवा ग गावाई पर अनिष्टपातकी आशङ्का रही। इनके निकट कई एक सद्यप्रसूता रमणियोंको रख दिया गया। क्योंकि उनको यदि पुत्रसन्तान हो और स्तनसे थथेष्ट दुग्ध न निकले, तो इनके स्तन्यदुग्धसे बालककी जीवनरक्षा होगी। फिर ग गावाईके कन्या सन्तान होने पर शुपके शुपके अन्यका पुत्रसन्तान इनकी कन्याके साथ परिवर्तित कर दिया जावेगा। ग गावाईके गंभसे पुत्र सन्तान होने पर वही प्रकृत पेशवा ठहरेगा। ऐसा होने पर रघुनाथ रावकी धर्मतो घट जावेगी। मन्त्री नोग इमी पुत्रकी आशा पर निर्भर करके ग गा बाईके नामसे पेशवाका काम चलाने लगे।

रघुनाथ राव उस समय कर्णाटमें थे। वहाँ सब सवाद पा करके यह पूनाके अभिमुख चल पड़े। राह पर एक लडाईमें इनको जीत हुई। किन्तु यह पूनाके सामने न आ करके उत्तराभिमुख चले गये। १७७४ ई० १८ अप्रैलकी इन्होंने सुना कि ग गावाईकी पुत्रसन्तान हुआ था। फिर यह सन्वार चले गये। ग गावाईका वही पुत्र ४० दिनका होने पर माधवराव नारायण था मधु राव नारायण नामसे अभिहित हो पेशवाके पद पर अभि-

पिता हुआ। पीछेकी इमीका नाम मवाई माधवराव रखा गया।

माधव राव जन्म समयकी रामोमियोंके अत्याचारसे विषम उत्पीड़ित हुए। रामोमियोंके टलमें अश्वारोही सेना रही। वह वणिक्वेशमें जा करके हैदराबाद और बरार नृतते थे। जेजूरीके दादाजी उनके अधिनायकरहे। इन्होंने किसी ब्राह्मणकन्याका धर्म विगाड़ा था। उसी ब्राह्मणकन्याने पुरन्धरमें गंगावाइके निकट अपनी अवस्था बतला करके कहा कि मेरे अपमानसे समस्त ब्राह्मणोंका अपमान हुआ था, यहां तक कि आपके मर्यादामें भी बढ़ा लगा—जब मेरा धर्म ही चला गया, जीनिसे क्या मिलेगा। यही बात कह करके ब्राह्मणीने जोरसे अपनी जीभ खींच करके उखाड़ डाली। बातकी बातमें वह मर मिटी थी। गंगावाइ यह देख करके स्तम्भित हुईं। इन्होंने प्रतिज्ञा की कि दादाजी रामोमीके जीते जागते मैं जलग्रहण न करूंगी। मन्त्रियोंने उन्हें शान्त करनेकी चेष्टा की थी। परन्तु यह किसी प्रकार ठगड़ी न पड़ी। मन्त्रियोंने दादाजीको मार डालना ही ठहराया था। किसी विशेष प्रयोजन पढ़नेके बहाने उन्हें बुला भेजा गया। दादाजीने अपने ही मुंह स्वीकार किया कि उन्होंने ११०० डाके छाले थे। जो ही, दादाजी अनतिविलम्ब निहत हुए।

उधर मन्त्रियोंमें मतवैषम्य पड़ गया। गंगावाइ नाना फुड़नवीसकी कुछ अधिक चाहती थीं। यह उन्हींके मर्यादानुसार चलता था। परन्तु नान्दियां परस्पर मेल न रहा। गंगावाइ भी उसके लिये उल्लासित हुईं। इनके विपत्तियोंका कहना है कि (१७७७ ई० मितम्बर) फुड़नवीसके साथ अवैध प्रणय रहनेसे उनके गर्भमन्त्रार हुआ। इसी बातको पीछे खुलनेसे गङ्गावाइने विषप्रयोगसे आत्महत्या कर डाली।

गङ्गावासी (स० पु०) गंगाकिनारे वास करनेवाले, जो गंगाके किनारे रहते हैं।

गङ्गाभट्ट—एक विख्यात स्मार्त पण्डित। इनके बनाये हुए अध्याने-पद्धति, आपस्तम्बप्रयोगसार, धर्मप्रदीप और समयनय नामक कई एक संस्कृत ग्रन्थ हैं।

गङ्गाभास्कर—शकुनावली नामक ग्रन्थप्रणेता।

गङ्गाभूषण (स० कौ०) गंगाया अभूषण, जलम्, इत्यत् ।

गंगाजल, गंगाका पानी।

“यद्यदायंमतं ह्यथा जगं गंगायाद्वयम् ।

सधे वदति न गायं दुःखमितिवाप्यम्” (शराहपुराण)

गङ्गास्वः (स० कौ०) गङ्गाजल।

गङ्गायात्रा (स० स्त्री०) गङ्गामुहिय यात्रा १ मरणासन्न मनुष्यका गङ्गातीर मरनेके लिये जाना। २ मरणासन्नके मद्गति प्राप्तिके लिये पद्मवटी प्रभृति पवित्र स्थानोंमें जानेकी भी गङ्गायात्रा कहते हैं।

गङ्गायात्रिक (स० त्रि०) १ जो गंगाकी गंगायात्रा कराता है, जो गेगीको मरनेके लिये गंगा घाट ले जाता है। २ योगादि उपलक्षमें गंगास्नानके लिये जाता है। (पु०) ३ गंगा देवीका उत्सव।

गङ्गायात्री (स० त्रि०) जो गङ्गातीर जानेकी यात्रा करता हो, जो गङ्गा किनारे जानेके लिये तैयार हो।

गङ्गाराम—१ एक विख्यात संस्कृत ज्योतिर्विद्। इन्होंने भावफल, युवजयोन्मव और रत्नोद्योत नामक ज्योतिर्यन्य प्रणयन किये हैं। २ न्यायकुतूहल नामक न्यायग्रन्थ रचनेवाला। ३ भक्तिरसाधिकणिका नामक ग्रन्थप्रणेता। ४ गोवर्द्धनममशतीका टीकाकार। ५ बुद्धेन्द्र-खण्डके एक हिन्दी कवि। इनका जन्म १८३७ ई०को हुआ था। ६ तोतिका प्यारका नाम।

गङ्गाराम जड़िन्—एक विख्यात नेयायिक। नागयणके पुत्र और नोलकरहके शिष्य। इन्होंने तर्कामृतचषक और उमकी टीका, दिनकारीखण्डन, नौकारमन्तरङ्गिणीव्याख्या, रसमीमांसा और उमकी टीकाका प्रणयन किया है।

गङ्गारामदास—एक विख्यात कविराज और भवानीदास कविराजका शिष्य। इन्होंने संस्कृत भाषामें शरीर-विनिश्चयाधिकार नामक वेद्यक ग्रन्थको रचना की है।

गङ्गारी—ब्राह्मणजाति भेद। यह लोग पहाड़ी होते और गङ्गाके तट पर रहते हैं। कहते हैं कि सारोला ब्राह्मण नीच कुलमें विवाह कर लेनेसे गङ्गारी कहलाने लगते हैं। इनका एक भेद गङ्गारी गौरोला और दूसरा सारोला गङ्गारी है। विद्वानोंके मतानुसार अलकनन्दाकी उम और चारों वर्ण गङ्गारी होते हैं। इनको कई पद-वियां हैं। घिड़ियल वंसमर्दनी और उनयाल मन्दिष-मर्दनी, कालिका, राजराजेश्वरी आदि देवियोंकी पूजा करते हैं।

गङ्गाल (हि० पु०) पानी रखनेका बड़ा बरतन, कण्डाला
गङ्गाला (हि० पु०) गङ्गाका चटाव पट्टु चने तककी
जमीन काटार ।

गङ्गालाभ (स० पु०) गङ्गाया लाभ प्राप्ति, ६ तत् ।
गङ्गाकी प्राप्ति, मृत्यु, गङ्गागर्भ पर प्रानपूर्वक प्राश्रवत्याग ।
गङ्गालहरी (स० स्त्री०) १ गगाया लहरी, ६ तत् ।
ग गाकी तरंग, ग गाकी लहर । २ प्रसिद्ध पण्डित जग
न्नाथ तर्कपञ्चाननका बनाया ग गास्तव ।

गङ्गाव श—गाङ्गव श देखो ।

गङ्गावतार (स० पु०) ग गाया श्रवतार ब्रह्मलोकाद् भूमौ
पतनमत्र बहुव्री० । १ तीर्थ विशेष, ग गाहार । ग गाया
श्रवतार, ६-तत् । २ ब्रह्मलोकसे पृथ्वी पर गंगाका
आगमन ।

“मगीरष इव डट गङ्गावतार” (भा लरी)

गङ्गावती हैदराबादमें रायपुर जिलाके इसी नामके तालुक
का एक शहर । यह अक्षा० १५ २६' उ० और देशा०
७६ ३२' पू० पर आनयुक्तिसे पाच मील उत्तरमें अवस्थित
है । शहरसे दो मील पूर्व तुंगभद्रा नदी प्रवाहित है ।
लोकसंख्या प्राय ६२४५ है । यहां एक विद्यालय, एक
अश्वताल, एक डाकघर और प्राचीन मन्दिर है । प्रति
रविवारकी बाजार लगता है ।

गङ्गावाली—वस्वई प्रान्तीय उत्तर कनाडा जिलाकी
ग गावाली नदीका मुहानास्थित एक बन्दर । यह अक्षा०
१४ २६' उ० और देशा० ७४ २१' पू० पर अवस्थित
और अनकोलसे ५ मील उत्तरमें पडता है । यहांकी
लोकसंख्या लगभग १००० है । प्रतिवर्ष इस बंदरसे
२०००० रु०की चीजें दूर दूर देशमें भेजी जातीं
और ४००० रुपयेकी चीजें यहां उतरती हैं । यहां एक
सुन्दर मन्दिर है जिसमें शिवकी स्त्री गङ्गाजोकी मूर्ति
स्थापित है प्रतिवर्ष आश्विन महीनेकी अष्टमी तिथिमें
भिल भिन्न जगहके मनुष्य मंदिरके सामनेकी नदीमें
स्नान करनेके लिये आते हैं । मंदिरके पासही कामेश्वर
नामक एक निद्र है जो विष्णुकी संस्थापित हुआ
कहा जाता है ।

गङ्गासागर (स० पु०) गङ्गाया समुद्र-सागर मध्यप० ।
यह स्थान जहां गङ्गा सागरसे मिलती है । पीप स क्रा

न्तिके दिन बहुत यात्री यहां इकट्ठे होते हैं । इस स्थान
पर दान ध्यान करनेसे अनेक फल प्राप्त होते हैं । इसके
निकट एक कपिलायम है । (ग० सा० पु० ११११, १११२, १११३, १११४, १११५)

ग गा और सागर स गम देखो । -

गङ्गासुत (स० पु०) गङ्गाया सुत, ६-तत् । १ भीष ।
२ कार्तिकेय ।

गङ्गास्नान (स० स्त्री०) गङ्गायाम स्नानम् ७ तत् । गङ्गामें
स्नान करनेकी क्रिया ।

गङ्गास्त्रायी (स० त्रि०) गङ्गायाम् स्त्राति स्त्रा णिनि ।
जो मनुष्य ग गास्नान करता है, ग गास्नान करनेवाला ।

गङ्गाऋद (स० पु०) ग गाया, ऋद इव । १ भारत
प्रसिद्ध स्वस्तिपुरका एक कूप । इस कूपमें सब दा तीन
मोड तीर्थ श्रवस्थान करते हैं । इसमें स्नान करनेसे
स्वर्गकी प्राप्ति होती है । २ कीर्तितीर्थ के अन्तर्गत एक
तीर्थ ब्रह्मचर्य श्रवणस्नान कर इस तीर्थमें स्नान करने-
से राजसूय और श्रवणसे यज्ञका फल होता है । (भारत
सा० पु०) गङ्गायाऋद, ३६ तत् । ग गाका कूप ।

गङ्गिका (स० स्त्री०) गङ्गा स्वार्थ कन्-टाप् इत्वच् । गङ्गा ।
गङ्गिरु—युक्तप्रदेशमें मुजफ्फरनगर जिलाका एक नगर ।
यह अक्षा० २८ १८' ६" उ० और देशा० ७० १५' ३" पू०
पर अवस्थित है । यह नगर अत्यन्त प्राचीन है । इंटोंके
बने हुए घरोंका भग्नावशेष अवतक भी पडा हुआ है ।
नगरके पूर्व ही कर एक नहर गड है । यहांकी जनसंख्या
प्राय ६ हजार है ।

गङ्गुक (स० पु०) क गूक घृपोदरादिवत् निपातने साध ।
धान्यविशेष, कौनी धान । (इ० त ४, १०५)

गङ्गुटी (हि० स्त्री०) टवाके कामसे लानेकी एक बूटी ।
इसके सेवन करनेसे फोडा गन् जाती है और भल सूत्र
आमानीसे उतरता है ।

गङ्गेरन (हि० स्त्री०) औषधविशेष । इस टवाईके पीधेका
आकार छहदेई पीधेके जैसा होता है । सिर्फ दोनोमें
इतना ही विभिन्नता है कि गङ्गेरनके पत्ते बहुत मोटे
और दो अनीवाले होते हैं । इसका फूल गुलाबी रंगका
होता है और फल भी महदेईके फलसे कुछ बड़ा होता
है । इसके फल पकने पर पाच हिस्सोंमें बट जाते हैं ।
इसका पीधा सूत्रकृच्छ, शत और घोषरी, खुजनी, कुष्ठ

आदिके काममें आता है। गंगेरन दो प्रकारकी होती है एक छोटी दूसरी बड़ी। बड़ी अस्त मधुर, त्रिदोष-नाशक तथा दाह और ज्वरकी दूर करती है।

गङ्गेश्वर (हिं० पु०) एक तरहका पेड़ जो पहाड़ पर पाया जाता है। इसके फल आवलेकी तरह छोटे होते हैं। इसका पेड़ टवाईके काममें आता है। वैद्यकमें इस पेड़का फल कफ-वात-नाशक, पित्तकारक, भारी, तथा गरम माना जाता है। इसके फल खट्टे और मीठे होते हैं।

गङ्गेश—एक असाधारण नैयायिक। यह गंगेशोपाध्याय नामसे विख्यात है। इनका दूसरा नाम गंगेश्वर था। इन्होंने तत्त्वचिन्तामणि नामक प्रसिद्ध न्यायग्रन्थ लिखा है।

नवहीपके कोई कोई नैयायिक कहते हैं कि वंगदेशमें अति दरिद्र ब्राह्मणके घर उन्होंने जन्मग्रहण किया था। बाल्यकालकी गंगेशके पिताने उनको लिखना पढ़ना सिखानिके लिये बड़े चेष्टा की किन्तु इससे उनको कुछ लाभ न हुआ। पिताने नितान्त दुःखित हो गंगेशकी उनके मातुलालय भेजा था। गंगेशके मामा एक अच्छे से पण्डित रहे। इनके अनेक छात्र थे। मातुल और इनके छात्र बहुत चेष्टा करने पर भी उन्हें कोई व्याकरण पढ़ा न सके। इससे सबने उनके लिखने पढ़नेकी आशा एक प्रकार परित्याग की थी। गंगेश मामानिमें सहाध्यायियोंका हुक्का भर करके अति दीन भावसे कालयापन करने लगे किमी दिन रातकी एक छात्रने जा गङ्गेशकी बहुत पुकारके उठाया और तम्बाकू भरनेका हुक्म लगाया था। उन्होंने भयसे आंखें मलते मलते चिलम चढ़ायी, किन्तु उस पर रखनेकी आग न पायो। मातुलालयके सक्के एक विस्तीर्ण मैदान था। इसी घेरा रजनीकी उस प्रान्तरमें आग जलती थी। छात्रने कितनी ही धमकी दे करके उस मैदानसे गङ्गेशकी आग लेने भेजा था। गंगेश भयसे रीते रीते आग लेने गये। किन्तु यहां जा देखा, उनकी चेतनता उड़ती बनी। किसी अतदेह पर बैठे कोई योगी श्रवसाधना कर रहा था। गंगेश योगीकी पद पर विलुण्ठित हुए। इसने गंगेशके मुखसे उनकी आनेका कारण और दुर्वस्थाकी कथा सुनी थी। योगी उन्हें अपने साथ ले करके चलता हुआ। इसीके अनुरोधसे गंगेश थोड़े दिनोंमें बहुत कुछ सीख गये।

इधर सब लोगोंने समझा कि गङ्गेश फिर राजगत्-में न थे, उन्हें भूतोंने खा डाला। परन्तु कुछ दिनों बाद वह एकाएक मामानमें जा पहुँचे। उनको देख करके सब लोग चकित हो गये। किन्तु उन्होंने किमोमें कोई बात बतलायो न थी। मामाने उन्हें गोरू कर्कके गाली दे डाली। गङ्गेशने इसके उत्तरमें कहा—

“किं गवि गोत्वं किमगवि गोत्वं यदि गव गोत्वं मयि नहि तस्य च गवि च गोत्वं यदि भवदितं भवति प्रथमयि सगति गोत्वम् ॥”

गोत्व यदि गोमें होता, तो मैं वह नहीं हूँ। फिर यदि गोभिन्नमें गोत्व सम्भव है, तो वह बात इस समय सब पर लागू हो सकती है।

उत्तर सुन करके मातुल श्रावक रह गये! उसी दिनसे गङ्गेश “चूड़ामणि” जन्मे प्रसिद्ध हैं।

उपर्युक्त जनश्रुति कुछ भी सत्य जैसी नहीं समझ पड़ती। यह वङ्गदेशवासी नहीं थे। जिस समय वङ्गके नवहीपमें न्यायका उत्कर्ष न था और जब वासुदेव सार्वभौम तथा उनके गुरु पद्मधर मिश्र आविर्भूत न हुए थे, उससे भी बहुत पहले गङ्गेशोपाध्यायने जन्मग्रहण किया था। यह भी निःसन्देह बतलानिका उपाय नहीं कि वह मिथिलावासी रहे। परन्तु गङ्गेशका ग्रन्थ पढ़नेसे इन्हें ही नव्यन्यायका जन्मदाता कहनेमें कोई अत्युक्ति नहीं आती।

इनकी अक्षयकीर्ति तत्त्वचिन्तामणि है। उसको “न्यायतत्त्वचिन्तामणि” “चिन्तामणि” और “मणि” भी कहते हैं। यह महान्यायग्रन्थ चार खण्डोंमें विभक्त है—प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्दखण्ड। इन्होंने प्रत्यक्ष खण्डमें शिवादित्यमिश्र और टीकाकार वाचस्पतिकामत उद्धृत किया है।

तत्त्वचिन्तामणिकी भांति विस्तृत और बहुसंख्यक टीकाएं किसी न्यायग्रन्थकी नहीं हैं। पहले पद्मधर मिश्र, फिर उनके शिष्य रुचिदत्तने चिन्तामणिकी टीका रचना की। एतद्भिन्न वासुदेव सार्वभौम, रघुनाथ शिरोमणि, गंगाधर, जगदोश, मथुरानाथ, गोकुलनाथ, भवानन्द, शशधर, शोतिकण्ठ, हरिदास, प्रगल्भ, विश्वनाथ, विष्णुपति, रघुदेव, प्रकाशधर, चन्द्रनारायण, महेश्वर, हनुमान् प्रभृति प्रधान प्रधान नैयायिकोंकी रचित अनेक

टोकाए भो मिलती है। फिर इन टोकाओंको शत शत टोका टिप्पणिया है। भाव देखो।

गङ्गेश उपाध्यायके पुत्रका नाम वर्धमान उपाध्याय है। वह भी एक अद्वितीय नैयायिक थे। वह सात उपाध्याय देवो २ रामायणशतक नामक संस्कृत ग्रन्थके रचयिता।

गङ्गा शब्दोचित—तर्कभाषाका एक टोकाकार।

गङ्गाशमित्य—चतुर्वर्गचिन्तामणि नामक वेदान्तरचयिता।

गङ्गाशमित्य उपाध्याय—सुमनोरमा नामक संस्कृत व्याकरण रचयिता।

गङ्गा श्वर, ग श्वर देखो।

गङ्गाकोण्डपुरम्—मन्दाज प्रेसिडेन्सिके त्रिचिनापली जिला का उदैयारपानयम् तालुकका एक ग्राम। यह अक्षा० ११ १२ उ० और देशा० ७८ २८ पू० पर अवस्थित है। यह तालुकके प्रधान सट्टर जैयमकौद मोलापुरसे ६ मील पूर्व में अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय २७०२ है। पूजा समय यह एक शहर था जो जिलामे एक प्रसिद्ध स्थान गिना जाता था। प्रवाट है कि जब वाणा सुरकी गङ्गाजल न मिला तब उसने शिवजीकी तपस्या की थी। महादेवने उसको तपस्यामे मत्तुष्ट हो कर उक्त स्थानके पास ही एक कूपसे गङ्गा बहा दी और इस तरह दैत्य वाणासुरने उसमें स्नान कर मोक्ष पाया था। गङ्गाकोण्डोल य प्रथम राजेन्द्र चोलने यह शहर स्थापित किया, इसी कारण उन्हीके नाम पर शहरका नामकरण हुआ।

प्राच नकाल इस ग्राममें एक प्रसिद्ध मन्दिर था जिसका ध्व सावग्रेष आज लो विद्यमान है। मन्दिर बहुत ऊँची दीवारसे आवेष्टित है। मन्दिरके प्रागणमे एक विशाल विमान है जो बहुत दूरसे दीख पड़ता है, क्योंकि इसकी ऊँचाई लगभग १०४ फीट होगी। उक्त विमानके निम्न भागमे उत्कीर्ण बहुतसे शिलालिख है। मन्दिरमे सत्ताईस फुट गहराईका एक सुन्दर कूप है और जिसके ऊपर सपत्त सपोंकी बहुतसी स्तूपियाँ लगी है। कूपमे प्रवेश करनेकी सीढ़ी दो हुई हैं। मन्दिरके बाहर १६ मील विस्तृत एक तडाग या झर है जो पीनेरो नामसे प्रसिद्ध है। बहुत वर्षोंसे यह तानाब नष्ट हो गया है और इसकी पूव भी जाती रही है।

इस ग्रामके चारो ओर प्राचीन मन्दिरोंके ध्व व वगैरे आजनीं विद्यमान है।

गङ्गासप्त नरीसप्त—रासपञ्चाध्यायिका पट्टमरमो नामक टोकाकार।

गङ्गासती—युक्तप्रदेशमे टेहरी राज्यका एक पुष्पस्थान।

यह अक्षा० ३१ उ० और देशा० ७८ ५७ पू० पर अवस्थित है। इस स्थानमे पहाडके ऊपर गङ्गाके दक्षिण तट पर गङ्गादेवोका मन्दिर है। मैकडों तीर्थयात्री भागो रयोकी स्मृति दर्शन करनेके लिये आते है। हिन्दूओंका विश्वास है कि इसोस्थानसे गङ्गा गीसुखी हो कर भारतवर्ष से प्रविष्ट हुई है। यह हिन्दूओका महापुष्पप्रद स्थान है। सम्प्रतिकाल देवीमन्दिर मसुद्रतलमे ६८७८ हाय ऊँचा है। गामुओ देखो।

गङ्गाक (स० क्तो०) गङ्गाया उज्ज्वलते, उज्ज्वल कर्मणि घञ्। गङ्गाप्रवाहशून्य जलादि।

गङ्गादेक (स० पु०) गङ्गाजल, गङ्गाका पानी।

गङ्गादेक (स० पु०) गङ्गाया उद्देक प्रथम प्रकारो यव बहुव्री०। तर्था विशेष। इस स्थानमे पिठदेवताका तर्पण करनेसे वाञ्छित यज्ञ करनेका फल होता है और मनुष्य मोक्ष प्राप्त करता है।

“गङ्गादेके” समावाच सर्वेषु पिठदेवता।

वाग्भैषजशास्त्रेति ब्रह्मभूतो सर्वेषु सः” इ (भारत ६८१ ५०)

गङ्गा (स० पु०) गोमेदक नामक मणि।

गङ्गाह—युक्तप्रदेशमें महारनपुर जिलाके नकुर तहसीलका एक शहर। यह अक्षा० २८ ४७ उ० और देशा० ७७ १७ पू०में अवस्थित है। गङ्गाह परगणामें यह एक मगहर शहर है। लोकसंख्या प्राय १२८७१ है जिनमेंमे ५७४१ हिन्दू और ७१७२ मुसलमान हैं।

सिपाओ विद्रोहके समय राजा फतुष्पाके अधीन गुजरोंने इस शहर पर आक्रमण किया था, लेकिन मिटर रोबर्टसन (Mr H D Robertson) और लिफ्टिनेण्ट बोसरागोन (Lieutenant Bo sra- gen) ने उन पर धाया कर १८५७ ई०के जून मासमें पूर्णरूपसे हराया। यहा तीन प्राचीन मसजिद हैं जिनमेंमे दो शकवर और जहांगीरने निर्माण की थीं। मसजिदके पलाने एक विद्यालय और एक अस्पताल है। यहांकी वार्षिक आय प्राय ३००० रुपये है।

काठिन है। इसमें निम्ने पराशरमें अर्धने आप जनना दिया है—कहीं भी मय नक्षत्रवाले जाया देना नहीं पड़ती, अतएव कई प्रधान नक्षत्रोंमें ही भना वग निर्णय कर लेना चाहिये। अनावश्यक ममभक्त करके मय छोटे लक्षणोंको उल्लेख नहीं किया, कई प्रधान प्रधान नक्षत्रोंको ही निम्न दिया है।

हाथीकी सूँउ पृष्ठमें छोटी अथवा पृष्ठ शैभा, वरुण लम्बी, छोटी, वरुण मीठी, रूखा, वरुण या चंद्र अङ्ग, नियुक्त होना बुरा है, इसमें विपर्यय पर्यन्त पर अन्त ममभक्ता चाहिये। सूँउ पृष्ठको वरुण, छोटी या वरुण बड़ी रहनेमें दुःखप्रद, चंद्र लगनेमें रोगकर और वरुण मीठी होने पर अर्थनाशक है।

हाथीके दोनों मसूड़े रोमछोन, वरुण मीठे, असमान और ढीले रहनेमें प्रभुका असङ्गल और दुष्टार, सुन्दर-लावण तथा कुक उठे होनेमें स्वामीकी मसूडि होती है।

हाथीके सुँहकी दोनों और जो दो दांत निजलने, उन्हींको यहाँ गजदन्त कह सकते हैं। यही दोनों गजदन्त एक दूसरेमें छोटे बड़े, महीर्ण, उठे हुए, भ्रम जैसे शुभ्रवर्ण, टेढ़े, हलके, मटमैने, रुखे, सृदु, नोचिकी मुझे हुए, जड़ और बोचमें टालू, प्रान्त भागमें मोटे, लम्बे या बहत ऊँचे पूरे होनेमें दोषजनक होते हैं। इसमें महावत और मालिकका बहतमा असङ्गल लगता है। हाथीके दांत वरुण, चिकने, खुले हुए, भरपूर, वरुणान्य, कलोलैसे, दृढ़ और मृणाल वा कुसुमको तरह शुभ्रवर्ण रहना अच्छा है।

हाथीका तालु श्वेतवर्ण वा कपाय होनेमें अच्छा है। इससे धन और आयु: बढ़ता है। इसके दोनों पीठेकि दिनों जोड़ परिमाणमें छोटे पढ़नेसे सुखरोग होता है, किन्तु १२ अङ्ग लि रहने पर सब बातोंमें सुख है।

गजके ओठ लोमशून्य गम्बलीयुक्त और थोड़े ताँवड़े होनेसे सुँहका रोग लगता है। फिर लम्बे रूपवाले, भरपूर कमल जैसे लाल, १६ अङ्गुल लम्बे और १२ अङ्गुल चौड़े होंठ स्वामीका आयु बढ़ाते हैं।

हाथीकी दोनों कनपटियां कम-बढ़, वेवाल, दिङ्गकी छाया-जैसी बरुण, वरावर, गले और पीठसे बड़ी, अचूरी, खुली, हलकी, परिणामशून्य और छोटी लगनेसे अ

नहीं; हिल्ल परस्पर समान, छोटे रोमशून्य, पितामज्ज विगिट, कर्ण मूलमें अर्धवर्ण वर्णम विगिट, मंगल और मूल होनेमें मानाविषय है। टेढ़ेबायाँ है। कान में शून्य होनेसे चमड़े वा और दे उदार, मंम मिल पड़े, मंमो, विषम, रूखा, उदा, उदा, उदा, उदा या मंम होनेमें जाया या आयु बढ़ता है। शाला शम्भ, उरु हैरोवाली, विषम, मृदुभिक भाति योनेवाया, कथानके साम्भक्त मंम टारण गष्ट निहले, अंशर शैभा और मंम मंम गार्डर वेरु ममान होना अच्छा है।

हाथीका फण्ड मीठा, छोटा न हो और मरुत होके रहनेमें अच्छा है। पीठका शरीर वरुण उभे मंमो का छोटा पराव है। यह ८१ अंश लम्बे और चौड़े के फण्ड जैसा रहनेमें लाभ है। हाथीका शरीर मंगलार उ या या मंमोला, उदा उदार, जलका, लम्बा या वायुदार होनेमें असंगल प्राता है, इसमें उलटी चपट्यामें किमी बातका खटया नहीं।

हाथीके नापुन छोट, काने, ट, कर्ण-जैसे और शरीर होनेमें बुरे है, किन्तु अर्धवर्णकी तरह समकदार और फण्डे कई लक्षणोंमें उलटे पढ़ने पर अच्छे होते हैं।

हाथीके पैर गिर हुए, रत्ते और तन्वयों वरुण अचक्रे लगनेमें दुःखदायी होते, किन्तु १ हाथ लम्बे और कठुवे जैसे रहने पर शुभजनक है। इसके अलावा और भी कितने ही सूक्ष्म लक्षण अपि सुनियोंने निम्ने क्रिये हैं। रम विषयमें अधिक् गतमरेके लिखे "पाराशरिणा" शैला।

मनुष्य जैसे पितामज्ज ब्रह्माकी चपना पूर्वपुरुष जैसा बतलाते, बड़े डोल डोलवाल हाथो भी एरावत आठिकी अपना पितामज्ज वा पूर्वपुरुष-जैसा कह सकते हैं। इनके ८ पुरखे हैं—एरावत, पुण्डरीक, वामन, कुसुद, अचन, पुष्यदन्त, सार्यभौम और सुप्रतीक ! उन सबकी दिग्गज कहा जाता है। दिग्गजोंके ही वंशधर महाकाय गजोंनि पृथिवीके बड़े जङ्गलमें अपना आधिपत्य फैला दिया है। इनकी कुलोनता भी गायद देव पड़ती और डोल डोलमें भेद भी आ जाता है। ८ दिग्गजोंके वंशमें उत्पन्न होनेमें हाथी भी ८ भागोंमें बंटे हैं। इनमें एरावत वंशके गज ही अठ गिने जाते हैं। यह शुभ्रवर्ण, लोम शून्य, अल्पभोजी, बलवान्, बहुत बड़े, युद्धके समय विग-

इनेवाले, साधारण भवस्थामें नख, शीघ्रजलपायो, बाल और पूछ पतली, सफेद और लम्बो छूट, निम्न छोटा क्रोति भी पुष्ट और शरीरसे प्रभूत तथा उग्र मदजन निकलता है। इन गर्जोंके मस्तकमें साफ और अच्छीभी गोल मुक्ता होती है। यह राजाओंके अल्प पुण्यसे प्रथिवीको नहीं छूते। लड़ाईमें इनके दात टट जाने पर भी फिर बट आते हैं।

जिस कुञ्जरका सत्र अन्न कोमल, पूछ छडे जैसे न हो, गाल खुरखुरा, सर्वदा मद सुवे और क्रोध बना रहै, देवप्रिय, सर्वभल तथा बलवान् और दात और जीभ बहुत तीखी हो, पुण्डरीक दिग्गजका व शसभूत है। इनके वीर्यसे कबलका जैसा गन्ध आता और अधिक मद-जल वा वमन देखा नहीं जाता। यह बहुत पानी पीना नहीं चाहता और अधिक श्रम करने पर भी काम थकता है। पुण्डरीक वशजात हाथी जिस राजाके घरमें रहता, समस्त प्रथिवीका शासन कर सकता है।

वामन दिग्गज व शके हाथियोंका सारा देह बहुत कडा और छोटा, कभी कभी मतवाले होते, हमेशा मद टपका करता, आहार करके बलवान् और वीर्यवान् बन जाते, बहुत पानी पीना नहीं चाहते, कनपटोमें बहूत रूप, दोनों दात भद्दे और पुच्छ तथा कर्ण सुन्दर होते हैं।

देह दीर्घ, छूट मोटी न होते भी लम्बो, दोनों दात खोटे, शरीर सर्वदा भलवृत्त, कनपटो मोटी और भग डालू हाथी कुञ्जट दिग्गजके व शजात हैं। यह दूसरे हाथियोंको देखते हो मार डालते हैं। मनुष्य प्राय इनके पास फटक नहीं सकते।

अन्नम नामक दिग्गजके व शमें उत्पन्न होनेवाले हाथीका देह चिकना, पानी पीनेका बडा अभिन्नापी और लघा पूरा, दात और सूड छोटे, दोनों दात मोटे और श्रमका दुख उठानेवाले होते हैं।

जो हाथी सर्वदा मदजल और रेत छोडता, धनूप-देगका उत्पन्न, पूछ बहुत छोटी और बडे वेगसे चलता—पुण्ड्रका दिग्गजका व शसभूत ठहरता है।

रूप बहुत, बडा, लम्बो राह चलने पर भी न थके, खाने पीनेमें खूब चालाक, मरुभूमिमें घूमना अच्छा।

लगे,—देह बडा और कडा दोनों दात लम्बे—नर्म और सफेद होते भी निकम्बा, पेडू, सूड वा पुरीप अल्प आवे, कानको जगड़ फूलो हई, रूप और गाल इनके होना सर्वभोम दिग्गजके व शजात कुञ्जरका लक्षण है। इन हाथियोंमें वडिया मुक्ता मिलती है।

जिनकी सूड लम्बी, टेड डोला, दौड प्रचण्ड, क्रोधे, सर्वदा भलगाभिन्नापी और इस्तिनोप्रिय, पूछ और दात पतले, गाल बडा, कान प्राय न चले और गालमें छोटे छोटे बहुत रूप हैं, सुप्रतोक दिग्गजके व शसभूत है। इन हाथियोंके मस्तकमें बडे बडे मोतो होते हैं।

प्राचीन ऋषियोंके मतानुसार मनुष्यकी भाति हाथी भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—४ जातियोंमें बडे हैं। इनमें एक जातिसे उत्पन्न हुआ हाथी शूद्र कहलाता है। शास्त्रमें अच्छे हाथीके जी लक्षण लिखते, विशुद्धने सभी मिलते हैं। शूद्र तथा ब्राह्मण जातीय इन्तोंसे उत्पन्न होते भी जिस हाथीमें ब्राह्मण जातीय हाथीके लक्षण देख पडते और बलबोर्यवान् होता, जारज कहा जाता है। दो द्विजातीय हाथियोंसे उत्पन्न होनेवालेका नाम शूर है। फिर ब्राह्मण जातीय और जारजसे जन्म लेनेवाला हाथी उद्दान कहलाता है। इसी प्रकार एक दूसरेके संयोगमें बहुत तरहके हाथियोंकी उत्पत्ति होती है। पराशर कहते हैं, जो हाथियोंकी जातिका भेद भली भाति समझता, वह राजाका अमाल्य बन सकता है।

ब्राह्मणजातीय हाथी विद्यालदेह, पवित्र और अल्प भोजी होता। जो वनिल, विद्यालदेह तथा कुड रहता, क्षत्रिय जातीय ठहरता है। दूसरो दोनों जातियोंके मिश्र लक्षण हैं।

विक्री और कामकी दूसरो चीजोंकी तरह हाथीकी भी देख भालके लेना चाहिये। सबसे पहले हाथीके बनकी परीक्षा की जाती है। देखने सुननेमें अच्छा होते भी बनहीन हाथी नहीं लेते हैं। जो हाथी १८०० पन सोना या तांबा नाद करके दौडमें ४० कोस चलने पर भी नहीं थकता, सबसे अधिक बलवान् ठहरता है। मध्यम हाथी १४०० पन सोना या तांबा २८ कोस नाद करके ले जाने पर भी नहीं थकता। १००० पन भार २० कोस ले जा सकनेवाले हाथीको

कठिन है। इसी लिये पराशरने अपने आप वतला दिया है—कहीं भी सब लक्षणवाले हाथी देख नहीं पड़ते, अतएव कई प्रधान लक्षणोंसे ही भला बुरा निर्णय कर लेना चाहिये। अनावश्यक समझ करके सब छोटे लक्षणोंको उल्लेख नहीं किया, कई प्रधान प्रधान लक्षणोंको ही लिख दिया है।

हाथीकी सूंड पूंछसे छोटी अथवा पूंछ जैसी, बहुत लम्बी, छोटी, बहुत मोटी, रूखी, व्रणयुक्त वा सूद्र अङ्गुलियुक्त होना बुरा है, इससे विपरीत पड़ने पर अच्छा समझना चाहिये। सूंड पूंछको बराबर, छोटी या बहुत बड़ी रहनेसे दुःखप्रद, सूद्र लगनेसे रोगकर और बहुत मोटी होने पर अर्थनाशक है।

हाथीके दोनों मसूड़े रोमहोन, बहुत मोटे, असमान और ढीले रहनेसे प्रभुका अमङ्गल और रूपदार, सुम्बुल्लावद्ध तथा कुछ उठे होनेसे स्वामीकी मृद्वि होती है।

हाथीके मुंहकी दोनों ओर जो दो दांत निकलते, उन्हींको यहां गजदन्त कह सकते हैं। यह दोनों गजदन्त एक दूसरेसे छोटे बड़े, सङ्कीर्ण, उठे हुए, भस्म जैसे शुभ्रवर्ण, टेढ़े, हलके, मटमैले, रूखे, मृदु, नोचेकी भुके हुए, जड़ और बोचमें ढालू, प्रान्त भागमें मोटे, लम्बे या बहत ऊंचे पूरे होनेसे दोषजनक होते हैं। इससे महावत और मालिकका बहतसा अमङ्गल लगता है। हाथीके दांत बराबर, चिकने, खुले हुए, भरपूर, व्रणशून्य, कली-जैसे, दृढ़ और मृणाल वा कुसुमकी तरह शुभ्रवर्ण रहना अच्छा है।

हाथीका तालु खेतवर्ण वा कषाय होनेसे अच्छा है। इससे धन और आयु: बढ़ता है। इसके दोनों होठोंके दिनों जांड़ परिमाणमें छोटे पड़नेसे मुखरोग होता है, किन्तु १२ अङ्गुलि रहने पर सब बातोंमें सुख है।

गजके ओठ लोमशून्य शम्बलीयुक्त और थोड़े तांबड़े होनेसे मुंहका रोग लगता है। फिर लम्बे रूपवाले, भरपूर कमल जैसे लाल, १६ अङ्गुल लम्बे और १२ अङ्गुल चौड़े हींठ स्वामीका आयु बढ़ाते हैं।

हाथीकी दोनों कनपटियां कम-बढ़, वेवाल, देहकी छाया-जैसी वेरझ, बराबर, गले और पीठसे बड़ी, अधूरी, खुली, हलकी, परिणामशून्य और छोटी लगनेसे अ

नहीं; किन्तु परस्पर समान, दीर्घ रोमयुक्त, विशाल शिखर विशिष्ट, कर्णमूलमें अर्धचन्द्र पर्यन्त विस्तृत, मंथत और स्थूल होनेसे नानाविध सुख देनेवाली हैं। कान वेवाल हलके चमड़े का और छेददार, नसे मिल रुई, मंकीण, विपस, रूखा, कड़ा, ठहरा, ह. आ या गोल होनेसे हाथी का आयु घटाता है। नाड़ी शून्य, बड़े छेदोंवाली, चिकने, दुन्दुभिक भांति बालनवाली, कपानके आस्फालनसे दारुण शब्द निकले, चंवर-जैसी और मोर तथा ताड़के पेटके समान होना अच्छा है।

हाथीका कण्ठ सीधा; छोटा न हो और नम्या ठीक रहनेसे अच्छा है। पीठको हड्डी बहुत ऊंची नीची या छोटी खराब है। वह ८६ अंगुल लम्बी और घोड़े के फलक जैसा रहनेसे लाभ है। हाथीका शरीर लगातार ऊंचा या मंसीला, चढ़ा उतार, हलका, नम्या या बालदार होनेसे अमंगल आता है, इससे उलटो अवस्थामें किमी बातका खटकना नहीं।

हाथीके नाखून छोटे, काने, ट. कड़े-जैसे और रूखे होनेसे बुरे हैं, किन्तु अर्धचन्द्रकी तरह चमकदार और पहले कहे लक्षणोंसे उलटे पड़ने पर अच्छे होते हैं।

हाथीके पैर गिरे हुए, रूखे और तलवेमें बहुत अच्छे लगनेसे दुःखदायी होते, किन्तु १ हाथ लम्बे और कफुवे जैसे रहने पर शुभजनक हैं। इसके अलावा और भी कितने ही सूक्ष्म लक्षण ऋषि मुनियोंने निर्णय किये हैं। इस विषयमें अधिक समझनेके लिये "पराशरमहिता" देखो।

मनुष्य जैसे पितामह ब्रह्माको अपना पूर्वपुरुष जैसा वतलाते, बड़े डील डीलवाले हाथी भी ऐरावत आदिकी अपना पितामह वा पूर्वपुरुष-जैसा कह सकते हैं। इनके ८ पुरखे हैं—ऐरावत, पुण्डरीक, वामन, कुसुद, अञ्जन, पुष्पदन्त, सार्वभौम और सुप्रतीक ! उन सबको दिग्गज कहा जाता है। दिग्गजोंके ही वंशधर महाकाय गजोंने पृथिवीके बड़े जङ्गलमें अपना आधिपत्य फैला दिया है। इनकी कुलोनता भी शायद देख पड़ती और डील डालमें भेद भी आ जाता है। ८ दिग्गजोंके वंशमें उत्पन्न होनेसे हाथी भी ८ भागोंमें बंटे हैं। इनमें ऐरावत वंशके गज ही अष्ट गिने जाते हैं। यह शुभ्रवर्ण, लोम शून्य, अल्पभोजी, बलवान्, बहुत बड़े, युद्धके समय बिग-

हनेवाले, साधारण अवस्थामें नख, शीघ्रजलपायी, बाल और पूँछ पतली, सफेद और लम्बी सूँड, निम्न छोटा श्रोत भी पुष्ट और शरीरसे प्रभूत तथा उग्र मदजल निकलता है। इन गर्जोंके मस्तकमें साफ और अच्छीपी गोल मुक्ता होती है। यह राजाओंके अल्प पुष्पसे पृथिवीकी नहीं कृति। लड़ाईमें इनके दात टट जाने पर भी फिर बढ आते हैं।

जिस कुञ्जरका सब अङ्ग कोमल, पूँछ डडे लौसी न हो, गाल खुरखुरा, सर्वदा मद खुब और क्रोध बना रहे, देवप्रिय, सर्वभक्ष तथा बलवान और दात और जीभ बहुत तीखी हो, पुण्डरीक दिग्गजका व शसभूत है। इसके वीर्यसे कवलका जैसा गन्ध आता और अधिक मद जल वा वमन टेखा नहीं जाता। यह बहुत पानी पीना नहीं चाहता और अधिक यम करने पर भी कम थकता है। पुण्डरीक वयजात हाथी जिस राजाके घरमें रहता, समस्त पृथिवीका शासन कर सकता है।

वामन दिग्गज व शके हाथियोंका मारा देह बहुत कडा और छोटा, कभी कभी मतवाले होते, हमेया मद टपका करता, भाङ्गार करके बनवान् और वीर्यवान् बन जाते, बहुत पानी पीना नहीं चाहते, कनपटीमें बह त रूप, दोनों दात भद्दे और पुच्छ तथा कर्ण सूक्ष्म होते हैं।

देह दीर्घ, सूँड मोटी न होते भी लम्बी, दोनों दात खोंडे, शरीर सर्वदा मलयुक्त, कनपटी मोटी और भग डालू हाथी कुष्ठ दिग्गजके व शजात हैं। यह दूसरे हाथियोंकी देखते हो मार डालते हैं। मनुष्य प्राय इनके पास फटक नहीं सकता।

अञ्जन नामक दिग्गजके व शमें उत्पन्न होनेवाले हाथीका देह चिकना, पानी पीनेका बडा अभिलाषी और ल वा घुरा, दात और सूँड छोटी, दोनों दात मोटे और यमका दु ख उठानेवाले होते हैं।

जो हाथी सर्वदा मदजल और रेत छोडता, धनूप देयका उत्पन्न, पूँछ बहुत छोटी और बडे वेगसे चलता—पुष्यदल दिग्गजका व शसभूत उचरता है।

रूप बहुत, बडा, सब्बी राह चलने पर भी न बके, खाने पीनेमें खूब धानाक, भक्षुमिमें धूमना अच्छा

लगे,—देह बडा और कडा दोनों दात लम्बे, नर्म और सफेद होते भी निकम्भा, पैदू, मूत्र वा पुरीष अल्प आवे, कानको जगह फूलो हई, रूप और गाल हलके होना सार्वभोम दिग्गजके व शजात कुञ्जरका लक्षण है। इन हाथियोंमें बडिया मुक्ता मिलती है।

जिनकी सूँड लम्बी, देह टोला, दीड प्रचण्ड, क्रोधे, सर्वदा भक्षणामिलायी और हस्तिनोमिय, पूँछ और दात पतले, गाल बडा, कान प्राय न चले और गालमें छोटे छोटे बहुत रूप हैं, सुप्रतोक दिग्गजके व शसभूत है। इन हाथियोंके मस्तकमें बडे बडे मोतो होते हैं।

प्राचोन ऋषियोंके मतानुसार मनुष्यकी भाति हाथी भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—४ जातियोंमें बंटे हैं। इनमें एक जातिसे उत्पन्न हुआ हाथी शूद्र कहलाता है। शास्त्रमें अच्छे हाथीके जो लक्षण लिखते, विशुद्धमें सभी मिलते हैं। शूद्र तथा ब्राह्मण जातीय हाथीसे उत्पन्न होते भी जिस हाथीमें ब्राह्मण जातीय हाथीके लक्षण देख पडते और बलवीर्यवान् होता, जारज कहा जाता है। दो द्विजातीय हाथियोंसे उत्पन्न होनेवालेका नाम शूर है। फिर ब्राह्मण जातीय और जारजसे जन्म लेनेवाला हाथी उद्दान्त कहलाता है। इसी प्रकार एक दूसरेके सयोगसे बहुत तरहके हाथियोंकी उत्पत्ति होती है। पराशर कहते हैं, जो हाथियोंकी जातिका भेद भनी भाति समझता, वह राजाका भ्रमाय बन सकता है।

ब्राह्मणजातीय हाथी विद्यालदेह, पवित्र और चल्प भोजी होता। जो वलिष्ठ, विद्यालदेह तथा क्रुद्ध रहता, क्षत्रिय जातीय उचरता है। दूसरो दोनों जातियोंके मिय लक्षण है।

चिक्री और कामकी दूसरो चीजोंकी तरह हाथीको भी देख भालके सेना चाहिये। सबसे पहने हाथीके बलकी परीक्षा की जाती है। देखने सुननेमें अच्छा होते भी बलहीन हाथी नहीं लेते हैं। जो हाथी १८००० पल सोना या ताँबा लाद करके दीडमें ४० कोस चलने पर भी नहीं थकता, सबसे अधिक बलवान् उचरता है। मध्यबल हाथी १४००० पल सोना या ताँबा २८ कोस लाद करके से जाने पर भी नही थकता। १०००० पल भार २० कोस ले जा सकनेवाले हाथीको

हीनवल कहते हैं। २½ हाथ मोटी और मटीमें ४ हाथ गहरी गड़ी हुई लकड़ी उखाड़ या तोड़ डालने-वाला हाथी ही सबसे ब्रेष्ठ होता है। पहली जमी मोटी, ३॥ हाथ मटीमें गड़ी और ७ हाथ ऊपर निकली हुई लकड़ीको मध्यवल हाथी तोड़ या सहजमें ही उखाड़ करके फेंक सकता है। पहले जिस मोटी लकड़ीकी बात कही है, उससे आधा मोटा ३ हाथ मटीमें गाढ़ा और ६ हाथ ऊपर उठा हुआ खूटा तोड़ या उखाड़ करके फेंक सकनेवाला हाथी हीनवल कहलाता है। ऐसे ही बलकी देख भाल करके जांचते हैं, हाथी लड़ाई आदिमें क्या काम देगा और कैसा बल लगावेगा। शुभ दिनको शुभलग्नमें हाथीको गुरुसे रंग करके कानमें चामर, शङ्ख आदि सुन्दर गहने पहना देना चाहिये। महावन पहले पहल जब हाथीकी चलाने लगता, उसकी दोनों और हजारों लोगोंकी हल्ला मचाना पड़ता है। जो हाथी महावतके आंकुसकी मारसे उत्साहित हो करके मुंह उठाता और घूम फिर करके पैर चलाता, जिसके वेगसे कान फटकारने पर दांत बोलने लगते, अद्भुतके आघातकी जो कुछ भी पीड़ा अनुभव नहीं करता, जो हाथी लड़ाईसे कभी नहीं भागता या डरसे पीछे पांव नहीं रखता, जिसकी चिहाड़से सभी दिशाएं भर जाती और मटजलके स्त्रावसे जिसका कपोल भर आता, बलशाली हाथी कहलाता है। पैदल सिपाहियों और सवारों का हल्ला सुनने पर रोपसे आंखें लाल लाल निकाल उन पर टकटकी लगा कान खड़े और फैला करके बड़ी सरपटमें विपन्न दलके प्रति झपटनेवाले हाथीको भी ऋषियोंने प्रभूत बलशाली जैसा सराहा है। जो हाथी सिंह-जैसे जङ्गली जन्तुको देख करके नहीं डरते और जो वनावटी हाथियोंकी बातकी बातमें छिन्न भिन्न कर डालते, उत्तम कहलाते हैं। बड़ी बड़ी चिड़ियोंके झुण्डकी आवाज या दावानलसे न डर करके चुपचाप अपनी धुनमें घुमनेवाला मध्यम और भयसे आरोहीकी पीठ पर न चढ़ानेवाला और मत्स्या भुक्ताये रहनेवाला हाथी विलकुल निकट होता है। ऋषियोंने उत्कृष्ट हाथीकी रम्य, भीम, ध्वज, अधीर, वीर, शूर, अष्टमङ्गल, सुनन्द, सर्वतोभद्र, स्थिर, गम्भीरवेदी और वरारोह— १२ विभागोंमें विभक्त किया है।

जिस हाथीके शरीरकी बनावट बहुत अच्छी और गंठी हुई, दांत सुहावने, शरीर बड़ा, तेजस्वितापूर्ण तथा देखनेमें अतिशय हटपुष्ट रहता, उमीका नाम रम्यक पड़ता है। यह हाथी सम्पत्ति बृद्धि करता है।

अद्भुत आदिके दारुण प्रभावमें भी बैठना अनुभव न करनेवाला और शूद्र लक्षणयुक्त हाथी भीम कहलाता है। यह राजाके सब अर्थोंकी मिद्धि करनेवाला है।

जिस हाथीकी मूंड परमे पंथ तक एक लकीर देख पड़ती, ध्वज कहा जाता है। यह साम्राज्य और दीर्घजीवन देनेवाला है।

दोनों कुम्भ परस्पर समान, देखनेमें बौना, आवर्त-विशिष्ट और आवर्तस्थानमें उन्नत रहनेसे कुञ्जरको अधीर कहते हैं। यह हाथी राजाओंका बुरा करता है।

जिस हाथीको पीठसे तींटी तक आवर्त और देह पुष्ट तथा बलशाली होता, वीर कहा जाता है। इसमें राजाओंके अभिलषित विषयको मिद्धि होती है।

डोल डोल बड़ा, देह, पुष्ट, दन्त तथा गण्डदेग मन डर, खानेमें थका जैसा मालूम पड़नेवाला और बहुत बली हाथी शूर नामसे अभिहित है। इसके रहनेसे राजलक्ष्मी बढ़ती है।

जिसके दोनों दांत, नख तथा पुच्छ श्वेतवर्ण-शरीरमें शफेट धारियां पड़ी हुईं और कुम्भ चक्षु और पुंचिष्ठ रक्तवर्ण देखा जाता, अष्टमङ्गल कुञ्जर कहलाता है। यह हाथी जिसके घरमें रहता, समस्त पृथिवी-मण्डलका अधीश्वर हो सकता है। इस हाथीके निवास-स्थानका अरिष्ट वा अनोति मिट जाती और वहांसे ४०० कोस तक अमङ्गल देख नहीं पड़ता। कलियुगके राजाओंका पुण्य अंग बहुत ही कम है, इसीसे अब अष्टमङ्गल कुञ्जर दुर्लभ हो गये हैं।

जो हाथी मांस कटने या लड़ गिरनेसे भी समझ नहीं सकता क्या हो रहा है अर्थात् उसकी पीड़ाकी अनुभव नहीं करता, गम्भीरवेदी कहलाता है।

दन्तद्वय, शण्ड, कुम्भद्वय, देह, गण्ड वा गण्डद्वयमें आवत (भौरी) रहनेसे हस्ती शुभलक्षणाक्रान्त होता है। जिन हाथियोंका गण्डदेश हमेशा मदके स्त्रावसे भरा रहता, तीक्ष्ण अद्भुतके प्रहारसे भी जिन्हे हटानेमें

कट पडता, जो दूसरे हाथीको देखते ही रागसे फूल उठते और जो पानोसे भरे काले बादल-जैसे चिह्नाडा करते, राजाओंके लिये सुखकर होते हैं।

दुष्ट हाथी बीस भागमें विभक्त है—१ दोन, २ चीण, ३ विपन्न, ४ विरूप, ५ विकल, ६ खर ७ विमद, ८ धनापक, ९ काक, १० धूम्र ११ जटिल, १२ अजिनो, १३ मण्डली, १४ श्वित्री, १५ इतावर्त, १६ महाभय, १७ राट्टा, १८ सुपनो, १९ भालो और २० नि सत्व।

जिस हाथीका देह बहुत चीण और प्रभाशून्य और दन्त छुद्र छुद्र तथा अत्यन्त चीण रहते, उसे दोन कहते हैं। इस हाथीके घरमें रहनेसे राजा दरिद्र हो जाता है।

चीण नामक कुत्तरका गुण्ड खर्व, पुच्छ इदत् और निम्बासवेग चीण होता है। यह घरमें रहनेसे धन सम्पत्ति नष्ट होती है।

कुश, दन्त, चक्षु, कर्ण वा दोनों पार्व परस्पर असमान होनेसे गजको विषय कहा जाता है। यह सर्प जैसा क्षयकारक है।

विरूप हस्ती स्कन्धदेशमें मस्तक पर्यन्त चीण और पयाद्भागमें स्थूल होता है। इसके तबलेमें रहनेसे राज्य कूटता और बल घटता है।

अनेक भागमें भी जिसका मद क्षरण देखा नहीं जाता और युद्धके समय जो बल नहीं लगाता, विकल कहनाता है। ऐसे हाथीको छोड़ देना चाहिये।

शरीरमें खरता स्वाभाविक जैशे लगने और दन्त तथा गुण्ड अपेक्षाकृत छोटे मान्म पडनेसे हाथीकी खर कहते हैं। इसको घरमें रखनेसे कुलक्षय होता है।

जिस हाथीकी एक वारगी हो मदस्त्राय नहीं होता या होता भी है तो अकालमें और जो देखनेमें नितान्त कुक्षित तथा अवग लगता, विमद ठहरता है। इसको परिव्याग हो कर देना चाहिये।

ध्यापक हाथी हलका भारे अङ्ग चीण, गुण्ड गिरा तथा उदर अपेक्षाकृत छोटा, व्यग्रभावमें अविद्यान्त निग्राम हीड़नेवाना, चक्षु धनवरत मनमें आच्छन्न, कटि और पुच्छके अपभागमें आवर्त वा मण्डनयुक्त और निम्ब निषे ट रहते भी सर्वदा बर्हिर्गत होता है। हृष्य

ओंके मध्य यह अतियय निष्ठ है। जो राजा अपनी शौचवि और शरीरका आरोग्य अभिनाय करे, इस हाथी को देखनेसे भो दूर रहे।

जिस हस्तीका शब्ददेश अर्थात् नानाटस्य अस्थिफनकहय भग्न और स्कन्धदेश अतियय उच्च पडता, काक ठहरता है। यह प्रमुका मृत्युकारक है।

दन्तद्वय विषम लानाटासिगत गुण्डविरोधी, स्वय भिव वा विदीर्ण एव शून्यान्तर रहनेसे गजको धूम्र कहा जाता है। इसका फल काकहस्तीके हो समान है।

हाथीको मस्तकके किय कर्कश, रुच और जटा जैसे आकारधारी होने पर जटिल नामसे अभिहित करते हैं। यह धनक्षय करता है।

अजिनो गजका स्कन्ध वा गात्रचर्म भूमिलग्न जैसा मान्म पडता है। इसके द्वारा राजाका भूमिक्षय और धनक्षय होता है। शौचद्विके अभिनायीको इस जातीय हस्तीका स्वर्ग वा दर्शन करना मना है।

जिस हस्तीके देखमें एक, दो या बहुतसे मण्डन रहते और वह मण्डन विरूप वा उन्नत लगते, मण्डली कहते हैं। यह कुलनायक होता है।

उक्त मण्डन (भोरी) श्वतवर्ण लगनेसे हस्तीको श्वित्री कहा जाता है। यह गृहमें रहनेसे धननाश होता है।

हृदय, उदर, त्रिकदेश, पुच्छमूल, गुह्यदेश, निद्र वा पदके आवर्त नष्ट हो जानेसे हस्तीको इतावर्त कहते हैं। यह राजाको मन्त्री विनाश करता और उसे योगी, प्रवासी वा उपद्रुत कर डालता है।

जिस हस्तीके गमनफालको गुणफलयका सुदुर्बुद्ध पर स्पर् मङ्कर्षण हुआ करता, महाभय नाम पडता है। यह हस्ती लक्षणयुक्त और गुणगानो होते भी परिव्याग कर देना चाहिये। महाभय हस्ती गृहमें रहने पर राज्य, धन, कुल मैन्य, मित्र, पत्नी और प्रजा दृष्टि भावमें ही नष्ट हो जाती है। यह अर्धा टिकता, मोग भी दिन दिन मिटने लगते और सम स्यान्तर्त यन्मभय व्याधिभय तथा अग्निभय वा उपमित होता है।

अत्यन्त ताडित होने पर भो गमन करनेकी इच्छा न रखनेवाना पृथमें उदर पर्यन्त गोनाकार श्वायुक्त

और चलनेमें अग्रपदके स्थान पर पश्चात् पद डालनेवाला हस्ती राष्ट्रहा कहलाता है। जो राजा अपनी श्रीवृद्धि चाहे, इस हाथीको अपने राज्यसे मार भगाये। राष्ट्रहा हाथी जिस राज्य वा प्रदेशमें वास करता अल्प दिनमें हो मिटता है।

जिस हाथीके कई पद परस्पर असमान, दोनों दन्त विषम पञ्चरोमें एक, दो या समस्त ही भग्न, जिमका दन्तद्वय झुक पड़ता या नहीं चलता और जिमका कुम्हद्वय श्वेतवर्ण लगता, सुपली नाम पड़ता है। यह राजाके पाम रहनेसे राज्य, दुर्ग, सैन्य और अमात्योंका विनाश होता है। इस प्रकारका बटजात हाथी एक बारगी ही दूर रखना चाहिये।

कपालका चर्म अतिशय कर्कश जैसा लगनेसे हाथीको भाली कहा जाता है। यह स्वामीका कुल और धनचय करता है।

निःसत्व हाथीका शरीर पुष्ट तथा विशाल, दन्तद्वय सुन्दर, वीर, रणसज्जासे सज्जित और बाहक कर्टक उत्साहित तथा परिचालित होते भी युद्ध करनेका साहस नहीं करता। हस्तियोंके जितने दोष उल्लिखित हुए हैं, उनमें यह दोष सर्वापेक्षा प्रधान है।

राजाओंको दुष्ट हस्तीका कभी अवलोकन करना न चाहिये। उनकी पर राज्यमें पहुँचाते वा नगरसे वहिष्कृत रखते अथवा शुद्ध ब्राह्मण वा विशुद्ध गणकको प्रदान करते हैं। यदि किसी समय दुष्ट हाथी राजाको देख पड़े तो ब्राह्मणको शत गोदान और नगरी अपने आप वा पुत्र को नीराजित करना चाहिये। देवसूक्त मन्त्र द्वारा १० सहस्र होम वा तत्प्रतीकारके निमित्त अग्निमें तिलहोम किया जाता है। ब्राह्मण आदि जाति भेदसे जो चार प्रकारके होते, ब्राह्मण प्रभृति चार जातियोंके पक्षमें वाहन कार्यको यथाक्रम शुभप्रद हैं।

मनुष्यका आयुः निर्णय करनेको जैसे नानाविध लक्षण रहते, हाथीका आयुः ठहरानेके भी भारतीय चिकित्सक कई लक्षण स्थिर करते हैं। यह लक्षण बाह्य और आभ्यन्तर दो भागोंमें बँटे हैं। आभ्यन्तर लक्षण योगी एक मात्र योगवलसे ही अवलोकन करते हैं। इस स्थल पर हम उन्हें उल्लेख करना निष्प्रयोजन सम-

झते हैं। बाह्य लक्षण बारह हैं। यथा हस्तगत, बटजा-
त्रित विषापस्थ, शिरस्थ, नयनगत, कर्णाग्रित, कण्ठस्थ,
गात्रस्थित, चरणस्थित, अग्रगद्गस्थित, कान्तिस्थ और सत्व-
स्थित। फिर इन लक्षणोंको घेव भी कटा जाता है। भद्र-
जातीय हस्तीका पूर्ण आयुः १२०, मन्द्रजातीयका ४०
वत्सर और मित्रजातीयका आयुः अनियत है। पूर्वको ओ
द्वादश लक्षण उल्लिखित हुए, उनके रहनेमें हाथीका
पूर्णायु हुआ करता और हीनतामें उसकी न्यूनता आती
है। हस्तगत लक्षणोंके अभावमें १० वत्सर आयुः घट
जाता है। इसी प्रकार कोई दो लक्षण न मिलनेमें आयुः
२० वर्ष, तीनसे ३० और चारसे ४० वर्ष कमो पड़ती है।
ऐसे ही एक एक लक्षणके अभावमें दश दश वर्ष आयुः
घटता है। यह लक्षण हाथीके दुष्ट लक्षणोंका दोष भी
दूर किया करते हैं। पटललक्षण रहनेमें दन्तदोष विनष्ट
होता है। इसी प्रकारसे दन्तलक्षण वाहित्यदोष, वाहित्य
लक्षण नेत्रदोष, नेत्रलक्षण तालुदोष और तालुलक्षण
स्कन्धदोषको नष्ट करते हैं। ऐसे ही अन्यान्य स्थानोंके
लक्षण भी अपरापर दोष निवारण करते हैं।

स्थान, देश, आहार और वातपित्त भेदसे हस्तीके शरी-
रका विभिन्न वर्ण हुआ करता है। उममें मन्दूर, गङ्ग,
वैदूर्य, विद्युत्, सुवर्ण वा इन्द्रनील वर्णका हाथी ही
अच्छा होता है। अतिशय श्वेतवर्ण, रक्तवर्ण वा शुक
तथा मयूरसदृश वर्ण विशिष्ट हस्ती सर्वापेक्षा श्रेष्ठ है।
ऐसा हाथी प्रायः देख नहीं पड़ता, प्राच्य वनमें कभी
कभी वैसे दो एक हाथी दिखलाये देते हैं। शृङ्गार,
अङ्गार, भस्म, अस्थि, पद्म, मञ्जिष्ठा वा आम्रपुष्प तुल्य
वर्णका हस्ती अशुभ है। उससे नाना प्रकार उत्पात
होनेकी सम्भावना है।

मनुष्योंको जो व्याधि लगता, हाथियोंको भी हुआ
करता है। इनकी चिकित्सा भी मनुष्यकी भाँति ही
कर्तव्य है। गरुड़पुराणके मतमें मनुष्यको जिस मात्रामें
औषध खिलाते, हाथीको उससे चौगुना पहुँचाते हैं।
वनमें हस्ती वा हस्तिनी पीड़ित होनेसे संस्कार वग्न वह
अपने आप औषध अन्वेषण करके खा लेते हैं। हाथीके
उदरमें प्रायः कृमि रहते और वह समझते हैं कि
कीड़ोंकी दवा कीचड़ है। कृमि होने पर वह कर्दमके

गोल बना करके खा जाते हैं। गृहपालित हस्तोकी सुचि क्लिप्ताकी व्यवस्था भी प्राचीन चिकित्सकीने निरूपण की है। पालकाय रचित गजायुर्वेदेमें विश्रुत विवरण लिखा गया है। मनुष्योंको पोडा हीने पर जैसे शान्ति स्वरूपयन करना पड़ता, हाथीको दु ख मिलने पर वैसा ही विधान रहता है।

प्राचीन ऋषियोंने हस्तियोंका जो लक्षण, शान्ति और शोष आदि निरूपण किया है, सर्वेपमें इस ज्ञान पर लिखा गया है। अथ गजस्य लक्षणं परावर, इत्यथानि चिह्ना, बुद्धिमत्पुत्र, पालकाय, अथप्रपुत्रा च पालत इत्यथ है।

पहले ही लिख चुके हैं, प्राचीन कालकी भारतमें कहीं हाथो मिलते थे। वर्तमान समयमें एशिया और अफ्रीका दोनों स्थानोंको हाथोका आकार कहा जा सकता है। इन दोनों स्थानोंमें हाथियोंका आकार और गठन गत विलक्षण भेद है। हाथियोंको देखते ही आकारगत भेद कितना ही ममभा जाता है इनको आभ्यन्तरिक गठनप्रणालीका तारतम्य रहता है।



एशियाका हाथो।

एशियाके बीच सिन्धु, भारतवर्ष, ब्रह्मदेश, प्रसाम-देश, मलय उपदोप और पूर्वदोपके पहाड़ों तथा जङ्गलों भूभागमें हाथी देख पड़ता है। सिन्धुमें समुद्रप्रवेश ७८ हजार फुट ऊंचे और दक्षिणात्यमें ४५ हजार फुट ऊंचे पहाड़की चोटी पर, हाथियोंका भुण्ड घूमा करता है। भारतके दक्षिणात्यस्थित दक्षिण तथा पश्चिमभाग, पूर्वहिमालयके निकटवर्ती वनमय स्थान, नेपाल, त्रिपुरा और चट्टग्राम स्थानमें हाथो

पाया जाता है। इन सभी स्थानके हाथियोंमें फिर आकारगठनका तारतम्य होता है। १८ वा २४ वर्षमें हाथी जितना बढना होता—बढ जाता, फिर उससे अधिक भोर नहीं। हाथीके थगले पैर छोरोसे दोबार नापने पर जितना आता, उसका उच्चत्व बतलाता है। सिन्धुका हाथो प्राय ८ फुट ऊंचा होता, कोई कोई ८ फुटमें भी अधिक पहुँचता है। जापानमें एक बार १२ फुट १ इंच ऊंचा हाथी पकड़ा गया था। भारत और सिन्धुका देखते दूसरे उपदोपोंमें हाथियोंकी संख्या बहुत अधिक है। उन जगहोंमें मनुष्योंकी रक्षा यश नहीं जैसी होनेसे इन्हें घूमनेमें फिरनेमें कोई अडचन नहीं पड़ती। वहा हाथियोंकी संख्या इसलिये बढ जाती कि स्वच्छन्द विचरण करनेमें सम्पूर्ण सुविधा आती है। रूसजार 'पीटर दी ग्रेट'के समय ईरानके शाहने सेण्टपीटर्सबर्गके १२ हाथो ऊंचा हस्तिकहान भेजा था। आजतक कोई विशेष प्रमाण नहीं मिलता, क्या उससे भी अधिक ऊंचा हाथी हो सकता है। जन्म के समय हाथोकी ऊंचाई लगभग १॥ हाथ रहती है। किसी अजरनेने हिन्दुस्थानी हाथोका एक बच्चा ७ वर्ष तक पाला था। उन्होंने उसकी बाढ इस तरह बतलायी है—एक वर्षमें ३ फुट १० इंच, २ वर्षमें ४ फुट ६ इंच, ३ वर्षमें ५ फुट, ४ वर्षमें ५ फुट ५ इंच, ५ वर्षमें ५ फुट १० इंच, ६ वर्षमें ६ फुट १॥ इंच और ७ वर्षमें ६ फुट ४ इंच

बहुत लोग विश्वास करते कि ७ फुट ऊंचे हाथी काममें लग सकते हैं। किन्तु ८।१० फुटका हाथी लडाईके लिये सिखाया जाता है। टीपू सुलतानके समय कप्तान सिडनीने जो हाथो चलाये, कोई ८॥ फुट ऊंचे थे। हाथ की लम्बाई पुरुषमें सुद तक १५ फुट १२ इंच तक देखी गयी है।

हाथीकी पीठमें एक कूबड रहता, जो बाल्यकालको बढा लगता परन्तु उसकी बाढके साथ साथ घटता है। बहुतसे लोग इस कूबडको देख करके हाथीकी जवानो या बुढ़ापा समझ लेते हैं। सिन्धुके हाथोके बहानका हाथी कितना ही अच्छा, काममें योग्य और लडाका होता है। चट्टग्रामके दक्षिण भाग, ब्रह्म

हैं। आजकल टाछिणात्यके कोयम्बतूर और वज्जालके ढाका अञ्चलमें हाथी पकड़नेका बड़ा अड्डा है। महिसुर राज्यमें भी हाथी पकड़े जाते हैं।

वीरनिग्रो द्वीपके उत्तरपूर्व अञ्चलमें भी जङ्गली हाथी देख पड़ते हैं। किनाजटानगान नदीके किनारे हाथियोंका दल घूमा करता है। यह हाथी भी खुड़े खेतोंमें घुस अनाज विगाड़ डालते हैं। मशाल जला करके इनके मामने रखने पर यह उमका तीव्र आलोक सह न सकनेसे जङ्गलको भाग जाते हैं। वहां हाथी पकड़नेका कौशल है। शिकारी अंधेरी रातको एक छोटी पैनी बरछी ले करके हाथीके बल चलते चलते हाथियोंके भुगडमें घुस जाते और अति कौशलसे वही बरछी किसी बड़े हाथीके पेटमें घुसेड आते हैं। हाथी इस दारुण आघातसे चीत्कार करने लगता है। उमका चीत्कार सुन करके दूसरे हाथी जङ्गलको चल देते हैं। दूसरे दिन सवेरे शिकारी लहके चिह्न देख आहत हाथीको ढूँढते हैं। थोड़ी दूर जा करके देखते कि वह बहुत ही दुर्बल हो गया है। शिकारी फिर एकवार बरछी मारते और हाथीको अपने 'बशमें' लाते हैं।

भारत-महासागरके सुमात्रा द्वीपमें भी हाथी मिलता है। इसके पञ्जरमें २० हड्डियां होती हैं। फिर भारतीय हाथीके दांतोंकी मंडुसे इसके मंडू चौड़ी पड़ती और बुद्धि भी भारतीय हस्तीकी अपेक्षा बहुत अधिक रहती है।

हाथीका स्वर तीन प्रकार होता है। उमको सुन करके बहुतसी अवस्थाएं समझी जा सकती हैं। हाथीके सूंड उठा करके तुरही-जैसा शब्द करने पर समझते कि उसके मनमें बड़ा ही आह्लाद हुआ है। केवल मुंहसे जो अनुदात्त शब्द निकलता, उससे हाथीका कोई अभाव हुआ समझ पड़ता है। हाथीके किसी कारण वश क्रोधित होने पर कण्ठदेशसे आनेवाला भीषण शब्द क्रोधज्ञापक होता है।

पहले एक एक हाथीका मूल्य १०० से १०००००० तक था। आइंन अकबरीकी देखते ५०० घोड़ों और १ हाथीकी कीमत बराबर होती है। परन्तु आजकल उतना निरख नहीं है। फिर भी अच्छा हाथी

५००० से १००००० रु० तक बिकता है। पहले हाथी भारतीय राजाओंकी युद्धमें सहायता पहुंचाता था। आजकल केवल ठाटवाटका देखावा मात्र है। मनुष्यकी भाति मीठा हुआ हाथी गानेका स्वर ताल स्मरण रख सकता और ताल ताल पर नाच सकता है। वह धनुष पर वाण चढ़ा करके चला सकता और कोई कोई शायद बन्दूक भी छोड़ सकता है।

आजकल हाथी पर चढ़ करके लड़नेकी रीति नहीं है। फिर भी दुर्ग आदि आक्रमण करनेको हाथी पर तोप चढ़ा गोले छोड़ा करते हैं। अब हाथी युद्धकालको बौभ दोनमें व्यवहृत होते हैं। हाथी २२॥ मनमें ३० मन तक भार वहन कर सकते हैं। वह बौभ लाद करके घण्टेमें १॥ कोस या दिन भरमें ८१० कोस-चल सकते हैं। हाथी २॥ कोस घण्टेसे अधिक नहीं जा सकता है।

हाथीका आहार समस्त गृहपानित पशुओंकी अपेक्षा अधिक है। साधारणतः वह १ मन चावन खा और ३॥ मन पानी पी सकता है। सुगल-सम्नाट् अकबरने हाथीको सात भागोंमें बांटा है—१ मस्त, २ शेरगर, ३ सादा, ४ मंभोला, ५ कड़ा, ६ कनडुब्बा और ७ मोकाल। इन ७ भागोंमें प्रत्येक ३ उपविभागोंमें विभक्त है—बड़ा, मंभोला और छोटा। मोकाल १० प्रकारका होता है।

बड़ा मस्त हाथी २ मन ४ सेर आहार कर सकता है। इसी प्रकार मंभोलेकी खराक ३ मन १३ सेर और छोटेकी २ मन १४ सेर है।

बड़ा शेरगर २ मन ८ सेर, मंभोला २ मन ४ सेर, छोटा १ मन ३० सेर, बड़ा सादा १ मन ३४ सेर, मंभोला १ मन २३ सेर, छोटा १ मन १४ सेर, बड़ा मंभोला १ मन २२ सेर, मंभोला १ मन १० सेर, छोटा १ मन १८ सेर, बड़ा कड़ा १ मन १५ सेर, मंभोला १ मन ८ सेर, छोटा १ मन ४ सेर, बड़ा कनडुब्बा १ मन, मंभोला २४ सेर, छोटा २२ सेर, बड़ा मोकाल २६ सेर, मंभोला २४ सेर तीसरा २२ सेर, चौथा २० सेर, पांचवां १८ सेर, छठा १६ सेर, सातवां १४ सेर, आठवां १२ सेर, नवां १० सेर और दशवां ८ सेर खाता है। इन्हींके

क्रमात्तुसार हस्तिनीके आहारको भी व्यवस्था थी। सबसे बड़ी हस्तिनीको १ मन २२ सेर और सबसे छोटीको ६ सेर मात्र आहार मिलता था। गज पर चढ़ करके बहुत दूर घूमनेमें बहुतसे लोग उसको आटेकी रोटी खिलाते हैं।

गज खानिके लिये बड़े बड़े पेड़ोंको डालिया तोड़ डालते हैं। फिर धरे धीरे पत्तों और लकड़ोंको छोड़ करके वह केवल छाल ही खाते हैं। वैधा खानेमें गज बहुत ही मजबूत होता है। वह मसूचाकोया सुहमे डाल करके निगल जाता है। मलत्याग करने पर देखा जाता कि कैथा जैसेका तैमा पडा है, परन्तु उसमें गूदेका कहीं नाम भी नहीं ! मन्था सर्वे हाथोंको नहलाना पड़ता है। घूमनेकी निकलनेसे पहले गजको मर्त्य कान और पैरमें मसूहन लगाते, नही तो धूपसे यह सभी स्थान सहजमें हो फट जाते हैं। गज मालिक और मजावतके वगमें रहता है। वह महावतके आख उठाने और उ गनी खनाने पर अमाध्य साधन किया करता है। पशु होत मी गजमें दया होती और उपकार करने पर वह क्षतव्रता प्रकाय करता है।

जङ्गली गजकी अनेक वार सिंह व्याघ्र प्रभृति वन्य जन्तुयोंसे लड़ना पड़ता और कभी कभी गजोंमें भी परस्पर युद्ध होने लगता है। मन्त्राट्ट अकबरके समय बहुतसे हाथी लड़नेकी प्रसृत और उनके सिखानेकी बतनभोगी लोग भी नियुक्त रहते थे। आजकल हाथियोंकी लड़ाई बहुत कम देखनेमें आती है। कुछदिन पहले बड़ोटेमें प्रति वर्ष हाथी मजारे जाते थे। जो हाथी युद्ध करते, उन्हें एक प्रकारका मादक द्रव्य खिलाते हैं। इससे हाथी उत्तेजित हो जाते हैं। फिर ३ मास तक उन्हें मत्वन और चीनी खिनानो पड़तो है। इसी प्रकारके दो मतवाने हाथी लड़नेकी लाये जाते और लोग उनकी हार जीत पर वाजी लगते हैं। हस्तियुद्धकी रङ्गभूमि ६०० हाथ मन्थी और ४०० हाथ चौड़ी होती है। दोनों हाथी जञ्जीरसे बांध करके रखे जाते हैं। युद्धका एक मद्धत है। उस सद्धतके होते ही दुर्गक लोग अपने अपने स्थान पर हट करके खड़े हो जाते हैं। फिर दोनों हाथियोंको जञ्जीर खोल देते हैं। हाथी तर्जन गर्जन करके अगाडके बीचमें पहुँचते, एक दूसरेके

सामने जा करके मर्त्यसे मन्था रगड़ते और सूडसे सूड लपेट करके लड़ने लगते हैं। इसी प्रकार बहुत देर तक लड़ने पीछे जो हाथी हारता युद्धक्षेत्रसे हटा दिया जाता है। फिर जयी हाथी रङ्गम्यनमें खडा हो करके आस्नान किया करता है। उस समय महावत उतर पड़ता और दूसरे दूसरे लोग जा करके होशियारीसे उसको बाध लेते हैं। खिनाडियोंकी यथायोग्य पुरस्कार मिलता है। हाथीसे आदमोंको भी लडाईं होती है।

हाथी शिकारका बड़ा सहारा है। प्राचीन कालकी हाथी पर चढ़ करके राजा लोग शिकार खेलते थे। आज कल भी अरिज राजपुरुष प्राय हाथी पर चढ़ करके शिकार करने जाया करते हैं। अशिक्षित हाथी ने करके शिकारमें जानेसे विपद् पडनेकी सम्भावना है। शिक्षित हाथी पहाड पर चढ़ और आवश्यक होने पर उसकी घाटीमें भी उतर निकलता है।

भूतत्वविदोंने पृथ्वीके निम्नतरमें प्रस्तरोभूत हस्ति-कङ्काल पाया है। उससे ममभ पड़ता है कि बहुत पुराने समयकी हिशण्ड हस्तो विद्यमान थे। समुद्रमें भी एक जलचर हाथी देख पड़ता है। उसका नाम जलहस्ती है।

गजको देखो।

२ खर्गके इन्द्रक विमानोंमें से २८वां विमान।

गजदलाही (फा० पु०) ४१ अशुनका गज। इसे अक बरो गज कहते हैं।

गजक (फा० पु०) १ खाद्य पदार्थ, जो शराव पीनेके बाद सुखको दुर्गन्धिकी हटानेके लिये खाया जाता है।

२ तिनपपडी। ३ जनपान।

गजकच्छप—गजकच्छपीय युद्ध देखो।

गजकच्छपीययुद्ध (म० क्री०) गजकच्छपीय गजकच्छप मन्मन्थि युद्धम्, कर्मशा०। गज और कच्छपका युद्ध, हाथी और कछुपेकी मडाईं। इसका उपाख्यान यों निम्ना है— विभावसु नामक कोई महर्षि रहे। इनके छोटे भाईका नाम सुप्रतीक था। सुप्रतीकको विभावसुके माय एकाग्र रहना अच्छा न लगता था, इसीमें समय मिनते ही वह विभावसुमें पीठक धन बांटनेकी बात उठाते थे। विभावसुका स्वभाव कुछ चिड़चिड़ा था। यह एकाएक विगड पड़ते थे। एक दिन उन्हें सुप्रतीकको पुकार

करके कहा—'देखो सुप्रतीक ! हम तुम्हारे व्यवहारसे बहुत असन्तुष्ट हो गये हैं। तुमने अन्याय रूपसे बापका धन वंटा लेना चाहा है, इस लिये तुम गजयोनिको प्राप्त होगे।' निर्दोष सुप्रतीक यह सुनते ही अवाक् रह गये और मोच समझ करके कहने लगे—'मेरा कोई दोष न होते भी आपने दारुण शाप दिया है, इस लिये आपकी भी कछुवा हो करके जन्म लेना पड़ेगा।' उस समयके ब्राह्मणोंकी बात कभी मिथ्या जानिवाली न थी। सुतरां एक भाईने हाथी और दूसरेने कछुवा बन करके जन्मग्रहण किया। विभावसुकी कच्छप हो करके गहरे पानीमें रहना पड़ा। सुप्रतीक हाथी हो करके भी थोड़े दिनों अपने घरमें ही रह सके और इसी अवसर पर पैटक धनका बहुतसा भाग संग्रह करके उन्होंने मूंडके बीचमें रख लिया। इनका जन्मान्तर तो हो गया, परन्तु विद्वेष भाव कुछ भी न घटा। दोनों एक दूसरेकी दवानिकी चेष्टामें लगे रहे। यह बतला देना उचित है कि हाथीका डीलडौल ६ योजन ऊंचा और १२ योजन लम्बा और कछुवा ३ योजन ऊंचा तथा परिधिमें १० योजन था। कछुवा एक बड़े तलावमें रहता था। भाग्यवश किसी दिन छोटा भाई सरोवरमें पानी पीने पहुंचा। बड़े भाई कछुवेने समय पा करके उसको पकड़ा था। हाथी बलवान् रहा और कछुवा भी उससे कुछ अधिक निर्बल न था। दोनोंकी घमासान लड़ाई होने लगी। उसे देख सुन करके सभी चकरा गये। परन्तु लड़ाईको कोई रोक न सका। किसी दिन पक्षिराज गरुड़ने भूखसे बहुत हो घबरा करके पितासे खानिकी मांगा था। उनके पिता कश्यपने कहा कि वह जा करके युध्यमान गजकच्छप दोनोंकी खा डालते। गरुड़ पिताके आदेशसे दोनोंकी पंजमें दवा ले उड़े। वह मन ही मन सोचने लगे, कहां बैठ करके हाथी कछुवेकी खाते। अन्तको किसी वटवृक्ष पर बैठ करके वह उन्हें खाने लगे। इससे गरुड़की और भी विपद्ग्रस्त होना पड़ा। वरगदका पेड़ टूटा था। पक्षिराज गरुड़ने देखा कि पेड़ गिर पड़नेसे तपस्थानिरत वालखिल्य मुनि मर जायगे। इसीसे उन्हें चोंचमें वह टूटी शाखा दवा करके उड़ना पड़ा।

उन्होंने बहुत दूर जा जनमानवशून्य तुषारमय पर्वत पर बैठ करके गजकच्छपकी उदरमात् किया था। गजकच्छपके युद्धजैसा भयङ्कर युद्ध सम्भवतः दूसरा नहीं हुआ। (भारत १।२६-२० पृ०)

हाथी कछुवेकी लड़ाई भूठ हो या सच, परन्तु भूतस्वविद्याके साहाय्यसे इसका प्रमाण मिलता कि अति पूर्वकालको कच्छप भी भारतीय हस्तिकी भांति बड़ा बड़ा होता था। बहुत टिनकी बात नहीं, हिमालयके शिवालिक, पहाड़से प्रस्तरीभूत एक प्रकारके कछुवेका कङ्काल निकला था। वह भारतीय बड़े बड़े हाथियोंके कङ्कालसे किसी अंशमें छोटा नहीं।

गजकणा (सं० स्त्री०) गजपिप्पली, गजपोपर।

गजकन्द (सं० पु०) गजो गजदन्त इव । कन्दोऽस्य बहुव्री० । हस्तिकन्दवृक्ष ।

गजकर्ण (सं० पु०) गजस्य कर्ण इव कर्ण यस्य बहुव्री० ।

यक्षविशेष, एक असुरका नाम। (भारत २।१० पृ०)

गजकर्णआलू (हिं० पु०) लम्बा कंदवाला अरुवा नामकी लवा।

गजकर्णा (सं० स्त्री०) मूलविशेष, एक जड़का नाम।

इसका गुण—तिक्त, उष्ण, वात और कफनाशक, खादु एवं शीतज्वरविनाशक है। इसके कन्दका गुण—पाण्डु, रोग, कृमि, प्लीहा, और गुल्मरोगनाशक, ग्रहणी, अर्थ और विकारघ्न है।

गजकर्णिका (सं० स्त्री०) कर्कटी, कोई ककड़ी।

गजकुमारमुनि—दि० जैन सम्प्रदायके एक प्रसिद्ध मुनि या ऋषि। इनका जन्म द्वारकामें हुआ था। इनके पिताका नाम वासुदेव और माताका गन्धर्वसेना था। ये बड़े ही वीर पुरुष थे। वासुदेवके राजत्व कालमें पौदनपुरके राजा अपराजितने बहुत ही सिर उठा रक्खा था। वासुदेवने उसको कावूमें लानेके लिए यह प्रसिद्ध किया कि जो कोई अपराजितको पकड़ कर मेरे सामने ला देगा उसे मनचाहा वर मिलेगा। इस पर गजकुमारने ही अपने पितासे अपराजितसे युद्ध करनेकी आज्ञा ली और युद्ध कर उसे पकड़ कर पिताके सामने ले आये। पिताने खुश होकर इनको मनचाहा वर दिया।

वर पाकर राजकुमारका मन अन्यायकी तरफ

दीडा अथात् गजकुमार जवरदस्ती अच्छे अच्छे घरों-
की सती स्त्रियोंका सतोख नष्ट करने लगे। एक दिन
पांसुल सेठकी स्त्री पर इन्होंने दृष्टि डालनी और उसे
विगाड भी दिया। सेठकी मालूम पडते ही वह क्रोधा
विनसे जल कर उनके विरुद्ध खडा हुआ, परन्तु राज
कुमारके सामने उस वी चारकी कुल्ल भी न चली। इसी
प्रकार जो उनके विरुद्ध खडा होता था, वह जड मूलसे
नष्ट हो जाता था।

एक दिन पुण्योदयसे निमिनाथ भगवान् धारकामें
आये। बलभद्र, वासुदेव तथा श्रीर भी बहुतसे राजी-
महाराज उनकी पूजाके लिए पलुचे। उनके साथ
गजकुमार भी थे। भगवान्का उपदेश हुआ।
उपदेशका अक्षर गजकुमार पर खूब ही पडा। उन्हें
ससारसे छुणा हो गई। अपने किये हुए पापों पर ये
बहुत ही पश्चात्ताप करने लगे। उसी समय भगवान्के
समक्ष उन्होंने दिगम्बरी दीक्षा धारण की और वनमें जा
आत्म ध्यानमें लीन हो तप करने लगे।

सुनि होनेका ज्ञान जब पासुल सेठकी मालूम पडा
तब वह क्रोधो अपना बदला लेनेके लिये वनमें पहुचा
और उन ध्यानस्थ गजकुमार सुनिके समक्ष सन्निस्थानों
में लोहिके बडे बडे कौले ठोक कर चला आया। गज
कुमार सुनि पर उपद्रव तो बड़ा ही दुःसह हुआ, पर
वे जैनतत्त्वके अच्छे अभ्यासी और विद्वान् थे, इस लिये
उन्होंने इस घोर वेदनाको एक काटे चुभनेके समान भी
न ममभ्र बडे शान्ति और धीरताके साथ शरीर छोडा।
यह्रासे ये स्वर्गमें गये। (चरणाभाषणाद्यो)

गजकुम्भ (हि० पु०) हाथीका उभरा हुआ मस्तक,
हाथीके साथे पर दोनों और उठे हुए भाग।

गजकुसुम (स० पु०) नागकेशर।

गजकुसुमा (स० स्त्री०) नागकेशर।

गजकुर्मायिन् (स० पु०) गज कुर्मों अथाति, अग्र-णिनि।

गरुड। (अक्षरभा०) पक्षिराज गरुडने युध्यमान गज-
कच्छपको भक्षण किया था, इस लिये इसका नाम 'गज-
कुर्मायिन्' पडा। गजकच्छप उड देखो।

गजकृपा (स० स्त्री०) गज इस कृपा। गजपियन्तो,
बडी पीपर। (संक्षेपभा०)

गजकेशर (स० पु०) नागकेशर, कबावचीनी।

गजकेशरी—उडिसाके केशरोवधीय एक प्रतापी राज,
बटकेशरीके पुत्र। आपने १२ वर्ष राज्य किया था।
एकन देखो।

गजकेशर (स० पु०) एक प्रकारका धान जो अग्रहन
महोनामें तैयार होता है। इसका चावल बहुत दिन
तक रहता है।

गजक्रीडित (स० पु०) नृत्यमें एक प्रकारका भाव।

गजगति (स० स्त्री०) १ हाथीको चाल। २ हाथीकी
मन्द चाल (सुलचणा स्त्री हाथीकी मन्द चालकी तरह
चलती है)। ३ रोहिणी, मृगशिरा और आर्द्रामें शुककी
स्थिति। ४ एक वर्षमाना वा वर्षवृत्त।

गजगमन (स० पु०) हाथीका तरह मन्द गति, वह जो
हाथीकी म दगति सरोखे चलता हो।

गजगामो (स० पु०) हाथीको चालकी तरह चलनेवाला,
मन्द गामी।

गजगाह (हि० पु०) हाथीकी भूल, पाखर।

गजगोहर (फा० पु०) गजभोती, गजसुक्ता।

गजघण्टा (स० स्त्री०) गजस्य घण्टा इ-तत्। १ हाथी-
के गलेका घण्टा। २ रङ्गपुर जिलाका एक वाणिज्य-
प्रधान नगर। यह अथा० २५ ४८ ४५ ४० और
दिशा० ८८ २० ५०में अवस्थित है। यहासे चूना और
पाटकी रफ्तानो अधिक होती है।

गजघट्ट (स० त्रि०) गजस्यैव चघट्टस्य वा गजस्य
चघुरिव चघुरस्य इति बहुव्री०। जिसको आँखें हाथी-
की आँखोंकी तरह ही, विकृतघट्ट।

गजचम (स० पु०) १ गजका चमडा। २ एक प्रकारका
रोग, जिसमें शरीरका चर्म गजके चमडेकी तरह मोटा
और कडा हो जाता है। यह रोग सिर्फ मनुष्य होको
नही होता किन्तु घोड़ेकी भी होता है।

गजचिर्मिट (स० पु०) गजप्रियचिर्मिट। एक प्रकारका
तरबूज।

गजचिर्मिटा (स० स्त्री०) गजप्रिया चिर्मिटा, मध्यलो०।
इन्द्रयारुणो, इन्द्रायन, बडी इन्द्रफला।

गजचिर्मिटो (स० स्त्री०) गजप्रिया चिर्मिटो इन्द्र-
वारुणो, इन्द्रायन।

गजच्छाया (सं० स्त्री०) गजस्य हस्तिनः छाया प्रतिविम्बः, ६-तत्त्वं । १ हाथीकी छाया । २ योगविशेष, यह योग आदिके लिये अच्छा माना जाता है । यह उस समय होता है, जब कृष्णतयोदशीके दिन चन्द्रमा मघा नक्षत्रमें और सूर्य हस्ता नक्षत्रमें ही । ३ सूर्यग्रहणकाल । यह समय आदिके लिए प्रशस्त है ।

“सोऽश्विकी यश भानुं यस्मिन् पथं सन्धिषु ।

गजच्छाया तु सा प्रोक्ता तत आह प्रकल्पयेत् ॥” (ब्राह्म)

४ अमावस्याके दिन जिस समय छाया पूर्वमुखी हो उसी कालको गजच्छाया कहते हैं ।

“जमावासां गते सोमे छाया या प्राह सुखी भवेत् ।

गजच्छायेति सा प्रोक्ता तत आह प्रकल्पयेत् ॥” (सलसासतल)

गजटक्का (सं० स्त्री०) गजोपरिस्थिता टक्का । हाथीके ऊपर एक बड़ा टाक, हाथीके ऊपर रखा हुआ एक बड़ा ढोल ।

गजट (अ० पु०) १ समाचारपत्र । २ भारतीय सरकार अथवा प्रान्तीय सरकारों द्वारा प्रकाशित सामयिक पत्र । उसमें बड़े बड़े कर्मचारियोंकी नियुक्ति, नवीन कानूनोंके मसौदे और भिन्न भिन्न सरकारी विभागोंके जानने योग्य बातें प्रकाशित की जाती हैं ।

गजता (सं० स्त्री०) गजानां समूहः गज-तल । (गजसङ्घायाम्गच्छेति वक्तव्यम् । पा ४।१।४२ बार्त्तिक) हस्तिसमूह, हाथीका झुण्ड ।

गजतुरङ्गविलसित (सं० स्त्री०) छन्दोविशेष, इसका दूसरा नाम ऋषभगजविलसित है ।

गजदन्त (सं० पु०) गजस्य दन्ताविव दन्तावस्थं, बहुव्री० ।

१ गणेश । २ नागदन्त, चीजें वगैरह रखनेके लिये दीवार में लगाये हुए दो खूँटे । ३ दांतके ऊपर जमनेवाला दांत । गजस्य दन्तः, ६-तत्त्वं । ४ हाथीदांत । (Ivory)

हाथी दांत पृथिवीका बढ़िया और महंगा पदार्थ है । इससे नाना प्रकारकी बत्तने लायक मनोहर और टिकाऊ चीजें बना करती हैं । हाथीकी ऊपरी चोंचमें दोनों और जो दो तौखे दांत रहते, बढ़ करके सब चोंचोंमें गी गजदन्त बना करते हैं । नीचेकी चोंचें बढ़ते, हथिनोके दांत भी छोटे ही रहते । दांत उतने नहीं बढ़ते । निकालने या पेड़, काटनेमें जङ्गली हैं । पेड़की छाल

हाथीके दांत बीच-बीचमें टूट जाते हैं । इसीसे वह बहुत बढ़ नहीं सकते । एक बार टूटने पर हाथी दांत फिर भर आते हैं । यह ६ हाथ तक बढ़ते हैं । ऐसे दो दांत तौलमें लगभग ४ मन बैठते हैं । साधारणतः इतने बड़े हाथी दांत देख नहीं पड़ते । ३० सेर या १ मनके हाथी दांत प्रायः देखे जाते हैं । हाथी दांत तिरका तोड़नेसे भीतरकी गोल गोल रक्षाएं देखनेमें आती हैं ।

भारतवर्षमें जो हाथी दांत होते, उनमें हम देशका काम नहीं चलता । प्रतिवर्ष अफ्रीकासे इस देशमें हाथी दांत मंगाये जाते हैं । जो हाथीदांत भारतवर्षके कहलाते, अधिकांश आसाम और ब्रह्मदेशसे आते हैं । कहते कि पूर्वकालकी आसामके नागा लोग पहाड़ी गांवोंसे हाथी दांत ला करके जङ्गलके बाहर रख देते और अपने आप जङ्गलमें छिप जाते थे । हिन्दू वणिक् वहां पहुंच नागाओंकी प्यारी चीजें बटलेमें रख करके हाथी दांत ले आते थे । वणिकोंके चले जाने पर वनसे निकल नागा वह सारी चीजें उठा करके घर लाते थे । हिन्दुओंका नागाओंके साथ ऐसे ही व्यवसाय वाणिज्य चलता था । हिन्दुओंके गांवमें जा उनसे मिल करके लेन देन करना नागाओंके धर्ममें निषिद्ध है । कह नहीं सकते, वह बात कहां तक ठीक है । नागा बहुत थोड़े हाथी दांत लाया करते हैं । सिङ्गो और खामती लोग ही यह द्रव्य अधिक परिमाणमें बेचते हैं । प्रतिवर्ष आसामसे मध्य भारतको १०० मनसे भी अधिक हाथीदांत भेजा जाता है ।

अफ्रीकासे प्रतिवर्ष प्रायः ५ हजार मन हाथीदांत आता है । जञ्जीवार, मोजाम्बिक और अदनसे ही इसकी ज्यादा आमदनी होती है । यह हाथीदांत पहले बम्बईमें आ करके इकट्ठा होता है । फिर उसका कोई आधा भाग विलायत भेजते हैं । अवशिष्ट इसी देशके व्यवहारको रहता है । अफ्रीकासे बम्बईमें जो हाथीदांत मंगाया जाता, तौलके हिसाबसे बिकता है । बम्बईका सेर २८ रुपये भर है । एक एक हाथीदांत ऐसे सेरसे कोई ४ मन बैठता है । उसका मूल्य २५० रु० है । दूसरे देशोंको भेजनेसे पहले हाथीदांतको काट करके बम्बईके लोग कई भागोंमें बांट देते हैं । हाथीदांतका अगला

भाग जोस होता है। काट करके अलग करने पर उसको 'आकाश्याम' कहते हैं। यह विनायतको भेजा जाता है। इससे बिलियार्ड खेलनेका गोला बनाते हैं। हाथीदातका विचला भाग पोना रहता, है इसका नाम 'चूडो दार' है। चूडिया बनानेका इसका अधिकांश भारतमें विकता है। दातका मूलभाग विदेशकी प्रेरित होता है। पोले भागकी एक निक्षट जाति भो है। उसकी 'चीना आइवरो' कहते हैं। यह चीन देशको भेजा जाता है।

हाथीदातका व्यवसाय दिन दिन घट रहा है। ५० वष पहले बम्बई नगरमें आफ्रीकासे कमसे कम २५००० जोडा हाथीदात आता था। आजकल उसका आधा भी नहीं भगते। अधिकांश हाथीदात पहले आफ्रीकाके मध्यवर्ती स्थानसे लाते हैं। फिर वह समुद्रके किनारे जहाजों पर लादा और नाना देशोंको भेजा जाता है।

बहुत पुराने समयसे भारतवर्षमें हाथीदातका कार् कार्य प्रचलित है। उहत्सहितके मतमें खाट या पलग बनानेके लिये हाथीदात जैसे दूसरी चीज नहीं होती। बगहमिहिरने लिखा है कि पल गके पावे हाथीदातके बनाने चाहिये। फिर दूसरा भाग लकड़ी से बना करके उसके ऊपर हाथीदात जड देनेसे भो काम चल सकता है।

राश्रपूताना, पञ्जाव आदि देशोंमें हिन्दू मुसलमान सभी जातिकी स्त्रियां हाथीदातकी चूडिया पहनती हैं। विवाहके समय कन्याका मामा उसको हाथीदातकी चूडियां खरीद देता है। सीपकी तरह हाथीदातकी चूडियां पर भो कई रङ चढ़ाते हैं। फिर इस पर अभक आदि चमकीली चीजें भी लगा देते हैं। बडे घरानेकी स्त्रियां विवाहके पीछे एक वष तक यह चूडियां पहने रहतीं, शरीर दु खी स्त्रिया चिरकाल तक इन्हे नहीं छोडतीं। राजपूतानेकी रत्नवेने जहा योधपुर जगनेकी शाखा फूटी, उसीके पास पालो गांवमें प्रचुर परिमाणसे हाथीदातकी चूडियां बनती हैं। हाथीदातकी चूडियां नाना प्रकारकी होती हैं। परन्तु साधारणत यह सीपकी जैसी चूडियां देख पड़ती हैं।

बम्बईमें हाथीदात नाना भागोंमें काट करके देश

विदेश भेजा जाता है। बटई ही आरीसे हाथीदात काटते हैं, इसमें मजदूरी वह नहीं पाते। काटनेमें लो बुकनी निकलती, वही उनको मिलती है। यह बुरादा वह ग्वानोंके हाथ बेच देते हैं। ग्वानोंको विश्वास है कि गाय भैंसको वह बुकनी खिलानेसे दूध अधिक होता है। मनुष्यके लिये भी गजदन्तका चूर्ण बलकारक औषधोंमें गिना जाता है।

इसके बाद हाथीदात तीन आठतमि पड़चता है। फिर वहसे दूसरी जगहोंकी प्रेरित होता है। इन तीनों आठताका नाम है—पानी, सूरत और अमृतसर। नहरिया सम्प्रदायके भाइवारो हाथीदातका बडा व्यवसाय करते हैं। यह जैन धर्मावलम्बी हैं, हाथीदात छूनेसे इन्हे महापातक लगता है। इसीसे वह अपने आप हाथीदात नहीं छूते। हाथीदातकी स्पर्श करना, रखना, टकना, तौलना आदि जो कुछ आवश्यक आता, मुसलमान नौकरोंसे ही करा लिया जाता है। चूडियोंको छोट करके इस देशमें हाथीदात कथिया बनानेमें ही अधिक लगता है। कथियोंको वही जगह दिवी और अमृतसर है। कथियां बना करके जो हाथीदात बचता, दूसरे लोग खरीद करके ले जाते हैं। वह उस हाथीदातकी पत्तियां मन्दूक आदि लकड़ीकी चैजोंमें जड देते हैं। मुलतान, डेराइझाइन खां, होगियारपुर, स्यालकोट, सूरत, बड़नोर, विशाखपत्तन प्रथति स्थानोंमें हाथीदातसे जडो सफ़्टीकी ऐसी ही बहुत सुन्दर चीजें तैयार होती हैं।

सुर्गिदावादमें केवल गजदन्तसे प्रसुत हीनेवाले द्रव्य बहुत अच्छे होते हैं। ऐसों अच्छे आर गरो और कहीं देख नहीं प तो। सुर्गिदावादके कारीगर हाथीदातसे दुर्गाकी मूर्ति, कान्नीकी प्रतिमा, हाथी, गाढी, मोरपद्म, नाव आदि बहुतसी चीजें बनाते हैं। गया, डुमराय, दरभङ्गा, षटक, रङ्गपुर, वर्धमान, चङ्गधाम, टाका, पटना आदि स्थानोंमें भी गजदन्तके द्रव्य मिलते हैं। हाथीदातके बारोक रेशि छतार करके चामरी तैयार करते हैं। फिर उसे बुन करके चटाइ भो बनायो जा सकतो है। पहले समयमें श्रीहर्मि हाथ दातकी बहुतसी चटाइयां बनती थी। ऐसी चटायोंका

मूल्य हजारों रुपया होता है। कार्गो में महाभारत के शिल्प-कारियों हाथीदांतका एक वर्गी और चरान्तकी एक घाट बनवाया था। महाभारत के महान्तों और भी बिल-ने ही हाथीदांतका चीजें रहीं हैं। गांधी मरने हाथी-दांतमें बनी है।

विवाद एक महाराष्ट्रकी हाथीदांतकी चीजें बनाने प्यारी थीं। इस अर्थमें जहाजी हाथी बनाने से और हाथीदांत भी सिना करता है। विवाद, दुर्गें आज भी गजदन्तके नाना प्रकार द्रव्य प्रयुक्त होते हैं। महाभारत भी हाथीदांतकी चीजें बनानेमें बहुत शोभावादी है। यह हाथीदांतका ठोस भाग चलन उत्तार दिने और उसके ऊपर और बेल बूट बनाने में है। फिर इसी बेल बूटके बीचसे भीतरका हाथी दांत सुरक्ष सुरक्ष निकालते हैं। बाहरसे बेल बूटके सजायट और भीरे जाली जैसा बन जाते हैं। इसी विधिसे भीतरकी शोभा बनती है। सुरक्षते सुरक्षते जब शोभा हाथीदांतके बीचमें पहुंचते, उसे फाट करके सुदृढवर्ण एक मूर्ति निकालते हैं। बाहरसे ही पूरे मूर्ति बन जाती है। हाथीदांतकी पत्ते जमा फाड़के उस पर नामा रूप चित्र अंकित किये जा सकते हैं। दिल्ली ही इस कामकी बड़ी जगह है। मुसलमान वाद्यगायनों और नूरजहांन प्रभृति वेगमीका मूर्तें हाथीदांत पर उत्तार करके बंचते हैं। कुछ मुसलमान चित्रकार इसी काममें लगे रहते हैं।

युरोपमें जब हाथीदांत जाने लगा, वहांके लोग भी इससे बहुतमा कारुकार्य बनाने लगे। यूनान देशमें गजदन्तनिर्मित प्राचीन मनुष्य मूर्ति और पुस्तक आज भी वर्तमान है। फ्रांस देश के पेरिस नगरके पुस्तकालयमें ऐसी ही एक पुस्तक रखी है। यह १३३० वर्ष पहले निमित और लिखित हुआ था इसके पत्र १५ इंच लम्बे और ६ इंच चौड़े हैं। पुस्तक देखनेसे मालूम होता है कि उस समयके लोग हाथीदांतकी फैलाना, बराबर करना, बढ़ाना या घटाना जानते थे, अब वह कारीगर नहीं रही। ग्रिफोफिलाम नामक किसी पुराने विद्वान्ने लिखा है कि हाथीदांत स्वार, नमक, गन्धकी तीजाव और गिरकीमें भिगी कर रखनेसे मीम-

रीण कीमत यह आता है। इस समय इसका मूल्य बढ़ा पड़ा मरने है। फिर हाथीदांत के बेल गिरके निकाल कर कारियों गजदन्त ही बना कराना निकलता है। हाथीदांत का मूल्य इस समय हाथीदांतका बेल बेल की मरने है।

हाथीदांतके, एक प्रकारका तेल निकाले मूल्यके कारों आकार में बना। गांधी दांत निकाले बने हैं। इस कामका कारियों के बने हैं।

गजदन्तका नाम है गजदन्त। इसका मूल्य बहुत है। गजदन्तका नाम है गजदन्त। इसका मूल्य बहुत है।

गजदन्तका नाम है गजदन्त। इसका मूल्य बहुत है। गजदन्तका नाम है गजदन्त। इसका मूल्य बहुत है।

गजदन्त (सं० पु०) नटवाहल, यानिया पीपल गजनी (सं० पु०) गजनी नगरका महान्त गजनी टागमें रहता है।

गजनवापुर—गजदन्तका महान्तवाहल मरकारके फलमें एक महान्त।

गजनान (सं० स्त्री०) एक प्रकारकी लोग जा प्राचीन समयमें हाथीमें गोसा जाता था।

गजनामा (सं० स्त्री०) गजनामा इ-त-प-रुथ। हाथीकी सुन्द।

गजनी—अफगानिस्तानका एक नगर। यह अक्षा० ३३° ३४' ७०" और देशा० ६८° १८' ५०" में काबुलमें ४२५ कीम दूर गजना नटाका बाईं और ममुदएडमें ५१५ हाथ ऊंचे अवस्थित है।

गहर कीकीर है। इसके बीचमें एक सुदृढ दुर्ग बना है। उड़ कीम तक चारटोवारी लगे हैं। यहां मरुके कीड़े ३५ हजार घर हैं। अधिवासीयोंमें अफगान हजारों और कुछ हिन्दू दूकानदार भी हैं। गजनीमें कार्तिक-माससे फाल्गुन तक वर्ष गिरता है।

गजनी का नाम है गजनी। गजनी का नाम है गजनी। गजनी का नाम है गजनी।

यह नगर बहुत पुराना है। किसी समय यहा बहुतसे लोग रहते और मजमे अपना गुजर करते थे। गजनीकी पश्चिम और तरनाक उपत्यकासे मोस्तानके नगरों और गावोंका जो ध्व मावशेष मिलता, इसकी प्राचीन सन्तद्विशांलिताका निदर्शन ठहरता है।

जैसलमेरका इतिहास पढ़नेसे समझ पडता कि विक्रमादित्यके आविर्भावसे बहू त पहले यादव लोग गजनीसे ममरकन्द तक सारे भूभागमें राजत्व करते थे। कर्नल टाड साहबने विलायतकी रायल एशियाटिक सोसाइटीकी हिन्दुओंका एक मानचित्र (नक्शा) दिया था। उसमें 'गजलि वन' अर्थात् हाथियोंके जङ्गल नामसे निर्देष्ट है। बहुतोंके मतमें हिन्दू राजाओंने ही यह नगर बसाया था। फिर कीई कीई कहता कि गजनीमें ही सख्त शास्त्रोक्त यवनराज रहता था। टलेमिने 'ओझोला (Ozola) और क्रिमोकीफसने सबल या जबल (Sibal or Zbal) नामसे इसका उल्लेख किया है।

८७६ ई०को अलप्तगीनने बोखारेसे आ करके यहा राजधानी लगायो थी। उन्हींके उत्तराधिकारो सुबक्तगीन रहे। इन्हींके पिता सुलतान मद्दमूदने हिन्दुस्थान जीता था। मद्दमूदके शासनकालको गजनीका राज्य पूर्वको गङ्गा, पश्चिम ताइग्रिस नदी, उत्तर ओक्सस और दक्षिणकी भारतमहासागरके उपकूल तक फैला था। ११५१ ई०को अलाउद्दीन गोरीने गजनी नगर आक्रमण किया। उस समय हजारों बाशिन्दे उनके निहुर अत्याचारसे मारे गये। फिर अरबोंका गजनीमें राज्यशासन हुआ। ३० १३वीं और १५वीं शताब्दीकी तातार लोगोंके दारुण दोगलासे गजनी शहर धूलमें मिल गया था।

१८३८ ई० २२ जुनाई और १८४१ ई०को भी अंग्रेजोंके अधीन भारत मेनाने गजनी नगर आक्रमण किया। फिर १८८० ई०को इटिग सेना इस पर परिचालित हुई। अफगानस्तान और भारत आने जानिके लिये यहां चार बडी राहें हैं। नगरकी चारों ओर जमीन खद उपजाऊ है। वहा अङ्गूर, तम्बाकू, कपास आदि खूब होती है।

शहरकी दोनो तरफ सुलतान मद्दमूदके दो मीनार

हैं। यह इठमे बनाये गये हैं। इनकी कारोगरी बहुत अच्छी है। दोनोंमें एक मीनार कीई ८४ हाथ ऊंचा होगा।

गजपति (स० पु०) गजम्य पति इतत् १ यथ गज बढिया हायो। २ अत्युच्च हस्ती, बहुत बडा हायी। गजपति इवको रवि देगन। (गाय) इ उल्लन और कलिङ्ग देगके राजाओंकी उपाधि। अन्ध, और वेङ्गी देगके बोड राजगण समय समय पर इस उपाधिकी धारण करते रहे। वर्तमान समयमें केवल उत्तर मरकारके एक राजा "राजा गजपति राव" की उपाधिसे वियमान हैं। ४ वह राजा जिनके पास बहुतसे हायी हों।

गजपतिनगर, मन्द्राज प्रदेशके विद्याखपत्तन जिलाके अन्तर्गत एक तहसील। यह अक्षा० १८ ११ तथा १८ ३० उ० और देशा० ८३ ३ एव ८३ ३२ पू०के मध्य अवस्थित है। इसका क्षेत्रफल ३३३ वर्ग मील है। इसमें २२८ ग्राम लगते हैं। लोकसंख्या प्राय १३४१३३ है। तहसीलकी समस्त पार्वतीय चोजे यहा लाकर बेची जाती है। इस तहसीलमें फोजदारो अदालत, रजिस्ट्री आफिस, डाकघर और औपधानय है।

गजपति वीरनारायणदेव—एक सख्त ग्रन्थकार। यह पद्मनाभके पुत्र तथा कविरत्न पुरुषोत्तममिश्रके शिष्य थे। इन्होंने अनङ्कारचन्द्रिका और सङ्गीतनारायण ग्रन्थकी रचना की थी।

गजपत्या—जैनियोंका सिद्धचक्र। यह नासिक शहरसे करीब चार माइल दूरी पर अवस्थित है। यहां आधा माइल ऊंचा एक पर्वत है। जिस पर कि दो गुफा, दो कुण्ड और पहाडके पथरोंसे बने हुई तोर्थ करोंकी अनेक मूर्तियां विराजमान हैं। पर्वत पर चढ़नेके लिये सीढी भी बनी हुई हैं। इस पर्वतसे वनभद्र आदि आठ करोड मुनेश्वर मोक्ष गये हैं। (तोप शास्त्र १४)

गजपांव (हि० पु०) जलपक्षीविशेष। इसके पैर लाल, सिर, गरदन, पीठ और डैने काले तथा शेष अंग सफेद होते हैं। जाडेके दिनोंमें यह हिन्दुस्तानके ठण्डे मैदानमें चला जाता है। मादा एक बार तीन या चार घडे देती है।

गजपादप (स० पु०) गजमिय पादप। स्थालीवृक्ष, घेनिया पीपल।

गजपाल (सं० पु०) महावत, हाथीवान, वह जो हाथी-
को चलाता हो।

गजपिप्पली (सं० स्त्री०) गजपूर्वा, गजप्रिया वा पिप्पली।
पिप्पलीविशेष, एक तरहको पीपर। इसका पर्याय—करि-
पिप्पली, इभकणा, कपिवल्ली, कपिलिका, थोयसी, वसिर,
गजाह्वा, कोलवल्हो, इभोषणा, चव्यजा, छिद्रविदेही,
दीर्घग्रन्थी, तजसी, वत्तूल और स्थूल वैदेही है।

यह मंभोले आकारका एक पौधा है। इसकी
पत्तियां चौड़ी होती है। किनारे पर लहरिया नोकिला
कटाव होता है। इसमें दो या तीन पत्तोंके बाट एक
पतला सीका निकलता है। इसके सिरे पर प्रायः एक
ईंचकी मोटी मंजरी छोटे छोटे फूलके साथ निकलती
है। यही मंजरी सुखाने पर औषधके काममें बाजारमें
बिकती है। इसका गुण—कटु, उष्ण, वातनाशक, स्तनकर्ण-
हृदिकार तथा वेदना और मलनाशक है। भावप्रकाश-
के मतसे इसके फलका नाम गजपिप्पली है। इसका
गुण—कटु, वात, कफनाशक, अग्निहृदिकारी, अति-
सार, खास, किण्ठरोग और क्षमिनाशक है।

गजपीपर (हिं० स्त्री०) गजपिप्पली देखो।

गजपीपल (हिं० स्त्री०) गजपिप्पली देखो।

गजपुत्रव (सं० पु०) बड़ा और सुन्दर हाथी।

गजपुट (सं० पु०) गजाह्वयः पुटः शाकपार्थिववत्समासः।
गर्तविशेष, एक तरहका गड्ढा। यह औषध पाक और
लौहमारण प्रभृति कार्यके लिये उपयोगी है। कोई वैद्यक
एक हाथ गहरा, एक हाथ चौड़ा और एक हाथ लम्बा
गर्तको गजपुट कहते हैं।

इक्षप्रमाचो गर्तो यः पुटः स तु गजाह्वयः। (वैद्यक)

भावप्रकाशके मतसे सवा हाथ लम्बा, सवा हाथ
चौड़ा और सवा हाथ गहरा-गर्तको गजपुट कहते हैं।
ऐसा गर्त प्रखुत कर उसमें पांच सौ विनुए कण्डे बिक्का
कर मध्यमें जिस औषधको रखना होता है, उसे रख कर
उपरसे फिर ५०० कण्डे देकर गर्तके मुख पर चारो
तरफसे मिट्टी डाल देते हैं। सिर्फ थोड़ी जगह मध्यमें
खुली छोड़ दी जाती है और तब उसमें आग लगा देते
हैं, गजपुट इसी प्रणालीसे पाक होता है। सब प्रकार-
के पुटोंसे गजपुट अष्ट है। (भावप्र० पूर्व० २रा भाग)

गजपुर (सं० स्त्री०) गःस्य हस्तिनाम वृषस्य पुरं इ-तत्।
युधिष्ठिरको राजधानी हस्तिनापुर।

“स निर्दोषो गजपुरायाः शकैः परिवारितः।” (भागवत १२० १०)

गजपुष्पी (सं० स्त्री०) गन्तुनाम इव गन्धयुत पुष्पमस्याः
बहुव्री० ततो डोप्। नागपुष्पलता, नागटीन।

“ततो गिरितटे जातामारुह्य घटुरामशाम्।

लक्ष्मी गजपुष्पी तां तप्य कण्ठे ससकृवान् ॥” (रामा० ४१२१४६)

गजप्रिया (सं० स्त्री०) गजस्य प्रिया, इ-तत्। शलकी वृक्ष,
मलईका पेड़।

गजव (अ० पु०) क्रोध, कोप, विलक्षण, अपूर्व, अन्याय।

गजवदन (सं० पु०) गणेश।

गजवन्ध (सं० पु०) एक प्रकारका चित्रकाव्य। इसमें
किसी कविताके अक्षरोंकी हाथीका आकार बना कर
उसके अङ्ग प्रत्यङ्गको परिपूर्ण कर देते हैं।

गजवन्धनी (सं० स्त्री०) गजा वध्यन्ते इति वन्ध-ल्युट् डीप्
च। हाथी बांधनेका स्थान, हाथीशाला। इसका पर्याय
वारी, वारि और प्रारब्धि है।

गजवन्धिनी (सं० स्त्री०) गजस्य वन्धोऽस्तत्र, गजवन्ध-
इनि-डीप्। गजशाला, वह स्थान जहां हाथी रखा
जाता हो।

गजवन्ता (सं० स्त्री०) गोरन्ती, एक प्रकारकी बड़ी भाड़ी।

गजवाग (हिं० पु०) हाथीका अङ्गुश।

गजवीथी (सं० स्त्री०) रोहिणी, मृगशिरा और आर्द्राके
समूहका नाम जिसके मध्य होकर शुक्र गमन करे।

गजवेलि (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका लोहा।

गजभक्षक (सं० पु०) गजो भक्षकोऽस्य बहुव्री०। पीपल वृक्ष,
पीपलका पेड़।

गजभक्षा (सं० स्त्री०) भक्ष्यतेऽसौ भक्ष-णिच् कर्मणि अप्
ततः टाप्। शलकी वृक्ष, मलईका पेड़। (शब्दरत्नावली)

गजभक्ष्या (सं० स्त्री०) गजिन भक्ष्या, इ-तत्। शलकी वृक्ष।
(अमर)

गजमणि (सं० पु०-स्त्री०) गजमुक्ता, गजमोती।

गजमण्डन (सं० स्त्री०) गजस्य मण्डनं, इ-तत्। हस्ति-
भूषण, हाथीका अलङ्कार।

गजमण्डली (सं० स्त्री०) गजानाम् मण्डली वेष्टनाकार-
परिधि, इ-तत्। १ हाथीकी वेष्टनाकार परिधि। २ हस्ति-
समूह।

गजमद् (स० स्त्री०) हाथीका मद् ।

गजमद्दहरीणी (स० स्त्री०) शिवलिङ्गिनोन्मत्ता, पञ्च सुरिया ।

गजमद्म—कपूरमल्लका लडका । इनके पुत्रका नाम कन्याणमल्ल था ।

गजमाचल (स० पु० स्त्री०) गजस्य माचम् शठाठम् नृनाति लू वाङ्मलकात् । सिंह । स्त्रीनिङ्गमें डीप् झीनेसे गजमाचली होता है ।

गजमात्र (स० त्रि०) गजिन परिमाणमस्य गज मात्रच् । गजपरिमित, हाथी आकारका ।

गजमुक्ता (स० स्त्री०) गज गजकुम्भे जाता मुक्ता । एक प्रकारकी मुक्ता वा मोती जो हस्तीकी मस्तकमें पायी जाती है । प्राचीन आर्यगण गज, मेघ, वराह, शङ्ख, मत्स्य, सर्प, शक्ति और वेणु इन आठोंमें मुक्ताका उत्पत्तिस्थान बतलाते हैं ।

‘करोद्गोभूतवराहमङ्गलाङ्घ्रिका उभयवयुधानि ।

मुक्ताफलानि प्रवितानि लोके शैवालु शुक्राट्टभ्रमरेव भूरि ॥’

(कुमारगण—भद्रिनाथ)

आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोशमें मुक्ताका निकलना स्वीकार नहीं करते क्योंकि आजतक इन्होंने गज कुम्भमें मुक्ता देखी ही नहीं है ।

गजमुख (स० पु० स्त्री०) गजस्य मुखं मुखमस्य बहुव्री० ।

१ गणेश । गजानन देखी ।

‘प्रमवाचिवो गजमुख ।’ (इन्द्र ० १८ ५०)

(स्त्री०) गजस्य मुखं, ६ तत् । २ हाथीका मुख ।

गजमोचन (सं० पु०) विशु भगवान्का एक आकार, जिसे धारण कर उन्हींने गजकी वराहसे बचाया था ।

गजमोटन (सं० पु० स्त्री०) गजम् मोटयति पीडयति गज-सुट णिच् लृ । सिंह । स्त्रीनिङ्गमें डीप् झीनेसे गजमोटनी शब्द होता है ।

गजमौक्तिक (सं० स्त्री०) मुक्ता एव मुक्ता स्वाद्यं कन ।

गजमुक्ता, गजमोती ।

‘गजमौक्तिका वनिद्वयेन वचनम् ।’ (विरत ११५१)

गजर (फा० पु०) पहर पहर पर घण्टा बजनेका शब्द, घारा ।

गजरथ (स० पु०) हाथीके खींचनेका रथ । प्राचीन समयमें राजा इन पर चढ़ कर लडाईमें जाते थे ।

गजरप्रबन्ध (स० पु०) स्वर और वाजाका मिलाव । यह गायन और नृत्यके आरम्भमें योताश्रीके सामने सुनाया जाता है ।

गजरवजर (हि० पु०) अथव ड, घाल मेल ।

गजरग (हि० पु०) १ गात्रके पत्ते, जो चोपायोकी खिनाये जाते हैं । २ फूलकी माला ।

गजराज (सं० पु०) बड़ा हाथी ।

गजराज उपाध्याय—वनारसुके एक हिन्दो कवि । १८२७ ई०की इन्दी ने जन्म लिया था इन्होंने हृत्तदार नामक एक काव्य और एक रामायणकी लिखा है ।

गजरौ (हि० स्त्री०) एक प्रकारका आभूषण, जिसे स्त्रिया कलाईमें पहनती है ।

गजरोट (हि० स्त्री०) गाजरकी पत्ती ।

गजल (फा० पु०) एक फारसी और उर्दूमें शूजर रसको कविता । इसमें प्रेमियों और प्रेमिकाका विरह वर्णित रहता है ।

गजलण्ड (सं० स्त्री०) गजस्य लण्डम, ६ तत् । हाथीका नाद । (चक्रवर्त)

गजलोन (हि० पु०) एक तालमेट । जिसमें चार लघुमात्रा और अन्तमें विराम होता है ।

गजवत् (सं० त्रि०) गजोऽस्त्रस्य गज मरुत् मस्य व । गज विगिट, जिसमें हाथी रखा जाता हो ।

गजवदन (सं० पु० स्त्री०) गजस्य वदनम् यस्य, बहुव्री० । १ गणेश । गजस्य वदनम्, ६ तत् । २ हाथीका मुख ।

गजवक्त्रभा (सं० स्त्री०) गजस्य वक्त्रभा, ६ तत् । १ गिरि कदली, पहाडी कीला । २ शङ्खकी हृत्त, सनईका पेंड ।

(राशनि०)

गजवान (हि० पु०) महावत, हाथीवान ।

गजवाजिमिया (सं० स्त्री०) कद्दू, लोका, खोवा ।

गजवीथी (सं० स्त्री०) रोहिणी, धार्द्रा और श्रृगिरा नक्षत्रोंकी गजवीथी कहते हैं । चणोच ईषा । गजस्य वीथी, ६ तत् । २ हाथीका दक्षि, हाथीका कतार ।

गजवीरु—मानभूमस्य एक गिरिशृङ्ग । इसका दूररा नाम गद्गावाडी है ।

गजव्रज (सं० त्रि०) हस्तीवत् भ्रमणगोच, हाथीकी तरह चमना ।

है—पूर्वकालकी द्रविड़ देशमें पाण्ड्यवंशीय इन्द्रयुञ्ज नामक कोई प्रवल पराक्रान्त विष्णुभक्त राजा रहें । किसी दिन नरपति एकाग्रचित्तसे हरिकी आराधना करते थे, उसी समय अगस्त्य मुनि वहां जा पहुंचे । राजाने उनकी लक्ष्य न किया, अपनी मानसिक आराधनामें ही लगे रहे । इस पर मुनिको राग लगा । उन्होंने राजाको पुकार करके कहा था—नराधन ! तूने ब्राह्मणका अपमान किया है, इसके फलमें तुझे कुञ्जरयोनि प्राप्त होगी । मुनिका वाक्य मिथ्या न निकला । कुछ दिन पीछे ही राजाकी हाथीका शरीर धारण करना पड़ा । मृत्युकालकी भी उनकी हरिमत्तिका आस न होनेसे पूर्व-जन्मकी सकल कथा उन्हें स्मरण रही । नरपति इन्द्रयुञ्ज हाथी हो करके वन वन घूमने लगे । देवात् किसी दिन वह चित्तकूट पर्वतमें जा करके पहुंचे थे । इस पर्वतमें वरुणोद्यान नामक एक मनोहर उपवन है । राजाके उसी उपवनमें जा करके स्नान करनेकी सरोवर अवगाहन करने पर एक कुम्भीरने उनकी आक्रमण किया था । उसके सहचर अपर मातङ्ग उनकी साहाय्य पहुंचाने लगे और वह भी कुम्भीरसे खूब लड़ें, किन्तु किसी क्रमसे उस महाबल कुम्भीरकी पराजित कर न सके । इन्द्रयुञ्जने अन्य उपाय न देख करके विष्णुका स्तव किया था । उनके स्तवसे सन्तुष्ट ही विष्णुने जा करके उनकी रक्षा की । राजा उसी दिन शापसे भी मुक्त हो गये । विष्णुने राजाके प्रति सन्तुष्ट ही करके और एक वर दिया था—तुमने जिस स्तवसे हमें सन्तुष्ट किया है, उसको पढ़नेवाला कोई भी व्यक्ति ऐहिक कीर्ति पावेगा, उसका दुःखप्रदोष दूर ही जावेगा, दुःख उसके पास न पहुंच पावेगा और भ्रमको यह स्वर्गमें जा करके आनन्द उड़ावेगा । प्रातः काल उठ करके जो इस गजकृत विष्णुस्तवकी पाठ करता, उसकी बुद्धि कभी कलुषित नहीं होती । भागवतके ८म स्कन्ध ४थ अध्यायने उक्त स्तव लिखित हुआ है ।

गजेन्द्रकण (सं० पु०) गजेन्द्र इव कर्णो यमः । शिव, महादेव,

गजेन्द्रगढ़—वस्त्र, इसके धारदार जलामें रोम ताम्बूकका एक शहर । यह अश्वी

५८ पु० पर कलाहीम ५१ मील दक्षिण-पूर्वमें अवस्थित है । जनसंख्या प्रायः ८८५३ है ।

महावीर शिवाजीने इस स्थान पर गजेन्द्रगढ़ नामका एक दुर्ग निर्माण किया था, इसी कारण इस नगरका नाम गजेन्द्रगढ़ पड़ा । यहां विरूपाक्षदेवका प्राचीन मन्दिर है और नगरके बाहर दुर्गा, रामलिंग, रामसीता और पाण्डुरङ्ग प्रभृति देवताओंके मन्दिर अवस्थित हैं ।

गढ़के निकट ही पहाड़की ओर एक शिवतीर्थ विश्रमान है जहां अनेक यात्री आकर ठहरते हैं । पहाड़के ऊपर बहुतसे तीर्थ और शिवालय हैं जिनमेंसे वीरभद्रका मन्दिर और पातालगङ्गा तीर्थ प्रधान हैं । पातालगङ्गाके पार्श्व हीमें नन्दी मूर्ति है । बहुतसे वस्त्र-स्त्रियां संतानके लिये नन्दीकी पूजा करने आतीं हैं ।

गजेन्द्रशुक्र (सं० पु०) सप्ततीतमें रुद्रतालका एक भेद ।

गजेन्द्रनाथ (सं० पु०) हाथियोंमें श्रेष्ठ ।

गजेन्द्रमोक्षण (सं० स्त्री०) १ वामनपुराणके किसी भागकी आख्या । २ महाभारतके किसी भागका नाम ।

गजेन्द्रविक्रम (सं० पु०) गजेन्द्र इव विक्रमो यमः, बहुव्री० । हाथीके सदृश पराक्रमी, वह जो हाथी सरोखे बलवान हो ।

गर्जर—भरोच जिलाका एक शहर । यह जंबुसरसे लगभग ६ मील उत्तर-पूर्वमें अवस्थित है । इसमें १३४८ घर और प्रायः ४०३७ मनुष्य वास करते हैं ।

गजेष्टा (सं० स्त्री०) गजानामिष्टा, ६-तत् । भूमिकुशाब्ज, विलाइकन्द ।

गज्जल (हि० पु०) अश्लीर

गजोदर (सं० पु०) गजस्य उदरमिवमुदरमस्य, बहुव्री० । दैत्यविशेष, एक असुरका नाम ।

गजोपकुल्या (सं० स्त्री०) गजप्रिया उपकुल्या पिप्पली-सध्यपदलो० । गजपिप्पली, गजपीपर, बड़ी पीपर ।

(भेदश्चरत्नावली)

गजोषणा (सं० स्त्री०) गजोषणदा ऊषण् । गजपिप्पली, गजपीपर । (राजनि०)

गज्जा (हि० पु०) १ बुलबुलीका समूह । जो पानी, दूध या किसी तरल पदार्थमें उत्पन्न हो । गाज । २ खजाना । कोश । ३ संपत्ति, दौलत, धन ।

गञ्ज (स० पु०) गजि घञ् । १ अवनना, अपमान, अनानदर ।
२ भाण्डागार, कौश, खजाना । ३ खान । ४ गौष्ठगृह,
गोशाला, यह स्थान जहाँ भविषी रहते हैं ।

गञ्जगदल—बङ्गालमें धार्वाकाबाद सरकारके अधीन
एक महल । (बाबल ६ पक्षरौ)

गञ्जभैरव—बम्बई प्रदेशके अहमदनगर जिलाके अन्तर्गत
एक प्राचीन ग्राम । यह 'गञ्जभैरो' नामसे मशहूर है ।
यहाँ हेमाद्रपत्नियोंका एक बृहत् शिवमन्दिर और इस
के निकट बहुतसे प्राचीन धर्मसावणियाँ पड़े हैं ।

गञ्ज (स० त्रि०) गजि णिच् ल्यु । १ तिरस्कार, निन्दा ।
"श्वेते सञ्जगन्ते हरमिन् शब्दसिंघाविषयम् ।" (वाङ्मय०)
(स्त्री०) २ गञ्ज भावे ल्युट् । तिरस्कार, अनानदर,
निन्दा ।

गञ्जवर (स० पु०) क्रीवाध्यक्ष, खजानची ।

गञ्जा (स० स्त्री०) गञ्ज टाप् । १ हाट लगनेका स्थान, यह
स्थान जहाँ बाजार लगता है । २ मद्यमाएँ, शराब रखने
का घरतन । ३ मदिरागृह, शराबकी दुकान । ४ विजया,
गाँजा । ५ यह स्थान जहाँ चावल, धान रखा जाता है,
ठेक ।

गञ्जाम—मन्द्राज प्रदेशका उत्तर जिला । यह बङ्गाल
को खाड़ी किनारे अक्षा० १८ १२ तथा २० २६ उ०
और देशा० ८३ ३० एव ८५ १२ पू०क बीच पड़ता
है । इसका क्षेत्रफल ८३०२ वर्गमील है । गञ्जाम
शब्दका अर्थ 'सबका भण्डार' है । देखनेमें यह तिकोना
लगता है । इसके उत्तर छोडोमा और देशी राज्य, पूर्व
समुद्र और पश्चिमकी विजयापट्टम् जिला है । गञ्जामका
अधिकांश पहाडी और पयरीला है । परन्तु बीच बीचमें
उपत्यकाएँ और उपजाऊ मैदान पाये गये हैं । यह
मन्द्राजका सबसे सुहावना जिला है । जङ्गली पहाडों
और घने पेड़ोंकी शोभा देखते ही बनती है ।

पूर्वघाट पहाड गञ्जाममें उत्तरमें दक्षिण तक चला
गया है । श्रद्धारान और महेन्द्रगिरिकी चोटियाँ
समुद्रतलमें प्राय ५००० फुट ऊँची हैं । परभाकिनेटि
के पीछे दक्षिणकी देवगिरि ४५५५ फुट तक उठा है ।
यह पहाड गञ्जाम जिलेकी पहाडी और मैदानी दो भागोंमें
बाँट देते हैं । पहाडी भागको गञ्जामकी एज्जो

भी कहते हैं । यहाँके अधिवासी जङ्गली हैं और कामून-
के सुताविक न चलनेसे उनका शासन एक विशेष
कलेक्टर द्वारा किया जाता, जो गवर्नरका एजेंट कह
लाता है । उनके सुकदर्मीकी अपील हाईकोर्ट और
मकीम्सिन गवर्नरको को जाती है ।

गञ्जाम असली भूमिमें नहीं है । परन्तु समुद्र किनारे
और कभी कभी भीतरी भागमें भी जो बड़े बड़े तानाब
मीठे और खारी पानोसि भर जाते, मागरम् कहलाते
हैं । इनमें सबसे बड़ा चिलका भील उत्तर सीमा पर
अवस्थित है ।

इस जिलेकी श्रष्टिकुल्या, वगधारा और लाङ्गुआ
तोनों प्रधान नदियोंसे सिंचाईका काम लिया जाता है ।
यह पूर्वकी खाडीमें जा कर गिरती है । महानदी और
गोदावरी श्रष्टिकुल्याकी महायक नदियाँ हैं । लाङ्गुआ
पर चिकाकोनके पास एक बटिया पुल बंधा है ।

गञ्जाम मन्द्राज प्रदेशका एक आर्द्र प्रदेश है । यहाँ
भानू और नगहमम् साधारणतः देस पड़ते और
मिडिये, तेंदुए और चोते भी मिलते हैं । पहाडियोंके
उतारमें कई प्रकार हरिण और नौलगायें पायी जाती
हैं । जङ्गली भैंसे और जङ्गली सूपर बहुत कम हैं ।
जङ्गली कुत्ते गिकारमें आफत डाल देते हैं । गञ्जाम-
का जनवायु ज्वरप्रद है । यहाँ जाला बहुत कम पड़ता
और पानी शुब बरसता है

ऐतिहासिक दृष्टिमें गञ्जाम प्राचीन कलिङ्गका एक
भाग रहा । परन्तु कभी कभी वे गौ राज्य इसका दक्षिण
प्रान्त दबा नेता था । ई०से २६० वर्ष पूर्व मौर्य सम्राट्
अशोकने इसकी विजय किया था । फिर सम्भवत यह
वे गौधाने आन्ध्र नृपतियोंके हाथ लगा । यह दोनों राज
वश बँट रहे । जीगटने अशोक अपना एक राजशासन
पल छोड गये हैं । ई० तीसरी शताब्दीकी आन्ध्र इस
प्रान्तसे दूरीभूत हुए और कलिङ्गके शाह राज उमरके स्थान
पर आ बैठे ई० १०वीं शताब्दीके पल और ११वीं
शताब्दीके धारभकी धोनेने वे गौ और कलिङ्गके साथ
गञ्जामका भी कुछ भाग जीता था । महाराज राजेन्द्र-
चौन महेन्द्रगिरि पर अपने विजयके निम्नप्रमाण छोड
गये हैं । फिर शाह रानाचौनि ४ शताब्दीके तक यहाँ

राजत्व किया। १५वीं शताब्दीको उड़ीसाके गनपति वंशोय किमी मन्त्रीने अपने प्रभुको बध करके सिंहासन छीना था। प्रायः १५७१ ई०को गोलकुण्डाके कुतुबशाही घरानेने गजपतियोंको मार भगाया और १८० वर्ष तक चिकाकोलसे सुसलमान गञ्जाम शासन करते रहे। गहर-में सुसलमानोंकी एक मसजिद बनी है।

१६८७ ई०को बादशाह औरङ्गजेबने गोलकुण्डाकी अपना राजत्व ख कार करने पर बाध्य किया था। फिर उनके दक्षिणी सूबेदार चिकाकोलके शासकोंको नियुक्त करते रहे। १७५३ ई०को इन्हीं दो सूबेदारोंकी सेवा करके पुरस्कारमें फरामीसियोंने चिकाकोलकी सरकार पायी, जिसमें वर्तमान जिला भी मिला था। १७७१ ई०को डी वुमी यहां शासन स्थापित करने आये थे, परन्तु दूसरे ही वर्ष लालीने उन्हें दक्षिणकी और मन्द्राज-के घेरेमें सहायता करनीकी बुला लिया। उनके जाने पर ही क्लाइवने कर्नल फोर्डको दक्षिणकी और बङ्गालकी फौजके साथ भेजा था। १७५८ ई० जनवरी मासको उन्होंने डी० वुमीके उत्तराधिकारीको हरा फरासीसी सदर मसल्लो-पटम अधिकार कर लिया। इस पर दक्षिणके सूबेदारोंने फोर्डसे सन्धि की कि वह फरासीसियोंको कभी उन भागोंमें फिर बसने न देंगे। १७६५ ई०को एक फरमानके द्वारा शाह आलमने इस सन्धिको स्वीकार किया था। १७६६ ई०को सूबेदारसे दूसरी सन्धि भी हुई। इसी प्रकार अंगरेजोंने सारी उत्तर सरकार पायी थी।

परन्तु गञ्जाममें शान्ति स्थापित करते ७० वर्ष लग गये। १८०३ ई०को परलाकिमेदि जमीन्दारीके साथ चिकाकोल विभाग इसमें मिला था। १८१६ ई०को चार पांच सौ पिण्डारी जयपुरसे आ इस जिलेमें घुसे और सारे जिलेको लूटा और जला डाला।

१८३२ ई०को विसोइयोंके अत्याचारसे इस जिलेमें कङ्गी कानून लगा था। विसोइ और उनके किले एक एक करके पकड़े और छीने गये। कुछ लोगोंकी फांसी और कालापानी हीनेसे देशमें शान्ति विराजने लगी। १८३६ ई०को गुमसुरमें भी यही नीति चलनेसे फिर कोई भगड़ा नहीं हुआ और नरवलिकी प्रथा भी उठ गयी।

जांगलीमें अशोकके राजशासन पत्रके सिवा जिलेमें बहुत पुराने मन्दिर खुड़े हैं। उनकी बनावट, कारिगरी और शिनाफलकीमें कलिङ्गका प्राचीन इतिहास खुलता है। श्रोद्धर्मसूका विष्णुमन्दिर और महालिङ्गसूका शिवालय देखने योग्य हैं।

इस जिलेमें कोई ८ नगर और ६१४५ गाँव हैं। लोकसंख्या २०१०२५६ है।

ब्रह्मपुर, चिकाकोल और परलाकिमेदिमें स्युमि-पालिटी है जिलेके अर्ध दक्षिण भागमें तेलगु और उत्तरमें उड़िया भाषा चलता है। एजिप्ती प्रान्तमें केवल खोंड बोला बोलते; किन्तु दक्षिणी पार्श्व प्रदेगमें ग्वर भाषा ही अधिक व्यवहार करते हैं।

कुछ खोंडगो और शावरोको छोड़ करके सब लोग तेलगु या उड़िया हैं। खेतीके सिवा कपड़ा भी बुना जाता है। चिकनो मट्टेमें हलदी बोलते हैं चावल बहुत होता है। जीतने बीने और खेतीके दूरमें कामोंमें बैल और भैंसे दोनों लगाये जाते हैं। गुमसुरके जङ्गलमें बढ़िया सालकी लकड़ी उपजती है।

गञ्जाममें खानें नहीं हैं। हुम्म, सुरला, नवपट और कलिङ्गपत्तनमें नमक खूब बनता है। मैदानके गावोंमें साधारण कपड़ा और ब्रह्मपुरमें रेशमी माल तैयार होता है। रेशमी वस्त्रकी दैजनी और लाल रंग देते हैं। चिकाकोल अपनी बढ़िया मलमलके लिये प्रसिद्ध है। पहाडी भागमें खोंडगो और शावरोके पहननेका मोटा कपड़ा बनता है। टसर पहननेको भी बडी चाल है। रसेलकोंडके पास वेङ्गुन्तमें बढ़िया पानदान तैयार होते हैं।

गञ्जामसे विशेषतः अनाज, दाल, चमड़ा, सन, तेलहन, हलदी, लकड़ी, नमक और नारियल बाहर भेजा जाता है। मंगायी जानेवाली चीजोंमें चावल, कपड़ा, रस्सी, शोशा, वर्तन, धातु तथा धातुके द्रव्य, मट्टीका तेल, मसाला और बोरें हैं। गोपालपुर, कलिङ्गपत्तन और वरुआ इस जिलेके बन्दर हैं। मैदानोंमें कोसती और पहाडोंमें सींघा व्यापार करते हैं। नसरन्नपेट, वत्तिलि, हिरामण्डल म्, लक्ष्मी नरसुपेट, रायगढ़, चेन्निसोदी, सरङ्गोदी और तिकावलिमें बडा बजार लगता है।

बङ्गाल नागपुर रेलवे इस जिलेमें उत्तरसे दक्षिण तक बराबर चली गयी है। मैदानमें ७२८ मील पकी सड़क है। एजेन्सीमें भो कहीं कहीं पकी और अधिकांश कच्ची सड़क लगी है।

मालूम नहीं, हिन्दुओं और मुसलमानोंके समय गञ्जाम जिलेका मालगुजारो क्या था। हिन्दू राजा मधवत खेतकी उपजका आधा भाग कर लेते थे। परन्तु मुसलमानोंने आ करके मालगुजारो लगाया और १८१७ ई०को अंगरेजोंने रयतवारी बन्दोबस्त कर दिया।

तेलगु अंगरेजी और उडिये देगी भाषा अच्छी पठते हैं। पहाड़ी प्रान्तमें शिवा बहुत कम है।

७ मन्द्राज प्रान्तके गञ्जाम जिलेको एक जमीन्दारी तहसील। यह अक्षा० १८ २३' तथा १८ ४८' ७" और देशा० ८४ ५६' एवं ८५ १२' पू०के बीच पड़ता है। इसमें कन्निकोत, विरिदि, हुम्पू, और पलूर राज्य लगते हैं। गञ्जाम तहसीलका क्षेत्रफल ३०८ वर्ग मील है। यह बड़ा मनोहर स्थान है। आनन्दवा ठण्डी और जमीन समुद्रकी ओर ढालू है। लोकसंख्या कोई ८८०१४ है।

४ मन्द्राज प्रान्तके गञ्जाम जिलेका एक नगर। यह अक्षा० १८ १३' ७" और देशा० ८५ ५' पू०में ऋषि कुन्ना नदीके मुहाने पर अवस्थित है। लोकसंख्या लगभग ४३८७ थीगी। यहाँ १०६४ ई०को कटकके मराठोंसे बचनेके लिये जो किना बना, उसका ध्वंसावशेष पड़ा है।

गञ्जिका (स० स्त्री०) गञ्जा धारण कर्ता। १ मदिरागृह, शराब रखनेका घर। २ गाँजा।

गञ्जिका (फा० पु०) एक गुच्छा तास।

गञ्जिन (हि० पु०) १ सघन, घना। २ मोटा।

गटर् (हि० पु०) घोषा, गला।

गटकना (हि० कि०) खाना, निगलना।

गटगट (हि० पु०) एक तरहका गन्ध, जो कई वारके निगलने या पानी पीनेके समय गलेमें उत्पन्न हो।

गटपट (हि० स्त्री०) दो या दोसे अधिक व्यक्तियों या चीजोंका परस्पर संस, मिनापट। २ संयोग, प्रसंग सहावास।

गटापारवा (दि० पु०) श्वेत दुग्धयुक्त हृद्यसे निकला

हुआ एक तरहका गोंद। यह रबरके जैसा होता है। लेकिन उतना कोमल और लचीला नहीं होता। यदि बहुत दिन तक यह बाहरहीमें धूप और पानीमें छोड़ दिया जाय, तो भो इसमें किसी प्रकारकी खराबी नहीं पड़ती है।

गटो (स० स्त्री०) ग्रन्थि, गाठ।

गटा (दि० पु०) हथेली और पट्टे के मध्यका योग, कलाई।

गटो (हि० स्त्री०) जडाज या नावमें की उस खुम्बेके बीचोंको चूल जिसमें पाल लगी रहती है।

गट्ट (हि० पु०) बड़ी गठरी, बोझ।

गट्टा (दि० पु०) १ भार, बोझ। २ बड़ी गठरी।

गठकटा (दि० पु०) १ गांठ काट कर रूपये लेनेवाला।

२ धोखा या अन्यायसे रूपया लेनेवाला।

गठडण्ड (दि० पु०) एक प्रकारका दण्ड जो दोनों छायोंके मध्यके स्थानमें गट्टा बनाकर किया जाता है।

इस तरहकी सजामें अधिक कष्ट होता है।

गठन (दि० स्त्री०) घनावट।

गठबन्धन (स० पु०) विवाहमें दुलहा और दुल्हनके कपड़ोंके सिरेको धरम्पर मिला कर गाठ बांधते हैं इसीको गठबन्धन कहते हैं।

गठरी (दि० स्त्री०) बड़ी पीटनी, बकची।

गठरेवां (दि० पु०) पशुधर्मि एक प्रकारका रोग। इसके होनेसे पशुधर्मि की जांघ, पसनी और जीभके नीचे सूजन हो जाती है। पशुधर्मि यह भारी रोग है। इसमें बहुत कम पशु बचते हैं। चिकित्सकोंका मत है कि यह छूतकी योग्यता है। जिस पशुको यह रोग होवे उसे बन्द और माफ सूदरे स्थानमें रखना चाहिये।

गठनी (हि० स्त्री०) एक प्रकारका कर जो जमींदार आमांमियोंमें वसूल करते हैं।

गठाव (हि० पु०) गठन, घनावट।

गठिबन्ध (स० पु०) गठबन्धन, गठजोड़।

गठिया (हि० स्त्री०) एक प्रकारका बीरा जिसमें धबने परिपूर्ण कर व्यापारी लोग बैल या घोड़े पर मारते हैं।

२ पीटनी, छोटो गठरी। ३ कीड़े कपड़ोंको गोंठ।

४ एक प्रकारको बांमारो जिसके होनेसे घुटनेमें सूजन

और दर्द होता है। जिस अंगमें यह रोग होता है, वह अंग फैलता नहीं है। इस बीमारीमें कभी २ ज्वर और सन्निपात भी हुआ करता, जिससे रोगी शोष ही मर जाता है। यह रोग विशेष कर जोड़ों या गिरहोंमें हुआ करता है। ५ हृत्तमें एक प्रकारका रोग। इसमें डालियोंका फैलना समाप्त हो जाता है तथा पत्तियाँ सिकुड़ और ऐंठ जाती हैं। यह रोग सिर्फ आम, जामून वड्डे वड्डे हृत्तोंमें ही नहीं होती, वरन् फमली पौदोंमें भी हुआ करता है। उरद, मूंग तथा कुम्हड़ा, ककड़ी, करैचा आदि तरकारियोंमें भी यह रोग उत्पन्न होकर उन्हें नाश कर डालता है।

गठिवन (हि० पु०) मझौले तरहका एक वृक्ष। इसकी शाखायें पतली और पत्तियोंमें जगह जगह पर गिरह होती हैं। इसमें नीले रंगके फूल लगते हैं। नेपालकी उपत्यकामें यह पेड़ पाया जाता है। इसकी गोलाकार कलियाँ दवामें उपयोगी है। वैद्यकमें इसे तीक्ष्ण, चरपरा, गरम, अग्निदीपक तथा कफ, वात, खास और दुर्गन्धको नाश करनेवाला माना है। खजली भी इस दवासे जाती रहती है।

गठुरा (हि० पु०) भूसिकी गांठ जो खलिङ्गानमें फेंक दी जाती है। इसे बुन्देलखण्डमें गठुआ और अवधमें सूंटी बोलते हैं।

गठुवा (हि० पु०) १ कपड़ेका एक भाग। सुलाहे इसे करघेमें रचते हैं, जिससे कि उसके तागेसे तानिके तागोंको गठ कर बुननेके लिये चढ़ावें। २ गठुरा, गंठुरा सूंटी।

गठौद (हि० स्त्री०) १ गांठकी बंधाई, गिरहबन्दी। २ धरोहर, बाती।

गठौत (हि० स्त्री०) मितता, घनिष्टता, मेल, मिलाप। २ अभिसंधि, आँट साँट।

गठौती (हि० स्त्री०) १ मैत्री, घनिष्टता। २ पड़चक, गठी गठाई बात।

गठंक (हि० पु०) बारद, गोले और इथियारादि रखनेका स्थान, मेगजीन।

गठंगिया (हि० वि०) घमण्ड करनेवाला, शिथीवाज।

गठंत (हि० स्त्री०) टोटके या अभिचारके लिये गाड़नेकी वस्तु। तांत्रिक या प्रेतविद्याके जाननेवाले मारण,

मोहन और उखाटनके लिये योडें पदार्थकी भंत्र पड़ कर किसी चीराहमें गाड़ टने हैं और इस गाड़नेको गड़न्त कहते हैं।

गड (सं० पु०) १ मत्सरविशेष, एक प्रकारकी मछली। २ व्यवधान, ओट, आड़। ३ परिवेष्टन, घेरा। ४ खाई। ५ गढ़। ६ अन्तर्गत, विघ्न, बाधा।

गड़—गुजरातमें रयाकान्द्राकं अन्तर्गत गहारा मेहवाभका एक राज्य। इसके उत्तर और पूर्वमें छोटा उदयपुर, दक्षिणमें नर्मदा और खान्देश तथा पश्चिममें पलासिनी और वीरपुर है। इसका क्षेत्रफल २१ वर्गमील है। लोकसंख्या प्रायः ३०१८ है। इस राज्यमें १२८ ग्राम लगते हैं। अधिवासी प्रायः भील जातिकी हैं। चौहान राजपुत वंशीय एक मामन्त इस राज्यके अधिवासी है। सालाना आमदनी ८३७७ रु० है और इसमेंसे छोटा उदयपुरके राजाको ३६५ रु० देना पड़ता है।

गड़क (सं० पु०) गड़ संज्ञायां कन्। मत्सरविशेष, एक प्रकारकी मछली।

गड़क (अ० पु०) १ डुवाव। २ डवनेका शब्द।

गड़गड़ा (हि० पु०) एक प्रकारका हुका।

गड़ग—१ बम्बई प्रान्तके धारवाड़का पूर्विय तामुक। यह अक्षा० १५' २' और १५' ३८' उ० तथा देशा० ७५' २६' एवं ७५' ५७' पू०के बीच पड़ता है। इसका क्षेत्रफल ६८८ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः १३७५७३ है। कपट पहाड़ सबसे बड़ा है। जलवायु मातदिल और अच्छा है। डम्वल तालावमें खेत मीचे जाते हैं।

२ बम्बई प्रान्तीय धारवाड़ जिलेके गड़ग तामुकका सदर, यह अक्षा० १५' २५' उ० और देशा० ७५' ३८' पू०में दक्षिण मराठा रेलवे पर अवस्थित है। इस नगरकी लोकसंख्या ३०६५२ है। १८५८ ई०की यहाँ म्युनिसिपालिटी पड़ी। गड़गमें कपास और सूती तथा रेशमी कपड़ोंका बड़ा व्यवसाय रहता और सूत कातनेका एक कारखाना भी चलता है। यहाँ जिलेके अच्छे अच्छे मंदिरोंका ध्वंसावशेष देख पड़ता है। इनमें कुच्छकी शिलालिपियां बतलाती हैं कि गड़गमें ८७३से ११७० तक पश्चिमी चालुक्यों, ११६१से ११८२

तक कलचुरियों, १०४७में १३१० तक होयसल बहानल, और १३३६से १५६५ ई० तक विजय नगरके राजाओंका गडगमे अधिकार रहा । १६७३ ई०को नसरताघाट या धारवाह जिलेकी बद्दापुर सरकारका प्रधान जिला था । १८१८ ई०को जनरल सुनरोने गह गको खेर लिया । इसमें अटानत, अखताल और विद्यालय वर्तमान हैं । गड गडाहट (हि० स्त्री०) १ गःगडहानिका शब्द । २ कुक्का पीनेका शब्द, वह आवाज जो कुक्का पीनेसे निकलती हो ।

गडगडी (हि० स्त्री०) नगाडा, डगी ।

गडगूढ (हि० पु०) चियडा भत्ता, फटे पुराने कपडेका टुकडा ।

गडगां—शामाममें शिवसागर जिलाके अन्तर्गत एक प्राचीन नगर और गड । यह शिवसागर नगरके दक्षिण पूर्व और दीक्षु नदीके तीर पर अवस्थित है । एक समय यह अहोम राजाओंकी राजधानी थी । इसका ध्वंसावशेष भी विद्यमान है । राजगृह एक कोम विस्तृत ईंटोंकी दीवारोंसे घिरा था । आजकल उसका कुछ चिह्न दिखार पडता है ।

गडवाँद—ब्रह्मदेशके अन्तर्गत त्रिभुज जिलाका एक परगना इस परगना जोकर छोटी गण्डक, बाघमती और लखन-टापी नदी प्रवाहित हैं । यहाँ बहुतसी पक्की सड़क हैं । इस परगनाकी अटानत मुजफरपुर है । इसके अन्तर्गत सरोफ लहानपुर, धनौर, अकबरपुर और कई एक ग्राम ब्रह्मिह हैं । अकबरपुर धाममें चामुण्डा देवीका मन्दिर है जहाँ प्रतिवर्ष आश्विन मासमें एक बडा भारी मेला लगता है ।

गडुदार (हि० पु०) मतवानी हाथीके माथ भागा निकर चलनेवाला जोकर, यह जोकर जो बढमाय हाथीके माथ भागा निकर चलता हो ।

गडपड (हि० पु०) पत्तियोग, एक बडो चिहिया ।

गडप (फा० स्त्री०) पानी या फोचइमें किसी वस्तुके गिरनेका शब्द ।

गडप्या (हि० पु०) धीमा खानेका स्थान ।

गडवह (हि० स्त्री०) १ पसमतल, ज वा भोषा । २ चनिवमित, यह जो ठीक समय पर न किया जाता हो ।

गडवडा (हि० पु०) गर्त, खत्ता, गडा ।

गडवडी (हि० स्त्री०) श्वययस्था, गोलमान ।

गडमान्दारण—वर्द्धमान जिलाके जाहानावाद महकुमाके अन्तर्गत एक प्राचीन ग्राम । इसका दूसरा नाम विठुरगड है । सुसलमानोंके समयमें यहा अस्तिकानिमित्त एक बडा गड था । यहाँ इसमार्शल गाजी घणि लम्कर नामक सुसलमान साधुको कब्र है । म्यानीय सुसलमान अधिवासी साधुको अत्यन्त भक्ति अहाके साध देखते हैं ।

गडमुक्तेश्वर—उत्तर पश्चिमाञ्चलके मिरठ जिलाका एक प्राचीन नगर यह अक्षा० २८ ४७ उ० और देशा० ७८ ६ पू०में गङ्गाके दक्षिण किनारे बुढ़ीगङ्गा सडमसे दो कोस नोचिमें अवस्थित है । लोकसंख्या प्राय ७६१६ है । बहुतांका कहना है कि यह नगर एक समय प्राचीन हस्तिनापुरका एक महान्ना कह कर प्रसिद्ध था । यहाँ मुक्तेश्वर महादेवका मन्दिर है । इन्हींके नाम पर नगरका नाम रखा गया है । इसके अतिरिक्त और कई एक पुरातन मन्दिर तथा ८० सतीस्तम्भ हैं । प्रतिवर्ष कार्तिकमासमें एक भारी मेला लगता है । जिसमें एक लाखसे अधिक मनुष्य जुटते हैं ।

गडयन्त (सं० पु०) गड गिच भञ्ज । मिघ, दादन ।

गडरातवा (हि० पु०) मोहविशेष, एक तरहका मोहा जो प्राचीन काल मध्य भारतवर्षमें निकलता था ।

गडरिया—शुक्र प्रदेशकी एक जाति । यह भेड़ बकरो पालने और चराते तथा ऊजके कम्बल आदि बनाते हैं । गडरिया अपना परिचय अतिवर्णना सेना देते हैं । ये कहते हैं कि गड वासो राजवर्गियोंका नाम बिगड करके गडरिया हो गया है । दूसरोंका मत है कि गडाधारो इनुमान्की उपासकों अथवा भेड (गड) पालनेवालोंको गडरिया कहा जाता है । इनके बहुतसे भेड भिने है ।

गडलवण (सं० स्त्री०) गडदेशमें लवण । शाबरदेशोत्पन्न शुभ्र लवण स भर नमक । इसका पर्याय—शुभ्र, धनीज गडदेशज गोपल, मदारभ, साम्बर और मखरोडव है । इसका गुण—उष्ण, लवण, मलनाशक, टोपन, कफ, घात, और अगनाशक तथा कोहपरिष्कारक है । भावप्रकाशक मतमें इसका गुण—नपु, वातनाशक, पतिगण उष्ण, भेदकारक पित्तवर्धक, तीक्ष्ण थार कटुपाक है ।

गड़वा—वड़ देगमें लोहारडङ्गा जिलाके अन्तर्गत एक नगर । यह अक्षा० २०° ८' ४५" उ० और देशा० ८३° ५१' १०" पू०में दौडा नदीके तीर पर अवस्थित है । पालामज और सरगुजा प्रभृति विभागोंका उत्पन्न द्रव्य यहां जमा किये जाते और इमी स्थानसे दूर २ देशोंमें भेजे जाते हैं । यहांसे रेशम, चमड़ा, तिल, तोमी, घृत, रूई और लोहा संगृहीत होकर बाहर भेजे जाते तथा चावल, पीतल और कांसिका वर्तन, विलायती वस्त्र, कस्बल, रेशमी कपडा, तस्वाकू और मसाला इत्यादि चीजें दूररे देशोंसे यहां आती हैं ।

गड़वेता—मेदिनीपुर जिलाके अन्तर्गत एक नगर । यहां बहुत प्राचीन सर्वमङ्गलादेवी और कंसेश्वर शिवके मन्दिर विद्यमान हैं । पूर्व समय यहां एक बृहत्गढ़ था । जिस जिस स्थान पर गढ़का बड़ा द्वार था, आजकल वह लालटरवाजा, हनुमानटरवाजा, पेशा दरवाजा और राउता टरवाजा नामसे प्रचलित है । यहां रांयकोटके राजा तेजचन्द्रका राजभवन था । इसके चारों तरफ बड़ी बड़ी तोपें रखी जाती थीं । अङ्गरेजोंके समय वे सब तोपें ले ली गईं ।

गड़हद—वस्वई प्रान्तीय काठियावाड़के भावनगर राज्यका एक नगर । इसको लोकसंख्या प्रायः ५३७५ है । यह स्वामी नारायणकी सम्प्रदायका, जिसे युक्तप्रदेशके सुधारक सहजानन्दने १८०४ ई०को चलाया था, एक प्रधान केन्द्र है । १८३० ई०को वह यहीं बहुतसे काठियों, कोलों और भीलोंकी अपना मतावलम्बी बना चल वसे । गड़हदमें इस सम्प्रदायवालोंके लिये चन्दनकी मालाएं बहुत बनती हैं और उनका एक अच्छासा मन्दिर भी यहां खड़ा है ।

गड़हा (हि० पु०) गर्त, गहरी जमीन, खाता, गड्डा ।

गड़हिङ्गलाज—वस्वई कोल्हापुर राज्यके गड़हिङ्गलाज तालुकका सदर । यह अक्षा० १६° १२' उ० और देशा० ७४° २५' पू०में हिरण्यकेशी नदीके वाम तट पर अवस्थित है । इसको लोकसंख्या कोई ६३७३ होगी । प्रत्येक रविवारको बाजार लगता, जिसमें बहुतसा चावल और दूसरा अनाज विकता है । नगरके मध्य कालेश्वरका मन्दिर बना है । शहरसे प्रायः ३ मील उत्तर

बहिरीका मन्दिर है । वहां मानसे माच भासकी मेला लगता है ।

गड़ही (हि० स्त्री०) झुट्ट गर्त, छोटा गड़वा ।

गड़ा—१ मध्यभारतवर्षके जञ्जलपुर जिलाका एक प्राचीन नगर । यह अक्षा० २३° १०' उ० और देशा० ७८° ५६' ३०" पू० पर समुद्रसे ७५ कीस दक्षिण-पूर्वमें अवस्थित है । पहले यह गड़सगड़नकी राजधानी था । ११०० ई०को मदनमिहने निकट २ पहाड़के उपर मदनमहल नामका एक दुर्ग निर्माण किया था । इस दुर्गका भग्नावशेष भी आजकल देखनेमें अधिक सुन्दर लगता है । उसके निकट भागमें गङ्गासागर और वानसागर नामके दो सरोवर हैं । इस शहरमें एक उत्कृष्ट विद्यालय है । पूर्व समय यहां एक टकशाल था, जिससे बालागारी नामक सुद्रा प्रसृत होकर समय बुन्देलखण्डमें प्रचलित था ।

२ मध्यभारतके ग्वालियर विभागके अन्तर्गत एक सामान्य राज्य । ७४३ वर्ग ।

गड़ारी (हि० स्त्री०) मंडलाकार रेखा, वृत्त, घेरा ।

गड़ावन (हि० पु०) लवणविशेष, एक प्रकारका नमक ।

गड़ि (सं० पु०) १ वलतर, बच्चा, बछड़ा । २ महर बैल, सुस्त बैल ।

“गुनादमेव दीराकाह रि धुर्यो निपुञ्जने ।

चसं काह रि चन्द्रधः सुधं मगिति गौर्गदिः ॥” (काश्यपकाण्ड)

३ वे दाग जो चैचकके बाट शरीरमें रह जाते हैं ।

गड़ु (सं० पु०) १ गलगण्ड, गलेका एक रोग जिसमें गलेमें सूजन हो आती है । २ कुज, कूबड, कुतुरी ।

३ शल्यास्त्र, बाण, गांभी, तीर या बरछी आदिका फल ।

४ किञ्चुलक, केंचुआ नामका कीड़ा । ५ विषमग्रन्थि, कठिन गांठ । ६ निरर्थक, वह जिसका कोई प्रयोजन न हो । - ७- राजपूतानाके एक कवि । इनका जन्म १७१३ ई०में हुआ था । इनके रचित कूट छप्पय तथा अन्य सामयिक कविताएं सुप्रसिद्ध हैं ।

गड़ुक (सं० पु०) १ सङ्गार, कामंडलु । २ ऋषिविशेष, एक ऋषिका नाम ।

गड़ुई (हि० स्त्री०) टोटी लगा हुआ एक छोटा पानी-

पीनेका बरतन, भारी ।

गड़ुर (सं० लि०) कुज, कूबड़ा ।

गडुल (स० वि०) गडु, कुछरोगोडसुसुरा। कुल, कुवहा।
गडुवा (हि० पु०) एक तरहका मोटा। इसमें जन गिरानिके निये बत्तखके गलेके जैसा एक नली लगी रहती है, तमहा।

गडु गिरस (स० वि०) गिरसि गडु, यंसर, बहुली०। सद्दीर्घे गनेका मनुष्य, जिसका गला तग हो।

गडिर (स० पु० स्त्री०) मेघ, बादल।

गडोत्य (स० स्त्री०) गडात् गडाप्यदेशात् उत्तिष्ठति, उद स्या क। शाभर नमक।

गडोल (स० पु०) १ गुड। २ ग्राम, गाँव। ३ ग्राम, कीर।

गडड (स० पु०) बसुधोका समूह, जा एक डूबरेके ऊपर रखा रहता है, गड्ड।

गडडर (स० पु०) मेघ, भेडा।

गडडरिका (स० पु०) गडेरिया।

गडडरिका (स० स्त्री०) मेघपत्ति, भेडोंकी कतार।

गडडल (स० पु०) गड बाहुलकात् ड ल्। मेघ, भेडा।

गडडलिका (स० स्त्री०) गडडल अनुसरति, गडडल ठन्।
१ मेघपत्ति, भेडोंकी कतार। २ धारावाही क्रमागत नगातार।

गडडलिकाप्रवाह (स० पु०) गडडलिकाया प्रवाह इव, इ तत्। सिद्धिवाधसान।

गडडाम—नोच, लुचा, बदमाश।

गडडारिका (स० स्त्री०) नदीवियेप वह नदी जिसका प्रवाह अधिक प्रवल हो।

गडडानिका (स० स्त्री०) मेघपत्ति, भेडोंकी कतार।

गडडो (दि० स्त्री०) टेर, पुञ्ज।

गडडुक (स० पु०) जलपात्रवियेप एक तरहका पानीका बरतन।

गड (हि० पु०) १ खाँड़ी। २ किना।

गडकसान (हि० पु०) किलेदार, किलेकी, कीजिका अफसर।

गदत (हि० स्त्री०) भाङ्गति, बनावट।

गदुन (हि० स्त्री०) गठन, बनावट।

गदुनायक—उड़ीसा प्रान्तके खण्डायतोंका एक भेद। यह पूर्वकानमें गडोंके अधिकारो थे।

गदपति (हि० पु०) १ किनादार। २ राजा।

गदुधाय, ज नियोंका जन्मकल्पाश्चक्षेत्र। यही ज नियोंके

छठे तीर्थंकर श्रीपद्मप्रभुका जन्म हुआ था। पहिले यहाँ कौशाभी नगरी थी। (तोषणमा ११८)

गढमण्डल—मध्यप्रदेशके गोण्डवानाके अन्तर्गत एक विस्तृत क्षेत्र। अति प्राचीन कालमें यह भूभाग स्वाधोग हिन्दू राजाओंके अधिकारमें था। उस समय गडा और मण्डल नामके स्थानमें हिन्दू राजाओंकी राजधानी थी। अब भो उक्त दोनों स्थानोंमें प्राचीन खण्डहर और हिन्दू राजाओंके समयके शिलालेख मिलते हैं, जिनमें यहाँकी पहिलेकी मण्डिका काफो प्रमाण मिलता है; पहले समयमें भट्ट, सुहागपुर, छत्तीसगढ, सख्यनपुर, गाङ्गपुर, यमपुर इत्यादि जिले भी उक्त गढमण्डलके अन्तर्गत थे। अब वही मण्डि नहीं रही, गड। और मण्डल नामके दो नगरोंमें ही सिर्फ पहलेके नामका परिचय मिलता है। पहिले गढ मण्डलमें जो राजा राज्य करते थे, नीचे उक्तके नाम उद्धृत किये जाते हैं—

राजका नाम	राजकाज
गान्धाराय	१८२ ई (१)
माधवसिंह	१८० "
जगन्नाथ	१८२ "
शुभाय	१८४ "
बदरेश	१८८ "
विहारोसिंह	१९० "
नरसिंह सुंदर	१९८ "
सुभाय	१९१ "
बासुदेव	१९० "
गोपात्रयाही	१९८ "
मन्नात्रयाही	१९८ "
वीरोगाय	१९८ "
रामचन्द्र	१९१ "
सुरानासिंह	१९८ "
हरिहरदेव	१९८ "
अचरदेव	१९१ "
अचरदेव	१९८ "
मन्नासिंह	१९८ "
दुल्लभ	१९१ "
यक्षच	१९० "
सताशक्ति	१९१ "
सचचन्द्र	१९० "
नवीरसिंह	१९१ "

जीविन्सिंह,	११०	ई०
शमभद्र	११८	"
सुष नाथ रतुनसेन	१८८	"
कमलनयन	१०२६	"
नरहरिदेव	१०११	"
बीरसिंह	१०१८	"
विभुवनराय	१०६५	"
पृथिवीराय	१०८३	"
भारतीषंद्र	१११५	"
मदनसिंह	१११६	"
छयसेन	११५६	"
शमशाही	११८१	"
दाराचन्द	११९६	"
छदयसिंह	१२५०	"
भानुसिंह	१२६५	"
भवानोदास	१२८१	"
विशसिंह	१२८२	"
हरिनाथराय	१३१८	"
शवलसिंह	१३२५	"
राजसिंह	१३५०	"
दाशोराय	१३८५	"
गोरबदास	१४५२	"
जगुनसिंह	१४४८	"
शंभारशाही	१४८०	"
दलपति	१५१०	"
बीरनारायण	१५४८	"
चन्द्रशाही	१५६६	"
भुक्तारशाही	१५८३	"
शेनारायण	१५८८	"
हृदयेश्वर	१६१०	"
कमशाही	१६८१	"
शेखरीशाही	१६८८	"
नरेन्द्रशाही	१६८९	"
सहायशाही	१७३१	"
शिवराजशाही	१७४९	"
दुर्जनशाही	१७४८	"
निजामशाही	१७५१	"
नरहरशाही	१७७०	"
सुनीरशाही	१७८१	ई०

१८०४ ई०में राजा सुमेरशाहीके मारे जानेके

बाद इस राजवंशका शोष हो गया। कानिंशाम आदि पुराविदोंने उक्त गढ़मण्डलके राजाओंकी गोण्यवृत्तके नामसे उल्लेख किया है। परन्तु गढ़मण्डलके राजा अठ्ठीस शतके समयके शिवालिकके गढ़में समा गये, इसकी है कि—ये हिन्दू थे और कश्चित् रूप कर अपना परिचय देते थे।

सुमेरशाहीकी मृत्युके उपरान्त गढ़मण्डलका अधिकांश भागपुरके मराठाओंके राज्यमें मिल गया था। १८१८ ई०में इस पर ब्रिटिश गवर्नरगढ़का अधिकार हुआ है।

गढ़वाल (सि० पु०) एक त्रिकोण अर्धानमें गढ़वा।

गढ़वाल—युक्तप्रदेशके कुमाऊँ विभागका पश्चिम अन्तर्ग। यह अक्षा० २८° २१' तथा ३१° ५' उ० और देशा० ७८° १२' प० ०' १' पूर्वके बीच पड़ता है। इसका एकत्रा ५६२८ वर्गमील है। गढ़वालके उत्तर तिब्बत, दक्षिण-पूर्व अलमोडा तथा नैनीताल, दक्षिण-पश्चिम बिजनौर और उत्तरपश्चिम देहरादून राज्य हैं। यह जिला पहाड़ी है और इसकी बड़ी नदी गढ़ा है। गढ़ाकी प्रधान सहायक नदी अलकनन्दा है। अलकनन्दा विष्णुगङ्गा और धौलीगढ़ाके सङ्गममें बनती और रुद्रप्रयाग पड़ने पर उसमें मन्दाकिनी आ मिलती है। फिर देवप्रयागमें अलकनन्दा और मन्दाकिनीका सङ्गम होता है। इसी स्थानमें उक्त सम्मिलित धारा गढ़ा कहलाती और गढ़वालकी देहरी तथा देहरादूनमें अलग लगती है। अलकनन्दाकी दोनों ओर बर्फमें ढकी पहाड़ियों खुशी है। इस जिलेके पहाड़ोंकी बड़ी चोटियां त्रिगुल (२३३८२ फुट), द्रोणगिरि (२३१८१ फु०) कामेत (२५४१३ फु०) बदरीनाथ (२३२१० फु०) और केदारनाथ (२२८२३ फु०) हैं। भीलोंमें गढ़ना बड़ी है।

भाबर और उसके पासकी पहाड़ियोंमें घना जङ्गल है। उसमें माल बहुत उपजता है। ४०००में ऊपर ६००० फीट तक मालकी जगह चीड़ ही देख पड़ता है। इसी प्रकार ८००० फुट पर तिलोँज और १०००० फुट पर दूसरे कई पेड़ होते हैं। १२००० फुट पर बड़ी घास जमती जो ग्रीष्म ऋतुमें बहुत अच्छी फूला करती है।

भाबरमें हाथी और निचला पहाड़ियोंमें चीमें मिलते हैं। तेंदुर्वे गढ़वालमें सभी जगह है। भालू, गोदड़ और जङ्गली कुत्ते भी पाये जाते हैं। इस जिलेमें चिड़ियां बहुत हैं।

गढ़वालका प्राचीन इतिहास अश्वकाराच्छत्र है। सम्भवत इसका कुछ भाग ब्रह्मपुर राज्यमें लगता था, जिमकी बात ७वीं शताब्दीकी चीन परिव्राजकने कही। पुराणानुसार ब्रह्मपुरका कत्युरी राजवश जीभीमठका था, जहांसे वह दक्षिणपूर्व और अलमोडाको फैल पडा। स्थानीय वर्णानुसार ई० १४वीं शताब्दीके शेषभागकी अजयपाल नामक नृपति छोटे छोटे राज्योंको तोड़ करके देवलगढ़में बसे थे। परन्तु १७वीं शताब्दीके आदि कालकी उनके महीपति शाह नामक किसी उत्तराधिकारीने श्रीनगर पत्तन करके प्रकृत स्वाधीन राज्य स्थापित किया। प्राय १५८१ ई०को गढ़वालके राजा अलमोडाके चारोंसे लडे, जब रुद्रचन्द्र गढ़वाल पर चढे थे। वह कई वार विफल हुए। १६५४ ई०को शाह नहानने राजा पृथ्वीशाहको देवानेके लिये अभियान भेजा, जिसेके फलमें देहरादून गढ़वालसे अलग हुआ। फिर कुछ वर्ष पीछे पृथ्वीराजने दारा शिकोहके लडके सुलेमान शिकोहको ओ भाग कर गढ़वालमें जा रहे थे लूट लिया और उन्हें औरङ्गजेबको सौंप दिया। अलमोडाके जगत चन्दने (१७०८ २० ई०) राजाको श्रीनगरसे निकाल उसे किसी ब्राह्मणको प्रदान किया था, परन्तु प्रदीप शाहने (१७१७ ७२ ई०) गढ़वाल फिर ले लिया। १७०८ ई०की गढ़वालके ललितशाहने कुमाज के राजाको हरा अपने पुत्र प्रद्युम्न शाहको उस राज्य पर अभिषिक्त किया। १७८० ई०की शुरूमें अलमोडा विजय करके गढ़वालकी और बढ़े थे, परन्तु तिब्बतमें चोनाथोंसे भगडा हो जानेके कारण लौट गये। १८०३ ई०की उन्हेंनि फिर चढाई करके गढ़वालकी रौंदा और देहरादून भी अधिकार किया। प्रद्युम्न शाह मैदानीकी भंगी और १८०४ ई०की देहराके पास अपने साधियां साथ मरे थे। १८१५ ई०की अंगरेजोंकी कुमाज अधिकार किया। १८३७ ई०की गढ़वाल एक उपविभागा और १८८१ ई०की जिला बनाया गया।

इस जिलेमें कितने ही ऐसे मन्दिर हैं, जिनकी सभी भारतवासी परम पवित्र समझते हैं। इनमें बदरीनाथ, जीभीमठ, केदारनाथ और पाण्डुकेशवर प्रधान हैं। गोपेश्वरमें १० फुट ऊंचे एक त्रिशूल पर अनेक महाराजाके विजयकी वर्णना अङ्कित है, जो सम्भवत एक नेपाली नृपति थे। यह लिपि ई० १२वीं शताब्दीकी है। मन्दिरों में या लोगोंके पास कितने ही ताम्रफलक सुरचित हैं, जो अपनी ऐतिहासिक दिनचस्पीके लिये बहुमूल्य समते हैं।

गढ़वालमें ३ नगर और ३६०० ग्राम हैं। आवादी कीं ४२८८०० होगी। इसका सदर पौरी एक ग्राम मात्र है। सैकडे पीछे ८७ लोग गढ़वाली भाषा बरवहार करते हैं। प्रत्येक श्वेत पत्थरकी बाहरी दीवारसे घेर दिया जाता है। यहां घोड़ी बहुत सब चीज उपजती है। ५७८ वर्ग मोलमें सरकारी जङ्गल है। साल और बांस बहुत होता और जलानेकी लकडी तथा घास भी मिलती है। पहले स्थानीय व्यवहारके लिये कुछ ताबा और जोहा निकाल लिया जाता था, परन्तु अब वह काम बन्द है। कुछ नदियोंमें अल्प परिमाण मिलता है। सबसे मोटा कपडा और रस्सी बनाते और कम्बल तैयार किये जाते हैं। दो एक जगह पत्थर पर नकाशी भी होती है। तिब्बतके साथ गढ़वालका बडा व्यवसाय चलता है। वहांसे नमक, ऊन, भेड़ बकरे, टङ्गू और सोहागा म गाते और अनाज, कपडा और नकद रुपया पैसा पहुंचाते हैं। सब काम प्राय भाटियोंके हाथमें है। श्रीनगर और कोटदारा इस जिलेके बडे बाजार हैं। सड क लगभग सभी कचो है।

गढ़वालसमस्थान (किंगडम) १ हैदराबाद राज्यके रायचूर जिलेकी एक शिवराज देनेवाली रियासत। इसका क्षेत्रफल ८६४ वर्गमील और लोकसंख्या प्राय ८६८८८१ है। यह राज्य हैदराबादसे भी पुराना है। पहले यहां मिर्जा टलता, जो आज भी रायचूर जिलेमें चलता है। छत्वा और तुझभद्रा इस राज्यके दक्षिण और पश्चिम अञ्चलमें प्रवादित हैं।

२ हैदराबाद राज्य रायचूर जिलेके गढ़वाल मम स्थान राज्यका प्रधान नगर। यह सन् १६१४ ई०

और देशा० ७७° १३' पू०में अवस्थित है। इसकी लोक-संख्या कोई १०१८५ होगी। गढ़वालका दुर्ग राजा-सीमाद्रिने १७१० ई०की बनवा कर तैयार कराया था। इस नगरमें रेशमी साड़ियां, रुमाल और जरू किनारकी बढ़िया धोतियां वनता और लावों रुपयेकी हँटरा-बाट आदि निकटस्थ स्थानोंमें जा कर विकती हैं।

गढ़ा (हि० पु०) गढ़वा देश।

गढ़ाई (हि० स्त्री०) १ गढ़नेका काम। २ गढ़नेकी मजदूरी।

गढ़कोट (गढ़ाकोट) मध्यभारतके सागर त्रिनेका एक विभाग। इसका प्रधान नगर भी गढ़कोट ही है। यह सोनार और गंधेची नदीके सङ्गम पर अक्षा० २३' ४७' उ० और देशा० ७८° ११' ३०' पू०में सागर नगरसे १३ कोस पूर्वकी पड़ता है। सम्भवतः यह गहर गाँड, लोगाँका बनाया हुआ है। १६२८ ई०की बुटैनखण्डके चन्द्रशाह नामक किमी राजपूत सामन्तने गोडोंकी निकाल करके गढ़कोट अधिकार किया और एक दुर्ग बना दिया था। पन्नाके बुटैला राजा कृत्वमालके पुत्र हृदयशाहने चन्द्रशाह-वंशीय किमी राजाकी रेहलीके अन्तर्गत नायगुवान ग्राम अर्पण करके यह नगर ले लिया। उन्होंने नदीके दूसरे पार और एक दुर्ग तथा नगर निर्माण करके उसका नाम हृदयनगर रखा था। १७३८ ई०की हृदय शाहका स्वर्गवास हुआ। पाँच वर्ष पीछे शोभासिंह और उनके भाई पृथ्वीसिंह दोनोंके बीच भगड़ा उठा था। पृथ्वीशाह पेशवाके साहाय्यमें अपने आप राजा बन बैठे। १८२० ई०की नागपुरके राजाने जब किले पर धावा किया, पृथ्वीसिंहके वंशीय मर्दनसिंहने लड़ते लड़ते अपना प्राण दे दिया। मर्दनसिंहके लड़के अर्जुनसिंहने सेंधियाका आश्रय लिया था। कर्नल जियाम वामिस्त नामक किमी युरोपीय सेनापतिके अधिन सेंधियाने एक फौज भेज दी। युद्धमें नागपुरकी सेनाके हारने पर सेंधियाने मालखन और गढ़ाकोट अधिकार करके शाहगढ़ तथा अन्यान्य प्रदेश अर्जुनसिंहको दे डाले और वामिस्त साहब ससैन्य गढ़ाकोटमें रहने लगे। थोड़े दिनों बाद अर्जुनसिंहने चालाकीसे किला छोड़ा था। परन्तु ६ महीने पीछे जनरल

वाटमनने अंगरेजों फौजके साहाय्यमें उसके मिशन वाहर किया। यह गण्य संधियाके अधिकारमें ली रखा, किन्तु अंगरेज गवर्नरसे यह अपना शुभ स्थाने लगा। १८६१ ई०में अंगरेजाने सेंधियाको दूसरी भगदड़ करके इसकी अपने आप अधिकार किया था।

आजकाल नगर दो भागोंमें विभक्त है। दोनोंमें सोनार नदी बहती है। नदीके उस पार हृदयनगरमें कारवारकी बड़ा जगत है। यहाँ शिवोंके पढ़नेके अर्थी और पढ़ी नामक सभ्य बनता और प्रति सुख्यारकी बाजार लगता है। हृदयनगरमें यहाँ पाँच मासकी एक बड़ा मेला भी होता है। सोनार पार गंधेची नदीके सङ्गमके पास ऊँचा भूमि पर किला बना है। उसमें बहतसे घर हैं। १८५८ ई०में अंगरेज सेनापति भर छरोजन उसको जीता था। नगरमें एक कोस उत्तरकी मर्दनसिंहके प्रकाश प्रसादका भग्नावशेष पड़ा है। उसकी दीवार आजभी नहीं बिकी। यह प्रायः ६० फाज ऊँचा होगा। एक सुमावदार जीनेमें उस पर चढ़ा जाता है।

गढ़िया (हि० पु०) गढ़नेवाला, वह जो कोई चीज बनाता हो।

गढ़ीड़े (हि० पु०) किलादार, गढ़पति।

गण (सं० पु०) गण् कर्मणि अच् कर्त्तरि अच् वा। १ समूह, ढेर।

“गणानां लो नदपतिः।” (भाष्यसंघटन० २११८।)

“नदपतिः गणानां समूहानां पालकः।” (मनीषर)

२ प्रमथ, शिव सेवक।

“मनुः कल्पश्च विरिति नदः साररं रोदाभापः।” (मनुस्मृत १४)

३ सेनाकी संख्या। मत्तारस रथ, सत्तारस गण, इकासी घोड़ा और एक सौ पैंतीस पदाति, सब समेत दोसौ सत्तरको गण कहते हैं। ४ चौर नामक गन्ध द्रव्य। ५ गणेश। “गणदोषा प्रवर्तकः” (महाभारत०) ६ विवाहमें लड़का और लड़कीका सदभाव वा असदभाव जाननेका उपाय विशेष। ज्योतिषियोंने इसे तीन भागोंमें विभक्त किया है, यथा देवगण, नरगण और राक्षस गण। पूर्व फलाणी, पूर्वाषाढा, पूर्वभाद्रपद, उत्तरफलाणी, उत्तराषाढा, उत्तर भाद्रपद, भरणी, आद्रा, और रोहिणी

इन लक्ष्मीमें जवा कोनिसे नरगण, चित्रा, मया, विद्याया, ज्येष्ठा, शतभिषा, मूला, धनिष्ठा, अश्लेषा और कृत्तिकामें राक्षसगण तथा अग्निनी, रेवती, पुष्या, स्वाती, हस्ता, पुनर्वसु, अशुभराधा, मृगशिरा और अश्विनामें जन्म लेनिसे देवगण होते हैं ।

वर और कन्याका एफ गण होना अच्छा है । अगर एकने देवगणमें और दूसरने नरगणमें जन्म लिया हो तो मध्यम फल है, देवगण और राक्षसगणमें जन्म होनिसे अधम सोइय हो कर रहता है, किन्तु नरगण और राक्षसगणमें होसिसे नरगणवालेकी मृत्यु होती है । (श्रीतिथ) ७ ध्रुवादि सप्तक नक्षत्रसमूह ।

“ध्रुव इव सप्तारकं ब्रह्मण ।” (श्रीतिथ)

८ वाणिज्यकारी यणिकुमसूत्र ।

“नक्षत्रा इव यणिकुमसूत्रं यव मृद्वेत् ।” (वाचस्पल क्य)

९ व्याकरणप्रसिद्ध भ्रांति, अदादि, जुहोत्यादि, दिवादि, स्वादि, तुदादि, कधादि, तनादि, क्रांति और सुरादि इन दशोंकी गण कहते हैं । १० गणपाठग्रन्थ । २१ पाणिनिरचित स्तरादि स्वरूप प्रतिपादक पाठग्रन्थ । १२ दैत्यविशेष, एक असुरका नाम । स्कन्दपुराणके गणेशखण्डमें इसका उपाख्यान इस तरह है—

।कनी समय अभिजित् नामका एक ब्राह्मण अपनी स्त्री गुणवतीके साथ स्नान करनेके लिये समुद्र गये । गुणवतीने स्नानमें पातर ही समुद्र जल पान किया । इस जलके साथ ब्राह्मणका वीर्य उसके उदरमें प्रवेश हो गया । क्रमात्तुमर उर उर भसोघ य क्येये ब्राह्मण पत्नी गुणवतीको गर्भ रहा । यथा समय गुणवतीने एक पुत्र प्रसव किया । यही पुत्र गण नामसे प्रसिद्ध देव्य कहलाया । अथव्या भानि पर गणने शिवभीक पाराधना कः । शिवने ने तपस्यामें मस्तुट होकर उभे वर दिया—तुम मृग, मर्त्य और पातालके ऊपर अपना आधिपत्य जमा करके हो । इसका परिणाम यह हुआ कि वह गण दैत्य भया नक अत्याचारी हो गया । बिग्री दिन उमने सहासुमि अपिनेकी अपमानित कर उनकी यक्ष्मूय घनामणि को मे लिया । सहासुमा अपिनेने दु शिव हो कर गणिक की पाराधना की । इस पर गणने मस्तुट हो कर गण दैत्यकी विनाश करनेके लिये राजी हुई । दोठे दिनके

बाद पार्वतीनन्दन गणेशजीने उगी दैत्यके मृत्युमें भव तीर्ण होकर उमका नाम किया ।

(स्कन्दपुराण अक्षयखण्ड (१०५०))

“मन्वाय मपरितारय साधुनाय समन्त्रिणा इन्द्राय नमः ।”

(विष्णु पारिजात)

१४ दूत, सेवक पारिपट । १५ एक मरुत चिकित्सा-शास्त्र रचयिता । ये दुर्भलके पुत्र थे । इन्होंने अश्वत्थु वंद या मिद्वयोगसप्रद नामक ग्रन्थकी रचना की है ।

१६ दि० जैन मतानुसार—आचार्य, उपाध्याय, तपस्वी, शैच, ज्ञान, गण, कुल सप, राधु और मनोद्व इन दस प्रकारके मुनियोंमेंसे एक । जो बड़े मुनियोंकी परिपाटीके हैं, उनका नाम ‘गण’ है ।

आचार्यो ध्यात्तरतिरने चतुःशतसुवयवस्यपुत्रोयान् ।

(सन्त्वाय १२, ८ पं० १६ ह्य)

१७ महावीर स्वामीके एक शिष्य ।

गणक (सं० त्रि०) गणयति सत्या करोति गण गिष ग्नुल् । १ सत्याकारक, जो रागि स्थिर करता हो ।

(पु०) २ मातृशब्देवोभक्त मुनिविशेष, एक मुने जो मातृशब्देवोके भक्त थे । ३ ज्योतिषी । इसका पर्याय—सांख्यतुमर, ज्योतिषिक, दैवज्ञ, ज्योतिर्विद, मोहर्तिक, मोहर्त, ज्ञान और वास्तुशिल्पक है ।

बहुतोंका मत है कि जो ब्रह्मचर्यादि विषय गणना करते, या ज्योतिषशास्त्र अध्ययन या व्यवसाय करते हैं वे पतित, निन्दन्य और अमृश्य हैं । शास्त्रमें भी गणककी निन्दा पाइ गई है ।

‘वर वाचानमस्य कर्त्तुं तु वाचोत्तमः ।

तपस्यस्य मन्वकं चरन्तु परिमन्त्रम् ।”

(गणेशप्रतिष्ठा (११ श्लोक))

धर्मशास्त्रकार सुमन्तका भी कथन है, ‘वाचुषरेको लणकश्च ।’ सवित्तरिक या दैवज्ञ प्रपाठश्रेय है पर्यात् इनके साथ एक पक्षमें बैठ कर पाशागदि नहीं करना चाहिये महाभारतमें लिखा है—

‘पुर नरा दैवता मन्वकश्च सा १ ।

एतन्निद विनाशोवा इन्द्रकम् व विदुःशक्तम् ।”

नाटक जैनवेदान्ता तनशास्त्र पानेवान्ता, निवसुषर और ओ नक्षत्रयद् प्रभृतिशास्त्रा कर जीयिका निन्दा करतें हैं। उन समस्त ब्राह्मणोंकी पक्षिपूय पर्यात्

अपांक्तैव समभाना चाहिये । धर्मशास्त्रकार कश्यप कहते हैं कि भ्रूणहन्ता, कुटिलाङ्ग और नक्षत्रसूचक ब्राह्मणोंकी समस्त कार्योंमें ही परित्याग करना चाहिये । दूसरे दूसरे धर्मशास्त्रमें भी गणकक रतूव निन्दा की गई है । किन्तु संग्रहकारगणका मत है कि जो ज्योतिष शास्त्रका अध्ययन वा व्यवसाय करते वे पतित वा निन्दनीय नहीं हैं क्योंकि ज्योतिषशास्त्र वेदका एक अङ्ग है । वेद और धर्मशास्त्रमें ब्राह्मण ज्योतिषशास्त्र अध्ययन कर सकते हैं, ऐसा विधान है । यदि अध्ययन करनेसे ही पतित वा निन्दनीय कहा जाय तो धर्मशास्त्रका विधान मिथ्या होता है ।

इसके अतिरिक्त कई एक शास्त्रमें ज्योतिषीकी बहुत प्रशंसा भी लिखी है—

“विकल्पपारङ्गम एव पूजाः चादौ सदा भूपुरहन्दमध्ये ।

नक्षत्रसूची खलु पापदयी ह्यः सदा सर्वमुषमेकृत्ये ॥” (वसिष्ठ)

जिन्होंने ज्योतिषशास्त्रके स्कान्यत्रय अच्छी तरह अध्ययन कर व्युत्पत्ति लाभ का है, वे आइमें सब ब्राह्मणोंके मध्य पूजनीय हैं, किन्तु जो नक्षत्रसूची अर्थात् ज्योतिषशास्त्रानभिज्ञ तो भी नक्षत्रादि गणना कर जीविका निर्वाह करते वे ही पतित और निन्दनीय हैं ।

“यज्यतयार्थं तथैव कृतं कानाति धा विजः ।

अग्रभुक् स भवेच्छ्राद्धपूजितः पत्तिपावनः ।

गाम्भन्तृशरिके देशे वनका मृत्तिमिच्छता ॥” (बराह)

जो ब्राह्मण ज्योतिषके समस्त ग्रन्थ अध्ययन कर उसका प्रकृत भाव समझ सकते वे आइमें अग्रभुक्, पूजित और पत्तिपावन है । जिस देशमें ज्योतिषी नहीं हैं, जो अपना कल्याण चाहते हों, उन्हें उस देशमें रहना नहीं चाहिये । इसके अलावा सूर्यसिद्धान्त और सिद्धान्तशिरोमणिमें ज्योतिषीकी प्रशंसा अच्छी तरहकी गई है ।

गाम्भमें दोनों तरह की बातें लिखी गई हैं । एकमें गणककी प्रशंसा और दूसरेमें निन्दा की गई है । यदि प्रकृत प्रस्तावमें इसकी मौमांसा न की गई तो शास्त्रमें विरोध हो सकता है । इसी कारण संग्रहकारोंका कथन है कि शास्त्रमें गणक विषयमें दोनों तरहसे लिखे गये हैं । जिनमें यथार्थमें ज्योतिषशास्त्रका अध्ययन नहीं

किया अथवा अध्ययन करने पर भी व्युत्पत्ति लाभ नहीं की, वे ही नक्षत्रसूची हैं । ये द्वार द्वार घूमते और किमोसे जिज्ञासा नहीं किये जाने पर नक्षत्रोंकी गणना कर गृहस्थोंका शुभाशुभ फल कहा करते हैं । इसी कारण शास्त्रकारोंने इन्हें नक्षत्रसूची नामसे उल्लेख किया है । ये यथार्थमें ज्योतिषी नहीं हैं । ये ही पतित, अपांक्तैव और निन्दनीय हैं । पहले जो सब प्रमाण लिखे गये हैं, वे भी दूसरे वचनोंके साथ मिला कर इसी तरहसे व्याख्या करनी होगी एवं “विकल्पपारङ्गम” इत्यादि वसिष्ठ वचन द्वारा स्पष्टरूपसे ही नक्षत्रसूचीकी निन्दाकी गई है । इसके अतिरिक्त दूसरे दूसरे शास्त्रोंमें भी नक्षत्रसूचीकी निन्दा देखी जाती है । जो प्रकृत प्रस्तावसे ज्योतिषशास्त्र अध्ययन करते, वे निन्दनीय या अपांक्तैव नहो हैं ।

पृहत्संहितामें लिखा है कि जो सहस्रजात, प्रियदर्शन, विनीतवेश, सत्यवादी, जिनका पक्षपात निन्दनीय हो, जिनकी शरीरसंधि सुविभक्त और उपचित हो, जिनके हाथ, पैर, नख, नेत्र, चिबुक, दांत, कान, नालाट और मस्तक प्रभृति चारुतामय्य हों, जो स्थूलशरीर, गम्भीर और मिष्टभाषी हो, जो देश और शालका तत्त्व जानते हो, जो शास्त्रीय तर्कमें सभा जाकर कभी भी भीत नहीं होते हों, जो नियुक्त, अवसरनी, ग्रहगणित जाननेके लिये कौतूहली हों, देवपूजा, व्रत और उपवास करनेकी जिनकी प्रवृत्ति इच्छा हो, वे ही ज्योतिषशास्त्र अध्ययन करनेमें उपयुक्त हैं । ग्रहगणित अर्थात् पौलिश, रोमक, वाशिष्ठ, सौर और पैतामह इन पांच सिद्धान्तशास्त्रोंमें जो युग, वर्ष, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, अहीरात्र, यास, मेहर्त, नाड़ो, विनाड़ो, प्राण, त्रिप्रभृति काल और क्षेत्र निर्णीत हुए हैं, उसके सम्यक् वेत्ता तथा मोर, सावन, नाचत्र और चान्द्र ये चार तरहके मास, अधिमास और अवम प्रभृतिके कारणाभिज्ञ, षष्टि संवत्सर, युग, वर्ष, मास, दिन और होरा प्रभृतिके अधिपति निर्णयमें तथा सौरादि परिमाणमें अभिज्ञ, ग्रहोंके शोभ मन्द, याम्य उत्तर और नीच उच्च प्रभृतिके कारण निर्णयमें पट, इनके अतिरिक्त जो दूसरे दूसरे ज्योतिषशास्त्रके दुरुक्त विषयोंकी अच्छी तरह मौमांसा कर दूसरेकी

समझा सकते हो, शास्त्रकारों की मतानुसार वे ही गणक कहलाते हैं। (इन्द्रजित् २ पं०)

४ जातिविशेष। इनके आचार व्यवहार ब्राह्मणों की मिलते जुलते हैं। किसी किमी टैगमें इन्हें ग्रन्थिप्र या आचार्य कहते हैं। ब्रह्मयामलके १४वा अध्यायमें लिखा है—

“गरीषे च वे। प्रि शास्त्रेषु च विद्वानि।

भूमयो ब्रह्मचारी च टैकसो शास्त्रापुरे।

द्राविडं मेकिमे देवराश्रितं ति स प्रक।

धमा गी धम वक्ता च वक्ताये यास्त्रिय सक्त।

नारम्भते शुभसुखो मानुषारे चित्रपण्डित।

तीरहीवे च तिविदिश्राटके चपचपुचुड।

ब्रह्मणे ज्योतिषो विद्वो ब्रह्मणे विधिभारक।

पशाटे योगवेत्ता च विगने देवपूजक।

राट्टेग्रे उपाध्यायो ग्ययां तन्वधारक।

कनिष्ठे ज्ञाननामा च आचार्यो गौडटैग्रे ॥” (अम १३३ अध्याय)

गणक जातिके लोग शरद्वीप और शाकद्वीपमें वेदाग्नि,

भूमध्यमें ब्रह्मचारी, द्वारकामें दैवण, द्राविड और सिन्धि नामें ग्रहविप्र, धर्माङ्गमें धर्मवेत्ता, पाञ्चालमें गाल्ही, मरम्बती नदीतीरमें शुभसुख, गाथारमें चित्रपण्डित, तीर-होत्रमें तिविवत् लाटदेशमें ऋत्त, कट्टालमें ज्योतिष, ब्रह्ममें विधिकारक, यक्शाटमें योगवेत्ता, निटानमें देव पूजक, राट्टेशमें उपाध्याय, गयामें तन्वधारक कलिङ्ग टैगमें जान और गौडटैगमें आचार्य कहलाते हैं।

शरद्वीप गान्तिके लिये जो जुद्ध दान करना होता है, वह इन्हीं ब्राह्मणों की मिलता है। इस देशके लोगो का विश्वास है कि ग्रहविप्रको दान देनेमें ही यह सफल होता है, गृहस्थों का कोई भ्रमज्ञान नहीं होता है। शम्भुकी यरपुत्रिके अनुसार अथ मगानिमे वे ही गणक कहना सकते जो ज्योतिषगात्र अध्ययन करते तथा यहाँकि गतिनिर्णय और कोष्ठ गणना कर शुभाशुभ फल निर्णय किया करते हैं। यदि ब्राह्मण, कायस्थ, वैश प्रभृति दूरसे कोई जाति ज्योतिषगात्र अध्ययन कर उसका पापमाय कर तो उनकी गणक नहीं कहते वरन ये ज्योतिषिक, ज्योतिषिद् प्रभृति दूरसे किमी नामसे पुकारे जा सकते हैं। किन्तु पूयकथित जातियों में कोई कोई यह गणनाकी बात तो दूर रह नसकके नाम नहीं जानने पर भी गणक कहलाता है। दूरसे दूरसे

ब्राह्मणोंके साथ इनकी कन्याशा आदान प्रदान नहीं होता है। इन लोगमिमे बहुताने ज्योतिषगात्र अध्ययन कर प्रतिष्ठा और उन्नति प्राप्त की है। इन लोगो में जो शिक्षित और धनी हैं, उन्हींका आचार व्यवहार उच्च यैगीके ब्राह्मणों जैसा है। इनके साथ उच्चयैगीके ब्राह्मणोंका कोई भेट देखा नहीं जाता है, सिर्फ आदान प्रदान की प्रथा प्रचलित नहीं है। दूरसे बहुतसे अशिक्षित वर्ण-विप्र या गणक ब्राह्मण हैं, जो ग्रहदान लेकर ही अपनी जीविषा निर्वाह करते हैं, नया वर्ष आने पर ये घर घर घूमते और नूतन पञ्चिकाका फल सुना कर गृहस्थों से दक्षिणा या पारियंत्रिक स्वरूप चावल, दान, वस्त्र और फल प्रभृति पाते हैं। उपरजिन उच्चयैगीके गणकोंका उल्लेख ही चुका है, उनके साथ इन लोगो का कोई सम्बन्ध जान नहीं पड़ता है। उच्चयैगीके ब्राह्मण भी इन्हें अपने जातिके समान नहीं मानते हैं। इनका आचार व्यवहार ठीक चण्डाल जैसा है। ये चण्डालका छुआ छुसा जल पीते हैं। इन्हें गलेमें यदि यज्ञोपवीत लटकाता न रहता तो ये ठीक चण्डालमें मालूम पड़ते। इनका स्पर्श किया छुसा जल अपवित्र समझा जाता है। ब्राह्मण, कायस्थ और वैश प्रभृति उच्चयैगीके हिन्दू इन्हें चाण्डालके समान मानते हैं। इनमेंसे बहुत पूर्व-ब्रह्माल, फरिदपुर प्रभृति स्थानोंमें रहते हैं। चण्डालके पुरोहितके साथ इनका आहार व्यवहार और आदान प्रदान चना आता है। यहाँ कहीं जगमें घोटें चण्डालों का घोरोद्वेष्य भी करते हैं। ये अपनेकी उच्चयैगीके गणकों का सम्भक्त हैं। किन्तु वीर्य विग्राम यहाँ कर सकता है कि इनके साथ उच्चयैगीके गणकों का कोई सम्बन्ध है।

मनुने जिन समस्त सङ्घ जातियोंका उल्लेख किया है उनमें इन लोगोंका नाम पाया नहीं जाता है। इन्द्र यामनोष्ठ जातिमालामें लिखा है—

“अनायु भवश्च ॥१॥ वैश्यानाम अनुवर ॥

॥ अथ १११ वरी विप्र ॥ १११ ॥ १११ ॥”

टैवल (पडा) के पौरस पार यैश्याडे गर्भमे गणक जातिरी उत्पत्ति है। तिथिवार प्रभृतिरी गणना करना हो इनकी उत्पत्ति है। इन प्रमाणके अनुसार अना

पड़ता है कि दीर्घाने गर्भ तथा देवकी प्रीरामि जिन संकर जातिको उत्पत्ति हुई है, वही ब्राह्मण प्राचार्य या गणक कउ कर विख्यात हैं। किन्तु परशुरामोक्त जातिमालाके सतसे—

“ब्रह्महृद गणयो जातो वैशाखांशसुहृदः ।
नक्षत्रनिषिद्योनां गमिणं गणः ॥”

अश्वत्थकी चौरस्यमे वैश्याके गर्भसे जो संकर जाति उत्पन्न हुई है उन्हींको गणक कहते हैं। नक्षत्र निधि, योग और ग्रहोंका निर्णय करना ही इनका उपजीविका है।

कहीं कहीं गणोंको वर्णविप्र कहा करते हैं, किन्तु पूर्वोक्त दोनो जातिमालामें पतित ब्राह्मणकी ही वर्णविप्र कहा गया है, इनमें संकर जातिकी वर्णविप्र नामसे उल्लेख नहीं किया है—

“ब्राह्मणः पतितो भूत्वा विजयत्तमानगः । (रघुदास० जातिमाला)
“ब्राह्मणः पतितो भूत्वा उपांशं ब्राह्मणोऽभवत् ॥” (परशु० जातिमाला)

किसी कारणसे पतित ब्राह्मणकी ही वर्णविप्र या वर्णविप्र कहा करते हैं।

परशुरामोक्त जातिमालामें इनके पतित होनेका कारण भी लिखा है।

“ब्रह्मरिंशत् जातिभेदा अतो पुत्रा विलोमजाः ।
एतेषां त्रिंशत्संख्यं पुरं धाः शोषियो हिमः ।
शोषियः पतितो भूत्वा वर्णांशं ब्राह्मणोऽभवत् ॥”

(परशुरामोक्त जातिमाला)

पहले जिन चालीस संकर जातियांकी कथा लिखी गई है, वे सबके सब विलोमज हैं। इनमेंसे बीसके पौरौहित्य कार्य करनेसे शोषित ब्राह्मण पतित होते हैं एवं उन पतित ब्राह्मणोंको ही वर्णब्राह्मण कहते हैं। इससे साफ साफ जाना जाता है कि वर्णब्राह्मण और गणक एक जातिके नहीं हैं। जो चण्डाल प्रभृति निरुद्ध जातियोंके पुरोहित हैं, वे वर्णविप्र और जो पूर्वोक्त संकर जाति हैं वे गणक माने जाते हैं। कालक्रमसे आचार व्यवहार परिवर्तन हो जानेसे कहीं कहीं दोनों जाति एकमें मिल गई हैं।

फिर भी ग्रहयामलमें लिखा है—

“यद्यथा नक्षत्राः शाश्वतोपसृष्टवः ।
ब्रह्मवत्पुत्रो न जन्म देवशो ब्राह्मणो भूवत् ॥”

गणकोंकी वृत्तों लिये जिन ब्राह्मणोंके ब्राह्मण सुषुम्ण शाकदीपमें जन्मग्रहण किया, यही वैश्या ब्राह्मण हैं। ब्राह्मणके ब्राह्मणमें शाश्वतपुत्र देवशो भवन्तीत्येवशा-मन्वीक शाकदीपों ब्राह्मणके जैसा परिवर्तन देते हैं। शाश्वतपुराणमें भी शाश्वत कर्तृक शाकदीपमें ब्राह्मण नामकी कथा विस्ताररूपमें वर्णित है। ब्राह्मणोंके वैश्याके शाश्वतपुत्र देवशो। किन्तु इस पुराणके १४वां अध्यायमें—

“यथा ब्राह्मणस्य शाश्वतपुत्रो जन्म देवशो ॥”

इत्यादि वचनमें निम्नलिखित निरूपणादि वैश्याके काम करनेसे निर्णय किया गया है। शाश्वत पड़ता है कि उक्त पुराणोक्त निरूपण काम करने पर भी कोई कोई शाकदीपों ब्राह्मण दूसरे ब्राह्मणोंके बीच एवं गणकजातिके जंशे गिने गये होंगे। ब्राह्मणवर्तके मतानुसार कि जो देव ब्राह्मणका धन अपहरण करता है, वह क्षमान्यकार नरक भोग कर गतयन्त्र भिन्न भिन्न योनियोंमें भ्रमण करनेके बाद श्वर (भोजन), स्वर्णकार, सुवर्ण वर्णिक, और यवनसेवो ब्राह्मण ही कर अन्तमें गणनीपजीवो वैश्या ब्राह्मणमें जन्मग्रहण करता है। (रघुदास०)

“वसंतु मनोममालाभं ततुष शाश्वतपुत्रः ।
नतो मर्थे तु स गच्छी वैश्या सत एकसुहृ” (पञ्चतन्त्र)

सचमुच गणक जातिकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें बहूतोंका मतभेद है। जातिमाला प्रभृति ग्रन्थोंमें संकर जातिकी जो कथा लिखी गई है, उनमें कहीं भी इतनेके भिन्न विशेष किसी प्रकार का संकर जातिका उल्लेख देखा नहीं जाता है। वर्तमान समयमें फरिदपुर अञ्चलमें पूर्वोक्त सङ्करजाति ही गणक नामसे परिचित है। राठ प्रभृति अञ्चलके शास्त्रविद गणकोंका कहना है कि उनके साथ उक्त जातिका कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। जो कुछ ही प्रत्येक ग्रन्थकी मत भेद रहनेसे भिन्न भिन्न गणकजातिका रहना असंगत नहीं है। किन्तु वाचस्पत्यने किसेका भी मत ग्रहण न कर चण्डालके औरनसे उत्पन्न गणकजातिका एक उल्लेख किया है, तथा प्रमाणके लिये “संस्कारस्य ही पुरो गणको वाचस्पत्यः” यह वाक्य उद्धृत किया है। यह अपूर्ण वचन किस ग्रन्थसे लिया है, इसका कुछ भी उन्होंने उल्लेख नहीं किया है। नूतन संस्कारार्थक शब्दकल्पद्रुममें भी उक्त अपूर्ण अंश उद्धृत हुआ है।

किन्तु उसमें भी किसी ग्रन्थका नाम नहीं है।

वशाचाय देखो।

५ केतुविशेष। ये आठ होते और तारापुञ्ज जैसे देखते हैं। बृहत्संहिताके अनुसार ये ब्रह्माके पुत्र माने गये हैं।

‘तारापुञ्जनिवास गणका नाम प्रणवतेरेवौ।

(बृहत्संहिता १११५)

गणकपति, गणधर देखो।

गणकर्षिका (स० स्त्री०) गणस्य गणेशस्य कर्ण इव पत्रमस्या बहुव्री०। इन्द्रवाक्यी, इन्द्रायणलता।

गणकर्मन् (स० स्त्री०) गणयज्ञ। गणधर देखो।

गणकार (स० पु०) गण धात्वादिपाठ करोति, गण कृष्ण उपपदस०। १ धातुसयहकर्त्ता। २ भीमसेन। गण गणना करोति गण कृष्ण। ३ जो गणना करे, गणक।

गणकारि (स० पु०) गण धात्वादिपाठ करोति, गण कृष्ण वाहुलकात् इत्। गणकार, वह जो गणना करता हो।

गणक्री (स० स्त्री०) गणकपत्री, गणककी स्त्री।

गणकुण्ड—हिमालयस्य एक पवित्र कुण्ड।

(हिमाद्रिखण्ड ८४८)

गणकूट (स० पु०) गणरूप कूट। वर और कन्याका देव, मनुष्य या राक्षस-गण रूप कूट। विवाह देखो।

गणगति (स० स्त्री०) गणनागति, कोई निर्दिष्ट उच्च मर्त्या।

गणचक्रक (स० स्त्री०) गणानां धार्मिकाणां चक्रमत्, बहुव्री०। धार्मिकाका एकत्र भोजन।

गणच्छन्द (स० स्त्री०) पादपरिमित छन्द।

गणजीवविजय—सन्देशसमुच्चय नामक संस्कृत धर्मशास्त्रके सग्रहकार।

गणता (स० स्त्री०) गणस्य भाव गण तन् टाप्। १ मनु इत्य, समूहका भाव। २ समूह, टैर।

गणतिथि (स० स्त्री०) गणानां पूरक गण तित्युग्। गणपूरक।

गणटास (सं० पु०) नृत्यकार।

गणदीची (स० पु०) गणानुदीचयति दीच णिनि। बहुव्री०को यज्ञ करानेवान्ता, बहुयाजक। (स्त्री०) गणस्य गणेशस्य शिवस्य सा दीक्षा विद्यते; गिन् चस्य। २ गणेश या शिव

मन्त्रमें दीक्षित, जो गणेश या शिवमन्त्रमें दीक्षित हो।

गणदेवता (स० स्त्री०) समूहचारी देवता। आदित्य १२, विश्वदेवा १०, वसु ८, तुषित २६, अभास्वर ६४, वायु ४८, महाराजिक २२०, माध्व १२, वट्ट ११ इन सबको गणदेवता कहते हैं।

गणद्रव्य (स० स्त्री०) गणानां द्रव्य, ६ तत्। सर्व साधारणकी सम्पत्ति, वह धन जिस पर बहुतेरे मनुष्योंके समान अधिकार हो।

गणद्वीप (स० स्त्री०) गणानां सप्तानां राज्यत्वात् द्वीप। द्वीपविशेष। इस द्वीपमें सत् राज्य थे। इस लिये इसका नाम गणद्वीप पडा।

गणधर (स० पु०) आचाय, अध्यापक, जेनाचार्य।

जेनमतातुमार गणधर वे कहलाते हैं, जो तीर्थद्वारोंकी दिव्यध्वनि (उपदेश) को धारण पूर्वक, आचारारू आदि ग्यारह अर्हत्तम विभक्त कर मनुष्योंकी भिन्न भिन्न भाषाओंमें उनके उपदेशको समझाते हैं। प्रत्येक तीर्थद्वारके गणधर हुआ करते हैं; यही भी नियमसे भूक्त हो जाते हैं। गौतम गणधर देखो।

गणन (स० स्त्री०) गण्यते गण णिच्, भावे ल्युट्।

१ गणना, गिनना। २ गिनती। ३ अवधारण नियय।

गणना (स० स्त्री०) १ गिनती। २ हिसाब। ३ संख्या।

‘यन्नि विनोको गणनापरा स्यात्।

तस्यां सनापिप णि तापुव स्यात् ३ (नेष १।४०)

गणनागति (स० स्त्री०) कोई निर्दिष्ट उच्चमर्त्या।

गणनाथ (स० पु०) गणानां प्रमथादीनां नाथ, ६ तत्। १ प्रमथाधिपति शिव, महादेव। २ गणेश। ३ गणोंका मानिक।

गणनायक (स० पु०) गणानां नायक, ६ तत्। १ गणेश।

‘शेखरं भारतस्यैवा भवत् गणनायकः।’ (भारत १।१००)

२ शिव, महादेव।

गणनायिका (स० स्त्री०) गणानां नायक शिव तस्य शक्ति गणनायक-टाप्। दुर्गा, भगवती।

गणनापति (स० पु०) १ गणेश। २ गणोंका मानिक।

३ शिव, महादेव। ४ अहङ्गाभाषितृ।

गणनामहामात्र (स० पु०) चाय और व्ययका मन्त्रों,

वह जो स्वर्ग और आमदका हिस्साव रखता हो।

गणनीय (सं० त्रि०) १ गिनने योग्य । २ नामो, प्रसिद्ध ।
 गणप (सं० पु०) गणेश ।
 गणपति (सं० पु०) गणानां पतिः, इ-तत् । १ गणेश ।
 २ शिव । ३ वहस्वामी । ४ अथर्व उपनिषद्विशेष ।
 ५ मृच्छकटिक नाटकका एक अन्वकार । ६ गौपालके पुत्र
 रत्नप्रदीप नामक ज्योतिःशास्त्रकार । ७ वीरेश्वरके पुत्र,
 गङ्गाभक्तितरङ्गिणी नामक संस्कृतके अन्वप्रणीता । ८ राम-
 उपाध्यायके पुत्र, चौरपञ्चाशिकाके टीकाकार । ९ एक
 विशिष्ट राजोपाधि । एक राजाकी पटवो । दक्षिणात्यमें
 वरङ्गलके राजा इस उपाधिको धारण करते थे ।

वहस्य देवो ।

गणपतिकल्प (सं० पु०) गणेशकी एक पूजाप्रक्रिया ।
 यह विघ्नशान्तिके लिये गणपति उद्देशसे किया जाता है ।
 विनायक नामक कोई अपदेवता या भूत होती है । वह
 समय समय पर सुन्दर नरनारियोंकी आश्रय करते या
 जिस पर उनकी दृष्टि रहती, लोग भूत समझने लगते
 हैं । विनायकका आश्रय वा दृष्टि होनेसे प्रायः दुःस्वप्न
 आता है । वह व्यक्ति स्वप्नमें देखता—मानो अगाध जलके
 तलमें प्रवेश करके गीते खाता और कभी कभी कटा
 मुण्ड भी देख पाता है । यही विनायककी दृष्टिका प्रधान
 लक्षण है । इसके व्यतीत स्त्रप्नमें कापायवस्त-आच्छादित
 हिंस्र जन्तु पर अधिरोहण भी किया जाता है । उस
 व्यक्तिको-सर्वदा चण्डाल प्रभृति निकृष्ट जातियों, गर्दभों
 या उष्ट्रोंके साथ रहना अच्छा लगता है । जब वह
 एकाकी कहीं चलता, मालूम पड़ता—मानो उसके साथ
 कितने ही दूसरे लोग लगे हैं । इससे वह डर करके
 चौंक पड़ता है । उसके मनकी स्फूर्ति बिलकुल विलुप्त
 हो जाती है । वह जो कोई भी कार्य करने लगता,
 उसकी विपरीत फल मिलता है । राजकुमारके प्रति
 विनायककी दृष्टि होने पर वह राजत्वसे वञ्चित रहते
 हैं । यदि किसी कुमारी पर उनको दृष्टि पड़े जाती, वह
 स्वामिसुखसे वञ्चित हो करके घोर यातनामें समय
 बिताती है । गर्भिणीके प्रति विनायकका आविर्भाव होनेसे
 सन्तान नष्ट होता है । यदि विद्यार्थी पर इनकी दृष्टि
 पड़े, वह आचार्य वा त्रितय-नहीं हो सकता । इनकी
 दृष्टिसे वणिक्का वाणिज्य विगड़ता और कषककी कृषिमें

घाटा पड़ता है । विनायककी शान्तिके लिये याज्ञवल्क्य-
 ने इस प्रकार विधान किया है—जिसके प्रति विनायक-
 की दृष्टि हो, शभ दिनको भेतमर्षण गिला पर पैपण
 करके दृष्टके साथ उसके शरीरमें नगाना और मर्षेमें
 सर्वोपधि तथा सर्वगन्ध लेपन करना चाहिये । फिर उक्त
 व्यक्तिको भद्रामन पर बैठा लेते हैं । अण्यगाना, हस्तिगाना,
 वन-मीक, मद्रमन्थान तथा जटके सत्तिका, रोचना
 गन्ध और गुग्गुलु जलमें निक्षेप किया जाता है । जटके
 एकघण्टा चार कालमी वनाके जल नाते और भद्रामनकी
 रत्नवर्ण हृष्यचर्म पर नगाते हैं । पीछे इसी जलमें उक्त
 वाक्तिको स्नान कराना पड़ता है । उसका मन्त्र है—

'सप्तमासं' इतदारयद्विभिः पाननं कुरुतु ।

हेतुं स्वातमिद्विद्वामि नावमामः पुत्रसु ते ॥

भक्त्य बहलो राजा भक्तं मुर्धो इहपतिः ।

भक्तमिदृशं वयुषं मत्तं मन्त्रं कौ रदः ॥

वर्षेयं शंभु शोभायां शोभने यद्द भूर्वाणि ।

भयते कर्षं घोरको शयणदण्डसु सर्वदा ॥

इसी प्रकार स्नान करा करके उसके मस्तक पर
 उड़ स्वरके सूत्रसे सर्पपतन डालना चाहिये । वाम
 हस्तमें कुशा अन्नण करके इस कार्यका अनुष्ठान करते हैं ।
 मित, मन्थित, शालकटइष्ट, कुष्माण्ड और राजपुत्र
 नामोंके साथ स्वाहा योग करके चतुष्पथमें सुप पर कुशा
 बिछा करके उस पर वलि दिया जाता है । कताकृत
 तण्डुल, पलान्न, नानावर्ण सुगन्ध पुष्प, मूलक, पुरी,
 कचौरो, एरण्डकी माला, दधियुक्त अन्न, पायस, पिष्टक
 आदि द्रव्य विनायककी पूजाका उपहार वा वलि है ।
 यह सकल पूजोपहार एकत्र करके मस्तकको भूमि पर
 रख विनायक-जननीकी आराधना करनी चाहिये । दूर्वा
 और सरसोंके फूलसे उनको अर्घ्य देना और हाथ जोड़
 करके यह मन्त्र पढ़ना पड़ता है—

'रूपं देहि यन्मो देहि भाग्यं भगवति देहि मे ।

वतु ॥ देहि भगं देहि सर्वान् कामान् देहि मे ॥'

इसके पीछे शुक्लवस्त्र परिधान करके सफेद चन्दन
 और सफेद फूलोंकी माला पहन ब्राह्मण भोजन कराना
 और गुरुको एक जोड़ा कपड़ा पहनाना चाहिये । इसी
 प्रकार विनायककी पूजा शेष होने पर नवग्रह, लक्ष्मी गथा

आदित्यका अर्चन और महागणपतिका तिलक किया जाता है। इसमें सकल दोषों को शान्ति होती है। विनायक भो मन्तुष्ट हो करके पीडित वरत्तिकी परि त्याग करते हैं। (यागवल्का)

गणपतिदेव—दक्षिणदेशमें बरझल राजाके एक राजा, प्रतापचन्द्रके पुत्र। शिलानिष्ठ पठनेसे जाना जाता है कि १२२२ ई०में इन्होंने चोलों को परास्त कर कनिङ्गदेश पर अधिकार किया था।

गणपतिनाम—समुद्रगुप्तके समसामयिक आर्यावर्त्तवासी एक राजा। ये समुद्रगुप्तसे परास्त हुए थे।

गणपतिरावल—एक विख्यात सस्कृत ग्रन्थकार। ये रावल हरिगङ्गाके पुत्र और रामदामके पौत्र थे इन्होंने पूर्व निर्णय, सुहृत्त गणपति, शान्तिगणपति, श्रोताधानपदति और मन्मथगणपति नामक धर्मशास्त्र प्रणयन किये हैं।

गणपतिव्यास—१ एक प्राचीन कवि। १२७२ ई०की इन्होंने धाराध्व म नामक ऐतिहासिक काव्यकी रचना की है। २ योगेश्वरसमुच्चय नामक वैद्यकग्रन्थरचयिता।

गणपर्वत (स० पु०) गणाना प्रमयादीनां आयासरूप पर्वत। कैलासपर्वत। इस पर्वत पर प्रमय वा शिवके गण रहते थे, इस न्तिये इसका नाम गणपर्वत पड़ा।

गणपाठ (स० पु०) गणाना स्वरादिगुणाना पाठोऽत्र, बहुव्री०। पाणिनि प्रणीत एक ग्रन्थ। इसमें स्वरादि गणों के विषय लिखे हुए हैं।

गणपाट (स० पु०) गणस्यैव पाटोऽस्य, बहुव्री०। जिसके दोनो पौर प्रमय या शिवगणके जैसे हो।

गणपीठक (स० की०) गणस्य शिवस्य पीठ आसनसिंघ कायति कै क। वक्त स्थान, छाती।

गणपुङ्गव (स० पु०) गण पुङ्गव इव उपमितस०। १ गणश्रेष्ठ। २ देशविशेष, एक देशका नाम ३ उम देशके रहनेवाले। ४ उम देशके राजा।

“कोविद्वान् गणपुङ्गवस्य निवासोऽत्र नाम्नायि वान्।”

(इन्द्रस्य विता ४।१७)

गणपूर्व (स० पु०) गणानां याम्याटिस्थानीकानां पूर्वं प्रधान, ६ तत्। यामणी, ग्रामके अधिनायक, गावके मुखिया।

गणप्रमुख (स० पु०) जाति या श्रेणीमें प्रधान, वह जो जाति या समाजमें श्रेष्ठ हो।

गणभर्त्तु (स० पु०) गणाना प्रथमादीना भर्त्ता ६ तत्। १ महादेव, शिव।

‘गणभर्त्तुस्य भवते गणभयं दृष्या।’ (विराटकाण्ड श्लोक ४२)

२ गणेश। (त्रि०) ३ बहुजनस्वामी, जो बहुतांश अधिपति हो।

गणभोजन (स० की०) साधारण भोज।

गणमुख (स० पु०) गणानां मुख, ६ तत्। यामणी, ग्रामके अधिनायक, गांवके मुखिया।

“रविने भविते शशिते गणमुखा गणश्रीवित्तं चतम्।”

(इन्द्रस्य १७।१७)

गणयज्ञ (स० पु०) गणस्य भ्रातृषु सखीनां वा समूहस्य करणीयो यज्ञ। भ्रातृवर्ग अथवा बन्धुवर्गका अनुष्ठेय मन्वत्स्तोम नामक यज्ञ, भाइयों या बन्धुश्रेणिके करने योग्य मन्वत्स्तोम नामक यज्ञ।

‘वेद्यसोमं विद्यं शिनीं ब्रह्मनामि मन्वयो धातुर्वा सखीनां वा।’

(आषाढपर्वत २२।१।१२)

गणयाग (स० पु०) गणोद्देशेन शान्त्यर्थं याग। १ गणपति-कल्प, गणेशके उद्देशे करने योग्य पूजादि।

गणरत्न (स० की०) गणा स्वरादि गणा रत्नानोव यत्र, बहुव्री०। एक ग्रन्थका नाम। पाणिनिने गणपाठमें जो सब गण निर्देश किये हैं, वे ही इस ग्रन्थमें पद्यरूपसे लिखे हैं। व्याकरणाध्यायीके न्तिये यह विषय उपकारी है।

गणरात्र (स० की०) गणानां रात्रौणा समाहार, समहार द्विगु, अच्। रात्रि समूह।

गणरूप (स० पु०) गणा बहुलि रूपाणि यस्य, बहुव्री०। अर्थ हृत्त, भक्तवन्तका पंथ।

गणरूपी (स० पु०) गणा बहुलि रूपाणि मन्वस्य गणरूप इति। श्वेताकृत्त, सफेद आकृति का पंथ।

गणवत् (स० त्रि०) गणोऽन्तस्य गण मत्तुप मन्व व। गणयुक्त, जिसमें गण हो।

गणवती (सं० स्त्री०) धन्वतरि दिव्योदासकी माताका नाम।

गणशम् (अश्०) गण योऽप्यायं शरकार्यं शम्। बहुश दनका दत्त भुङ्गका भुङ्ग।

गणश्रि (स० पु०) देयताविशेष, कौड देयता भी किमी

एक गणकमें आश्रय कर रहती हो, मरुत् प्रभृति मात देवता ।

गणहास (सं० पु०) १ चौर नामक गन्धद्रव्य । (त्रि०)

२ जो बहुत मनुष्योंको हंसा सके ।

गणहासक, गणहास देवी ।

गणक्रान्त (सं० त्रि०) गणन आक्रान्तः । १ किसो पक्षमें स्थित । २ जिस पर बहुत मनुष्योंने आक्रमण किया हो ।

गणायणी (सं० पु०) गणानां अयणीः, ६-तत् । १ गणेश ।

२ जो बहुतोंसे भस्मानित हो, जो बहुतोंमें अष्ट गिना जाता हो ।

गणाचल (सं० पु०) गणभूयिष्ठोऽचलः । कैलास पर्वत । इस पर्वत पर गणदेवता रहते हैं, इसलिये इसका नाम गणाचल पड़ा है ।

गणाचार्य (सं० पु०) लोकगुरु, शिक्षक ।

गणाधिप (सं० पु०) गणानामधिपः, ६-तत् । १ गणेश । २ शिव । ३ गणोंके मालिक ।

४ गणाधिप, जैनमतानुसार—साधुओंके संघमें जो सबसे अष्ट अथवा द्वाद्व और बहुज्ञानी हों । मुनियोंके अधिपति । जैसे, श्रीजिनसेनाचार्य ५०० मुनियोंके संघके गणाधिप थे । (राजवार्तिक)

गणाध्यक्ष (सं० पु०) १ गणेश । २ शिव ।

गणान्न (सं० स्त्री०) गणानामन्नं, ६-तत् । बहुस्वामिक अन्न, वह अन्न जिस पर बहुतोंका अधिकार हो ।

गणाभ्यन्तर (सं० पु०) गणः गणार्थोऽष्टमठधनादिः तेन अभ्यन्तर उपजीवी, ३-तत् । वह मनुष्य जो मठादिमें गण उद्देश्यसे दिये हुए धनादिसे प्रतिपालित होता हो, या वह मनुष्य जिसकी रक्षा मन्दिरके धनसे होती हो । भाष्यकार मेधातिथिने 'गणाभ्यन्तर' शब्दका अर्थ दूसरे प्रकारसे किया है । उनके मतसे जो मिलकर एक कार्यका अनुष्ठान करके जीविका निर्वाह करते, वे ही गण कहलाते हैं । इस गणके अन्तर्गत चातुर्विध्य ब्राह्मणोंको गणाभ्यन्तर कहते हैं ।

गणि (सं० स्त्री०) गण-इन् । गणन, गणना, गिनतो ।

गणिका (सं० स्त्री०) गणो लम्पटे गण उपपत्तित्वे नास्ति अस्याः गण-ठन्-टाप् । १ वेद्या, रंडी । मेधातिथिके मतसे जो कामिनी सिर्फ संभोगकी इच्छासे बहुत मनुष्योंमें

अनुरक्त हो जाती हो, उन्हें पु'यली कहते हैं । एवं जो अपनेको सजधज कर युवकोंको वशीभूत करतीं और वेद्याके वेशमें रहती हैं और यथार्थमें जिनके हृदयमें संभोग की इच्छा कभी भी नहीं रहती तथा धन देनेपर जो मभोगे प्रति अनुराग करती हैं, उन वेद्याओंको गणिका कहते हैं ।

मनुके मतानुसार इनका अन्न खानसे किमी तरहकी सद्गति नहीं मिलती है । वेद्या शब्द देवी । २ यूपिका । गणिकारिका (सं० स्त्री०) गणिं गणनं करोति । १ नदीके समीप उत्पन्न वृक्षविशेष, एक गनियारका पेड़ । इसका पर्याय—श्रीपर्ण, अग्निमन्य, गणिका, जरा, तेजोमन्य, ज्योतिष्क, पावक, अरणि, वज्जिमन्य, मयन, गिरिकणिका, अग्निमयन, तर्कारो, वैजयन्तिका, अरणीकेतु, श्रीपर्णी, कर्णिका, नादेयी, विजया, अनन्ता और नदीजा है । इसका गुण—कटु, उष्ण, तिक्त, कफ, वायु, शोथ, अग्निमान्द्र, अर्श, मलवन्ध और यमनाशक है ।

गणिकारी (सं० स्त्री०) पुष्पवृक्षविशेष, गनियारका पेड़ । वसन्त कालमें इसके फूल खिल कर चारो ओर सुगन्धित कर देते हैं ।

गणित (सं० स्त्री०) १ गणन, गणना, गिनती । २ ग्रहोंकी गति, स्थितिकी गणना । ३ अङ्गशास्त्र । गणित दो भागोंमें विभक्त है : वक्रगणित या पाटोगणित और अवक्रगणित या बीजगणित । (त्रि०) गण कर्मणि क्त ।

४ जिसकी गणना हो चुकी हो, जो गिना गया हो । गणितेन गणनया आगतं गणित-अच् । ५ खेतोंका फल ।

गणितज्ञ (सं० पु०) गणितशास्त्र जानैवाला, ज्योतिषी ।

गणिताध्याय (सं० पु०) भास्कराचार्य-प्रणीत सिद्धान्त-शिरोमणिका एक विस्तृत अध्याय । इसमें ग्रहोंकी मध्य-गति और स्फुटादि विषय अच्छी तरह लिखे गये हैं । लीलावती और बीजगणित जान लेने पर इसका मर्म-ग्रहण करना सहज है ।

गणितन् (सं० त्रि०) हिसाबी, जो हिसाब किताब करता हो ।

गणपिटक (सं० स्त्री०) जैनोंके द्वादश अङ्ग । १ आचार-अङ्ग, २ सूत्रकृत, ३ स्थानाङ्ग, ४ समवाय, ५ वाख्या-प्रज्ञप्ति, ६ ज्ञाट, ७ उपासकधायन, ८ अन्तकृशाङ्ग,

८ अनुत्तरोपपादक टगाङ्ग, १० अश्रवमाकरण, ११ विपाक-
युत, १२ दृष्टिप्रयाद इन बारहोंको गणपिटक कहते हैं।
गणोभूत (स० त्रि०) जो किमो गण या पत्तमें स्थित हैं,
गणाक्रान्त।

गणेश (स० त्रि०) सरय्येय, गिनने योग्य, गिनती लायक।
गणेश (स० पु०) १ कर्णिकाउत्त। २ वेष्टा। ३ हस्तिनी,
माटा ढाथी।

गणिका (स० स्त्री०) गणेशके विद्यासु कायति के क।
कुटनी, दूती।

गणेश (स० पु०) गणनामीश ६-तत्। पार्वतोत्तन्दन, गिरिजा
के पुत्र। शनैश्चरकी दृष्टि पडनेसे इनका मिर कट गया था
इस पर विष्णुने एक ढाथीका मिर काट कर धड पर मयो,
जित कर दिया, इसी कारण इनका नाम गजानन पडा।

गणानन २ को: सत्तावल चतुर्विधात्कारो परशुराम चतुर्विधा-
को विनायक गणेश और पार्यतीको नमस्कार करनेके
लिये कैलास गये। उस समय शिव और पार्वती गाड़ी
निद्रामें पडे थे और गजानन द्वार पर पहरा देते थे जिससे
उन्हींकी निद्रामें किसी प्रकारका विघ्न न हो। परशुराम
ने आकर कहा कि भगवन् और पार्यतीमें भेट करना
चाहता हूँ। किन्तु गणेशने उन्हें बाधा देते हुए कहा,
प्रभो! अभी ये दोनों निद्राके वशीभूत हैं। क्षया
घोड़ी टेर बिलम्ब जाइये, जागने पर उनमें साक्षात्
कर सकते हैं। इस पर परशुरामजो मनुष्ट न हुए।

एक दूमरेको भीठी घातमें कुछ काल तक समझानेकी
चेष्टा करते रहे किन्तु निष्फल हुआ। तब परशुरामजी
क्रोधित हो पडे और गणेशको भवहेलना करते हुए भीतर
जाने लगे। इस पर ये लनकी दार्यमें एकद समस्त विधु
वनमें घुमा कर छोड दिया। परशुरामने उज्जित हो
कर अपने परशुकी वाहर निकाला और उन पर निचे प
किया। परशुको आघातमें तो गणेशका विनाय नही
हुआ लेकिन एक दात जडमें उखड गया। इसी कारण
गणेश एकदन्त कहलाने हैं। (गणेशपूजा ३५५)

गणेश एक प्रसिद्ध लेखक थे। महाभारतमें लिखा
है कि मलयतीतन्दन व्यामट्टेय योगवन्मने विपुनायतन
सदाभारत मनगे मन रचे थे, किन्तु लेखकके प्रभावमें
जनममात्रमें उसका प्रचार न कर सके। इसलिये ये

श्रवन्त चिन्तित और विपद हो गये। एक दिन हिरण्य-
गर्भसे उन्हीने अपने मनकी ध्याया फड सुनाई। इस पर
हिरण्यगर्भने गणेशको लेखक करनेके लिये परामर्श
किया। व्यासदेवने गणेशको लिखनेके लिये अतुरोध
किया। गणेशने यह कहते हुये लिखना अस्वीकार
किया कि यदि व्यासदेवकी बोलनेमें त्रिलम्ब हो नाय
जिम कारण उनके दोषसे मेरी लेखनी विद्यान्त हो पडे
तो मैं कदापि लिख नहीं सकता। गणेशने लिखना आरम्भ
किया और याम कहने लगे। जब याम टुकते थे कि
अब अधिक कहा नहीं जाता तो उसी समय दो एक
कृत श्लोक रचना कर बोलते जाते थे। गणेशको इस
कृत श्लोकका अर्थ शीघ्र समझमें न आनेके कारण लिखनी-
की कुछ कालके लिये रुक जानी पडती थी इसी अवसर
पर याम मनही मन बहुत श्लोक रचना कर डालते थे।

(भाग १११, १०)

जब कोई कार्य आरम्भ करना होता है तो उस
समय गणेशकी स्मृतीकी स्मरण करनेसे वह कार्य निविघ्न
समाप्त हो जाता है। इसी कारण गणेशको मिडिदाता भी
कहा करते हैं। आस्तिक हिन्दु लेखक सबसे पहले
गणेशका नाम लिखा करते हैं। उन्हींका विश्वास है कि
गणेश एक प्रसिद्ध लेखक और मिडिदाता हैं। इसी
लिये इनका नाम पहले लिखनेमें किमो प्रकारके विघ्न
की सम्भावना नहीं रहती है।

स्कन्दपुराणके गणेशखण्डमें यमकण्ठ, कपिल, चिन्ता-
मणि तथा विनायक प्रभृति रूपमें गणेशके अवतार-
की कथा लिखी है। गणपति तत्त्व नामक ग्रन्थके मतसे
गणेश ही परब्रह्म, श्रुति स्मृति धर्मित परमब्रह्म, परमे-
श्वर है। गणपति तत्त्वमें लिखा है कि गणेश सर्वेश्वर,
भूत, भविष्य और वर्तमानका दानत जाननेवाले हैं। स्मृति-
भेदमें ये ही मन्मत्तके प्रतिपालक हैं, फिर समस्त जन्म-
पदार्थ इन्हींमें लय हो जाते हैं तथा ये ही प्रधान अर्थात्
प्रकृति एवं चेतन अथवा जीवात्माके अधिपति हैं।
इनकी पाराधना करनेमें सुनिनाम होता है। जिस
तरह शक्ति उपासक शाक्त और विशुके उपासक वैष्णव
कहलाने उसी तरह जो गणपतिके उपासक हैं वे गण-
पत्य कहलाने हैं। हिन्दु मिडिदाता गणेशको पूजा सबसे

-पहले करते हैं। गणेश अनेक प्रकारके हैं। तन्त्रमें ५० गणेशका उल्लेख है। यथा—१ विघ्नेश, २ विघ्नराज, ३ विनायक, ४ शिवोत्तम, ५ विघ्नकृत्, ६ विघ्नहर्त्ता, ७ गण, ८ एकदन्त, ९ अदन्तक, १० गजवक्त्र, ११ निरञ्जन, १२ कपर्दी, १३ दीर्घजिह्वक, १४ शङ्खकर्ण, १५ वृषभध्वज, १६ गणनायक, १७ गजिन्द्र, १८ सूर्यकर्ण, १९ त्रिलोचन, २० लम्बोदर, २१ महानन्दा, २२ मृतसूर्ति, २३ सदाशिव, २४ आमोद, २५ दुर्मुख, २६ सुमुख, २७ प्रमोदक, २८ एकपाद, २९ द्विजिह्व, ३० पुरवीर, ३१ पण्डुख, ३२ वरद, ३३ वामदेव, ३४ वक्रतुण्ड, ३५ द्विरण्डक, ३६ सेनानो, ३७ ग्रामणी, ३८ मत्त, ३९ विमत्त, ४० मत्तवाहक, ४१ जटो, ४२ मण्डो, ४३ खड्गो, ४४ वरख, ४५ वृषकेतन, ४६ भक्तप्रिय, ४७ गणेश, ४८ मेघनाद, ४९ व्यापी और ५० गणेश्वर। गणेशके उपरोक्त पचास नामोंके फिर पचास शक्तियां हैं। यथा—१ ज्ञी, २ श्री, ३ पुष्टि, ४ शान्ति, ५ स्वस्ति, ६ सरस्वती, ७ स्वाहा, ८ मेधा, ९ कान्ति, १० कामिनी, ११ मोहिनी, १२ नटी, १३ पार्वती, १४ ज्वलिनी, १५ नन्दा, १६ सुप्रभा, १७ कामरूपिणी, १८ उमा, १९ तेजोवती, २० सत्या, २१ विघ्नेशानी, २२ सुरूपिणी, २३ कामदा, २४ मदजिह्वा, २५ भूति, २६ भौतिक, २७ सिता, २८ रमा, २९ मञ्जिषी, ३० शृङ्गिणी, ३१ विकर्णपा, ३२ भ्र कुटि, ३३ दीर्घघोणा, ३४ धनुर्वरा, ३५ यामिनी, ३६ रात्रि, ३७ कामान्धा, ३८ शशिप्रभा, ३९ लोलाक्षी, ४० चञ्चला, ४१ दीप्ति, ४२ सुभगा, ४३ दुर्भगा, ४४ शिवा, ४५ भर्गा, ४६ भगिनी, ४७ शुभदा, ४८ कालरात्रि, ४९ कालिका, और ५० लज्जा। (शारदातिलकटीकामे राधयमद)

गणेशके शरीर स्थूल तथा खव, सुख हाथीसा और उदर लम्बा है। इनके कपालमें मदजल निःसृत होता है, जिसके सौरभसे आकुल हो कर मधुपक्षुल गरुडस्थलके निकट सर्वदा भ्रमण करते रहते हैं। वृहत् दन्तकी आघातसे अरिकुल निधन हो कर उनका रक्त मन्दिरकीसी शोभा देता है। गणेश यथार्थमें बहुत सुन्दर है और इनकी आराधना करनेसे विघ्न नाश तथा सिद्धि होती है। है (तन्त्र) गणेशका ध्यान। यथा—

“खड्गस्थलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरम्।

प्रसन्नमदयन् नुन्यमधुपयशोनीनगणेश्वरम् ॥
दन्ताघातविदारितारिकधरेः सिन्दुरशोभाकरम्।
वन्दे गेनसुतासुतं गणपतिं सिद्धिपदं कमं सु ॥”

प्रायः सब कोई इसी ध्यानमें गणेशकी पूजा किया करते हैं। तन्त्रसारमें गणेशका और दूसरा ध्यान लिखा है। तान्त्रिकगण इसी ध्यानमें गणेश-पूजा करते हैं—
गणेशका तान्त्रिक ध्यान यथा—

“सिन्दुरामं त्रिनेत्रं पृथुतरजटूरं दन्तपद्मोदं धामं।
दन्तं पाशाद् ग्रीष्मान् रक्तविलसद् वीरपुराभिरामम् ॥
बालिन्दुदोतमोर्लिं करिपतिवदनं दामपूराद्रं गण्डं।
भोगीन्द्रावतभुषम् भजत गणपतिं रक्तवस्त्रांगरागम् ॥” (तन्त्रसार)

इस ध्यानसे जाना जाता है कि गणेशके चार हाथ और तीन नेत्र हैं, इनकी सूंसेकी सवारी है जिस पर चढ़



कर ये त्रिभुवन भ्रमण किया करते हैं। बहुत स्त्रियोंका विश्वास है कि गणेशकी आराधनासे गृहमें इन्दुरका उपद्रव नहीं रहता है। इसलिए बहुतसी गृहस्थ महिला विजयाके दिन दुर्गाप्रतिमाके पार्श्वस्थित गणेशमूर्तिके पद पर सूंसेकी मट्टी रख देती हैं और उनका टीरात्म निवारणके लिये प्रार्थना करती हैं।

गणेशका वीजमन्त्र :—

गा छदशाय नमः, गीं शिरसे स्वाहा, इत्यादि क्रमसे अङ्गन्यास और करन्यास करना पड़ता है। गणेशका पौराणिक मन्त्र, ‘ओं नमो गणेशाय।’ गणेश गायत्री।

“एक दंश्रय विश्वे वक्रतुण्डाय श्रीमहो वती विश्व प्रचोदयात्।”

(प्राणतीर्थी)

गणेशका नमस्कार मंत्र—

‘द्विन्दुमोलिनन्दार-मकरन्द-कणारुणा।

विघ्नान् हरन्तु हरिन्ध परशाम्बुज रेखाः ॥”

पश्चिम उत्तर अञ्चलमें वक्रतुण्ड और दुग्धराज ये दोनो गणेश प्रति प्रसिद्ध हैं। ब्रह्मवैवर्तपुराणके मतसे—

श्री शो श्री हो गणेशराय ब्रह्महृत्पाय सर्वसिद्धिप्रदंशय विघ्नं शाय
नमो नमः । इमो मन्त्रस्यै गणेशपूजा मरुती उचित है ।
तुलसीपत्र द्वारा गणेशपूजा करना निविड मानी जाती है ।
गणेशके इस मन्त्रकी पचास लाख बार जपनेसे मन्त्रकी सिद्धि होती है । गणेशपूजा श्रेय होने पर स्ववपाठ करना चाहिये । गणेशका स्तव, यथा—

गणेशस्तव ।

ईश ! त्वां स्तुतिं कृत्वा वि ब्रह्मज्योति भवतमम् ।
निवृत्तितुमन्त्र इह चन्द्रवदनमनुब्रुवम् ।
प्रथम सर्वभारतां सिद्धानां योनिनां वृक्षम् ।
ब्रह्मसदस्य सर्वश आनरागिम्बद्धिचिन्मम् ।
अक्षतमस्यर गिब्य मयमात्मल्लक्ष्मिचिन्मम् ।
शारुतुण्यातिनिमित्तं चावत सर्वसाविदम् ।
स साराय वपादे च सायायोति सुदुर्लभम् ।
कृष्णधारसदस्य मन्त्रोत्पुष्टकारकम् ।
पर बरेष्ठा वरं चरणानामदीश्वरम् ।
विद्ध सिद्धिम्बद्धवद्य सिद्धिदं सिद्धिहायकम् ।
ध्यानानिदिरिक्तं अयं यथा ध्यानसाध्यश्च धामि कम् ।
धम स्रदय धम श धर्माधम कलपम् ।

बीजं स गणेशायामद्बुद्धयः तणाग्रवम् ।
श्रीः नमु मन्त्रान् च वरुमीतं निश्चिद्यम् ।
सर्वायामवपुसां प्राकृतं प्रकृते परम् ।
त्वां स्तुतुमवमोऽवन मद्यम इति न च ।
नमस्तु पञ्चशतं नमस्तुतुराननम् ।
इत्येव ती नमस्तु च यत्कौडं तत्र स्तौते ।
इत्येव सारन कला सुरेश सुरस स्तौते ।
सुरेश्वर सुर साह विरामार समाप्तिः ।
इह विष्णुकृतं श्लोकं श्लेषेण च पठेत् ॥
साय प्रत्यु मध्याह्ने मन्त्रिभुक्तं समाहितम् ।
तद्विघ्ननिघ्नं कृत्वाते विघ्नैश्च सततं सुखे ।
यद्दधेत् सत्रं नम्य च कल्याणनमकं सदा ॥
याताहायि पठित्वा तु यो याति भक्तिपूर्वकम् ।
तस्य भवानीष्टनिर्दिष्टं वैशेष्यं च लभेत् यथा ॥
तेन ह च दुःखं स्वयंभुवप्राप्तये ।
कृत्वापि न भवेत् तस्य यद्योऽपि च दाहकाः ॥
अथैव विनायकं यत्कौडं चत्वारिंशत् विशदं नम् ।
अथ विघ्ननिघ्नं यत्कौडं सप्तविंशत् नम् ॥

शिराभवेत् २५ लज्जो पुत्रवीरविषद्वे नो ।
सर्वे श्रय निहृत्पाय अन्ते विष्णवः ॥ २५ ॥
फलसायि च तोषाणां यथानां यद्यथैतुं सुवम् ।
सदृशां सर्व दानानां श्रेयश्चैव प्रसादात् ॥

एति श्लोकत्रयं वच पुरासे गणेशस्यैव विष्णु वत गणेशस्तौ ॥”

गणेशपूजा सिर्फ भारतवर्षमें हो नहीं होती बर और भो देशोंमें यथा नेपाल, चीन, जापान और मङ्गोलियामें होती है । नेपालके हिन्दू और बौद्धावनस्वियोंकी पूरा विश्वास है कि गणेशकी पूजामें अभीष्ट सिद्ध होता है । नेपालमें पशुपतिनाथ मन्दिरके उत्तरमें एक प्राचीन तथा प्रसिद्ध गणेशमन्दिर है जिसे अशोककी लडकी चारुमतीने निर्माण कराया है । यवहोपमें भो गणेशके कई एक स्वरूपकी मूर्तियोंकी पूजा होती है । मन्त्रमहोदधिमें गणेशका ध्यान यों है—

“विधायां कृशरससुतच दधान करैर्मादकं पुष्करेण ।
अवधुगुः प्रेमभूषाभरोय गणेश सप्तपदिने यामशौके ॥”

गणेशके हाथोंमें पाय, अक्रुग, पद्म और परशु हैं अरो मूडके अग्रभाग पर मिठाईयां हैं । ये अपने माथ सह बामिनी लिये हुए हैं और अपने सुवर्ण अलङ्कारोंसे ये सूर्य के जैसे दीखते हैं ।

२ एक विख्यात ज्योतिषिद् । इन्होंने आपमय्य जातक कल्पलता, तिथिचिन्तामणि पञ्चाङ्गसाधन, तिथिचिन्तामणि, सारणी, पाटीटीका, भावाध्याय, रत्नावली पडति, स्त्रोजातक प्रभृति मस्कृत ज्योतिषको रचना की है । ३ हिरण्यकेशिकारिकाके रचयिता । ४ पिटपशु सरणी और महिषोत्सर्गविधिनामक धर्मशास्त्र सग्रहकार । ५ भागवतवादितीपिणीके रचयिता । ६ रसतरङ्गिणीके रमोदधि नामका टीकाकार । ७ स्मृतचन्द्रोदयप्रणीता । ८ क्षायभट्टके पुत्र, ऋग्वेद पाठानुक्रमणदीपिका के रचयिता । ९ गोपालके पुत्र । इन्होंने १६१४ ई०की जातकालङ्कार नामक मस्कृत ग्रन्थकी रचना की है । १० दुर्गिराजके पुत्र । इन्होंने गणितमञ्जरी, तांत्रिकचन्द्रिका यिनोद, ताजिकभूषण प्रभृति मस्कृत ग्रन्थ प्रणयन किये हैं । ११ ब्रह्मालसेनके पुत्र गिवतोपिणी नामक निरूपुराणके टीकाकार । १२ रामदेवके पुत्र नानोदय टीका-रचयिता । १३ बनारसके एक हिन्दी कवि । यह

संज्ञित करते हैं। टिनकी कोली और कुरमी जातिकी स्त्रियां आ करके देवीके सम्मुख नृत्यगीत लगाती हैं। तीन दिन अन्नभोगके पीछे देवीके भूषणादि छोल उनके वस्त्रमें कुछ स्नाय और ४ पैसे बांध किसी दाम वा दामीके हस्तमें दिया जाता है। दाम उसको ले करके घरमें बाहर निकलता है। गृहणी भी जनकी धारा देती चली जाती है। शेषमें दाम देवीकी जन्ममें विमर्जन करके वस्त्र और थोड़ासा जल ले गृह लौट आता है।

गणेशजननी (सं० स्त्री०) गणेशम्य जननी, ६-तत्। दुर्गा।

“गणेशजननी दुर्गा राधापद्मा सरस्वती।” (तन्त्रसार)

गणेशदत्त—कामदीपिका तन्त्रका एक टीकाकार।

गणेशदत्तशर्मा—यह “मैथिल गणेशदत्त शर्मा” नामसे ख्यात तथा सालतीमाश्रवका वनाया “प्रकरणोद्धार”के टीकाकार है।

गणेशदास—द्रव्यादश नामक वैद्यक ग्रन्थकार।

गणेशदोक्षित—एक विख्यात दार्शनिक। ये भावा विश्वनाथ दीक्षितके पुत्र, भावा रामकृष्णके पौत्र तथा विज्ञानभिक्षुके शिष्य है। इन्होंने सांख्यसूत्रकी टीका, प्रबोधचन्द्रोदयकी चिच्चन्द्रिका नामकी टीका, तर्कभाषाकी तत्व प्रबोधिनी नामक टीका, तत्त्वसमास ग्रन्थार्थ टीपन, योगानुशासनसूत्रवृत्ति प्रभृतिको संस्कृत टीकाओंकी रचना की है।

गणेशदेव—मङ्गीतशास्त्रविद् पण्डित। राजा खड्गवाहुके आदेशसे इन्होंने सङ्गीतकल्पतरुकी सुबोधिनी नामकी टीका प्रणयन की है।

गणेशदेवज्ञ—नन्दीग्रामवासी एक प्रसिद्ध ज्योतिर्विद्। इनका दूसरा नाम गणेश्वर आचार्य था। ये केशवार्कके पुत्र और नृसिंहदेवज्ञके चचा थे। इन्होंने कई एक ज्योतिःग्रन्थोंकी रचना की है, जिनमेंसे ग्रहलाघव, चावुकयन्त्र, तर्जनीययन्त्र, प्रतोदयन्त्र, लघूपयन्त्र, वृहत् और लघुतिथिचिन्तामणि, मङ्गलनिर्णय (धर्मशास्त्र), आद्यादिनिर्णय, सिद्धान्तशिरोमणिविहृति, चन्द्रोर्णवटीका, पातसारणी, बुद्धिविलासिनी नामकी लीलावतीव्याख्या तथा केशवके सुहृत्तत्त्व और विवाहहन्दावनकी टीका पाई जाती है।

उक्त ग्रन्थोंमेंसे ग्रहलाघव ही प्रधान है। गणेशका ग्रहलाघव १४४२ शकमें (१५२० ई०) पातसारणी १४४४ शकमें (१५२२ ई०) और लीलावतीव्याख्या १५४६ ई०में रची गई है।

गणेशपण्डित—हरिविनीट नामक संस्कृत ग्रन्थकार।

गणेशपाठक—निर्णयकौमुभ नामक न्याय और प्रयोगकौमुभ नामक धर्मशास्त्रप्रणेत।

गणेशपुराण—एक उपपुराणका नाम। इसमें गणेशमाहात्म्य वर्णित है।

गणेशभट्ट—१ उद्वाहविवेक नामक संस्कृत ग्रन्थप्रणेत। २ शाकुनटीपकके रचयिता।

गणेशभारती—शिवताण्डवस्वोत्पत्तिके प्रणेत।

गणेशभिषक्—एक विख्यात चिकित्सक। इन्होंने चिकित्सा-मृत, योगचिन्तामणि, रुग्निनिययार्थप्रकाशिका प्रभृति वैद्यक ग्रन्थ प्रणयन किये हैं।

गणेशभूषण (सं० स्त्री०) गणेश भूषयति गणेश-भूषण्युट। मिन्दूर।

गणेशमहामहोपाध्याय—हरिभक्तिटीपिकाके रचयिता।

गणेशमिश्र—हिन्दी भाषाके एक कवि। इनका जन्म १५५८ ई०की हुआ था।

गणेशराय—टिनाजपुरके अञ्जलके एक राजाका नाम। ई० १५वे शतकमें गौड़का एककृत राजा हुआ था।

गणेशमिश्र—प्रायश्चित्त-पारिजात नामक धर्मशास्त्रके संग्रहकार।

गणेशान (सं० पु०) गणानामीशानः, ६-तत्। गणेश।

“ततः सकार स्वरम् व्यासः सन्वतीसुगः।

सूतनालो गणेशानी मन्त्रचिन्तितपूरकः॥” (भारत १।२१५०)

२ शिव, महादेव।

गणेश्वर (सं० पु०) गणाना ईश्वरः, ६-तत्। १ गणेश।

२ शिव। ३ गणात्मक ईश्वर। ११ रुद्र, १२ आदित्य, १८ वसु और २ अश्विनीकुमार इन तीस देवताओंको गणेश्वर कहते हैं।

“एते देवास्यशक्तिं यत् सर्वं मृते गणेशराः॥” (भारत ५।५० अ०)

गणेश्वर वालेश्वर जिलान्तर्गत एक परगना। इसमें चालुनी और पाइक्रपा नामक दो ग्राम लगते हैं।

गणेश्वरी—एक नदी यह आमामके अन्तर्गत गारो पर्वत के कैलासशृङ्गसे कामशः दक्षिणवाहिनी हो कर मैमनसिंह जिला होती हुई प्रवाहित है।

गणोत्साह (सं० पु०-स्त्री०) गणे गण भावे सम्भूयकरणे उत्साहो यस्य, बहुव्री०। गण्डक, गौड़ा।

गण्ड (स० पु०) गडि वटर्नकदेमि, गडि भव । यदा गमड ।
 १ कपोल, गाल । २ हस्तिकपोल, हाथीकी कनपटी ।
 इमका मख्त पर्याय—कट, करट, कटक और हस्ति
 गण्डक है । ३ गण्डक, गंडा । ४ वीथ्यङ्ग । ५ पिटक ।
 ६ चिद्ध, 'नगान् । ७ वोर बहादुर । ८ भ्रमरभूषण, घोडे-
 का जीवर ८ तुटतुट, तुलतुला । १० स्कोटक, जोडा ।
 ११ ग्रन्थि, गाठ । १२ विष्कम्भ आदि योगोंके मध्य दृग्म
 योग ।

कोठीप्रदीपके मतसे इस योगमें जन्म लेनिमें मृत्यु
 स्वार्थपर, दृग्मेका अनिटकारी, अतिशय धूर्त, कुरूप
 और आत्मोयवर्गकी यन्त्रणाका कारण होता है । उसके
 दोनों गड अपेक्षाकृत स्थूल और कभी कुछ बड़े बड़े
 होते हैं ।

१२ अश्विनो प्रभृति कई एक नक्षत्राका दुष्ट अश ।
 इम विषयमें ज्योतिर्विदोंका मतभेद लक्षित होता—
 किस नक्षत्रके कौन अशके गड कहते और उसका क्या
 फल समझते हैं ।

अश्विन, मघा और मूला नक्षत्रके प्रथम ३ दंड
 और रेवती, अश्लेषा तथा ज्येष्ठा नक्षत्रके शेष ५ दंड गड
 कहलाते हैं । इमें मूला तथा ज्येष्ठा नक्षत्रके गडकी
 दिवागड, मघा एव अश्लेषाके गडकी रात्रिगड और
 रेवती और अश्विनोके गडकी सन्ध्यागड कहते हैं ।
 गडयोगमें ज्ञात बालकका प्राय मृत्यु होता है । उसके
 बच जानेसे पिता या माताका मृत्यु निश्चित है । किन्तु
 दिवागडमें बालिका और रात्रिगडमें बालकका जन्म
 होनेसे किमो प्रकारका विपन्न नहीं पड़ता । मूलाके
 प्रथम पादमें पर्याय गडके मध्य बालक अथवा बालिका
 का जन्म होनेसे पिताका विनाश होता है । इसी प्रकार
 मूलाके द्वितीय पादमें जननीकी भयानक रोग, तृतीय
 पादमें धनहानि और चतुर्थ पादमें सम्पत्तिनाश है ।
 पद्ये पा नक्षत्रमें इमके विपरीत समझना चाहिये । गड-
 योगमें जन्म होनेसे बालक या बालिकाको परिव्याग
 करना ही उचित है । यदि अज्ञेयगत उसकी परिव्याग
 न किया जा सके, पिताकी चाहिये कि ६ मास तक
 उसका मंद न देखे । कारण मुख देख लेनिमें विषद
 पढ़नेकी सम्भावना है । ऐसे स्थानमें कुछ म चन्दन,
 कुछ और गौरीचनाहृतक माघ मिना चार जलपूर्ण कन

मियोसे बालकको स्नान कराना चाहिये । महाम्राघ
 मन्त्रसे स्नान कराना पड़ता है । बालक दिवागड जात
 हो-से अपने पिता, रात्रिगड जात होनेसे जननी और
 सन्ध्यागड जात होनेसे पिता माता दोनोंके साथ नह-
 लाया जाता है । दृष्टपूर्णा काम्यपात्र, सुवर्ण और धतु
 ग्रह विप्रको दान करते और ग्रहगणकी पूजते हैं । इसी
 प्रकार शान्ति करनेसे गडदोष मिटता है । (श्रीतिरुक्थ)

सुदूर्तचिन्तामणि और पंचपुष्याग ग्रन्थसे लिखा है कि
 नारदके मतानुसार ज्येष्ठा नक्षत्रके शेष चार और मूला
 नक्षत्रके प्रथम चार कुल आठ दण्ड ही गड कहलाते
 हैं । इसी प्रकार अश्लेषाके शेष चार और मघाके प्रथम
 चार दण्ड भी गड है । यश्रिठके मतमें ज्येष्ठा नक्षत्रका
 शेष एक और मूलाके प्रथम दो—तीन दण्डोंका ही
 नाम गण्ड है । ब्रह्मगतिने ज्येष्ठाके शेष अर्ध और
 मूलाके प्रथम अर्धदण्डको गड जैसा निर्देश किया है ।
 किसी किसी ज्योतिर्विदके मतमें मूलाके प्रथम आठ
 और ज्येष्ठाके शेष पाँच—१३ दण्डका ही नाम गड
 है । पौषपधाराकी देखते नारदका ही मत प्राद्य है ।
 गडमें बालक या बालिकाकी जन्म होनेसे परिव्याग करते
 अथवा ८ वक्तर पर्यन्त पिता उसका सुख नहीं देखते ।

—१४ कोई जाति । शोधको ।

गण्डक (स० पु०) गड स्वार्थ कन् । १ गैदा । २ ज्योतिर्वि-
 द्याविशेष । ३ भवच्छेद, भेद । ४ भूषण, भनद्वार,
 जेवर । ५ दुष्ट, मूर्ख । ६ सख्या प्रभेद । ७ दृग्भेद, बह
 देश जिस होकर गडकी नदी बहती है । ८ हृन्दिभेद,
 एक हृन्दिना नाम । ९ अश्वि, गाँठ । १० स्कोट्य रोग
 विशेष, एक रोग जिसमें बहुतसे जोड़े निकलते हैं ।

* बन् २३५पातनि मरुद्गण्डकचम् । (३१५श्री)

११ नदीविशेष । १२ भन्ताराय, विप्र
 बाधा ।

गण्डकारी (स० स्त्री०) गण्ड भग्नाविषय विं करोति
 मयोजयति । गड हू षण् डीप् । १ रात्रिरोहण, औरका
 पेड़ । २ गडकमभय, एक मछली । ३ बराहकान्ता,
 बराहकीन्द । ४ अत्रेत्तलज्जातुका मज्जावती ।

गण्डकान्ती (स० स्त्री०) गड हू षण् डीप् यदा गडपु
 य पियु कान्ती यस्या, बहुव्री० । १ काकजदा । २ गडकी
 हस्त । ३ रात्रिरोहण, औरका पेड़ ।

‘सप्तशती’ रत्नको मन्दा खडिरो वृत्ति ।’

(बंदा रत्नमाला)

गण्डकी (सं० स्त्री०) गण्डक-डीप । १ गण्डक जातीय नदी, मादा गंडा । २ कोई नदी, बड़ी गण्डकी । इसका दूसरा नाम नारायणी, शालग्रामी और हिरण्यवाह है । यह हिमालयमें नेपाल राज्यके मध्य अक्षा० २७०' २७' ३०' और देशा० ८३०' ५६' ५०' पर समगण्डकी शैलसे निकल करके दक्षिण-पश्चिमको चल गोरखपुर और चम्पारन जिलेके बीचसे सुजफ्फरपुरके पश्चिम और सारन जिलेके पूर्व प्रान्त होती हुई पटनाके अपरपार गङ्गासे मिल गयी है । गण्डकीने पूर्वकी गोसाईंथानके पार्वतीय तुपांगगिसे स्रोतस्त्रिनीरूपमें परिणत हो करके चम्पारनके उत्तर-पश्चिम त्रिवेणीघाटसे नदीके रूपमें प्रवाहित होना आरम्भ किया है । यहां पूर्व ओरके तट पर कच्चे पत्थरका एक पहाड़ है । उसमें पेड़ भरे पड़े हैं । इसकी दूसरी ओर जङ्गल है । यहांसे हिमालयकी तुपांगगि देख पड़ती है । त्रिवेणीघाटसे प्रायः ६ कोस पय दोना ओर वनाकीर्ण है । नदी पहाड़ी भूमि पर बहनेसे जल भी परिष्कार है । बाढ़के समय पार्वत्य भूमि दूरस्थ भूमिकी अपेक्षा ऊंची हो जाती है । किनारे पर जमीनकी जो जगह नीची पड़ती वहांसे बाढ़का पानी घुस करके निकटस्थ प्रदेशको प्रविष्ट करता है । बाढ़ने देशको बचानेके लिये ध्यान ध्यान पर बांध लगाया गया है । इस प्रदेशकी जमीनका पानी इकट्ठा हो करके नदामे नहीं आता, दूसरी ओर चला जाता है । पहाड़में जहां नदी निकली, अत्यन्त स्रोत है । फिर बीच बीच भंवरका पानी मिलता, जिसमें नाय चानिका सुभीता नहीं पड़ता । उससे नेपालको लकड़ी भले ही आया करती है । वर्ष गल करके जल निकलनेसे यह कभी नहीं सूखतो वर्षाके पीछे जगह जगह इसमें बालकी रेत पड़ जाती है । कोई ठकाना नहीं, नद कर्ण रेत खुलेगी । वरसातमें गण्डकी कहीं रुक और जमी एक कोस चौड़ी हो जाती है । किन्तु शरदमें जमी भी जगह २।३ रस्मी ज्यादा चौड़ाई नहीं रहती । सत्तरघाट, मंग्रामपुर, गोविन्दगञ्ज, वनियारपुर, रतशाल डगडा, नारायणपुर, मनीचरो, मनीम-

पुर, सत्तर, सारङ्गपुर, मोहांसी, रेवा, वारवा, सजा और सीनपुरमें इसका घाट है ।

गण्डक नदी अति प्राचीन कालसे पुण्यमलिना जैसी विख्यात है । (कन्दपुराण, हितवत्कण्ड ५४, पातानखण्ड १:३१; भविष्य ब्रह्मखण्ड ३५१-१०) महाभारत-सभापर्वके २०वे अध्यायमें लिखा है कि कृष्ण, अर्जुन और भोमसेन कुरु-देशसे चल कुरुजाङ्गल पार हो करके पद्मसरोवर पहुंचे थे । वहांसे कालकूट पर्वत अतिक्रम करके वह गण्डकी, चक्रावर्त और कोई पार्वत्य स्रोतस्त्रिनी पार हुए । वीहोके अर्थोंमें भी गण्डकी नदीका नामोन्निख मिलता है । फिर यूनानियोंके पुस्तक भी इसके उल्लेखसे खाली नहीं । मेगास्थिनिसने इसको कण्डकेतिम (Kāndochates) नामसे उल्लेख किया है । टलेमिने इसका कोई नाम नहीं लिखा, परन्तु प्रकारान्तरसे इसका वृत्तान्त दे दिया है । उनके मतमें वह नदी सलेमपुरसे निकल शैलपुर वा शैलग्राम होती हुई गङ्गाके साथ जा करके मिल गयी है । पहले इसमें शालग्रामशिला मिलती थी । इसीसे गण्डकी शालग्रामी वा नारायणी कहलाती है । कहते हैं कि नारायण शानिके भयमें अपनी मायाके प्रभावसे शैलमय पर्वत वन गये थे । शनिके यह समझने पर कीट रूपसे उसके मध्यमें प्रवेश करके एक ओरसे दूसरी ओर तक उसको खोद डाला । एक वर्ष तक इसी प्रकार उत्पन्न होने पर नारायणके घर्म छूटा था । एक ही गण्डसे कृष्णवर्ण और श्वेतवर्ण दो प्रकारका पसीना निकला । उसी काले पसीने कृष्ण और सफेदसे श्वेत-गण्डकी प्रवाहित हुई । इनमें एक पूर्व और दूसरी पश्चिमकी चली थी । एक वर्ष पीछे विष्णुने अपना रूप धारण करके प्रस्थान किया, परन्तु शालग्रामशिला नारायणरूपमें पूजनेको कह दिया । शालग्राम देको । उसी समयसे शालग्राम-शिला पूजित हुई है । गण्डकीके जलमें नारायणका अंश रहनेसे वह हिन्दुओंके निकट अति पवित्र है । ३ गण्डकी नदीकी अधिष्ठात्री देवी ।

गण्डकी देवीने दस हजार वर्ष पर्यन्त बड़े कटमें वायु और पेड़ोंके सड़े गले पत्ते खा करके भगवान् विष्णुकी आराधना की थी । विष्णु गण्डकीकी तपस्यासे सन्तुष्ट हो करके उनके पास जा पहुंचे । गण्डकीने चतु-

भुंज गण्ड चक्र गटा पद्मधारी विष्णुको देख करके भक्ति सहकारमे मानाविध स्तव किया था। इससे विष्णु और भी प्रमत्त हुए और उसमे वर मागनेकी कहने लगे। गण्डकी-ने कहा—जगदीश्वर। यदि इस दामी पर आपकी करुणा छुड़े है, तो आप गर्भगत हो करके मेरे पुत्र बनें। इस पर विष्णु धील उठे—'ग डक्ति। मैं शालग्रामगिना बन करके तुम्हारे गर्भमें वाम करूंगा। तुम जगत्में बड़ो होगो। तुम्हारा दर्शन, स्पर्शन, श्रवणाहन या स्नान तथा जनपान करनेमे कायिक, वाचिक और मानसिक तीनों प्रकारका पाप छूट जायेगा। इसी प्रकार वर दे करके विष्णु चलते हुए। इसीमे ग डकी सब नदियोंमें बड़ी है। भारतमें जो शालग्राम गिना भक्ति सहकारमे विष्णु समझके पूजा जाते, ग डकी नदीमें हो आती है। विष्णुके वरमे हो वह सबकी आदरणीय छुड़े है।

(१११३३१७)

गण्डकी (छोटी) कोई प्रसिद्ध नदी। बड़ी गण्डकीकी तरह यह भी नेपाल राज्यके पहाडोमे निकल गोरखपुर जिनमें हो करके बहती है। छोटी ग डकी बड़ी ग डकीके ४ कोस दूर रह करके समान्तराल भावमे चलती छुड़ भारत जिलेके बीच सीनारिया नामक स्थान पर (अक्षा० २५ ४१' ०" तथा देशा० ८५ १४' ३०" पु०) चर्चरा नदीमें गिरी है। इसके उत्पत्तिस्थानका नाम सोमेश्वर पर्वत है। यह चम्पारनके दून पहाडका टकडा होता है। दरहा नामक गिरिगड्डट इसके बहुत निकट है। इसीमे छोटी ग डकीका प्रथम च गहरा हो कहलाता है। पानी चल करके इसको क्रमग मिवरेना, बुढी गण्डक और छोटी गण्डक कहते हैं। रामनगर, धेतिया और मनोमोहनगर इमाके तीर अवस्थित है। श्रीप्रकालकी इसमें जल नहीं रहता। उस समय इसका विस्तार ४० क्षमाभाव होता है। किन्तु यहाँ बालकी इसमें प्रचुर जल था जाता है। उड्डिया, धोगम, जमुया, पडाइ, हरबोरा, बलइया, रामरेवा और समाइ नामक उपनदी इसमें आ गिनी हैं। किमी बिभीके मतमें छोटी ग डकीका नाम चिरण्यवती है।

गण्डकी—ग डकी नदीमे निकली एक पयोप्रणाली। यह ग डकी गण्डकी किमी गायामे निकल करके भारत

जिलेके बीच दक्षिणपूर्व भागमे शोतलपुरके पास मही नाममे गङ्गामें मिलित हुई है। गोपालगञ्ज, चौकी इसम, रामपुर, खोवाम, गुरखा और शोतलपुर इसके किनारे अवस्थित हैं। गङ्गामें बाढ आनेसे पानी गुरखा तक पच-चता और दिवंबारा तक सब स्थान जनप्रवाहित होता है। श्रीप्रकालकी इसमें सामान्य हो जल रहता है। उस समय क्रिमान इसमें बांध लगा क्षयिकार्य करते हैं। गण्डकी नदीमें बांध पडनेसे इसका पानी कम पड गया है। बांध डालनेसे पहले गण्डकी नदी तक इसमें बड़ी बड़ी नावें चलती थी। आजकल वरमातमें हजार मनकी नाव सुर्खा तक आ जा सकतो है। यह ४५ कोस लम्बी है। इसके बीचमें नदीगर्भ ५२ हाथ उतर गया है।

गण्डकीमुख (स० पु०) गण्डकीया पुत्र, ६ तत्। शालग्राम-गिना, वह गिना जिसे हिन्दू विरु समझ कर पूजा करते हैं।

गण्डकुसुम (स० को०) गण्डस्य हस्तिचपोलस्य कुसुम-मिव, ६ तत्। हस्तिमद, हाथोका मद।

गण्डकूप (स० पु०) गण्डे गण्ड इव उर्वे पर्वतभृगो कूप, ७ तत्। पर्वतका उच्चस्थान, पहाडकी चोटी।

गण्डगण्ड—पञ्चायके अन्तर्गत रावलपिण्डे और हजारा जिलाकी एक गिरि श्रेणी। यह अक्षा० ३३ ५० उ० और देशा० ७२ ४६ पु०में अवस्थित है। चर्च नामक उपत्यकाकी और यह पर्वत टारू होता गया है और सब जगह यह ऊँचा और दुर्गरोह है।

गण्डगात्र (स० को०) गण्ड इव ऊषावच गात्रस्य, बह्व्री०। फलविगीय, गरीका। इसका गुण—शोथ, हृष, वातपित्तनाशक, श्रेष्ठ त्रिदिक, लक्षणाशक और यमनर्शनविदारक है। (चर ४७/१११)

गण्डघाम (स० पु०) गण्ड भूपणस्यदप प्रसक्त घाम। प्रसक्त घाम, यह घाम जिसमें बहुत मनुष्य रहते हैं। गण्डदूर्धा (स० श्री०) ग डका यन्त्रियुक्ता दूर्धा, कर्मधा०। दूर्धाविगीय, गण्ड घाम। इसका पर्याय—गण्डाली, पति तीक्ष्ण, मधुमासी, वाह्यी, भीमसर्पी, सुषोनेवा, श्याम यन्त्रि, घञ्जला, यदियर्पी, सुषोपला, श्यामर्षीटा चन्ध्या, गङ्गुलाची, कलाया और गिता है। इसका गुण-मधुर, वातपित्त, क्षर, भ्रांति और लक्ष्णा यमनाशक

तथा शीतल है। भावप्रकाशके मतसे इसका गुण—
शीतल, लोहद्रावक, प्राग्नी, लघु, तिक्त, कपाय, मधुर,
कटुपक्व, वातवृद्धिकर, टाह, तृष्णा, दुर्बलता, श्वास,
कुष्ठ और पित्तज्वरनाशक है। (भावप्रकाश)

गरुडदेव—दक्षिणमें गङ्गवर्गीय एक प्राचीन राजा।
इनेने द्राक्षिपुरके पद्मवराज और चोल राजाको पराजय
किया था। काञ्चिराज गंडदेवको कर देते थे। पांडव
राजाने इनके साथ मित्रता की थी।

गरुडदेव (सं० पु०) कपोल, गाल, कनपटी।

गरुडपाट (सं० त्रि०) गंडस्थ पाट इव पाटोऽस्य, बहुव्री०।
जिमके दोनों पैर गंडाके सदृश हों।

रत्नटोपलिका (सं० स्त्री०) कीटविशेष, एक प्रकारका
कीड़ा।

गरुडप्रपाटी (सं० स्त्री०) कीटविशेष, एक कीड़ा।

गरुडफलक (सं० स्त्री०) गंडः फलकमिव, उपमितस०।
१ विम्बोर्ण गंडस्थल, बड़ी कनपटी। (त्रि०) २ जिसकी
कनपटी बहुत बड़ी हो।

गरुडभिन्ति (सं० स्त्री०) गंडं भित्तिरिव उपमि०। प्रशस्त
कपोल, सुन्दर गाल, अच्छी कनपटी।

“गरुडभिन्तिर्गण्डमिती” विशय १” (रघु० १३।१०२)

गरुडमाक—अफगानिस्तानके निकट जलालावाटसे काबुल
जानेकी राह पर अवस्थित एक ग्राम। यह जलाला-
वाटसे १७॥ कोसकी दूरी पर है। यह ग्राम जलाला-
वाटसे अधिक शीतल है। १८३८ और १८४२ ई०की
अङ्ग्रेज और अफगानिस्तानके बीच इसी ग्रामके निकट
लड़ाई हुई थी। १८५२ ई०में जब अङ्गरेजी सेना
काबुलसे नाटो आ रही थी तब अत्रशिष्ट २० सेनानायक
और ४५ गोर इसी स्थान पर कट गये थे।

गरुडमाला (सं० स्त्री०) गंडानां श्रीवाजातस्कोटविशि-
ष्टानां माला लम्बोऽस्यां, बहुव्री०। गलाका एक प्रकार-
का रंग, गन्धगंड, कण्ठमाला। रघुगण्ड इत्यं।

गरुडमालिका (सं० स्त्री०) गंडानां अंशुनां माला यत्,
द्वन्द्वी०। १ लज्जानु लता, एक प्रकारकी लता जिमकी
पत्तियां टूटनेसे मित्रह जाती है। २ गरुडमाला।

गरुडमाली (सं० त्रि०) जिमकी गलगण्ड रोग हुआ हो।

गरुडमण्ड (सं० त्रि०) गंडः अतिमयितः सूर्यः। अतिशय

मूढ़, घोर निर्वोध, घोर मूख, भारी बेवकूफ।

गरुडयन्त (सं० पु०) मेघ, बादल। गरुडयन्त देखो।

गरुडलिख्या (सं० स्त्री०) चर्मकरा, एक सुगन्धि द्रव्य।
(व ५४४)

गरुडली (सं० स्त्री०) गंड इव सुद्रशैलं तत्र लीयते लीडोप्।
१ महादेव, शिव।

“गण्डली नैवघाना च देवाधिपतिरिव च।” (भारत अतु १८ अ०)

२ सुद्र पर्वत, छोटी पहाड़ी।

गरुडलेखा (सं० स्त्री०) प्रशस्तकपोल, सुन्दर गाल, अच्छी
कनपटी।

गरुडविन्दु (सं० पु०) कुवेरके सेनापति। विश्ववामानके
ज्येष्ठ पुत्र धर्मपरायण कुवेरके पिताकी आज्ञासे लङ्कामें
राज्य करत थे। दुर्बल रावणने उनको भगा कर
लङ्कामें अपना अधिकार जमाया कुवेर उमके भयसे
देश छोड़ कैलास पर्वत पर रहने लगे, लेकिन उनका
वहाँ रहना भी रावणकी असह्य मालूम पड़ा। इस
लिये दुष्ट रावणने कुवेरपुरी पर आक्रमण किया।
कुवेरने अपने सेनापति गरुडविन्दुके उत्साह और परामर्श-
से रावणके साथ लड़ाई आरम्भ कर दी। उस लड़ाईमें
सेनापति गंडविन्दुने अपना भुज विक्रम और युद्धकौशल
दिखाया। इसीके पराक्रमसे रावणके बहुतसे योद्धा
मारे गये। अन्तमें मारीचके माया-युद्धसे गंडविन्दुको
हार माननी पड़ी। (राघवसाधन उचर ५ अ०)

गरुडव्यूह (सं० पु०) वीह सूत्रका एक अंश।

गरुडशिला (सं० स्त्री०) गंडः भूमिरेच्छनप्रदेशः तद्वत्
शिला। स्थूलपाषाण, बड़ा पत्थर।

“दृष्टोऽगुह्यशिलासकः सपाद गरुडशिलासकः।” (सागवत ३।१२।२२)

गरुडशैल (सं० पु०) गंडइव शैलः यद्वा शैलस्य गंड इव
राजटंडादित्वात्। भूकम्पादि द्वारा पर्वतसे गिरा हुआ
स्थूल पाषाण, वह बड़ा पत्थरका टुकड़ा जो भूकम्पसे
पर्वतसे गिरा हो। २ सुद्र पर्वत, छोटी पहाड़ी। ३ ललाट,
माल।

गरुडसाह्वया (सं० स्त्री०) गंडेन सहित आह्वयो यस्यः,
बहुव्री०। गंडकी नदी।

“गंगा च शातकुष्मा च करग्रुणं पसाह्वया।” (भारत ३।२१ अ०)

गरुडस्थल (सं० स्त्री०) गंडः स्थलमिव, उपमितस०।
१ गंडदेश, समस्त गाल। २ हाथीकी कनपटी।

गराडस्थली (म० स्त्री०) गड स्थलमिव, उपमितम० ।
क्षपोलस्थल, ग डदेश, कनपटी ।

गण्डा—यु प्रदेगता एन नगर । यह अक्षा० २७ ७
३० उ० और देशा० ८२ पू०के मध्य फैजाबादमे
१४ कोम दूरमे अवस्थित है । यह गडा जिलेका
प्रधान नगर है । इस जिलेमे अहीर जाति कृषिकार्य
करती है । यह प्रदेश पहले उत्तरकीयल राज्यके
अन्तर्गत गोड नाममे मगहूर था । शा०को १६। यावन्ती
नगरका ध्व सावगीय इस जगहमे दोखता है ।

गराडाङ्ग (म० पु० स्त्री०) गड इव उच्छूनमङ्ग यम्प,
बहुद्वी० । गडङ्ग, गँडा ।

गराडान्त (म० स्त्री०) तियि नचव और नरनका मन्धि
काल ।

नचवनिचनप्रांति ग-ल विधि कृत ।

नचवचनप्रांति वा गड विधि कृतम् ॥” (स्तोत्रिच)

गराडारि (म० पु०) १ षोडशारहच, कचनारका पेड ।
शोरिण १६। २ मत्स्यविगेष ।

गराडारो (म० स्त्री०) मञ्जिष्ठा, म जीठ ।
गराडाली (म० स्त्री०) १ श्वेत दूर्धा, सफेद दूब, गाडर
घाम । २ सर्पाधीहच, मरहची, गडिनिका पेड ।
३ मन्मथाचो, मन्मथीकी भाँड ।

गराडाव—वसुचिम्बानके काखे नामक विभागका एक
प्रधान नगर । यह अक्षा० २८ ३२' उ० और देशा०
६० ३२' पू०मे वाघ नामक स्थानमे २० कोम दक्षिण-
पश्चिममे मूला नामक गिरिसड्डट ज्ञानिके गम्भे पर
अवस्थित है । यह एक ऊँची भूमिके ऊपर चहार
दीवारोमे घिरे हुए ग द्वारा सुरक्षित है । यहाँ विनात
खोका एक घर है । गीत कालमे खी साहब यहाँ था
कर रहते हैं ।

गगिड (म० पु०) हचको अडमे शाखा तकके भागको
गडि कहते हैं ।

गगिडक (म० स्त्री०) बुद्धबुद्धके जैसा सुद्र पापापादि,
बुद्धबुद्धके समान छोटे छोटे पत्थरके खड । २ एक
प्रकारका अग्रत ।

गगिडका (म० स्त्री०) सुद्र गण्ट पापाप, पत्थरके छोटे
छोटे टुकड़े ।

गगिडकोट—मन्द्राज प्रदेशके अन्तर्गत कडापा जिनामे
चेरमलय नामक पर्वतका एक दुर्ग । यह सुदृढ दुर्ग
अक्षा० १४' ४८' उ० और देशा० ७८ २०' पू०मे अव
स्थित है । यहाँ विजयनगरके राजाधोका एक देव
मन्दिर है । प्रसिद्ध ऐतिहासिक लेखक फेरिस्ता लिखते
हैं कि यह दुर्ग १५८८ ई०मे निर्माण किया गया है ।
गोलकुण्डाके राजाने एक बार इसे अपने अधिकारमे लाया
था । औरङ्गजेबके सेनापति मीरजुम्हाने इसे कई
बार टक्ल किया था । बाद यह हैदराबादके बाला-
घाटके पांच सरकारोमे एक सरकारकी राजधानी
हुई । अन्तमे कडापाके पाठान नबावने इस स्थान-
की अपने अधिकारमे लाया । किन्तु १७८१ ई०की टिपूकी
स हाँके समय अहमद जे सेनापति कमान लिटनने इसे
जीत लिया । १८०० ई०मे निजामने इसे अहमदजोकी
अर्पण कर दिया । यह दुर्ग रैतीना पत्थरके पहाडके
ऊपर बना हुआ है । इस छोकर पनाग नामक नदी
प्रवाहित होती हुई कडापा अचल तक चलो है ।

गण्डी (म० स्त्री०) खडीसे रखा खोच कर सीमाकी
चिह्नित करनेका गाम गण्डा है ।

गण्डीर (म० पु०) १ समझिना, खीरा । २ शाकविगेष,
पोईका साग । ३ बीर, बहादुर, शूरवीर ।

गण्डीरो (म० स्त्री०) सेहुण्डवृक्ष, सेहुडका पेड ।

गण्डु (म० पु०) १ उपधान, तकिया । २ अग्रि, गाँठ,
गिरहा । (स्त्री०) ३ अग्रियुक्त, जिममे गाँठ हो, गिरहदार ।

गण्डुपट (म० पु०) गण्डु, अग्रियुक्तानि पटानि यम्प,
बहुमी० । किचुलक, के सुपा ।

गण्डुपदभव (म० स्त्री०) गण्डुपट इव भवति उत्प
द्यते । भोमक, सीमा नामक धातु ।

गण्डु, बन् ईना ।

गण्डुपदी (म० स्त्री०) १ एक अत्र कीडा, छोटा
केंचुपा । २ किच मक जातोय म्पो, माटा केचुपा ।

गण्डुप (म० पु०) १ सुपवृषण, कुजो । २ सुहवा
पानो । ३ हाथीकी सूडका अथ भाग, हाथीकी मुडको
मोक ४ प्रगति परिमित, मोनन तोनके बराबरका एक
मान पगर ।

गण्डुधविधि (म० पु०) गण्डुधप्य विधि विधान, १ तप ।
सुपगण्डुप करनेक विधम । मुहपानिके विधम । भाग

प्रकाशमें लिखा है कि दतुवन और जिभी करनेके बाद शोतल जल देकर बार बार कुली करनी चाहिये। इससे कफ, अरुचि और सुखमल दूर होता है। कुछ गर्म जलसे कुली करने पर कफ, अरुचि, सुखमल और द्रांतकी जड़ता जाती रहती है। विष, मूर्च्छा, मटाल्यय, राजयच्छा और रक्त पित्त इन समस्त रोगाक्रान्त मनुष्योंके लिये गण्डूप धारण अहितकार है। जिसकी आंखें दूषित या मल-कूपित हो गई हो अथवा जो मनुष्य अत्यन्त दुर्बल हो उनके लिये उष्ण जलसे कुली करना प्रशस्त नहीं है।

गण्डूपा (सं० स्त्री०) गण्डूप-टाप् । गण्डूपा ।

गण्डोपधान (सं० स्त्री०) गण्डस्य उपधानं, ६-तत् । उप-धानविशेष । गालवालिश, वह छोटा तकिया जो गालके नीचे रखा जाता है ।

गण्डाल (सं० पु०) १ गुड़ । २ घास, कौर ।

गण्डोलपाद (सं० त्रि०) गण्डोल इव पादो यस्य बहुव्री० । गण्डोलके जैसा वत्तलाकार पादविशिष्ट, जिसके पैर गण्डोसी घोला हों ।

गण्य (सं० त्रि०) १ गिननेके योग्य, गिनतीके लायक । २ प्रतिष्ठित, जिसकी पूछ हो, जिसे लोग सम्मान करते हों । गत् (सं० त्रि०) गच्छति गम्-क्विप् सकारस्य लोपः । गमनशील, जो चलता हो । यह शब्द प्रायः दूसरे शब्दोंके साथ प्रयोग किया जाता है ।

गत (सं० त्रि०) १ गया हुआ, बीता हुआ । २ प्राप्त, पाया हुआ । ३ समाप्त, पूरा किया हुआ । ४ पतित, गिरा हुआ । ५ ज्ञात, जाना हुआ । ६ लब्ध, पाया हुआ । ७ गमन, जाना, चलना ।

गतं (हि० पु०) हिजड़ा, नपुंसक ।

गतकलुष (सं० त्रि०) गतं कलुषं पापं यस्य, बहुव्री० । निष्पाप, जिसका पाप नष्ट हो गया हो ।

गतकल्मष (सं० त्रि०) निष्पाप, जिसे पाप न हो ।

गतकाल्य (सं० स्त्री०) गतकाल, बीता हुआ समय ।

गतका (हि० पु०) लकड़ोका एक डण्डा । इसके ऊपर चर्मकी खोल लगी रहती है । यह ढाँड़े वा तीन हाथका लम्बा होता है । यह प्रायः खेलने हीके काममें आता है ।

गतकार्य (सं० त्रि०) १ जिसका कर्त्तव्य कार्य नष्ट हो गया हो । २ अतीत कर्म, जो काम बीत गया हो ।

गतकाल (सं० स्त्री०) बीता हुआ, कल ।

गतकीर्ति (सं० त्रि०) गता अतीता नष्टा वा कीर्ति यस्य बहुव्री० । जिसकी कीर्ति अतीत हुई हो, जिसका यश लीप्त हो गया हो

गतकाम (सं० त्रि०) जिसका यम दूर हुआ हो, विद्यान्त ।

गतकुल (सं० पु०) वह संपत्ति जिसका कोई अधिकारी न बचा हो, लावारसी माल ।

गतचौबीसो,—जैनियोंके भूतकाल मन्वन्थी चौबीस तोर्ध-द्वार । नाम—१ नर्वाण, २ सागर, ३ महासाधु, ४ विमल-प्रभ, ५ श्रीधर, ६ सुदत्त, ७ अमलप्रभ, ८ उदर, ९ अङ्गर, १० सन्मति, ११ मिन्यु, १२ कुसुमाञ्जल, १३ श्रवण, १४ उत्साह, १५ ज्ञानेश्वर, १६ परमेश्वर, १७ विमलेश्वर, १८ यशोधर, १९ कृष्ण, २० ज्ञानमति, २१ शुद्धमति, २२ श्रीभद्र, २३ अतिक्रान्त, और २४ शान्त ।

(२४छत्तीसो)

गततृप (सं० त्रि०) गता तृपा लज्जा यस्य, बहुव्री० । निर्लज्ज, लज्जाहीन, बेशर्म, बेहया ।

गतनासिक (सं० त्रि०) गतनासिका यस्य, बहुव्री० । नासिकाशून्य, जिसके नाक नहीं हो, नकटा ।

गतनिधन (सं० स्त्री०) पाशभेद, बंधनजाल, एक प्रकारका फंदा ।

गतपाप (सं० त्रि०) गतं 'वनष्टं पापं' यस्य, बहुव्री० । निष्पाप, जिसके पाप दूर हो गये हों ।

गतपुण्य (सं० त्रि०) जिसका पुण्य नष्ट हो गया हो ।

गतप्रत्यागत (सं० त्रि०) पूर्वं गतः पश्चात् प्रत्यागतः कर्मधा० । १ जो जाकर फिर लौट आया हो, गमन और प्रत्यागमन । २ संगीतमें तालके साठ भेटोंमें एक ।

गतप्रत्यागता (सं० स्त्री०) वह स्त्री जो अपने स्वामीके घरसे भाग गई हो और फिर थोड़े दिनोंके बाद लौट आई हो ।

गतप्रभ (सं० त्रि०) गता दूरीभूता प्रभा यस्य, बहुव्री० । जिसमें प्रभा नहीं हो, निष्प्रभ, तेज रहित ।

गतप्राण (सं० त्रि०) गतः प्राणा यस्य । जिसके प्राणने शरीर त्याग कर दिया हो, मृत ।

गतबुद्धि (सं० त्रि०) गता बुद्धिर्यस्य, बहुव्री० । बुद्धिशून्य, निर्वोध, अज्ञान, अनजान ।

गतभर्त्सा (सं० स्त्री०) गतो नष्टः प्रोषितो वा भर्त्सा

यस्या, बहुव्री० । १ विधवा । २ जिमका स्वामी दूर
देग-गया हो ।

किमु सुखमु इति न भवत् कः । ' (नाथ)

गतरम (स० त्रि०) जिमका रम नष्ट हो गया हो, विरम ।

“गतप्रम गतरम वृत्ति यदुचित्तं वत् ।” (गोता)

गतव्यथ (स० त्रि०) गता नष्टा व्यथ। पीडा यस्य, बहुव्री० ।
व्यथाशून्य, जिसको कोई कष्ट न हो ।

गतमर्याद (स० त्रि०) गतमर्यादा यस्य, बहुव्री० । अप-
मानित, जिसको मर्यादा नष्ट हो गई हो ।

गतरात्रि (स० स्त्री०) अतीत रात्रि, बीती हुई रात ।

गतलज्ज (स० त्रि०) गता लज्जा यमा, बहुव्री० । निर्लज्जा,
वेधर्म, बेइया ।

गतशोचन (स० क्लो०) गतम शोचन, ६-तत् । अतीत
विषयका अनुशोचना वस्तुतः बातका ख्याल करना ।

गतशोचना (स० स्त्री०) गतस्य शोचना, ६ तत् । गताशु
शोचन, बीते हुए विषयका स्मरण ।

गतश्री (स० त्रि०) गता श्री श्रीभा यस्य, बहुव्री० । जिसको
श्रीभा नष्ट हो गई हो । निष्प्रभ, जिसमें किसी तरहको
चमक न हो ।

गतसङ्ग (स० त्रि०) गत नष्ट सङ्ग आमक्तिर्यस्य, बहुव्री० ।
नि सङ्ग, जिसमें दूरगैको सङ्गत छोड़ दी हो ।

गतसन्नक (स० पु०) मदशून्य हस्ती, वह हाथी जसके
मद न हो ।

गतस्पृह (स० त्रि०) गता नष्टा स्पृहा यस्य बहुव्री० । निस्पृह,
किमो चीजकी इच्छा न हो ।

“गतव्यो ह्योग्रासमनसो जगत् ।” (नाथ)

गतस्मय (स० त्रि०) १ गर्वशून्य, जसके अभिमान न हो ।
२ विषमयशून्य ।

गताक्ष (स० त्रि०) गतमक्षि यमा बहुव्री० । नेत्रहीन, अन्धा ।

गताक (स० त्रि०) जिममें सत्पुरुषके चिन्ह अत्र न रह
गये हैं ।

गतागत (स० क्लो०) गत गमन आगत आगमन द्यो
ममाक्षर, समाहारद्वन्द्व । गमनागमन, आना जाना ।

“०७ तयो धनमनुपपन्नं यत्तान्ना कामनामा लभत ।” (गोता)

गत ऊर्ध्वगमन आगतमधोगमन यत्र, बहुव्री० ।
२ पञ्चीकी गति, चिडियाकी चाल । (पु०) ३ गत

विनष्ट आगत पुन सप्सारगमन यस्मात्, बहुव्री० ।
महादेव ।

“बोधिस्य भोति एहात्मा य हो मन्थो गतागत ।”

(भाष्य १११००७२)

गतागति (स० स्त्री०) गमनागमन ।

गतागतिक (स० त्रि०) गमनागमनसे जा निष्पादित हुआ
हो ।

गताङ्ग (स० त्रि०) जिममें सत्पुरुषके चिन्ह अत्र रह न
गये हैं ।

गताध्वन् (स० त्रि०) तत्त्वज्ञ, ज्ञाततत्त्व, जाननेका भाव ।

गताधा (स० स्त्री०) चतुर्दशीयुक्त अमावस्या तिथि ।

गतानुगत (स० त्रि०) गतस्य अनुगत, ६ तत् । जो किसी
आदमीके पीछे पीछे जाता हो । (क्लो०) गतस्य अनुगत
अनुगमन, ६ तत । २ गमनका अनुगमन, एकके पीछे
दूसरेका जाना ।

गतानुगतिक (स० त्रि०) गतानुगति अर्थस्य गतानुगत-
ठन । गमनानुगमनविशिष्ट ।

‘ एकस्य कर्म य घोरा कर्मिणोऽनुगति गच्छति ।
गतानुगतिको लोको न लोकाचारभाषिके न ।’ (पञ्चमक)

गतान्त (स० त्रि०) गत उपस्थित अन्त अन्तकालो
यस्य बहुव्री० । सुसुप्त, जतका अन्तकाल उपस्थित हो
गया हो ।

गतायात (स० क्लो०) गतञ्च आयातञ्च तयो समाहारः
समाहारद्वन्द्व । गमनागमन ।

गतायु (स० त्रि०) गत गतप्राय आयुर्जीविनकालो यस्य,
बहुव्री० । जिमका आयु शेष हो, चरमकाल उपस्थित,
मरनेवाला ।

वैद्यको चिकित्सा आरम्भ करनेसे पहले रोगीके
आयुका विषय अच्छी तरह विवेचना करके देख लेना
चाह्ये । यह विषय वैद्यशास्त्रमें बहुत ही कठिन है ।
महात्मा सुश्रुतने आयु प्राय शेष होने पर रोगीके जो
नक्षण प्रशंसित होते, उनमें कई एक निर्णय किये हैं—
सनुपराका श्लवुकाल का पङ्कचमिसे उसका शरीर और
स्वभाव बटन जाता है । जो व्यक्त वास्तविक कोई शब्द
न होत भी नाना प्रकारके शब्द सुना करता जो मसुद्र
प्र वा मेघका शब्द सुन करके अन्य प्रकार समझता

अथवा उस शब्दको सुन ही नहीं सकता, जो घने जङ्गल-
की घोरतर शब्दको आस्य शब्द और आमके जनरवकी
दृश्य जन्तुओं का शब्द-जैसा अनुमान करता, जिसे वन्धु
वाग्धवींकी बात सुनना अच्छा नहीं लगता और सुनते
सुनाते भी उसको अपना अनिष्ट पर समझ करके कुपित
पड़ता और शत्रुकी कथा वा उपदेश जसकी बहुत प्रीति-
कर जंचता, उसका आयुः शेष हुआ जैसा ठहराना
चाहिये। जो वाक्कि उष्णकी शीतल और शीतलकी उष्ण
जैसा ग्रहण करता, शीतमें शरीर रोमाञ्च होते भी जसका
शांत, दाह नहीं मिटता, शरीर अतिशय उष्ण रहते भी
जो शीतसे कंपने लगता, प्रहार वा अङ्गच्छेद करते भी
जो वेदना अनुभव नहीं करता, जिसके शरीरमें अक-
स्मात् वर्णान्तर वा रेखा-जैसा चिह्न निकल पड़ता, चन्दन
लगानेसे जिसके शरीर पर नील सज्जिका आस्य करती,
अकस्मात् जिसके शरीरसे सुरभि गन्ध नरुल पड़ता,
बहु शीघ्र ही मरता है। एक प्रकार रस आस्वादन करके
अन्य प्रकार समझने और सभी रसों अथवा मिथ्या आहा-
रसे दोष वा अग्निमान्द्य बढ़नेसे, कोई रस वा सुगन्ध
दुर्गन्ध मालूम न पड़ने अथवा घ्राणशक्ति एक वारगी ही
बिगड़ने; शीत, उष्ण आदि काल अवस्था वा टिक् विषय-
में विपरीत ज्ञान रहने, दिनकी आकाशमण्डलमें प्रज्वलित
नक्षत्र वा चन्द्रकिरण और रात्रिकी ज्वलन्त सूर्य, मेघ-
शून्य आकाशमें इन्द्रधनु वा विद्युत् एवं निर्मल आकाश-
में कृष्णवर्ण मेघ देख पड़ने, आकाशमण्डल अष्टालिका
वा विमानयानसे परिपूर्ण तथा भूमण्डल धूम, नोहार
वा वस्त्र द्वारा आहत-जैसा लगने, समस्त लोक प्रज्वलित
अथवा जलप्लावित-जैसा जंचने, अरुन्धती, ध्रुव, आकाश,
गङ्गा, उष्णजल तथा ज्योत्स्ना एवं आदर्शमें अपनी
छाया न देख पःने अथवा अङ्गहोन विकृत वा कुकर,
काक, गृध्र, प्रेत, यक्ष, राक्षस वा पिशाचकी छाया-जैसी
लगने और निर्धूम अग्नि मयूरके कण्ठ-जैसा लगनेसे सुस्थ
शरीर रहते भी पीड़ित होते और पीड़ित होने पर मरते
हैं। (सुत्र, त सुत्र ३० ५०)

श्याव, लोहित, नील वा पोतवर्ण छाया जिसका
अनुगमन करती, उसकी मीत अवश आ पहुँचती है।
हठात् लज्जा वा स्त्री विनष्ट होने अथवा तेज, बल, स्मृति

वा प्रभा एकाएक बढ़नेसे नियम मनुष्यकी मरना पड़ता
है। जिसका निचला ओष्ठ गिर और ऊपरी ओष्ठ उठ
जाता अथवा दोनोंका रङ्ग जामन-जैसा काना देखता,
उसका आयुः शेष हो जाता है। दाँत कुछ लाल, नाने
अथवा बहुत काले पड़ जानेसे आयुः शेष हुआ समझते
हैं। जिसको जिह्वा कृष्णवर्ण, स्तब्ध, अवन्तिस, कर्कश
वा स्फीत लगती, जिसकी नासिका वक्र, स्फुटित, शुष्क,
अवनत वा उन्नत रहती, जिसके दोनों चतुर्धर्मों काटाई
बड़ाई देख पड़ती अथवा उनमें चुट्टता, निचलता, रक्त-
वर्णता अथवा अधोदृष्टिविग्रिष्टता रहती और जिसकी
आँख लगातार आर्द्र रहती, उसके मरनेमें कोई कमर
नहीं पड़ती। बाल दोनों ओर बिखर पड़ने, भौंहे घटने
या बढ़ने और आँखोंकी विरनियता उमड़नेसे रोगी शीघ्र
प्राणत्याग करता है। जो व्यक्ति सुखस्थित अन्न ग्राम
नहीं कर सकता समस्तक भीधा नहीं रख सकता और
एकाग्रदृष्टि तथा अचेतन रहता, शीघ्र ही मरता है।
रोगी सबल हो या दुर्बल यत्नपूर्वक उठा करके भी
बैठानेसे मूर्च्छित होने पर बचनेकी आशा न करना
चाहिये। जो रोगी चित लेट करके पैरोंकी मिकोड़ता
या सर्वदा फैलानेका अभिप्राय करती, जिसका हाथ,
पैर बहुत ठण्डा रहता और ऊर्ध्वश्वास, द्विध्वश्वास वा
काककी भांति मुख विकृत हो करके श्वास निश्चलता,
उसका आयुः शेष हुआ समझ पड़ता है। निद्रा भङ्ग
न होने, सर्वदा जागरित रहने, कोई बात कहने पर
मोह लगने, नीचेका ओष्ठ लेहन करने, भारी डकार
उठने और प्रेतके माथ वात चलनेसे रोगीका मृत्यु आ
जाता है शरीर किसी प्रकारसे विषदूषित न होते भी
जिस रोगीके रोमकूपसे लह्न निकलता, तत्क्षणात् प्राण-
त्याग करता है। वाताढीला रोगमें अढीलाके ऊर्ध्व-
गामिनो हो हृदयमें आ जाने और उसमें घोर यन्त्रण
और अन्नमें अरुन्नि दिखानेसे मृत्यु निश्चित है। विना
किसी दूसरे उपद्रवके पाद नारीका गुह्यदेश अथवा मुख
सूज जानेसे भी रोगीकी गतायु समझते हैं। अतीमार,
ज्वर, हिका, वमी, अण्ड तथा नेत्रदेशकी स्फीतता आदि
उपद्रव होनेसे श्वासरोगी वा काशरोगीके जीनेकी आशा
करना वृथा है। अतिशय घर्म, दाह, हिका और श्वास

आदि उपद्रव उठ खड़े होनेसे बलवान् रोगी भो मर जाता है। जिस रोगीके चक्षुजलसे मुख भर जाता, दोनों पंरोसे अश्रित पसीना चला आता, चक्षु आकुलित दिखाता, जिमका शरीर जटात् बहुत ही हलका या भारी ही जाता या इनका वमन कीचड़, मद्धली, चखी, तेन य घो जैमाग धाता, वह रोगी अशय परलोक पहुचता है। मस्तकमें कपाल तरु जु भर आने, मङ्गल कामनासे प्रदत्त घाल काकप्रभृतिके न खाने और रतिगति एकवारगी ी घियड जानिसे मृत्यु, उप स्थित होनेमें कोइ सन्देह नहीं। जिस रोगीको ज्वर, अतीसार और सूजन तोनो धर दबाते अर जिमके मास तथा बलमें क्षीणता पाते, उमकी कभी भो चिकित्सा नही चलाते। शरीर अतिशय क्षीण होने पर रुचिकार, मिष्ट और हितकर अन्न इन द्वारा क्षुधा वा लक्षणा न मिटनेसे मृत्यु ही आमत्र समझना चाि ये। ग्रहणी, शिर शूल, कोटशूल, अतिशय पिपासा और बलहानि जिमकी एक ही साथ आतो, उमके बचनेकी कोई प्राया नहीं देवाती।

(सुश्रुत च ११ ५)

शरीरका जो अन्न स्वभावतः, जैमा होता, उमसे उलटा पडने पर मृत्युका लक्षण ठहरता है। शरीर गीरेसे काना तथा कानिसे गीरा पडने, रक्त प्रभृति वर्णाका अन्य प्रकार वर्ण लगने, स्थिरके अस्थिर, स्थूलके क्षुद्र, कृशके स्थूल दीर्घके खर्व, और खर्वके दीर्घ बनने अथवा कोई अन्न एकाएक ठगडा, उष्ण, सिग्ध, रुद्ध, विवर्ण वा अवसन्न पडनेसे थोडे दिनोंमें ही कालकवलित होती हैं। शरीरका कोई अन्न अपने स्थानसे खलित, उत् चिम, अवचिम, पतित, निर्गत, अन्तर्गत, गुरु वा लघु होना भो स्वभावके विपरीत है शरीरमें अश्मात् भूमी जैसे चकते पडने, मलाटको मभो गिराए भलकने, नाककी उण्डेमें फोडाफुगो उठने, मवेरे मलेसे पसीना निरलने, नेत्ररोग न रलते भी आसू चलने, मस्तकमें गोव जैमो धुलि उडने अथवा उम पर कवूतर, कडू आदि पक्षी गिरने, भोजन न करते भी मलमूत्र पडने वा भोजन करनेमें भी मलमूत्र न उतरने भ्रान्तमूल वक्ष स्थल वा हृदयमें अतिशय घटना उठने, किमी अन्नका मध्यस्थल स्कीत अथवा उभय पार्श्व कृश वा मध्यस्थल कृश तथा

उभयपार्श्व स्कीत पडने, अर्धाङ्गमें शीघ्र बटने, समस्त अङ्ग शुष्क पडने, स्वर नष्ट, होन, विकृत वा विकल लगने, दन्त, मुख, वा नख प्रभृति स्थानोंमें विवर्ण पुष्प जैसे चिह्न पडने कफ, पुरीष वा रेत जनमें भ्रमन रहने, ट्टिम डलमें भिन्न प्रकार विकृतरूप देख पडने, केश वा अङ्ग तेलाक्त जैसा लगने, अतीसार रोगमें अरुचि तथा दुर्बलता बटने, किण्ठके साथ पृथक् वमन करने, काशरोगमें लक्षणाके अभिभूत रहने, क्षीणता, वमन तथा अरुचि लगने, भ्रमस्वर तथा वेदनासे दबने, हाथ, पैर और सुह सुज उठने, क्षीण पडने वा रुचि हीन रहने, नाभि, स्कन्ध एव हस्तपद शिथिल पडने और ज्वर तथा काशसे अभिभूत रहने पर रोगीका जीना कठिन है। पूर्वाङ्गमें आहार करके अपराङ्गमें वमन करने और पाश्चात्यमें अस्तरम उत्पन्न न होते भी अतीसार जैसा मल निकलने, भूमि पर पतित हो बकरीकी तरह बोलने, क्षीण शिथिल, उपस्थ सङ्घटित तथा शीवा टूट पडने, नीचेका श्रोत्र दशन वा ऊपरका श्रोत्र मेहन करते रहने अथवा क्षीण वा कर्ण नीच रहने, देवता, हिज, गुरु, सुहृद् एव वैद्यकी बुरा समझने, पापघर्षके अधिकतर मन्द स्थानोंमें जा करके जन्मनक्षत्रको पीडित करने अथवा उल्ला वा वक्ष द्वारा अभिहित पडनेसे मनुष्य गतायु फलनाता है। स्त्री पुत्र, गृह, शयन, आसन, यान, वाहन और मणि रत्न प्रभृति गृहके उपकरण इव्यीका दुर्लक्षण प्रादुर्भाव होते भी आयु को शेष समझते हैं। बल और मासहीन रोगीकी चिकित्सा करते भी यदि रोग हडि होती, तो यह मरनेका ही लक्षण देख पडती है। जिमकी उखट पीडा एककालको छटात् निष्ठस हो जाती अथवा जिमके शरीरमें आहारकी कोई बात नहीं दिग्वाती, उमकी मीत शीघ्र ही आती है। (सुश्रुत च १२५०)

गतात्तं वा (स० स्त्री०) गत 'नर्तत आत्तं व रजो यमरा, वदमी०। १ हृदा स्त्री, यद् औरत जिमकी अवस्था पचाम वर्षसे अधिक की हो। वैद्यकशास्त्रके मतानुसार बारह वर्षसे ५० वर्ष तककी स्त्रियोंका मृत्यु या रजोदशन होता है। इसके बाद स्त्रीकी गतात्तं वा फलते है।

‘वा शां शरारादृश मायामानु चम लिख ।
मार्ति मारि ५५शरीर प्रकृत्य चाल व चरीतु ३’ (भाष्यभाष्य)

२ वंश्या स्त्री, वह स्त्री जिसे कोट मत्तान न होती हो।

गतायु (सं० त्रि०) १ गता विदितः अर्था यमः, ब्रह्मर्षी० ।
जिमका अर्थ मानूस हो गया हो, चरितार्थ । २ जिमका प्रयोजन निवृत्ति हो गया हो, जिसे अब किसी चीजकी मांग न रह गई हो।

गतासु (सं० त्रि०) गता अमवो यमः, ब्रह्मर्षी० । १ सत, मौत २ शव, सुर्दा।

“नतासु गतानं य नानुशोचन्ति पण्डिताः ।” (गीता)

३ गतायु, जिमकी आयु शेष हो गई हो।

गति (सं० स्त्री०) गम भाव ल्ङिन् । १ गमन, चाल।

“मथो ब्रह्म, मभुत् शोचो सत्त्वं बलि सं गतिः ।” (१७ ११४)

२ परिणाम, नतीजा । ३ ज्ञान, पहुँच । ४ प्रमाण,

सुव्रत । ५ मार्ग, राह । ६ स्थान, जगह । ७ स्वरूप, शक्त
८ विषय, बात । ९ यात्रा, सुमाफिरो । १० अभ्युपाय,
तद्वयोर । ११ नाड़ीव्रण, रगका जख्म । १२ सरणी ।
१३ कम फल । १४ दशा, हालत । १५ पाणिनिकृत कोट्टे
संज्ञा । पाणिनिके १।४।६० सूत्रसे ७५ सूत्र तक गति
संज्ञा निरूपित हुई है । १६ सुक्ति, मोक्ष । १७ मितार
आदि बजानेमें कुछ बोलोंका क्रमवदमिलान । १८ ग्रही-
की चाल जो तीन प्रकारकी होती है, शीघ्र, मन्द और
उच्च ।

१८ जैनमतानुसार—गतिनामकर्मके उदयसे जीव
की पर्याय विशेषकी गति कहते हैं। गतिके मुख्य चार
भेद हैं—नरकगति, तिर्यञ्चगति, मनुष्यगति और देव-
गति । (तत्त्वाव गव)

२० जीव जब दूसरा शरीर धारण करने जाता है,
तब उसकी विश्रह गति होती है। इसके चार भेद हैं—
ऋजु, पाणिमुक्ता, लाङ्गलिक और गोसूत ।

वतिक (सं० स्त्री०) १ गति, चाल । २ अवस्था, हालत ।
३ आयय, पनाह ।

गतिक्रिया (सं० स्त्री०) गमनक्रिया, जाना, चलना ।

गतितालिन् (सं० पु०) कार्तिकेयका एक सैन्य ।

गतिनामकर्म—जो कर्म जीवका आकार नारकी, तिर्यञ्च,
मनुष्य और देवकी सामान बनाता है, उसे गतिनामकर्म
कहते हैं । (अर्थप्रकाशिका २ अ० ११ सू०)

गतिवन्ध—जैनमतानुसार गतिनामकर्मका आकारके साथ
मिल जाना ।

गतिवन्धुल (सं० पु०) मृत्युमें एक प्रकारका अंगहार ।

गतिमार्ग गा—जैनमतानुसार जीवके स्वरूप वर्णन करने का
एक तरीका । गतिनामकर्मके उदयमें लोभवाली जीवकी
पर्यायकी गति कहते हैं। इसके चार भेद हैं—मनुष्य, देव,
तिर्यञ्च और नरक ।

गतिया (त्रि० पु०) तवन्ती

गतिना (सं० स्त्री०) १ वैतलता, धैर्य । २ नदीविशेष
३ परम्परा, मिलमिलिधार ।

गतिविधि (सं० पु०) गतिविधिः, इ-तत् । १ गतिविधान ।
२ मामान्य ज्ञान ।

गतिगति (सं० स्त्री०) गतिः गतिः, इ-तत् । गमनागमन-
की क्षमता, आन जानका गति ।

गतिमत्तम (सं० पु०) गतिर्वाधः म चामो मत्तमर्थे ति
कर्म धा० । परमेस्वर ।

“गतिव्य” ५०, तिगाका य गतिवृत्ति सञ्चमः । (विश्वम०)

गतोक (सं० त्रि०) गमन योग्य, जानिनायक ।

गत्ता (त्रि० पु०) कुट, कागजके फड़े परतीका बनाया
हुवा ।

गत्वन् (सं० त्रि०) गमनकर्त्ता, जानेवाला ।

गत्वर (सं० त्रि०) १ गमनशील, चलनेवाला ।
२ क्षणिक ।

गत्वरा (सं० स्त्री०) प्राचीन कालकी एक प्रकारकी
नाव । यह ८० हाथ लम्बी, १० हाथ चौड़ी और ८ हाथ
ऊँची होती थी और प्रायः मागरामें चला करती थी ।

गय (त्रि० पु०) १ पूजा, जमा । २ माल । ३ कुँड ।

गयना (त्रि० त्रि०) एक को दूसरेमें मिलाना । आपसमें
गूयना ।

गद (सं० पु०) १ रोग ।

“समाधुं कुरुते की नाम कानि गती यथा ।” (मघ २ सू०)

२ म घध्वनि, मेघका शब्द । ३ विष ४ कुठ,
कोढ़ । ५ श्रीकृष्णचन्द्रके छोटे भाई । इनके पिताका
नाम वासुदेव और रोहिणी माताका नाम था । ६ राम-
चन्द्रजीकी सेनाका एक घानर । ७ एक असुरका नाम ।
गदकारा (त्रि० पु०) गुलगुला, गुटगुटा ।

गदग—बस्वई प्रान्तके धारवाड जिलेका एक तालुका ।
यह अक्षा० १५ २ तथा १५ ३८ उ० और देशा० ७५

२६ एव ७५ ५७ पुंके बीच पडता है। इसका क्षेत्रफल ६६६ वर्गमील है। लोकसंख्या प्राय १३७५७३ निकलेगी। कण्ट पहाड़ बड़ा है। उसकी चिकनी मटो में सोना होता है। जलवायु सयत और स्वास्थ्यकर है। टम्बल तालाब भीचके लिये ६४०० हजार रुपये लगा करके बनाया गया है।

२ धारवाड जिलेके गद्गतालुक का हेड क्वार्टर। यह अक्षा० १५ २५'७" और देशा० ७५ ३८ पुंमें दक्षिण मराठा रेलवे पर अवस्थित है। लोकसंख्या कोई ३०६५२ है। १८५८ ई०को यहां अग्निमसपानिटी हुई। यहां कपास और सूती तथा रेशमी कपडोंका बड़ा काम है। सूत कातनेका एक पुतलोघर भी खुला है। गद्गमें विक्रेश्वर, सरस्वती, नारायण, सोमेश्वर और रामेश्वरके प्राचीन मन्दिर मन्दिरोंका धर्मभावशेष विद्यमान है। इसके शिलाफलक पढनेसे विदित होता कि गद्गकका पुराना नाम क्रतुक भा और वह (८.७३-११७०) चातुर्वर्ग्य, (११६१ ८३) कलसुरिया, (१०४७ १३१०) होयमल बल्लानों, (११७०-१३१०) देवगिरियादवों और (१३३६-१५६५ ई०) विजयनगर राजाओंके अधीन रहा। १६७३ ई०के समय गद्ग धारवाडमें बाकापुर सरकारके एक बड़े जिलेकी तरह मिलाया गया। १८१८ ई०को जनरल मुन्रोने इसको घेर लिया। शहरमें छोटे जजकी अदालत, अस्पताल और कई स्कूल हैं।

गद्गद (स० स्त्री०) गद्गद भाषण, पुनर्कृत बचन।
 गद्गचाम (हि० पु०) छाथीका एक रोग। इसके होनेसे घोट पर घाव हो जाता है।
 गद्गनकेरो—वोजापुर जिलेके अन्तर्गत कलादगीका एक छोटा ग्राम। यह कलादगीसे ८ मील पूर्व बागलकोट सड़क पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय चारसौ है। ग्रामके पास ही पहाड़ पर बहुतमो मसाजद है। जो मन्थप्या और लनके लहके मोनप्याकी कन्न कही जाती है। अनाहृष्टिके समय मनुष्य इस मसजिदमें या वर्षाके लिये धाराधन करते हैं।
 गद्गम (फा० पु०) नाव बंधनेके लिये एक प्रकारकी लकड़ी, थाम, पुस्ता।
 गद्गसुरि (म० पु०) खर रोगका शीघ्रविशेष। पारा, गन्धक, लौह, अभ्र, तास्त्र, हिङ्गुन और भीमक, इन सब

का सतभाग लेकर मिलाया चाहिये। दो रत्ती प्रतिदिन सेवन करनेसे सयज्वर नाश होता है। (१६८४०)
 गद्गसुरिदृच्छामिठी—शीघ्रविशेष। पारा, गन्धक, ताबा, हरिताल, विष, शूड, पीपल, मिर्च, हरीतकी, भामलकी, बड़ेडा, मोहाग, इनके समान भागमें लतना ही जयपाल टेकर भद्रराजके रसमें दो प्रहर तक पोसना चाहिये। इसके सेवन करनेसे सविषातादि समस्त रोग जाते रहते हैं।

गदयिन्तु (स० पु०) १ काम, इच्छा। २ गद्ग, भाषण। (त्रि०) ३ कामुक इच्छुक ४ वावदूक, मषी।
 गदराना (हि० वि०) १ परिपक्व होनेके निश्चय आना। २ जवानीम अर्थात् भरना। ३ आखमें कीचड़ पादि आना।
 गदरिया—युक्तप्रदेशका मेघपालक जातिविशेष। ये कई एक श्रेणियोंमें बंटे हैं। एक श्रेणीके मनुष्य दूसरी श्रेणीके साथ विवाहमें दान ग्रहण नहीं करते हैं। इस जातिकी विधवा स्त्रियां अपने देवरसे विवाह करती हैं। किन्तु च्येष्ट मृत कनिटकी विधवासे विवाह नहीं कर सकती। आधा और फरखावादके अन्वयमें इस जातिका वाम अधिक है।
 गदसिंह—एक सस्कृत ग्रन्थकार। इन्होंने अनेकार्यध्वनि-मञ्जरी नामक एक सस्कृत अभिधा, तत्त्वचन्द्रिका नामक किरातासुत्रीयटीका और स्वभाववैककी रचना की है।

गदला (फा० वि०) मटमैला, गन्दा।
 गदहपचीमी (हि० पु०) प्राय १६से २५ वर्ष तककी अवस्था। नोर्गाका विश्वास है कि इतने दिन मनुष्य पनुभवही रहते तथा उनकी बुद्धि अपरिपक्व रहती है।
 गदहपन (हि० स्त्री०) मूर्खता, बेवकूफी।
 गदहपूरना (हि० स्त्री०) एक प्रकारका पौधा जो देवके काममें आता है।
 गदहलोटा (हि० स्त्री०) कुम्भीका एक पत्र।
 गदहलोटा (हि० पु०) १ क्षान्ति दूर करनेके लिये तथा प्रसन्नताके लिये गदहका जमोन पर लोटा। २ गदहा लोटनेका स्थान। साधारणतः मनुष्योंका विश्वास है कि ऐसी जगह पर पाँव रखनेसे मनुष्य धक जाते और पादमें दर्द होने लगता है।

गदहहेचू (हिं० पु०) एक प्रकारका खेल । इसमें एक लड़का दूसरे लड़केकी चतुर्वाधर शेष लड़कोंको छूने के लिये कहता है । जिन लड़कोंका पता वह कह दे उन्हें "गदही" और जिन्हें न कह सके उन्हें "गदहा" कह कर पुकारते हैं । उसके बाद गदहे गदहियों पर चढ़कर एक जगहसे दूसरी जगह जाते हैं ।

गदहा (हिं० पु०) १ रोग हरनेवाला, वैद्य, चिकित्सक ।
२ गदंभ । गदंभ देखा ।

गदहिला (हिं० पु०) ईंट और सुरखीसे लटे हुवे गदहे ।
२ गोबरैलेकी तरहका एक विषैला कीड़ा ।

गदांवर (हिं० पु०) मेघ ।

गदा (सं० स्त्री०) गद-अच्-टाप् । लौहमय अस्त्रविशेष । इसमें लोहेका डंडा होता है और डंडेके सिर पर भारी लड्डू लगा रहता है । इसका डंडा पकड़कर लड्डूको ओरसे शत्रु पर प्रहार करते हैं । अस्त्रयुद्धमें गदायुद्ध ही अतिशय कठिन और योद्धाओंका वलसापेक्ष है । अग्निपुराणमें आहत, गोमूत्र, प्रभृत, कमलासन, ऊर्ध्वगात्र, नामित धामदक्षिण, आह्वत्त, परावृत्त, पदोद्धृत, अवप्लत, हंसमार्ग और विमार्ग इन कई प्रकारके गदायुद्धका उल्लेख है । महाभारतमें मण्डल, गतप्रत्यागत, अस्त्रयन्त्र, स्थान, परिमोक्ष, प्रहारवर्जन, परिधावन, अभिद्रवण, आक्षेप, अवस्थान, सविग्रह, परिवत, भंवत, अवप्लत, उपप्लत, उपन्यस्त और अपन्यस्त इन कई प्रकारोंके गदायुद्धके कौशलकी कथा वर्णित है । गदायुद्धमें निपुण महावली भीम और दुर्योधनने गदायुद्धसे स्वर्ग-मर्त्य-पातालवासियोंकी विस्मयापन्न कर दिया था । टीकाकार नीलकण्ठके मतसे युद्धकालमें शत्रुके चारो ओर घूम कर युद्ध करनेका नाम मण्डल है । जो कौशलसे शत्रुके निकट पहुंच कर फिर हठात् दूर भाग जाता है, उसको गतप्रत्यागत कहते हैं । शत्रुके कठिन मर्मदेशका आक्षेप कर ऊपरकी ओर उठाने या नीचे फेंकनेकी अस्त्रयन्त्र कहते हैं । आघात के उपयुक्त मर्मदेश अर्थात् कर्मस्थानमें आघात करनेकी स्थान कह कर उल्लेख किया है । अत्यन्त वेगसे घूमने फिरनेकी परिधावन, वेगसे शत्रुके समक्ष उपस्थित होनेकी अभिद्रवण, शत्रुके यत्नसे जो उसीके नाश करनेके कामकी आक्षेप, युद्धमें किसी तरहकी चंचलता प्रकाश नहीं करनेकी अवस्थान, शत्रुके पहुंचने पर

फिर भी उसके साथ युद्ध करनेकी सविग्रह, शत्रुके चारों ओर विचरण करनेकी परिवर्तन, शत्रुकी उधर उधर टलने न देनेकी भंवत, शत्रुके प्रहारसे अपनेकी बचानेके लिये अवनत होकर भाग जानकी अवप्लत, विपन्नके आघातसे रक्षा पानेके लिये पीछे हट जानकी उपप्लत, शत्रुके पास पहुंचकर गदा प्रहारकी उपन्यस्त और घूमकर हार्थामें शत्रुको मारनेका नाम अपन्यस्त है । (भाव शब्दप० १०० अध्यायकी नीलकण्ठ टीका देखी) देवताओंके बीच विष्णु भगवान् ही गदायुद्धमें अति निपुण हैं । वायुपुराणमें लिखा है कि गद नामका एक भयङ्कर असुर था जिसको अस्थि वज्रसे भी कठिन थी । गदासुर देवताओंके ऊपर बहुत अत्याचार किया करता था । अन्तमें ब्रह्माजीने उसके शरीरसे अस्थि ले ली और उसीसे विष्णुकी गदा बनाई गई । (वायुपुराण) = बुद्धितत्व, महत्तत्त्व, बहुधन ।

' नमस्तस्मात्क चक्रं बुद्धिस्तस्मात्क गदाम् । ' (विश्व०)

३ पाटलह्वत्त । ४ योगविशेष ।

गदाई (फा० स्त्री०) तुच्छ. नीच । २ रही ।

गदाक्षेत्र—विरजाक्षेत्रका दूसरा नाम । (वरजा और वाजपुर देखा ।

गदाख्य (सं० स्त्री०) गदा इत्याख्या यस्य, बहुव्री० । कौशली कौट ।

गदागद (सं० पु०) अश्वनीकुमार लिल, चलनेवाला ।

गदाग्रज (सं० पु०) गदस्य अग्रजः, ६-तत् ।
२ कृष्ण ।

गदाग्रणी (सं० पु०) गदस्य अग्रणी, ६-तत् । ज्वररोग ।

सभी रोगोंमें अष्ट होनेके कारण ज्वररोगका नाम गदाग्रणी पड़ा ।

गदाधर (सं० पु०) गदां धरति गदा-धृ-अच् । १ विष्णु ।

इन्होंने गदासुर नामक राक्षसकी हड्डियोंसे एक गदा बनाकर धारण की, इसीसे इनका नाम गदाधर पड़ा ।

गदा दक्षा । गदा विष्णुभगवान्को जिस तरह मिली वह वायुपुराणमें लिखा है—एक समय ब्रह्मपुत्र हेतिरक्षने

ब्रह्माकी आराधना की । ब्रह्मा उसकी कठिन तपस्यामें संतुष्ट हो कर उसको वर देनेके लिये उपस्थित हुए ।

हेतिरक्षने निवेदन किया—“प्रभो ! यदि इस अधम पर आपकी कृपा हुई तो मुझे यह वर दीजिये कि मैं

त्रिलोकमें अन्ध रहूं । देवास्त, असुरास्त या मनुष्यास्तसे मुझे किसी प्रकारका अनिष्ट न हो ।” ब्रह्माजीने इसे

स्वीकार कर लिया। इस वरको पाकर वह दुर्लभ
 हेतिसक मतवाना हो गया और घोड़े दिनके बाद इन्द्र-
 को भगा कर इन्द्रपुरी अपने अधिकारमें कर लिया। क्रमा-
 नुसार समस्त देवताओंकी पट्ट्युत कर भगाने लगा।
 हेतिसकके इस असह्य अत्याचारको देख कर समस्त
 देवगण विष्णुके निकट उपस्थित हुए और उन्होंने हेतिके
 भयङ्कर अत्याचारको बह सुनाया। विष्णु भगवान्ने उन
 पर दया दिखा कर कहा "यदि तुम लोग मुझे एक महाघ्न
 दो तो मैं हेतिका नाश शीघ्र कर डालूँ।" इस पर
 देवताओंने समयानुक्रम देख गदाधरकी वयसी कठिन
 प्रस्थिसे वनी हुई गदा विष्णु भगवानको अर्पण कर दी।
 विष्णुने गदाके दृढ आघातसे हेतिसकका विनाश कर
 डाला। यह गदा उन्हें बहुत अच्छी लगी इस लिये
 उन्हें ही इसे लौटा पर देवताओंकी नहीं दिया वर
 अपने हाथमें हो धारण कर लिया, तबहीसे इनका नाम
 गदाधर पड़ा। (गदाभाषा १५०) २ गया तीर्थ स्थित देव
 मूर्ति विद्येय। (त्रि०) ३ जो गदा धारण करता हो।
 कई एक सस्कृत ग्रन्थकारोंके नाम—

१ क्रियारूपद्रुम प्रणेता। २ यहयोगायुत-
 रण। (१६०) निमिष नामक सस्कृत ग्रन्थके रचयिता। ३ एक
 प्रकारके एक वाक्यकार। ४ एक धर्मशास्त्र सग्रह
 (१८१६०) के रचयिता। ५ हस्त
 रतम्यत्रोत्रके रचयिता। ६ भगवत्सखदीपिका नाम
 भक्तिशास्त्रके प्रणेता। ७ रसिकजोवन नामक सस्कृत
 अनहाारके रचयिता। ८ विवाहमिहान्तररहस्य नामक
 ज्योतिषग्रन्थ प्रणेता। ९ एक प्रसिद्ध तान्त्रिक। ये राध
 वेन्द्रके पुत्र और धीरमिहके पोत्र थे। इन्होंने तन्त्रप्रदीप
 नामक शारदातिलककी टीका की है। १० एक प्राचीन
 कवि।

गदाधरचक्रवर्ति—काश्यपशास्त्रके एक टीकाकार।
 गदाधरतर्काचार्य—रामतर्कान्हाारके पुत्र, देवीमाहात्म्य
 टीकाके रचयिता। गडोय ब्राह्मणोंके निर्दाय कुलपत्रिका
 नामक कुलग्रन्थमें एक नैयायिक गदाधर भट्टाचार्यका
 नाम पाया जाता है वे भी रामतर्कान्हाारके पुत्र होते हैं।
 ऐसी ज्ञानतर्में दोनों एक ही व्यक्ति हो तो असंभव नहीं।

गदाधरदाम—एक हिन्दी कवि, ब्रजभाषी प्रसिद्ध हिन्दी
 कवि कृष्णदासके गिष्णु और चम्पूभाचार्यके प्रशिष्य।
 गदाधर दीलित—एक प्राचीन वैदिक सूत्रभाष्यकार।
 इनके पिताका नाम वामन था। इनके वभाये हुए
 आश्वलायन गृह्यसूत्रभाष्य और पारस्करगृह्यसूत्रभाष्य
 पाये जाते हैं।

गदाधरनदी—ब्रह्मपुत्रको एक शाखा नदी। यह भूटान-
 की गिरिमालामें निकल कर जलपाईगोर्डा और ग्वान-
 पाडाओं पश्चिम और पूर्व द्वारमें विभक्त करती है। इसकी
 गति बड़ी ही परिवर्तनशील है। इसी लिये स्थान
 स्थान पर इसका नाम बदलता गया है। किसीके मतसे
 यह नदी उत्तरार्धमें सहोदर, ग्वानपाडामें गदाधर तथा
 इसके निम्नभागमें भी प्राचीन गर्भ गदाधर नामसे मय
 झर है। रामनाई नामकी इसकी एक शाखा है।
 गदाधरनाथ—एक प्राचीन कवि।

गदाधरपण्डित—चैतन्य ढंवरके एक प्रधान अन्तरङ्ग।
 चैतन्यभक्तगण इन्हें भी अष्टादशिसि देखते हैं।

गदाधरभट्ट—बान्दाप्रदेशके एक प्रसिद्ध हिन्दी कवि। इनके
 प्रपितामह मोहनभट्ट, पितामह पद्माकर और पिता मिष्टी
 नान ये तीनों कवि थे। किन्तु गदाधरने कविता लिख
 कर अपने पितामहसे उच्चामन लाभ विद्या था। ये राजा
 भवानीमिहके यहां रहते थे। अनहाारसन्दोदय इन्हीं-
 का बनाया है।

गदाधर भट्टाचार्य—सस्कृत अध्यापक और विख्यात नैया-
 यिक। ये चारन्द्रयोगेके ब्राह्मणवर्गीय पण्डित थे।
 इनके पिताका नाम जीवाचार्य रहा। ये पावना जिला-
 के अन्तर्गत लक्ष्मीचापडा नामक ग्राममें रहते थे। विद्या
 भ्याम करनेके लिये नवदोप चार नैयायिक हरिरामतर्क
 वागीशके विद्यालयमें न्यायशास्त्र अध्ययन किया था।
 गदाधरक शिक्षा समाप्त न होने पाई थी कि हरिराम
 की मृत्यु हो गई। हरिरामके ऐसा बौद्ध सुयोग्य पुत्र
 न था जो पाठशालामें विद्यार्थियोंकी पढा सकता।
 मृत्यु समय उन्होंने अपनी स्त्रीमें गदाधरकी को पाठशा-
 लामें नियुक्त करने कहा था। गदाधर पढानेमें प्रवृत्त
 हो गये। किन्तु छात्रगण उनमें पढ़नेमें अपनी चर्चिच्छा
 प्रगट कर दूसरी दूसरी पाठशालाओंमें अध्ययन करने
 लिये चले गये।

मतसे गद्य चार प्रकारका माना गया है—सुक्तक, वृत्त-गन्धि, उत्कलिकाप्राय और चूर्णक। समासरहित गद्य भागको सुक्तक कहते हैं। यथा—गुरुर्वचमि, पृथ-रुरसि, अर्जुनी यशमि इत्यादि। वृत्तगन्धि वह है जिसमें कहीं कहीं पद्यमा आभास ही। यथा—

“सगरकच्छुयमनिविहसुनदणकुण्णोत्तकोदणत्रिघ्नोदशानीयानि-तधेरिनगरः।”

दोर्घ समासयुक्त गद्यको उत्कलिका कहते हैं। चूर्णक वह है जिसमें छोटे छोटे मनास हों। यथा “गुप्तरदसागर जगदिकनागर कामिभोमदन जगर जग।”

छन्दोमञ्जरीके मतसे गद्य तीन प्रकारका है ता है—वृत्तक, उत्कलिकाप्राय और वृत्तगन्धि। कठोर अक्षर-शून्य अल्पसमासयुक्त गद्यको वृत्तक कहते हैं। यह यदर्भी गीतिसे रचा जाता है। कठोराक्षर और बहुत समासयुक्तको उत्कलिकाप्राय तथा वृत्तके एकदेशयुक्तको वृत्तगन्धि गद्य कहते हैं।

काव्यादर्शके मतसे पाठलक्षणरहित पठमसूत्रको गद्य कहते हैं गद्य काव्य प्रधानतः दो भागोंमें विभक्त है, कथा और आख्यायिका। काव्यदीप्ती।

३ संगीतमें शुद्ध रागका एक भेद। गद्याण (सं० पु०) परिमाणविशेष। भावप्रकाशके मतसे २ जीका एक गुञ्जा, ८ गुञ्जाका एक माप और ६ माप या ४८ गुञ्जाका एक गद्याण होता है।

गद्याणक (सं० पु०) गद्याण एव स्वार्थे कन्। १ गद्याण। २ लीलावती उक्त परिमाणविशेष। लीलावतीके मतसे २ जीका एक गुञ्जा, ३ गुञ्जाका एक मल्ल, ८ मल्लका एक धारण और २ धारणका एक गद्याणक होता है।

गद्याणक (सं० त्रि०) गद्यमें रंचा हुआ।

गढा—१ बम्बई प्रदेशके काठियावाड़में गोहेलवार प्रान्तके अन्तर्गत एक नगर। यहाकी जनसंख्या प्रायः छः हजार है। यहां फौजदारी अदालत, बालक और बालिकाओंके विद्यालय और एक आपधालय हैं। यहां सहजानन्द प्रतिष्ठित स्वामी नारायण-सम्प्रदायका एक प्रधान अड्डा है। इसी स्थानपर १८३० ई०में सहजानन्दका देहान्त हुआ था।

२ मिस्र प्रदेशके धर और पार्कर जिलाके अन्तर्गत

उमारकोट तालुकका एक नगर। यहां प्रायः दो हजार मनुष्य रहते हैं।

गधड़—बम्बईमें काठियावाड़के अन्तर्गत भावनगर राज्यका शहर। यह भावनगर शहरसे ४०-सोनेरी द्वीपपर अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ५३०५ है। हिन्दुधर्मप्रवर्तक सहजानन्द निमित्त स्वामिनागशरण सम्प्रदायका यह एक प्रधान केन्द्र है। यहां चन्दन लकडाका गुटिकाको माना यथेष्ट रूपसे बनाई जाना है। जिसे ठाक सम्प्रदायके अनुयायी पहचनते हैं।

गधानि—काठियावाड़के गोहेलवार प्रान्तके अन्तर्गत एक क्षुद्र राज्य। यह उज्जलवा रेल स्टेशनसे ३॥ कोस पश्चिममें अवस्थित है। लोकसंख्या १५३० है। इस राज्यकी आमदनी दस हजार रुपया है और उनमेंसे २००० रु० गायकवाड़ और जूनागढ़के नवाबको देना पड़ता है।

गधिदूभार—युक्त प्रदेशमें मुजफ्फरनगर जिल्लाके अन्तर्गत एक ग्राम। यहां दो हजारसे अधिक मनुष्य रहते हैं। जिनमें वलुचि सुमनमानकी संख्या अधिक है। यहां कईएक डेटेके घर, तीन मसजिद और प्रात्यक्षिक बाजार है। चोनी और नमकका अथवाय यहां अधिक होता है। इस ग्रामके चारों ओर सुन्दर लपवन है।

गधिया—दक्षिण काठियावाड़के अन्तर्गत एक क्षुद्र राज्य। इस राज्यके दो ग्राम दो मामन्तीके अधीन हैं। लोकसंख्या ५२८ है। वार्षिक आमदनी प्रायः ४५००, रु० की है उनमेंसे २८५, रु० गायकवाड़ और जूनागढ़के नवाबको देना पड़ता है।

गधीला (हिं० पु०) एक जंगली जात।

गधुल—काठियावाड़के गोहेलवार प्रान्तके अन्तर्गत एक क्षुद्र राज्य। धोला रेलपथसे २॥ कोस दूरमें अवस्थित है। लोकसंख्या ३६६ है। यह दो मामन्तराजाओंके अधीन है। यहांकी आमदनी तीन हजार रु० है और उनमेंसे १८६, रु० कर गायकवाड़ और जूनागढ़के नवाबको देना पड़ता है।

गधूल (सं० पु०) एक फूलका नाम।

गधका—काठियावाड़के हलार प्रान्तके अन्तर्गत एक छोटा राज्य। एक करद मामन्तके अधीन यहां छः ग्राम हैं। यह राजकोटसे पांच कोस पूर्वमें अवस्थित है। राज्यको

आय प्राय १००००) रु० है, जिनमेंसे दृष्टिग गवर्नमेंट-को ४६०) रु० और जुनागढकी नयायको २००) रु० कर देना पडता है।

गद्य (स० लि०) प्राय, जो पानिके योग्य हो।

गन (स० पु०) गण शब्द।

गनकेरुआ (हि० पु०) एक प्रकारका घास जो गाय भैंस-के चारेके काममें आती है।

गनकौर (स० स्त्री०) चौब शकल होतीया। इस दिन गणेश और गौरीकी पूजा होती है।

गनना (स० क्रि०) गिनती करना।

गनतङ्ग—पञ्जाब प्रदेशके चमहर विभागमें स्थित जुनावार और चीन साम्राज्यके मध्यवर्ती गिरिमड्डट। यह अक्षा० ३१° ३८ उ० और देशा० ७८ ४७ पु०में अवस्थित है। इसकी ऊचाई १०१२२८ फुट होगी। इसका सर्वोच्च स्थानसमूह बहुत दिन तक बर्फसे आच्छादित रहता है बर्फसे ठका रहनेके कारण यह पर्वत दूरारोहक है। यहां एक भी बृह उगम नहीं पाता है। गिरिमड्डट-से पर्वतशिखरकी ऊचाई १८२८५ फुट है।

गनिग—महिसुर राज्यस्थ जातिविशेष। यह तेल निकालते और बेचते है। इनमें कुछ लोग अपने परिचय साह वैश्य जमा देते है।

गनिमर्द—बम्बई प्रदेशके सम्यगाद्य उपविभागसे १० मील दक्षिण दिनेनन्दीहल्ली ग्रामके निकटस्थ एक पर्वत श्रेणी। यह समतलक्षेत्रसे ६०० फुट ऊची है।

गनियारो (हि० स्त्री०) पीधाविशेष। यह समीको तरह होता है। इसकी पत्तियां घबुलकी पत्तियोंसे चौड़ी होती है। इस पीधमें खेत पुय और फरैदिके बराबर छोटे छोटे फल होते है। इसको लकड़ी रगडनेसे आग उत्पन्न करता है। वैद्यकमें गनियारो कट, उष्ण, म्लि दीपक और वातनाशक मानो जाती है।

गनी (अ० पु०) धनी, धनवान्।

गनी—एक सुमनमान कवि। इनका असली नाम मिर्जा सुहभद्र ताहिर था, ये काश्मीरमें पैदा हुये थे। यह श्रेष्ठ सुहसिन फानोके छात्र रहे और अपने विद्याप्रभावसे एक सुकवि हो गये। इन्होंने अपने शुरुमें अधिक प्रतिष्ठा पायी थी। इनका बनाया 'दोमान गनी' नामक काव्य

अत्य बहुत अच्छा है १०७८ हिजरीको यह इहलोक छोड गये। कहते है कि दिल्लीके बादशाह आलमगोरने काश्मीरके शासनकर्ता सैफ खाको उन्हे अपने पास भेज देनेके लिये लिखा था। सैफ खाने जब यह सवाद सुनाया, वह जानेको अस्वीकृत हुये और कहने लगे—मन्दाट-फी कह टीजिये। एक गनो पागल हो गया है और उस भवस्थामें बादशाहके सामने जाने लायक नहीं। सैफ खा ने कदा, वह कैसे उन जैसे जानी व्यक्ति उन्मत्त कहते। इस पर उनहीने बातकी बातमें उन्मादग्रस्त हो करके अपने कपड़े फाड डाले और तीन दिन वाद मर गये।

गनीगार—महिसुर राज्यस्थ जातिविशेष। यह स्थलवस्त्र, टाट, बोरे आदि बुनते है। परन्तु बहुतसे गनीगार खेती करते और अपनेका ऊचा समझते है।

गनीम (अ० पु०) १ लुटेरा, डाकू। २ बँरो, शत्रु।

गनुटिया—वीरभूम जिलाके अन्तर्गत रामपुरहाट परगना का एक नगर। यह अक्षा० २३ ५२ उ० और देशा० ८७ ५० पु०में अवस्थित है। लोकसंख्या ४०७ है। पहले यहा रेगम बहुत तैयार किया जाता था। रेगम का व्यवसाय का अधिवासियोंका जोषनाधार था। १७८६ ई०को फ्रांस ह्राड साहबने रेगमके व्यवसायके लिये एक कोठी बनवाइ थी और इट इण्डिया कम्पनी का एजिण्ट होकर यहांमें अपने सुल्कमें प्रवृत्त रेगम रफतनी करते थे। आजकल इस नगरमें रेशमका धरापार नही होता है और फ्रांस ह्राड साहबकी बनवाई कोठी कलकत्ताके किसी अङ्गरेजन खरीद मो।

गनीमत (अ० पु०) लूटका माल, सुपूतका माल।
गनिल (हि० स्त्री०) एक प्रकारका घास जो ऊपर धानके काममें आती है।

गनोट—फाटियावाड जिलाके अन्तर्गत एक छोटा करट राज्य। यह उपनेटामे ८ मील दक्षिण—पश्चिम और भोगम पहाडोसे ६ मील उत्तर—पश्चिम भाद्र नदीके उत्तरीय तीर पर अवस्थित है। यह गोन्दल भांयादके अधीन है। यह एक बडा और सन्तुहिसाली शहर है। लोकसंख्या लगभग २२१० है।

गनोरिया (मै० स्त्री०) सूजाक।

गनीरो (हि० स्त्री०) नागरमोया।

गन्तव्य (स० स्त्री०) गमनीय, जाने योग्य, चलने लायक।

गन्ता (सं० त्रि०) गमनकर्ता, जानेवाला ।

गन्तु (सं० त्रि०) गम कर्त्तरि तुन् । १ पथिक, बटोही ।

२ गमनकर्ता, चलनेवाला । (पु०) ३ गमन. जानकी
२ क्रिया, यात्रा, प्रस्थान ।

गन्तृ (सं० त्रि०) गम शीलार्थं टन् । १ गमनशील,
चलनेवाला । २ प्राप्तिशील, पानेवाला । ३ गमन-
कर्ता, जानेवाला ।

गन्ती (सं० स्त्री०) १ वृषभहनीय शकट, बैलगाड़ी ।
२ गमनकारिणी स्त्री ।

“गन्तः वसुमतोनाशसुदधिदेवतामि च ।” (याज्ञवल्क्य १।१०)

गन्तीरथ (सं० पु०) गन्तीरथ इव यद्वा गन्तोणां गच्छ
न्तीनां स्त्रीणां गमनाय रथः, ६-तत् : शकट, गाड़ी ।

गन्दिका (सं० स्त्र०) नगरोविशेष, एक नगरका नाम ।

गन्दीकोट—मद्राज प्रेसिडेन्सिके कड़ापा जिलाका जम्बाल-
-मटगू तालुकका एक प्राचीन दुर्ग । यह अक्षा० १४°

४७ उ० और देशा० ७८° १६' पू० पर समुद्रतलसे १६७०
फुट ऊँचे पर्वतपर अवस्थित है । दुर्गके पास हीमें पेन्नर

नदी प्रवाहित है । कहा जाता है कि वीमनपालमें

कप नामक एक राजा थे । उन्होनि गन्दीकोट नामका

एक ग्राम स्थापित किया और उसी ग्राममें गन्दीकोट

नामक दुर्ग उन्हीका निर्माण किया हुआ है । विजय-

नगरके राजा हरिहरने इस किलामे एक मन्दिर बनवाया

था । पूर्व समयमें गोलकुण्डाके सुलतानने इस दुर्ग पर

आक्रमण किया था, किन्तु कड़ापाके पठान नवावने सुल-

तानको पराजित कर दुर्ग अपने अधिकारमें लाया ।

पठान नवाव फतेह नायक हैदरअलीके पिता उस समय

बहुत प्रसिद्ध हो गये थे । मरनेके बाद उनके लड़के

हैदरने किलाकी बहुत कुछ उन्नति की और उसमें अनेक

सैन्य रहने लगे थे । १७८१ ई०में कप्तान लिटलने

हैदरके लड़के टीपूको लड़ाईमें हराकर किला अधिकार

कर लिया था ।

गन्देवी—बरोदा राज्यके नवसारी प्रान्तमें इसी नामके

तालुकका प्रधान मंदर । यह अक्षा० २०° ४८' उ० और

देशा० ७३° २' पू० पर बम्बई, बरोदा और सेण्ट्रल
इण्डिया रेलवेके अलमसरसे ३ मील और सूरतसे २८ मील
दक्षिण-पूर्व अवस्थित है । लोकसंख्या लगभग ५८२७

होगी । यहां मजिस्ट्रेटको अदालत, अस्पताल, एक हाई-
स्कूल और बहुतसे देशी विद्यालय हैं । अनाज,
गुड़, वी और मिट्टीतैलका व्यापार यहां अधिक होता
है । यहां ताँतके उल्कृष्ट वस्त्र प्रसृत होते हैं ।

गन्ध (सं० पु०) घ्राणन्द्रियग्राह्य गुण, आम. महक, सुगन्ध
और सौरभ । प्राचीन आर्य दार्शनिकोंका मत है कि
केवल पृथ्वीमें ही गन्ध है और किमी पदार्थमें नहीं । उन
प्रकृति तथा दूरमे दूरमे पदार्थोंमें जो गन्ध मान्य पड़ता
है वह यथार्थमें उनका गन्ध नहीं, वरन उनके माय मिश्रित
पार्थिवांगका है । आधुनिक वैज्ञानिक जलमें गन्ध
वतलाने है । क्योंकि ऊँट बहुत दूरमे जलका गन्ध
पाता है । लमें यही उनका प्रधान प्रमाण है । उन-
का कहना है कि यदि जलमें गन्ध नहीं रहता तो ऊँट
बहुत दूरमे जलका अनुसरण करते हुए वहां तक पहुंच
न सकता । आधुनिक मत ठीक प्रतीत नहीं होता है ।
हम लोग विशुद्ध परिष्कृत जलमें किमी प्रकारका गन्ध
नहीं पाते हैं । निकटमें जलाशय होनेसे वायु भी शीतल
हो जाती है । जिस प्रकार वायु बहुदूरस्थित पदार्थ-
का गन्ध लेकर हम लोगोंको नासिकाके निकट आ जाती
और हम लोग उस पदार्थका गन्ध अनुभव कर सकते हैं ।
उसी प्रकार वायु जलके स्पर्शसे शीतल बहने लगती है ।
और तब हम लोग दूरस्थित जलाशयका होना अनुमान
कर सकते हैं । हम लोगोंके जैसे ऊँट भी वायुके द्वारा
दूरस्थित जल अनुभव कर उसीका अनुसरण करता जाता
है । यही प्रमाण ठीक मालूम पड़ता है । वैज्ञानिक
दर्शनके उपस्कारप्रणीत शङ्करमिश्रका मत है कि गन्ध
नित्य तथा अनित्य दो भागोंमें बांटा है । पृथ्वीमें जो
गन्ध है वही नित्य है उसका विनाश कभी नहीं होता
है । दृश्यक प्रकृतिके लिये पृथ्वीका गन्ध अनित्य है ।
यह पाक प्रकृतिके कारण यह विनष्ट हो जाता है ।

सुप्तावलीकार विश्वनाथके मतमें समस्त गन्ध अनित्य
है । वे नित्य गन्ध स्वीकार नहीं करते हैं । दार्शनिकों-
के मतसे यहां गन्ध फिर दो प्रकारका है, सुरभि और
असुरभि ।

महाभारतमें लिखा है कि गन्ध दश भागोंमें विभक्त है-

“इष्टयानिष्टगंधश्च मधुरोक्षः कटुसदा ।

निर्हारी सप्त विंशो बधो विशद एव च ।

एव बधविधौ च न परिषो न च इत्यतः" (भारत १४१० च०)

१ इष्ट, २ अनिट, ३ मधुर, ४ अम्ल, ५ कटु, ६ निर्हारी, ७ मधुत, ८ त्रिगुण, ९ रुच, १० विशद । इनमेंसे कस्तूरी प्रभृतिका गन्ध इष्ट, विष्टाटिका गन्ध अनिट, मधुयुक्त पुष्पादिका मधुर, मिर्चका कटु, चींगला निर्हारी, मिथितका चित्र, तप्त घृतका त्रिगुण, सरसो तेलका रुच, गालोतण्डुलका विशद और इमली प्रभृतिका गन्ध अम्ल माना गया है ।

कालिकापुराणके मतमें सुरभिगन्ध पाच भागमें विभक्त है—चूर्णीकृत, घृष्ट, दाहाकर्षित, सम्भटजरस और प्राणीके अद्रममुद्गररस । गन्धद्रवाके चूर्ण तथा गन्धपत्र वा पुष्पके चूर्णको सूणीकृत गन्ध कहते हैं । चन्दन, सरल और नर्मरुके घर्षणके लिये गन्ध एव अगुरु प्रभृति घर्षण द्वारा जिसका पद्व निर्गत करके देवताओंको अर्पण किया जाता है उसीको घृष्ट गन्ध कहते हैं । देवदारु, अगुरु, पद्म, गन्धमार और चन्दनप्रियाको सुवानेमें जो सुगन्धिरस निकलता है उसीका नाम दाहाकर्षित है । सुगन्ध करवीर विश्व, गन्धिनी एव तिलक प्रभृतिको कूट करके जो रस निकला जाता है वही सम्भटजगन्ध है । शृगानामि या उसके कोपने जो गन्ध उत्पन्न होता है उसको प्राण्डजगन्ध कहते हैं । यह स्वर्गवामिर्चिका अत्यन्त आमोदप्रद है । (कालिकापुराण ६८ च०)

तन्वभारका मत है कि मध्यमा, यनामिका और र्णगुणके अग्रभाग द्वारा देवताओंकी गन्ध देना उचित है । (बभ्रव ६४) ।

२ लेग, छोटार्ह, कण । ३ मन्थ्य । ४ गन्धक । ५ गध, चहदार, घर्मड । ६ मोभाष्वन, महिजन । (ति०) ७ गन्धयुक्त, जिसमें गन्ध हो । ८ प्रतिवेर्णो, पड़ोही । (क्री०) ९ कृष्णागुरु, काला अंगूर ।

गन्धक (स० पु०) गन्धोऽप्यस्य गन्ध-अच् तत् स्वार्थे कन् । १ गिध ह्य, गजनेका पेट । २ उपधातुविशेष, पाले रंगका धातु । पर्याय—गन्धाम्ना, मौगन्धिक, गन्धिक, गन्धिक, गन्धपाषाण, दाहाप्र, गन्धमोदन, पृतिगन्ध, अतिगन्ध, कीटप्र, गरभुमिज, गन्धी, यर, सुगन्ध, दिवा गन्ध, रसगन्धक, कुहाटि और कर्कशगन्ध है । वैद्यकके

मतमें इसका गुण—कटु उष्ण, तीव्र, अतिगन्ध अग्नि हृदिकर है । यह कृमि, ब्रीह्या और नेत्रोगनाशक माना गया है । (राजसूत्र)

भावप्रकाशमें गन्धककी उत्पत्तिके समयमें इस प्रकार लिखा है—किमी एक दिन देवी भगवती मन्तदोपमें क्रोडा कर रही थी । इसी समय उनका परिधिय वस्त्र आतं व रक्तमें रंग गया । पर्वतादिनी लज्जामें चञ्चल हो उस वस्त्रको परित्याग न कर धीरमनुद्गमे खान करने लगी । उस वस्त्रसे रज निरुत ऋषा और इसीमें गन्धकी उत्पत्ति हुई । गन्धक वर्णभेदमें चार प्रकारका है यथा—रक्त, पीत, श्वेत और कृष्णवर्ण । स्वर्णसंस्कार विषयमें रक्तवर्ण, रसायन नियामें पीतवर्ण और ब्रह्म आनेपन विषयमें श्वेतवर्ण गन्धक प्रशस्त है । कृष्णवर्ण गन्धक स्वर्णसंस्कारादिमें प्रशस्त है, किन्तु वह अद्भुत काम पाया जाता है । अशुद्ध गन्धक कुष्ठ, पिच्छरोग और भ्रान्तिजनक एव वीर्य, वल और रूपनाशक है । इस लिये गन्धक शोधन किये बिना प्रयोगमें नहीं लाना चाहिये ।

गन्धक शोधन प्रणाली—एक गोहर्निमत्त पात्रमें घृत देकर अग्निमें उत्तप्त करना चाहिये । घृतके गरम होने पर उसके समान परिमाणका गन्धकके षण्ठे उममें डाल देना चाहिये । जब गन्धक जल जाय तो उसे वस्त्रमें छाँक कर दुग्धमें मिला देना चाहिये एसा करनेमें गन्धक शोधित हो जाता है । शुद्ध या शोधित गन्धकके गुण—कटु, तिक्त, कषायरस, उष्णवैरी, पिच्छहृदिकर, सरगुण विगिष्ट, कटु, पाक, रसायन एव कण्टु (शुजन्तु), विमष, क्रिमि कुष्ठ, शय, ब्रीह्या, कफ और वायुनाशक है ।

(भारत २३० च०)

रसेन्द्राचार्य पहले मतमें गन्धकी शोधना प्रणाली—एक महीके बरतनेमें घृत और घृत रस पर वस्त्रके बरतनेका मुद्ग बांध दे और उसके ऊपरमें गन्धक रस एक टह नसे टाँक कर मस्यस्याग्निमें निप लगा दे । इस बाद उसे मिट्टीमें गाड़ कर ऊपरमें अल्प उत्ताप देने से गन्धक रस पर दूधमें टपकने लगता । इस विधि गन्धककी शोधना में प्रयोग करना चाहिये । विगुष्ट १५० । गु—रसायन, सुमधुर पात्रमें कटु और उष्ण है, तथा इसमें कुष्ठ

मतका खण्डन किया है। तन्मात्र शब्दमें विष, स विवरण देखो।

गन्धतुलसी (सं० स्त्री०) सुगन्ध तुलसी, गोलाप तुलसी।

गन्धतूर्य (सं० स्त्री०) गंधे हिंसास्थानि, युद्धोत्ते आहन्यमानं तूर्यं। रणवाद्यविशेष, लड़ाईकी तूरी, बाजा।

इसका पर्याय—रणतूर्य और महास्वन है।

गन्धलण (सं० स्त्री०) गन्धप्रधानं लणं मध्यपदलो०।

गन्धयुक्त लणविशेष, रसावास। इसके पर्याय—सुगन्ध, भूलण, सुरस, सुरभि और सुखवास है। इसके गुण—यह तिक्त, सुगन्धि, रसायन, स्निग्ध, मधुर, शीतल, कफ, पित्त और आन्तिनाशक है। (राजनि०)

गन्धतैल (सं० स्त्री०) गन्धयुक्तस्य चन्दनस्य अग्नियोगेन जन्तितं तैलं, मध्यपदलो०। १ गन्धयुक्त तैलविशेष।

इसको चन्दनका अंतर भी कहते हैं।

“प्रदीपैः काचनैस्तत्र गंधतैलावधीचिरेः।” (भारत ८। ६८ अ०)

२ सुश्रुतोक्त औषध और तैलविशेष। इसकी पाकप्रणाली इस तरह है—कृष्णतिलको रात्रिके समय जलमें डबा देना चाहिये एवं दिनमें सूर्यकी गर्मीसे सुखा कर गोदुग्धमें भावना देनी चाहिये। तीन रात्रि वा सात रात्रि इसी तरह करनेके बाद मधुमिश्रित जलमें भावना देते रहें। अनन्तर गोदुग्धकी भावनासे सुखा कर चूर्ण कर डालें और काकोल्यादिगण, यष्टिमधु, मञ्जिष्ठा, श्यामालता, कुड़धूना, जटामांसी, देवदारु, रक्तचन्दन और शतपुष्प इन सबका चूर्ण पूर्वोक्त तिलके चूर्णमें मिला दें। गुडत्वक्, इलाची, तेजपात, नागकेशर, कर्पूर, ककौल, अगुरु, कुङ्कुम और लवंगकी दुग्धमें पाक करें और उस दुग्धमें वह समस्त चूर्ण पाक कर तैल बाहर निकाल लें। उस तैलको फिरसे चतुर्गुण दुग्धमें पाक करें। इसके बाद इलायची, शालपर्णी, तेजपात, जीरक, तगरपादुका, लोध, शैलज, सैरेयक, शुष्क भूमिकुष्माण्ड, अनन्तमूल, मधुलिका और शृङ्गाटककी एकत्र पेपण कर उष्ण तैलके साथ थोड़े आगमें पाक करें। आक्षिप, पक्षाघात, तालुशोष, अर्द्धित, सामक, वायुरोग, शिरोरोग, कणशूल, हनुग्रह, वधिरता, तिमिररोग और क्षीणता इन समस्त रोगोंमें खाने, मर्दन करने, सूँघने और भोजनमें इस तैलका प्रयोग करनेसे उक्त रोग नष्ट हो जाते हैं। इसके सेवनसे शीवा, स्कंध और वल्लस्थलकी हडि होती है और मुख पद्मसा प्रफुल्ल और निश्वास सुगंध-

युक्त होता है। इसीका नाम गंधतैल है

(१ अ० नि० ४ अ०)

गन्धत्वर् (सं० स्त्री०) गंधप्रधाना त्वक् यस्य, बहुव्री० गंधद्रव्यविशेष, सुगंध वृक्षका छिन्नका, एतद्वायुक, एलवा।

गन्धदला (सं० स्त्री०) गन्धयुक्तं दलं यस्याः, बहुव्री० अजमोठा, अजवायनकी तरहका एक पेड़।

गन्धदारु (सं० स्त्री०) गन्धप्रधानं दारु। चन्दन

गन्धद्रव (सं० स्त्री०) गंधप्रधानं द्रवम्। १ नागकेशर। २ तैल पाक होने पर जिन द्रव्योंको डाल कर घोषधकी सुगंधित करते हैं, वैद्यकशास्त्रमें उन्हींको गंधद्रव कहते हैं। इलायची, चन्दन, कुङ्कुम, अगुरु, सुरा, ककौल, जटामांसी, श्रीवासच्छद, चोरम, कर्पूर, गैन्ज, उगीर, कस्तूरी, नखी, रोहिपल्लव, मोथा, एवं लवङ्गादि गंधद्रव कहलाते हैं।

गन्धद्रावक (सं० स्त्री०) गंधयुक्तं द्रावकं। स्त्रीहाटि रोगनाशक औषधविशेष, एक प्रकारका अर्क। इसकी प्रस्तुतप्रणाली यों है—गंधक तत्र तैल पठेताए परे जला कर उसका धूम सोते में जव वह कज्जलवर्ण हो जायित किया जाता है। शी जायगी। उसकी मात्रा एक इसके गुण—अग्निवीर्य, माषा और नमक एक माषा तक, शी अग्निद्विकार और रक्षा चाहिये। इसके सेवनसे तिग्रक हैं। रक्तस्त्राव, अतिशय है। औषध खानेदेनाज्वर और अग्निमान्द्यादि रोगोंमें यह विशेष उपकारी है। परिमितवान् द्रावक चौदह गुना जलमें मिला कर श्विन्दु सेवन करना चाहिये। यह अत्यन्त दाहकर होता है। विना जलके सेवन करना अहितकार है।

गन्धद्रावकको अंगरेजी भाषामें Sulphuric Acid या Oil of Vetirol कहते हैं। यह कभी कभी आग्नेय पर्वतके निकट अल्प परिमाणमें मिलता है। यह गंधक और सोरासे प्रस्तुत किया जाता है। इसकी प्रस्तुतप्रणाली अत्रियसंहितामें लिखी हुई प्रणालीसे बहुत सुच्छ मिलता जुलता है।

गन्धद्विप (सं० पु०) गंधप्रधानो लडगंधयुक्तो द्विपः मद्गंधयुक्त हस्ती, उल्क ए हाथी, अक्षर हाथी।

“गन्धद्विपस्य य मतस्रौषधः।” (विचारा १७।१८)

गन्धधारी (स० त्रि०) गन्धं ग धयुक्त द्रव्यं धारयति धारि णिनि । १ जो ग ध द्रव्यको धारण करता हो । (पु०) २ महादेव ।

‘अथ च बहुदपय ग धधारी क्व द्वादि ।’ (भारत चनु १० च०)

गन्धधूमज (स० पु०) ग धस्य ग धाद्यस्य धूमात् जायते ग धू धूम जन ड । स्वाद् नामक ग धद्रव्य । गन्धधूनि (स० स्त्री०) ग धयुक्तौ धूनिधूर्णौ यस्या, बहुव्री० । कस्तूरी ।

गन्धन (स० स्त्री०) ग ध ल्युट् । १ उन्माह, हिम्मत । २ प्रकाश, ज्योति, चमक । ३ हि सा, वध । ४ सूचन । ५ लक्षणमेव, ग धलण ।

‘वा गन्धन धनयो ।’ (काल, धातुपाठ)

गन्धनकुल (स० पु०) ग ध ग धप्रधानो नकुल इव । कुलन्दर ।

गन्धनाकुली (स० स्त्री०) ग धयुक्ता नाकुली । रास्त्रा विशेष, एक प्रकारका नकुलीकट । (Ophoxylon Serpentinum) इसका पर्याय—महासुगंधा, सुवहा, सपोनी, फणिहन्वी, अहिमुक्त, विषमर्दनिका, अस्त्रिमर्दनी, महाहिगंधा, नकुलाद्या और अस्त्रिलता है । यह तिक्त, कटु, उष्ण, त्रिदोषनाशक और विषघ्न माना गया है । (माधवशास्त्र) २ चर्मिका, चवरा नामकी दवा । ३ कन्द विशेष ।

गन्धनाम (स० पु०) ग धेति पदयुक्त नाम यस्या, बहुव्री० । रक्ततुलसी, लाल तुलसी ।

गन्धनामकर्म—जनमतानुसार वह कर्म जिमके उदयसे शर रमें सुगंध और दुर्गन्ध उत्पन्न हो । शुभगंधनामकर्मसे सुगंधित और अशुभगंधनामकर्मसे दुर्गन्धित शरीर हो जाता है । (महावैदिक)

गंधनाम्नी (स० स्त्री०) सुद्रोशगन्धिगंध, एक साधारण रोग ।

गन्धनान्तिका (स० स्त्री०) ग धसा ग धप्रधानम नान्तिका इव । नामिका, नाक ।

गंधनानी (स० स्त्री०) ग धसा नानीव । नामिका ।

गन्धनिनया (स० स्त्री०) ग धमर निनयो वामो यव, बहुव्री० । नयमंत्रिका, चर्मनीका फूल ।

गन्धनिशा (स० स्त्री०) ग धेन निशा हरिद्रा इव । ग ध पत्रा, गठीविशेष, कपूर कचूरी ।

गंधप (स० त्रि०) ग ध पिबति, ग धपा क । देवता-विशेष, एक देवताका नाम ।

शामासुरा ग धपा हृदिपाथ ।

गधा बहुधाय मनोविषया ॥” (भारत चनु० १० च०)

गन्धपत्र (स० स्त्री०) गन्धयुक्त पत्र । तेजपात । इसका गुण वातनाशक, शीतल और अस्त्रिद्रविकर है ।

‘न श्यादा सोरभे शेष ग धपत्र मनु सप्तम् ।

ग धपत्र वातहर शीतल अस्त्रिद्रव मम् ॥” (रघु)

(पु०) गन्धयुक्त पत्र यस्या, बहुव्री० । २ श्वेततुलसी । ३ मरुवककृष्ण, मरुवा । ४ ववर, बबूल । ५ नागरह, नारङ्गी । ६ विल्व, बेल ।

गन्धपत्रा (स० स्त्री०) गन्धयुक्त पत्र यस्या, बहुव्री० तत टाप् । गठीविशेष, कपूर कचूरी । इसका पर्याय—शूल, तिक्तकटिका, वनजा, शठिका, उन्मा, तवचीरी, एकपत्रिका, गंधपीता, पलाशान्ता, गन्ध्याद्या, गंधपत्रिका, दीर्घपत्रा, ग धनिशा, वेदमुख्या और सुपाकिनी ।

इसका गुण—कटु, स्वादु, तीक्ष्ण, उष्ण, वात, कास, ज्वरनाशक तथा पित्तकोपद्रविकर है । (राजनिषध)

गंधपत्रिका (स० स्त्री०) ग धपत्रा स ध्याया कन् टाप् । १ गंधपत्रा । २ अजमोदा । (राजनिषध)

गंधपत्री (स० स्त्री०) १ अश्वत्था, एक लता, पाट । २ अश्वगंधा, एक भांडी, असगंध । ३ अजमोदा ।

गंधपर्ण (स० स्त्री०) ग धयुक्त पर्णमस्य, बहुव्री० । ग धपत्र, काकपुष्प ।

गंधपर्णी (स० स्त्री०) सप्तपर्णी ।

गंधपलायिका (स० स्त्री०) ग धयुक्त पलायमस्या, बहुव्री० कप् टाप् । हरिद्रा, हन्दी ।

गंधपलायो (स० स्त्री०) ग धयुक्त पलाय यस्या, बहुव्री० । शठी, गंधपत्रा, कपूरकचूरी । शब्दाद्यचिन्तामणिके मतमें इसका गुण—कषाय, धाही, मधु, तिक्त, तीक्ष्ण, कटु, मलनाशक, काम, घण, श्वास, गुण और हृचिकीनाशक है ।

गंधधापाण (स० पु०) ग धयुक्त धापाण इव । उष धातुविशेष, ग धक ।

न धरशाचकर्म वरकारिक धिंतिम् ।

हिन्दनाम इत्यत्र कटुते संसृतेन च ।’ (शब्दार्थ सुद्धारा)

गन्धपिण्डोरः—गन्धवर्णिक

गन्धपिण्डोरः (सं० पु०) कण्ठासदनवृक्ष ।

गन्धपिण्डोरिका (सं० स्त्री०) गन्धेन पिण्डोचान् क्रिति दूरीकरोति यद्वा गन्धेन पिण्डोचान् कणाति तन्ति पिण्डोच-
कण्ड । धूप धूपगन्धसे पिण्डोचगण दुःस्मित लो कर भाग
जाते हैं । इस लिये धूपका नाम गन्धपिण्डोरिका पड़ा है ।

गन्धपीता (सं० स्त्री०) गन्धयुक्तं पोतं पत्रं यस्याः
बहुव्री० टाप् । १ शठीविशेष, कपूर कवरी । २ गन्धपत्रा ।
गन्धपुष्प (सं० पु०) गन्धयुक्तं पुष्पं यस्य, बहुव्री० ।
१ वेतसवृक्ष, वेतका पेड़ । २ अद्रोष्ठवृक्ष, अंकोल,
वृक्ष । (ली०) गन्धय पुष्पय, इतरतरवृक्ष । ५ गन्ध
और पुष्प ।

“यस्य गन्धपुष्पाणां क्व-लेन-वेतसः ।” (वाग्भट्टकृतम्)
६ गन्धयुक्तपुष्प, वह फूल जिसमें गन्ध हो ।

गन्धपुष्पक (सं० पु०) गन्धपुष्प संज्ञादे कन् । वेतस
वृक्ष, वेतका गाछ ।

गन्धपुष्पा (सं० स्त्री०) गन्धयुक्तं पुष्पं यस्याः,
बहुव्री० । १ नीलीवृक्ष, नीलका पेड़ । २ केतकीवृक्ष ।

३ गणिकारी वृक्ष, गनियारीका पेड़ ।
गन्धप्रिय (सं० त्रि०) गन्धः प्रियो यस्या, बहुव्री० । जिमकी
गन्ध अत्यन्त प्रिय हो ।

गन्धप्रियङ्गु (सं० स्त्री०) प्रियङ्गुलता, फूलफेन ।
गन्धप्रियङ्गुका (सं० स्त्री०) गन्धप्रधाना प्रियङ्गुका ।
प्रियङ्गुविशेष । प्रियङ्गु, डेली ।

गन्धफणिज्जम्क (सं० पु०) गन्धप्रधानः जणिज्जम्कः ।
रक्ततुलसीवृक्ष, लाल तुलसीका पेड़ ।

गन्धफल (सं० पु०) गन्धयुक्तं फलं यस्य, बहुव्री० । १
कपिल्यवृक्ष, कैयका पेड़ । २ विल्ववृक्ष, वेलका पेड़ ।
३ तेजःफलवृक्ष ।

गन्धफला (सं० स्त्री०) गन्धयुक्तं फलं यस्याः, बहुव्री०
टाप् । १ प्रियङ्गुवृक्ष । २ मेथिका, मेथी । ३ विटारी ।
४ शलकीवृक्ष, शलईका पेड़ ।

गन्धफली (सं० स्त्री०) १ चम्पाकी कली । २ प्रियङ्गु ।
गन्धवर्णिक (सं० पु०) गन्धस्य आसीदयुक्तं द्रव्यस्य वर्णिक,
इत्त् । वङ्गवामी जातिविशेष । इस जातिकी उत्पत्तिक

सम्बन्धमें बहुतोंका मतमें है । ये अपनेको वैश्यजाति-

के अन्तर्गत और चाँटसौदागरके वंशज मत्स्यताते हैं ।
कोई कोई पद्मपुराणोक्त गाङ्गराजकी भी इन लोगोंके
वंशका आदिपुरुष मानते हैं । प्राज्ञ कल्पके वैश्वकी नाई
ये यज्ञोपवीत धारण नहीं करते और शूद्रके जैसा मक
माम मृत अर्घौच मानते हैं ।

“यस्यहापु गन्धपुष्पाणां यस्याः गणिकी वर्णिकः ।
गन्धवर्णिकः पुंदिहवर्णिकः प्रकृतः ॥ १ ॥”
(इन्द्रवैशम्पतपुराण, १४४, १४५, १४६, १४७)

अर्थात्—अस्यष्टके अंगम और राजपूत-महिनाई
गर्भसे गन्धवर्णिकका जन्म है । गन्ध, चन्दन और धूप-
दिवा क्रय, और विक्रय इनकी उपजीविका है ।

प्रवाद है कि कुजाटामी कामराजकी सभामें रहती तथा
राजमदनमें फल, चन्दन प्रभृति विविध सुगन्धिद्रव्य संग्रह
करती थी । एक दिन जब श्रीकृष्णचन्द्रजी मयुरामें काम-
पुर जा रहे थे, मार्गमें ही उन्हें कुजाटामीमें भेंट हुई ।

श्रीकृष्णने उस टासीकी सुन्दर बना कर अपनी पटरानी
वना ली । कुजागर्भप्रसूत बालक की सवने पहने गन्ध-
द्रव्य विक्रय करने रहे तथा वेही गन्धवर्णिकके आदि
पिता ठहराये गये । इससे अतिरिक्त एक दूसरा प्रवाद है

कि देवादिदेव शिवजीकी दुर्गाके साथ विवाहके
समय गन्धद्रव्यका प्रयोजन पड़ा । इस लिये उन्होंने
पहिले अपने कपालसे “देय” गन्धवर्णिक, बगलसे
“शद्व” नामसे “आँउत” और पादसे “लतिग” इन चार

मनुष्योंकी सृष्टि की ।

गन्धवर्णिक जातियोंमें आँउतायम, इतिशान्दम, देशा-
यम और शङ्गायम येही चार नामधेय यज्ञो वर्तमान हैं ।
इनके गोत्र आलम्यान, भरद्वाज, काण्वप, कण्णात्रेय, मौप-

गन्ध, नृसिंह, राजश्रुषि, सावर्ण और शाण्डिल्य हैं । देशा-
यमी गन्धवर्णिकोंमें शाह, साधु, लाहा और खाँ एवं
आँउतायमीमें दत्त, दे, धर, धार, वर, नाग, प्रभृति पद-

कीकी सादी होती है । वर तथा कन्या पक्षवालेकी सांसा-
रिक्त अवस्थानुसार कन्यापण दिया जाता है । विक्रमपुरके
गन्धवर्णिक उच्चवंशके हैं । इस लिये नीच घरमें कन्याको

देनेसे वे अधिक रुपये लेते तथा पुत्रादिके विवाहमें अन्य
पण देते हैं । जब लड़का विवाह करने आता है तो उसे

देते हैं । जब लड़का विवाह करने आता है तो उसे

एक चम्पाह्वर पर बैठना पडता है और लट्ठोको एक चौकी या पीठी पर बैठा कर सात बार बरका प्रदक्षिण कराते है। जहा चम्पाह्वर नहीं रहता उहा उमगो डालो या उरकी तखता पर लडकेको बैठाते है। विवाहके समय पर कन्या दोनोकी लाल पाट जरद रगका वस्त्र पहनाया जाता है। लडकीको दशदिन पर्यन्त घर वस्त्र धारण करना पडता है। इन लोगोम दो या बहुविवाहको प्रथा प्रचलित नहीं है, किन्तु प्रथमा स्त्रीसे कौरे सन्तान न होने पर द्वितीय बार विवाह करनेमें किमो प्रथमकी वाधा नहीं है। विवाहव धनच्छद या विधवाविवाह पूर्णत निर्निषेध है। किमी स्त्रोके असतो वा परपुरुषगामी होने पर वह जाति और 'हिन्दु समाजके परिष्कार' को जाती एव उसका स्वामी उसकी स्मृति बनाकर दाहकार्य करते है और इनके लिये एक मिथ्या ग्राह भा होता है। इनके क्रियाकालापादि उच्चयोगिके हिन्दुके जैसे है। इन लोगोमें अधिमाय वेषण, शाक्त और अल्प सख्यक शैव देखे जाते है वेश्याओ पूर्णिमाने ये एक पातम सिन्दूर लगा कर उसके साथ खुमें दण्टी बटखुरा और हिसायकी बहो रत्नकर पीडगोपचारसे अपने अपने इष्ट देवतापूजन करते है। ग धेश्वरी इहोकी इष्टदेवी है। ब्राह्मणको बुलाकर ग धेश्वरी स्मृतीकी पूजा कराते है। धनिक प्रकारके मसाले, चन्दनादि द्रव्य और भिन्न भिन्न प्रकारके पात्रे और औषध विक्रय करना इनका प्रधान व्यवसाय है। अधोतविद्या नहीं होने पर भी ये कवि राजी औषधकी धर्मस्या दे सकते है। अल्प स्वल्प रोग होनेपर भी ये औषधका प्रयोग करते है। हिन्दुस्थानी भाषामें लोग इन्हें "पनसारी" कहा करते है। हर एक पनसारीकी दूकानमें प्राय चारभौ तरहके औषध रखे जाते है। ये लोग अपने ही हाथोंसे बहुत तरहके पाच नादि प्रसुत कर विक्रय करते है।

गन्धबन्धा (स० स्त्री०) ग धस्य वधो ग्रहण यथा, बहुव्री० टाप। नासिका, नाक।

गन्धबन्धु (स० पु०) ग ध वध्नाति व ध उण् यहा ग धस्य बन्धुरिय। आन्ध्रहच, आमका पेड। (चन्द्रबन्धु०)

गन्धबहुन (स० पु०) ग धो बहुलो बहुलोऽस्य, बहुव्री०। मितार्थक, उक्तपत्र सुद्रुतुनमी, श्वेताजपना।

गन्धबहुन (स० पु०) ग धो बहुलो यस्य, बहुव्री०। ग ध शालि, ग धयुक्त चावल।

गन्धबहुला (स० स्त्री०) ग धो बहुलो यस्या, बहुव्री० तत टाप। गोरकीहच, एक प्रकारकी भाडी।

गन्धभद्रा (स० स्त्री०) ग धो भद्र रोगनाशकी यस्या, बहुव्री०। प्रसारणीनताविशेष, ग धाली नता।

ग धमाण्ड (स० पु०) ग धस्य भाण्ड इय। गर्दभाण्डहच, अमडाका पे०। इसका पर्याय—नटिहच, ताम्रपाकी, फलपाकी, पोतक, ग धमुण्ड और चिप्रपाकी है।

(वैद्यकरवसाना)

गन्धभेदक (स० पु०) १ कटक, एक प्रकार नमक। २ काचक, फाला नमक। ३ लौह, लोहा। ४ तिलक, मिठातिल।

गन्धमासी (स० स्त्री०) ग धप्रधाना मासी। जटा मासीविशेष। A kind of Indian spikenard। यह देखनेमें धूसरवर्ण और केशर जटाके सदृश है। इसका पर्याय—केशी, भूतजटा, पिशाचो, पूतना, भूतकेशी, सोमगा, जटाला और लघुमासी है। इसका गुण तिक्त, श्रोतल, कफ, कण्ठरोग, रक्तपित्त, विष और ज्वरनाशक एव कान्तिप्रद है। जटालाकी देखो।

ग धमाट (स० स्त्री०) ग धस्य माता जननी, ६ तत्व। पृथ्या।

ग धमाटका (स० स्त्री०) ग धमातेति प्रसिद्ध वंशकद्रव्य, द्रव्यविशेष।

ग धमाद (स० पु०) १ श्रीरामचन्द्रजाकी सेनाका एक बन्दर। (भागवत ८। ११८) राम और रावणकी लडाईमें इन्होंने अपना युद्धकीशलका अक्षय परिचय दिया था। २ श्वकण्ठके औरससे गांधिनीके गर्भमें उत्पन्न भक्रूरका भाई। (भागवत ८। १५। १०) ३ भ्रमर, भौरा।

ग धमादन (स० पु० स्त्री०) ग धेन मादयति मट गिच् ल्यु। पर्वतविशेष। एक पहाडका नाम। ग ध मादन शब्दका प्रयोग प्राय पु लिङ्गमें ही देखा जाता है।

"तथैवापरेषु पूर्वेषु च भाग्यवदं च यथाऽशी गोमन्निषावते।

(भागवत ३। १। १२) किमी किसी स्थानमें स्त्रीयलिङ्गमें भी प्रयोग किया गया है। "वसु धोवर्षं भाव्यं न धवदं च धमादन। (ऋषा)

गोलाध्यायके मतमें ग धमादन पर्वत रोमकपत्तनके

उत्तर केतुमाल और इलाहवर्ष के मध्यमें अवस्थित है। यह पर्वत नील और निषध तक विस्तृत है। विष्णु-पुराणके मतमें यह सुमेरु पर्वतके दक्षिण भागमें अवस्थित है। इस पर्वतके ऊपर जम्बू नामका एक केतु-वृक्ष है। इसके पूर्वमें चैत्ररथ, दक्षिणमें गन्धमादन, पश्चिममें वैभ्राज और उत्तरमें नन्दन नामक चार मनो-हर उपवन हैं। देवगण इन्हीं उपवनोंमें आनन्दसे विचरण किया करते हैं। गन्धमादन किम्पुरुष, सिद्ध और चारणगणके आवासस्थान है। इस पर विद्याधर, विद्याधरी, किन्नर और किन्नरीगण सर्वदा विचरण करते हैं। (भारत वन १५८ प०)

विष्णुपुराणका मत है कि इस पर्वत पर महाभद्र नामका एक वृक्ष देवभोग्य सरोवर विद्यमान है।

“अरुणोद महाभद्रं सप्तोदं समासनम् ।

सरास्तेतानि चत्वारि देवभोग्यानि चर्षटा ॥” (विष्णुपुराण)

किन्तु सिद्धान्तशिरोमणिके “सरास्यर्षतेष्वरुणस्य मानसं महाभद्रं चैतज्जलं यथाक्रमं” इस वचनसे स्पष्ट है कि गन्धमादन पर्वत पर मानससरोवर है। एकही सरोवरके दो नाम रखे गये ऐसा स्वीकार कर विरोध भङ्गन करते हैं। मानससरोवर हिमालय पर्वतके उत्तर तिब्बतके मध्यमें अवस्थित है। मानस देखी।

२ गन्धमादन पर्वतस्थित एक वन। ३ गन्धमादन पर्वतनिवासी एक वानर, जिसने रामचन्द्रजीको लड़ाईमें सहायता दी थी।

“गन्धमादनवासी च प्रथितो गन्धमादनः ।” (भारत वन २ प०)

४ उड़ीशाके केउञ्जर राज्यके अन्तर्गत एक पहाड़। यह अक्षा० २१° ३८' १२" उ० और देशा० ८५° ३२' ५६" पू० पर अवस्थित है। इसकी ऊँचाई ३४२६ फुट है।

५ भ्रमर, भौरा। ६ गन्धक।

७ जैनमतानुसार सुमेरु पर्वतके आसपासके गजदन्त-पर्वतमेंसे एक।

गन्धमादिनी (सं० स्त्री०) गन्धेन माद्यतेऽनया गन्धमादि-णिनि। १ मदिरो शराव। २ वन्भारु। ३ चौड़ा नामक गन्धद्रव्य। ४ लाक्षा, लाह, लाख।

गन्धमादिनी (सं० स्त्री०) गन्धेन माद्यति गन्ध-मद

णिच् णिनि-डीप्। १ लाक्षा, लाह। २ भूरा नामक गन्धद्रव्य।

गन्धमाद्रिका (सं० स्त्री०) सुगन्धि द्रव्यविशेष।

गन्धमाद्री (सं० स्त्री०) सुगन्धि द्रव्यविशेष।

गन्धमार्जार (सं० पु०) गन्धप्रधानो मार्जारः। खटास, गन्धविलाव।

गन्धमार्जारवीर्य (सं० स्त्री०) गन्धमार्जारगुडीकृत कस्तूर्या। खटासी।

गन्धमालती (सं० स्त्री०) गन्धेन मालतीव। लताविशेष। इसका गुण गन्धकोकिल जैसा है।

“गन्धकोकिलया तुल्या विज्ञेया गन्धमालती।” (भाष्यप्रकाश)

गन्धमाला (सं० स्त्री०) क्षुद्ररोगमद, एक तरहकी माधारण बीमारी। गन्धगणो रक्षा।

गन्धमालिनी (सं० स्त्री०) १ गन्धमाला अस्तप्रस्थाः गन्धमाला इनि-डीप्। मुरा नामक गन्धद्रव्य।

२ जैनमतानुसार विदेहकेतकी नदियोंमेंसे एक नदी।

गन्धमाल्य (सं० स्त्री०) गन्धमाल्यश्च इतरितरदन्धः। गन्ध और माल्य।

“अथ यदि गन्धमाल्यलोकासी भवति सङ्ख्यादेशस्य गन्धमाल्ये समुद्रिष्ठतः।” (शान्दीया उप ८।१।६)

गन्धमासी (सं० स्त्री०) जटामांसी।

गन्धमित्र—अयोध्या नगरके एक राजा। इनके पिताका नाम विजयसेन और माताका नाम विजयवती था। इनके पिता साधु होते समय इनके बड़े भाई जयसेनको राज्य दे गये थे और इनको युवराज बना गये थे। गन्धमित्रने कर्मचारियों और प्रजावर्गोंको भड़का कर जयसेनको राज्य भ्रष्ट कर दिया था और खुद राजा बन गये थे। पीछे जयसेनने इन्हें फूलोंके साथ जहर सुँघा कर मार डाला था। (भारतवनाशकाकोष)

गन्धमुख (सं० स्त्री०) गन्धो मुखे यस्याः, बहुव्री०। १ कुकुन्दर। (त्रि०) २ जिसके मुँहमें गन्ध हो।

गन्धमुख (सं० पु०) गन्धं मुखयति निवारयति। लता-विशेष। गन्धिया भाँट। इसका पर्याय—नन्दीवृक्ष, ताम्र-पाकी, फलपाकी, पीतक, गर्दभागुड और क्षिप्रपाकी हैं।

गन्धमूल (सं० पु०) गन्धप्रधानं मूलं यस्य, बहुव्री०। कुलञ्जनवृक्ष, अदरककी तरहका एक पौधा।

गन्धमूलक (स० पु०) गन्धमूलएव गन्धमूल स्वार्थं कन्
 १ शठी, कपूरकचूरी । २ कच्छूर, कचूर ।
 गन्धमूला (स० स्त्री०) गन्धप्रधान मूल यस्य,
 बहुव्री० । १ शङ्खकी, शलई । २ शठी । (राजनि)
 गन्धमूलिका (स० स्त्री०) गन्धमूला कन् टाप् । १
 माकन्दी, एक प्रकारका साग । २ शठी, कपूरकचूरी ।
 गन्धमूषिक (स० पु०) गन्धप्रधानो मूषिक । कुकुन्दर ।
 गन्धमूषी (स० स्त्री०) गन्धप्रधाना मूषी । कुकुन्दर ।
 गन्धमृग (स० पु०) गन्धप्रधानो मृग । १ कस्तूरीमृग,
 बह मृग जिममें कस्तूरी पाई जाय । २ खड्गाय ।
 गन्धमृत्युष्य (स० पु०) कदम्बहृत् ।
 गन्धमैथुन (स० पु०) गन्धेन योनिगन्धयहृषेण मैथुन
 मैथुनारभो यस्य, बहुव्री० । छप, बैल ।
 गन्धमोजवाह (स० पु०) श्वफल्कके पुत्रका नाम ।
 गन्धमोदन (स० पु०) गन्धेन मोदयति श्राद्धादयति ।
 गन्धक ।
 गन्धमोदिनी (स० स्त्री०) १ चम्पकशनी । २ चम्पक
 पुष्पशली, चम्पा फूलकी कनी ।
 गन्धमोहिनी (स० स्त्री०) गन्धेन मोहयति मुहं णिच
 णिनि । चम्पककनिका, चम्पकी कनी ।
 गन्धयुक्ति (स० स्त्री०) गन्धानां गन्धद्रव्यानां युक्ति योग,
 इत्त् । गन्धद्रव्यका योगविशेष । इसके सेवन
 करनेसे शुक बाल छत्थ घण हो जाते हैं । ब्रह्मसंहितामें
 इसकी प्रस्तुत प्रणाली और गुण इस प्रकार वर्णित है—
 जिमके बाल सफेद हो जाते हैं, कपड़े और अलङ्कारादि
 उसे कुछ भी शोभा नहीं देते हैं । बालोंकी शोभासे
 मनुष्य सु दूर देख पड़ते हैं । यहाँ तक कि बालही मनुष्या-
 के मनोहर और शोभाकर अलङ्कार हैं । किन्तु मनुष्यके
 यह अनुपम अलङ्कार सर्वदाके लिये नहीं रहते, छोड़े
 हो दिनोंमें कई एक कारणोंसे सफेद हो कर मनुष्योंकी
 शोभाहान बना देते हैं इस लिये अन्न और भूषणादि
 को नाई बालोंको रक्षा करना एकान्त कर्तव्य है ।

निम्न लोहपात्रमें कीर्टी धानका चावल पाक
 करके लोहचूर्णके साथ पीपण करें । अच्छी तरह पोसने-
 के वा चम्प परिभाषामें शुक के शक ऊपर प्रलेप दें एव
 भिजे चुबे पत्रमे बाध रखें । दो प्रहरके पचात् उक्त प्रलेप

की अलग घरके मस्तकमें धावनेका लेप देकर पहनेके
 जैसा भिगे हुए पत्रसे फिर भी ढाँक दें । दो प्रहरके बाद
 लेपकी मिरसे अच्छी तरह धो डालें । ऐसा करनेसे
 उजने बाल काले हो जाते हैं । इसके पचात् सुगन्ध
 तैलादि लगा कर स्नान करें और मनोहर गन्ध तथा धूप
 द्वारा मस्तकको भली भाँति सुगन्धित कर ले जिससे
 इसमें किमो प्रकारकी दुर्गन्ध न रहे ।

चम्पकगन्धि तैल—मच्छिडा, व्याघ्रनख, नखी, दाल-
 चीनी, कुट, बोलनामक गन्धद्रव्य और चूर्ण इन सबकी
 तैलके साथ मिला कर धूपमें गरम करना पड़ता है ।
 इसीको चम्पकगन्धतैल कहते हैं ।

गन्धद्रव्य प्रस्तुत करनेका नियम—शिलारस वा सिद्धा,
 वाला और तगरका समान भाग मित्थित करने पर जो
 गन्धद्रव्य प्रस्तुत होता है उसीको कामोद्दीपक गन्ध कहते
 हैं । इस गन्धमें वराम, वकुल और हींगका धूप मिलाने
 से कटुक नामक द्रव्य बन जाता है । कटुकके साथ कुट
 मिलानेसे पद्म, पद्म गन्धके साथ चदन योग करनेसे
 चम्पक, चम्पक गन्धके साथ धनियाँ, जायफल और दाल-
 चीनी मिलानेसे अतिमुक्त नामक गन्धद्रव्य प्रस्तुत होता है ।

सुगन्धद्रव्य प्रस्तुत करनेकी प्रणाली—शतपुष्पा, कुन्दुकी
 चार भागोंका एक भाग, नखी और शिलारस अर्द्धभाग
 एव चदन और प्रियङ्गुके चौथाई भागकी गुठ और नखी
 साथ मिलाने पर एक प्रकारका सुगन्धद्रव्य तैयार होता
 है । इसके सिवा गुग्गुलु, वाला लाक्षा, मोथा, नखी
 और शर्करा इन सबकी बराबर मिलानेसे एक प्रकार-
 का धूप बन जाता है । जटामांभी, वाला, शिलारस,
 नखी और चदन द्वारा पिण्ड करनेसे भी धूप तैयार होता
 है । हरीतकी, शङ्ख, घनद्रव्य और वालाके बराबर बरा
 बर भागोंकी मिलानेसे एक प्रकारका धूप बन जाता तथा
 चर्ममें गुठ और उत्पल मिलानेसे दूसरे प्रकारका धूप
 तैयार होता है । दूसरे प्रकारके धूपोंके साथ शैलज और
 मोथा मित्थित करनेसे एक तीसरे प्रकारका धूप बन
 जाता है । इन तीनों प्रकारके द्रव्योंमें क्रमशः अन्तर्द्रव्य
 चौथाई भाग देनेसे एक उत्कृष्ट धूप तैयार होता है ।
 शर्करा, शैलज और मोथाके चार भाग, श्यामरस और
 सज दो भाग, नखी और गुग्गुलुके दो भागोंकी कर्पूर-

चूर्णके साथ मिला कर मधु द्वारा पिण्ड प्रसृत करनेमें कीपच्छट नामक धूप बनता है ।

दानचीनी और उगीरके पत्तियोंके साथ इसका अर्धपरिमाण छोटी इलायची मिला कर चूर्ण करें, इसके साथ अल्पपरिमाण गगनाभि और कर्पूर मिलानेमें यह धामर नामक अत्यन्त उत्कृष्ट गन्धचूर्ण तैयार होता है । इन (अक्षर), वाणा, गैलिय और कर्पूर, उगीर, नागपुष्प, प्याज नल और पिण्डशाक, अमुर, दमनक, नम और तगर धनियां, कपूर, चीर और चंदन इन चार चार पटाश्योंमें एक एक गण होता है, इनके समभागमें एक प्रकारका गन्धचूर्ण प्रसृत होता है । इनके प्रत्येक गणका ही नाम गन्धान्त है । यह गन्धान्त १५०-३०० भागोंमें विभक्त हो सकता है । समस्त गन्धान्तोंमें अर्धा, तगर और गिलारस मिलाना पड़ता है । इसे जाति, कर्पूर और गगनाभि द्वारा सुगंधित तथा मधु और नमों द्वारा धूपित करना होता है, इसीका नाम मधुसोमक है । इस मिश्रित पदार्थको जातिफल, गगनाभि और कर्पूर द्वारा सुगंधित कर आत्ममधु द्वारा मिला तथा दृष्ट्यानुसार चार भागोंमें बांटनेमें बहुत तरहके पारिजात युक्त गन्ध उत्पन्न होते हैं । इसमें मर्जरस और यौषामक मिला कर जितना परिमाण द्रव्य हो, उसमें उतनाही पारिजात वाला और दालचीनी मिला दें, इसके बाद उन समस्त द्रव्यों द्वारा स्नानजन प्रसृत कर लें ।

लोघ, उगीर, तगरपादुका, अमुर, मोघा, प्रियङ्गु, दन और पथ्या इन समस्त द्रव्योंकी नवकोष्ठ कच्छपुटमें तीन तीन द्रव्योंकी मन्थरूपमें उदार कर चन्दन और गिलारस दो भाग, अर्धपरिमाण शक्ति, सूचतुत्र भाग गन्त-पुष्पा, कटु, जिहूल और गुड टे कर धूपित करनेमें चीरामो प्रकारके केसरगन्ध प्रसृत होते हैं । परीतकी-चूर्णसंयुक्त गीसूदमें दन्तकाष्ठ ७ (टन भिंगा रवनेके वाट उसका गन्धजलमें निरूप करे । इलायची, दालचीनी, तेजपत्र, मधु, मिर्च, नागपुष्प और कुड़ इन समस्त द्रव्योंको मिलाकर निर्मल जलमें कुछ फाल तथा रवनेके वाट गन्धजल प्रसृत हो जाता है । इसके वाट जातिफल, तेजपत्र, इलायची और कर्पूरको यथाक्रम चार, दो, एक और तीन भागों द्वारा अवचूर्णित कर

एवं विधानों द्वारा ही पड़ता है । गन्धर्व अत्यन्त मधुन परनेमें मर्यादा अत्यन्त, जिनका चार गुण विधी कृति होती तथा चारों ही अन्तर्गत है, जिसका चार ही भाग है । (अक्षर) १००-१००० ।

गन्धयुक्ति (सं० अक्षर) अत्यन्तभागे १००-३००/१५१ एकत्र मिश्रण, जहाँ एक गन्धद्रव्यके मिश्रण है ।

गन्धर्व (सं० पु०) गन्धर्वकी रसांशुता, अत्यन्त (अक्षर) अत्यन्तविशेष, अत्यन्तभागे १००-३००/१५१ - चित्त, धाम, विपत्, मोघ, रस, के म विपत्सोम कर्पूर, उगीर, गगनाभि, अमोघक, मीठ, चार मधु, च १००-३००/१५१ - इतर तरङ्गक १००-३००/१५१ ।

गन्धर्व (सं० अक्षर) गन्धर्वकी रसांशुता, अत्यन्त (अक्षर) अत्यन्तविशेष, अत्यन्तभागे १००-३००/१५१ - चित्त, धाम, विपत्, मोघ, रस, के म विपत्सोम कर्पूर, उगीर, गगनाभि, अमोघक, मीठ, चार मधु, च १००-३००/१५१ - इतर तरङ्गक १००-३००/१५१ ।

गन्धर्व (सं० पु०) गन्धर्वकी रसांशुता, अत्यन्त (अक्षर) अत्यन्तविशेष, अत्यन्तभागे १००-३००/१५१ - चित्त, धाम, विपत्, मोघ, रस, के म विपत्सोम कर्पूर, उगीर, गगनाभि, अमोघक, मीठ, चार मधु, च १००-३००/१५१ - इतर तरङ्गक १००-३००/१५१ ।

गन्धर्व (सं० पु०) गन्धर्वकी रसांशुता, अत्यन्त (अक्षर) अत्यन्तविशेष, अत्यन्तभागे १००-३००/१५१ - चित्त, धाम, विपत्, मोघ, रस, के म विपत्सोम कर्पूर, उगीर, गगनाभि, अमोघक, मीठ, चार मधु, च १००-३००/१५१ - इतर तरङ्गक १००-३००/१५१ ।

गन्धर्व (सं० अक्षर) गन्धर्वकी रसांशुता, अत्यन्त (अक्षर) अत्यन्तविशेष, अत्यन्तभागे १००-३००/१५१ - चित्त, धाम, विपत्, मोघ, रस, के म विपत्सोम कर्पूर, उगीर, गगनाभि, अमोघक, मीठ, चार मधु, च १००-३००/१५१ - इतर तरङ्गक १००-३००/१५१ ।

गन्धर्व (सं० पु०) गन्धर्वकी रसांशुता, अत्यन्त (अक्षर) अत्यन्तविशेष, अत्यन्तभागे १००-३००/१५१ - चित्त, धाम, विपत्, मोघ, रस, के म विपत्सोम कर्पूर, उगीर, गगनाभि, अमोघक, मीठ, चार मधु, च १००-३००/१५१ - इतर तरङ्गक १००-३००/१५१ ।

गन्धर्व (सं० अक्षर) गन्धर्वकी रसांशुता, अत्यन्त (अक्षर) अत्यन्तविशेष, अत्यन्तभागे १००-३००/१५१ - चित्त, धाम, विपत्, मोघ, रस, के म विपत्सोम कर्पूर, उगीर, गगनाभि, अमोघक, मीठ, चार मधु, च १००-३००/१५१ - इतर तरङ्गक १००-३००/१५१ ।

गन्धर्व (सं० पु०) गन्धर्वकी रसांशुता, अत्यन्त (अक्षर) अत्यन्तविशेष, अत्यन्तभागे १००-३००/१५१ - चित्त, धाम, विपत्, मोघ, रस, के म विपत्सोम कर्पूर, उगीर, गगनाभि, अमोघक, मीठ, चार मधु, च १००-३००/१५१ - इतर तरङ्गक १००-३००/१५१ ।

गन्धर्व (सं० अक्षर) गन्धर्वकी रसांशुता, अत्यन्त (अक्षर) अत्यन्तविशेष, अत्यन्तभागे १००-३००/१५१ - चित्त, धाम, विपत्, मोघ, रस, के म विपत्सोम कर्पूर, उगीर, गगनाभि, अमोघक, मीठ, चार मधु, च १००-३००/१५१ - इतर तरङ्गक १००-३००/१५१ ।

गन्धर्व (सं० पु०) गन्धर्वकी रसांशुता, अत्यन्त (अक्षर) अत्यन्तविशेष, अत्यन्तभागे १००-३००/१५१ - चित्त, धाम, विपत्, मोघ, रस, के म विपत्सोम कर्पूर, उगीर, गगनाभि, अमोघक, मीठ, चार मधु, च १००-३००/१५१ - इतर तरङ्गक १००-३००/१५१ ।

प्राणीकी मृत्यु होने पर जब तक दूसरा शरीर प्राप्त नहीं होता है, तब तक वह एक सूक्ष्म शरीर धारण कर यातनाग्र अनुभव करते हैं, उनकी इस अवस्थाको अन्तराभवसत्त्व कहते हैं।

टोकाहार रमानाथके मतसे अन्तराभवसत्त्वका अर्थ शुभ प्राणी है। उन्होंने उदाहरण स्वरूप विराटपर्वका 'गन्धर्व गन्धर्व मन यह वाक्य उद्धृत किया है।

४ अह्वयिणीय, एक प्रकारका ग्रह, जो समय पाकर मनुष्यके शरीरमें प्रवेश कर अनेक तरहकी अशान्ति उत्पादन करता है। अर्थ चिकित्सक सुसुप्तता कथन है कि वयसत और आतुर रोगीको निगाचरोंके हाथसे रक्षा करनेके लिये सर्वदा यत्नगन् होवें। चाहे रोगी क्षत हो अथवा न हो किसी तरह अशुचि होनेसे ही ग्रहगण हि सामिलाप पूर्ण करने अवघा पूजा पानीकी भागसे रोगीके शरीरमें प्रवेश कर उसे अनेक तरहके कष्ट देते हैं। यथानियमसे उनकी पूजा अथवा उपयुक्त औषध नहीं देनेसे ये रोगीकी मार डालते हैं।

इस प्रकारके ग्रहोंकी संख्या बहुत है। किन्तु प्रधानत ये आठ भागोंमें विभक्त किये जा सकते हैं। यथा—देव, असुर, गन्धर्व, यक्ष, पित्र, रक्ष, भुजङ्ग और पिशाच। इनके आवेश होने पर रोगी भूत भविष्यत्का हाल मालूम कर सकता है। उस समय यदि रोगीसे भूत और भविष्यत्की घटना पूछी जाय तो यह साफ साफ कह देता है। उस समय रोगीकी सद्बिष्णुता विलुप्त हो जाती है। जो मनुष्य मनुष्य बुद्धिसे भ्रम्य है, वही भी उनसे बचने सम्भव नहीं हो सके उन्हे रोगी बनायाम ही अतुष्टान करके दशकी की विस्मयापन्न और आत्मीय स्वजनो की भयविह्वल तथा शोककातर बना देता है। आधुनिक वैज्ञानिक जो कुछ कहें जिन प्राचीन विद्वान इम प्रबन्धाकी भूत वा ग्रहावेग कहते एवं ग्रहपूजादि करके रोगीको प्रकृतित्य कर देते थे।

गन्धर्व ग्रहके आवेश होने पर रोगीका मन मटा छूट रहता और नशेतोर वा निर्जन वनमें भ्रमण करने की यथेष्ट अभिलाषा जनी रहती है। इस अवसरमें रोगी गन्धर्व, मान्य और शीत वस्तु पसन्द करना तथा वही मांगता और वही प्रगता है।

दर्पणमें छाया वा प्रतिबिम्ब, प्राणिके देहमें शीतोष्ण और सूर्यकिरण एवं देहमें जीव जिम प्रकार अन्वित हो कर प्रवेश हो जाते हैं, उन्ही प्रकार गन्धर्वग्रह भी अन्वित होकर मनुष्यके शरीरमें प्रवेश करता है।

इसकी शान्तिके लिये नियमित जप और होम प्रभृति दैवक्रियायें करनी चाहिये। रक्तवर्ण गन्धर्वाय, मधु, घृत अनेक प्रकारके खाद्य, वस्त्र, मद्य, मांस, रुधिर और दुग्ध प्रभृति प्रदान करना उचित है।

इतने करने पर भी यदि रोगीकी शान्ति न मिले तो औषध प्रयोग करना चाहिये। छागल, भालु, शयक और उम्बू इनके चमड़े और रोमकी हीड़क एवं क्षागमुत्रमें मिला कर धूम प्रयोग करनेसे वनवान् ग्रहसे रोगी छुटकारा पा सकता है।

गोमर्ष, नकुल, विडाल और भालुकका पित्त एकत्र कर गन्धर्वपिणीकी मूल, विरुट्ट आमलका और सरसों देकर भावित करें। इसके नम्र लेने और सेवन करनेसे ग्रहकी शान्ति होती है।

नटकरञ्ज, त्रिकटु, मोणा, वेनमूल, हरिद्रा और दारुहरिद्राकी एक साथ लेकर इसकी वस्ती बनावे। पित्तके सहयोगसे इसका अन्नन सेवन करनेसे ग्रहकी शान्ति होती है।

ये सब औषध या अन्य कोई चिकित्सा देवग्रहमें अयुक्तरूपसे प्रयोग नहीं करनी चाहिये। पिशाचके अतिरिक्त किसी दूसरे ग्रहमें कोई प्रतिकूल आचरण करना निषिद्ध है करनेसे ग्रह क्रोध होकर वैद्य और रोगी दोनों को ही नष्ट कर डालता है। (सुसुप्त उपा. ६०५)

गन्धर्वग्रहकी कथा बहुत उपन्यासमें भी वर्णित है। हृदयारण्यक उपनिषद्में लिखा है कि किसी समय बहुतसे मुनिकुमार अध्ययनके लिये मद्रदेशकी गये थे। विद्यामक लिये वे कपिगोत्रमश्व पतञ्जलके गृहमें जा पड़े थे। वहाँ उन्होंने उनकी नन्दिनेकी गन्धर्वग्रहके वशीभूत देवा।

'ननु चरका उपनिषत्तः प्रथमोऽध्यायः १०५, मन्मथोऽपि उच्यते मन्मथोऽपि' (उपनिषत्, १०५)

५ ऐरण्ड रेडी।

'गन्धर्वोऽपि उच्यते मन्मथोऽपि' (उपनिषत्, १०५) ६ देवयोनिविशेष, स्वर्गमायक। ये देवताकीयो

सभामें गान, वाद्य और नाट्याभिनय किया करते हैं। ये देखनेमें बहुत सुन्दर होते हैं। स्वर्गलोकमें इनके समान दूसरी कोई जाति रूपवती नहीं है। शब्दार्थ-चिन्तामणिके मतसे गन्धर्व दो भागोंमें विभक्त हैं—दिव्य और मर्त्य। जो मनुष्य इस कल्पके मध्य पुण्यवल्गसे गन्धर्वत्व प्राप्त होकर गन्धर्वसमाजभुक्त हुए हैं उन्हींको मर्त्य और जो इस कल्पके आदिसे गन्धर्व हैं उनको दिव्य गन्धर्व कहते हैं। ऋग्वेदमें भी दिव्यगन्धर्वका उल्लेख पाया जाता है।

“विद्यावत् रमि तत्रो यन्नात् दिव्यो गन्धर्वः” (ऋक् १०।१०२।५)

वज्रिपुराणके मतसे दिव्य गन्धर्व फिर ग्यारह भागोंमें विभक्त हैं—१ अम्बाज, २ अडारि, ३ रम्भारि, ४ सूर्यवर्चा, ५ कृधु, ६ हस्त, सुहस्त, ८ सूडवान, ९ महासला, १० विश्वावसु और ११ कृशाण। जटाधरने आठ प्रधान गन्धर्वके नाम उल्लेख कर गन्धर्व-वंशका परिचय दिया है। यथा—हाहा, हृह, चित्ररथ, हंस, विश्वावसु, गोमायु, तुम्बुरु और नन्दि। ये ही गन्धर्वनगरमें गण्यमान्य हैं तथा इन्हींके नाम पर एक एक वंश प्रतिष्ठित है। अथर्ववेदमें ६३३३ गन्धर्वोंका उल्लेख है।

मनुष्यके जैसे गन्धर्व भी दो त्रिणियोंमें विभक्त हैं—मौनिय और प्राथिय। सुनि और प्रधा नामके कल्प-ऋषिकी दो पत्नी थीं। दत्तकन्या सुनिके गर्भसे १६ गन्धर्व उत्पन्न हुए। यथा—१ भीमसेन, २ उग्रसेन, ३ सुपर्ण, ४ वरुण, ५ गोपति, ६ धृतराष्ट्र, ७ सूर्यवर्चा, ८ अर्कपर्ण, ९ पर्यन्ध, १० कलि, ११ प्रयुत, १२ भीम, १३ चित्ररथ, १४ सर्वविहङ्गी, १५ शालिग्रिरा और १६ नारद। इन्हींको मौनिय कहते हैं। प्रधाके गर्भसे १० गन्धर्व हुए—१ मिद, २ पूर्ण, ३ वर्ही, ४ पूर्णायु, ५ ब्रह्मचारी, ६ रतिगुण, ७ सुपर्ण ८ विश्वावसु, ९ भानु और १० चन्द्र। येही प्राथिय कलायी।

“धर्मो रां ससुपद्रा गन्धर्वोत्पत्त तत्तत्पत्नम्।

विष्णोः शत्रिरे वाचं गन्धर्वाने न ते विज।” (विष्णुपुराण १।५५०)

ब्रह्मासे तत्कृष्णात् गन्धर्वोंकी उत्पत्ति हुई। यह गो (वाक्य वा गीत) धमन अर्थात् उच्चारण वा गान करते करते जन्मे इस लिये यह गन्धर्व नामसे अभिहित हुए हैं। किसी किसीका मत है कि ब्रह्माकी कान्तिसे इस जातिकी उत्पत्ति हुई। ये रूप दान करते हैं।

हरिवंशके मतसे स्वरोच्चिप मन्वन्तरमें अरिष्टार्क गर्भसे गन्धर्वोंने जन्मग्रहण किया है। (हरिवंश ३ अध्याय)

विष्णुपुराणमें लिखा है कि गन्धर्वगण पाताल जा कर नागोंकी परास्त करके उनके धनरत्नादि वस्तुपूर्वक छीन ले आये। नागगणने विष्णुसे सहायता मांगी। विष्णु-भगवान्ने यह वाह स्वीकार किया कि वे पुरुकुत्सरूपसे उन लोगोंकी सहायता कर सकते हैं। नागने अपनी वहन नर्मदाकी विष्णुके निकट भेजा। नर्मदा पुरुकुत्सकी माय ले कर पाताल आई और पुरुकुत्समें पातालस्य गन्धर्वोंका विनाश हुआ।

(दिव्य) ७ गायक, जो गान कर करता हो।

८ रश्मिधारक, जो रश्मि या किरण धारण करता हो, चन्द्र, सूर्य प्रभृति। ९ क्षीपविशेष।

“नागशोभनया मौक्तो गन्धर्वस्य आरुणः।” (पट्टाण्डपुराण)

१० दिन, देवस। “तस्याहानीहम धर्माः गन्धर्वो गन्धर्व कृताः।”

(भागवत ४।२६।२१)

“मृदगवत्क गन्धर्वाः सुतमागधवन्दिमः।

गायन्ति कोत्तमशोभकरिणात् इत्यादि च ३” (भाग १।१।२०)

११ शरीराधिष्ठातृदेवताविशेष, शरीरके अधिष्ठातृ एक देवताका नाम। इन्हींने अविवाहिता कामिनोके स्वामिसम्भोगके पहले उसका कुछ विकामितयौवन उपभोग किया था। ऋग्वेदमें लिखा है कि रमणियोंकी पहले चन्द्रने उसके वाट गन्धर्वने और तब अग्निने उपभोग किया। इन्हींके उपभोग शेष होने पर मनुष्य-पतिने उन्हें ग्रहण किया।

“मोमः प्रथमो विविष्टे गन्धर्वो विविष्टे।

उत्तरः दशोद्योऽपिष्टोऽतिरुरोकी मनुष्यजाः।” (ऋक् १०।५५।२०)

१२ प्राणवायु। “पतङ्गो वाचं मनसा विमति तां गन्धर्वोऽस्यददः नर्से चतः।” (ऋक् १०।१७८।२)

“नां शब्दान् प्रावयतीति गन्धर्वः प्राणवायु” (सायण)

१३ महाभारतवर्णित भारतके उत्तरवासी जाति-विशेष। १४ श्वेतकरवीर, सफेद कर्नर। १५ श्वेत घेरण्ड, सफेद रेड्डी।

१६ जैनमतानुसार व्यन्तर देवोंके आठ कुल होते हैं,—किन्नर, किम्बुरुप, महोरग, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, भूत और पिशाच। ये गन्धर्वदेव तीर्थङ्करोंके जन्म-कल्याणमें नृत्य, वादिनादि कर आनन्दित होते हैं।

गन्धर्वखण्ड (स० स्त्री०) ग धर्व नामक खण्ड, मध्य-पदलो० । भारतवर्षके अन्तर्गत एक प्रदेश गन्धार ।

गन्धर्वगढ—बम्बई प्रदेशके वेलगाम् जिसेके अन्तर्गत एक उपविभाग । इस उपविभागमें वेलगाम्में प्राय २१ मील पश्चिम सद्दाद्रि पर्वतके पाश्चिमात्की समतल क्षेत्रमें ४०० फुट ऊँचे पर गधर्वगढ गिरिदुर्ग है । यह दुर्ग १००० फुट चौरस भूमिके ऊपर निर्मित है । यह १७२४ ई०की सायन्तवाहीके राजा फोन्द सामन्तकी द्वितीय पुत्र नागसामन्तसे बनाया गया है । १७७८ ई०में कोण्हापुरके राजाने ग धर्वगढको अपने अधिकारमें कर लिया, लेकिन १७८३ ई०में सिन्धियाराजकी सहायतासे गधर्वगढ फिर भी सामन्तवाडीके दखलमें आ गया । १७८७ ई०में नैसर्गी सर्टारने अपने स्वामी फोल्हापुर राजाके विरुद्ध युद्ध कर गधर्वगढ और डूमर डूमर स्थानों पर अपना दखल जमाया । किन्तु थोड़े समयके बाद ही राजाने सर्टारकी भगा कर गधर्वगढ अपने अधिकारमें लाया ।

गन्धर्वगृहीत (स० स्त्री०) ग धर्वण गृहीत, ६-तत् । जिसको ग धर्वने ग्रहण किया हो । ग धर्व गृहीत ।

गन्धर्वग्रह (स० पु०) गरोरप्रवेशकारी उपदेवविग्रह, एक प्रकारका ग्रह जो भूत प्रेतकी नाई, मनुष्यकेय रीरमें प्रवेश कर जाता है । ग धर्व देखा ।

गन्धर्वतीर्थ (स० पु०) तीर्थ विग्रह, एक तीर्थका नाम । (भारत गन्धर्व ८५०)

गन्धर्वतैल (स० स्त्री०) एरण्डकतैल । रंडोका तैल । गन्धर्वदत्त—पटनाके एक प्राचीन राजा, ये जैनमतानुयायी था ।

गन्धर्वदत्ता—जैनमतानुसार रत्नदीपके मनुजोदय नगरके राजा गरुडवैशिकी पुत्री । यह दि०जैनधर्ममें अचल यथा रखती थी । एक दिन वह जिनन्दकी पूजा करके फूलों का हार पिताके पास लाई । उसे वीचनवती देव कर गरुडवैशिका बड़ी चिन्ता हुई । विपुलमति नामक चारणमुनिसे मालूम हुआ कि, भारतदेशमें हेमाद्रद देगके राजाके पुत्रसे इसका धीणा स्वयम्बरमें विवाह होगा । इस पर जिनदत्त नामके एक बैठने भरतजितमें इस स्वयम्बरका आयोजन किया । स्वयम्बरमें गधर्व-

दत्ताने बीणा बजानेमें रुब राजकुमारी की पराजित कर दिया । आखिर सत्यधरके पुत्र जीवनधरकी वारी आई । इन्होंने उसे पराजित कर दिया । इस पर काठाङ्गारके पुत्रोंने ईर्ष्यासे गन्धर्वदत्ताकी हरण करनेका उद्यम किया । जीवनधर कुमारकी खबर लगी ही इन्होंने गधर्वगङ्गा (गन्धर्वजातके हाथी) पर सवार हो कर उन दुष्टों के उद्यमको नष्ट भ्रष्ट कर दिया । कुमारकी वीरताकी देख कर गन्धर्वदत्ता तो फूलों न समाई । सुरत ही विवाह हो गया, और दोनों सुखसे रहने लगे । (शोचनर ६५॥)

(उत्तरपुराण १११ १४)

२ जैनों के २३ वें तीर्थंकर निमानाथके भाई धासुदेवकी एक पत्नी ।

गन्धर्वनगर (स० स्त्री०) गधर्ववाणी नगर, ६-तत् । १ गगन मण्डलमें उदित अनिष्टसूचक पुरविग्रह । गधर्वनगर ।

२ मानससरोवरका निकटवर्ती एक नगर । गधर्वगण इसकी देखभाल करते हैं, इस भिये यह गधर्वनगरसे अभिहित है । महाभारतमें लिखा है । क-महापराक्रमयानी अर्जुनने गधर्वरक्षित गधर्वनगरकी जय कर तत्पि, कन्याप और मण्डुक नामके अश्वरत्न प्राप्त किये थे । (भारत २१७ अ० ५५)

३ विजयपर्वतकी उत्तर ओष्ठीका एक नगर । ४ सिन्ध्या भ्रम, ससारकी उपमा गधर्वनगरसे दी जाती है ।

गधर्वभूषण (स० स्त्री०) सिन्दूर । गधर्वराज-रागरत्नाकर नामक सख्त सङ्गोतप्रत्युपणीता । गन्धर्वलोक (स० पु०) गन्धर्ववाणी लोक आवासस्थान, ६-तत् । शुद्धक लोकके ऊपर और विद्याधर लोकके नीचे अवस्थित एक स्थान । इस स्थान पर देवगायक गधर्वगण वास करते हैं । काशीखण्डका मत है कि जो गीतशास्त्राभिन्न गान करके राजाका धी धुय कर सकते एव धन लोभसे मोहित हो कर धनशाली मानवगणको गान द्वारा सुगत करके जो वस्त्र प्रभृति उनसे दान पाते हैं उन्हें वे ब्राह्मणोंकी देते हैं और गानमें जिनकी अतिगय प्रीति है एव नाट्यशास्त्रमें भी विग्रह पारदर्शिता हैं, वे ही गधर्वलोककी प्राप्त कर परम सुखमें कालयापन करते हैं । (भाषावर्ण)

गन्धर्व वधू (सं० स्त्री०) गन्धवस्य वधूरिव । १ शठी,
कपूर कचूरी । २ चौड़ा नामक गन्धद्रव्य ।

गन्धर्वविद्या (सं० स्त्री०) गन्धर्वाणां विद्या, ६-तत् ।
सङ्गीत, गानविद्या ।

गन्धर्वविवाह (सं० पु०) गन्धर्वमतानुसारी विवाहः
-सध्यपटलो० । आठ प्रकारके विवाहोंके अन्तर्गत एक
प्रकारका विवाह । कन्या और वरके अभिप्रायसे प्रतिज्ञा-
पाशमें बद्ध हो कर जो विवाह होता है उसीको गन्धर्व-
विवाह कहते हैं । गन्धर्व देखो,

गन्धर्ववेद (सं० पु०) गन्धर्वाणां वेदः, ६-तत् । सङ्गीतके
मूलग्रन्थ सामवेदके उप-वेदविशेष । श्रौतकीर्त चरण-
व्यूहके मतसे आयुर्वेद गन्धर्ववेदका उपवेद, यजुर्वेद-
का धनुर्वेद, सामवेदका गन्धर्ववेद और अथर्वका
उपवेद शस्त्र शास्त्र हैं ।

गन्धर्वशाका (सं० स्त्री०) भार्गी गुल्म ।

गन्धर्वसेन—हिन्दीके एक कवि । इनकी कविताका निद
श्रन नीचे देते हैं—

‘दिवी तुमकी विरधि षटल राजां वधपति विक्रमरेग ।
राज समाजसों जगन करी लोभों ध्रुव गह इरण शेष ॥
तोसों तुहा और न हो भुव सखन रुध ।
सकल विद्या गुणनिधान दाता विधसों काटस अग कसेश ।
गन्धर्वसेन प्रभु ऐसो दर दुःख भञ्जन ।
शक्रवंध रथों करतार ह्यो सुरेश ॥’

गन्धर्वसेना—पटनाके राजा गन्धर्वदत्तको पुत्री । यह
गायनविद्यामें बड़ी ही निपुणा थी । इनके गाने और
वीणा वजानके सामने बड़े बड़े गायक हार मानते थे ।
इनकी प्रतिज्ञा थी कि, “जो वीणा वजानमें मुझ परास्त
कर देगा, उसीके साथ मैं विवाह करूंगी।” न इनकी
कौड़े जीत सका और न व्याह ही हुआ । महलके ऊप-
रसे अचानक पैर फिसल जानेसे इनकी मृत्यु हुई थी ।

(भारगधनाकघाश्रीय)

गन्धर्वहस्त (सं० पु०) गन्धर्वस्य मृगविशेषस्य हस्तः
तुल्यत्वमस्य, बहुब्र० । एरण्डवृक्ष, रेंडीका पेड़ ।

गन्धर्वहस्तक (सं० पु०) गन्धर्वस्य हस्तः पाद इव पत्र-
मस्य स्वार्थे कन् । हे क्लारका लवण उत्पन्न होता है ।
है कि इससे एक प्रदो रूप पैकिल-कोयल ।

गन्धर्वा (सं० स्त्री०) क

गन्धर्वा (सं० स्त्री०) गन्धर्व जातित्वात् डीप् । १ गन्धर्व
जातीय स्त्री । गन्धर्वाणां पत्नी गन्धर्व-डीप् । २ गन्धर्व-
की पत्नी, गन्धर्वकी विवाहिता स्त्री । ३ सुरभीकी पत्नी ।
४ अश्वजातीय जननी, घोड़े सर्गीनी माता ।

गन्धलता (सं० स्त्री०) गन्धयुक्ता लता, प्रियङ्गु ।

गन्धलोतुपा (सं० स्त्री०) गन्धेन लोतुपा, ३-तत् । मधु-
मक्षिका, मधुमक्खी ।

गन्धवत् (सं० त्रि०) गंधो ण्यते इय गंध-सतुप् मस्य
वः । गन्धयुक्त, जिसमें सङ्ग हो ।

“गन्धवदकधिनन्दनोपिता।” (रघु०)

गन्धवती (सं० स्त्री०) गन्धवत्-डीप् । १ घृष्टवी । २
मत्स्यगन्धा, व्यासकी माता, इनका दुमरा नाम सत्यवती
है । महाभारतमें लिखा है कि जानिकनी कन्या मत्स्य-
गन्धा अपने पिताके आदेशसे यात्रियोंको नौका द्वारा नदी
पार करती थी । एक दिन जब पराशर मुनि पार हो रहे
थे तो वे उस कन्याको देख कर मोहित हो उठे एवं
मत्स्यगन्धाके शरीरकी दुर्गन्धकी न सन्दकर उसे सुगन्धयुक्ता
बना दिया । उसी दिनसे इसका नाम गन्धवती पड़ा है ।
(भागवत १.११.५०) ३ सुरा, शराब, मदिरा । ४ नवसल्लिका,
चमेलीका फूल । ५ सुरा नामक गन्धद्रव्य । ६ वायुपुरी,
यह वरुणपुरीके उत्तरभागमें अवस्थित है ।

“इमां गन्धवती रमां पुरीं वायोविंशतः ५०

वारुणा चत्तरे भारी मष्टाभागाग्निषे विज ॥” (काश० १.१५०)

७ गङ्गा ।

“गङ्गा गन्धवती गीरे गन्धर्वनगरपिथा ।” (काश० २.२।४६)

८ पुरी जिलाके अन्तर्गत पुण्यजेल भुवनेश्वरके निकट
प्रवाहित एक जुद्ध नदी । इस नदीके बहुत स्थानोंमें जल
नहीं रहता है, सब समय मनुष्य पैदल पार होते
हैं । पहले इसकी चौड़ाई बहुत अधिक थी । नदीके
गर्भ पर हिन्दूराज निर्मित अठारहनालाओंके भग्नावशेष
आज भी देखे जाते हैं । छोटी होने पर भी यह नदी
हिन्दुओंके पवित्र तीर्थमें गण्य है । एकास्त्रपुराणमें लिखा
है ।

“पुरासी भगवान् रुद्री चैवश्री भूःभावन ।

भूतानाथ देवाचार्य चक्रे गन्धवतीं नदीम् ॥...

सर्वज्ञटगिरे, पृष्ठे सन्निदिधा बनानती ।

प्रच्छन्नरुविषी गङ्गा शिरोपासगतनृपरा ॥”

दक्षिणारण साम्ना धैराजान् परेतान्।

नायां गन्धवती ख्याता याति नष्टा हरिहरा ॥ १० ५०।

स्वय भगवान् रुद्रने भूतगणैको मङ्गल विधानके लिये मन् पापहारिणी कीति प्रदायिनी प्रच्छ्वरूपिणी गन्धवती नामकी गङ्गाकी स्वर्णकृतमें उत्पादन किया था।

कपिलसहिताका मत है कि रुद्रके जटाकलापमें भ्रम माणा गङ्गाकी भगीरथ लाये थे। वही भ्रममाणा विकीटि कुलतारिणी गङ्गासे हिमालय आदिगङ्गाको नि सारित किया, मुनिगण उस आदि गङ्गाकी ही गन्धवती कहते हैं। वही ग धवती स्वर्ण कृटाचलमें प्रवाहित होती है।

“गटाकलापे रुद्रस्य भ्रमणाया महावया।

गौता भगीरथेन गङ्गा वैलीक्यापवती ॥ ४८ ॥

तां धैर्यमथो हिमवान् रुद्रस्य ॥ विप्रमकरो ॥

अथा गङ्गा सिद्धमानु विनाशिकुलतारिणीम्।

पुष्पां य धवतीनाया सुगोपी ब्रह्मर्षि न ॥ ५० ॥

(कपिलसहिता १० ५०)

शिवपुराणके मतसे दक्षिणमद्रमुके निकट विन्ध्य पादसे यह ग धवती नदी निकली है।

“श्रीमदुल्कनके सने ऽधिपायवसन्निधो।

वि घागनेहर्षात्वा न्यात्वे पूषामिनो ॥

मनिघदुःखस्यो ना नद्यां ग धवती च्युता ॥ (उषरवृक्ष ५६ ५०)

ग धवधू (म० स्त्री०) ग धयुक्ता वधूरिव । १ गठी, कपूर कचूरी । २ चौडा नामक गधद्रव्य।

गन्धयन्तु (म० पु०) ग धस्य वन्धुरिव । आम्बहृत्, ग्राम का पेड।

गन्धयल्कन (म० स्त्री०) गंधो वल्कनोऽस्य, बहुव्री० । लक्, दालचीनी ।

गन्धयस्त्री (म० स्त्री०) ग धयुक्ता वस्त्री । नताविशेष, सहदेवी ।

गन्धवल्ली (म० स्त्री०) १ धवत्रीऽपी ।

गन्धयह (म० पु०) गंधं ग धयुक्तं पार्थिवं वा वहति यह-अच् । १ वायु, हवा ।

“निम्बपिपासायवहं हृषिम् । (कुशार)

(वि०) २ ग धयुक्तं नायकविशेष ।

“मवात्मा य धवतेन पुनिता ॥ (मेघधरचित)

३ ग धघारी, जिसमें गंध हो ।

“वाकायां विद्वानां यव य धवति ॥ (मनु० १०६)

४ कस्तूरीमृग, वह मृग जिसकी नाभिसे कस्तूरी निकलती हो ।

गन्धवहल (म० पु०) ग ध वहति वह बाहुलकात् धलच् यद्वा ग धो वहनो यस्य, बहुव्री० । १ मितार्जक वृक्ष, खै ताजवला । २ खै ततुलसी, सफेद तुलसी ।

गन्धवह्ना (म० स्त्री०) ग ध गुणविशेष वहति ष्टहाति वह अच्-टाप् । १ नासिका, नाक । २ भुवनेश्वरके निकट प्रवाहित गधवती नदीका नामानार । ३ धवती श्लो ।

गन्धवहुल (म० स्त्री०) गन्धो बहुलो यस्य, बहुव्री० । १ एक प्रकारका ग धद्रव्य, शीतल चीनोके हृत्का एक मद्र, ककौल । २ ग धशालि सुगंधित धान ।

गन्धवहुला (म० स्त्री०) ग धो बहुनो यस्या, बहुव्री० । गोरक्षीका पेड। यह मालवदेशमें बहुल पाया जाता है।

गन्धवाक्चुची (म० स्त्री०) लताकस्तूरी ।

गन्धवारि (म० स्त्री०) ग धद्रव्यवासित वारि । सुगंधि द्रव्यवामित जल, गुलाब जल ।

गन्धवाह (म० पु०) वायु, हवा ।

“प्रसंख्यमशावशाप वन्धवाह ॥ (गीतारवि द)

२ कस्तूरीमृग ।

गन्धवाही (म० स्त्री०) गन्धवाह डीप, नासिका, नाक ।

गन्धविह्वल (म० पु०) ग धेन विह्वलयति विह्वल णिच-अच् । गोधूम, गेहू ।

गन्धवीजा (म० स्त्री०) गंधो बीजे यस्या, बहुव्री० ततो टाप् । १ कुलिञ्जनवृक्ष, अदरककी तरहका एक पौधा । २ मेथिका, मेथी ।

गन्धवीरा (म० स्त्री०) गन्धकीवृक्ष, गन्धका पेड ।

गन्धवृत्तक (म० पु०) गन्धप्रधानो वृत्त स प्रायां कन् ।

गानवृत्त, गानका पेड ।

गन्धवैधिका (म० स्त्री०) अन्तःसूरी, मृगनाभि ।

गन्धवेष्ट (म० पु०) ग ध वेष्टयति स्वर्गधेन परगन्धमा ह्णोति । धूनक, मानका गंध, धूना ।

गन्धव्याकुल (म० पु० स्त्री०) गंधेन व्याकुलयति, विधा कुल णिच्-अच् । एक प्रकारका सुगन्धद्रव्य, अक्षौल ।

गन्धगठो (म० स्त्री०) गन्धप्रधाना गठो गन्धपार्थिव-वत् मध्यपदलो० । गठी, कपूर कचूरी ।

गन्धशाक (म० स्त्री०) गन्धप्रधानं शाकण्यवत्

मध्यपदलो०। गौर सुवर्णशक । चित्रकूटके अञ्चलमें यह शाक बहुत पाया जाता है ।

गन्धशालि (सं० पु०) गन्धप्रधानः शालिः । धान्य-विशेष, सुगन्धि शालिधान्य, वासफुल धान । इसका पर्याय—कल्याण, गन्धालु, उत्तमोत्तम, सुगन्धि, गन्ध-बहुल, सुरभि, गन्धतण्डुल और सुगन्धिशालि है । इसका गुण—मधुर, बलकारी, पित्त और अमनाशक, स्नायु-विट्हाहनिवारक, अल्पवातनिवारक एवं अल्पपरिमाण काफ तथा बलवृद्धिकर तथा गर्भको स्थिर रखनेवाला है ।

(राजनि०)

गन्धशण्डिनी (सं० स्त्री०) गन्धयुक्तः शुग्णोऽस्त्यस्याः । कुण्डर ।

गन्धशेखर (सं० पु०) गन्धः शेखरे शिरोदेशेऽस्त्यस्य, बहुव्री० । कस्तूरी ।

गन्धसम्भवा (सं० स्त्री०) सुगन्धशालि ।

गन्धसार (सं० पु०) गन्धं गन्धयुक्तं सारः स्थिरांशो यस्य, बहुव्री० । १ चन्दनवृक्ष २ सुन्दरवृक्ष, मोगरा विला । ३ शठी कचूर ।

गन्धसारण (सं० पु०) गन्धं सारयति ष्ट् णिच् ल्यु । १ वृहन्नखी नामक गन्धद्रव्य । २ सुन्दरवृक्ष ।

गन्धसूची (सं० स्त्री०) १ आम्रातक, आमड़ा । २ कुण्डर ।

गन्धसेवि (सं० स्त्री०) रोहीषलण, अगिया घास ।

गन्धसोम (सं० स्त्री०) गन्धार्थं सोमश्चन्द्रो यस्य, बहुव्री० । कुमुद, श्वेतकमल ।

गन्धहस्तिमहाभाष्य-तत्त्वार्थसूत्र पर स्वामी समन्तभद्राचार्य विरचित भाष्य । आजकल यह उपलब्ध नहीं है । कहते हैं आजतक जितनी टीकायें तत्त्वार्थसूत्र पर मिली हैं उन सबमें यह ही बड़ी और विस्तृत है । इसकी श्लोक संख्या ८४ हजार है, इसका केवल मङ्गलाचरण ११४ श्लोकोंका मिलता है जिसकी आसामीमांसा कहते हैं ।

आसामीमांसा अपने ढंगका निराला ही ग्रन्थ है । इसके ग्रन्थके श्लोकमें न्यायकी शैलीसे सत्यार्थ देवको मीमांसाकी गई है । इसीके ऊपर श्रीमद्भद्रकालकदेव की अष्टशती नामक टीका है और उसके ऊपर स्याद्वाद-विद्यापति विद्यानंदस्वामीका अष्टसहस्रो नामक विवरण है ।

इन टी ग्रन्थोंके पढ़नेसे जो गन्धहस्तिमहाभाष्यकी सुरता और अर्थगंभीरता जानी जा सकती है ।

इस ग्रन्थकी दूढ़नेके लिये जैन लोग बहुतमा परिश्रम कर रहे हैं । अनेक तो इसके केवल दर्शन करा देनेवाले-को ५००, सौ रुपये तकका पुरस्कार देनेका वचन कहते हैं । मंत्राभट्ट देखो ।

गन्धहस्ती (सं० पु०) गन्धयुक्तो मदगन्धयुक्तो मत्तो हस्ती । मत्तहस्ती, मतवाला दाधी ।

“गन्धहस्तोऽयं दूधं प ।” (रामायण ५।८।१२६)

२ वीहस्तूपविशेष । यह बोधगयामे आध कोम टलिणपूर्वमें लीलाजन नदीके पूर्व तट वर्तमान वाकार नामक स्थान पर अवस्थित है ।

गन्धहारिका (सं० स्त्री०) गन्धं हरतीति ह-गन्तुल्-क-ततष्टाप अत इत्वञ्च । शिल्पनिपुणा, वह स्त्री जो दूसरोंके घर जा कर काम करती हो ।

गन्धा (सं० स्त्री०) गन्धयति गन्धं वितरति, गन्ध-णिच्-अच्-टाप् । १ चम्पककली, चम्पा । २ शठी, कपूर कचूरी । ३ शालपर्णी । ४ गन्धयुक्ता स्त्री । ५ वनतुलसी । ६ कुण्डर । ७ अजमोदा । ८ वंशलीचन ।

गन्धालु (सं० पु०) गन्धयुक्त आलुः । कुण्डर ।

गन्धाजीव (सं० पु०) गन्धेन गन्धद्रव्येन आजीवति, आ-जीव-अच् । गन्धवणिक ।

गन्धाब्ज (सं० स्त्री०) १ गन्धेन आब्जं । जवाटि नामक गन्धद्रव्य । २ चन्दन । (त्रि०) ३ गन्धयुक्त, जिसमें गन्ध ही । (पु०) ४ नारङ्गकवच, नारङ्गीका पेड़ । ५ वकुल पुष्प, मौलसरीका फूल ।

गन्धाब्जा (सं० स्त्री०) गन्धेन आब्जा, ३-तत् । १ गन्ध-पत्रा । २ स्वर्णयुथी, जूहीका फूल । ३ तरुणीपुष्प, घोकुवार, ग्वारपाठा । ४ आरामशीतला । ५ गन्धाली, प्रमारणी, गन्धपसार । ६ मूरा नामक गन्धद्रव्य । ७ शतपत्री । गुलाबका फूल । ८ सुगन्धशाल । ९ नीबू । १० गन्धपत्र ।

गन्धादि (सं० स्त्री०) लणकेशर ।

गन्धाधिक (सं० स्त्री०) गन्धोऽधिको यस्य, बहुव्री० । लण कुङ्कुम, लणकेशर ।

गन्धाधिवास (सं० पु०) गन्धेव गन्धद्रव्येण अधिवासः,

३ तत् । आभ्युदयिक प्रभृति कर्मिणं चन्दन और पुष्प
मास्य प्रभृति ग धद्रव्योर्मिं जो अधिवास किया जाता है
उसीका नाम ग घाधिवास है ।

गन्धानी (स० पु०) सुगन्धशाल ।

गघान (स० पु०) गन्धशाल, वह धान जिसमें अच्छी
ग घ हो ।

गन्धान्ता (स० स्त्री०) ग धयुक्तोऽन्तो रमो यस्या
बहुव्री० । वनवीजपत्रक, एक प्रकारकी नीबूका पेट ।

गन्धार (स० पु०) १ द्रियविशेष । नावार देश ।

‘ अश्लोः वि धुवीरोरा ग धारापथकासया ।’

(भारत भूषण १८ पं०)

२ गन्धारदेशके राजा ।

गन्धारि (स० पु०) ग ध ऋच्छति ऋ इन्, ६ तत् । ग धार
देश ।

गन्धारी (स० स्त्री०) ग ध लेयरूप गन्ध ऋच्छति । गर्भ
धारिणी स्त्री, गर्भवती ।

‘ रथा ग धारीणां ग धधारिणीनां स्त्रीणां ।’

(सङ् ११११६० भाष्य)

गन्धान (स० पु०) १ ग धशाल । २ दण्डालुक, रतानूका
पेट ।

गन्धाला (स० स्त्री०) गन्धाय अलति पर्याप्नोति अल् अच्
तत टाप् । हृचविशेष, एक पेटका नाम ।

गन्धानी (स० स्त्री०) ग धस्य आलो येषी यस्या, बहुव्री० ।
न्ताविशेष ग धपसार । इसका पर्याय—प्रसारणी
भद्रपर्णी, ग धाव्या, सरणा, कटभरा, राजवाला, भद्रवला
कटभर और सारणी है । इसका शुष्ण—उष्णवीर्य, वात
नाशक, तिक्त, शुक्र, हृष्य, बलवृद्धिकर, वात, रक्त और
कफनाशक है । (भाष्यभाष्य) प्रसारणी टट्या ।

गन्धालोग्ध (स० पु०) गन्धानी गन्धयेणी गर्भे यस्य,
बहुव्री० । छोटी इलायची ।

गन्धाम्रन् (स० पु०) गन्धयुक्तोऽश्मा शाकपार्थिववत् ।
गन्धक ।

गन्धाटक (स० स्त्री०) गन्धाना गन्धद्रव्याणां अटक
६ तत् । भाट प्रकारके मिश्रित गन्धद्रव्योंकी गन्धाटक
कहते हैं । तन्त्रमें देवता भेदसे कई प्रकारके गन्धाटक
निरूपित हैं ।

शक्तिगन्धाटक—१ चन्दन, २ अगुरु, ३ कर्पूर, ४

चौर नामक गन्ध द्रव्य, ५ कुङ्कुम, ६ गौरीचन ७ जटा-
मसी और ८ कपियुता ।

विशुकी गन्धाटक—१ चन्दन, २ अगुरु, ३ वाला,
४ कुङ्कु, ५ कुङ्कुम, ६ वीरणमूल, ७ जटामांसा और
८ सुरा ।

श्रियगन्धाटक—१ चन्दन, २ अगुरु, ३ कर्पूर,
४ तमाल, ५ जल, ६ कुङ्कुम, ७ रक्तचन्दन और ८ कुङ्कु ।

गणेशगन्धाटक—१ स्वरूप, २ चन्दन, ३ चौर, ४ रीचना,
५ अगुरु, ६ सृगमद, ७ कस्तूरी और ८ कर्पूर । (शारदाति०)

मेरुतन्त्रके मतसे चन्दन, अगुरु, कर्पूर, गौरीचना,
कुङ्कुम, सृगमद और वाला इन आठोंकी गाणपत्य गन्धा-
टक कहते हैं । सामादिकी यूप प्रस्तुत करनेमें सुग धिकी
लिये आठ ग धद्रव्य उत्तम दिये जाते हैं । इनकी भी
गन्धाटक कहते हैं । लक्ष्मिनाथके मतमें जातोफल (जाय-
फल), तैजपत्र, लवङ्ग, इलायची, दालचीनी, नागजेशर,
मिर्च और सृगनाभि इन सबको ग धाटक कहते हैं ।

गन्धाद्धा (स० स्त्री०) रक्ततुलसी, लाल तुलसी ।

‘ मानो ऋतुषो गन्धकाङ्कान्क रथा ।’ (सुब्रत वि ८)

गन्धि (स० स्त्री०) टणकुङ्कुम, रोकित घाम ।

गन्धिक (स० पु०) गन्धोऽस्यस्य गन्ध ठन । १ गन्धक ।
२ ग धवणिक ।

गन्धिन् (स० त्रि०) प्रशस्तो गन्धोऽस्यस्य ग ध इनि ।
प्रशस्त ग धयुक्त, जिसमें अच्छी ग ध हो ।

‘ उर्वे व रन्धनो रमा नो ह्यि न च शब्दवन् ।’

मन्त्रे तं सुगन्धो बुद्धा तन्प्रधान पचते । (भारत भाष्य ५१५)

गन्धिनी (स० स्त्री०) ग धिन-डीप । सुरा नामक ग ध
द्रव्य ।

गन्धिपर्ण (स० पु०) गन्धि गन्धयुक्त पर्ण यस्य,
बहुव्री० । सप्तच्छदवृक्ष, सप्तपर्ण वृक्ष । हृतिवनका पेट ।

गन्धिरम (स० पु०) गोपक, नौसादर ।

गन्धिला—चैनमतानुभार विदेहद्विभ्रमं स्थित एक देश ।

गन्धी (स० पु०) कस्तूरीसृग्म ।

गन्धेन्द्रिय (स० स्त्री०) ग धयाहक इन्द्रिय शाकपार्थिव
धादिवत् समास । प्राणेन्द्रिय, वह इन्द्रिय जिसके द्वारा
ग धका अनुभव हो । इन्द्रिय सम्बन्धके विषयमें दाश-
निकोंका मतभेद नञित होता है । न्यायद्वय नञा मत है

कि पृथ्वीके अंशसे गन्धेन्द्रियः वा नासिकाकी उत्पत्ति है इसीके द्वारा हमलोग गन्ध ग्रहण करते हैं। माहुर और पातञ्जलके मतसे प्राणैन्द्रिय पृथ्वी अंशसे उत्पन्न नहीं है। वह सात्त्विक अहङ्कारसे आविर्भूत हुआ है। फिर प्रलय समयमें वह उसमें लीन हो जाता है। भाष्यकार विज्ञानभिक्षुने सांख्यप्रवचनके द्वितीय अध्यायमें इन्द्रियके भौतिकत्ववादाका अत्यन्त सुन्दर रूपसे निराकरण कर आहङ्कारित्व मंस्थापन किया है।

गन्धेभ (मं० पु०) गन्धयुक्तः मदगन्धयुक्तः इभः शाकपा-
रिवाटिवत् समासः। गन्धगज, सत्तहस्ती, मतवाला
-हाथी।

“किन्त्वात्त्वं वन्ध भो गन्धेनैव वाटाण्डम्।” (गणतरं० १।१००)

गन्धातु (मं० पु०) गन्धप्रधान अतुः वा वृद्धिः। सुगन्ध-
-मार्जार, खट्वाश।

गन्धोक्त—स्वामी जीवन्धरकुमारके पालक और वैश्व
जातिके धनाश्व। जीवन्धरकुमारके पिताकी काष्ठाङ्गा-
रुनि मार डाला था। उनके पीछे जीवन्धरका जन्म हुआ
और वे गन्धोक्तके घर पले थे। जीवन्धर देखो।

गन्धोक्तटा (सं० स्त्री०) गंधेन उक्तटा उया, इ-तत्। दम-
नकवृक्ष, टानाका पेड़।

गन्धोत्तमा (सं० स्त्री०) गंधेन उत्तमा उक्ताया इ-तत्।
मदिरा, शराव।

गन्धोद (सं० स्त्री०) गन्धेवासितमुदकं शाकपार्यिववत्
समासः उदकस्य उदादेशश्च। गन्धद्रव्य, वासित जल,
गन्धजल, गुलाब जल।

“आसक्ति मार्गं गन्धोदः” (भागवत, २।११।१८)

गन्धाटक (सं० स्त्री०) गन्धेवासितमुदकं शाकपार्यिववत्
समासः विकल्पपक्षे उदकस्य न उदादेशः। १ गंधद्रव्य
वासितजल, गंधजल, गुलाब जल।

२ जैनमतानुसार तीर्थङ्कर वा अरहन्त भगवान्के
स्नानका जल, अथवा उनको मूर्तिके स्नानके जलकी
गन्धोदक कहते हैं। आर्यलोग नित्य दर्शन कर-
के, उसको मस्तक और हृदयसे लगाते हैं। तीर्थ-
ङ्करके जन्म होते ही इन्द्रका सिंहासन कम्पायमान होता
है। इन्द्र तुरतही अवधिज्ञान द्वारा तीर्थङ्करका जन्म-
जान मध्यलोकेमें देवीं सहित उपस्थित होता है। नगरमें

उत्सव होता है। इन्द्रानी जा कर माताकी से-से भग-
वान्की ले आते हैं और उनके बटनेमें एक मायामयी
बालक रख आती है। यह कायवाणी गुप्तभावसे भी
जाती है। फिर उन्हें सुमेरु पर्वत पर पाण्डुक शिना पर
विराजमान कर उनका नयन किया जाता है। सन-
कुमार और माहेन्द्र तथा अन्यान्य हजारों देव मिल कर
१००८ फलगुंसे भगवान्को स्नान कराते हैं। उस समय
उनके स्नानका जल जिन जिनके देह पर पड़ता है, वे
परम्परासे मुक्ति जाते हैं। (वेग आदिपरा८)

कोटिभट्ट श्रीपाल राजाकी जब कुष्ठकी व्याधि हुई
थी, तब उन्हें प्रजाकी सुविधाके लिये राज्यसे निकल
जाना पड़ा था। भाग्यवश वे उस राज्यमें जा पहुँचे
जहाँ मैनासुन्दरीके पिता राजा राज्य करते थे। वे
अपनी पुत्रीकी इस बात पर दहृत नागराज से कि,—“मैं
अपने भाग्यसे सुख या दुःख पाती हूँ।” बम्, इसी
बात पर नाराज हो कर उनसे मैनासुन्दरी श्रीपाल को
व्याहरी दे। वेचारी मैनासुन्दरी धर्म पर बड़ा
रखती हुई अरहन्त भगवान्को पूजा करने लगी और
नित्य प्रति जिनैन्द्रकी प्रतिमाका गंधोदक लाकर पानिके
शरीरसे लगाने लगी। माभाग्यवश, छोड़े ही दिनोंमें
श्रीपालने कुष्ठरोगसे मुक्ति पाई और मैनासुन्दरीके साथ
दिग्गम्बर जैनधर्म की पूर्णतया पालन करता हुआ आनन्द-
से जीवन व्यतीत करने लगा और अन्तिम जीवनमें
दिग्गम्बरी दीक्षा धारण कर, केवलज्ञान पूर्वक मुक्ति
लाभ किया। (श्रीपालवर्षिष)

गन्धोपजोवी (मं० पु०) गंधं गंधद्रव्यं उपजोवति
उप जोव-णिनि। गंधवणिक्।

“दन्तार्थाय मूषक रः वै च गन्धोपजोविना” (रामा० २।७।११)

गन्धोपलः (मं० स्त्री०) गंधक।
गन्धोल—बम्बई प्रदेशके काठियावाडका एक छोटा राज्य।
लोकसंख्या प्रायः १३७ है। राज्यकी आमदनी २०००
रुपयेकी है। जमींदारकी २८० रुपये गायकावाड़ महा-
राजकी कर स्वरूप देने पड़ते हैं।

गन्धोलि (मं० स्त्री०) गंधयति गंध बाहुलकात् ओल
ततो जाती डीप् निपातनात् क्लृप्तः। भद्रमुस्ता, सुगंधि
घास, नागर मोथा।

गन्धोली (स० स्त्री०) गन्धप्रति शब्दं यति । १ ह म
 २ धरटा विरगी ।
 गन्धा (हि० पु०) ईश्वर, ज्ञाव ।
 गन्धा वेगम—नवात्र श्ली कुली खांकी कन्या । श्ली कुली
 खां पाचहजारके मनसबदार थे । इनके छ अन्नूमी रहने
 के कारण लोग इन्हें कद्दा वा पडङ्गल कन्या करते थे ।
 पहने नवात्र सफेदपद्मके पुत्र सुजाउद दीनाके माघ रात्रा
 र्थगमका त्रियाह मन्मन्थ स्थिर लुधा था, 'कस्तु किमी
 कारणसे पिताको इच्छासे इनने वजोर इमाद उल्-मुल्क
 गात्री उद् दीन् खांके माघ विवाह किया । यह मुसलमान
 ममाजमें मश्रून्त व गोको एक विदुषो रमणो थी ।
 वेगमकी बुद्धि और कविव्रज्यति बहुत दूर तक फैली
 हुई रहो । हिन्दी भाषामें इसकी रचना की हुई
 बहुतसे कविताये प्रयापि पद्यमाञ्जलमें सर्वाधिक निकट
 समाहत है । दोनपुरके निकट नूराबाद ग्राममें सम्राट्
 खानसगोरके बनाये हुए उद्यानमें ये ११८८ हिजरीकी
 काव्रमें गाडी गई थी । इनकी कवितायें शोभसौदा
 और मिचत प्रश्रुति कवियोंमें मशूघित हुई थीं ।
 गप (हि० स्त्री०) इधर उधरकी बातें जिसकी सत्यता-
 का निश्चय न हो । यह बात जो सिर्फ मनको प्रमथ
 करनेके लिये की जाय ।
 गपकना (हि० क्रि०) चटपट निगलना, भटमे खा
 लेना ।
 गपडचांग (हि० पु०) ब्यथकी गोठी, यह ध्ययकी वान
 चैत जो चार घाटकी मिल कर करते हैं ।
 गपना (हि० क्रि०) गप मारना घकना ।
 गपिया (हि० वि०) गप मारनेवाला, मिथ्या बात बोलने
 वाला ।
 गपिछा (हि० वि०) गपना स्थान ।
 गपोट (हि०) गपना स्थान ।
 गपोड़ा (हि० पु०) चट्टत मात, भूठो बात ।
 गपोट्ठानी (फा० स्त्री०) भूठ बकपाट ।
 गप्य (हि०) गपना स्थान ।
 गप्पी (हि० वि०) १ गप मारनेवाला, डींग प्राकने
 वाला । २ मिथ्याभाषी, भूठा ।
 गप्पा (हि० पु०) बडा कोर, जो पानेके समय उठाया
 जाय ।

गफ (हि० वि०) घना, कठिन, गाटा ।
 गफलत (अ० स्त्री०) १ अभावधानी, वैपरवाहो । २
 चैतका अभाव । ३ प्रमाद, भूल, भ्रम ।
 गफिलाई (फा० स्त्री०) गफलत स्थान ।
 गवडो (हि०) गवडो स्थान ।
 गवदी (हि० पु०) एक प्रकारका छोटा गाऊ । इसकी
 लकड़ी बहुत नरम होती है और गाव्वायें पक्षियोंसे
 ढकी रहनेके कारण छाताके सदृश दोष पडते हैं ।
 माघ और फागुन मासमें यह सुनहने पोले रङ्गके फूल
 लिये रहता है । यह पेठ भिवगनिफकी पहाडियों तथा
 उत्तरीय अथवा, वुटेनखण्डमें पाया जाता है । इसकी
 छालमें एक प्रकारका ग्रेत गोट निकलतो है ।
 गवह (हि० वि०) जड, मूष ।
 गवर (हि० पु०) जहाजमें एक तरहका पान जो सब
 पानमें उपर रहता है ।
 गवराड (हि० पु०) मूर्ख, अज्ञानी, जड ।
 गवरहा (हि० वि०) गोबर मिना, गोबर लगा हुआ ।
 गवरु (फा० वि०) १ जयानीकी यह अथग्या जब रस
 निकलीतो हो । २ भोला भाना, मोधा (पु०) ३ दूल्हा
 पति, ब्यामी ।
 गवरुन (फा० पु०) एक प्रकारका कपडा जो चरखानेमा
 होता है । इस तरहका वस्त्र नुधियानेमें बना जाता है ।
 गवोना (ट्रेग०) कतोला कतोर ।
 गव्वर (फा० वि०) १ घम डी, अहंकार । २ पानसी ।
 ३ बहुमूर्ख । ४ धने मानदार ।
 गवभा (फा० पु०) रहनेमें परिपूर्ण एक शिकारपन ।
 गम (फा० पु०) पारमका रहनेवाला पारम त्रेगज
 पवित्रपुत्रक ।
 गम (स० स्त्री०) भग पयोदगादियत् यणतिपणये माधु ।
 भग, गीम ।
 * गम (हि० वि०) गमनविशेष । गमकवचन १ २२१
 * गम (हि० वि०) गमनविशेष । गमकवचन १ २२१
 गमन्नि (स० पु०) गम्यते प्रायते गम उ ग विपय त
 यमन्नि भम् म्नि १ किरण, प्रकाश । २ गम । ३ गिव ।
 * गम (हि० वि०) गमनविशेष । गमकवचन १ २२१
 ४ गवाहा, पवित्रकी स्त्री । ५ पद स्त्री, उ गनी ।

(स्त्री०) गच्छति प्राप्नोति गम-भ गोऽग्निः तं वभत्स्यनया ।
वाहुयुगल, दीनों वाह । "इयु करसा बहुला गमनि" चक्र, ६।१।२।
'गमनि वाहा' (साधप) हस्त, हाथ ।

"पाशो वै गमनि पाणिभ्यां हरे न पात्रयति" (शतपथब्रा० १।१।१।२)

गभस्तिनेमि (सं० पु०) गभस्तय एव चक्रं तस्य नेमिरिव ।
परमेश्वर ।

"गभस्तिनेमिः सत्वयः ।" (विष्णुस०)

गभस्तिपाणि (सं० पु०) गभस्तिः पाणिरिवाम्पर रमा-
कर्पणकर्मणि । सूर्य ।

गभस्तिमत् (सं० पु०) गभस्तयो भूक्ता सन्त्यस्य गभस्ति-
मतुप् । १ सूर्य ।

"विभावसुः सारयित्त्र वायुना घनत्रयपायेन गभस्तिमानित्र ।"

(१६० १।२०)

(स्त्री०) गभस्तयो नित्यं सन्त्यत्र गभस्ति नित्ययोगे
मतुप् । २ पातालविशेष, सप्त पातालीके अन्तर्गत एक ।
इसका दूसरा नाम तलातल है । (गच्छवाचको) पाताल देना ।
३ द्वीपविशेष, एक द्वीपका नाम । (त्रि०) ४ किरणयुक्त,
जिसमें प्रकाश हो ।

गभस्तिहस्त (सं० पु०) गभस्तयो हस्ता इव रमाकर्पणाय
यस्य, बहुव्री० । सूर्य ।

"गभस्तिहस्तो ब्रह्मा च सर्वं देवनमस्तुतः ।" (शं०पु०)

गभस्तीश (सं० पु०) काशीस्य शिवनिङ्गविशेष ।

काशी देवी ।

गभि (सं० त्रि०) गच्छति नीरमत्र । गभीर, गहिरा ।

गभिपज (सं० त्रि०) गभी सञ्चते सञ्च-क्विप् । 'गभीर-
स्थायी, जो गहरे स्थानमें अवस्थित हो ।

"निषां नि धाम गभिषक सुसु द्वेयम् ।" (अथर्ववेद ७।३।१)

गभीका (सं० स्त्री०) गभीरे कायति कौक प्रपोदराटिवत् लोपे
साधु १ वृक्षविशेष, गाम्भार, गभारीका पेड़ । गभीकायाः
फलं गभीका अण् तस्य लोपः । इरोतक्यादिश्रय । पा ४।३।१६० ।
२ गाम्भारका फल ।

गभीर (सं० त्रि०) गच्छति जलमत्र गभ-इरण भञ्जान्ता-
द्वेषः । १ निम्नस्थान, गहिरा । २ अतलस्पर्श, जिमका तला
न सिने । ३ मन्दञ्चनि, धीमो आवाज । ४ गहन, घना ।
५ दुष्पूवेश, जिसमें जल्दी घुस न सके । ६ दुर्वीध,
गूढ़, कठिन । ७ प्रचण्ड, प्रबल, तेज ।

"कालेन सर्वं व गभीरं ह्यहा ।" (भागवत १।५।१८)

गभीरक (सं० त्रि०) गभीर एव स्वार्थं कन् । गभीर शब्दो ।
गभीरचित्त (सं० त्रि०) गभीरं दुष्पूवेशं चित्तः चित्तवृत्ति-
यस्य, बहुव्री० । जिमका मानसिः भाव अत्यन्त गभीर
या गहिरा हो ।

गभीरवेपम् (सं० त्रि०) जिमका कंपना माश्रावण रूपमे
नहीं मालूम पड़ता हो ।

"वि सुपर्षी चर्मांश्चापच्छद् गभीरवेपः । यतः गम प्र ।"

(चक्र १।३५।६) 'गभीरवेपः गभ र - स्यः । (साधप)

गभीरा (सं० त्रि०) १ वाक्य । २ पृथिवी ।

गभीरात्मन् (सं० पु०) गभीरः दुर्नित्य आत्मा स्वरूपं
यस्य, बहुव्री० । परमेश्वर ।

"धतुरवो गभीरात्मा ।" (विष्णुसं० १।३१)

गभीरिका (सं० स्त्री०) गभीरा संज्ञार्थं कन्-टाप्
इत्वञ्च । १ बहुत् ढाक, बड़ा ढोल या घण्टा । २ मन्द-
ध्वनियुक्ता स्त्री, वह औरत जिसकी आवाज बहुत धीमी
हो । ३ एक तरहकी आँखकी बीमारी । ४ एक नदी-
का नाम ।

गभुश्चार (हिं० वि०) गर्भका ज्ञान, जन्मके समयका रखा
हुवा बाल । २ जिसके भिरके जन्मके ज्ञान न-नाटे हों,
जिसका मुँडन न हुआ हो । ३ नार्दान, बहुत छोटा,
अनजान ।

गभुवार (वि०) गभुशरा देवी ।

गभोलिक (सं० पु०) मसूर, एक प्रकारका अनाज ।

गम (सं० पु०) गम-अप् । १ पराजयकी इच्छासे गमन ।
२ पथ, मार्ग, राह । ३ द्यूतकीड़ाविशेष, जुबिका एक
खेल । ४ गमन, यात्रा । ५ अपराधोन्नीत पथ, वह
मार्ग जो कभी नहीं देखा हुआ हो । गम्यते गम
कर्मणि अच् । ७ गम्यमान । (पु०) टउरभोग, मैथुन ।

"ब्रह्मन्वा सुराधामं नो यं गुणैर्ब्रह्मगमः ।" (मन्० १।१।५३)

गम (ष० पु०) १ दुःख, गोक, रंज । २ चिन्ता, फिक्र ।

गमक (सं० त्रि०) गमयति गम-गिच्-न्तुल् । १ गम-
यिता, जो गमन करता हो, जानिवाला । २ बोधक,
सूचक ।

"यन् पीठत्वमुदरातः च वचसां यथावत्तो गौरव ।

तच्छेदनि तत्कटिब गमकं पाण्डित्यवैदग्ध्यं ते ।" (सातवीमाधद)

३ स्वरभेद, एक स्वरके श्रुतिप्रचय प्रकाशको नाम

गमक है। इसके भात भेद हैं। यथा कम्मित, स्फुरित, मीन, भिन्न, स्थविर, आर्हत और आन्दोलित है। गायक-को पीप और माघ मासमें एक प्रहर रात्रिके रहने पर जन्ममें प्रवेश करना और गमककी साधना करनी चाहिये।

(सङ्गोपाङ्गोर)

मतान्तरमें गमकके २३ भेद है। यथा—अपूर्वाहत, अस्थित, अयोधर्षण, अस्ताहत, आन्दोलित, आर्हत, आघर्षित, उदाहत, कम्मित, करीरि, कर्पोमस्थान, घषित, जयत, टाला, तुरित, निष्पत, पुरोहत, प्रस्ताहत, वायमि, सुद्रित, शान्त, सुवाला और सोमस्थान। (४ नीलकण्ठ)

४ तत्रलेका गभीर शब्द।

गमकारित्व (स० स्त्री०) रमभ।

गमकोला (हि० वि०) महकनेवाला। सुगधित।

गमखोर (फा० वि०) सहिष्णु, सहनशील।

गमखोरी (फा० स्त्री०) सहिष्णुता, सहनशीलता।

गमगोन (फा० वि०) दुखी, खिन्न, उदास।

गमत (स० पु०) १ रास्ता, मार्ग। २ व्यथमाय, पीशा, रोजगार

गमतखाना (फा० पु०) नायमें एक स्थान जहाँ पानी छिदीं द्वारा जमा होता है।

गमतरी (फा० स्त्री०) गमतवाला।

गमता (गामिन्) भील जातिकी एक स्त्री थी। ये गायक वादके निकर खान्देश तथा खुरतके उत्तरपूर्वमें पाये जाते हैं। इनको सम्या लगभग ५२०१८ होगी।

इनमेंसे घोड़े बाल सुडवाया करते और कुछ लम्बे लम्बे बाल रखते हैं। गिर्या अपने अपने बड़े बड़े बालों को मजाए रहती हैं। ये बहुत सकीर्ण भौण्डोंमें रहते हैं। भौण्डोंकी दियानें बामकी पहियोंकी बनी रहती और उसमें मिट्टीका लेप दिया रहता है तथा घाससे ढायी रहती हैं। इन लोगोंका प्रधान भोजन रोटी है।

ये भिडा, बकडा, खरगोश, तथा चिटियाँ मो खाते हैं।

वेकिन ये नोमांस पचवा किन्तो गत जानवरका मांस छूते तक भा नहीं हैं। पुरुषके मद्दाक पर एक पगडो कमरमें सिफ एक न गोटी और हाथकी बन्दाईमें चादी या ताँबेके घामपुण रहते हैं। गिर्या धोनी और घ घरा पहनती और सिरमें एक दूमरा बट्ट उधरनेती है। ये

कानोंमें तबिही कनेठिया और गलेमें काँचकी माला पहनती हैं। छोटो छोटो बानिकाये परमें तबिही ठोस पैजनी रखती है। ये खेती तथा लकडो काट कर अपनी जीविका निर्वाह करते हैं। ये बाघदेव, सामल-देव और देवलोमाताकी पूजा करते हैं। ये ब्राह्मणोंकी सेवा टहल नहीं करते यहाँ तककी ये ब्राह्मणोंको प्रणाम भी नहीं करते है। उन्हींमेंसे एक पुरोहितका काम चला लेता है। जब कोई सन्तान जन्म लेती तो उससे छठे दिन ये छठी देवताकी पूजा करते तथा अपने कुटुम्बीकी श्रावण इत्यादि पिलाते हैं।

हृदा फो नवजात शिशुका नाम रख देती है। वारह वर्षकी अवस्थामें अर्थात् जब लडका ताड़ लड पर चढनेमें समर्थ हो जाता तब इसका विवाह करते हैं। विवाह मन्वन्ध नियत हो जाने पर ये चार या पाँच रुपयेकी ताडी खरीद लाते और अपने जात भाइयोंकी पिलाते हैं। सिर्फ २५ रु०में इन लोगोंका विवाह हो जाता है। इनमें बहुविवाह तथा विधवाविवाहकी प्रथा प्रचलित है। ये शवकी जला देते हैं। धनीपुरुष चार दिनोंमें तथा गरीब एक या दो मासमें अन्येष्टिक्रिया करते हैं।

गमथ (स० पु०) गम अधिकारये भय। १ पथ, रास्ता। गम कसरि भय। २ पथिक, बटोही, मुसाफिर। ३ व्यापार, पीशा। ४ आनोद प्रमोद।

गमन (स० स्त्री०) गम भाये श्युट्। १ क्रियाविशेष।
'गमोपच वनन वनाथे तानि वच च। (भाष्यारण्ये ७) १।

२ पराजयको इच्छामे गमन, कूच। इसका पर्याय—यात्रा, व्रज्या, अभिनियोग, प्रस्थान, गम, प्रयाण, प्रस्थिति, यान और प्राणन है। ३ यात्रा।

'न च मे शयने देर वनन इच्छ वति।' (भाष्य १।१।११)

४ उपभोग, भोगन।

'वदन्ववनाथः पनचन च भवन्तु।' (तितित्त)

गम करये श्युट्। ५ चिमके द्वारा गमन किया जाय, रथ, शकट प्रभृति।

गमनना (घ० वि०) जाना।

रमनपत्र (स० पु०) वच पत्र जिसके द्वारा एक जगहसे दूसरी जगह जानेका अधिकार मित्रता हो, धानान।

गमनपुर—बम्बई प्रदेशके महीकान्ताका एक छोटा राज्य, यह कटोसनके सामन्तके अधीन है। ये गायकवाड़ महाराजको १३८५ रु० १० आनि ८ पाई वार्षिक कर देते हैं।

गमना (अ० पु०) जाना चलना।

गमनाक (फा० वि०) शोकपूर्ण, दुःखभरा।

गमनागमन (सं० क्ली०) गमनश्चागमनश्च, इतरितरहन्व ।

जाना और आना।

गमनाह (सं० त्रि०) गमनस्य अर्हो योग्यः, ६-तत् । जानिके लिये उपयुक्त।

गमनीय (सं० त्रि०) गम्य, जाने योग्य।

गमयित् (सं० पु०) गम णिच् ङ् । गमक देखो।

गसुता (फा० पु०) एक प्रकारका मट्टी या दूसरे धातुका पात्र। इसमें फूलकिं पेड़ और पौधे शोभाके लिये रखे जाते हैं। २ लोहे या चीनी मट्टीका बना हुआ एक प्रकारका बरतन जिसमें पाखाना फिरते हैं।

३ तैलङ्ग देशीय वैश्य जातिभेद। यह मद्यका व्यापार करते हैं। परन्तु बहुतसे गमले इस कामकी छोड़ करके अन्य प्रकारके व्यवसायमें भी लग गये हैं। इन्हें वैश्य-वर्ण माना जाता है।

गसागम (सं० पु०) गमश्च आगमश्च, इतरितरहन्व । १ चरा-चर, संसार। २ गमनागमन, आना जाना।

गमाना (हिं० क्ति०) खीना, गंवाना।

गमार (हिं० वि०) गांवका रहनेवाला। गंवार, देहाती।

गमित (सं० त्रि०) गम णिच् क्त । १ प्रापित, पाया हुआ।

२ प्रापित, जाना हुआ। ३ अतिवाहित, बिताया हुआ।

गमिन् (सं० त्रि०) गमनकर्त्ता, जानेवाला।

गमिष्ठ (सं० त्रि०) अतिशयेन गन्ता गन्तृ-इष्टन् । शीघ्रसे चलनेवाला, जो बहुत चल सकता हो।

गमी (अ० स्त्री०) १ शोककी अवस्था या काल। २ एक प्रकारका शोक जो किसी मनुष्यके मरने पर किया जाता है। ३ मृत्यु, मरण।

गम्वात—सिन्धुप्रदेशके खैरपुर राज्यका एक नगर। यहांके कुलाहे कपाससे एक प्रकारके देशी कपड़े का धान प्रसृत करते हैं।

गम्बोल—पञ्जावके बन्वू जिला हो कर प्रवाहित एक नदी, यह अक्षा० ३२° ३७' ३०" उ० और देशा० ७१° ६' १५" पू०में अवस्थित है। यह नदी अफगानिस्तानमें मझील जातिके पार्वत्य आवागमनसे उत्पन्न हो कर टावाड़ अधित्यकामें पूर्व मुख आकर लक्ष्मीनगरके दक्षिण कूरम-

नदीसे आ मिली है। उत्पत्ति स्थानसे मरवत् तइमोल पर्यन्त यह टोकोनदी नामसे मगहर है। इस नदीका जल सुखादु और स्वास्थ्यकर है। तहमोलके निकट कई एक झरने हैं। नदीके दोनों तीरोंकी जमीन बालुकामय है, इसलिये खेती करनेकी विशेष सुविधा नहीं है वर्षा-कालमें वृष्टिके समय इसकी गहराई ४३ फुटमें अधिक नहीं रहती है।

गम्भन् (सं० त्रि०) गम वाहुलकात् अन् भुगागमश्च । गम्भीर, गहरा।

“अर्पा गम्भन् सौटमाला मूर्धोऽभितापसोन्माग्नि बे' शानरः ।”

(वाशसनेय० १०।३०) ‘गम्भन् गम्भरि २ मीरे स्थाने’ (महीधर)

गम्भर (सं० क्ली०) गम-विच् गमं निम्नगतिं विभर्त्ति-भृ-अच्, ६-तत् । जल, पानी।

“बृहन्नेव गम्भरेषु प्रतिष्ठा” (शतक १०।१०।१।८)

‘गम्भरेषु गहनेषु कलेषु ।’ (सायण)

गम्भार—पञ्जाव प्रदेशका एक पार्वतीय जलस्रोत। यह अक्षा० ३०° ५२' उ० और देशा० ७७° ८' पू०में हिमालय श्रेणीसे निकल कर उत्तर-पश्चिमकी ओर बहती हुई सुवाथुके सैनिक-निवासकी अतिक्रम करके शतद्रु नदीसे मिल गई है। इस नदीकी गहराई अल्प होनेके कारण नावके लिये सुविधा नहीं है, किन्तु वर्षाकालमें बहुत बाढ़ आ जाती है। सुवाथुसे सिमला पहाड़ पर जानेकी राह पर इस नदीके ऊपर एक पुल निर्मित हैं।

गम्भारिक (सं० स्त्री०) गम-विच् गमं निम्नगतिं विभर्त्ति भृ-खल् टाप् अत इत्वं । गम्भारीवत्, गम्भारीका पेड़।

गम्भारी (सं० स्त्री०) गमः गतिभेदं विभर्त्ति अण् उपप-दस० गौरादित्वात् डीष् । वृक्षविशेष। (Gmelina arborea) इसका पर्याय—सर्वतोभद्रा, काश्मरी, मधु-पर्णिका, श्रीपर्णी, भद्रपर्णी, काश्मर्य, कृष्णवृन्तिका, कृष्णवृन्ता, हीरा, सिग्धपर्णी, सुभद्रा, कम्भारी, गोप-

मद्रा, विदारिणी, महाभद्रा, मधुपर्णी, खरुभद्रा, कुण्या, अन्नता, रोहिणी, गृष्टि, मधुमती, सुफला, काशीरोग, भद्रा, गोपमद्रिका, कुसुदा, मटाभद्रा, काटफला, सर्वतोभद्रिका, श्रीरिणी, स्यूलत्वा श्रीर महाकुमुदा है। इसका गुण—कटु, तिक्त, गुण, उष्ण, भ्रम, शीघ्र, त्रिदोष, विपदाह, ज्वर, दृष्या और रक्तदोषनाशक है। -

इसके फलके गुण—तिक्त, गुण, याही, मधुर केशहित-कर, रसायन, मेध्य, श्रोतन, दाह और पित्तनाशक है।

इसके मूलके गुण—धृतिशय उष्ण, कपाय, तिक्त, उष्ण-वीर्य, मधुर, गुण, दीपन, पाचन, भ्रम, दृष्या, आमशूल, अर्ग, विपदाह और ज्वरनाशक है। (भास्कराचार्य)

गमिष्ठ (सं० त्रि०) गमधु इठन्। गभीरतम, बहुल गहरा।

“गमिष्ठं वनं वरतन् पतति।” (सतपथ ० १३।।८)

गभीर (सं० त्रि०) गच्छति जनसमं गम ईरन् निपातनात् भूगागम। १ निम्नस्नान, गभीर, गहरा। -

“धतृगभीरं धनोऽधनोऽधिनम्।” (मेष ४)

२ मन्द्र शब्द, मधकी भावाज।

“सम्यग्भीरनिर्धिमिष्ठच्छन्दनमास्थितौ।” (रघु० १६०)

(पु०) ३ अश्वीर, ज जोरो नोयू। ४ पद्म, कमल। ५ षट्क, मन्त्रविशेष, षट्ग वेदमें एक प्रकारका मन्त्र।

“अरे सर्वे च मामो च विदु गभ रता धमा। (बृ० त्रि०)

गभीरक (सं० पु०) वृक्षविशेष, फलिष्णकहृत्त, सुगन्ध तुलसीका पेड़।

गभीरज्वर (सं० पु०) एक प्रकारका ज्वर।

“गभीरज्वरतो ब्रह्मो जलसिद्धिं वृषभः।

“गमिष्ठं न दोषात्वादाहृत्तौऽधिनं च।” (निपा०)

गभीरदृष्टि (सं० पु०) नेत्ररोगविशेष, चाँबुकी एक बीमारो।

गभीरनाय—एक गुह्यमन्दिर। बम्बई प्रदेशके पूना जिनान्तगत खण्डान विभागमें धरान पहाड़के ऊपर भव स्थित है। खण्डान नगरमें इस मन्दिर पर पञ्च स्तूपमें प्रायः ६ घण्टे लगते हैं। पहाड़ काट कर यह मन्दिर प्रस्तुत किया गया है।

गभीरपाक (सं० पु०) चला पाक।

गभीरमानियो—शैलप्रतापुमार विदेश क्षेत्रकी विभङ्ग-नदियोंने एक झरनादी।

गभीरराय—एक प्रसिद्ध हिन्दी कवि। इन्होंने गुरपुरके इतिहासकी हिन्दी कवितामें रचना की है। १६२८में १६५८ई० तक मध्यप्रदेशके अन्तर्गत सुमेरुके राजा जगत-सिंह और टिळी बादशाह शाहजहाँके बीच लडाई छिडो थी। इन्होंने युद्धक्षान्त ज्वलन्त भाषाको कवितामें वर्णन किया है।

गभीरवेदिन् (सं० पु०) गभीर गहन वादुलकात् पर वेत्ति गभीर विद विनि। १ एक प्रकारका दाधी।

“गभिराशिनो वेत्ति सिद्धां परिचिताम्नि।

गभीरवेदो विज्ञेय स मज्ञो गुणवेदिनिः।” (गुणप्रतीक कविशिखा)

जो हाथो बहुत देखके बाद परिचय, शिखा या उपदेश समझ सकता है उसकी गभीरवेदी कहते हैं। इसका पर्याय—अद्भुतदुर्लभचालक, ब्यालक और श्वमता-दुग्ध है।

“स प्रयास महेन्द्रस्य मुनिं शौचं करिष्यत्।

यद्दत्तं विदुष्यं यत्तन् गभीरवेदिनिः।” (रघु० ३।१६)

२ मोटी बुद्धि।

गभीरवेदिष्ठ (सं० पु०) गभीर विदु वृत्त्। अज्ञहस्ती, असाधधान हाथो।

“अज्ञमेदान् च पितृभ्रातृन् मांसं च प्राचनत्सि।

याकाले धी न आगतिसि स्याद् गभीरवेदिताः। (रघु० टीका मन्त्रिणम्)

अर्थात् जिस हाथीके चर्ममें रक्त निकलने अथवा सांस काट डालने पर भी यह कुछ नहीं जानता जो इसको गभीरवेदिता कहते हैं।

गभीरिका (सं० स्त्री०) १ नेत्ररोगविशेष। इसका लक्षण

“दृष्टि विरहात् क्लेशोपलब्धा मद्भ्रमोऽभ्यासगतः प्रवर्तते।

हृत्तमयदा च तन्मोघं गभीरिकादि वरुणमिथो।। (भास्कराचार्य)

२ हृष्ट दान, बडी दान।

गम्य (सं० त्रि०) गम्य यत्। १ गमनीय, जाने योग्य, गमन योग्य। २ प्राप्य, लभ्य, पाने योग्य।

“गाम यच्च प्राप्यमा इति मध्यमं चिद्विदुः।” (शैला ११।।१०)

३ गमनयोग्य, गमन करने योग्य, सम्भोग करने लायक।

“यथावत् च तोडांति कोपि गम्यं गम्यं च (अरण्य ८।।१५)

गम्यमान (सं० त्रि०) गम करानि गानत्। १ प्राप्तमान, जानने योग्य। २ जिस धाममें जाना हो।

गम्या (सं० स्त्री०) गम यत् टाप। सम्भोगार्थी स्त्री यह

स्त्री जिसका संभोग शास्त्र विरुद्ध नहीं है।

—“अभिकामां क्षिप्रं यस गम्या ररुसि याचितः।” (भारत १८३।३५)

गम्यादि (सं० स्त्री०) निपातनसे सिद्ध इति प्रत्ययान्त कई एक शब्द। गमी, आगमी, भावी, प्रस्थायी, प्रति-रोधी, प्रतियोधी, प्रतिवोधी, प्रतियायी और प्रतिपेधी इन सबकी गम्यादि कहते हैं। इनके योग होनेसे द्वितीया-तत्पुरुष समास होता है।

गयंट (हिं० पु०) १ बड़ा ज़ायी। २ दोहेका दशवां भेद जिसमें १३ गुरु और २२ लघु होते हैं।

गये (सं० पु०) १ गमायणके अनुसार एक वानरका नाम। २ अचन्द्रकी सेनाका एक सेनापति था।

(भारत ३।१८२ अ०)

२ हविर्धान राजाके पुत्र। (भागवत ५।१५।७) ३ प्रियव्रत वंशीय एक राजाका नाम। ये अत्यन्त उदारचित्त और धर्मनिष्ठ थे। (भागवत ५।१५।१४)

४ एक राजर्षि, इनके पिताका नाम असुर्तरय था। इन्होंने शतवर्ष पर्यन्त केवल आहृतिका अवशेष भक्षण कर अग्निकी उपासना की थी। अग्नि संतुष्ट हो कर वर देनेके लिये उपस्थित हुए, इस पर गयराजने कृताञ्जली हो कहा—“हुताशन ! यदि मुझे अधमके ऊपर आप सन्तुष्ट हैं, तो मुझे वेदका अधिकार प्रदान कीजिये। मुझे वेद पढ़नेकी बहुत अभिलाषा है एवं जिससे मैं धर्मानुसार विपुल धनका अधीश्वर, शत्रु कुलका निहन्ता, धनरत्न ब्राह्मणोंको दान देनेमें यत्नवान् तथा सुखी बनूं। वैसाही वर प्रदान कीजिये।” ‘एवमसु’ ऐसा कह कर अग्नि चले गये। गयराजने अग्निसे वर पाकर समस्त विपन्नदलोंको निर्मूल करतें हुये सारी पृथिवीके ऊपर अपना आधिपत्य फैलाया। गयराजकी धर्मनिष्ठा दिन प्रतिदिन बढ़ने लगी। एक समय इन्होंने एक बृहद् यज्ञका अनुष्ठान किया। वैसा यज्ञ और किसी राजाने कभी नहीं किया था। उस यज्ञकी सुवर्णमय वेदोकी लम्बाई ३० योजन तथा चौड़ाई २६ योजनकी बनाई गई थी। इस यज्ञ फलसे एक बटवृक्ष चिरजोवी हुवा जो अश्रयवटसे प्रसिद्ध है। यज्ञकी समाप्ति होने पर ब्रह्म नामका एक सरोवर निर्माण किया गया था। (भारत द्रोण ६१ अ०) ५ धन, दौलत। ६ अपत्य, सन्तान। ७ गृह, घर।

(अथ १०।६।३) ८ अन्तरिक्ष, आकाश। (अथ ५।४।५) ९ गृहगत प्राणी। (अथ १।१०।१९) १० स्वस्थान, अपनास्थान, खास जगह। (अथ १०।६।५) ११ प्राण। (अथ ५।४।५) १२ गया प्रदेश। (भारत अथ १८) १३ असुर-भिग्नि, गयासुर। गया देखो।

गयदास—एक वैद्यक ग्रन्थकार।

गयनाल (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी तोप जिसे ज़ायी खींचता है। गजनाल।

गयरसपूर—मध्यभारतमें भिन्मार्क निकट एक स्थान। यहां अति प्राचीन मन्दिरका भग्नावशेष देखा जाता है। बहुतांका अनुमान है यह ग्यारहवीं शताब्दीमें जैनेसे निर्मित किया गया था।

गयल (फा० स्त्री०) गेंज देखा।

गयवली (देश०) एक प्रकारका पेड़। यह मध्यम आकार का होता और अवध, अजमेर, गोरखपुर और मध्य प्रदेशमें पाया जाता है। इसके फल खाये जाते हैं। छिनका चमड़ा मिथानके काममें लाया जाता है। इसकी लकड़ी खेतोके संगड़े और गाड़ी बनानेके काममें आती है।

गयवा (देश०) एक प्रकारकी मछली जिसे मोहिली भी कहते हैं।

गयशात (सं० पु०) एक प्रधान वीदाचार्य।

गयशिरस् (सं० स्त्री०) गयस्य शिरः, ६ तत्। १ गयाके निकटस्थ पर्वतविशेष, एक पहाड़का नाम जो गयाके समीप है। २ गयासुरका मस्तक। भारत, वन, गया देखो। ३ अन्तरीक्ष, आकाश।

गयसाधन (सं० त्रि०) गयस्य साधनं, ६ तत्। गृहका साधन जो घरके धनादिकी बढ़ाता हों।

“समी वत्सं न सावभिः सज्जता गयसाधनम्।” (अथ ८।१०।३१)

‘गयसाधनं’ गृहस्य साधनम्। (सायण)

गयस्फान (सं० त्रि०) स्फायी वृद्धी अन्तर्भूतण्ययात् ल्युट्-यलोप, गयस्य धनस्य स्फानो वर्द्धकः। धन वर्द्धन-कारक, धनका बढ़ानेवाला।

“गयस्फानो अनीवहा” (अथ ३।६।१२)

‘गयस्फानो’ धननाम गयस्य वर्द्धयिता। (सायण)

गया—विहार और उड़ीसा प्रदेशका एक जिला। यह अक्षा० २४° १७' तथा २५° १६' उ० और देशा० ८४° ०

एव ८६ ३ पूंके बीच विद्यमान है। गयाका क्षेत्रफल ४०१२ वर्गमील है। इसका उत्तर पटना जिला, पूर्व मुद्गर तथा हजारीबाग, दक्षिण हजारीबाग और पलामू और पश्चिमको झाड़ाबाद है। गया जिलेका दक्षिण भाग पहाड़ी है। दुर्वासा ऋषि और महाब्र प्रधान पर्वत है। पुनपुन, म्नेन आदि कई नदिया छोटानागपुरके पहाड़ोंमें निकलन इस जिलेमें उत्तरको बहती हैं। फल्गु पुनपुनकी सहायक नदी है। यह दोनों धाराए हिन्दू शास्त्रानुसार परम पावन हैं और गयाके प्रत्येक तोर्थ-याथेको इनमें स्नान करना पढता है। बाफ और देहरीके बीच सोन नदी पर पत्थरका धरग लगा है। ठीक इसी धरण पर नहरोंका निकाम और धरणके नीचे रेलवेका बहत बड़ा पुल है।

पहले पटना और गया दोनों विहार सूत्रांमें लगते थे। १७६५ ई०को अङ्गरेजोंको मिले। १८६५ ई०को गया पटनासे अलग किया गया। १८५७ ई०के जुनाई माम दानापुरके सिपाहियोंने बनवा करके शाहाबादकी गढ़ लो थी। जब एक अङ्गरेजी फौज, जो उनसे लड़ने गयो थी, बुरी तौरसे हारी, पटनाके कमिगनरने अपने सब निस्त्रस्य पदाधिकारियोंको दानापुर हट पानेकी अनुमति दो। उस समय गयामें कुछ अङ्गरेज और सिख सिपाही थे। पटना कमिगनरकी आज्ञामें यह गयामें ७ लाखका खजाना छोड चल दिण, किन्तु कुछ मोच समझ करके लौट पडे। दूसरी बार जब लोग खजाना ले करके फिर चलने लगे, उनके ऊपर आक्रमण हुआ। किन्तु यह आक्रमणकारियोंको परास्त करके मङ्गल बनवसे पहच गये।

बोधगया गया नगरमें ७ मील दूर दक्षिणको अवस्थित है। यहां और पुनावानमें बहुतसी बौद्ध मूर्तियां मिलती हैं। दूसरे दूसरे स्थानोंमें भी बौद्धधर्मके निर्दमन विद्यमान है। भीतामठोंमें एक प्राचीन गुहा है। कहते हैं, भीताने यहीं यनयामाधन्यामें स्वकी प्रणव किया था। रजौमीके सुन्दर पर्वतों और उष्यकायोंकी भी धनेक वनजाए मिलती हैं। अक्षरमें एक बराह मूर्ति विद्यमान है।

गयाकी भोक्तृमव्या प्राय २०५८८१ है। भावा

विहारो मगहो हीतो है। परन्तु भव हिन्दोका भी प्रचार होने लगा है। सपथी, मिद्गर, बसरो, चतकरी और वेनममें अथरककी खानि है। पचम्या आदि कई स्थानोंमें कितना ही नोहा मिलते भी निकाला नहीं जाता। मकान और सडक बनानेके लिये पहाड़ोंसे पत्थर निकालते हैं। काले पत्थरके गहने, बर्तन और मूर्तियां बनती हैं। जहानाबादमें शोरा तैयार होता है।

इस जिलेमें नाख, चीनी, टसरो तथा सुती कपडा, पीतलके बर्तन, सोने-चादोके गहने, कम्पल, नमूदा और कानोन प्रस्तुत किये जाते हैं। पहले जमानेमें कागज भी बहुत बनता था। शिक्षामें गया जिला पोछे है।

२ विहार और उड़ीसा प्रदेशके गया जिलेका उप-विभाग। यह अक्षा० २४ १०' तथा २५ ५' उ० और देशा० ८४ १०' एव ८५ २४ पूंके बीच अवस्थित है। इसका रकबा १८०५ वर्गमील और आवादा लग-भग ८३२४४२ है।

३ विहार और उड़ीसा प्रान्तके गया महुकमाका प्रधान नगर। यह अक्षा० २४ ४८' उ० और देशा० ८५ १' पूंमें फल्गु नदीके घाट तट पर अवस्थित है। गया नगर दो भागोंमें विभक्त है। उनमें एकको पुराना गहर और दूसरेको माहबगघर कहते हैं। पुराने नगरमें जहाँ विष्णुपदका सुप्रसिद्ध मन्दिर और दूसरे कई पवित्र स्थान हैं, केवल गयाबाने पण्डा ही रहते हैं। गयाकी लोकसंख्या कोई ७१२८८ होगी।

भागवतमें लिखा है कि त्रेतायुगको यहा गय नामक एक राजा रहता था। उसने अपने तपोबससे यह वर पाया—जिसको उसने हाथ लगाया, परलोक पहुँचाया। यमको इस वर लाह लगा और उसने देवता-पोंनि जा करके कहा कि उनका भविष्य सडटापव था। वह पापमें विचार करके गयेके पास गये और उससे उसका शरीर यथ करनेको मांग लिया। उसका रुद्ध गिर पडा, गया नगर बना है। फिर विष्णुने प्रसन्न हो करके यह वर दिया था—तुम्हारे गिर पर रज्जो बूँदें मिला जगतमें परमपावन मिला होगी और देवता, इस वर विद्याम करगे इस स्थानका नाम गयापेठ पड़ेगा और जो कोइ यहाँ यात्र तपेय आदि करेगा, अपने पूर्वजों-

के साथ ब्रह्मलोक पहुँचेगा। भारतके विभिन्न प्रान्तीय असंख्य तीर्थयात्री प्रतिवर्ष गयामें याद तर्पण करने आते हैं। यहाँ यात्रीको ४५ स्थानों पर पिण्डदान करना पड़ता है। इनमें आजकल लोग ७ या ३ ही स्थान देख करके चले आते हैं। ठीम चटान पर बना विष्णुपद मन्दिर गयामें सबसे बड़ा है। कहते हैं, ई० १८वीं शताब्दीको होलकरकी विधवा रानी अहल्याबाईने यह मन्दिर किसी पुराने मन्दिरके स्थानमें बनवाया था। गया-बाल पण्डा ही इस मन्दिरके मौरुमी पुजारी हैं। वह यात्रियोंसे यथाप्राप्य धन मांग करके आशीर्वाद देते हैं। विष्णुपाद मन्दिरमें जा पूजा अर्चना न करनेसे गया-यात्रा अमफल होती है।

पतञ्जलिविद्वान् इन्द्रियम, राजा राजेन्द्रनाथ और विश्वरूप ऋषि माहवके मतमें गयाके पड़ले हिन्दू-तीर्थ जैसा न गिना जाता था, केवल प्रधान-बौद्ध तीर्थ जैसा प्रसिद्ध रहा, बौद्धोंका अधःपतन होने पर हिन्दुओं-ने उनकी कीर्तियों पर अपना वर्तमान गयाधाम स्थापित किया। परन्तु उनका मत समीचीन जैसा नहीं समझ पड़ता। कारण बौद्ध प्राधान्य यहाँ तक कि बुद्ध जन्मके पहलेसे ही गया भारतवामियोंका एक प्रधान प्राचीन तीर्थ है और पितृपुरुषोंको पिण्ड देनेके लिये एक मात्र पुण्यस्थान जैसा प्रसिद्ध है। वाल्मीकि रामायण (अध्याय १०८।११-१२) में लिखा है, कि—सुनते हैं कि गया प्रदेशमें किसी धीमान् और यगस्त्री यजमानने पितृलोकके प्रति उद्देश करके यह श्रुति गायी थी 'मन्तानको इसी कारण पुत्र कहते हैं कि वह पिताको पुत्र नामक नरकसे वचाना और सर्वतोभावसे रक्षा लगाता है।' लोग इसीसे चाहते कि उनके नानाविधाओंमें पारदर्शी बहुतसे गुणवान् पुत्र हों और उनके कोई न कोई गया जावे। महर्षि याज्ञवल्क्यने (याज्ञवल्क्यस्मृति १।२१०) लिखा है कि गयामें यादकालको जो दिया जाता, अनन्तफल पहुँचाता है। इसी प्रकार महाभारत (अन ८४ ८०, ८५ ४०; अमरगाथा २३ ४०) हरिवंश आदि ग्रन्थोंमें भी गयातीर्थका उल्लेख है।

गयाकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें प्राचीन ग्रन्थोंमें भी मत-भेद लक्षित होता है। महाभारतके मतमें अमूर्तरयाके

पुत्र राजर्षि गयने वहाँ प्रचुरात्र और भृगुर्दक्षिण नामक कोई यज्ञ किया था। इस यज्ञमें शत सदस्र अन्वत्त तथा घृतकुन्थाणं घनी, सैकड़ों टर्फीको नटियां बहीं और लाखी उन्तमोत्तम व्यञ्जनप्रवाह प्रवाहित हुए। राजर्षि गय याचकीकी प्रति दिन ऐसे ही समारोहमें अन्न देते और ब्राह्मणोंको छोड़ करके दूसरे लोग भी बहुत प्रकारके अन्नव्यञ्जन खा लेते थे। दक्षिण प्रदान कालको वेन्द्रधनिने गगन स्पर्श किया, अन्य कोई शब्द कर्णगोचर न हुआ। राजर्षि गयने त्रिम समारोहमें यज्ञ किया, कभी किसीने किया न था और ऐसा भी नहीं समझ पड़ता आगे कोई करेगा। देवगण गयराज-प्रदत्त हविः द्वारा इनने परितप्त हो गये थे कि उन्हें किसी दूसरेके द्रव्य ग्रहणकी इच्छा न रही। यह यज्ञ ब्रह्मसरोवरके निकट हुआ। (अन २५ ४०) ज्ञात होता है कि राजर्षि गयके यज्ञ करनेसे ही वह स्थान गया और महापुण्यस्थान-जैसा पूर्वकालकी प्रसिद्ध हुआ। (महाभारत, शौच ६६ ४०) महाभारतमें यह स्थान गयराज-अभिमंस्कृत महीधर तीर्थ-जैसा अभिहित है। (अन २५ १०) पाण्डव वहाँ तीर्थ करने गये थे।

हरिवंशके मतमें मनुके यज्ञसे मित्र तथा वरुणके अंग द्वारा इला नाम्नी एक कन्याने जन्म लिया था। वही कन्या पुरुषरूपमें मनुके पुत्र सुद्युम्न नामसे विख्यात हुई। इन्हीं सुद्युम्नके ३ पुत्रोंके मध्य गय नामक कोई पुत्र हुए। उन्होंने गया पुरीमें राजधानी निर्माण की।

(हरिवंश १० ४०)

वायुपुराणीय गयामाहात्म्यमें लिखा है—

महाबलशाली गय नामक एक विष्णुभक्त असुर रहे। वह १२५ योजन उच्च और ६० योजन स्थूल थे। आकृति भयङ्कर होती थी उनका चरित्र बुरा न रहा। गयासुर अतिशय धार्मिक और नम्र-स्वभाव थे। अकारण वह किसीका कोई अनिष्ट न करते थे। वह कुछ दिन पीछे कीलाहल पर्वत पहुँच करके विष्णुकी आराधना करने लगे। उनकी कठोर तपस्या देख करके देवताओंके प्राण खरा गये, वह सब मिल और परामर्श करके पिता-महके निकट पहुँच करके कहने लगे—गय यदि इसी प्रकार और थोड़े दिन तपस्या करेंगे, तो सभी देवता

लोग अपने अपने अधिकारोंसे वञ्चित नगि, अत इसी ममय पितामह । इसका जो हो, विधान कर दोजिये । विरिञ्चि देवगणको ले करके विष्णुके निकट उपस्थित हुए । वहीं एक सभा होने पर ठहरा था—इसी समय सब मिल गयको घर दे करके विरत करें । इसी परामर्शके अनुसार ब्रह्मा, विष्णु प्रभृति सभी कोलाहल पर्वत पर जा उपस्थित हुए और गयासुरकी वर देने लगे । परोपकारी गयासुरने राज्य, पञ्चवर्ष प्रभृति कुछ भी न माग करके कहा था—यदि आप लोग मुझ पर सन्तुष्ट हुए हैं, तो ऐसा विधान करें—जिसमें मेरा शरीर ब्राह्मण, तोर्ष-शिला, देवता, मन्त्र, योगी, मन्वासी, कर्मि, धर्मि प्राति आदि सभी पवित्र पदार्थोंसे भी पवित्र हो जावे । देवगण असुरकी चालाकी ममभक्त न सके, उसने जो मांगा, स्वीकार करके यथास्थानको चला दिए । गयासुरका शरीर पवित्र हो गया । यह फिर नगर भ्रमणकी निकले थे । उनका पवित्र शरीर देख करके सभी जीवजन्तु चतुर्भुज हो वैकुण्ठकी चलने लगे । नगर जनशून्य हुआ था । फिर गयासुर जिमी नगर या ग्रामको गये, प्राणियण चतुर्भुज बनने लगे । उस समय देवताओंनि असुरकी चालाकी ममभी, परन्तु कोई युक्ति ठहरायी जा न सकी । यमकी ही चिन्ता अधिक थी कारण गयासुरका शरीर पवित्र होने पीछे कोई पशुपत्नी यमके घर नहीं पहुँचा । यम और दूसरे देवताओंनि साथ साथ पितामहके निकट जा करके कहा था—‘प्रभो । सर्वनाश उपस्थित है । गयासुरका पवित्र शरीर देख करके सभी वैकुण्ठ चले जाते हैं । यमपुरी एक प्रकारसे प्राणीशून्य है । आप जो हो, कोई उपाय बतला दोजिये । ब्रह्मा देवगणको ले करके विष्णुके निकट पहुँचे । विष्णुके परामर्शसे गयासुरका शरीर यज्ञके लिये मांगा और कई ब्राह्मण कल्पना करके उनसे उसका अनुष्ठान करवाया गया । समस्त देवगण उस यज्ञमें पहुँचे थे । गयासुरके शरीर पर ही यज्ञ किया गया । ब्रह्माके आदेशसे यमने धर्मशिला ले जा करके गयासुरके ऊपर रख दी और असुरकी निशान बनानेके लिये सब देवता उसके ऊपर चढ़ करके खड़े हुए । किन्तु इससे गयासुर निश्चल न हुआ । पीछेकी गदाधर विष्णुके जा

करके खड़े होनेसे वह ठहरा था । गयासुर देवताओंका उद्देश समझ करके कहने लगा—यदि आप एक बार भी इस अधमसे कुछ देते, तो मैं कभी न हिलता हुनता । देवगणने इस पर अतिशय सन्तुष्ट हो करके वर मांगने की कहा था । गयासुर तब बोल उठा—आप ऐसा वर दोजिये—जिसमें चन्द्र, सूर्य वा पृथिवीके रहने तक समस्त देवगण इस शिला पर अवस्थित करे, मेरे नाम पर यह स्थान एक पुष्पक्षेत्र बने, पांच कोस गयाक्षेत्र तथा एक कोस गयाशिर रहे और यह मकल तीर्थसे थोड़ा उठे । देवगणने वही स्वीकार किया और गयासुर निश्चल हुआ । (महाभाष्यका)

देवगणके गयाशिरमें पदार्पण करनेसे गयाक्षेत्रमें देव तीर्थकी पदचिह्न देख पड़ते हैं । गयामाहात्म्यमें लिखा है कि उल्ल सभी पञ्चिह्नों पर पिण्डदान करना चाहिये । आज कल बहुतसे लोग श्रेयोक्त विवरण समझते और गयाके पण्डा भी इसी प्रकार गयातीर्थ की उत्पत्ति कोतन करते हैं । किन्तु यह उपाख्यान अधिक प्राचोन जैसा नहीं मालूम पड़ता । महाभारतमें गयाक्षेत्रके मध्यस्थ अनेक तीर्थोंका उल्लेख है । किन्तु उसमें गयासुर अथवा उसके मस्तक पर गदाधर और अन्यान्य देवगणोंके पदस्थानोंको कोई बात नहीं । महाभारतमें विद्वत हुआ है कि गयामें गयाशिर, अक्षयवट, महानदी, धर्माण्ड, ब्रह्मर, धेनुकतीर्थ, श्मश्रुवट, उदन्त पर्वत, पोम्बिहार, फलु तीर्थ, धर्म प्रस्थ, मतज्ञान्यम और धर्म तीर्थ विद्यमान है । फिर वायुपुराणीय गयामाहात्म्य तथा अनिनपुराणमें जिन स्थानों, तीर्थों वा देवपदों पर पिण्डदानकी कथा है, महाभारतमें उसका भी कोई उल्लेख नहीं । उसमें इतना ही लिखा है कि गयामें धर्मराज स्वयं वाम करते और विनाकपाणि भगवान् शङ्कर निरन्तर सन्निहित रहते हैं ।

गयाके तीर्थ दर्शनादि सम्बन्धमें नियम बधा हैं । त्रिस्थलीसेतु और गयायात्रा पर्वतमें लिखते हैं—जिस दिन गयायात्रा करना, पूर्व पूर्व दिनकी एकाहार तथा हविष्य भोजन करके और स्त्रीसमर्ग छोड़ शुचि भावसे रहना चाहिये । उसके दूसरे दिन प्रातः स्नानादि करके देगकाल नियमानुसार गयायात्राक अन्नरूप उपवास

करके सङ्कल्प करते हैं। फिर गयायात्राके दिनकी प्रातः-
कृत्यादि समापन तथा इष्टपूजादि करने पीछे मस्तक
सुण्डन करके वंशपरम्पराके अनुसार आह्न किया जाता
है। आह्वान्तकी अपना ग्राम पांच बार प्रदक्षिण करके
भूत पितृपुरुषोंसे अपने साथ गया चलनेका अनुरोध
करना चाहिये।

गयामाहात्म्यमें बतलाया है—गयामें आ करके सर्व
प्रथम सवस्त्र फल, तीर्थमें और फिर ब्रह्मकुण्डमें स्नान
और तर्पण किया जाता है। पीछे प्रेत पर्वत पर प्राची-
नाथीती और दक्षिण मुख हो करके निम्नलिखित मन्त्र
द्वारा पितृलोकको आवाहन और पूजा करके पिण्डदान
करना चाहिये—

“कव्यवालोऽनलः सोमो वनश्चैवायं सा तथा ।

अग्निप्राणा नर्दिपदः सोमथाः पितृदेवताः ॥

आगच्छन्तु महाभागः युष्माभोरभितानथा ।

मदीयाः पितरो ये च कुक्षी जाता सनामयः ॥

तेषां पिण्डप्रदानाय आगतोऽग्नि गयामिमाम् ।

ते सर्वे दक्षिमायातु आदे नाम्न गच्छन्तु ॥”

आहार्यं जल ले करके प्रेतपर्वत पर रखने पीछे
सुवर्णरेखाङ्कित शिला पर जा पादश्रीचादि करके पूर्व-
दर्शित ‘कव्यवाल’ इत्यादि मन्त्रसे आवाहन करते हैं।
फिर गायत्री पाठ करके पञ्चगव्य द्वारा आह्नस्थान शोधन
किया जाता है। इसके पीछे प्रेतपर्वतमें आह्न वा पिण्ड-
दान करके पितृगणके और अपने प्रेतत्वकी मुक्तिकामनासे
सङ्कल्प करके तिलमिश्रित सत्तू और तिल अञ्जलि
प्रमाण दान करना चाहिये। प्रायः ४०० सिद्धिया चढ़ने
पीछे प्रेतशिला पर पहुँचते हैं। यहाँ पादश्रीच सङ्कल्प
करके ‘कव्यवाल’ इत्यादि मन्त्रसे आवाहन और उनका
आह्न तथा पिण्डदान मात् करते हैं। फिर प्रेतशिलाके
नीचे प्रभासपर्वतमें सङ्गत महानदीके रामतीर्थकी जाना
चाहिये। महाभारतमें इस रामतीर्थका उल्लेख न होत
भी महानदीकी बात लिखी है। इसके मतानुसार महा-
नदीमें स्नान करके पितृलोक तथा देवगणका तर्पण
करनेसे अक्षयलोक लाभ और निज कुल उद्धार होता है।

(पृष्ठ ८४ पृ०) गयामाहात्म्यके मतमें वहाँ

“कन्याकरभतं सायं यन्मया दुष्कृतं कृतम् ।

तदुच्यते विलय यातु रामतीर्थाभिषेचनात् ॥”

मन्त्र पाठ करके स्नान किया जाता है। पीछे आह्न
तथा पिण्डदान करके—

‘राम राम महाबाही देवानाममहेश्वर ।

त्वां नमामस्तु देवेश मम शत्रुतु पापम् ॥”

मन्त्र द्वारा रामको प्रणाम करना चाहिये। फिर यम-
राजके निकट प्रार्थना करके यमवनि और कुबुरवनि
दिया जाता है।

इसो प्रथम दिवसकी उत्तरमानस भौ जाना
चाहिये। वहाँ मानस नामक एक सरोवर है। यह
गयाका प्रथमतीर्थ ठहरता और सुण्डपट्ट पहाड़ पर
पड़ता है। यहाँ—

“उत्तर मानसे स्नानं करोम्याम वसुदेव ।

सूर्यं लोकादिषु सिद्धिभिश्च ये पितृभुञ्जते ॥”

मन्त्रपाठपूर्वक स्नान करते हैं। फिर देव प्रभृतिका
तर्पण करके पिण्डदान और आह्न किया जाता है। वहाँ
मौनी हो करके दक्षिणमानसकी चलते हैं। उत्तरमानस
और उटीची नदीके मध्यमें कनखल नामक एक पितृ-
मुक्तिदायक तीर्थ है। गयामाहात्म्य और अग्निपुराणके
मतसे उस तीर्थमें स्नान करने पर पुनर्जन्म लेना नहीं
पड़ता।

विष्णुपद मन्दिरसे थोड़ी दूर पर एक सरोवर और एक
सूर्यमन्दिर है। गयामाहात्म्यमें वहाँ सूर्यमूर्ति मौनार्क
नामसे वर्णित हुई है। इस मन्दिरका नाटमण्डप
दक्षिणमें ३८ फुट और प्रस्थमें साठे २५ फुट निकलेगा।
इसके पश्चिमांशमें गर्भगृह है। वह प्रायः ८ वर्गफीट
पड़ता है। मन्दिरका प्राचीर इष्टकनिर्मित है, परन्तु
स्तम्भ पत्थरके लगे हैं। अरुणचालित सप्ताश्वरथ पर
द्विहस्त सूर्यमूर्ति विराजमान है। उक्त सरोवर भी चारों
ओरों प्राचीरवेष्टित है। वह दक्षिणमें २८२ और प्रस्थमें
१५६ फुट बैठता है। सरोवरसे पश्चिम नीमका एक पेड़
है। इस स्थानको लोग कनखल कहते हैं। उससे दक्षिण
दक्षिणमानस है। यहाँ भी तीन तीर्थ विद्यमान हैं। इस
सरोवरमें—

“दिवाकरकरोमोहऽस्नान दक्षिणमानसे ।

नमामि सूर्यं देवाद्यं पितृणां तारणाय च ।

पुत्रपौत्र धनं श्रियायापुरोग्यहृदये ॥”

मन्त्रद्वारा स्नान तथा पूजा करके आह्न और पिण्डदान

करना चाहिये। दानारामें यही मन्त्र पढ़ करके मौनकी-
को नमस्कार करते हैं।

उसके पीछे (दूसरा दिन) फल्गुतीर्थ गमन करना
चाहिये। यह तीर्थ अति प्राचीन है। महाभारतमें
भो निरा है कि गयाख फल्गुतीर्थ जानसे अश्वमेधका
फल और मन्त्रसिद्धि लाभ होता है। (वनपर्व ८४ ख०)
वायुपुराणीय गयामाहात्म्यके मतानुसार पूर्वकालकी
ब्रह्माजी प्रार्थनासे विष्णुने फल्गुरूपी हो करके दक्षि
णानिमें जो होम किया, उसीको रज कणसे फल्गुतीर्थ
बना है। गङ्गा विष्णुकी पादजला है। किन्तु फल्गु-
तीर्थ स्वयं आदिगदाधरके द्रवीभूत होनेसे बाने पर
गङ्गासे थोड़ा है। त्रिभुवनके सकल पवित्र तीर्थ स्ना-
कालको फल्गु तीर्थ में सम्मिलित होते हैं।

(गयामाहात्म्य ५१५-१६)

अथर्वपुराणके मतमें गयागिरि ही फल्गुतीर्थ है।
फल्गुतीर्थमें स्नान करके गदाधर दर्शन करनेसे जो सुकृत
लाभ होता, और किसी प्रकार भो मिल नहीं सकता।
(अथर्वपुराण ११५४८) गयामाहात्म्यमें अन्वय कला है कि
नागकूट, शृङ्गकूट और उत्तरमानस सबके मध्यवर्ती
स्थानका नाम गयागिरि वा फल्गुतीर्थ है। सुगण्ड
पर्व तक निम्नस्थानमें ही फल्गुतीर्थ पड़ता है। यहाँ—

“फल्गुतीर्थ” विष्णु शक्ति स्वरूपि च नमोऽस्तु ।

वितर्षा विष्णुशोभाय मुनिमुक्तिप्रसिद्धये ॥

मन्त्रसे स्नान तथा तर्पण करके प्रेतशिलासलन
ब्रह्मकुण्डमें नद्या स्वगात्राके अनुसार आह और पिण्ड-
दान करना चाहिये। पीछे—

“मम पिताप देवाय ईमान पुत्राय च ।

अधोर वामशोभाय सद्योऽप्राय शयने ॥”

मन्त्रसे पितामहकी और फिर—

“वामो वासुदेवाय नमः सद्यश्च यव च ।

ब्रह्मसाधोदिरहाय शोभाय च विष्णवे ॥”

मन्त्रसे गदाधरको प्रणाम तथा पूजा की जाती है।

तीसरे दिन धर्मारण्यको गमन करते हैं। इस स्थान
पर धर्मराजने यज्ञ किया था। यहाँ मतङ्गवापिमें स्नानान्त
को तर्पण तथा आह करना चाहिये। पीछे निम्नलिखित
मन्त्रसे मतङ्गेश्वरकी प्रणाम करते हैं—

“ब्रह्माय नमः। कुरु भोऽहं प्रायश्चित्तम् ।

मयायत्नं कुरु इति वितर्षां निष्कृतं ॥”

धर्मारण्यके पुत्रको ब्रह्मतीर्थ है। महाभारतमें कहा
है कि धर्मारण्योपयोगित ब्रह्मसरतोर्धमें गमन करनेसे
ब्रह्मलोक लाभ होता है। ब्रह्माने उम मरीचरमें एक यूप-
काष्ठ निखात किया था। उस यूपको प्रदक्षिण करनेसे
अश्वमेधका फल मिलता है। गयामाहात्म्यके मतमें छह
ब्रह्मरूप और ब्रह्मयूपमें आह करनेसे पितृगणका उद्धार
होता है। इसीके निकट (बोधगदास्य) महाबोधि नामक
अश्वमेधकर्म है। धर्म और धर्मेश्वरकी नमस्कार करके
महाबोधि तरुको निम्नलिखित तीन मन्त्रोंसे नमस्कार
करना चाहिये—

‘अथर्वण्य उवाच सदा श्रितैस्तैः ।

वशिष्ठस्य यथाय यथाय नमो नमः ॥

एकामोऽसि हृदायां वसुधां ५१५४८ ॥

गौराण्योऽसि देवानां उवाच इति विष्णुः ॥

अथ यथायत्नं कुरु इति वितर्षां निष्कृतं ॥

अथ यथायत्नं कुरु इति वितर्षां निष्कृतं ॥

अथर्वपुराण (११५४८) में भी लिखा है कि महाबोधि
तरुकी नमस्कार करनेसे धर्म और स्वर्गलोक मिलता
है। किन्तु महाभारतमें इस महाबोधितरु अथवा धर्मेश्व-
रका कौड लम्बे रहें। बुद्धदेवके अश्वमेधकर्म मूलमें
महाबोधि लाभ करनेसे बोध समाजमें यह महाबोधितरु
फहलाता है।

ब्रह्मसरके निकट गौमचारतीर्थ है। आजकल यज्ञ
एक आम्बलक रङ्ग गया है। गयामाहात्म्यके मतमें यह
प्राग्जलक ब्रह्मरूपिण्य है। इसके उल्लसूलको—

“अथ ब्रह्मसरतोर्ध सदा देवनाय नमः ॥

विष्णुय प्रसिधामि वितर्षां मुक्तिद्वैतये ॥”

मन्त्र पाठ करके मीचना चाहिये। फिर ब्रह्मयूपको प्रद-
क्षिण करके—

“वामो वासुदेवाय नमः सद्यश्च यव च ।

ब्रह्मसाधोदिरहाय शोभाय च विष्णवे ॥”

मन्त्र पढ़ कर ब्रह्माकी प्रणाम करते हैं। इसके पीछे
यथाक्रम यमवलि तथा कुङ्कुर्वलि दिया जाता है।
यमवलि चटानिका—

‘वमराज धमराजो नित्यथाय विष्णुः ।

ताथी वनि प्रणालामि वितर्षां मुक्तिद्वैतये ॥”

और कुङ्कुर्वलिका मन्त्र—

‘ही आनी श्यामधवनी वेत्सतकुल इवौ ।

तामरा वनिं प्रदायानि रमेनां पयि सर्वदा ॥

है। पीछे निम्नलिखित मन्त्रसे काकवलि दे कर स्नान करना चाहिये—

‘ऐन्द्रवारुणशयश्चगामा वं नैऋतामना ।

वायसाः प्रविशन्तु मुमया िन्द्र मधीन किन्म ॥’

चतुर्थ दिवस फाल्गुतीर्थमें स्नान करके गयाशीर्ष पर विष्णुपटकी यात्रा करते हैं। विष्णुपटका मन्दिर ही गयाके मध्य सर्व प्रधान है। इसके नाटमन्दिरका कारु-कार्य अति सुन्दर लगता है। गया ग्रामके मध्य ऐसा कारु-कार्य तथा गठनप्रणाली अन्य किसी मन्दिरमें देख नहीं पड़ती। महाराष्ट्र रानी अहल्या बाईने यह सुप्रसिद्ध मन्दिर निर्माण करा दिया। इस मन्दिरकी निर्माण करनेमें प्रायः ८ लाख रुपया व्यय हुआ था। मन्दिर धूमरवर्ण ग्रनाइट प्रस्तरनिर्मित है। मण्डप ५८ फुट चतुरस्र पड़ता है। प्रत्येक कोणमें आठ आठ खम्भे लगे हैं। मूलस्थान बुर्ज जैसा अठकोना है। उसका विस्तार कोई ३८ फुट बैठेगा। इसके ऊपर ८० फुट ऊंची चूड़ा है। नाटमन्दिरके मध्यमें मूलमन्दिरके सामने नेपाल-मन्त्री रणजित् पांडेकी टी हुई एक बड़ी घण्टा लटकती है। उसका निनाद, यात्रियोंका जयध्वनि और ब्राह्मणोंका गभीर मन्त्रपाठ श्रवण करनेसे मनमें स्वतः भक्ति सञ्चार होता है। यहां लोगोंकी जितनी भीड़ रहती, गयामें और कहीं भी देख नहीं पड़ती। इसी मन्दिरमें हिन्दूओंके आराध्य गदाधरका पादपद्म है। पादपद्मकी चारों ओरों रौप्यमण्डित है। इसी स्थान यात्री लोग पिण्डदान करते हैं। उनको फेंकते ही पिङ्गलवर्णकी गायें खा डालती हैं। गयामाहात्म्यके मतमें वही गयासुरका साक्षात् मस्तक विन्ध्यस्त है, वही गयासुरका मुख्य स्थान है। वहां यात्र करनेसे अक्षय पुण्य पाते हैं। आदिगदाधर पिङ्गलवर्णकी मुक्तिके हेतु व्यक्त तथा अव्यक्त रूपमें विष्णु पदकी भांति वास करते हैं। वहां यात्र और पिण्डदान करनेसे अपने आप और महस्तकुल विष्णु-श्लोक पढ़ते हैं।

विष्णुपट मन्दिरके निकट गयेश्वरीदेवीका एक प्रसिद्ध मन्दिर है। साधारण लोग उन्हींको गयाकी अधिष्ठात्री देवी मानते हैं।

विष्णुपटमन्दिरका कार्य शेष करके यात्री नाटमन्दिर छोड़ किमी स्थानमें पहुंचते, जहां ब्रह्मपट, रुद्रपट, टत्ति-णाग्निपट, गार्हपत्यपट, आहवर्णीयपट, मध्यपट, आव-सख्यपट, अर्कपट, कार्तिकेयपट, इन्द्रपट, अगस्त्यपट, काश्यपपट, गजकर्णपट प्रभृति पट मिलते हैं। एतद्-व्यतीत दधीचिपट, चन्द्रपट, मातङ्गपट, कर्णपट, कौञ्च-पट इत्यादि १८ पटों पर यात्र तथा पिण्डदान करनेका विधान है। आजकल बहुतसे लोग उक्त पटोंके मध्य केवल रुद्रपट और विष्णुपट पर ही पिण्ड दिया करते हैं। गयामाहात्म्यमें लिखा है कि एकतम पटमें यात्र करनेमें भी यजमानका मङ्गल होना है।

पञ्चम दिवसकी गटालीनतीर्थमें स्नान करके यात्र और पिण्डदान करना चाहिये। फिर सबसे पीछे अक्षय वट पहुंचते हैं। महाभागमें लिखा है कि राजर्षि गयके यज्ञकालकी एक वृक्ष चिरजीव हुआ, जिसका नाम अक्षयवट है। (शोषणं ११५०) गयामाहात्म्यके मतमें वहां पितृ उद्देशमें जो कुछ भी दिया जाता, अक्षय फल पहुंचाता है।

गयामाहात्म्यके अनुसार ही यह तीर्थ यात्रा कथा लिखी गयी है। इसको छोड़ करके गयाके बीच गाय-वीतीर्थ, भसुद्धितीर्थ, सरस्वतीतीर्थ, विशाला नदी-लैलिहान तीर्थ, भरताश्रम, वैतरणी नदी, घृतकुल्या तथा मधुकुल्या, कीर्तितीर्थ, रुक्मिणीतीर्थ, पाण्डुशिला, मधु-श्रवानदी, कर्दमालतीर्थ, आकाशगङ्गा, स्वर्गद्वार, योनि-द्वार, ब्रह्मयोनि, धौतपाट, माहेश्वरीतीर्थ, टं वटारुवन, देवीरूपाशला, धर्मशिला वा धर्मप्रस्थ और सुगडपृष्ठा-द्रिका भी उल्लेख हैं। फिर आधुनिक गयायात्रा-पद्धति-में रामशिला, रामगया, जीव्यालोल, रामगिर, तामशिर, सातशिर, भीमगया प्रभृतिका भी नाम मिलता है। आज-कल जो लोग गयास्थ ४५ वेदियां प्रयटन करना चाहते, १३ दिनमें सब तीर्थोंका स्नान दर्शन कर सकते हैं।

रामाशिला पर्वत पर महादेव तथा पार्वतीका मन्दिर और नाटमन्दिर है। इसी पहाड़के पाददेशमें रामकुण्ड अवस्थित है। गयाके मध्य फाल्गुनदेवीके तट पर सुंडपृष्ठ नामक एक छोटा पर्वत है। उभक्त ऊपर किसी मन्दिरमें अष्टभुजा देवीसूति, विराज रही है।

इसकी निरुद्ध आदिगया नामक स्थान है। उसके चारों ओर पत्थरके खम्भे लगे हैं। प्रवाद है कि पूर्वकालकी वहाँ सब लोग ३१ करके पिण्डदान करते थे। ब्रह्मयोनिः पर्वत पर एक अद्भुत गड्ढर है। उसीको भीमगया कहा जाता है। लोगोंकी विश्वास है कि वहाँ भीम घु टने टिका धरके बैठे थे। पहाड़में आज भी उनके बायें घु टनेका चिह्न बना है। इसीसे यात्री भीमगयामें बायें घु टनेके बल बैठ करके पिण्डदान करते हैं। इसी ब्रह्मयोनि पर्वत पर पञ्चानना आदिशक्ति का मन्दिर है। यह १६६० मसूतकी बना था। यहाँ अनेक देवमूर्तियाँ पड़ी हैं। सम्राट् औरङ्गजेबके दौराकालमें यहाँकी मूर्त की देवमूर्तियाँ भग्न और खोड़ीन हो गयी हैं।

गयावासियोंकी विश्वास है—ब्रह्मनि गयावालोंकी जो गो प्रदान किया, यह उसका पदचिह्न है। किन्तु महाभारतमें लिखा है—पृथकी पर्वतोपरि सञ्चरण कालमें मत्स्य कपिलाका जो पद चिह्न पड़ा था आज भी नहीं मिटा है इन ममभ्र पदचिह्नमें खान करनेसे मत्स्य प्रकार अशुभ विनष्ट होता है। (ममभ्र पृ ४४)

मत्स्य वैदियोंका दर्शन और पिण्डदानादि गेय होने पर यात्री गायत्रीघाटमें जा चुक्त हैं। यही गयागल या करके सुफल बोलते हैं। लोगोंकी विश्वास है, गयावालोंके जाकर सुफल प्रदान न करनेसे सभी कार्य भिन्न जाते हैं। इसीसे उस समय गयाघाल तीर्थयात्रियोंकी देवा करके बैठ जाते और जहाँ तक हो सकता, उनसे शेष दक्षिणास्वरूप रूपया ले लेनेमें नहीं चूकते। वसुत सुफल बोलनेके समय पर ही गयाघाल यात्रियोंके पासमें औरके साथ अधिक अर्घ्यलाभ किया करते हैं। पहले यहाँ सुफल देने समय यात्रियों पर विनम्रण उच्योडन होता था। आजकल अद्भुत गर्भ सिष्टके शमनगुणमें उतना उच्योडन हो नहीं सकता।

पूर्वकालकी गयाघाल की तीर्थयात्रियोंके साथ स्वयं करके यादकार्यादि करते थे, परन्तु अब यह बात नहीं रहने। आजकल गयागल व न बड़े धनो हो गये हैं, अशुभे लिये किसीको कोण भावना नहीं। सुतरां आजकल यह अपने आप कोड़ न करके धामिन

नामक अधोनम्य ब्राह्मणों द्वारा हो सब काम कराया करते और केवल सुफल देनेके समय पर ही देख पड़ते हैं। गयागल देखो।

गयाका दूमरा नाम पिलतोर्थ है। कारण यहाँ आ करके हिन्दूमात्र पिलपुरुषोंके उद्देश्य पिण्ड देनेका विधि है। गयामाहात्म्यमें लिखते हैं—

‘शामनयात्रो वापि गतोयात्रे यमन।

यत्र या यात्रेण दिव्य तत्रैव तत्रैव यमनम् ॥’ (११२४)

निज पुत्र किया और कोई किसी भी समयकी गया जा करके जिमरा नाम ले कर पिण्डदान करता, वरुण श्रावत तन्नाथाम पहुँचता है।

गयायां श्रमकायिषु दिव्य ऽदात्त विचक्षणः ।

अपिसी जन्मिन्मि यम व शुद्धपुत्रो ह

न यत्रय गगयाद्य वि ह्वये च ह्वयनीः । (११२५)

मलमा जन्मदिन, मिहय्य इहय्यति और सर्वकाल पर पण्डितोंकी गयामें पिण्डदान करना चाहिये।

‘यत्कामु च ह्यो च गदायां च घटे-नि।

नीतु यात्रे पूयत्र कुर्वानम्य पतिना मद्रु ।

इतिरात्रे तु मातादि गयायां पितृपुत्र कम् ।

मत्स्यमा सुदिनात् यत्पदात्तययिष्यन्तु ।

मिनाश्रमपुत्र्यादि पिण्डद्वयं तु च क्वये ।

पायसीनापि यत्रया मत्स्यमा पितृकेन वा ।

शुभे न तत्र लायेनां पिण्डान् विधीयते ।

मुदिनात्तत्रैव शैव शिवात्मकमात्मतः ।

यमोपवसथापेन दिव्य दशात्मकयात्रिरे ।

उद्दरेण सुभगीयति कुम्भेकोपार मन्तु ।

आता पिता च माता च भगिनो दुहिते पति ।

पितृवशा मातृवशा मरुत वा प्रकीर्तितः ।

वि कर्मिणि प्रति पित रते स्था यात्राकामान् ।

पत्नी माहात्म्याय कुलायकोपर मन्तु ॥ (१४)

अटकादिचम, हृदिकाल, गयातीर्थ और मृतदिनमें माताका याद पितामें पृथक करना चाहिये। हृदिकालकी पहले मातृगण और पीछे पितृगणके याद करने का विधान है। परन्तु गयामें पहले पितृगण और पीछे मातृगणका याद करना चाहिये। तिल, घृत, मधु दधि प्रशस्तिके साथ मुट्टि प्रमाण शस्तु द्वारा पिण्ड दिया करते हैं। पायस, चरु, मत्स्य पिटक गुड और तन्तु, लादिये भी पिण्ड दे सकते हैं। गयागोर्धमें मुट्टि

• गयागयाः श्रमकायिषु दिव्य ऽदात्त विचक्षणः । अपिसी जन्मिन्मि यम व शुद्धपुत्रो ह न यत्रय गगयाद्य वि ह्वये च ह्वयनीः । (११२५)

प्रमाण, एक ही आमलकी प्रमाण अथवा अन्ततः एक (सुद्र) शमीपत्र प्रमाण भी पिण्ड देना चाहिये। यहाँ पिण्डप्रदान करनेसे पिता, मातामह, श्वशुर, भगिनीपति, जामाता, पितृव्यसृपति और मातृव्यसृपति-सप्तगोत्रका उद्धार होता है। इसमें पिता तथा मातामहके वीस, श्वशुरके आठ, भगिनोके चौदह, जामाताके मोलह, पितृव्यसृपतिके ग्यारह और मातृव्यसृपतिके बारह—१०१ कुलजात लोग सुक्त होते हैं।

गयामें स्त्रीपुरुषको एक योगसे पिण्डदान करनेका नियम नहीं है—

“हृगोव पंगोवे वा दम्पत्योः पिण्डपातनम्।

अथक् निष्फलं यादं पिण्डसौदकतर्पणम् ॥”

यहाँ स्त्री पुरुषके एकयोगसे स्वगोत्रीय वा भिन्न गोत्रीय सृत व्यक्तिके उद्देशमें पिण्डप्रदान वा तर्पण करना निष्फल होता है।

गरुड़ पुराणके मतमें—

“तीर्थं याद्व गयायाद्वं याद्वमन्त्रं चैतकम्।

अन्धमन्त्रे न कुर्वीत महागुरुनिपातने ॥”

तीर्थं याद्व, गयायाद्व और कोई भी दूसरा याद्व महा गुरुनिपात होनेके एक वर्ष मध्य करना न चाहिये।

किन्तु त्रिस्थलीसेतुको देखते—

“अस्थिचिपं गयायाद्वं याद्वं चापरपत्रिकम्।

प्रथमान्देऽपि कुर्वीत यदि स्वाङ्गिकमान् सुतः ॥”

फिर भी पुत्र यद्यार्थं भक्तिमान् होनेसे अस्थिचिप, गयायाद्व और अपरपत्रयाद्व एक वर्षके बीच ही कर सकता है।

मैत्रायणीय परिशिष्टमें लिखा है—

“मान्दक्यं गयाप्राप्ती मर्त्यां यच्च चयाहनि।

मातुः याद्वं सुतः कुर्यात् पितापि पि च जीवति ॥”

अर्थात् पिता जीवित रहते भी पुत्र माताका याद्व गयामें कर सकता है। किन्तु हारीतके—

“जीवे पितरि वै पुत्रः याद्वं याद्वं विवर्धयेत् ॥”

वचनानुसार जीवत्पितृका याद्वमें कोई अधिकार नहीं। इसी प्रकार भिक्षु वा संन्यासी लोग भी गयामें पिण्डदान कर नहीं सकते। गयासाहाय्य (११२२) के मतमें—

“दण्डं प्रदणं वैद्विहर्गं यां गत्वा न पिण्डदः।

दण्डं स्य, एा विष्णुपदे पिण्डभिः सह मोदते ॥”

भिक्षुको गयामें पिण्डदान न करके दण्ड प्रदण न करना चाहिये। दण्डद्वारा विष्णुपदे स्पर्श करनेमें ही वह पिण्ड-लोकके साथ गान्धिप्राग होता है।

गयाकाश्यप—शाक्यमिच्छया एक प्रधान गिष्य। गयामें इन्होंने बुद्धदेवसे टीक्षा पाई थी।

गयादाम—एक वैद्यक ग्रन्थकार। भावमित्र और वैद्य-वाचस्पतिने इनका मत उद्धृत किया है।

गयाटीन—रामगोतगोविन्द नामक संस्कृत काव्यप्रणेत।

गयारी (हिं० खी०) निर्भी सृष्टस्वर्का वह जोम जिसे वह लावारिस छोड़ कर मर गया हो।

गयाल (हिं० पु०) वह सम्पत्ति जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो।

गयाली—गयावामी ब्राह्मण जाति। तीर्थयात्रियोंकी पितृपुरुषका पिण्ड दिलाना और याज्ञाटि क्रिया कराना इन्हेंका प्रधान कर्तव्य है। प्रवाद है कि गयापुरके पृष्ठ पर ब्राह्मण भोजन करानेके लिये पद्मयोनि ब्रह्मणे चौदह ब्राह्मणोंकी सृष्टि की थी। उन्हीं ब्राह्मणोंसे इन लोगोंकी उत्पत्ति है। इनमें चौदह गोत्र हैं।

आजकल इनके कुल ३०० घर हैं। इन लोगोंमेंसे बहुत थोड़े पढ़े लिखे हैं। यात्रियोंसे रुपया वसूल करना इनका मुख्य कार्य है। ये वाल्यावस्थासे ही अपना समय बैठ कर ही व्यतीत करते हैं। पान, गांजा और भांग प्रभृति मादक वस्तुओंमें इन्हें बड़ी प्रीति है। ये नाच, गान, तमाशा, ताम और पाशा प्रभृति खेल बड़े आनन्दसे खेलते हैं। बड़े भाईके साथ आमोद प्रमोद करनेमें इन्हें जरा भी लज्जा नहीं आती है। मन्थ्रा समय ये बन्धुबान्धवोंके साथ वायु सेवनके लिये बाहर जाया करते हैं।

वाल्यावस्थामें ही इन लोगोंकी शादी होती है। विवाहमें इनका बहुत वय होता है। लड़का एक सुन्दर पालकी पर विठया जाता और आत्मीय स्त्रीयां भुंड बांध कर बारातमें जाते हैं। कन्याके घर पर लड़केकी पहुँचा कर विष्णुमन्दिरके निकट सूर्यकुण्ड सरोवर पर वे इकट्ठा होती है। यहाँ वे दो चार ब्राह्मणोंकी बठा कर रखती और सोहागिनी (नौवर्षकी विवाहिता लड़की) आकर ब्राह्मणोंकी पृष्ठ पर अपने हाथसे सिन्दूरका

तलक देती है और फूल चन्दनादिसे पूजा करनेके बाद ब्राह्मणोंको दक्षिणा देकर बिटा करती है।

धवाहकके बाद कन्या श्वशुरकी गोद पर बैठे जाते और उनके मोमन्तमें मिन्दूर दिया जाता है। तल्पघात करके आत्मीयगणकी नवीन वस्त्रादि दिये जाते हैं। चार दिनके बाद "बीथारि" या 'चतुर्थी' होती है और नवदम्पती स्वजन सहित रुक्मिणीकुण्डके तीर पर उपस्थित होती है। यज्ञ दिनके समय उन लोगोंके सामने एक छोटा नाटिकाभिनय खेला जाता है। इस समय कन्याके आत्मीय व्यक्ति कन्याके ऊपर घोडा चवान और कौडी रखते और कन्या इसकी धीरे धीरे फेंकती जाती एवं कृत्रिम क्रोध दिखाती है। इस पर वर उसको मान्यता देता है। इस प्रकारके अभिनयके समाप्त होने पर वे नृत्यगीत और भोजनादि शेष करके सन्ध्याके समय घर लौट आती है।

यात्रियमें प्रचुर धन उपार्जन करके ये सम्पत्तिगाली हो गयी है। इनमेंसे सामान्य मनुष्योंको भी पेटकी चिन्ता करनी नहीं पड़ती है। धनक गौरवसे ये अब स्वयं यात्रियोंका पोरोहित नहीं करते नैकिन अधीनस्थ दूरके ब्राह्मणको इस काममें नियुक्त करते हैं। जय यात्रियोंकी तोष यात्रा समाप्त हो जाती तो ये उन्हींसे अपना लभ्य यथेष्ट रूपमें वसूल करते हैं। गथा देखो।

गयाशिवर (म० क्लो०) गयाशिवर देखो।

गयाशोर्ष (म० क्लो०) गयाके निकटस्थ पर्वताश्रयण, गयाके समीपका एक पहाड।

गयाश्वत्थ (म० पु०) श्रमश्वत्थक, पेपडका पेड।

गयास उद् दीन—बङ्गालके एक सुलतान। यह सुलतान सिकन्दर शाहके लडके थे। सिकन्दर शाहके दो जीविय रहें। पहलीके पेटसे १७ लडके हुए। दूसरीके एक नीति बेटे गयास उद् दीन रहे। ये अपने मादपनसे और कई इनम पढ करके दूरके भाईयोंकी वनिस्वत बहुत बडे बन गये। उसीसे सिकन्दर शाह इनको बहुत चाहते थे। परन्तु इससे मोतेली माकी जनन धीरे धीरे बढ़ने लगी। यह तरह तरहकी तदयोरे लडाती थीं—सुलतान उनमें कौसे विगडते और सुख्यत न करते। किसी दिन सुलतानकी भक्तीला देख इनकी मोतेली मनि

बडी आरजू मिन्नतके साथ कहा—जहापनाह। मैं आपसे कुछ कहना चाहती हूँ, परन्तु हिम्मत नहीं पडती, कहनेसे आपका दिल दुखेगा और गुस्सा बढेगा। सुलतान उसको हो करके कहने लगी—कहो, मैं बुरा नहो मानूंगा, तुम अपनी बात कह डालो। इस पर वेगम गोल उठी—पहले आप काम खायें, किमोसे वह बात न बतायेंगे। सुलतानने वही किया था फिर वेगम कहने लगी—'इम वक्त मुझे बडो आफत है। आपने आज कहनेको चुन दिया है, मेरा जी न चारते भो मुझे कहना हो पडेगा। जात यह है कि गयास उद् दीन मेरे लडकीका बर्बाद धारनेके न्ये साजिग कर रहे है। सिर्फ यही नहो—आपकी भो मार डालनेकी बात वह कहा करते है। मेरी तरह आपकी भलाई कोई नहो चाहता। मेरा ममभूम उन्हे या तो कैदखानेमें डाल दोजिये या उनकी टोनीं आखे निकलवा ऐसी साजिग करनेसे नाकाम बनाइये। सिकन्दर शाह इस बात पर एक बारगो ही विगड कर बोले थे—'वदमाश। परम-श्वरने तुम्हे इनने लडके बाने दिये है, जो अब आदमी बन गये है। इसके न्ये परमेश्वरका शुक्या चदा न करके तुम्हे क्या अपनी मोतके एकलोते बेटेको बर्बाद करने पर कामर कसो है। दूर हो; मैं अब तरो बात सुनना नहीं चाहता।' सुलतानने यह बातें गयास उद् दीनको नही बतलायी। परन्तु यह रग डग देख करके शिकारके बहाने सुयर्ष ग्राम भाग गये और वहाँ फोज इकट्ठी करके और बलवाइ हो पाडुयाकी तर्फ चल पडे। खालपाडे पहुचने पर सिकन्दर फोजके साथ बलवा दवानेको बर्हा गये थे। लडाइ होने लगी। इहाने अपने मिपाहिदोंको समझा दिया था कि उनके बापके जिम्मे हथियारकी चोट लगने न पाती। परन्तु लडाइमें फरमा बरदारो नही चलती। सिकन्दरके जखमी होनेको खबर पा करके यह रीते रीते उनके पास गये और उनका सर अपनी गोदमें रख कर माफी मागने लगी। उस वक्त सिकन्दरने कहा था—मेरा काम तमाम हो गया है, तुम मज्जेम सलतनत करो। यही बात कहते कहते वह मर गये। १३६७ ई०को यह तप्यतनगौन हुए। फिर इहाने मोतेली माके लडकीकी आखे मिनाज उसीके

पास भेजो थीं। सिवा इसके गयास-उद्-दीनकी बेरह-
स्रीका दूसरा सुवृत नहो मिलता। यह ७ साल सुनमि-
फीसे सलतनत करके १३७३ ई०की मरे। इनकी सुनमि-
फी पर एक कहानी कहते हैं - किसी दिन गयास-उद्-
दीन कमान ले करके तोर चलाते थे। अचानक एक तोर
जा करके किसी बेवाके लड़केको लगा। बेवाने काजीके
पाम उन पर नालिश की थी। काजीने उन्हें अदालतमें
हाजिर होनेकी कहा। गयास-उद्-दीन एक तलवार
अपनी पोशाकमें छिपा करके अदालत पहुंचे थे।
काजीने कहा—तुमने इस गरीब बेवाके लड़केको मारा
है: इस लिये यातो इसे किसी तरह राजी करो, नहीं
तो फौसलेके सुताविक मजा मिली। सुलतानने मलाम
करके उस बेवाको खूब टोलत दो थी। उसने गयासको
माफ कर दिया और काजीके पास राजीनामा दाखिल
किया। काजीने जब उन्हें जानेके लिये कहा, सुलतानने
तलवार निकाल कर बताया था—‘यदि इस फौसलेमें
आपकी जरा भी तरफदारो देखता, इसो हथियारसे
आपका मर उतार लेता। अपनी सलतनतमें ऐसी सुन-
सिफी होने पर मैं परमेश्वरका शुकिया अदा करता हूँ।’
काजी भी अपना आसा देखा करके कहने लगे—आप
यदि नटखटपून करते, यह सींटा आपका जिस्म तोड़
डालता। सुलतानने उस पर और भी राजो ही करके
काजीको इनाम दिया था।

और भी एक कहानी है। गयास कुछ खुशतवा थे
तीन फूलोंके नाम पर उनकी तीन उपपत्नियां रहीं।
एक मरतवा बहुत बीमार होने पर उन्होंने लीगोसे कह
रखा था—मेरे मरने पर यही तोनीं औरतें मेरे जिस्मको
नहलायेंगी। परन्तु थोड़े दिनों बाद उनकी बीमारो
दूर हो गयी। इन तीनों उपपत्नियों पर ज्यादातर
सुहृवत रहनेसे दूसरी उपपत्नियां डाहमें ‘गोशाला’ कह
कर उनका मजाक उड़ाया करती थीं। सुलतान उसको
खबर पा करके सोचने लगे, कैसे उन तीनोंको कट
बढ़ाना चाहिये। अखीरकी उन्होंने तीनोंके नाम एक
शायरी बनायी थी। परन्तु उसका पहला मिसरा लिख
करके वह आखरी गिरह लगा न सके। पीछेकी फारस-
के मशहर शायर हाफिजके पाम लोग भेज गये। चिट्ठी-

में उनके बजाल आनिका बड़ा तकाजा था। जब लोग
हाफिजके पाम पहुंचे, उन्होंने बगैर कुछ कहे सुने पहने
दूसरा मिसरा सुना दिया। पीछे हाफिजने चिट्ठी पढ़ी।
उन्होंने जवाब भेज दिया, परन्तु बजाल जानैम इनकार
किया।

गयास-उद्-दीन लिखने पढ़नेके बड़े शौकान थे।
इन्होंने वीरभूमके नगर नामके शहरके रहनेवाले फकीर
हामिद-उद्-दीनसे धर्मनोति सीखी थी। येर कुतुब-
उल्-अलम इनके साथ पढ़नेवाला रहने। सुवर्णशामकी
टूटी फूटी इमारतोंमें इनकी कब्र आज भी मौजूद है।
गयास-उद्-दीन—बजालके एक सवदार। इनका दूसरा
नाम इमाम-उद्-दीन पिराज था। यह ईरान-गोर राज्य-
के किसी बड़े खानदानमें पैदा हुए और उम्र बढ़ने पर
रुपया कमानके लिये तुर्कस्तान पहुंचे। यहां पशुअफरोज
नामके किसी पहाड़ पर चढ़नेसे इन्होंने टो फकीरोंकी
देखा था। फकीरोंने इनसे पूछा—तुम्हारे पाम खानकी
कोई चीज है। उस वक्त इन्होंने खाना निकाल कर
रख दिया, फकीर लोग उसे खाने लगे। फिर यह
पानी ले आये थे। फकीरोंने खा पी करके इनसे कहा—
तुम हिन्दुस्थान चले जाओ, वहा तुम्हारे लिये तख्त खाली
है। यह उस बातको मान करके हिन्दुस्थान पहुंचे
और वख्तियारकी मातहतमें काम करने लगे। वख्त-
तियारने इन्हें बजालमें ले जा करके गङ्गतरौका हाकिम
वनया था। परन्तु आज तक इसका कोई पता नहीं
गङ्गतरौ कहां थी। जो ही, यह थोड़े दिनों बाद देव-
कोटकसे सूवेदार हो गये। उस वक्त देवकोट एक बड़ी
छावनी थी। इनकी मददसे बादशाहके अहलकारोंने
मुहम्मद सेवान और दूसरे खिलजी मरदारोंको जीता।
दिल्लीके बादशाहने वख्तियार खिलजीके पीछे अली-
मर्दान खिलजीको बजालका तख्त सौंपा था। अली-
मर्दानके आते वक्त यह कुशी नदी किनारे जा करके
उनसे मिले और उनके पीछे पीछे देवकोट पहुंच उनको
तख्त पर बैठा दिया। ६०७ हिजरीको बादशाह
कुतुब-उद्-दीनके मरने पर अलीमर्दानने दिल्लीकी मात-
हती न मान आजाद हो करके अपना नाम अला-उद्दीन्
रखा था। परन्तु २ साल बाद ही खिलजियोंने उन्हें

कतून करके ६०८ हि०को इन्हें सूबेदार बनाया । इमाम उद्द दीनने भी पीछेकी दिल्लीकी मातहतती छोड़ अपना नाम गयास उद्द दीन रख लिया । इन्होंने ६१६ हि०की अपने नामसे रूपया चलाया और गौहनगरमें बहुतमी अच्छी इमारतों, एक मदरसे और यतीमखानोंकी बनाया । बाटके वक्त मुल्कको पानीमें डुबनेसे बचाने और आने आनेमें लोगोंको तरुलोफ फुडानिके लिये इनके हुकमसे देरकोटसे वीरभूमकी राजधानी 'नगर' तक दस दिनकी राहमें बाध लगा था । मुकदमा फैसल करते वक्त यह क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, क्या अमोर क्या गरीब किमो की तरफदारी न करते थे । इन्होंने आमाम, त्रिहुत, त्रिपुरा और उडीसाका कितना हो हिष्सा जीत वहाके राजाओं से खिराज वसूल किया । इनके नजराना दिल्ली न भेजनेसे बादशाह अलतमाम फोजके साथ चट आये । परन्तु इन्होंने नार्वीकी हटा करके बाटशाहकी फाज गढ़ा पार न होने दी । अखोरकी सुलहका सदेगा भेजने पर बाटशाह ठण्डे पडे । सुलह हो गयी कि बादशाहके नामसे रूपया चलाया और उर्दके नाम पर फरमान सुनाया जावेगा, गयास उद्द दीन बहुतमी टोलत और ३८ हाथी बादशाहकी टेंगे और २ साल तक बरा बर दिल्लीकी खिराज भेजते रहगे । इनके उन मभी बातमें राजी होने पर बादशाह दिल्ली लोट और अला उद्द दीनको विहारका सूबेदार बनाये गये । बादशाहके अने जाने पर इन्होंने गढ़ा पार हो उन सबेदार और बादशाही फोजकी हटा विहारकी अपने इख्तियारमें कर लिया ।

बाटशाह यह खबर पाने पर बहुत विगड । उन्हो ने अपने बेटे नसीर-उद्द दीनको फौजके साथ बङ्गाल जीतने भेजा था । उस समय गयास उद्द दीन बङ्गालके पूर्वी राजाओं से लड़नेमें लगे थे । इस लिये नमोर उद्द दीनने अलहो भिडे अयध पहुँच करके लखनऊ राज धाने ले ली । इन्होंने यह खबर सुनते ही व । जा करके बादशाहक फौजसे घमामान लडाई की थी अखोरको हारने पर (६०४ हि०) यह मार डाले गये । गयास उद्द दीनकी तारीफ बादशाह अलतमाम तक किया करते थे ।

गयास उद्द दीन—बङ्गालके एक नवाब । ये नवाब जलाल-उद्द दीनके पुत्रको विनाश कर १५६४ ई०में बङ्गालके सिहामन पर बैठे थे । इन्होंने कुछ दिनों तक राज्य किये थे ।

गयास उद्द दीन करत् १२—हिराट चालख और गजनीके राजा । इन्होंने १३००से १३२८ ई० पर्यन्त राज्य किया था । गयास उद्द दीन करत् २५—हिराट, मरहम और नैसापुरके राजा । ये १३७० ई०को सिहामन पर बैठे और बारह वर्ष तक राजा रहे । १३८१ ई०में तैमूरलङ्गने हिराट प्रदेशको जय करके सपुत्र गयास उद्द दीनको बन्दीकर मार डाला ।

गयास उद्द दीन खिलजी—गुजरातके एक सुलतान । ये १४६८ ई०में सिहामन पर आरूढ हुए । ३३ वर्ष राज्य करनेके बाद जब ये हल हो गये तो उनकी दो लडकी उनही मृत्यु, कामना करने लगी । अन्तकी दोनों भाइयोंमें विवाद आरम्भ हुआ । ज्येष्ठ नामिर उद्द दीनने कनिष्ठ सुजात खाँको विनाश कर १५०० ई०के २२वीं अक्तूबरकी राज्यभार ग्रहण किया । एक दिन इमने अपने हल पिताकी विप खिला कर मार डाला ।

गयास उद्द दीन तुगलक—दिल्लीके एक बादशाह । इन का अमली नाम गाजीउग तुगलक था, बाप करानिया तुक और मा जाटन थी । इनके बाप सुलतान गयास उद्द दीन बलबनके गुलाम रहे । इन्होंने बडी गरीबोंमें अला उद्द दीन खिलजीके भाई उलग खाँकी मातहतमें मामूली सिपाहीका काम इख्तियार किया था । परन्तु हिम्मत और होशियारकी देख करके मालिकाने इन्हें ब । फौजदार बना देवलपुर भेज दिया । बादशाह नसीर-उद्द दीन या खुशरूके चालचलन पर बड बड लागोंने विगड उनके खिलाफ भाजिग करके बलवा उठाया था । यह बलवाइयोंके फौजदार हो करके नसीर-उद्द दीनसे लड । लडाईमें बादशाह हारने और मार गये । मुल्कके अमीर उमराने इन्हें तखत पर बिठला शाहजहा नामसे थडम बजाया था । यह बादशाह बनना नही चाहते थे परन्तु सबके बाधने सुननेसे इन्होंने मलतमतका बोध उठा लिया । इन्होंने शाहजहा जैसा एक जा विताव न ले करके अपना नाम गयास उद्द दीन रखा और एक ही

हफ्तके बीच चारों ओर इतनी अच्छी तरकीब लगायी, जो बहुत दिनोंसे देखनेमें न आयी थी। काबिल शखस समझ करके इन्होंने उमराको खिताब और जागीर भी दे डाली। उस वक्त हिन्दुस्थानमें मुगलोंका जोर जुला बढ़ रहा था, इन्होंने सब मुस्लिमोंको अच्छी तरह बचानेका इन्तजाम किया और खुशरूके तरफदारोंको दवा दिया। बड़े बंटे उलग खां मलतनतके वारिस ठहराये और दूसरे लड़के और और मुस्लिमोंको सुखुतार बना करके पहुँचाये गये। इससे बहुतसे मुस्लिमों और किलों पर बादशाहका दखल हो गया। लखनऊमें बलवा होने पर यह उलग खांको दिल्लीमें छोड़ अपने आप वहां पहुँचे और वहा बलवाइयोंकी हरा बहुतसी टीलत जवाहरात ले चले। सितार गाँवके हाकिम बहादुर खांने इनका हुकूम न माना था। उनके गलेमें जञ्जोर डाली गयी और उससे वह खींच कर लाये गये।

गोढ़े दिनों बाद बरङ्गलमें बलवा उठा था। बादशाहके लड़के उलग खांने जा करके शहरको घेर लिया। राजा लड्डरदेव उनसे बड़े जोरोमें लड़ें थे। गर्मी और लुसे धवरा करके बादशाहकी फौज धड़ाधड़ मरने लगी। सिपाही दिल्ली लौटने पर तुल गये और बहुतसे आदमी फौजदारसे वे कहें सुने रातको भाग खड़े हुए। शाहजादेकी लाचार हो घेरा छोड़ करके लौटना पड़ा। लौटते वक्त दुश्मनोंने पीछा करके बहुतसे सिपाही मार डाले। दिल्ली वापस आने पर शाहजादे नई फौज इकठा करके फिर लड़नेको चले थे। इस मरतवा विदर और बरङ्गल पर दखल हो गया। इन्होंने राजाको बांध करके दिल्ली भेजा था।

इसी बीचमें एक बार अफवाह उड़ी—सुलतान मर गये। इस अफवाहके उद्धानेवालोंको सुलतानने पकड़ करके जीतेजी काब्रमें गड़ा दिया। बादशाहने उनसे कहा था—तुमने भूठ ही जीते जी मुझे दफनाया है, मैं मचसुच तुम्हें जीते जी काब्रमें पहुँचा दूंगा।

बङ्गालके लोगोंने अपने सूबेदारभी कुछ शिकायत की थी। ७२४ हि०की यह अपने आप उसकी तहकीकात करने चले और जाते वक्त शाहजादे उलग खांको दिल्लीमें मलतनतका कामकाज सौंप गये। उस वक्त

बहादुर पूर्व बङ्गालके सूबेदार थे। उनकी राजधानी सुवर्णग्राममें रही। इन्होंने बादशाहकी परवा न करके अपने नामसे रुपया चलाया था। उनके जोर खुशमे सब जलते रहे। गयास-उद्-दीनके आते वक्त त्रिहुत पहुँचने पर लखनऊके नवाब शहाब-उद्-दीन बघरा शाह या बघरा खांने उनकी मातहतती जगुल की। इन्होंने शाहब-उद्-दीनने अपने भाई सुवर्णग्रामके बहादुर शाह पर बादशाहके पास नालिम टायर की थी। यह सुवर्णग्राम गये और बहादुरको टंग धारके गलेमें रस्मी डाल दिल्ली भेजते हुए अपने आप भी दिल्लीको चल पड़े। राहमें इन्होंने त्रिहुत जीता था। राजधानी पहुँचते वक्त शाहजादे उलग खांने इनकी अगवानीकी आगे आ अफगानपुरमें लकड़ीका एक मकान बना करके उसमें इनकी अभ्यर्थना की। तरह तरहकी धूम-धामके पीछे गयास-उद्-दीन वहांसे दिल्लीको चलने लगे। उसी वक्त लकड़ीका मकान इन पर फट पड़ा और यह चल बसे। कोई कोई कहता है कि शाहजादे बहुत दिनोंसे उनके भारनेकी फिक्रमें थे और इसीके लिये वह मकान बनाया गया था। राजाधनीग्रन्थमें लिखा है कि उस वक्त दिल्लीमें ओलिया नामके एक मन्नापुर रहें। उन्हें सब लोग बादशाहमें ज्यादा मानते थे। बङ्गालसे लौटते वक्त राहमें बादशाहने उन्हें लिखा भेजा—चाहे आप दिल्लीमें रहें चाहे मैं, दोनों एक अगह नहीं टिक सकते। मन्नापुरने इसके उत्तरमें लिखा था—दिल्ली अभी बहुत दूर है। बादशाह यह बात सुन तुगलकाबादके जिस घरमें जा करके रहे, उसीकी छत टूट करके उनके ऊपर गिर पड़ी। यह घटना १३२५ ई० (७२५ हि०) की हुई थी। इन्होंने दिल्ली शहर नये सरसे बना करके तुगलकाबाद नामका किला बनाया। 'तारीख सुवारक शाही' नामकी किताबमें लिखा है कि वह किला बनानेमें ३ सालसे भी ज्यादा वक्त लगा था। किला चितीले पत्थरका बना है। अरब परिव्राजक इब्न बतूताने सुलतानकी जुमा मसजिदमें एक खुदी हुई शिल्पलिपि देखी थी। उसमें बादशाहके बारेमें लिखा है—हमने २६ मरतवा तातारियोंको हमला करके हराया है। इसीसे हमारा नाम माबिक

इमानोर है। गयास उद् दीन्ने ४ साल २ महीने राजत्व किया।

गयास उद् दीन तुगलक रथ— दिल्लीके एक बादशाह। ये बादशाह फिरोज शाह तुगलकके नाती और फते खोंके पुत्र थे। फिरोजशाहकी मृत्यु होने पर १३८८ ई०में गयास उद् दीन गद्दी पर बैठे। भोगविलासमें लगे रहनेके कारण राजकार्यमें अग्रहणा करते थे। इस लिये राज्यके प्रधान प्रधान मनुष्य और सैन्य सामन्तनि विद्रोही हो कर १३८८ ई०के १८वीं फरवरीको इन्हें मार डाला। इन्होंने सिर्फ छह मास राज्य किया था। इनके शासन कालके समय मामूद् शाह नामक पार्वतीय राजाके साथ इन्हें युद्ध करना पडा था।

गयास उद् दीन् वनवन—किसी तुर्की सामन्तकी पुत्र। सुगलो ने इन्हें लडकपनमें सुरा करके बेच डाला था। फिर यह बगदाद पहुँचे और यहाँसे दिल्ली लाये गये। दिल्लीके बादशाह अलतमामने इन्हें बडी कीमतमें खरीदा था। मिनहाज उस् सराज जूरजानो नामक किसी मुसलमानने उर्होंकी अमलदारीमें तबकाल इ नामरी नामक इतिहासको रचना किया। इस इतिहासमें बादशाहकी अमलदारीके पहले क्रिस्वोका ज्यादा हाल लिखा है। इन्होंने मन्नाटकी उलग खों नामसे अभिहित किया है। मिनहाजका मृत्यु हो जानेसे उनके ग्रन्थमें पर्यन्त कालका वृत्तान्त लिपिबद्ध नहीं हुआ। पिछले वक्तकी बातें जिया उद् दीन बरनोकी बनायो हुए 'तारीख फीरोजशाही' में आ गयी है। इस किताबमें बादशाहकी तारीफ ही ज्यादा है, बुराईका कोई जिक्र नहीं। दूसरी तारीखो से यह समझा जा सकता है। सुननेमें आता कि बादशाह अलतमामने पहले पहल उन्हे खरीद करके बाज चिड़ियेका मुहा फिस बनाया था। इनके एक भाई उस वक्त शाही दुनियाके एक लोके ओहदे पर रौनक अफरोज थे। उर्होंकी मददसे गयास उद् दीननत लोका अमीर दरजा पाया था। अलतमामने लडके वक्त उद् दीनकी अमलदारीमें यह पञ्चाबके एक हाकिम मुकरर हए और थोडे दिन बीछे दिल्लीकी मातहतती न मान करके अपने नामसे ही पञ्चाब पर हुकूमत करते रहे। सुलताना रजियाकी

अमलदारीमें कुछ नौगी ने उनके खिलाफ साजिश की थी। गयास उद् दीन उनमें मिल करके फौजके साथ दिल्लीको रवाना हए। वहा लडाईमें हारने पर यह पकड़ लिये गये। थोडे दिनों बाद कैदखानेने भाग करके इन्होंने बहरामकी मदद दी थी। बादशाह बहरामके वक्त यह हाथी और रेवाडीके हाकिम मुकरर हए। इसी वक्त मिरठका वलवा दवानिसे इनकी खूब नामवरी बढी। अला उद् दीन मुसऊदके जमानेमें यह अमीर हाजबके ओहदे पर विठलाये गये। फिर नमीर-उद् दीन बादशाहकी अमलदारीमें गयास उद् दीन कन्हनेकी तो घञीर रहुँ परन्तु बादशाहका सभी काम इन्हींकी करना पडता था। नसीर-उद् दीनके थोड़े लडकान रहनेसे यह अपना बलवन नाम रख करके १३९६ ई०के फरवरी महीने दिल्लीके तख्त पर बैठ गये। उस वक्त बढतसे तुर्की गुलामाने उमराय वन करके सलतनतके बडे बडे ओहदे दवाये थे। गयास-उद् दीन अपने आप गुलामीसे बादशाही पर पहुँचे थे। फिर यह इस कौशिशमें लगे, उर्होंकी तरह कोई दूसरा तुर्क तख्त पर न बैठ जाय और उर्होंके घरानेमें बादशाही बनी रहे। पहले इन्होंने तुर्की उमरायोंकी बर्बाद करके फौजी मुहकमा मजबूत कर लिया था। उसके पीछे यह जासूसोंकी रख करके सुपके सुपके अहलकारी-का हाल मन्गाने लगे, जिससे राजधानीको छोड करके ज्यादा कच्ची जा आ न सके। थोडे दिनों ऐसे ही हुकूमत करके पीछेको बहुतसी बातों में इन्होंने सखावत दिखलायी थी। खानदानकी इज्जतका इन्हें बडा खयाल था, परन्तु हिन्दुओंका एतबार न करते थे। गयास-उद् दीन हिन्दुओंकी कोई बडा काम न भीपते थे। यह आल्मिो की वडी इज्जत करते और उमीसे इनके दरवारमें बह तसे आल्मि फाजिन मौजूद रहते थे। इतिहास लेखक फरिश्ता कहते कि उनके वक्त दरवारमें वडी चहल पहल रही। बादशाहकी टेखादेयी बहू भूमे उनकी नकल करते थे। गयास उद् दीन पहले शराब पीते थे, परन्तु तख्त पर बैठते ही इन्होंने उसको छोड दिया। उस वक्त शराब पीने-पानेकी कडी मजा मिलती थी मुस्कमें कोई शराब बनाने न पाता था।

किसी वक्त इन्होंने सलतनतके सब बुद्धे अहलकारों को छुट्टी दे करके उन्हें खानिपीनिके लिये आधे तनखाह देनेका हुक्म निकाला। आजकल अङ्गरज गवर्नमेण्टकी अमलदारीमें ऐसा पेनशन बड़ी इज्जतके साथ लिया जाता है। किन्तु उस समयके लोग इससे बहुत नाखुश हुए। उन सबने मशविरा करके दिल्लीवाले फौजदारके पास पहुंच करके उनके रोकनेकी कोशिश करनेकी कहा था। फौजदार वादशाहके बड़े मुंह लगे थे और सब लोग उन्हें इज्जतकी निगाहसे देखते थे। दूसरे रोज वह वादशाहके पास जा मुंह लटका करके खुड़े हो रहे। वादशाहके उसका सबब पूछने पर फौजदारने कहा था, यह मीचने थे—परसेश्वरके पास यदि सब बड़े-बूढ़े परित्यक्त होते, उनकी क्या हालत हो जाती। वादशाह सब समझ गये और बुद्धोंको अपना अपना काम करनेके लिये कहने लगे।

बलवनके भतीजे शेरखान् लाहौर सुलतान आदि प्रदेशोंकी हुकूमतान् मुकरर थे। उस समय वहां मुगलोंको लूटमार जारी रही। १२७० ई०की उनके मरने पर बलवनके बेटे महमूद उनके ओहदे पर बैठाये गये और सलतनतमें डिंडोरा भी पिटा कि गयास-उद्-दीनके मरने पर उनके बेटे वही महमूद वारिध हो करके तख्त नशीन् होंगे।

बलवनके एक भरतवा बीमार होने पर उनके मरनेकी अफवाह उड़ी। बङ्गालके सूबेदार तुगरल खान्ने वह खबर पा करके अपनीकी खुद मुख्तार नवाब जैसा बतलाया था। बलवनने इस बातकी इत्तिला मिलने पर अवधके सूबेदार अलमगीन या अमीर खान्को बङ्गालका सूबेदार बना बहुत बड़ी फौजके साथ रवाना किया। अलमगीनकी हारने पर इन्होंने गुस्सेमें बिगड़ करके फांसी पर चढ़ाया था। फिर मल्लिक तिरमनी तुर्क नामके कोई दूसरे शख्स बङ्गाल भेजे गये। परन्तु उन्हें भी हार करके पीछे लौटना पड़ा। उस वक्त बलवन अपने आप आगे बढ़े थे। तुगरल राजधानी छोड़ करके बिपुराकी भाग गये, वादशाह उनके पीछे पड़े। कोल राज्यके सूबेदार मल्लिक मकदूर थोड़ीसी फौज ले करके चुपकेसे तुगरलके खीमेंमें पहुंच बलवन वादशाहकी

फतेह' बोलते बोलते जिमे ही सामने पाया, कत्ल करने लगे। तुगरल आफत आयो हुई देख दरया पार उतरने लगे, परन्तु उमी वक्त मल्लिकके एक तीरका निशाना बन करके गिर पड़े। मल्लिकने उनका मर काट करके त्रिम्भ को दरयामें बहा दिया। फिर बलवनने तुगरलके मभो खानदानियोंको मार डाला। इसके पीछे गयास-उद्-दीन गाड़को लोटे और अपने बेटे नमोर-उद्-दीन बघरा खान्को बङ्गालका सूबेदार बना दिल्ली चले गये। दिल्ली पहुंचने पर उनके बड़े बेटे उनमें मिले। बलवनने उन्हें इस विषयमें समझा बुझा मुलतान भेज दिया, मेरे न रहते तुम्हें किस तरह सलतनतका कामकाज चलना पड़ेगा। उसी समय तेमूर खान् फौजके साथ जा वहां लूटपाट मचाने लगे। महमूदने लडाईमें उन्हें हराया था। परन्तु वह थक कर नदी किनारे पानी पीने गये उमी वक्त तेमूरने टवे पावों उनकी कमला फरके मार डाला। बलवनका यह खबर पा करके टिल टूट गया और वह अपने मरनेका राह देखने लगे। उन्होंने बङ्गालसे बघरा खान्को बुला करके अपना वारिध ठहराया और उनकी अपने पास मरते दम तक रहनेकी कहा। बघरा खां मरनेमें देर देख वादशाहसे वे कहे सुने बङ्गालको चल पड़े। बलवनने इस पर बिगड़ कर महमूदके लड़के खुशरूको अपना उत्तराधिकारी बनाया और १२८६ ई०को इस दुनियासे कूच किया।

गयास-उद्-दीन बाहमणि—दक्षिणापथमें बाहमणि राज्यका एक राजा वा सुलतान १३८७ ई०का अपने पिता माहमूद शाहकी मृत्युके बाद ये राज-गद्दी पर बैठे। नालचीन नाम एक तुर्की गोदामने सोचा था कि गयास-उद्-दीनके राजत्व लाभ होने पर वह उनका मंत्री नियुक्त होगा, लेकिन जब उसने देखा कि उसकी आशा धूलमें मिल गई तो उसने क्रोधित हो कर अपने कुरासे गयास-उद्-दीनकी दोनो आंखें निकाल डालीं और सागरक दुर्गमें अवरुद्ध कर उनके पितृव्य सामस-उद्-दीनको गद्दी पर बैठाया।

गयास उद्-दीन महमूद—वीर और गजनीके राजा। १२०५ ई०में ये राजसिंहासन पर बैठ कर राजत्व करने लगे। चार वर्ष राजत्व करनेके बाद ३१ जुलाई शनिवारकी

रात्रिमें मुहम्मद अली शाहके नीकरोंने इन्हें मार डाला ।
 गयास उद् दीन महमूद घोरि—घोर और गजनीके अधिपति
 गयास-उद् दीन मुहम्मदके पुत्र । पिताका मृत्यु होनेके
 बाद उसके पिदित्य शाहज उद्-दीन मिहानस पर आरूढ
 हुये और उनके मरने पर गयास उद् दीन महमूदने
 राजत्व लाभ किया । ये बहुत आनमी राजा रहे । १२१०
 ई०में इनका देहान्त हुआ ।

गयास उद् दीन मुहम्मद—एक गन्धकार । ये युक्तप्रदेशमें
 लखनऊके अन्तर्गत साहाबाद परगनाके सुराफाबाद या
 रामपुरमें रहते थे । यह अलान उद् दीनके पुत्र और सरफ
 उद् दीनके पौत्र रहे । गयास उद् दीनने चौदह वर्ष अन
 वरत परिचयम करके १८२६ ई०में “गयास उल लुघात्”
 नामक अभिधान पारसी भाषामें सम्पूर्ण किया था । इसके
 अतिरिक्त और बहुतसी किताबें उन्होंने रचना की है ।

गयास उद् दीन मुहम्मद घोरि—घोर और गजनीके अधि-
 पति । ११५० ई०में राजत्व लाभ करके इमने अपने भाई
 शाहज उद्दीन मुहम्मद पर गजनीका शासनभार अर्पण
 किया । १२०३ ई०के १२वो माच बुधवारकी इनकी
 मृत्यु हुई ।

गयासाबाद—बङ्गाल प्रान्तके मुर्शिदाबाद जिलेका एक
 प्राचीन नगर । यह अक्षां २४ १० ३३ उ० और
 देशां ८८ १६ ४१ पू०में आजमगञ्जमे ३ कोस उत्तर
 भागीरथीके दक्षिण उपसूल पर अवस्थित है । इसका
 प्राचीन नाम बदरीहाट है । गौडके किमी पठान नवाब
 गयास उद् दीनके नामसे गयासाबाद कहा जाता है ।
 स्थानीय ध्व मावशेष देखनेसे यह बहुत पुराना नगर
 जैसा समझ पड़ता है । उसमें एक दुर्ग, राजमासाद,
 पानि भाषाकी निषिमें खोदित प्रभुरस्वभा स्वर्णमुद्रा
 तथा मृत्पात्रादि मिलते हैं । इसका कोई इतिहास नहीं,
 पहले वज्रा किम वशीय राजा राजत्व करते थे । पानि
 भाषानिखित गिलाफलक देखनेसे अनुमान होता है कि
 पहले वहा किसी बौद्ध राजाका राजत्व रहा । ध्व माव-
 शेषकी कुछ चीज कलकत्तेके अजायब घरमें ला करके
 रखी गयी है ।

गविर (स० स्त्री०) श्लेषा (Sahya) ।

गरह (हि० पु०) मर्दोकाईपरा जो चक्कीके चारों तरफ
 घाटा गिरनेके निये बनाया जाता है ।

गर (स० स्त्री०) ग्यारह करणोंमें से पाँचवाँ करण । ‘वर्-
 नावकौनवर्ते तितान्स्वगवरेष्विन्द्रिष्टिभ चागाम ।’ (इन्द्रतुल्य इत्या २८।३)

२ विष, जहर । ३ वल्लनाभ नामक विष । ४ मन्मोह-
 जनित विष । (पु०) गौर्यते इति कर्मादौ अच । ५ विष,
 जहर । ६ उपविष । ७ रोग, बीमारी ।

गरफ (अ० वि०) १ निमग्न, डूबाहुवा । २ घिलुग, नष्ट,
 बरबाद । ३ किमी कार्यमें लोन या मग्न ।

गरकाव (फा० पु०) १ डूबनेका भाव, डूबाव । (वि०)
 २ निमग्न, डूबा हुआ । ३ बहुत अधिक लीन ।

गरकी (अ० स्त्री०) १ अतिवृष्टि । २ डूबनेकी क्रिया वा
 भाव ।

गरग—बम्बई प्रदेशके धारवार जिलेका एक गण्डग्राम ।
 यह धारवारसे १० मील उत्तर पश्चिममें अवस्थित है ।
 लोकसंख्या प्राय ४५०० है । मोटे सूती वस्त्रका व्यव-
 साय यहाँ अधिक होता है ।

गरगज (हि० पु०) १ तोप रखनेका बुज्ज जो किन्मेंकौ
 दीपारों पर बना हुआ रहता है । २ युद्धकी सामग्री
 रखी जानेकी कृत्रिम टीला ।

गरगरा (हि० पु०) घिरनी, चरखी ।

गरगवा (हि० पु०) एक प्रकारकी घास जो धानकी फसल
 बढने नहीं देतो । इसे सिर्फ भैंसे खाते हैं ।

गरगीर्ण (स० वि०) जिमने विष पान किया हो ।

गरगीर्णी (स० पु०) १ वह जिमने विष पान किया हो ।
 २ एक ऋषि ।

गरग्र (स० पु०) क्षणाजिक, क्षणपत्र चन्द्रतुलमी । २ विष-
 नायक । ३ वर्षर, वृषुल ।

गरघी (स० पु०) गरग्र डीप् । मत्स्यविशेष, गरडे मछली ।
 इसका गुण—मधुर, कषाय, वातपित्त और कफनाशक,
 रुचि और वलवीर्यकर है । (भाष्यप्रकाश)

गरज (हि० स्त्री०) बहत गभीर और तुम-ल शब्द ।

गरज् (अ० स्त्री०) आशय, प्रयोजन, मतलब ।

गरजल—विद्वत् जिनान्तर्गत एक विभाग । इसके
 और छ उपविभाग हैं । गण्डक, कोटी गण्डक, घिया, नून
 और कदाना कह एक नदियाँ इस विभागमें हो कर प्रवा-
 हित हैं । इस विभागके प्रधान नगर मुजफ्फरपुर और
 ताजपुर हैं । मुजफ्फरपुरमें हाजीपुर तक टी रास्ते गये

हैं। पुराना रास्ता शाहपुर और नया रास्ता गुडिया होती हुये इटावरमें खाँ सराइ नामक स्थान पर एक दूसरेसे मिल गये हैं। एक रास्ता हाजीपुरसे कन्हौली और मन्होवा थाना होता हुआ पूसा और टरभङ्गा तक चला गया है। गरजउलके मध्य लालगञ्ज और मन्होवा नामक ग्राममें बाजार है। कन्हौली, घटारु तथा रसुलगंज नामक और कई एक प्रधान ग्राम इसके अन्तर्गत हैं।

गरण (सं० स्त्री०) गृ सेचने, गृ निगरणे वा भावे ल्युट् । १ सेचन, सींचन । २ भक्षण, भोजन, खाना ।

गरजन (हिं० पु०) १ गंभीर शब्द, गरज, कड़क । २ गरजनेका भाव । ३ गरजनेकी क्रिया ।

गरजना (अ० क्ति०) १ बहुत गंभीर और तुमुल शब्द करना । २ चटकना, तडकना ।

गरजमन्द (फा० वि०) १ जिसे आवश्यकता हो, जरूरतवाला । २ इच्छुक, चाहनेवाला ।

गरजी (अ० वि०) १ गरजमन्द, गरजवाला । चाहनेवाला ।

गरजुआ (हिं० स्त्री०) एक तरहकी खुमी । यह श्वेत रंग लिये गोलाकार होती है। वर्षा ऋतुके पहला पानी पढ़ने पर यह प्रायः साखू आदिके बूत्तोंके निकट वा मैदानोंमें पृथ्वीसे निकल आती है। इसके ऊपर सिर्फ गूदा ही ढांता है। इसकी तरकारी स्वादिष्ट होती है। बहुतेका विश्वास है कि यह वाटलके गरजनसे पृथ्वीसे निकलतो है। सफरा, गगनफूल इसके भेट है।

गरजू (हिं० वि०) गरजी देखो।

गरट्ट (हिं० पु०) समूह, भुण्ड ।

गरडेन रोच—बङ्गालके चौबीस परगना जिलेका एक शहर।

यह अक्षा० २२° ३३' ७" और देशा० ८८° १९' पू०के बीच गली नदीके पूर्वोत्तरी तीर पर अवस्थित है। यहाँकी जनसंख्या २८२११ है। जिनमेसे १२१८१ हिन्दू, १५७७९ मुसलमान और १८७ ईसाई है। यह शहर कलकत्ताके आसपास एक प्रसिद्ध वाणिज्य स्थानमें गण्य है। यहाँकी आय लगभग ४९०००० रुपया और व्यय ४६०००० रु० है।

गरद (सं० त्रि०) गरं विषं ददातीति गर-दा-क । १ विषप्रद. बिषदेनेवाला ।

“बहिरो गरदये य शम्भुपाधिर्धनापः ।” (मनु ३।१५४ ।)

(स्त्री०) गृ भावे अप् गरी भक्षणम् । २ विष, जहर ।

३ एक प्रकारका रेशमी कपडा ।

गरदन (फा० स्त्री०) १ धड और मिरका जोड़नेवाला अंग, ग्रीवा । २ लम्बी लकड़ी । यह जुलाहोंकी लपेटके दोनों मिर्गे पर आड़ी माली जाती है, माल, वरतन आदिका ऊपरी पतला भाग ।

गरदन-ध्रुमाव (हिं० पु०) एक प्रकारका कुशीका पेंच । इसमें खेलाड़ी अपने जोड़का दाहिना वा बायां हाथ धर कर अपने गले पर रखते और उसे सामनेकी ओर पटक देते हैं

गरटना (हिं० पु०) १ मोटी गरदन । २ वह धील या भटका जो गरदन पर लगे ।

गरदनियां (हिं० स्त्री०) गरदन पकड़ कर किमी आदमीको बाहर निकालनेकी क्रिया ।

गरदनी (हिं० स्त्री०) १ कुरते आदिका गला । २ गलेमें पहननेका एक प्रकारका आभूषण, हंसुली । ३ अर्द्धचन्द्र, गरदनियां । ४ घोड़ेकी गरदन पर बांधनेका कपडा । ५ कारनिम, कड़नी । ६ कुशीका एक पेंच ।

गरदर्प (सं० पु०) सर्प, सांप, भुजङ्ग ।

गरदा (फा० पु०) धूल, मट्टी, खाक, गर्द ।

गरदान (सं० स्त्री०) टाल्युट् । गरस्य दानम्, ६-तत् विषप्रदान, जहरका देना ।

गरदान (फा० वि०) २ घूम फिर कर एक ही स्थान पर आनेवाला । (पु०) ३ वह कवूतर जो घूमफिर कर अपने स्थान पर आता हो ।

गरदानना (फा० क्ति०) १ शब्दोंका रूप साधना । २ पुनः पुनः कहना । ३ गिनना, समझना, मानना ।

गरदुआ (हिं० पु०) पशुओंका एक प्रकारका ज्वर । यह वर्षाऋतुके आरम्भमें बहुत भींगनेके कारण हुआ करता है। इस ज्वरमें पशुके सब अंग जकाड जाते और गलेमें घरघराहट होने लगती है ।

गरध्वज (सं० स्त्री०) अभ्रक, अवरक ।

गरधरन (सं० पु०) विषकी धारण करनेवाला, शिव, महादेव ।

गरनाल (हिं० स्त्री०) एक बहुत चौड़े सुखकी तोप ।

इसका मुंह इतना चौड़ा रहता है कि इसमें आठमी सहजसे चला जा सके, घननाल, घननाद ।

गरनाशिनो (स० स्त्री०) पोतवर्ण देवदालोलता, देवदारु ।

गरप्रिय (स० पु०) वह जिसको विप प्रिय लगता हो, शिव, महादेव ।

गरवई (हि० स्त्री०) अभिमानका भाव ।

गरवाना (अ० क्ति०) घमगडमें आना, अभिमान करना, श्रेष्ठ करना ।

गरवा (हि० पु०) एक प्रकारका गीत जो प्राय गुजराती स्त्रिया गातो है ।

गरविला (हि० वि०) जिसे गर्व हो, घमण्डी, अभिमानो ।

गरभ (स० पु०) गौर्यते इत गु अभ्रभ । यदा गर्भस्य गरभो देय । गरभ, ह्रमन ।

गरभदान (हि० पु०) ऋतुप्रदान, पेट रखाना ।

गरभाना (अ० क्ति०) १ गर्भिणी होना । २ धान गेह आदिके पोषिमें बाललगना ।

गरभो (अ० वि०) अभिमानो, घम डो ।

गरभ (फा० वि०) १ जिसके कूनसे जनन मालुम हो, तम, उष्ण । २ तोन्हा, उग्र, खरा । ३ तेज, प्रबल, प्रचंड जोर शोरका । ४ जिसका गुण उष्ण हो । ५ उक्ताङ्गपूर्ण, जोशसे भरा ।

गरमा गरमो (हि० स्त्री०) उक्ताह, मुस्तै डो, जोश ।

गरमाना (अ० क्ति०) १ उष्ण पडना, गरम पडना । २ उमग पर आना । ३ क्रोध भरना, आवेशमें आना ।

गरमाइट (हि० स्त्री०) उष्णता, गरमो ।

गरमो (फा० स्त्री०) उष्णता, ताप, जनन ।

गरमोडाना (हि० पु०) अघोरो, अघोरो छोटे छोटे लाल दाने जो गरमो ऋतुमें पमोनाके कारण शरीर पर निकलते हैं ।

गरमर—पूर्वीय बङ्गाल और आसामके शिवसागर जिलाका एक ग्राम यह अक्षा० २६ ५८ उ० और देशा० ८४° ८ पृ०के मध्य माजुली द्वीप पर अवस्थित है । यहा गोसाँदे सम्प्रदायका वास है जिन्हें आसामके मनुष्य बहुत सम्मान किया करते हैं । इन्हें अघोर राजापाँसे ४००००० एकर शुल्करहित जमीने मिली थी, किन्तु बरमाके राजापाँसे उनका यह अधिकार कायम न रखा तथा उक्त

जमीन उनसे खोल् लो । उस समय गोसाँदे हन्दावनमें रहते थे और वे अपना अधिकार पुन पलटाने की कुछ भी चेष्टा न की । जब इसकी विषयमें सरकारको औरखे तहकीकात् ज्ञो रही थी तोभी सरकारने ३३१ एकर शुल्क रहित जमीन उन्हें प्रदान की है ।

गरस्त्रि नानि—बम्बई प्रदेशके काठियावाड प्रदेशका एक ग्राम । यहा स्वतन्त्र एक जमीन्दार हैं जो सिर्फ बरोदा गायकवाडको कर देते है ।

गरस्त्रि मति—बम्बई प्रदेशके काठियावाड प्रदेशका एक ग्राम । यह ग्राम एक जमीन्दारके अधीन है । उन्हें बरोदा गायकवाडको और जूनागडकी नवाबको कर देना पडता ।

गररा (हि० पु०) एक प्रकारका घोडा, गर्रा ।

गरराना (हि० क्ति०) भीषण ध्वनि करना, गरजना ।

गररौ (हि० स्त्री०) एक प्रकारकी चिडिया, गन्गालिया ।

गररल (स० स्त्री०) १ विप, जहर । २ सर्पविष । ३ घासका मुट्टा, घासकी अ टिया, मुला ।

गररलधर (स० पु०) १ विप धारण करनेवाला, महादेव । २ सर्प, साप ।

गररारि (स० पु०) गररलस्य अरि, ई तत्व । भरकतमन्धि, पन्ना ।

गररत (स० पु०) गर विषयत् सर्प भक्षण व्रत यस्य, बहुश्रो० । मयूर, मोर ।

गरवा (हि० वि०) महान, गरुई, भारो ।

गरसर—मध्यभारतके ग्वालियर राज्यका एक नगर । यह अक्षा० २३ ४० उ० तथा देशा० ७४ ८० पू०में अवस्थित है । यहा एक पका प्राचीन घर है जिसमें बहुत तरहके शिल्पकार्य खुदे हुए हैं ।

गरर (हि० पु०) १ यह । २ अरिष्ट ।

गररहन (स० पु०) १ कृष्णार्जक, काली तुलसी । २ बर्बर, बवई, ममरी, (हि०) ३ विपनाशक ।

गररहन (हि० पु०) एक प्रकारकी मछली ।

गररदर (हि० पु०) यह काठ जो नटखट चौपायांके गलेमें ऋकाया जाता है । कु दा, टेगा, टेकुल ।

गररहाजिरो (फा० स्त्री०) अशुपस्थित ।

गरा (सं० स्त्री०) गौर्यते भक्ष्यते इति गृ-अप् । १ देव-
दालीखता, दंडाल । २ भक्षण, भोजन, खाना ।
गरागरी (सं० स्त्री०) गरं भूपिकविषं आगिरति गृ-पचा-
दित्वात् अच् । देवताद्वेष, देवदाली, बंदाल, घघरवेल,
सोनैया वेल ।

गराज (फा० स्त्री०) गश्मीर शब्द, गर्जना गरज ।

गराड़ी (हिं० स्त्री०) घिरनी, चरपी ।

गराधिका (सं० स्त्री०) गरी विषप्रतीकारि अविद्या प्रधाना ।
लाक्षा, लाह ।

गरात्मक (सं० पु०-स्त्री०) १ शोभाञ्जनवृक्ष, मोहिञ्जनका
पेड़ । २ सोहिञ्जनका बीज ।

गरारा (हिं० वि०) गर्वयुक्त, प्रवल, प्रचंड, बलवान् ।

गरारि—बङ्गदेशके पुर्णिया जिलान्तर्गत एक परगना ।
इसके मध्य जोकर कोशी नदी प्रवाहित है । इस नदी-
की बाढ़से अनेक प्रकारकी क्षति प्रतिवर्ष हुआ करती
है । यहां चावल, सरसों, तम्बाकू और नील उत्पन्न
होते हैं ।

गरारिग—जातिविशेष । ये लोग इलाहाबादसे फरुखा-
बाद प्रदेशमें रहते हैं । इस जातिकी कई एक श्रेणियां
हैं । यथा—इलाहाबादी, जौनपुरी, वाकरकाशान, वर-
फता, भेड़ारिया, चिकावा, धाड़ड, निखर, पाचेट और
तसेलहा । चिकावा मुसलमानधर्मावलम्बी, धाड़ड
जौनपुरी और निखरगण स्वल्प वन कर अपनी जोविषा
निर्वाह करते हैं । भेड़ासे भेड़ारिया नाम हुआ है ।
भ्राताकी मृत्यु होने पर उसकी विधवा स्त्रीका विवाह
कराना इन लोगोमें निषिद्ध नहीं है । इनका आचार
व्यवहार ग्वालाके जैसा होता है । गरीर देखो ।

गरारी (हिं० स्त्री०) गरीर देखो

गराव (हिं० पु०) १ तीन मस्तूलवाला एक प्रकारका बड़ा
जहाज । इसका व्यवहार १४वीं और १५वीं शताब्दी-
की बङ्गाल और उसके आसपामकी खाड़ियोंमें होता था ।
२ माधारण नाव ।

गरावन (पु०) गरावन देखो

गरावा (हिं०) हलकी जमीन । कम उपजाज भूमि ।

गरिमन् (सं० पु०) गुरोर्भावः । १ गुरुता, गौरव ।

२ माहात्मा, महिमा । ३ गुरुत्व, भार । 'गिरि' गन्धि

परिनः प्रकल्पयन् ।" (भागवत ८।१।२१) ४ गर्व, अहंकार,
घमण्ड । ५ आत्मत्यागा, गिरी । ६ आठ मिडियां में
एक सिद्धि ।

गरिया—जातिविशेष । कामरूप अत्रलमें इनका काम
है । ये मुसलमानधर्मावलम्बी हैं । माधारण मुसल-
मान इन्हें नीचजाति समझ कर घृणा करते हैं । ये
गोमांस और शूकर मांस भक्षण करते तथा टरजीका काम
करके अपना जीवन निर्वाह करते हैं ।

गरिया (हिं० पु०) वृक्षविशेष । यह प्रायः मध्यप्रदेश,
मध्यभारत, वगर और मन्दाजमें पाये जाते हैं । इस
वृक्षकी पत्तियां शिशिर ऋतुमें झड़ जाती हैं । इसकी
लकड़ीमें गाड़ी, तस्वोरोके चौखटे, मेज तथा कुर्सीयां
बनाई जाती हैं । हिन्दुस्थानमें यह लकड़ी विनायतकी
बहुत जाती है और वहां अलमारी, कुर्सी, मेज, ब्रगके
दस्त आदि बनानेके काममें आती है ।

गरियाना (हिं० क्रि०) दुर्वचन कथना, गाली देना ।

गरियार (हिं० वि०) वक्र मनुष्य जो अपनी जगहमें जल्दी
न उठे, सुस्त, बोटा, मद्धर ।

गरियालू (हिं० पु०) एक प्रकारका रङ्ग जो काला-नीला
होता है । इस रंगसे जन रंगा जाता है । इसकी
प्रस्तुतप्रणाली यह है कि दो सेर नीलका चूर्ण गन्धकके
तेजावमें मिला कर एक मजबूत बरतनमें रगव छोड़ें ।
इसे सिर्फ एक रात इसी दशासे रहने दें । जिस जनको
रङ्गाना हो उसे चूनेके पानीमें डुबा कर कई बार स्वच्छ
जलसे धोकर घासमें सुखा ले पुनः खोलते हुये पानीमें
थोड़ासा रङ्ग बरतनमेंसे लेकर मिला दे और जनको
उसमें तब तक रहने दें जब तक उसमें रङ्ग नहीं चढ़
जाय । जब रङ्ग अच्छी तरहसे जम जाय तो उसे निकाल
कर फिटकिरी मिले पानीमें पछार डालें ।

गरिष्ठ (सं० त्रि०) अतिशयेन गुरुरिति गुरु-इष्टन् गरा-
देश्य । १ अतिगुरु, अत्यन्त भारी । २ जो पचनेमें
दुल्का न हो, जो शीघ्र न पचे । ३ अति महत्, बहुत बड़ा ।
४ अति गौरवान्वित, बहुत नामवर । ५ मर्यादाविशिष्ट,
प्रतिष्ठित, इज्जतदार । (पु०) ६ एक दानवका नाम ।

"गरिष्ठय दनायुध दीघ त्रिहय दानवः ।" (भारत २।६५।२०)

७ एक राजाका नाम । (भारत २।६।२२) ८ एक तीर्थ-
स्थान ।

शरीर (सं० स्त्री०) ग अच् डीप । १ देवतादहृत् ।
 २ खरा जिससे घर छाना जाता है ।
 शरी ('हं स्त्री०) नारियल फलके भीतरका गुहा । यह
 नरम और खादिए घीता है ।
 शरीष (अ० वि०) १ नम्र, दोन, हीन । २ दरिद्र, निर्धन,
 अकिंचन कगाल ।
 शरीबनिगज (फा० वि०) दीनों पर दया करनेवाला,
 दुःखियोंका दुःख दूर करनेवाला, दयालु ।
 शरीवपरवर (फा० वि०) शरीरों की पालनेवाला, दीन,
 प्रतिपालक ।
 शरीधाना (फा० वि०) शरीरों की तरफका ।
 शरीवामज (हि० वि०) शरीरों के योग्य, छोटा मोटा,
 भला सुरा ।
 शरीर्यो (अ० स्त्री०) १ दीनता, अधीनता, नम्रता ।
 २ दरिद्रता, निर्धनता, कगाली ।
 शरीर्यस (सं० पु०) १ अतिग्रयण शुक शुक इत्यसुन् शराटे
 शय । २ अतिग्रयण शुक, अत्यन्त भारी । ३ अतिशौरवा
 न्वित, वह जिसका वरत मान हो । ४ मर्यादासम्पन्न,
 प्रतिष्ठित मनुष्य, इज्जतदार आदमी ।
 शरीर्यमी (सं० स्त्री०) शरीर्यम् स्त्रियां डीप् । १ अत्यन्त
 भारीपन । २ अतिमाननीया, वह जिसका सम्मान बहुत
 होता हो । ३ अतिशौरवान्वित ।

शरीर्यो कश्चिन्मूलकं लक्ष्मीर्गतिर्गुरुवना । (१भाष०)

गरुडा (हि० स्त्री०) शुकता, भारीपन ।
 गरुड (सं० पु०) गरुडभ्या पक्षभ्यां डयति इति, डी ड,
 षुपोदरात्त्वित्वात् तलोप । विनताके गर्भजात कश्यपात्मज
 पञ्चराज । (१भाष० १ १४०२) इनका नामान्तर—गरुत्वान्
 ताक्ष्य, वैनतीय, खुशेश्वर, नागान्तर, विष्णु रथ, सुपर्ण,
 पद्मगाशन, महावीर, पश्चिमिह, उरगाशन, शाल्मली,
 हरिवाहन, अमृताहरण, नागाशन, शाल्मलीस्य, खुगिन्द्र,
 भुजगान्तक, तरखी और तार्क्ष्यनायक हैं ।

कश्यपने पुत्रच्छु हो करके यज्ञ आरम्भ किया ।
 उन्होंने इन्द्र, बालखिव्य और अन्यान्य देवताओंकी
 यज्ञीय काष्ठ लानेमें लगाया था । इन्द्र अपने बालवीर्यके
 अतुरूप पर्यतप्रमाण काष्ठराशि उत्तोलन करके अनायास
 पट्ट धारि लगे । अद्भुत प्रमाण बालखिव्य ऋषि सब मिल

करके किसी पलाशपत्रका हस्त उठाये लिये जाते थे ।
 इन्द्र पथिमधय उनका उपहास और अवमानना करके
 शीघ्र ही चल दिए । इस पर बालखिव्य सुनि अन्तरमें
 धत्यन्त क्रुद्ध हो करके देवराजके भयप्रदर्शनार्थ अन्य
 व्यक्तिको इन्द्र बनानेके लिये एकान्त यत्न करने लगे ।
 यह समझने पर इन्द्र अत्यन्त मन्तसंचित हो करके कश्यप-
 के शरणागत हुए । प्रजापति कश्यपने इन्द्रकी यह बात
 सुन बालखिव्यके निकट जा करके कर्मसिद्धिका विषय
 पूछा था । सत्यवादी बालखिव्योंने महात्मा कश्यपको
 प्रत्युत्तर दे दिया । उस समय कश्यपने उनकी मानवना
 पूर्वक कहा था—'देखो, ब्रह्माके नियोगने यह इन्द्र हुए
 हैं । आप लोग भी तपस्या करके अन्य इन्द्रके निमित्त
 यत्न कर रहे हैं । आप सज्जन हैं, इस लिये ब्रह्माके
 वाक्यमें अन्याया करनेके योग्य नहीं । फिर आपका भी
 सद्बल्य मित्या नहीं जा सकता । आप लोगो में यह पत्नि-
 यो के इन्द्र बनें । देवराज आप लोगो से वाद्या करते हैं ।
 आप भी इनके प्रति प्रसन्न हो ।' इस पर बालखिव्य
 बोल उठे—'इधने आपके सन्तान निमित्त सद्बल्य करके
 इस कार्यका अनुष्ठान आरम्भ किया है । आप बड़ी
 कीजिये, जिसमें मद्बल्य हो । इसी समय दक्षकन्या विनता-
 देवीने पुत्रके निमित्त अभिलाष करके अपने स्वामीके
 निकट चागमन किया था । कश्यप उनसे कहने लगे—
 'देविय ! तुम्हारा यह अभिलाष सिद्ध होगी । तुम त्रिभुवन-
 के प्रभुत्वसम्पन्न दो पुत्रों की प्रसव करोगी । बालखिव्यों
 की तपस्या और मेरे मद्बल्य द्वारा तुम्हारे दोनों पुत्र
 पत्नियों का इन्द्रत्व करे गे । फिर विनता मफलकाम की
 करके दृष्टचित्त हो गयीं और यथाकाल धरुण तथा गरुड
 नामक दो पुत्रों को प्रसव किया । धरुण विकलाङ्ग हो
 करके जन्मग्रहण पूर्वक सूर्यदेवके सम्युख अवस्थित
 रहे । गरुड पत्नियों के इन्द्रत्व पद पर अभिषिक्त हुए ।

महातज्जयो गरुडने स्वयं अण्ड विटोर्ण करके जन्म
 ग्रहण किया था । जन्मकालको इनका रूप—अग्निराशि
 की भांति प्रभामम्पन्न, अतिग्रयण भयङ्कर, प्रलयकालके
 अग्नि जैसा प्रदोम, विद्युत्की तरह पिङ्गलवर्ण चक्षु
 विगिष्ट, ससुश्रानि सदृश घोरतर उद्य, घोर स्वर्गविगिष्ट
 और महाकाय था ।

गरुड़के विशुवाहन होनेकी कथा महाभारतमें इस प्रकार लिखी है—पत्तिराज अमृत ले करके निकले थे। गरुड़के साथ राहमें विष्णु भी रहे। नारायणने उनके प्रति तुष्ट हो करके फहा—सैं तुमको वर दूंगा। गरुड़ने उत्तरमें मांग लिया—सैं आकाशगामो हो करके आपके उपरिभागमें रहूँ और अमृत अतिरिक्त भी अजर अमर बनूँ। विष्णुने विनतापुत्रकी 'तथास्तु' कह करके वही वर दिया था। गरुड़ने उक्त वर ग्रहण करके विष्णुको कहा—सैं भी आपको वर दूंगा, ग्रहण कीजिये। विष्णुने महाजल गरुड़से मांगा था—आप मेरे वाहन बनें और ध्वज पर रह करके मेरे उपरिभागमें अवस्थिति करें।

गरुड़ स्वीय पदनद्वयमें गज तथा कच्छप और चञ्चु-पुटमें महावटवृक्ष धारण करके आकाशमार्गमें उड़े थे। अमृतके लिये देवताओंके साथ इनका घोरतर युद्ध हुआ उसमें इन्होंने जय लाभ किया था। (महाभारत, भा.द.पर्व)

२ व्यूहविशेष। (चतु ११८०) ३ विंशति प्रकार प्रामादी-के मध्य कोई प्रामाद, किसी किस्मकी बड़ो इमारत।

(वृहत्संहिता ५६। २४)

४ जैनमतानुसार स्वर्गके इन्द्रक विमानोंमेंसे ३५वा विमान। ५ एक जातिके देव। इनकी १६० देवियां (स्त्री) होती हैं।

गरुड़गामी (सं० पु०) १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण।

गरुड़गिरि—एक गिरि-शृङ्ग। यह महिसूर राज्यमें कादुर जिलान्तर्गत अक्षा० १३° २६' ३०" और देशा० ७६° १७' पू०में अवस्थित है।

गरुड़घण्टा (हि० पु०) ठाकुरजीकी पूजामें बजाया जानेवाला एक घण्टा। इसके ऊपर गरुड़की मूर्ति बनी रहती है।

गरुड़ध्वज (सं० पु०) गरुड़ों ध्वजो यस्य, बहुव्री०। १ विष्णु।

“गरुड़स्य दृश्यते वाम ससगार गरुड़ध्वजः ॥” (भागवत १।४।२६)

२ एक प्रकारका स्तंभ जिस पर गरुड़की आकृति बनी रहती है।

३ जैनमतानुसार प्रथमत्रयीकी विद्याधरोमेंसे एक।

४ गरुड़कुमार।

गरुड़ नदी—मन्द्राज प्रदेशके उत्तर्गत दक्षिण अर्काट जिला-

की एक नदी। यह कल्पकुरचि तालुकमें विगल मरी-वर नामक स्थानसे निकल कर मन्नता नदीके साथ मिल गई है और ३० कोम जाकर बड़ोपमागरमें गिरी है। नदीका तलदेश अत्यन्त वाणुकामय है।

गरुड़पाश (सं० पु०) एक प्रकारका फन्दा या फांसी। इसे प्राचीन कालमें शत्रुको फंसाने और बंधनेके लिये उस पर फेंकते थे।

गरुड़पुराण (सं० को०) गरुड़ाय उक्तं विष्णुना पुराणम्, मध्यपटलो०। अष्टादश पुराणान्तर्गत सप्तदश महा-पुराण। भगवान् गरुड़ामनने यह पुराण गरुड़से कहा था। इसमें १८,००० श्लोक हैं। यह पुराण तार्च्यकल्प-को कथा अवलम्बनसे वर्णित हुआ है। इसमें नोबे लिखा-जैसा विवरण है—सूतनैमिषीय-संवादमें सूतकी गरुड़पुराणकथनजिज्ञासा, गरुड़पुराणकी उत्पत्तिकथा, रुद्रविष्णु-संवादमें सृष्टिकथन, प्रजापतिसृष्टि, कश्यपकृत सृष्टि, सूर्यादिपूजाकथन, विष्णुपूजाकथन, टीक्षाविधि, लक्ष्मीपूजा, नवव्यूहाचन, पूजाक्रम, विष्णुपञ्जरकथन, संक्षेपमें योगोपदेश, विष्णुसहस्रनाम, विष्णुध्यान तथा सूर्यपूजाकथन, सत्युच्चयपूजा, गरुड़विद्या, शिवोक्त मर्षमन्त्र, पञ्चवक्त्रपूजा, शिवपूजा, गाणपत्यादि पूजा, प्रादुकापूजा, करन्यामादि कथन, विषहरण, गोपालपूजा, शोधरादिमन्त्रकथन, विष्णुपूजाका प्रकारान्तर, पञ्चत-त्त्वाचन, सुदर्शनपूजादि, हयग्रीवपूजा, गायत्रोमाहात्म्य, दुर्गादिपूजाविधि, प्रकारान्तरमें सूर्यपूजा, महेश्वरपूजा, नानाविद्याकथन, शिवपवित्रारोहण, विष्णुपवित्रारोहण, मूर्तामूर्तध्यान, शालग्रामलक्षण, वास्तुनिर्णय, प्रामाद-लक्षण, देवप्रतिष्ठाकथन, योगधर्मादि, आङ्गिकनिर्णय, दानधर्म, प्रायश्चित्तविधि, अष्टनिधिकथन, प्रियव्रतवंश-वर्णनमें समक्षीपादि वर्णन, भूसंस्थानकथन तथा भारत-वर्षका विवरण, पञ्चक्षीपके राजपुत्रादिका नामकीर्तन, सप्त पाताल और नरकवर्णन, सूर्यादिके प्रमाण और संस्थानका वर्णन, ज्योतिःसार कीर्तनमें नक्षत्राधिप और योगिनी प्रभृतिका वर्णन, दशादि विचार, चन्द्र शुद्धादि, लग्नमान, चरस्थिरादि-भेदसे कार्यविशेष-की कत व्याकर्त व्यताका कथन, संक्षेपमें पुरुषों और नारि-योंका शुभाशुभ लक्षण, सांसाद्रिक लक्षण, शालग्रामशिला-

भेदकथन, तोयकथन, प्रभवादि पट्टिवर्षकीर्तन, पवन विजयादि, रत्नोत्पत्तिकथन, रत्नपरीक्षा, मुक्ताफलपरीक्षा, पद्मरागपरीक्षा, मरकतपरीक्षा, इन्द्रनौलपरीक्षा, वैदूर्यपरीक्षा, पुष्परागपरीक्षा, कंकेतनपरीक्षा, भीष्मरत्नपरीक्षा, पुनकपरीक्षा, रुधिररत्नपरीक्षा, स्फटिकपरीक्षा, विद्रुमपरीक्षा, मनेषमें बहुतोयकथन, गयामाहात्म्य, गयातीर्थकी उत्पत्ति प्रभृतिका कथन, गयामे स्नानभेद और क्रियाभेदसे फलभेदकथन, फल्गु नदीमें स्नान और रुद्रपदादिमें पिण्डदानमाहात्म्यादि कथन, विशाल नृपतिका इतिहास, प्रेतशिलादिमें पिण्डदानकथन, प्रेतशिलादिमें आह्वयार्थका फल, चतुर्दश मनु और तत्पुत्र तथा उनके मन्वन्तरके समाप्ति और देवादि कीर्तन, मार्कण्डेय क्रोष्टिसिवादिमें रुचिका उपाख्यान, क चक्षत पितृस्तव, पितृगणके निरुद्धमें रुचिको वरप्राप्ति, रुचिका परिणय, रोच्य मनुको उत्पत्ति, हरिध्यान, प्रकारान्तमें हरिध्यान, याज्ञवल्क्योक्त धर्मकथनमें धर्मदेशादि कथन, उपनयन तथा स्वाध्यायकीर्तन, रुद्रस्य धर्मनिर्णय, सङ्कोर्णजाति, पञ्च महायज्ञ सन्ध्योपासनादि कथन, रुद्रहीका धम और वर्णधर्मादि कथन द्रव्यशुद्ध, दानधर्म, आहविधि, विनायकशान्ति, ग्रहशान्ति, वानप्रस्थायमविवरण, यतिधर्म, पापचिह्नकथन, प्रायश्चित्तविधि, अशोचादि निर्णय, पराशर यमशास्त्र, नोतिसार, नोतिसारमें धनरक्षादिका उपदेश, नोतिसारमें ध्रुवपरित्याग निषेधादि नोतिसारमें राजनक्षत्र, भ्रूलक्षत्र गुणत्रिविधादि, मित्रामित्र विभाग, कुमार्यादि परित्यागादिका उपदेश, व्रतकथनारम्भ, अनन्यव्योदशीव्रत, अष्टपिण्डाद्दशोव्रत, अगस्त्याद्यव्रत, भौषपञ्चकादि व्रतविधि, शिवरात्रिव्रत, एकादशीमाहात्म्य विष्णुपूजन भौषकादश्यादि कीर्तन, व्रतावलम्बीकी नियमावली, प्रतिपदा व्रत, षडोसममीव्रत, रोहिण्यष्टमोव्रत, बुध्याष्टमीव्रत, अशोषाष्टमोव्रत, मङ्गलवमीव्रत, महानवमीव्रतप्रसङ्गमें कोशिकमन्त्रकथन, धौरनवमीव्रत, दमननवमीव्रत, दिग्दशमीव्रत, एकादशीव्रत, अथपण्डाद्दशोव्रत, मदनव्योदशीव्रतादि, सूर्यवशकीर्तन, चन्द्रशशवर्णन, पुरुषयज्ञकीर्तन, जनमेजयका वशकथन विष्णुकी श्रवतारकथा, पतिव्रता-माहात्म्य, रामायणकथन, हरिवंशकथन भारतकथन, आयुर्वेद

कथनमें सर्वरोगका निदान, ज्वरनिदान, रक्तपित्तनिदान, कासनिदान, हिकारोगनिदान, यक्ष्मनिदान, शरीरचकनिदान, हृद्भ्रोगादि निदान, मदाव्ययादिनिदान, अर्शादिनिदान, शतिसारनिदान, मूत्राघातनिदान, प्रमेहनिदान, विद्रुधिनिदान, उदर नदान, पाण्डु शोथनिदान, वमर्षादिनिदान, कुष्ठनिदान, किमिनिदान, वातव्याधिनिदान, वातरक्तनिदान, सूत्रस्थान, अनुपानादि कथन, ज्वरादि रोगोंकी चिकित्सा, नाडोत्रणादिको चिकित्सा, स्त्रीरोगादिको चिकित्सा, द्रव्यनिर्णय, हृततेलादिककथन, नानायोगादिकथन, नानारोगोपधकथन, वशीकरणदि, दन्तश्वती कारणादि, स्त्रीवशकरण और भयकमारणादिकथन, नेत्रशुलादिका औषधकथन, रक्तगण्डिका उपाय, ग्रहणीरोगका औषध, कटिशूलका औषध, गणेशपूजा, प्रमेहका औषध, मेषाहृदिका औषध, रक्तपात निवारणका औषध, पटलदन्तव्ययादिका औषध, गण्डमालादिका औषध, सर्पाघातादिका औषध, योनिव्ययाका औषध पशुचिकित्सा, पाण्डुरोगादिका औषध, बुद्धिनिमलकरणका औषध, विष्णुकवच, विष्णुविद्या, विष्णुधर्मनामक विद्या, गरुडविद्या, त्रिपुराकल्प, प्रथमगणना, वायुजय, अश्वचिकित्सा, औषधिका नामनिर्देश, व्याकरणके नियम, उदाहरण, छन्दशास्त्रारम्भ, मालाहृत्कथन, समहृत्, अर्धसमहृत्, विषमहृत्, प्रस्तारादि निर्देश, धर्मोपदेश, स्नानविधि, तर्पण, वैश्वदेवविधि, सन्यायविधि, आहविधि, नित्यश्राद्ध, सर्पिण्डोकरण, धर्मसारकथन, शूद्रोच्छेद भोजनादिका प्रायश्चित्त युगधर्मकथन, नैमित्तिकप्रलय, सप्तसप्तकथनमें पापपरिमाण, अष्टाङ्गयोग, विष्णुभक्ति, नारायणनमस्कार, नारायणकी आराधना, नारायणका ध्यान, विष्णुमाहात्म्य, नृसिंहस्तव, ज्ञानास्यत, मार्कण्डेयप्रोक्त नारायणका स्तव ब्रह्मप्रोक्त विष्णुस्तव ब्रह्मज्ञान, आत्मज्ञान, गोतासार, अष्टाङ्गयोगका प्रयोजन, वैकुण्ठमें नारायणके प्रति गरुडका विविध प्रथ, शोर्ध्वदेविक्रमि, नरकके स्वरूपका वर्णन, गर्भावस्थाकीर्तन, देगदानादिकथन पर्यन्तरदाहविधि, अशोकलक्षणाकालनिरूपण, ह्योसर्गकथन, पञ्चमेतापाख्यान, शोर्ध्वदेहिककर्माधिकारी, वधुवाहन प्रेतसंवाद, आहका नानारूपदृष्टिकीर्तन, मनुष्यकादि स्तवकारण, मनुष्यको

Handwritten notes and signatures at the bottom right of the page.

तखकथा, प्रेतत्वनाशक कर्मकथन, आतुर सुसुपुंका दानकृत्य, यमनगरपथकथा, यास्यपुरादि गमनावस्था, यममार्ग निष्कृतिकथन, चित्रगुप्तपुरगमनकीर्तन, प्रेतका वामस्थाननिर्णय, प्रेतका लक्षण, प्रेतमुक्तिका उपाय प्रकारान्तरमें, पञ्चप्रेतका उपाख्यान, प्रेतस्वरूप निरूपण, मनुष्योंका आयुनिरूपण, बालकोंका पिण्डदानादि, शैशव आदि भेदोंमें कुमारकालसे कर्तव्यका उपदेश, सपिण्डीकरणविधि, विशेष ज्ञानार्थ नारायणके प्रति गरुड़की जिज्ञासा, औध्व देहिक क्रियाकथन, दानविधि, दानमाहात्म्यादि, जीवोत्पत्तिकथन, यमलोकका विस्तारदि, युगभेदसे धर्मकार्यकी व्यवस्था, टाहकारियों और सगोत्रोंके प्रति कर्तव्योपदेश, अशौचादि निरूपण, सपिण्डीकरणमें विशेषविधि और श्रवविधि, अन्नशनादि द्वारा मरणका फल, जलकुम्भप्रदानादि, अल्पघातसे मृत व्यक्तियोंकी गति और उद्धारका उपाय, दार्तिकादिमें वृषोत्सर्गका विधान, पूर्वकृत कर्मके कर्ताका अनुबन्धत्व कथन, विशेष दानका प्रकार, जलाग्निबन्धनभ्रष्टोंका प्रायश्चित्तकथन, आत्मघातीका आद्यादि निषेध, वार्षिक आद्यादि, पापभेदमें चिह्नभेद तथा जन्मभेदकथन, मृतके प्रति अनुताप और मोक्षका उपाय ।

गरुड़सुत (सं० पु०) नृत्यमें एक प्रकारका भाव । इसमें हाथोंकी लताके जैसे और पैरोंकी विच्छूके जैसे विस्तृत कर छाती ऊपरकी ओर उभारते हैं ।

गरुड़भक्त (सं० पु०) सम्प्रदायविशेष । यह गरुड़की उपासना करते हैं । इसाके जन्मके पूर्व यह सम्प्रदाय भारत वर्षमें प्रचलित था ।

गरुड़मन्त्र (सं० पु०) गरुड़स्य मन्त्रः, इ-तत् । गरुड़ देवत मन्त्रविशेष ।

“सम्बन्धकी नेवयुतः पात्र क्षारोऽपिसुन्दरी ।

गारुडो मनुरख्वाती विषहयविनाशनः ।

स्मरन् गरुडमात्मान मन्त्रनेनं जपेन्नरः ॥

विषमालोचनेनेवहन्वाग्नागमयं कृतः ॥”

मन्त्र यथा—विष श्रीं स्वाहा (तन्त्रसार) इस मन्त्रसे विष

नष्ट होता एवं सर्पका भय जाता रहता है ।

गरुड़सुद्रा (सं० स्त्री०) विष्णु पूजाका अङ्गभूत-सुद्रा^४ विशेष ।

“इको तु विष्णो कृत्वा गयथित्वा कनिष्ठके ।

मिथस्तर्धनिकं श्लिष्टे शिष्टावद्गृहकां तथा ।

मध्यमागामिकापे तु ही पचाविष आनयेत् ।

पपा गरुडसुद्रा स्याद् विष्णोः सतीपवर्द्धिं भी ॥” (तन्त्रसार)

गरुड़यान (सं० पु०) विष्णु, श्रीकृष्ण ।

गरुड़रुत (सं० स्त्री०) गरुड़स्य रुतमिव । १ कन्दोविशेष ।

“गरुड़रुतां नजो भजतगा यदा स्युः मदा ॥” (कन्दोमधुरो)

इसके प्रत्येक चरणमें नगण, जगण, भगण, जगण

और तगण तथा अन्तमें एक गुरु होता है । गरुड़स्य रुतः

इ-तत् । २ गरुड़का शब्द ।

गरुड़वेगा (सं० स्त्री०) गरुड़स्य, वेग इव वेग उत्पत्तो अस्याः । लताविशेष ।

“वीरुधयो वागो जोतिषती च गरुडवेगा ॥” (वदतमं० पृ३.८०)

गरुड़व्यूह (सं० पु०) गरुड़ इव आकारेण व्यूहः । गरुड़ा-
कृति सैन्यरचनाविशेष । इसमें सेनाका मध्यभाग अधिक विस्तृत तथा आगे और पीछेका भाग पतला होता है । गरुड देवी ।

गरुड़शालि (सं० पु०) स्वनामख्यात शालिधान्यविशेष पक्षिराज धान ।

गरुड़शिला—कुमाऊं प्रदेशस्थ हिमालय पहाड़के निकट
वदरीनाथ तीर्थके वैष्णवचैत्रके अन्तर्गत १२ क्षेत्रोंमें
एक क्षेत्र ।

गरुड़ाग्रज (सं० पु०) गरुड़स्य अग्रजः । विनताके ज्येष्ठ पुत्र अरुण । ये सूर्यके मारथी हैं ।

* विनता चापि मिहार्थां वभूव सुदिना तथा ।

ऊनयानास पुत्रो हात्ररुणं गरुडं तथ ॥” (भारत १।३।२२)

गरुड़ाङ्कित (सं० स्त्री०) गरुड़ इव अङ्कितम् । मरकत-
मणि ।

गरुड़ाचल—मन्द्राज प्रदेशमें राजमहेन्द्र सरकारके अन्तर्गत एक पर्वत ।

गरुड़ाश्मान् (सं० पु०) गरुड़ वर्षा इव वर्णवान् अस्मा प्रस्तरः । मरकतमणि ।

गरुडासन (सं० स्त्री०) आमन वशिष ।

“गरुडासनमवच्छेदेन ध्यानस्थितो सुवि ।

सर्वदीपाद्युर्विनिर्मुक्तो भवतीति महावली ॥

एकपादसुरो बद्धा एकपादे च दखवत् ।

जङ्घापादसन्धिदेशे जान्वोरयं व्यवस्थितम् ॥” (रुद्रयामन)

अर्थात् एक पैर छातो पर रख कर दूसरा पैर दख-

के जैसा रहति है, तत्पश्चात् जहा और पाठके मन्थिस्थान पर जानुका अग्रभाग स्थिरभावमे स्थापित किया जाता है। इसीको गुरुडामन कहते हैं।

गुरुडाहृत (स० पु०) सोमलताभेद।

गुरुडोत्तरी (स० स्त्री०) गुरुडो वर्णन उत्तरीणोऽतिब्रान्ती ऽनेन। भरकतमणि।

गुरुडोपनिषद् (स० स्त्री०) अथर्ववेदान्तगत एक उपनिषद्।

गुरुत् (स० पु०) गुरुणाति शब्दायते वायुवेगनेति। १ पत्र, पत्र, पर। २ निगरण, गला। ३ भक्षण, भोजन।

“वृषर्षादि गुरुत् ३३। (यशु २ १००२)

गुरुत्सु (स० पु०) गुरुत प्रगस्तपत्ता मन्थस्य गुरुत्सुतुप। १ गुरुड।

“नवाप लोचया प्राज्ञां गुरुत्सुतुपत्तयोः। (भाग ६।१६११)

३ पद्मिमात्र। ३ हविर्भक्षक अग्नि। (यशु ३ १००२)

गुरुदाम—गुजरातमें रहनेवाली एक जाति। ये नीच जातियोंका पीरोहिय करते और अपनेको ब्राह्मण समझते हैं। लेकिन ब्राह्मण इन्हें कई एक कारणसे छुणा-हट्टमें देखते हैं। पहला कारण यह है कि किसी गुरुदामने अपने गुरुको लडकोसे विवाह किया था। २रा इन्होंने धेदामका पीरोहिय स्वीकार किया था, ३रा—एक यज्ञमें इन्होंने यज्ञपशु खाया था और ४ था—ये ब्राह्मण पुरोहितके वगज हैं। इन्होंने उपाधि देव, जोशी, नागर, योमानी और शकुल है। कोई कोई राजपूतको उपाधि गोहिल और गन्धोय धारण किये हुए हैं। इनमेंसे थोड़े खेतोवारी कर और थोड़े कपडा बुन कर अपनी जोविकानिर्वाह करते हैं। ये बहुत थोड़े पदे लिखे हैं। ये अपने लडकोंको स्कूल पठने नहीं भेजते वरं घर पर ही थोड़ी बहुत मस्कनको गिचा देते हैं। ये राम, तुलसीदास तथा ऐवकी पूजा करते हैं। इनमेंसे बहुत रामानन्दी और परिलामो मप्रदायके अनुयायी हैं। भूत प्रेतोंमें इन्हें अधिक विश्वास है। चन्द्रमा और सूर्यकी भी ये अर्चना करते हैं। जन्म उपनसमें ये किसी तरह का उत्सव नहीं मनाते हैं। ब्राह्मणोंकी नाई ये भी अपने लडकोंको पाठ या भी ययकी अवस्थामें यज्ञोपवीत देते हैं। इनमें यानविवाह तथा विधवाविवाहको

प्रथा प्रचलित है। ये शवका जलाते हैं। ब्राह्मणोंके जैसे ये भी श्राद्ध कर्म करते हैं। जब गुरुदाम किसी तरहका अपराध करता है तो उसे पञ्चायतसे दण्ड मिलता है।

गुरुदुयोधिन (स० पु०) गुरुदुभ्या पत्नाभ्या युध्यतीति, युध णिनि। भारतो नामक पत्नी, लावपत्नी।

गुर्यारि—आमामके अन्तगत दरङ्ग जिलाका एक वन। इस वनसे मूल्यवान शालकाष्ठ लाये जाते हैं।

गुरुल (स० पु०) गुरुड स्य लो वा। गुरुड।

गुरुहर (हि० पु०) भारो, वीर्य।

गुरुर (अ० पु०) घम ड, अभिमान।

गुरुरत (अ० पु०) गुरु रक्षो।

गुरुरी (अ० वि०) घम डी, अभिमानी।

गुरवान (फा० पु०) १ अङ्ग, कुरते आदि कपडाकी गले परकी काट। २ गले परको पटो, कालर।

गुरेरना (हि० स्त्री०) १ घेरना। २ छेकना, रोकना।

गुरेरी (हि० स्त्री०) गुराडी घिरनी।

गुरेरो—विहारमें रहनेवाली एक जाति। मीड वकारियों का रखना और उनके रूप से कबूल बुनना ही इनकी उपजीविका है। इस जातिको उत्पत्तिका कोई प्रवाद या विषय विवरण नहीं मिलता। मिर्क इतना ही मानूस पढता है कि वह पश्चिम अञ्चलसे गये हैं। यह स्वान्तिके साथ व्यञ्जन आदि खानेमें कोई बुराई नहीं समझते। सम्भवत यह खाना जातिको एक शाखा है। यहाँ कहीं इन्हें ‘गदारिया’ और कहीं कहीं भेडिहर कहते हैं। ३॥ १३॥ १३॥

विहारमें इनकी चार अणिया है—धेनगड फर-खात्रादी, गङ्गाजनी और निकर। धेनगडमें चटेल, चौधरिया, काश्यप और नानकर ४ गोत्र होते हैं। यह अपने गोत्रमें विवाह नहीं करते। दूमरो अणियोंके गरीरो ‘भमेरा’ ‘चचेरा’ आदि ६ पुरुषोंके बीच कन्यापुत्र का विवाह करनेमें हिकचिकाते हैं। इनमें कबूलिया, कम्पनी, सरार और रावत ४ पटविया चलती है।

लडकपनमें ही इनका विवाह हो जाता है। गुरी वन्या जोनेमें पुरुष फिर विवाह कर सकते हैं। गुरी रियोंमें विधवाविवाह प्रचलित है। सामिके ग्रथ

उठा त्याग करनेसे स्त्री विधवाको तरह विवाह कर सकती है। परपुरुषमें आसक्त रहनेसे स्त्रीको जात-च्युत और समाजसे वहिष्कृत कर देते हैं। पुरुषको कोई कुकर्म करने पर गांवकी पञ्चायत और मण्डलसे बंधी सजा मिलती और अपने पापका प्रायश्चित्त करना पड़ता है। फिर वह स्वजातिको भोज दे करके समाज-भुक्त होता है।

इनमें सभी वैष्णव हैं। दो-एक लोग शैव भी देख पड़ते हैं। गरियादाम नामक किसी गरीबने पहले अपनी जातिमें वैष्णवधर्म चलाया था। उनके शिष्य उनकी धर्मगुरु-जैसी भक्ति करते हैं। सांस मछली कोई नहीं खाता। कनौजिया या जोषी ब्राह्मण ही इनका पारोहित्य करते और वैरागी अथवा 'दशनामी' मंत्र्यासो इनके मन्वदाता गुरु रहते हैं। वन्दो, गौरैया धर्मराज, नरमिंह, पांचपीर और कालीमाता इनकी कुलदेवता हैं। आवण मासके अन्तिम दिनको घरके लोग नाना वध उपचारोंसे इन सभी देवदेवियोंकी पूजा किया करते हैं। शैवमें कोई कोई बकरी आदि बेचते समय एक भेड़ रख छोड़ता है। फिर उसको 'बनजारी'के सामने बलि दे आसोदमें भोजन करते हैं।

यह अपनेको अहीरोसे ज'चा और मजरोतियों तथा कृष्णायतोंकी बराबर समझते और उनका दिया हुआ अन्नजल आदि ले लेते हैं। परन्तु अपने आप बकरी और भेड़ोंकी बधिया करनेसे इनका पानी मजरोती और कृष्णायत नहीं कूते और साथ ही इन्हें और भी बुरा बतलाते हैं। बिहार और बङ्गालके ब्राह्मण इनका कूआ पानी पीते, परन्तु पुर्निया जिलेमें यह बहुत बुरे माने जाते हैं। अपनी जातिवालोंकी छोड़ करके किसी दूसरे के पास गड़रियेका काम करनेसे इनकी जाति जाती है।

गरेली (हिं०) गरेगा देवी।

गरयां (हिं० स्त्री०) पगहा।

गरीत—मध्यप्रदेशमें इन्दौर राज्यके रामपुर-भानपुर जिले और इसी नामके परगनेका एक शहर। यह अक्षा० २४° १८' उ० और देशा० ७५° ४२' पू०में अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ३४५६ है। ऐसा कहा जाता है कि पहले इस शहरमें भीलोंका वास था और यह १६वीं

शताब्दीमें रामपुरके चन्द्रावत राजपूतोंके हाथ आया। यह शहर ऐतिहासिक घटनाके लिये प्रसिद्ध है। १८०४ ई०में कलनल मोनमन और यशवन्तराव हीलकरके माय इसी स्थान पर लड़ाई छिड़ी थी। मोनमन प्राण लेकर भागा, लेकिन सुकुन्दवारमें रोक रखा गया था। गरीतसे ४ मील उत्तरपूर्व पियलाग्राममें जब मोनमनकी सेना ल्युमन और अमरमिंहके अधीन पहुंची तो मोनमन मराठाके बन्धनसे मुक्त हुए। इस जगह यशवन्तराव पूर्ण रूपसे पराजित हो भानपुरमें गरीत जानेका वाद्य हुए। थोड़े समयके बाद यशवन्त रावकी मृत्यु हो गई। उस समय सोनधिया नामकी एक जाति चारों ओर जधम मचा रही थी, इसलिये १८३४ से १८४२ ई० तक एक सैन्यदल इस शहरमें रखा गया था।

गरीया—युक्तप्रदेशके भाँमो जिलाको एक तहसील। यह अक्षा० २५°२३' तथा २५° ४८' उ० और देशा० ७८° १' एवं ७८° २५' पू० पर अवस्थित है। भूपरिमाण ४६६ वर्ग-मील है और लोकसंख्या प्रायः ८८२२६ है। इसमें १५३ ग्राम लगते हैं लेकिन शहर एक भी नहीं है। यहांकी आय १२५००० रु० की है। इस तहसीलकी जमीन काला दोख पड़ती है।

गरीदि—सुसलमान जातिविशेष।

गरोल—बम्बई प्रदेशमें रेवाकान्ता वभागके अन्तर्गत एक छोटा राज्य। इसका कर रेवाकान्ता एजन्सी द्वारा बड़ीदा गायकवाड़के निकट भेजा जाता है।

गरोला—मध्यप्रदेशमें मन्ार जिलान्तर्गत एक नाखुराज ग्राम। इसका क्षेत्रफल प्रायः १६००० बोधा है। दिल्ली बादशाहने राव रामचन्द्रको यह स्थान अर्पण किया था। १६४६ ई०को पेशवाने इसका अधिकांश अपने अधिकारमें कर लिया था। इस ग्राममें प्राचारवेष्टित एक छोटा दुर्ग है। इसके पूर्वमें एक ङद है। इस ङदके चारों तरफ जमीन उपजाऊ है। इस ग्राममें एक विद्यालय वर्तमान है।

गरोह (फा पु०) समूह, कुंड, जत्या।

गर्ग (सं० पु०) गृणाति वेद शब्देन स्तौति। गृ-ग। १ वृहस्पतिके वंशजात मुनिविशेष। ये वितथके पुत्र थे। इन्होंने शिवकी आराधना करके चौशठ अङ्ग ज्योतिषादिमें ज्ञान लाभ किया था।

“सुतु षटाङ्गनन्दु कला ज्ञान समारमुत्तम् ।

सरस्वत्याकृतं सुतो मनोयज्ञेन पाण्डव ॥ (भारत १।१।२।२८)

“वक्ष्यामि गर्गादीनां मम चरिते ॥” (उपनिषद् १।१।२।२८)

इन्होंने अश्वार्युर्वेद, केरलप्रश्न, केरलपायावलो, गर्ग महिता नामक ज्योतिष और गर्ग मनोरमा नामक उसकी टोका, प्रश्नमनोरमा, प्रश्नविद्या, पौड्यप्रश्न, ज्योतिषगर्ग, पल्लीसरट विधान, कात्यायनश्रौतसूत्रभाष्य तथा गर्ग-पवति प्रभृति ग्रन्थ प्रणयन किये हैं । (पु० खी०) गर्ग अपत्ये घञ् । २ गर्गं क गीतापत्य, गर्गं क वशज । गगा गत्व भोग्यात् (महाभाष्य) ३ म् निविशेप । ये कुण्णिगर्ग नामसे ख्यात हैं । (भारत) किसोके मतसे इन्होंने गर्ग-स्मृति रचना की है । माधवाचार्य, हेमाद्रि, कमला कर प्रभृति स्मार्तानि गर्ग स्मृति उद्धृत की हैं । ४ ब्रह्माके एक मानसपुत्रका नाम । इनकी स्मृति गयासे यज्ञकी लिये हुई थी ।

“गम कौशिक गामहोः । (सप्तपुराणमें गतापाठ्य २७०)

५ सगीतमें एक ताल । इसमें चार द्रुत और अत में एक खाली या विराम होता है । (सगीत मोदक) ६ वैल सांड । ७ एक कोडा जो धृत्वेमें घुमा रहता है, गगरो । ८ द्विचक्र, विच्छू । ९ किञ्च लक, केसुभा । १० एक जैन ग्रन्थकार । इन्होंने माघधी भाषा में कर्मविपाक प्रणयन किया है । ११ एक पर्वतका नाम । १२ नन्दके एक पुरोहितका नाम । १३ एक प्राचीन कवि ।

गर्ग-विराट् (सं० पु०) कात्यायनश्रौतसूत्रके अनुसार एक प्रकारका योग जो तीन दिनों में होता है ।

(कात्यायनश्रौतसूत्र २।१।१।८)

गर्गभूमि (सं० पु०) एक राजकुमार ।

गर्गर (सं० पु०) गर्ग इति शब्द राति राज । १ मक्षारविशेष, एक मछली । इसका गुण—मधुर, छिद्य और पित्तनाशक है । (रासत्रयम्) इसकी पृष्ठ पर बहुते रेखाये और शल्क रहती हैं । (रासत्रयम्) यह पित्तहर, वात, कफनाशक तथा कोपकर है । (भावप्रकाश) २ भवर । ३ एक प्रकारका प्राचीन बाजा । यह वैदिक कालमें बजाया जाता था । गागर ।

गर्गरक (सं० पु०) गर्ग र स्वार्थे कन् । समुद्रजात गर्गर मत्स्य, समुद्रमें होनेवाली गर्गर मछली (Pimelodus gogora)

“महर्गग रथ चन्द्रक मङ्गलोत्त राजशुभ प्रथमय ७।२६ ।”

(सुप्रथ, सुदृष्ट्यात् ४६ ७०)

गर्गरी (सं० खी०) गर्ग जातो डीप् । १ दधिमन्वन्पाव वह बर्तन जिसमें दही भया जाता है । भाठ, दहेठी । २ मन्वनी । ३ गगरो, कलसी ।

“मिषादो श्लथ देया वारिपूर्वा च गर्गरी” (तिथिपत्र)

गर्गवशी—राजपूत जातकी एक श्रेणी । ये भाजमगढ और गोरखपुरमें रहते हैं ।

गर्गशिरस् (सं० पु०) दैत्यविशेष, एक राक्षसका नाम ।

“ररा मग शिरा वथ । (इन्द्रक ३७)

गगसहिता (सं० खी०) गणेश सहिता, मध्यपदलो० । कालज्ञानार्थ गर्गज्ञत सहिता, ज्योतिषग्रन्थविशेष, गर्गका बनाया हुआ एक ज्योतिष ग्रन्थ इससे कालका ज्ञान होता है ।

गर्गस्रोतस् (सं० खी०) गर्गण आश्रितमुपित वा स्रोत । १ तीर्थविशेष । गर्गमुनिके नामानुसार इसका नामकरण हुआ है । यह तीर्थ मरखतोतीर्थमें अवस्थित है । (भारत २।१८७०)

गर्गाट (सं० पु०) गर्ग इति शब्देन अटति अट भच् प्रक-न्वादित्वात् अलोप । मत्स्यविशेष, एक प्रकारकी मछली । इसका दूसरा नाम योगनाविक है ।

गर्गादि (सं० पु०) पाणिनीय गणविशेष । गर्गादि गण यथा—वल्क, सङ्कृति, अज, व्याघ्रपाद, विदभृत्, प्राचीन-योग, अगस्ति, पुनस्ति, चमस, वैभ, अग्निवेश, शङ्ख, शट, शक, एकट धूम, अयट, मनस, धनञ्जय, हृच, विश्वावसु, जरमाण, मोहित, भगित, वभ्नु, मण्डु, गण्डु, शङ्ख, लिशु, गृहणु, मन्तु, मुनु, अलिगु, जिगीयु, मनु, तन्तु, मनायी, सुनु, कथक, कान्यक ऋच तनु, तरुच, तलुच, तण्ड, वतण्ड, कपि, कत, कुक्कत अनडुङ्क, कगव, शकल, शोकच, अगम्हार, कुण्डिनो, यक्षवल्क, पर्णवल्क, अभय जात विरोहित ह्यगण, बहुमन, शण्डिन, चणक, शुक, मुहल, सूसन, जमटग्नि, धराशर, जातृर्ण, महित, महित, अशरथ, शकैराच, पृतिमाघ, श्युरा, शररक, एलाक, पिङ्गल, कृष्ण, गोमन्द, उलुक, तितिव, भिपज, भिष्णज, भडित, भण्डित, दम्भ, चकित, चिजि कित, देवह, इन्द्रह, एकनु, पिष्णु, हृहदग्नि, सुनोहिनु, सुनाभिनु, उक्थ और कुटीशु ।

गर्ज (सं० पु०) गर्ज भावे घञ् । हाथोका शब्द, चिर्घाड़ ।
२ गर्जन, मेघाटिका शब्द ।

“सावाटि चतुरो सासान् गर्जमानं विपन्नं येत् ॥” (अ० ति)

गर्जक (सं० पु०) गर्जति इति गर्ज-ण्वल् । मत्स्यविशेष,
एक मछली । इसका पर्याय—शाल और शालज है ।

गर्जन (सं० लो०) गर्ज भावे ण्यट् । १ शब्द, आवाज ।
२ क्रोधित पशुका शब्द । ३ सिंहादिकी आवाज ।

“वारणगर्जन” (दामोदर ५।२५) ४ क्रोध, गुस्सा । ५ वृक्ष-
विशेष, एक पेड़ । ६ तैलविशेष । एक प्रकारका तेल ।

गर्जनतैल, गर्जनवृक्षजात (Dipterocarpus turbinatus)
निर्यास विशेष, गर्जन वृक्षका गोन्द । आसाम,

त्रिपुरा, चट्टग्राम, ब्रह्मदेश, पेगू और मलयद्वीप समूह-
में यह वृक्ष बहुत उपजते हैं । इस वृक्षकी जंघाई

प्रायः २५० फुट और चौड़ाई १५ फुट होती है । वर्षा-
कालमें इसमें फूल और बीज लगते हैं । इससे धूना

संयुक्त गाढ़े कृष्ण और श्वेतवर्णके दो प्रकारके गोंद
निकाले जाते हैं । इसीको गर्जनतेल कहते हैं । इसकी

गन्ध बहुत तीव्र होती है । पृथ्वीतलसे तीन चार फुट
ऊपर वृक्षके धड़में चार या पांच टंचका एक गड्ढा बनाया

जाता है । उस गड्ढेमें अग्नि दे कर दग्ध करने पर तेल
पिघलने लगता है । तेलको नीचेके बरतनमें लानेके

लिये वृक्षमें नली बटी रहती है । प्रति मसाला उम
गड्ढेको फिरसे नया काट कर अग्निद्वारा दग्ध करना

पड़ता है । किसी किसी वृक्षमें दो वा तीन गड्ढे करने
पर भी वृक्ष नहीं मरता है । अगहनसे फाल्गुन मास

तक इसी तरह तेल बाहर निकाला जाता है । एक
वृक्षसे प्रतिवर्ष तीनसे पांच मन तेल निकलता है । इसका

तेल बहुत उपयोगी है । किसी काष्ठमें यह तेल लगा देने-
से वह बहुत दिन तक चलता है । बारनिस इत्यादि

काममें भी इसका व्यवहार किया जाता है ।
गर्जमान (सं० लि०) जो गर्जन करता हो ।

गर्जर (सं० लो०) गर्ज वाहुलकात् अरच् । गृञ्जन-
गजरा । इसका पर्याय—पिण्डमूल, पीतकन्द, सुमूलक,

खादुमूल, सपौत, नारङ्ग और पीतमूलक है । इसका
गुण—मधुर, रुचिकर, किञ्चित्काटु, कफ आधान, किमि-
श्रुत, दाह, पित्त, और लक्षणाशक है ।

गर्जा (सं० स्त्री०) गर्ज-टाप् । गर्जन, मेघाटिकी ध्वनि,
गरज ।

“गर्जयुगर्जं जगत्तु जगत्तु जगत्तु जगत्तु ॥”

उत्काष्ठ स्रष्ट विराट्क रमसाः स्त्रोत्वे तु टाडलाः ॥” (विकाण्ड)

गर्जाफल (सं० पु०) गर्जया गर्जनेन फलं यस्य । १ विक-
ण्टकवृक्ष, जवामा, धमामा । २ युद्ध, नडाई । ३ उत्तेजन,

उत्साह । ४ भर्त्सन, कुत्सा, निंदा ।
गर्जि (सं० पु०) गर्ज-इन् । मेघका शब्द ।

गर्जित (सं० लो०) गर्ज भावे क्त । १ मेघाटिका शब्द,
मेघकी गरज ।

“प्रवृत्तघन गर्जित प्रतिरवाङ्कारो सुष्टु ।” (वेदोसंसार)

२ रणादिमें आस्फालन, लड़ाइकी मारकाट ।

“एते हि युध्यन्व रणे हिं वृथा गर्जन्ते ते ।” (दृश्यं १२२ ५२)

(ति०) कर्त्तरि क्त । ३ कृतशब्द, जो शब्द किया
गया हो ।

“सन्ध्यायां गर्जते मेघे शास्त्रविर्णा करोति यः ।

षत्वारि तस्य नयन्ति आद्युर्विद्याद्यशो यन्मु ॥” (अ० ति)

(पु०) गर्जो जातोऽस्य तारकादित्वात् इतच् । ४ मत्त-
हस्ती, मतवाला हाथी ।

गर्ज्य (सं० लो०) गर्ज-ख्यत् । गर्जनीय, गरजने योग्य ।
गत (सं० पु०) गिरति गृ-निगरणे तन् । १ भूमिच्छिद्र,

दरार । इसका पर्याय—रन्ध्र, विल, गह्वर, अवट, भूरन्ध्र,
दर, श्वभ्र और पृथिवीरन्ध्र है ।

“न स मल्लेषु गर्तं पु न गच्छन् नापि घास्यत ।” (मनु, ४।३३)

२ तिगर्तदेश । ३ गृह, घर । ४ रथ ५ । सभा-
स्थान । ६ एक नरकका नाम । ७ स्त्रीके नितम्बका कुकु-
न्दर, औरतके चूतड़ पर गड्ढा । ८ रोगप्रभेद । ९ वह

जलाशय जिनको गतिकी प्रवाहस्थान आठ हजार धनुसे
अधिक नहीं हो ।

गर्तसद् (सं० त्रि०) गर्तं मीदतीति मट्-क्लिप् । रथस्थित,
जो रथ पर बैठा हो ।

गर्ताटक (सं० पु०) वनमूषिका, जंगलो मूसा ।
गर्ताश्रय (सं० लि०) जो गर्तमें रहकर अपनी जीविका-

निर्वाह करता हो ।
गर्तिका (सं० स्त्री०) गर्तोऽस्त्यस्याः ठन् । तन्तुशाला,

तांतका घर ।

गर्द (स० त्रि०) गतमहंति यत् । गर्तं विशिष्टं देश । वह देश जिनके चारों ओर खाई हो ।

गर्द (फा० स्त्रो०) धून, राख, खाक ।

गर्दखोर (फा० वि०) जिसका रंग मिट्टी आदिमें पड़नेसे खराब न हो, खाकी रंग ।

गर्द तोय—जैनमतानुसार ब्रह्मस्वर्ग (पाचवे मर्ग) के आठो दिशाओंमें रहनेवाले आठ प्रकारके लोकान्तिक देवोंमेंसे पाँचवे देव ।

“सारास्वताऽपि मन्त्राद्गर्दपगं लोचयति ताशाभासां टाया ।”

(गणपथ भू. त ४ अ० ११ सू. ०)

ये ब्रह्मचारी होनेके कारण देवपि कहलाते हैं । ये निरन्तर ज्ञान-चर्चामें ही लीन रहते हैं । तीर्थङ्करके तप-कान्याणके समय अर्थात् जब तीर्थङ्कर राज्यादि चण्डभङ्ग पर पदार्थोंको त्याग कर दिग्गमरी टीचा धारण करनेका विचार करते हैं तब ये देवपि आ कर उनके विचार-को दृढ करनेके लिए उन्हें समारकी अमारता दिखलाते हुए उनके विचारोंकी अनुमोदना करते हैं । ये देवपि मनुष्य दो जन्म धारण कर नियममें मोक्ष पाते हैं । अर्थात् तोमरी वार इनको जन्म नहीं लेना पड़ता ।

(तन्त्राय राजशक्ति ४० ४ चण्डाय)

गर्दन (हि० पु०) शरदन देवी ।

गर्दभग (हि० पु०) एक प्रकारका गाँजा जो—कश्मीरके दक्षिण भागोंमें उत्पन्न होता है ।

गर्दभ (स० पु०) गर्दति कर्कशगव्यं करोति, गर्दं अभवत् । गणविकनिर्गमं नोऽप्यथ । १७. १। १११ । पशुविशेष, गधा । इसका संस्कृत पर्याय—चक्रीवान्, वालिय रामभ, खर, रायभ, शङ्करुर्ण, भारग, भूरिगम, धूसराश्व, वेशव, धूसर, स्मरस्य, चिरमेहो पशुचरि, चारपुङ्ग, चारट और घाम्याश्व है । तामिनमें गधेकी ‘कन्द’ और तीनगुमें ‘शुर्धि’ कहते हैं ।

यह पशु दूधपीनेवालोंमें एकग्रफयं नोऽभुक्तं है ।

गधा दे खनेमें कितना ही घोड़े जैसा होता है इसकी पूँछके ऊपरी भाग और पिछले भागके बाल कुछ कुछ कम पड़ते हैं । रङ्ग खाकी लगता है । फिर किसी किमोका रङ्ग रेत-जैसा भी होता है । गुद्दीकी जठमें रीठसे काले रङ्गके रीए एक सीधी धारी जैसी बन करके

गलिके नीचे तक चले जाते हैं । फिर ऐसी ही दूसरी धारो सरसे पूँछ तक पड़ती है ।

गधेका रङ्ग यदि ज्यादा सफेद रहता, तो यह ध्व्वा कुछ अधिक माफ उतारता है । नदी ती बहुत अधिक लच्य नहीं ठहरता । पावके खुरमें भी घोड़ेसे थोड़ा प्रभेद पड़ता है ।

गधेका सूस शरीरकी देखते ज्यादा बड़ा और बगल और भी ढालू होती है । बीचमें एक गद्दा जैसा रहता है । पहाड़ी राहमें जहा घोडा जा नहीं सकता, वहाँ यह उसके सहारे बैठके पड़ जाता है । चिकनी जमीन पर चलनेमें भी उससे सुभौता पड़ता है । मैदानमें घोड़े, जङ्गलमें हाथी और रेतमें ऊटकी तरह पहाड़ पर बोभ टोनेके लिये गधा उपयोगी है । इसके कान लम्बे होते हैं । मत्वा शरीरको देखते कुछ बड़ा लगता है । पाव छोटै पड़ते हैं । पेरके खुरों पर एक एक काला धब्बा रहता है । गधा शान्त और सक्षिण्य होता, परन्तु निबोध नहीं । किसी राहसे एक बार ले जाने पर यह सुगमतासे उसकी पद चान लेता है । भौड़ भाडमें यह अपने मानकिकी भी नहीं भूलता । पैठका बोभ ज्यादा होनेसे यह नहीं झुकता और बराबर चला करता है । गधेकी बोनी कडी है । इसी लिय किसी गानेवालीका खर कर्कश होनेसे उसको गधा कहा जाता है । साधारणतः लोग गर्दभ जैसा निर्बोध दूसरा पशु नहीं समझते और इसीसे गवार आदमीको भी गधा कहा करते हैं । गधेका दूध अपचके लिये बहुत सुपीद है । माका दूध न मिलने पर गधेका दूध पी पो कर कितने ही बच्चे जी जाग गये हैं । भारतमें साधारणतः धीवियोंके कपड़े टोनेकी गधा काम आता है । यह घोड़ेमें ही थक जाता है । घामपात आदि खा कर ही इसको दृति हो जाती है ।

११ मास गर्भधारण करके गर्दभो मन्तान प्रभव करतो है । बच्चा तोन चार सालमें बढ जाता है । गधा २०, २० या २४ वर्ष तक जीता है । इसका चमड़ा टिकाऊ है । उसमें पाचमेंपट, टोल, जूता, किताबथी तख्ती आदि चीने बनती है । पालू गधेसे जङ्गनी गधा अधिक बलिष्ठ होता है । उसका चमड़ा भी कुछ

ज्यादा चिकना लगता है। तुर्कीके सिरिया अञ्चलका गधा देखनेमें बहुत अच्छा रहता है। वहां स्त्रियां इसको बड़ी होशियारीसे पालती हैं। अरब लोग गधे पर चढ़के घूमते और खेतीका काम भी लेते हैं। यरूम-लसमें पहले बड़े बड़े आदमी और पुरोहित गधे पर चढ़ करके चलते थे। परन्तु मिसरके रहनेवाले इसको बुरा समझके बड़ी ही घृणा करते थे। वही पहले गंधारोंको गधा बतला हमी उड़ाने लगे। भारत और अफ्रीकाके गधे नाटे और दुबले होते हैं। अफ्रीकाके कायरो, लिविया, नजमिडिया आदि जङ्गलोंमें बहुतसे गधे हैं। वहां लोग इसका मांस खाते हैं। परन्तु मध्यएशियामें भी गधोंका जमघट ज्यादा है। ग्रीसमें यह दल उत्तरको यूराल पहाड़ तक जाता, फिर जाड़ेमें भारतकी आता है। इस कुण्डका एक मरदार रहता, जो सबसे चटकीला, जल्द चलनेवाला और चतुर लगता है। शिकारी उसको पकड़ सकने पर फूलें नहीं समाते। पहले युरोपमें गधा न रहा। इसको वहां गये थोड़े ही दिन हुए हैं। इङ्गलैण्डके गरीब आदमी इसकी ज्यादा कद्र करते हैं। लोगोंके विशेष आदर करने अथवा आवहवा अच्छी रहनेसे स्नेहके गधे मजबूत और खूबसूरत होते हैं। वह गधेका दाम भी ज्यादा नहीं। एक घोड़ेको कीमत २० गधोंके बराबर है। घोड़े और गधेके जोड़ेसे दो तरहके खच्चर निकलते हैं। इनमें एक गर्दभके औरस और अश्विनीके गर्भ तथा दूसरा अश्वके औरस और गर्दभके गर्भसे उत्पन्न होता है। अङ्गरेजी पहला म्यूल (Mule) और दूसरा हिनी (Hinny) कहलाता है। म्यूल बड़ा, बलवान् और सुगठन रहता है। गधेकी हड्डीसे पहले किसी प्रकारकी धंशी बनती थी। भारतके कच्छ, गुजरात, जैसलमेर और बीकानेर प्रदेशमें एक तरहका जङ्गली गधा देख पड़ता है।

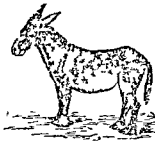
गधेकी प्राणशक्ति अतिशय प्रबल है। चमड़ा मोटा होता है। इसीसे कोड़ा मारने पर भी गधेकी कोई बड़ी तकलीफ मालूम नहीं पड़ती। हिन्दुधानी गधा भूरा होता है। परन्तु अरब आदि देशोंके गधे कुछ कुछ लाल रहते हैं। पहले युरोप और अफ्रीकामें गधा न था। यह अरबसे मिसर, मिसरसे यूनान, यूनानसे

इटली, इटलीसे फ्रान्स और फ्रांससे जर्मनी, इङ्ग्लैण्ड, स्वीडन आदि नानादेशोंमें फैल गया। ठण्डे देशमें गधा दुबला और ठिगना होता है। यह अपने आप जल्द चलनेवाला और डरावना है। परन्तु पकड़ जानेसे थोड़े दिन पीछे ही स्वभाव बदलता है। फिर यह निरीह हो जाता है। सब चीपायोंसे गधा बहुत जल्द हिलता है। यह रोज बड़ी पानी पीता, जो इसको अच्छा समझ पड़ता है। पानी पीते समय गधा घोड़ेकी तरह पानीमें नाक नहीं डुबाता। इसको घाम पर लोटना बहुत अच्छा लगता है। पानोमें उतरते गधा बहुत डरता है। लड़कपनमें गधा देखनेमें खूबसूरत होता है। उस समय स्वभावमें भी किननो ही चतुरता रहती है। परन्तु उस समयसे न सिखाने पर बढ़ते बढ़ते यह कम समझ और बेकाबू पड़ जाता है। इसको लड़केका प्यार बहुत रहता है। गधे और गधेकी सुहृद्वत भी कुछ कम नहीं। यह पोठ पर ज्यादा बोझा लाद देनेसे कान और मिरभुका लता और मुँह फैला करके दोनों होंठ मिकोड़ने पर बहुत भद्दा जंचता है। आंख टांप देनेसे गधा नहीं चलता। जमीन पर लेश करके एक आंख घाम और दूसरी पत्ते या डीलेसे टांक देने पर यह जैसेका तैसा सुनसान पड़ा रहता है। गधा घोड़ेकी तरह कूटफांद और दीड़ मड़ता, परन्तु बहुत जल्द थकता है। एक बार थकजानेसे कितना ही मारने पर भी यह न उठेगा।

गिन्नी देशका गधा वहांके घोड़ेसे बड़ा और खूबसूरत होता है। इरानमें दो तरहका गधा देख पड़ता है। उसमें एक मोटा और मन्दगामी होना और बोझ ढोता है। फिर दूसरा साफ सुधरा गधा है। उस पर चढ़ कर लोग इधर उधर आया जाता करते हैं। इरानी उसकी नाक फाड़ कर छेदकी बड़ा देते, जिसमें लम्बी सांस चल सके और वह जल्द न थके। यह गधा कभी कभी चार पांच सौ रुपये तक विकता है।

गधा घोड़ेसे ज्यादा मिहनत कर सकता है। इसका चमड़ा सूखा और बहुत कड़ा होता है। इसीसे कोड़ आक्रमण कर नहीं सकते। गधा घोड़ेसे कम मोटा है। अरब और मिसरका गधा जितना ही जल्द चलता, होशि-

यार भी रहता है। कायरो नगरकी बडी सडक पर गधोको किराये पर देनेके लिये जौन और लगाम लगा करके तैयार रखते है। किरायेदार गधे पर चन्ता और गधेवाला उसको पीछेसे हाकते चन्ता और सामने नौगो की इटानके लिये चिल्लाया करता है। मसलमान हाजो गधे पर चढके सका पत्र वते है। न्यूयिया देशके बटे बडे मजाजन गधे पर चढ मिमर देशकी जाते है। राहमें लगभग २ महीने लगते है। गधा इतने दिन चल करके भी नहीं थकता। अमेरिकामें पहले गधा न रखा, स्पेनके लोगो ने भेज दिया। आजकल वहाँ बगडडि होनेसे कितने ही गधे देख पडते है। वह जगह जगह भुण्ड बाध करके घूमते है। फन्दा डाल करके उन्हें पकडना पडता है।



पानू गधेका मांस कडा होता है। खानेमें अच्छा न मगते भी बहुतसे लोग उसे खा जाते है। गालेन साहबके मतमें वह मांस खानेमें बीमारी हो सकती है। यूनानी पहले गधेके दूधमे बहतमी दवाइयां बनाते थे। परन्तु अब उसकी कमी पड गयी है। मोटी कोटी अच्छो गधेका हो दूध, जो हालका ब्याडे हो और उठी न रहे, सबसे अच्छा होता है। उसकी बच्चे से अलग दाना घास खिना करके रखना पडता है। ऐसो गधेका दूध बोमारके लिये बहत अच्छा है। यह दूध ठण्डा पडने और हवा लगनेसे बिगड जाता है। गधेका दूध टवाईमें लगने जैसा लोगो को जो विगवास रहा, आजकल उठ गया है।

युरोपके आन्ध्र प्रदेशसे उतरते समय गधा जो होमियायी दिखलाता, लोगोको अचम्भा आ जाता है। पहाड पर चढनेको राह बहुत डरावना है। एक घोर ऊँचा और दूररो और खूब गहरा है। कहीं चढाव घोर कहीं उतार है। मिवा गधेके वडा दूररा कोश चोपाया उतर नहीं सकता। उतरते समय गधा थोडे देर उधर

करके थडे खडे देखा करता है—किम तरह कहिये उतरूँगा। उस मोके पर सवारके हजार बार मागते भी गधा नहीं सरकता, सिर्फ उसी गहरे गड्ढेकी तरफ देखा करता है। डरसे कप करके बीच बीच बह रेंकने भी लगता है। जब वह उतरना आरम्भ करता, सामनेके पैरे डम तोरमे रखता—मानूम पडता—मानो खडा होने चाहता है। फिर पीछेके पैरे माथ साउ ना करके वह सामनेके पैरे सामने फैलाता है। इभी हालतमें रह करके गधा एक बार नोचेको देखता है। फिर वह जल्द जल्द नोचे उतरने लगता है। उस वक्त सवार लगाम ढील देता है। लगाम खींचनेसे एकाएक उसकी चाल रुक जाती है। उसमे गधा और सवार दोना नोचे गिर करके मर सकते है। सवार लगामको निकाल जौनसे अपने कमर बाध लेता है। ऐसी पहाडो राहमें गधेकी उतरते देख चौकन्ना होना पडता है।

गधेके बारेमें कितनी ही अगोखी बातें सुन पडती है। १८१६ ई० की कपतान उगडाम माल्टा उपहोपमे रहे। उनके लिये जित्रालटसे एक गधा खरीद जहाज पर चढा करके माल्टा लिये जाते थे। समुद्रकी ऊँची लहरोंमें जहाज किसी तेरसे जा करके भिड गया। वहासे किनारा बहत दूर न था। जहाजके लोगो ने गधेकी यह देखनेके लिये पानीमे धकेल दिया, वह तेर करके किनारे पहुच सकता है या नहीं। सबने सोचा कि गधा यहीं मरा था। परन्तु गधा मजेमें किनारे पहुच उसोके पास जा करके खडा हुआ, जिससे वह खरोदा गया था। किनारेमे वह जगह एक कोस दूर होगी। उस राहमे गधा रुमी चला न था।

कायरो नगरके भी एक गधेकी बात कही जाती है। वह नाचता और बहुतसे तमाग्य करता था। जब उससे कहा जाता कि सुनतान उसे घर बनानेको सुर्खा और ईट लेने भेजग, वह पैरे उठा आध मून्ड करके मुदेकी तरह जमोन पर पड रहता था। परन्तु जब वह सुनतानके अपने ऊपर चढके कोशे बनना देखनेकी और खूब खिनाये जानिको बात सुनता, खुशीमे नाचने लगता था। यह कदने पर कि उसे उस बढभाग शोरतको ने खाना पडेगा, वह नड्डाने लगता था। बहुतसो स्त्रियां शकहो

हीन पर उससे पूछा जाता था—इसमें कौन सबसे अच्छी है, उसको दिखला दो। वह उसी समय एकके पास पहुँच मत्था झुका करके उसको छू लेता था। ऐसा गधा सरकसोंमें कई बार देखा गया है वह आवाजकी समझ और सिखलानेसे सीख सकता है। किसी समय एक आदमीने कुत्तेको गधे पर ललकारा था। कुत्तेके पास पहुँचते ही गधेने उसकी नाते फटकारीं, फिर दांतोंसे उसको पकड़ पासकी नदीमें ले जा करके डुबा दिया और जब तक वह मर न गया, उसको दवाये ही रहा। इससे मालूम पड़ता है कि गधेकी प्रतिहिंसा कम नहीं होती। गधेकी मोठी आवाज सुननेमें अच्छी लगती है। चांदे नगरमें एक स्त्री बहुत अच्छा गाती थी। पास ही एक गधा भी रहता था। उनके गाना शुरू करते ही गधा उहीं पहुँच भरोकेके पास खड़ा हो करके सुना करता था। फिर एक दिन तो वह उनके घरमें ही जा खड़ा हुआ। गाना बन्द होने पर गधा अपने आप चिल्ला करके उनकी नकल उतारने लगता था। इससे समझ पड़ता है—गधेकी जितना वेसमझ ठहराते, इरगिज नहीं पाते हैं।

पौराणिकोंके मतमें गर्दभ शीतलादेवीका वाहन है।

शीतला देवी।

जैनशास्त्रानुसार—गधा पंचेन्द्रिय मनसहित जीव है। इसकी शिक्षा देनेसे मनुष्यकेसे अनेक अद्भुत कार्य कर सकता है यहाँ तक कि स्थूल चीरी आदिका भी त्याग कर अणुव्रत पाल सकता है।

वैद्यशास्त्रके मतमें उसका मांस कुछ भारी और ताकतवर होता है। गधेका सूत्र—कड़वा, गर्म, तीता, खारी और कफ, महावात, भूतकम्प तथा उन्मादनाशक है। (राजनिघण्टु)

बराबर बोझ ढोना, गर्मी सदीं सहना और हमेशा खुश रहना—तीन गुण गधेसे सीखना चाहिये। (वाणेश्वर)

(स्त्री०) गर्द्यते। गर्द-अभच् २ श्वे तकुमुद, सफेद कीड़े।

“कैरव” चन्द्रकालख गर्भं कुमुदं कुमुत्। (रत्नमाहा) ३ विडङ्ग, वाय विडङ्ग। ४ अमरभेद, गदहीलाइनामका कीड़ा। गर्दभक (सं० पु०) गर्दभ सजायां कन्। १ कीटविशेष यह अष्पाका प्रकोपकारक है।

गर्दभगद (सं० पु०) जालगर्दभ नामक रोगविशेष।

नामगर्दभ देखा

गर्दभनादी (सं० त्रि०) गर्दभ इव नदति नद णिनि। जो गदहाके जैसा शब्द करता हो।

गर्दभमांस (सं० स्त्री०) गर्दभस्य मांसम्, इ-तत्। गर्दभ-मांस, गदहाका मांस।

गर्दभसूत्रभ (सं० स्त्री०) खरसूत्र, गदहाका सूत्र।

गर्दभयाग (सं० पु०) गर्दभेन यागः। यागविशेष, अवकीर्ण याग। (मन्० ११।११८-२२)

ब्रह्मचर्यभ्रष्ट व्यक्तिकी रात्रि समय चतुष्पथ पर पाक-यज्ञ विधानमें काणा गर्दभ द्वारा नैऋत देवताका याग करना चाहिये। इसमें विधिपूर्वक अग्निमें होम करके ‘समाविष्णु सकत’ इस मन्त्रसे घृत द्वारा वायु, इन्द्र, बृहस्पति और अग्निकी आहुति देनी चाहिये। ब्रह्मवादी व्यक्तिगण कहा करते हैं कि व्रतस्थित द्विजगण यदि इच्छकर्मसे स्त्री-योनिमें वोर्य सेक करे तो व्रतभङ्ग हो जाता है। उस व्रतभ्रष्टका ब्रह्मतेज मारुत, इन्द्र, बृहस्पति और पावकमें जाकर वास करता है।

कात्यायनश्रौतसूत्रमें इसका विवरण देखा

गर्दभरूप (सं० पु०) गर्दभस्य रूपोऽस्य गर्दभरूपभारणात् तथात्वम्। विक्रमादित्य राजा।

गर्दभशाक (सं० पु०) गर्दभगन्धः शाकी यस्य। गर्दभ-शाख्यः शाकी वा। ब्रह्मयष्टि, भारंगी, वरंगी।

गर्दभशाका (सं० स्त्री०) गर्दभशाक-टाप्। ब्रह्मयष्टि, वरंगी।

गर्दभशाखी (सं० स्त्री०) गर्दभगन्ध शाखा यस्याः। भारंगी, भारंगी।

गर्दभा (सं० स्त्री०) श्वेतकण्टकारी, सफेद कटैया।

गर्दभाक्ष (सं० त्रि०) गर्दभस्ये वाक्षिणी यस्य। गर्दभ-तुल्य चक्षुर्विशिष्ट, जिसको आंखें गदहेसी हों। (पु०) २ बलिराजकी एक पुत्रका नाम।

गर्दभाण्ड (सं० पु०) गदभं गन्धविशेषममति। प्लवच, पाकरका पेड़। इसके पत्ते, काण्ड और फलादि पौपल वृक्षके जैसे होते हैं। इसका पर्याय—कन्दराल, कपीतन, सुपाश्वक, प्लव, शङ्गी, प्लव, कमण्डलु, प्लवश, कन्दरालक और प्लवचक्षुः है।

गर्द भाण्डक (स० पु०) गर्द भाण्ड स्वार्थे कन् । गर्द भाण्ड-
वृत्त, पाकरका पेठ ।

गर्द भाण्डय (स० पु०) गर्द भ आण्डय आख्या यम्प । कुसुद-
विग्रोप, एक प्रकारकी कुई ।

गर्द भि (स० पु०) विश्वामित्रका एक पुत्र ।

(महाभारत १२।४।२६)

गर्द भिका (स० स्त्री०) चन्द्ररोगविग्रोप । इस रोगमें
वात पित्तके विकारसे गोल ज चो फुसियां निकलती
है । इन फुसियोंका रंग स्याम होता है और इनमें
बहुत पीडा होती है । पैत्तिक विसर्प रोगकी नाई
विष्रता, इन्द्रवृद्धा, गर्द भी और जालगर्द भ इन सब
रोगोंकी चिकित्सा करनी चाहिये । पाककालमें पाक
किये हुए घृत और पक्क मधुके औषधसे इसे शक्य
करनेका विधान है । (भावप्रकाश)

गर्द भिक्ष—गुजरातके अन्तर्गत बलभोपुरके एक राजा ।
जैनग्रन्थके मतसे ये ५२३ मस्वत्में राज्य करते थे ।

गर्द भी (स० स्त्री०) १ कीटविग्रोप ।

' वृषभक्ष पाकमन्त्र रूपतुष्टो ऽप ग० भी ' (सुश्रुत)

२ अपराजिता नामकी लता । ३ श्वेत कण्टकारी,
सफेद भटकेट्या । ४ कटभी, गर्द भिका नामक रोग ।

' वा विहा वातविग्रोप ताभाभ व च यद भी ।

मन्त्रः । विपुनोक्तानां सराग पित्र क्वापिता ४ " (भा० ट छन्दस्मान १।१०)

६ गर्द भपत्नी, गर्दही । इसके दूधका गुण घनकारक,
वातघ्नासनाशक 'मधुरास्त्ररसविशिष्ट, रूक्ष, दीपन
और पथ्य है । दधिकका गुण—रूक्ष, उष्ण, लघु, दीपन,
पाचन, मधुरास्त्रविशिष्ट, रुचिकारक और वातदीपनाशक
है । मरुवनका गुण—कषाय कफवातनाशक, घनकर,
दीपन, उष्ण और मूलदोषनाशक है । (रात्रनि)

गर्दावाट (फा० वि०) १ जो धूल या राखसे भरा हो ।

२ ध्वस्त, उन्नाड । ३ विसुध, बेहोश ।

गर्दालू (फा० पु०) आलू बुखारा ।

गर्दिश (फा० स्त्री०) १ घुमाव, चक्कर । २ विपत्ति,
आपत्ति ।

गर्दीख—भारतवर्षके उत्तरमें एक राज्य । यह प्रचा० ३१
४०' उ० और देश० ८० २५' पू०में सिन्धु और शतद्रु
नदीके उत्पत्तिस्थान पर अवस्थित है । गर्दीखसे तिब्बतके

लासा पर्यन्त एक रास्ता गया है । १८२६ ई०की चम्पा
जातिने इसे जय किया था, किन्तु थोडे वर्षोंके बाद यह
महाराज गुनावसिङ्गके अधिकारमें आ गया । यहाँ पर
दुगाले बुननेको प्रथम बेची जाती है ।

गर्द (स० पु०) गर्द गति इति गद भावे घञ् । १ खुहा,
लोभ । २ गर्द भाण्डवृत्त, पाकरका पेठ ।

गद न (स० त्रि०) गृह्यति गृध युच् । लुब्ध, लोभी,
लालची

गर्द भि (स० पु०) विश्वामित्रके एक पुत्रका नाम ।

(महाभारत १२।४।२६)

गर्दित (स० त्रि०) गर्दो जातोऽस्य, तारकादित्वात् घृत्तच् ।
लुब्ध, लोभी ।

गर्दिन (स० त्रि०) गर्दाऽस्यास्तीति गर्दं णिनि । अत्यन्त
लोभी । "नराजानिवर्गदि न ।" (मनु ४।१८)

गर्दान (हि० स्त्री०) गर्दान वृक्षा ।

गर्भ (स० पु०) गोर्धते इति, गृ भञ् । परिष्कारात् भृत् । १०।१।१५
१ भ्रूण, देहजन्मकारक शुक्रयोगित्तमयोगजन्य मास
पिण्ड, ह्रमल । २ शिशु, बच्चा । ३ कुञ्चि, कोख ।
४ पनस, कण्टक, काटान । ५ नाटकका सम्बन्ध । ६
अभ्यर्द्ध होश्वर । ७ उदर, पेट । ८ अभ्यन्तर, भीतरी
हिस्सा । ९ नदीका कोई अन्तर्भाग, दरयाका कोई भीतरी
हिस्सा । भाद्रकल्प्या चतुर्दशोको जितना पानो चट
आता, नदीगर्भ कह लाता है । १० अन्न । ११ अग्नि ।
१२ पुत्र ।

गर्भाशयके शुक्रयोगित्तका नाम जीव है । विकार
विशिष्ट प्रकृति प्रश्रुति समस्तको ही गर्भ कहा जाता है ।
कालवय जब अङ्गों और उपाङ्गोंके माय गर्भ बढता, मुनि-
गण उसको शरीरी उसा निर्देश करता है । जब स्त्री
और पुरुष परस्पर मयोगरुमी हो शुक्र त्याग करते, अस्थि
शून्य गर्भ उत्पन्न होता है । जो स्त्री चतुर्दशाता हो स्वप्नमें
मैधुन करती, उसका चतुर्दशोपित वायुयोगसे कुञ्चिमें
जा करके गर्भ बनता और महीने महीने बढता है ।
क्रमश बह इन्द्रिय आदि पैलक गुणवर्जित हो करके
निकलता है ।

विशुण वायुसे गर्भ भग्न हो करके मर्या चतिक्रमपृषक
बहुत प्रकारसे विभक्त हो योनिमें पड़ चता है । फौद गर्भ

मस्तक और जठर द्वारा योनिद्वार निरोध करता, कोई शरीरको बदल करके कुलदेह निकलता है। कोई गर्भ एक हाथ, कोई दोनों हाथ टेढ़ा करकेतिरछा लगता, कोई अधोमुख, कोई आस पास घूम करके ठहरता है। गर्भकी यही अष्टप्रकार गति है। दूपरी भी चार प्रकारकी चाल-सङ्घीलक, प्रतिखुर, परिघ और वीज कहलाती है। जो गर्भस्थ शिशु हाथ पांव ऊपर उठा करके मस्तक द्वारा कीलक-जैसा योनिद्वारमें आ झिल जाता, कीलक कहलाता है। इसी यज्ञको खुर जैसा देख पड़ने पर प्रतिखुर कहते हैं। दोनों हाथ और मल्ये के साथ योनिगत होनेसे वच्चेको वीज कहा जाता है। परिघकी तरह योनिमें पहुँचनेसे शिशुकी परिघ बतलाती है। (भाष्यकर)

जिम गर्भिणीकी अङ्ग ठण्डे रहते, जिसे लज्जा नहीं आती और जिमकी सभी शिराएँ नीलवर्ण लगतीं और उठी रहतीं, वह मानसिक तथा आगन्तुक मन्तापसे तथा व्याधिसे बहुत पीड़ित होती और उसके पेटमें ही गर्भ गल जाता है।

जिस स्त्रीका गर्भ नहीं हिलता डुलता, जिमके देहका वर्ण काला तथा पीला लगता, जिसकी शोथ उठता और जिमके सांस छोड़नेसे पूतिगन्ध आता उसका गर्भस्थ शिशु मरा हुआ समझा जाता है। (भाष्यकर)

कामहेतु स्त्री-पुरुषके संयोगसे विशुद्ध शुक्रशोणित द्वारा उत्पन्न होनेवाला स्त्रियोंका गर्भ कलल कहलाता है। शोणितके आधिक्यसे कन्या, शुक्राधिक्यसे पुत्र और शुक्र तथा शोणित दोनोंकी बराबरीसे नपुंसक उत्पन्न होता है। (शाङ्खर)

जीवात्मा अपने पहले किये हुए कर्मोंके क्लेशोंसे प्रेरित हो करके विशुद्ध शुक्र और शोणितके सम्मेलनसे अरणि वर्षण द्वारा अग्न्युत्पत्तिकी तरह गर्भके आकारमें जन्म ग्रहण करता है। फिर माताके आहार-रसजात वीजरूपी सूक्ष्म जीवनोशक्ति समन्वित महाभुतसमूह द्वारा गर्भमें धीरे धीरे वह बढ़ता है। स्फटिक पर सूर्यका रश्मि जैसे चलता, जीव भी गर्भमें हिला डुला करता है। सभी कार्योंमें कारण लगा रहता है। इस लिये जीव गले लोहकी तरह बहुतसे आकारोंमें परिणत हो करके तरह तरहकी निराली सूरतें बनाता है। हवासे बहुत

तरह पर बंटनेमें कई वच्चे निकलते हैं। विकृत कफ आदि मूर्च्छासे विजातीय और विकृतगर्भ मन्तान उपजता है। (भाष्य)

सुश्रुतके मतमें पूरे १६ वर्षको स्त्री २० वर्षवाले पुरुषके साथ सङ्गत होने पर गर्भाशय, हृदय, रक्त, शुक्र, वायु, और पथ विशुद्ध रहनेसे बलवीर्यवान् पुत्र उत्पन्न होता है। स्त्री पुरुषको उम्र इसमें कम पड़ने पर रोगों, अल्पायु और अल्पबुद्धि शिशु उपजता अथवा एकवारगी हो गर्भ नहीं उठता।

स्त्रियोंका रेतः रजोमय और पुरुषोंका वीर्य वीज-विशिष्ट होता है। इसमें संयोग द्वारा गर्भकी उत्पत्ति होती है। पहले दिन शुक्र शोणितके योगसे कलल बनता है। दस दिन पीछे वही खून बुलबुला-जैसा बन जाता और १५ दिनमें गाढ़ा पड़ करके २० दिनमें मांसके 'पण्ड' जैसा दिखता है। एक मासके मध्य उसमें सूक्ष्म पञ्चभूत तथा पञ्च इन्द्रिय उत्पन्न होते हैं। ५० दिनमें अङ्ग आदिके अङ्कुर, तीसरे महीने हाथ पांव और साढ़े तीन महीनेमें मस्तक आता और उसमें मार भर जाता है। चौथे महीने रूएँ, पांचवें महीने सजीवता, छठे महीने चाल, आठवें महीने जठराग्नि और नवें महीने चेष्टादि होते हैं। फिर वह गर्भमें नहीं रहना चाहता और दशवें या ग्यारहवें महीने यही गर्भ प्रसूत हो जाता है। (शरीर)

सुश्रुतके मतमें पहला अङ्ग, मस्तक और उसका उपाङ्ग केशसमूह है इसीके बीचमें मस्तिष्क वा धृतिका होती है। फिर ललाट, दोनों भौहें और दोनों आँखें हैं, जिनके भीतरी भागमें दो पुतलियाँ रहती हैं। दोनों आँखोंके दो डीले काले और उनके किनारे दो सफेद भाग होते हैं। आँखोंके नीचे और ऊपर विरनियाँ, उसके वाद अपाङ्ग या कीरें हैं। फिर क्रमशः दो शङ्ख, दो कान और उनके दो छेद और कानकी लीरें आती हैं। उसके वाद लगातार नाक, होंठ, अधर, गलफड़े, होंठोंका किनारा, मुँह, तालू, दो जबड़े, दाँत, दाँतोंकी मेंडू, जीभ, टड्डी और गला है। दूसरा अङ्ग ग्रीवा या गर्दन है। यह ग्रीवा मस्तकसे मिली हुई है। दोनों हाथ तीसरा अङ्ग है। उसका उपाङ्ग—ऊपरी भागमें दोनों कन्धे, उसके नीचे दो प्रण्ड, उसके निम्नभागमें दो कुहनियाँ,

उमके नेचे दो प्रकोष्ठ, फिर पड़ चा, दो हृद्येलिया, दो हाय, दोनो हायाकी १० उगनिय और उममें १० नख होते हैं। चीया अन्न वन्न स्थल है। उसका उपाङ्ग दो स्तन है। पुरुषोंसे स्त्रियोंके दोनो स्तनोंमें प्रसूद पडता है। जवानोमें स्त्रियोंके दोनो स्तन उठ आते हैं। गर्भ वती और प्रसूतिके दोनो स्तनोंमें दूध भर जाता है। हृदय कमरकी तरह और नेचेकी मुह किये हुए अवस्थित है। जागते रजनेसे वह खिलता और मो जानीसे मिकूडता है। यही हृत्पत्र जीवात्मा और चेतनाका स्थान है। इसीसे उसके तमोगुणसे भर जानि पर प्राणी मोया करते हैं। उसके बाद दो फोबों, छातीके दो जोड और दो ह मनिया और उसके बाद वक्षण (चटा) है। पेट पाचवा और दोनो उगनें छटा अन्न है। रीठके साथ सभी पीठ भातवा अन्न है। उसका उपाङ्ग झीहा ठह रतो, जो खूनसे उपजती और हृदयके अधोभागमें बाई और रहती है। श्चपि लोग उमको रक्तवाहो गिरा मसूहकी जड कहा करते हैं। हृदयके अधोभागमें बाई औरको फेफडा है। वह खूनके भागसे पैदा होता है। उसके बाद हृदयकी दक्षिण औरके लहसे उत्पन्न यकृत अवस्थित है। वह रक्त और पित्तको जगह है। उमके नीचे हृदयकी दाहनी और क्लोम (तलखा) है। वह जलवाही गिराको ज ठहरता और प्यामको रोक रखता है। उसकी उत्पत्ति पातरक्तसे है। मेद और शोणित के मारसे दोनो बुक बनते हैं। आयुर्वेदवित् पण्डित पुरुषोंकी आत साठे ३ ध्याम (चार हाथका एक माप) और स्त्रियोंकी तोन ध्याम परिमित बतलाते हैं। फिर उण्डक अर्थात् फेफडो की टाकनेवाली भिक्की है। उसके बाद यथाक्रम कमर, त्रिक (रीठके नीचेको जगह), वस्ति और दो वक्षण आते हैं। वस्तिदेग (पेटू) से बडी बडी नसे निकली है और वह वीर्य तथा मूत्रस्थान मो है। क्रियाकी योनि शहनामिको तरह तोन आवर्त विशिष्ट होती है। इसी योनि द्वारा स्त्रियोंके पेटमें गभा धान लगता है। योनिकी तोनो नपेटमें गर्भ रहता है। दोनो अण्डकोप कफ, रक्त तथा मेदके मारसे उत्पन्न है। यही दोनो अण्ड वीर्यवाहो गिराका आधार है, इन्हींमें पुरुषत्व प्रतिष्ठित है। गुह्यका परिमाण साठे ४

अङ्गुल है। उममें शह्नावर्तकी तरह ३ वलय पडे हुए हैं। इनमें पहलेका नाम प्रवाहिनी है। उमकी नाप डेड अङ्गुल होती है। उमके नेचे डेड हो अङ्गुलको उत्सर्जने है। उमके निम्नभागमें एक अ गुलकी मञ्जरणी रहती है। गुह्यदेगका मुह आध अङ्गुल पडता और मनत्यागका पय ठहरता है। पुरुषोका प्रोथ हो स्त्रियोंका नितम्ब कहलाता है। उसके बाद दो ककुन्दर (कूले) है। उसके बाद दो मक्थि आते, जो आठवा अन्न कहलाते हैं। इसका उपाङ्ग—दो घुटने और पिड लिया, दो जावें, दो घण्टिकाए, दो पाण्डि, दो तलवे और दो पदाय है। यह शरीर अपरापर जिन जिन प्रवयवोभूत कारणोसे धनता, यह है—वात, पित्त, कफ और धातुमसूह। गर्भ ग्रहणके पोछे ही योनिसे शुकशोणित बहता, अम मानू म पडता, जावें सुन्न हो जाते, प्याम बढते, ग्लानो आते, योनि फडकने, दोनो स्तनाका मुह काना होता, रीगटे खडे हो जाते आखा तथा पलकोके वाल सिजुडते, अग्नि-च्छामें बमन उठता, मनोहर गन्धसे जी बिगडता, कफ गिरता और अस्माट लगता है। उपर्युक्त सभी चिह्न गर्भिणीके है।

वाल, दाढी, मूक, रूप नख, दाँत, गिरा, धमनो, घ्रायु, साद, शुक और रक्त पित्तसे उत्पन्न होता है। फिर माम, सज्जा, मेद, यकृत, झीहा, अन्न, नाभि, हृदय और गुह्यदेगको उत्पत्ति मातासे है। शरीरकी बाड, रङ्ग, बल और देहकी स्थिति रससे निकलतो है। ज्ञान, विज्ञान, घ्रायु, सुखदुख आदि और इन्द्रिय जीवात्माकी ही हुषा करते हैं। स्त्रीकी रमवाहिनी नाडीसे गर्भकी नाभि मिल जाती है। इसीसे गर्भ नित्य नित्य बढता है। यही गर्भ माताको निम्बाम, उच्छ्वास, स लोभ और स्वप्राय प्राप्त होता है।

गर्भस्थ सन्तानकी नाभिमें ज्योति स्थान प्रतिष्ठित है। वायु इसी ज्योति द्वारा चालित होता और उसीसे गर्भका देह बढा करता है। वायु उष्णके साथ मिल करके शरीरके जिम जिम स्थानमें पडचता, गभस्थ सन्तानका वही अन्न बढता है। हृयाकी अभी और पेटकी येनीमें हृयाके न पडचने—दोनों कारणोसे पेटका बन्धा न तो मास लेता और न मनसुत्र छोडता है।

गर्भ च्यातिन् (सं० त्रि०) गर्भं हन्ति णिनि । जो गर्भ-
विनाश करता हो ।

गर्भ च्यातिनी (सं० स्त्री०) गर्भं हन्ति स्त्रायवतीति हन-
णिनि-ङीप् । लाङ्गलिकावृक्ष ।

गर्भ चिन्तामणिरम—वैद्यकोक्त औषधविशेष । इसकी प्रसुत-
प्रणाली इस तरह है—पारा, गन्धक और स्वर्ण को
जखीरी नोकड़ी रममें तीन दिन तक घोंट कर सोंठ, पीपर
और मिर्चके कायके साथ तीन वार भावना देने पड़ती
है । वाट चार रत्ती प्रमाण ही हर एक गोली बनाकर
सेवन करनेसे गर्भिणीके शूल, विष्टम्भ, ज्वर और अजीर्ण
प्रसृति रोग विनष्ट होते हैं ।

एक प्रकारका और गर्भ चिन्तामणि रम है । इसकी
प्रसुत-प्रणाली यों है :—रससिन्दूर, रौप्य, और लौह
प्रत्यक्का दो तोला, कर्पूर, वङ्ग, ताम्र, जातिफल,
जावित्री, गोखुर, गतमूली, बड़ेला और गौरचचाकु-
लिया प्रत्यक्का एक तोला ले कर सभीको जलके साथ
पीसना चाहिए । दो रत्ती प्रमाणकी हर एक गोली बना
कर सेवन करनेसे गर्भिणीका ज्वर, दाह, प्रदर,
सन्निपात और आदिस्त्रुतिका प्रसृति रोग शीघ्रसे दूर हो
जाते हैं । (रसेन्द्रसारसंग्रह)

गर्भ च्युति (सं० स्त्री०) गर्भस्य च्युतिः चरणम् । गर्भ-
स्त्राव, गर्भपात, हमलका गिरना ।

‘पत्र कानप्रकर्षेण सुक्ती नाहोनिवन्धनात् ।

गर्भगद्यस्यो यो गर्भो जलनाय प्रपद्यते ॥

कृमिवाग्निघातेस्तु तदेवोपद्रुतं फलं ।

पन्थकालेऽपि तथा तथा स्याद् गर्भविष्यतिः ॥’ (सुश्रुत)

गर्भगद्यस्थित गर्भके यथासमय नाड़ीवन्धनसे सुक्त
हानिको जन्म कहते हैं । किन्तु जब यह कृमि और
वातादि द्वारा उपद्रुत हो कर अकालमें पतित होता है तो
उसे गर्भच्युति कहते हैं ।

गर्भज (सं० त्रि०) गर्भ-जन-ड । १ गर्भसे उत्पन्न, संतान ।

जैनमतानुसार जो शरीर स्त्रीके उदरमें, माताके
रुधिर (रजः) और पिताके वीर्यके मिश्रणसे उत्पन्न होता
है । जैसे—मनुष्य, हाथी, घोड़ा आदिका जन्म, ये सब
गर्भसे जन्म लेते हैं । गर्भजन्म देखी । (सर्वायुषिदि, २ प्र०)
जो जन्मसे हो-जैसे गर्भजरोग, गर्भजगुण ।

गर्भजन्म—जैनमतानुसार मातापिताके शोणित शुक्रसे
जिनका शरीर बने । उपपाद, गर्भ और सम्मुच्छेनजन्म-
मेंसे दूसरा जन्म । जगयुज (मनुष्यादि), अण्डज (जो
अण्डसे पैदा होते हैं) और पोत (जो योनिसे निकलते
हो दौड़ने लगते हैं और जिनके ऊपर जिर आदि किमी
प्रकारका आवरण नहीं रहता । जैसे—मिंह, घोड़ा
आदि) जीवोंके गर्भजन्म ही होता है । गर्भज देखी ।

(ईनमिहात्मप्रवेगिका प्र० ४)

गर्भगड (सं० पु०) गर्भस्य अण्ड इव । नाभके स्फोट ।

गर्भत्व (सं० स्त्री०) १ गर्भका धम, गर्भका भाव । २ भेदमें
जलकी गर्भभाव प्राप्ति । (मायण)

गर्भट (सं० पु०) गर्भं ददाति सेवनेनेति । १ पुत्रजीव-
वृक्ष, पलजिव । २ पुत्रोत्पादक औषधविशेष । (त्रि०)

३ गर्भ देनेवाला जिमसे गर्भ रहे ।

गर्भटा (सं० स्त्री०) गर्भ-टा-क-टाप् । श्वेतकण्टकारी,
सफेद भटकटैया ।

गर्भटात्रिका—गर्भटावी देखी ।

गर्भटावी (सं० स्त्री०) गर्भं ददातीति गर्भटा तृच्-ङीप् ।

श्वेतकण्टकारी, सफेद भटकटैया । इसका पर्याय-पुत्रदा,
प्रजादा, अपत्यदा, सृष्टिप्रदा, प्राणमाता और तापसद्रुम-
मन्निभा इसका गुण—मधुर, शीत, स्त्रीयोंके पुष्पादि
दोष, त्रिप्त, दाह और अमनाशक एवं गर्भोत्पादक है ।

गर्भदास (सं० पु०) गर्भात् गर्भमारभ्य दासः, प्र-तत् ।

वह जो जन्मसे दास हो, दासीपुत्र ।

गर्भदासी (सं० स्त्री०) गृहस्थित दासीसे उत्पन्न दासी ।

गर्भदिवस (सं० पु०) गर्भाय गर्भधारणाय दिवसः ।

गर्भधारणका उपयुक्त दिन ।

‘केचिद्वदन्ति कश्चिंकश्च क्कान्तमतीत्य मेषव्य गर्भदिवसाः स्युः ।’

(ब्रह्मसंहिता २।१५)

गर्भदोहट (सं० स्त्री०) गर्भस्य दोहदम्, द-तत् । गर्भ-
के लिये अभिलषणीय द्रव्य ।

गर्भद्रुह (सं० त्रि०) गर्भं द्रुह्यति, द्रुह-क्विप् । गर्भपात
करनेवाली स्त्री । (कृष्णक)

गर्भध (सं० त्रि०) गर्भं ददातीति धा-क । गर्भधारण
करनेवाला, गर्भधारक । ‘गर्भध गर्भधारकं रेतः ।’ (वैश्वदेव)

गर्भधरा (सं० स्त्री०) गर्भस्य धरः टाप् । गर्भधारिणी-
स्त्री । (भारत १।१८८००)

गर्भ धान (स० स्त्री०) गर्भस्य धानमाधानम् । गर्भधान ।
 (भारत १९१२००११९)

गर्भधारण (स स्त्री०) गर्भस्य धारणम्, ६ तत् । गर्भमे
 सन्तान धारण, गर्भिणी होना । गर्भधारणके चिक्र मित्ता
 नरामें इस तरह लिखा है—अनादि लक्षण द्वारा गर्भ-
 धारण मालूम किया जा सकता है । जिसे गर्भ रद्द
 गया हो उसके अम, रक्तानि, पिपासा, अशक्ति, अथ
 सन्नता, शुक्रगोणितका अनुबन्ध और योनिस्फुरण होती
 है । पारस्करा मत है कि यदि स्त्री गर्भधारण न
 करे तो उपाधान करके निद्रिगिधका, सिद्धी और श्वेत
 पुष्पके मूल पुण्या नचवर्म उखाड कर स्तुत्रदान करने
 पर चौधे दिनकी रातकी जलसे बाट कर दाहिनो
 नासिकामें मस लिया जाय तो स्त्रीकी गर्भ रद्द जाता है ।
 आयुर्वेदीय ग्रन्थमें भी लिखा है कि शृङ्गवेर, मरिच, नाग
 केशर और पीपनको छतके साथ खाने पर वन्ध्या भी
 भौ गर्भधारण करती है ।

गर्भधि (स० स्त्री०) गर्भं दधातीति, गर्भ-धा इत् ।
 गर्भधारिणी, वद औरत जिसके हमल रद्द गया हो ।

गर्भनाडो (स० स्त्री०) गर्भस्य गर्भोत्पादनस्य योग्या
 नाडी । गर्भधारण करनेकी उपयुक्त नाडी ।
 (धृग्न भागे १०५०)

गर्भनाल (स० स्त्री०) फ लोके मीतरकी वह पतलो
 नाल जिसके सिरे पर गर्भकेसर होता है ।

गर्भनाश (स० पु०) गर्भपात ।

गर्भनाशना (स० स्त्री०) अरिष्टकहच, रठिका पेड ।

गर्भनिश्चत (स० स्त्री०) गर्भात् निश्चतम् । गर्भसे
 निर्गत, गर्भसे गिरा हुआ ।

गर्भनिस्त्रय (स० पु०) षड भित्तो आदि जो बच्चेके उदरप
 होने पर पोष्टिमें निकलती है ।

गर्भनुद (स० पु०) गर्भं नुदति पातयतीति नुद क्तिप्
 क्लिक्कारोहच ।

गर्भपत्र (स० पु०) १ गामा, कोमल पत्ता कॉपल
 २ फूलके अन्दरके पत्ते जिनमें गर्भकेसर रहता है ।

गर्भपरिस्त्रय (स० पु०) गर्भस्य परिस्त्रय चरणयोग्या ।
 सन्तान होने पर उसका माय जो भित्री बाहर होती है
 उसकी गर्भपरिस्त्रय कहते हैं ।

गर्भपाको (स० पु०) गर्भस्य पाको परिणति साध-
 त्वेनास्त्रास्या इति । पट्टिधान, साठो धान ।

गर्भपात (स० पु०) गर्भस्य पात, ६ तत् । १ गर्भका
 पाचवें या छठे महोनेमें गिर जाना । -
 'तत्र लिङ्गशरीरस्य पात पचमपद्यथे इ' (साधव) गर्भपात १२६० ।
 २ गर्भका गिरना ।

गर्भपातक (स० पु०) गर्भं पातयतीति पत् णिच् खुल ।
 रक्तयोग्याञ्चनहृत्त, नाल सोभिजनका पेड ।

गर्भपातन (स० पु०) गर्भं पातयतीति, पत णिच् ल्यु ।
 १ रौठा करञ्ज, बढारोठा । २ गर्भका नष्ट होना ।

गर्भपातिनी (स० स्त्री०) गर्भं पातयति पत णिच् णिनि ।
 १ त्रियन्वाहच, गुरुच या गिलोयका पेड । २ कल्किारी-
 हृत्त, कलिहारीका पेड ।

गर्भपोषण (स० स्त्री०) गर्भस्य पोषणम्, ६ तत् । १ यत्न-
 पूर्वक गर्भ पालन । २ गर्भकी पुत्रि-सम्पादक विधि ।
 गर्भवती स्त्रीभी चाहिये कि वह प्रथम दिनसे हृत्त,
 पवित्र और अन्नहृत्त हो कर शुभ्रवस्त्र परिधानपूर्वक
 शान्तिकर्म और मङ्गलजनक कार्य करे एवं देवता,
 ब्राह्मण और गुरुके प्रति अशान्चित वने । मलिन,
 विरक्त और हीनगाव कटापि स्पर्श न करना चाहिये ।
 दुर्गन्ध ग्रहण, दूषितद्रव्य दर्शन और उत्तेजक वाक्य
 परित्याग कर । शुष्क, वासा और क्लेदयुक्त भोजन
 करना नपिद है । टहलनेके लिये बाहर जाना, गून्ध
 घरमें रहना, अग्नानमें जाना, हृत्त पर चलना, क्रोध और
 मय करना एवं भारवहन तथा उच्चगद्द करना, इन
 सर्वोका परित्याग कर्तव्य है । ऐसा तेन कदापि सेवन
 नहो करना जिसमें गर्भ नष्ट हो । अथवा शरीरकी
 किसी प्रकार कष्ट नहीं देना चाहिये । जो अधिक ऊँचा
 न हो अथवा जिसमें किसी प्रकारकी बाधा न पड़े
 ऐसी शय्या और स्तुभ्रस्तरण व्यवहारमें लाना उत्तम
 है । तस्मिजनक, द्रव, मधुर, रसप्रचुर खिन्ध, दीपनीय
 और सुम स्तुत भोजन करना चाहिये । ये सब कार्य
 प्रसवकाल तक कर्तव्य है । विधेयत गर्भगता स्त्रीकी
 प्रथम, द्वितीय, और तृतीय मासमें प्राय मधुर और
 शीतल द्रव्य आहार करना चाहिये । तृतीय मासमें
 दुग्धक माय माठी चाबनका मान, चतुर्थ मासमें दधिके

साथ और पञ्चम मासमें घृतके साथ भोजन करना चाहिये। चतुर्थ मासमें दुग्ध और मक्खनके साथ अन्न एवं जल-जात जीवके मांसके साथ लसिकर अन्न, पञ्चम मासमें दुग्ध और घृतविशिष्ट उक्त समांस अन्न, छठे मासमें गोक्षुरक सिद्ध ज्ञाय घृतके साथ सेवन करना लाभदायक है। सप्तम मासमें घृत्निपर्णी आदि सिद्ध करके घृतके साथ खाना चाहिये। ऐसा करनेसे गर्भ परिपुष्ट होता है। अष्टम मासमें वेरके जलके साथ वला, अतिवला, शतपुष्य, तिलकुटा, दुग्ध, तैल, लवण, सटनफल, मधु और घृतासायित अन्न भोजन करना चाहिये। इससे पुराने मन्त्रकौ शुद्ध और वायुका अनुलोमन होता है। इनके बाद दुग्ध, मधुर और कषाय द्रव्य सिद्ध करके तैलके साथ शरीरमें लगानेसे वायु सरल होती है और उप-द्रवशुद्ध हो करके बच्चा सुखसे बाहर निकलता है।

गर्भ प्रसव (सं० पु०) गर्भस्य प्रसवः। गर्भस्य शिशुके भूमिष्ठ होनेके लिये वहिर्गसनरूप क्रियाविशेष, गर्भस्य सन्तानके बाहर आनेकी क्रिया।

गर्भभर्तृ (सं० स्त्री०) १ शिशुसन्तानका भरणपोषण।

२ गर्भस्य शिशुका भरण पोषण। (२७ ३१२)

गर्भभवन (सं० स्त्री०) गर्भस्य भवनम्। १ घरके मध्यकी कोठरी। २ प्रसूतिका गृह, सौरो।

गर्भभागङ्क (सं० पु०) प्लक्षवृक्ष, पाकरका पेड़।

गर्भभार (सं० पु०) गर्भ एव भारः। गर्भरूप भार, गर्भका भारोपन। (कथासहितभाग २६।११६)

गर्भमण्डप (सं० पु०) गर्भस्थितः मण्डपः। घरके अन्तर्गत मण्डप।

गर्भमास (सं० पु०) गर्भस्य गर्भारम्भस्य मासः। १ गर्भारम्भके मास, वह महीना जिसमें गर्भाधान हो। २ गर्भसहित मास।

गर्भमोचन (सं० स्त्री०) गर्भस्य मोचनम्, हतत्। प्रसव-करण।

गर्भयोषा (सं० स्त्री०) गर्भस्था योषा। गर्भस्थानोया स्त्री, गर्भिणी स्त्री। (भाग १३ २ ४०)

गर्भरक्षण (सं० स्त्री०) गर्भस्य रक्षणम्। गर्भपालन।

गर्भरस (सं० स्त्री०) गर्भस्य रसमस्या। १ जिसके गर्भमें रस हो। २ गर्भोत्पत्ति निमित्त रस।

गर्भग (सं० स्त्री०) प्राचीनकालकी एक प्रकारकी नाव। यह ११० हाथ लम्बी, ५६ हाथ चौड़ी और ५६ हाथ ऊंची होती थी।

गर्भरूप (सं० स्त्री०) गर्भस्य नवोत्पन्नशिशोः रूपमस्य यथा गर्भे देहकोपे रूपमस्य तरुण।

गर्भलक्षण (सं० स्त्री०) गर्भो लक्ष्यते येनिति करणे ल्युट्। गर्भमूत्रक चिह्न, गर्भकी पहचान। (मनु १।१४ ४०)

गर्भलम्बन (सं० स्त्री०) गर्भरक्षणार्थं क्रिया, वह क्रिया जो गर्भका रक्षाके लिये की जाती है।

गर्भवती (सं० स्त्री०) गर्भो विद्यते यस्याः मतुप् समासः। गर्भिणी, वह औरत जिसके पेटमें बच्चा हो। इसका नामान्तर—अन्तर्वती, गुर्विणी, गर्भिणी, ममत्ता, आपन्न-मत्ता, दोहदवती, उदारिणी और सुर्वी है।

जिस स्त्रीके गर्भधारण किये अल्प दिन हुए हों, उसकी योनिसे शुक्ल और शोणितक्षरण, यमबोध, असन्नता, पिपासा, ग्लानि और योनिस्फूर्ण होते हैं। गर्भधारणके बाद क्रमशः दोनों स्तनके मुख क्षणवण और आँखके पल बंद हो जाते हैं। गंधवा।

गर्भमें पुत्र होनेसे द्वितीय मासकी गर्भाशयमें पिण्डाकार गर्भ और दाहिनी आँखका भारोपन मालूम पड़ता है। सबसे पहले दाहिने स्तनमें दुग्ध निकलता, दाहिना ऊरु सुपुष्ट होता और मुखका वर्ण प्रसन्न रहता है। स्वप्नमें भी पुत्रके निमित्त वामना होती है। स्वप्नमें आम्रफल और पद्मादि प्राप्त होते हैं।

जिसके गर्भमें कन्याकी उत्पत्ति हो, द्वितीय मासमें उसके गर्भमें पेशी दीख पड़ती है एवं पुत्रकी जन्म लेने पर जो जो चिह्न दिखाई पड़ते उसके विपरीत लक्षण इसमें प्रकाशित होते हैं।

नपुंसक होने पर गर्भ पिंडके सदृश मालूम पड़ता, गर्भके दोनों पार्श्व उन्नत होते और उदरका अग्रभाग विस्तृत दीखता है। (भावप्रकाश)

यमज होने पर जिस मासमें उदरकी जितना बढ़ना चाहिये तदपेक्षा द्विगुण और उससे अधिक परिमाणमें बढ़ा दिखाई देता है। उदरका मधुख चौड़ा और उसके ऊपरसे नोचे तकका भाग दबा हुआ तथा उदर सम-द्विभागमें विभक्त मालूम पड़ता है। उदर स्थान स्थान

पर ज्ञ चा नोचा होता है तथा दोनों भ्रूणोंकी विषम चलन क्रियामें गर्भिणीका अधिक कट पड़ जाता है। पेट खूब भारी होकर पल्लवें गर्भिणीके दोनों पंर घूज जाते हैं। वे मत्र लक्षण रहने पर भी किसी समय यमज गर्भका स्थिरनिग्रह नहीं किया जा सकता है। युरो पीय चिकित्सक ट्रेयस्कोप यन्त्र या कण द्वारा दोनों हृत्पिण्डकी मद्बोचिता और प्रसारिका क्रियाका गन्ध सुन कर यमज गर्भ स्थिर करते हैं।

गर्भ यमति (स० २५०) गर्भ कुम्भारव यमति वाम स्थान । १ कुम्भारव यामस्थान । (२१०० ६० ५०) २ गर्भसंभवस्थिति, गर्भसं रहना ।

गर्भ याम (स० पु०) यमति अधिन्य वाम, गर्भ एव याम यामस्थान । १ गर्भाग । २ गर्भके भीतरकी स्थिति ।

गर्भ विद्युत्ति (स० स्त्री०) गर्भात् विद्युत्ति, ५ तत् । रोगादिके कारण गर्भ का अकाल पतन । रक्तमिदका, गर्भविन्दोदरम—सूत्रिका रोगकी वैद्यकीय शोध । चिह्न ८ तोला, मीठ, पीपल, मरिच, जैवी, लवङ्ग प्रत्येकका ५ तोला, स्थानसाक्षिक ४ तोला, इन सर्वांकी जलमें पोमकर मटर परिभाषाकी छर एक गोली बनाई जाती है। इसके सेवन करनेमें ममस्त प्रकारके सूत्रिकारोग नाश होत है ।

गर्भ विपत्ति (स० स्त्री०) गर्भव्य विपत्ति, ६ तत् । रोग, स्त्राय धोर पातादिके विधे गर्भका पापद् ।

गर्भ विनासतेन (स० स्त्री०) गर्भव्यापन करनेका तेज ।

गर्भ विभागरम (स० पु०) गर्भिणीध्वररम । पारा, मन्त्र धोर मृतिपामग्नका ममाल भाग में कर जवोर रम क स्त्राय लीम (दम तक गर्भिणी स्त्रीकी सेवन करणा जाये ।

गर्भ विस्वापिणी (स० स्त्री०) गोटी इमायपी

गर्भ वेदना (स० स्त्री०) गर्भव्य वेदना । मन्त्रोत्पत्तिक विधे ध्याया, वना उत्पत्त करके ममयका कट ।

गर्भ वेगमत् (स० स्त्री०) गर्भ एव वेगमत् । गर्भदम गृह्य जइ पर भी गर्भद रीमा वना हो ।

गर्भ व्याकरण (१० पु०) चिकित्साशास्त्रका एक अंग जिसमें गर्भकी उत्पत्ति तथा इति धादिहा वर्णन होता है ।

गर्भ व्यापद् (स० स्त्री०) गर्भस्य व्यापद्, ६ तत् । गर्भको विपत्ति, गर्भका क्रय ।

गर्भव्यूह (स० पु०) गर्भव्य गूदो व्यूह । लडाईमें पद्मा कृति सैन्य रचनाविशेष । युद्धमें सेनाको एक प्रकारकी रचना, जसमें सेना कमलके पत्तोंकी तरह अपनी सेना पतिकी चारों ओरमें घेर कर खड़ी होती घोर लड़ती है ।

गर्भव्यूह (स० पु०) गर्भस्य गर्भचिकित्सायं गह्व । चिकित्साशास्त्रानुसार एक प्रकारका यन्त्र जिसके द्वारा मरा हुआ बच्चा पेटके भीतरमें निकाला जाता है । इसके महका घेरा खाट अगुलका होता है ।

गर्भशुक्ल (स० पु०) गर्भशुक्ल स्वायें कन् । स्तनगर्भा कषणार्थ यन्त्रविशेष, यह धोचान जिसमें मरे हुए बच्चे का पेटमें निकालते हैं ।

गर्भशय्या (स० स्त्री०) गर्भस्य गर्भशय्या शय्या इव स्थानम् । गर्भकी उत्पत्तिका स्थान ।

गर्भशय्या (स० स्त्री०) गर्भस्य गर्भशय्या शय्या इव स्थानम् । गर्भकी उत्पत्तिका स्थान ।

गर्भशय्या (स० स्त्री०) गर्भशय्या, गर्भशूल ।

गर्भशासन (स० स्त्री०) भेजज द्वारा गर्भपात, दवाईमें गर्भपात ।

गर्भशोष (स० पु०) गर्भका शुष्कता रोग ।

गर्भश्राव (स० पु०) गर्भस्य श्रावः ।

गर्भसंक्रमण (स० स्त्री०) गर्भसंक्रमणं चन्त्यदेशपरि त्यागेन निजासायापादानार्थं प्रवेग । देहान्तरदहनार्थं कुत्तप्रवेगद्वयं जन्म ।

गर्भसंक्रमण (स० पु०) गर्भस्य संक्रमणः । गर्भसंक्रमण, गर्भका उत्पत्त ।

गर्भसंभूति (स० स्त्री०) गर्भस्य संभूतिः । गर्भसंभूति । (२१०० ६० ५०)

गर्भसमय (स० पु०) गर्भस्य समयः । १ गर्भकाल, अनुसन्धानके बाद महामय काल । २ सूत्रिका उत्पत्तिक निर्दिष्टक काल । (२१०० ६० ५०)

गर्भसुभग (सं० त्रि०) गभ सुभगः । १ गर्भकाला-
वधि सौभाग्यशाली । गर्भधारणात् सुभगा । २ गर्भ
धारणके लिये सौभाग्यशालिनी ।

गर्भसूत्र (सं० क्ली०) बौद्धसूत्र विषयका नाम ।

गर्भस्थ (सं० त्रि०) गर्भं तिष्ठति स्था-क । जो गर्भमें
स्थित हो । (सु० त ११३ प्र०)

गर्भस्थान (सं० क्ली०) गर्भाशय ।

गर्भस्थली (सं० स्त्री०) गर्भ एव स्थली स्थानम् । गर्भ-
रूप स्थान, गर्भाशय ।

गर्भस्त्राव (सं० पु०) गर्भ-सु-घञ् । गर्भस्य स्त्रावः,
इ-तत् । प्रसवकालके पहले गर्भकालसे चार मास
पर्यन्त शोणितरूपसे गर्भका पतन, गर्भच्युति ।

यदि गर्भवतीके गर्भसे वार वार रक्तस्त्राव होता
हो, तो उसको बन्द करनेके लिये सुस्निग्ध उत्पलादि
सिद्ध करके क्वाथ पिलाना चाहिये । नील, उत्पल,
रक्तवर्ण कुमुद, कद्दाग, खेतपत्र और यष्टिमधुको
उत्पलादिगण कहते हैं ।

गर्भस्त्राव होने पर दाह, पाख-वेदना, भ्रटर, पृष्ठ
वेदना, आनाह और सूत्रसङ्ग होते हैं । गर्भके एक
स्थानसे दूसरे स्थानका सञ्चालन होने पर आमाशय और
पक्वाशयमें त्रीभ तथा दाहादि उपरोक्त उपद्रव हुआ करते
हैं । गर्भस्त्रावमें दाहादिके होने पर स्निग्ध और शीतल
क्विया कर्तव्य है ।

कुशसूल, काशसूल, भैरोण्डामूल और गोक्षुर इन
सर्भोष्ठी दुग्धमें पाक कर चीनीके साथ गर्भिणीको पीने-
के लिये दें । गोक्षुर, यष्टिमधु, कण्टकारी और वाण-
पुष्य इन सर्भोष्ठीके साथ दुग्धपाक कर चीनी और मधुके साथ
पिलानेसे गर्भिणीकी गर्भवेदना जाती रहती है ।

कोठागारिका सृत्तिका, नवमल्लिका, लज्जालुलता,
थाइफूल, गेरुमट्टी, रमाञ्जन और धूप इन समस्त
पदार्थोंको चूर्ण कर मधुके साथ सेवन करनेसे गर्भपात
नहीं होता है ।

गर्भस्त्रावाशीच (सं० क्ली०) गर्भस्त्रावका अशीच । जितने
सहीनेका गर्भ रहता है उतने दिन तकका सूतक
लगता है । जिसे स्त्रावशीच कहते हैं । कूर्मपुराणमें
लिखा है कि छह मासके पहले यदि गर्भस्त्राव हो तो,

गर्भस्त्रावाशीच उतनेही दिन तक रहगा जितने
मासमें गर्भस्त्राव होता है । छह मासके बाद गर्भपात
होनेसे स्त्रियोंकी दश रात्रि और सपिण्डियोंका मध्यशीच
रहता है ।

गर्भस्त्रावो (सं० पु०) गर्भं स्त्रावयतीति सु णिच् णिनि ।
हिन्तालवृक्ष, ताड़, खजूरकी जातिका पेड़ ।

गर्भहत्या (सं० स्त्री०) भ्रूण हत्या, गर्भपात ।

गर्भागार (सं० क्ली०) गर्भ इव आगारम् । १ गर्भगृह,
वह कोठरी जो घरके मध्यमें हो, घरके बीचका कमरा ।
२ आंगन । ३ गर्भस्थान, गर्भाशय ।

गर्भाह (सं० पु०) अभिनयके अंकका एक भाग । इसमें
केवल एक दृश्य होता है । इसके समाप्त होने पर पहली
यवनिका उठाई अथवा दूसरी गराई जाता है और तब
दूसरा दृश्य आरंभ होता है (भा. १००)

गर्भाट (सं० त्रि०) गर्भं मत्ति-अट्ट-घञ् । गर्भमत्तक ।

‘गर्भाटं धत्त नागय हाश्रपति’ म. म. ष । (५० - ५०-५१२)

गर्भाधान (सं० क्ली०) गर्भं आधीयते ऽनेन, आ-धा
करणे ल्युट् । १ दशविध संस्कारोंमें प्रथम संस्कार ।
प्राचीन धर्मशास्त्रकारोंके मतमें प्रतिबन्धन न रहनेसे
विवाहित स्त्रीके प्रथम ऋतुमें ही गर्भाधान संस्कार
करना चाहिये । गोमिनका कहना है कि ऋतुमती
स्त्रीका शोणितस्त्राव रुकते ही मङ्गमकाल होता है ।
(२.५.८) सांख्यायन ऋषिके मतमें (३.१.१) नौद्वे वा
चिरकाल परिणीता भार्याके साथ ऋतुकाल उपस्थित
होने पर अभिगमन करना चाहिये मनुसंहितामें (३.४५)
ऋतुकालको अभिगमन करनेकी बात कही है । फिर
गौतम, याज्ञवल्कर प्रभृति संहिताओंमें भी ऐसा ही
विधान देख पड़ता है । प्रदर्शित प्रमाणों द्वारा निश्चित
न होते भी कि प्रथम ऋतुको ही गर्भाधान संस्कार
पड़ेगा, संग्रहकारोंने दूसरे दूसरे वचनोंके साथ सामञ्जस्य
लगा करके प्रथम ऋतुको ही गर्भाधान संस्कारका
विधान किया है । यह मानी हुई बात है कि धर्म-
शास्त्रका विधि पालन न करनेसे प्रत्यवाय वा पाप पड़ता
है । जब सांख्यायनीय गृह्यसूत्र और मनु प्रभृति प्रायः
सभी धर्मशास्त्रोंमें ऋतुकालको गमन करनेका विधान
है; प्रथम ऋतुको अभिगमन न करनेसे इसमें सन्देह नहीं
कि प्रत्यवाय वा पाप लग जावेगा

पराग्रने सपट ही कह दिया है—जो व्यक्ति हटा कदा रहते भी ऋतुमती भार्याको अभिगमन नहीं करता, उसकी बालकहत्याका पाप लगता है। इससे साफ समझ पड़ता है कि प्रतिबन्धक न रहनेसे प्रथम ऋतुमी ही गर्भ स्कार करना चाहिये, नहीं करनेसे पाप चढ़ता है। आभलायान रज्जुपरिगिष्टमें प्रथम ऋतुको ही गर्भाधानकी बात है—

“वधु मया प्राशयन्वधनी प्रथमे ऽनुशुषे ऽग्नि सुधातयाभारम्
प्राशयन्वध व्यानीराध्य इत्सेता वाग्नाइती जुं ह्दुना।”

विवाहके पीछे ऋतुमती स्त्रीके प्रथम ऋतुमें ही शुभ दिनकी गर्भाधान कार्यके अनुष्ठानमें प्रवृत्त हो प्रजापति देवताके उद्देशसे चरु पाक करके छताहुति देना चाहिये। रज्जुपरिगिष्टके इस विधानसे साफ मालूम पड़ता है कि विवाहके पीछे प्रथम ऋतुको ही गर्भाधान स्कार कर्तव्य है। गर्भाधानकी यह प्रथा हिन्दुओंके समाजमें चिर दिनसे चली आती है। देशमें दसे इमीका नाम पुनर्विवाह, पुष्यी स्व, फल्गुशोभन फूलचौक आदि पड़ा है। सब देशोंमें समी श्रेणियोंके हिन्दू विगेष प्रतिबन्धक न रहनेसे गर्भाधान स्कार किया करते हैं। प्राचीन स्मृतिग्रन्थकारों और उनके पर्यन्ती रघुनन्दनने प्रथम रज्यावकी ही गर्भाधानका विधान किया है।

सुश्रुतके मतमें वानिकाका गर्भाधान निषिद्ध है। पचोम वर्षसे नीचेका पुरुष १६ वर्षमें छोटी स्त्रीका गर्भाधान करनेसे यह गर्भ फेटमें हो घिनट हो जाता अथवा जात बालक अधिक नहीं जो पाता, किसी प्रकार से बचने पर भी दुबला दिखाता है। इसी कारणसे बहुत छोटी रमणीका गर्भाधान न करना चाहिये। कोई कोई बतलाना है कि विषकशास्त्र वा ज्योतिष शास्त्रका मिद्वान्त धर्मशास्त्र विरुद्ध होनेसे अशुभ है। अतएव सुश्रुतका यह मत धर्मशास्त्र विरुद्ध जैसा आदरणीय नहीं। फिर किसीके मतमें देगभेद तथा कालभेदसे सुश्रुतका मत धनता था, मय देशों और मय समयोंके लिये यह कब आदरणीय रहा। इसी प्रकार अपर अपर स्थानोंमें भी पूर्वप्रदर्शित धर्मशास्त्रके विरुद्ध जो दो एक मत देख पड़ते, हिन्दू उनका अन्वय रूप तात्पर्य रखते या उनकी दूरसे ध्यास्या करते हैं। (पृष्ठ ६५)।

धर्मशास्त्रके मतमें रजोदर्शनको पहलो तीन रातोंके बाद शुभ वार तिथि और नक्षत्रमें गर्भाधान स्कार करना चाहिये। किन्तु गोमिलने ऋतुमती स्त्रीका शोणित स्त्राव बन्द होने पर ही सङ्गमकाल बतलाया है, किसी रात या दिनकी गिनती नहीं। इससे स्पष्ट ही समझ पड़ता है—ऋतुके पीछे जितने दिन शोणित गिरता, सङ्गम वा गर्भाधान करना अनुचित ठहरता है—करनेसे सन्तानका अन्निष्ट उठता है। दूसरे धर्मशास्त्रकारोंने प्रायश तीन रातोंके पीछे रक्त पतन बन्द हो जानेसे तीन रातोंका उन्मेष किया है। रजोदर्शनके प्रथम दिनोंसे सोनह रात तक ऋतुकाल कहलाता, इसीके बीच गर्भाधान किया जाता है। शुभ रात्रिको गर्भाधान करनेसे कन्या और अशुभको उससे पुत्र उत्पन्न होता है। चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस्या, पूर्णिमा, रविवार और मकान्ति दिवसको गर्भाधान करना निषिद्ध है। फिर ज्येष्ठा, मूला, मघा, श्रेष्ठा, रेवती, कृत्तिका, अश्विनी, उत्तराषाढा, उत्तरभाद्रपद और उत्तर फल्गुनी नक्षत्रमें भी गर्भागन करना न चाहिये। इत्यादि, अशुभ, पुनर्वसु और अशुभ रात्रि काई नक्षत्रोंको पुनश्च बहते हैं। यह गर्भाधान कार्यको शुभ है। इसके लिये रवि, मङ्गल और बृहस्पति वार तथा वृष, मिथुन, कर्कट, सिंघ, कन्या, तुला, धनु और मीन लग्न प्रयत्न होते हैं।

मरहाजके मतमें रजस्वला स्त्री प्रथम दिन चण्डालो, द्वितीय दिन ब्रह्मघातिनी और तृतीय दिनकी रजकोकी मांति अपवित्र और अस्पृश्य रहती है। वह चतुर्थ दिवसको शुद्धिनाम परती है। चौथे दिनमें सोनह दिन तक गर्भाधानका योग्य काल है।

बृहज्जातकके निषेकाध्यायमें लिखा है कि गर्भके प्रथम मासको शुक्र और शोणित मिलता है। उद्योका नाम षण्णनावस्था है। उक्त समयका अधिपति शुक्र होता है। द्वितीय मासको गर्भ अपेक्षाकृत कठिन पड़ जाता है। उक्त अधिपति मङ्गल है। तृतीय मास को हस्तपदादि उत्पन्न हुआ करते हैं। उक्तका अधिपति बृहस्पति है। चतुर्थ मासको अम्बिका मन्वार होता है। उक्तका अधिपति सूर्य है। पञ्चम मासको

चर्म उपजता है। उसका अधिपति चन्द्र है। षष्ठ मासकी रोम आते हैं। उसका अधिपति शनि है। सप्तम मासकी चेतनाका प्रादुर्भाव होता है। उसका अधिपति बुध है। अष्टम मासकी भोजनशक्ति आती है, उसका अधिपति लग्नाधिपति ही है। नवम मास उद्देश्य उठता है। उसका अधिपति चन्द्र है। दशम मासकी प्रसव होता है। उसका अधिपति सूर्य है। जिन ग्रहोंका उल्लेख किया गया है, गर्भाधान कालको उनमें कोई ग्रहघीड़ित रहनेसे उसी ग्रहके मासमें गर्भापातादि होता है। फिर उनके बलवान् रहनेसे उसी उसी महीने गर्भकी पुष्टि हुआ करतो है।

ऋतुके मतमें अतिशय बृद्धा, चिररोगिणी वा अन्य किसी प्रकारकी विकारयुक्त रमणीका गर्भाधान करना एफान्त निषिद्ध है। अतिशय बृद्ध, चिररोगग्रस्त वा किसी प्रकारके दूसरे विकारयुक्त पुरुषके लिये भी गर्भाधान करना अनुचित है। प्रथम ऋतुमें गर्भाधान संस्कार कर लेनेसे फिर किसी ऋतुको वह आवश्यक नहीं होता। देवल कहते हैं कि रमणियोंका एक बार संस्कार होनेसे सभी गर्भोंका संस्कार हो जाता है। अतएव गर्भाधान, पुंसवन और सीमन्तोन्नयन एक ही साथ करना चाहिये।

गोभिल गृह्यसूत्र (११०५) में गर्भाधान-प्रणाली इस प्रकारसे लिखी है—रजःस्त्रावके प्रथम तीन दिनके बाद शुभ मुहूर्तको किसी प्रकारका दोष वा प्रतिबन्धक न रहनेसे गर्भाधान किया जाता है। गर्भाधान दिवसको सायं सन्ध्या अतीत होने पर पतिको पवित्र भाव और पवित्रवेशसे “नसा दिवश्यने विष्णुः” इत्यादि मन्त्र द्वारा सूर्याधि प्रदान करना चाहिये। फिर “विष्णोर्नि कल्पयतु त्वा दपा- १८ विष्णु वा सिद्धतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दद्यातु ते ॥” (मन्त्रब्राह्मण १।१।६) और “गर्भं वेदिसिनी वासि गर्भं वेदिसरसती। गर्भं के षडिनी देवा वाषसां पुत्रसूत्रो ॥” (मन्त्रब्रा० १।१।७) मन्त्र उच्चारण करके दाहने हाथसे पत्नीका योनिदेश कूत और उसके बाद सङ्गत होते हैं। इसीका नाम गर्भाधान संस्कार है।

पक्षतिप्रणता भवदेवमष्टके मतमें योनिदेश स्वर्ग करके ऊपरके दोनों मन्त्र पढ़ना पड़ते हैं। कोई कोई विवाहकी भांति गर्भाधानके दिन भी आभ्युदयिक आहु

करनेकी कहता है। * ऊन्दोग-परिशिष्टके अनुसार विवाह और गर्भाधान संस्कारके बीच एक आहु करनसे हो काम चल सकता, प्रत्येक कर्मके पहले आभ्युदयिक नहीं करना पड़ता। लौकिक प्रथा अथवा विलुप्त शाखीय विधिके अनुसार गर्भाशयकी शुद्धिको मन्त्रपूत पञ्चगव्य यज्ञ करनका नियम है।

आश्वलायन-गृह्यपरिशिष्टमें गर्भाधान विषयपर इस प्रकार लिखित हुआ है—

विवाहके बाद ऋतुमती नवोदाके मङ्गलार्थ प्रजापति देवताके उद्देशसे होम करना चाहिये। उसकी रीति यह है कि प्रथम ऋतुके १६ दिनोंमें शुभ मुहूर्तको पवित्र तथा मनोहर वेशधारिणी नवोदा रमणीके साथ गर्भाधान कार्यके अनुष्ठानमें लग स्थालीमें विधिके अनुसार चरुपाक करके उसका कियत् अंश प्रजापति देवताके उद्देशसे अग्निमें आहुति देते हैं। अर्वाशष्ट चरु दम्पतीके भोजनको रख छोड़ा जाता है। फिर “विष्णोर्नि कल्पयतु” इत्यादि मन्त्रसे घृताहुति प्रदान करना चाहिये। स्थानान्तरमें यह भी लिखा हुआ है, उसके पीछे क्या करना पड़ेगा। प्राजापत्य होमके बाद जिस क्रिया द्वारा गर्भ लाभ होता, करना उचित है। इसीका नाम गर्भलम्बन है। उसकी रीति यह है कि कई एक निषिद्ध रातिया परित्याग करके दम्पतीका शरीर सुख्य रहनेसे सुन्दर सुसज्जित तथा सुगन्धि कुसुम प्रभृति द्वारा सुवासित गृहमें नानाविध आभरणोंसे विभूषित, अङ्गरागरञ्जित, माल्य चन्दन द्वारा परिशोभित और शुक्ल वस्त्रधारिणी रमणीको पलंग पर लेटा करके अपने आपसी सुस्नात और माल्यादि पवित्र वेशभूषित ही करके शयन करना चाहिये। फिर थोड़ीसी दूर्वा पीस करके उसका रस “इतीर्थातः पवित्रतो हेमता विद्यावधं नमसा गोभिरीडे। अन्वासिष्णु पितृषद् न्यर्था च ते भानो जगुषा तस्य विद्मि ॥” (शकू १०।५।२१) और “उदीर्धानो विद्यावधो न नसेका- सहेत्वा। अन्वासिष्णु अक्रथं संशार्था पद्याद्यज ॥” (शकू १०।५।२२) दोनों मन्त्र पढ़ करके दम्पतीकी नासिकामें सेचन करते अथवा अश्वगन्धाका चूर्ण भीनी कपड़े में बांध बत्ती बना लेते और पूर्वोक्त दोनों मन्त्र उच्चारण करके दम्पतीके

* “निषे ककाले सोमे च संसन्तोन्नयने तथा ।

अंशं पुंसवने चैव आहुं कर्मांशं मेव च ॥” (संस्कारतत्त्वप्रकाश भविष्यपुराण)

नामिका रन्ध्र में आप्राण द्वारा पट्ट वा देते है। उसके पीछे—“ग धरोऽसि विधा वरुहं खनि इत्यादि मन्त्र पाठ करके सपथेन्द्रिय मर्पण करना चाहिये। फिर ‘विचरानि वल्लव्यु’ इत्यादि मन्त्रद्वय पठके आदिरसका आविर्भाव और ‘वो मम शीघ्रयोगम्’ मन्त्र बोलके सङ्ग किया जाता है।

धर्मकी अव्यवधि और अन्तका ज्ञान हानिसे प्राय सभी वैदिक काय विपुत हो गये है। आजकल परिशिष्ट प्रद शिंत नियम बिलकुल नहीं चलते।

२ गर्भ निषेक मात्र।

‘गर्भाधानव्यवधिषु नृणां महामाना।

सुविधते नृपमनुजैर्गर्भे भवना यथा ॥ (सपट्ट ८)

गर्भाधानक्रिया—जैनोंकी त्रेपन क्रियाओंमेंसे प्रथम क्रिया। (विशेष विवरण ज्ञानकी ही तो आप्तपुराण देखना चाहिये)

गर्भाध (सं पु०) गर्भस्य जल।

गर्भापक्रान्ति (सं स्त्री०) गर्भस्य अवक्रान्ति। गर्भि-
रपत्ति, जीवका गर्भाशयमें प्रवेशरूपमें अवतरण।

(शुभ्र २११ ५०)

गर्भाशय (सं पु०) आग्नेऽर्द्धं त्त, आशी आधारश्च।
गर्भस्य आशय, इत्तत्। गर्भका आधारस्थान, गर्भ-
शय्या, स्त्रियके पेटका ब्रह्म स्थान जिसमें बच्चा रहता है।

“ग्रह आचितस्य सप्त क्रिया गर्भास्य गतम्।

शिव कथं गर्भोत्पत्तिं ब्रूमि वा यदि वा न ब्रूमि ॥ (भारत १५।५४)

जिस तरह पुरुषो को अण्डकोष होता है उसी तरह स्त्रियो को भी गर्भकोश या गर्भाशय है। यह गर्भाशय स्त्रियो को भीतरमें और पुरुषो को बाहर रहता है। इसी गर्भकोशमें रजोण्ड वा गर्भाण्ड रहते हैं। जो जीव जितनही पेट डेटे है उतनीही उनके गर्भाशय बढे होते हैं। स्त्रियो का गर्भकोश १ इंच लम्बा, ३ इंच चौड़ा और ३ इंच मोटा होता है। इस गर्भाशयमें एक छद्म या नाडी लगी रहती है। जिसके द्वारा बच्चा बाहर निकलता है।

गर्भाष्टम (सं पु०) गर्भात् गर्भकालात्, अष्टमः। गर्भकी अवधिसे अष्टम मास और वर्षादि।

गर्भाह्यपन्द (सं स्त्री०) गर्भस्य आह्यपन्दम्, इत्तत्।
गर्भस्य क्वचिद्विशेष, गर्भकी विकृति।

गर्भास्त्राय (सं पु०) गर्भस्य आस्त्राय। कर्म ५।१६०।

गर्भिणी (सं स्त्री०) गर्भाशयस्य, इति ङीप्। गर्भ

वती भारी, अन्त सत्वा, हामिना, जिमके पेटमें बच्चा रहे
“सुगर्भिणी कुमार्तपु टोमिषा गर्भिणीषु ॥

वतिभिर्भोऽप एवैतान् भोजये विचारयन् ॥” (सु १।१।१०)

काश्यपका कहना है—गर्भिणीको हस्ती, अग्वादि, पर्वत तथा अहानिवादि पर आरोहण, व्यायाम, वेगसे गमन, शकटका चढना, शोक, रक्तमोचण, भय, कुक्कुट-भोजन, मैथन, दिवानिद्रा और रात्रिजागरण परित्याग करना चाहिये। स्कन्दपुराणमें लिखा है कि गर्भिणी नारी स्वामीकी आयु हृद्वि करती है। इसीसे उसको हरिद्रा, कुड्म म मिन्दूर, वज्जल, कबूकी, ताम्बूल, मङ्गक जनक आभरण, केशस स्कार, चोटो व घाना आर कर तथा कर्णभूषण छोडना उचित नहो। हृहसपतिने बत लाया है कि गर्भिणीको पठ वा अष्टम मास विशेषत, आपाट्टमें श्रावण करना चाहिये। आश्वलायनके मतमें— गर्भवतीके खामोकी केशादि कर्तन, मैथन तथा तीर्थ यात्रा परित्याग करना उचित है। सुहृत्दीपिका और कालबिधानमें लिखा हुआ है कि चौरकर्म, शवाह-गमन, नखकर्तन युवादिस्थलको गमन, बहुत दूर जाने उदाह, उपनयन और सुसुप्तमें अवगाहन करनेसे गर्भिणीके स्वामीका आयु घटती है।

गर्भिणी जो जो भोग करना चाहती, न देनेसे गर्भकी पीडा उठती और अभिलाष पूर्ण हो जानेसे वह गुणवान् पुत्र प्रसव करती है। अभिलाषके अनुसार भोग न मिलनेसे गर्भिणी अपने आप चौक पडा करती है। गर्भिणीके जिस इन्द्रियका अभिलाष पूर्ण नहीं होता सन्तानके भी उसी इन्द्रियमें पीडा उठती रहती है। राज-दर्शनका अभिलाष लगनेसे सन्तान महाभाग्यवान् और धनवान् होता है। पद घसादि अथवा अन्तहारका अभि लाष उठनेसे लडका मनोहर और अन्तहारप्रिय निकलता है। आयम देखनेकी जो चाहनेसे सन्तान धर्म-शील और सत्यचित्त होगा। देवप्रतिमादिमें अभिलाष होनेसे महासुद, सर्पादि दर्शनकी जो लगा रहनेसे हिंस्रक, गीसांमका अभिलाष उठनेसे पविष्ठ तथा कटसहिष्णु, सहिष्णुमांसके अभिलाषसे शौर्यान्वित, रक्त लोचन और लौमय, धराहर्मामकी चाहसे निद्रालु तथा वीर ज्ञानमांसकी इच्छामें वनेचर, स्मरन अर्थात् शुभ

विशेषके सामंका लालच रहनेसे उद्विग्न और तित्तिर
साम खानिको जी चाहनेसे बच्चा भीरु होता है। इसको
छोड़ करके अन्य जन्तुके सामंका अभिलाष लगनेसे उस
जन्तुका जैसा स्वभाव और आचार रहता, बच्चेका भी
वैसा ही स्वभाव और आचार हुआ करता है। गर्भिणी
देवता ब्राह्मणद्विमें भक्त तथा अज्ञायुक्त होने और शुद्ध-
चारिणी तथा दूसरेके साथ हितसाधनमें निरत रहनेसे
अति गुणवान् सन्तान प्रभव करती है। उससे विप-
रीत पढ़ने पर लड़का गुणहीन होता है। (सुध, त ३३)
२ लीगरी वृक्ष।

गर्भिणीदीहृद (सं० स्त्री०) गर्भिण्या दीहृदम्, हृ-तत् ।

गर्भिणीकी अभिन्नपिन द्रव्य। गर्भिणी देवी।

गर्भिण्यवेक्षण (सं० स्त्री०) गर्भिण्या अवेक्षणम्, हृ-तत् ।

गर्भिणीकी परचर्या, गर्भिणीकी देव भाल।

गर्भित (सं० त्रि०) गर्भो जातोऽस्येति तदस्य मञ्जातं तार-

काटिभ्य इतच् । (पा० ५।२।३६) इति इतच् । १ जात-

गर्भ, जिम्के गर्भ रहा हो, गर्भयुक्त। २ पूर्ण, पूर्णतः,
भरा हुआ। ३ काव्यका एक दोष। शेष देखो।

गर्भिन् (सं० त्रि०) गर्भोऽस्यस्तीति गर्भ-इनि। गर्भ-
विशिष्ट, गर्भवती।

गर्भी (सं० पु०) पुत्रजीववृक्ष, पतंजिवका पेड़।

गर्भलस (सं० त्रि०) गर्भो गिग्रा अन्ने वा लसः । पावे
ममितादयश्च । (पा० २।१।२८) इति अलुक समासः ।

१ जो लड़का पाकर लस हुआ हो। २ अन्नमें लस, जो
अन्नसे संतुष्ट हो गया हो।

गर्भेश्वर (सं० पु०) गर्भावधि ईश्वरः गर्भदारभ्य ईश्व-
रो वा। गर्भ कालसे ही राजा, वह जिसके पूर्वपुरुषसे
राजा होना आ रहा हो।

गर्भेश्वरता (सं० स्त्री०) गर्भेश्वर-तल् टाप्। गर्भ-
कालसे ही ईश्वरत्व वा राजत्व, वह जिसको प्रभुता बहुत
दिनोंसे चली आ रही हो। (राजतरङ्गिणी ५।२०३)

गर्भपाकणिक (सं० पु०) यष्टिक धान्य, साठीधान।

गर्भोत्पत्ति (सं० स्त्री०) गर्भस्य उत्पत्तिः । गर्भका जन्म,
गर्भ रहना।

गर्भोपघात (सं० पु०) गर्भस्य उपघातः । १ गर्भका
नाश। २ वाटलमें जल उत्पन्न करनेकी शक्तिका नष्ट
होना।

गर्भोपघातित् (सं० त्रि०) गर्भ उपघ्नन्ति उप घ्नन् णिनि।

गर्भना शनी शिशुप्रभृति, हमलका बरवाद करनेवाला।

गर्भोपनिषद् (सं० स्त्री०) गर्भोविटिका उपनिषत् । अथर्व-
वेद मन्वन्धी एक उपनिषद् । इसमें गर्भकी उत्पत्ति
और उसके बढ़ने आदिका वर्णन किया गया है।

गर्भली-नानी—बम्बई प्रदेशके अन्तर्गत काठियावाड़का
एक लुद्रराज्य। यह सामन्तकके अधीन है। यहांकी

जनसंख्या प्रायः ३४०, और राजस्व २४००, रुपये हैं।
गायकवाड़ महाराजको १८४, रुपये कर देने पड़ते हैं।

गर्भली मोती—बम्बई प्रदेशके काठियावाड़ जिल्लाका साम-
न्तकके अधीन एक छोटा राज्य। यहांकी लोकसंख्या

प्रायः ३८५, है। राज्यकी आय ४७०० रु० की है जिनमें-
से २२०, रुपये गायकवाड़ महाराजकी करके न्ये देने
पड़ते हैं।

गर्भुच्छट (सं० पु०) गर्भुतो नडस्य छट इव छटो यस्य ।

धान्यविशेष, एक प्रकारका धान।

गर्भुटिका (सं० स्त्री०) गर्भुत इव उटं पर्णं यस्याः कन्-

टाप् अत इत्वम् । १ धान्यविशेष, एक धान। २ एक
प्रकारकी घाम जिसका स्वाद नमकसा होता है, जरड़ी।

गर्भुटो (सं० स्त्री०) गर्भुटिका धान्य, जरड़ी धान।

गर्भुत (सं० स्त्री०) गौर्यते इति-गृ-उति। (गीत-

द्वे । उष्य १।६) लण धान्यविशेष, मयनाघास ।
२ सुवर्ण, सोना।

गर्भुच्छट (सं० पु०) गर्भुच्छट-निपातनात् दीर्घः ।

एक प्रकारका धान।

गर्भुटिका (सं० स्त्री०) एक प्रकारका धान।

गर्भोटिका (सं० स्त्री०) लणविशेष, एक प्रकारकी घास।

गर्वा (हिं० वि०) १ लाखके रङ्गका, लाही। (पु०)

२ लाखीरङ्ग। ३ घोड़ेका एक रङ्ग। ४ लाखके रङ्गका
घोड़ा। ५ लाहौ रङ्गका कवूतर। ६ बहते हुए पानी-

का थपड़ा। ७ सतलज नटोका एक नाम।

गर्वी (हिं० स्त्री०) तार लपेटनेका एक यन्त्र।

गर्व (सं० पु०) गर्व मदे घञ् । १ अहंकार, घमण्ड।

२ अवज्ञाविशेष, एक प्रकारका अपमान या अनादर।

“द्विष्यं कृपयास्यच्छुर्वाविद्याश्चैवपि ।

इदलाभादिनामो धानवशा गर्व इतिः ॥”

३ व्यभिचारि भावविशेष । साहित्यरूपके मत्से गर्वका दूसरा नाम 'मद' है, यह प्रभुत्व, धन, विद्या, सख्कुलजातत्व प्रभृति द्वारा उत्पन्न होता है ।

गर्वण (स० पु०) एक पर्वतका नाम ।

गर्वप्रवारी (स० वि०) गर्वका नाश करनेवाला, घमण्ड चूर्ण करनेवाला ।

गर्ववत (हि० वि०) घमडी, अभिमानो ।

गर्वर (स० पु०) गीर्धते इति गृ निगरणे घरच् । १ अह-
द्वार, घम ड । २ नायक । (वि०) ३ अहङ्कारी, घम डी ।

गर्वाट (स० पु०) गर्वण अटति अट्-अच् । द्वारपाल, वह जो दरवाजे पर रक्षाके लिये नियुक्त हो, दरवाजा ।

गर्वाना (हि० अ० क्ति०) गर्व करना, अभिमान करना, घम ड करना ।

गर्वालाव (स० स्त्री०) पाताल गरुडो ।

गर्वित (स० त्रि०) गव-कतरि क्त । गव-युक्त, अभिमानो । (स्त्री) वह नायिका जिसको अपने रूप और गुणका घमंड हो ।

गर्विन् (स० त्रि०) गर्वाऽसराऽभतीति इति । गर्वयुक्त, घम डी ।

गर्विष्ठ (स० त्रि०) गर्वयुक्त, घम डी, अहकार करने वाला ।

गर्वी (हि० वि०) घम डी, अहकारी ।

गर्वीना (हि० वि०) अहङ्कृत, घम डसे भरा हुआ ।

गर्मी—वस्त्रदे प्रान्तकी एक जाति । इनका काम डोल बजाना है ।

गर्ह (गढ)—खानियरके अधीन सेष्टल इण्डिया एजेन्सीमें खीचीवशका एक छुट्टाराज्य । भूपरिमाण ४४ वर्गमील और लोकसख्या प्राय ८४८२ है । पहले यह राघुगढ

राज्यके अन्तर्गत था, किन्तु आपसी भगडाके कारण खीची परिवारके बेटोंको अलग अलग जागीर दी गई, और १८४३ ई०में विजयसिंहने ५२ ग्रामोंको एक सनद ली जिसको आय लगभग १५००० रु० थी । यह राज्य छोटी छोटी पचाडिओंमें विभक्त है, इसलिये यहां उपज अच्छी होती है । पोसा भी यहाँ बहुत उपजाया जाता है ।

और इसमें अफीम प्रशस्त कर उजैन भेजी जाती है । रघु-

गढेशके प्रधान खीची चौहान राजपूत है जिन्हें राजाकी उपाधि मिली है । वर्तमान राजा १८०१ ई०में राज्य-

निहामन पर बैठे थे । राज्यकी आमदनी लगभग २०००० रु० और कुल खर्च १३००० है । जामनेरमें राज्यका मदर है जहाँ एक अस्पताल और एक विद्यालय है ।

गर्हचिरोली (गढचिरोली)—मध्यप्रदेशमें चान्दा जिलाकी तहसील । यह ब्रह्मपूरीके जमीन्दारी स्टेट और चान्दा जिलाका कुछ अंश ले कर बनी है । भूपरिमाण ३७०८ वर्गमील और लोकसख्या प्राय १५५२१४ है । इस तहसोलमें १०८८ ग्राम लगते हैं । इसका मदर गर्हचिरोली ग्राममें है जो चान्दा शहरसे ५१ मीलकी दूरी पर बसा है और जहाँ २०७७ मनुष्य वास करते हैं । इसमें १८ जमीन्दारी पडती है जिनका भूपरिमाण २२५१ वर्ग-

मील और जनमख्या प्राय ८२२२१ है । क्षेत्रका अधिकांश पहाडो और ज गलमय है । जमीन्दारीके वाहर ८४८ वर्गमील क्षेत्रका सरकारी ज गल है ।

गर्हण (स० स्त्री०) गर्ह कुसने भाव व्युत्पत्ति । निन्दा, शिकायत । (भारत १२०३२ च०)

गर्हण (स० स्त्री०) गर्ह भाव युच् टाप् । निन्दा, अपवाद, बदगोई

गर्हणीय (स० त्रि०) निन्दनीय, नि दाकने योग्य । (भारत १११११ च०)

गर्हदिवान (गढदिवान)—पंजाबके होसियारपुर जिले और तहसीलका एक शहर । यह अक्षां ३१ ४५ उ० और देशां ७५ ४६ पू० होसियारपुरसे १७ मीलकी दूरी पर अवस्थित है । लोकसख्या प्राय ३६५२ होगी । शहरके व्यापारके लिये यह स्थान प्रसिद्ध है । यहाँकी प्राय २३०० रु० और कुल खर्च २००० रु० है । यहाँ एक सरकारी अस्पताल भी है ।

गर्हशङ्कर—१ पञ्जाबमें होसियारपुर जिलाकी एक तहसील । यह अक्षां ३० ५८ से ३१ ३१ उ० और देशां ७५ ५१ से ७६ ३१ पू०में अवस्थित है । भूपरिमाण ५०८ वर्गमील है । लोकसख्या लगभग २६१४६८ होगी । गर्हशङ्कर शहर इसका मुख्य सहर है । इसमें सिर्फ ४७२ गाँव लगते हैं । तहसीलकी आम-

इनी प्रायः चार लाख रुपयेकी है। तहसीलके दक्षिण-
की और मतलज नदी प्रवाहित है।

२ पञ्जाबके होमियारपुर जिलामें इसी नामकी तह-
सीलका एक शहर। यह अक्षा० ३१° १३' उ० और
देशा० ७६° ८' पू०में अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः
५८०३ है। शहरमें एक किन्ना है जिसकी महम्मूद
गजनी अपने अधिकारमें लाया था, किन्तु योड़े समय-
के बाद ही महम्मूद घोरीने उनसे छीन कर जयपुरके
राजा मानसिंहके लडकोंकी सौंप दिया। यहां राज-
पूतोंकी संख्या अधिक है। तस्याकू और गुड़का व्यव-
साय यहां बहुत होता है। इस शहरमें एक हन्दी
स्कूल तथा एक सरकारी अस्पताल है।

गर्हा (सं० स्त्री०) गहर्ते इति गर्ह-अ। (गुटोच ३००:। पा
- ३।०।१०९) ततष्टाप्। निन्दा, शिकायत।

“पुण्यं प्राप्यान् धारयति पुण्यं प्राप्यत्सुचते।

येन येनाचरेदमं तस्मिन् गर्हां न विद्यते।” (भारत १।१५५ ५०)

गर्हा (गडा)—मध्यभारतके गूणा उपविभागके अन्तर्गत
एक छुद्र राज्य। क्षेत्रफल ४४ वर्ग मील है। लोकसंख्या
प्रायः ८४८१ होगी। पहिले यह राज्य रावीगड़ जागीरके
अन्तर्गत था।

गर्हाकलां (गडाकलां)—उत्तर-पश्चिम अंचलके वान्दा
जिलान्तर्गत एक ग्राम। यहांके अधिकांश अधिवासी
ब्राह्मण और चमार हैं। इस ग्रामकी स्थापित हुए लगभग
५०० वर्ष हुए हैं। सिपोंही विद्रोहके समय यहांके
मनुष्य अंगरेजोंकी रसद पहुंचाते थे इस लिये करवीर
नारायणरावने इसे ग्रामकी दग्ध कर डाला था।

गर्हाकोट रमणा (गडाकोट रमना)—मध्य भारतवर्षके
खागर जिलेमें एक सागुन काष्ठ (Timber) का जंगल।

गर्हि (गढ़ी) मध्य भारतके भोपावर एजन्सीमें एक ठकु-
रात (देवोत्तर)। भूपरिमाण ६ वर्ग मील और लोक-
संख्या प्रायः ५६४ है। इसकी आमदनी ३००० रु० है।

गर्हि-इखतियार खाँ (गढ़ी इखतियार खाँ)—पंजाबमें
बहवलपुर राज्यमें खानपुर तहसीलका एक शहर। यह
अक्षा० २८° ४०' उ० और देशा० ७०° ३८' पू० बहवल-
पुर शहरसे ८४ मील दक्षिण-पूर्वमें अवस्थित है। लोक-
संख्या प्रायः ४८३८ है। यह सिन्धुके कलहोर-ग्रामकीसे

स्थापित किया गया था, लेकिन १७५३ ई०में यह राज्य
टाउट-पुत्रके प्रधानने उनसे छीन लिया। फिर १८०६ ई०
में बहवलपुरके द्वितीय नवाब बहवलखाने इसे अपने राज्य
में मिला लिया। शहरके चारों ओर खजूरका जंगल है।
यहांसे वहन दूर दूर तक खजूरकी रफतनी होती है।

गर्हित (सं० त्रि०) गर्ह-क्त। निन्दित, जिमकी निंदाकी
जाय, दृषित, बुरा।

गर्हितव्य (सं० त्रि०) गर्ह-तव्य। निन्दनीय, शिकायत कर
ने लायक।

गर्हिन् (सं० त्रि०) गर्ह-णिनि। निन्दक, निन्दा करने-
वाला।

गर्हियासिन (गढ़ीयासिन)—बम्बई प्रदेशमें मकर जिने
के नौमहो अमी तालुकका एक शहर। यह अक्षा० २०°
५४' उ० और देशा० ६८° ३३' पू०में अवस्थित है लोक-
संख्या प्रायः ६५५४ होगी। तेलहनका व्यवसाय यहां
अधिक होता है। इस शहरको आय लगभग २५००० रु०
की है। यहां एक अस्पताल और दो ब्यालय हैं।

गर्ह्य (सं० त्रि०) गर्ह-ण्यत्। अधम, निन्दनीय, नीच।

गर्ह्यवासिन् (सं० त्रि०) गर्ह्यं वसतीति वस-णिनि।
कुलितवासी, निन्दस्थानवासी, खराब स्थानमें रहने-
वाला।

गल (सं० पु०) गलति भक्षयत्यनेन गल-करणे अप।
१ कण्ठ, गला, गरदन। २ सज्जरस, राल। ३ एक
प्राचीन बाजिका नाम। ४ मत्स्यविशेष, गडाकू नामकी
मछली।

गल—१ सामितिक जातिकी एक विस्तृत शाखा। ये
अफ्रिकाके अन्तर्गत आविस्तिनियोंके 'सोया' प्रदेशमें रहते
हैं। सोया प्रदेशकी जलवायु अति उत्तम है। यहां पर
शीत या ठण्ड अधिक नहीं पड़ती है। जलवायुके प्रभाव-
से ये लोग देखनेमें सुन्नी और सुन्दर लगते हैं। इनकी
बोली भी बहुत मीठी होती है। इनमेंसे थोड़े देसाई वा
ससलमान हैं किन्तु इनके अधिकांश जड़ोपासक भीतिक
धर्मावलम्बी हैं। यह जाति सर्पकी मानव जातिकी माता
समझ कर पूजा करती है। ईश्वर और परकालमें भी इन
लोगोंका विश्वास है। इन्होंने ईश्वरके तीन स्वरूपोंकी स्वीकार
किया है १म "उयाक" वा "उयाका" अर्थात् सर्वप्रधान,

इय 'उगलि' वा पुरुष, इय 'अतिनि' अर्थात् स्त्री वा शक्ति । अग्नि और रविवारको ये लीग किमी तरहका कार्य नही करते हैं ।

२ सिहलकी दक्षिण पश्चिममें समुद्र उपकूलस्य एक नगर । यह एक पहाडके ऊपर अवस्थित है । पर्वतकी लम्बाई समुद्र तक चली गई है । इस पर्वतके ऊपर एक दुर्ग भी विद्यमान है । कलम्बोमे यह ३५ कोस दक्षिण पश्चिम है । अतिप्राचीन कालसे ही यह वाणिज्य स्थान होनेके कारण बहुत प्रसिद्ध हो गया है । फिणिकके शणिक यहाँ आकर वाणिज्य करते हैं ।

गलश (हि० स्त्री०) वह सम्पत्ति जिसका मानिक भर गया हो और उसका कोई उत्तराधिकारी न हो ।

गलकवल (हि० पु०) भालर, जो गायके गलेके नीचे लटका रहता है ।

गलक (स० पु०) गलतोति गल श्व स प्रायां कन । गहाकू नामकी महेली ।

गलका (हि० पु०) एक प्रकारका फोडा । यह हाथके अगुनियोंके अग्र भागमें होता और बहुत कष्ट देता है ।

गलकोण्डा वा गलि पर्यंत—मन्द्राज प्रदेशके विशाखपत्तन जिलेकी एक पर्वतश्रेणी । यह अक्षा० १८ ३०' उ० और देशा० १८ ५०' पू० पर अवस्थित है । इस पर्वतकी दो चोटियाँ हैं जिनकी लम्बाई क्रमशः ३५६२ और ३५१४ हाथकी है । ऊपर चढनेका एक रास्ता भी चला गया है । १८६० ई०को इस स्थानकी जनवायु उत्तम समझ कर यहाँ अंगरेजी सेना रखी गई थी, किन्तु बार बार खरसे पीडित रहनेके कारण उन्होंने यह स्थान छोड़ दिया । विजयनगरके राजाका यहाँ एक विस्तृत क्षेत्र है ।

गलकीडा (हि० पु०) १ कुत्तेका एड पेंच । २ एक प्रकारका कोडा वा चायक ।

गलगण्डन् (स० वि०) गलगण्डोऽसरास्तीति इति । गलगण्डरोगी, गलेमें चिमकी गलगण्ड गेग हुआ हो । (अ० ११५)

गलगण्ड (स० पु०) गले गण्ड स्पेटक इव गलरोग विग्रहः, गलेकी एक बीमारी । चन्ती बीनीमें इसको गण्डमान्ना कहते हैं । गलगण्डके लक्षण और निदान

आदि भावप्रकाशमें इस प्रकारमें लिखे हैं—गलेमें बढो या छोटी अण्डकोप जैसी लम्बी और कडो भूजन उठनेमें गलगण्ड कही जाती है । भोजनराजके मतमें गाल, कधकी नम और गलेके आश्रय करके उठनेवाला अण्ड कोप जैसा बढा हुआ शोथ हो गलगण्ड है । वायु, कफ, वा मेट विगड करके गलदेश और मन्वाह्य (कधे की देनों नमें) आश्रय करनेसे क्रमशः गलगण्डरोग लगा करता है ।

गलगण्ड चार प्रकारका है—वातज, श्लेष्मज, कफज और मेटोज । वातज गलगण्ड श्याम वा अरुणवर्ण वेदना युक्त और कडा होता है । वह क्षयवर्ण शिराम्बुद्धमें व्याप्त रहता और कालविनश्यते बढता है । वातज गलगण्ड प्रायः न पकते भी अन्तर् कभी बिना कारण ही पक जाता है । रोगीका मुख फीफा और तालू तथा गला सूखने लगता है । कफज गलगण्ड स्थिर, गुरु, शीतल, अत्यन्त कण्ड तथा अल्प वेदनायुक्त और शरीरके वर्ण जैसा होता है । यह काल पा करके बढता और पकता है । रोगीके सह भीतर मधुर रसयुक्त और बाहर चिकना जैसा रहता, गलेकी नालीमें सर्वदा शब्द हुआ करता और तालू तथा गला कफसे भरा जैसा लगता है ।

मेटोज गलगण्ड चिकना, कौमल, पाण्डु वर्ण, दुग्ध युक्त और कण्ड तथा वेदनाविग्रित होता है । यह कहीं जैसा लम्बा पडता और शरीर दुबला रहनेसे छोटा और मोटा रहनेमें बढा लगता है । रोगीका मुख चिकना उठता और गलेमें हर्मेशा शब्द हुआ करता है । गलगण्डके रोगीको यदि साम लेनिमें बढा कष्ट पडे और अर्ध, स्वरभ्रष्ट या क्षीणता लगे, तो चिकित्सक उसको परित्याग करदे—यह अन्तर्गत होता है । रोगीका शरीर मृदु किंवा स मत्सर अतीत होनेसे भी गलगण्ड अन्तर्गत समझा जाता है । (भावकाम)

गलगण्ड रोगकी चिकित्सा इस प्रकार चलती है । मरनी, महिजना तथा सनका धीच, अलमो, जो और मूलीका धीज उडे मडे के साथ पोम करके पुष्ट टनेमें अहुत पुरानी गण्डमान्ना नष्ट हो जाती है । अंतर्त अथ रासिताकी जडकी पीम करके सर्वत्र घोडे साथ लगा तार गानेमें भी गलगण्ड मिटता है । पक्षी कडकी मोको-

में पानी भर करके सात दिन तक रख छोड़ते हैं। फिर वही जल पीने और हितकर द्रव्य खानेसे भी इस रोगका प्रतीकार होता है। जो, संग, परवल आदि और कटु तथा रुक्ष द्रव्य भोजन, वसन और रक्तमोक्षण गलगण्ड रोगमें हितकारक है। पनी और पीपलके चूर्णमें सन्धव डाल करके प्रतिदिन खानेसे यह रोग कटता है। अमृतादितेल पीनेसे भी गलगण्ड आरोग्य होता है।

सुश्रुतके मतानुसार वायुजन्म गलगण्ड रोग पर सूत्रसंयोगमें त्रिविध प्रकार अन्तरस और उप्य दुग्ध वा तैलके साथ मास वा पलाशी लताके रससे पहले नाड़ी खेट प्रयोग करना चाहिये। पीछे विन्यावित करके नियत खेट देते हैं। इसी प्रकार व्रण सफ होने पर सनका बीज, अलसी, मूली, सहिंजना और सुगर्बीज और प्याजका गूदा सब चीजें तिलोंके साथ उसमें बाध देने चाहिये। नोलका पेड़, गुड़च, सहिंजना, पुनर्गवा आकनाटि, चक्रीड़िया, मदनफल, अगम्य, खैर, तिल और कुड़—सब चीजें शरावके मिरकेमें पिस करके लेप चढ़ानेसे वायुजन्म गलगण्ड रोग नष्ट होता है।

कफसे हुए गण्डमालामें खेट प्रयोग करके नश्वर लगवा देना चाहिये। पीछे अजगन्धा, अतिविपा, गुलेचीन, मेढासींगी, कुष्ठ, गण्डवन् और बुंवची पलाश-चार उष्ण जलके साथ पीस करके प्रयोग करनेसे कफजन्य गलगण्ड रोग टव जाता है।

सिद्धोजन्म गलगण्ड रोगमें विधानके अनुसार शिराओंको विद्ध कर देना चाहिये। श्यामालता, फलईका चना, लोहकी कीट, दन्ती और रसीत—सब चीजोंको मिला करके लेप चढ़ाते हैं। शालवृक्षका सार मूत्रके साथ आलौहित करके पिया जाता है। अथवा नश्वरसे फोड़ा चीर करके भीतरी मवाद निकाल डालना चाहिये। मज्जा, घृत वा रसांको मधुके साथ डाल करके उसमें घृतमधु प्रयोग करते हैं। रोगीका शरीर चिकना रहनेसे ऐसी चिकित्सा करना उचित है। इससे मेटजन्य गलगण्ड रोग निवारित होता है। (सुश्रुत)

भावप्रकाशकारने गण्डमाला नामक किसी प्रकारका रोग निर्णय किया है। किन्तु सुश्रुत प्रभृतिमें उसका

कोई उर्तख देख नहीं पड़ता। सुश्रुतने ग्रन्थि नामक जिस रोगका लक्षण लगाया, भावप्रकाशमें प्रायः उमाको गण्डमाला ठहराया है। प्रविद्ध अभिधानप्रणता हेमचंद्रने गण्डमाला और गलगण्डका एक पर्याय रखा है। तमें स्थलपर कटा जा सकना है, भावप्रकाशके गण्डमाला कोई पत्रक रोग नहीं। वह या तो गलगण्डक अथवा ग्रन्थिरोगके अन्तर्गत आवेगा।

भावप्रकाशमें गण्डमालाके लक्षण आदि यों कहे हैं—
चायकी जड़, मन्था वा कौत्समें रेर वा आवन्ना जैसी गांठ उठनेसे गण्डमाला कहलाती है। यह काल बलस्यसे पकती और दृपित कफ तथा मेट ही उसका कारण है। गण्डमालाकी चिकित्सा गलगण्डकी तरह होती है।

कचनारवृक्ष या वरुण मूलकी छालका काटा बना करके मोठया चूरन और शरत् डालकर पीनेसे बहुत दिनकी गण्डमाला भी शीघ्र आरोग्य होती है। कचनारकी छाल ४ या ८ तोले चायल धुने पानीके साथ पीनेसे गण्डमाला मिटती है। उसमें कचनार और गुग्गुलु भी प्रयोज्य है।

वैद्यजीवनको देखते तैलाकी गुठनोका गूदा, कमीस, लाल चीतकी जड़, गुड, आकनाटिका चीर, मनसाभिजका चीर, सब द्रव्य एकत्र पेपण करके प्रलेप लगानेसे थोड़ी देर बाद ही गण्डमाला टव जाती है।

(देवशेखर)

युरोपीय डाक्टरोंके मतमें गण्डमाला और गलगण्ड दोनों स्वतन्त्र रोग हैं।

गलेकी गांठका मूज जाना ही गण्डमाला (Sero-fula) रोगकी प्रकृत अवस्था है। यह कौनिक रोगमें गिना जाता है। किन्तु शारीरिक दीर्घत्व, रक्ताल्पता आदि कारणोंसे बहुत अवस्थाओंमें गण्डमालारोग उठ खड़ा होता है। युरोपीय चिकित्सक भी गलगण्ड और गण्डमालाको किसी किसी समय एकजातीय जैसा ही रोग समझते हैं। उनके मतमें गण्डमाला रोगकी अवस्थाएं हैं। प्रथम अवस्थामें चोपक ग्रन्थि (Lymphatic gland) तथा त्वक्, दूमरीमें शैफिक झिल्ली (Mucous membrane) अथवा कोषमय पदार्थ (Cellular tissue) और तौसरोमें अस्थि तथा शारो-

रिक्त यन्त्र सकल (फेफडा, ग्वासनालौ, यकृत, झींझा और हृक्क) आक्रान्त होता है। अतिसामान्य कारणसे पहने गलेमें या मूत्र पर क्षत हो करके फिर गर्दनकी गर्दं फन उठती है।

पूर्वकालकी युरोपमें गण्डमाला रोगकी चिकित्सा निराले उपायसे होती थी। वाइविन पढ़नेसे समझ पड़ता है कि याजक लोग सिर्फ छू करके ही उस रोगकी आरोग्य करते थे। ग्लिन, टामीटाव, सिउटोनिगा आदिके ग्रन्थोंमें भी सूर्य द्वारा गण्डमाला आरोग्यकी बात लिखी है। २०० वर्ष पहलिके स्कन्दनाम तथा जर्मन भाषाके दूसरे बहुरसे ग्रन्थोंमें राजस्यर्षसे इस रागके अच्छे हो जानेकी कथा बूट होती है। उन्नीसे चलतो अगरेजेमें इसको राजरोग (King's evil) कहते हैं।

गिशुको गण्डमाला होने पर यदि माता वा पिताका रोग हो तो धात्रो रख करके उसका स्तन्यपान कराना चाहिये। बच्चेके लिये १५१२० वूट काडलिनर आयल महीपकारी है। एलोपैथीके मतमें गण्डमाला रोग पर थोडामा आयोडाइन लगाया जा सकता है और उससे विगेष फल भी मिलता है। किन्तु उसके लगाने बाद यदि मूत्रमें माण्ड्यक देख पड़े, तो फिर व्यवहार करना न चाहिये। ओषध सुनिमें—आयोडाइड अब पोटासियम, १ ग्रंन मिरप फेरी आयोडाइड, १० वूट मिरप जिञ्जवेरिम २० वूट और अनन्तमूल या सालसा का कादा २ ग्राम मिला करके ४से ६ ग्राम तककी मात्रामें दिनमें २।३ बार ग्रहण करना चाहिये। इस रोग के रोगीकी सर्वदा साफ सुथरा रहना, विशुद्ध वायु सेवन करना और हलका तथा बनकर पथ खाना एकांत कर्तव्य है।

गलगर्निका एक घा उभय मूत्रभाग (Lobes) फूल करके स्यायो हो जानेंसे गलगण्डरोग कहलाता है। उनके मतमें पहाडी और सर्द जगहमें यह रोग अधिक उठता है। पुरुषोंकी शपेधा लियेमें यह रोग कुछ अधिक देख पड़ता है। रोगिके अनुसार अरु न होनेसे अनेक समय रोगीका यह रोग लग जाया करता है। डाक्टर पहने उम पर आयोडाइन लगानेकी कहते हैं। समसे कोइ फल न मिलने पर आधचिकित्सा करनेका परामर्श

दिया जाता है। होमिओपाथिके मतमें दिनमें और रातको पहले ३ दिन तक एक एक वूट स्पनजिया और सात दिन पीछे फिर एक एक वूट थोरो सेवन कराना चाहिये। इससे फायदा न पहुचने पर भवेरे प्रति दिन १ वूट आयोडाइन सात दिन व्यवहार करके फिर सात दिन तक खाली जानि देते हैं। इससे भी लाभ न होने पर रातको एक वूट काला हाइड्रिड देना चाहिये। गलगण्डमें चर्णलण्ड निकलनेसे इस रोगकी असाध्य समझना चाहिये।

गलगनाथ—बम्बई प्रदेशके अन्तर्गत धारवार चिकेका एक ग्राम। यह करजगिसे १० कोस उत्तरपूर्व तुडुभद्रा नदीके वामपार्श्व पर अवस्थित है। यहां गर्गेश्वर और हनुमानके मन्दिर हैं। ग्रामके उत्तर बर्दा और तुडुभद्रा नदीके संगमस्थान पर गर्गेश्वरदेवका मन्दिर अवस्थित है मन्दिर कृष्णवर्ण श्रेणाइट पत्थरसे निर्मित है। इसको १ लम्बाई ५३ फीथ और चौडाई प्राय २० हाथकी है और इसकी ऊंचाई चार बड़े बड़े खंभोंके ऊपर रक्षित है। दीवारमें नाना प्रकारकी मूर्तियां खुदी हुई हैं।

गलगल (हि० पु०) एक प्रकारका पत्थो। यह मैना जातिका है। यह सुर्खे लिये काले रंगका हाता है। इसके गर्दन पर दोनो और लालघारियां होती हैं और पृष्ठ अंत वर्षाको होती है, गलगलिया। २ एक प्रकारका अन्त बड़ा नीबू। पकने पर इसका रस बसन्ती रंगसा हो जाता है। इसका स्वाद बहुत अस्व होता है। ३ चर्चोंकी बत्तीका एक खड। यह जहाजमें भ्रमुद्रकी गहराई नापनेवाले शौजारमें सीमेकी एक नलीमें लगा रहता है। ४ एक प्रकारका ममाला जो अन्तको और चुनके तेलकी मिलाकर बनाया जाता है। यह किमो पदार्थकी जोड़ने वा छेद बन्द करनेके काममें आता है।

गलगला (हि० वि०) आइ, भौंगा कुशा। गलगलाना (हि० क्रि०) गीला होना। तर दाना, भोगना। गलगर्नि—बम्बई प्रदेशके बीजापुर जिलान्तर्गत एक गण्ड ग्राम। यह बम्बईसे ६ फास उत्तर कृष्णानदीके तीर पर अवस्थित है। पहले यह प्राचीन दण्डकारण्यके अन्तर्गत था। गानव अष्टवि इस स्थान पर रहते थे। इसलिये यह गानवक्षेत्रमें मगझर है। गलगर्नि ग्राममें पडरीम दक्षिण

पहाड़ पर गालव स्थान और कृष्ण ऋषियोंके आश्रम कह कर गल्ल है। लोग कहा करते हैं कि इस ग्रामके उत्तर लक्ष्मणानदीके गर्भ पर एक मंदिर है और उस जगह नदीके जलमें रुपये पाये जाते हैं। १८७६ ई०की नदीके जल सुखाये जाने पर मन्दिरके ऊपरका भाग प्रकाशित हुआ था जो अंश प्रकाशित हुआ था उसकी लम्बाई तथा चौड़ाई ६० हाथकी होगी। नदीके तीर पर यल्लमादेवीका मन्दिर है। इसके अतिरिक्त गलगलि ग्राममें और चार छोटे छोटे मन्दिर हैं। १६८८ ई०की महाराष्ट्रके साथ लड़ाईके समय मन्नाट औरंजिव अपना सैन्य सामन्त लेकर इसी जगह पर टिके रहे। इटाली देशके पन्नाजक केरो साहबने इस स्थान पर आकर उनसे मुलाकात की थी।

गलगलिया (हि० स्त्री०) सिरोही नामकी एक चिड़िया।

गलगजना (हिं० स्त्री०) खुशीसे गरजना, गालवजाना।

गलगुच्छा (हिं० पु०) गलगुच्छा देवी।

गलगुथना (हिं० वि०) हृष्ट पुष्ट मोटा ताजा, जिसका बदन खूब भरा और गाल फूले हों।

गलगोड़िका (सं० स्त्री०) विषयुक्त जन्तुविशेष, एक विपैला जानवर। इसके कांटनेसे दाह, परिताप, खैट और शोथ हो जाता है।

गलग्रह (सं० पु०) गलं कण्ठदेशं गृह्णाति, ग्रह-अच्। व्यञ्जनविशेष, एक प्रकारकी पकी हुई मछली। २ तिथि-विशेष, एक तिथिका नाम।

“वृषभे चतुर्थी च मत्स्यादि दिनवयम्।
द्वयोदशो चतुश्चद चतविते गलग्रहाः॥”

अर्थात् ज्योतिषके अनुसार कृष्ण पक्षकी चतुर्थी, मत्सी, अठसी, नवमी, द्रयोदशी, अमावस्या, और प्रतिपदा, इन आठ तिथियोंकी गलग्रह कहते हैं। ३ आरम्भके बाद जिसका प्रत्यारम्भ दृष्ट नहीं होता गर्गादि सुनिगण उसकी गलग्रह कहते हैं। ४ कण्ठरोध रोगविशेष। ५ अपरिहाय आपत्ति परित्याग नहीं की जा सकती ऐसा जानकर अनिच्छासे जिसका भार लिया जाता और जिसमें किसी प्रकारका गुण नहीं ही केवल बैठ कर अन्नध्वंस करता ही उसे भी गलग्रह कहते हैं।

गलग्रह (सं० पु०) मकर।

गलगमिया—बङ्गदेशके २४ परगना होकर प्रवाहित एक

नदी। बाँसतला और गुंटिया इन दोनों खालीके मझम स्थान पर गलगमिया नदीकी उत्पत्ति है। उसके बाद दक्षिण-पूर्व दिशा होकर बहती हुई खुलना जिलेके फन्था-णपुर ग्रामके निकट खोल पेटुआ नदीमें आ गिरी है।

गलचा—अफगानिस्तानमें बटकसान प्रदेशकी अधिवासी एक जाति। ऐसा कहा जाता है कि इरानी और हिन्दू जातिसे ‘गलचा’ जातिकी उत्पत्ति है। एक समय गलचाके भिगकी खोपड़ो परीक्षाके लिये फ्रान्सके पेरिस नगरमें भेजी गई थी। वहाँ पर टोपनार्ड साहेबने मन्मक जांच कर आर्थिके मस्तकके जैसा ठहराया। फरामी उज्फ-लवी साहेबने इन्हे गलचा नामसे अभिहित किया है। गलकल (हिं० स्त्री०) मकलीके अंगका एक भाग। यह गलफड़के दोनों और कुर्गे अस्थियोंका बना हुआ है। इस भागके ऊपर लाल सूइयोंकी झालर लगी रहती है। इसीके द्वारा जलमें मिली हुई वायुकी वह भीतर खींच कर सांस लेती है।

गलगजंठड़ा (हिं० पु०) १ मटा साथ रहनेवाला, गलिका हार। २ कूमाल या कपड़ेकी पट्टी। यह धाथकी चोट या घाव पर बांधनेके लिये रखी जाती है।

गलगजोड़ (हिं० स्त्री०) गलगजोड़ देवी।

गलगजोत (हिं० स्त्री०) १ एक बैलको दूसरे बैलके गलेमें लगाकर बांधनेकी रस्सी या पगड़ी, गलगजोड़। २ गलेका हार।

गलगतंग (हिं० वि०) अचेत, बेसुध, बेखुबर।

गलगतंभ (हिं० पु०) ए० मनुष्य जो कोई संतति न छोड़ कर मरा हो। २ ऐसे मनुष्यकी जायदाद जिसे कोई संतति न हो।

गलगत (फा० वि०) १ अशुद्ध, भ्रममूलक। २ असत्य, मिथ्या, भूठ।

गलगतकिया (हिं० पु०) गालीके नीचे रखनेका तकिया।

गलगकुष्ठ (सं० स्त्री०) गलगत् रसादिचरणशीलं कुष्ठम्। रस रक्तादि चरणशील कुष्ठविशेष। एक प्रकारका काढ़ रोग जिससे लहड़ इत्यादि निकलता है।

गलगकुष्ठारिरस (सं० पु०) गलगकुष्ठरोगकी औषध। पारा, गन्धक, ताम्र, लौह, शुगुल, चितामूलगर्भ,

गिलाजतु, कुचिला, और वंच प्रत्येकके चार चार भागको छत और मधुके मास मर्दन कर दो तोला परिमाण प्रति दिन सेवन करनेमें गलतृकुट, 'कलास, वातरक्त, जलो दर और मलवडादि राग नष्ट होने हैं।

गलता (फा० वि०) १ १५० वा।

गलता (अ० पु०) १ एक प्रकारका बहुत चमकीला वस्त्र। इसका ताना और बाना क्रमशः रेगम और सूतके होते हैं। यह सादा धारीदार और भिन्न भिन्न तरहके होते हैं। २ मफानकी कारनिध।

गलताड (हि० पु०) जूपकी धूटो जो भीतरकी और होती है।

गलतान (फा० वि०) लुप्तकता हुआ, चकर भरता हुआ।

गलतो (फा० स्त्री०) १ भून, चूक। २ धोखा।

गलयना (फा० पु०) बकरियोंकी गरदनमें दोनों और कटको हुई बैलिया।

गलयलो (स० स्त्री०) ब दूरीके गालके नीचेकी धँली। इसमें वे खानेकी दस्त भर लेते हैं।

गलदन्तु (स० त्रि०) जिसका अन्तु गल रहा हो जिसका अँसू बह रहा हो।

गलहार (स० स्त्री०) गलेका रास्ता, जहा हो कर अन्न भीतर जाता है।

गलदेश (स० पु०) गल एव देश। गला, घोवा, गरदन।

गलन (स० स्त्री०) गल भाव लुप्त। चरण, गल कर गिरना।

गलनह्रां (हि० पु०) क्षयिणीका एक रोग। इसमें उनके नाखून गल गल कर निकाला करते हैं। (वि०) - अन्न हाथो जिसे गलनह्रां रोग हो।

गलना (अ० क्रिया) १ किमी पदार्थके घनत्वका - नष्ट होना। यह विशेषण किमी द्रव्यके बहुत दिनों तक जल तेजाव आदिमें पड़े रहने, गरमी नगने अथवा किसी और प्रकारके सयोगके कारण हो जाता है। २ बहुत जीर्ण होना, किमी कामके योग्य न रहना। ३ शरीरका दुर्बल होना। ४ बहुत ज्यादा ठण्डके कारण हाथ पैरका ठिठुरना। ५ हृथा या निष्फल होना।

गलनीय (स० स्त्री०) गल अनीय। गलनेके योग्य, सहने लायक।

गलनीका (स० स्त्री०) गलतीति गल-शब्द डीप भूम अर्थार्थ कन। खल्प वारिधानिका, यह वरतन जिससे कम पानी निकलता हो, गडुवा। (कामेश्वर ५००)

गलफडा (हि० पु०) १ जल तृष्णोके पानीमें सांस लेनेका अवयव। यह मस्तकके उभय और होता है। भिन्न भिन्न जल जन्तुओंका गलफडा भिन्न भिन्न थाका रका होता है। मछलीके गलेमें मिरके दोनों और दो अर्धे चन्द्राकार छिद्र होते हैं जिनके मधामें चार चार अर्धे चन्द्राकार कमानिया होती हैं जिन्हें गलकट कहते हैं।

२ गालके दोनों जबड़ेके बोचका मांस।

गलफरा (हि० पु०) गलफडा देखो।

गलफांस (हि० स्त्री०) मालखम्बीका एक कसरत। इस कसरतमें बेतकी गलेसे लपेट कर उसके एक सिरकी छाती परसे ले जा कर अशूटेके नीचे दबाते हैं और सिरके गलेके जोरसे अपने मस्तकको पेट तक धुकाते हैं।

गलफांसी (हि० स्त्री०) १ गलेकी फांसी। २ कष्टदायक वस्तु वा कार्य, जजान।

गलफूट (हि० स्त्री०) बड़बड़ानेकी आदत।

गलफूल (हि० वि०) जिसका गाल फूल गया हो। (पु०) एक रोग जिसमें गलेसे सूजन होती है।

गलफण्ड (हि० पु०) गलेकी गिनटी।

गलवदनी (हि० स्त्री०) एक प्रकारका पहिरावा जो गलेमें पहना जाता है, गुलबन्द।

गलवदरो (हि० स्त्री०) ऐसा बादल जिसके साथ द्वाब पाव गलानेवाला जाड़ा पड़े यह अवस्था प्राय जाड़ेके मौसममें होती है।

गलवल (हि० पु०) कोलाहल, गडबडी, खलबली।

गलवाही (हि० स्त्री०) कण्डालिह्न, प्रेमसे गलेमें बाँह डालना।

गलभद्र (स० पु०) गलस्य कण्ठ स्वरस्य भद्र, ६ तत्। स्वरभद्र, जिसका स्वर ठोक नहीं हो।

गलमदरी (हि० स्त्री०) गलमुद्रा जो गिणजोके पूजन और ग्रयनके समय उन्हें सुग करनेके लिये की जाती है।

२ गाल बजाना, व्यर्थ बकवाट या गप्प करना।

गलमुच्छा (हि० पु०) दोनों गालों परके बटाये हुए बाल। भोग इसमें शीकसे रख लेते हैं।

गन्धसुद्धा (सं० स्त्री०) गन्धमन्त्रो देवी।

गन्धमेखला (सं० स्त्री०) गन्धसप्त मेखला इव । १ कण्ठाम-
रणविशेष, गन्धसूत्र । इसे सूत्रवली भी कहते हैं । २ हार,
माला ।

गन्धरोग (सं० पु०) गन्धजातः रोगः । गन्धदेश जात रोग,
गन्ध व्याधि, गन्धिका एक रोग ।

गन्धवध—उत्तरपश्चिमाञ्चलमें बुलन्दशहर जिलेका एक
नगर । यह बुलन्दशहरसे ६ कोस उत्तर और मेरठसे १४
कोसकी दूरी पर अवस्थित है । अरबों ब्राह्मणोंने मैन्यट
जातिके थोड़े मनुष्योंका यहांको थोड़ी जमीन निष्कर
दान दिया था, किन्तु १८५७ ई०को यहांके अधिकारी-
गण अंगरेजोंके विद्रोही हो गये इस लिये अंगरेज गवर्ने-
मण्टने उनसे वह स्थान ले लिया । यहां आजकल मैन्यका
वास, सरकारी डाक बंगला, डाकघर और थाना है ।
प्रत्येक सप्ताहमें यहां एक बड़ी बाट लगती है ।

गन्धवाना (हिं० प्र० क्रि०) गन्धानेका काम कराना, गन्धा-
नेमें लगाना ।

गन्धविद्रधि (सं० पु०) गन्धरोगभेद, गन्धकी एक प्रकारकी-
बीमारी ।

गन्धरोहिणी (सं० स्त्री०) गन्ध रोहिति रुह-गिनि डीप ।
कण्ठगत रोगविशेष । वायु, पित्त और कफसे गन्धदेश
वर्धित हो कर रक्त और मांस दूषित हो जाते तथा समस्त
अंग पर अद्भुत उत्पन्न होते हैं इसीकी गन्धरोहिणी कहते
हैं । इस रोगमें रोगी शीघ्र ही मर जाता है ।

गन्धलग्न (सं० त्रि०) गन्ध लग्नः । गन्धदेशमें लग्न, गन्ध-
से लिपटना ।

गन्धवस्त्र (सं० त्रि०) जिसने प्रणामादिके लिये अपने गन्ध-
में वस्त्र दिया हो ।

गन्धवार्त (सं० त्रि०) गन्ध गन्धव्यापारि आर्तः निरामयः
समर्थः । यद्येव भोजन योग्य निरामय व्यक्ति, अधिक
भोजन खानेवाला, नौरोग मनुष्य । (पञ्चतन्त्र)

गन्धव्रत (सं० पु०) गन्धे गरणं गिलनं सर्पादिभक्षणं व्रत-
मस्य । मयूर, मोर ।

गन्धशुण्डिका (सं० स्त्री०) खल्पाशुण्डिका-कन् । तालू उध्व-
स्थित सूक्ष्म जिह्वा, तालूके ऊपरकी छोटी जीभ, गन्धिका
कावा । इसका पर्याय—सुधास्रवा, शरिण्डिका, लम्बिका,

रमादा, प्रतिजिह्विका, माध्या और अलिजिह्विका है ।

(भास्करा)

२ तालूगत रोगविशेष । जिमकी जीभा प्रकुपित हो
कर गन्धमें अवस्थित हो जाती है, शीघ्र ही उसके गन्धमें
शीघ्र हो कर गन्धशुण्डिका रोग उत्पन्न हो जाता है ।

(मधुसू १२२ पृ०)

चिकित्सक गण गन्ध हाग शुण्डिकाकी सुगमतामें
काट देते हैं । उसके घट पीपर, मर्गत्र, शरीतकी, वच,
धान्य और यवानिका इन सबोंका काय और गर्म मूट
देते हैं । दिवागत्र मुखमें जवायन रखा जानी है । कंठ-
देश मर्दन करना चाहिये । उसमें रोमी मस्य होता है ।
श्वेत मरमां, वच, कुड़, शरिद्रा, भूल और लवण एकत्र
करके कण्ठ पर लेप देनेमें रोग आगम हो जाता है ।
इस बीमारीमें तेल तथा कड़ुआ पदार्थ सेवन नहीं करना
चाहिये । (शार्ङ्गसंज्ञिक ५४ पृ०)

गन्धशुण्डी (सं० स्त्री०) १ गन्ध शुण्डीव । गन्धशुण्डिका रोग ।

२ जीभके आकारका भासका एक छोटा खंड । यह
प्राणियोंके गलेके भीतर जीभकी जड़के पास रहता है ।
शब्द उच्चारण करनेमें यह बहुत सहायता देता है ।

(भास्करा देवी)

गन्धशोथ (सं० पु०) गन्धिका फूलना ।

गन्धमिरा (हिं० स्त्री०) कंठशोथ नामका एक आभूषण,
यह गन्धमें पहना जाता है ।

गन्धसुधा (हिं० पु०) एक रोग जिसमें गन्धके नीचेका
भाग फूल जाता है ।

गन्धसुई (सं० स्त्री०) एक छोटा, गोल और कोमल
तकिया, जो गन्धके नीचे रखा जाता है ।

गन्धस्तन (सं० पु०) १ गन्धगण्ड रोग । २ वकरके दोनों
ओर लटकती हुई स्तनाकार पतली थैली, गन्धयन ।

गन्धस्तनौ (सं० स्त्री०) गन्धे स्तनोऽस्या पक्षे अलुक् ।
वकारियोंकी एक जाति ।

गन्धस्त्र (हिं० पु०) एक प्राचीन कालका वाजा, जो
मुखसे फूंक कर बजाया जाता था ।

गन्धहंड (हिं० पु०) गन्धिका रोग । इसमें गन्ध फूल
जाता है, घेघा ।

गन्धहस्त (सं० पु०) गन्धे न्यस्ती हस्तः । गन्ध पर हाथ
देकर अलग कर देना, गन्धका । (भास्करा)

गलहस्तित (स० द्वि०) जिसके गले पर हाथ-टिया गया हो। (०५५१५५)

गलही (हि० स्त्री०) नाइका वह अगला और उपरका भाग, जहाँ उसके दीर्घ पात्र आकर समाप्त होते हैं।

गला १ स० स्त्री०) गलतीति गल-अच् टाप । १ अलम्बुष्या, लज्जासुलता । २ गरीरका वह अवयव जो सिरकी धड़-से जोड़ता है, गलदेग।

गलाऊ (हि० वि०) जो गलता हो, गलनेवाला।

गलाइर (स० पु०) गलजात अद्भुर । गलदेशजात मांसाइर विग्रह। एक प्रकारका गलेका रोग जिसमें गल फूल जाता है।

गलाध करण (स० स्त्री०) निगलनेकी क्रिया।

गलाना (हि० क्रि०) किमो वस्तुके मयोजक अणुधुंकी पृथक् पृथक् करके उसे नरम गाला करना।

गलानि (हि० स्त्री०) दुःख वा पयात्तापके कारण खिन्नता। २ खेद, दुःख।

गलानिक (स० पु०) गले अलिकी प्राणी यस्य । भींगा, एक प्रकारकी मछली।

गलानिन (स० पु०) गले अनिन। प्राणवायु, प्राण। २ मस्त्रमेद, एक प्रकारकी मछली।

गलायुक (स० पु०) गलरोगमेद। एक प्रकारकी गलेकी बीमारी।

गलार (हि० पु०) एक पंडका नाम।

गलारी (हि० स्त्री०) गलगिनिया नामकी चिडिया।

गलावट (हि० स्त्री०) १ गलनेका भाव या क्रिया। २ वह वस्तु जो दूसरी वस्तुकी गलावे सोहागा नीमादर भाटि।

गलाविल (स० पु०) गलानिक मछली।

गलावृद (स० स्त्री०) एक प्रकारकी बीमारी जो मदा गलेमें दुःखा करती है।

गलि (स० पु०) गिरति अममलत्वे भ्रमयतीति गल इन् । वह वैल जो सामर्थ्य होने पर भी बोझ खींच न सके, दुष्ट या मंदर बल। २ अल्प परिमर पथ वह रास्ता जिसमें शीघ्र पशु या जाय।

गलिन (स० द्वि०) गल-ऊ । १ पतित, नीतिभ्रष्ट, महा पापी। इसका पर्याय—स्वप्न, ध्वस्त, भ्रष्ट, रक्त और प्लुत है। २ श्रयोभूत, गला दुःखा।

गलितकुठ (स० स्त्री०) गलित कुठम्, कर्मधा० । गलित कुठ रोग, इसमें गरीरके सब अंग मडने और कटकट कर गिरने लगते हैं तथा उसमें कीड़े पड़ जाते हैं।

गलितकुठ रोग।

गलितदन्त (स० द्वि०) जिसे दांत न हो।

गलितर्योवना (स० स्त्री०) वह स्त्री जिसका यौवन टल गया हो, टलती जवानीकी स्त्री।

गलिया (हि० स्त्री०) चक्रीके छेद जिसमें पोसनेके लिये दाना डाला जाता है। (हि० वि०) मंदर, सुन्दर। यह सिर्फ वैल आदि चौपायोंके लिये खाता है।

गलियारा (हि० पु०) स कीर्ण राह, तग छोटी गली।

गलियारा—रगरेजकी एक जाति। ये अहमदाबाद और सुरतमें पाये जाते हैं। ये बहुत छोटे छोटे घरमें रहते हैं, और कपड़के रंगाकर अपनी जोविका निर्बाध करते हैं। स्त्रियां भी मर्दकी वस्त्र रगनेमें मदायता पशु खाती हैं। इनमेंसे बहुत धाड़े अपने नठकेकी पदाते हैं।

गलियारी (हि० स्त्री०) मार्ग, गली।

गली (स० स्त्री०) दो घरोंको पत्तियोंके बीचसे हो कर गया हुआ तग रास्ता, खोरी।

गलीचा (फा० पु०) एक प्रकारका चिड्डीना। यह बहुत मोटा पार भिन्न भिन्न रङ्गों का बना रहता है। इसमें घने घालीकी तरह सूत निकलने रहते हैं।

गलोज (अ० वि०) १ ग दला, मैला। २ अशुद्ध, अपवित्र, नापाक।

गलीत (अ० वि०) स दा, मैला, कुष्ठेला।

गलु (स० पु०) गल-उन् । भणियिशेष, एक प्रकारका रस।

गलु (स० पु०) एक प्रकारका पत्थर, जिसमें प्राचीन कालमें मर्दोंके घरतन बनाये जाते थे।

गलन (स० पु०) काश्मीरके एक राजसभ्ये।

(राजतरङ्गिणी ११७१ १००)

गलेगण्ड (स० पु०) गलेगण्ड इवाक्य। पक्षिविशेष, जडगिर।

गलेचोपक (स० द्वि०) गले चुपाने, मो चुप कर्मणि चुपन्, चुपक समाम। कण्ट-कल/नोय, काटनेके योग्य गला।

गल्प (हि० पु०) किलाफ देका ।

गल्पवाज (हि० वि०) अच्छा गनिवाला ।

गल्पस्तनी (सं० स्त्री०) छागी, बकरी । गल्पनी देका ।

गल्पेचा (हि० पु०) गलीचा देका ।

गलोअ (सं० स्त्री०) गलेन लोअं, पृषोदरादित्वात् ललोपि साधुः । धान्यविशेष, एक प्रकारका धान ।

गलोदेश (सं० पु०) गलस्य उद्देशः समीपम् । गलिके निकट स्थित अक्षयविशेष, गलिके पासका एक अंश ।

गलोद्धव (सं० पु०) गले अश्वगलदेशे उद्धवति उद् भू-कतं रि अच् । अश्वगलदेशजात गोचसान नामक रोसा-वर्त विशेष, घोडेके गलिका बालकुल ।

गलोन (हि० पु०) एक प्रकारका सुरमा जो काबुल और कंधारसे आता है ।

गली (सं० पु०) चन्द्रमा ।

गलीआ (हि० पु०) बंदरोके गालीके भीतरकी यैली, जिसमें वे खानिकी वस्तु भर लेते हैं ।

गलीघ (सं० पु०) गली उघ डव । रोगविशेष । कफ और रक्तके प्रजोपसे गालमें एक प्रकारकी सूजन हो जाती है । इसमें बहुत जलन होती तथा खांस लेनेमें कठिनता पड़ती है ।

गल्दा (सं० स्त्री०) गल-क्लिप् गलेन दीयते दा-क । १ चाक्य । २ निःसृत । (ऋक् ११।१०) ३ धमनीविशेष, शरीरके भीतरकी एक प्रकारकी नली ।

गल्प (हि० स्त्री०) १ मिथ्या प्रवाद । २ डींग, शिखी । ३ सद्वक्त्रके वारह प्रवर्णोंसे एक । ४ छोटी छोटी कहानियां ।

गल्प (सं० वि०) गल्प-अच् । १ सङ्कोचशून्य, निर्भय । २ गर्वकारी, अहङ्कार करनेवाला ।

गल्या (सं० स्त्री०) गल्पानां कण्ठानां समूहः । गल्पसमूह ।

गल्प (सं० पु०) गल्प-ल । कपोल, गाल ।

गल्पई (हि० वि०) गल्पके रूपमें । (पु०) वह खेत जिसका लगान लिया जाता हो, बटाई ।

गल्पक (सं० पु०) गल्प स्वार्थे कन् । १ कपोल, गाल । २ मद्यपानपात्र । शराव पीनेका प्याला । ३ इन्द्र-नील मणि, मरकतमणि, नीलम ।

गल्पचातुरी (सं० स्त्री०) गल्पे चातुरी यस्याः । उपधान-विशेष, तकिया ।

गल्पदासार—मारवाड़ प्रदेशमें रहनेवाली एक जाति । यह लोग देखनेमें काले और लम्बे होते हैं । इनकी आंखें छोटी, नाक उठी हुई, हाँठ पतले, कनपटी नीची, शिरके बाल बारीक और टाढ़ी घनी रहती है । इन्हें पकाना तो ठीक मालूम नहीं, परन्तु खाना खूब जानते हैं । रोटो, तरकारी और दही इनका प्रधान आहार है । यह मांस ग्रहण नहीं करते । इनके पैरमें खुड़ाज, मथ्ये पर पगड़ी, कमरमें धोती और शरीरमें जामा रहता है । स्त्रियां सांडी और अंगिया पहनती हैं । सभी गल्पदासार शान्त और परिश्रमी होते हैं । खेती इनका बड़ा सहारा है । ल्योहारको कोड़ करके दूसरे दिन यह सबेरेसे शाम तक मैदानमें काम किया करते हैं । घरकी स्त्रियां और लड़के भी हार बाहर जा करके पुरुषोंकी काममें सहायता देते हैं । तिरूपतिके हनुमान्जी और व्यङ्गटरमण इनके उपास्य देवता हैं । कभी कभी यज्ञमा और दुर्गा देवताकी भी पूजा होती है । जादूटोने पर इन्हें बड़ा विश्वास है । किमीको पीड़ा होनेसे ओभा जा करके रोगकी व्यवस्था करते हैं । सन्तान भूमिष्ठ होने पर नाड़ी काट फूलकी मट्टीके बर्तनमें रख करके साफ जगह पर मट्टीके भीतर गाड़ देते हैं । फिर पांचवें दिनको जीवती देवोकी पूजा तथा ज्ञातिभोज और बारहवें दिनको नवजात शिशुका नामकरण होता है । विवाहके दिन वर और कन्या दोनोंकी तेल और हलदी लगा करके नहाना पड़ता है । इसके बाद दोनों जब एक वेदी पर बैठते, ग्रामस्थ देवज्ञ मन्त्र पाठ करके धान्यसे आशीर्वाद करते हैं । फिर सबको पान सुपारी वाँटते और अन्तमें आत्मीय कुटुम्बकी खिलाते पिलाते हैं । इन लोगोंमें विधवा-विवाह और बहुविवाह चलता है । समाजशासन गल्पदासारीमें बहुत प्रबल है । यह लड़कोंको स्कूलमें पढ़ने नहीं भेजते । गल्पदासार धीरे धीरे मिट रहे हैं । यह कणाटी भाषामें बातचीत करते हैं । इनमें अण्णो विभाग नहीं है ।

गल्पा (हि० पु०) १ शीर, हीरा शब्द । (फा० पु०) २ कुंड, दल । (अ० पु०) ३ उपज, फसल, पैदावार । ४ अन्न, अन्नाज ।

गल्पाफरोश (फा० पु०) अनाजका व्यापारी ।

गल्लिका (स० स्त्री०) गल्लक टापु अत इत्वम् । गाल, कपोल ।

गल्लिर (स० पु०) एक प्रकारका रोग ।

गल्लिक (स० पु०) गल्लुर्गणिभेदस्त्रमर्वाको दीर्घर्यमर ।

१ चयक, मदिरा पोनेका प्याला । २ सारविशिष्ट मणि ।

३ पटमराग मणि, लाल नामका रत्न ।

गव (हि० पु०) एक बन्दरका नाम जो रामचन्द्र जीकी सेनामें था ।

गवची (स० स्त्री०) गां भूमिमन्त्रति, गो-अनच्-क्तिप् ।

इन्द्रवाशुकी, इन्द्रायण ।

गवत्र (स० स्त्री०) गा व्राति इति त्रै ड । गोभल्य पयाल खड ।

गवन्दो—दाक्षिणात्यवासो एक जाति । साधारणतः क्षुप्यर छाना और राजगरो करना छे इन लोगोका पेशा है । वीजापुर जिले और उसके इलाकेके बागवाडी उपविभागमें इनकी रहायस ज्यादा है । यह कानाडीकी टूटी फूटी गवारु बीनीमें बाल चीत करते, परन्तु काम पढने पर हिन्दी और मराठी भी बोल लेते हैं । गवन्दो देखनेमें बिलकुल कुन्वियों जैसे समझ पडते, केवल देखनेमें कुछ ज्यादा काले और लम्बे लगते हैं । इनमें किसी प्रकारका श्रेणीविभाग वा गोत्र श्रथवा कुलकी विभिन्नता नहीं । परन्तु परम्पर एक उपाधिधारी होनेसे पर और कन्याका विवाह रुक जाता है ।

यह पत्यर और मट्टीसे रहनेके लायक घर बना लेते हैं । खड पतवारया चैनी ही किसी चीजसे घरको छत छाये जाती है । अपने कामके लिये गाय बकरी आदि जन्तु और कुत्ते पालते और अपने आप उनका प्रतिपालन किया करते हैं । कोई काम काज करानेके लिये यह नौकर नहीं रखते । दाल, रोटी और भाजो इनका साधारण खाद्य है । पार्वणादिको अन्नपात्र करके खाया जाता है । भेड, हिरन, खरगोश, हंस, मुर्गा आदि पालतू चिडिया और मकली इनकी प्यारी चीज है, दूसरे मांसको यह अपवित्र और अस्वाद्य समझ करके नहीं छूते । मगा पीनेका दूधे कुछ ज्यादा शौक है । त्योहारके दिन शराब बहुत पी जाती है । मद्यके कारण प्राय सभी शृणु प्रसू रहते हैं । गवन्दियोंका पहनावा सीधामादा और

साफ सुथरा होता है । स्त्रीपुरुष दोनों बानों और हाथों में गहने पहनते हैं । स्त्रियोंको लाल और काला कपड़ा कुछ ज्यादा अच्छा लगता है ।

सभी गवन्दो आश्राकारी, आतिथ्य, कर्मठ, मितव्ययी और नम्र हैं । परन्तु वह मैने कुचले रहते हैं । पहने यह नमक बना करके बेचते थे, परन्तु उक्त व्यवसाय आजकल बन्द हो जानेसे मजदूरी और खेती करके जीविका निर्वाह करते हैं । इनमें स्त्री, पुरुष, बालक—कोई श्रवस्थाके अनुमार यथासाध्य जीविकाके लिये चेष्टा करनेसे नहीं चूकता ।

गवन्दो बहुत धर्मभीरु होते हैं । देवहिजमें इनको बडो भक्ति रहती है यह ब्राह्मणोंसे मुहूर्त पूछ करके शय्य कर्तन, गर्भाधान, विवाह आदि शुभकर्म करते और ब्राह्मणकी उसमें नियुक्त रखते हैं । 'श्रोठम्' नामक निम्नव्यथीके तैलद्वो ब्राह्मण हो इनके पुरोहित हैं । हनुमन्तेव, तुलजा भवानी, व्यङ्कटरमण और यक्षमा देवीको कुलदेवता जैसा पूजते हैं । आर्कट नगरके उत्तर वेङ्कटगिरि और निजाम राज्यके अन्तर्गत तुलजापुरको इनकी तीर्थयात्रा होती है । आश्विन मासमें दशहरको तुलजाभवानी देवीके प्रोत्थर्य भेड बलि दिया करते हैं । यक्षमा देवीके पूजा समय निमन्वित आतिकी खिलाया जाता है । देवमूर्ति या प्राय मनुष्य, ह्य और धानरके आकारकी बनती है ।

गवन्दो लोग सर्वेरे नहा धो करके गृहदेवताकी पूजा करते हैं । जिनके गृहदेवता नहीं, वे माकृतिके मन्दिरमें आङ्गिक समापन किये बिना जल ग्रहण करनेसे विरत रहते हैं । पर्व आदिकी ययारोति उपवास प्रभृति किया जाता है । श्रोठम् ब्राह्मण परम्परानुसार दीक्षा देते हैं । इनके शुरूको ताताचार्य कहते, जो एक मात्र धर्मापदेष्टा रहते हैं । उनके भरणपोषणको मन्त्रसे चन्दा लिया जाता है । गवन्दो ग्राम्य देवता या किमी उपदेवताको नहीं पूजते ।

भूचपेत, साइन, सुडेल और भयित्यत् वाक्चर्म इन्हे बडा विघ्नदास है । भीषधमे रोग शान्ति न होने पर शोभा या करके भण्ड फूट करते हैं । इससे मृतकी खाना कपड़ा देने पर यह छतर जाता है । किसी रोगीको देवता

विशेषके सामने लिटा देनेसे ही सम्भते हैं कि भूत उसको छोड़ जावेगा। इनको विश्वास है कि ओम्हा मन्त्रसे लोगोंको मार तक मकते हैं।

सन्तान भूमिष्ठ होने पर गवन्दी नवजात शिशु और प्रसूतिको नहलाते और चारपाई पर लेटा करके गर्मी पहुंचानेको उसके नीचे कण्डेकी आग सुलगते हैं। फिर प्रसूतिको गरौ और गुड़ खिलाया जाता है। सन्तान प्रसूत होनेसे आध घण्टे पीछे माताको चावल और मक्खन देते और पांच दिन तक बराबर वैना हो किया करते हैं। पांचवीं रातको धात्री या करके जीवतीकी पूजा करती और नैवेद्य आदि अपने आप ग्रहण करके उमीके साथ एक प्रदीप टांक करके चल देती है। इनको विश्वास है कि उक्त दीपकको किसोके देख लेनेसे पुत्र और प्रसूतिको पीड़ा होती है। बारहवें या तेरहवें दिन बच्चेका नाम रखा जाता है। इसी दिनको प्रसूति शुचि होती है।

विवाहसे पहले फलदानके समय वरकर्ता कन्याको पान, सुपारी, नारियल, शकर और कपड़ा पहुंचाते हैं। एक नारिकेल कन्याको कुलदेवताके सामने रखना पड़ता है। कन्या यही कपड़े पहन करके एक कम्बल पर आ बैठती है। फिर वरकर्ता अपने आप वंधूमाताके कपाल पर सिन्दूर चढ़ाते और उसके मुखमें शकर छुआते हैं। गणकके विवाहका दिन स्थिर करने पर कन्याकर्ता वरको आदमी और सवारी भेज करके बुलाते और उसके आ जाने पर वरकन्या दोनोंको हलदी लगा करके नहलाते हैं। स्नानके स्थान पर जलपूर्ण ४ कलस रख करके चारो ओर सूतसे लपेट देते हैं। एक अविवाहित व्यक्ति चारों कलसोंसे एक एक करके जल निकाल दम्पतीके मस्तक पर छिड़कता है। स्नानके पीछे कन्या पचिया पहनती है। सम्प्रदानके समय वर किसी टोकरी पर खुड़ा होता है। पुरोहित उसी समय धान्यसे उसको आशीर्वाद देता और कन्याके गलेमें मङ्गलसूत्र बांधता है। कन्याका पुष्पोत्सव होनेसे गर्भाधान संस्कार किया जाता है।

गवन्दी सृष्ट्यके पीछे शवदाह करते हैं। तीसरे दिनको दाह स्थान पर पहुंच करके मृतके लिये पिण्डदान किया और पानीमें फेंक दिया जाता है।

गवन्दियोंमें विधवाविवाह और बहुविवाह चलता है। मारवाड़के गवन्दी अपनेको 'मारचक्रवर्ती' बतलाते हैं। इनका कोई गोत्र वा उपाधि नहीं। फिर भी बट-गुम, दन्नानापुर, कन्नानापुर, मिनामधारी और पाकुतरा पांच अंगी विभाग विद्यमान हैं। यह बीजापुरके गवन्दियोंसे अधिक मैले कुचैले और उदाचार होते हैं। इनमें कोई मृतदेहकी जलाता और कोई समाधि लगाता है। यह पुत्रादिके जन्म, ऋतुकाल और मृत्युको यथाक्रम १०, ४ और १० दिन अशौच ग्रहण करते हैं।

गवय (सं० पु०) गोजातिका एक पशु। इसके गनेमें भालर नहीं होता है, नीलगाय। इसका नामान्तर गजा-गुका, वनगो, बलभद्र और महागन्ध है। इसका मांस कर्कश और पुष्टिभर होता है।

२ रामचन्द्रजीकी सेनाका एक बन्दर। यह वैवस्वत हनुमानका पुत्र था। ३ एक छन्दका नाम। इसके प्रथम चरणमें १८ मात्राएँ होती हैं और ११ मात्राओंपर विराम होता है। दूसरे चरणमें दोहा होता है।

गवयी (सं० स्त्री०) गवय-जाती डीप। गवयस्त्री, नीलगाय। इसका पर्याय वन धनु, और गिल्लीगवी है।

गवर्नमेरु (अ०) १ राज्य, शासनपद्धति। २ शासक-मण्डल।

गवर्नर (अ०) १ शासक, हाकीम। २ किसी प्रांतका राजा वा प्रजासे चुना हुआ हाकिम। ३ वह प्रधान शासक जो देशमें शासन करनेके लिये राजा वा मंत्रि-मंडलसे नियुक्त किये गये हों। ४ भारतमें किसी प्रेसिडेन्सके प्रधान हाकिम जो गवर्नर-जनरलके अधीन रहते हैं। यह इङ्गलैंडके बादशाहका मन्त्रिमण्डल द्वारा नियत किये जाते हैं। भारतवर्षमें बम्बई, मद्रास, युक्तप्रदेश, आसाम, ब्रह्मा और बंगालमें गवर्नर रहते हैं। लाट।

गवरीदाद—बम्बई प्रदेशके काठियावाड़का एक छोटा राज्य। भूपरिमाण २७ वर्गमील तथा लोकसंख्या लगभग दो हजार है। राज्यकी आय २४१२६ रुपयेकी है। १६२१ रुपये ब्रिटिश सरकार और जूनागढ़की कर देना पड़ता है।

गवर्नर जनरल (अ० पु०) राजा या मन्त्रिमण्डल द्वारा

नियुक्त किया हुआ सबसे बड़ा हाकिम । इनके अधीन कई एक गवर्नर और लफ़्टेंट गवर्नर रहते हैं । इङ्गलैंड-के बादशाह गवर्नरीको नियुक्ति स्वयं करते हैं । पर लफ़्टेंट गवर्नर गवर्नर-जनरलसे नियुक्त होते हैं । गवर्नर जनरल एक कैबिनेट का मंत्रिमंडल द्वारा शासन करते हैं, वाइसराय, बड़े लाट ।

गवर्नरी (अ० स्त्री०) १ घड़ प्रांत जहाँ पर गवर्नर शासन करता हो, प्रेसिडेन्सी । २ शासन, अधिकार ।

गवराज (स० पु०) गवने शब्देन राजते राज अच । ह्यप, बैल, मोट ।

गवल (स० पु०) गव शब्द लाति ला क । वनमहिय, जङ्गली भैंसा, अरला । (१४३१०० - १५११९)

गवल (स० स्त्री०) गव ला क । महियपङ्क, भैंसेका सींग ।

गवलगण (स० पु०) सञ्चयके पता ।

' १४३१०० महियपङ्क अथे ग भोगमन्त्रणात् ।' भाग १ (१५०)

गवली (स० पु०) महिय, भैंसा ।

गवहियाँ (हि० पु०) अतिथि, मेहमान ।

गवाच (स० पु०) गवामचोर । यहा गाव मूयकरा जलानि धा अञ्जुवन्ति व्याप्र वन्तीति अननेति । अच घञ् । १ घातायन, भूरोडा, छोटी खिडकी । इसका पयाय बधु-ह्ययन, जाल और जालक है । (१४३१)

२ शानरविशेष, वैषस्वतमनुका पुत्र, राम रावण युद्धमें यह रामचन्द्रभक्ति सेनापतिके पद पर नियुक्त किया गया था ।

गवाक्षिका (स० स्त्री०) अपराजिता ।

गवाक्षित (स० त्रि०) प्रणयन किया हुआ, रचना किया हुआ ।

गवाची (स० पु०) गा भूमि अञ्छोति अच घण् गौरा दिवात् डीप् । १ गोडूआ, एक प्रकारकी ककडी या तरबुज । २ इन्द्रधारणी, इन्द्रायण । इसका पर्याय— ऐन्द्री, इन्द्रधारणी, चित्ता, गवाची, गजचिर्भटा, मृगेशांक, पिटदोटी, धिगाला और मृगादनो है । ३ शाखोटहण, सहोराण घेड । ४ अपराजिता । (१४३१००)

गवाची (स० स्त्री०) गवि भूसो अक्षताति । अन्ध क्तिप् डीप् । (१४३१०० - १५११९) इति अथेड ।

मत्स्यविशेष, एक प्रकारकी मछली । यह अजोर्णकारक, गुरु, झोपाका प्रकीपकर है ।

गगदन (स० स्त्री०) गोभिरयति अद् कर्मणि न्युट अथय । हण, घाम ।

गगादनी (स० स्त्री०) गवादन गौरादिवात् डीप् । १ इन्द्र-वारुणी, इन्द्रायण । २ नील अपराजिता । ३ एक तरहका वरतन ।

गवादि (स० पु०) पाणिनीका एक गण । गो, हविस्, अचर, विप, वर्हिम्, अटका, सखदा, युग, मेधा, स्तुच, कृप, खद, टर, खर, असुर, अध्वन वेद, धोज और दीप्त, इन सभीको गंधादि कहते हैं ।

गवाक्षिका (स० स्त्री०) गवा 'जरुणैश्च अक्षिकायति कै क टाप् । लाचा, लाह, लाप ।

गवान्त (स० स्त्री०) गवि गोविपये अन्तम् । गोविपय-में मियाकयन, गौके नारमें भूठ बोलना । (अति)

गवान महम्मूद—दक्षिणापथके बहमानी राजाओंके एक मन्त्री । १४६१ ई० ३ सितम्बरकी नवाब हुमायूँके मरने पर उनके अष्टमवर्षीय पुत्र निजामशाह राजपद पर अभिषिक्त हुए । उनकी मने इनकी विश्वस्त और विचक्षण देख करके मन्त्री बना लिया । १४६३ ई०की निजामशाहके मर जाने पर उनके भाई मुहम्मद राजा हुए । उन्होंने भो गवानकी ही मन्त्री बनाया था । १४८१ ई०की निजाम-उल मुल्क भैरो नामक किसी व्यक्तिने चक्रान्त करके राजासे उनके विश्वासघातक-जैसा बत लाया और राजासे भी विश्वास करके उनके प्राणवधका आदेश दिया इन्हींके मृत्युसे बहमानी राज्यका अर्ध-पतन होने लगा ।

गवामयन (स० स्त्री०) दग्गमम वा हादग्ग माममें साध्य एक यज्ञ । ताण्डयनाह्वणमें इसका विषय ऐसा लिखा हुआ है—पूर्वकालकी कई एक वन्य परधोने मिल करके स घत्सुर पर्यन्त किसी यज्ञका अनुष्ठान किया था । फिर दूमरीके भी अनुष्ठान करनेसे इस यज्ञका नाम गव मयन पड गया । वन्य परधका साधारण नाम गो है । जो यज्ञ करने लगे, दग्गमम पर्यन्त अनुष्ठान होने पर उनमें कुछ घोषार्थके सींग निकल पडे । उन्होंने परधपर चहना पारध किया कि यज्ञके फलमें यह सम्यग्गानी वने पार

उनको शृङ्ग भी उठे थे। उससे यज्ञकी जोड़े आवश्यकता न रहो, उसके समापन करनीकी सम्मति हुई। उनके १० मासमें फल लाभ करनेसे ही यह यज्ञ दश मास साध्य हुआ है। (ताण्ड्यब्राह्मण ४।१।१) यज्ञ करनेवाले पशुओंमें जो फल लाभ कर न सके, कहने लगे—हम लोग संवत्सरके अवशिष्ट और दो मास अनुष्ठान करके प्रारब्ध यागका समापन करेंगे। संवत्सर यज्ञका अनुष्ठान करनेसे उनको भी शृङ्ग उठे थे। किमीके मतमें शृङ्ग आनेके बाद अथवासे यज्ञ करने पर फिर गिर पड़े। यज्ञके फलसे उन भवको ऋतुसुलभ आन्तरीय द्रव्य मिला था। मानूम पड़ता है कि उमी समयसे उनके घास खानेकी व्यवस्था हुई। इसीसे शृङ्गहीन पशु सभी ऋतुओंमें दृष्टपुष्ट रहते और विचरण किया करते हैं। किन्तु शृङ्गयुक्त महिष प्रभृति पशु शीत तथा धूपके प्राबल्यसे क्षय पड़ जाते हैं। (ताण्ड्यब्राह्मण ४।१।०) उनके द्वादश मास अनुष्ठान करके फल पानसे यह यज्ञ द्वादश मास साध्य हुआ है। भाष्यकारके मतमें—ज्योतिष्टोम तथा दशपूर्णमामादि यज्ञके विधान स्थलमें किसी प्रकारके फलका उल्लेख न रहते भी जिस प्रकार स्वर्ग मिला करता, वैसेही गवामयनमें भी किसी फलका उल्लेख न रहनेसे स्वर्ग लाभ ही फल ठहरता है। किन्तु इसके पीछे मसृद्धिप्राप्तिकी कथा रहनेसे इस यज्ञका फल स्वर्गलाभ नहीं, मसृद्धिप्राप्ति ही है। तैत्तिरीयक ब्राह्मणमें गवामयन यागका फल मृष्ट अक्षरोंमें मसृद्धि लाभ लिखा हुआ है।

द्वैतासीय शुक्लपक्षकी एकादशी तिथिमें इस यज्ञकी दीक्षा लेनी पड़ती है। चैत्रमास संवत्सरके चतुर्थांश जैसा सर्वप्रथम अवयव है इसलिये उसीमें यज्ञकी दीक्षाका प्रधान बंधा है। सभी यज्ञोंमें १२ दीक्षाएं होती हैं। शुक्लपक्षकी एकादशीको प्रथम दीक्षा होनेसे क्षणपक्षीय स्वर्गमें पर्यन्त द्वादश रात्रियोंमें बारहो दीक्षाएं पूरी पड़ जाती हैं। क्षणपक्षकी अष्टमीको एकादशका कहते हैं उसमें राजक्रोध हो सकता है। उसदिनकी प्रातःकाल ही प्रायणीय प्रभृति यज्ञके अवयवोंका अनुष्ठान करना पड़ता है। सिवा इसके दूसरा भी फल है शुक्लपक्षीय एकादशको दीक्षा फलनेसे सोमयाग पूर्वपक्षमें ही समाप्त हो जाता है। फिर सभी यज्ञोंमें दीक्षाके पीछे द्वादश

अनुष्ठेय उपसद् रहते हैं। ऐसे स्थल पर द्वादश दीक्षायांके पीछे क्षणपक्षीय अष्टमीमें शुक्लपक्षकी चतुर्थी तक १२ दिनमें द्वादश उपसद् गेप हो जाते और शुक्लपक्षीय पञ्चमीको प्रथम अतिरात्रका अनुष्ठान लगता है। इस प्रकारसे ३० दिनकी पूर्वपक्षमें ही मास समाप्त होता है। यथाविधान द्वादश मास पर्यन्त याग करके क्षणपक्षमें ही उसको समापन करते और यज्ञस्थलमें उठते हैं। इसके पीछे यज्ञमानका पशु धान्य आदि घटने लगता और उसका वाक्य भी कल्याणजनक निकलता है। गवामयन यज्ञके फलमें अल्पकालमें ही यज्ञकारो विपुल मसृद्धिप्राप्ति ही जाता है। (ताण्ड्यब्राह्मण ४।१।४)

गवांना (हि० क०) नष्ट करना, खोना।

गवामृत (सं० क्ली०) गौरमृतमिव अवडादेगः। गौदुग्ध, गायका दूध।

गवाम्पति (सं० पु०) गवां पतिः अणुकममामः। वृषभ, मांडू, बैल।

‘सिंहनेत्र गवामपतिम्।’ (भारत १।१६ क०)

२ गोपालक, ग्वाला। ३ गोस्वामी, गौके मालिक।

४ रुद्र। ५ किरणपत, सूर्य और अग्नि प्रभृति।

(भारत ४।२२० क०)

गवार (फा० पु०) १ जो सुसलमान जातिके नहीं हो, साधारणतः अग्नि उपासक पारसी जाति। २ पहले काबुलप्रान्तमें गवार नामकी एक जाति रहती थी। वावरके समयमें उसकी प्रमाणगवार कहलाती थी यह जाति अब कहीं नहीं देखी जाती है।

गवारा (फा० वि०) १ मनभाता, अनुकूल, पसंद। २ मन्त्र, अंगीकार।

गवालीक (सं० पु०) जैन शास्त्रानुसार वह मिथ्याभाषण जो गो आदि चौपायोंके लिये किया जाय।

गवालूक (सं० पु०) गवाय शब्दाय अलति अल-वाहुल-कात् उकञ्च। गवय, बैल इत्यादि।

गवाविक (सं० क्ली०) गौश्र अविद्य। (गवात्रप्रभृतीनि १ प २ ४।११) दशः समाहारः। गोमिषका समाहार, मवेशी और भेड़ाका झुंड।

गवाशन (सं० पु०) गामश्चाति अश भोजने ल्यु। गोभक्षक, मूची, चमार।

गवाशिरा (स० त्रि०) गोभि क्षीरै उदकैर्वा आशिर मिश्रित । क्षीरमिश्रित वा उदक मिश्रित, दूध वा पानी मिश्रा हुआ । (अथ १११२०१)

गवाश्व (स० स्त्री०) गोश्व अश्वश्च तयो समाहार अश्वडा देश । गो अश्वका समाहार, गाय और घोड़ेका समूह । गवाश्वार्दि (स० स्त्री०) पाणिनीय गणपाठोक्त समाहार-हन्धनिमित्तक शब्दसमूह । यथा—गवाश्व, गवाश्विक, गवैडक, अजाश्विक, अजैडक, कुक्षवामन, कुक्षकिरात, पुत्रयौत्र, श्वचण्डान, खोक्तुमार, दासीमाणश्वक, शाटीपटीर, शाटीप्रच्छद, शाटीपट्टि, उद्वखर, उद्वशय, सूत्रपूरीप, यक्षन्वेद, मामशोणित, दम्भर, दर्भपृतीक, अजुंनशिररीप तृणोपल, दासीदास, कुटीकुट, भागवतीभागवत ।

(गवाशिरा गवाश्वारिनामि वाश्वनि विद्वान्कौमु १)

गवायिका (स० स्त्री०) लावा, लाह ।

गवाम (स० पु०) गोनाशक, कसाई, हत्यारा ।

गवाह (फा० पु०) वह मनुष्य जिसने किसी घटनाकी साक्षात् देखा हो, साक्षी, साखी ।

गवाहिक (स० स्त्री०) आहिकभवन दिनभोजनाय पर्याप्त अह्नं टक आहिकम्, गो आहिकम् इ-तत् । गौके एक दिनके भोजन निमित्त पर्याप्त घासादि, मवेशीका एक दिनका चारा ।

जो मनुष्य पापामक्ति परिहारपूर्वक एक मास गवाहिक प्रदान तथा एकभक्तव्रत करता है, उसका धर्म दिनोदिन बढ़ता जाता है । (भारत १११२२ च०)

गवाहो (फा० स्त्री०) किसी ऐसे मनुष्यका कथन जिसने साक्षात् घटना देखी हो, साक्ष्य, साक्षीका प्रमाण ।

गविजात (स० पु०) गवि गोनामिकाया पुनन्वयभार्याया वा जात अशुक्लसमाम । १ ऋषिपिशेष, एक ऋषिका नाम ।

“तत्र मन्वी यत्रा कविभ्यः प्रमाणम् ।

मनुष्यस्य सभोदयो गविजात इवम् हुनि ॥

(भारत १११२२ च०)

२ वैश्वपण, ये भी पुनन्वयकी गोनाम्नी भार्यामि उत्पन्न है ।

“पुत्रो नाम तस्याहो मासमादित्य सुत ।

गवि कोषे चार्या भार्यांश्च ॥” (भारत १११२३ च०)

गविन (स० पु०) कौशुड नामक गवविशेष, एक प्रकारका हिरन ।

गविनो (स० स्त्री०) गवा समूह खलाटि इति डीप् । गो समूह, गायका झुण्ड ।

गविपुत्र (पु०) वैश्वपण, ये पुनन्वयकी गोनाम्नी भार्याके गर्भसे उत्पन्न हुए हैं ।

गविप् (स० त्रि०) गा स्तुतिवाचमिच्छति इप्-क्तिप् । स्तोत्रादि वाच्य इच्छा ।

“गविप् स्तुतिवाचमिच्छत मल १” (वायथ)

गविप (स० त्रि०) गामिच्छति इप क । गौके प्रति इच्छा विशिष्ट, जो गाय पालनेकी इच्छा करता हो । (वायथ)

गविष्टि (स० त्रि०) इप क्तिन । गवामिष्टिरन्वेपोऽस्ति अन्व । गौका अन्वेषण करनेवाला, मवेशीका खोजने वाला । (अथ १११२१२)

गविष्ठ (स० त्रि०) गवि स्वर्गे भूरी वा तिष्ठति स्या क अशुक्लस० । १ स्वर्गस्थित । २ भूमिस्थित ।

“शायुः किञ्चि गि पशुद गविष्ठो नां गतस्तथा ॥” (भारत १११२१२)

(पु०) ३ दैत्यविशेष, एक असुरका नाम ।

“गविष्ठय वनाश्रय शोधजिह्वय धामन ॥” (भारत १११२२ च०)

गविष्ठिर (स० पु०) गवि वाचि च स्थिर पत्व अनुक् समास । १ गौत्र प्रवर्तक एक ऋषिका नाम ।

(अथ १११२१२)

गवी (स० स्त्री) गो डीप् । गामि, गो, गाय ।

गवीधुका (स० स्त्री०) गवेधुका प्रयोदगदित्वात् साधु । धान्यविशेष, एक प्रकारका धान । (तान्त्रिकेष ३ भाग १२)

गवीश (स० पु०) गवामीश । १ गोस्वामी । २ विष्णु । ३ हृष, मंड ।

गवोश्वर (स० पु०) गवामीश्वर, इ-तत् । गोस्वामी । इम वा पर्याय—गोमान् और गोमी है ।

गवेदित (स० स्त्री०) गवामिद्धितम्, अश्वडादेश वा गो-गणकी शुभाशुभसूचक एक चिह्न । सुहृत्पतितम हितमि कक्षा है—गायीके दोन भावापन्न होनेसे राजाशोकका अम-ङ्गल, पाद द्वारा भूमि कुहन करनेसे रोग, चतु अशुपूर्ण होनेसे स्वामीका मृत्यु और भीत हो करके शब्द करनेसे तत्कारका मृत्यु होता है । यदि योग्य अकारण वैसा ही शब्द करता, तो अनर्थ पडता और रात्रिकी वैमी हो दगा रहनेसे अमङ्गल बढ़ता है । फिर योग्यके मतिप्राप्तों द्वारा व्याप्त अथवा कुहुरों द्वारा ये टित होनेसे गोघ हो

दृष्टि पड़ती है। घर आते आते गावोंके हम्बारव करने (रांभने) से गोष्ठ बढ़ता और आर्द्र देह, हृष्ट अथवा रोमाञ्चित होनेसे गीसकल मङ्गल प्रदान करता है।
(इहत्संहिता ८२ प०)

गवेडु (सं० स्त्री०) गवे दीयते टा मृगव्यादित्वात्-क्त
पृषोढरात् टस्य डः अलुक् समासः । धान्य भेद, एक प्रका
रका धान ।

गवेडुका (सं० स्त्री०) गवेडु, देखा ।

गवेधु (सं० स्त्री०) गवे धीयते धा क् अलुक् समासः ।
धान्यविशेष, कसेई धान (भावप्रकाश)

गवेधुक् (सं० पु०) गवेधु-क्त् । १ सर्पविशेष, साँप
जातिका एक जन्तु । (लौ०) २ गैरिक, गेरू मट्टी ।
३ लणधान्यविशेष, गाडर धान ।

गवेधुका (सं० स्त्री०) गवेधु-क्त्-टाप् । लण धान्यविशेष,
गवेडु । (विष्णुप० १।६५०) इसका पर्याय—गवेडु, गवेधु,
गवेडुका, चुड्रा, गोजिहवा, गुन्दा, गुल्म, नागचला, गाङ्गे-
रुकी, भाषा, ऋस्रगवेधुका खरवसरिका, विश्ववेदा और
गोरक्षतण्डुलो हे ।

गवेधू (सं० स्त्री०) गवेधुका देखी ।

गवेन्द्र (सं० पु०) गोरिन्द्र इव नित्य-अवड् । १ ओष्ठ गौ,
बढ़िया बैल । २ गौके स्वामी ।

गवेरिक (सं० स्त्री०) गैरिक, एक प्रकारकी लाल मट्टी ।

गवेरुक् (सं० स्त्री०) गां भूमिं ईर्त्तं उत्पत्तये प्राप्नोति
ईर उक्त्वा । गैरिक, गेरू मट्टी ।

गवल (हिं० वि०) गंवार, देहाती ।

गवेलगढ़—वरार अञ्चलका एक ग्राम । १८०३ ई०को इस
ग्रामके निकटस्थ आरगाँव नगरमें अंगरेज सेनापति
जेनेरल वॉलेम्लीने नागपुरके राजा भोंसलाके सेनापति
वेङ्कजोकी परास्त किया था । इसीसे अंगरेज सेनापति
टिमेनसनने गवेलगढ़को अपने अधिकारमें कर
लिया ।

गवेश (सं० पु०) गवामीशः । १ गोस्वामी, गोरक्षक ।

गवेशका (सं० स्त्री०) गवेश संज्ञार्या कन्-टाप् । हृत्
विशेष, गोरक्षीका पेड़ ।

गवेप (सं० त्रि०) गवेप अन्वेपणे अच् । अन्वेपण, खोज,
तलाश ।

गवेपण (सं० त्रि०) इप् कर्त्तरि न्यु, गोरिपणः, ६-तत् ।
१ गौका अन्वेपण करनेवाला । २ जलान्वेपणकारी,
जलकी खोज करनेवाला । ३ अन्वेपणकर्ता, तलाश
करनेवाला । (च० १।१२२।२)

(पु०) ४ चितकके एक पुत्रका नाम । (हरिश्च ३५ प०)

गवेपणा (सं० स्त्री०) गवेप-भाव युच्-टाप् । १ अन्वे-
पण, खोज । २ गौ अथवा जलकी तलाश ।

गवेपणीय (सं० त्रि०) गवेप-अनोयर् । अन्वेपणके योग्य,
तलाश करने लायक ।

गवेपित (सं० त्रि०) गवेप-क्त । अन्वेपन्, खोज किया
हुआ ।

गवेपिन् (सं० त्रि०) गवेप-णिन् । अन्वेपणकर्ता, खोज
करनेवाला । (भारत ३।१४२ प०)

गवेठिन् (सं० पु०) दैत्यविशेष, एक राक्षसका नाम ।

“गद्ग कर्षो विरोधय गवेठा दृष्ट्वा नलाथा ।” (हरिश्च ३ प०)

गवैडक (सं० स्त्री०) गौत्र एडुक्त्थ । गौ और सेप, गाय
और भेड़ ।

गवैया (हिं० वि०) गायक, गानेवाला ।

गवैहां (हिं० वि०) ग्रामीण, गांवका रहनेवाला,
देहाती ।

गवोदघ (सं० पु०) प्रशस्तो गौः । प्रशस्त गौ, बढ़िया
सवेशी ।

गव्य (सं० त्रि०) गोरिदं गोर्विकारी वा यत् । (गोप्यमोहन ।
पा ३।३।१६०) गोसे उत्पन्न, जो गायसे प्राप्त हीं, जैसे दूध,
दही, घी, गोबर, गोमूत्र आदि । (मन ३।०१)

२ गायका हितकर । ३ गायका कुंड । ४ राग-
द्रव्य । ५ पंचगव्य । ६ ज्या, धनुषकी डोरी ।

गव्यष्ट (सं० स्त्री०) गायका घी ।

गव्यत्तक (सं० स्त्री०) गायका मट्टा ।

गव्यदधि (सं० स्त्री०) गायका दही । इसका गुण—
अति पवित्र, शीतल, स्निग्ध, टीपन, वल्य, मधुर, अरोच-
कघ्न और वातरोगनाशक है ।

गव्यनवनीत (सं० स्त्री०) गायका मक्खन, पनीर ।

गव्यमांस (सं० स्त्री०) गोमांस ।

गव्ययी (सं० स्त्री०) गोरिदं बाहुलकात् अयट् युडा-
गमच्च । त्वक् प्रभृति, चमड़ा इत्यादि । (च० १।७०।७)

गव्ययु (म० त्रि०) गामिच्छति गो वच उण यादा वेदे-
दीर्घयलोपाभावो । जो गाय लेनेको इच्छा करता हो ।
गया (स० स्त्री०) गवा ममूह । गो समूह, गायका
भुङ् । २ धनुपजा गुण, धनुपकी डोरो । ३ गव्यूति,
दो फीस । ४ गोरचना ।

गव्यु (म० त्रि०) गामिच्छति, इय वच उणु । जो गो
ग्रहण करनेकी इच्छा करता हो ।

गव्यूत (म० क्लो०) गव्यूति एपोदरादित्वात् अथडटेश ।
१ एक कोस । २ दो फीस ।

गव्यूति (म० स्त्री०) गोर्युति । १ दो हजार धनुपको
दूरो । २ दो फीस । इसका पर्याय—क्रोगयुग, गव्यूत,
गोरुत, गोमत, वाचस्पति और गया है ।

गय (अ० पु०) मूर्च्छा, बेहोशो ।

गयो (अ० स्त्री०) बेहोशो ।

गत (फा० पु०) १ टहलना, घूमना, दौरा, चकर ।
२ पुनीसका चकर, रौंड, दौरा । ३ एक प्रकारका नृत्य
जिममें नाचनेवाली वेश्याये बरातके आगे नाचती हुई
चलती हैं ।

गशत सनामी (फा० स्त्री०) भेट या उपहार जो हाकिस
को दौरा समय मिला करता है ।

गती (फा० वि०) भ्रमण करनेवाला, घूमनेवाला ।

गमना (हि० क्लि०) १ जकडना, गाँठना । २ कपडा
धुनाउटमें बानेको कसना ।

गमोला (हि० वि०) जफडा हुआ, गुया हुआ, गफ ।

गम्या (हि० पु०) घास, धौर ।

गद डिल (हि० वि०) गदना, मटमैना ।

गदकना (अ० क्लि०) १ चाहसे भरना, लालमासे पूर्ण
होना, ललकना । २ उमगसे भरना ।

गहकीडा (हि० पु०) गहफ, खरोदोर ।

गहगड्ड (स० वि०) गहरा, भारी, घोर ।

गदगह (हि० वि०) प्रफुलित, प्रसन्नतापूर्ण, आनन्दसे
भरा हुआ ।

गदगहा (हि० वि०) गदगह ।

गहगहाना (अ० क्लि०) १ आनन्दमें मग्न होना, बहुत
प्रमत्त होना । २ कमल आदिका बहुत अच्छे तरह
तैयार होना, महलहाना ।

गहडवार—युक्तप्रदेशवासी राजपूतोंकी एक शाखा । डेरा-
मङ्गलपुर, बिठूर, जाजमज, कन्नोज, बिलहोर, इमनाम-
गञ्ज, वटेलखण्ड, गोरखपुर, कटिहर, बनारस तटसील,
गाजीपुरके पछोतर तथा मझगच, खैरागढ, कानूतित
आदि स्थानोंमें इनका वास अधिक है ।

उम जातिके सम्बन्धमें कोई वंशगत इतिहास नहीं
मिलता, फिर भी आजकलके गहडवार अपनेको कन्नोजका
पूर्वतन राजवंशी जैसा बतलाते हैं । राजपूत इतिहासमें भी
यह ३६ राजवंशोंके थन्तुभूत है । किसीके मतमें गहड
वारोंसे जो राठौर वंशकी शृष्टि है । केवल विम्हीर
और गोरखपुरके गहडवारोंको छोड़ करके और कोई
राठौरवंशमें दान ग्रहण नहीं करता । गोर और गोरख ।

हादो कतुल अकालीस नामक फारसीकी एक कताब-
में लिखा है कि वह चाराणमोसे (१११५ ई०) कान्तिमें
जा करके बसे थे । किसी दूसरे ऐतिहासिकके कथाना-
सार राठौरवंशीय जयचन्दके भतीजे गहनदेवने १३वीं
शताब्दीके शेष भागको काश्मीरसे जा भरपत्ताकी गद्दाके
उपभूतसे निकाल दिया और अपने वंशकी गहडवार
नामसे आख्यात करके कान्तिमें राज्यस्थापन किया ।
साधारणतः काश्मीरमें ही गहडवारोंका आदिनामस्थान-
जैसा निरूपित हुआ है । उपर्युक्त दोनों लेखकोंके मत
में गहडवारोंने एक ही माय स्वदेश परिव्याग और कान्ति-
में जा करके निवास किया था । सुतरा काश्मीर शब्द
सम्भवतः भ्रमसे 'काशी' के बदले लग गया होगा । गोरख-
पुरमें इस जातिकी उत्पत्तिके और भी दो प्रवाद प्रचलित
हैं । पहला यह कि वह नलराजके वंशसम्भूत हैं और
खानियरके निकटवर्ती नरवर नामक स्थानसे काशीमें
जा करके बसे हैं । दूसरा यह कि काशीराज वनदेवने
मगधराज कर्टक ताडित होने पर स्वराज परिव्याग
पूर्वक काश्मीरराज विपुरके अधीन कर्मग्रहण किया,
पछे स्त्रीय प्रभुके धिक्क लोगोंने उभाठ करके काश्मीर
राज्यके अधीश्वर बन बैठे । उनके यगधरोंके १२१ पादो
राज्य करने पर ईरान तुर्कबान और रुम देगाधिपतिने
काश्मीर पर आक्रमण किया था । यहाँमें यवनकर्टक
ताडित होने पर वनदेवके यगधर कन्नोज भाग आवे
और यहाँ जयचन्द पर्यन्त ५० पुराण राजत्व रखा । राजा

वलदेवके तृतीय पुत्र राजा बनार गहड़वार सामन्तीके आदिपुरुष थे। किसीके मतमें 'बनार' से ही काशीका नाम बनारस पड़ा है। ११६१ संवत्की प्रदत्त जो शासनलिपि बसाहीसे प्राप्त हुई है, पढ़नेसे समझ पड़ता है कि वस्तुतः कन्नौजके राठीरराज जयचन्द्रसे जर्धतन पञ्चम पुत्रके चन्द्रदेव और महीपाल आदि कन्नौजके राजा गहड़वार वंशीय रहे। कन्नौज देखो।

चन्द्रदेवके पिता महीपाल बङ्गाल, विहार और काशीके राजा होते हुए भी बौद्धमतावलम्बी थे। शिलालिपिपाठसे विदित होता कि उनके राजत्वकालको कन्नौजका आधिपत्य कलचुरि राजाओंके हाथमें रहा। महीपालके कनिष्ठ पुत्र चन्द्रदेवने कलचुरिराज कर्णके निकटसे वन्दुताका चिह्नस्वरूप कन्नौज पाया था। हिन्दू धर्मपर चन्द्रदेवकी बड़ी आस्था रही। अपने आत्मीय होते हुए भी उन्होंने विहार और काशीके पालवंशोय बौद्धराजाओंका संसर्ग एककाल ही यहाँ तक परित्याग किया कि उनका वंशगत 'पाल' उपाधि छोड़ करके 'चन्द्र' उपाधि ले लिया था। यही चन्द्रदेव कन्नौज राठीरके राजवंशके प्रथम राजा रहे। फिर विहार और काशीके गहड़वारोंने पाल और कन्नौजके राठीरोंने चन्द्र उपाधि ग्रहण किया। एतद्भिन्न बुंदेलखण्डके बुंदेला भी उसी वंशसम्भूत हैं।

गहड़वारोंके कन्नौजका होने पर और भी एक प्रमाण मिलता है। गौतमगोत्रोय राजपूतोंका कहना है कि उन्हें कन्नौजवाले गहड़वार राजाओंके अनुग्रहसे अपने रहनेकी निम्न दोआबका अधिकार मिला था।

हवीव-उज-सैर, ताल-अल सुतस्सर, तवकात अकवरी, फरिशा आदि ग्रन्थोंमें लिखा है कि महम्मूद गजनवीने कन्नौजके राजा गोड़की आक्रमण किया था। जब वह कन्नौजके अभिमुख पहुंचे, जयपाल राजा थे। अतएव स्रष्ट ही समझ पड़ता है कि मुसलमान इतिहासवेत्ताओंने भ्रममें पड़ गहड़वार जातिके बदले गोड़ जातिका उल्लेख कर दिया होगा।

१०५८ ई०को गहड़वार सामन्तीने गौतम भूमि-हारीके अत्याचारमें उल्लेख और काशीसे ताड़ित होने पर अङ्गरेजोंके अधीन आश्रय लिया। आजकालके यह मिर्जापुरके पश्चिम विजयपुरमें नवर्नसैण्टकी वदान्यता पर राज-मन्थानसे वास करते हैं।

गहन (सं० स्त्री०) १ वन, जंगल। २ गंभीर, गहगा।
३ दुःख, तकलोफ। (त्रि०) ४ कठिन, कड़ा। ५ दुर्गम, घना। ६ निविड़, घना। ७ दुःप्रवेश। (पु०)
८ विष्णुपरमेश्वर। (विष्णुसं०) ९ जल, पानी। १० गहराई, थाह।

गहना (सं० स्त्री०) १ आभूषण, जेवर। (हिं० पु०)
२ रेहन, बंधक। ३ खेतकी घास निकालनेका गहन नामक यन्त्र (हिं० क्रि०) ४ पकड़ना, धरना।

गहनि (हिं० स्त्री०) टेक, जिट, हठ।

गहनी (हिं० स्त्री०) पशुओंका एक रोग जिससे उनके दाँत हिलने लगते हैं।

गहर (सं० त्रि०) १ दुर्गम, विपम। २ व्याकुल, उद्विग्न।
३ किसी ध्यानमें मग्न या वेसुध।

गहर (फा० स्त्री०) ढेर, विलम्ब।

गहरना (हिं० क्रि०) ढेर लगाना।

गहरवार (पु०) एक क्षत्रियवंश। गोरखपुर और गाजीपुरसे कन्नौज पर्यन्त इस वंशके मनुष्य पाये जाते हैं। ये अपना पूर्व वास काशी बतलाते हैं। कन्नौजके राजा चन्द्रदेव और महीपाल राजा भी गहरवार वंशकेही थे। बुंदेलखण्डके बुन्देले क्षत्रिय भी अपनेको गहरवार वंशोद्भव बतलाते हैं।

गहरा (हिं० त्रि०) १ जिसमें जमीन बहुत नीचे जा कर पाई जाय, गंभीर। २ जो पृथ्वीके तलसे भीतर बहुत दूर तक चला गया हो। ३ प्रचण्ड, बहुत अधिक, ज्यादा, भारी। ४ दृढ़, मजबूत, भारी। ५ गाढ़ा, जो हलका या पतला न हो।

गहराई (हिं० स्त्री०) गहराका भाव, गंभीरपन।

गहराना (हिं० क्रि०) गहरा करना।

गहराव (हिं० पु०) गहराई।

गहर (हिं० स्त्री०) ढेर, विलम्ब।

गहर (हिं० क्रि० वि०) अच्छी तरह, खूब, यथेच्छ।

गहरवाजी (हिं० स्त्री०) इक्केकी घोड़ेकी बहुत जोरकी कदम चाल।

गहलोत—राजपूतोंकी एक शाखा। वर्तमान सिसोदिया और अहेरिया राजपूत इनकी विभिन्न शाखा है। सिसोदिया जैसा अपना परिचय देते भी इनकी गहलोत आख्या दूर

नहीं हुई है। भोजी परगने, खापुर, निजामाघाट, बिल्वीर, बिठूर, रत्नावादा, मैयटाघाट, तिरुचा, रामिया, हाथरत, शाहपुर, जनेश्वर और बुलन्दशहरमें यह अधिक रहते हैं।

बुलन्दशहरवासी गहलोतीमें ऐसा प्रवाद है कि सम्राट् अकबरने चित्तौर आक्रमण करनेके पीछे राजा खोमानके राजखकालको वह दसनाके निरुपवर्ती देहडा और धालना नामक स्थानोंमें जा करके बसे। किन्तु वास्तविक यह बात ठीक नहीं है। कारण, आईन अकबरी पढ़नेसे समझ पडता है कि सम्राट् अकबरके समय गहलोतव शीय दसनाके जमीदार थे। युक्तिमिद और सम्भवपर जैसा यही विदित होता है कि सम्राट् अलाउद्दौन खिलजीके चित्तौर आक्रमण अथवा खोमानके राजखकालको मामूके आक्रमण पीछे वह दसनामें जा करके रहे। खोजन देखे।

फौड़े फौड़े कहता है कि वर्तमान गहलोतीके किसी पूर्वपुरुष गोविरावने दिग्गोपति पृथ्वीराजकी यहनकी ब्याहा और वह उनके अन्तरङ्ग मित्र तथा युध्विग्रहमें सहकारो थे। कवि चन्द्र बरदाईने अपने पृथ्वीराज रामो काव्यमें लिखा है कि गोहिलन शीय सामन्त गोविन्दराव चौहान राजपूत पृथुके सहकारी रहे। उन्होंने इस जाति को मन्था और घौर जैसा कहा है। सम्भवत मख्ततगोमिल गोत्र शब्दका अपभ्रंश हीत हीत हिन्दोमें 'गहलोत' बन गया है। किन्तु मेवाडमें सर्वत्र इस जातिके उत्पत्ति सम्प्रत्यका निम्नलिखित प्रवाद यथार्थ जैसा माना जाता है—मेवाड राणाके जब पूर्वपुरुष गुजरातसे ताडित हुए, पुष्पती नामक किमी राजमहिषोने मलय पर्वतके ब्राह्मणोंके निकट जा करके आश्रय लिया और अनतिकाल पीछे ही एक पुत्ररत्न प्रसव किया और पर्यंतको गुहामें जन्म होनेसे उमरा नाम गहलोत पर्याप्त गहरोत्पन्न रख दिया। उदयपुरके वर्तमान राणा इहीं गहलोतीके वंशधर है।

गहवा (हि० पु०) सटनी।

गहवारा (हि० पु०) भूना हि जेना।

गहाड (हि० स्त्री०) ग्रहण करनेका भाव, पकड।

गहागड (हि० वि०) गहवा देखे।

गहोगह (क्रि० वि०) गहगह देखे।

गहादि (सं० स्त्री०) छ प्रत्यय निमित्तक पाणिनीय गण विशेष। (गणानिगम १। ४। १२५) गह, अन्तस्य, सम, विपम, उत्तम, अद्भ, वद्भ, मगध, पूर्वपक्ष, अपरपक्ष, अधम-शाख, उत्तमशाख, एकशाख, समानशाख, समानयाम, एकयाम, एकहृत्, एकपलास, इष्य, इष्वनीक, अयव्यन्दन, कामप्रस्य, खाडायन, काठेरणि, लाविरणि, सौमित्रि, शैशिरि, आसुत, दैवशर्मि, श्रौति, आदि सि, आमित्रि, व्याडि, वैजि आध्वनि, आश्रय सि, शोडि, आग्निशर्मि, भोजि, वाराटकि, वाल्मीकि, चैमहृदि, आश्वयि श्रौट गहामनि, ऐकजिन्दवि, दन्त्याय, ह्रम, तन्व्यय, उत्तर और धनन्तर, इन्हींको गहादि कहते हैं। ये आहतिगणके हैं।

गहिरदेव (सं० पु०) काशीके एक राजाका पुत्र। इन्हें गहवरार अपना पूर्वपुरुष मानते हैं।

गहिराय (हि० पु०) गहवा देखे।

गहिरौ (हि० वि०) गहवा देखे।

गहिना (हि० वि०) पागल, उन्मत्त।

गहीना (हि० वि०) १ गर्वयुक्त, अभिमानी। २ मदी मत्त, पागल।

गहु (हि० स्त्री०) छोटा रास्ता, गली।

गहुभा (हि० पु०) छोटा सुंहवाना, एक प्रकारकी सडनी। इसके द्वारा लोहार अग्निसे तप्त लोह वाहर निकालता है।

गहरी (हि० स्त्री०) किसी दूरसेकी चीजकी हिफाजतसे रखनेकी सजदूरी।

गहनुभा (हि० पु०) कुट्ट दर।

गहनुरा (हि० वि०) १ पागल। २ मूर्ख, अज्ञानी गधार।

गहना (हि० वि०) १ हठी, जिद्दी। २ अहकारी, घमण्डी, मानो। ३ पागल। ४ मूर्ख, अनजान।

गहैया (हि० वि०) १ पकडनेवाला। २ अहोकार करनेवाला, खोकार करनेवाला।

गहोइ—वैश्य जातिभेद। यह बुदेमखण्डके बडे बडे नगरोंमें व्यापारदि करते हैं। पिण्डारियोंके आक्रमणसे उत्पन्न हो गहोई युक्तप्रदेगमें भी पा बसे हैं। यह शब्द 'गुहा का अपभ्रंश है। इनमें १२ गोत्र होते हैं।

गहू (स० स्त्री०) गहू बाहुलकात् भावे कर्मणि वा वः ।
 १ गाम्भीर्य । २ गहिरा । (त्रि०) ३ गहरयुक्त ।
 गहर (स० स्त्री०) गाहते गाह विलोडने । १ गर्त, विल ।
 २ गिरिगुहा, पहाड़की कंदरा ।

“गौरीगुरोर्गह्वरनाविशणः” (रघु० २।२४)

३ दम्भ, पाखण्ड । ४ वन । ५ रोदन, रोना ।
 ६ त्रिगमस्थान । ७ वह वाक्य जिसके बहुत अर्थ ह
 सकते । (पु०) ८ निकुंज, लतागृह । ९ जन
 १० गुमस्थान । ११ भाड़ो । १२ दुर्गम ।

गह्वरा (सं० स्त्री०) विडगज, वायविडंग ।
 गह्वरो (सं० स्त्री०) गुहा, कंदरा, गुफा । (परिवर्ग)
 गह्वरित (सं० त्रि०) गहरं जातमस्य इतच । १ गुम ।
 २ क्षुब्ध, निम्नस्थ ।
 गह्वरेष्ट (सं० त्रि०) गह्वरे तिष्ठति स्थानक । जो गुफामें
 छिप गया हो ।

गा (सं० स्त्री०) १ गीत । २ शरीर, देह ।
 गांकर (हिं० स्त्री०) १ अज्ञाकड़ी, लट्टी । २ अहरको
 लिट्टी ।
 गांछना (हिं० पु०) गांधना, गूंधना ।

गांज (फा० पु०) १ राशि, ढेर । २ लकड़ीका ढेर ।
 गांजना (हिं० क्ति०) १ राशि लगाना । २ घाम या
 लकड़ी तले जपर रखना ।

गांजा—एक पौदा और उसका फूल । (Cannabis
 Sativa, Cannabi, Indica) इसकी अंगरेजीमें
 Hemp, फरासीसोंमें Chanvie, जर्मनमें Hanf, इटा-
 लीमें Canape, रूसीमें Conopolia, स्पेनीयमें Can-
 amo, डेनमार्कीमें Hamp, काश्मीरीमें बड़्डी और मराठी-
 में भांगाळा भाड़ कहते हैं । गांजाका संस्कृत पर्याय—
 गञ्जिका, वज्रदारु, भङ्गा, भरिता, गजाशन, गञ्जाकिनी,
 मत्कुणारि, मातुली, मातुलानी, मादिनी, शक्राशन,
 त्रैलोक्यविजया, इन्द्राशन, जया, वीरपुत्रा, गञ्जा, चमला,
 अजया, आनन्दा, प्रकाशिनी और हर्षिणी है । यह कटु,
 कषाय, उष्ण, तिक्त, वात तथा कफनाशक, संघ्राही,
 बलकर, मेधावृद्धिकारी, दीपन और वाक्यवृद्धिकार होता
 है । (राजनिघण्टु) भावप्रकाशके मतमें वह कफनाशक,
 तीता, याही, पाचक, हलका, तीखा, उष्ण और पिप्त,
 मोह, मत्तता, वाक्य तथा अग्नि बढ़ानेवाला है ।

राजधामल वतलाते हैं कि यह मसुद्र मन्थनके समय
 पीयूष रूपमें उत्पन्न हुआ था । विजय प्रदान करनेमें
 उसका एक नाम विजया पड़ा । उसके सेवनमें आतङ्ग
 मिठता और हर्ष बढ़ता है ।

यह रसायनविशेष है । भारतीय चिकित्सक अनेक
 आपधोंमें इसका व्यवहार करते हैं ।

बृहत्संहिताके मतमें विजया एक माह्निक पदार्थ
 है । पुण्यस्थानमें वेदिके कौण्डिन्य कुम्भपर अपर माह्न-
 लिङ्ग द्रव्योंके साथ वह भी अर्पित होता है ।

(पटनसं० ३५।२६)

सुश्रुतने भांग या गांजिके वृक्षको स्यावर विषोंमें उल्लेख
 किया है । उनके मतानुसार उसके मूलमें जहर रहता
 है । (सुश्रुत वृक्ष २ अध्याय) प्रतिश्याय रोगमें उसको सेवन
 करनेका विधान है । (सुश्रुत उपा २० ५०) कटुको, द्राक्षा,
 मुस्ता और क्षैत्रपर्पटीके साथ उसका काय बना करके
 पीनेसे पित्तशैथिल्य ज्वरमें उपकार होता है । इस देशमें
 बहुत दिनोंसे वह प्रचलित है । पाणिनिस्मृत (५।२।२८)-
 के वार्तिक और पाणिनिस्मृत (५. ५।४) में उसके पर्या-
 यान्तर भङ्गा शब्दका उल्लेख विद्यमान है

गांजसे कीड़े मकोड़े मर जाते हैं । इसी विश्वास पर
 उसका मत्कुणारि नाम पड़ा है । ग्रीक ऐतिहासिक
 हिरोदोतासके ग्रन्थमें भी कानाविम नाम का उल्लेख मिलता
 है । युनेपियोने गांज और मनका पौदा एकजातीय मान
 करके दोनोंको केनाविम वा हेम्य नामसे अभिहित किया
 है । परन्तु हमारे देशमें गांजा शणसे खतन्त्र है । हिरो-
 दोतासने लिखा है—सिथीय लोग गांजिका बीज मनके
 भीतर भर करके जलते पत्थर पर रख देते और उसके
 निर्गत धूमसेवनसे ही सुखानुभव करके उल्लासध्वनि
 करते थे, इसनकी अरबी किताबमें कहा है कि शेख
 जाफर सिवानो नामके एक फकीर मिसावार पहाड़ पर
 अकेले इबादत (उपासना) में लगे थे । वह किसी रोज
 जङ्गलमें गांजिकी पत्ती खा कर खूब खुश हुए और अपने
 चेलोंको उसे देखाने लगे । मिसरमें गांजा नशके काम
 आता है । वहां लोग एक नलीसे गांजा पीते हैं । गांजसे
 तरह तरहका अचार और मिठाई बनती है । भारतमें भी
 गांजिका धुआं पीया जाता, भांग खाते और उसकी माजून
 बनाते हैं ।

भागके पिडका फूल गाजा, पत्ती भाग ही और उस का दूध चरस कहलाता है। इसमें समी चीजे नगोली है।



४-५ ७५। ६-छो ७५। १-गांजिकी बी।

फिर भी गांजिका नया भाग और चरमके नगिसे निराला है। असली गौद ही गांजिकी मादकताका मूल कारण है। गाजा डाक्टरो चिकि साध औपधकी तरह व्यवहृत होता है। अङ्गरेजी भेदव्यतस्वमें वह उच्छेजक, वेदगानिवारक, स्निग्धकारक, अवसादक, आनिपक वा धनुष्टङ्कारोगनाशक, म दक, मूत्रकारक, और प्रसवका सहकारी जैसा बतनाया गया है। उसका धनुष्टङ्कार, जन्मातङ्ग वा अलर्जीरोग, फम्प, प्रलाप, धडकन, स्त्रायवीय वेदना प्रभृतिमें प्रयोग करनेसे सुफल मिलता है। सिवा इसके हैजे, अधिक रज, जरायुके रक्तसाव, वातरोग, दमे, हृत्पिण्डके वैलक्ष्य, क्षेपकर चर्मरोग और सुजली आदि बीमारियोंमें भी वह व्यवहृत होता है। प्रभव-कालकी जरायुके अवसाटमें अधिक क्षण व्यथा होने पर इसके प्रयोगसे वह सजुचित पड जाता और प्रभव साहाय्य पाता है। इसका मत (Extractum Cannabis indicae) निम्नलिखित रूपसे प्रशुत होता है—४ पिण्ड विशुद्ध स्फिरिटमें पाध भेर गांजिकी बुकनी मिला ७ दिन तक भिगोकरके रख छोडना चाहिये। फिर उसको दवा या निचोड करके चरक निकालते है। इसको टपका और स्फिरिट उढा करके उक्त औपध बनता है। धयस्या विधिमें पाध घेनसे २ घेन तक पढ रोगीको दिया जा

सकता है। यह मत एक पिण्ड खालिम स्फिरिटमें मिला देनेसे चरसका टिङ्गचर (Tinctura Cannabis Indicae) तैयार होता है। ज्ञानतकी टेख करके ५से २० बूद तक उसका प्रयोग कर सकते है। डाक्टर ओसफ नेसीने सबसे पहले गांजिकी भलाइ बुराई समझ करके उसकी विलायती दवाइयोंमें डाला था। Johnwaning, Pharmacopaeia of India, p 464)

अङ्गरेजी हेम्प (Hemp) शब्दसे ग्रण (सन) और गांजिकी दोनो का अर्थ निकलता है। एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका प्रभृति ग्रन्थोंमें भी वही गडबडी है। दोनो वृक्ष एक जातीय होते भी गांजिके आकारमें कुछ विधिपत्व है। इस पेडमें लकड़ीका भाग अधि ६ रहता है। फिर यह सनके पैटेसे मोटा भी होता है। इसके डण्डन सीधे निम्बदेग फैला हुआ और ऊपरी भाग ढालू लगता है। यह साधारणत चार और कमी कमी ६ हाथ तक बढ जाता है। ऊपरी पत्तिया खूब हरी और फूल हरापन लिये हुए मफेट होते है। इसकी फुलगो बीचमें मोटी और दोनी और ढालू पडती है। उसमें बढतना रेशा रहता है। पेडो तथा सीधी ऊर्ध्वग होना और उसका परिधि इसे ८ इंच तक बढता है। तन्देगमें डालनियां कमी मिले हुए तोर पर कमी अलग अलग फूटती है। समी जगह रुखा हाता है। डालियोंके भीतर एक प्रकार की कोमल खेत मज्जा या गूदा भरा रहता है। इस मज्जा पर बहु दुर्बिशुष्ट सूक्ष्म भङ्गप्रणय कीइ आवरण है। इसी आवरण पर छाल लगी है। यह त्वक् लम्बे लम्बे रेजिसे बनती है। रेजि समान्तराल भावसे अवस्थित है। पत्तिया किसी भीधो डालकी दोनी और निकलती है। पत्तिया अडसे मोटी होती हुई सूरेकी नोक जैसी ढालू पड जाती है। उनका पार्श्व टेंग आने जैसा फटा कटा रहता है। ५।७ पत्तिया एकही साध निकलती है। गांजिका कोइ फूल पुरुष जातीय और कोइ कोइ स्त्री जातीय होता है। पुरुष जातीय पुष्प निराले पिडमें लगता है। व एक एक बोडमें एकत्र उपजता और प्राय अधिक भूक पढता है। उसकी अडमें नरे नरे टेहनियां निकला फरतो है। उनका नया न होनेसे भारतके किमान भोग फंक दते है। फल

गुच्छोंमें बांध कर मोधे ही जाती हैं। इसी के बीचमें अर्ध गोलाकार डिम्बकोष होता है। उसमें एकसाव उद्भिद् अणु रह सकता है। फूलमें बीज बढ़ते ही पड़ सर जाता है।

स्त्री जातीय फूल ही भारतवर्षमें नशाके लिये गांजिके तौर पर काम आता है। परन्तु किसान उसको पुंजातीय जैसा समझते हैं। इसी विश्वासमें वह पुंपुष्पोंको छांट करके खेतसे फेंक देते हैं। पुंपुष्प होनेसे अच्छा सादक द्रव्य नहीं निकलता, गांजिमें बीज भर पड़ता है

रायल साहब कहते कि एक पौदेमें दोनों जातीय फूल फूटा करते हैं। किन्तु वह अनुमान ठीक नहीं। पहले यह ठहराना बहुत कठिन है, कौन पौदा नर और कौन मादा है। किसान लोग ही इस भेदको समझ सकते हैं।

गांजिमें राल-जैसी एक चिपचिपी चीज होती है। उनमें भी खूब नशा रहता है। यह गोंद कभी कभी अपने आप निकल आती और चरस कहलाती है। भारतवर्ष के पौदोंसे यह दूध कम निकलता, किन्तु हिमालय प्रदेशमें ग्रीष्मकालको प्रचुर परिमाणसे मिलता है। चरसकी भी सादकताशक्ति यथेष्ट है। उसको पौनेकी तमाखूमें मिला गांजिकी तरह चिलम पर रख करके नशेवाज पीया करते हैं। भारतमें गांजि पौदेके फूलमें चरस होता है। परन्तु फूलके बीचमें डिम्बकोषके भीतर बीज पड़ कर गर्भमञ्चार होनेसे रस सूख जाता है। उसीसे किसान लोग गर्भनिवारणको उतनी चेष्टा किया करते हैं। स्त्री और पुरुष उभय जातीय वृक्ष भी होते हैं। उसमें अधिक पत्तियां आनेसे झाड़ बन जाता और फूल नहीं आता। परन्तु इस अणुका पौदा रहनेसे गांजिकी खेतीको कोई हानि नहीं पहुँचती। ऐसे पौदोंको खस्री कहा जाता है।

उधर उधर प्रायः गांजिका पौड़ सभी समयकी उपजा करता है। फिर भी खेती करनेवाले आश्विन वा कार्तिक मासमें ही इसका बीज वपन करते हैं। पौष माघ मासको पौड़ फूलने लगता है।

जिम जमीनपर किसी बड़े पौड़की छाया पड़ती, गांजा हलके लिये उपयोगी नहीं ठहरती मात्र वा फाल्गुन मास-

के ही गांजिका खेत जोता जाता है। किसी किसी जगह कुछ पीछे भी भूमिर्षण करते हैं। ३४ दिनके अन्तर पर एक ही खेतको कमसे कम ४ बार जोतना जरूरी है, उसमें किसी किसमका घास फूस नरहे, खूब माफ कर डालना चाहिये। निम्न भूमिसे मट्टी लें जा करके उसमें एक या २ हाथके फाम लें पर टोकरी टोकरी डाल देते हैं। थोड़े दिनों बाद खेतकी बगल पर कुदाल या खुरपीसे घास और दूसरे छोटे छोटे पौदे काट करके खेतमें फेंके जाते हैं। फिर पामकी जमीनसे मट्टी ला करके मंड जंची उठाते हैं। समय समय पर गोबरको खाद और उस पर मई देनी पड़ती है। इससे चिमड़ी मट्टी टूट जाती और घास जग आती है।

वृष्टिका जल वज्रा देनेके लिये नाली बनाते हैं। गोबर आदि खाद इकट्ठे करके भाद्रमासको खेतमें डालते हैं। आश्विन मासको आकाश परिष्कृत रहनेसे और एक बार वही खेत अच्छी तरह जोता और मईसे बराबर किया जाता है।

एक ओर जेठ वपनीपयोगी बनता और दूसरी ओर बीज स्थानान्तरमें अद्भुत हुआ करता है। जमीन तैयार होनेपर बीजोंकी चतमें रोपण किया जाता है बीज तैयार करनेमें कोई डेढ़ मास लगता है। उस समय टेहनियां ८ से २० अङ्गुल तक बढ़ती हैं। बीजमें जो छोटा आता, रोपण नहीं किया जाता। अपेक्षाकृत छोटा पौदा जंची और बड़ी आर्द्र भूमिमें रोपित होता है। १०१२ अङ्गुलके अन्तर पर प्रत्येक वृक्षकी रखते हैं। आश्विनमासको ८१० दिनके अन्दर यह वपन कार्य न कर लेनेसे पैदावार बिगड़ जाती है। बीनेके बाद दो तीन दिन पानी न बरसना अच्छा है। कारण वृष्टि होनेसे जड़ भौगती और पौदा भी अखीरको सूखता है। ऐसा होने पर फिर दूसरा बीज लाकर डालना पड़ता है।

जिस जगह पर बीज तैयार होता, उसका हिसाब अलग है। वृष्टिकी २१ भरनेके बाद ज्येष्ठ माससे आरम्भ करके भाद्र मास पर्यन्त उसको ३४ बार जोतते हैं। फिर मई देकर जमीन वैठाते और मट्टीकी खूब बुकनी डाल करके धूपके वक्त बीज गाड़ आते हैं। फिर मई दे करके मट्टी बराबर की जाती है। एक विश्वा जमी-

नमं कोइ ४।६ मीर वीज तैयार होता है। उसको एक बोधे जमोनमें मजसे लगा सकते हैं। खेतमें रोपित होने के ४ दिन पीछे ही बीजसे अद्दूर फूटता है। ६।७ दिन पीछे वही हरी पत्ती जैसा लगने लगता है।

जिस जमीनमें मोथा होता, अच्छा बीज निकलता है। फूटनेके समय दृष्टि पढ़नेसे बीज बिगड़ जाता है। जैव खुले स्थानमें रहना आवश्यक है। उसमें घाम जगनेसे उपकार ही है, अपकार कभी नहीं। प्रत्येक चैवमें ४।५ बत्तर बीज प्रस्तुत हो सकता है।

रोपण-वेदमें जहा जहा मट्टे ज बो उठाते अद्दूर लगाते हैं। रोपणके ३।४ सप्ताह पीछे आश्विनके अन्त वा कार्तिकके आदिमें पोटिकी जड़की छोड़ करके ज ची मट्टीका दूसरा अ ग निकाल डाला जाता है। फिर पोटि की जड़में खली या खुलोमें गोबर मिला करके दिया करते हैं। इसके बाद मट्टी उच्च की जाती है। अग्रहा-यण मामके आरम्भमें पोटिके नीचेकी दो एक डालिया काट या तोड़ डालते हैं। ऐसा करनेसे हचका तेज ऊपर ही चढ़ता है। फिर क्वारीकी मध्यस्थित निम्न-भूमि हलसे जोतनी पड़ती है।

अग्रहायण मामकी १०।१२ दिन पीछे या उससे पहले ही गाजिका परीक्षा आता, जो पोतदार कहलाता है। उसको दो तीन बार परीक्षा लेनी पड़ती है। वह सूर्योदयसे पहले फूलोंकी जाच करता है। जो फूल स्त्री ज्ञानीय समझ पड़ते, उनके हन्त वह तोड़ देता है। पीछे कृपक जा करके उनको उखाड़ डालता है। इसी प्रकारसे अग्रहणमें तीन और पुष्यमें एक भरतवा परीक्षा हुआ करती है। इसका नाम 'बछाई' है। फिर भी मादा पेदा मिलकुल नष्ट नहीं होता, कितने ही पेड़ बच जाते हैं। बछाई हो जाने पर किसान अपने आप एक वादर पोटि देखन आते और जहा जहां पीले पत्ते पाते, तोड़ जाते हैं। फिर घने घुचोंमेंसे कुछ उखाड़ करके खानो जगह पर लगा देते हैं। रोपण कार्य समाप्त होने पर भूमिकी अवस्था देख एक बार मार्गशीर्ष और एक बार पोष्यमें दो बार भिन्न करना पड़ता है। फिर पोष्यमास के शेष या मावमासके प्रारम्भकी पहलमें फूल आने लगते हैं। मावमासके बोधो बोधे वह भरपूर, ही जाते हैं।

फूल जितना ही पकता, उतना ही अक्षयवर्ष निकलता है। उस समय वह खानी या खोखला फइलाता है। पुजातीय गाजिके फूलको 'कली' कहते हैं। साह बीतते या फागुन लगते लगते गाजिका पेड़ कटता है।

गाजा दो प्रकारका होता है—चपटा और गोल। चपटा गाजा तैयार करनेको एक घामदार जगह साफ हो जाती है। सबेरे ८ बजेके समय गाजिको जटा काट लाते अर्थात् प्रातःकालकी ओससे उसको बचाते हैं। जो हच खूब पुणता पाते, पहले ला करके घास पर १ दो बजे तक सुखाये जाते हैं। फिर फूलको और एक हाउमें कुछ ज्यादा छोड़ करके उसका बाकी हिस्सा काट डालते हैं। उसोके साथ जिन डालियोंमें फूल नहीं आते, छाटते चने जाते हैं। फिर उसकी सारी रात थोम में रखते हैं। कहीं कहीं जाड़ेको ज्यादा हो जाने पर कटाई होती है। दूसरे दिनको २।३ बजे उनको पुडिया बांधी जाती है। मोटाईके अनुसार एक एक पुडियामें ५मी तोन चार, कभी ८।१० कलिया रहती हैं। इस प्रकार बंध जाने पर एक चटाई डाल करके उस पर वही पुडिया घेरेको सुरतमें अर्थात् कलियोंका सिरा एक दूसरे के सामने रख करके जमा देते हैं। एके ऊपर दूसरी रख दी जाती है। फिर ४।५ आदमी एक दूसरेका बन्धा पकड़ करके पैरोंमें उनकी कुचला करते हैं। बायें पैरसे टाजिकी टवाते और दाहनेसे चोट चलाते हैं। थोड़ी देर ऐसा करने पर गाजा चपटा पड़ जाता है। फिर एक दूसरो पुडिया ला उस पर और रख देते और वैसे ही कुचल लेते हैं। उस पर चटाई ढाक करके २।३ आदमी बैठते हैं। इससे कलौ अपने लगे हुए दूध जैसे नियाँसमें लिपट जाते और पत्र तथा बीजकी विच्छिन्नता देखते हैं। फिर कीड़े दूसरी चटाई बिछा देंगे हाथमें एक एक पुडिया ले परस्पर आघात किया करते हैं। इसमें धीजे और पत्तियों के भङ जाने पर जटा भी को अलग किसी चटाईमें गोल गोल जमा करके रख छोड़ते हैं। इसमें जो जटाए पहले ऊपर रहें, नोचे पा पड़ती हैं। इस तरहके बाद मडाई थोर कुटाई होती है। दो तीन वैसे करके जटाभी को अलग रख देते हैं। फिर बीजे और पत्तियोंको अन्न निर्मे ले कृपक

खड़े हो करके थोड़ा थोड़ा छोड़ते हैं। इससे बीज नीचे गिर पड़ते और पत्ते उड़ चलते हैं। वही बीज इकट्ठा करके दूसरे सालके लिये रख लिया जाता है। फिर एक चटाई डाल करके किसान उस पर खड़े खड़े जटाओंको वाम पटसे टकाते और दक्षिण पट द्वारा नीचेसे ऊपर तक झुचल फिर भाड़ करके अलग रखते हैं। ऐसा ही कई बार करके घास पर चटाई दबा देते, दूसरे दिन जा करके चिपटे हुए अंशकी स्वतन्त्र कर लेते हैं। दो-तीन दिन वैसा ही बरन पर गांजा धूपमें डाल दिया जाता है। फिर बीज और शुष्क पत्र संगृह्यते होते हैं। इसीका नाम खोँचा है। फिर गांजिकी कलियाँ अलग रख करके मांडी जाती हैं। इनके पीछे १०-१० कलियाँ एक बगडलमें बांधते हैं। किसान उन्हें घर ले जा धूपमें २-१ दिन सुखा वांसके माचे पर उठा करके रखते हैं।

गोल गांजा बनानेकी भी यही प्रणाली है। उसको भी काट करके ले आते और बगडल बांध करके धूपमें जमाते हैं। रातको ओस भी खिलायी जाती है। दूसरे दिनको जिसमें बड़े बड़े फूल रहते, उनमें किसीको तीन, किसीको चार और किसीको ५ टुकड़े तरु करते हैं। फिर जिस जिस पौदेमें फूल नहीं आता, छोड़ दिया जाता है। चपटे गांजिकी बनिस्वत इसमें और भी बंछाई करना जरूरी है। इसके मनोनीत पुष्प रीट्रमें सुखाते हैं। तीसरे पहरको एक फतारमें २-४ खूँटे गाड़ तिरछा वांस बांध उसकी दोनों और दो चटाइयाँ डालते और उस पर गांजिकी २ हिस्सोंमें सिल मिलेवार लगाते हैं। १०-१२ आदमी खुँटोंको दोनों और खड़े हो गांजिकी पैरकी दावसे मल करके गोल बना लेते हैं। इसीका नाम 'पहली मलाई' है। छोटे छोटे बगडल हाथ हीसे मरोड लिये जाते हैं। इस प्रकार कलियाँ गोल पड़ जानेसे एक एक करके धूपमें सुखाना पड़ती है। कुछ देरके बाद उन्हें उठा करके दूसरी मलाई की जाती है। बीच बीच हाथसे मरोडना पड़ता है। इसीका नाम 'द्वितीय मुद्रा' है। दूसरे दिन फिर सुखा करके वैसा ही किया जाता है। इसके बाद अति सावधान हो कौशलपूर्वक पूले बांध करके रखते हैं। इसीको 'सरवन्दी' कहा जाता है।

पूलोंको नीचेकी तरफ रस्सीमें कम बरके बांधना पड़ता है। दूसरे दिन धूपमें सुखा करके किसान गांजिके पूले हाथसे एंठते हैं। इसमें कुछ गांजा टूट करके गिर जाता है। उसको चूरा कहते और अलग बेचते हैं। बीच बीच उंगली या थपकने फलीकी सब सूधी पत्तियाँ भाड़ दी जाती हैं। फिर कलीको ढंका करके उगठल धूपमें रखते हैं। इसी प्रकार गांजा तैयार होता है।

गांजा बनानेमें धूप बहुत जरूरी है, उसके अभावमें आग पर गर्म कर लेनेसे भी काम चल सकता है। यह तरह तरहसे विगड़ सकता है। असमय पानी बरसने पर कीचडमट्टे लगनेसे पेट विगड़ जाता है। फिर बरसातमें एक कीड़ा निम्नता जो कलीको काटा करता है। घुण जैसा कोई दूसरा कीड़ा भी इसको मारता है। पेटमें काले बाले धब्बे पड़ जानेसे कोड़ा लगा हुआ समझा जाता है। गांजिका एक रोग होता है। उसमें उगठल और पत्तियाँ पीली पड़ जाती हैं।

युक्त प्रदेशमें गांजिकी लप्रीको निषिद्ध समझते; परन्तु दूसरे प्रदेशोंमें किया करते हैं। हिमालयके पास गढ़वालमें खूब चरस होता है। उधर बहुतसे लोग गांजिके बीज भून करके खाते हैं। आमासमें भांगका एक पानीय बताया जाता, जो गुग्गुला कहलाता है। पञ्जावमें गांजा नहीं होता।

पहले सब लोग बिना रोकटोक गांजिकी खेती कर सकते थे। परन्तु १८७६ ई०को गवर्नमेण्टकी अनुमति लेनेका कानून चला। गांजा तैयार होने पर सरकारी गोदामको भेज दिया जाता है। इसके महसूलसे सरकारको बड़ा फायदा होता है। समय समय गांजिका मूल्य बढ़नेका यही कारण है।

गांजिड़ी वायें हाथमें गांजा ले करके दाहने हाथके अंगूठेसे अच्छी तरह मलते हैं। उससे गांजा लस पकाड़ लेता है। फिर उसमें तम्बाकू मिला किसी कड़ी चीज पर रख करके चाकूसे बारीक बारीक काटते हैं। अखीरकी चिलसमें काढ़र लगा गांजा भर देते और उस पर आग चढ़ा करके पी लेते हैं। बातकी बातमें नशा आता, आंखका रंग सुर्ख पड़ जाता और मत्था मानो चकराता है। तुर्कस्तानमें और तरहसे गांजा पीते हैं। वहां इस

का एक तत्राका डाल करके निगालीसे पोया जाता है।
उममें बड़ा नगा होता है। अपने देगमें भांग पी करके
लोग धीमे हो मतदान वन जाते हैं। गंजा पीनेसे
मान मक अवस्था कौमो हो जाती, धूलसमागम नामक
+ स्तल प्रहसनसे निरूपत हुइ दिखलाई है—

“मति इरमेगमोइमरॉल सत
बु टनि मरुद्री भौमसवित्ति ।
दिसम निम दिन्नाम्पुनाएरमक न
निब रिब सिव सदा शोवम इटाशोर १”

किमी किमो डाक्टरके कथनानुसार गांजा पीनेसे लोग
पागल पड़ जाते हैं। हमने जो अनित आता, उमको
निवारण करनेके लिये ग्रांसत समुदाय सचेत दिख
जाता है। परन्तु वेद है—मरकार इमका व्यवहार नहीं
रोकती। लोग गांजा पी पी करके उत्सव हो रहे हैं।
'कमो कयिने कहा है—

“म मग न पीवा मोरारो मरु ३
करिसे इ बचन इरेम १।”

गांठ (हि० स्त्री०) गिरह ।

गांठकट (हि० पुं०) वह चीर जो पासके कपड़ेमें बधि
ए रूपसे ठठा लेता है, गिरहकट । २ उचितसे अधिक
भूष्य पर मोटा वेचनीवाला, ठग ।

गांठगोभी (हि० स्त्री०) एक प्रकारकी गोभी। इसमें
शूददार गांठ होती है। इसकी तरकारो बनाई जाता है।

गांठदार (हि० वि०) जिसमें बहुत गिरहें हों।

गांठना (हि० क्ति०) १ गांठ देना । २ जोर्ण वस्तुधर्म
चीप देना । ३ मिलाना, योगकरना ।

गांठी (हि० स्त्री०) १ श्रद्धाके रूपमें ही कुंठनीका एक
प्रकारका महना । २ भूले वा उठनका गांठदार छोटा
छोटा भाग ।

गांठ (हि० स्त्री०) १ गुदा । २ किमो पदार्थक भोचका
भाग जिसके आधार पर यह बड़ा रह सकें से दो, तना ।

गांठर (हि० स्त्री०) हाथ वा मया जाय लम्बे एक तरह
को घाम । जहां जन बहुनायतमें मिलता है, उमो
स्थान पर यह घाम उपजतो है। विशेष कर यह मेघाम
को तराईमें पाया जाता है। इसको पत्तो मरजाम परभी
अह चार धापाद माममें इसको सुपा उठमें चढ़ार
होम पीर धार पीर बर्दमें लगतो है। इसकी चीकमें

फूल रहता है। मनुष्य चीकमें भाड़ तथा छोटीर
टोकरो बनाते और पोथिको काटकर छपर हाते हैं। इस
का मूल सुगन्धित होता । फारसी भाषामें इसे खस
और मस्तमि उगीर कहते हैं। २ गिरहदार एक प्रकार
की दूर्वा। यह बहुत फैलतो तथा स्थान स्थान पर जा
पकड़ती है। मवेगी इसे बहुत पमन्द करते। यह कड़के,
कमेली तथा मीठी होती है। यह दाढ़, लष्णा, कफ-
पित्तकी दूर करता और लोभके विकारकी नष्ट करता
है। गण्डदूर्वा ।

गांठों (हि० पुं०) १ किमो हच वा पोथिका कटा हुआ
भाग । २ उत्सवका वह भाग जो कंधलुमें देकर रम
निकालते है। ३ ऊख, ईख, केतारो ।

गांठी (हि० स्त्री०) चौपायकी खानेकी एक तरहकी
घास । इसको जड़ सुगन्धित होती है। इस घास
में विशेषता इन बातकी है कि सुपा कर दग या बारह
मास रख देने पर भी इसका स्वाद नहीं बदलता ।

गांडू (हि० वि०) १ जिसे गांठ मरानेकी भादत पड़ गई
हो। २ निकप्या। ३ जिसे साहम नहीं हो, कायर,
उरपोक ।

गांठो (हि० स्त्री०) गानो श्या ।

गांधना (हि० क्ति०) १ गन्धन करना, गूधना । २ योग
करना ।

गांधिन—पन्नाघ प्रान्तकी एक जाति । यह लोग ध्यापार
करते और युक्तप्रदेशमें भी अल्पमरयक मिनते हैं ।

गांव (हि० पुं०) यह जगह जहां बहुतसे गृहस्थ रहते
हैं। छोटी बन्तो ।

गांम (हि० स्त्री०) १ गन्धन, बंधन । २ प्रतिरोध, रोह
टोक । ३ वैर, द्वेष, ईपा । ४ इन्द्रकी गुप्त पात ।
५ तोर वा बरहीका फल, चफाका अग्रभाग । ५ अर्ध-
कार, आसन ।

गांमना (हि० क्ति०) १ गन्धन करना । २ गठना, कथना,
ठग करना ।

गांसी (हि० स्त्री०) तोर वा बरहीका फल, किमो चफा
का अग्रभाग ।

गांइक—गुण ३३० ।

गांइठ (हि० पुं०) १ पयर्क, गाना दिवामेवाला ।

२. वह मनुष्य जो दूसरेको किसी स्थानके प्रसिद्ध प्रसिद्ध स्थानोंको दिखाता हो ।

गाउन (अ० पु०) १ यूरोप तथा अमेरिका आदि देशोंकी स्त्रियोंके एक प्रकारका पहनावा । २ एक प्रकारका लंबा ढीला वस्त्र जिसके परिधानके अधिकारी सिर्फ ईसाई धर्मके आचार्य, ग्रेजुएट, बड़े बड़े न्यायकर्ता तथा थोड़े विशिष्ट मनुष्य हैं ।

गाउवण्य (हि० वि०) १ दूरमेंकी चीजको पचानेवाला, वैमान, जमासार । २ बहुत व्यय करनेवाला ।

गाकर—पञ्जाब प्रदेशकी एक जाति । यह लोग सिन्धु और वितस्ता नदीके बीच सिन्धुसागर दोआब नामक स्थानके उत्तरांशवामी तूरानी हैं । इन्हें 'कही' कही' गाकर या गागर भी कहा जाता है ।

इतिहास पढ़नेसे समझ पड़ता है कि वह बहुत दिनों से भारतके उत्तरपश्चिमांशमें रहते हैं । परन्तु उनके भारत अनिका ठीक पता नहीं ।

ऐतिहासिकोंके मतानुसार पुरुष और तचशिला राज्यके उत्तर वर्तमान सुहां नदीके उत्पत्ति स्थान मुरी तथा मार्गल गिरिसङ्घके निकट प्राचीन अभिसार राज्य था । वही स्थान वर्तमान गाकरोंकी वासभूमि और वही अभिसार राज्यकी पूर्वतन प्रजाके वंशधर जैसे अनुमित होते हैं । वह भारतवासी हिन्दू नहीं हैं । इतिहास पढ़नेसे यह भी ज्ञात होता है कि अभिसारराज उत्तर मद्र (Media) तथा पारदनिवासी सर्पोपामक शक रहे । पुरविक्ता एरियानने उक्त मतको सम्भवपर और ययार्थ जैसा ठहराया है । फिर मुसलमान लेखक लिखते और यह अपने आप भी कहते हैं कि वह अफ्रीशियाके कयान देशसे जा करके पञ्जाबके उत्तरपश्चिमांशमें बसे और मङ्गल नगरके उस पार वितस्ता किनारे अत्रीयान नगरमें राजधानी स्थापन करके रहे । पुरातत्त्वविद् कनिङ्गहाम सहज इन दोनों प्राच्य नामोंसे अनुमान करते कि वह पुराने अरवी या अरफी लोगोंकी शाखा ठहरते हैं । किसी समय वह सीभाग्यवान् और बलवान् थे, पूर्वाभिमुखी हो करके भारत जा पहुंचे । खुरासानके अन्तर्गत वर्तमान निशापुरमें उनकी राजधानी रही । इतिहासवेत्ता द्रावीन उक्त स्थानवासी लोगोंको 'अपर्णी' जैसा

उल्लेख किया है । यह भी टाही शाखान्तर्भूत तूरानी जाति हैं । कनिङ्गहामके सिद्धान्तानुसार हरकनियार्के रहनेवाले अरवीने दरायु न्यस्ताम्स अथवा तत्पूर्ववर्ती किसी शक राजाके राजत्वकालको वितस्तातीर अत्रीयान नगरमें जा करके उपनिवेश स्थापन किया और हिरोटोडाम वर्णित "मागर" वा "माकर" शब्दसे गाकर नाम निकला । शब्द-तत्त्ववेत्ता वतलति कि गाक, साकर और गाकर शब्दसे किसी लौहाम्बका बोध होता जो अवर नामधेय लोगोंका जातीय अस्त्र है । सुतरां देश और कालभेदसे मागर वा आवर अम्बधारी द्रावोकिखित अपर्णियों (हरकनियावामी अरवी) ने गाकर जैसा नाम धारण किया ।

मिया इसके डिओनिसियाम, प्रिमकियानाम प्रभृति ऐतिहासिकोंके ग्रन्थोंमें किसी मन्डिगाली गागर जातिके उल्लेख है । पञ्जाब प्रदेशकी शतद्रु और अशिकी नदी निकटवर्ती तचशिला राज्यके पहाड़ोंमें उनका वास था । सम्भवतः वही वितस्ता-नदीतीरवर्ती गाकर जाति हैं । वह वेकस हियाक्रिसका उपासना करते थे । (Dionysius orbis descriptio, V.1143. Priscianus, V. 1050) कीर्त्त अनुमान करता कि सिन्धु और वितस्ता नदीके मध्यवर्ती गन्धगड़ पर्वत पर 'मसवानी' अफगान रहते हैं । वहां उनकी 'गन्धगड़िया' कहा जाता है । यही गन्धगड़ पर्वत किसी कालको गाकर वा गागर जातिका सुरक्षित आवासस्थान रहा । एतद्व्यतीत और भी मालूम पड़ता कि स्यालकोटके यादववंशीय राजा रसालुके साथ गन्धगड़वासी दस्यूओंकी विशेष शत्रुता रही । पीछेकी उनके वंशधरों कर्त्तक अभिसारके गागर सदल दमित हुए और दो शताब्दियोंतक निस्तोज रहे । सुतरां अनुमान लगता है कि गन्धगड़वासी 'गन्धगड़िया' और पाश्चात्य इतिहासगत गागर (Gargaridae) शब्द गाकर जातिका नामान्तर मात्र है ।

'परिष्ठा'में लिखा है कि उन्होंने पञ्जाबके अन्तर्गत भेरा और जम्बु प्रदेशके ककवाहवंशीय राजा केदारको राज्यसे निकाल बाहर करनेमें तदीय आत्मीय राजा दुर्गाका साहाय्य किया । ६३ हिजरीकी गाकरोंने अफगानीसे सन्धि करके लाहौरके राजाकी वशीभूत किया और

उनके राज्यका कुक्ष अथ अपने आप ले लिया। १००८ ई०की जब महमूद गजनवीने भारत आक्रमण किया, कोई ३०००० गाकरोंने पैगावरके पास हिन्दू राजाओंकी साहाय्य दिया। उन युद्धमें महमूदकी प्राय ५००० सेना धिनट ४ई। १०७८ ई०को इब्राहीम गजनवीने युध पर्वतजात दारपुर दुर्ग अधिकार किया। यह दारपुर अजानपुरमें कुक्ष उत्तरकी वितस्ताके तीर पर अवस्थित है। नगरके लोग खुरा सानिध्याक वगधर है। अक्राभया कर्तक स्वदेगसे ताडित होने पर वह उक्त भ्यानथ जा बसे हैं। वह भी इनको ही तरह अपने अपने घरमें विगाह करते और किसी अपर जाति वा योणीसे सम्बन्ध नहीं रखते। कितने ही लोगोंने अनुमानमें गाकर और दारपुरके खुरासानी एक जाति हैं। चन्द बरटाई कविके पृथ्वीराजरायो नामक ग्रन्थमें लिखा है कि ११८० ई०को मुहम्मद गोरीके भारत आक्रमण करने पर उनके सरदार मलिक हयातने पृथ्वीराजकी महायता दी।

कहते हैं कि मुहम्मदगोरीके श्रेष्ठ राजत्वमें गाकर सरदार मर्यप्रथम इस्लाम धर्ममें दीक्षित हुए। परन्तु इससे पहले ही उन्होंने विजातीय सपाधि 'मलिक' ले रखा था।

१२०५ ई०को इन्होंने पञ्जाबके लाहौर राज्य परन्त आक्रमण किया। १००६ ई०की यह मुसलमान सुलतानके खोर्मेमें युध पडे और कातिसे हुरी भोक उनकी मार डाला। परन्तु १२२५ ई०की इन्के मुगल सम्राट बाबरकी अधीनता माननी पडी। १०६५ ई०की रावल पिण्ड्रीके समतल क्षेत्रसे मिथो द्वारा खदेरे जाने पर यह मूरी पर्वत पर पड़ च करके स्वाधोन भावसे राज्य करते रहे। वही १८३० ई०क, मिथोमें इनकी लडाई हुई। बहुत रक्त पातके पीछे इन्होंने पराभव माना था। १८४८ ई०की रावलपिण्ड्री मिथोके हाथमें चंगरीओके अधिकायमें आने पर यह पार्वती ४ वर्ष तक उनसे लड़ते रहे और १८५० ई०की पञ्जाबकी राजधानी मूरी नगर पर चढ़ गये।

चापकन यह पञ्जाब प्रदेशके रावलपिण्ड्री, वितस्ता तीरपर्वती प्रदेश, गुजरात और हजारा नामक भ्यायने रहते हैं।

परिश्रामे लिखा है—कन्यासन्तान होनेसे कोई भी गाकर उससे बाजार ले जाता और वहा एक हाथने कन्या और दूसरे हाथसे पैसो हुरी ले करके चिन्ताता है, यदि उस कन्याका कोई प्रार्थी हो, शीघ्र आ जाये। किलीके आकर न पहचनेसे तत्त्वणान्त नवजात कन्याका दो टुकड़े कर डालते हैं। उमो कारणसे इनमें एक स्त्रीके बहुतसे स्वामो देख पड़ते हैं। ई०से ३२० वर्ष पश्चे यूनानियोंने भारत आक्रमणके समय रावलपिण्ड्री प्रदेशमें शक जातीय 'तक' शाखाका वाम था। सम्भवत यह 'तक' मस्तत तकक शब्दका अपभ्र शब्द है। कारण शकी में सर्पोपामक कोई दूसरा नागव श भी होता है। बहुत लोग अनुमान करते कि तकव शीय शक लोगो को मुसलमानो ने गाकर या गाकर ऐसा कहा है।

गागर (हि० स्त्री०) गगरी, घडा।

गागरा (हि० पु०) १ नगर ६७। २ भगियोकी एक जाति।

गागरो (हि० स्त्री०) घडा, गगरो।

गागरौन—राजपूताना कीटा राज्यके कनवास ज़िनेका एक ग्राम और दुर्ग। यह अक्षा० २३ ३८ और देशा० ७६ १२ पूर्वेमें यह और कानोसिन्धु नदोके सङ्गम स्थल पर भानरापाटन छावनेसे टाई मीन उत्तर-पूर्व अवस्थित है। गागरौनका किना राजपूतानामें एक बहुत मजबूत किला है। कहते हैं—उमो बीड राजपूतोंने बनाया था। ई० १२ वी शताब्दीके अन्त तक उनका इस पर अधिकार रहा, फिर खोची चौहानोंने आकर दखल किया १३०० ई०को खोचियोंने सफनतापुयक अपने राजा जीत सिङ्गके अधीन पला उद्दीनका पपरोध रोका था। किन्तु प्राय १४२८ ई०को राजा चचनदासने मानवके शत्रुगाहसे गागरौन अधिकार किया। १५१८ ई०की मुसलमान ऐतिहासिके वर्णनानुसार भां इसके अधिकारी थे, परन्तु महमूद गिलघीने उनका आक्रमण करके पकड़ लिया और मार डाला। इसके थोडे ही दिनके पीछे मिगहके राजा सपाम सिङ्गने मुहम्मदकी इराया और १५३२ ई० तक गागरौनको अपने अधिकारमें रखा। फिर गुजरातके बहादुर शाहने इसे अधिकार किया था। तीस वर्ष पीछे मानव जाते हुए चचर बादशाह यह

आ पहुँचे। दुर्गके सेनापति उनको भेंट देकर मिले थे। १८वीं शताब्दीके आरम्भ तक यह सुगलोंके अधि-कारमें रहा। फिर बाटशाहने कोटाके महाराव भीम-सिंहको गागरीन प्रदान किया था। अन्तको युवराज जालिमसिंहने किले को बना और बड़ा दिया।

ग्रामसे दुर्ग पृथक् है। दोनोंके बीच एक मजबूत जंजी दीवार खड़ी और चटानोंमें गहरी खाई खुदी है। आने जानेके लिये पत्थरका एक पुल बना है। यहाँके तोते बहुत सुहावने होते और सिखानसे बहुत जल्द पढ़ने लगते हैं। पहले कोटा महाराजकी गागरीनमें एक साल रही इसकी आवादी कोई ६०१ होंगी।

गागला—बङ्गालके रङ्गपुर जिलेका एक वाणिज्यप्रधान गण्डग्राम। यह अक्षा० २५' ५८ उ० और देशा० ८८' ४०' पू०में धरला और शङ्ख नदीके मध्य अवस्थित है। यहाँ प्रतिवर्ष उत्पन्न द्रव्योंमें मन्, तम्बाकू और अदरककी रफतना अधिक होती है।

गागाभट्ट—दिनकर भट्टके पुत्र, रामेश्वरके पौत्र और सुप्रसिद्ध कमलाकर भट्टके भ्रातृपुत्र। इनका प्रकृत नाम विन्नेश्वर भट्ट रहा। १६१२ ई०को यह विद्यमान थे। इन्होंने अशौचदोषिका, दिनकरोद्योत, निरूढपशुबन्धनप्रयोग, (वौद्ध), पिण्डपितृयज्ञप्रयोगसार, जैमिनीसूत्रकी भट्टचिन्तामणिनाम्नी टीका, मीमांसाकुसुमाञ्जलि, चन्द्रालोककी राकांगम नाम्नी टीका, श्लोकवार्तिककी शिवाकोटय नाम्नी टीका, सुज्ञानदुर्गादय और आपाजी पुत्र बल्लाल वर्माके आदेशसे कायस्थधर्म प्रकाश नामक संस्कृत ग्रन्थ प्रणयन किया।

गाङ्ग (सं० पु०) गङ्गायां अपत्यम्। १ गङ्गापुत्र, भीष्म। २ कार्तिकेय। ३ स्वर्ण, सोना। ४ धुस्तर, धतूरा। ५ केशर। ६ हिलसा मछली। (त्रि०) ७ गङ्गासम्भूत जलादि, गङ्गाका निकाला हुआ जल। (स्त्री०) ८ मेघनिस्तृत जलविशेष, वर्षाका पानी। सुश्रुतके मतसे यह गङ्गाजल समस्त दोषोंका नाशक, बलकार, पवित्र, रसायन, अम, क्षान्ति और पिपासानाशक, कण्डुदोषनिवारक, लघु, मूर्च्छा, तृष्णा, वमि तथा मूत्रस्तम्भनिवारक है। दिन और सन्ध्याके समय यह जल पड़ता है। ९ नदीका तट, नदीका किनारा। (पु०) १० महा-

लक्ष्मीके भक्त च्यवनमुनि गौतमके एक चन्द्रवंशीय राजा आयान्तिके पुत्र। ११ वागीश्वरी देवीके भक्त अतिगोपीय एक राजा, प्रसाधिके पुत्र १२ एक राजवंश। गंगे-गण्डको। गाङ्गट (सं० पु०) गाङ्ग नदी तटादिकमटति अट-अच्। मत्स्यविशेष, भींगा मछली।

गाङ्गटक (सं० पु०) गाङ्गट स्वार्थ कन्। गाङ्गटमत्स्य, भींगा मछली।

गाङ्गटय (सं० पु०) गाङ्गट स्वार्थ टक्। गाङ्गट मत्स्य, भींगा मछली।

गाङ्गताक—बङ्गालमें सिक्किम राज्यको राजधानी। यह अक्षा० २७' २०' उ० और देशा० ८८' ३८' पू०में अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ७४८ है। सिक्किममहाराजका यहां एक वासभवन है।

गाङ्गदेव (सं० पु०) सूक्तिकर्णामृतमें उद्धृत एक कवि। गाङ्गपुर—१ छोटा नागपुरके अन्तर्गत एक देशीय राज्य। किसीके मतसे गङ्गवंशाद्यसे प्रतिष्ठित होनेके कारण इसका नाम गंगापुर, गंगपुर या गांगपुर पड़ा है।

२ बङ्गालमें उड़ीसाका एक करट राज्य। यह अक्षा० २१' ४७' से २२' ३२ उ० और देशा० ८३' ३३' से ८५' ११' पू०में अवस्थित है। भूपरिमाण २४८२१ वर्गमील है। इसके उत्तरमें जशपुर राज्य और रांची जिला; पूर्वमें सिंहभूम, दक्षिणमें बोनाई, सम्बलपुर और वामरा राज्य तथा पश्चिममें समुद्र पृष्ठसे ७०० फीट ऊँचे पर एक विस्तृत समतल क्षेत्र है। यहांकी प्रधान नदियां इव, संख और कोइल हैं। 'इव' जशपुरसे निकल कर उक्त राज्य होती हुई संबलपुरके निकट महानदीमें गिरी है; संख रांचीसे और कोइल सिंहभूमसे निकली है। संख तथा कोइल नदियां गांगपुरके निकट एक दूसरीसे मिल कर उड़ीसा हीकर प्रवाहित है। यहांके जंगलमें बाघ, चीता-बाघ, भेड़िया, तरसु (लगरवगा), भिन्न भिन्न तरहके हिरण और पक्षी पाये जाते हैं।

प्राचीन समय यह राज्य नागपुरके मराठा राजाओंके अधीन था, किन्तु १८०३ ई०में देवगांवकी सन्धिके अनुसार ब्रिटिशके हाथ आया। १८०६ ई०में ब्रिटिश सरकारने यह राज्य फिर उन्हें लौटा दिया था।

राज्यकी आमदनी कुल २४०००० रु० है, जिनमेंसे

दृष्टिय सरकारको १२५० रु० कर देना पडता है। यहा के प्रधान मन्त्रके अनुमार अपना राज्यकार्य चलाते है। प्रति वीसवर्षमें सरकारमें कर घटाया या बढाया जाता है। उद्योगिक कमिश्नरके अधीन राजाको चलना पडता है। फरका घटाना या बढाना, अच्छी तरहसे राज्य कार्य चलाना, उचितरूपसे न्याय करना तथा शफीम, नमक और शराब पर टैक्स लगाना, ये सब कार्य कमिश्नरको देख भालमें है। राजा कौदर्योको दो वष कारागार और २०० रु०का दण्ड दे सकते है। उक्त दण्डमे यदि कुछ अधिक दण्ड देनेकी इच्छा हो तो राजा बिना कमिश्नरको अनुमतिसे नही कर सकते है।

१९१५ राज्यमें ८०६ गाँव लगते है। लोकसंख्यामें १४६५४८ हिन्दू, ८८८४८ आदीम जाति, १६०० मुसल मान और १७५८ ईसाई है। नदियोंसे परिवेष्टित रहनेके कारण यह राज्य बहुत उपजाऊ है।

यहाको प्रधान उपज धान, ईख और रेडी है। यहाके जंगलमें लाख, धूना (धूप) और कच्चा यथेष्ट पाये जाते है। डिगोरराज्यमें कोयलेकी खान है। यहाँ चूर्ण कढड और लोहे भी अधिक परिमाणमें मिलते है। इस राज्यमें १३ पुलिस स्टेशन है जिनमें कुल २४ पुलिस इन्सपेक्टर और १३४ कोन्स्टेबल रहते है, पुलिस विभागमें २०००० रुपये खर्च होते है। इसमें अनाथा चौकीदार है जिन्हे जागीर दी जाती है। सुभाडोंमें एक कारागार है जिनमें सिर्फ ५० केटो रह सकते है। इस राज्यमें एक अस्पताल, १ मिडिल स्कूल, ७ प्राइमरी स्कूल और ८ लोअर प्राइमरी स्कूल है।

गाङ्गवध, १९१५ म ६६।

गाङ्गयनि (म० पु०) ग गाया अपत्यम् । १ भौष ० कात्ति ३५ । ६ एक प्रवर ऋषि ।

गाङ्गिनी (मं० स्त्री०) ग गार्गी एक धारा । यह व गर्में गाङ्ग नगरके निकट ग गर्मं भा मिनी है ।

गाङ्गय (म० पु०) ग गाया अपय ठक् । १ भौष ।

गाङ्गिणी महात्म्य भद्रयति चर्च १० । (६वीं अध्याय १।१।१०)

२ कार्तिकेय । (भाष्य १।१।१० ५०) ३ दिनसा मदनो ।

४ मद्रमुक्त मद्रमोया । (का०) ग गाया अपत्य ठक् ।

५ शर्प, मोथा । (म ११५५) ६ भृशूर, धूरूर । ७ कजि, क

मद्रमोया । ८ सुस्त, मोघा । इसग पर्याय—मेवाश्व, मुम्ना, गागीय और मद्रमुक्तक है । (त्रि०) ८ ग गा जलादि ।

गाङ्गयवग - दक्षिणापत्रका पराक्रान्त राजवध । दक्षिणात्यके दक्षिणागमे इनको कोङ्ग, या कौङ्गो और उत्तरागमें गङ्ग या गाङ्गेय कहते है। यह ठगुगनिका कोई उपाय नही है, किस पूर्व कालको उनका प्रथम अर्थ द्य हुआ। महागज गोरचोडके ताम्रगामन पाठमें समझ पडता है कि चाणुक्वराज प्रथम मिजरादित्यके पुत्र विशुवर्धनने गर्जो और कटभ्योंको पराजय करके दक्षिणापथमें राज्य विस्तार किया। इन्हीं विशुवर्धनके प्रपौत्र कीर्तिवर्मदेव ४८८ शकको राजत्व करने थे। ठिमे स्थल पर कीर्तिवर्म देवने अन्तत एक शत वर्ष पूर्व यिगावर्धनका आविर्भाव मान लेते भी प्राय ३८८ शक (४६७ ई०) की गङ्गवशका अस्तित्व ठहरता है। किमो किमी ऐतिहासिकके मतमें पराक्रान्त आन्ध्रुज्य राजाधेके अवमान पर ६० हितोय गताष्टीको गङ्ग और पञ्च राजा दक्षिणात्यके कोन्हापुर, धारवाड, वनजामी आदि स्थानों का राजत्व करते थे।

गांगियराज अनन्तावर्मा (चोडगङ्ग)के १०४१ शकको प्रदत्त ताम्रगामनमें लिखित हुआ है—

१ ततो यथादिदि निगारिदि निग म तरन्व मुहव रैव ।
 मपुत्र मोर्वाचगुरादि निवा मानमदन्तादि दि ४४४ ।
 चतुवम मावम सुधिरमतिदिशा मु३४५ ।
 का गङ्गामाराधो निवामतिरादर १५५ वर १५ ।
 चनेय मीदिव सुतमममममम ५ ५ ।
 मममम ५ मममं मुंदि जवदि मममम ३दि ४"

चन्द्रमें बुध, बुधके पुत्र पुत्रगा तत्पुत्र भागु भायुके पुत्र नदुप, नदुपके लठके यशति, यशतिके भेटे सुर्षसु और तत्पुत्र गांगिय थे। सुर्षसुने गङ्गादेयीको आगमना करके गांगिय नामक पुत्र लाभ किया था। उन्हीके प ग धर 'ग गाम्यय वा गांगिय कहन्तते है। उक्त ताम्रगामन और कटभ निनेमे नदायिकृत उक्तनराज और गोगर 'महट्टेयके ताम्रगामनमें भी गांगियको पर पुवादिहममें प गाथनी इस प्रकार दी गयो है—यिरोचन, मयेय या मयेय, भाभान्, दलगेन, मोम या मोम्य धरदस, शारांग चिवांगद शोरोधन, धर्मो परा ३१, जयगेन,

विजयसेन, वृषध्वज, शक्ति, प्रगल्भ और फिर तत्पुत्र कोलाहल। इन्हीं गङ्गवाड़ी राज्यमें कोलाहलपुर नामक नगर स्थापन किया। उक्ताराज नरसिंहदेवके तीनों प्रथम ताम्रफलकीमें लिखा है कि उन्हीं कोलाहलका नाम अनन्तवर्मा था। उनके पुत्र पौत्रोंने बहुकाल कोलाहलपुरमें राजत्व किया।

चोड़गङ्गका उक्त ताम्रशासनपत्र देखते कोलाहलके पुत्रका नाम विरोचन था। फिर ८१ राजाओंके कोलाहलपुरमें राजत्व करने पीछे उनके वंशमें वीरसिंह नृपतिने जन्म लिया। वीरसिंहके कामार्णव, दानार्णव, गुणार्णव, मारसिंह और वज्रहस्त पांच लड़के हुए। ज्येष्ठ कामार्णव पितृव्यकी गङ्गवाड़ी राज्य प्रदान करके चारों भाइयोंके साथ अन्य राज्य जीतने चल दिये।

गङ्गवाड़ी और कोलाहलपुर कहाँ हैं? यह दोनों स्थान बखड़े प्रेसिडेन्सीमें हैं। कलभारिका गिलाफलक पढ़नेसे अनुमित होता, किसी समय वर्तमान बेलगाँव, धारवाड़ और कोल्हापुर गङ्गवाड़ी देशके अन्तर्गत था। नरसिंह देवके बड़े ताम्रफलकमें १५ कामार्णवके प्रसङ्ग पर समुद्रतटको गोकर्णस्वामीका उल्लेख है। चोड़गङ्गके ताम्रशासनमें लिपिबद्ध हुआ है—महीपति कामार्णवने कलिङ्गजयसे पहले गोकर्णस्वामीकी आराधना करके प्रसादसे साम्राज्य चिह्नरूप वृषभलाञ्छन पाया था।

सञ्चाद्रि पर्वत किनारे समुद्र तट पर अक्षा० १४°

* नरसिंह देवके वृहत् ताम्रशासनमें लिखा है—गङ्ग कामार्णव प्रभृति भिन्न राज्य जय करने लगे, नरसिंह नृपति सिंहासन पर अधिष्ठित थे। क्या वही कामार्णवके पितृव्य थे?

† धारवाड़का पुरातत्व देखनेसे समझ पड़ता कि १०५५ ई०को गङ्गवाड़ी देशमें चालुक्यराज सोमेश्वरके पुत्र पृथ विद्वानादित्यका शासन था। बम्बई प्रान्तीय बेलगाँव जिलेके कलभावि ग्राममें राममन्दिरके सम्मुख किसी गिलाफलक पर एक खोदित लिपि है। उसमें लिखा है कि गङ्गवाड़ी विषयके अन्तर्गत कादलवल्लीके कुमुदवाड़ ग्राममें गङ्गराज सेगोइ पेम्पेनेदिने जिनेन्द्रभवन बनाया था। यह गङ्गवाड़ी बहुत दिनसे गङ्गराजको लीलाभूमि रहा। उक्त खोदित लिपिमें गंगमहामण्डलेश्वर कक्षरसको कथा भी उल्लिखित है। कादलवल्लीका वर्तमान नाम कादल्लो और कुमुदवाड़का कलभावि है। दोनों स्थान रुम्पगाँवसे प्रायः ४ कोस दक्षिण अवस्थित हैं।

‡ गांगियराजोंके ताम्रशासनमें कङ्कसे लगी हुई तांबे की बेंसी ही वृषभलाञ्छनकी स्मृति है।

३२° ३०' और देशा० ७४° २२' ३०' पूर्वमें गोकर्णनामक प्रसिद्ध तीर्थ है। वहाँ गोकर्णस्वामीकी स्मृति प्रतिष्ठित है। इन्हीं गोकर्णसे २ कोस उत्तर गंगावालि नदीके तीर गंगवालि नामक कोड़े बन्दर देख पड़ता है। वहाँ इस समय भी गंगदेवीका पुरातन मन्दिर विद्यमान है। सम्भवतः यह स्थान गंगवंशियोंकी बहुत पुरानी राजधानी गंगवाड़ी है। गंगवालि-प्रवाहित समुद्रय भूभाग पहले गंगवाड़ी राज्य जैसा प्रसिद्ध था। फिर कोलाहल (अनन्तवर्मा) के आधिपत्य काल यही कुछ राज्य उत्तरको कोल्हापुर, धारवाड़ और बेलगाँवके कुछ अंग पर्यन्त विस्तृत हुआ। मालूम होता है कि उसी समयसे गङ्गवाड़ राज्य ८६ सङ्घस्य ग्रामपिण्डित जेमा गण्य हुआ। गांगियराज १५ अनन्तवर्माने अपने नाम पर जो कोलाहलपुर नामक नगर बसाया, आजकल कोल्हापुर कहलाया है। वर्तमान कोल्हापुर नगरकी अवस्था पर्यावेक्षण करनेसे अतिशय पुरातन जैसा समझ पड़ता है। यहाँ बहुत पुराने लाट अक्षरोंमें खोदित गिलानिपि विद्यमान है। महालक्ष्मीका मन्दिर अतिप्राचीन और प्रसिद्ध है। करगोर देवा, चोड़गंग प्रभृतिके विस्तृत ताम्रशासनमें पहले ही लक्ष्मी देवीका स्तव दृष्ट होता है। मालूम पड़ता है कि उक्त महालक्ष्मी ही गांगिय राजाओंकी दृष्ट देवी थीं।

प्रतत्स्वविद् राइस साहबके मतानुसार महिसुर राज्यके पूर्वांशमें अवस्थित कोलार जिलेके प्रधान नगर वर्तमान कोलार नामक स्थानमें प्राचीन कोलाहलपुर था।

पश्चिमीय वंश।

गाङ्गवंश दो शाखाओंमें विभक्त है, पूर्विय और पश्चिमीय। पश्चिमीय शाखाका विवरण इस तरह है—कहा जाता है कि पूर्व कालको गंगवंशके राजा कदम्बरराज मृगेश्वरमणि पराजित किये गये थे। महाकूट-शिलालेख पढ़नेसे जाना जाता है ये विपन्न जनताके अन्तर्गत रहे

* सम्भवतः उक्त समुद्रतीरवर्ती गाङ्गके भागसे १५ कामार्णवने गङ्गस जिलेके महेंद्रगिरि पर खतन्त्र गोकर्णस्वामीकी प्रतिष्ठा की होगी। क्योंकि चोड़ गंग और अपरापर गांगिय राजाओंके ताम्रशासनमें महेंद्रगिरिस्थ गोकर्णस्वामीकी स्मृति लिखी हुई है। महेंद्र गिरि देख।

शोर ५८७ ई०से प्रथम कीर्तिवर्मासे परास्त हुये थे। लेकिन पेश्वान गिन्नालिपिसे ज्ञात होता है कि ६०८ ई० से ये द्वितीय पुलिकेशीसे पराजित हुए थे। विनयादित्यके हरिहरम्हाशसे मान्यम पडता है ये पश्चिमीय चालुक्य राजाश्रीके पम्परागत भूत्व थे। इसी चालुक्य वंशसे प्रथम कीर्तिवर्मा पुलिकेशी तथा विनयादित्य राजा हुए थे। परन्तु यह निश्चय है कि प्राचीन समय भारतके पश्चिम भागसे गङ्गव शके राजा राजत्व करते थे। उनसेसे प्रधान प्रधान राजाके नाम और राजत्वकाल इस तरह हैं—हरिवर्मा २४८ ई०से, धियुगोत्र ३५१ ई० से, अधिनोत कोंगनी ४५४से ४६६ ई०तक, दुर्विनीत कोंगनी ७६२से ७७६ तक।

महिसुरके तलकाड, भिवार और शिवरपन्न गिन्नालिपियोंसे जान पडता है कि ग गव शके प्रथम राजा श्रीपुरुष पृथ्वीकोनगणी रहे। लेकिन ये किस कालमें राजा हुए थे, इसका पूरा पूरा हान पता नहीं लगता है। श्रीपुरुषके घाट इस वंशमें सवमार नामके एक और राजा हो गये हैं। इन्हीं दोनों राजाश्रीके समयसे ग गव शका विवरण आरम्भ हुआ है। इन दोनोंमेंसे एक राष्ट्रकूटके राजा भ वसे पराजित हो कर ७८३ ई०में बन्दी हुए थे। भुवकी मर जानी पर भी उनके लडके त्तोय गोविन्दने उन्हें बहुत दिनों तक कारागारहीमें रखा था। जब ये छोड दिये गये तब पूर्वी चालुक्य राजा नरेन्द्रस्वराजने ग गव शके राजाश्रीके साथ बारह वर्ष धनधोर लडाई की, अन्तमें चालुक्य राजाकी जीत हुई। महिसुरकी हगनी गिन्नालिपिसे जाना जाता है कि सत्यवाक्य कौंगनीवर्म गगधर्ममें एक और राजा हो गया था। इरिया नामके एक कोई प्रसिद्ध राजा उस समयमें राजत्व करते थे। सत्यवाक्यसे इरियाको बहुत काल तक लडाया पडा था। इरियाके बाद उनका लडका राचमन उत्तराधिकारी हुआ। महिसुरके भातकुर गिन्नालेखसे पता लगता है कि ८४० ई०में सत्यवाक्य को गुनीवर्मने राचमन पर चढाई की और उसे मार डाला था।

धारवार जिलेको ह्येपान गिन्नालिपिसे ज्ञात होता है। यूनान नामके एक और राजा गङ्ग वंशमें हो गये थे। इन्हीं राष्ट्रकूटके राजा अमोघवर्षकी लडकीसे विषाह

रिया था। दहेजमें उन्हें पुनोगड जिला मिला था। कुछ कालके बाद राष्ट्रकूटके राजा त्तोय कृष्णकी अनुमतिसे वृत्तगने चोलवशके राजा राजादित्यका प्राणनाश किया, वयो कि राजादित्य उस समय त्तोय कृष्णका कहर शत्रु हो गया था। इस पुरस्कारमें कृष्णने वृत्तगको चार और जिले प्रदान किये। इस समय वृत्तगने अपनी उपाधि 'महाराजाधिराज' की रक्की। वृत्तगकी अमोघवर्ष की लडकीसे एक पुत्र हुआ जिसका नाम रङ्गगढ़ रखा गया। वृत्तगकी 'कल्लकसी' दूसरी स्त्रोमें भी सत्यवाक्य कौंगनीवर्म नामक एक पुत्र था। गङ्गवर्षमें व बहुत प्रभाव शान्ती राजा हो गये थे। ये ८६४ ई०में राजगहो पर आरूढ हुए थे। इन्हें परमेस्वर और महाराजाधिराजकी उपाधि मिली थी।

इनके समयमें गङ्गराज बहुत दूर तक फैल गया था। इस समय चालुक्यराजाका भी प्रताप बहुत बढ़ गया था। इन्हीं राष्ट्रकूट और ग गव शके राजा पर आक्रमण किया। इस बार इन्हीं ने सफलता प्राप्त नहीं की, फिर दूसरी बार ८७३ ई०में चतुर्थ इन्द्रकृष्णके पोतेने उन पर धावा किया और राष्ट्रकूटके राजा हिलोय कल्लकी परानाश किया। ग गव शके राजा सत्यवाक्यवर्मने चालुक्य राजाके साथ घसमान युद्ध कर उ हें हरा दिया और राष्ट्रकूटके राजाके बहुतसे राजभोग अधिकार कर स्वतन्त्र हो गये। सत्यवाक्यवर्मकी चामुण्डराय नामक एक प्रधान मन्त्री थे जिन्हीं ने 'चामुण्डराय पुराण' लिखा है और जिनकी प्रार्थनासे जैनसिंहातका प्रसिद्ध ग्रन्थ गोग्गटसार श्रीमदाचार्य नेमीचन्द्र सिंहात चक्रवर्तिने लिखा।

महिसुरके वेनूर गिन्नालेखसे पता लगता है कि ग गव शके अन्तिम राजा ग गापरमर्दे थे। ये १०२२ ई०में राजत्व करते रहे। इनके समयमें चोल राजाने पुन आक्रमण कर ग गराजाको इस बार पूर्णरूपसे पराजित किया और उनसे बहुतसे देश अपने राजामें मिला लिये। क्रमश इस वंशकी आभा तथा स्वाधीनता सदाके लिये जाती रही।

वेनगावके अन्तर्गत कलमाषि ग्रामकी खोदित लिपि देख करके प्रव्रतल्लिपिदृ फ़िट्टमादेव अनुमान करते कि यह गृटीय ११वीं शताब्दीकी निरकी हुई है। सुतग

यह भी माना जा सकता है कि दक्षिणात्यके उत्तर-पश्चिमांगमें ई० ११वीं शताब्दी तक गंगमहासमुद्रक्षेत्र विद्यमान थे। उक्त शिलाफलक पढ़नेसे मालूम पड़ता कि उन्होंने शेष दशमें जैन धर्म अवलम्बन किया था

पूर्वोक्त शाखा।

सम्भवतः नरेन्द्रचक्रवर्ती के पूर्व ही कामार्णव प्रभृति पांचों भाई गंगवादी विषय परित्याग करके कलिगराजसे उपस्थित हुए। चोड़गंगके ताम्रशासनमें लिखा है—

कामार्णवने चारों भाइयोंके साथ चालुक्यराज वालादित्यको पराजय करके कलिगराज लिया और 'जन्तवुरम्' नामक स्थानमें राजधानी स्थापन करके राजत्व किया। उन्होंने अनुज दानार्णवको कण्टकवन्धुरकन्धर, गुणार्णवको आम्बवाड़ि, मारसिंहको मोदासगडल और वज्रहस्तको कण्टकवर्तनो दी थे।

१म कामार्णव जिस जन्तापुर-नगरमें राजत्व करते थे, सम्भवतः वह स्थान मन्द्राज प्रेमिडिन्नीके विशाख पत्तन जिलेमें गजपतिनगरके अन्तर्गत "जयन्ती अग्रहार" नामक ग्रामके निकट होगा। जन्तापुर संस्कृत जयन्ती-पुर शब्दका अपभ्रंश है। वर्तमान जयन्ती अग्रहारमें अनेक प्राचीन शिलालिपियां दृष्ट होती हैं। वर्तमान विशाखपत्तनके नाना स्थानोंमें गांगीयराजाओंकी कीर्तियां विद्यमान हैं।

वर्तमान गञ्जाम जिलेके अन्तर्गत श्रीमुखलिङ्गम्, श्रीकूर्मम् प्रभृति नानास्थानोंसे इस वंशीय नृपतियोंकी बहुत शिलालिपियां निकली हैं। सिवा इसके विशाख पत्तनसे आविष्कृत चोड़गङ्गके तीन ताम्रशासन, कटक जिलेके अन्तर्गत केन्दु पटनासे आविष्कृत २य नृसिंहदेवके ३ ताम्रशासन और पुरीसे आविष्कृत ४थे नृसिंहदेवके भी ३ ताम्रशासन मिले हैं। फिर समसामयिक मुसलमान इतिहाससे इस गङ्गराजवंशका जो परिचय चला है, उमीके साहाय्यसे पूर्वशाखाका संक्षिप्त इतिहास लिखा गया है।

पहले ही लिखा जा चुका है, कि १म कामार्णवने दानार्णवको "कण्टकवन्धुरकन्धर" नामक स्थान प्रदान किया। यह स्थान गोदावरी जिलेके तनुकु तालुकके

अन्तर्गत कण्टक जैश अनुमित होता है। प्राज भी कण्टक नामक प्राचीन ग्राममें प्राचीन देवान्ध्र और खोदित शिलाफलकादि देखे पड़ते हैं। दानार्णवके पुत्र २य कामार्णव "नगरम्" नामक स्थानमें राजत्व करते थे। गोदावरी जिलेके नर्मापुर तालुकमें पुरातन दुर्गविशिष्ट 'नगरम्' नामक एक पुराना गांव है। सम्भवतः यही पढ़ने कामार्णवका राजधानी था। मुसलमानोंके उपद्रवसे वह नगर जितना विध्वंसित गया है, किन्तु कौड़ी करके पूर्व गोरदको ढोई भी चीज नहीं।

शोध होता है कि कामार्णवके समय कलिगराज उत्तरकी गञ्जाम और दक्षिणका कृष्णा नदीके उत्तर तीरे पर्यन्त विस्तृत था। चोड़गङ्गके ताम्रशासनमें १म कामार्णवके पुत्रादिका उल्लेख नहीं है। किन्तु उक्त राज २य नरसिंहदेवके बड़े ताम्रशासन पर क्षादग्र शीकमें लिखा है कि कामार्णवके पुत्र पौत्रोंने बहुदिन राजत्व किया था। वह यदि प्रकृत हो, तो अनुमान किया जा सकता है कि १म कामार्णवके पुत्रपौत्र गोदावरीके उत्तरांग और दानार्णवके वंशधर प्रथम गोदावरीके दक्षिणांगमें राजा थे। १०४० शकाब्दित चोड़गङ्गके ताम्रशासनमें लिपिबद्ध हुआ है—

"म राजराजः प्रथम जयन्ध्र, पतिर्भूय दक्षिणदेशेऽस्ये ।

द्विराजमानासथ राजमन्त्रोमुदृष्टयथेऽस्ये भुजगशाम् ॥

शक्या वैको सर्पटर्पाः पामोऽथेन मिवाशाम्

चोडश्याम मन्त्रि बिश्याटेऽस्यै निमन्त्रम् ।

कापशाना परमणरथ राजराजं विदिकं

लक्ष्मीभाजं सुधिरमकरन् प्रथिमां दिग्धाम् ॥"

(१०४० शकाब्दित तमरासुत्र ८१५८ छत्र)

(चोड़गङ्गके पौत्र) उन राजराजने प्रथम द्रमिल युद्धमें जयश्रीरूप दासिनोको लाभ किया था। फिर (राजेन्द्र) चोड़राजकी कन्या राजमुन्दरीका पाण्डिग्रहण किया। हठात् भाग्यविप्लव उपस्थित होने पर द्वितीय सुरपुरी जैभी वेङ्गी छोड़ करके चोड़राजरूप विपुल समुद्रमें निमग्नप्राय विजयादित्यको शरणागतवत्सल राजराजने पश्चिम दिक्में लक्ष्मोयुक्त किया था।

उक्त प्रमाण द्वारा नमस्कृत पड़ता कि पहले राजराज सुरपुरी जैसे वेङ्गी नगरमें राजत्व करते थे। फिर विजयादित्यको राजधानी छोड़ गये।

राजराजके श्वसुर महाराजाधिराज राजेन्द्र चोल (अपर नाम कुलोत्तुङ्ग) प्रदत्त शिलाफलक और ताम्रशासनमें लिखा है कि उनसे तदीय पितृव्य (पठ) विजयादित्यने बेङ्गी राज्य पाया था। इन विजयादित्यने ८८५से १००० तक पर्यन्त बेङ्गीमें राजत्व किया।* सुतरा सन्भवत ८८५ तकके पूर्व गङ्गवशीय राजराज और उनके पितृपुरुष बेङ्गी राजासे राजा रहे होंगे। गोदावरी जिलामें त्रेङ्गार तालुकके अन्तर्गत 'बेगी' नामक स्थानमें जो ध्वसावशेष पडा है, उसमें "सुरपुरी महेश" राजराजकी परिलक्ष्य वे गोत्रा कुल परिचय मिलता है। उसीसे ३ कोस दूर प्राचीन कीर्तियाली तडिकल पृथि ग्राममें अति पुरातन खोदित शिलानिधि शोभित गांगेय स्वामी या "गंगेश्वर" स्वामीका मन्दिर १ है। वह देवान्ध आज भी गंगवशीयोंका परिचायक स्वरूप वर्तमान है।

प्राचीन ताम्रशासन और पुरातन खोदित शिलालेख पढनेसे समझ पडता, किमी समय कलिगनगरमें गंगवशी राजाओंकी राजधानी रही। गङ्गाम प्रदेशमें वशधरा नदी जहा जा करके समुद्रमें मिलती है, ठोक उसी स्थान पर कलिगपत्तन १ नामक नगर और बन्दर है। प्राचीन कीर्ति और ध्वसावशेष देखनेसे वही कलिग राजाको राजधानी प्राचीन कलिगनगर जैसा स्थिरोक्त हुआ है। ताम्रशासनसे कलिगनगराधिष्ठित निम्नलिखित कई एक गांगेय राजाओंका नाम और परिचय मिला है—

५१ सवत्सरमें अनन्तवर्माके पुत्र देवेन्द्रवर्मा, ८० से १४३ सवत्सर तक राजसिंह इन्द्रवर्मा, १८३ सवत्सरमें गुणार्णवके पुत्र देवेन्द्रवर्मा, २५४ सवत्सरमें अनन्तवर्माके पुत्र देवेन्द्रवर्मा, ३०४ सवत्सरमें राजेन्द्रवर्माके पुत्र अनन्तवर्मा, ३५१ सवत्सरमें देवेन्द्रवर्माके पुत्र सत्यवर्मा।

उक्त सवत्सर मानो कोई विशेष अशुभ्याचक है और उक्त राजाओंका "सुभलाब्धन" चिह्नित ताम्रशासन पाठ करनेसे यह कलिगविजिता १म कामार्णवके वशधर जैसे समझ पडते हैं। पहले बतला चुके हैं कि दानार्णवके वशधर कलिङ्गके दक्षिणार्धबेङ्गी राज्यमें राजत्व करते थे। अब मालूम होता है कि २य कामार्णवके वशर कलिगके उत्तरार्धमें अधिष्ठित रहे। किन्तु इसका कोई भी प्रामाणिक निदर्शन नहीं, वह सवत्सर किस समयसे आरम्भ हुआ। केवल इतना ही अनुमान लगता है कि १म कामार्णव कर्तृक वालादित्यके पराजय और उन्हीके राज्यारम्भसे "गांगेय शक" चला होगा।*

चोडगके १०४० शकाब्धित ताम्रशासनमें गंगवशीय राजाओंका शासनकाल मिलाने पर साधारणत ३६० गुरु अथवा ७२८ ई० निकलता है। उस समय १म कामार्णवका राज्याभिषेक हुआ और सन्भवत गांगेय 'सवत्सर' चला होगा। ऐसा होने पर कह सकते कि १म कामार्णव ७२८से ७६४, देवेन्द्रवर्माके पिता ७७८, देवेन्द्रवर्मा ७७८, तत् पुत्र सत्यवर्मा ७७८, राजसिंह इन्द्रवर्मा ८१८, इन्द्रवर्मा ९५२से ८७४ और दूसरे अनन्तवर्माके पुत्र देवेन्द्रवर्मा ८८० ई०की विद्यमान थे। देवेन्द्रवर्माका बाद सवत्सराब्धित दूसरे किमो भी गांगेयराजका ताम्रशासन आज तक आविष्कृत नहीं हुआ। किन्तु इतना अनुमान किया जाता है कि देवेन्द्रवर्माके वशधर बहुत दिनों फिर कलिग नगरके सिंहासन पर टिक न सके। उत्तलनराज २य नरसिंहदेवके हस्तताम्रफलक (१४ श्लोक) में लिखा है—चोडगके पितामह भिन्न राज्य जय करके तिकलिगनाथ हुए। चोडगके १०४० शकाब्धित ताम्रशासनानुसार ८६१ तक या १०३८ ई०की वज्रहस्तने राज्यारोहण किया। सन्भवत उसी समय अथवा उससे अनतिकाल पीछे इन्होंने कलिग

* Hultz et, South Indian Inscriptions Vol I p 32
 † Sowell's List. of the Antiquarian Remains in the Pre-
 sidence of Madras Vol I p 36
 ‡ यम कलिग पत्तन चला १८५ ई० और देवा ८८५ ई० ५०० ई०
 बिक्राकोटके ८८५ ई० उत्तर अर्धस्थित है। आजकल वह नगर एक बन्दर
 जैसा प्रसिद्ध है। वहाँ एक आगेकरा भी है।

* मान्य माना है कि दानार्णवके वशधरोंने उस सवत्सरको प्रथम
 नश किया।
 † इन्द्रवर्माके १२८ सवत्सराब्धित ताम्रशासनमें लिखा है कि भाग जोष
 पृथि माके अशुभदशमीवृत्तमें अ सिदान हुआ। अतोपि साक्षात्से मचना वारा
 मानुस पकता है कि ८५१ ई० १५ (सिंहवर्मा) भागजोष पृथि माके दि० १५
 अशुभदशमी मना था।

नगर अर्थात् अपने राज्यामें मिला लिया । राजा वज्रहस्तके पुत्र राजराज वेंगी छोड़ करके कलिंगनगर गये । इसी स्थान पर उनके पुत्र अनन्तवर्मा चौड़गंग ८८८ शक कुम्भराशि, शुक्लपक्ष, रविवार, रेवती नक्षत्र और मिथुन लग्नमें राजपद पर अभिषिक्त हुए । (अनन्तवर्मा चौड़गंगशा राजगमन)

माटना पञ्जीके साहाय्यमें देगोयो और विदेशोयोने उड़िया, बंगला तथा अङ्गरेजी भाषामें उड़ीसाका जो इतिहास छपाया, उसमें लिखा है कि १०५४ शकमें १३ आश्विनको 'चौड़गंगने उत्कल जीता था ।' परन्तु वह बात ठीक नहीं ।

१०४० शकाङ्कित ताम्रशासनमें लिखित है—चौड़गङ्गने पश्चिममें वङ्गी और पूर्वमें उड़ीसा तक जय किया ।

चौड़गंगके १००३ शकको प्रदत्त ताम्रशासनमें वेंगी और उत्कलकी कोई बात नहीं । इससे समझ पड़ता कि १००३ शक अर्थात् १०८१ ई०के पीछे और १०४० शक वा १११८ ई०के पहले चौड़गंगने उक्त दोनों प्रदेश जय किये होंगे । यही उत्कलके गङ्गवंशीय प्रथम नरपति थे ।

अंगरेजी भाषामें उड़ीसाका इतिहास लिखनेवाले हग्टर साहबने कहा है—

वंशावलीके मतानुसार महादेवके औरससे अपर गंगा (गोदावरी) के गर्भमें चुरंग वा सारंगदेव ने जन्म ग्रहण किया था ।

इनके मतमें गंगवंशीय उन्हीं राजाने पुरीके जगन्नाथ मन्दिरमें मादलापञ्जी लिखनेकी रीति चलायी । यह देवोके एकमात्र उपासक थे । परन्तु इसके मूलमें कुछ भी सत्य नहीं । चौड़गंगके तीन और कटक जिलासे नवाविष्कृत ३ प्रस्थ सुवहत् ताम्रफलकोंमें चौड़गंगके पिताका

* चौड़गंगके ताम्रशासनकी निकल बहूत दिन हो गये । परन्तु कोई स्थिर शर न सका कि वही उत्कलके गंगवंशीय प्रथम राजा थे । अब कटक जिलाके २७ गरसिंह देवके ताम्रफलकपुस्तक तीन ताम्रशासन आविष्कृत हुए हैं । उनसे समझ सके कि उक्त अनन्तवर्मा चौड़गंगदेव उत्कलके १३ नरसिंहराजकेसे रहे ।

† यह अमात्यक शारंग नाम पदके दाक्षिणात्यके पुरातत्त्वविद. राबर्ट सिपल एम्. ए. अङ्गरेजपरिवर्तित राजराजपुत्र शारंगदेव जैसा अनुमान करते हैं । किन्तु वह अनुमान तो सत्य नहीं अमात्यक है ।

नाम राजराज लिखा हुआ है । चौड़गंगके पूर्वपुरुष और चौड़गंग अपने आप शैव थे तो, किन्तु पीछे यह एक परम वैष्णव हो गये—उक्त ताम्रफलक पाठसे स्पष्ट प्रमाणित होता है । उत्कलराज २५ नरसिंहदेवके सुवहत् ताम्रशासनके २७वें श्लोकमें ऐसा लिखा है—यह विशाल भूमण्डल जिसका चरण, अन्तरीक्ष नाभि, दशदिक् कर्ण, सूर्यचन्द्र नयनयुगल, और स्वर्गलोक मस्तक है—उस त्रिलोकव्यापी परमेश्वर पुरुषोत्तमके वामयोग्य मन्दिर बनानेकी कौन व्यक्ति समर्थ होगा ! यही विचार करके मानो पूर्वतन नृपतियोंने पुरुषोत्तमका मन्दिर निर्माण करनेमें हस्तक्षेप नहीं किया । महाराज गंगेश्वर (चौड़गंग) ने पुरुषोत्तमका मन्दिर बना अपना कीर्तिस्तम्भ चिरस्थायो किया है । फिर इन्हींने मन्दराधिपतिको पराजय करके उनका नगर जला डाला ।

एल्लिङ्ग, हग्टर तथा राजा राजेन्द्रलालके मतमें और उत्कल भाषामें रचित उड़ीसाके सब इतिहासोंकी देखते राजा अनङ्गभेम देवने ही जगन्नाथका प्रसिद्ध मन्दिर बनाया । किन्तु अब देखते हैं कि राजा अनङ्गभेमसे बहुत पहले उत्कलके प्रथम गंगियराज चौड़गंगने उत्कल-विजयकीर्ति स्थायी करनेके लिये सर्वप्रथम जगन्नाथ देवका सुप्रसिद्ध मन्दिर निर्माण कराया था । पुरी मन्दिरके तत्कर्तृक मादलापञ्जी संरक्षणकी कथा आज तक प्राप्त किसी ताम्रशासन वा तत्सामयिक ग्रन्थमें नहीं है । उपर्युक्त ऐतिहासिकोंने मादला पञ्जीका प्रमाण दे करके जो बातें लिखी हैं, गंगियराज द्वितीय नरसिंह देवके नवाविष्कृत २१ ताम्रफलक संयुक्त ३ प्रस्थ शासनपत्रों और अपरापर प्राचीन शासन शिलालिपियोंमें क्या वंशावली, क्या राजप्रकाल, क्या घटना वैचित्र्य किसोके भी साथ कोई एक नहीं । गंगिय राजाओंने स्व स्व ताम्रशासन और शिलालिपिमें जिस समय और जिस राजप्रसंगान्त कथाकी लिखा है, सामयिक प्रमाणकी भांति अपरापर प्रमाण अपेक्षा समधिक प्रामाण्य है । किन्तु ऐतिहासिकोंने

* उत्कल शब्दमें एल्लिङ्ग, हग्टर प्रथमके इतिहास साहाय्यसे गंगवंशीय राजाओंकी जो विवरण और राजप्रकाल लिखा है, अब समझ भास जैसा समझ पड़ता है । इस गंगिय शब्दमें जो लिखते, समधिक प्रामाणिक जैसा बाधा समझते हैं ।

मादनापञ्चो श्रीग व शावनीके माहाय्यसे जो वाते कही है, किसी अशमें सामयिक निषिधे नही मिलती । ऐसी अवस्थामि उन्हें प्राधुनिक अथवा अप्रामाणिक जैसा अवश्य मानना पड़ेगा ।

२य नरसिंहदेवके ताम्रगासन (३० श्लोक) मतानुसार महाराज चौहग गके स्वर्गारोहण करने पर १०६४ शक (११४२ ई०) की तत्पुत्र महावीर कामार्ण्य^२ मिहामन पर अभिषिक्त हुए थे इन्होंने १० वर्ष राजत्व किया । फिर गगराज राघवने राज्य पाया । महाराज चौहगङ्गने सूर्यवंशको राजकन्या इन्दिराका पाणियहण किया था । उर्हींके गर्भसे राघवका जन्म हुआ । महाराज राघव^३ १५ वर्ष राजा रहे । फिर २य राजराजका राजत्व हुआ । इन्होंने चौहग गको अपर महिषी चन्द्रलेखाके गर्भसे जन्म लिया था । उनका शरीर अतिशय प्रकाण्ड रहा । इनके सम्बन्धमें जो कुछ घटित हुआ, मानव प्रकृतिके पक्षमें नितान्त अमश्रव है । राजराजने २५ वर्ष प्रबल प्रतापसे राजत्व किया ।

उक्त राजराजके पीछे कनिष्ठ महीदर अनियुक्त वा अन गभीम मिहामन पर बैठे । उनका राजत्वकाल १०वष भाव था । फिर ३य राजराज राजा हुए । अनियक वा अन ग भीमके श्रीरम और वाभल्लदेवीके गर्भसे उनका जन्म था । यह यौवनकालको ही राज्यके अधीश्वर हुए । उन्होंने ११ वर्ष भाव राज्यलक्ष्मीका उपमीग किया । १२य राजराजके मरने पर मद्गुण देवी गर्मजात तत्

पुत्र अनङ्गभीम राजपद पर अभिषिक्त हुए ।^४ ऐतिहासिक टार्निङ्ग, हण्टर और राजा राजेन्द्रलालके मतसे इर्हीं अनङ्गभीमने ११८६ ई०को पुरीसे प्रसिद्ध जगन्नाथ देवका मन्दिर निर्माण कराया । किन्तु यह बात ठीक नहीं । क्योंकि उस समय अनगभीम उल्लालके राजा नहीं हुए, इनके पितामह अनियुक्त वा अनङ्गभीम उल्लालने राजत्व करते थे । उन्होंने भी प्रसिद्ध जगन्नाथ देवका मन्दिर नहीं बनवाया, उनसे बहु पूर्व चौहग गने यह मन्दिर निर्माण कराया था ।

कटक जिनके अन्तर्गत महासिंहपुरमें चाटेश्वर मन्दिरसे हहृगु गिनाफलक निकला है । इससे लिखा है कि चौहग गके एक पुत्र अन गभीमने उक्त शिवमन्दिर प्रतिष्ठित किया । गिना फलकके २३वें छत्रसे लिखा है—

“वकारतम प्रतिपत्तिव्युत्पत्त्य पुत्राचारि पुत्रम शक्ति व ।”

इससे अनुमित होता है कि चौहग गके पुत्रने, जो उस गिनाफलकमें अन गभीम लिखे गये हैं, पुरातन मन्दिर मस्कार कराके नया करा दिया था । मश्रवत इर्हीं अन गभीमके समय पुरोपीत्तमका मन्दिर मस्करत अथवा मस्करू^५ हुआ होगा । राजराजपुत्र २य अन गभीमके समय वह नर्हीं बना ।

राजराजके पुत्र २य अन गभीम विद्वान्, शास्त्रदर्शी, महावीर, पण्डितप्रिय और परम वैष्णव थे । समस्त कलिंग राज्य उनका अधिकारभुक्त रहा । इनके राज्यमें कलिका दसदवा न था (मानो मत्युगका आविर्भाव ही गया था) । उन्होंने प्रबल पराक्रमसे ३४ वर्ष राजत्व किया । २य नरसिंहदेवके ताम्रगासनको छोट करके मन्नामके अन्तर्गत क नगपत्तनसे ३ शीम पश्चिम अथ स्थित “श्रीकूर्मम्” नामक धाममें श्रीकूर्मेश्वरीके प्रसिद्ध मन्दिरके १०म स्तम्भ पर ११७४ शकको खोदित अन गभीमकी अनुग्रामन लिपि है ।। उससे भी महाराज

१ ऐतिहासिक टार्निङ्ग और हण्टर साहबके मतानुसार चौहग गके पीछे तत्पुत्र न गभीम ११४२ ई०को राजा हुए । पुत्ररम प्रतापशिका । उल्लालनामः प्रथित उक्तमहारा इति न' इत्यने उक्तमहो वरसे १३ वर्ष भाव राज्य किया । इत्युक्तमहो वरसे १०वष विजयो भी राजराज उक्तमहो वरसे ११वष भाव राज्य किया । इत्युक्तमहो वरसे ११वष भाव राज्य किया । इत्युक्तमहो वरसे ११वष भाव राज्य किया ।

२ अन्तर्गत विजयो वरसे ११वष भाव राज्य किया । इत्युक्तमहो वरसे ११वष भाव राज्य किया । इत्युक्तमहो वरसे ११वष भाव राज्य किया । इत्युक्तमहो वरसे ११वष भाव राज्य किया ।

३ उक्तमहो वरसे ११वष भाव राज्य किया । इत्युक्तमहो वरसे ११वष भाव राज्य किया । इत्युक्तमहो वरसे ११वष भाव राज्य किया । इत्युक्तमहो वरसे ११वष भाव राज्य किया ।

४ टार्निङ्ग व साहबके मतसे इर्हीं अन गभीमने ११७४ ई०को राजराजको दसदवा दिया ।

५ पुत्रगका विषय है यह अनुग्रामन लिपि को अन्तर्गत इर्हीं उससे वरार्थित नहीं हुई ।

अनंगभीमके श्रीय, वीर्य और दानादिकी विस्तर प्रशंसा लिपिवद्ध हुई है।

२य अनंगभीमके औरस और कस्तूरदेवीकी गभसे महाराज नरसिंह देवने जन्म ग्रहण किया था। उनका "प्रतापवीरयो" उपाध रहा। यह बाल्यकालमें ही शक योद्धा हो गये थे। गङ्गामके अन्तर्वर्ती श्रीकर्मस्वामी मन्दिरके निकट ११७२ शककी उत्कीर्ण शिलाफलक पढ़नेसे समझ पड़ता कि प्रतापवीरयो नरसिंहदेवका शर्वादिनाशी बाहुयुगल सुदृढ़ रखनेकी साहजसम नामक एक व्यक्ति देवोद्देशसे भूमिदान करते थे। मालूम होता है कि उसी समय महावीर नरसिंह देव युवराज पदपर अभिषिक्त हुए। अपने पिता अनङ्गभीमके मरने पर नरसिंह देवने ३३ वर्ष तक राजत्व किया।

प्रसिद्ध मुसलमान ऐतिहासिक मिनहाज उदु-दीनका 'तबकात-इ-नासरी' नामक सामयिक इतिहास पढ़नेसे समझ पड़ता है—

६४१ हिजरी (१२४३ ई०) को जाजनगर राजने जब लक्ष्मणावती राज्यमें दीरात्म उठाया, (गौड़ाधिप) मलिक तुगरिल तुगान् खाने जाजनगरकी अभिमुख अपना पैर बढ़ाया। इस युद्धयात्रामें ऐतिहासिक मिनहाज उदुदीन उनके सहचर थे। जाजनगरकी सीमा कतासि नमें युद्ध हुआ। पहले हिन्दुओंने पृष्ठप्रदशन किया था पीछेकी इच्छुके जंगलसे ५० अश्वारोही और २०० पदाति और कारके अकस्मात् मुसलमान सैन्य पर टूट पड़े। इसमें विस्तर मुसलमान योद्धा मरे। गौड़ाधिप प्राण वचा करके लक्ष्मणावती नगर भाग गये। उन्होंने दिल्लीके बादशाहसे साहाय्य मांगा था। सुलतान अला-उदु-दीन् महमूद शाहने अयोध्याके सुवेदार तैम्बूर खां किरान्को ससैन्य जाजनगरके विपक्ष लक्ष्मणावती भेजा। जाजनगरकी फौजने पहले फखर-उल्-मुल्कको हराया और लखनऊ प्रदेश दबाया था, फिर वह लक्ष्मणावती नगरके प्राकारके पार्श्वमें उपस्थित हो घोर युद्ध करते रही। अन्तको अयोध्या-सैन्यके आगमनका संवाद पा करके वह लौट पड़ी।[†]

* कालगणनसे प्रायः ३ बीस दूर अवस्थित श्रीकर्मस्वामी मन्दिरके पास ११७२ और १२०१ शकान्वित खोदित शिला फलकमें प्रतापवीर श्री उपाधियुक्त नरसिंह देवका नाम दृष्ट होता है।

† Raverty's Tabakat-i-Nasiri, p. 738-39

मिनहाजने लिखा है कि जाजनगरके सेनापतिका नाम 'सावन्ता' था। यह जाजनगर राजके जामाता रहे। * मुसलमान ऐतिहासिक वर्णित जाजनगर † उत्कलका याजपुर है। सावन्ता नाम नहीं, उपाधि है। मङ्कत भाषाका सामन्त शब्द चलती उड़ियामें सावन्ता कहलाता है। मिनहाजने सावन्ताकी जाजनगरराजका जामाता जैसा लिखा है। परन्तु हमारी विवेचनामें विदेशी लेखकने भ्रमक्रमसे पुत्रको जामाता समझ करके ऐसा लिख दिया होगा। उस समय याजपुर वा समस्त कलंग राजमें महाराज अनंगभीम अधिष्ठित थे। उन्हींके पुत्र प्रतापवीर १म श्रीनरसिंह देव रहे। २य नरसिंह देवके ताम्रशासनमें लिखित है—

"रादापरन्द, यधनोपयथासमाप्तुरूपे दूरवदिविनिहासिभयोः।

तदिप्रपन्न करणान्, तदिकारंगानां गंगापि नृपसमुना यम, शोधनाभूत् ॥"

राढ़ और वरेन्द्र प्रदेशकी यवनियां स्वामिविरहमें सर्वदा रोदन करती थीं। उनके अत्युजलसे जो नयनाञ्जन धीत हो करके गङ्गामें मिलता, उससे गंगाका भी पानी काला पड़ जाता था। इस भयानक कारणको देख करके मानों गंगा तरंगहीन हुई। (वास्तविक उस समय नरसिंहके ही लिये) गंगा यमुना वन गयीं।

उक्त श्लोक द्वारा स्पष्ट समझ पड़ता है कि प्रतापवीर श्रीनरसिंह देवने ही पिताके राजत्वकाल लक्ष्मणावती आक्रमण करके सैकड़ों मुसलमान सिपाहियोंकी मारा और वही राढ़ तथा वरेन्द्रकी यवनियोंकी स्वामिविरहके हेतु थे। इन प्रतापवीरसे श्री भी कई वार मुसलमान लड़े, किन्तु उनके प्रवल प्रतापसे उड़ीसा जीत न सके। एकावलीरचयिता कविवर महिम भट्ट उन नृसिंहदेवके सभापरिद्धत थे।

२य नरसिंहदेवके १२१७ शकान्वित दो बहत् ताम्रशासन पढ़नेसे मालूम पड़ता है कि ११६६ शक वा १२७४ ई०की उत्कल राजमें एक नूतन संवत् चला। सम्भ-

* Raverty's Tabkat-i-Nasiri, 765.

† कोई कोई इस जाजनगरकी विपरा रात्रा जोसा अनुमान करते हैं, किन्तु वह ठीक नहीं पड़ता S. H. Blochmann's Contribution to the Geography and History of Bengal (in Journal of the Asiatic Society of Bengal, Vol. XLII. pt. 1 p. 297.)

यत् १५ नरसिंहदेवने फिर राढ़ और वरेन्द्राधिपति का पराजय करके १२७४ ई०से नूतन मवत् वलाया था और अपनी कोर्ति अत्रय करनेको कोणार्कका - प्रसिद्ध सूर्य-मन्दिर बनाया था। सुमनमान ऐतिहासिक फरिश्ताने उक्त घटना न बतला करके लिखा है कि १७८ हिजरी (१२८८ ई०) को तुमरीन खाँ जाजनगर आक्रमण करके विस्तार अर्थ और एक शत हज़ारी जीत ले गये। घोष होता है कि उन्होंने पहली घटना दवा डालनेके लिये शोषोक्त विवरण कल्पना किया होगा। इन्होंने १६०८ ई०को अपना ग्रन्थ बनाया। किन्तु उनसे बहुत पहले २५ नरसिंहदेवके ताम्रशासनमें १५ नरसिंहकतक राढ़ और वरेन्द्र आक्रान्त होनेकी बात लिखी जा चुकी थी। प्रतापवीर श्रीनरसिंहदेवके बाद उनके औरस और भाव्यचन्द्रात्मजा सोतादेवके गर्भजात भानुदेव राज्यामें अग्रि पक्ष हुए। इन्होंने १० वर्षमात्र राजत्व किया। इन्हीं भानुदेवकी सभामें साहित्य दर्पणकार विश्वनाथ पद्मननके पिता चन्द्रशेखर कवि रहते थे।

उनके पीछे २५ नरसिंहदेव राजा हुए। इन्होंने भानुदेवके औरस और चालुक्य कुलसम्भूता जाकल देवीके गर्भसे जन्म लिया था। २५ नरसिंहदेवके ही प्रदत्त २१ ताम्रफलकयुक्त ३ प्रथम सुहृत्त ताम्रशासन मिलने हैं—

इनमें पहला—

'सप्तमीनररा'प्रथमशकवत्सरे' खरात्राय कविमय्ये' नररात्रायर विप्रवसये "सि ह म ह्यवतां सोमधारे।'

दूसरा—

"सप्त दशोत्तर शतमयानिते गतवति शकवत्सरे" "सिप ह्यवत्सु" का) की रिबारे "खरात्राय कवि मय्ये"

• २५ नरसिंह देवके सुहृत्त ताम्रफलकमें वृद्ध आन केशवाचोवके नामसे बलिप है। पथान यह मन्दिर १२९० ई० धारण और १२७० को पुन हुआ।

† पूर्वांश कोशम्लोको मन्दिरके ११ मशायीम विदित मय ११२२ मय को प्रथम भानुदेवके मल्लोका राजपक्ष दृष्ट हुआ है। १४४३ चतुर्मान मयाने है कि १२३३ मय चला १२३१ ई०को राजा चन्द्रशेखरके राज्यापकसे पहले देविकोशमें नाम प्रथम नाम था र कोई राजा राज्य करते थे। निधय को यह नरसिंहदेवके पुत्र बलिप भानुदेवके जन्म थे। टागिम कोर दन्तराज्यवत्त उक्त नरसिंह देवके पीछे खरीर नरसिंह का बेटा और नरसिंह का नाम लिखा है। पानु चन्द्र नाम बालिव राजाकोके पन्थ कि जो तावत मनमें देख गये वरगा है।

श्रीर तीसरा—

'सप्तमीनररा'प्रथमशकवत्सरे'

प्रदत्त हुआ है।

प्रथम और दूसरे ताम्रफलकमें खरात्रात्मा २१वा और २२वा अर्द्ध पठनेसे पहले उनका अधिकार काल जैसा स्वभाव पडता है किन्तु पहले पहल चोडग ग और तत्पुत्र कामार्णवका अभिषेकशक तथा प्रत्येक राजाका अधिकारवर्ष स्पष्ट लिखा रहनेमें मानूम पडता है कि १२१७ शककी २५ नरसिंहका राज्यारोहण हुआ। सम्भवत "खरात्रा" निर्देशक अर्द्ध १५ नरसिंह देवके समय १२८६ शकको चला होगा। पूर्वोक्त गागीय शककी साथ इसका कोई भी सोसादृश्य नहीं आता।

२५ नरसिंहके प्रथम ताम्रशासनमें नरराज्य विजय को कथा मिलती है। श्रीकूर्मस्वामो मन्दिरके बहुतसे खोदित शिलाफलकमें यह बोरारि वीरवर श्रीनृसिंह देव नामसे लिखे गये हैं। इन शिलाफलकमें ग्रिय समयकी लिपि १२७१ शककी अर्द्धित हुई। साहित्य दर्पणकार सुप्रसिद्ध विश्वनाथने इन्हीं नृसिंहदेवकी सभाकी उल्लेख किया था।

२५ नरसिंहदेवके मरने पर तत्पुत्र चोडदेवकी गर्भ जात २५ भानुदेव सिंहासन पर बैठे। उनका उपाधि श्रीवोरादिवीरयो था। पुरोके ताम्रशासनमें लिखा है कि भानुदेवके साथ गयास उद् दीनका घोर युद्ध हुआ। गयास उद् दीनने खोय सुमनमान इतिहासमें लिखा है कि गयास-उद् दीन तुगलकके पुत्र अलिफ खानि औरग जय करके जाजनगर घेरा था।

२५ भानुदेवके पीछे लक्ष्मीदेवीके गर्भजात तत्पुत्र ३५ नृसिंहदेवने राज्य पाया। इनका उपाधि प्रताप वीर श्रीनरनरसिंह था। ३५ नरसिंहके औरस ग गा भिक्काके गर्भसे ३५ भानुदेवने जन्म लिया। यह प्रताप वीर श्रीभानुदेव उपाधि ग्रहण करके पिढसिंहानन पर बैठे। उनके राजत्वकालको व गाधिपि हाजि इलियमने हाथी पकड़नेके लिये जाजनगर अधिकार किया था। (यजय नगर राधिपने वीर भानुदेव पर धाया मारा। उनके मरने पर चानुसुखनमभूत वीरादेवोर्गजात प्रिय पुत्र ४५ नरसिंहदेवने राज्य लाभ किया। उनका

उपाधि 'चतुर्दशभुवनाधिपति वीर ओन्टसिंहदेव' था। आर्डन अकवरीमें लिखा है कि मालवके २५ मारिन्पति खुशाल-उद्-दोन हुसेनने वणिकके वेशमें जाजनगर जा कोशल क्रमसे राजाको पकड़ लिया। फिर राजाको कितने ही बढ़िया हाथी देने पर समत होनेसे उन्होंने छोड़ दिया। फिर इस वंशके किसी दूसरे राजाका नाम शिलाफलक वा ताम्रशासनमें नहीं मिला। मादला-पञ्चीके मतानुसार इसके बाद भानुदेव चतुर्थ राजा हुए। वह मतवाले थे। उनके मरने पर मन्त्री कपिलेन्द्र वने उक्त राज्य अधिकार किया। २८३ पृष्ठमें गांगिय-वंशको तालिका और उनका राजत्वकाल दिया गया है।

गाङ्गेरुक (म० स्त्री०) गोरख इसलीका बीज।

गाङ्गेरुकी (स० स्त्री०) गोरक्षतण्डुला। इसका पर्याय—नागवन्ता, भूषा, उख गवेधुका, खरवल्लरिका, विश्ववेदा और गोरक्षतण्डुली है। इसका गुण मधुर, कषाय, शीतल, पित्त और कफनाशक है। (चरक सूत्रव्याज ९० च०)

गाङ्गेरुही (स० स्त्री०) गाङ्गे तटादी रोहति रुह-क। नागवन्ता।

गाङ्गेठी (स० स्त्री०) गाङ्गे नदीतटे तिष्ठति स्या-क यत्वम्-अलुक्समाम। लताविशेष, एक प्रकारकी लता जो गङ्गा तट पर प्रायः उत्पन्न होती है। फटशक रा।

गाङ्गीय (स० पु०) गांगो गङ्गा सम्बन्धी उद्यः कर्मघा०। गंगासांत, गंगाकी धारा।

गङ्गा (स० स्त्री०) गाङ्गे गंगाकूले भवः यत्। गङ्गाकु-लादि सम्बन्धी, गंगासम्बन्धी। (शब्द ६१४५११)

गाच (हिं० पु०) फुलवर सूती कपड़ा।

गाछ (हिं० पु०) १ छोटा पेड़, पौधा। २ वृक्ष। ३ एक तरहका पान जो बंगालके उत्तरमें होता है।

गाङ्गी (हिं० स्त्री०) १ बाग। २ खजूरकी मोलायम कीपल सुखाने पर यह तरकारीके काममें आता है।

गाज (हिं० स्त्री०) १ गर्जन, गरज। २ विजली गिरनेका शब्द। ३ वज्र, विजली।

गाजना (हिं० स्त्री०) १ गर्जन करना, चिल्लाना। २ प्रफुल्ल होना, प्रसन्न होना।

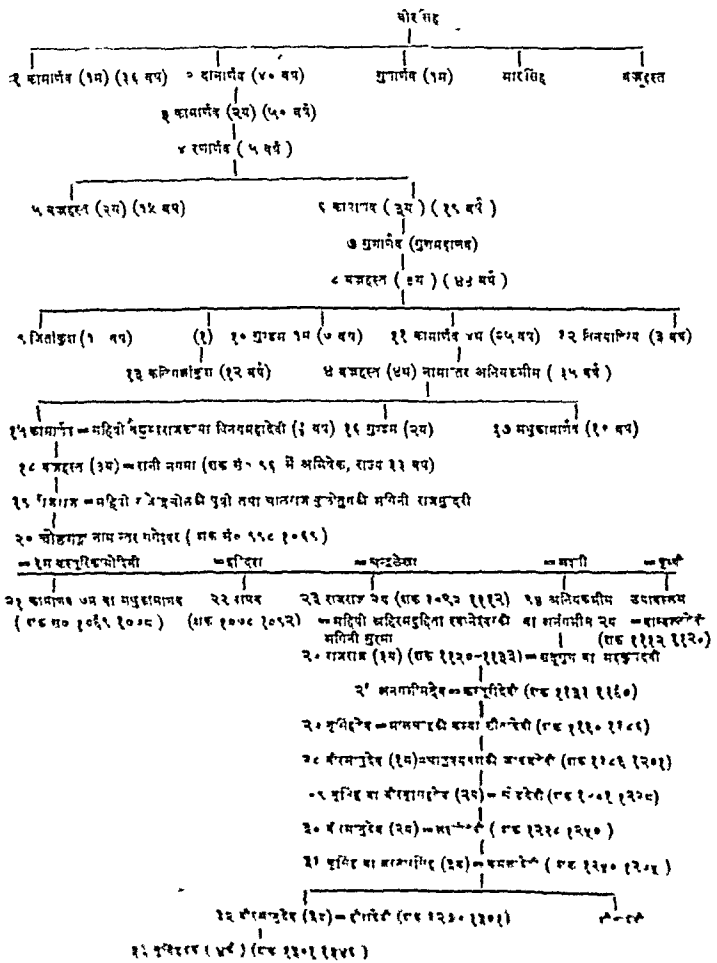
गाजर (स० स्त्री०) गाजं मदं राति रा-क। शालगम, गजरा, इसके पौधेकी पत्तियां धनियाकी जैसी होती हैं

लेकिन लम्बाईमें बड़ी हैं। इसको जड़ लान रङ्ग निये अधिक मोटी होती है। यह उष्ण होती है और घोंड़े को बहुत खिलाई जाती है। दीन मनुष्य और उनके बच्चे छोटी और नरम जड़को बड़े चावसे खाते हैं। इसकी सूखी जड़के आंटेमें हनुवा प्रसृत किया जाता जो खान-में बहुत सुखादु लगता है। यह कार्तिक और अगहन मासमें बोया जाता है। इसकी तरकारी, दूधर तथा सुरवे भी बनाये जाते हैं।

गाँजा (फा० पु०) रोगन, पाउडर।

गाजियाबाद—युक्तप्रदेशके मेरठ जिलेकी एक तहसील। यह जिलेके दक्षिणपश्चिम पड़ती है। यह अक्षा० २८° ३३' तथा २८° ५६' उ० और देशा० ७७° १३' एवं ७७° ४६' पू० के मध्य अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः २०६५१८ है। गङ्गा और यमुनाकी नहरसे खेत सींचे जाते हैं। इसका क्षेत्रफल ४६३ वर्ग मील है। प्रधान नगर गाजियाबाद अक्षा० २८° ४०' उ० और देशा० ७७° २६' पूर्वके बीच मेरठ शहरसे ७ किलो दक्षिण-पश्चिम पड़ता है। इसको लोकसंख्या प्रायः ११२७५ है। दक्षिणपथके प्रसिद्ध नवाब सलावत जङ्गके भाई गयाम-उद्दीनने १७४० ई० को यह नगर स्थापन किया और गाजी-उद्दीन नगर नाम रख दिया था। रेलवे राह खुलनेके समय बोलनेके सुभतेको उक्त नाम बदल करके 'गाजियाबाद' बना लिया गया है। १८५७ ई०की सिपाहीविद्रोहके समय एक दल अंगरेजी सेनाने यहाँ विद्रोहियोंको हराया था। यहाँ दुग्धेश्वरनाथ देवका मन्दिर विद्यमान है। यह मन्दिर २२५ वर्ष पड़ले बना था। सिवा इसके ६ बड़ो मसजिदें भी हैं। रेल लाइन खुल जाने पर यहाँ बहुत सराएँ बन गयी हैं। दुग्धेश्वरनाथ व्यतीत और भी कई एक मन्दिर खड़े हैं।

गाजी-उद्-दोन खा फ़ीरोज १५, इनका असली नाम मीर शहाब उद्-दोन गोरो था। सम्राट् बहादुर शाहके समय इनको गुजरातकी सूवेदारी मिली। इन्होंने दिल्लीमें अजमेर दरवाजेसे बाहरको एक मदरसा लगाया था। १७१० ई०की अहमदाबादमें इनका मृत्यु हुआ। इनकी लाश दिल्ली ले जा करके दफनायी गयी। सुविख्यात निजाम आसफ जाह इनके लड़के थे।



गाजी-उद्-दीन खाँ फौरोज जङ्ग रय, निजाम-उल-मुल्क आसफ जाहके पुत्र । नादरशाहके ईरान लौट जाने पर यह अमोर-उल्-उमरा उपाधि प्राप्त हुए १७५२ ई० १६ अक्तूबरकी दिल्ली जाते समय राह पर औरंगाबादमें इनका मृत्यु हुआ । कोई कोई कहता कि विपप्रयोगसे उनका विनाश साधन किया गया ।

गाजी उद्दीन खाँ रय, इमाद-उल्-मुल्क—यह निजाम-उल्-मुल्कके पोत्र और रय गाजी-उद्दीनके पुत्र थे । पर इन्होंने उन्हींका नाम और उपाधि धारण किया, और वजीर हो करके मस्राट् अहमदशाहकी अन्धा बना कारामें डाल दिया । पीछेकी इनके द्वारा रय आलम-गोरके प्राण विनष्ट हुए । इन्होंने गन्ना वेगमसे शादी की । गन्ना वेगम देखो । १७७५ ई०को गन्ना वेगमकी मृत्यु हुई । फिर इनकी अवस्था भी मन्द पड़ गयी । मसौर-उल्-उमरा नामक ग्रन्थमें लिखा है कि १७७३ ई०को वह दर्जिणापथ गये और मालवमें एक जागीर प्राप्त हुए । फिर सूरत जा और अंगरेजोंके पास थोड़े दिन रह करके उन्हींके मक्काकी प्रस्थान किया । गुलजार इब्राहीम कृत काव्यग्रन्थमें भी इनका वृत्तान्त वर्णित हुआ है । उसमें इनका नाम निजाम लिखा है । इन्होंने फारसी और रेखता, शायरी, अरबी और तुर्की भाषाकी गजले और फारसी जवानमें टोवान और मसनवीका रचना किया । कोई कोई कहता कि कालपीमें उनका मृत्यु हुआ ।

गाजी-उद्-दीन—एक नगर । गाजियाबाद देखो ।

गाजी-उद्-दीन हैदर—अवधके नवाब वजीर । १८१४ ई० ११ जुलाईको अपने पिता नवाब शहादत अली खाँका मृत्यु होने पर यह अवधके नवाबी पद पर प्रतिष्ठित हुए । शहादत अली मरते समय धनागारमें बहुतसा रुपया पैसा छोड़ गये थे । १८१४ ई० १४ अक्तूबरको गाजी-उद्-दीन हैदर गवर्नर-जनरल लार्ड मेयरसे मिले । इन्होंने कम्पनीको १ करोड़ रुपया दे डालना चाहा था, परन्तु गवर्नर जनरलने, उसे दान स्वरूप न ले कृण-जैसा ग्रहण करने पर खोजत हुए और नेपाल युद्धके लिये और भी १ करोड़ रुपया कर्ज मांगने लगे । नवाब साहब यह अतिरिक्त रुपया पहले देने पर राजी न हुए, परन्तु पीछे-

को रसीडगट लिफ्टीनिगट करनल वेलीके उद्योगसे वह रुपया भी मिल गया । १८१८ ई० १७ अप्रैलके "समाचारटिंग" में लिखा है—'तीन चार वर्ष हुए अंगरेजोंके नेपाल राजामें लड़ करके नेपाल राज्यका तृतीय भाग ले लेने पर लखनऊके नवाबने कम्पनीसे अपना राज्य-संलग्न नेपालीय देश मांगा था । उसमें कम्पनीकी एक करोड़ रुपया दे करके उन्हींके वह नेपालीय देश कम्पनीसे ले लिया ।'

१८१४ ई० १२ नवम्बरको इन्होंने तात्कालिक गवर्नर लार्ड मेयर धामारकिस आफ र्छाट्टम साहबको लिख भेजा था—'आपने मुझे पिटाभिहासन पर स्थापन किया है । सुतर्ग में उनकी राज्यसम्पत्तिका अधिकारी हूँ । वह राज्य मेरे सम्पूर्ण कर्तृत्वाधीन रहना चाहिये, एक भी परगना या गांव मेरे शासनसे विच्छिन्न न हो । फिर मेरे राजामें सुविचारके लिये ४ अदालतें कायम की हैं । इस लिये मेरे आत्मोय, अनुचर वा भ्रातृवर्गके मध्य कोई यदि कलकत्ते जा करके मेरे सम्बन्धके कोई अभियोग लगावे, तो वह फौमलेके लिये मेरे राजाको ही भेजा जावे । ऐसा न होनेसे मेरा सम्मान प्रतिपत्ति सभी विगड़ेंगे ।' गवर्नर जनरलने उत्तर दिया कि—'न्यायमद्वत विषयोंमें अंगरेज गवर्नरमें एटर्नी शर्ते न तोड़ करके उनके अभिप्राय अनुसार काम किया जावेगा । वेलो साहब उस समय लखनऊके रसीडगट रहे । गवर्नरमें एटर्कि सेक्रेटरी एवाम साहबने उन्हें लिखा नवाब साहबकी वाहरमें स्वाधोन राजा-जैसा बतलाया जावेगा, वस्तुतः उन्हें अंगरेज गवर्नरमें एटर्कि अधीन रहना पड़ेगा । (*Dacoity in Excelsis*, p. 61.)

नवाब गाजी उद्दीन वजीर थे । १८१८ ई० अक्तूबरको इन्होंने अबुल मुजफ्फर मौज-उद्-दीन शाह जमान गाजी उद्-दीन हैदर वादशाह नाम धारण किया । उसके उपलक्षमें एक बड़ा दरवार लगा था । इनके अभिषेक कालको कोई ३० हजार रुपयके मोती लुटाये गये । फिर अंगरेज इन्हे राजा कहने लगे ।

गवर्नर जनरल लार्ड आर्महर्टके समय नवाबके साथ अंगरेजोंका अच्छा मेलजोल रहा । इन्होंने १८२५ ई० १४ जुलाई और १८२६ ई० २३ जूनको जी खरीता पद्ध-

चाया, पहनेमें राजा और दूमरमें बादशाह जैसा। इनका सम्बोधन आया है। इन खरीतींके पदनेसे सम्भक्त पडता है कि ब्रह्मण्यके युद्धके लिये लखनऊके नवाबने अग्रज गवर्नमेंगटकी एक करोड़ पचास लाख रुपया खर्च दिया था। रेमीडण्ट रिक्तेशन माह्व और नवाब मातम उद्-दौला मुहलतिथार उल मुल्क दोनोके हों उद्योगसे वह नार्थ मन्थर हुआ। इनके आगामीर नामके मन्तो पर राजकुमार नमोर उद् दौनकी बडो नाराजगी रही। इन्होंने मोचा कि मेरे मरने पर लडका नवाब हो करके लखर ही आगामीरकी मार डालेगा। इन्होंने अग्रजों की अनुरोध किया कि वंशा हो न सके। गवर्नमेंगट ५,०० बैरुडे सूट पर १ करोड रुपया कर्ज ले करके आगा मीरकी बचाने पर मुम्बैट हुई। इन्होंने व्यव-१ की मेरे मरने पर उम रुपयका आधा सद आगामीरको मिलेगा और बाकी दूमरे कर्मचारियोंको बटेगा। मगहर विशप हेवर माह्वबने १८२४ २५ ई०की अवध प्रदेश भ्रमण करके एक ग्रन्थ प्रकाश किया है। इसमें उम समयके अनेक हस्तान्त लिखित हुए हैं। साइबने नवाबकी खूब तारीफ की है। १८२७ ई० १८ अक्तूबरको गाजो उद् दौन हैदरका मृत्यु हुआ। उस समय इनका वयस ५८ चालू बखर था। इन्होंने लखनऊमें मोतीमहल, मुवा-रक मञ्जिल, शाह मञ्जिल, चीनीबाजार, छल मञ्जिल, साजक घोर कठम रञ्जल प्रभृतिको निर्माण किया।

गाजीखा—दिल्लीमन्त्राट वावरके समयके एक सामन्त। यह लाहौर अञ्चल शासन करते थे। फिर इन्होंने मैन्थ सपद करके वावरके विरुद्ध अख अग्रण किया। वावरने ससैन्य जा जब इनको पराम्त करके मिलवतका दुर्ग अधिकार किया, इन्होंने यहासे पलायन करके पयतका मार्ग लिया। इनके पुस्तकागारमें बहु मून्थ पुस्तक संग्रहीत रहे।

गाजी की चक—काम्गोरके एक राजा। इन्होंने अकबर आदगाजके सेनापति कारा बहादुरकी युद्धमें हराया था। मयासरो रक्षीमो नामक फारसो ग्रन्थमें इनका विमूर्त यक्षरण दिया हुआ है।

गाजी खां तख्तरो—अकबर बादशाहके एक अफगान कर्मचारा। इन्होंने भाटगदरु जमीन्दारोंकी अकबरके

विरुद्ध उभारा था। भाटकी राजा रामचन्द्रकी कार देने और विद्रोहियोंके आत्मसमर्पण करनेको कल्पना भेजा था, परन्तु राजाके उम पर राजी न हो युद्धका उद्योग करने पर अकबर फौजके साथ उन पर चढ चल। इन्होंने राजाको पराम्त करके इनको मार डाला।

गाजी खां बटख्शी - एक सुसलमान सेनापति और कवि। इनका प्रकृत नाम गाजी निजाम था। यह सुबा इमाम उद् दौन इत्राहोमके पास कानून पढने पर प्रेपरी बडे विद्वान जैसे गण्य हुए। बटख्शीके सुलतान् सुलेमान्नी खुश हो करके इनको 'गाजीखां' उपाधि दिया था। इमाम्बुके मरने पर सुलेमानने फौजके साथ फातुल जा करके उनके नोकर सुनीवकी घेर लिया। फिर इन्होंने इनकी सुनीव खांके पास भेज उनको आत्मसमर्पण करनेको कहलाया था। सुनीव खांने इन्हे कइ रोज अपने पास रख करके खूब मजेसे खिनाया पिनाया। इन्होंने तुष्ट हो सुलेमानको प्रतिनिवृत्त होने पर अनुरोध किया था। वह तदनुसार बटख्शा चले गये। फिर यह सुलेमा नका काम छोड भारत आ खौपुरमें मन्त्राद् अकबरसे मिले। इन्होंने इन्हे नाना उपहार दे करके पहले किमो लेखकके काम पर रखा था। पीछेको बुद्धिमत्ताका परिचय मिलने पर यह एहजजारी फौजदार बनाये गये और कई एक लडाइयोंमें वीरत्व दिखाने पर 'गाजी खां' उपाधि प्राप्त हुए। इन्होंने मानसिफके अधीन वामदिककी सेनाके नायक धन करके राणा कीकारसे युद्ध किया और उनके बाद विहारके विद्रोहकी दबा दिया। अकबरशाहके बाद २८ फरर राजत्वकी (८८८ हजरी) ७० वर्षके वयस पर अयोध्या नगरमें इनका मृत्यु हुआ। इन्होंने बहुतसी किताबें बनायी थीं।

गाजीपुर—युक्त प्रदेशका एक जिला। यह भन्ना० २५ १८ तथा २५ ५४ उ० और डिगा० ८३ ४ एव ८३ ५८ पू० के मध्य अवस्थित है। इसके उत्तर आजमगढ और बनिया, पश्चिम जीनपुर जिला, दक्षिण शाहाबाद एव बनारस और पूर्वको बनिया तथा शाहाबाद जिला है। क्षेत्रफन १३८८ वर्गमील लगता है। लोकसन्ख्या प्रायः ८१३८१८ है।

गाजीपुर शहरमें इम जिलेकी मटर पदान्त है। इम-

के बीचसे गङ्गा बहती और उसके दोनों ओर विशेष उर्वरा भूमि देख पड़ती है। इसका उत्तरांश सरयू और गोमती नदीके बीच पड़ता है। उक्त दोनों नदियाँ जिले के-पश्चिम भागमें जा करके मिल गयी हैं। दक्षिण भाग में कर्मनाशा और गङ्गा है। इसका उत्तरांश दक्षिणांश की अपेक्षा ऊँचा है। इस उच्च भाग पर छोटी छोटी नदियोंन प्रवाहित हैं। करके पार्श्वस्थ भूमिको कापि कार्योंपयोगी बना दिया है। निम्न भूमिमें करायल नामकी एक मही होती है। उसमें पानी न देनेसे भी रबी तयार हो सकता है। यहां मुसलमानोंमें सुन्नियोंकी संख्या अधिक है। इस जिलेमें कई नगर बसते हैं।

स्थानोप प्रवाद ऐसा है कि यहां गांधि नामक किसी राजाका गांधिपुर दुर्ग बना था। उन्होंने गाजीपुरनगर भी स्थापन किया। किन्तु वर्तमान गाजीपुर नाम मुसलमानोंका रखा हुआ है। पहले उसको गजपुर कहते थे। जो ही—इसमें सन्देह नहीं कि वह अति प्राचीन नगर है। शहरकी बगलमें नदी किनारे मठके भीतर अनेक पुरातन इष्टक तथा मृण्मय पात्र और स्थान स्थान पर बहुत पुरातन खोदित शिलालिपियाँ देख पड़ती हैं। भितरी नामक ग्राममें ससुद्रगुप्तके समयकी शिलालिपि निकली है। उन्होंने कन्नौज तक अपना राज बढाया था। यहां पर मिले हुए समस्त मूल्यवान् स्तम्भों और शिलालिपियोंसे समझ पड़ता है कि ई०से बहुत पहले बुद्धदेवके समयकी सैयदपुरसे बक्सर तक समस्त प्रदेश समृद्धिशाली रहा। ईशासे २५० वर्ष पहले प्रसिद्ध अशोक राजाके राजत्व समयकी इस देशमें बौद्ध धर्म फैला। अशोक राजाके निर्मित प्रस्तरस्तम्भ और स्तूप देखे जाते हैं। चौथीसे ७वीं ई० शताब्दी तक मगधके गुप्तवंशने यहां राजत्व किया उस वंशीय राजाओंके बनाये हुए स्तम्भ तथा मुद्रादि स्थान स्थान पर मिलते हैं। गाजीपुरसे ६॥ कोस दक्षिण जमुनिया तहसीलके लाटिया नामक क्षुद्र ग्राममें ५०० फुट लम्ब और २०० फुट चौड़े ई०के टूटे स्तूपकी पश्चिम ओर प्रत्येक एक खम्भा है। (Fuhrer's Monumental Antiquities and Inscriptions, p. 232) किसी किसी मुद्रा और शिलालिपिमें श्रीगुप्तकुलेन्द्रका नाम मिला है। (Cunningham's Archaeological Sur-

vey Reports, XXII. p. 98.) ई०को जब चीन-परिवाजक युएनचुयाइ यह प्रदश देखने आये, बौद्ध और हिन्दू दोनोंका प्रादुर्भाव रहा। उन्होंने लिखा है कि 'चिनचु' राजकी सीमा चारों ओर १६५ कोस है। (Cunningham's Ancient Geography of India, p. 439,) गङ्गातीर पर उसकी राजधानी स्थापित है। अधिवासोवर्ग समृद्धिशाली तथा भूमि उर्वरा है।

युएनचुयांगके जाने पीछे हिन्दूओंने युद्ध करके बौद्धोंकी देशसे निकाला था। उसी समय भर नामक पराक्रान्त लोगोंने यहां अपना अधिपत्य फैलाया। उत्तर-पश्चिममें जब मुसलमान अपना राज्य बढाने लगे ब्राह्मण और राजपूत भाग करके भर जातीय राजाओंके ही आश्रयमें आ पड़े। वहां धरे धीरे इन राजाओंके पामसे जमीन ले करके पीछेकी जमीन्दार बन गये। ११८३ ई०को कुतुब-उद्-दीनने उत्तर-पश्चिम प्रान्तसे बङ्गाल तक मुसलमानो राज्य फैला दिया। यह प्रान्त भी अवश्य ही उनके राजका अन्तर्भूत हुआ। कहते हैं कि १३३० ई०में सम्राट मुहम्मद तुगलकके समय मसजद नामक किसी सामन्तने गाजीपुरके राजाको रणमें मार डाला। सम्राटने खुश हो करके इन्हें 'गाजी' उपाधि और निहत राजाका राजा दिया था। इन्होंने मसजदने उसका नाम गाजीपुर रखा। १३८४से १४७६ ई० तक यह प्रदेश जौनपुरके सड़की राजाओंके अधीन रहा सड़की राजवंश दिल्लीके लोदी वंशीय बादशाहोंकी अधीनता परित्याग करके स्वाधीन बना था। १५२६ ई०को सम्राट् बाबरने यह प्रदेश अधिकार कर लिया। फिर बकसरको लड़ाईमें शेरशाहने हुमायुंकी हरा इसको हस्तगत किया अकबरके समय यह स्थान मुगलोंके अधिकार पर इलाहवाट सूबेमें लगता था। उसके बाद इसको लखनऊके नवाबने अपने राज अधधमें मिला लिया। १७३८ ई०को नवाब शहादत खाने शेख अब्दुल्ला नामक किसी व्यक्तिको इसका शासनकर्ता बनाया था। यहां पर उनका बनाया हुआ चेहल-संतू (४० स्तम्भयुक्त भवन), इमामबाड़ा, मसजिद, चहारदौवारो, किला और नवाब बाग नामक उद्यान विद्यमान है। (Fuhrer's Monumental Antiquities etc. p. 233.) नवाबवांगके

पारस को उनकी कन्न है। जलालाबाद और फामिमाबाद में उनकी खड़ी भी हुई मसजिदका भग्नावशेष आज भी देव पडता है। अशुभ्राके मरने पर उनके पुत्र फजल अली राजा शासन करते रहे। बाराणसीके राजा बलबलसिंहने उनको निकाल करके गाजीपुर प्रदेश अपने राजमें मिलाया था। १७७० ई०को बलबल सिंहके मरने पर चेतसिंह राजा हुए। लखनऊ नवाबके सम्मति क्रमसे गाजीपुर चेतसिंहके ही अधिनारमें रहा। १७७५ ई०को नवाब आमफ उद्दौलानि बनारस राज्य अंगरेजोंको भेंट किया था। शेषमें १७८१ ई०को चारन हेष्टि गमने चेतसिंहको सिंहासनसे उतार दिया। उसी समयसे यह अंगरेजोंके अधीन हो गया। १८०५ ई०को यहाँ भारतके गवर्नर जनरल लार्ड कर्नवालिसका मृत्यु हुआ। उसी घटनाके अन्तर्गत 'कर्नवालिस मानुमेण्ट' नामको इमारत बनायी गयी। इसमें ३२ खम्भे और ऊपर एक गुम्बज है इसकी कुर्सी जमीनसे प्राय ८ हाथ ऊँची और मङ्गलमर पत्थरसे जड़ी हुई है। मध्यस्थलमें प्रस्तरखोदित लार्ड कर्नवालिसको अर्ध मूर्ति है। उसको एक और हिन्दू और दूसरी और मुसलमान प्रतिष्ठाति है। उत्तरको एक गोरा और एक सपाही ऐसा बना, मानो शोकाकुल खड़ा हुआ है। मिपाहिबो के बलबको नहर यहाँ भी आयी थी, परन्तु शोध हो उत्तर गयी।

अंगरेजोके अधिकारसे जानि वीछि १७८८ ई०को गाजीपुरमें जमीनका जो बन्दोबस्त किया गया था, आज भी चिरस्थायी रूपसे चला आता है। १८४० ई०की भूमिके खलाखल और अग्निदिने नूतन व्यवस्था की गयी। बाकी मानगुजारीके निये कितनी ही जायदाद बिकी थी। ८५८ ई०की जमीनके बारेमें नया बन्दोबस्त होने पर उसके पुराने हकदारोंके साथ नये हकदारोंका कितना ही झगडा और मुद्दमा लगा।

गाजीपुर हो अपने जिना चोग तहसीलका प्रधान नगर है। यह २५ ३५ ७० और टेगा ८७ ३८ ७० पू०में बनारसमें २० कोस उत्तर पूर्व पडता है। लोक संख्या प्राय ३८५०० है। यहाँ चोनी, तम्बाकू, मोटा शपडा और गुन बनन तैयार जाता है। उक्त प्रदेशको

सब अफीम यहाँ लायी जाती है। वहाँकी गवर्नमेण्टका अडिफेन विभाग यहाँ अवस्थित है। गाजीपुरमें एक म्युनिसिपालिटी भी है। यहाँको सजीमटोसे 'कारवो नेट थव सोडा' बनता है। गाजीपुरमें शीरा भी प्रसुत होता है। चोचाकपुरमें कार्तिही पृष्णिमाका गङ्गा स्नानोपनक्ष पर प्राय १०००० मनुष्य समवेत होते है।

युक्तप्रदेशके गाजीपुर जिलेकी मरदर तहसील। यह अक्षा० २५ २३ एच २५ ५३ उ० और देगा० ८३ १६ तथा ८३ ४३ पू०में अवस्थित है। क्षेत्रफल ३८१ वर्ग मील और लोकसंख्या प्राय २६६८०० है। इसमें एक नगर और ८२४ ग. घ. है। मानगुजारी कीई २६६००० और मिस ४८००० होगी। गङ्गा आदि कई नदिया उत्तरपश्चिमसे दक्षिण पूर्वकी बहती है।

युक्त प्रदेशके फतेहपुर जिलेकी एक तहसील यह अक्षा० २५ ४१ तथा २५ ५५ उ० और देगा० ८० ३१ एच ८१ ४ पू०के बीच पडता है। इसका क्षेत्रफल २७७ वर्ग मील है। असोखर राजाके पूर्व पुरुष अरबसिंहने इस नगरको स्थापन किया था। यहाँ एक किला भी बना है। लोकसंख्या प्राय ८१२२२ है।

गाजीबेग तरखा मिर्जा-सिन्धुदेशके एक सुललमान शासन कर्ता। यह मगहर चङ्गोज खाके वंशसम्भूत थे। मुहमद जानबेग इनके पिता रहे। पिताके मरते समय इनका वयस १७ बत्तरमात्र था। इन पर बादशाह एक बरको बडी मिहरबानी रखी। उन्होंने छोटी उम्रमेंही इन पर सिन्धु, गङ्गा शासनभार डाला। परन्तु मिर्जा ईसातर खा नामक आलोचके इनके विरुद्ध खडे हो जाने पर यह शासन कार्य न कर सके, उनके निये चेठा करने लगे। पिटबन्ध खुशफ खां चिगरोमके माहाय्यने इन्हींने प्रतिपादी ईमानर खांकी पराम्त धरके सिन्धु देशसे निकाल दिया। इन्हेने उसी खबमें अपनेक मैन्स मगह किया और फिर मन्नाटके विपक्षमें अन्ध धारण करनेका उद्योग लगाया। १०११ फसलोकी अक्षरने इनका विद्रोह दशर्नके निये विहारके शासनकर्ता मैयद खां और शाहजादे शाद उननाको भेजा था।

यह जब मगह्राटकी पथीनता स्वीकार करके दिल्ली पहा से, अक्षरने इनको समा करके फिर सिन्धुदेशका

शासनशर्ती बना दिया। अकबरके मरने पर शाहजहाँ-
ने बादशाह हो करके सिन्धु प्रदेशके साथ साथ सुलतान-
का शासनभार भी अर्पण किया। फिर उन्होंने इन्हे सात-
हजारी सेनापतिका शिर्ताव बख्शा था। छिन्नत शासन-
कर्ता हुसैन इन्के कन्दहार घेरने पर, यहाँउससे लड़नेकी
भेजे गये। उसी समय इनको 'फर्जन्द' उपाधि मिली
थी। ईरानके सुलमान शाह अब्बासने इन्हे अपने पक्ष-
में लानेकी विशेष चेष्टा की और कितनी ही खिलअत
क्षेत्र दी। परन्तु इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता कि
उन्होंने अपने प्रभुका पक्ष छोड़ा था। ७ वत्सर राज-
शासन करके १०१८ फसलीकी यह एकाएक मर गये।
कोई कोई उस घटनाको जहाँगोर राजत्वके ७म अर्ध-
में हई बतलाता है। खुशरो खानके पुत्र लुत्फ उल्ला-
के साथ इन्होंने किसी कारणसे निर्दय व्यवहार किया
था। वहे तोके अनुमानमें इन्हीके जहर देनेसे इनका
प्राण गया। इनके सन्तानादि नहीं हुआ। पिताकी
भांति यह भी एक कवि रहे। यङ्गीतमें भी इन्हे विशेष
अनुराग था। यह सब प्रकारके वाजे वजा सकते थे।
इनके पास कई कवि रहते थे। यह बड़े पान खाने-
वाले और विलासी थे।

गाजी सिंहदो—मुसलमानोंका एक धर्मसम्प्रदाय। इन-
की अपनी सम्पत्ति नहीं रहती। सम्प्रदायस्थ लोग
स्त्री तथा परिवार छोड़ अपनी अपनी सम्पत्ति ले करके
एक संधारण भाण्डार बनाते हैं। उसीसे इनका खर्च
चला करता है। यह धर्ममें इतने उन्नत रहते, किसीको
कोई बुरा काम करता देखते तो मार डालने तकमें
नहीं चूकते।

गाजी मियां—मुसलमानोंके उपास्य देवता। यह पांच
पीरोंमेंसे एक होते हैं। युक्त प्रदेशके निम्नश्रेणीस्थ
मुसलमान इनकी विशेष भक्ति करते हैं। कहीं कहीं
इन्हे गजनों दूल्हा और सालाका-चिनोला भी कहते हैं।
बहुतसे स्थानों पर ज्यैष्ठ्यामको इनके उद्देशसे नानाविध
उत्सवादि हुआ करते हैं। किसी लखे बांसकी सिरे पर
कुछ बाल बांध करके उठाये घूमते फिरते और उन्हें इनका
छिन्नमस्तक कहते हैं। सुननेमें आया है कि विवाहके
दिवसको धर्मके लिये उन्हींने अपना प्राण गंवाया था।

इसीसे उस उत्सवको 'गाजी मियांका शादी' भी कहा
जाता है। बहुतसे हिन्दू भी इस उत्सवमें मन्मिलित होते
हैं। ठीक तोर पर कोई नहीं बतला सकता वह किस
समयके व्यक्ति थे। कोई कोई कहता कि वह सदसूद
गजनवोंके भतीजे थे, ४०५ हिजरीको अजमेरमें उत्पन्न
हुए। ४२४ हिजरीको १८ वर्षकी अवस्थामें बहारायच
नगरके हिन्दू राजा माहबद के साथ लड़नेमें वह मार
गये।

गाञ्जावदर—भोलपुरी नदी पर अवस्थित एक छोटा फरद
राजा। यह आजकल जूनागढ़के अधीन है। वावरिया
वंशके अलीरोंका वाम यहाँ अधिक है। लोकसंख्या
लगभग १५० है।

गाञ्जिकाय (सं० पु०) वर्तिक पत्नी।

गाटर (हिं० स्त्री०) जुआटेकी एक लकड़ी जिसके दोनों
ओर बेल जोते जाते हैं।

गाड़ (हिं० स्त्री०) १ गत्त, गड़ना। २ अन्न रखनेके
लिये पृथ्वीके भीतर खुदा हुआ गड़ना। ३ नोल आटिके
कारखानेमें पानो रखनेका गड़ा। ४ कूपकी ढाल।
५ खत्ता। ६ खेतकी मेंड़। ७ बाढ़।

गाड़ना (हिं० क्रि०) १ पृथ्वीमें गत्त खोद कर किसी
पदार्थको उसमें रखकर मही डाल देना, तोपना।
२ जमाना। ३ धसाना। ४ छिपाना।

गाडर (हिं० स्त्री०) १ भेंट। गाडर देखो।

गाडरवारा—१ मध्यप्रदेशके नरसिंहपुर जिलेकी पश्चिमी
तहसील। यह अक्षा० २२' ३८" तथा २३' १५" उ० और
देशा० ७८' २७" एवं ७८' ४" पू०के बीच पड़ता है।
इसका क्षेत्रफल ८७० वर्गमोल और लोकसंख्या कोई
१८४२२५ है।

२ मध्यप्रदेशके नरसिंहपुर जिलेकी गाडरवारा तह-
सीलका सदर। यह अक्षा० २२' ५५" उ० और देशा०
७८' ४८" पू०में शकरके वाम तट और ग्रेटइण्डियन
पेनिन्सुला रेलवे पर अवस्थित है। यहाँसे मोहपानी
कोयलेकी खानको जानेकी राह लगी है। कपड़े बुनने
और रंगनेका खूब काम चलता है। भूपाल, मेलसा
और मागरसे जितना अनाज इधरका आता, सभी इस
शहरके बाचसे ही करके दूसरी जगह जाता है। यहाँसे

उन सभी राज्योंकी शस्यके बटने गुड, नमक और शकर-
की रफ्तानी होती है। महाराष्ट्र अभ्युदयके समय
किसी गौड़ राजपूतने गाढ़वाडेमें एक छोटा किला
बनाया था। उक्त दुर्गका भग्नावशेष अभी विद्यमान
है। १८०४ ई० तक उसमें सरकारी दफ्तर लगता रहा
उसके बाद किसी दूसरी जगहकी उठ गया। मराठोंके
समय यह नगर अपने जिलेकी राजधानी थी। इसकी
आबादी लगभग ८१८८ है। १८६७ ई०को यहा म्युनि-
सिपालिटी बनायी गयी। यहासे घी और अनाज बाहर
बहुत जाता है।

गाडा—युक्त प्रदेशके कृषक जातिविशेष। इनमे कुछ
सुसन्मान भी है। कहते है कि वास्तविक गाडे चन्द्र-
वशीय क्षत्रिय है। इनका आदिनिवास दिल्लीके आस-
पास था।

गाडी (हि० स्त्री०) एक जगहसे दूसरी जगह पर माल
बसवाव या मनुष्यो को पशु चानेका यन्त्र। यान, शकट,
गाडी कार्र प्रकारकी होती है। यथा रथ, बजली डक्का,
तांगा, बगची, जोडो, फिटन, टमटम आदि।

गाडीखाना (हि० पु०) गाडियोंके रखनेका स्थान।

गाडीघान (स० पु०) जो गाडी चलाता है, कोचवान।

गाठ (स० स्त्री०) गाहूँ का १ अतिग्रय, दृढरूप।

‘आठपरकी गाठ निशेच। (शान० १।१११)।

(त्रि०) २ घना, गाढा। ३ गभीर, गहरा, अथाह

४ धिक्कट, कठिन, दुर्लभ, दुर्गम। ५ संधित।

‘तपस्विगाढा तमसो वापि’ (रघु० २।७२)

गाढानवण (म० स्त्री०) मयूर नमक।

गाढमुष्टि (स० पु०) गाढा हटा मुष्टिरत्न। १ खड्ग। (त्रि०

२ कृपण, कजूस।

गाढा (स० वि०) जो जनक भय पतना न हो।

गाढापुरी—बम्बई बन्दरके पासका एक छुट्टी द्वीप। अंग्रज
इसको Elephanta Island अर्थात् हस्तिद्वीप कहते है।
प्राचीन दुर्गकेमें कोई कोई गाढापुरीकी ‘गाडीपुरी,
गामीपैरी और ‘घारापुरी भी लिख गया है। डा०
विन्सनने ‘घारापुरीका अर्थ पुण्यदायक पर्वत लगाया
था। किन्तु डा० टिब्स यह पतनाते कि उसका नाम
‘गाढापुरी अर्थात् गुहामन्दिरपूर्ण नगरी ठहराना है।

यह गीप नाम ही युक्तिसगत जैसा समझ पडता है।
गाढापुरी द्वीप अक्षा० १८ ५०’ उ० और देशा० ७३’
पू०में बम्बई शहरसे ६ मील दूर भारतीयकूलके बाहर
अवस्थित है। यह धाना जिलेके पनवेल उप विभागमें
लगता है। इसका परिधि चारसे साठे ४ मीलके बीच
है। दो लम्बी पर्वत श्रेणियां यहा विद्यमान हैं। उनके
समथमें सन्नीच उपत्यका है। इस द्वीपका परिमाण
भाटेके समय छह और सुधारके चढते ४ पर्वमोक्ष
रहता है।

पौतंगीज जब इस द्वीपके दक्षिण भागमें उपस्थित
हये, अपने प्रथम भवतरणके स्थान पर ही पत्थरके हाथी
को एक बडो मूर्ति देखी। उसीसे इस द्वीपका नाम
उन्होंने हस्तिद्वीप (Elephanta) रख दिया है। हस्ती
मूर्ति १३ फुट २ इंच लम्बी और ७ फुट ४ इंच ऊंची
थी। १८१४ ई०को मत्या और फिर चारो पैर टूट
जानेसे १८६४ ई०को उसको उठा करके बम्बई नगरके
विक्टोरिया उद्यानमें रखा गया। सिवा इसके उक्त दोनो
पर्वतमालाये जहा मिल जाती गयी हैं, घोडेकी एक
मूर्ति रही। मि० भोविङ्गटन १६८८ ई०में इसकी देख
लिख गये हैं कि वह बहुत ही स्वाभाविक सादृश्यविशिष्ट
थी, घोडी दूरसे सब नोग उसको जीवित प्राणी जैसा
समझते थे। अथ इसका कोई चित्र भी नहीं मिलता।
१७१२ ई०को कपतान पायकने यह घोटकमूर्ति देगी
थी, परन्तु तत्पुनर्वर्ती दर्यकोंके लिखित विवरणमें इसका
कोई उल्लेख नहीं।

द्वीपके उत्तर पृथ्वी और पूर्व भागको छोड करके
दूसरे सब पहाड लताओं और भाडियोंसे भरे हैं। पहाड
के बीचकी जमोनमें आम, इमनो और करी दा खूब
होता है। पर्वतोंके ऊपर तानहथ और नीचे धान्यपेत
है। समुद्रका किनारा बानू और कीचडसे भरा हुआ
है। उस पर कोई पेड पत्ता नहीं। जमोनका रंग
काला है। इसमें आमके वाग नंगे हुए हैं।

ई० श्य शताब्दीसे टमर्वा तक सभ्यत इस द्वीपमें
एक सन्निहितभय नगर रहा, जो देवानायादिके लिखे
प्रसिद्ध था। कई एक पुरातत्त्ववित् बतनाते कि उर्मा
स्थान पर मौर्य राजाओंको ‘पैरी’ नगरी रही। १५७८

ई०की जग हूगिन भन लिम्स सोटेनने अपने भ्रमण वृत्ता-
न्तमें इसी गाढ़ापुरीको 'पुरीद्वीप' लिखा और यह भी कहा
था कि उस गुफाओंसे भरी स्थानकी पोतगोज् जस्तिहोप
(Elephante) नामसे अभिहित करते हैं। यहाँ छह
गुहामन्दिर हैं। एलोरा और अजण्टाके गुहामन्दिरोंकी
तरह यह भी बहुत विख्यात है। गुहामन्दिर व्यतीत
उत्तरांशकी सेठवन्दरसे पूर्वमें खेतीके बीच दृष्टक प्रस्त-
रादि निर्मित भित्ति, स्तम्भादि, शिवलिङ्गादि तथा अन्यान्य
नानाविध भग्नावशेष देखते हैं और इन्हीं भग्न स्तूपों-
से अनुमित होता, किसी समय वह सुन्दर समृद्धिसम्पन्न
नगर था।

छह गुहामन्दिरोंमें चार पूर्णरूपसे खोदित और प्रस्तुत
हुए जैसे मालूम पड़ते हैं बाकी दोमें एककी गुहा बनी थी;
परन्तु खम्भों, दीवार, छत या फर्श पर कोई नक्काशी नहीं
हुई। अवशिष्टका केवल प्रवेशद्वार मात्र बना था, गुहा
तक पूरे तौर पर तैयार न हो सकी। बनी हुई ४ गुफा-
ओंमें बड़ी देखने लायक है। यह पश्चिम ओरको पहाड़
खोद करके प्रस्तुत हुई है। इसको पूर्वसे पश्चिम तक
पत्थर काट करके पट्टाचाया गया है। उसीसे इसमें दोनों
ओरको प्रवेश कर सकते हैं। मि० फर्गुसनका कहना
है कि वह चौरघरके मन्ने पर बनायी गयी है। इसका
बड़ा फाटक उत्तरमुखी है। चढ़नेको २॥ फुट चौड़ी
कई सिद्धियां लगी हैं। दरवाजा ३ दराजोंमें है। यह
तीनों दराजों ४ खम्भों पर सधी है। प्रान्त भागके दोनों

५४ फुट लम्बा और साढ़े १६ फुट चौड़ा मण्डप है।
इसी मण्डपके सामने तीन खोदित शिल्पबहुल घर हैं।
इनका परिमाण भी मण्डप-जैसा ही है। मण्डप और
इन तीनों घरोंकी निकाल बालनसे गुहाका अवशिष्ट
अंश केवल ८१ फुट परिमित चतुरस्र मात्र रह जाता है।
इस स्थानकी छत खम्भोंकी ६ कतारों पर खड़ी है।
फिर एक एक कतारमें छह छह खम्भे लगे हैं। केवल
पश्चिमदिक्के कोणमें पौट स्थान बनानेकी जगह छोड़ दो
गयी है। उधरकी ४४ खम्भे लगे हुए हैं। सब मिला
करके यहाँ २६ खम्भे रहें। उनमें सोलह आधे गोल हैं।
बाकी १० पूरे गोल खम्भोंमें आठ टूट पड़े हैं। कुछ
कुरसी सब जगह बराबर न रहनेसे खम्भोंकी ऊँचाईमें
भी अन्तर आता है। १५से १७ फुट तकके ऊँचे स्तम्भ
संलग्न हैं। पिछवाड़ेकी ढालानकी दोनों बगलोंमें
२ घर हैं। वह १७॥ फुट लम्बे १६ फुट चौड़े पड़ते हैं।
पूर्व दिक्का मण्डप अति कम करनेसे चूवृत्त-जैसी कोई
जगह मिलती है। इस चूवृत्तसे दो-एक कदम दक्षिण
मुख चलने पर और एक चद्र गुहा देख पड़ती है। यह
८८ फुट दीर्घ और ५६ फुट चौड़ी है। इसमें एक खुला
वरामदा बना है। उसके पीछे एक देवगृह वा "आदि-
त्यम्" और दोनों पाश्वर्कोंकी २ पूजागृह हैं। इन देव-
गृहोंके चारों ओर प्रदक्षिणाको ८॥ फुट चौड़ी सुभाष-
दार राह लगी है। इसीको 'प्रदक्षिणा' कहा जाता है।
पहलो गुहाके अभ्यन्तर भागमें सबसे पीछे प्रस्तर



स्तम्भ पर्वत संलग्न होनेसे आधे गोल है। गुहा पूर्व-
द्वारसे पश्चिम द्वार पर्यन्त १३० फुट है। प्रवेशद्वारके सम्मुख

खोदित एक त्रिमूर्ति है। इस प्रतिमाका वक्षःस्पर्श आधा
तक खुदा हुआ है। ३ मुख और ६ हाथ देख पड़ते

हैं। दोनों मुख हरिहर ब्रह्माके मुखों जैसे ही प्रतीय मान होते हैं। उसीसे इसका नाम त्रिमूर्ति है। यह एक दीवारके पोछे अ धरे छोटे गृहमें स्थापित है। यह गृह १०॥ फुट प्रगस्त है। इसके सामने २॥ फुट व्यासके २ खभे लगे हैं। मूर्तिके मुखत्रय समबन्धमें कोई तो कृहता कि यह शिव, शक्ति और रुद्रको प्रतिष्ठाति है। इसका कारुकार्य अतोव सुन्दर है। मध्यस्थानका शिव मुख देखनेसे ब्रह्माका मुख जैसा मान्म पडता है। कारण इसके वाम हस्तमें ब्रह्माण्डयोजन्वरूप दाडिमव फल का भग्नाश या योगियोंके पानपात्र जैसा कमण्डलु दृष्ट होता है। दक्षिण हस्तमें एक सर्पमूर्ति रहीं, जो टूट गयी है। दोनों कान कच्छ देशके कनफटे योगियों जैसे लम्बे हैं। मस्तकका सुकृत अर्धचन्द्राकृति जैसा बना हुआ है। दक्षिणस्थ मुख रुद्रदेवका है। इसके दाहने हाथमें एक साँप लटक रहा है। वाम ओरका मुख महादेवका जैसा देख पडते भी विष्णुका ही मुख ठहरता है। कारण इसके दाहने हाथमें कमल है। इन्ही विष्णु भावापन्न मुखकी कोई कोई शक्तिमूर्तिके नामसे जना बतलाता है। इस त्रिमूर्तिके रक्षित स्थानके बाहर खर्भके दोनो ओर द्वारपालो की २ मूर्तियाँ हैं। उनमें प्रत्येक १२ फुट ८ इंच लम्बी है। इनकी बगलमें एक एक पिशाचमूर्ति है।

त्रिमूर्तिके दर्शन करनेको जानेसे लिङ्गमन्दिरका गर्भ-गृह लांघना बडता है। इस गर्भगृहमें प्रवेश करनेकी चारों ओर ४ दरवाजे लगे हैं। दरवाजा पर चटनेकी ६ सिद्धियाँ हैं। इसी कारण मन्दिरसे पीठस्थानकी कुर्सी ३ फुट ८ इंच ऊँची है। दरवाजाकी दोनों ओर दो दोके हिसाबसे ८ द्वारपाल हैं। उनमें कोई १४ फुट १० इंच और कोई १५ फुट २ इंच पडता है।

त्रिमूर्तिके पूर्वदिक्स्थ गृहमें अर्धनारोत्तर मूर्ति है। इसमें महादेव और पार्वतीका अर्धान्नामिलन दिखलाया है। इस गृहमें अचरापर और भी अनेक देवमूर्तियाँ खोदित हैं। अर्धनारीश्वरकी पु मूर्तिके दाहने पीछेकी गरुडासीन विष्णु मूर्ति, साथ ही ऐरावत शृङ्गपर इन्द्र मूर्ति और उसके पश्चात् पद्मसपुष्ट पर पद्मासन ब्रह्म मूर्ति प्रतिष्ठित है।

त्रिमूर्तिके पश्चिम दिक्स्थ गृहमें १५ फुट ऊँची शिव मूर्ति है। इसके मस्तक पर गङ्गाकी ३ मुखवाली एक मूर्ति बनी है। इस नारीदेहके दोनों हाथ टूटे और शिवमूर्तिके भी वामदिक्स्थ दोनो हस्त भंग हो गये हैं। वामदिक्की १२ फुट ४ इंच ऊँची पार्वतीमूर्ति है। शिवके दाहने चतुर्हस्त ब्रह्मा और ऐरावतासीन इन्द्रकी मूर्ति विराजती है। पार्वतीके बाये गरुडासीन विष्णु मूर्ति है। गरुडके गलेमें मालाकार सर्प निपटे हुए हैं। सिवा इसके ब्रह्माकी मूर्तिके उपरि भागमें ७ सिधराशि खोदित हुए, उनके बीचमें ६ मूर्तियाँ बनी हैं। शिवमूर्तिके मथ्य पर एक मुनि और दूसरो किले' पुरुष का मूर्ति है। पार्वतीके मथ्य पर भी मधमें छिपे हुई इक्षिया और पुरुषाकी खोदित मूर्तियाँ देख पडती हैं।

इस गुहामन्दिरके दक्षिण ओरसे जाने पर पश्चिम दिक्के प्रवेशद्वारको चादनीके पास एक घरमें शिव दुर्गाका विवाह खोदित हुआ है। शिवकी मूर्ति १० फुट १० इंच और पार्वतीकी ८ फुट ७ इंच ऊँची है। शिवका यज्ञोपवीत वामस्कन्धमें दक्षिण हस्त पर होता हुआ दक्षिण जातु पर्यन्त फैल गया है। शिवके घाम भागमें एक त्रिमूर्ति है। यह सम्भवत ब्रह्माकी मूर्ति होगी। कारण स्वयं पद्मयोगि ही इस विवाहके पुरोहित है। उसके पश्चात् भागमें ४ हाथकी विष्णुमूर्ति है। इसके एक हाथमें पद्म, एकमें चक्र और अन्य दो हाथ भंग हैं। उमाके दक्षिण उनकी माता मनकाकी मूर्ति है। उमाके मस्तक पर हाथमें चामर लिये वेद माता सरस्वती विराजित है। पार्वतीके दाहने और भी स्त्रीमूर्ति हाथमें एक चामर लिये हुए खडी है। इसके पीछे धू घरधाने वाल और मस्तक पर शिरस्त्राणविशिष्ट चन्द्रदेवकी मूर्ति है। इसकी गर्दन पर भी एक चन्द्रार्ध बना हुआ है। शिवके मस्तक पर शङ्गीकी मूर्ति है। फिर दूसरो दीवारोंमें मुनि ऋषियोंकी मूर्तियाँ खुदी हैं। इसके बाट शिव और पार्वतीका कौसासविहार है। इसमें उनके पुत्र कार्तिकेय तथा गणेश और शिवके दक्षिण शङ्गीकी मूर्ति विद्यमान है। हरपार्वतीके नीचे श्वभ तथा सिद्ध और चारो पार्श्व पर पिशाचगण हैं।

पूर्वदिक्के मध्यमें उत्तर ओरकी शिवोक्त गृहके

विलकल सामनेवाले श्ररके बीच के लास पर्वत पर हरपार्वती आसीन हैं। नीचे लक्षाधिपति रावण स्तुति कर रहा है। शिवकी वामदिककी गरुडासीन विष्णु और अनेक पिशाच मूर्तियां खुदी हुई हैं।

बड़ी गुहाकी पश्चिम सीमाके शेषभागमें मण्डपकी उत्तर दिककी शिवविवाह-गृहके सामनेवाले घरमें शिवको भैरव महाकाल वा कपालभृत् मूर्ति खोदित है।

उत्तर दिकके मण्डपमें भीतर जाने पर दक्षिण प्रान्तके किसी घरमें १० फुट ८ इंच ऊंची एक चतुर्हस्त शिवमूर्ति है। रुद्रदेव इस स्थान पर ताण्डव नृत्य कर रहे हैं। पास ही ६ फुट ८ इंच ऊंची पांच तो, गरुड पर विष्णु, ऐरावत पर इन्द्र, गणेश, ब्रह्मा और भृङ्गीकी मूर्ति है।

इस मण्डपकी पूर्वसीमाके सामनेवाले घरमें शिवकी महायोगी वा धर्मराज मूर्ति है। गृहमें सामने दोनों ओरकी २ अनुचर हैं। उनमें एकके गलेमें रुद्राक्षकी माला पड़ी और दूसरा पैर पर पैर रख करके बैठा है। शिवके वाम भागकी केलिका एक पेड है। वह इस प्रकारसे तराशा गया है, मानो ३पत्ते टूट पडे है और एक गया पत्ता गोल हो करके निकल रहा है। इसी कदली-हृद्यके निकट विष्णु और ब्रह्माकी मूर्ति है। शिवके दोनों पार्श्वों पर चामरव्यजनकारिणी दो सखियां खुदी हैं।

इस हहत् गुहामन्दिरका पूर्वद्वार अति सुन्दर और सुचारु रूपसे खोदित है। मन्दिरके मध्य प्रवेश करनेकी १० फुट १० इंच प्रशस्त ८ मिश्रियां लगी हुई है। ऊपरी सोपानके दोनों पार्श्वोंपर दो दो सिंहमूर्तियां हैं। भीतरी मण्डप ५८ फुट ४ इंच लम्बा और २४ फुट २ इंच चौड़ा है। चारों कोण पर ४ घर हैं। इसके पश्चात्तममें गर्भगृह है। पश्चिमदिकका प्रवेशपथ उतना सुन्दर नहीं लगता, परन्तु सम्मुख स्तम्भ और उसके पीछे दीवारकी खोदित मूर्तिका कारुकाय देखते ही बन पड़ता है।

इन गुहामन्दिरसे थोड़ी दूर दक्षिण-पूर्व दिककी ओर एक गुफा है। इसकी लम्बाई १०८॥ फुट है। उत्तर सीमाने गर्भगृह विद्यमान है। वह सम्मुख मण्डपसे अपेक्षाकृत उच्च लगता है। भीतरी स्तम्भोंका व्यास २ फुट ८ इंच है। मण्डपके पीछे ३ घर हैं। उत्तर-

दिकका गृह १५ फुट ८ इंच दीर्घ और १६ फुट ५ इंच चौड़ा है। गुहा मध्यभागके घरका अगवारा २० फुट ८ इंच और पिछवारा २२ फुट पड़ता है। इसी पिछवाड़ेकी दीवारसे ३ कदम दूर ७ फुट ४ इंचकी एक चतुर्हस्त वेदी है। वेदीके उत्तरको प्रणालिका और वेदीके उत्तर भग्न लिङ्गमूर्ति विद्यमान है।

इसी द्वितीय गुहामण्डपके दक्षिण भागके पर्वतमें कोई दूसरी गुफा है। उसका प्रवेशद्वार दक्षिणमुखी बना है। वह उक्त दोनों गुहाओंकी अपेक्षा पुरातन और भग्न है। उसको वर्तमान अवस्था देख करके मण्डपकी दीर्घताका परिमाण अनुमान नहीं कर सकते। गुहा भीतरमें १० फुट २ इंच लम्बी है। उत्तर और दक्षिण सीमा पर २ गभगृह हैं। दोनों गर्भगृहोंके सामने कतारके कतार अठ पहलू खम्भे लगे हैं। उसके पश्चिम और भी एक दूसरा घर है। मण्डपसे गर्भगृहको जानेकी राहका दरवाजा ४ फुट ८ इंच प्रशस्त है। इसके दोनों पार्श्वों पर द्वारपालोंकी २ बड़ी मूर्तियां और चारों किनारों पर पिशाच तथा अन्यान्य मूर्तियां खुदी हुई हैं। भीतरका गर्भगृह १८ फुट १० इंच लम्बा और १८ फुट १० इंच चौड़ा है। बीचमें ६ फुट ११ इंचकी एक चौकीर वेदी है। उस पर एक लिङ्गमूर्ति बनी है। परिधि ६ फुट और ११ इंच तथा व्यास २३ इंच है। इसकी दोनों ओरकी १५ फुट चौकीर २ घर हैं।

इस पर्वतकी उपत्यकाका अतिक्रम करके उक्त तीनों गुहामन्दिरोंकी विपरीत दिकमें अवस्थित दूसरे पर्वतके उपरि भाग पर ४था गुहामन्दिर विद्यमान है। यह १म गुहामन्दिरसे प्रायः १०० फुट उच्च और उसके उत्तरपूर्व कोणमें अवस्थित है। डे कूटो (De Couto) साहबने १६०३ ई०को यह मन्दिर देख करके लिखा कि उसमें एक दालान और ३ घर थे। दक्षिण दिशाके घरमें अब कुछ भी नहीं रहा है। द्वितीय गृहके मध्यमें किसी बड़े चौकीर जगह पर २ प्रतिमूर्तियां हैं। इनमें एकके ६ हाथ हैं। इस मूर्तिका नाम उक्त साहबने 'विष्णुला चण्डी' लिखा है। सम्भवतः यह दोनों मूर्तियां बैताल और चण्डीकी होंगी। परन्तु अब इनका चिह्नमात्र भी नहीं देख पड़ता। इस देशके अधिवासी उस गुहा-

मन्दिरकी सीतावाइका देवालय कहते हैं। मण्डपके चारो ओर ४ खम्भे हैं। फिर ८ फुट ५ इंच ऊँचे रीढ़ों के भी दो खम्भे लगे हैं। मण्डप ७२ फुट ६ इंच लम्बा और उत्तरकी २७ फुट ४ इंच तथा दक्षिणकी २५ फुट ७ इंच चौड़ा है। इसके दोनो पाखों पर २ अन्तराल रहते हैं। मध्यस्थलका रहते गर्भगृह होता है। इसके प्रवेशद्वारकी ऊँचाई ७ फुट ११ इंच और चौड़ाई ४ फुट ११ इंच है। भीतरकी ५ फुट ४ इंच लम्बी और ३ फुट ५ इंच चौड़ी वेदी बनी है। इसके उत्तरकी प्रणालिका है।

सहस्रगुहामन्दिरसे पश्चिमकी पर्वतशिखर पर एक मग्न व्याघ्रमूर्ति है। हीपवामी इसके उमाव्याघ्रश्वरी वा देवोकी व्याघ्रमूर्ति—जैसी भक्ति और पूजा करते हैं। यह ३ फुट ऊँची है।

लोक निरूपण किया जा नहीं सकता कितने दिन पीछे किस राजाके राजत्वकालकी और किसके द्वारा उसके गुहामन्दिर खोद गये। स्थानीय अधिवासियोंमें तोन विभिन्न प्रयोग प्रचलित हैं। कोई कोई कहता कि पाण्डवोंने जो वृह मन्दिर बनवाया था। फिर किमोके मतमें बनाडाके राजा वाणासुर और किमोके कथनानुसार सिकन्दर बादशाह उसके निर्माता रहे। किन्तु उपर्युक्त प्रवादोका सत्यासत्य समझ नहीं पड़ता।

वरगैस (James Burgess) साहबने विशेष पर्यालोचना करके इन गुहामन्दिरोंका निर्माण काल ई० ८म शताब्दीका शोभामय अथवा ८म शताब्दीका प्रारम्भ ही ठहराया है।

आजकल इन मन्दिरमें अथवा कोई खोदित ग्रन्थ लिपि दृष्ट नहीं होती। १५४० ई०को पोर्तगीज गवर्नर डमजोयाव दि क्राट्टो इन पहाडो गुफासे १ ग्रन्थलिपि अपने देश ले गये थे। सभ्यत उसीमें उसके निर्माण काल और निर्माताका नाम होगा। वह प्रस्तरलिपि खो गयो है। अधिष्ठतमें उसके पुन प्राप्ति होनेसे इसके काल निर्णयकी आशा की जा सकती है।

किमो गैववकी हिन्दूवर्णिक इन बड़े गुहामन्दिरमें आ करके पूजा और लक्ष्मणादि किया करते हैं। गिण्पात्रिकी यहाँ बड़े धूमधडाकेमें मना लगता है।

गाढावटो (स० स्त्री०) गाढा वटो घटिका यल बहुवो०। चतुरङ्ग क्रोडाश्रमों एक प्रकारकी क्रोडा।

“नोकेका घटिका दश विपत वीजग यदि।

गाढावटोति बिल्याता ५० तथ न दृष्टान्त ३ (तिबितल)

गाणकार्य (स० त्रि०) गणकारोमव गणकारि श्व। उभाश्रमो ५ (वा ४।१।१५) गणकारिका अपत्यादि, गणगारि ऋषिके व शत्रु।

गाणगारि (स० पु०) गणगारस्यापत्य इज्। मुनिविशेष। उमर्षोमव गाणगारि १ (वा ४।१।१५) गणगारि १।

गाणपत (स० त्रि०) गणपतिर्देवता अस्य, गणपति-अण्। १ गणपति सम्बन्धाय। २ गणपति उपासक।

गाणपत पञ्चप्रकार उपासकीमें एक होते हैं। शैव, शाक्त वा वैष्णवीकी भांति यह भी अपने दृष्टदेवता केवल गणपतिको सव देवताओंका प्रधान सम्भक्त करके उपासना करते हैं। आजकल गाणपत सम्प्रदाय बहुत घट गया है। और आचार व्यवहारमें भी अन्यान्य उपासको के साथ इनका कोई भेद लक्षित नहीं होता। परन्तु किसी समयको इस सम्प्रदायने विशेष उचितनाम किया और वैष्णव सम्प्रदायकी तरह एक पृथक् मत चला दिया था। ऋक्षैटम हित (२।२४।१) के मन्त्र और वाजसनेय संहिता (१६।२२ २३) के अध्यायमें गणपतिकी स्तुति मिलती है। इससे मालम पड़ता कि प्राचीन कालमें ही गणपतिकी उपासना चल रही है।

तन्त्रशास्त्रमें शिव आदिकी उपासनाकी तरह गणपतिकी उपासना भी प्रधान जैसी निर्णीत हुयो है। सिवा इसके तन्त्रशास्त्रमें और एक विधान देख पड़ता कि किसी भी देवताकी उपासना क्यो न की जावे मर्व प्रथम गणपतिकी पूजना पड़ेगा। जो गणपतिकी पूजा न करके अन्य देवताकी पूजता, वह पूजाफलमें वक्षित रहता है। हिन्दू लेखक किमी ग्रन्थकी लिखना आरंभ करने पर सर्व प्रथम “नमो गणेशाय” वा “श्रीगणेशाय नमः” लिपिवह करते हैं। इन्ही समझ कारणों से बहु तसे लोग अनुमान करते किमी समय गाणपत सम्प्रदाय अतिशय प्रबल रहा। उनकी युक्ति और उपदेश शास्त्र सङ्गत तथा सबकी आदरणीय था। गाणपत्य धर्ममें सम्पूर्णरूपमें न मही, आगिक रूपमें प्राय सभी सम्प्रदा

जोमें संक्रमण किया था। कालके प्रबल बगमें इस सम्प्रदायका ज्ञास होते भी हिन्दू लोगोमें गणपतिकी ऐसी उपासना चलती थीर भक्ति मिलती है। वास्तविकपक्षमें कोई सन्देह नहीं कि वह सम्प्रदाय अपर सम्प्रदायोकी तरह बलवान् था।

“शं यानि गाणपतानि शाक्तानि च यवाणि च ।

साधनानि च शौराणि चान्यानि यानि कानिचित् ।

शुवाणि तानि देवेश त्वदधकवाग्निःसत्वानि च ॥” (तन्त्रसार)

गाणपत सम्प्रदायके मतमें गणपति ही परब्रह्म हैं। उससूत्र जगत् गणेशसे उत्पन्न हुआ, गणेशमें स्थित है और गणेशमें ही लीन हो जावेगा। गणेशायर्वशीर्ष प्रभृति उपनिषद्में भी “तत्त्वमसि” आदि वाक्योंसे गणेशकी ही वर्णना की गयी है। गणेश—ब्रह्मा, विशु, शिव प्रभृति सब देवताओंके ही अधिपति, गुणत्रयातीत, अवस्था-द्वयशून्य, देहत्रयरहित और त्रिकालके अधिकारी हैं। वह सभी प्राणियोंके मूलाधारमें अवस्थिति करते हैं। गणेशकी ३ शक्तियां हैं। उन्हींके द्वारा गणराज जगत्की सृष्टि, पालन और नाश किया करते हैं। वह मगुण और निगुण भेदसे दो प्रकार है। योगी मगुण गणपति-स्त्री उपासना करते हैं। उस उपासनासे अविवेक नष्ट हो जाता और बादको उपासक मुक्ति पाता है।

(गणेशायर्वशीर्ष उप० ६ ५०)

गाणपत उपासक शाक्त वा शैवकी तरह गणपतिमन्त्र-में दोक्षित होता है। गणपति उनके इष्टदेव हैं। चिर-जीवन वह गणेशकी ही उपासना किया करते हैं। वे किसी अपर सम्प्रदायके प्रति ईर्ष्या या दूसरे देवताका द्वेष नहीं रखते, साथ ही अपने इष्टदेव गणेशकी भक्ति से अधिक लीन रहते हैं। गणेशका मन्त्र “ॐ गं” है। गाणपत लोगोको इसी मन्त्रकी टीका दी जाती है।

गणेशके उपासकोंमें भी सन्ध्या आदिका विधान है। “एकं नाम विष्णुं वक्रतुण्डाय धीमहि । तन्ना दत्तो प्रच दशान्” गणेशकी गायत्री है। गणेशके मन्त्रमें ऋषि गणक, निचुद् गायत्री छन्दः और देवता गणपति है। उपासना-की अन्यान्य प्रणालियां अपरापर देवताओंके समान हैं। गाणपतोके मतमें मृत्यु कालको गणेशकी चिन्ता करते करते प्राण छोड़नेवाला मुक्ति पाता है।

(गणेशगीता) गणेश देखो ।

गाणपत्य (सं० त्रि०) गणपतिरूपाभ्योऽस्य स्युः । १ गणेश-का उपासक । २ गणपति मन्त्रन्धीय । (कौ०) ३ गण-पतिका भाव । गाणपत देवा ।

गाणिक (सं० त्रि०) गणं वेत्ति अधीति वा उक्थाटित्वात् ठक् । १ गणसूत्रादि पाठक । २ गणसूत्रादि वेत्ता । ३ गण सूत्रकुशल ।

गाणिक्य (सं० क्लो०) गणिकानां वेद्यानां समूहः शणिका घञ् । गणिकायादौशानि इतिधम । पा ४।३।० वा ४।३।० । गणिका-समूहः, वेद्याका भुंड ।

गाणितिक (सं० त्रि०) गणितं शास्त्रं वेत्ति ठक् । १ गणितशास्त्रवेत्ता, गणितशास्त्र जाननेवाला । २ गणित-संवन्धीय ।

गाणिन (सं० पु०-स्त्री०) गणिनाऽपत्यादि गणिन्-अण् इतो न लोपः । गणिवदधिर्गणिकापत्तिनय । पा ४।३।१६५ । १ गणिका अपत्य । २ गणीका क्रात्र ।

गाण्डव्य (सं० पु०) गण्डोरपत्यं । गर्गादित्वात् यञ् । गण्डुका अपत्य, गण्डुका वंशज ।

गाण्डव्याघन (सं० पु०) गण्डोर्युवापत्यं गण्डु-घञ्, ततः फञ् । गण्डुका युवा अपत्य ।

गाण्डव्यायनी (सं० स्त्री०) गण्डोरपत्यं स्त्री गण्डु-यञ् । सर्वं व लोडितादिकसन्ती भवः । पा ४।३।१८ । गण्डुका स्त्री अपत्य, कन्या ।

गाण्डि (सं० स्त्री०) गण्डि-इन् । अन्धि, गिरह ।

गाण्डिव (सं० पु० क्लो०) गण्डिर्गन्धिरस्यास्ति वः । गण्ड-जगात् संज्ञाशान् । पा ४।२।११० । १ अर्जुनके धनुषका नाम । (भारत १।२२६।४) पहले पहल ब्रह्माने इस धनुषको निर्माण कर प्रजापतिकी दिया, प्रजापतिने इन्द्रको, इन्द्रने सोमको एवं सोमने वरुणको प्रदान किया था। तत्पश्चात् अग्निने वरुणसे प्रार्थना कर यह धनुष अर्जुनको दिलाया था । (भारत १।२२५ ५०) २ धनुष मात्र ।

गाण्डिवी (सं० पु०) गाण्डिवोऽस्यास्ति इनि । १ अर्जुन । २ अर्जुनवृक्ष, आकका गाक ।

गाण्डो (सं० स्त्री०) गाण्डि-डीष् । गाण्डि देखो ।

गाण्डोर (सं० त्रि०) गण्डोरस्येदं गण्डोर-अण् । शाक-विशेष, शमठ नामका साग ।

गाण्डौव (सं० पु० क्लो०) गाण्डौ अन्धिरस्यास्ति गाण्डौ-वः । १ अर्जुनका धनुष ।

'तन् पञ्चमोऽयं शीघ्रं रचयति कविप्रचक्षुः।

काव्यं च सुमनसं पाठो माणोऽयं कविप्रति ॥' (भारत १।१२६।७)

इस धनुषको ब्रह्मर्षि एक हजार वर्ष प्रजापतिनि पाचमो तोन वर्ष, इन्द्रनि पचामी वर्ष मोमनि पाचसी वर्ष, परुणनि मी वर्ष और अर्जुननि पैंसठ वर्ष धारण किया था। शान्तिपक्षे १। २ धनुष।

गाण्डोवधन्वा (म० पु०) गाण्डोव धनुष्य समामे अन्ड। अर्जुन।

गाण्डोवी (म० पु०) गाडोवमन्त्वस्य इनि। अर्जुन। (भारत १।१४० ५०) २ अर्जुनवृक्ष, भाकका पेड।

गात (हि० पु०) १ शरीर, अम। २ गुमा, लज्जाका अम। ३ स्तन, कुच। ४ गम।

गातलीन (अ० स्त्री०) जहाजमें एक डीगे जो मस्तुनके चरखेमें लगी रहती है।

गाताय (स० वि०) गै गाने गा गतो वा तस्य। १ गन्तव्य, जानि योग्य। २ गेय, गाने योग्य।

गाता (हि० पु०) गानिवाना, गवैया।

गातागतिक (स० वि०) गतागतने निर्दृष्टम् अश्चद्युता दिवात् ठक्। गमनागमन द्वारा निष्पन्न।

गातानुगतिक (स० वि०) गतानुगतने निर्दृष्टम्। गतानुगत निष्पन्न।

गातो (हि० स्त्री०) गनिमें नपेटनेका एक प्रकारकी चादर। छोटे बच्चोंकी जो गनिमें कपडा पहनाया जाता है इमें भी गाता कहते हैं।

गातु (स० पु०) गायति गै गाने तुन्। १ कौकिल। कौयल। २ अमर, भौरा। ३ गन्धर्व। ४ पथिक मुमा फिर। गै गाने भाव्य तुकु। ५ गमन, जाना। ६ जानिका रास्ता। ७ उपाय। ८ हृषो। ९ म्त्व। (वि०) १० क्राधो। गुप्तावर। ११ गायन, गानिवाना। (स्त्री०) १२ धन, दौलत।

गातुविट् (स० वि०) गातु माग वेत्ति क्तिप्। पयप्र, रास्ता जाननेवाला।

गाट (स० वि०) गै गाने टक्। गायक गानिवाना।

गात (स० स्त्री०) गच्छति गम् यन् पाकागटेश। १ अम, देह, शरीर। इमका पर्याय—कनेवर, यपु, म इमन शरीर, बर्म, विषह, काय, टह मूर्ति, नन, शिष्टयो,

तन, अङ्ग, जेठ, भूपण, मत्कारण, वेर, सञ्चर, घन, वम्भ, पुर, पिप्त, पुट्टगन, भूतात्मा, स्वर्गलोकेश, स्तम्भ, पञ्जर, कुल सौर वल है। (अण्वर) २ हाथीके अगले पैरोंका उपरी भाग। (वि०) गायक सम्बन्धीय।

गात्रक (स० स्त्री०) गात्र स्वार्थे कन्। गात्रक्षो।

गात्रकण्डू (स० स्त्री०) गात्रजाता कण्डू। गात्रविवर्द्धी, गुजनी।

गात्रगुण (स० पु०) श्रीकृष्णके एक पुत्र जो नक्षणाके गर्भसे उत्पन्न हुये थे।

गात्रवर्षण (स० स्त्री०) शरीर मार्जन, टैहका मनना।

गात्रभङ्गा (स० स्त्री०) गात्रस्य भङ्गोऽवमादो यस्या बहुव्री०। १ एक प्रकारका पेड, कीवाच, कौंच। १ गम्भ-शब्दो।

गात्रमार्जनी (स० स्त्री०) गात्र मृज्यतीऽनया मृज करणं म्युट् डोप्। शरीर मार्जनार्थं सुद्र धस्त्र, गमद्रा तोलिया।

गात्ररह (स० स्त्री०) गात्रे रोहति रुह-क, ७ तत्। लीन, बाल। (भारत २।११४७)

गात्रवत् (स० पु०) १ नक्षणाके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णका एक पुत्र। (वि०) २ प्रयुक्त गात्रविशिष्ट। सुन्दर शरीर-वाला।

गात्रवती (स्त्री०) नक्षणागर्भज श्रीकृष्णकी कन्या।

गात्रपर्ण (स० पु०) स्वर माधनकी यह प्रणाली जिसमें मात स्वरोंमें प्रत्येकका उच्चारण तीन तीन टफा किया जाता है।

गात्रविचप (स० पु०) अङ्गचानन, शरीर म चानन।

गात्रविन्द (स० पु०) नक्षणाके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

गात्रगीप (स० पु०) पृतना, मानरोगविगीप।

गात्रहोषी (स० पु०) गात्र सहोचयति म कुच निष्पिनि। १ जाहक नामक जन्तुविगीप, जो क। २ कृष्ण कृक्यास, काना गिरगिट। ३ गीनममर्ष।

गात्रसञ्चय (स० पु०) गात्रेण सञ्चयन्त मम् प्र, अच् १ त्। प्रवृत्तातिरिक्त घटो, इ ममर्षति।

गात्रसम्मित (स० वि०) गात्रु सम्मित सम्पूर्ण यध्य बहुव्री०। मौन मामके उपरका गर्भ, जिसका शरीर घन गया हो।

गात्रसाद (स० पु०) १ शरीरावसाद । २ पित्तरोग ।

गात्रस्पर्श (स० पु०) गात्रस्य स्पर्शः ६-तत् । अङ्गस्पर्श,
शरीरका छना ।

गात्रानुलेपनी (स० स्त्री०) गात्रमनुलिप्यती यया करणे
ल्युट्-डोप् । अनुलेपनवर्तिका, सुगन्धि द्रव्यसे शरीरका
लेपन ।

गात्रावरण (स० स्त्री०) गात्रमा वृणोति, आ-वृ-ल्यु ।
वर्ष, कवच ।

गात्रोत्सादन (स० स्त्री०) गात्रानुलेपन ।

गात्रिका (स० स्त्री०) गात्रं संज्ञायाम् कन्-टाप् अत
इत्वम् । गमछा, तैलिया ।

गाथ (स० त्रि०) गौ-थन् । १ गान । २ स्तोत्र । (सायण)

गाथक (सं० त्रि०) गायति गौ गाने थकन् । गायक,
गानेवाला ।

गाथपति (सं० त्रि०) गाथायाः पतिः ६-तत् । वाक्यपति,
स्तोत्रपालक रुद्र ।

गाथा (सं० स्त्री०) गौ-थन्-टाप् । उपिकुपिगानि भास्वन् । उष्
शः १ स्तुति । २ प्राचीन कालकी एक प्रकारकी रचना
जिसमें लोगोंके टानपत्रादिका वर्णन होता था । ३ श्लोक
विशेष, किसी प्रकारका छन्द । इसमें स्वरका नियम नहीं
चलता और सुननेमें गद्य जैसा लगता है । ४ गीत ।
५ कोई मात्रावृत्त । जिसके प्रथम तथा तृतीयमें बारह,
द्वितीयमें अष्टारह और चतुर्थपादमें १० मात्रा लगती, गाथा
छन्द बतलाते हैं । इसीका नाम आर्या है । ४ प्राकृत
भाषा । ६ संस्कृत प्राकृत मिश्रित श्लोक ।

वीर्षाकी ग्रन्थावलीमें गाथा-जैसे अनेक श्लोक दृष्ट होते
हैं । लङ्गावतार, तथागतगुच्छक, ललितविस्तरप्रभृति
ग्रन्थोंकी रचनाका कुछ अंश गद्य और कुछ पद्य
है । गद्यांशकी भाषा व्याकरण शुद्ध संस्कृत है, किन्तु
पद्यमें कुछ संस्कृत अशुद्धियां मिलती हैं । उसीसे इस
विषयमें बहुतसो आलोचना हुई, गाथा वा पद्यांश अशुद्ध
संस्कृत अथवा कोई स्वतन्त्र भाषा है । संस्कृत भाषा
लिखनेकी वैसे भूल क्रमागत समानभावसे ही नहीं
भक्तौ । एक ही शब्दकी बार बार अशुद्धि दृष्ट होनेसे
बहुतसे लोगोंने उसको स्वतन्त्र भाषा-जैसा निर्देश किया
है । परन्तु बात तो यह है, ललितविस्तर प्रभृति वीद्ध

ग्रन्थोंमें पद्यांश व्याकरण शुद्ध और गाथा वा गद्यांश
अशुद्ध संस्कृतमें पृथक् रीतिसे क्यों रचित हुआ ? यह
नहीं कहा जा सकता कि गद्यांश अशुद्धियोंसे रहित है,
घटना क्रमसे लेखककी अनवधानतासे छूट-जैसा गया
मालूम पड़ता है । दूसरी बात यह कि गद्यांशकी भाषा
पाण्डित्यपूर्ण और जटिल है । कर्ताकी क्रिया अपने स्थान-
की छोड़ करके बहुत आगे दृष्ट होती है । किन्तु गाथा
की भाषा उसके सम्पूर्ण विपरीत है । इसकी भाषा
नितान्त सरल होती है । वाक्य छोटे छोटे आये और
उन्हींमें भाव बहत अच्छी तरह खोल करके दिखलाये
है । गाथाकी भाषामें सरल कथाका ओजोगुण और
कल्पनाका पार्थक्य प्रचुर है । कविता सरल अनुष्टुप्से
शार्दूलविक्रीडित प्रभृति नानाप्रकार छन्दोंमें रचित हुई
है । विशेष अनुधावन करनेसे प्रतीत होता कि रचना-
की मिष्ट करनेके लिये शब्दोंकी-स्थान स्थान पर बढ़ा
दिया है । यथा—

संस्कृत भाषा	गाथाकी भाषा
नच	नाच
सच	सोच
प्रयातः	प्रयातो
रुदमान	रोदमान
ताः	ते
स्मितमुखी	स्मितामुखि इत्यादि-
कहीं पर स्वरों का सहोच करनेसे ऐसा बन गया है—	
यामि	यामि
भामि	भवि
मिथ्याप्रयोग	मिथ्यप्रयोग इत्यादि ।
कहीं तो स्वर और व्यञ्जन एकवारगो ही परित्यक्त हुए हैं—	
नमसि	नमे
प्रणिधायन्ति	प्रणिधेन्ति इत्यादि
किसी किसो स्थल पर सन्धि वा युक्त वर्णकी बांटा करके सरल और सुमिष्ट बनानेकी चेष्टा की गयी है—	
ग्वानो	गिलानो
स्त्री	इस्त्री
क्षेत्र	किलेश

श्लो	शिरि
पद्यानि	पदुमानि इत्यादि
निङ्ग, घचन, कारक और क्रियाकी बहुतसो अशुद्धिया	
है—	
तावपि	तानपि
आमनात्	आमानना
त्रिनोकी	त्रिनोक
मद्य	मम, मत्त
तव, त्वा	तुभ्य
कुत, केन	कहि
ददाम	देमि वा ददम
भय म	भोसि
भविष्यसि	भोष्य इत्यादि

वाक्यादि रचना पर म स्तुत भाषामें जिस स्थानको जो रखनेका नियम है, गाथाकी भाषामें अनुमरण करते हैं। परन्तु समास और लक्ष्मिमें यह नियम नहीं लगता। फरासीसो विद्वान मोशिये बरनूफ साहबका कहना है पुस्तक पढ़नेसे उसका कोई कारण अनुभूत नहीं होता। शाक्यमुनिके पीछे और पालि भाषा बननेसे पहले क्या उसी भाषाको सृष्टि हुई? लोग म स्तुत न जानते थे, परन्तु उसमें लिखनेको इच्छा होनेसे उन्होंने ऐसा कर लिया, सम्भवत यह अथ भारतके बाहर अर्थात् पश्चिम प्रान्त या काश्मीरमें लिखा जाता होगा। भारतके मध्य जैसी वहा म स्तुतको रचा न थो। परन्तु साहबकी बातसे सम्भव पडता है कि उन्होंने गाथाकी भाषा पढ़नेमें दृष्टि की। इसमें बडा गुणीपन और पण्डिताई है। न्याय शास्त्र और मनोविज्ञानके जटिल विषय अतिपरिष्कृत और सुललित भाषाके आर्या और लोटक छन्दोंमें लिपि बढ चुए हैं। कैसे कहे गे—म स्तुत भाषा पर जिनका उतना अधिकार रहा, उसे ही लिखनेमें भूल गये। पञ्जाब आदि देशोंमें रचित हुआ होनेसे म स्तुत व्याकरणके अनुसार गद्यांग विशुद्ध और पद्यांग पशुद्ध कैसे निकलना। राजा राजेन्द्रलाल मिश्रने बतलाया है कि शाक्यमुनिके समय या पश्चवर्हित पीछे भाट लोग उसकी गाने धूमने थे। ललितविस्तार प्रसृति ग्रन्थोंके रचयिता चोंने गद्यांग लिख करके उसकी पोषकता करनेके पीछे

गाथाकी कविता यथायथ उद्धृत कर दी। वैयाकरणकी कारण यह था कि उस समयकी लोगोंने वह बहुत आदरणीय रहीं। गद्यरचनाके पीछे "तत्वेदमुच्यते" लिख करके पद्यको उद्धृत किया है। मोक्षमूलर और बेवर साहबने उक्त मित्र महोदयका मत समर्थन किया है। लासेन बरनूफ फिर भी उसकी पोषकता करते हैं। डाक्टर म्योर कहते कि पीछेकी गाथाको भाषा कोई लिखित भाषा थी। बेनफी साहबने राजेन्द्रलालकी पोषकता करके लिखा है कि पेशेदार गानेवालोंका निम्नश्रेणिके लोग जैसा मान लेने पर उनका मत ठोक सम्भवा जा सकता है। राजेन्द्रलालने उसका खुलन करके कहा है—यद्यपि बोध धर्मसे जातिभेद कम रहा तथापि यह कैसे सम्भव हो सकता कि ब्राह्मण चरित्र्य जातीय रचयिता अपने आपको उच्च श्रेणीस्थ जैसा न समझते? वह कविताको नोचजातिरचित होने पर उद्धृत करनेसे सदा विरत ही रहते। गाथाएँ जवानो बननेसे उनकी शुद्ध अशुद्धकी और उतना मनोयोग नहीं किया गया। अनेक समयकी शुद्ध ही वा अशुद्ध कोई मरल कथा चित्तको जितना आकर्षण करते। अच्छे शुद्ध मस्तुत उच्च अशुद्धको भाषा नहीं कर सकती। भारत वर्षके भाट तथा कुलज्ज मूर्ख नहीं होते, परन्तु उनकी मस्तुत भाषा ग्राम्य अशुद्धता आदि नाना दोषोंसे लित है। फिर भी समासलक्ष्मिमें उनकी वक्तृताका विशेष आदर है। गाथाके बारेमें भो यही कहा जा सकता है। निश्चयकि विद्वान होते हुए भी यह सम्भव नहो कि सब श्रोता मस्तुतके सुपण्डित रहें। श्रोतायेंकि मनोरञ्जनको पण्डितोंकी अपेक्षा भाट लोगोंकी ही इज्जत ज्यादा थी। बौद्धके महासह समयकी गाथाका बडा आदर होता रहा। तबके मध्य उसको प्रवेश लाभका यहो कारण था। अच्छे तरङ्ग अनुमित होता कि बौद्धोंके प्रथम मझा मझमें शुद्ध गाथा ही कसो गयो। फिर पण्डित लोगो ने बुद्धदेवका विवरण विशुद्ध मस्तुत भाषामें लिखना अपना कर्तव्य समझ करके उसको पोषकताके लिये गाथाको उद्धृत किया।

गाथाके पद २ भागोंमें विभक्त जैसे ठहराये जा सकते हैं। इसके कई पदोंका प्रकृति अथ म स्तुत है, किवन

विभक्ति, वचन और लिङ्ग ही विकृत हो गया है। किन्तु कुछ पदोंके प्रकृति, विभक्ति, वचन और लिङ्ग प्रभृति सभी अंश विकृत हैं—किसीका संस्कृतके साथ कोई सम्बन्ध नहीं। वैसा ही देख करके पूर्वाक्त भाषातत्त्ववेत्तावोंने उसको एक नयी भाषा बना लेनेको चेष्टा की है। (किसी किसीने उसको विकृत संस्कृत जैसा भी ठहराया है।) परन्तु इन मतोंमें किसीका पक्षपाती हुवा नहीं जाता। वस्तुतः गाथाकी भाषा संस्कृत मिश्रित प्राकृत है। उसको कोई स्वतन्त्र नयी भाषा मान नहीं सकते। उसका जो अंश संस्कृत व्याकरणके अनुसार सिद्ध हो सकता और प्रकृति, विभक्ति, वचन वा लिङ्गांशमें कोई व्यतिक्रम नहीं पड़ता—संस्कृत है। इसी प्रकारसे जो प्रकृति, विभक्ति प्रभृति अंशोंमें वा सम्पूर्ण रूपसे विकृत आती—प्राकृत या अपभ्रंश कहलाती है। वर्तमान समयमें भी वैसी अनेक रचनाएँ देख पड़तीं, जिनका थोड़ा अंश संस्कृत और थोड़ा हिन्दी या कोई दूसरी भाषा है। गाथाका जो अंश संस्कृत नहीं ठहरता, प्राकृत भाषाके व्याकरणा-नुसार बनता है। दृष्टान्त स्वरूप गाथाके कई पदोंकी साधनप्रणाली प्राकृत व्याकरणके अनुसार नीचे प्रदर्शित हुई है—

चण्डप्रणीत “आर्षप्राकृतलक्षण” नामक प्राकृत व्याकरणका स्वरविधानके “स्वरोऽन्त्यान्व” (२।४६) चतुर्थ सूत्रका अर्थ संस्कृतयोनि, संस्कृतसम और देशी है। (इसमें संस्कृतयोनि प्राकृत संस्कृतसे किसी अंश पर विगड़ करके बनता है।) प्राकृत भाषामें संस्कृतके किसी स्वरस्थान पर दूसरे स्वरका आदेश होता है। इसी नियमके अनुसार गायामें व्यवहृत नीचेके शब्द संस्कृतसे निकले हैं—

गाथामें व्यवहृत प्राकृत	संस्कृत
रोदमान	रुदमान
करोथ	कुरुथ
गेहि	गहे
मय	मया
उदरि	उदरे। इत्यादि

“व्योग्ये च स्वरागमो मध्ये।” (प्राकृतलक्षण ३।२०)

इच्छानुसार संयोगके मध्य किसी एक स्वरका आगम

ही सकता है। इस नियमके अनुसार निम्नलिखित प्राकृत शब्द सिद्ध होते हैं—

गाथाका प्राकृत	संस्कृत
रतन	रत्न
अभुजिय	आभुज्य
अकम्पिय	आकम्पा
वियूह	व्यूह
पादुमानि	पद्मानि इत्यादि।

“श्रीत्वमवापयोः।” (प्राकृतलक्षण २।२६)

अव और अप उपसर्गोंके स्थानमें ओकार होता है।

यथा—आरुह्य, योरुहित्वा।

“अवयोरिदृती।” (प्राकृतलक्षण ३।२२)

यकार और वकारके स्थानमें यथाक्रम इकार और उकार आदेश होता है। यथा—जनयन्ति, जनेन्ति; दर्शयन्ति, दर्शन्ति; उपयन्ति, उपेन्ति इत्यादि। गाथाके अनेक अंशोंमें द्विवचनके स्थान पर बहुवचनका प्रयोग देख पड़ता है। प्राकृत भाषामें द्विवचन नहीं होता, उसकी जगह बहुवचन लगता है—

“द्विव बहुवचन।” (प्राकृतलक्षण २।२२)

“कृचिद्व्यत्ययः” (प्राकृतलक्षण १।४) सूत्रके अनुसार स्थान

स्थान पर लिङ्गका व्यत्यय भी हुआ करता है। यथा—देवाः, देवाणि इत्यादि।

इस स्थल पर अनावश्यक समझ करके और अधिक नहीं लिखा। गाथाके संस्कृतको छोड़ करके दूसरा सभी अंश प्राकृत व्याकरणके अनुसार माश्रित हो सकता है। अतएव उक्त गाथाकी भाषाको संस्कृत मिला हुआ प्राकृत कहना ही उचित है।

इसका निश्चय नहीं, वह कितने समयकी पुरानी है। भाषाकी सृष्टिके पीछे मानवने जब व्याख्या करना सीखा, गाथा बनी होगी। उसके बाद स्वर और लयके संयोगसे इसकी क्रमशः उन्नति हुई। बुद्धदेव अपने आप गाथा पढ़ते थे। धर्मविषयके सूत्रोंने पद्यमें ग्रथित हो करके गाथा नाम धारण किया। बौद्धप्रधान काश्यपने कहा था कि भिक्षुलोग सूत्रान्त, विनय, अभिधर्म प्रभृति याद रखें या भूल जावेंगे। क्योंकि उनकी गाथा न थी। पाठकको अपराहमें सूत्रकी गाथा पढ़नी चाहिये। बुद्ध-

देवने उसको ४थं शास्त्र जैसा उल्लेख किया है। यथा—
१म सूत्रान्त, २य गीय, ३य व्याकरण, ४थं गाथा, ५म
उदान, ६ठ निदान, ७म श्रवदान, ८म इतिवृत्तक, ९म
जातक १०म वैपुल्य, ११श अद्भुतधर्म, १२ उपदेश।
इससे समझा जाता कि उस समयको गाथा शिचषीय
वस्तु थी।

पारसिक जाति (पारसियों) के धर्म ग्रन्थमें 'गाथा'
शब्दका उल्लेख मिलता है। उसमें ५ गाथाएँ हैं—
१ अहनवैतो, २ उष्टवैतो, ३ स्पेन्ता मैन्यू ४ बहुखपयू
और वहिरीइफ्टो। यह गाथाएँ छोटे छोटे पदोका
रचनामात्र हैं। उसमें प्रार्थना, गान, स्तोत्र और मनो-
विज्ञान सम्बन्धीय नानाविध कथा लिखित हुये हैं।
हमारी म स्तुत वा पालि भाषाकी गाथाएँ भी वैसी हैं।
वह पारसियोंमें गोत हुआ करता है। उनके धार्मिक
ग्रन्थ जन्दअवस्तामें भी बहुतसी गाथाएँ हैं। फिर भी
पारसी जन्द अवस्ताके सभी शब्द गानकी तरह स्वर लगा
करके पठते हैं। उनको गाथा रचना हमारो वैदिक
रचनाके ही अनुरूप है। छन्दोबद्ध ग्रथित होते भी उस-
के श्रेय अक्षरोंका अनुरूप नही मिलता। उपर्युक्त ५
गाथावीमिं प्रत्येक स्वतन्त्र प्रकार छन्दमें रचित हुई हैं।
अहनवैतो गाथाको प्रत्येक श्लोकमें ४८ वण है। वह
३ पंक्तियोंमें विभक्त है। प्रत्येक पंक्तिमें १६ वर्ण लगे
हैं।

पारसियोंको विश्वास है कि गायामिं ७ अध्याय होते
हैं। देवता उस गाथाकी गाने थी। स्योतम जरयुख-
की ध्यानयोगमें वह देवताओंके पाससे मिल गयी।
ऊस्तवैतो गाथा उन्ही ने अपने आप बनायी थी। उस
प्रत्येक पंक्तिमें ५ अक्षर हैं। यह छन्दोबद्ध वैदिक
रिष्ट म् छन्दसे बहुत मिलता है। सदान्ता मैन्यू गाथा
का छन्द प्राय विष्ट भुके अनुरूप हो है। प्रथम दोनो
गाथाओंकी अपेक्षा इसमें श्लोकोंकी संख्या बहुत कम है
फिर ४थी वह खपयू और ५थी वहिरी इटी नामक
गाथामें श्लोकोंकी संख्या और भी अल्प देख पड़ती है।

म्यूनिकके म स्तुताधापक मार्टिन हींग अनुमान
करते किन्ती ही गाथाएँ रह्यीं, जो पीछेकी लुप्त हो गयीं।
उन सभी रचनाओंमें स्योतम जरयुखके मतान्त और

उपदेशादि विद्यमान थे। पीछेकी अपने 'पूजाकारियों
(ब्राह्मणों)की अनिष्टसे निष्कृति और जरदत्त धर्मावलम्बि
योग मङ्गल करनेवाला हो रचित हुई। हींग साहब और
भी वतनाते कि वह गाथाएँ सामवेद जैसी ही वह ऋग्
वेदका अंश होती हैं। ब्राह्मणों ने उन्हें यत्न करके रखा
और पारसियोंने विगाड दिया है। वेष्ट साहबके अनु-
मानमें ई०से १२०० वत्सर पूर्वकी महापुरुष स्थीतम
जीवित रहे। गाथा उसी समयकी रचना है।

वैदिक कालके हिन्दू धर्मसे पारसिक धर्मका विग्रह
सम्पर्क रहना जैसा समझ पड़ता है। दोनोंके आदि ग्रन्थों
में देव और असुर लोगोंको कथा है। फिर भी यह देव
ताओ और वह असुरोंके उपासक हैं। यजुर्वेदमें आसुरी
नामक कोड छन्द दृष्ट होता है। यथा—गायत्री आसुरो,
उष्णिक आसुरो, पंक्ति आसुरो। जन्द अवस्ताको गाथा-
में उसका प्रसुर प्रयोग देखते हैं। जन्द अवस्ता अशुरो
वा असुरोका धर्म है। गायत्री आसुरी अहनवैतो,
उष्णिक आसुरो बहुखपयू, और पंक्ति आसुरोछन्द ऊस्त
वैतो और स्पेन्ता मैन्यू गाथामें मिलता है। समझ
नही पड़ता कि घटनाक्रममें वैसा सादृश्य लगा होगा।
वर अनुमित होता कि यजुर्वेदको गाथा ऋषियाँ की
समझो वृष्णो थी। जन्दअवस्ताग्रन्थमें हिन्दू देवदेवियों
के बहुतसे नाम और वैदिक शब्द पाये जाते हैं।

पाश्चात्य विद्वान् यह सभी देव करके अनुमान लगाते
कि भारत जानिसे पहले हिन्दू और पारसी एक समाज-
भुक्त ही थे।

पारसिक गायामिं एकेश्वर धर्म मतका उल्लेख है।
गाथाकार (स० पु०) गाथा करोति कृष्ण १ गाथा
कारक, गायारचयिता, श्लोक रचनेवाला। गायक गाने
वाला।

गाथानी (स० त्रि०) गातव्य, गानेके योग्य। (शा० १)
गाथान्तर (म० पु०) एक कल्पका नाम। ब्रह्माके महिने-
का चतुर्थ दिन।

गाथिका (स० स्त्री०) गाथा स्वार्य कन्। टापु तत
इत्वञ्च। स्तुतिके निमित्त श्लोक।

गायिन (म० पु०) गायिनी उपचम गायि अग् १ साम-
वेद। २ गायकका अपत्य। ३ तच्छात्र।

गाथी (सं० त्रि०) गाथा स्तोत्रादि अस्यास्ति इति ।
मासवेद गानेवाला ।

“इन्द्रमिदं गाथिनीं वृषत ।” (ऋ० १।७।१)

‘गाथिनी गीयमानं सामयुना’ (सायण)

गाढ—बम्बई प्रान्तीय सतारा जिलेके सञ्जाद्रिका एक
अन्यतम गिरिवर्त । यह बाई और कोरीगांवके बीच
खण्डाक नामक क्षुद्र राज्यमें अवस्थित है । खण्डाल और
भौर राज्यके मध्यस्थ पर्वतमें भौरसे पूना और बेलगांव
जानेकी गाढ सबसे मीघो राह है ।

गाढड़ (हिं० वि०) १ शुस्त बैल । (पु०) २ गौढड़,
सियार । ३ सेप, भेंड़ा, सेढा ।

गाढर (हिं० वि०) १ भौरू, डरपोक, कायर । २ सुस्त,
मद्धर । (पु०) गाढर डेरी ।

गाढा (हिं० पु०) १ कच्चा अन्न, अधपका अनाज । २
कच्ची फल । ३ महुएका फूल जो पेड़से टपका हो ।
हरा महुआ ।

गाढि (सं० पु०-स्त्री०) गढस्य अपत्यं इज् । यदुवंशीय
गढका अपत्य ।

गाढित्व (सं० त्रि०) गढितेन निर्हत्तम् । वाक्यद्वारा निर्हत्त,
जो वाक्य द्वारा सिद्ध हो गया हो ।

गाढी (हिं० स्त्री०) एक पकवानका नाम ।

गाढुर । (हिं० पु०) चमगौढड़ ।

गाढुगद्य (सं० स्त्री०) गढुगढस्य भावः प्यञ् । गढुगढत्व,
गढुगढका भाव ।

“गाढुगढस्य सन्ध्याञ्जनधेयं उच्यते ।” (सुश्रुत कल्पस्थान १५०)

गाध (सं० पु०) गाध प्रतिष्ठायां लिप्पायाञ्च भावादौ
घञ् । १ स्थान, जगह । २ लिप्पा, पानेकी इच्छा,
लोभ । ३ तलम्यर्श (त्रि०) ४ थाह, जलके नीचेका स्थल ।

“घरितः कुर्वन्ति गाधाः” (१५०।४।२५) ५ नदीका बहाव,
कूल । ६ जिसे तैर कर पार कर सके । ७ थोड़ा ।

गाधवती - जैनमतानुसार विदेह क्षेत्रकी वचार नदि
यामेंसे एक बृहद् नदी ।

गाधा (सं० स्त्री०) गाध-टाप । गायत्रीस्वरूपा महा-
देवी ।

“गीतनी गानिनी गाधा ।” (देवीभागवत १।१।४०)

गाधि (सं० पु०) गाधते गाध-इन् । कान्यकुब्जके एक
चन्द्रवंशीय राजा । (भारत २।११५ ५०)

ये कुशिक राजाके पुत्र रहे । इनके पुत्रका नाम
विश्वामित्र था । हरिवंशमें लिखा है कि कुशिकने
इन्द्रके समान पुत्र पानेकी तपस्या की । तब इन्द्र भय-
भीत होकर उनके निकट आये और चले गये । एक
हजार वर्षके बाद फिर भी इन्होंने कुशिककी दर्शन
दिया । उनकी उग्र तपस्या देख कर इन्द्रने पुत्रीत्पादन-
के लिये अपना अंश उन्हें प्रदान किया । कुशिककी स्त्री
पौरकुलीके गर्भमें इन्द्रके अंशमें गाधि उत्पन्न हुए ।

गाधियज (सं० पु०) गाधैर्जायते जन-उ । मर्हर्षि विश्वामि-
त्र ।

“गान्धेः पुत्रो महाभियः विश्वामित्रो मन्मथः ।” (रामायण)

विश्वामित्र ऋषिमें विश्वरूप देली ।

गाधिनगर (सं० स्त्री०) कान्यकुब्ज ।

गाधिनन्दन (सं० पु०) गाधेर्नन्दनः । विश्वामित्र ऋषि ।

गाधिपुत्र (सं० पु०) गाधिः पुत्रः । विश्वामित्र ।

गाधिपुर (सं० स्त्री०) गाधिः पुरम् । गाधिराजाका पुर,
कान्यकुब्ज ।

गाधिभू (सं० पु०) गाधिः भूरुत्पत्तिस्थानमस्य । विश्वामि-
त्र ऋषि ।

गाधिभूत (सं० पु०) गाधिः सुतः । विश्वामित् ऋषि ।

गाधिमनु (सं० पु०) गाधिः मनुः । विश्वामित् ऋषि ।

गाधी (सं० पु०) गाधः प्रतिष्ठास्त्वस्य इति । गाधी नामक
राजा ।

गाधेय (सं० पु०) गाधेरपत्यं, गाधि-ठक् । विश्वामित्र
प्रभृति । गाधेय स्त्रियां डीप् । २ गाधिकी कन्या,
सतप्रवती । यह भागवपुत्र ऋचिककी पत्नी थीं ।

गाधयण्डा (सं० स्त्री०) भूम्यामलकी, भुई आंवरा ।

गान (सं० स्त्री०) गीयते गै भावे ल्युट् । गीत, सङ्गीत ।

इसका पर्याय गीय, गीति और गान्धर्व है । जपसे कोटि
गुण ध्यान, ध्यानसे कोटिगुण लय, लयसे कोटिगुण गान
है । अतएव गानके तुल्य उत्कृष्ट फल और किमीमें नहीं
है । गीत देखी ।

गानविद्या (सं० स्त्री०) सङ्गीतविद्या ।

गानिग—टाछिणातप्रके वीजापुर प्रदेशमें रहनेवाली एक
जाति । तैलविक्रय ही इनकी एकमात्र उपजीविका है ।
आजकल इनमें बहुतसे तैल बेचना छोड़ करके खेती
वारीसे अपना काम चलाते हैं ।

इनमें 'सज्जन' और 'करीकुल' दो श्रेणियाँ हैं। विधवाविवाह करनेवाले कारोकुल और उसमें अलग रहनेवाले सज्जन कहलाते हैं। कारोकुल गानिगोंकी काला होनेसे ही सम्भवतः उस नामसे पुकारा जाता है। परन्तु इनके हृदय लोग बतलाते कि खरहल शब्दके परिवर्तनमें करिकुल नाम लगाते हैं। कोदहार और वावल कोट जिलोंमें इनको रजायग व्यादा है। वशवाचक कोड नाम नहीं होता, स्थानीय या बोलनेके नामसे ही एकमात्र परिचय मिलता है। यह बालिष्ठ, हृत्पवर्ण, लम्बे चौड़े और सुन्दर मुखालतविशेष है। घरमें कनाडी माया बोलते, परन्तु कुकन कुकन मभी मराठी और हिन्दी समझते हैं। यह सब निरामियायी हैं, मध्यमास नहीं कूते। आमन पर बैठ करके खानेसे पहले लिङ्ग उपासना करते हैं। यह श्रान्तिधेय, मत्त्ववादी, शान्त स्वभाव, धीर, कर्मठ और चतुर हैं। इनमें बहुतेसे धनी अपन-फो लिङ्गायतीका सम्बन्ध जैसा समझते हैं। बाल विवाह और विधवाविवाह प्रचलित है। परन्तु सज्जन गानिग विधवाविवाह नहीं करते।

धारवाडमें गानिगोंकी ५ श्रेणियाँ हैं। वहा इनको गानिगाह' कहा जाता है। विभिन्न श्रेणियोंके गानिग एकत्र बैठ करके आदारादि करते, परन्तु परस्परमें वैवाहिक दातप्रहणसे विरत रहते हैं। ब्राह्मणोंके प्रति इनकी विशेष भक्ति है। सोमवार पवित्र दिन माना जाता, कोई काम काज नहीं चलाता। यदि कोई टरी केगो-को आलुनायित रखके तेन लेने आती, खड़ा उभर पाती है। इनमें धान्यविवाह, बहुविवाह और विधवाविवाह चलता है। सभी कनाडी बोलते हैं।

गानिन् (स० त्रि०) गान दन । १ गतियुक्त । २ गीत-युक्त । ३ स्तुतियुक्त ।

गानिनी (स० स्त्री०) गानिन् स्त्रियां ङोप् । वाक्, बोली । गान् (स० त्रि०) गच्छति गम तुन्, इच्छि । १ गन्ता, जानेवाला । २ पथिक, मुसाफिर । ३ गायक, शोक का गान करनेवाला ।

गान्य (स० स्त्री०) गम ङ् । शकट, गाड़ी । गान्यो (स० स्त्री०) गन्वो एव स्यात् षण् ङोप् । ह्य पाप् शकट, बैलकी गाड़ी ।

गान्दिक (स० त्रि०) गान्दिकाया भव सिन्धादित्वात् अण् । गान्दिका नदीजात, गान्दिका नदीसे उत्पन्न ।

गान्दिनी (स० स्त्री०) गा धेनु ददाति प्रतिदिन गो दाग्निं प्रयोदरात् साधु । १ अक्रूरकी माता । ये काशी-राजकी कन्या और श्वफल्ककी भार्या थी । हरिवंशके मतसे—इनका नाम निरुक्ति था। ये प्रति दिन त्रिप्रोंको धेनुदान करती थी, इस लिये इनका नाम गान्दिनी पड गया। ये माताके गर्भमें बहुत वर्ष तक रहीं थी, इससे इनके पिताने कहा—“पुत्री ! तुम शीघ्रही जन्म लो, तुम्हारा भङ्गल हो, इतने दिनों तक तुम क्यों उदरमें रह रही हो ?” उत्तरमें कन्याने कहा—“यदि प्रतिदिन गोदान कर सकू, तो जन्म लेती हूँ ।” पिताने इस बातको स्वीकार कर उनका मनोरथ पूर्ण किया। इन्ही गान्दिनीके गर्भ और शफल्कके औरससे अक्रूर नामक एक पुत्र पैदा हुआ। पोछे इनके गर्भसे उपमहू, मद्यु, सुदर, अरिसिजय, श्रविचिप, उपेच, शत्रुघ्न, अरिमर्दन, धर्म-दृग, यतिधर्म, गृध्रभोजान्तक, आवाह और प्रतिवाह ये तेरह पुत्र और सुन्दरी नामक एक रूपवती कन्या हुई थी। कोई कोई गान्दिनी भी पढते हैं। किन्तु निरुक्ति नाम पर विवेचना करनेसे गान्दिनी पाठही उपयुक्त जान पडता है। गा भूमि दायति शोधयति टै णिनि प्रयो-दरात् साधु । २ गङ्गा । (विशाख)

गान्दिनीसुत (स० पु०) गान्दिन्या सुत, ६ तत् । १ भौष । २ कार्तिकेय । ३ अक्रूरादि । गान्दिनी दक्षा ।

गान्दी (स० स्त्री०) गा ददाति, दा क-ङोप् । अक्रूरकी माता गान्दिनी ।

“अमलनरुमे प्राप्ते गान्दिनीको नचायमा ।” (हरिवंश ३० च०) गान्यपिङ्गलेय (स० पु० स्त्री०) गन्थपिङ्गलाया अपत्यम् टक् । अथादिगण्य । पा ३।। ११३ । गन्थपिङ्गलका अपत्य, गन्थपिङ्गलकी मत्तान ।

गान्थिनो—खान्देशके अन्तर्गत एक क्वाटा ग्राम। यह अमलनरुमे ६ मोन उत्तरपूर्वमें वसा है। लोकसंख्या प्राय १०५३ है। पिण्डाश्रितिके नायक घोदजी गो मना ने यह ग्राम कई बार लूटा था ।

गान्धवो—कथान्तिया महान्तके अन्तर्गत कान्याणपुर उप-विभागका एक ग्राम। यह वरतू नदीके उत्तरी तीर पर

अवस्थित है। लोकमंथ्या लगभग २४० होगी। ग्रामके पास ही कोयल नामक एक पहाड़ी है। प्रवाद है कि एक समय पार्वती और शिवजीसे कुछ विवाद हुआ। इस पर पार्वती रुष्ट हो कर डमी पहाड़ पर भाग आई थीं और कोयलका रूप धारण कर रहने लगीं। तभीसे उस पहाड़का नाम कोयल पड़ा है।

गान्धर्व (मं० स्त्री०) गन्धर्वस्येदं गन्धर्व-अण्। १ गान्।

“यद्येवमेव गानधर्वे दिव्ये कृषिकृपाविशतः। (भाग १३।२।८४६)

गन्धर्वो देवतास्य अण्। २ गन्धर्व देवतात्मक मन्त्र।

(रघु० ५।१०) (पु०) गन्धर्व एव प्रजादित्वात् अण्।

३ गन्धर्व। ४ भारतवर्षीय उपहीपविशेष।

‘गान्धर्वीपमया मौषो गान्धर्वान्धुय गन्धर्वः।’ (विष्णुपुराण)

५ आठ प्रकारके विवाहोंमेंसे एक विवाह। अपनी अपनी इच्छासे वर और कन्याके परस्पर मिलनकी गान्धर्वविवाह कहते हैं। यह विवाह जत्रियोंमें धर्मानुगत है। इनमें परस्पर मिलनके बाद अग्निसाक्षिक मन्त्रपाठ करना कर्तव्य है।

‘गान्धर्वो रत्नमयेव धर्मा चद्रव्यं हो स तौ।’ (मनु ३।१६)

गन्धर्वस्वार्ये अण्। ६ अश्व, घोड़ा। ७ सामवेदका उपवेदविशेष।

‘गान्धर्वं मूनिष्ठतया समानता।’ (भाष्य)

(त्रि०) तस्येदं अण्। ८ गन्धर्वसखन्धीय।

९ गन्धर्वदेशोत्पन्न। (भाग १।२२।१०) (स्त्री०) १० दुर्गा।

‘इति श्री गार्गीय गान्धर्वा’।’ (हरिवंश १७८-७८)

११ वाक्, वाचन।

‘अथ गान्धर्वो’ पथास्तस्य।’ (ऋग्वेद १०।८०।६)

‘अग्नि गान्धर्वो’ वाडु नामेतत्।’ (भाष्य)

गान्धर्व—युक्तप्रदेशीय जातिभेद। यह लोग गाते वजाते और प्रयाग, वाराणसी तथा गाजीपुर जिलोंमें अल्प संख्यक पाये जाते हैं। कहते हैं कि पूर्वकालकी गान्धर्व सामवेदकी श्रुतियोंका गान करते थे।

गान्धर्ववेद (मं० पु०) मङ्गीत सखन्धीय वेद।

गान्धर्वशास्त्र (मं० स्त्री०) मङ्गीतशास्त्र।

गान्धर्विक (मं० त्रि०) गन्धर्व कुशल ठक्। मङ्गीत-शास्त्रज्ञान, जो अच्छी तरह मङ्गीतशास्त्र जानता हो।

‘गान्धर्विके शौगः।’ (मद्रसंहिता ६६ ७०)

गान्धार (मं० पु०) गन्ध एव स्वार्ये अण्। १ मिन्दूर। २ देशभेद।

गान्धार एक प्राचीन जनपद है। ऋग्वेद (१।१२।६७), अथर्ववेद (५।२२।१४) और छान्दोग्य उपनिषदमें (६।१४।१) इस जनपदका उल्लेख है। अति प्राचीन कालसे यहाँ हिन्दू राजा वास करते थे, इसका विस्तृत प्रमाण पाया जाता है। सिन्धु नदीके पश्चिम तीरसे वर्तमान अफगानिस्तानका अधिकांश पूर्व समयमें गान्धार नामसे प्रसिद्ध रहा। आजकल कन्दाहार उस प्राचीन गान्धार नामका परिचय दे रहा है।

वैदिककालमें यह स्थान लोमपूर्णा और पूर्णावयदा सेपोंके लिये प्रसिद्ध था। (ऋक् २।२६।७) ब्रह्माण्डपुराणके मतसे गान्धार देशमें उल्कृष्ट घोड़े मिलते हैं। महाभारतमें लिखा है कि महाराज धृतराष्ट्रने गान्धातपति सुवलकी कन्या गान्धारोसे विवाह किया था। भारत-युद्धके समय सुवलके पुत्र शकुनि गान्धारके राजा रहे।

कर्णपर्वमें लिखा है कि आर्य देशके जैमा गान्धार देशमें भी नितान्त कुम्भित व्यवहार प्रचलित है।

(वनप० ४५ ७०) आर्य शब्दमें विसृत विवरण देखो।

स्कन्दपुराणके प्रभासखण्डके मतसे गान्धार देशमें लोभनादित्य नामके देवता विद्यमान हैं

बौद्धगणके धर्मशास्त्रोंमें तथा जैनोंके अरिष्टनेमिपुराणान्तर्गत हरिवंशके मतमें गान्धार एक पुण्यस्थान कहा गया है। पाश्चात्य प्राचीन पुराविद् द्रावीने इस स्थानकी गान्धारिटीस् (Gandarites) नामसे तथा हेरोदो-तस, हेकतैयस् और टलेमिने यहाँके अधिवासियोंकी “गान्दारी” (Gandarii or Gandarai) नामसे उल्लेख किया है ऋग्वेदमें भी यहाँके रहनेवाले गान्धारी कहलाते हैं। चीनपरिव्राजक फाहियन “कि-एन-तो वेगू” और युएनचुयाङ्गु “कि-एन-तो-लो” नामसे गान्धार राज्यकी वर्णना कर गये हैं। चीनपरिव्राजक सुङ्गयुन्ने लिखा है—गान्धारका दूसरा प्राचीन नाम ये-पो-लो है। चीनपरिव्राजक युएनचुयाङ्गुके वर्णनसे मालूम पड़ता है कि चीनपरिव्राजक गान्धार राज्य पूर्वपाश्चिममें १००० लि, एवं उत्तरदक्षिणमें ८०० लि, तक विस्तृत रहा। उनके वर्णनानुसार गान्धार राज्यके पश्चिममें लम्घन और

जन्मानाघाद, पूर्वमें सिन्धुनदी, उत्तरमें स्वात और तुनिका पहाड़ एवं दक्षिणमें कालबाघ है।

गान्धार राज्य सर्वदा हिन्दु राजाश्रीके अधीन रहा। राजा अशोकके समय यहाँ बौद्धधर्म प्रचार हुआ था। चीन परिव्राजकीने भ्रमण हत्तान्तमें लिखा है कि यहाँ बुद्धदेवने बौधिमत्वरूपमें एक व्यक्ति पर दया कर अपना नेत उषे प्रदान किया था। उनके स्मरणार्थ अशोक राजाने गान्धारके नाना स्थानोंमें बौद्धस्तूप निर्माण किये थे। सगुनने अपने भ्रमण हत्तान्तमें लिखा है कि अशोकके पुत्र धर्मवर्द्धन यहाँके राजा रहे और यहाँके मनुष्य हीनयान बौद्धमतवाचकभी कहलाते थे।

खुटोय प्रथम शताब्दीमें प्रवल पराक्रान्त महाराज कनिष्क गान्धारमें राज्य करते थे, ये यहाँके नाना स्थानोंमें बौद्धकीर्ति स्थापन कर गये हैं।

सुगुन ५२० ई०के गान्धारराज्यमें आकर अपने भ्रमण हत्तान्तमें लिखा है कि 'यिया' (ह्य) जातिने गान्धारके बहुतसे नानोंकी विधि स कर डाला था और इसे अपने अधिकारमें लाकर लएलिकी (मालवराजकी) प्रदान किया। सुगुनके समयमें यहाँ मालवराज राजत्व करते थे और पैशावर राजधानी रझे। मालवराज बौद्धधर्म को नहीं मानते थे।

युएनचुयाङ्गने लिखा है कि गान्धार राज्यकी प्राचीन राजधानी पुष्कलावती थी। रामायणके मतसे भरतके पुत्र पुष्कलने अपने नाम पर यह नगर स्थापित किया। युएनचुयाङ्गके समयमें कपिया राजाके अधीनमें एक शासन कर्ता आकर गान्धार देश पर राज्य करते थे। चीन परिव्राजकके वर्णनसे माल म पडता है कि इस राज्यमें नारायणदेव, अमङ्गबौधिमत्व, सुबुबु बौधिमत्व, धर्म-द्वाल, मनोहित और पार्व प्रभृति बौद्धशास्त्रकारोंका जन्म हुआ था।

मुसलमान जातिके अभ्य दयके समय यहाँके बहुतसे हिन्दुश्रीने इसनामधर्म ग्रहण किया था और बहुतसे अपने धर्मकी रक्षाके लिये भारतवर्षको भाग आये।

काल २, काल ३, पैशावर, पुष्कलावती धर्म शब्द ली।

गान्धारोडमिनोडस्य। ३ पितादिक्रमसे गान्धार-देशवासी व्यक्तिमात्र। ४ गान्धारदेशके राजा। ५ मत-

स्वरान्तर्गत तृतीय स्वर। मङ्गीतशास्त्रके मतमें मयूरका शब्द षड्ज, गौश शब्द ऋषभ, कागजा शब्द गान्धार और कौशिका शब्द मध्यम माना गया है। भरतके मता नुसार नाभिसे वायु उठ कर कण्ठ और मस्तक तक चली गई है इन नमस्त स्थानोंसे नानाप्रकारकी पवित्र गन्ध बहान करती है, इसलिये इसका नाम गान्धार पड़ा है। मङ्गीतदर्पणमें लिखा है कि यह स्वर टेवकुलसे उत्पन्न वैश्वजाति है। इसका वर्ण सुवर्णके मट्टय पीत और लज्जल है। करुणरसमें इसका प्रयोग उत्तम है। ६ स्वर ग्रामविशेष। इसका लक्षण यथा,—यदि गान्धार स्वर, रि और मकी एक एक श्रुति, ध, प की एक श्रुति और निपाद ध और स की एक श्रुति आय्य करे तो उसे गान्धार ग्राम कहते हैं। यह ग्राम स्वर्गलोकमें प्रयुक्त होता है; पृथिवीमें इसका प्रयोग नहीं होता। ७ रागविशेष। मङ्गीतदामोदरके मतमें इसके मस्तकमें जटा, अङ्गमें भस्म भूषण, पहिरावमें गुरुआ वस्त्र, देह जीर्ण और नयन मुद्रित है। यह योगपट्टधारी और तपस्वी भैरवरागके पुत्र है। प्रात काल इसके गानिका समय है। (क्ली०) ८ गन्धरस, गन्धवोल। (पु० स्त्री०) गान्धारपत्य अञ् । ९ गान्धारिकी मन्थान। (त्रि०) गान्धारि भव, तस्य राजा वा कच्छादिभ्योऽण् । १० गान्धारदेशजात, गाधारदेशमें उत्पन्न होनेवाला। (भारत ११०८ ५०)

गान्धारक (म० त्रि०) १ गान्धारदेशके मनुष्य। गान्धार-देशस्थित। "गान्धारके सभ्यते (भारत ७१६ ५०)

गान्धारपञ्चम (स० पु०) रागविशेष, पाण्डव नामका एक राग। करुणरस और अद्भुत हास्यमें इसका प्रयोग किया जाता है। यह मङ्गलजनक समझा जाता है। इसका स्वरग्राम इस प्रकार है,—म प ध नि स ग म। इसमें ऋषभ नहीं होता, किन्तु प्रमद, मध्यम, अलङ्कार और फाकलोक होना जरूरी है। इसका अथर नाम केवल गान्धार भी है।

गान्धारमैरव (स० पु०) रागविशेष, एक रागका नाम। यह देशगान्धारके मिलने पर होता है। यह प्रात कालमें गानिसे अच्छा लगता है, तथा इसमें भाती स्वर लगते हैं। इसका स्वरग्राम यथा है—प नि स रि ग म प ध।

गान्धारराज (म० पु०) गान्धार्य राजा सम्राजान्-टव्। गाधारके राजा सुवल। (भारत १११ ११०)

गान्धारि (सं० पु०) गन्धमेव अण् गांध्रं ऋच्छति ऋडन् ।
१ गांधारदेश । गांधारस्य तद्देशवाग्निपस्यापतरं ।
२ गांधारदेशोय नृपतिका अपतर, गांधारदेशके राजिकी
सन्तान ।

“गांधारिभिःसम्भक्तैः पात्रं तीक्ष्णं दुर्कटैः ।” (भारत ८५६ अ०)

गान्धारिका (सं० स्त्री०) गान्धार-कन्-टाप्-अत-इत्वम् ।
सादरु द्रव्यविशेष, गाँजा । गांधारी देवी ।

गान्धारि (सं० स्त्री०) गान्धारस्य अपत्यं स्त्री इज-डोप् ।
१ धृतराष्ट्रराजपत्नी, धृतराष्ट्रकी स्त्री । यह राजा सुवल
की कन्या तथा दुर्योधनादिको माता थी । गान्धारोने
शिवजीको आराधना करके शत पुत्र प्राप्त किये थे । महा-
भारतमें लिखा है जब भीष्मने सुना कि गान्धारिकीको शत
पुत्र लाभका वर मिला है तो उन्होने शीघ्र ही सुवलके
निकट दूत प्रेरण किया । सुवलने विचार कर देखा कि
यद्यपि वर अन्धे है तो भी कुलख्याति प्रभृतिके अनुसार
उन्हीको कन्या देना उचित है । जब गान्धारोने सुना
कि धृतराष्ट्र अन्धे हैं एवं पिता माताने उन्हीको सम्प्रदान
करनेको इच्छा की है तो उसने एक वस्त्र लेकर उसको
कई गुना करके अपनी आँखके ऊपर बान्ध लिया । इस
तरह उन्हीने पतिव्रता धर्मकी पराकाष्ठा प्रदर्शन की थी ।

२ अजमेरकी कन्या । ३ नाड़ीविशेष, एक नाड़ीका
नाम । “इडा षष्ठे तु, गांधारी ।” (तन्त्र) ४ जिनके एक शासन-
देवताका नाम । ५ लताविशेष, यवास । ६ लताविशेष,
दुरालभा, धमासा । ७ पार्वतीकी एक सहचरीका नाम ।
(भारत १२३ अ०) ८ गायत्री । (देवी भागवत १२।१।४०)
९ कण्टकारी, भट कटैया ।

गान्धारितनय (सं० पु०) गान्धार्यास्तनयः, इ-तत् । १ दुर्यो-
धनादि स्त्रियां टाप् । २ दुर्योधनादिकी भगिनी, दुःशला ।

महाभारतमें गान्धारिसे दुर्योधनादिका उत्पत्ति-विव-
रण इस प्रकार लिखा है—“एक समय व्यास चुधा और
अमातुर ही गान्धारिके निकट उपस्थित हुए । गान्धारोने
उन्हे परितुष्ट किया । इस पर व्यासने कहा कि वर
मांगो । गान्धारोने स्वामीके अनुरूप शत पुत्रके लिये
प्रार्थना की, व्यासने भी मनोनीत वर स्वीकार किया ।
थोड़े दिनके अनन्तर धृतराष्ट्रसे गान्धारिकीको गर्भ रहा किन्तु
दो वर्ष पर्यन्त कोई सन्तान भूमिष्ठ नहीं हुई । एक

दिन कुन्तीकी सूर्यतुल्य सन्तानकी उत्पत्ति सुन कर
गान्धारि दुःखित हुई और अपने गर्भकी यत्पूर्वक निपा-
तित क्रिया, उससे लौह सदृश कठिन मांसपिण्ड निकला ।
उसने उस मांसपिण्डको फेंक देनेकी इच्छा की, उसी
समय व्यासने आकर जिज्ञासा की और गान्धारोने समस्त
सच्ची बातें कह सुनायी । व्यासजी बोले कि—इस मांस-
पिण्डको एक शत वृत्तपूर्ण कुम्भमें रख छोड़ो । ऐसा करने
पर वृक्षाङ्गुलिके गिरहके सदृश पृथक् पृथक् एक सौ भाग
उसमें प्रकाश हुए और यथामय एक शत पुत्र हो गये
ज्येष्ठानुक्रमसे उनके नाम इस तरह हैं—दुर्योधन, दुःशा-
सन, दुःसह, दुःशल, जलसन्ध, मम, सह, विन्द, अनु-
विन्द, दुर्धर्ष, सुवाहु, दुष्पृषण, दुर्मर्षण, दुर्मुख, दुष्कर्ण,
कर्ण, विविंशति, विकर्ण, सल, सत्व, सुलोचन, चित्र, उप-
चित्र, चित्राक्ष, चाकचित्र, शरासन, दुर्मद, दुर्विगाह,
विवत्सु, विकटानन, ऊर्गनाभ, सुनाभ, नन्द, उपनन्दक,
चित्रवाण, चित्रकर्मा, सुवर्मा, दुर्विमोचन, अयोवाहु,
महावाहु, चित्राङ्ग, चित्रकुण्डल, भीमवेग, भीमवल,
वलाकी, वलवर्धन, उग्रायुध, भीमकर्मा, कनकायुः, दृदा-
युध, दृढवर्मा, दृढक्षत्र, सोमकीर्ति, अनृदर, दृढसन्ध, जरा-
सन्ध, सत्यवन्ध, मदःसुवाक, उग्रयवाः, उग्रसेन, सेनानी,
दुष्पराजय, अपराजित, कुण्डशापी, विशालाक्ष, दुराधर,
दृढहस्त, सहस्त, वातवेग, सुवर्चाः, आदित्यकेतु, वहाशी,
नागदत्त, अग्रयायी, फवची, निपङ्गी, कुण्डी, कुण्ड-
धार, धनुर्धर, उग्र, भीमरथ, वीरवाहु, अलोलुप, अभय,
रौद्रकर्मा, दृढरथ, अनाष्टय, कुण्डमेदी, विरावी, दीर्घलो-
चन, प्रमथ, प्रमाथी, दीर्घरोम, वीरवान्, दीर्घवाहु, महा-
वाहु, बुचोरु, कनकध्वज, कुण्डाशी और विरजा । गान्धारि
की शत पुत्रके अतिरिक्त दुःशला नामकी एक कन्या भी
थी ।

गान्धारिय (सं० पु०) गान्धार्या अपत्यं ढक् । दुर्योधनादि ।
स्त्रियां डोप् । गांधारियो, गांधारीकी कन्या, दुःशला ।
गान्धिक (सं० पु०) गंधो गंधद्रव्यं, पण्यमस्य ढक् ।
१ गंधवणिक । गन्धवणिक देवो । २ लेखक । ३ कीट-
विशेष, एक कीड़ाका नाम । (ली०) स्वार्थे ढक् । ४ गंध-
द्रव्यमात्र ।

“पण्यानां गान्धिकं पण्यं ।” (पञ्चतन्त्र)

गाब्रिनी (२० स्त्री०) गाब्रिनी देवा ।
 गान्धी (म० स्त्री०) गंध एव स्वार्थ प्रकाशित्वात् अण ।
 गघोऽस्या अस्तीति अच् शोरादित्वात् डीय । १ कौट-
 यिगिप । एक कीड़ा । २ हणयिगिप, एक घाम ।
 गाफ—भारतवर्षके प्रसिद्ध अङ्गरेज सेनापति । ये आयर-
 लैंड-वासी लार्ज गाफके पुत्र थे । १७७८ ई०की इनका
 जन्म हुआ था, और १७८१ ई०में ये अङ्गरेज सैनिक
 विभागमें प्रविष्ट हुए । थोड़े वर्षोंके पश्चात् ये अंगरेजी
 सेनाके माथ रह कर अफ्रीका तथा अमेरिकाके नाना
 स्थानोंमें लड़े । १८०८ ई०को यूरोपके पेनिनसुला युद्धमें
 ये भयानक रूपसे आहत हुए और १८३७ ई०में भारतके
 अंगरेजी सेनाविभागमें नियुक्त हो कर मन्दाज पधारे,
 जहा वे महिपुरके सैनिक विभागमें नियुक्त किये गये ।
 १८४० ई०में जब अंगरेजी सेना चीनदेश भेजी गयी,
 गाफ मान्य भी उस दलके सेनापति हो कर गये । उस युद्धमें
 अपनी दक्षता दिखाना कर उन्होंने जो० सो० वी० और B. J.
 ronet को उपाधि प्राप्त की और १८४३ ई०के ११ अगस्त
 को ये भारतवर्षके प्रधान सेनापतिके पद पर नियुक्त हुए ।
 १८४३ ई०के २८ दिसम्बरको महाराजपुरमें महाराष्ट्रको
 १८४५ एव १८४८ ई०में मुटकी, फिरोजशा और मोवाउन
 नामक स्थानमें गिग लोरीको इन्होंने पूर्णरूपसे पराजित
 किया । विनायतके पार्लियामेंट महासभाने इनके वीरत्व
 में तृप्त हो कर इन्हें लार्डकी उपाधि दी । इष्ट इण्डिया
 कम्पनी और पार्लियामेंटने दो दो हजार पाण्ड इन्हें
 पेंशन-रूपसे दिया । १८४८ ई०को जब चिलियनवाना
 लड़ाईमें गाफके अधीन बहुतमी सेना नष्ट हो गई तो
 इंग्लैण्डमें सर चार्ल्स नेपियर भारतवर्षकी उन्हें सहा
 यता देनेके लिये भेजे गये, किन्तु उनके पहले ही गाफ
 साहबने मम्बूरा गिर्वाँकी १८४८ ई०की २२वीं फरवरी-
 को पचायके अन्तर्गत गुजरात नामक नगरमें परा-
 जित कर दिया था । इस लड़ाईमें नेपियर साहबने तिन
 भागों में सहायता न देने पर डेरी था । थोड़े दिनोंके
 बाद ये निग्न भोटे गये ।

गाफ साहब अति साहसी पुरुष रहे । जैसम्ब हैव
 लार्डका कहना है कि विपद् पाने पर उन्हें एक तरहका
 चानन्द मिलता था ।

गाफिन (अ० वि०) १ वेसुध, वेखवर । २ असावधान,
 बेपरवाह ।

गाव—एक पेड़का फल । (Diospyro sembroptera)
 यह देखनेमें ठीक नारङ्गीके जैसा होता और ऊपरमें
 काला काला दाग रहता है । इसके भीतर आठ
 आठिया रहती है । इसको गिरी आठायुक्त और स्वाद
 कपाय है । इस फलसे जो निर्यास बाहर होता है, वह
 उदरामय और अजोर्ण रोगमें विगिप उपकारी है । एक
 पाण्डव जन्में दो ड्राम परिमाणका निर्यास मिनाकर पिच-
 कारी द्वारा इस जलको प्रक्षेप करनेसे र्वेत्तप्रदरोग
 आरोग्य हो जाता है । एकमे पाच ग्रैन मावाका निर्यास
 दिनमें तीन बार खानेके लिये दिया जा सकता है । इस-
 की छालके कायमें बहुत दिनके अजोर्ण, उदरामय और
 स्वाभाविक दुर्बलतामें उत्पन्न रोग नष्ट हो जाते हैं ।
 इसके फलमें एक प्रकारका रस निश्चल होता जो नावके
 पद तथा जालमें बांधा देनेके काममें आता है ।

गायनीन (फा० स्त्री०) एक प्रकारका यन्त्र जिम्मे द्वारा
 जहाज पर पान चढाया जाता है ।

गाबिलगट—१ टाचिणात्यके बरार प्रान्तका एक पहाड़ी
 जिला । यह अक्षा० २१° १०' तथा २१° ४६' उ०
 और देशा० ७६° ४०' एव ७७° ५३' पू०के बीच एलिच-
 पुरमें कोडे १५ मील उत्तर पश्चिम पडता है । मेलघाटके
 निकट 'वेराटयङ्ग ३८८० फुट ऊँचा है । इस जिलेके
 पूर्व महार और पश्चिम पुनघाट तथा विन्नाका गिरि-
 सङ्घ है । एतद्विषय और भी कई नद्यो रहने हैं । पर्वत
 के निम्नदेशमें वन्यजात द्रव्य तथा काष्ठ विक्रयके लिये
 तद्ग दुर्गस पायत्तीय पथ निकला है । एलिचपुर जिलेके
 मेलघाट उपविभागमें तामी और पूर्णा नदीके मध्यमें
 पर्वतकी उच्च भूमि पर गाबिलगट दुर्ग स्थापित हुआ है ।

पहले यहाँ 'गोनी' या 'गायनी' लोग रहते थे ।
 मान्य होता है, उन्होंने यह किला बनाया था । मध्ययुग
 गायनी जातिके नाम पर ही यह स्थान तथा दुर्ग गायिल-
 गट कहलाया है । इस समय भी यहाँ उक्त जातीय बहु-
 संख्यक लोगोंका निवास है । कोडे कीट कहता कि
 १४०० ई०की पहलवत शाह बहमानीने यह दुर्ग निर्मात्र
 किया । काम पा करके यह किला निजाम राज्यमें मिल

गया था। फर गोंड सरदारने उसे अधिकार किया। १७२४ ई०को महाराष्ट्र सामन्त १म रघुजी भोंसलेने उसकी निजामके हाथसे निकाला था। १८३३ ई०को जिनरल वेल्लेसली और कर्नल दीवेन्सन वरारराज रघुजी भोंसलेके विरुद्ध गाविलगढ़ दुर्ग अवरोध करके गोले बरसाने लगे। ३ दिन गोले चलने पर १५ दिसम्बरको किला अंगरेजोंको मिला और १८५३ ई०को तोड़ा गया।

वरारमें अमरावतो जिलेके अन्तर्गत मेलघाट ताणुकके सातपुराका एक पहाड़ी दुर्ग। यह अक्षा० २१° २२' और देशा० ७७° २३' पू०के बीच पूर्ण और तामी नदीके सङ्गमस्थान पर अवस्थित है। यह दुर्ग कब और किससे निर्माण किया गया है इसका पूरा पता नहीं लगता है। लेकिन फिरिस्ताके ग्रन्थसे जाना जाता है कि वाहमनीके राजा अहमद शाह वलीने १४२८ ई०में यह दुर्ग निर्माण किया था। थोड़े समय तक यह दुर्ग कुछ नष्टसा हो गया था, तब १४८८ ई०में फत उल्लाह इमादुल-मुल्कने इसे पुनर्वार सुधारा। १५७७ ई०में जब अहमदनगरके मुर्तेजा निजाम शाहने सुना कि अकबर दक्षिण देश जीतने आ रहा है तो उसने फिरसे किलेकी मरम्मत की थी। १५८८ ई०में सैयद यूसुफ खाँ मशहदी और शेख अबुल फजलने यह दुर्ग अहमदनगरके निजामशाहसे छीन लिया था।

महाराष्ट्रकी दूसरी लड़ाईमें यह दुर्ग राघोजी भोंसलेके हाथ आ गया था; किन्तु उसी साल १४०३ ई०के १५ दिसम्बरमें जिनरल अर्थरने इसे नष्टभ्रष्ट कर डाला था।

किलामें एक सुन्दर मस्जिद आज तक विद्यमान है। मस्जिदके सामने सात गुम्बज लगे हुए हैं जिनमेंसे मध्यका गुम्बज सबसे बड़ा है। मस्जिदके शिल्प कार्य देखने योग्य हैं।

गाम (हि० पु०) १ पशुओंका गर्भ। २ गमा देखो। ३ वरतनका साँचा।

गामा (हि० पु०) १ नवीन पत्ता जो नरम और हलके रंगका होता है, कोंपल। २ केले आदि पेड़के भीतरका भाग। ३ लिहाफ तथा तीसकके मध्यकी निकाली हुई पुरानी रुई, गुब्बड़। ४ कच्चा अनाज।

गामिन (हि०) गामिनो देखो।

गामिनो (हि० स्त्री०) जिनके उदरमें सन्तान रहते, गभिणी। गाम (हि० पु०) ग्राम, गाँव।

गामचा (फा० पु०) घोड़ेके पैरका वह अंग जो सुम और टखनेके बीचमें होता है।

गामवकल—वस्वई प्रदे शके कनाड़ा जिलामें होनावर और कुमत ग्रामकी रहनेवाली एक जाति। इनकी संख्या १०५७२ है जिनमेंसे ५२८७ पुरुष और ५२८५ स्त्रियां हैं; ग्राम शब्दके अपभ्रंशसे 'गाम' निकला है। गङ्गावनी और शिगवतीमें भी इन लोगोंका वास अधिक है। हालवकी वकलसे ये बहुत कुछ मिलते जुलते हैं। ये काले, मजबूत और लम्बे होते हैं। स्त्रियां भी पुरुषकी नाईं लम्बी और काली होती हैं, किन्तु वे कुछ कुछ दुबली पतली हैं। इस गामवकलकी मातृभाषा कनाड़ी है। इनका प्रधान भोजन चावल और मछली है। गौ और पालतू सूअरका मांस छोड़ कर ये प्रायः सभी जानवरोंकी शिकार कर खाते हैं। पुरुष और स्त्रियां चम्पी नामकी देशीय शराव अधिक पीती है। पुरुष भिन्न भिन्न अङ्ग पर तरह तरहके ऋण पहनते हैं, और औरते 'हालवकी' का नाईं वस्त्र परिधान करती है, गलेमें ये लाल और काले काँचकी माला धारण करती है। ये परिश्रमी, मितव्ययी, गंभोर और व्यवस्थित होते हैं। खेती वारी करके ये अपनी जीविका निर्वाह करते हैं।

गामिक (सं० त्रि०) गामिन् स्वार्थे कन्। गमनकारी, जानेवाला।

'अयोध्यागामिको शब्दः पत्यः।' (रामायण ६।१०६)

गामिन् (सं० त्रि०) गम भविष्यति णिनि। २ भावि-गमनकारक, जो यात्रा करेगा।

'द्वितीयगामो न हि शब्द एव।' (रघु १।४२)

२ गमनकर्ता, जानेवाला।

'इयं द्विरदगामिमा।' (रघु १।२०)

गामिनी (सं० स्त्री०) पूर्व समयकी एक प्रकारकी नाव। इसकी लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई क्रमशः ८६ हाथ, १२ हाथ तथा ८ हाथकी रहती थी। यह नाव प्रायः समुद्रमें चलती रही, इस नाव पर यात्रा करनेमें बड़े कठिनाईयां भेलनी पड़ती थीं।

गामुक (सं० त्रि०) गमनशील, गमनकारी जानेवाला।

गाम्भारी (सं० स्त्री०) गम्भारीवृक्ष।

गाम्भीर (स० त्रि०) गम्भीर-अञ्ज । गम्भीरद्वारा निर्दत्त ।
गाम्भीर्य (स० क्ली०) गम्भीरस्य भावः, गम्भीरयञ्ज ।
१ अगाधत्व, गम्भीरता, गह्रग ।

सहस्र इव गाम्भीर्यं (रामायण १।१।१८)

२ अविचारित्व, विचारका अभावपन ।

“निरस्तगाम्भीर्यं सगामपुत्रकम् । (माघ)

मात्स्विकगुणविशेष । भय, शोक, क्रोध और हर्षादि
द्वारा कोई 'वकार नहीं होनेको गाम्भीर्य कहते हैं ।

विज्ञानासक्तः स च क्लेशप्रयासि ।

मात्रेण विपुलभ्रान्तं तद्गाम्भीर्यं मिति स तम् ॥ (साहित्य-वंश)

४ अचापन्य, हृदयता, धैर्य ।

“गाम्भीर्यं सगीह्वरं वपुः” (रघु० १।१२)

गाम्भ्र्य (स० त्रि०) गाम्भ्रियं मन्वते शब्दं तत अम ।
जो अपनीकी गौरुत्व समझे ।

गाय (स० पु०) गै भावे घञ्ज । १ गान ।

वशाविधानेन वठन् सम गायमविच्य तम् । (वाचस्पत्य)

गाय (हि० स्त्री०) १ गी, इतके नरकी साँड वा बेल कहते
हैं । २ बहुत मोटा साँदा मनुष्य ।

गायक (स० त्रि०) गानकर्त्ता गानेवाला ।

‘तवा गायकं गायका । (भारत १।१।१३)

गायकसव—कमाइयोकी एक जाति । ये सतारा और
महायनेश्वरमें पाये जाते हैं । कहा जाता है कि ये
हावमो गुलाम तथा काबुल पठानोंके वंशज हैं जिन्हें
हैदर अलीने महिसुरमें गाय और मीम कत्ल करनेके
लिये मयुक्त किया था । ये १८०३ ई०में जैनेरल वेलेस्ली
और १८१८ ई०में सर थोमस मनरोके साथ दक्षिणायनमें
भाये थे । ये आपसमें हिन्दुस्थानी भाषा और दूसरोंके
साथ सराठी बोलते हैं । ये बहुत कुछ यहाके मुसल
मानोंमें मिल्ते जुलते हैं । ये परिश्रमी, कौपी और भग
डान्नु होते हैं । इन्हें शराब पीनेकी आदत अधिक है ।
गायकवाड—बड़ोदारके राजवंशका उपाधि या नाम ।

जो राजा रहता, इसी नामसे अभिहित कृपा करता है ।
‘मिन खाम खेन शमगेर बहादुर’ इनका दूमरा उपाधि
है । फिर १८०० ई० १ जनवरीकी दिवसके दरबानमें
इन्हें ‘फरफन्द खाम दोन्त इइनिगिया उपाधि भी
मिला था । अगले सरफार गायकवाडकी २१ तापोंकी
सन्तामी देती है ।

दामाजी गायकवाडमें इस वंशकी उत्पत्ति है ।
वह महाराष्ट्रका माहक अधीन कर्म करते थे । उनके
सेनापति खण्डेराव धावाडे बालापूरके युद्धमें इनका
धीरत्व देख करके मन्तुष्ट हुए और इनको पदोन्नति करने-
के लिये राजाको अनुरोध किया । उसीके अनुसार
इन्होंने हितोय सेनापतिका पद और ‘शमगेर बहादुर’
उपाधि पाया था । दामाजीके मरने पर उनके भ्रातृ
पुत्र पिलाजी राव गायकवाड पद पर अभिषिक्त हुए ।
खण्डेरावके पुत्र त्राम्बेश्वराव धावाडे और पिलाजा
दोनोंने मिल करके अन्धान्य महाराष्ट्र सामन्तीके साथ
पेशवाके विरुद्ध युद्धयात्रा की थी । १७३१ ई०को
बडोदा नगरके निकट एक लड़ाई हुई । उसमें त्राम्बेश्वर
राव पराजित और निहत हुए । पेशवाने उनके शिष्य
मन्तान यशोवन्त रावको सेनापतिके पद पर नियुक्त
करके पिलाजी गायकवाडको पहले ही जैसा सहकारी
सेनापति बना ‘मिन खाम खेन’ उपाधि दिया और यशो
वन्त रावके प्रति गुजरातका समस्त कार्यभार अर्पण
किया । शर्त यह थी कि राजत्वका प्राय अर्धं य पेशवा-
की देना पड़ेगा । उस समय दिल्लीके बादशाह इस
प्रदेशके कई एक राज्यों का कर पेशवाको देते थे ।
उन्होंने पिलाजीको कर्मच्युत करके योगपुरराज अभय-
सिंहको उस पद पर बैठा दिया । इसी भ्रममें पिलाजी
गायकवाडने सम्ब्राटके विरुद्ध अस्त्र धारण किया और
उनकी सेनापती को युद्धमें परास्त करके अनेक स्थानों पर
अधिकार कर लिया । अभयसिंहने देखा कि पिलाजी
लोगोंके प्रिययाच रहे, उनका लड़ाईमें जीतना सद्दज न
था । यह विवेचना करके १७३२ ई०को गोपनमें टम्बु
हारा उन्होने पिलाजीको मरवा डाला । फिर उनके पुत्र
दामाजी गायकवाड बनाये गये । इधर सेनापति यशो
वन्त राव वय प्राण होते भी शायंभाखण्डनको असमर्थ
थे । उसीमें गायकवाड घराने पर भी बड़ा भार डाला
गया । १७३२ ई०को पिलाजीके भाई महाजोने बडोदा
नगर अधिकार किया । उसी समयमें उक्त नगर गायक
वाड वंशकी राजधानी बना हुआ है । तारामाने जब
अपने पीत सतारके राजाकी बान्नीकी बान्नीराव पेश
वाकी अधीनतामें डूहाया, दामाजी गायकवाडने उन्हें

साहाय्य पहुँचाया था। पेशवाने इसीसे उनको विश्वासघातकता पूर्वक पकड़ रखा। शेषमें गुजरातकी बाकी मालगुजारी १५ लाख रुपया देनेकी स्वीकृत होने पर पेशवाने उन्हें छोड़ दिया। उसी समय यह भी लिखा पढ़ी हुई—राज्यका जो अधिकार है और जहाँ उसका अधिकार होगा, उसके आधका आधा भाग पेशवाको देना पड़ेगा। काठियावाड़में गायकवाड़ने जो स्थान अधिकार किये थे, दूसरे वर्ष पेशवाने उसका कितना ही अंश ले लिया। गावकवाड़ पेशवाको सैन्य साहाय्य करने पर भी प्रतियुत हुए। फिर पेशवा और गायकवाड़का मिलित सैन्य ले करके राघव गुजरात अधिकार करने चले थे। १७५५ ई०को अहमदाबाद दिल्लीके शासनसे प्रत्यक्ष हुआ। पेशवा और दामाजी दोनोंने उसका राजस्व बाँट लिया था। किन्तु राज्यका अधिकांश पेशवाके हाथ लंगा।

१७६१ ई० ७ जनवरीको अहमदशाह अबदालीके साथ पानीपतमें जो लड़ाई हुई, महाराष्ट्र पक्षमें दामाजीने अपना सैन्य ले करके विलक्षण वीरत्व देखाया था। इस युद्धमें कितने ही महाराष्ट्रवीर धराशायी हुए और दामाजी अल्पसंख्यक सैन्य ले करके घरकी लौट पड़े। उसी समयसे वह फिर अधिक युद्धविग्रहमें न लगे, अपने राज्यकी ही रक्षा करते रहे। इसी समय उन्होंने गुजरातकी उत्तरदिक्के बधानपुरकी छोड़ करके समस्त स्थान जुवान् मर्ट खोंके पाससे अधिकार किया और इंडरके राठौरवंशीय राजाओंको करद बना लिया। इसी प्रकार दामाजी एक पराक्रान्त नरपति हो गये। पेशवा सधु रावके सेनापति रघुनाथ राव या राघवने अपने प्रभुके विपक्षमें अस्त्रधारण किया था। दामाजीने राघवकी सहायता करनेके लिये अपने पुत्र गोविन्दरावको ससैन्य भेज दिया। दोनों पक्षोंमें घमासान लड़ाई हुई, किन्तु अन्तमें राघव हार गये। पेशवाने गोविन्दरावको पकड़ रखा था। फिर दामाजीको ५२५००० रु० के करके पेशवासे मन्थि करनो पड़ी। वह शान्तिके समय ३००० और युद्धके समय ४००० अश्वारोही देने पर स्वीकृत हुए। एतदव्यतीत कई एक प्रदेश भी पेशवाने अधिकार कर लिये। यह ठहर गया कि २५४००० रुपया और मिलने

पर वह लौटा दिये जावेंगे। इसके पीछे दामाजीके राज्य कालमें दूसरी कोई बड़ी घटना नहीं हुई। मन्थिकी शर्त पूरी होते न होते ही वह मर गये। उनके ३ पत्नियाँ रहीं। प्रथमाके गर्भसे गोविन्दराव, द्वितीयाके गर्भसे सभाजी तथा फतेहसिंहजी और तृतीयाके गर्भसे साणिकजी नामक पुत्रने जन्म लिया था। इन लड़कोंमें द्वितीयाके गर्भजात सभाजी राव सर्वज्येष्ठ रहे। पिताके मृत्यु-कालको प्रथमाके गर्भजात गोविन्दराव पूनामें कैद भुगत थे। वहाँ उन्होंने पेशवा मधुरावको बहु मूल्य उपद्रोहकनसे तुष्ट करके और पूर्ववत् मन्थिके अनुसार कार्य करने पर स्वीकृत हो उनसे अपने नामपर राज्य करनेकी अनुमति ली। उन्हें 'सेन खाम खेल' उपाधि भी मिला था। गोविन्दरावको इस उपलक्षमें ५०४८८१४१५ निम्नलिखित रीतिसे देना पड़ा—

गत वर्षका कर	५२५०००)
१७६८ ई०की अनुपस्थितिका दण्ड	२३३५०००)
सेन खाम खेलकी उपाधिके लिये	
नजराना और जागीर	२१०००००)
हिसाब खाते	१०००००)
मुकुन्द काजीको अतिरिक्त कर देने पर	२६६३०)
	<hr/>
	५०५०६३०)
नकद सीना	३७१५०)
	<hr/>
कुल	५०८८१४१५)

इधर फतेहसिंहने बुद्धिहीन बड़े भाई सभाजीका बड़ेदेके सिंहासन पर बैठा करके राजकार्य परिचालनका भार अपने हाथमें लिया और पेशवाको राजा करनेके लिये पूना गमन किया। उसी समय मधुरावके वंशमें विवाद उपस्थित हुआ था। लोभमें पड़ करके पेशवाने सभाजीका अधिकार स्वीकार कर लिया और 'सेन खाल खेल' उपाधि दे करके फतेहसिंहकी उनका अधोस्थ बना दिया। इससे गोविन्दरावके साथ उनका झगड़ा लगा था। फतेहसिंहने मधुरावसे कहा कि गोविन्दराव सम्भवतः युद्धका उद्योग करेगी। सुतरां जो सैन्य उस समय पेशवाके पास रहा, गुजरातमें रखना अच्छा था और उसके खर्चको वह वात्सरिक ६७५००० रु० देनेकी

प्रसूत थे। फतेहसिंहने पेशवाकी अभिमन्त्रि भली भा त समझ ली थी। वह जानते थे—पेशवा किमी समय उन्हीको आक्रमण करके विपर्यस्त कर डालेगे। १७७२ ई०को उन्हीने बम्बईमें अंगरेज सरकारके पास सन्धिका प्रस्ताव करके भेजा। किन्तु बिनाशतके 'कीट' अथ डिरेक्ट मने उस प्रस्ताव पर अपनी असन्धिता प्रकाश की थी। परन्तु १७७३ ई० १२ जनवरीको भडोचके राजसख सम्बन्धमें एक सन्धि हो गयी।

उपर नारायण रावके प्राणविनाशके बाद राघव पेशवा हनु और गोविन्द रावकी 'सिन खास खेल्' उपाधि मिला था। इस बार गोविन्द रावका साहस बढ गया। वह 'फतेहसिंहके हाथमें बडोदा राज्य निकाल देने गुजरातका चने थे। वहा पहु चते ही गोविन्द रावने बडोदा अवरोध किया। राघवने नरीसमदास नामक किमी व्यक्तिकी गोविन्दरावकी ओरसे सुरतके टिक्कण प्रन्थीका राजसख चुकानिकी रख लिया था। फतेहसिंह जा करके उसको पकड लाये। राघव उन्हीसे गोविन्द रावके साथ घेरा डालनेमें मिल गये। इधर फतेहसिंहने होलकर और मेधियायी फौज ले करके राघवकी फौज पर हमला किया था। राघव पराजित हो करके माग खडे हुए। गोविन्द राव खण्डेराव प्रभृतिने प्रथमत कार्यगञ्ज और फिर पद्मानपुरकी पलायन करके आत्परचा की। अखीरकी राघवने अंगरेजो का सहाय पकडा। फतेहसिंह गायकवाड गया। १७८० ई० २० जनवरीको फतेहसिंहके साथ एक सन्धि हुई। पीछे उनके अन्तिम ठहरने पर १७८२ ई०को दूसरी सन्धि की गयी। १७८८ ई० ११ दिसम्बरको फतेहसिंहके मरने पर दामाजीके अपर पुत्र मानाजी राज्यभार ग्रहण करके पहिलेकी तरह सभाजीके नाम पर राजा बनाने लगे। १७८३ ई० अगस्त मासको उनके मरने पर पृथीक गोविन्दराव गायकवाड बडोदाके सिंहासन पर बैठे थे। १८०० ई०के सितम्बर महीने गोविन्द राव भी मर गये। गोविन्द रावके ११ पुत्र रहे। उनमें जीरठपुत्र धानन्द राव सिपासनाखुद हुए। किन्तु उनमें बेसी बुद्धि न थी। महजमें ही गोविन्द रावके दूसरे पुत्र कानोजी राव राजाकी सभी क्षमता अपने हाथमें लेने लगे।

बडोदा राजके पूर्वतन भन्वी रावजी अर्थाजोने धानन्द रावकी सहायता करके कानोजी रावके हाथसे सरकारी खजाना निकाल लिया था। उभय पक्षोंमें सन्ध्या होने लगी। रावजीकी ओर उनके भाई बाबाजी, उनके अधीन गुजराती अखारोही दल और सात हजार अरबी सेना थी। उस समय मङ्गल पारिख भोग सासुएल विचर नामक दो कारिन्दे जाटा सूट पर रुपया दे उक्त सेनादलकी पालन करते थे। मिपाही तनखाह पाने पर अपना देना चुकाते थे। सुतरां वह कारिन्देके विशेष वगीभूत रहे। यह दोनों कारिन्दे बाबाजीकी ओर रहनेसे धानन्द रावका हो पक्ष बलवान् हुआ। उधर कानोजीका पक्ष भी नितान्त सहायगून्य न था। उनके पिछले मन्हार राव कररी नामक स्थानके जागोरदार रहे। उन्हीने यह प्रतियुत होने पर कानोजीका पक्ष लिया कि कानोजी राजा होने पर उनकी बाकी मालगुजारी छोड देगे और अगि कोई कर न लेगे उन्हीने अविश्व हो सत्य मङ्गल करके बडोदा राजा आक्रमण किया। धानन्दरावकी ओरसे रावजोने 'अनन्योपाय' हो करके बम्बईकी अंगरेज गवर्नमेण्टकी लिख भेजा—मन्हार रावके विपक्षमें यदि अंगरेज साहाय्य करें तो हम ५ टल अंगरेजो फौजका खर्च देनेको तैयार हैं। 'बम्बईके शासनकर्ता उन्कन माहवने इस पर भारत गवर्नमेण्टकी अनुमति मागी थी। परन्तु बहुत दिनों अपेक्षा करने पर भी जब कोई सतामत न मिला, तो अखीरमें उन्होने मेजर अलमजैण्डर वाकरकी सेनापति बना १६०० मिपाहियोंके साथ रवाना किया और उनको कह दिया, पहले वह निवटारेकी चेष्टा करेंगे, निवटारेका सुभीता न पडनेमें रावजोके साथ मन्हार रावसे लडे गे। मन्हार रावने भी गतिकको समझ वृक्त करके प्रथमत बहुत भयभोत जैसे बन गये और अन्ध-कृत स्यातो की छोड़ देने पर तैयार हुए। गान्तिकी बात चल रही थी कि मन्हार रावने एकाएक १७ भाचकी अंगरेजी फौज पर आक्रमण किया। परन्तु अन्तमें उन्हीको पराजित हो करके मागना पडा। इस लड़ाईमें अंगरेजोके ५० आदमी मारे गये। फिर मन्हार राव सुपके सुपके बाबाजीका कितना ही सेना

दल तोड़ने लगे। वाकर साहबने अवस्था देख करके बम्बईको सन्वाद भेजा था। बम्बई गवर्नमेण्टने उस पर थोर भी कितनी ही फौजके साथ सर विलियम हार्क साहबको रवाना किया। ३० अपरेलको उन्होंने बड़ोटा पहुँच मलहार राव पर आक्रमण मारा था। मलहार रावने अखीरमें अपनेको उनके हाथ सौंप दिया। अंगरेज गवर्नमेण्टने वाकर साहबको बड़ोटेका पोलिटिकल एजेंट नियुक्त किया था। फिर स्थिर हुआ कि मलहारराव नडियाद नामक स्थानमें रहेंगे और उनको खर्चके लिये १२५०००) रु० मासिक मिलेंगे। अच्छा व्यवहार करने पर उनको और भी ज्यादा रुपया दिया जावेगा। कानोजी बड़ोटेमें कैदीके तौर पर रखे गये। बात यह हुई—आनन्दराव अंगरेज गवर्नमेण्टको एक दल सेना रखेंगे और सूरत तथा ८४ जिलाओंकी चौथ अंगरेज गवर्नमेण्टको देंगे। रावजी अप्पाजी यावज्जीवन मन्वी रहेंगे, अंगरेज गवर्नमेण्ट उनके पुत्र, भ्राता आतुष्युत्र, भागिनिय और बन्धुवाच्योंके प्रति यथेष्ट उदारता दिखलावेगो।

उधर बड़ोटा राजकोषके अर्थ सम्बन्धमें बड़ो गड़बड़ो यही थी। मन्वी रावजी अप्पाजी अपनी शृङ्खला स्थापन करनेमें असमर्थ थे, उन्हें अंगरेज गवर्नमेण्टका साहाय्य ले करके काम करना पड़ा। गायकवाड़-वंशीय गणपति नामक कोई व्यक्ति मलहाररावका पक्ष अवलम्बन करके खेरा दुर्ग टवा बैठा था। भूतपूर्व गोविन्दराव गायकवाड़के मुरारिराव नामक पुत्रने गणपतिके साथ योगदान किया था। उन्हें दमन करना एकान्त आवश्यक समझ करके एक दल सेना भेजी गयी। गणपतिराव और मुरारिरावने पलायन करके धार राज्यमें पंवारोंका आश्रय ग्रहण किया।

अपर टिकुको और एक विभ्राट् उपस्थित था। अरवी फौज बहुत दिनोंसे तनखाह न पाने पर मनमानी करने लगी। उनको दमन करना कठिन पड़ा था। चाहे शृङ्खला स्थापनका उद्योग देख करके अथवा अपने निकाल दिये जानकी आशङ्कासे उन्होंने विद्वीही हो गायकवाड़ आनन्दरावकी पकड़ लिया और कानोजीको छोड़ दिया। मलहाररावने भी उसी सुयोग पर नडियाद नामक स्थानसे गोपनमें पलायन किया।

पोलिटिकल एजेंट मि० वाकरने पहले मीठी बातोंमें अरवीको समझाना चाहा था। परन्तु उनकी चेष्टा व्यर्थ हुई। उन्होंने बम्बईसे अंगरेजो सैन्य मंगा बड़ोटा भेगा था। अवरोधके समय अरव लोग घरीके भीतरसे गोली मार कितने ही अंगरेज सिपाहियोंको गिराने लगे। १० दिन घेरे पीछे उन्होंने कहा कि उनका प्राप्य अर्थ मिलने पर वह देश छोड़ करके चले जाने पर प्रसूत थे। उनका १७ लाख ५० हजार रुपया पावना था। राजकोषमें उतना रुपया न रहा। उसीसे ४१ लाख ३८ हजार रुपया ऋण लेना पड़ा। ईष्ट इण्डिया कम्पनीने अपने आप उनका आधामा रुपया दिया और बाकी अपना जमानत पर देशी कीठीवालोंसे लिया था। मैकड पीछे ८) रु० सूट रहा। ३ वर्षमें रुपया चुकानेकी बात थी।

इस प्रकारसे वेतनका बाकी रुपया लेकर अरवी फौज ज्यादातर देश छोड़ करके चली गई। सिर्फ अत्रट नामका जमादार कानोजीकी साहाय्य करनेके लिये उनमें जा कर मिला था। कानोजी बड़ोटेसे भाग कर महाराष्ट्रकी उत्तर सीमा पर राजपिपली नामक पार्वत्य प्रदेशको चले गये और वहाँ फौज इकट्ठी करने लगे। बड़ोटा अवरोधके समय वह राहमें वावाजीके एक सेनादलमें पराजय करके बड़ोटाकी ओर जा रहे थे। १८०३ ई० जनवरी मासकी अंगरेजोंने अरवी सिपाहियोंको हरा करके मेजर होम्सको समैन्य कानोजीके विपक्षमें प्रेरण किया। कानोजी शैरीगांवके पास पहाड़ी राह अधि कार करके गुप्त भावमें अंगरेज फौज पर हथियार फटकारने लगे। अंगरेजी सेनाने पीठ टे खानिका उपक्रम उठाया ही था कि मेजरहोम्सने सिपाहियोंको उत्तेजित करके प्रवल वेगसे शत्रुका अनुसरण किया। कप्परवंज नामक स्थानमें कानोजीका दलबल किन्न विच्छिन्न हुआ था। वह उल्लयिनोको भाग गये। अवशेषमें १८०८ ई०की उन्होंने अंगरेजोंके हाथों आत्मसमर्पण किया। अंगरेजोंने उन्हें छोड़ उनके निर्वाहका प्रबन्ध बांधा था। परन्तु शेषमें १८१२ ई०की विश्वासघातकता करनेके अभियाग पर वह मन्द्राज भेजे गये। वहाँ उनका मृत्यु हुआ। उनके सहकारी मलहारराव भी नडियादसे भाग इधर-उधर घूमते फिरते थे। वैसे ही समय वावाजीके सिपा-

हियो ने उन्हें पकड़ करके अगरेजी के हाथ सौंप दिया। अगरेजी ने उन्हें बम्बईके दुर्गमें कैद करके रखा था। वही मन्हारराव मर गये।

अगरेजी के साहाय्यसे आनन्दराव गायकवाड बडोदा राज्य शासन करने लगे। रावजी अण्णाजी मन्त्रो, बाबाजी सेनापति और लेफ्टिनेण्ट कर्नल वाकर अगरेजी रसो डेण्ट वा पोलिटिकल एजेंट थे। उस समय राज्यका धाय ५५ लाख, परन्तु व्यय ८२ लाख रुपया रहा। सुतरां ऋणपरिशोधका कोड़े उपाय देख न पड़ता था।

१८०५ ई०को अगरेज गवर्नमेण्टने गायकवाडके साथ एक नयी सन्धि की। पहले वह २००० फीज रख सकते थे, इस सन्धिके अनुसार ३००० पैटल और गोलन्द्राजी की एक फीज रखने लगे। और उनके व्ययनिर्वाहकी ११७००००, ५० धायको सम्पत्ति प्रलग की गयी। चीरासी, चकनी और कैरा प्रदेश तथा सुरतको चोय और सिवा इसके १२ लाख ८५ हजार रुपयेको जायदाद कर्ज भ्रदा करनेके लिये अगरेज गवर्नमेण्टको दो थे। सन्धिके २ वर्ष पछे अगरेज गवर्नमेण्टने देखा कि फीज रखनेके लिये जो सम्पत्ति निर्दिष्ट थी, उससे व्यय न निकलता रहा। उसीसे गायकवाडकी और जायदाद छोडनी पडा। १८०८ ई०की मालूम हुआ कि ऋण जैमाका तेमा रक्षा और सृष्ट चढता था। सन्धिमें किमीको सुभीता न पडा। अगरेज गवर्नमेण्ट सम्पत्ति ले करके फीजका बर्ध चला न सकी, गायकवाडका भी कर्ज बना रहा। १८११ ई०की रेमीडेण्ट मंजर वाकरके कामसे हुई लेने पर कपतान रिक्टर कार्नाक रेमीडेण्ट हुए। १८१२ ई०को बम्बई सरकारने प्रस्ताव किया था गायकवाडके एक करोड रुपया देने पर उनको समस्त अन्य सम्पत्ति लौटा देनेो चाहिये परन्तु इस प्रस्ताव में गवर्नर अनमन स्वगत न हुए। १८१५ ई०की बडोदे में भवानक दुर्मिल पडनेसे राजस्वकी तहमीलमें बडो चढूचन लगे। उसमें ऋण और भी बढा था। दूसरा वर्ष पेशवाके बारमें दूसरा भगडा उठ गडा हुआ। इस

से पहले अहमदाबाद और काठियावाड प्रदेश ४॥ लाख रुपया मालाना आमदनीको जायदाद मान करके रुई वषके लिये पेशवाकी दी गयी थी। निर्दिष्ट वान शेष होने पर पेशवाने फिर उसको लिखा पटी करा लेनी चाही। गायकवाडके पचसे कहा गया कि उन्हींने गायकवाडके अधिगत भूचकी मालगुजारी नहीं दी और गायकवाडसे विना पूछे ही अगरेज गवर्नमेण्टको पट्टा चा दो। दोनों औरका हिसाब साफ करनेके लिये गायकवाडकी औरसे गद्दाधर शास्त्री पृनेको भेजे गये। गद्दाधर काको देखो। अगरेज गवर्नमेण्ट उनकी रक्षाके लिये दायो हुई थी। गद्दाधरके निहत होने पर अगरेजीने पेशवाको लिखा कि वह हत्याकारो त्राम्बकजी अद्रियाको उनके हाथ सौंप देते। अनिच्छा रहते भी पेशवाने उन्हें पकड़ करके उपस्थित किया। किन्तु त्राम्बकजी रक्षियोंके हाथसे निकल सेनासहपूर्वक पेशवाके साहाय्यसे युद्धका उद्योग करने लगे। १८१७ ई०को अगरेजीके पुना घेरने पर पेशवाने सन्धिके प्रस्ताव किया। अगरेजी पक्षपर एलफिनटोन साहबके प्रस्तावसे सन्धि हुई।

इतने दिनों तक पेशवा महाराष्ट्रके अथणी जैसे समर्थ जाते थे, अब उस सम्मानसे वञ्चित हुए। स्थिर हो गया कि उनको सब भागे चुकानेके लिये उन्हें प्रति वर्ष ४ लाख रुपया दिया जावेगा। यह फिर गायकवाड राजमें किमी प्रकारका हस्तक्षेप न कर सके गे। अहमदाबाद पहिली सन्धिके अनुसार उन्हींके पास रहेगा। काठियावाड प्रदेशका राजस्व अगरेज गवर्नमेण्टको देना पडेगा।

पेशवाके साथ सन्धि हो जाने पर गायकवाडमें इस गर्त पर अगरेजी गवर्नमेण्टकी दूसरी सन्धि हुई कि कोई बडा युद्ध उपस्थित होने पर उभयपक्षको सैन्य दे करके एक दूसरेका साहाय्य करना पड़ेगा। गायकवाडके ४००० मयार अगरेजीके अधीन रहे गे। दोनों पक्षक कैदी परस्पर छोड देने पड़े गे। अगरेज गवर्नमेण्ट गायकवाडके साहाय्यकी और भी सैन्य भ्या बढावेगी। उसक व्ययनिर्वाहाय गायकवाडने अगरेज गवर्नमेण्टको गुजरातका अश छोड दिया। फिर अगरेजी

• इस सन्धिमें दोनका ४२, बम्बई १०३०००, गांधार ११००००, मद्रास ११००, पेशवा ११०, अगरेज ११०००, विन्डहोस्ट १०००, और काठियावाड ११००००, बा।

गवर्नमेण्ट और गायकवाड़ने कई एक स्थान आपसमें परिवर्तन किये ।

इस सन्धिके पीछे आनन्दरावके समयमें कोई विधि घटना नहीं हुई । १८१८ ई० २ अक्टूबरको वह मर गये । इससे पहले ही उनके भ्राता फतेहसिंहका भी मृत्यु हो चुका था । यह १२ बत्सरकाल राजकार्यके अध्यक्ष रहे । फतेहसिंहके मरने पर उनके कनिष्ठ भ्राता शिवाजी गवर्नरी कार्य करने लगे । आनन्द रावका मृत्यु होने पर उनके दो लड़के रहते भी यही शिवाजी राव राजा बन बैठे ।

आनन्द रावको बुद्धिहीन ममभक्त करके अंगरेज गवर्नमेण्ट सब विषयोंमें हस्तक्षेप करती थी । परन्तु शिवाजी बुद्धिमान रहे, उनके समयको वैसी दस्तन्दाजीकी जरूरत न पड़े । फिर भी रेसीडेण्ट जैमेथ्र, बन रहे । १८२० ई०को बम्बईके गवर्नर एलफिन्स्टोन साहब बरोट्टेमें जा करके सब विषयोंमें सुझावला स्थापनकी नया प्रवन्ध कर आये और स्थिर हो गया कि राज्यका कार्यकलाप वृटिश गवर्नमेण्टके हाथमें रहेगा । आन्तरिक बातोंमें गायकवाड़का सम्पूर्ण कर्तृत्व चलेगा । फिर भी फाँटो-वालोंके साथ देनेको जो व्यवस्था हुई थी, उसमें किसी प्रकारको त्रुटि न आती और वात्सरिक आयव्ययकी व्यवस्था रेसीडेण्टका दिखला ली जाती । रेसीडेण्ट चाहनेसे बहीखाता देख सकता । किसी विषयमें अधिक खर्च करनेकी रेसीडेण्टसे परामर्श ले करके कार्य करना पड़ेगा । वृटिश गवर्नमेण्टने मन्त्री और अन्यान्य कर्मचारियोंके प्रति जो अभयदान किया था उसकी रक्षा करनेकी पड़ेगी । गायकवाड़ अपने आप मन्त्री नियोग करेंगे, किन्तु नियोग करनेमें पहले रेसीडेण्टसे उसके सम्बन्धमें परामर्श लेना पड़ेगा । समय समय पर वृटिश गवर्नमेण्टकी परामर्श देनेका अधिकार रहेगा । यह सब नियम हुए तो सही, परन्तु शिवाजी तदनुसार चल न सके । अष्टण परिशोधके लिये समय समय पर रुपया देनेकी जो व्यवस्था हुई थी, उसकी भी वह पालन करनेमें अममर्थ हुए । इसी प्रकारसे १८२० ई०को उन पर १ करोड़ ७ लाख रुपया ऋण चढ़ गया । वृटिश गवर्नमेण्टने कहला भेजा था यदि वह रुपया न-दे

सके, तो कर्ज लुकारनेके लिये मन्दाजनोंकी उर्ध्व हिम्माव में अपनी जमीन सौंप दें । किन्तु शिवाजी यह न कर सरकारी राजस्वका रुपया इधर उधरमें इकट्ठा करके उधान और वृटिश गवर्नमेण्टने जिन लोगोंकी रक्षा करनेकी कहा था, उनको नानाविध अत्याचारोंमें सनाने लगे । एलफिन्स्टोन साहबके बाद मर्जेन सेनकलम थंथड़ेके गवर्नर हुए थे । उन्होंने शिवाजीको बहुत भ्रमभाषा परन्तु कोई फल न पाया । अन्तमें १८२८ ई०को कई एक जायदादों अलग करके मन्दाजनोंके साथ बन्दोबस्त कर लिया गया । अंगरेज गवर्नमेण्टका जो सेनाटन उपस्थित करनेकी बात थी, शिवाजीने करके शर्तोंमें प्रहरीके काम पर नियुक्त किया । परन्तु उन्होंने शैतिके अनुसार वेतन पाया न था । उसमें १८३० ई०का वृटिश गवर्नमेण्टने फिर १५ लाखकी सम्पत्ति निकाली । १८३२ ई०को लार्ड क्लेयर बरोट्टे जा करके गायकवाड़से मिले थे । स्थिर हो गया कि गायकवाड़ मन्दाजनोंका देना चुगवेंगे । मन्दाजनों पर किसी प्रकारका अत्याचार न होनेकी वृटिश गवर्नमेण्टने जिम्मा लिया था । गायकवाड़ने मन्दाजनोंको तनवाच वक्त पर देना मञ्जूर किया और अपनी बातको जमानतके तौर पर गवर्नमेण्टके पास १० लाख रुपया रख दिया । गवर्नमेण्टने उनसे १५ लाख रुपयोंकी जायदाद जो पहले ले ली थी, वापस कर दी । परन्तु शिवाजीके लिये प्रतिष्ठा पालन करना असाध्य हो गया । वह बहुतसी बातोंमें सरकारी हिदायतोंके खिलाफ काम करने लगे । इसके बाद गवर्नमेण्ट और चुप रह न सकी । गायकवाड़के कई एक स्थान अंगरेजी अधिकारमें थे । वह उन्हें उसकी मालगुजारी देती थी । १८३७ ई०को गवर्नमेण्टने गायकवाड़को बंध रुपया देना बन्द किया और उसके दूम्रे वर्ष नौसरी नामक स्थान भी ले लिया । शिवाजी फिर भी न सुधरे और शर्तके मुताबिक काम कर न सके । उनके विपक्षमें क्रमशः कितने ही अभियोग लगे थे । गवर्नमेण्टने अपना असन्तोष प्रकाश करनेके लिये पिपलावद नामक जिलेमें शिवाजीका हिस्सा देखल कर लिया । उसकी आमदनी ७०२००० रुप थी । फिर उन्हें राजस्थान करके दूसरेकी राजा बना

देनेका भय दिखलाया गया, परन्तु किसी बात पर उनकी आपत्त न उठी। अन्तमें जब १८३८ ई०की गवर्नमेंटने मतारकी राजा प्रतापसिंहकी सिद्धान्तसे उत्तरा, गिवाजी न जानि क्या समझ वय्यता स्वीकार करके दो पक्षको छोड़ सब बातोंमें गवर्नमेंटकी आज्ञाके अनुसार कार्य करने पर अज्ञेयकृत हुए। अगरेज गवर्नमेंटने उस पर राजी हो करके पिपलानदका अश छोड़ दिया और जमानतके तोर पर रखा हुआ १० लाख रुपया भी प्रत्यर्पण किया। १८४० ई० दिसम्बर मासकी गिवाजीका मृत्यु हो गया। उनके जेठपुत्र गणपति राव गायकवाड पद पर प्रतिष्ठित हुए। इनके राजत्वकालमें कोई बड़ी बात नहीं पड़ी। प्रजाकी सुखस्वच्छन्दता पर उनकी दृष्टि कम थी। वह अपने विलासमें ही काल यापन किया करते थे। १८५६ ई०की बम्बई बड़ीटा रेलवेके लिये उन्होने अगरेज गवर्नमेंटको जमीन दी। अतः यह थी—वह रेलवे खुलने पर गायकवाडकी आमदनी रफ्तानीका जो महसूल घटेगा, घृण कर दिया जावेगा। प्रतिवर्ष उसका हिसाब लगता और घाटा पूरा करना पड़ता है। १८५६ ई० १८ नवम्बरको गणपति रावका मृत्यु हुआ। सन्तान न रहनेसे उनके कनिष्ठ खण्डेरावने सिद्धान्त पर आरोहण किया था। अगरेज गायकवाड देखो। अगरेज गवर्नमेंटने उन्हें जी० मो० एस० आइ० (G. U. S. I) उपाधि दिया। १८७२ ई० २८ नवम्बरको खण्डेरावके मरने पर उनके भ्राता मलहार राव गायकवाड बड़ोदामें सिद्धान्ताफुट हुए। खण्डेरावकी विधवा पत्नी। यमुना वाई उस समय गर्भवती थीं। अगरेज गवर्नमेंटने मलहार रावको कह रखा—यदि यमुना वाईके गर्भसे पुत्र सन्तान उत्पन्न होगा, तो उसीको राजत्व मिलेगा। कोई भ्रष्टीने जाद यमुना वाईने एक कन्यामन्तान प्रसव किया था। सुतरा मलहार राव निष्कण्टक राज करत लगे। वह पहले खण्डेरावके प्राणविनायकी चेष्टा करने पर कारागारमें गिरा हुए थे, परन्तु धर्मि निजल एफ थारमो का सिद्धान्त पर बैठ गये। यह कोई आग्रा नहीं करता कि वेमै लोम पक्षी तरह राणजाय चला सकेगे। १८७० ई०की प्रजाके विराक्त हो अगरेज सरकारने

आवेदन करने पर तहकीकात करनीके लिये एक कमीशन बैठाया गया। उसने आवेदनकी बात छोड़ करके राजस्व, राजनीति और विचार प्रभृति नाना विषयोंका तदन्त ले करके अपना मन्तव्य लिख भेजा। इस मन्तव्यकी पठ करके अगरेजो गवर्नमेंटके प्रतिनिधि लार्ड नार्थरुकने उन्हें १८७५ ई० तक शासनसम्भार करनेका समय दिया था। उसके बीच यदि वह अच्छा इन्तजाम न कर सके तो उन्हें सिद्धान्तच्यत करनेकी बात थी। किन्तु १८७५ ई०की यह खबर फैल पडे कि अगरेज रीसेडेंट कर्नल फॉयरोको विप देनिकी चेष्टा की गयी। अनुमन्यामने मलहार राव पर ही मन्देह उठा। गवर्नर जनरल लार्ड नाथरुकने एक घोषणा निकाली—जब गायकवाडके विपक्षमें मन्देह है, तो जाचके लिये एक अदालत बैठेगी और जितने दिन यह अदालतके विचारमें वेगुनाह जैसे सावित न होंगे, रिधा-मतका काम करनेसे अलग रहेंगे। फिर तब तक अगरेज गवर्नमेंट अपने आप वह भार ग्रहण करगी। मलहार राव भी उसी वाच अपने दोषचालनके प्रमाणादि देगे। मलहारराव देखो।

फलकत्ता हाईकोर्टके बड़े जज, खालियरके महाराज, जयपुर महाराज, महिसुरके चीफ कमिश्नर, सर दिनकर राव (खालियरके मन्थो) और पञ्जाबके कमिश्नर फर्डिनेन्डोने बैठ कर अदालतमें गायकवाडका विचार किया। १८७५ ई० २३ फरवरीको यह अदालत लगी थी। विचारका मलहार रावके दोष सम्बन्धमें एक मत न हो सके। उनकी तीन आदमियोंने दोषी और तीनने निर्दोष बतलाया था। किन्तु गवर्नमेंटने उनकी पिच्छा अपराध धरण करके १८७५ ई० २० अपरेलको पदच्युत किया और मन्त्राज भेज दिया। खण्डेरावने गिवाजी विद्रोहके समय गवर्नमेंटकी सहायता दी थी। इसीमें सम्मानके लिये उनकी पत्नी यमुनावाईको एक टक्कर देनेका अनुमतिपत्र मिला। तदनुसार पिनाजोरावके पुत्र दामाजोके कनिष्ठ प्रतापरावके वगीय भयाजी (सम्राजो) राव मनोनीत हुए। १८७५ ई० २० मईको भयाजी गायकवाड १२ वर्षकी अवस्थामें बड़ोदामें सिद्धान्त पर बैठे थे। राजकरके मन्थो सुविन्यात सर टी० माधवराव

क्री० सी० एम० आर्इ० वड्डेट्टिके मन्त्री बनाने गये। बालक सयाजी पहले जब सामान्य प्रायः ज्ञानकोके साथ रेल कारते, लोग नहीं समझते थे कि उनके अट्टमें राजमिन्तान मन रहा। १८७५ ई० नवम्बरको जब 'प्रिन्स अब वेल्स' (राजकुमार) बम्बईमें उतरे, बालक गायकवाड उनसे मिलने गये। फिर १८ नवम्बरको युवराजने वहीदा जा करके उनका आतिथ्य ग्रहण किया। जो लोग युवराजके साथ आये, बालक गायकवाडके गाभीर्य तथा राजोचित व्यवहारसे आश्चर्यमें टांतां तले उगली टबा फरके रह गये। १८७७ ई० १ जनवरीको मछारानी विक्टोरियाके भारतश्वरी उपाधि अङ्गीकृतसे टिप्पिमें दरवार लगा था। उसमें सयाजी भी जा करके उपस्थित हुए। दरवारमें उन्हें 'फरजन्द खान दोलत इन्नलिगिया' उपाधि मिला था। १८७८ ई०में यमुनावाडकी भारत-सुलुट या मी० आर्इ० ई० उपाधि दिया गया। और सयाजी गायकवाड भी क्री० सी० एम० आर्इ० उपाधि प्राप्त हुए। पीछे जो० सी० एम० आर्इ० जो० सी० आर्इ० ई० उपाधि भी प्राप्त हुये। सयाजी देना।

गायगोठ (हि० स्त्री०) गौशाला।

गायघाट-चकशी-खान—एक उत्कृष्ट प्राकृतिक भौल. जो बङ्गालमें हावडा जिलाकी दामोदर और रूपनारायण नदियोंके मध्य अवस्थित है। इसकी लम्बाई लगभग ७५ मील होगी। १८८४ ई०में जलविभागने हावडाके डिमिट्रिकवोर्डसे यह भौल वार्षिक ४५०० रु० जमावन्दी पर ली थी।

गायत (अ० वि०) बहुत, अधिक, अत्यन्त, ज्यादा।

गायताल ('हं० पु०) १ बैलामें निहाट, निकम्मा चीपाया।
२ खराब पदार्थ।

गायत्र (सं० त्रि०) गायत्राः गायत्रीच्छन्दसः इदम्-अण।
गायत्री छन्द।

“ता गायत्री पु गायत्र।” (ऋग्वेद १।२।१२)

‘गायत्री पु गायत्रीच्छन्दसो पु मन्त्रे पु।’ (मायण)

गायत्रिन् (सं० पु०) गायन्ते त्रायते शब्द, गायत्-त्रै-णिनि आलोपात् साधुः। १ खुदिरवृक्ष, खैरका पेड़। गायत्रं स्तोत्रं अस्यस्य इति। २ उद्गाता, सामगायक।

“गायत्रिन् त्वा गायत्रिणोऽवन्ति।” (ऋक् १.१०।१)

गायत्री (सं० स्त्री०) गायन्तं त्रायते, गायत्-त्रा-क-ततो

गौगद्विन्वान् डोय। चलोऽयम् कः। ए ३।२ ३। यदा गयो एव गायः। गय स्वार्थे अण्, गायान् प्राणान् त्रायते। वेद-माता। द्विजां या उपाय्य एक वैदिक मन्त्र।

लौकिक छन्दःगायत्रमें 'जम समवृत्तका प्रत्येक चरण ६ अक्षर वा स्वरवर्ण युक्त आता, गायत्री कक्षा जाता है। वेदमें समवृत्त वा ४ चरण-जैसा कोई भा नियम नहीं। २४ अक्षरवालेको गायत्री कह सकते हैं। काव्यायनकृत यजु-क्रमणिका और ताण्ड्यब्राह्मणके मतानुसार वैदिक गायत्री छन्दमें षाठ षाठ अक्षरके ३ चरण लगते हैं। इस नियममें तो अनेक वैदिक मन्त्र गायत्री कहला सकते हैं। परन्तु यहाँ गायत्री शब्द योग्य है, केवल 'तत्सवितुर्वरेण्यं' इत्यादि मन्त्र ही समझ पड़ता है। यह नहीं कि वाचस्पतिक पत्रमें गायत्री छन्दका लक्षणकाल होनेसे ही वह गायत्री कहलाना, वरं अपनी गायत्री और षाठको-का प्राण करनेसे भी वह नाम पाना है। १८ बृहदारण्यक उपनिषद् (५।३।४।४)में गायत्री शब्दकी अन्यप्रकार व्यत्पत्ति प्रदर्शित हुयी है। उसको देखते गाय शब्दका अर्थ प्राण है, प्राणरत्ना करनेवालीको गायत्री कहते हैं। यह ऋक्, यजु, और साम तीनों वेदोंमें एक ही जैसी मिलती है।

‘तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धामनि।’

द्विषो धी मः प्रचोदयात् ॥”

(ऋक् ३।६२।१०, साम २।६।१।१०, यजुर्वेद ३।१३।२।६)

गायत्रीछन्द समुदायके अक्षर गणना करनेसे सब मिला करके चौबीस होने पातिये। परन्तु दर्शित "तत्सवितुर्वरेण्यं" इत्यादि मन्त्र देखनेसे तीसरे मात्र अक्षर वा स्वरवर्ण निकलनेसे। एक अक्षर घट ज सा जानेसे वह गायत्रीछन्द लक्षणान्तर नहीं होता। इसीसे उपनिषद्में "वरेण्यं" पद विशेष करके 'वरेण्यीय' जैसा कल्पित हुआ और चतुर्विंशति संख्याका पूरण पड़ा है। बृहदारण्यकके मतमें भी गायत्री विपाट है। लौकिक छन्दकी तरह ४ चरण न रखते भी २४ अक्षर होनेसे वह गायत्री कहलाती है।

ब्राह्मण, जत्रिय और वैश्य यथाकालको यथानियमसे पारदर्शी आचार्यके निकट गायत्री मन्त्रमें दोचित होते है। उस समय इनका पुनर्जन्म होता और द्विज

जेमा नाम पडता है। यह त्रिमन्थाको पवित्र भावमें गायत्री जप रूप उपासना करने पर याध्य है। यह नियम वर्षत्रयमें चिरटिनसे चनता है। इसका कोई ठिकाना नहीं, कौन समयको किस महात्माने प्रथमतः यह नियम चलाया। प्रत्येक वैदिक मन्त्रका कोई न कोई ऋषि होता है। किसी किसी पदतिज्ञाके मतमें वेदमन्त्र अनादि होते भी जो ऋषि सर्वप्रथम जिस मन्त्र द्वारा कोई कार्य करने चरिताय हुआ, अपने मन्त्रका ऋषि कहलाया। गायत्रीमन्त्रके ऋषि विश्वामित्र है। इस स्थल पर उनके मतानुसार कहना पड़ेगा कि विश्वामित्रने ही सबसे पहले उसको जप करके सिद्ध पायी। वेदके टीकाकार मायणाचार्यने ऋग्वेदप्राथम्य भी भूमिकामें लिखा है कि युगान्तको इतिहासादिके साथ समस्त वेद अन्तर्हित हो जाता। ऋषियोंने उसको प्राप्तिसे नित्य तपस्या करने पर ईश्वर अमुप्रदने आफ निकल आता है। इस प्रकार वेद पुनर्धार प्रकाशित होता है। युगान्तको वेद अन्तर्हित होने पर जो ऋषि सर्व प्रथम उसको पाता, उसका ही ऋषि कहलाता है। (ऋग्वेद १.१.११) अतएव सायणके मतानुसार भी सबसे पहले न सही, इसी युगमें पहले पहल विश्वामित्रने ही गायत्री मन्त्र पाया था उसके जप करनेकी प्रणालीकी चलाया था।

गायत्री मन्त्रके प्रतिपाद्य अर्थात् गायत्री मन्त्र द्वारा वर्णित होनेवाले ही इसकी देयता है और इसमें उन्नीशो उपासना की जाती है। उपनिषद्के मतमें गायत्री रूप उपाधिधारी ब्रह्म ही उसके प्रतिपाद्य है। गायत्रीमें उन्नीशो उपासना होती है। सभी वैदिक उपासनाओंमें गायत्रीकी उपासना अष्ट है। (सायणाचार्य १.१.११)

गायत्रीका अर्थ —

१ जो सविष्टदेव हमारा धर्म (धर्म न्द्रिय ध्यया धर्मादि विषय बुद्धि) प्रेरण करते हैं—हम उन्नीं सर्वा आयासो, अमृतस्रटा, परमेष्ठर, सषके सेवनीय, सविद्या तथा तत् कार्यानामक और परब्रह्मरूप ज्योतिकी चिन्ता करते हैं।

२ हम सविष्टदेवताकी सविद्या और तत् कार्यानामक उन ज्योतिकी चिन्ता करते, जो हमारे धर्म या धर्मादि विषय बुद्धिको चलाते रहते हैं।

३ जो सविता सूर्यदेव हम लोगोंका समस्त धर्ममें प्रेरण किया करते, हम उनको जगत्प्रसविता द्योतमान् सूर्यदेवके सबको प्रत्यक्ष, उपास्य तथा पापनाशक तेजो मण्डलके ध्यानमें रहते हैं।

४ अथवा भर्गु शब्दका अर्थ अन्न है। जो सविता हमारी धोगतिकी प्रेरण करते, हमें उन्को सवितादेवके प्रसादसे प्रशसनीय अन्नादिरूप फल मिलते है।

(ऋग्वेद १.१.१० भाष्य, साम उरण १.१.०१ भाष्य)

५ द्योतमान प्रेरक अन्तर्गामी, विश्रानानन्दस्वभाव हिरण्यगर्भ वा आदित्यरूप उपाधिधारी ब्रह्मके प्राथनीय, पाप तथा समारवन्धननाशक तेजको चिन्ता करते हैं। वह सविता हमारे बुद्धि सधर्मानुष्ठानकी प्रेरण करते है। (गणेशदेव विद्या १.१.११ मतेपर)

इसको छोड़ करके गायत्रीकी और भी अनेक प्रकार व्याख्या सुन पड़ती है। कोई कालीपक्ष, कोई विष्णु और कोई शिवपक्षमें भी उसकी व्याख्या करता है।

गायत्री उपासनाप्रणाली—सबसे मतानुसार गायत्री मन्त्रमें टोचित होनेसे उपासक पुनर्जन्म पाता है। इस जन्ममें आचार्य पिता और मावित्री ही माता है। गायत्री और तत्प्रतिपाद्य ब्रह्मकी अर्धेचिन्तामें उपासना करनी पड़ती है। यादवन्त्रके मतमें प्रणव ओं और व्याहृति (भूर्भुव स्व) योग करके गायत्री उपासना करनी चाहिये। विष्णुधर्मोत्तरमें लिखा है कि पञ्चकर्म न्द्रिय, पञ्चज्ञानेन्द्रिय, पञ्चविषय, पञ्चभूत, मन, बुद्धि आत्मा और प्रकृति २४ पदादिकी गायत्रीके चतुर्विंशति अक्षरोंमें यथा क्रम चिन्ता करते हैं। अग्नि, वायु, सूर्य, विद्युत्, यम, धरुण, बृहस्पति, पञ्चनभ, इन्द्र, गन्धर्व, पूषा, मैत्रावरुण, त्वष्टा, धामय, मातृत मोस अग्नि, विश्वदेव, अग्निने कुमार, प्रजापति, सर्वदेव, रुद्र ब्रह्मा और विष्णु यथा क्रम गायत्रीमें २४ अक्षरोंके अधिपति है। उपकालको इनकी चिन्ता करनी पड़ती है। प्रणवको ईश्वर भाषना करते हैं।

काशीदण्डमें गायत्रीका विषय इस प्रकार लिखा है— पटादम विष्णुधर्ममें श्रीमामा प्रधान है। श्रीमामामे सर्वकाम, सर्वगायमें पुराण, पुराणमें धर्मशास्त्र और धर्मशास्त्रमें वेद बड़ा होता है। वेदोंमें फिर उपनिषद्

प्रधान है परन्तु गायत्री उपनिषद्से भी बहुत अर्थ हैं। गायत्रीसे अधिक और कोई मन्त्र नहीं। वह वेदमाता और ब्राह्मणप्रसवकारिणी है। जो व्यक्ति उनका गान करता, विघ्नवाधाओंसे वचता रहता है। इसीसे उन्हें गायत्री कहते हैं। सवितृदेव ही इस मन्त्रके वाच्य हैं। गायत्रीके ही प्रभावसे राजर्षि कोशिकने ब्रह्मर्षि पद और एक जगत्सृष्टि करनेकी शक्तिको पाया था। गायत्रीकी उपासना करनेसे सब कुछ हो सकता है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर प्रभृति सभी गायत्रीस्वरूप हैं। वेद वा अनन्तशास्त्रपाठसे नहीं, केवल त्रिसन्ध्याकी गायत्रीकी उपासना करनेसे ही ब्राह्मण बना जाता है। (काशोत्तर)

प्रायः सभी पुराणोपपुराणोंमें थोड़ी बहुत गायत्रीकी प्रशंसा है। याज्ञवल्करसंहितामें लिखा है, किसी समय परीक्षा करनेके लिये एक और सामवेद और दूसरी और गायत्रीको तुला पर चढ़ाया गया था। इससे सामवेदकी अपेक्षा गायत्रीका ही भार अधिक निकला। जो गायत्री समझता, वही ब्राह्मण ठहरता है। गायत्री न जाननेवालेको वेदपारग होते भी शूद्र जैसा ही समझना चाहिये। त्रिसन्ध्याको सन्ध्यारूपिणी गायत्रीकी उपासना करना उचित है। व्यासके मतमें प्रातःको उसका नाम गायत्री, मध्याह्नको सावित्री और सायाह्नको सरस्वती है।

पद्मपुराणमें गायत्री ब्रह्माकी स्त्री जैसी वर्णित हुई है। उसका उपाख्यान इस प्रकार है—एक समय ब्रह्माने किसी यज्ञका अनुष्ठान किया। इन्होंने सावित्रीकी यज्ञस्थानमें लानेके लिये उनके निकट इन्द्रको भेजा था। देवराजके उनके पास पहुंच करके ब्रह्माका आदेश बतलाने पर सावित्रीने कहा—कि लक्ष्मी आदि सखियां उक्त समय उपस्थित न थीं, वह एकाकिनो कैसे जा सकतीं। आप विरिञ्चिसे कह दें कि सखियोंके मिलते ही वह उपस्थित हो जावेंगी। यही कह करके सावित्री गृहकार्यमें व्यापृत हुईं। देवराजने जा करके ब्रह्माको उक्त सूचना दी थी। ब्रह्माने पत्नीके व्यवहारसे नितान्त अमन्तुष्ट हो करके इन्द्रको कहा कि—देवराज उनके लिये कोई दूसरी रमणी लाते, वह उसी समय यज्ञ करनेको प्रस्तुत थे। ब्रह्माके आदेशसे इन्द्र अन्वेषण करते करते धरातल पहुंचे। उसी समय ग्वालेकी कोई

सुन्दरी कन्या दूध और दही ब्रेचने जाती थी। देवराज उसको पकड़ लाये। महाविष्णुके आदेशसे ब्रह्माने उसके साथ गान्धर्व विवाह किया था। उन्हींका नाम गायत्री है। गायत्रीका वर्ण शुभ्र, दो हाथ, एक हाथमें कोई सृगन्तु और दूसरेमें पद्म है। उनका ऊर्ध्व अतिशय विशाल, परिश्रेय वसन रक्तवर्ण, वचस्थल पर मनोहर मुक्ताहार, कर्णमें कुण्डल और मस्तक पर नानाविध रत्नरचित मुकुट है। ब्राह्मण लोग पुष्करमें स्नान करके गायत्री जपने पर असत् प्रतिग्रहजनित पापसे विमुक्त हो सकते हैं; गायत्री जप करनेसे दश, शत वा सहस्र जन्मोंमें भी जो ब्रह्मदत्यासदृश पाप गए हैं—मिट जाते हैं। वह वेदमाता हैं और स्वर्ग, मर्त्य तथा पाताल त्रिलोकमें व्याप्त हो करके अवस्थिति करती हैं। ब्राह्मण गायत्रीग्रहणके पीछे समाह पर्यन्त त्रिकालकी उसकी उपासना न करनेसे पतित होते हैं। (पद्मपुराण)

सन्ध्याविधिमें कहा है कि प्रातःमें गायत्रीको रक्तवर्ण, हंसवाहिनी, द्विभुजा, यज्ञोपवीत तथा कमण्डलुधारिणी ब्राह्मणीसदृश चिन्ता करना चाहिये। मध्याह्नमें वह श्वेतवर्ण, चतुर्भुजा, शङ्ख, चक्र, गदा तथा पद्मधारिणी गरुडवाहिनी विष्णुशक्ति जैसी और सायंकालको नीलवर्ण, वृषभवाहिनी त्रिशूल, तथा उमरुधारिणी, अर्धचन्द्र विभूषिता जैसी चिन्ता की जाती है।

गायत्रीतन्त्रमें बतलाया है कि न्यास व्यतीत गायत्री जप करनेसे कोई फल नहीं मिलता। उसीसे गायत्रीके पूर्वको न्यास करना पड़ता है। यतियोंकी पञ्चसुद्धा और गृहियोंकी केवल तत्त्वसुद्धामें न्यास करना चाहिये। पादसे मस्तक पर्यन्त ७ बार “भूर्भुवः स्वः” अंश न्यास करना पड़ता है। फिर योगीको चित्त स्थिर करके पादाङ्गुष्ठमें तत्, अङ्गुलीके मध्य में, जङ्घामें वि, जानुके मध्यमें तु, मध्यदेशमें व, गुह्यमें रे, हृदयमें ण, कटिदेशमें यं, नाभिमें भ, उदरमें गीं, स्नानहयके मध्य में, हृदयमें व, कण्ठमें स्य, मुखमें धी, जानुमें म, नासिकायामें हि, चक्षुमध्यमें धि, भ्रूमध्य में, ललाटमें यो, मुखमें नः, दक्षिणमें प्र, पश्चिममें चो, उत्तरमें द, मस्तकमें यात् वर्णद्वय न्यास करना चाहिये। न्यास पूरा हो जाने पर “तत्” वर्णद्वयको चम्पक कुसुम जैसा पीतवर्ण सको श्यामवर्ण

श्रीर त्रि वर्णकं कपिलवर्ण चिन्ता करते है। इसी प्रकारसे तु इन्द्रनीलमणि जैसा, र्व अग्नि तुल्य, ए निर्मल, य विद्य त्—जैसा, भ कृष्णवर्ण, गों रक्तवर्ण, दे श्यामल वर्ण, व शुक्लवर्ण, म्य श्यामलवर्ण, धी क्रुन्दयुष्मद्ग म शुक्लवर्ण, हि चन्द्रसदृश, धि पीतवर्ण, गे विद्युताम, यो धूपवर्ण, न तम शङ्खन जैसा, नकारके दोनो रिन्दुश्रीम जपर-थाला रक्तवर्ण तथा नीचेगाला कृष्णवर्ण, प्र नीलवर्ण, च गौरोचना जैसा पीतवर्ण, ट शुक्लवर्ण और याव् चण-क्षयकी ब्रह्ममन्दिर चिन्ता किया जाता है। इसी प्रकारसे गायत्रीके प्रत्येक वर्णकी चिन्ता कर लेनेपर गायत्रीकी चिन्ता करनी चाहिये। परमदेवता गायत्री मृगान्तकी सूत्र जैसी अतिशय मन्त्र, धिदात् पुञ्जकी भाति प्रभायुक्त मूलाधार पद्ममें सुप्त भुजगोकी तरङ्ग अस्थिति कारती है ब्राह्मणोंकी वैदिक गायत्री तोन और चतुर्विध वैश्वोकी २ प्रणव मिला करके जपनी चाहिये। गायत्रीतन्त्रके मतमें तान्त्रिक लोग इष्टमन्त्रकी गायत्री पुटित करके जपते है। जो गायत्री भिन्न जपकी पूजा करता, शतकीर्ति जप से भी फलनाभ कर नहीं सकता। प्राणायाम करके गायत्री जपनी पडतो है। तन्त्रके मतानुसार भयो ममयो और अवस्थाश्रीमे गायत्री जप किया जा सकता है उम में अशुच या शुचि जैसी कोई व्यवस्था नहीं। गायत्री को तिसन्ध्यामें जपना चाहिये। जनन और मरणा शीचकी भी गायत्री मन हो मन अक्षरण कर सकते है, अन्य वैदिक कार्यकी तरह श्रौचमें उसमें निषेध नहीं है। ब्राह्मण गायत्रीको छोडनेसे चण्डाल, व्याघ्र वा शूकर योनि पाता है।

गायत्रीतन्त्रका दिग्बन्ध कालिकालके ब्राह्मण शूद्र जैसे आचार व्यवहार-मन्त्र ही करके अगुह बन गये है। अत एव गायत्री मन्त्रकी दोषा मिलने पर गायत्रीका प्रत्येक अक्षर १०८ बार जपना चाहिये, फिर प्रणयतयुय योग कर के गायत्री जपनेसे फलप्राप्ति हुया करती है। नई तो अरखरोटनकी भाति गायत्रीजपसे क्या फल मिल सकता है। (गायत्रीतन्त्र १ म अध्याय १५ ०७७) तन्त्रशास्त्रमें गायत्रीकी पूजा करनेका विधान विद्यमान है। अक्षरोंकी अपरा पर जपप्रणालिया मन्त्राविधि और ब्राह्मणसर्वस्व प्रभृति ग्रन्थोंमें विस्तृत भावसे लिखी है। तन्त्रके मतमें प्राय

समस्त देवताओंको एक एक गायत्री और उसके जपकी विस्तार फलयुति है।

जिम देवताके उद्देश्यस बनि दिया जाता, पूजक उसी देवताकी गायत्री घषा पढ़के कर्णमें सुनाता है। यह एक प्रकार पशुटीचा है।

२ छन्दोविशेष। इसके प्रत्येक चरणमें ६ अक्षर रहते हैं। चरणमें लघुगुरुमैदसे यह ६४ प्रकारका होता है। उसमें तीन प्रकारका प्रधान है—तनुमध्या, शशिदन्ता और वसुमती। यह सब लौकिक है। नांकिरु गायत्रीके ४ चरण होते हैं। परन्तु वेदमें ३ चरण ही लगते हैं। वेदमें ३ चरण होनेसे ही गायत्रीका नाम त्रिपदा है। लौकिक छन्दके ६ अक्षरवाले ४ चरणोंमें और वैदिक गायत्रीछन्दके ८ अक्षरवाले ३ चरणोंमें २४ होते हैं। लौकिक और वैदिक गायत्रीमें इतना ही प्रमेद है।

‘चक्षिमांश्च पुरोहितः ०७७७ २६ चक्षिष्म्।

६ शार स्वधात्मनः ॥ (जम् ११११)

उपर्युक्त मन्त्र वैदिक गायत्रीछन्दका उदाहरण है। ताण्ड्यब्राह्मणके मतमें गायत्रीके अष्टाक्षर चरण होनेका कारण यह है कि साधनानाम देवगण उपकरणमन्त्र यज्ञकी साज स्वर्ग लोक पहुँचे थे। वसु प्रभृति देवोंने प्रथम स्वर्गसाधन यज्ञकी निमित्त चतुरक्षरविशिष्ट गायत्री आदि सभी छन्दोंकी पढा था कि वह स्वगणोंकेसे सोम आक्षरण करने जाते। छन्दो ने भी उसकी ब्रह्मोकार किया। सबसे पहले जगती छन्द भेजा गया। वह सोम रक्षकों-ने युद्ध करके अपने ३ अक्षर खो एकाक्षर हो मोट आया। फिर त्रिष्टुम्बू चली, परन्तु वह भी अपना एक अक्षर खो करके ३ अक्षरविशिष्ट हो वापस हुइ। अनन्तरकी गायत्रीकी वारी आयी, व जा करके कृष्ण प्रभृति सोमरक्षकों के पाउसे जगती तथा त्रिष्टुम्बू चार अक्षर ने स्वय अष्टाक्षर बन मोट पडी। ३ खदिर। ४ दुर्गा। ५ गङ्गा।

गायत्रीमार (स० पु०) गायत्रीमार । खदिर वृक्षका मार, खरेके पेडका गुटा

गायत्र (स० पु०) सोमलताविशेष ।

गायन (स० वि०) गायति गै त्रिन्विनि न्युट् ।

६ सत्रीतय्यवसायो, गानेका व्यवसाय करनेवाला, जो गीत गा कर अपने जीविका निर्वाह करता है।

“लेन गायनशोभात्रं तच्छीर्वाहं पिजस्य च ।” (मनु ११२१०)

२ कार्तिकीय । (भारत २।१४० ७०) न्नियां डीप् । गायनी,
गान करनेवाली । ३ गान ।

गायन—सुमलमान जातिकी एक शाखा । साधारणतः जन-
समाजमें इस जातिके मनुष्य गाना गाते और राजा वजाते
हैं। इसलिये इनका नाम गायन पड़ा । किन्तु सोझामे
जाना जाता है कि जिस समय शाहजनालने श्रीहट
पर आक्रमण किया था, उस समय जिहाद गायन नामका
एक मनुष्य उनके साथ था । वर्तमान गायन उन्हीं
जिहादके वंशधर प्रतीत होते हैं । किसीका मत है कि
पहले ये ‘सान्धार’ जातिके थे । ये कृषिकार्य करके
अपनी जीविकानिर्वाह करते हैं । पुरुषोंकी अनुपस्थिति
पर स्त्रियां शस्त्रों तस्की रक्षा करतीं तथा गोमेषादि
चरानेती हैं । ये स्थानीय वेदिया जातिसे कोई न संसर्ग
नहीं रखते । इनकी स्त्रियां बड़ी लज्जाशोला होती हैं
और अन्तःपुरमें अकेली रहना पसन्द करती हैं ।

गायलिका (सं० स्त्री०) हिमालयस्थ एक स्थान. हिमा-
लय पन्नाड परका एक स्थान ।

गायली (सं० स्त्री०) गै-शर । १ गयपत्नी. गयकी स्त्री ।
(भारत ५ १११२) २ वह स्त्री जो गान करती हो, गान
करनेवाली स्त्री ।

गायव (अ० वि०) लुप्त, अंतर्धान । (पु०) शतरंजमें एक
प्रकारका खेल ।

गायवाना (अ० क्रि०) १ गुप्तरीतिसे । २ अनुपस्थितिसे ।

गायवगला (हिं० पु०) एक प्रकारका बगला । यह धान-
के खेतमें तथा पशुओंके समूहमें रहता है ।

गायवांधा—बङ्गालमें रंगपुर जिलेका एक उपविभाग ।
यह अक्षा० २५° ३' से २५° ३८' उ० और देशा० ८८°
१२' से ८८° ४२' पू० ब्रह्मपुत्र नदके दाहिने तीर पर
अवस्थित है । भूपरिमाण २६२ वर्ग मील है । यह
विस्तृत समतल उपविभाग है जिसमें बहुतेरे ऋद मिलते
हैं । यहांकी जनसंख्या लगभग ५२०१८४ होगी । जिलेका
यह एक मसृदशाली भाग है ।

गायवांधा—बङ्गालमें रंगपुर जिलेके गायवांधा उपविभाग-
का प्रधान मठर । यह अक्षा० २५° २१' उ० और देशा०
८८° ३४' पू० घाघट नदी पर अवस्थित है । लोकसंख्या

प्रायः १६३५ है । यहां एक छोटा कारागार है जिसमें
सिर्फ १८ कैदी रहते जाते हैं ।

गायरीन (हिं० पु०) गोरोचन ।

गायिनी (सं० स्त्री०) १ वह स्त्री जो गान करती है ।
२ एकसात्रिककण्ड ।

गार (सं० पु०) १ नामभेद । २ जातिभेद एक जाति-
का नाम । गार' कागि टया ।

गार (अ० पु०) १ गहरा, गड्ढा । २ गुफा कंठरा ।

गारगोती—बस्वई प्रांतके भुधरगड उपविभागका मठर । यह
कोल्हापुरमें वत्तीम सील टात्रिणमें अवस्थित है । जनसंख्या
प्रायः १६२२ है प्रति रविवारको यहां बाट लगती है,
जिसमें हर एक जगहसे अन्न और साधारण वस्त्र विक्री
आते हैं । यहां पुलिस मव इन्स्पेक्टर और मव गार्ज-
नरके आफिस है । इसके अलावा डाकघर और विद्या-
लय भी हैं ।

गारत (अ० वि०) नष्ट, बरबाद ।

गारट (अ० स्त्री०) १ सिपाहियोंका समूह जो एक अफ-
सरके अधीन हो । २ मनुष्य वा किसी वस्तुकी रक्षाके
लिये सिपाहियोंका भुंड ।

गारना (हिं० क्रि०) टवा कर पानी निःसृत कर देना,
निचोड़ना ।

गारनेली (हिं० स्त्री०) जंगली फालमा । यह भारतके
उत्तर और पूर्व तथा हिमालयकी तराईमें चार हजार
फीटकी जंवाई तक पाई जाती है । इसका पेड़ बहुत
छोटा होता है और इसके किलके भूरे रंगके होते हैं ।
इसकी शाखाओंके रेशेसे रस्सियां बनायी जाती हैं । यह
कार्तिक या अगहन मासमें फूलता और पूषसे वैशाख
तक फलता है । इसके फल खानेके काममें आते हैं ।

गारा (हिं० पु०) १ मछी अथवा चूना सुखी आदिको
जलसे मिलाकर बनाया हुआ लेप । इस लेपसे ईंटों-
की जुड़ाई होती है ।

२ छिछली भूमि जिसमें जल अधिक दिन तक ठहर
नहीं सकता ।

गारा काहड़ा (हिं० पु०) एक सम्पूर्ण जातिका राग, जो
संख्याके अतिरिक्त गाया जाता है ।

गारिव (सं० स्त्री०) गौर्यते रट-णितन् । १ अन्न, अनाज ।
२ धान्यविशेष, एक प्रकारका धान ।

गारो (हि० स्त्री०) १ दुर्बचन, गाली । २ कान काजनक आरोप ।

गारुड (सं० स्त्री०) गरुडाय उक्त विष्णुना यद्वा तस्य दम्भ अण् । १ गरुडपुराण । २ विपन्न मन्त्रविशेष, वह मन्त्र जिससे विप उतरता है । ३ गरुडाकृति व्यूहमेत, गरुडके आकारको व्यूहचरना ।

‘गारुडश्च महावृक्ष इव शालवचना (भारत ६।५६ ५०)

४ मरकतमणि, पत्रा ।

‘शान्ति कोनामिह गारुडायाम् ।’ (रघु १।१२२)

५ स्वर्ण, मोना । गरुटो देवतास्य अण् । ६ अत्र-

विशेष, एक हथियार । (रामा० ६।१६।१०) (स्त्री०)

७ पातालगरुडलता । ८ मन्त्रमें सर्पका विष भाडनेवाला ।

गारुडि (सं० पु०) आठ प्रकारके तानमिसे एक ।

गारुडिक (सं० पु०) गारुडेन विषमत्रेण जीवति ठक ।

१ विषवैद्य, सर्पका विष भाडनेवाला ।

‘सर्पान् गारुडिन् । यथा । (शक्ति शतपुत्रवि०)

२ मन्त्रसे सर्प परुडनेवाला, सँपेरा ।

गारुमत (सं० स्त्री०) गरुत्मान गरुडो देवतास्य अण्

१ गरुडजीका अस्य । २ मरकतमणि, पत्रा । ३ नव

रत्नराज मृगाङ्ग ।

गारुमतपत्रिका । सं० स्त्री०) गारुमतमिव वर्णन पत्रमस्य

कप् अत इत्यम् । लताविशेष, एक प्रकारकी लता, गङ्गा-

पत्नी ।

गारुलिया—बङ्गालमें २५ परगनेके अन्तर्गत वारीकपुर जिले

का एक शहर । यह अक्षा० २२ ४८' और देशा० ८८

२२' ५०' दृगुली नदीके पूर्व तीरपर अवस्थित है । लोक

संख्या प्राय ७३७५ है । यहां पाट और रुईका व्यव

साय अधिक होता है । शहरकी आय ६००० रुपया

और कुल व्यय ८००० रु० है ।

गारो (हि० पु०) १ गर्व, अङ्गहार, अभिमान, घम ड ।

२ प्रतिज्ञा, सम्मान ।

गारो—आरामकी एक दक्षिणपश्चिमस्थ गिरिश्रेणी । यह

अक्षा० २५ ८' तथा २६ १' ७०' और देशा० ८८ ४८

५५ ८१' २०' के बीच पडती है । इसकी उत्तर खान

पाडा जिला, पूर्व खामो और जयन्ती पडाड, पश्चिम तथा

दक्षिण बटानाका रङ्गपुर तथा मैसूरसिद्ध जिला अथ

स्थित है । क्षेत्रफल ३१४० वर्गमील है । इसमें तुरा और अरबेला पहाड बडा है । यह दोनो गिरि समान्तराल भागमें पूर्वपश्चिमकी विस्तृत है । तुरा पर्वतमें २ उच्च चूडाए है । उनको उच्चता ४६५० फुट निकलनेगी । इन दोनो के बीच बीच उपत्यकाए भी है । गारो पहाड जङ्गलसे प्राय परिपुष्ण है । जङ्गलमें अक्की अच्छी लकडी मिलती है । तुरा नामक चोटी पर चटनेसे खान पाडा, मैसूरसिद्ध तथा रङ्गपुर जिला और ब्रह्मपुवनदेकी गति ५० कोम तक देख पडनेी और हिमालय तक भी दृष्टि पड चती है । स्थान स्थान पर उप यकाके भीतरसे नदीयो नचता देख नयन मन चरितार्थ होता है । तुरा पर्वतको अपर चडाको हिन्दू कैलास कहते है । परन्तु गारो और खासिया लोगो द्वारा, वही चिकमङ्गा, भीम तुरा वा मानराई कही जाती है । अन्यान्य स्थानो के पर्वत कामय दालू है, कही कही ज चे भो पड गय है । किन्तु कैलास नामक चूडाके पास पहाड एक बारगो ही ज चा उठ गया है । आकृति कुछ कुछ शूकरके छट-जैसी है । यह पाश्वर्ती सभी पहाडो की अपेक्षा ज चा है ।

इस पर्वतके सभी स्थानो में पशुादि चरतेचुप घूम सकते है । इसमें दो प्रकाण्ड गङ्ग देख पडते है । भीमेश्वरो और गणेश्वरो नदोके बीच जहाँ चनेका ढड्ड मिलता, एक गुहा है । रायक नामक स्थानके निकट जो गङ्ग पडता, सबसे बडा लगता है, उसका प्रवेश स्थान प्राय १० हस्त उच्च और १० हस्त विस्तृत है । भीतरको प्राय ६० हाथ जानिसे देख पडता किसे छोटी कुलपड जैमी जगहमें एक नदी बहत है । यह इतनी छोटी है कि मनुष्य उनमें प्रवेश कर नही सकता । पहाडके भीतर मधुवत कही न कही जलाशय वा रुद विद्यमान है । इन गुहामें चिमगोट रङ्ग करते है ।

गारो पर्वत पर लण्णप्रसवण नहो । परन्तु लोनी मही रङ्गनेसे बोध होता, कभी वडा लघुणाक्त प्रसवण विद्यमान रहै । उसीमें लज्जणाक्त मही ही गयी है । यहाँ हस्ती और हरिणरा दल आ करके विचरण करता है । गारो लोग उस जगहसे नमक नही निकालते । गारो पहाडके बीच भीमेश्वरो, गणेश्वरो, नेताई और मदाईव

नदीके उत्पत्तिस्थानमें भ्रमणपर्वत दृष्टिगोचर होता है।
यहां स्वभावकी गोभा अत्यन्त चमत्कृत है।

२ गारो पहाड़के ऊपरका एक जिला। अधिवासी
उसकी गारोयाना या गवाना कहते हैं। यह आजकल
आमास चीफ कमिश्नरके अधीन है। इसका क्षेत्रफल
३१४० वर्ग मील होगा। लोकसंख्या कोई छेड़ लाख है।
तुरा नगरमें अदालत लगती है। गारो जिलाके उत्तर
ग्वालपाड़ा, पूर्व स्वमिया पहाड़ तथा महेगन्गाली नदी,
दक्षिण मैमनसिंह और पश्चिमकी ग्वालपाड़ा जिला है।
पूर्व सीमा भी खिल हुए अभी बहुत दिन नहीं बंधते।

यह जिला पहाड़ी है। इसकी कृष्णाई, कालू,
भोगाई, नेताई और सोमेश्वरी कई नदियोंमें नौका गम-
नोपयोगी पानी रहता है। कृष्णाईनदी अरवेला पर्वत-
के मध्यस्थित मण्डलगिरि नामक ग्रामके निकटसे निम्न
उत्तराभिमुख रङ्गरनगिरि, घाण और चन्द्रमा गाँवोंकी
पार करके ग्वालपाड़ा जिलाके जीरा नामक ग्राममें जा
गिरी है। तुरासे वाराणसी नदी बह करके कालू नदी-
में पतित होती है। गारो लोग उसकी रङ्गकन कहते
हैं। हरिगांवसे दामालगिरि तक कालू नदीमें नाव चलती
है। परन्तु उसके जलमें बड़े बड़े वृक्ष रहनेसे नौकाओंके
यातायातमें बड़े ही असुविधा है। भोगाई नदी तुरा-
नगरके दक्षिण-पूर्वसे उद्भूत हो दक्षिणकी बहती हुई
अनाई, लुगा, मोरापाड़ा, रमराङ्गपाड़ा, सोवनोपाड़ा,
चेलीपाड़ा, जमदङ्गगिरि, चन्द्रपाड़ा और बुदरपाड़ा गाव
पार करके दालू ग्रामसे मैमनसिंहके नमौरावाद् ग्राम
पर ब्रह्मपुत्रनदीके पुरातन गर्भमें जा गिरी है। नोयरांगा
नाम्नी उपनदी रमराङ्गपाड़ा ग्रामसे इसीसे आ मिली है
नेताई तुराकी दक्षिण टिकसे निकल बक्रागतिमें दक्षिण-
मुख चल रङ्गन, बुदूगिरी, गरोङ्गिरी, फापा, टसिङ्गगाङ्ग-
चङ्ग, अटिपरिरी तथा बोगाभोङ्गगिरी ग्राम हो मैमन-
सिंहके सफूरकोट या घाणगाँवसे फाङ्गस नदीमें जा कर-
के मिलित हुई है। सोमेश्वरी नदीकी गारो लोग सङ्ग-
साङ्ग कहते हैं। इस जिलेमें बड़ी नदी नवपापेक्षा बहत्
है। तुरा नगरके उत्तरांशसे उसकी उत्पत्ति है। फिर
सोमेश्वरी उत्तरवाहिनी हो १५ कोस दक्षिण जा मैमन-
सिंहके सुसङ्ग परगनेमें गिरी है। नदीके निम्नप्रदेशमें

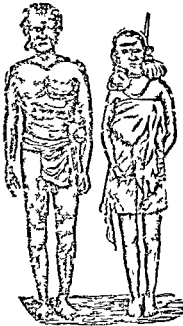
बीच बीच पहाड़ रहनेसे नाव प्रायजाने का सम्भवा नहीं
है। उद्यतर प्रदेशमें मित्र तट नौका यदि चलते हैं।
रङ्गकाई, मूनाई गोर चिबुका नाम-। उपनदियाँ उसमें
जा करके मिलित हुई हैं।

३ पर्वतवासी जाति। प्रायकाल गारो पहाड़की जो
सीमा निर्धारित हुई, वामोर्ध्व गारो निच काङ्गू, कोच,
गजबंगी, दालू, निच पार सुमल्लान जाति भी बसी
है। घाण नामक ग्राममें राभा नामक एक जातीय
लोग देखे जाते हैं। गारोयानि उनमें रहते हैं।

गारोजातीय लोग वेदनेमें कर्णों और कीचोंकी
एक मध्यवर्ती जातिजैसा समझ सकते हैं। काङ्गरियोंकी
अपेक्षा कोचजातिके साथ उनका साक्षात्स्व अधिक है।
प्रवाद है कि पहले समयत गारो पहाड़ कोचोंके अधि-
कारमें था, पीछे गारोयानोंके प्रधान हो करके उनका उत्त-
राशमें खुदरे दिया। मिटर रङ्गजनने अपने 'भारतके
असभ्यजाति' नामक पुस्तकमें गारोयोंका लक्ष्य करके
लिखा है कि उस श्रेणीके लोग अपना निज जातीयत्व
खा करके पूरे ब्रह्मन्वी बन गये हैं और अपनी निज भाषा
भी भूल बैठे हैं। गारो पहाड़के बीचयाने राभा लोगों-
की भाषा अलग है। दालू जातीय दालू नामक ग्राममें
वास करते हैं। पूर्वकालमें उनकी भाषा निराली रही,
परन्तु अब उसका चिह्नमात्र मिलता है। काङ्गू जातीय
इन्की-जैसे हैं।

गारो लोग दृढ़काय, नातिदोर्व, कर्मठ, मंसल और
कष्टमन्त्रिण होते हैं। इनका हनुदेश उच्च, नासिका
बड़ी, चक्षु ईषत् रक्षास, कर्ण दोर्व, चौटाधर भंटे, श्मश्रु
चुद्र और गात्रवर्ण हल्काधिक्ययुक्त ताम्रवर्ण है। इनमें
क्या स्त्री क्या पुरुष कोई सुश्री नहीं। यह भारवहनमें
इतने पटु होते कि छपि द्रव्यका जैसा वःभक्ता उठा करके
पहाड़के ऊपर आते जाते, दूसरा कोई वैसा करनेका
साहस नहीं देवाते। इनकी टाड़ी सूँछ इतनी अल्प
आती कि किसीके मुख पर प्रायः नहीं जैसी दिखलाती
है। आजकल स्वामीन गारोयोंमें कई कई टाड़ी
रखता; नहीं तो जिसके श्मश्रु देखे पड़ता, लोम खोंच
खोंच करके उखाड़ा करता है। यह मत्ये पर लम्बे
लम्बे बाल रखते, उन्हें कभी भी काटा नहीं करते।

गारो लोग माधारणत माइसो और सत्यवादी है। यह सभावात शान्त है, परन्तु अल्प चेष्टामें ही चिढ़ जाते हैं।



गारो पुरुष १॥ गजो धोतो पहनते है। इस धोतो को वह अपने आप बना करते है। धोती छोटी होती भी यह उमकी ऐसे कोशरुमसे परिधान करते कि उमसे बहुत अच्छी तरह भलम गी बचतो है। स्त्रियोंकी धोती पुरुषोंकी धोतीमें बड़ी होती है। वह गेड़ वचाच्छादन व्यवहार नहीं करतीं। अपेक्षाकृत धन्याली स्त्रीपुरुष एक प्रकार कथा बरतते है। गारोव आदमी किसी प्रकारके वस्त्रकी छाल जनमें भिगो कूट पीट बटा करके धूपमें सुखा लेते और उमकी गात्र पर वस्त्रकी र्माति लपेट देते है।

गारोजातीय स्त्रीपुरुष बहुत ही अनद्वारप्रिय है।' पोटकी माला पहनके लोग फूली नहीं ममाते। दामरा गावके गारोश्चीखा खामियोंके साथ विवाह आदि होते है। इनको स्त्रियोंके शानका वाला इतना भारी रहता कि लोर ठडडीतक लटक पडती है। पुरुष अपने पोशाक कोडिया लगा करके बनाते है। खासो पडाटके गारो कोडियोंके कई प्रकारके गधने त यार करते है। इनमें गणमान्य लोग कुहने पर लोहे या पोटनका कडा पहनते है। कोई कौतुदाम उसे व्यवहार नहीं कर मशता, फिर भी किसीके वैसा चाहने पर रुपये दे कर गावके मुशिये से पृकना पडता है। पुरुषोंमें पोटनके पत्तरो का सुकूट पत्र वापता, जा युद्धमें अपने हाथसे

शत्रुसे मार डालता है। परन्तु अ गरजेको अ प्रकारसे एकचारगी ही बयोभूत हो जानेगले लोगोमे वह विनासिता प्रजाशक माधारण भूपण बन गया है। यह गोदना कमा नहीं सुदाते।

इनके अस्त्रयस्त्रोंमें बर्का, तलवार और 'पाजी' (तूपीर-जैमी सुद्राकार तीक्ष्णमुख व शगलाकाचार) प्रधान है। बांसका माला माधारण हथियार है। इनको तखवार दोधारी होती है। टाल कई तरहकी बनाते है। यह छिप करके भाडोसे शत्रु पर आक्रमण करनेमें बहुत पटु होती और तोप बन्दूक न रहते भी पत्थर आदि लुडका करके शत्रु से मारा करते है।

गारोजाति कलहप्रिय है। इनमें सदा परस्पर दह्रा फसाद घुवा करता है। युद्धमें प्रवीण होते भी यह गिरार नहीं कर मरते और जाल रिक्का करके पशु पक्षी पकडनेमें काम हीशियार देख पडते है। इनका प्रधान और साधारण खाद्य अन्न है। यह प्रात, मध्याह्न और सन्ध्याको तीन बार आहार करते है। अफीम, गाजा, चरम आदि नशा इन्हामे नहीं चनता। यह घरमें पशु कम पालते और खासियोंको तरह गोदुग्धका गोसूत्र जैसा अखाद्य मानते है।

गारो लोग खेतीबारीसे ही जीविका निर्गह करते है। फसल बट जानि पर बिना एक उत्सव मौज हुए नया अन्न कोई नहीं खाता। इनमें हल और कुदालका चलन कम है। यह जहा खेती करते, भीतपडा डालके रहते है। खेत फट जानि पर उक्त कुटीरकी तोडफोड करके गाव जा अपने घरमें रहने लगते है।

कैसेके पेडको जला करके एक प्रकारका चार बनाते जिसको नमकके बदले काममें लाते है। धनी लोगोके पास पीतनके बर्तन है। लोहार, कुमार या बटईका काम कोई नहीं जानता। विवाहमें दहेज लेने देनेकी चाल कम है। विवाह हो जाने पर घर वन्याके साथ रह करके अशुर व शर्म मिल जाता है। इनका अपने व शर्म विवाह नहीं होता। नहुविवाह प्रचलित होते भी दोमे अधिक विवाह नपिब है। ब्यभिचार दोपमें अपराधीको अर्थदण्ड लगता है। पूर्वपालकी इस अपराधके दोषी स्त्री पुरुष फाँसी पाते थे। इनमें किसी

आदरिणी कन्याका विवाह करनेसे खशुरके मरने पर सासके साथ भी विवाह करना पड़ता और उनकी सम्पत्तिका अधिकार मिलता है। इसी प्रकार स्त्री घरम्परासे उनका उत्तराधिकार ठहरता है। स्त्री ही घरकी सर्वमयी कर्त्री है।

इसीके मरने पर यह सृतदेहको उत्तमोत्तम वेशभूषासे सजा करके २३ दिन रख छोड़ते और सृतके आत्मीय रातको रोते पीटते जाग करके शव रक्षा करते हैं। फिर तीसरे या ४थे दिनको लाग जलायी जाती है। भस्म राशिही वांसके वाड़ेसे घेर लेते और उस पर खाद्य तथा पानोय छोड़ देते हैं। इनको विश्वास है कि सृत व्यक्तिका आत्मा मरणके पीछे चिकमाङ्ग पर्वत (सुमङ्गके उत्तर) पर अवस्थान करता है। भोज, पान और आनन्द उक्तवसे आजकर्म समाप्त होता है। एक सप्ताह पीछे शवभस्मको सृतव्यक्तिके गृहद्वारसे गाड़ करके उस पर एक भ्रजा लगा देते हैं। गांवमें ऐसी असंख्य भ्रजाएं दिखलाती है।

यह 'मालजाड़' नामक एक आदिदेवकी स्त्रीकार करते हैं। सूर्य ही उनका आकार है। इनका विश्वास है कि शारीरिक मानसिक पीड़ा आदि कई अपदेवताओंके क्रोधसे उठ खड़े होते हैं। उनकी प्रीतिके लिये नानाविध उपहारादि देने पड़ते हैं। यह साधारणतः किसी बृहद्वृक्षतल, ग्रामके मध्य वा बाहरमें किसी स्तूप पर प्रदत्त होता है। कभी कभी अपदेवताओंकी स्थल देखानेके लिये गांवकी राहमें पेड़की डालियों या पत्तीदार बाँसोंमें अण्डे लगा गाड़ देते हैं। वह भूत-प्रेतको मानते और यह भी विश्वास करते, कोई कोई मनुष्यदेह त्याग करके व्याघ्र प्रभृति हिंस्र पशुरूप भी बना सकता है। इनके पूजाक 'कमाल' नानाविध लक्षणोंसे स्थिर करते, किस अपदेवताके क्रोधसे पीड़ा हुई और फिर उसके पूजा, बलि इत्यादिकी व्यवस्था बतलाते हैं।

इनमें जातिभेद और खाद्यविचार नहीं है। पितृ-पुरुषके नाम वा अण्डेके अनुसार इनका वंश विभक्त हुआ है।

१८७२-७३ ई०को जो गारोविद्रोह लगा, नीचेमें उसका संक्षिप्त विवरण लिखा है—

१८७० ई०को म्यामो पहाडकी पंसायग हुई। फिर सेजर गडविन अटेन नामक सेनानोंके अधीन अमीन लोग गारो पर्वतमें जरीब लगानेका प्रारंभ वट उत्तरपूर्व अञ्चलमें जा पड़े। सैन्यनिर्वाह और खालपाड़ेके बीचका यह अंग उस समयका वृष्टिग अधिकारमें रहा। उसके पीछे म्यानीय डिप्टी कमिश्नर विलियममनने सेजर अटेनके साथ साथ गारोअंगके स्वाधीनदेगमें प्रवेग किया। वाङ्गनगिरि ग्राममें एक छोटा युद्ध होनेवाला था, परन्तु सेजर अटेनके कोमलसे रुक गया। गिलेश्वरों उपत्यका तक जरीब निर्वाह चलता रहा। फिर १८७२ ई०को अमीन महम्मदगोल नामक पर्वत पर उपस्थित हुए। इसी स्थानसे फरामगिरि और फरामगिरि नामक २ ग्राम हैं। उनमें एक तो स्वाधीन रहा, दूसरा कुछ कुछ समझौती अधीनता मानता था। गारो भाषा न जाननेवाले दो कुली उक्त ग्रामोंको मायमनराम गिरि परिष्कार करनेके लिये मजदूर बुलाने भेजे गये। रामागिरि ग्राममें जब यह पहुँचे, वहाँ अविवाहितोंके आय-ममें पानभोजनका कोई उखव ही रहा था। दोनों कुलियोंका सम्भवतः आमाटसे वाधा डालनेसे सुखियाके कहने पर पकड़ करके मारडालनेका उद्योग किया। एक तो काट डाला गया, परन्तु दूसरा भाग खड़ा हुआ और तुरा जा करके अपने साथीके गारोअंगके साथ मरनेका संवाद दिया। कपतान लाटुनीके अधीन एक पुलिससैन्य पहुँचा था। उक्त दोनों ग्रामोंके लोग पराजित हुए। १८७२ ई० मई मासमें कपतान लाटुनीने फरामगिरि गाँवके सुखिया और एक गारोको हत्याकारी कैसा पकड़ करके रखा था। इससे कई गाँवोंके लोगोंने अंगरेजोंका अधिकृत दामाकचीगिरि नामक ग्राम आक्रमण किया। कपतान लाटुनीको अधिकृत ग्रामसे माहाय्य मिला था। दामाकचीगिरि आक्रान्त होनेके बाद कपतान साहव फरामगिरिपर चढ़ गये। उस समय सभी स्वाधीन ग्रामोंमें आतङ्क हुआ और क्रमशः वह गारो लोगोंमें फैल पड़ा। डिप्टी कमिश्नर विलियममनने और एक दल पुलिससैन्यके साथ खालपाड़ेके सुपरिण्टेण्डेण्टको फरामगिरि भेजा था। इन्होंने वावईगिरि और काकवागिरि ग्रामोंको आक्रमण किया। गारो लोग दो बार युद्ध करके

भाग खड हुए। अ गरोजोने कुछ लोगोको बन्दो बनाया और देनो गावो पर अघान अधिकार जमाया।

१८६६ ई०को पहले पहल गारो पहाड अ गरोजोके अधीन आया था। कमान विलियमसन डिपटी कमि शरकी भाति तुरामे रहे। १८७० ई०तक गारो शान्त थे। अमीनोके साथ उक्त विवाद हो जानसे बहानके छोटे लाटने स्थिर किया कि गारो पर्वतमे और कोई ग्राम स्वाधीन रखना उचित नहो। फोज भेजी गयी। कोचविहारके कमिश्नर और गारो पहाडके डिपटी कमि-शरको सैन्य परिचालनका भार मिला था। कपतान विलियमसन पुलिसके सिपाहो ले तद्वजलगिरि, दिलमा-गिरि प्रभृति बडे बडे स्वाधीन ग्राम अधिकार करते हुए खासी पर्वतके मावोदुटान नगरसे पश्चिममुखकी चल पडे। आसाम विभागका एक दल सैन्य उसी शहरमे रह गया। कपतान विलियमसनके रङ्गरणगिरि ग्राम पट्टे चने पर सुसङ्ग दुर्गापुरसे कमान डाली भी जा करके उनसे मिले थे। दोनो दल मिलकरके सोमेश्वरी नदीके तीर और अश्मानगिरि ग्राममें लडनेको तैयार होने लगे। इसमे पहले कमान डालीके साथ रङ्गरणगिरिमें गारोश्री-की एक छोटी लडाई हुई थी, जिससे यह हार गये। उधर कमान डेविम निकरिदार ग्राममे औरसे आ रहे थे। वही देरके बाद वह आ करके रङ्गरणगिरिमें मिलित हुये। क्रमश एक ग्रामके बाद दूसरा मानने लगा, प्राय युद्ध करना ही न पडा। बहुतेमे ग्रामोके सरदारोंने छति प्रणयार्थ दण्ड दिया था। कमान डाली पश्चिम पहाड और कमान डेविम उत्तर पहाड देखने गये और ग्रामादि अधिकार करके शासनके लिये लक्ष्य कर उपाधि दे सरदार नियुक्त करने लगे। प्रति घरके हिंसावसे सब लोग कार देने पर बाध्य हुए। तदवधि गारो शान्त बने हुए हैं। इनकी भाषा एक नही है। दिक्भेद और भाषा भेदसे चिकमङ्ग पर्वतके लोग तुरावालोंकी बोली समझने में असमर्थ हैं। यह स्वदेश छोड करके प्राय कही नहीं जाते।

गारोदो—दक्षिणात्यकी एक पर्वतगुहा। यह तेनगांव दामाडेसे १० मील दक्षिण और ममतननेत्रसे ४४०।५०० फुट ऊंचो है। इस पर्वतमे ६० प्रथम गतान्देकी स्तोदित

काई एक बोड गुहामन्दिर देख पडते हैं। पहले गुहा मन्दिर पर्वतके सर्वोच्च स्थानमें एक ऋजुशिखर बना हुआ है। इसका द्वार दक्षिण-पश्चिम मुखी है और सामने का कुछ अग्र टूट गया है। यहा चढनेका कोई सहज उपाय नहीं। द्वितीय गुहा इसकी अपेक्षा कुछ नीची है। उसके मण्डपका परिमाण २८ फुट×८ फुट ८ इंच× ८ फुट×८ इंच है। पयादु भागमें ४ अन्तरालगृह दृष्ट होते हैं। प्रत्येक द्वारद्वयके मध्यमे इ टीके अठपहलू दो खम्भे जलपात्र पर स्थापित हैं। स्तम्भके मस्तक पर सिंह, व्याघ्र किवा हस्तीकी मूर्ति खुदी हुई है। एतद्विषय स्तम्भमस्तकके मध्य स्थानका कारुकार्य भी अति सुन्दर है। उसके पयादु भागमें निम्नदेश पर २ फुट चौडी और १ फुट सात इंच ऊंचो एक एक प्रस्तरवेदी है। इससे प्राप्त होता कि काल पाकरके बोड कौर्तित लुग और ब्राह्मणधर्मकी प्रवृत्तता प्रसारित हुई। मन्दिर वामभागके तृतीय कक्ष में एक निम्नमूर्ति विराजमान है। मन्दिरके मध्यमें शिव-वाहन हृषभमूर्ति और गुहाके वहिदेशमें देवादिशसे प्रदत्त आलोकस्तम्भ तथा तुलसोमञ्ज है। इसी कक्षद्वारके पार्श्वस्थ स्तम्भ पर एक अस्सष्ट शिलाफलक उल्कोर्ण है। वर १४२८ ई०के यावण माम शुकुपन्नको लिखित हुई।

द्वितीय गुहासे उत्तर पश्चिम दिक्की कुछ दूर जाने पर एक शुकु दोर्घिका मिलती है। उसकी लाघ करके थोडा चलने पर और एक छोटी गुहा देख पडती है। इसके सामने वरामदेमें लकडीके ४ खम्भे पत्थरमें घर बना करके लगाये गये हैं। उसकी वामदिक्के शेष भागमें एक अन्तरालगृह और पीछेकी किसी घरमें प्रविश्यके लिये एक द्वार है। तत्पश्चात् पर्वत पर एक अष्टकूप और उसीके निकट चतुर्थ गुहामन्दिर अवस्थित है। इस गुफाके सामनेकी दीवार अपरापर गुहाश्रीकी अपेक्षा ४।५ फुट चौडी है। इसनेके लिये दो गोल दरवाजे लगे हुये हैं। भीतरी दानानके दाहने योग वायें ४।४ घर हैं। उसमें वामदिक्का एक घर टूट पडा है। मन्दिरक पयादु भागमें २ अन्तरालगृह और उसके सामने गर्भगृह है। इस घरके बीचमें किसी ऋतव्यक्तिके नामि चण्डिका ममाधि है। इसी ममाधित्यान पर छत तरे ऊंचा खम्भा लगा था। अब उस स्तम्भको गिरा करके एक छोटी शिव-

वेदी बनायी गयी है। इस गुहामन्दिरको वामटिक्से संलग्न पर्वतोपरि गुहागृह है। उसके सामने टीवारकी बायीं ढट पर आन्ध्रराजाओके सासायक दर्शन-देशीय द्राक्षी अक्षरोंसे खोदित शिलाफलक पर एक प्रशस्ति दृष्ट होती है।

इस गिरिचो शीको लांघ पश्चिमाभिमुख चलने पर जहां एक दूसरी पर्वत शिखा, वैद यतियोंके आवामको और भी दो दुरारोह गुहामन्दिर है।

गार्ग (सं० पु०) गार्गस्य संघ अहो वा यज्न्तात् अण् ।
१ गार्गस्य संघ । २ तटङ्ग । (स्त्री०) ३ गार्ग्यलक्षण । (त्रि०)
४ गार्ग्यसे आगत । (पु० स्त्री०) गार्ग्याः कुम्भितमपत्यम्
णः । ५ गार्गीके कुम्भित पुत्र, गार्गीके नटखट लडके ।

गार्गक (सं० पु०-स्त्री०) गार्ग्याः कुम्भितापत्याटिकं
बुञ् यलोपः । गार्गीकी कुम्भित सन्तान ।

गार्गि—एक प्राचीन ज्योतिःशास्त्रकार ।

गार्गिक (सं० पु०-स्त्री०) गार्ग्या अपत्यं ठक् । गोमन्त्रियः
कुम्भितेण च । पा ४।१।१४० । गार्गीकी कुम्भित सन्तान ।

गार्गिका (सं० स्त्री०) गार्गस्य कर्मभावो वा गार्ग्य बुञ् ।
१ गार्गका धर्म । २ गार्गका कर्म ।

“गार्गि कथा ज्ञावति गार्ग्यं त्व नविकल्पते ।” (सि० स्त्री०)

३ गार्गकी सन्तान ।

गार्गी (सं० स्त्री०) गार्गस्य गोत्रापत्यं स्त्री यज् डीप् ।

१ गार्ग गोत्रमें उत्पन्न एक प्रसिद्ध ब्रह्मवादिनी स्त्री ।

“ब्रह्मै न गार्गि वाचकरी पप्रच्छ ।” (बृहदारण्यक उपनिषद्)

२ दुर्गा ।

“शै शी गार्गी च गान्धर्वी ।” (इतिवंश १०८ ८०)

३ याज्ञवल्कर ऋषिकी एक स्त्रीका नाम ।

गार्गीपुत्र (सं० पु०) गार्ग्याः पुत्रः, इ-तत् । १ गार्गीके
पुत्र, शुक्लयजुर्वेदोक्त एक मुनि । (मतपथत्रोक्षण १।४।४।४१०)

गार्गीपुत्री (सं० पु० स्त्री०) गार्गी पुत्रस्य अपत्यं वा फिज्
वा कुक्च पत्ने इज् । पुत्रान्ताट्यतरस्याम् । पा ४।१।१५२ गार्गी
पुत्रका अपत्य, गार्गी पुत्रकी सन्तान ।

गार्गीय (सं० त्रि०) गार्ग्यस्ये दं । १ गार्ग्यसम्बन्धीय ।
२ गार्ग्यप्रोक्त, गार्गका कथा हुआ ।

गार्गीय (सं० पु०-स्त्री०) गार्ग-इज् । गार्गगोत्रोत्पन्न, जो
गार्गगोत्रमें उत्पन्न हुआ हो ।

गार्ग्य (सं० पु० स्त्री०) गार्गस्य अपत्यं यज् । १ गार्ग
गोत्रमें उत्पन्न पुरुष वा स्त्री । २ एक प्राचीन व्याकरण ।
इनके मतको उर्नेख पाणिनि और यास्कमें किया गया
है। इन्होंने मासवटके पदपाठको रचना की है। ३ एक
प्राचीन ज्योतिर्विद् । इनका बनाया हुआ गार्ग्यस्मृति
नामका एक धर्मशास्त्र भी है ।

गार्ग्यगोत्रान्यज्जन्—एक वेदज्ञ पंडित । उन्होंने
“वैदिकाभरण” नामका व्याख्यान रचना की है ।

गार्जर (सं० स्त्री०) गार्जरसूत ।

गार्डी (अ० पु०) १ राजका, पतरा देगवाला सनुप । २ रत्न-
का प्रधान उत्तरदाता काम चारी । वह सदा पीट्टीकी
कमरामें रहता है । इसीके आज्ञानुसार द्राइमर गार्डी
चलाता और रीकता है । ३ निरोजक ।

गार्डेन (अ० पु०) बाग, बगीचा ।

गार्डेन-पार्टी (अ० स्त्री०) नगरके बाहर किसी बागकी
भोज ।

गार्त्तक (सं० त्रि०) गर्तदेशे भवः । गत-बुञ् । पृ-गर्भभाय ।
पा ४।१।२०१ । गर्तदेशजान, जो गर्तदेशसे पैदा हुआ है ।

गार्त्तमट (सं० पु०) गृत्तमटस्यापत्यं अण् । जिह्वादिभ्योऽण् ।
पा ४।१।२२२ । १ गृत्तमटके पुत्र । २ जनकगोत्र केलीप्रवर्ग-
के अन्तगत एक ऋषि ।

“जनकाना गृत्तमटति विप्रश्च” वा भागवतगौतमोदगार्त्तमटदि ।

(चाण्डालाद्यमश्री० १२ १०।१७)

गार्त्तम (सं० त्रि०) गर्त्तमस्ये दं अण् । गर्त्तमसंबन्धीय,
गर्त्तके सम्बन्धका ।

“शेषेण गार्त्तमं सूत्रं क्लिप्तवातदफापण्” (सूत्रत १२५ ८०)

गार्त्तभरयिक (सं० त्रि०) गर्त्तमभयुतं रथमर्हति ठक् । गर्त्तहा-
से युक्त रथगमनयोग्य, गर्त्तके रथ पर जाने योग्य ।

गार्ध (सं० त्रि०) आद्यून, लुधित ।

गार्धपत्त (सं० पु०) गृध्रस्यायं अण् गार्धः, गार्धः पत्तो
यस्य । गृध्रपक्षविशिष्ट वाण, गृध्रके पंखुका वाण ।

गार्धड़ (सं० स्त्री०) गर्ध भावे घञ्, गर्ड एव स्वार्थे यञ् ।
लोभ, अधिक दृष्ट्या ।

गार्ध्र (सं० त्रि०) १ गृध्रसे उत्पन्न । २ लालसी, लोभी ।
३ वाण ।

गार्ध्रपत्र (सं० पु०) गार्ध्रं अन्नसंबन्धीयं पत्रं पत्तोऽस्य ।
गृध्रपक्षविशिष्ट । जिसमें गिड़का पंख हो ।

“गाध्रं वा मिवादिता ।” (भारत ४।१०० च)

गाध्रं वाजित (स० पु०) गाध्रं वाज कृत गाध्रं वाज करो-
त्यथ णिच् कर्मणि क्त । कृतगृध्रपचवाण, जिस वाण
में गृध्रका प ख । दया गया हो ।

गाध्रं वासम् । स० त्रि०) गाध्रं पक्षो वाम इवास्य । गृध्र
पचयुक्तवाण ।

‘गरावां गाध्रं नाममान । (भारत ४।१०० च०)

गार्भं / स० त्रि०) गर्भे गर्भं शब्दो साधु अण् । १ गर्भं
शब्दिके निमित्त जिसका अनुष्ठान किया जाय । २ गर्भं
सम्बन्धीय ।

गाभि—व वर्द्धे प्रदेः शस्त्रके टांगसका एक क्षुद्र राज्य । भू
परिमाण ३०५ वग मील और जनसंख्या प्राय ४६८२ है ।
इसमें सिर्फ ५३ ग्राम लगेते हैं । राज्यकी आमदनी
६५०० रुपयेकी है ।

गार्भिक (स० स्त्री०) गर्भ ठक् । गर्भसम्बन्धीय ।

गार्भिण (स० स्त्री०) गर्भिणीना समूह अण् । गर्भिणी-
समूह, गर्भवती स्त्रीका कुंड ।

गार्भुत् (स० त्रि०) गर्भुत् इदम् अण् । १ गर्भुत् धान्य
सम्बन्धीय ।

‘गानावथ गान्त त च्च निश्चेत् ।’ (तैत्ति० स १।१।४०)

२ मधु, गृहद

गार्वा—बङ्गालमें पलासु जिलेके अन्तर्गत एक शहर । यह
अक्षा० २४ १०' उ० और देशा० ८३ ५०' पू०के बीच
दानरौ नदो पर अवस्थित है । जनसंख्या प्राय ३६१०
है । लाख, धूप, काय, रोगसके कोए, चमडे, तेलहन,
घो, रुद्र और नोहे प्रख्यात चीजोंकी रफतनी यंसि
होती है, और अनाज, ताँबेके बरतन, काब्यल, रोगम,
नमक, तनुवाक् मसाने तथा बहुते तरहके शोषध पदार्थ
दूरमें दूरमें देगमें यहा पाते हैं ।

गार्ह्य (स० पु० स्त्री०) गृहपत्य पुमान् ठक् । गृहटि
धर्मात् एक बार प्रसूत धेनुका अपत्य, ह्यपम ।

गार्हपत (स० त्रि०) गृहपतिरिट गृहपते भावो वा अप्
पत्यादित्वात् अण् । १ गृहपतिमसम्बन्धीय । (इी०)

गार्हपतिका भाव, घरके स्वामोको इज्जत और प्रतिष्ठा ।
गार्हपत्य (स० पु०) गृहपतिनो यजमानिन नित्य सयुक्त
स प्रायां । १ यजमानरूप गृहपतिके सहित सयुक्त आग्नि-
विधिप ।

२ वह स्थान जहाँ यह पवित्र अग्नि रखी जाती है ।

गार्हपत्यागार (स० पु०) गार्हपत्यस्यागार, ६ तत्० ।
गार्हपत्य अग्निका घर ।

गार्हपत्याग्नि (स० स्त्री) एक प्रकारकी अग्नियोंमें
पहनी और प्रधान अग्नि । पूर्व समय यज्ञो में पानतपन
आदि काम इसी अग्निमें किये जाते थे । प्रत्येक गृहस्थ-
को शास्त्रानुसार इस अग्निकी रक्षा करना चाहिये ।

गार्हमेय (स० पु०) गृहस्थाय अण् गार्हमेध कर्म-
धातु । गृहसम्बन्धीय यज्ञ । पचपत्त आदि गृहस्थोंका
सुख्यकर्म ।

गार्हस्थ्य (स० स्त्री०) गृहस्थस्य कर्म गृहस्थ यत् १
गृहस्थ वर्त्तव्य पत्र यज्ञादिकर्म, गृहस्थो के मुख्य पाँच
काम (पु०) २ गृहस्थायम् ।

‘गनुर्वागप्रमावांश्चि गान्ध्वं य इमानामम् ।’ (रामायण १।१०।१।२)

गान्ध्वं (स० त्रि०) ग्रास्य, घराऊ ।

गान् (स० पु०) मदनहृत् ।

गान् (हि० पु०) गड, कपोल ।

गान्गूल (हि० पु०) व्ययवात, गणशप ।

गानन (स० स्त्री०) गल चानने भावे ल्युट । १ चारण,
नि स्वावण । २ वस्त्रपूतकरण, कपडोसे छानना ।

गानफल (स० स्त्री०) मदनफलो ।

गानससुरी (स० स्त्री०) एक तरहकी एककान वा मिठाई ।

गालव (स० पु०) गल घञ् । १ लोभहृत् लोभका पेड़ ।

२ किन्दुकहृत्, तेंदूका पेड़ । ३ श्वेतलोभ, सफेदलोभ ।

४ एक ऋषिका नाम । ये विश्वामित्रजीके पुत्र थे ।

५ विश्वामित्रके एक शिष्य । इन्होंने भक्ति और सेवा सुश्रुत्या-
में अपने गुरु विश्वामित्रकी अत्यन्त मत्तुड किया । विद्या

समाप्त होने पर गालवने विश्वामित्रकी गुरुदक्षिणा देनेके
निये बहुत श्रुतोष किया किन्तु विश्वामित्रने दक्षिणा

भागनेसे अस्वीकार किया । विश्वामित्रने इनके इठमें श्लोचित
होकर आठ मी एम्मे घोडे मंगि जिनका वण ग्याम और

एक कान हो । गुरुजीसे ऐसी आशा पाकर वैश्रीव ही गरुड-
की प्रमत्त कर अपने साथ ले राजा ययातिके निकट पहुँचे

ययातिके पास घोडे तो नहीं थे किन्तु इन्होंने गालवकी
अपनी कन्या माधवो देकर कहा “गालवजी ! जो दो

मी ग्यामकर्ण घोडे देबे उन्हें हम कन्याकी देकर एक

एक

एक

एक

एक

सुत्र उत्पादन करने दीजिये । इसी तरह आप गुरुदक्षिणा चुकानेमें समर्थ होंगे ” गालव साधवांको लेकर त्र्यम्बक नृपके निकट उपस्थित हुए । प्रतिज्ञानुसार त्र्यम्बकने साधवीसे एक पुत्र उत्पन्न कर दो सो ग्रामकर्ण घोड़े, गालवको दिये । इसी प्रकार दिवोदास और उग्रानरने भी एक एक पुत्र जन्मा कर दो दो सो घोड़े, उन्हें प्रदान किये । शेष दो सो घोड़ोंके लिये गालवको ऐसा कोई राजा न मिला जो उसकी इच्छाको पूरी कर दे । अन्तमें छह सो घोड़े, और साधवोंको साथ लेकर गालवजीने किष्कासित्रके निकट लौट कर उन्हें सब हाल कह सुनाया । विश्वामित्रने उन छह सो घोड़ोंको ले लिया और उन कन्यासे एक पुत्र उत्पन्न कर गालवको गुरुदक्षिणाकरणसे उधार लिया । (भारत ५।१०६-१०८-५०) ६ एक प्रसिद्ध दैव्यकरण । इनका मत पाणिनिके अष्टाध्यायोंमें उद्धृत किया है । ७ एक धर्मशास्त्रकार । हेमाद्रि और माधवाचार्यने गालवस्मृति उद्धृत किये हैं ।

गालवक्षेत्र—एक पुण्य क्षेत्र । गलगलि देखा ।

गालवि (सं० पु०) गालवस्य अपत्यं इजु । गालवके पुत्र प्राक्सृंगवत् । इन्होंने कुनीगर्गको एक वृद्धा कन्यासे विवाह किया था । (भारत श्रव० ५३ च)

गालवाद्य (सं० स्त्री०) मुख पर हाथ दे कर वम् वम् शब्द करना । यह गालवाद्य शिवजीका अतिशय प्रिय है ।

गाला (हिं० पु०) १ धुनी हुई रूईका गोला, जो चरखेमें कातनेके लिये बनाया जाता है । २ जतु, लाह, लाख ।

गालि (सं० पु०) गाल्यते विक्रियते मनो येन यदा गाल्यते सुहामनेन गल-घञ् । दुर्वचन ।

गालित (सं० त्रि०) गल णिच् कर्मणि क्त । द्रवीकृत, गलाया हुआ ।

“गालितव्य सुवर्गस्य योऽशांशेन सोमकम् ।” (रत्नावली)

गालिनी (सं० स्त्री०) गालयति द्रवी करोति गल-णिच्-णिनि लोप् । मुद्राविशेष । पूजाके समय जिस शङ्खमें अर्घ्य स्थापन करना हो उसके ऊपर यह मुद्रा प्रदर्शन करना चाहिये । बायें हाथके ऊपर दाहिना हाथ आधा खोल कर रखे और बायें हाथकी कनिष्ठाके साथ दाहिने हाथका अंगुष्ठ एवं दाहिने हाथकी कनिष्ठा अंगुलीके साथ बायें हाथके अंगुष्ठसे योग करे । बायें हाथको

तजनोंके साथ दाहिने हाथकी तर्जनी और दानों हाथोंकी मध्यम अङ्गुलियां मरन भावमें परस्पर मिला दे, इसीको गालिनीमुद्रा कहते हैं । (तन्मात्र)

गालिव (अ० वि०) विजयो, जीतनेवाला, श्रेष्ठ ।

गालिव—एक मुसलमान कवि । इनका असल नाम मिर्जा आनाद उजा खां रहा । ये अनोवक प्रांके पुत्र और फिरोजपुर तथा लोहागिके नयाव अहमदशाह खांके भ्रातृपुत्र थे । इन्होंने पारसी भाषामें एक “दिवान” एवं भारतवर्षके मीगल सम्राटोंके इतिहासकी रचना की है । १३८५ ई०में दिल्ली नगरमें इनकी मृत्यु हुई ।

गालिम (अ० वि०) प्रवल, दृढ़, प्रचंड ।

गालिमत् (सं० त्रि०) गालिर्विद्यतेऽस्य गालि-मतुप ।

गालियुक्त, आक्रोशयुक्त ।

“दृढं दृढं गालिं गालितम् भवन् । (चिन्तामणि)

गाली (हिं० स्त्री०) १ दुर्वचन, निंदा । २ फलक सूचक आराप ।

गालीगलीज (हिं० स्त्री०) दुर्वचन, परस्पर गाली प्रदान ।

गाली गुफ्ता (फा० स्त्री०) १ परस्पर गाली प्रदान । २ दुर्वचन, गाली ।

गालोडन (सं० स्त्री०) गालोडित माचष्टं गालोडित णिच् इत भागस्य लोपे, गालोडि धातुः । १ उन्माद । २ रोग । ३ मूर्खत्व ।

गालोडित (सं० त्रि०) गालोडः सञ्जातोऽस्य गालोड-इतच् । यदा गाव इन्द्रियाणि आलोडिता विकलीकृता यस्य, बहुव्री० । १ उन्मादशील । २ रागात । ३ मूर्ख ।

“उन्मादशयः रोगार्तो मूर्खो गालोडितः छूतः । (कलापटीका)

गालोड्य (सं० स्त्री०) गालोड्य-स्वार्थे-अण् । १ धान्यविशेष, एक धान । २ पद्मवीज, कमलगट्टा ।

गावित—दाक्षिणात्यके बेलगाव प्रदेशान्तर्गत मांपगांव ग्रामवासो धोवरजाति । प्रवाद है कि रत्नगिरि, वनगुरला और तन्निकटवर्ती स्थानमें उनका आदि वास रहा, किन्तु इसकी कोई स्थिरता नहीं कितने दिनसे वह वहां रहते हैं । यह देखनेमें विलकुल कोलिजाति जैसे है । सभी लोग मराठी भाषामें बातचीत करते हैं । मछलो पकड़ करके बेचना ही इनका धराज व्यवसाय है, परन्तु अब कुछ लोग खेतीवारी करके जीविका चलाने लगे हैं ।

ब्राह्मणों के प्रति इनकी विशेष भक्ति है। इनका जन्म, मृत्यु, विवाह और अपरापर व्रतकर्म ब्राह्मण द्वारा ही सम्पन्न होता है। यह सभी देवदेवियों का उपासना करते हैं। परन्तु उसमें वेतालकी पूजा सबसे बड़ी है। सब हिन्दू पर्वोंकी पालन करते भी यह कोई उपवास नहीं मनाते और भूत, प्रेतात्माका आगमन शुभाशुभ चिह्नदर्शन प्रभृति इष्टानिष्टदायक घटनाओं पर विश्वास लाते हैं। किसीके भी मरने पर शवदाह नहीं करते।

इनमें विधवाविवाह प्रचलित है। जातीय एकता सूत्रमें सभी श्रावण होते हैं।

गाव (फा० पु०) गाय, बैल।

गावकुयी (फा० स्त्री०) गोघात, गोवध।

गावकुस (फा० पु०) लगाम।

गावकीहान (फा० पु०) एक तरहका घोड़ा, जिमको पीठ पर बैलको तरह झूबड़ निरूना हो। इस तरहके घोड़े पर चटना दोप माना गया है।

गावखाना (फा० पु०) गाथाना।

गावखुर्द (फा० वि०) १ अन्तर्धान, गायब। २ नष्टभ्रष्ट, बरबाद।

गावजवान (फा० स्त्री०) फारस देश के गोलान प्रदेशमें उत्पन्न एक प्रकारकी बूटो। इसके पत्र हर रंग लिये मोटे होते हैं और इनके ऊपर छोटे छोटे दाने निकले रहते हैं। इसके फूल लाल रंगके छोटे छोटे होते हैं। इस बूटोके सेवन करनेमें ज्वर तथा खासी जाती रहती है।

गावजोरो (फा० स्त्री०) १ बलप्रदर्शन। २ हाथापाई, मिष्टत।

गावट—अम्बई प्रदेशस्थ मञ्जीकाण्डा विभागके अन्तर्गत एक छोटा राज्य। इसका क्षेत्रफल १० वर्गमील है। लोकसंख्या प्रायः २४५४ है। कोलिव शीय ठाकुर यहाके राजा है। राजाको वार्षिक आमदनी प्रायः तीन हजार रु० है जिनमेंसे ४३, ६० ईडरके राजाको कर देना पड़ता है।

गावड (फा० स्त्री०) गला, गदन।

गावतक्रिया (फा० पु०) कमर लगाकर बैठनेका एक बड़ा तकिया।

गावदो (हि० वि०) अग्रोध, जड, नाममन्त्र, वैयकूप।

गावदुम (फा० वि०) १ जो बैलको पृष्ठकी तरह पतला हो। २ चटाव, उत्तराटाल।

गावपशुड (हि० स्त्री०) कश्मीका एक पत्र।

गावल (हि० पु०) दलाल।

गावलाणि (म० पु०) धृतराष्ट्रके मन्त्री और साथी, मन्त्र्य।

गावली—दाक्षिणात्यके ग्याना जाति। जोजापुर, मुहसदपुर, वाघनकोट, कानकान, कानादगी, तालीकोट और सिन्धी प्रभृति स्थानोंमें यह रहते हैं। शोलापुरके निकटवर्ती पण्डुरपुरमें इनका आदिवाम रहा। सम्भवतः गाय दूहनेसे ही इनको गावली कहा जाता है।

इनमें २ श्रेणियाँ होती हैं नन्दगावली और खिल्लारी। वरकन्या दोनों एक पदवीके होनेसे विवाह नहीं होता।

यह बहुत गरीब होते और देखनेमें मराठी कुनबियोंजैसे लगते हैं। मराठी पगडीके बदले इनमें कनाडियों जैसा रूमाल ब्यंजित होता है। यह गावमें रहना नहीं चाहते और उसीसे भैदानमें भोपडे बना अपने अपने गोमपाटके साथ निवास किया करते हैं। इनमें सभी लोग प्रायः निरामिषभोजी हैं। समाज या पचान्तरके एकबार मात्र स्नान किया जाता है। कोई कोई प्रति रविवारको स्नानान्तमें रहस्यित खुडोवाको प्रति मूर्तिपूजते और उसका दुग्ध आदि निवेदन करते हैं।

यह लोग स्वभावेत धीर, परिश्रमी, सब और मितव्ययी होते हैं। गाय भेड आदि पालन और दुग्ध, दधि, मखन प्रभृति विक्रय हो इनकी उपजोविका है। लिङ्गायत या नन्दगावली स्वजातिस्मृष्ट अथ व्यतीत किसी दूसरे व्यक्तिका अन्न भोजन नहीं करते। परन्तु खिल्लारी सभीके हाथका खा लेते हैं। तुलजापुरके खण्डोवा और अम्बावाई इनकी प्रधान देवता है। यह पण्डुरपुर, जिजुरो, तुलजापुर और सिङ्गनापुरकी तोषय्याया करते हैं।

ब्राह्मणों पर इनकी अथवा भक्ति है। पण्डुरपुरके निकटवर्ती मादलगावमें इनके गुह रहते चार सत्र लोग उनको चन्द्रगोखराप्पा कहते हैं। यह अविवाहित होते और मृत्युके पूर्व एक शिथ्य रख लेते हैं। गुरुके मरने पर शिथ्यको चन्द्रगोखराप्पा पद मिलता और चरजीवन अविवाहित रहना पड़ता है।

यह भविष्यदुवाणीमें विश्वास करते और उसीसे प्रायः अपनी अष्टष्टपरीक्षाके लिये दैवज्ञ अथवा सामुद्रिक शास्त्राध्यायीके निकट पहुँचते हैं। चुड़ैल या भूत चढ़ने पर इन्हें विश्वास नहीं है।

यह ५ दिन जन्माशीच मानते हैं। १२ वे दिनको ५ लघवा स्त्रियां बुलायी जाती हैं। वह सन्तानको गोदमें ले करके नामकरण करती हैं। नौसे १२ मासके बीच शिशुका मातुल जा करके भागिनियका मस्तक सुगडन करता है। इनमें वाल्यविवाह, विधवाविवाह और बहुविवाह प्रचलित है। लिङ्गायत गावली मृतदेह जमोन् से गाड़ देते हैं। द्वादश दिवसको अशीच दूर होता है। यह लोग प्रति वर्ष वैशाख मासमें मृतके उद्देश आह्व करते हैं।

मराठी गावलियोंमें बड़ी जातीय एकता है। यह सभी मराठी बोलते हैं।

गावली (हि० स्त्री०) दलाली ।

गावल्गणि (सं० पु०) गवलाणस्यापत्यं गवलाण-इज्, गवल्गणके पुत्र सञ्जय ।

“गावलाणे क्व नस्तातो वृजो हीनय नेवयोः ॥” (भागवत १।१।१२)

गावलुन्धा (हि० पु०) फटे हुए खुरका घोड़ा, वह घोड़ा जिसके खुर फटे हों।

गाविष्ठिर (सं० पु०-स्त्री०) गष्ठिवरस्यापत्यं गविष्ठिर अज् । गविष्ठिर ऋषिका अपत्य, गविष्ठिरकी सन्तान

गाविष्ठिरायण (सं० पु०-स्त्री०) गाविष्ठिरस्य युवापत्यं गविष्ठिर-फक् । गविष्ठिर ऋषिकी युवा सन्तान ।

गावीधुक (सं० त्रि०) गावीधुकाया विकारः गावीधुक-अण् । गावीधुकाका विकार, इसके द्वारा प्रसृत चरु प्रभृति ।

“अष्टाकपालं निर्वपति रौद्रं गावीधुकं चरुमेव” ।

(तैत्तिरीयब्रह्म १।८।११)

गावीधुक (सं० त्रि०) गावीधुकाया विकारः गावीधुका-अण् । विन्नादिमोऽण् । पा ४।३.१३६ गावीधुका द्वारा प्रसृत चरु प्रभृति ।

“रौद्रं गावीधुकं चरुं निर्वपति” (शतपथ ब्रा० ५।१।३।७)

गास (हि० पु०) दुःख, संकट, आपत्ति ।

गासिया (हि० पु०) जीनपोश ।

गाह (सं० पु०) गह कर्मणि घञ् । १ गहन, दुर्गम ।

“मही गाहाहिव पानिरधुचत ।” (ऋग्वेद १।११५)

“गाहात् गहनात् ।” (स. ध. १)

२ अवगाहन करनेवाला मनुष्य ।

गाहक (सं० त्रि०) गाह वुण् । १ अवगाहन करनेवाला । २ जो अच्छा गाना गा सकता हो ।

गाहक (हि० पु०) १ लेनेवाला, खुरीटनेवाला, खुरीटार । २ कटर करनेवाला, चाहनेवाला ।

गाहकी (हि० स्त्री०) १ विक्री । २ गाहक ।

गाहन (सं० स्त्री०) गाह-न्वुट् । विलोडन, स्नान, गीता-लगानेकी क्रिया ।

गाहा (हि० स्त्री०) १ कथा, वर्णन, चरित्र, वृत्तान्त । २ आर्या छन्दका एक नाम ।

गाहनीय (सं० त्रि०) विलोडनीय । जिसको स्नान करना उचित है ।

गाहित (सं० त्रि०) गाह-त्त । १ आनोदित, मथा या मला हुआ । २ अवगाहित, भीतरमें गया हुआ । ३ कम्पित, कांपता हुआ ।

गाहित (सं० त्रि०) गाह-टच । १ अवगाहनकर्ता । २ आलोडन करनेवाला, मथनेवाला ।

गाहो (हि० स्त्री०) पाँच चोजोका समूह ।

गाह (हि० स्त्री०) उपगीति छन्दका नाम ।

गिंजना (हि० त्रि०) किसी पदार्थका हाथ लगने या उलटे पुलटे जानिके कारण खराब हो जाना ।

गिंजाई (हि० स्त्री०) एक प्रकारका कीड़ा जो प्रायः वर्षाकालमें देखा जाता है। इसकी लम्बाई लगभग दो-से चार अङ्गुल तककी होती है। एक ही स्थान पर झुंडके झुंड पाये जाते हैं। इनके बहुतसे पैर होते हैं, और शरीरमें विष रहता है। यदि कोई पशु इसे खा जाय तो वह शीघ्र ही मर जाता है। यह कीड़ा वर्षा-ऋतुके आरम्भमें जन्म लेता और हस्तौ नक्षत्रमें मर जाता है।

गिंङनी (हि० स्त्री०) एक तरहका शाक । इसकी पत्तियां दो अंगुल परिमाणकी लम्बी और जो परिमाणकी चौड़ी होती है। इसकी गाँठों पर खेत फूलोंके गुच्छे लगते हैं।

गिंदर (हि० पु०) फसलको नुकसान पहुँचानेवाला एक तरहका कीड़ा ।

गिंदौरिया—युक्त प्रदेशके बनियोकी एक शाखा। गिंदौरा वचनसे ही उनका यह नाम रखा गया है। मिरठमें गिंदो रिया बहुत है।

गिंदौरा (हि० पु०) चीनोप्रभेद, चीनोका एक भेद। यह मोटो रोटीके आकारमें गलाकर ढाला जाता है। इस तरहको चीनीकी रोटीका प्राय विवाहादिमें व्यवहार होता है।

गिंड (हि० पु०) गला गरदन

गिचपिच (हि० वि०) अस्पष्ट, एकमें मिला जुला।

गिचगिचिया (हि० स्त्री०) वचनविधा देखो।

गिचिरगिचिर (हि० वि०) गिचपिन देखो।

गिजगिजा (हि० वि०) अस्पष्ट, गोला।

गिजा (अ० स्त्री०) खाद्यवस्तु, भोजन, खानेकी चीज।

गिजाली (मोलाना) एक राजकवि। इन्होंने अपने एक कसौटैमें लिखा है कि मेरा जन्म १५२४ ई०को हुआ। पहले यह अपनी जन्मभूमि मगधमें दाक्षिणात्य आये, परन्तु वहाँ आशा पूरी न होने पर जौनपुर चले गये और जौनपुरके सूबेदार खाँ जमा अलीकुली खाँके नोचे कई वर्ष कार्य करते रहे। उसी समय इन्होंने 'नक्षत्रदीप कविता' लिखी थी। उसीके लिये प्रथमोपक नवाबने इन्हें प्रति शेर (दोहा) एक अशरफी इनाम दी। १५६८ ई०को अकबर बादशाहके साथ लडाईमें खाँ जमानके मारे जाने पर यह मस्नादके हाथों पड़ गये। बादशाह अकबरने इन्हें नौकर रखा और 'मालिक उग्र शयार' (कवि राज) उपाधि प्रदान किया। भारतमें इन्हें ही पहली पहल चढ़ उपाधि मिला था। यह अकबरके साथ गुजरात जाते गये और वही १५७० ई० ५ दिम्बरमें रोगग्रस्त हो चल बसे। अहमदाबादके सरकीज नामक स्थानमें इन्हें गाड़ा गया। इन्होंने एक दीवान् और किताब 'असरार', 'रगहातु उल दयात' और 'मिरत उल फायनात' नामकी ३ मसनविया लिखी है।

गिजियानी—अफगानस्थानके रहनेवाले 'बधार्दे' पठानोंकी एक शाखा। ई० ५वीं शताब्दीके शेष भागमें तैमूरके समयको भी इनका कोई निर्दिष्ट वासस्थान न था। उलम बेगके राजत्वकालमें इन्होंने उनकी बड़ा साहाय्य दिया, परन्तु इन्होंने कृत-उपकार भूल विध्वासघातकात पूर्वक

काबुलसे इनकी निकाल बाहर किया। पोखिको यह पेशावर उपत्यकामें आ करके बस गये। आजकल काबुल और स्वात नदीकी मध्यवर्ती उर्वरा भूमिमें इनका निवास है।

गिञ्जिहली—दाक्षिणात्यके धारवाड जिलाका एक गण्ड-याम। यह हानगल नगरसे २ मील दक्षिण अवस्थित है। यहाँ वामदेवकी एक मन्दिर है। इसी मन्दिरके मध्यमें वासवमूर्तिके दोना पार्श्व पर ११०३ ई०की उत्कीर्ण २ ग्रिनालिपिया लगी है।

गिञ्जी—मन्दाज प्रान्तीय दक्षिण अर्काट जिलेके तिरुड-वनम् तालुकाका एक पर्वतमय भूभाग और गिरिदुर्ग। यह अक्षा० १२° १५' उ० और देशा० ७८° २५' पू०में मन्दाज नगरसे दक्षिण पश्चिम अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय ५२४ है। पहाड़ी किला बहुत पुराना है। उसी पर बहुकालसे यह स्थान इतिहासप्रसिद्ध है। कुछ दिन पहले पर्वतके निम्नदेशमें अल्पसंख्यक गृह व्यतीत कोई भी मच्छिगिजाली ग्राम न रहा। गवर्नमेण्टने यह नाम स्थिर रखनेको निकटवर्ती बगाया ग्रामको भी गिञ्जी नामसे अभिहित किया है। दुर्गकी तीन और राजगिरि, छायागिरि और चन्द्रायण दुर्ग नामक—३ पर्वत हैं। यह तीनों पहाड परस्पर सुदृढ प्राचौर द्वारा सलग्न हैं। सुतरा कोई शत्रु इस किलेको सहजमें ही दखन कर नहीं सकता। पर्वत और प्राचौरको ले करके दुर्गका परिधि ७ मीलसे अधिक पड़ता है। इसका कोई प्रकृत प्रमाण नहीं मिलता, कब किसने उसे बनाया था। कोई कहता कि चीन राजाओंके समयको वह सब प्रथम स्थापित हुआ। फिर किमोंक मतमें १४४२ ई० पर तख्तोर शासनकर्ता विजयनगरनायकके पुत्र उसे बनवाने लगे थे। किन्तु विजयनगरराजकर्ताके १३८३ ई०को प्रदत्त एक प्रशस्तिमें लिखा है कि दुर्गसे ही उस प्रदेशका नाम गिञ्जी पड़ा। अतएव कोई सन्देह नहीं कि इनके पहलसे ही उसका निर्माणकार्य सम्पूर्ण हो गया था। इस किलेमें कल्याणमठल, जिमखाना, ग्रन्थागार, ईद गार्ह, बारिक, मण्डप और एक ८ मञ्जिला गुम्बज है। इस गुम्बजके पहले ६ खण्डोंमें ८ फुट चौकीर धरके चारो किनारे बरामदा और प्रत्येक तलमें ऊपर चढनेकी

यह भविष्यदवाणीमें विश्वास करते और उमीसे प्रायः अपने अदृष्टपरीक्षाके लिये देवज्ञ अथवा सामुद्रिक शास्त्राधार्यके निकट पहुंचते हैं। जुड़ैल या भूत चढ़ने पर इन्हें विश्वास नहीं है।

यह ५ दिन जन्मांगीच मानते हैं। १२ वें दिनको ५ सधवा स्त्रियां बुलायी जाती हैं। वह सन्तानको गोदमें ले करके नामकरण करती हैं। नौसे १२ मासके बीच गिम्बुका भातुल जा करके भागिनियका मस्तक सुगडन करता है। इनमें वान्यविवाह, विधवाविवाह और बहुविवाह प्रचलित है। लिङ्गायत गावली सतदेह जमान् से गाड़ देते हैं। हादस टिक्सको अगोच दूर होता है। यह लोग प्रति वर्ष वैशाख मासमें सतके उद्देश्य आह करते हैं।

मराठी गावलियोंमें बड़े जातीय एकता है। यह सभी मराठी बोलते हैं।

गावली (हिं० स्त्री०) टमाली ।

गावलंगणि (सं० पु०) गवलाणस्यापत्यं गवलाण-इज्, गवलंगणके पुत्र मन्त्रय ।

“गावलंगि क् वलाति इहो औनच नवरो” (भागवत १।२।३२)

गावसुच्या (हिं० पु०) फटे हुए सुरका घोंडा, वह घोंडा जिसके सुर फटे हों।

गाविठिर (सं० पु०-स्त्री०) गठिवरस्यापत्यं गविठिर-अन् । गविठिर ऋषिका अपत्य, गविठिरकी सन्तान गाविठिरगण (सं० पु०-स्त्री०) गाविठिरस्य युवापत्यं गविठिर-फक् । गविठिर ऋषिकी युवा सन्तान ।

गावीधुक (सं० त्रि०) गावीधुकाया विकारः गावीधुक-अण् । गावीधुकाका विकारः इसके द्वारा प्रसृत चरु प्रभृति ।

“कटाकणलं निर्वर्तनि रौटं गावीधुकं चरुमेव” ।

(वेदविशेष-दिना १।८।३।१)

गाविधुक (सं० त्रि०) गावीधुकाया विकारः गावीधुका अण् ।

विचन्द्रिमोऽण् । पा ३।३.१३३। गावीधुका द्वारा प्रसृत चरु

प्रभृति । “रौटं गावीधुकं चरुं निर्वर्तति” (शतपथ ब्रा० ३।३।३।०)

गाम (हिं० पु०) दुग्ध, संकट, आपत्ति ।

गामिया (हिं० पु०) जीनपेश ।

गाह (सं० पु०) गह कर्मणि घञ् । १ गहन, दुर्गम ।

“नदी गाहादिव आकिरधुवत ।” (यद्-ग।१।१५८)

‘गाहात् गहगात् ।’ (स. ७८)

२ अवगाहन करनेवाला मनुष्य ।

गाहक (सं० त्रि०) गाह वुण् । १ अवगाहन करनेवाला । २ जो अच्छा गाना गा सकता है ।

गाहक (हिं० पु०) १ लेनेवाला, खरीदनेवाला, खरीदार । २ कदर करनेवाला, चाहनेवाला ।

गाहकी (हिं० स्त्री०) १ विक्री । २ गाहक ।

गाहन (सं० स्त्री०) गाह-ल्युट् । विन्तोड़न, न्दान, गीतानगानिकी क्रिया ।

गाहा (हिं० स्त्री०) १ कथा, वर्णन, चरित्र, वृत्तान्त । २ आर्या छन्दका एक नाम ।

गाहनीय (सं० त्रि०) विन्तोड़नीय । जिसको न्दान करना उचित है ।

गाहित (सं० त्रि०) गाह-क्त । १ आलोड़ित, मथा या मला हुआ । २ अवगाहित, भीतरमें गया हुआ । ३ कम्पित, काँपता हुआ ।

गाहित (सं० त्रि०) गाह-लृच् । १ अवगाहनकर्ता । २ आलोड़न करनेवाला, मथनेवाला ।

गाहो (हिं० स्त्री०) पाँच चीजोंका समूह ।

गाह (हिं० स्त्री०) उपगीति छन्दका नाम ।

गिंजना (हिं० त्रि०) किसी पदार्थका हाथ लगने या उलटे पुलटे जानेके कारण खराब हो जाना ।

गिंजाई (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका कीड़ा जो प्रायः वर्षाकालमें देखा जाता है। इसकी लम्बाई लगभग दोसे चार अङ्गुल तककी होती है। एक ही स्थान पर झुंडके झुंड पाये जाते हैं। इसके बहुतसे पैर होते हैं, और शरीरमें विष रहता है। यदि कोई पशु इसे खा जाय तो वह शीघ्र ही मर जाता है। यह कीड़ा वर्षा-ऋतुके आरम्भमें जन्म लेता और हस्तो नक्षत्रमें मर जाता है।

गिंड़नी (हिं० स्त्री०) एक तरहका शाक । इसकी पत्तियां दो अंगुल परिमाणकी लम्बी और जो परिमाणकी चौड़ी होती है। इसकी गाँठों पर श्वेत फूलोंके गुच्छे लगते हैं।

गिंदर (हिं० पु०) फसलको लुकसान पहुंचानेवाला एक तरहका कीड़ा ।

गिंदौरिया—युक्त प्रदेशके बनियाँकी एक शाखा। गिटोरा
बननेसे ही उसका यह नाम रखा गया है। मेरठमें गिटो
रिया बहुत है।

गिटौरा (हि० पु०) चीनोप्रमैद, चीनोका एक मेद। यह
मोटो रोटीके आकारमें गलाकर ढाला जाता है। इस
तरहको चीनीकी रोटीका प्राय विवाहादिमें व्यवहार
होता है।

गिउ (हि० पु०) गला गरदन

गिउपिच (हि० वि०) अस्पष्ट, एकमें मिला जुला।

गिउगिन्धिया (हि० स्त्री०) कणपिण्डा देखो।

गिउचिरपिचिर (हि० वि०) निपचिच देखो।

गिउगिजा (हि० वि०) अस्पष्ट, गोला।

गिजा (अ० स्त्री०) खाद्यवस्तु, भोजन, खानेकी चीज।

गिजाली (मोलाना) एक राजकवि। इन्होंने अपने एक
कवीटिमें लिखा है कि मेरा जन्म १५२४ ई०की हुआ।

पहले यह अपनी जन्मभूमि मगधमें दाचिणाव्य आये,
परन्तु यहाँ आगा पुरी न होने पर जौनपुर चले गये और
जौनपुरके स्वदेवार खाँ जमा अलोकनी खाँके नीचे कई
वर्ष कार्य करते रहे। उसी समय इन्होंने 'नक्षत्रबदोत्र
कविता' लिखी थी। उसीके लिये छठपोपक नवावने
इन्हें प्रति शेर (दोहा) एक अग्रको इनाम दी। १५६८
ई०की अकबर आटगाहके साथ लडाईमें खाँ जमानके मारे
जाने पर यह मन्दाटके हाथों पड गये। बाटगाह अक-
बरने इन्हें नौकर रखा और 'मानिक उग्र शूभारा' (कवि
राज) उपाधि प्रदान किया। भारतमें इन्हें ही पहले
पहले यह उपाधि मिली था। यह अकबरके साथ गुज-
रात जोतेने गये और वही १५७० ई० ५ दिम्बरमें
रोगग्रस्त हो चल बसे। चढमदावादके सरकीज नामक
स्थानमें इन्हें गाहा गया। इन्होंने एक दीवान् और
किताब 'अमरार', 'रंगहात् उल दयात' और 'मिरत-उल
फायनात' नामकी ३ मसनविया लिखी हैं।

गिजियानी—अफगानस्थानके रहनेवाले 'क्याड़े' पठानोंकी
एक गाँव। ई० ५वीं शताब्दीके गेप भागमें तैमूरके
समयको भा इनका कोई निर्दिष्ट वासस्थान न था। उनका
बैराग शाकत्वकालमें इन्होंने उनकी बटा साहाय्य दिया,
परन्तु इन्होंने छल-उपकार भूल विगवासघातकता पूर्वक

काबुलमें इनकी निकाल बाहर किया। पोछेको यह
पेशावर उपत्यकामें आ करके बस गये। आजकल
काबुल और खात नदीकी मध्यवर्ती उर्वरा भूमिमें इनका
निवास है।

गिञ्जिहलो—दाचिणाव्यके धारवाड जिलाका एक गण्ड-
ग्राम। यह हानगल नगरसे २ मील दक्षिण अवस्थित
है। यहाँ वामवेश्वरका एक मन्दिर है। इसी मन्दिरके
मध्यमें वामवमूर्तिके दोनों पाखें पर ११०३ ई०की
उत्कीर्ण २ शिलालिपिया लगी है।

गिञ्जी—मन्दाज प्रान्तीय दक्षिण अर्काट जिलेके तिण्डि-
वनम् तालुकाका एक पर्वतमय भूभाग और गिरिदुर्ग।
यह अक्षा० १२° १५' उ० और देशा० ७८ २५' पू०में
मन्दाज नगरसे दक्षिण पश्चिम अवस्थित है। लोकसंख्या
प्राय ५२४ है। पहाडी किला बहुत पुराना है। उसी
पर बहुकालमें यह स्थान इतिहासप्रसिद्ध है। कुछ दिन
पहले पर्यतके निम्नदेशमें अण्णसव्यक गृह व्यतीत कोई
भी मस्जिदियाली ग्राम न रहा। गवर्नमेंगटने यह नाम
स्थिर रखनेको निकटवर्ती बगाया ग्रामको भी गिञ्जी
नामसे अभिहित किया है। दुर्गकी तीन और राजगिरि,
ह्यागिरि और चन्द्रायण दुर्ग नामक—३ पर्वत हैं।
यह तीनों पहाड परस्पर सुदृढ प्राचेर द्वारा सलग्न हैं।
सुतरा कोई गत, इस किलेकी सहजमें ही दखल धर
नहीं सकता। पर्वत और प्राचीरकी ले धरके दुर्गका
परिधि ७ मीलसे अधिक पडता है। इसका फोरे प्रखन
प्रमाण नहीं। मलता, कच किमने उसे बनाया था। फोरे
कहता कि चीन राजाओंके समयको यह सब प्रयत्न
स्थापित हुआ। फिर किमांके मतमें १४४० ई० पर
तञ्जोर गामनकर्ता विजयनगरनायकके पुत्र उसे बनायने
लगे थे। किन्तु विजयनगरराजघटके १३८३ ई०को
प्रदक्ष एक प्रगतिमें लिखा है कि दुर्गसे ही उस प्रदेशका
नाम गिञ्जी पडा। अतएव फोरे स्पष्ट है नहीं कि इनके
पहलेसे ही उसका निर्माणकार्य सम्पूर्ण हो गया था।
इस किलेमें कल्याणमहल, जिमखाना, श्यागार, इट
गाए, बार्गिक, मण्णप चार एक ८ मञ्जिमा गुम्बज है।
इस गुम्बजके पहले ६ खण्डोंमें ८ फुट चौकीर घरे
चारों किनारा बसामना और प्रत्येक तलमें ऊपर चढ़नेको

एक एक जीना लगा है। ७वीं सञ्चलका बरामटा टूट गया है। ऊपरके तलका घर मवसे कोटा है। ६ठे खण्डसे मट्टीका एक नल प्राचीरके नोचे होता हुआ ६०० गज तक जा करके एक तालाबमें पहुँचा है। राजगिरिमें दुर्गसे बाहर स्रच्छमलिला तथा चिरवाही २ प्रस्रवण हैं। उनका पानी सभी स्थानीय लोग पीते हैं। राजगिरि और चन्द्रायण दुर्गके बीचमें दोनों पुष्करिणियों और दुर्गका पानी बहानेके लिये एक नहर खुदी है। राजगिरि पर एक बड़ी तोप और १५ फुट चतुरस्र तथा ५ इंच मोटा कोई ग्रेनाइट पत्थर पड़ा है। तोप ऐसे धातुकी बनी हुई है कि उसमें अभी भी मोर्चा नहीं लगता। इसके मोहरेकी जड़में ७५६० संख्या खोदित है। स्थानीय लोग बतलाते हैं कि वहाँ पहले राजप्रासाद रहा और राजा उसी पत्थर पर बड़े हो करके नशते थे। पत्थरके पास एक बृहत् कूप भी है। प्रवाद है कि राजा कौटियोंकी उसमें गिरा करके अनाहार मार डालते थे। किलेके अर्काटी दरवाजेमें पत्थर पर एक शिलालिपि खुदी हुई है।

बहुत दिन यह दुर्ग विजयनगरके अधीन रहा, पोछेसे मल्लिकार्जुनके नायकोंने अधिकार किया। १५६४ ई०को तालीकोटकी लड़ाईमें गिझी किला मुसलमानोंके हाथ लगा, १६३८ ई०को विजयपुरके सेनानायकने शिवजीके पिता शाहजोकी सहायतासे इसको उनसे छीना था, किन्तु १६७७ ई०को शिवजीने अपने आप अधिकार कर लिया। उसके पीछे २१ वर्ष यह महाराष्ट्र-नेताके कर्तव्यधीन रहा। दिल्लीके बादशाह औरङ्ग-जीबने महाराष्ट्र बल उच्छेद करनेके लिये जुलफिकार दुर्गकी भेजा था। ८ बरस क्रमान्वयसे युद्धके पीछे १६८८ ई०को मुगल सैन्यने गिझी दुर्ग अधिकार किया। १७५० ई०को फरासीसी सैनिक मार्शल वूस्लीने इस पर धावा मारा था। ११ वर्ष फरासीसियोंके अधीन रहने पीछे १७६१ ई०को ५ मनाह तक घेरा डाल करके कमान छोड़ने मिस्रने इसे देखल किया। १७८० ई०को यह फिर हैदरअलीके हस्तगत हुआ। मुसलमानोंके हमलेके समयको इसके देसिंहराज (१) राजा तेजसिंह उनसे खूब लडे थे। इनके उम वीरत्वका गीत लोग आज

तक गाते हैं। राजाके मरने पर तटीय मल्लिकार्जुन मच्छता हुई। रणविजयी नवाब शाहादत उमा खानि मर्ताको वैसी स्वामिभक्तिसे मनुष्ट हो करके उनके स्मरणार्थ अर्काटीके निकट उन्हींके नाम पर 'गनोपत्त' नामक एक नगर स्थापन किया।

राजगिरिस्थ मन्दिराटिके कारुकार्यमय स्तम्भ फरासीसी पुंटीचेरी उठा करके ले गये हैं। वहाँ जाने पर आज भी इनका शिल्पनैपुण्य हाटिगोचर जाता है।

गिझीसे १ मील उत्तर पहाड़के 'तिकनाथ कुण्ड' नामक स्थानमें पर्वतगात्र पर २४ जन तीर्थहरीकी मूर्तियां खुदी हैं। यहांसे १॥ मील उत्तर-पश्चिमकी पर्वतोंपर रत्नामीमल्ल नामक कोई विष्णुमन्दिर है। लोग इन देवताका बड़ो भक्ति करते हैं। यह मन्दिर पहाड़ तोड़ करके बनाया गया है। इसमें उत्तरका किसी दूसरे भग्न मन्दिरके बहूनेसे खोदित शिलाफलक है।

गिटकारो (हिं० स्त्री०) गिड़-उवा। तान लेनेमें स्वरका कापना। यह अच्छा समझा जाता है।

गिटकौरी (हिं० स्त्री०) कंकड़ी।

गिटपिट (हिं० स्त्री०) निरर्थक शब्द।

गिटक (हिं० स्त्री०) १ कंकर जो चिलमके नोचे छटकके ऊपर रखा जाता है। (पु०) २ एक कंभमें निकलनेवाला गिटकिरी लेनिका स्वर या तानका कोटा भाग।

गिझ (हिं० पु०) ककड़।

गिझी (हिं० पु०) १ पत्थरके छोटे टुकड़े, जो छत्त आदि पर फँलाकर कूटे जाते हैं। २ मट्टी बरतनके टूटे हुए खंड। ३ चिलमकी गिटक। ४ तागिकी रील।

गिडुआ (हिं० पु०) जुलाईका करघा।

गिडुरा (हिं० पु०) नेट्टा देखा।

गिड़ गड़ाना (हिं० क्र०) अधिक नम्रतासे प्रार्थना करना, बहुत अरजूसे विनती करना।

गिड़गिड़ाहट (हिं० स्त्री०) १ प्रार्थना, विनती। २ गिड़ गिड़ानिका भाव।

गिड़राज (हिं० पु०) सूर्य।

गिड़वा—एक नदी। यह हिमालयकी एक गह्वरसे निकल नेपाल और अवधके बीचसे कौड़ियाला नदीमें आ करके

गिरो है। उत्पत्ति स्थान पर जल अत्यन्त स्वच्छ रहनेसे इसको 'शीशापानी' कहते हैं। पहले यह गक स्रोतमात्र रही, किन्तु अब प्रकृत नदीका आकार गारण किया है। इसके गर्भमें खगड खगड पत्थर पड़े हैं। इसकी गभीरता ३४ फुटने अधिक नहीं, और प्रस्थमें प्राय ४०० गज होगी। परन्तु स्रोतको गति इतनी बेगवती है कि दो एक स्थानोंको छेड़ करके लगे लगे पार हो नहीं सकती। इसको तीरभूमि गानवृत्त परिपूर्ण है, बीच बीच पहाड़ को घाटीमें छोटे छोटे स्रोत निकल पड़े हैं। इनके मध्य हीप जैसी वनमय चरभूमि है। इसी नदीमें सरयू और मारटाका जग मिलनेसे घर्घरा वनो है। फौडियाला निमानयके शीशापानी स्थानसे फुटती और घोड़ी दूर आगे चल करके दो भागोंमें बंट जाती है। पश्चिम शाखाका कोटियाला और पूर्व शाखाका नाम गिड्डा है। ऊपरकी यह जारमें बहती है। धनौरमें नावें चलती हैं। इस नदीकी राज नेपालसे अनाज, लकड़ी, अदरक, मिर्च और घी आता है। बदरायचमें भर्थापुरके नीचे गिड्डा कोटियालामें मिल जाती है।

गिड्डा (हि० वि०) नाटा, ठे गना।

गिट (स० पु०) गणपालकके एक देवताका नाम।

† गिट नर - २४ शालिष्ठा (भाष्यभा० ११८०)

† गि नामाद १-४ कथि दशविश्व ४ भाष्य)

गिहा (हि० पु०) स्त्रियोंके गानिका एक तरहका गीत, नकटा।

गिह (हि० पु०) १ मांस खानेवाला एक तरहका पक्षी जो प्राय दो हाज लम्बा होता है। यह ककरिया तथा मुर्गियाकी उदाहरण आकाशकी और नै भागता और किसी हज पर बैठ कर खाने लगता है। यह मृत जीवका भी मांस खाता है। इसका रंग मटमैला और पंख बड़े बड़े होते हैं। किसी मनुष्यके शरीर पर मडरागा अथवा मकान पर बैठना इसका अशुभ स्वभाव जाता है। २ एक तरहका दीर्घ काकीया या पतंग। ३ उष्ण द्रव्यका ५२वां भेद।

गिहराज (हि० पु०) जटायु।

गिहौर—विशाल प्राणीय मुद्गरे जिनेके गिहौर राजसू विभागका एक नगर। यह पचास २४ ५१'३०" और

देगा० ८६ १२' पू०में अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय १०८० है। पूर्वकालकी यह नगर खूब मन्दहिमानो और बहुजनकीर्ण था, परन्तु अब क्रमशे हीन हो रहा है। नगरके निकट किमो बड़े पुराने किनेका भग्नावशेष है दुर्गका प्राचीन और घर पत्थरके बड़े बड़े टुकड़ोंसे निर्मित हुआ है। इसमें किसी किम्बका दूसरा माल अथवाव लेख नहीं पड़ता। गडके मध्य प्रवेगके ४ पथ हैं। यथाक्रममें दक्षिण, पश्चिम और उत्तरका द्वार हस्तो, अथ तथा उद्ग नामसे पुकारा जाता, केवल मात्र पूर्वद्वार महादेव दरवाजा कहलानाता है कोइ कोइ कहता कि शेरशाहने यह किला बनाया था। परन्तु यह बात विशेष प्रामाणिक नहीं, दुर्ग बहुत ही प्राचीन है। सश्वत सम्राट् हमायू के साथ युद्ध कालको उन्होंने इसका कवल जैण मस्जद कराया था।

वर्तमान गिहौर राजघंशके प्रतठठाता वीरविक्रम मिह चन्द्रव शोय जतिव्य रहें। उनके पूर्व पुरुष तु देल खगडके अन्तर्गत मन्धोवा नामक विषयके अधिकाारी थे। ई० ११वो शताब्दीकी घडामें ताडित होने पर यह रोया राज्यके अन्तर्गत चर्दी नगरमें जा करके रहे। ११६८ ई०की बदरिाजके कनिष्ठ भ्राता वीरविक्रममिह वैद्यनाथ दुर्गनेकी कामनासे सपरिधार पडु थे थे। कहते हैं, वैद्यनाथने उन्हें चारों पागवका समुदाय भूभाग अधिकार करनेकी स्वप्नमें आदेश दिया। यह इस राज्यके अधिकार पोछे प्रथम गिहौरके राजा कहलाने थे। इसी द शके दशम राजा पूरणमल्लने वैद्यनाथ देवका मन्दिर बनवा दिया। मन्दिरमें भीतरो दरवाजेके ऊपरो भाग पर सस्कृत भाषामें आज भी उनको प्रशस्ति खोदित है। वीरविक्रममें चतुर्दश पुरुष अथवाउन उल्लसमिहकी बद्धान के उद्गुत सर्वेदारकी दशाने और टिको मन्गटके पोय सुनिमानकी साम्नाय पदु चानेमें ११६८ ई०में बादगड शाहजहानि फर्मानके द्वारा राजा उपाधि प्रदान किया। इस फर्मानमें शाहजहान और दाराशिकोहकी सगे सोपूद है। जय बद्धान और विचारका शासनभार सगरेज गवर्भमेगुछने अपने हाथमें लिया, गिहौरराज गोपाल मिह (१८श पुरुष) की विषय सम्पत्तिको भी अधिकार किया। १८५५ ई०की मरुान विद्रोहक समय राणा

गोपालसिंहके पौत्र जयमङ्गल सिंहने अंगरेजोंको विशेष साहाय्य किया था। इससे बड़े लाटने मन्तुष्ट ही करके १८५६ ई०को उन्हें एक मन्त और राजा उपाधि दिया। सिपाहियोंके बलवे पर उन्होंने फिर अंगरेजो गवर्न-मेण्टको यथेष्ट साहाय्य दिया, जिसके लिये १८५८ ई०की वृष्टिश गवर्नमेण्टने उन्हें यात्राजीवन महाराज और के० सी० एम० आई० (K. C. S. I.) उपाधि तथा उनके वंशधरोंको लाखाराजमें बड़ी जागीर दी। इनके पुत्र महाराज शिवप्रसाद थे। शिवप्रसादसिंहके पुत्र माननीय महाराज बहादुर सर रावणेश्वरप्रसाद-सिंह के० सी० आई० ई० गिद्धीरके वर्तमान राजा है।

गिद्धीरका भूपरिमाण २२३०२ वर्गमील है। इसमें १४ विषय है।

गिद्धीरगल—पेशावर प्रदेशके अन्तर्गत एक गिरिसङ्घट। यह अक्षा० ३३° ५६ उ० और देशा० ७२° १२' पू० पर आटकनगरसे ५ मील उत्तर-पश्चिममें अवस्थित है। यह पथ दश फुट चौड़ा है। कभी कभी इस रास्तेसे सेना भी जाती आती है।

गिनगिनाना (हिं० क्रि०) १ रोमांच होना, गंगटे खड़े होना। > अधिक बल लगते समय शरीरका कांपना।

गिनजा—युक्तप्रदेशका एक पहाड़। यह प्रयागसे ४० मील दक्षिण-पश्चिम अवस्थित है। इसका सर्वोच्च शिखर समुद्र-पृष्ठसे २००० फुट ऊंचा है। पर्वतका निम्नदेश बहुत ही ढाल और जङ्गलसे भरा है। प्रायः आधी दूर ऊपर चढ़ने पर २०० फुट परिधिकी एक बावड़ी है। उसके आगे पथ अतिशय दुर्गम और कण्टकाकीर्ण है। पहाड़ पर दक्षिण दिक्की एक समतल स्थान है। यहाँ पर्वतने ऊपर छाया करके छतका आकार धारण किया है। यह पर्वत १०० फुट लम्बा और ५० फुट चौड़ा है। इसी पर्वतके बीचो बीच प्राचीन उत्तर भारतीय गुमा-चरोंकी खोदित एक शिलालिपि मिलती है। शिला-फलकके अक्षरोंमें लाल रंग भरा हुआ है। फिर अक्षरोंके दोनों पाश्वर्क पर अनेक मनुष्य और जीव जन्तुओंकी मूर्तियां खुदी हैं। शकराजोंके राजत्व समयकी उल्कीर्ण शिलालिपियोंमें जैसी भाषा देख पड़ती, इसके मुखपातकी भी वही ही लगती है।

यह फलक ५० संवत्को ग्रीष्म ऋतुके चतुर्थ पक्षमें महाराज श्रीभीमसेन कर्तृक प्रदत्त हुआ। प्राचीन गुम अक्षर और शक भाषा देखनेसे इसकी समधिक प्राचीन-जैसा समझते हैं।

गिनती (हिं० स्त्री०) १ गणना, किसी पदार्थकी संख्या निश्चित करना। २ संख्या। ३ ज्ञाजिगी। ४ एकमें से तककी अंकमाना।

गिनना (हिं० क्रि०) १ गणना करना। २ गणितकरना, हिसाब लगाना। ३ सम्मान करना, प्रतिष्ठा करना। ५ फट्टर करना।

गिनाना (हिं० क्रि०) गिननेका काम किसी दूसरेमें कराना।

गिनी (अ० स्त्री०) सुवर्णकी मुद्रा। इसका व्यवहार इंग्लैंडमें सन १६६३में प्रारम्भ हुआ रहा और सन १८१३से इसका बनना बन्द हो गया। २१ ग्रेनिंग या १५॥ ६० की एक गिनी मानी जाती थी। प्राचीन समयमें यह अफ्रीका महाद्वीपके गिनी नामक देशमें आवे हुए स्वर्णसे बनाया जाता था इसलिये प्रस्तुत सिक्काका नाम गिनो पडा है।

गिनीग्राम (अ० स्त्री०) अफ्रीकाके गिनी नामक देशको एक प्रकारकी लम्बी घास। यह घास अब भारतवर्षमें बहुत होती है।

गिन्नो (हिं० स्त्री०) चक्र, घिरनी।

गिन्दुक (सं० पु०) गिन्दुक पृषोदराटिवत् साधुः। वृक्ष-विशेष, एक पेड़।

गिञ्जन (अ० पु०) सुमाता, जब आदि द्वीपोंके एक प्रकारका बंदर। इसे पूंछ तथा गलथैली नहीं होती। इसको भुजा इतनी लम्बी होती है कि खड़े होने पर पृथ्वीको छू लेती है। इसका आकार प्रायः मनुष्य जैसा होता है।

गिमटी (हिं० स्त्री०) बेलवृष्टसे युक्त एक प्रकारका मज-वृत्त कपड़ा। यह सिर्फ किसी यज्ञादिमें विद्वानके काममें आता है।

गिय (हिं० पु०) गिड देखो।

गियासपुर—लक्षणावतीके अन्तर्गत एक नगर। गीड़की मुसलमान राजाओंके समय इस नगरमें एक टक-शाल था।

गियाह (हि० पु०) एक प्रकारका घोडा ।
गिरट (अ० पु०) १ तरहका रेश्मो कपडा जो गोट
लगानेके काममें आता है । २ एक प्रकारकी सुतो मल
मल जो वस्ती जिलेमें प्रसुत होती है ।

गिर (स० स्त्री०) गृह क्रिय । गव्य ।
“जोतडा वध वधैगमा वधोनि ।” (अ० ११८१११)

गिर (द्वि० पु०) १ पव त, पहाड । २ सन्यासियोंके १०
भेदो मसे एक भेद । ३ एक तरइका मैमा जो काठिया
वाड देशमें पाया जाता है ।

गिर—बम्बई प्रदेशस्थ काठियावाड विभागके अन्तर्गत
एक गिरिच्योरी । यह किउ हीपसे २० मोल उत्तरपूर्वमें
आरम्भ हो कर प्राय ४० मोल तक फैली हुई है । इस
वनमय पर्वतमें दस्युपति हज्जवालने भारतीय नो सेना
ध्वज कप्तान याण्टकी १८१३ ई०म अठाई माम तज बन्द
रिया था ।

गिरई (हि० स्त्री०) एक प्रकारकी मछली जो सौरोसे
छोटो होती है ।

गिरगिट (हि० पु०) छिपकलीकी जातिका एक प्रकारका
जन्तु । यह एक त्रिलस्त लम्बा होता है और अपने
शरीरका गूढ़ सूर्यकी ज्योतिसे अनेक प्रकारमें बदल नेता
है । इसका चमड़ा स्पर्श करने पर बहुत ठंडा मानस
पडता है । यह कीट पतंगको खा कर अपनी जीविका
निर्वाह करता है । सङ्कतमें इसे ऊकलाम या गलगति
कहते हैं ।

गिरगिटार (हि० पु०) गिरगिट २ खा ।

गिरगिटो (हि० स्त्री०) एक तरहका छोटा पेड जो उत्तर
भारत, चीन और आस्ट्रेलियामें पाया जाता है । इसके
पत्र गहरे रंग लिये छोटे तथा पतले होते हैं और ऊपर
का अग्र अत्यन्त चमकीला होता है । शीम तथा वर्षा
ऋतुमें इसमें श्वेत रंगके पुष्प लगते हैं । इस वृक्षकी
लकड़ी उन्नत नर्म होती है । वागानमें शोभाके लिये यह
लगाया जाता है । ब्रह्मदेशके रहनेवाले चन्दनके बटले
रूपकी कान काममें लाते हैं ।

गिरगिरी (हि० स्त्री०) मार्गोके भाकारका एक तरहका
लकड़ीका गिडोना ।

गिरजा (हि० पु०) एक किष्का पत्नी जो कौंडे मकोडे

खाकर रहता है । यह पञ्जाब तथा राजपूतानेके अति-
रिक्त समस्त भारतवर्षमें होता है । यह मिठाडेके मरो-
वरके निकट रहता और जैसे जैसे ऋतु बदलता जाता पड़
भी अपना स्थान परिवर्तन करता रहता है । यह उड़नेमें
बहुत तेज है और छत्रों पर घोसला बनाकर रहता है ।
इसका मांस बहुत स्वादिष्ट होता है इसलिये मनुष्य
इसका गिकार करते हैं ।

गिरदा (फा० पु०) १ घेरा, चकर । २ तर्किया, बालिया ।
३ मिठाई बनानेकी हलवाईकी थाली । ४ दरवारके
ममय राजाओके हुक्केके नीचे बिक्रिये जानेका एक तरह
का गालाकार कपडा । ५ टाल परी । ६ टोन वा
ख अडाका मेंढरा ।

गिरदान (हि० पु०) गिरगिट ।

गिरदानक (फा० पु०) करपेकी लकड़ी जो उसे घुमानेके
लिये लगी रहती है ।

गिरदाना (फा० पु०) तूरके छिद्रमें एक हाथकी नवी
चापहल लकड़ी ।

गिरदागो (फा० स्त्री०) कच्चा लोहा एक करनेकी एक
लकड़ी अ कुसो ।

गिरदावर (फा० पु०) गिराई देवो ।

गिरदावरो (फा० स्त्री०) १ गिरदावरका काम । २ गिर-
दावरका पद ।

गिरधर (सं० पु०) १ पर्वत उठानेवाला मनुष्य । २ कृष्ण,
वासुदेव ।

गिरधरोत ध्याम—राजपूतानाके मारवाड प्रदेशमें पुष्करणा
ब्राह्मणोंकी एक शाखा । यह वाड़े और मुक्का करके
पगडी बाधते और प्रतिष्ठित मम्मके जाते हैं । कहते हैं,
इनके पूर्व पुरुष गिरधर राव अमरसिंहके पाम नीकर
थे । आगरेको लडाईमें वह मारे गये । अग्निदाह न
करके अगान्तिके कारण इनको बहा समाधिप्य किया
था । इसीसे उनका नाम गिरधर मौर पडा । श्रावण
शुक्लहताया उनकी स्मृतिका दिवस है । उस दिन कोई
भी ध्यास नयीन वस्त्र नहो पडनते । १६३८ ई०की
उनका स्वर्गवास हुआ । गिरधर राव कवि थे । इनका
ममाधिस्थान ‘चोनोका रो । क’लाता है

गिरधारी (सं० पु०) गिरधर २ खा ।

गिरना (हिं० क्रि०) किसी पदार्थका ऊपरसे नीचे आधार के अभावसे आ जाना । २ किसी पदार्थको स्थिरता न रहना । ३ अवनति पर होना । ४ किसी नदीका जलाशयमें जा मिलना । ५ प्रतिष्ठा वा शक्तिकी कमी होना । ६ किसी पदार्थको लेनेके लिये टूट पडना । ७ जीर्ण या दुबल होना । ८ हठात् किसी पदार्थका आ जाना । ९ लड़ाईमें सारा जाना, खेत रहना । १० कवूतारका एक छतसे दूसरे छत पर जाना ।

गिरनार—काठियावाड प्रान्तका पवित्र पर्वत । यह अक्षा० २१° ३०' उ० और देशा० ७०° ४२' पू०में हेलमट नदीके दक्षिण तट पर जूनागढ़ नगरसे १० मील पूर्व अवस्थित है । उंचाई कोई ३५०० फुट है । इसकी पांच चोटियां हैं—अस्वासात, गोरखनाथ, अगाध शिखर, गुरु दत्तात्रेय और कालिका । अस्वासातमें अम्बा देवीका मन्दिर अवस्थित है । कालिकाको अघोरी और सुर्दाखोर तीर्थयात्रा करने जाते रहे हैं । दुर्ग और बुडामसाओंके राजप्रासादका कुछ अंश भी खड़ा है । गोमुख, नुहामान धार और कमण्डलुकुण्ड तीन प्रधान कुण्ड हैं । भैरवजय चटानका दृश्य अतीव विचित्र है । गिरनारसे थोड़ी दूर प्राचीन राजधानी वामनस्थली और नीचे वलिस्थान (वर्तमान विलख) है । इसका प्राचीन नाम उज्जयन्त वा गिरिनर है । यह जैनोंका पवित्र तीर्थस्थान है । एक चटानमें (ई०से २५० वर्ष पूर्व) अशोककी कई लिपियां अङ्कित हैं । १५० ई०का दूमरा शिलाफलक पढ़नेसे ज्ञात होता है कि स्थानीय राजा रुद्रदामाने दक्षिणात्यके नृपतिको किस प्रकार पराजित किया । ४५५ ई०की शिलालिपिमें सुदर्शनकुण्डके बांध टूटने और पुनः सेतुनिर्माणका उल्लेख है । ब्राह्मण नवदम्पती अम्बा माताको बड़ी भक्ति करते हैं । जैन मन्दिर नेमिनाथ जानिकी राहमें ६ पर्व (विश्रामस्थान) हैं ।

गिरनार,—जैनिर्वाका एक पवित्र तीर्थ, जो गुजरातमें झूनागढ़के निकट उक्त पर्वत पर है । इस पर्वतसे जनियोंके वाईसवें तीर्थङ्कर नेमिनाथ स्वामी मोक्ष गये हैं । इस पर्वतका दूसरा नाम जर्जयन्त भी है । इसको उंचाई करीब ४१ मील होगी । नीचेसे २१ मीलकी उंचाई पर एक सोरठका महल और २७ मन्दिर हैं ।

पाल्हीमें लग्सेनकी पुत्री और तोयङ्कर नेमिनाथकी पत्नी राजीमतीकी एक गुफा है, जहां पर कि. उन्होंने तप किया था । इस गुफामें राजमतीकी एक चरणपादुका है । इस स्थानसे १ मील चढ़ने पर दो टीकें मिलती हैं ; जिन पर कि, नेमिनाथने तप किया था । यहां वैष्णवोंके मन्दिर भी है । हिन्दू लोग दत्तात्रेयो मानकर इस पर्वतको पूजते हैं । सुमलसान इसे आदमवावाके नामसे पुकारते हैं । यहांसे १ मीलकी उंचाई पर और दो टीकें हैं, इनमेंसे पहिली टीक पर नेमिनाथ स्वामीने केवलज्ञानको प्राप्त किया था : और दूसरी टीक पर वे अष्ट कर्मका नष्ट कर मोक्ष गये थे । यहां एक प्रतमा और एक चरणपादुका अत्यन्त सुन्दर विराजमान हैं ।

इस पर्वतसे नेमिनाथ, शाश्व. प्रथुम्न (श्रीकृष्णके पुत्र), आदि ७२ करोड़ मुनि मोक्ष पधारे हैं । इस पर्वतका प्रबन्ध वहांके गुर्माई और भारतवर्षीय टिगार जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटीके हाथमें है ।

गिरनार—गुजराती ब्राह्मण मेट । यह दो प्रकारके है—जूनागढ़ गिरनार और चोरवटा । गिरनार पर्वतस्थ गिरनार गढ़ ग्राम पर ही उनका यह नामकरण हुआ है । तीसरे अजग्य गिरनार भी होते हैं । इन तीनों शाखाओंमें भोजन पान होते भी आदान प्रदान नहीं चलता । गिरनार साम तथा शुक यजुर्वेद मानते हैं ।

गिरनारी (हिं० वि०) गिरनार पहाड़का रहनेवाला । गिरफ्त (फा० स्त्री०) ग्रहणकी क्रिया या भाव, पकड़ । गिरफ्तार (फा० वि०) १ जो पकड़ा या कैद किया गया हो । २ अस्त, असा हुआ ।

गिरफ तारी (फा० स्त्री०) गिरफ्त होनीकी क्रिया या भाव ।

गरवूटो । हिं० पु०) प्रंगूर-शेफा ।

गिरमिट (हिं० पु०) बढईका एक औजार, बड़ा बरमा ।

गिरवर (हिं० पु०) अष्ट पर्वत, बड़ा पहाड़ ।

गिरवां—युक्त प्रदेशके बांटा जिलेकी तहसील । यह अक्षा० २४° ५६' एवं २५° २८' उ० और देशा० ८०° १७' तथा ८०° ३४' पू०में अवस्थित है । क्षेत्रफल ३३४ वर्ग मील और लोकसंख्या प्रायः ७७००६ है । इसमें एक नगर और १७६ गांव बसते हैं । सालगुजारी कोई ११६०००

और ग्रैष १८००० है। पश्चिममें केन नदी प्रवाहित है, भूमि उर्वरा है।

गिरवान (हि० पु०) देवता, गीर्वाण, देव, सुर।

गिरवाना (हि० क्लि०) दूसरे द्वारा गिरानेका काम करना।

गिरवी (फा० वि०) उ प्रक, रहन।

गिरवीदार (फा० पु०) उ वक्र लेनेवाला मनुष्य, महाजन।

गिरवोनामा (फा० पु०) बन्धकका निजम लिखा हुआ पत्र, रहननामा।

गिरवोपत्र (फा०) गिरवोनामा देवा।

गिरह (फा० स्त्री०) १ ग्रन्थि, गांठ। २ वज्र गांठ जहाँ दो चीजें आकर जुटो हैं। ३ एक गजका सीन्धवाभाग जो भवा दो इन्के समान होता है। ४ जयत्र, फीमा, खरीता। ५ फुज्तीका एक पेव। ६ कलैया, लन्टी।

गिरहकट (फा० वि०) जेव या गांठका रूपया सुराने वाला।

गिरहदार (फा० वि०) जिसमें ग्रन्थि हैं, गांठवाला, गठीला।

गिरहयाज (फा० पु०) एक तरहका कवुतर, जो मरको जोसे पृथ्वी पर खजर चारों ओर घूमता है।

गिरहर (हि० वि०) पतनी मुख, जो गिरनेवाला ही।

गिरहो (हि० पु०) गृह्णित्, गृह्यम्।

गिरा (फा० वि०) १ अधिका सूचवाला, मह गा। २ भारी। ३ अग्रिय।

गिरा (म० स्त्री०) १ गिर वा टापू। वाक्य।

“गो गिरा लकटा हुवा।” (अशकविनाय)

३ जिह्वा, जपान। ३ बोल, वचन। ४ सरस्वती देवी।

गिराना (हि० क्लि०) १ पतन करना। २ पृथ्वी पर डाल देना। ३ घटाना, ज़ास करना। ४ जलका डालू और उड़ना। ५ शक्ति या प्रतिष्ठाकी कमी कर देना। ६ किसी पदार्थको नियत स्थानमें ढटा देना। ७ सहसा उपस्थित होना।

गिरानी (फा० स्त्री०) म हगापन, मह गो। २ अकान। ३ अभाव, कमी। ४ किसी पदार्थमें पैटका भारोपन।

गिरापति (म० पु०) गणा।

गिरापति (म० पु०) सरस्वतीके पिता, ब्रह्मा।

गिराव (फा० पु०) तोपका गोला, जिसमें कोटो गालियाँ और छरें भी होते हैं।

गिरास (फा० पु०) गार देवा।

गिरासना—गमना देको।

गिरामी (हि० स्त्री०) एक प्राचीन जाति। इस जाति के मनुष्य बड़े उकैत होते थे, इनका वासस्थान गुजरात में रहा।

गिराह (अथ० पु०) जनजन्तु यात्र।

गिरि (म० पु०) गू ई किच। १ पथत, पनाड।

‘गिरेश टिप वाकतेसुगव ४ / सक् ११५११०’

गिरि पत्र मल। (मानव)

२ तान्त्रिक सन्यासी विधि।

मनुष्य वाह में गोर मुक्तिको गिराह।

हयैर समपवेन भावयेद यो गुरोपस ४

इहदेवी विधा भारी स गिरि परिकीर्त १” (तन्व)

अर्थात् जो मयटा कध वाह, वीराचारी, मुक्तकेय और नग्न रहते तथा सर्वत्र समभावसे भ्रवलीकन करते हैं एव अपनी इष्टदेवी ममभक्त कर समस्त स्त्रियोंके ऊपर अनुरोग प्रकाश करते वे ही गिरि ष्णलते हैं। ३ परि ब्राजकोकी एक उपाधि। शूद्राचार्यके प्रधान शिष्य आनन्द इस उपाधिके अधिकारी रहे। ४ नितरोगविशेष, आँखकी एक बीमारी। ५ गेन्दुक छोटे छोटे लडकीके खेलनेका लकड़ोका गेन्द। ६ मेघ।

“गिरवानाः उवा चम्यच न्” (सक ६१६११)

“गिरा मीधा” (स ४४)

७ पारैका एक टीप जिसका शोधन यदि न किया जाय तो खनिवालेका शरीर जड हो जाता है।

मप विव वाङ्गिरो च वापव भेदवि क दावसुगनिपारद १” (भाषप्रकाय)

८ दयानामो मप्रदायके अन्तर्गत एक प्रकारके मद्यामी। अशकदेखा। माङ्गनमियके शिष्य गिरि से इस सम्प्रदायका नामकरण हुआ है। उनमें कुछ लोग मठधारी महत हैं जो उस सम्प्रदायके प्रधान गिने जाते हैं। वर्तमान समय इस सम्प्रदायक बहुत मनुष्य वैष्णव धर्मावलम्बी हो गये हैं जो गिरिवैष्णवके स्यात हैं। उत्कलमें इस तरहके गिरि वैष्णव देखे जाते हैं।

ये गृहस्थ तथा शिष्यसे दान ग्रहण कर अपनी जीविका निर्वाह करते हैं। यशोर जिलेमें ये योगी वैष्णवसे प्रसिद्ध हैं। ये विवाह नहीं करते। (स्त्री०) ८ पूज्य, अष्ट।

(स्त्री०) गृ भावे द्वे किञ्च । १० निगरण, भक्षण। खाना। ११ बालमूर्षिका, चुड़िया।

गिरिक (म० पु०) गिरी कलासे कायति कौ-क। १ शिव, महादेव।

“गिरिको हि... जो हतः जीवः पुदगल एव सः।” (भारत १२:६८ अ०)

(त्रि०) गिरी भवः गिरिकन्। २ पर्वतजात, वह जो पर्वतसे उत्पन्न हो।

गिरिकच्छप (सं० पु०) गिरी पर्वतस्थदरीषु कच्छपः। कच्छपविशेष, एक प्रकारका जलचर कछुआ। इस तरहका कच्छप सदा पर्वतके गह्वरमें रहता है। इस कच्छपको गृहमें रखनेसे पिशाच प्रभृति अपदेवताका उत्पात निवारण होता है।

‘तरचे शम्भू’ हा च रघू व गिरिकच्छपः।

आजधूसः विहालय कागः कृषी इय विद्रुः ॥

वेधामेतानि तिष्ठन्ति गृह्य गृहमेधिनाम्।

तान्प्रयापयन्तस्मिन् विंशतानोः भुद्राकरोः ॥’ (भारत अ० १२१ अ०)

गिरिकण्टक (सं० पु०) गिरी कण्टक इव तड्डकत्वात्। वज्र, विजली।

गिरिकदम्ब (सं० पु०) गिरीः समुपन्नः कटम्ब मध्यलो०। नीप, धाराकटम्ब, कटम।

गिरिकदम्बक (सं० पु०) गिरिकदम्ब स्वार्थे कन्। नीप, धाराकदम्ब, कटम।

“देवदारु वषा हिद्र, कुष्ठं गिरिकदम्बकम्।” (सुश्रुत २२ अ०)

गिरिकदली (सं० स्त्री०) गिरिजाता कदली मध्यलो०। पार्वतीय कदली, पहाड़ी केला। इसका पर्याय—गिरिरम्भा, पर्वतमोच, आरण्यकदली, बहुवीज, वनरम्भा, गिरिजा और गजवल्लभा है। इसका गुण—शीतल, मधुरस, बल और वीर्यवृद्धिकरः तृष्णा, पित्त, दाह और शोथनाशक है।

गिरिकन्दर (सं० पु०) गिरीः कन्दरः, इ-तत्। पर्वत-गह्वर, पहाड़की कन्दरा।

गिरिकर्णा (सं० स्त्री०) गिरिकर्ण-टाप। अपराजिता लता।

गिरिकर्णिका (सं० स्त्री०) गिरिः कर्ण इव यस्याः

बहुव्री०। गिरिकर्ण-रूप टाप-व्रत इत्वंच। १ पृथ्वी। गिरेर्वान्मूर्षिकायाः कर्ण इव कर्णाऽन्वय्याः गिरिकर्ण-ठन्-टाप। २ श्वेतकिण्विहा वृक्ष, लटजारा ३ अपराजिता लता। ४ श्वेतकटभी, छाटः रज्जुजोत। ५ आरम्बध, अमलताम।

गिरिकर्णी (म० स्त्री०) गिरेर्वान्मूर्षिकायाः कर्ण इव कर्णः पत्रमस्या बहुव्री०। गिरिकर्ण-टाप। १ अपराजिता लता।

“विप्लवगिरिकर्णा च इ-तत्पठोः गिरिकर्णाः” (भाट्टप्रकाश)

२ यवाम, जवामा। (अथर्वशिखा १)

गिरिका (सं० स्त्री०) गिरि स्वार्थे-ठन्-टाप। १ बाल-मूर्षिका, चुड़िया। २ पुरुवंशीय यमु राजाकी स्त्री। महा-भारतमें इसकी कथा इस प्रकार है—पुरुवंशमें वसुनामके एक प्रबल पराक्रमगाली राजा रहे। इनका दूमरा नाम उपरिचर था। महाराज वसुने समस्त शत्रुओंको पराजित करनेके बाद कठोर तपस्या आरम्भ की देवता-गणने इनकी कठोर तपस्यामें भयभीत होकर तपस्या निवृत्त करनेका उनसे प्रार्थना की, एवं उमा समय देवराज इन्द्रने नरराज वसुको एक आकाशगामो रथ प्रदान किया। महाराज वसु उम रथ पर चढ़कर आकाशको आने लगे। उनकी राजधानीके निकट शक्तिमती नामकी एक नदी प्रवाहित थी। कोलाहल नामके एक सचेतन पहाड़ने कामान्ध हो शक्तिमती पर आक्रमण किया। महाराजने उम पर्वतका इस तरह अन्याय व्यवहार देखकर उसे पदाघात किया। राजाके पदाघातसे वह दुष्ट पर्वत विदीर्ण हो गया और उम प्रहारमागेसे वेगवती शक्तिमती नदी कल कल गञ्ज करती हुई वह निकली। ममयानुसार नदीके गर्भमें कोलाहलकी एक कन्या और एक पुत्र उत्पन्न हुए। उम कन्याका नाम गिरिका पड़ा। महाराज वसु कन्याको रूप-लावण्य देख सुग्ध हो गये और उससे विवाह कर लिया। यह गिरिका महाराजकी अतिशय प्रियतमा रही।

गिरिकाण (सं० पु०) गिरिका अक्षिरोगविशेषण कारणः एकनयनहीनः इ-तत्पु०। गिरिनामक चक्षुरोगसे जिसकी एक आँख नष्ट हो गई हो।

गिरिकानन (सं० पु०) पहाड़ी जङ्गल।

गिरिकूट (स० पु०) पहाडकी गिखर, चोटी ।
 गिरिकोठजफल (स० लो०) इन्द्रयव ।
 गिरिचित् (स० त्रि०) गिरिणा चियति अचतिष्ठते चि
 क्तिप् तुगागमय, अलुप्तसमाम यहा गिरो गिरिवदुवत-
 प्रदेसि चियति आतिष्ठते गिरि चि क्तिप् । १ जी वाक्य-
 में अचस्थित है विष्णु । २ जो पर्वतके जैसे ऊच चे स्थान
 पर वास करतें हैं ।
 "अ विष्णवे पुत्रमंतु मन्त्र गिरिचिप उदगायाव हवे ।" (अ० १ । ३४ २)
 "गिरिचिप गिरिवाचि गिरिवदुवतप्रदेसि वा तिष्ठते ।" (भाव०)
 गिरिचिप (स० त्रि०) गिरि चिपति गिरि चिप क । १ जिम
 को पर्वत उठानेको शक्ति हो । २ श्वफल्क राजाके पुत्र
 और अक्रूरके भाई । (चरि० ५)
 गिरिगङ्गा (स० स्त्री०) नदीविशेष, एक नदी जो पहाड
 से निकलती है ।
 गिरिशुड (स० पु०) गिरो शुड इव । कन्दुक, गेन्दुक,
 गेन्द ।
 गिरिगैरिफधातु (स० पु०) गिरिस्थित गैरिफधातु, मध्य
 पदलो० । पर्वतस्थित गैरिफ धातु । एक तरहकी लान
 खड्डो ।
 "अथापहमेऽथभ्रमर गिरिगैरिफधातुवत् ।" भारत)
 गिरिगोचर (स० स्त्री०) श्वैतमकंठ, उजला चन्द्र ।
 गिरिचर (स० त्रि०) गिरो चरति चर ट । १ पर्वतचारी,
 जो पहाड पर घिचरण करता है ।
 गिरिचर इम नाम प्राक्कार विभक्ति (मकुल्लवा)
 (पु०) २ चोर । ३ चोरगणोंके अधिपति रुद्रदेव ।
 "मम सङ्घोपिले गिरिचराय । (वाचस्पत्ये १ (१०११))
 गिरिचारिन् (स० त्रि०) गिरो चरति अचिदित भ्रमति गिरि-
 चर णिनि । पर्वतचारी, पर्वत पर भ्रमण करनेवाला ।
 गिरिज (स० स्त्री०) गिरो जायते गिरि जन ड । १ शिलाजतु,
 शिलाजीत । २ लीह, लोहा । ३ अश्व, अवरक । ४ गैरिक,
 गेरू । (पु०) ५ पार्वतीय मधुकहज, एक प्रकारका
 पहाडी मड्ड्या । इमका पर्याय गौरगोक, और स्वल्पपरक
 है । ६ काञ्चनारहज । (त्रि०) गिरि वाचि जायते गिरि-
 जन ड अतुकुसमा० । ७ जो वाक्यसे उत्पन्न हो, वाक्य
 जात । ८ पर्वतजात, पहाडसे उत्पन्न होनेवाला ।
 गिरिजधातु (स० पु०) गैरिक, गेरू ।

गिरिजा (स० स्त्री०) गिरो जायते गिरि जन ड टाप् ।
 १ पार्वती, हिमालय पर्वतकी कन्या, दुर्गा ।
 'यन् यन् गिरिजा यदु नामाचारागतम् ।' (कामोदय १ (१०))
 २ गङ्गा । ३ चकोतरा । ४ मातुलुङ्गहज, विजौरा ।
 ५ श्वैतुलुङ्गा । ६ त्रायमाण लता । ७ मल्लिका, चमेली ।
 ८ गिरिकदली, पहाडी केला ।
 गिरिजाकुमार (स० पु०) १ कार्तिकेय । २ शङ्कराचार्यके
 एक शिष्य ।
 गिरिजातनय (स० पु०) गिरिजाया, पार्वत्या तनय,
 ६ तत् । पार्वतीनन्दन, कार्तिकेय ।
 गिरिजातेज (स० स्त्री०) अश्वधातु, अवरक ।
 गिरिजापति (स० पु०) गिरिजाया पति, ६ तत् ।
 पार्वतोपति शिव ।
 गिरिजामल (स० स्त्री०) गिरिजेपु अमल, ७ तत्, यहा
 गिरिजाया मल वीजरूप, ६ तत् । अश्वक, अवरक ।
 अश्वक द्वेष)
 गिरिजावीज (स० स्त्री०) १ अश्वक । २ अश्वक, अवरक ।
 गिरिजाल (स० स्त्री०) गिरिजान, ६ तत् । गिरिमूड,
 पर्वतकी पत्ति ।
 'गिरिजापतिर्गिरि (रामा ४३३११)'
 गिरिजाहज (स० स्त्री०) शिलाजतु, शिलाजीत ।
 गिरिज्वर (स० पु०) गिरि ज्वरति गिरिज्वर णिच् अच् ।
 वज्र ।
 गिरिणख (स० पु०) गिरिणख खण्ड, ६ तत् । पर्वत-
 का एक अश्व ।
 गिरिणदी (स० स्त्री०) गिरिसभूता नदी, मध्यापदलो० ।
 पार्वतीय नदी, पहाडसे निकली हुई नदी ।
 गिरिणह (स० त्रि०) गिरोनह आवह, ७ तत् । पर्वत-
 से आवह हो, जो पहाडसे छिपा हो ।
 गिरिणितम्ब (स० पु०) गिरिणितम्ब ६ तत् । पर्वतके
 पार्व देण ।
 गिरित (स० त्रि०) गिरि क्त । भक्षित, खाया हुआ ।
 गिरिव (स० पु०) गिरो कौलासे स्थित खा यते गिरि व-
 क । १ रुद्र, शिव ।
 'गिरि गिरिव तो रुद्र मा दि कोपय जनम् ।' (वाचस्पत्ये १ (१०११))
 गिरो कौलासे स्थिते मन्वादि स पदे वनि गिरिव ।' (सरोज)
 २ ससुद्र, जब रुद्रसे पर्वतके पर काटे गये थे तब

सैनिक पर्वत समुद्रमें जा लिपा था, इसीसे समुद्रका नाम गिरिज पड़ा।

गिरिदुर्ग (सं० ली०) गिरौ दुर्ग, इ-तत् यद्वा 'ग ररेव दुर्ग'। पहाड पर बना हुआ किला। पर्वतके ऊपर और मध्य ही कर प्रवाहित नदी या प्रस्त्रवणादि युक्त स्थान पर यह दुर्ग निर्माण करना चाहिये, और ऊपर जानिके लिये एक नुद्र रास्ता भी रहे। दुर्गस्थानमें भांति भांतिके शस्यादिसे पूर्ण जैव और उद्यान प्रभृति भी प्रस्तुत करना उचित है। सर्व प्रकारके दुर्गसे गिरिदुर्ग ही प्रशस्त माना गया है। (मन ७१० कृष्क)

गिरिहार (सं० ली०) गिरे हारि इ-तत्। पर्वत ही कर जानिका रास्ता।

गिरिधर (सं० पु०) १ विष्णु। २ एक वेदान्तिक। इन्होंने संस्कृत भाषामें ब्रह्मसूत्राणुभाष्यविवरण और शुद्धाहं तमार्त्तगडकी रचना की है। ३ एक संस्कृत वास्तुशास्त्र-रचयिता। ४ विभक्त्यर्थ 'नर्णय' नामक संस्कृत व्याकरण-प्रणेता, इनके पिताका नाम वागीश रहा। ५ एक वैष्णव कवि। इन्होंने १६७८ शककी आपाढ़ माममें गीतगोविन्दका पद्यानुवाद बंगला भाषामें रचा था। जो अत्यन्त सरल और मधुर जान पड़ता था।

गिरिधर—हिन्दी भाषाके एक कवि। उनकी कविता इस प्रकार है—

“लासन दस रङ्गे हरिसंग रजनी जागत।

० कमल प्रफुल्ल हीने भये डगमगात टटै दूर दूर देवत लाज साजत ॥

रति रस वस केनी चसके चाखे चंस हंस कानन कोने लागत।

जोवन गिरिधरके प्रभु समुद्र तरङ्ग भङ्गोवन काजत ॥”

गिरिधर कविराय—हिन्दी भाषाके एक कवि। १७१३ ई० की बाराबंकी जिलेके हीलपुर ग्राममें इनका जन्म हुआ। इन्होंने नैतिविषयक अच्छी कविता लिखी है। गिरिधर कविरायकी कुण्डलिया लोकप्रसिद्ध है।

गिरिधर गोस्वामी—जर्ध्वपुण्ड्रमाहात्म्य नामक संस्कृत ग्रंथकार।

गिरिधरदास—१ रामकथामृत नामक संस्कृत ग्रन्थकार।

२ दिल्लीनिवासी एक भारतवर्षीय कवि। इन्होंने १७२२ ई०को हिन्दी भाषामें रामायणकी रचना की है। इनकी

भाषा सरल, मधुर और ओजोगुणविशिष्ट है। इन्होंने तुलसीदास एवं अपने ग्रन्थके प्रमाण लि कर हिन्दी भाषामें एक व्याकरण प्रणयन किया है।

गिरिधरण (सं० पु०) श्रीकृष्ण।

गिरिधरमिश्र—दृगगोलवर्णन नामक संस्कृत ज्योतिःशास्त्रकार।

गिरिधरलाल—हिन्दी भाषाके कोई कवि। उनकी कविता नीचे लिखी जैसी होती थी—

“यहें बड नम लान लान रोरे कारे कारे भोग भोग संसार ॥

अति रस चातुर भये छे तियकिसस जाके दग देके माथ स्वप्न लकाय छे ॥
कौनों देखियत सबो तोनों पाइयत मुख देखके दरद दुरत तैर निटि जान छे
एतन गिरिधर पिय भौवो नकर किये आजेके जमान मानो मानो भरे जगत छे

गिरिधर सिंह—एक राजपूत मामन्त। ये सम्राट मुहम्मद शाहके राजत्व समयमें मानवदेशके शासनकर्त्ता थे। १७२८ ई०को पेशवा वाजोरावके साथ लडाईमें इनकी मृत्यु हुई। महाराष्ट्र इतिहासमें ये गिरिधर बहादुर नामसे प्रसिद्ध हैं।

गिरिधातु (सं० पु०) गिरिधातुः, इ-तत्। उपधातुविशेष, गैरिक, गेरूमट्टी।

गिरिधारण (सं० पु०) श्रीकृष्ण।

गिरिधारी—हिन्दी भाषाके कोई कवि १८४७ ई०को वैजवाड़ेके सातनपुर-ग्राममें उनका जन्म हुआ। यह जातिके ब्राह्मण थे।

गिरिधारी भाट—हिन्दी भाषाके एक कवि। वह भांसी जिलाके मऊ-रानीपुरामें रहते थे १८८३ ई०को यह विद्यमान थे।

गिरिधि(डी)—छोटा नागपुरके हजारीबाग जिलान्तर्गत एक उपविभाग। यह अक्षा० २३' ४४' तथा २४' ४८' उ० और देशा० ८५' ३८' एवं ८६' ३४' पू०के मध्य अवस्थित है। ईष्ट-इण्डियन रेलवे कम्पनीका मधुपुर शाखा गरि तक फैली है। यहां उक्त कम्पनीका एक स्टेशन है। गिरिडीके निकट करहरवाड़ी नामक स्थानमें कोयलेकी एक खान है। इस उपविभागका भूमिप रमाण २००२ वर्ग मील है। लोकसंख्या प्रायः ४१७७८७ है। यहां ३४०८ ग्राम और प्रायः मनुष्योंके गृह हैं। उस उपविभागमें एक दोवानो और दो फौजदारी अदालत एवं

उसके अन्तवर्ती पचम्बा, गवान, करग्दी, कोदर्म और दुमुर्ही स्थानोंमें एक एक ग्राम है। यहकी जनवायु उत्तम होनेके कारण बहुत मनुष्य स्वास्थकी उन्नतिके लिये यहाँ आकर रहते हैं। यह उपविभाग गिरिडी नामसे भी मगहर है।

गिरिध्वज (स० पु०) गिरिनाशक ध्वज वज्ररूप यस्य बहुव्री० । इन्द्र ।

गिरिनख (स० पु०) गिरिनख शब्दः ।

गिरिनगर (स० स्त्री०) गिरिनार पर्वत पर वसा हुआ एक नगर । यह स्थान जैनियोंका पवित्र तीर्थ माना गया है।

‘गिरिनगरमन्व २२ “गिरिनारोऽन्वयमवशब्दात्” (इन्द्र० १४७०)

गिरिनदी (स० स्त्री०) गिरिनदी शब्दः ।

गिरिनद्याटि (स० पु०) गिरिनदी आदिर्यस्य गणस्य बहुव्री० । गिरिनदी, गिरिनख, गिरिनद, गिरिनितम्ब, चक्रानदी, चक्रानिनम्ब, तूर्यमान प्रभृति शब्दों गिरिन द्याटिगण कहते हैं।

गिरिनन्दिनी (स० स्त्री०) गिरिहिमालयस्य नन्दिनी । १ पार्वती, दुर्गा । २ गङ्गा । ३ नदी ।

‘कानि गिरिनन्दिनीं पृथक्पृथक्मात्रिणीं’ (रघु० ४१५२)

गिरिनाथ (स० पु०) महादेव, शिव ।

गिरिनितम्ब (स० पु०) गिरिनितम्ब शब्दः ।

गिरिनिम्बगा (स० स्त्री०) गिरिमन्धवा निम्बगा । पार्वतीय नदी, पहाडसे निकली हुई नदी ।

गिरिनिम्ब (स० पु०) गिरिसम्भूत निम्ब । १ महा-निम्ब वृक्ष वकायनका गाछ । २ कौटर्भनिम्ब ।

गिरिपत्र (स० पु०) महापत्रि व, वकायन ।

गिरिपाटिका (स० स्त्री०) कपिकच्छु ।

गिरिपीलु (स० पु०) गिरिसम्भूत पालु । पुरुषकवृक्ष, फालमा

गिरिपुर (स० स्त्री०) आनर्त्त देशान्तर्गत एक नगर ।

शोभन स्थली ।

गिरिपुष्पक (स० स्त्री०) गिरिजात पुष्पक । शैलज, पथरकोड नामका एका पोषा ।

गिरिपृष्ठ (स० स्त्री०) गिरि पृष्ठ, इ-तत् । पर्वतके ऊपरका भाग ।

गिरिप्रस्थ (स० पु०) गिरि प्रस्थ, इ-तत् । पर्वतके उपरिस्थ समतल स्थान ।

गिरिप्रपात (स० पु०) गिरि प्रपात इ-तत् । पर्वतके शृङ्खल उच्चस्थान ।

गिरिमिया (स० स्त्री०) गिरि प्रियोऽस्या, बहुव्री० । चमरौगया, सुरागाय ।

गिरिवान्धव (स० पु०) गिरिवान्धव यन्मुख्यस्य, बहुव्री० । शिव, महादेव ।

गिरिवुध्न (स० स्त्री०) पहाडके उपर रहनेवाला पहाड पर जम्मा हुआ ।

गिरिवुधा (स० स्त्री०) गिरिवुध्न इव यस्या बहुव्री० । तत टापु, जन, पानी ।

• “गिरिवुधा उवाच व । (गतपथराहण २४।१।१०)

गिरिभट्ट—ग स्कारक्रीमुटी नामक स स्फुट ग्रन्थकार ।

गिरिभिद्र (स० पु०) गिरि भिनत्ति भिद्र क्तिप् । १ हृत्त्वशिष्य, पाषाणभेदक । २ इन्द्र । (त्र०) ३ पर्वतके विदीर्ण करनेवाला । (काण्ड० श्लो १३।१।१२०)

गिरिभू (स० स्त्री०) गिरौ भवति भू क्तिप् । १ पर्वतसे उत्पन्न क्षुद्र पाषाणभेदक । २ पार्वती । ३ गङ्गा । गिरिभू, इ-तत् । ४ पर्वतभूमि, पहाडों जमीन ।

(शार्दूलश्रमती ६।१४)

(त्रि०) ५ पर्वतोरपन्न, जो पर्वतसे उत्पन्न हो ।

गिरिभेद (स० पु०) गिरि भिनत्ति गिरि भिद्र चण् । पाषाणभेदकवृक्ष, हिमसागर ।

गिरिभनोहर (स० पु०) आरम्बधवृक्ष, अमलताम ।

गिरिभद्रिका (स० स्त्री०) गिरिजाता-सन्निकेव मध्यापदनी० । कृत्तवृक्ष, कोरिया ।

गिरिमान (स० स्त्री०) गिरिरिव मान परिमाण यस्य, बहुव्री० । १ जिसका परिमाण पर्वतके सदृश हो । (पु०) २ हस्ती, गज ।

गिरिमान (स० पु०) गिरौ माल सम्बन्धीऽस्य बहुव्री० । बाधकवृक्ष ।

गिरिमानपञ्चक (स० स्त्री०) आरम्बधादि पाचन ।

गिरिस्तु (स० स्त्री०) गिरिस्तु, इ-तत् । १ गैरिक, गेरु मट्टि । २ पार्वतीय शक्तिका, पहाड पर की मट्टी ।

गिरिस्तम्भव (स० स्त्री०) गेरुमट्टी ।

गिरिसेद (स० स्त्री०) गिरिसेद इव सारोऽस्य बहुव्री० । विटसुदिर, बबूलवृक्ष ।

गिरियक (सं० पु०) गिरिं याति गिरि-या क ततः
संज्ञार्थं कन् । गिरुक, एक प्रकारकी जड़ ।

गिरिया—बङ्गालके मुर्शिदाबाद जिलेमें जङ्गीपुर मय
डिविजनका रणक्षेत्र । यह अक्षा० २४' ३०' उ० और
देशा० ८८' ६' पू०में सूतीसे दक्षिण अवस्थित है । १७४०
ई०को अलीवर्दी खाँ तथा नवाब सरफराज खाँ और
१७६३ ई०को नवाब भीर कामिस और ईष्ट इण्डिया
कम्पनीसे वहाँ बड़ी लड़ाई हुई ।

गिरियाक (सं० पु०) १ गिरियक देखी ।

२ पटना जिलेके अन्तर्गत एक ग्राम । यह अक्षा०
२५' २ उ० और देशा० ८५' ३२' पू०में पञ्चान-नदीके
उपकूल पर अवस्थित है । लोकसंख्या प्रायः २४३ है ।
इस नदीके पूर्व तीर ग्रामके निकट एक पर्वतके उत्तर
पूर्वमें बहुतमी प्राचीन कीर्त्तियोंके ध्वंसावशेष देखे
जाते हैं । यहाँ १२ फुट प्रशस्त एक प्रस्तरमय रास्ता आज-
तक भी वर्तमान है जिस रास्तेसे गाड़ी घोड़े आदि
आसानीसे आजा सकते हैं । इस चुट्ट पर्वतके पश्चिम भाग
पर प्रस्तर निर्मित बहुतसे स्तम्भ और मन्दिरके भग्ना-
वशेष दृष्टिगोचर होते हैं । पर्वतके पूर्व भागमें ४५ फुट
चतुरस्र एक वेदो है जो 'जरामन्ध चवतुर' नामसे
विख्यात है । इस वेदोके ऊपर ५५ फुट ऊँचाईका एक
दृष्टकनिर्मित स्तम्भ है जिसकी परिधि ६८ फुट है । बहु-
तोंका कहना है कि प्राचीन समयमें इस स्थान पर जरा-
सन्धका प्रमोदगृह रहा । प्रवाद है कि भगवान्
श्रीकृष्ण जरामन्धसे लड़नेके लिये इसी स्थान पर नदी
पार हुए थे, इसी कारण आजकल भी बहुत मनुष्य
कार्तिक मासमें इस नदीमें स्नान करने आते हैं । उक्त
पञ्चान नदीके दूसरे पारमें गिरियाक पर्वत है । इस स्थान
पर जरामन्धकृत बहुतसी कीर्त्तियोंके ध्वंसावशेष देखे
जाते हैं ।

गिरिरम्भा (सं० स्त्री०) गिरौ समुत्पन्ना रम्भा मध्या-
पदलो० । गिरिकदली, पहाड़ी केला ।

गिरिराज (सं० पु०) गिरिषु राजते राज-क्तिप् ७-तत् ।

१ पर्वतच्छेद जंघा पहाड़ । २ हिमालय ।

गिरिराज—युक्त प्रदेशके मथुरा जिलेमें गोवर्धननगरका
निकटस्थ पर्वत । यह अक्षा० २७' २८ तथा २७' ३१ उ०

और देशा० ७७' २६ तथा ७७' २६ पू०के मध्य पड़ता
है । इसका संस्कृत नाम अन्नकूट है ।

गिरिवर्तिका (सं० स्त्री०) गिरिममुत्पन्ना वर्तिका मध्यपद-
लो० । पार्वतीय पत्तविशेष ।

गिरिवासी (सं० पु०) गिरिं वासयति सुरभी करोति गिरि-
वासि-ग्निनि । १ हस्तिरुन्द वृक्ष २ पर्वतवासी ।

गिरिव्रज (सं० स्त्री०) गिरीणां पञ्चानां व्रजो यत्र, बहुव्री० ।

१ मगध देशान्तर्गत एक प्राचीन नगर । कुशात्मज वसु-
ने यह नगर स्थापन किये रहे । यह नगर गङ्गा तथा
शोण नदीके सङ्गमस्थल पर अवस्थित था । जगमन्धके
समय यह मगधकी राजधानी थी । यह चारो ओर वैभार,
वृषभ, ऋषिगिरि तथा चैत्यक नामके पर्वतसे घिरे रहने-
के कारण शत्रुओंका व्रज जाना असम्भव था ।

(भारत समा २० पृ०) १ इन्द्रशब्दमें इन्द्रा विद्यत विद्यत देखी ।

२ केकयराज अश्वपत्तको राजधानी । केकय देखी ।

गिरिश (सं० पु०) गिरौ गीते गिरि-शी-ड, यद्वा गिरिरस्यस्य
वस तत्वेन गिरि अस्यर्थं श । (श्रीमार्जुनसमवादिपिच्छादिभ्याः शने-
लभः । पा ५।२।१००) अथवा गिरिं तत्सदृशं कर्माशयं श्रयति
तम्बु करोति गिरि शी-ड । शिव ।

गिरिशचन्द्र घोष—कलकत्ता नगरके वागवाजारमें वसु-
पाड़ापलोस्य सम्भ्रान्त कायस्य कुलोद्भव स्वर्गीय नोनकमल
घोषके संभले पुत्र । सुप्रसिद्ध नाट्याचार्य तथा एक महा
कवि ।

१८४४ ई० (फाल्गुन शुक्लाष्टमी सोमवार)को इनका
जन्म हुआ । पूर्ववर्ती कोई एक कन्याओंके पीछे पुत्र
होनेसे गिरिशचन्द्रका अत्यन्त आदर था । स्थानीय पाठ-
शालामें प्राथमिक शिक्षा पूरी करके यह ७वर्षको अवस्था
पर गौरमोहन आर्यकी औरिएण्टल सेमिनारीमें भर्ती हुए
वहाँ बङ्गला विभागमें थोड़े दिनोंमें ही पारदर्शिता लाभ
करके इन्होंने अंगरेजी विभागमें योग दिया और शीघ्रही
शिक्षकोंके प्रियपात्र बन गये । कुछ दिनोंमें ही उनके
पिता और माता दोनोंका मृत्यु हुआ । उस समय इन-
का वयस १४ वर्ष मात्र था । संसारमें अन्य कोई पुरुष
अभिभावक जैसा न रहनेसे १७ वर्षकी उम्रमें ही प्रे-
शिका अग्रेही पर्यन्त पाठ करके उन्हे विद्यालयका संस्व
छोड़ना पड़ा । इसी बीच १६ वर्षकी अवस्थामें उन्होंने
विवाह ही चुका था । परन्तु यह लिखने पढ़नेमें लगे

रहे। अपने 'भव जज भाई ब्रजविहारी भोमक कहनेसे यह किताबके कीड़े बन गये, विश्वविद्यालय परीक्षाको छोड़ अपने मनके पुस्तक पढ़ने और बराबर ज्ञानमञ्चय करने लगे। अग्रजी कविताका माटभाषामें अनुवाद चकरानेकी जगत इनमें बहुत थी। अन्यान्य विषयोंकी अपेक्षा साहित्य, इतिहास और दर्शन में अधिक ध्यान था। मरते समय तक इनकी ज्ञानार्जनप्रवृत्ति प्रबल रही। यह अच्छे नाटककार तथा अभिनेता भी थे। किन्तु नाट्यालयके असम्बन्ध कार्योंमें यह अब कभी भी समय पाते कोई न कोई पुस्तक वा यामयिक पत्रिकादि पढ़नेमें लग जाते थे। गिरिशचन्द्र बहुत वर्ष तक एशियाटिक सोसाइटीके सदस्य रहे। शहरमें यह कई पुस्तकालयोंको चम्दा देते थे। बाल्यकालसे ही माटभाषा पर इन्हें बड़ा अनुराग था। पितामहीसे किष्का सुनना और रामायण तथा महाभारत पढ़ना इनकी बहुत अच्छी लगता था। वैष्णव भक्तिकी धर्म सञ्ज्ञेत उनके मनमें अत्यन्त प्राग्य बहाता था। कवि होनेकी वासना उनके मनमें अत्यन्त बयसको भी उठी थी।

२० वर्षकी उम्रमें गिरिशचन्द्रने एटकिनसन टिन टन कम्पनीको लयादवारोंको और थोड़े दिन बाद ही हिमाचल किताबमें होशियार हो गये। फिर उन्होंने कितने ही सोदागरी टफतरोंमें खजांचीका काम किया। वहाँ भी सोका मिलने पर यह पढ़ने लिखनेसे चूकते न थे। १८६० ई० की २४ वर्षका उम्रमें पहले इन्होंने शांकोनाकी एक नाटकमण्डली बनायी उसमें माइकेल मधुसूदन टक्का 'शर्मिष्ठा' नाटक अभिनयके लिये मनोनीत हुआ। इन्होंने उसके जो गाने बनाये, पहले रूपये थे। उसके बाद नाटक लिखनेकी और यह भुके। १८६६ ई०को इन्होंने अर्धतनिक नाट्यसम्प्रदाय (Baghbar Atmteu Theatre) कागशाशरमें प्रतिष्ठित किया। इन्हीं की तालीमसे 'सधवाको एकादशो खिल हुआ। कलकत्ते के कितने ही गण्यमान्य मञ्जनोंने उसकी बड़ी प्रशंसा की थी। फिर 'नोनावती' आदि दूसरे अभिनय होने पर धुनका सुख्याति उत्तरीत्तर पठने लगी। इन्होंने सणा लानो, 'मिचानादवध' 'गिरिहवन' आदि कई अच्छे अच्छे पुस्तक वा नाटक लिखे हैं। इस समय तक यह आफिसमें

बुक कीपारी (बही स्वतिका काम) करते रहे। फिर भागलपुर गये, यहाँ भी यह कविता बनाते थे। फिर कलकत्ता आ करके पार्कर कम्पनीमें १५०, १० मासिक पर नोरो की। किन्तु इस बार उनकी मति पलटी और उन्होंने नामके लिये डेढ़ सो की नोकरी छोड़ सौ रुपये माह वारकी थियेटरकीम नजरों कर ली। इस समयमें वेद एक वारगी ही नाट्यालयके काम काजमें पढ़ गये और नयी नयी बालके नाटक बनाने लगे। 'रावणवध' प्रमुख इनके बनाये नाटक सुप्रसिद्ध है।



गिरिशचन्द्र घोष।

१८६३ ई०की उन्हीं ने कलकत्तेकी बोर्डन स्ट्रेट पर विख्यात 'थार थियेटर' खड़ा किया। इन्हींके सदुद्योगसे नाट्यशाला धर्मप्रचारका स्थान जैसी परिगणित हुई और जन साधारणकी यथा उस पर आकर्षित होने लगी। 'विश्वमङ्गल' आदि धन्याने उन्हें अपर जैसा बना रखा है। यह कोई ५० वर्ष नाट्य जगत्में पड़े रहे। इन्हीं ने कलकत्तेकी प्राय सब नाट्यशालाधर्मों काम किया था नाट्यशालाकी उन्नति कराना, उनके जीवनका व्रत और एकमात्र लक्ष्य रहा। -

कई पौराणिक नाटक लिखने पोछे यह सामाजिक खेल बनाने लगे। इन्होंने प्रायः सीता वनवास, दत्तयज्ञ, चैतन्यलीला, निमाई सन्यास, बुद्धदेवचरित, विल्वमङ्गल, रूपसनातन, नसीराम, प्रफुल्ल, हारानिधि, कालापहाड, करम तिवारी, फणीमणि, बलिदान, श्रीराज-उद-दौला, भीरकासिम, कृत्वपति शिवाजी, अशोक, गृहलक्ष्मी आदि अस्सी नाटक, नाटिका प्रहसन लिपिवद्ध किये हैं। उनके निम्न लिखित कई एक भागोंमें बाँट सकते हैं—
१ पौराणिक, २ ऐतिहासिक, ३ सामाजिक इत्यादि। इनके बनाये गीत भले बुरे सब लोग गाया करते हैं। गिरिशचन्द्रका उपाधि नाट्यमन्त्राट है।

यही नहीं कि उन्होंने नाट्य जगत्में ही परमोच्च पद पाया, वरन् प्रतिभाशाली व्यक्ति-जैसा नाम भी खूब कमाया। यह समाजके परम हितैषी, उपदेष्टा और पद्यप्रदर्शक थे। श्रीरामकृष्ण देवके संस्त्रवसे उनकी प्रतिष्ठा और भी बढ़ गयी। शैक्स पीयरका 'भाक वाथ' बङ्गलामें उल्टा करके इन्होंने जो कमाल किया है, अंगरेज लोग भी दांतके नीचे उंगली दवाते हैं। विज्ञानकी चर्चामें भी यह बहुत दिन लगे रहें। अपने महलमें वह होमिओपाथिक चिकित्सक-जैसे प्रसिद्ध थे।

१८१२ ई० फरवरीकी इन्होंने परलोक गमन किया। गिरिशचन्द्रराय—बङ्गाल प्रान्तीय नवद्वीपाधिपति राजा कृष्णचन्द्र रायके प्रपौत्र और ईश्वरचन्द्रके पुत्र। १८०२ ई०को पिताके मरने पर इनका वयस षोडश वर्ष मात्र रहा। उसी समयसे इनके हृदयमें धर्मज्ञान बढ़ने लगा। वयः प्राप्त होने पर कुछ काल विषयकार्य पर्यालोचना करके इन्होंने कर्मचारियोंको कार्य भार सौंपा। अपने आप धर्मानुष्ठानमें प्रवृत्त हुए और प्रथमतः नवद्वीपमें गङ्गा किनारे दृणाच्छादित कुटीरमें अवस्थान करके अनेक पुरस्करण किये। कृष्णनगरमें आनन्दमयी काली और आनन्दमय शिवका मन्दिर इन्होंने बनाया था। फिर इन्होंने उक्त मन्दिरोंके व्ययनिर्वाहार्थ कितनी ही निष्कर भूमि दे डाली। कुछ समय पीछे इन्होंने किमी रजनीकी स्वप्नमें देखा, मानो कोई देवता उनसे कहता था—“तम नवद्वीपके भागीरथीतीर पर भगवत्से रहते हैं, हमकी अपने निकेतनमें ले जा करके स्थापन करो।” दूसरे दिन

इन्होंने अमात्यां और कर्मचारियोंके साथ सुरधुनी तीर पर उपस्थित हो करके कोई निर्दिष्ट स्थान खोदनेकी आज्ञा किया था। उधर उधर खोदते किमी दानुकांमय भूखण्डके ३ तीन हाथ नाचे एक गोपालमूर्ति देख पड़ी राजा बड़े समारोहमें इस विग्रहको अपने घर लं गये और प्रतिष्ठित करके 'नवद्वीपनाथ' कहने लगे। उनके निचे इन्होंने एक मकान बन किया। फिर यह उनकी नित्यनैमित्तिक क्रिया आदिमें अपर्याप्त अर्थ व्यय करने लगे। इसी अमितव्ययिताके टोप और कर्मचारियोंकी कुमन्तव्यताके दिन दिन उनको सम्पत्ति घटने लगी, मौरुमी जमीन्दारीके ८४ परगनोंमें ७ परगने और थोड़ीसी निष्करभूमि ही बच गयी। प्रथमा मन्दिपीमें पुत्रादि नहीं हुए। माताका अनुरोधमें इन्होंने १८०८ ई०की फिर दारपरिग्रह किया और द्वितीय पत्नी भी पुत्रवती न होनेसे १८१८ ई०में शास्त्रीक विधिक अनुमार शोशचन्द्रको गोद लिया। उसी समय विलक्षण अर्थाभाव रहते भी इन्होंने नवद्वीपमें दो बृहत् मन्दिर प्रस्तुत करके एकमें भवतारिणो नामसे पापाणमयी कालीमूर्ति और दूसरेमें भवतारण नामक शिवकी प्रकाण्डमूर्ति प्रतिष्ठा की। १८४१ ई०की ५५ वत्सर वयसमें इन्होंने मानवलीलाको संवरण किया।

यह अति सूत्रो रहें और फारसी तथा संस्कृतमें अर्गल बातें कर सकते थे। इनमें दया तथा धर्मनिष्ठा यथेष्ट थी। सङ्गीतमें इन्हें विशेष व्युत्पत्ति रही। यह शास्त्रालाप और रङ्गस्थमें आनन्द अनुभव करते थे। इन्होंने अपनी सभाके कृष्णकान्त भादुड़ी नामक किसी ब्राह्मणको रसमागर उपाधि दिया। इन्हींके आज्ञापर लक्ष्मोकान्त न्यायभूषणकृतक “रघुपङ्क्ति” रचित हुई।

गिरिशन्त (स० पु०) शं सुखं तनोति शं तन इ शन्तः गिरौस्थितः शन्तः मध्यपदलो०, यद्वा गिरि वाचि मेघे वा स्थितः शन्तः अणुक्त्स०, अथवा अम गतौ अमति गच्छति जानाति अम क्तः अन्तः सर्वज्ञः इत्यर्थः गिरिशञ्चासी अन्तश्चेति कर्मधा०। शिव। (वाजसनेयसं० १६१२)

गिरिशय (स० पु०) गिरौ कैलासे शिवा श्री-अच्। शिव। (वाजसनेयसं० १६१२)

गिरिशायी (स० पु०) पार्वतीय पत्नि, पहाड़की चिड़ियां।

गिरिशाल (स० पु०) गिरी शालते शोभते शाल । अच् ।
 एक प्रकारका बाज पत्ती । (सधु.त)
 गिरिशालाङ्ग (स० पु०) प्रतुदपत्ती ।
 गिरिशालिनी (स० स्त्री०) गिरि शालयति शोभयति गिरि-
 शाल णिच णिनि, ततो डोप् । अपराजिता लता ।
 (वानप्रभुगण)
 गिरिशिखर (स० पु०) महाशकुल
 गिरिशृङ्ग (स० पु०) गिरे शृङ्गमाकरेण अश्रयम्य गिरि
 शृङ्ग अच् । १ गणेश । गणेशके शूड उत्तोलन करने
 पर पर्वतशृङ्गके आकारके जैसे मानूम पडता है । इस
 लिये गणेशनाम गिरिशृङ्ग पडा । (ह्यो०) गिरे
 शृङ्ग, ६ तत् । २ पतशिखर ।
 गिरिपट्ट (स० पु०) गिरो सोदति मद क्तिप् पत्व । महा
 देव, शिव ।
 गिरिशिखा (स० त्रि०) गिरो तिष्ठति गिरि-म्या क्तिप् पत्वञ्च ।
 १ पर्वतस्थायी । ' अच् । १ शिखा ' (पु०) २ महादेव,
 शिव ।
 गिरिसर्प (स० पु०) नितरस० । दर्शिकर जातीय सप-
 विगेष ।
 गिरिसार (स० पु०) गिरे सार, ६ तत् । १ लोह,
 लोहा । २ शिलाजल, शिलाजोत । ३ घड्ड, राड्डा ।
 ४ मलयपर्वत ।
 गिरिसारमय (स० त्रि०) गिरिसारस्य विकार' गिरिसार-
 मयट् । गिरिसारमे वनाया डुआ ।
 गिरिसिन्दूर (स० पु०) कृष्णानिडु रडो ।
 गिरिसुत (स० पु०) गिरे सुत, ६ तत् । मैनाकपर्वत ।
 गिरिसुता (स० स्त्री०) गिरे सुता, ६ तत् । १ पार्वती ।
 २ गदा ।
 गिरिस्ववा (स० स्त्री०) गिरे स्ववति स्र अच् टाप् ।
 पार्वतीय नदी, पहाडसे निकली हुई नदो ।
 गिरिस्नेह (स० पु०) शिलाजल, शिलाजोत ।
 गिरिह्ला (स० स्त्री०) गिरि बालमूषिकाकर्ण, ह्यति
 स्वर्द्धते तदाकारेण ह्ये क टाप् । १ अपराजिता लता
 २ बालमूषिका बुद्धिया ।
 गिरी (द्वि० स्त्री०) १ किमी धौजके भीतरका गुदा ।
 २ 'गिरि' देखो । ३ 'गिरी' देखो ।

गिरीन्द्र (स० पु०) गिरिरिन्द्र इव । १ हिमालय पर्वत ।
 गिरिरिन्द्र, ६ तत् । २ महादेव, शिव ।
 गिरियक (स० पु०) गिरियक निपातनात् दीर्घत्व ।
 गिरियक देखो ।
 गिरोश (स० पु०) गिरे कोनामम्य ईश, ६ तत् । १ कोनाम
 पति, शिव । गिरोणामीय 'ये' ठ, ६ तत् । २ हिमालय
 पर्वत । गिरा वाचा ईशः अधिपति, ६ तत् । ३ वृद्धपति ।
 गिरेवान (द्वि० पु०) गन्तमें पहननेका कपडेका वह
 भाग जो गरदनके चारो तरफ रहता है ।
 गिरेवा (द्वि० पु०) १ छोटी पहाडी । २ चढाईकी रास्ता ।
 गिरेग (स० पु०) १ ब्रह्मा । २ विष्णु ।
 गिरो (फा० वि०) रेहन, बंधक ।
 गिरोड—बराण प्रान्तके वर्धा जिलेका एक नगर । यह
 अक्षा० २० ४० उ० और देशा० ७८ ८ ३० पू० म वर्धा
 शहरसे ३० मील दक्षिणपूर्वको अवस्थित है । इसके
 निरुचवर्ती पर्वतमें शिख खाजा फरीद पीरका मकरवा
 है । स्थानीय हिन्दू श्रीर मुसलमान भक्त सर्वदा वहा
 जाया आया करते है । धार्मिक फरीद ३० बत्सरकाल
 फकीरके वेगमें भारतके नाना स्थान परिभ्रमण करके
 १२४४ इ०की वज्रा जा बसे थे इनके मध्यममें अनेक
 आसय घटनाए सुन पडतो है । पांच गाँवोंको आम
 दनीसे इस मकरवाका खर्च चलता है । यहा प्रति सप्ताह
 बाजार लगता है ।
 गिरिगिट (द्वि० पु०) गिरिगिट देखो ।
 गिरजा (फा० पु०) गिरजा देखो ।
 गिरा (फा० अन्व्य०) आमपान, चारों ओर ।
 गिरावर (फा० पु०) १ घूमनेवाला, दौरा करनेवाला ।
 २ कामकी देखु भाल करनेवाला ।
 गिराह्ला (स० स्त्री०) गिरि बालमूषिकाकर्ण आह्वयति
 स्वर्द्धते तदाकारेण गिरि या ह्ये क टाप् । अपराजिता ।
 गिर्वणस (स० पु०) गिरा वाचा वन्यते गिर-वन कर्मणि
 असृन् गत्व दीर्घभावय हन्त्स । १ देवविगेष । (त्रि०)
 गिरा वनन्ति सुषन्ति गिर वन कश्चि अस्नुन् । २ स्तव-
 कर्त्ता, स्तव करनेवाला ।
 गिर्वणस्यु (स० त्रि०) १ जो स्तव करता है ।
 गिर्वन् (स० स्त्री०) गिरा वनति स्तौति । स्तव करने
 वाली स्त्री ।

गिर्वाहस् (म० त्रि०) गिरा स्तुति वाचा उच्चार्त गिर्-वह-
असुन् निपातनात् नोपपदस्य दीघत्वम् । स्तुति वाक्य द्वारा
जिसका आह्वान किया जाय इन्द्रादि देवगण ।

गिल (सं० त्रि०) गिलति भक्षयति गिल-क । १ भक्षक
(पु०) २ मगर । ३ जंजीरी नीवू ।

गिल (हि० स्त्री०) १ मिट्टी । २ गारा ।

गिलकार (फा० पु०) वह मनुष्य जो गारा वा पलस्तर
करता है ।

गिलकारी (फा० स्त्री०) गारा लगाने या पलस्तर करने-
का काम ।

गिलगिया (हि० पु०) एक तरहकी तरकारी, नेनुवाँ ।

गिलगिट— काश्मीर राज्यके अन्तर्गत एक जिला और उप-
त्यका । यह अक्षा० ३५° ५५' उ० और देशा० ७४° २३'
पू०में समुद्रपृष्ठसे ४८४१ फुट उंचे अवस्थित है । यह
हिन्दूकुश पर्वतके दक्षिण-उत्तर टिग पर अवस्थित है ।
यसीन या गिलगिट नदी उपत्यकाका समस्त स्थान परि-
भ्रमण करके बुद्धजी नगरके ६ मील उत्तर मिन्धुनदसे
जा करके मिल गयी है । पहले इस नगरमें ८ दुर्गोंसे
परिवेष्टित समृद्धिशाली वासभूमि रही । यसीन और
चित्तालवाले राजाओंके परस्परमें लड़नेसे यह दुर्ग
विध्वस्त हुए और उसीके साथ समस्त गिलगिट उपत्यका
सिखोंके अधिकारमें चली गयी । यह जिला प्रायः ४० मील
विस्तृत है । इसका सदर गिलगिट शहर मिन्धुनदसे
२४ मील दूर है । मध्यस्थानकी उर्वरा और जलवायु
शुष्क और स्वास्थ्यकर है । पानी कम बसता है ।

इस स्थानका प्राचीन नाम सर्गिन बदल करके
पीछिको गिलित ही गया और सिखोंका अधिकार बढ़ने
पर गिलगिट पुकारा जाने लगा । आज भी शीन जातीय
स्थानीय अधिवासी उसको 'सर्गिनगिलित' कहते
हैं । प्राचीन प्रस्तरमन्दिर और बौद्ध कारुकार्यका
ध्वंसावशेष देखनेसे मालूम होता है कि ई० १५वीं
शताब्दीसे पहले यहाँ हिन्दू राजाओंका राजत्व रहा
लोग उन्हें 'रास' वा 'साही राय' उपाधि द्वारा सम्बोधन
करते थे । हिन्दू राजवंशके अन्तिम राजाका नाम श्रीव-
हृत था । किसी मुसलमान आक्रमणकारोंने युद्धमें उनका
निहत करके तदीय कन्याका पाणिग्रहण किया । इसी

कन्याके वंशजात पुत्र 'एखने' वंशो जमे अभिहित हुए
हैं । इस समय एखने वंशीय पुत्रगत वा उपाधिधारे
किसी राजाका नाम नहीं मिलता

राजा श्रीभट्टके समयको चित्राल, यसीन, तङ्गीर,
दरेल, चिलाम, गौर, असतौर, हनजा, नागर और हर-
मोज प्रभृति स्थान गिलगिट राज्यके ही अन्तर्गत थे ।

इस पार्वत्य प्रदेशमें असंख्य उपत्यकाएँ और गिर-
शुद्ध दृष्ट होते हैं । इनमें कोई १८०००, कोई २००००,
कोई २२००० और कोई २४००० फुट ऊँचा है । किसी
पर्वतमें ७०००० फुटके ऊपर भयानक जङ्गल है । इस
वनके निम्नदेशमें परसवाले असंख्य जङ्गली मेष चरते देख
पड़ते हैं । इसी पहाड़में ११००० फुट ऊँचे बहुत ज्यादा
जङ्गली प्याज पैदा होता है । चाना लोग इस पर्वतको
शुद्धलिङ्ग कहते हैं । गिलगिटमें बहुतसो छोटा छोटी
नदियाँ प्रवाहित हैं । रकीपोश पर्वतसे निकली हुई
नदीमें स्वर्ण मिलता है । पहाड़ी लोग शीतकालको उस-
से सोना निकाला करते हैं ।

गिलगिट नगर और मिन्धुनदके मध्यवर्ती स्थानमें
वागरोत उपत्यका है । उसमें समृद्धिशाली अनेक ग्राम
बसे हुए हैं । यहाँ सोना और खनिज रत्नादि पाये जाते
हैं । गिलगिटके प्राचीन राजा शत्रुकार्टक आक्रान्त होने
पर उसी उपत्यकामें जा करके आकराजा करते थे । आज-
कल सभी अधिवासी शीनवंशीय हैं । यह लोग शीन
भाषामें ही बात चीत करते हैं ।

गिलगिट नगरसे १ मील दक्षिणको हनजा नदी जा
करके गिलगिट नदीसे मिली है । इसीके किनारेसे उत्तर-
को चापरोत जिला है । यहाँ चापरोत ग्राममें एक दुर्ग
बना हुआ है । यह किला नदीसहस्र पर अवस्थित और
शत्रुकार्टक दुर्भेद्य है । स्थलपथ भिन्न इसमें दूसरी
ओरसे घुसनेकी राह नहीं है । समय समय पर यह
गिलगिल हनजा और नागर राजाओंके अधिकारमें रहा,
अब काश्मीरराजका अधिकारभुक्त है ।

उत्तर टिक्से रकीपोश पर्वतके अभिमुख टकटकी
लगा करके देखनेसे मालूम पड़ता, मानो किसी नदीके
किनारेसे क्रमान्वयमें ऊर्ध्वाभिमुखको पहाड़ उठा है ।
यह पार्वतीय दृश्य अति मनोरम है । यसीन, पोन्धाल

श्रीर गिन्निगिट उपलब्धकावासी चिस व शस्ये उत्पन्न हुए, इनजा श्रीर नागरके लोग भी उसी व शस्ये सम्बन्ध रखते हैं। यह ग्रीया सम्प्रदायशुक्त सुसलमान है। इनकी जाति का भरदार 'युम' कहलाता है। य, मसरदार मगनीत और गरकग नामक २ यमज भ्राताश्रीके व शशर है। ई० १५वो शताब्दीके श्रेय भागको यह दोनो भाई विद्यमान थे। नागरका किला श्रीर खुसका घर मतभोल नामक नटीके कूलमें अवस्थित है। गिन्निगिटके राजवशीय राजा श्रीके अधिकार कालकी गुम सरदारने उनकी अधीनता मानी थी। १८६८ ई०को वह काश्मीरराजके अधीन हो गये। नागर सरदार प्रति वखर काश्मीरराजको करस्वरूप २१ तोला सोना देते है। इसो पार्यंत प्रदेश को उत्तर टिककी 'छोटा गुजल' नामक बडो बडी वाससे घिरो हुई एक जगह है। यज्ञा गोमिपादिके साथ एक भ्रमणकारी जाति रहती है। इसी राज्यके उत्तर पूर्वकी पकपू और शचपू नामक दो जातिया रहता है। इनकी मख्या १० हजारसे अधिक होगी। यह इनजा सरदारको वार्षिक कर देते है। यह देवनेमें अति सुन्दर है। गाढका वर्ण तबि जैसा लाला होता है। इनजाके उत्तरकी सिरोकील नामक पार्वतीय राज्य है। इनजा सरदारव श 'अएसे' अर्थात् स्वर्गीय कहलाता है। पुर्यंको यह भी सहा राजाश्रीके अधीन थे। इनजा ८ जिलों में विभक्त है और प्रतेक जिलेमें एक एक किला बना है।

गिन्निगिटके ग्रीन लोग इनजा और नागरके अधिवासियोंको ऐशकुन जातीय बतलाते हैं। परन्तु श्रेयोक्त देशवासो अपनेको बरीस जातीय जैसा मानते है। मीन लोग इसनाम धर्ममें दीक्षित होते भी खूब गोभक्ति दिखलाते है। फहर ग्रीन तो यहा तक कि जिस पात्रमें गां दुध भी रखा जाता, नहीं छूते। बड्डा जितने दिन दुध पीता, वद साधारणके नियो श्मश्रुय ठहरता है। इसोसे प्रसूत होते ही सबत्सा माय ऐशकुनोके पास भेज देते और वसके माहस्तन तराग करते हो फिर उसको उनके पास में वापस म गा नेंते है। यही मय जातिगत आचार व्यवहार आनोचना करनेसे ध्यानमें आता शायद पूर्व कालकी दक्षिण देशके किसी हिन्दू राजाने मिथुनद पार हो उसी सुन्दर देशमें जा करके हिन्दूकुग प्रान्तमें अपना राज्यस्थापन किया था।

१७६० ई०को अहमद शाह अम्दानीने जब भारत आक्रमण किया, काश्मीरियोंका एक दल जा करके गिन्निगिटमें वम गया। आज उन्हें 'कांगरू' कहते है। स्थान परिवर्तनके साथ साथ इनका आचार भी बहुत बदला है। यह चिवालके अधिवासियोंमें विलकुल मिल जुल गये है।

गिन्निगिट नगरसे १८ मील उत्तरकी पोनिवाल जिला है। यह प्राय २२ मील बट करके चसीन राज्यकी सीमा तक चला गया है। गिन्निगिटके प्राचीन राजाश्रीके समयमें इसी जिलेके आथसे राजपुत्रों और कन्याश्रीका भरण पोषण होता था। १८६० ई०को यह भी काश्मीर राज्यके अधीन हो गया।

पहले इनजा और गिन्निगिटके सरदारोंमें हमेशा लडाई लगी रहती थी। परन्तु १८६८ ई०का वह विवाद मिट गया। तदवधि युम सरदार ग्रीनराजको प्रति चर्ष दो घोडे, २ कुत्ते और ५०॥ तोला सोना कर स्वरूप दिया करते है। बलटीत नामक स्थानमें गुमना भवन है।

काई ३० वर्ष हुए इनजा नागरोंके साथ इटिश गवर्नमेण्टका युद्ध छिडा था। अब गिन्निगिट निकटवर्ती अधिवासी इटिश गवर्नमेण्टका अधीनता खोकार करने पर बाध्य हुए है। सरकार गिन्निगिटकी फौज बढाने और उसके चारों ओर पोखता किले बनानेमें लगी है।

गिन्निगिट वजारतमें २६४ गांध है। लोकसख्या प्राय ६०८८५ है। खेती खूब होती है। गोचरभूमि और पशु कम है। जनी पटू खज बुना जाता है। नमकका कारवार बडा है। भारतको कई सडके आयी है। डाक और तारका भी भारतके साथ लगाव है। पजीर वजारत गिन्निगिट वजारतका प्रबन्ध करते है। यहा सरकारी फौज रहती है। अमरेजी पोनिटिकल एजेंटका भी निवास है। वह वजोरके कार्मोंको देख भाल रखते है।

गिन्निगिल (म० त्रि०) गिल कुम्भोर गिलति गिल गिन क। ६ जो कम्भोरको भी गिन्निगिल सकता हो। (पु०) २ गिन्निगयाह, नक, नाक नामक जन्तु। गिन्निगिलिया (हि० श्री०) एक तरफको चिडिया, जो आपसमें बहुत लडती है, मिरौही।

गिलगिली (हि० पु०) घोड़े की एक जाति ।

गिलग्राह (सं० पु०) गिल गृह्णाति गिल-ग्रह अण् उप-
पदस० । गिलगिल देखो ।

गिलजाई—अफगान जातिकी एक शाखा । इस जातिके
मनुष्य अच्छे शूरवीर और माहसी होते हैं । अष्टादश
शताब्दीमें इन्होंने युद्धविद्यामें अथता लाभ कर घोड़े
समयके लिये स्थाहन नगरका मिहामन भोग किया था ।
कान्दाहारके उत्तर काबुल नदीके तीरवर्ती स्थान जलाना-
वाद पर्यन्त आज तक भी इनका राज्य फैला हुआ है ।
१८३६ ई०में अङ्गरेजके काबुल आक्रमण पर इन्होंने दोस्त
मुहम्मदकी सहायता दी थी ।

ये देखनेमें तुर्कियोंके जैसे होते हैं ।

गिलट (हि० स्त्री०) १ सुवर्ण चढ़ानेका फाम । २ श्वेत
तथा चमकीले रङ्गको एक प्रकारकी हलकी और कम
मूल्यको धातु ।

गिलटी (हि० स्त्री०) शरीरके मध्य सन्धिस्थानकी ग्रन्थि ।
कुहनी, बगल, गला और घुंटेमें ऐसी गांठ होती है ।
२ एक प्रकारका रोग । इसमें सन्धि स्थानकी कोई गांठ
फूल जाती अथवा कोई दूसरी ग्रन्थि उत्पन्न हो आती है ।
रक्त मांसके दूषित हो जानेसे यह रोग जन्म लेता है ।

गिलन (सं० स्त्री०) गिल भावे ल्युट् गिल गिलने इति
निर्देशात् न गुणः । आसकरण, निगलना ।

गिलन (अ० पु०) एक प्रकारका अङ्गरेजी माप जो प्रायः
पांच सेरके बराबर हाता है ।

गिलविला (अनु० वि०) अतिशय कोमल ।

गिलविलाना (अनु० क्रि०) स्पष्ट वचन नहीं बोलना ।

गिलम (फा० स्त्री०) १ एक तरहका कालीन, जो नरम
तथा चिकना होता है । २ अतिशय मोटा तथा कोमल
विल्होना ।

गिलमिल (हिं० पु०) एक तरहका धस्त्र जो प्राचीन काल-
में प्रस्तुत होता था ।

गिलसुख (फा० स्त्री०) गेरूमिष्टी ।

गिलहरा (हिं० पु०) एक प्रकारका सूती वस्त्र । इस
वस्त्रमें मोटी मोटी धारियां होती हैं ।

गिलहरी (हिं० स्त्री०) एक किसकका छोटा जन्तु जो

एशिया, युरोप और उत्तर अमेरीकामें पाया जाता है ।
यह छोटे फल तथा अनाज खाता है आर सदा वृक्ष पर
रहता है । इसके कान टोर्ष तथा नोकदार होते हैं और
पूँछ काभल वालासिं डकी रहती है । इसके पुंठ पर
बहुत रंगको धारियां होती हैं । यह स्वभाव होमे चंचल
होता है । एक वारमें यह तीनसे चार तक बच्चे जन्मातो
है ।

गिला—गिला नामक वृक्षका बीज । (Mimosa Scan-
dens) । इसका गुण—रुच, तोष और कटु है ।

गिला (फा० पु०) १ उलाहना । २ गिकायन, निंदा ।

गिलाई (हिं० स्त्री०) गिलहरा देखा ।

गिलान (हिं० स्त्री०) ग्लानि, घृणा, नफरत ।

गिलाफ (अ० पु०) अच्छे अच्छे रूपड़ं टाकनेका वस्त्र,
खोल । २ लिहाफ, रजाई । ३ स्थान ।

गिलाय (अ० स्त्री०) गिलहरी ।

गिलायु (सं० पु०) एक तरहका रोग । इसमें गलेके
भीतर एक तरहकी गांठ ही आती है । यह बहुत दुःखद
रोग है । इस रोगमें शस्त्र चिकित्सा करानेकी आवश्य-
कता पड़ती है ।

गिलावा (फा० पु०) ईंट जोडनेकी गोली मिट्टी, गारा ।

गिलास (हिं० पु०) १ पानो घीनेका एक गोल लम्बा
वरतन । २ ओलची नामका एक पेड़ जिसका फल बहुत
नरम और स्वादिष्ट होता है । इस तरहका फल आवण
माममें सिर्फ १५-२० दिन तक फलता है ।

गिलित (सं० त्रि०) गिलि-क्त । भक्षित ।

गिल्मि (फा० स्त्री०) गिलम देखा ।

गिली (फा० स्त्री०) गुद्दा देखा ।

गिलिफ (अ० पु०) गिलाफ देखा ।

गिलोड (सं० पु०) एक तरहका वृक्षविशेष, इसकी फल-
का रस मधुर होता है ।

गिलोय (फा० स्त्री०) गुरुच, गुडुची ।

गिलोला (फा० पु०) गुल्लसे फेके जानेका मिट्टीका
बना हुआ छोटा गोला ।

गिलौंटा (फा० पु०) गुल्लेटा देखा ।

गिलौरौ (हिं० स्त्री०) कई एक पानोंका बीड़ा ।

गिल्लीरोदान (हि० पु०) पान रखनेका डिब्बा, पानदान ।

गिट्टी (फा० स्त्री०) नि-थो रे ची ।

गिन्ना (फा० पु०) गिन्ना ।

गिन्नी (फा० स्त्री०) गुन्नी ।

गिण (म० त्रि०) १ गायक, गयेया । (पु०) २ सामवेद-का गानेवाला, सामवेदवेत्ता ।

गीजना (हि० क्रि०) किमी कामल पदार्थको हाथमे मीजना निममे वड़ गुणव हो जाय ।

गीव (फा० स्त्री०) गीवा, गर्दन, गला ।

गी (म० स्त्री०) १ वाणी, बोलनेकी शक्ति । २ सरस्वती देवी ।

गी पति (म० पु०) गिरा पति, ह-तत् । अहरादित्वात् विकल्पे विभर्गस्य न केक । गेरेत देवा ।

गीगामारन—वन्वने प्रान्तमे काठियावाडका एक सुद्र राज्य । इसकी राजादी कीरे ५८० और आमदनी ६६०० है । भातिकाउठमे यह १६ मील दक्षिण पूर्व पडता है । लोकमन्या कीरे ६०२ होगी ।

गीठम (हि० पु०) न्यून मूल्यका मादा गनोचा ।

गीडर—काठियावाड प्रान्तके वाटया तातुकका एक नगर । जूनागढमे प्राय १८ मील उत्तर यह नगर अवस्थित है । लोकमन्या प्राय १६५१ है । वाटया वाचिम राज्यकी एक घुघजू गावा उस पर अधिकार करती है ।

गीड (फा० पु०) चतुका मूल ।

गीत (म० स्त्री०) गान, गाना, धुरपद तराना आदि । यह नियमित स्वरनियंत्र शब्दविशेष है । मन्त्रीतगान्त के मतमे धातु तथा गात्राणुको ही गीत कहा जाता है धातु नादात्मक और मावा अक्षरात्मक है । गीत मर्मो के प्रोतिकर होते हैं । हमारी जनजाती या उदात्तमोन प्रभृति स्वयं लागू शब्दें पलवाते हैं । हरिण चाटि वन्य पशुओं और पक्षियों भी गाना सुनना अच्छा लगता है यद्यत् कि पक्षी गीत सुन पक्षिमे चरित्रुन मो स्थिर चित्तमे अवस्थान करता है अथवा रीटन परित्याग करके टिन भगा गाना सुननें लग जाते हैं । यासाविक प्राणि योंक लिये एने विनाटन एतु दूबरा नहीं है । गीत दुःख की यातना मिटानेका उपाय, सुखोपी प्रीतिकारण और योगीनी उपायार्थ प्रधान पद है । इसीमे प्राचीन

मन्त्रीवेत्ता व्रतनाते कि प्रभु गद्दरने ससारको दुःखा क्रांत देख करके सासारिक दुःख निवारणका प्रधान उपाय गीत और वाद्य प्रयोग किया है । (मन्त्रागल) धर्म शास्त्रमे भी लिखा है कि गीतघ्न गीत द्वारा ही मुक्ति पा सकता है और किमी दूरमे कारणमे मुक्ति न मिलने पर वड़ रुद्रका अतुचर घन करके रुद्रलोचनमे तो वाम करता ही है ।

गीत दो प्रकारका होता है वैदिक और नौकिक । मेमामादार्थके भाष्यमे शबरस्वामीने लिखा है—जिसमे आभ्यस्तरीण प्रयत्नमे स्वरग्रामकी अभिव्यक्ति होती, गीत कहलाता और साम शब्दमे भी उभोका उल्लेख किया जाता है । (भाष्य हि० भाषा) सामवेदमे महस्र प्रकार गीत का उपाय है । गायक इच्छानुसार उसमे किमी एकके अवलम्बनसे साम गान कर सकता है । (भाषावा ११११८ भाषा) लौकिककी तरह वैदिक गानमे भी क्र ए, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम और षष्ठ सात स्वर होते हैं । सामविधानशास्त्रणमे निवृत्त हुआ है कि उर्ध्वे ७ स्वरोंमे देवता क्र ए, मनुष्य प्रथम, गन्धर्व तथा अप्सरा द्वितीय, पशु तृतीय, पितृलोक चतुर्थ, असुर एव राक्षस पञ्चम और वनस्पति प्रभृति अपर जगत् षष्ठ स्वरमे परि त्थति लाभ करता है । (भाषावा ११११८)

यही सात मौनिक स्वर अथवात्तर मं दमे बहुविध हो जाते हैं ।

लौकिक गान प्रथमतः दो मार्गोंमे विभक्त हुआ है— मार्ग और देगी । जो गीत मर्ध प्रथम विरिचिदिने प्रकारा किये थे और जिसको भरत प्रभृति गायक महादेवकी प्रीतिके लिये गाया करते थे, मार्ग कहलाता है । मन्त्रीत शास्त्रके मतमे मार्ग नामक गीत मर्वादा हो मद्रन प्रदान करता है । वि भव मोहो की रुचि और रीतिके भेदमे विभिन्न रूपों मे परिणत या उरपव गीत हो हो देगी कहते हैं ।

मन्त्रीतरयाकर (११२५) मे लिखा है कि स्वामी गीतों का मूल सामवेद है यद्यपि मर्ध प्रथम साम वेदमे ही गीत मद्रुह किया था ।

यह गीत मन्व्य और शास्त्रमे दमे फिर दो प्रकार होता है । पितृ, योगाप्रभृति यन्त्रो मे जो गीत लिख्यते,

उनको यन्त्र और प्राणीके सुखसे गानेवालोंको गाव कहते हैं। किन्तु चलती बोलोमें यन्त्रकी गीत न कह करके वाद्य नामसे उल्लेख करते और केवल मुखसे निकलनेवालेकी गीत समझते हैं।

सब तरहके गानोंका मूल कारण नाद है। मङ्गीत-शास्त्रके मतसे आत्मा वा चेतन जब कोई ध्वनि करना चाहता उसी इच्छासे अन्तःकरण चालित होता है। इससे शरीरस्थ अग्नि चोट खा करके भभक उठता और उसी उद्दीप्त अग्निके तेजसे ब्रह्मग्रन्थिस्थित वायु चालित हो करके ऊर्ध्व पथसे गमन करता है। चालित वायुके आघातसे क्रमशः नाभि, हृदय, कण्ठ, मूर्धा और मुख-प्रभृति स्थानोंमें ध्वनि होता है। इसीका नाम नाद वा श्रुति है। नाद—अतिसूक्ष्म, सूक्ष्म, पुष्ट अपुष्ट तथा कृत्रिम पाँच भागोंमें बाँटा है। किन्तु गीत-व्यवहारमें उसको मन्द्र, मध्य और तार तीन ही भागोंमें विभक्त करते हैं।

हृदय, गलदेश और मूर्धा स्थानमें उत्पन्न नादको यथा-क्रम मन्द्र, मध्य और तार कहा जाता है। मन्द्रसे मध्य और मध्यसे तार द्विगुण होता है। यह नियम शरीरमें चलता, वीणायन्त्रमें उसके विपरोत पड़ता है। वाद्य-देवों। कोई मङ्गीतविद् नाद वा श्रुतिको बाँटने, कोई व्यासठ और कोई ३ भागोंमें बाँटता है। मङ्गीतरत्नाकरप्रणीता शार्ङ्गदेव लिखते कि ऊर्ध्वनाडी अर्थात् सुपुत्रा मंलग्न २२ नाड़ियाँ वक्रभावमें अवस्थित हैं। उनके योगसे २२ प्रकारके नाद वा श्रुतियाँ निकलती हैं। इसीसे श्रुतिको २२ भागोंमें बाँटना उचित है।

इन श्रुतियोंसे षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पञ्चम, धैवत और निषाद ७ स्वर उत्पन्न होते हैं। गीतशास्त्रमें इन सातों स्वरोंको स, रि, ग, म, प, ध, नि—नात मञ्जिप्त नामोंसे उल्लेख किया गया है। षड्जमें चार, ऋषभमें तीन, गान्धारमें दो, मध्यममें चार, पञ्चममें चार, धैवतमें तीन और निषादमें २ ही श्रुतियाँ रहती हैं।

सङ्गीतदर्पण (५३।५६) में इन २२ श्रुतियोंका नाम मिलता है। यथा—तीव्रा, कुमुदती, मन्द्रा, छन्दोवती, दयावती, रञ्जनी, रतिका, रौद्री, क्रोधा, वज्रिका,

प्रसारिणी, प्रीति, मार्जनी, चिति, रक्ता, मन्दोपनी, आन्तापिनी, मदनती, रोहिणी, रम्या, उद्या और जोभिणी। इनके मध्य तीव्रा प्रभृति चार षड्जमें, दयावती आदि तीन ऋषभमें, रौद्री तथा क्रोधा नामक दो गान्धारमें, वज्रिका प्रभृति चार मध्यममें, चिति आदि चार पञ्चममें, मदनती प्रभृति तीन धैवतमें और शेष २ श्रुतियाँ निषाद स्वरमें लगती हैं। (सङ्गीतदर्पण ५६।५६)

मतङ्गके मतानुसार श्रुति ६६ भागोंमें बाँटी है। उनका नाम है—मन्द्रा, अतिमन्द्रा, घोरा, घोरतरा, मण्डना, सौम्या, सुमना, पुष्करा, शङ्खिनी नीला, उत्पला, अनुनामिका, घोषावती, नीलनादा, आवर्तनी, रणदा, एकगम्भीरा, दीर्घतारा, नादिनी, मन्द्रजा, सुप्रमन्द्रा, निनादा। यह २२ श्रुतियाँ मन्द्रमसकमें हुवा करनी हैं। नादान्ता, निष्कला, गूढ़ा, मकना, मधुरा, गली, एकाक्षरा, शृङ्गाजाति, रसगोति, सुराङ्गिका, पूर्णा, अलङ्कारिणी, वांशिका, वैणिका, त्रिस्थाना, सुखरा, सौम्या, भाषाद्वी, वार्तिका, सम्पूर्ण, प्रसन्ना और सर्वव्यापिनिका—२२ श्रुतियाँ मध्यमसकमें लगती हैं। इण्डरी, कीमारी, मवरानो, महाका, शङ्खिनी, राका, भोगवीर्या, मनोरमा, सुस्निग्धा, दिव्याङ्गा, सुललिता, विद्रुमा, लज्जा, काली, सूक्ष्मा, अति सूक्ष्मा, पुष्टा, सुपुष्टिका, रोकरी, कराली, विष्मोटान्ता और भेदिनी—तार ससकमें २२ श्रुतियाँ हैं।

(सङ्गीतरत्नाकरटीका ३१७)

सङ्गीत-समयमार-प्रणेतार्के मतमें नामिका, कण्ठ, उर, तालु, जिह्वा और टन्त—षडविध स्थान मध्यममें उत्पन्न होनेवाला स्वर षड्ज कहलाता है। नाभिसगुलका ऊर्ध्वगत वायु कण्ठ तथा शीर्षदेशमें आहत होने ऋषभ अर्थात् षषभके निनाद-जैसा स्वर निकलने पर ऋषभ नाम पड़ता है। गन्धर्वाके अतिशय सुख हेतु जैसे तृतीय स्वरको गान्धार कहते हैं। नाभिका ऊर्ध्वगत वायु आहत हो करके हृदयमें जो स्वर उठता, मध्य टहरता है। शीर्ष, कण्ठ, शिर, हृदय और नाभि—पञ्च स्थानोंसे निकलनेवाला स्वर ही पञ्चम है। नाभिका उपरिगत वायु—कण्ठ, तालु, शिर और हृदयदेशमें धृत होने पर धैवत स्वर निकलता है। निषादमें अपर सकल स्वर अवस्थित वा विरत होते हैं। (सङ्गीतरत्नाकर २२३ टीका)

* वेद षड्जके छन्दशास्त्रमें भी इन सातों स्वरोंका उल्लेख है।

कथित युतिसमूहकी ५ जातियाँ हैं—दीमा, आघता, करुणा, श्रुद शोर मध्या । पडज स्वरकी ४ युतियाँ यथा क्रम दीमा, आघत, श्रुद शोर मध्या जातीय होती हैं । इसी प्रकारसे ऋषभकी तीन करुणा, मध्या शोर श्रुद, गन्धार को दो दीमा तथा आघता, मध्यमकी चार दीमा, आघत, श्रुद एवं मध्या, पञ्चमकी चार श्रुद, मध्या, आघता, करुणा, धैवतकी तीन करुणा, आघता शोर मध्या शोर निपादको २ युतियाँ दोष शोर मध्या हैं । दीमामें भी तोषा, रोद्री, वज्रजा शोर उया—४ भेद पडते हैं । आघता ५ प्रकार है—कुमुदती, क्रोधा, प्रसारिणी, मन्दी-पनी शोर रोहिणी । करुणा—उयावती, आनापिनो शोर मदन्तिका भेदमें तीन प्रकारकी होती है— श्रुदके चार भेद हैं—मन्दा, रतिका, प्रीति शोर चिति । मध्यमके चार प्रकारकी कही है—कन्दोवती, रत्ननी, मालिनी, रत्निका, रस्या शोर शोभिणी ।

युद्धी ७ मौलिक स्वर, विक्षत ही करके १२ प्रकारके बन जाते हैं । इनमें पड स्वर विक्षत होने पर च्युत शोर अच्युत दो प्रकारका उद्भूत है । इसकी ४ स्त्राभाविक युतियोंमें अन्तिम ज्ञान होनेसे च्युत शोर और पूर्व युति हीन होनेसे अच्युत कहते हैं । ऋषभकी ३ स्त्राभाविक युतियाँ हैं । परन्तु पडजकी अन्तिम युति मिल जानेसे च्युत युति विक्षत ऋषभ कहलाता है । गान्धार—मध्यमकी प्रथम युति ग्रहण करनेसे त्रिच्युति विक्षत शोर प्रथम शोर द्वितीय २ युतियाँ लेनेसे च्युत युति विक्षत होता है । मध्यम भी पडजकी तरह च्युत शोर अच्युत भेदके दो प्रकार हैं । पञ्चम तृतीय युतिमें मस्यित होनेसे त्रिच्युति विक्षत शोर युद्धी विक्षत मध्यमकी अन्तिम युति ग्रहण करनेसे च्युत युति विक्षत उद्भूत है । पञ्चमकी अन्तिम युति धैवतमें प्रवेग करनेसे च्युत युति विक्षत धैवत होता है । निपाद पडजकी प्रथम युति लेनेसे त्रिच्युति विक्षत शोर पडजकी युतियाँ ग्रहण करनेसे च्युत युति विक्षत कहलाता है । मौलिक स्थात शोर विक्षत १२ स्वर मिल करके एकमेव हो जाते हैं । (श्रीगोतम्बर ११७-१२) सञ्जीत शास्त्रमें लिखा है कि मयूरका घडज, चातकका ऋषभ, कागका गान्धार, कौशिकका मध्यम, कोकिलका प्रथम, भेरुकका धैवत, शोर

गजका स्त्राभाविक शोर निपाद है । (श्रीगोतम्बर ११७) इन्हीं एकल स्वरोंसे सकल प्रकारका राग उत्पन्न होते हैं । पूर्व कथित स्वर फिर वादी, स वादी, विवादी शोर अनुवादी भी होते हैं । जिस रागमें जो स्वर बार, बार लगता, उर्धका वादी उद्भूत है— ११ रागमें वादी ही सर्व प्रधान है । दूसरे स्वर इसके अनुगत रहते हैं । २ स्वर जिन जिस युति पर विद्यन्ति— पाते, उसके बीच बारह अथवा ८ युतियाँ रहनेसे एक दूसरेके स वादी कहलाते हैं । जैसे—पडजस्वर कन्दोवती नामक चतुर्थ युतिमें मध्यम शोर मध्यम 'मांजनी' नामक प्रयोद्य युतिमें विरत होने शोर कन्दोवती तथा मांजनीके मध्यम दयावती, रत्ननी, रतिका, रोद्री, क्रीषा, बोजका, प्रसारिणी शोर प्रीति ८ युतियाँ रहनेसे मध्यम पडजका स वादी है । इसी प्रकार १२ युतियोंका व्यवधान रहनेसे पञ्चम भी पडजका स वादी ही होता है । ऋषभका धैवत, गान्धारका निपाद, मध्यमका पडज, पञ्चमका पडज, धैवतका ऋषभ शोर निपादका स वादी गान्धार है । (श्रीगोतम्बर ११७)

गीतके धैवतसे जो स्वर कथित होता, उसका स वादी स्वर लगानेसे राग विगडता है । पूर्व स वादी स्थलमें उत्तर स वादीके प्रयोगसे रागका अभाव शोर उत्तर स वादीकी जगह पूर्व स वादी लगानेसे जाति क्षान्ति होती है ।

निपाद शोर गान्धार शरपर स्वरके विवादी है । परन्तु किसी सञ्जीतविदके मतमें यह दोनों स्वर ऋषभ शोर धैवत स्वरोंके ही विवादी हैं, दूसरे किसीके भी नहीं । फिर कोई कोई सञ्जीतवेत्ता ऋषभ शोर धैवतकी गान्धार तथा निपादका विवादी स्वर बतलाता है । गीतमें निदिष्ट स्वरके स्थान पर उभरका विवादी लगानेसे रागका वादित्व, अनुवादित्व शोर स वादित्व नष्ट होता है । परम्पर स वादी या विवादी न होनेवाने एक दूसरेके अनुवादी उद्भूत हैं । गीतमें निदिष्ट वादी स्वरके स्थानमें अनुवादीका लगा सकते हैं, इसमें जातिरागका कोई फेर नहीं है । (श्रीगोतम्बर ११७)

गौडदेवके मतानुसार पडज, मध्यम शोर गान्धार तीन धैवतके पञ्चम पिटकुन, ऋषभ तथा धैवत ऋषि

हुल और निषाद असुरवंशमें उत्पन्न हुआ है। षड्ज, मध्यम तथा पञ्चम ब्राह्मण, ऋषभ एवं धैवत क्षत्रिय, निषाद तथा गान्धार वश्य और अन्तर एवं काकली शूद्र-वर्ण हैं। ७ मौलिक स्वर यथाक्रम—रक्त, ईषत् पीत, अतिपीत, शुभ्र, क्षण, पीत तथा कर्तुरवर्ण और जम्बु, शाक, कुश, क्रीच, शाल्मली, खेत तथा पुष्करहीपमें उत्पत्तिलाभ किये हुए हैं। सङ्गीतशास्त्रमें वेदमन्त्रकी तरह सब स्वरोंके ऋषि, छन्द और देवताका उल्लेख मिलता है।

षड्ज तथा ऋषभ वीर, अद्भुत एवं रौद्रमें, धैवत वीभक्त तथा भयानकमें, गान्धार एवं निषाद करुणमें और मध्यम तथा पञ्चम हास्य अथवा शृङ्गाररसमें सम-धिक लगाना या वादी बनाना चाहिये।

(संगीतरत्नाकर २५६)

मूर्च्छना, तान, जाति और जात्यंशयुक्त स्वरसमूहका नाम ग्राम है। स्वरग्राम तीन होते हैं—षड्ज, मध्यम और गान्धार। मनुष्य लोकमें प्रथम तथा द्वितीय ग्राम अवलम्बनेसे ही गीत व्यवहार चलता है। गान्धारग्राम मनुष्योंमें नहीं देख पड़ता, केवल देवलोकमें ही रहता है। जिस स्वरसमूहमें पञ्चम अपनी चतुर्थ श्रुति पर अवस्थित अर्थात् अविक्त होता, षड्जग्राम कहलाता है। इसी प्रकार पञ्चम अपनी तृतीय श्रुतिमें विच्यन्त अर्थात् विकृत पड़नेसे स्वरसमूहको मध्यमग्राम कहते हैं। सङ्गीतदर्पणके मतानुसार स्वरसमूहके मध्य धैवत त्रिश्रुति वा अविक्त रहनेसे षड्जग्राम और उसके पञ्चमकी चतुर्थ श्रुति ग्रहण करके चतुःश्रुति वा विकृत होनेसे मध्यम ग्राम कहा जा सकता है। स्वरसमूहके बीचमें गान्धार ऋषभकी अन्तिम तथा मध्यमकी आदि-श्रुति धैवत पञ्चमकी अन्तिमश्रुति और निषाद धैवतकी अन्तिमश्रुति तथा षड्जकी आदि श्रुति ग्रहण करके विकृत होने पर गान्धारग्राम बनता है। दण्डिलके मतको देखते मध्यम ग्राममें पञ्चम, षड्ज ग्राममें धैवत और दोनों ग्रामोंमें मध्यम स्वरकी स्थिति आवश्यक है। इनके लोप वा उच्चारण न होनेसे ग्राम विगड़ जाता है। परन्तु आवश्यक होने पर इसको छोड़ करके दूसरे स्वरोंका लोप करनेसे भी ग्राम बना रहता है।

(संगीतरत्नाकर ३१०)

षड्ज ग्रामके ब्रह्मा, मध्यमके विष्णु और गान्धार ग्रामके अधिपति महादेव हैं। हेमन्त ऋतुके पूर्वाहण षड्ज ग्राम, ग्रीष्मके मध्याह्न मध्यम ग्राम और वर्षा-ऋतुके अपराहणकी गान्धार ग्राम अवलम्बन करके गाना चाहिये। (संगीतरत्नाकर १८)

क्रमानुसार ७ स्वरोंका आरोहण अर्थात् पर पर रूपसे षड्ज प्रभृति सातों स्वरोंका उच्चारण और व्युत्क्रमसे अवरोहण अर्थात् पूर्व पूर्व भावसे निषाद प्रभृति स्वरोंका उच्चारण मूर्च्छा कहलाता है। वास्तविक पञ्चम उक्त आरोहण और अवरोहणयुक्त स्वरसमूहका नाम मूर्च्छना है। इसमें राग मूर्च्छित वा वर्धित होनेसे ही मूर्च्छना कहा जाता है। (भूपानसिंह, संगीतरत्नाकर ३१६) षड्जग्राममें उत्तरमन्द्रा, रजनी, उत्तरायता, शुद्ध षड्जा, मत्सरीकता, अश्वक्रान्ता और अभिरुक्ता नामक ७ मूर्च्छनाएं हैं। इसी प्रकारसे मध्यम ग्राममें सौवीरी, हरिणाखा, कलोपनता, शुद्धमध्या, मार्गी, पौरवी तथा हृष्यका सात और गान्धार ग्राममें नन्दा, विशाला, सुमुखी, चित्रा, चित्रवती, सुखा एवं आलापी नामक ७ मूर्च्छनाएं लगती हैं। गान्धार ग्राम मनुष्य लोकमें न चलने या न बननेसे लौकिक सङ्गीतशास्त्रमें उसकी विशेष कथा वा मूर्च्छना का लक्षण आदि समझ नहीं सकते।

(संगीतरत्नाकर २३३ टीका)

मध्यस्थानस्थित षड्जसे आरम्भ करके निषाद पर्यन्त यथाक्रम आरोहण और निषादसे ले करके षड्ज पर्यन्त व्युत्क्रममें अवरोहण करने पर षड्ज ग्रामकी प्रथम मूर्च्छना उत्तरमन्द्रा उत्पन्न होती है। इसी प्रकार मन्द्रस्थानस्थित निषाद प्रभृति ६ स्वरोंसे आरम्भ करके निमित्त रूपमें आरोहण और अवरोहण लगाने पर रजनी प्रभृति दूसरी ६ मूर्च्छनाएं बनती हैं। मध्यस्थानस्थित मध्यम स्वरसे लगा करके यथानियम चढ़ने उतरने पर मध्यम ग्रामकी प्रथमा मूर्च्छना सौवीरी निकलती है। इसी प्रकार षड्ज स्थानस्थित निषाद आदि अपर ६ स्वरोंसे शुरू करके आरोहण और अवरोहण करने पर हरिणाखा प्रभृति दूसरी ६ मूर्च्छनाएं हुआ करती हैं। जिस स्वरसे चढ़ना आरम्भ करके जिस स्वरमें रुकना पड़ता और जिस स्वरसे उतरना शुरू करके जिस तक मूर्च्छना

समाप्त होती, वह स्वरके सचित्र नाम द्वारा नीचे लिखा गया है । सङ्गीतशास्त्रके नियमानुसार मन्द्रस्थानीय पर विन्दु और तारस्थानीय पर ऊर्ध्व रेखा लगाते और इसको छोड़ दूसरीकी मध्यस्थानीय ठहराते हैं । वामटिकके प्रथमसे आरम्भ करके दक्षिण टिकके शेष स्वर पर्यन्त पड़नेका आरोहण और दक्षिण टिकका अन्तर आदि बना करके वामक्रमसे वामके शेष स्वर तक जानिका नाम अवरोह है । (मन्त्रशास्त्र ११२)

पडङ्ग ग्रामकी मूर्छना ।

- १ उत्तरमद्रा—म रि ग म प ध नि ।
- २ रजनी—नि स रि ग म प ध ।
- ३ उत्तरायता—ध नि स रि ग म प ।
- ४ शुद्ध पडङ्गा—प ध नि स रि ग म ।
- ५ मत्सरीकता—म प ध नि स रि ग ।
- ६ भ्रमकान्ता—ग म प ध नि स रि ।
- ७ भ्रमिसङ्गता—रि ग म प ध नि स ।

मध्यम ग्रामको मूर्छना ।

- १ सौवीरी—म प ध नि स रि ग ।
- २ हारिणाग्वा—ग म प ध नि स रि ।
- ३ कलोपनता—रि ग म प ध नि स ।
- ४ शुद्ध मध्या—स रि ग म प ध नि ।
- ५ मार्गी—नि स रि ग म प ध ।
- ६ पीरवी—ध नि स रि ग म प ।
- ७ ह्यका—प ध नि स रि ग म ।

मध्यम ग्रामकी ४थ, ५म, ६ठ, और ७ मूर्छनाके साथ पडङ्ग ग्रामकी १म, २य, ३य और ४थ मूर्छनाका आपातत कोई भेद नहीं जैसा समझ पड़ता है । परन्तु वास्तविक पक्ष पर पडङ्ग ग्रामकी पाँचवीं चतुःश्रुति और मध्यम ग्रामकी पाँचवीं त्रिश्रुति होनेसे इनका परस्पर विन्ययन भेद होता है । मतङ्ग और नन्दिकेवरके मतानुसार प्रत्येक मूर्छनामें १२ स्वर रहते हैं । (मातंगी नदिस्वर) ६ सिद्ध मूर्छनाका आकार नीचे लिखा जैसा बतलाते हैं—

पडङ्ग ग्रामकी मूर्छना ।

- १मा—ध नि स रि ग म प ध नि स रि ग ।
- २या—नि स रि ग म प ध नि स रि ग म ।
- ३या—स रि ग म प ध नि स रि ग म प ।
- ४थी—रि ग म प ध नि स रि ग म प ध ।
- ५मी—ग म प ध नि स रि ग म प ध नि ।
- ६ठी—म प ध नि स रि ग म प ध नि स ।
- ७मी—प ध नि स रि ग म प ध नि स रि ।

मध्यम ग्रामकी मूर्छना ।

- १ली—नि स रि ग म प ध नि स रि ग म ।
- २री—स रि ग म प ध नि स रि ग म प ।
- ३री—रि ग म प ध नि स रि ग म प ध ।
- ४थी—ग म प ध नि स रि ग म प ध नि ।
- ५थी—म प ध नि स रि ग म प ध नि स ।
- ६थी—प ध नि स रि ग म प ध नि स रि ।
- ७थी—ध नि स रि ग म प ध नि स रि ग ।

आदि सङ्गीतशास्त्रप्रणेता भरतमुनिके मतमें गान या वाद्यके समय जिस स्थान पर कण्ठ वा हस्त कम्पित होता मूर्छना कहा जाता है । श्रुतमान् चसीको मूर्छना बतलाते, जहाँ पडङ्गादि स्वरसे श्रवणमादिके उत्थान पर विराम दिखलाते हैं ।

यह सब मूर्छनाएँ फिर चार प्रकारकी होती हैं—शुद्धा, सकाकली, सान्तरा और काकल्यन्तरयुक्ता । मूर्छना का जो जो स्वर विकृत वा भविकृत उक्त हुआ है, ठीक वैसा ही रहनेसे शुद्ध मूर्छना कहते हैं । निपादस्वर पडङ्गकी २ श्रुतियाँ न करके चतुःश्रुति होने पर काकली कहलाता और जिस मूर्छनामें वह भाता उसकी सकाकली कहा जाता है । गान्धारस्वर मध्यमकी २ श्रुतियाँ ग्रहण करके चतुःश्रुति होनेसे सान्तरा बनता और उसके लगाये जानेसे मूर्छनाका नाम सान्तरा पड़ता है । कोई मूर्छना सान्तरा और काकली लगनेसे काकल्यन्तरयुक्ता हो जाती है । यह ५६ प्रकारकी मूर्छना प्रथमादि स्वरके आरम्भ वेदसे फिर सात प्रकारकी बनती है । पतञ्जल सब मिना करके ३८२ प्रकारकी (७ × २ = १४, १४ × ४ = ५६, ५६ × ७ = ३८२) मूर्छना है । (सङ्गीतशास्त्र ३।१८) यद्य, राधस, नारद, ब्रह्मा, सर्प, चण्डिनीकुमार और

वरुण यथाक्रम षड्जग्रामकी ७ मूर्च्छनाश्रीकी अधिपति हैं। ब्रह्मा, इन्द्र, वायु, गन्धर्व, सिद्ध, इन्द्रिण और भानु यथाक्रम मध्यामकी ७ मूर्च्छनाश्रीकी अधिपति कहे गये हैं। जिस मूर्च्छनाका जो अधिपति निर्दिष्ट हुआ, उसी मूर्च्छनासे प्रीति लाभ करता है।

जैसे आरोह और अवरोहक्रमयुक्त स्वर समूहकी मूर्च्छना कहते, केवल आरोहक्रमयुक्त स्वरोंकी तान अभिधान करते हैं। तान प्रथमतः २ भागोंमें बंटा है—शुद्धतान और कूटतान। मूर्च्छना एक स्वर न रहने पटस्वर और दो स्वर न रहने पर पञ्चस्वर होनेसे शुद्धतान कहलाती है। पटस्वर शुद्धतानकी पाड़व और पञ्चस्वर शुद्धतानकी औड़व कह सकते हैं।

पाड़व शुद्धतान मव मिला करके उच्चास हैं। पड्ज ग्रामकी ७ मूर्च्छनाएं पड्जे, ऋपम, पञ्चम वा गान्धार हैं। इनमें किसी एकके हीन होने पर अठाईस और मध्याम ग्रामकी ७ मूर्च्छनाएं पड्ज, ऋपम और गान्धार में कोई एक न रहनेसे २१ पाड़व शुद्धतान निकलते हैं।

औड़व शुद्धतान ३५ प्रकारका होता है। पड्ज तथा पञ्चमहीन सात, गान्धार एवं निषादहीन सात और ऋपम तथा पञ्चमहीन सात सब २१ तान हैं। इसी प्रकार मध्याम ग्रामकी मूर्च्छनासे ऋपम तथा धैवत निकल जाने पर सात और गान्धार एवं निषादके अभावमें सात ये १४ तान लगते हैं। तानाकी पूरी संख्या ८४ है।

पूर्ण वा असम्पूर्ण मूर्च्छना व्युत्क्रममें उच्चारित होने पर कूटतान कहलाती है। पूर्ण मूर्च्छनासे उत्पन्न होनेवालेकी पूर्णकूटतान और असम्पूर्ण मूर्च्छनासे निकलनेवालेकी असम्पूर्ण कूटतान कहते हैं। एक ही पूर्ण मूर्च्छनामें ५०४० कूटतान तक लग सकते हैं। पूर्ण मूर्च्छनाएं ५६ हैं। अतएव-पूर्णकूटतान २८२३४० तक होते हैं।

पूर्ण मूर्च्छनाका एक भी अन्त्य न रहनेसे पटस्वर असम्पूर्ण कूटतान ही जाते हैं। इसी प्रकार दोके अभावसे पञ्चस्वर, तीनके अभावसे चतुस्वर, चारके अभावसे त्रिस्वर, पांचके अभावसे द्विस्वर और ऋही अन्त्य स्वर न रहनेसे एक स्वर कूटतान कहला सकता है। इसी प्रकारसे प्रत्येक मूर्च्छनाके द्विसावसे असम्पूर्ण कूट-

तान लगा करते हैं। पटस्वरका पाड़व, पञ्चस्वरका औड़व, चतुस्वरका स्वरान्तर, त्रिस्वरका साधिक, द्विस्वरका गाधिक और एक स्वर कूटतानका नाम आर्चिक है। गान देखो।

पूर्वकथित स्वरोंमें कोई कोई स्वर दूसरे स्वरका साधारण हुवा करता है। यह दो प्रकारका है—स्वर साधारण और जातिसाधारण। स्वर साधारण फिर काकली, अन्तर, पड्ज और मध्याम ४ भागोंमें विभक्त हुवा है। काकली और अन्तरका नक्षत्रण पक्षमें ही बतलाया जा चुका है। काकली पड्ज तथा निषाद और अन्तर स्वर गान्धार एवं मध्यामका साधारण होता है। गानक्रियामें पड्जके उच्चारण पीछे अवरोह क्रममें पहले काकली और उसके बाद धैवतकी लगाना चाहिये। इसी प्रकारसे मध्यामके पीछे अन्तर और ऋपम प्रयोज्य है। गान्धारके मतानुसार जातिराग आदिमें काकली वा अन्तरका अल्प प्रयोग करना उचित है। निषाद और ऋपम यथाक्रम पड्जकी आदि तथा अन्वयति ग्रहण करने पर पड्ज साधारण कहना सकते हैं। गान्धार और पञ्चम क्रमानुसार मध्यामकी आद्य तथा अन्तिमयुति अवलम्बन करनेसे मध्याम साधारण होते हैं। पड्ज साधारण, पड्जग्राम और मध्याम साधारण मध्यामग्राममें लगाना चाहिये। कैशिकमें दोनों साधारणोंका प्रयोग किया जा सकता है।

भरतमुनिके मतानुसार एकाग्राममें उत्पन्न समान अंग और स्वरयुक्त जातिमें परस्पर समान गानकी साधारण कहनेमें कोई बुराई नहीं। (सङ्गीततन्त्र ४५)

सङ्गीतदर्पणके मतमें रागालापयुक्तकी ही जाति साधारण कहा जाता है। कोई कोई सङ्गीतवेत्ता कैशिक प्रभृति रागोंकी जाति साधारण बतलाता है।

स्वरको यथा नियम उच्चारण करनेका नाम वर्ण है। इसीको गान वा गीत शब्दमें उल्लेख करते हैं। यह गानक्रिया वा स्वरका उच्चारण चार प्रकार है—स्थायी, आरोही, अवरोही और सञ्चारी। किसी स्वरके कियत क्षण पर पर उच्चारणका नाम स्थायी है। जैसे—पड्जका सा सा सा और मध्यामका मा मा मा इत्यादि। जिस उच्चारणमें आरोह और अवरोह आता, यथाक्रम

आरोहो तथा अवरोही कहलाता है। इन तीनों लक्षण युक्त उच्चारणको स चारो कहते हैं। फलावर्तने इहो, गौतो और उच्चारणोंकि कई एक दूसरे धलद्वार भी दिखलाये हैं, उससे गानना मोट्टन बढ़ता है।

गौतकी आरम्भमें लगनेवालीको ग्रहस्वर, गौतसमापकको न्यासस्वर और गौतसे अधिक प्रयुक्त होनेवाले स्वरको अग्रस्वर कहा जाता है।

सङ्गीतशास्त्रमें जातिके १२ लक्षण कहे हैं—ग्रह, अग्र, तार, मन्द्र, न्यास, अपन्यास, सन्यास, विन्यास, बहुत्व, अल्पता, अन्तरमार्ग, पाठव और श्रोडव। यद्यो त्रयोदश लक्षण जिनमें देख पड़ते, जाति कहते हैं।

पूव की जिस ग्रामकी बात लिखी, उसी ग्रामसे राग निकलता है। मनुष्य प्रभृतिका चित्तरञ्जन करनेसे आदि सङ्गीतवेत्तानोंने इसका नाम राग रखा है। सङ्गीतदर्पण (रागाध्याय ८।११) में लिखा है कि शिव तथा शक्तिके योग पर शिवके मुखसे श्रीराग, वसन्त मैरद पथम एव भेध और गिरिराजके मुखसे नटराग उत्पन्न हुआ। इससे मालुम पड़ता कि सर्वप्रथम केवल कच्ची राग ध, गानेवालोंने फिर उससे अपर राग, रागिणो, उष राग प्रभृति बना लिये। सङ्गीतशास्त्रमें सब भिन्ना करके वि श्रुति प्रकार राग और छत्तौस प्रकार रागिणो निरूपित हुई हैं और रागिणी रागकी भायां जैसी कही गयी है। राग रागिणोके विभिन्न फालको इही राग रागिणी यांसे शुद्ध तथा मिश्रित भावमें बहूतसे गौत आविष्कृत हुए हैं। प्राचीन तत्त्व पर्यालोचना करनेसे समझ पड़ता है कि भारतवासियोंसे ही सर्वप्रथम सङ्गीतविद्या निकली फिर दूसरे जातीयो ने उसमें उन्नति की। मुसलमानो के आधिपत्य समयको सङ्गीतविद्याकी विविध उन्नति हुई। २ बडाई, नाम बडी।

(रि०) गौ कर्मणि क्त । ३ शब्दित, गाया हुआ । ४ स्तन, जिसकी तारोफ को गयी हो । गौतक (स० क्तो०) गौतमेव गौत स्वार्थे कन् । गौत । गौतकण्डिका (स० क्तो०) गौतस्य कण्डिका, ६ तत् । माम्बेदके परिगट । गौतक्रम (स० पु०) गौतस्य क्रम, ६ तत् । समीतमें एक प्रकारको तान । गौतक (स० क्तो०) । ११ ११ ११ ११ ११

गौतगोविन्द (स० पु०) गौतो गोविन्दो यत्, बहुव्री० । महाश्रुति जयदेव कृत एक ग्रन्थ । इसको गौतकाव्य भी कह सकते हैं। जयदेवने इसमें कवित्वकी पराकाष्ठा दिखलायी है। कविता श्रुतिग्रन्थ मधुर, प्रसादगुणविशिष्ट और शृङ्गाररसमिश्रित है। यह ग्रन्थ हादय सर्गमें विभक्त और उसमें प्राय समस्त कृष्णचरित वर्णित हुआ है। मरूतमें ऐसे ठाटका फान्य प्राय देख नहीं पड़ता।

गौतगोविन्दमें शृङ्गाररसका आधिक्य देख करके कोई कहता है—निगुण ब्रह्मकी उपासना दु साधय होनेसे जब सगुण रूपमें कृष्ण धरिय हुए, जयदेवको उचित न था कि वह शृङ्गार भागकी वर्णना करले। किन्तु क्या स्वदेशीय और क्या विदेशीय सुबुद्धमान् तथा सद्गान्धारो पण्डितोंने गौतगोविन्दकी सूक्ष्मत्व तथा भक्त्युत्साहक प्रणालीसे मोहित हो उक्त कारण पर दोष व्यक्त न करके इसका अग्रिम गुणकीर्तन किया है। उन्होंने इसकी रूपकरचना भी बहुत अच्छी तरह समझा दी है। इस देशके सुप्राज्ञ भक्तोकी बात छोड़ दाजिये। बहुतसे विदेशीय नाना विद्याविगारद भाषातत्त्वज्ञ प्रव्रतत्त्वविद् यह स्थिर कर न सके, मधुर भाव मधुरच्छन्द निर्मल भक्ति पीयूषभक्त प्रबन्ध आलोचना करके किस वाक्यविन्यासमें उसका गुण कीर्तन करे। सबसे पहले सर विलियम जोन्सन अंगरेजी भाषा, लासनने लाटिन, रूपटने जर्मन और सुकवि एडविन थार्नलडने अंगरेजी काव्यमें इसकी अनुवाद किया और ग्रन्थसम्बन्धीय महाप्रयोजनीय विषय का अन्पाधिक सुन्दर मन्त्र लिखा। इन सब विद्वानों ने गौतगोविन्दका भागवताध्यात्मभाषानुयायिक अथ समझने और समझानेकी चेष्टा की है। इसकी अनेक टीकाए और अनेक देशीय भाषानुवाद दृष्ट होते हैं। गौतगोविन्दके पद माताहृत्तिमें बने हैं। इसकी रूपक-वर्णनामें शुद्ध भाव पर नायक नायिकाको कथाके हलसे दिखलाया गया है—जोवात्मा परमात्माका एक रूप होते भी भावावलसे अभावमें उसको विस्मृत हुआ करता है। यही फिर आराधनासे जाग करके स्मृतिपथाकृत होता है। उस समय जोवात्मा परमात्माके विरुद्धमें व्याकुल हो उसको पानेके लिये घूमते घूमते त्रिपुण्ड्रस्थित हो म्म त्तं चित्तसे पवित्र श्रेमरुमें सुध हो जाती

और उसीमें लीन हो करके परमानन्द पाता है। ऐसे ही गुह्य भावसे ईश्वरभक्ति की वर्णना फारसी भाषाके महाकवि हफिजकी कितावमें मिलती है। बहुतसे विद्वानोंके मतानुसार गीतगोविन्द गोड़ाधिप लक्ष्मणसेनके समयमें रचित हुआ। (शरीरकमाथ)

गीतज्ञ (सं० त्रि०) गीतं जानाति गीत-ज्ञा-क। गीत जाननेवाला। गायक, गीतशास्त्रज्ञ निपुण।

गीतपुस्तक (सं० स्त्री०) गीतस्य पुस्तकं इति। जिस पुस्तकमें गीतका विषय लिखा हुआ हो।

गीतपिय (सं० त्रि०) गीतं पियमस्य बहुव्री०। १ गानानुरक्त जिसे गीत अच्छा लगता हो। (पु०) २ महादेव, शिव।

गीतप्रिया (सं० स्त्री०) गीतं पियं यस्या बहुव्री०। कार्तिकेयकी एक मातृकाका नाम।

गीतमोदिन् (सं० पु०) गीतेन मोदते मुट-णिनि। १ कित्तर। (त्रि०) २ जो गीत गानेमें आनन्द लाभ करे

गीतवादन (सं० स्त्री०) गीतका गाना।

गीतशास्त्र (सं० स्त्री०) जिस शास्त्रमें गीतका विषय निर्णीत हो।

गीता (सं० स्त्री०) गीयते आत्मविद्या यत्र, ग-क्त-टाप्। १ गुरु तथा शिष्यकी कल्पना कर फही गई आत्मविद्या, उपदेशात्मक ज्ञानगर्भ कथा। जैसे—शिवगीता, रामगीता सावित्रीगीता, पाण्डवगीता, भगवद्गीता (अर्जुन-गीता), अरुणगीता, भगवतगीता, उत्तरगीता, जीवन्मुक्ति-गीता, ब्राह्मणगीता, गोपीगीता इत्यादि।

२ भगवद्गीता। गीता कहनेसे प्रायः भगवद्गीताका ही बोध होता है। शङ्कराचार्यने भी अपने नाना पूर्वज्योंमें जब उसके विविध श्लोकोंको उद्धृत किया, अपने शासनमें कही भगवद्गीता 'कही' गीता, कही बहुवचनान्त गीता: शब्द लिखा है। (शरीरकमाथ)

कोई कोई उस ग्रन्थका नाम ईश्वरगीता बतलाते हैं।

(शरीरकमाथ २।।१८, २।।४५) परन्तु दूसरे लोग इस बातका प्रतिवाद करते हैं। कादम्बरीमें द्वयर्थ बोधक रचना स्थल में अनन्तगीता नामसे इसका उल्लेख है। ग्रन्थान्तर और किसी किसी प्राचीन भाषानुवादमें उसको अर्जुनगीता भी लिखा गया है। *

* शङ्कर बादशाहके समय में जो कि महाभारतकी फारसी भाषामें अनु-

दूषणपायने महाभारतमंथिताकी रचना की है। उमोका षष्ठ वा भीम पर्व ५८५६ श्लोकप्रयुक्त और ७१८ अध्यायोंमें विभक्त है। इसी पर्वमें अष्टादशाध्यायोंमें ७०० श्लोकनिबन्धिता छण्णार्जुनसंवादगीता गीता है। जैसे महाभारत पञ्चम वेदकी भाँति वर्णित हुआ, गीता वेदका शिरोभाग उपनिषद्, ब्रह्मविद्या और योगशास्त्र कही है। शङ्कराचार्यने उसके मन्त्रोपनिषदमन्वित विधि निषेध समष्टिको स्मृति जैसा भी ग्रहण किया है।

(शरीरकमाथ २।।।४६६)

महाभारतके १८ पर्वोंमें प्रत्येकके मुख्य विभागकी पर्वाध्याय कहते हैं। भीमपर्वमें ४ पर्वाध्याय हैं— १ जम्बुखण्डविनिर्माण, २ भूमिपर्व, ३ भगवद्गीता पर्वाध्याय और ४ भीमवध पर्व। प्रथम २ पर्वाध्याय १०-चतुर् अध्यायोंमें बँटे हैं। तृतीय अर्थात् भगवद्गीता पर्वाध्यायकी एक श्रेणी १३में २४ अर्थात् चार-आर द्वितीय श्रेणी २५ से ३२ अर्थात् ८-चतुर्धाध्यायक है। इस प्रकार दोनों श्रेणियोंमें सब मिला करके ३० छोटे अध्याय हैं। प्रथम श्रेणीके २२वें अध्यायका नाम छण्णार्जुनसंवादपर्व है। उसके बाद २३वें अध्यायमें दुर्गास्तोत्र कटा गया है, जो उक्त संवादके मध्य ही परिगणित हुआ है। द्वितीय श्रेणीके २५वें अध्यायमें उपनिषद् ब्रह्मविद्या योगशास्त्रान्तर्गत छण्णार्जुनसंवाद भगवद्गीता कहलाता है।

गीताके प्रथमावधि १८ अध्यायोंका नाम क्रमशः १ सैन्यदर्शन वा अर्जुनविषादयोग, २ सांख्ययोग, ३ कर्मयोग, ४ ज्ञानयोग, ५ कर्मसंन्यामयोग, ६ ध्यान अभ्यास वा आत्मसंयमयोग, ७ विज्ञानयोग, ८ तारकब्रह्मयोग, ९ राजविद्या राजगुह्ययोग, १० विभूतियोग, ११ विष्णुरूपदर्शनयोग, १२ भक्तियोग, १३ प्रकृतिपुरुषविभागयोग, १४ गुणत्रयविभागयोग, १५ पुरुषोत्तमयोग, १६ देवासुरसम्पट विभागयोग, १७ अज्ञातव्यविभागयोग और १८ संन्यास वा मोक्षयोग है।

गीताके श्लोकसंख्या गणना मन्वन्धमें नाना मत मिलते

बाद करनेसे पक्षी पन्थाय कतिपय कतिपय सु-सानोमें उसका और एक पशुवाद बनाया है। उद्धरे अष्टादश पर्वके अन्तमें "अर्जुनगीता" नामसे गीताका अनुवाद दिया है।

है। साधारणतः अधिकांश ग्रन्थों में ७०० और किसी किसीमें ७०१, ७०२ वा ७४५ गणनाका उल्लेख है। १२ वें अध्यायका प्रथम श्लोक ४- अधिकांश गीताओं में नहीं है। इसको जोड़ लेनेसे श्लोकसंख्या ७०१ हो जाती है। एशियाटिक सोसाइटीने टेवनागराचरों में जो महाभारत छपाया, ७०० श्लोक रहते भी श्लोकांक विच्छेदानुसार ७०४ अक्षर आया है। युक्तप्रदेशके लिखित महाभारतमें गीताके अन्तमें एक श्लोक है। उसमें बतलाया है कि गीतामें श्लोकोक्त ६२०, अर्जुनोक्त ५७, सञ्जयोक्त ६७ और धृतराष्ट्रोक्त १ श्लोक हैं। इन सभी श्लोकोक्त जोड़नेसे ७४५ संख्या आती है। तैलङ्ग काशीनाथ ब्राह्मणने अपने गीताके अग्ररे जो गद्यानुवादके मुखबन्धमें उक्त श्लोककी बात उठा करके कहा है— 'हम ७४५ सत्याका कोई कारण निर्देश कर नहीं सकते हैं। यह अनुमान लगता है कि यह श्लोक किसी प्राचीन समयको महाभारतमें प्रक्षिप्त हुए होंगे। फौजीने फारसी भाषामें गीताका जो अनुवाद किया है, उसके अन्तमें लिखा है—वैशम्पायनने सनेपमें गीताको प्रथम करके श्लोक, अर्जुन, सञ्जय और धृतराष्ट्रको उक्त सत्याको क्रमानुसार ६२०, ५७, ६७ और १ बतलाया है। उसको जोड़नेसे ७४५ आता है। इस ग्रन्थकी प्रतिलिपि १२२२ हिजरीकी लखनऊ नगरमें प्रसृत हुई थी। यह पुस्तक राजा सर राधाकान्त देवके पुस्तकालयमें रखी है। परन्तु शहरभाष्यमें गीताके ७०० श्लोकाका ही उल्लेख है।

गीता अपनी महीश्रृष्टाके कारण बहुकालावधि महाभारतमें उद्धृत हो प्रथम रूपमें निरुन्ती आयी है और इसका महीश्रृष्टन गभीर भाव और बहुतसा जटिल नत्व मितान्तरोंमें सन्निवेशित रहनेसे प्राचीन एव नव्य विविध साम्प्रदायिक बुद्धिविशारद भक्त परिव्राजक प्रभृति महात्मा गीताके भाष्य, हृत्ति, टीका, टिप्पणों तथा विविध प्रकार व्याख्या स्व स्व भावोदयके अनुसार करते रहे हैं। इन सभी व्यक्तियोंके हस्त भाष्यादि नाना देशमें विद्यमान हैं और प्रकाशित होते हैं। अनेकव्याख्या विहृतियाँ जो

पूर्वकालको निकली थीं, लुप्त हुई, भविष्यत्में वह प्राविष्कृत हो ही सकती हैं।

महाभारतके प्रायः सभी टीकाकारोंने नाना प्रणालियोंमें गीताका अर्थ सुबोधगम्य और तत्सम्बन्धीय तत्त्व तथा रस साधारणके हृदययाही बनानिका विशेष यत्न किया है। फिर भी उसमें अनेक कूट लक्षित होते हैं और कोई कोई कथा अभी भी अमीमास्य हो रह गयी है। महाभारतकी साहाय्यरूपक रूपवर्णनामें लिखा है कि व्यासजीके मांस्तृष्णमै मदीभारत यथित होने पर ब्रह्मा अपने आप उनके उस्ताहवर्धनार्थ पट्टे के और गणेशजीने लेखकपद ग्रहण किया था। किन्तु जब गणेश जीने प्रस्ताव किया कि क्षम चारों हाथोंसे लिखेंगे और व्यासजीके कविता कण्ठोदित करने या रचनानुरोधसे क्षणकाल ठहरनेमें लेखनीका वेग रुकने पर लिखना छोड़ देगे। व्यासजी मन ही मन कर्दने लगे—गणेशजी कथिताके सकल स्थल विना समझे बूझ निपिबद्ध कर न सकेंगे। व्यासजीको कण्ठनिश्चित कथितामें ८८०० कूट श्लोक उच्चारित हुए। उसका प्रकृत अर्थ बोधगम्य करनेके लिये गणेशजीको समय समय पर सीचना और लेखनीका वेग रोकना पडा था। उन्ही श्लोको का नाम व्यास कूट है। अतएव कौन कह सकता है कि गीताके मध्यमें भी व्यासकूट नहीं।

अनुपम अनन्यप्रायः हृदयाकर्षणीय गुण रहनेसे भारतवर्षके प्रायः सभी सभ्य स्थानोंमें तत्तद्देशीय विविध सम्प्रदायो हिन्दुधर्मनिःस्वदेशप्रचलितः अक्षरोंमें गीताका मूल लिख या आप और अपनी २ देशभाषामें अनुवाद करके रखा है और करते जा रहे हैं। देशी और विदेशी नाना विरोधी धर्मावलम्बो लोग भी (जो हिन्दू नहीं हैं) गीता की महितीध्वनि सुन करके अपनी अपनी भाषाके गद्य पद्यमें उसका अनुवाद, रचस्य, व्याख्या, समालोचना, अनुमोदित धर्मावलम्बो और प्रगसावाद प्रकाश करते हैं।

किसी निरभिमानी फारसी इतिहासवेत्ताने ११२६ ई०को स्वीय रचित इतिहासमें लिखा है कि अबू सुलह कर्दक किसी प्राचीन संस्कृत ग्रन्थका परकी भाषामें एक अनुवाद रदा। १०२६ ई०की यही परकी अनुवाद अनुसुहसेन नामक एक व्यक्ति द्वारा फारसी भाषामें अनु-

वादित हुआ था। इसी श्रेणीके ग्रन्थको अनेक कथाएं उक्त इतिहासवेत्ताने अपने इतिहासमें सन्निवेशित की हैं। सुप्रसिद्ध इलियट साहबने उसको देख कर कहा है कि उसमें महाभारतकी बहुतसी कथाएं अविकल मिलती हैं। यदि यह बात सच हो, तो महाभारत-गीताका अनुवाद १००० वर्षसे बहुत पहले किया गया जान पड़ता है। यहविषय पुरातत्त्वविदोंको अनुसन्धेय है।

उन्नतहृदय राजनीतिज्ञ प्रजापालक अकबर बादशाह अपने राज्यमें हिन्दू मुसलमानोंके बीच धर्मसंक्रान्त विरोधजनक नाना प्रकार विप्लव पड़ते देखे सर्वदा उसके निवारणके सदुपायकी चिन्ता किया करते थे। शास्त्रज्ञ तथा तत्त्वज्ञ विद्वानोंके साथ सुमलमान, यहूदी और ईसाई धर्मावलंबियोंका तर्क वितर्क उत्थापन तथा तत्तद्धर्मकर्म जिज्ञासा करके उनकी धारणा हो गयी थी—सुख्य रूपमें सभी प्रचलित धर्मोंका मूलतत्त्व एक ही है, स्व-स्व धर्मके सारग्राहियोंमें सहृदय नहीं टूटता। केवल मूढ़ वा वाह्यक्रियारत खण्डग्राही धर्मसांप्रदायिकों किंवा कूट अभिमन्त्रिसाधक लोगोंमें ही अनर्थक वाद विवाद उठा करता है। इसीसे उन्होंने स्थिर किया कि हिन्दू मुसलमान उभय धर्मावलंबियोंके ज्ञानगर्भ मनोरञ्जन प्रधान ग्रन्थ एक दूसरेकी भाषामें प्राञ्जल रूपसे अनुवाद कराके उनके पाठार्थ व्यवस्था करने पर युक्तिसिद्ध कार्य होगा। १५८४ ई०को उनके आदेशसे संस्कृतज्ञ सुकवि राजमन्त्रिभ्राता फैजीने महाभारतका फारसी अनुवाद निकाला था। वह मुसलमानोंके पढ़नेको प्रचारित होने लगा। इसीसे गीता पृथक् रूपसे पाठ्य ग्रन्थ बन गयी।

१७४४ ई०को अङ्गरेजी राजत्वके प्रारम्भमें (Charles Wilkins) विलकिनस साहबने मूल गीता पाठमें महानन्द अनुभव करके संस्कृत शास्त्रकी महोत्कृष्टता और भारतवर्षमें पुराकालावधि तत्त्वज्ञान तथा सुनीतिका जो प्रादुर्भाव रहा, उस समयके बड़े लाट वारन हेष्टिङ्ग्सको समझानेके लिये गीताका प्रथम अंगरेजी अनुवाद करके उपहार दिया था। बड़े लाट हेष्टिङ्ग्सने तत्पाठसे मोहित हो कोर्ट, अप-डिरेक्टर्सके अधीनको ग्रन्थका मर्म और उसके ज्ञानसे लोगों—विशेषतः भारतके अङ्गरेजी

राजपुरुषोंका क्या उपकार होता, टिप्पणी करके कोर्टके अनुमतिक्रमसे १७४५ ई०में उसको प्रकाश कराया। उन्होंने इसी प्रथम संस्करणमें अपनी आप गीताभी बद्ध प्रशंसात्मक सुखबन्ध-जैसी एक प्रस्तावना लिखी है। फिर भी कई गद्य-पद्यात्मक अङ्गरेजी उल्लेख हुए। १८२३ ई०को सुप्रसिद्ध संस्कृतज्ञ तथा तत्त्ववित् जर्मन (A. W. Schlegel) जर्मन साहबने देवनागराक्षरोंमें गीताका मूल और लाटिन भाषामें उसका अनुवाद एकही पुस्तकमें प्रकाश किया। इससे पहले उन्होंने अपने तत्त्वावधान पर पेरिस नगरमें देवनागराक्षर बनाये थे, उसीमें गीता मुद्राङ्कित हुई।

१८५८ ई०को सुप्रसिद्ध विद्वान् (H. H. Wilson) विल्सन साहबने लण्डन एशियाटिक सोसाइटीमें एक प्रबन्ध पढ़ा। उसमें कहा गया कि (Galenus Demetrius) देमेट्रिया नामक किसी यूनानी व्यक्तिने ग्रीक (यूनानी) भाषामें गीताको अनुवाद किया था। इन्होंने काशीमें संस्कृत पढ़ा और वही गीतानुवाद रचा। उनके मरने पर यह पुस्तक गैथेन्स नगरमें छपा गया। फरामीसी (फ्रेञ्च) भाषामें गीताका अनेक प्रकार अनुवाद समय समय पर प्रकाशित हुआ। बहुतसी भाषाओंके ज्ञाता प्रवृत्तत्ववित् (Eugene Burnouf) वरनूफ साहबने जो श्रीमद्भागवतके एकमात्र अनुवादक थे, १८२५ ई०को गीताका पहला फरामीसी अनुवाद किया था। फिर (Fauche) फोशे साहबने समस्त महाभारतके फरामीसी उल्लेख बनानेका सङ्कल्प किया और १८६३से १८७२ ई० तक १० वर्षके बीच आदिपर्व अवधि का पर्व पूर्ण करते करते वे कालग्रासमें पतित हुए। इन अनुवादमें गीताका भी उल्लेख यथास्थान पर छपा है। १८६६ ई०को संस्कृतवित् धर्मतत्त्वज्ञ (Dr. F. Lottner) लोरिञ्जर साहबने जर्मन भाषामें अपने बहुमन्तव्य कथनके साथ गीताका अनुवाद निकाला था। उसमें इसके नाना अनुसन्धेय विषयोंकी जो आलोचना लिखी, वह विशेष कौतुकावह है। वाइलिके साथ गीताका मौसाइस्य टिखलाया गया है। इसी प्रकार युरोपकी इटालीय, रूसी प्रभृति प्रायः सभी सुख्य भाषाओंमें गीताका अनुवाद प्रकाशित हुआ है। सिवा इसके यवहीपके

निकट बलिहीपमें 'कवि' नामकी किसी प्राचीन भाषामें महाभारतके अनेक भागों का अनुवाद मिला है। सभ्य है, उसमें गोताका भी उल्लेख है। काशिके एक विद्याविहारट धर्मपरायण सन्यासेने बतलाया है कि उसने चीन देसीय किसी परिव्राजकके हाथमें गोताका चोना अनुवाद देखा था। अमेरिकाके सर्वप्रधान कवि इमर्सन गोताके अद्वैत भावमें उन्मत्त रहें।

गरुडपुराण, पद्मपुराण वराहपुराण प्रभृति पुराणांशोर वैष्णवीय तन्त्र आदिमें गोतामाहात्म्य विविध भावमें प्रकाशित हुआ है। दूसरे यह भी सुस्पष्ट समझ पड़ता है कि श्रीमद्भागवतके किसी किमो अध्यायमें गोताके अनेक मनोहर भागों की विवृति की गयी है। अज्ञेयतर उपनिषद्के अर्थमें गोताके बहुतेके श्लोक उसके भावपरिचयार्थ उद्धृत हुए हैं।

गोखामी, वैष्णव आदि ज्ञान तथा भक्तिमार्गके बहुतसे ग्रन्थ गोतावलम्बनमें ही प्रकाश किये हैं। अत्र जिज्ञास्य है—क्या कारण है जो गोता इस प्रकार सर्वश्रेष्ठ महादरणीय धन बनी हुई है। इसका प्रधान हेतु जो विज्ञानतत्त्व गूढानुगूढतत्त्व, सूक्ष्मानुसूक्ष्म विषय नमनजातीय ज्ञानियों का आनन्द एव चिन्तनीय और जो जीवामात्रका प्राकाश तथा परित्याज्य है, उसीका साधन और वर्जनीय उपाय तथा फलाफल और जीवन यात्रानिर्वाहका सन्मार्ग विकास श्रीमद्भगवद्गीतामें अति मनोहर छन्दसे रचना चातुर्यसे मत्तपतया सहज उच्च पृथ्व्य सभ्यपर पाश्चलताके साथ वर्णित हुआ है। अनन्त जगत्का निदान स्थिति तथा परिणाम जन्म, जीवन एव मरण, सुख, दुःख, देह, मन, ज्ञान और मूर्च्छता धर्माधर्म, पाप, पुण्य, कर्तव्याकर्तव्य, सद्गति एव अधोगति, आत्मोन्नति, आत्मविनाश, स्वर्ग, नरक पृथ्वी विषयो का सदर्थ तथा उसके सम्बन्धमें विविध प्रकार के स्कारापव नोगों के लिये आचरणीय सहज मत्त उपदेश, कर्मकाण्ड, ज्ञानकाण्ड और भक्तिमार्ग ब्रह्मानन्द, ब्रह्मार्चना और जगत्कृतपिता व्रत इत्यादि विषयक परिचय हृदयप्राप्ति रूपमें गीतामें पाया जाता है।

गीताको शिक्षा—एक ही ईश्वर है। वह अनादि

अनन्त और पूर्ण होता है। उसको दुर्ज्ञेय आभावेत् शक्तिमेंसे प्रकृत वा त्रिगुणात्मिका मायामेंसे यह अनन्त जगत् निकलता और उसीमें मिलता है। इसी प्रकार पुनर्जन्म और पुनर्लय अनन्तकालव्याप्त है। ईश्वर अपने आप निष्क्रिय होते भी मायावृत्त हो जोवलोकमें देहधारण करता है। वह देही (जीवात्मा) वा पुरुषपदवाच्य है और वही स्वयं पुरुषोत्तम है। प्रकृतिके नियमसे देहका जन्म, वृद्धि, क्षय अथात् विकार होता है। किन्तु देह नाशसे देही नहीं मिटता, देहान्तर मात्र धारण करता है। देही (आत्मा) अविनाश्वर, अजात और अविकारी है। वही विविध रूपमें परमात्मा वही सत् (एवमात्र विद्यमान) है। सुतरा समस्त जगत् उसीका मूर्ति स्वरूप है। उसका अर्थ ही असूत भावमें जड़ और क्रमश उत्तरोत्तर सूक्ष्ममें उद्भिद्, कोटपतङ्ग, पशुपत्नी, सिद्ध, ऋषि, भूमण्डलातीत ब्रह्माण्ड (द्युलोक) वासी टिब्युरुप (देवता) और महासूत भावापन्न अवतार होता है इसीलिये वह सत् तथा असत् (सूक्ष्म और असूक्ष्म) और इन दोनोंसे अतोत है। ससार प्राकृतिक नियमसे बनता और विगडता है। विज्ञव उठने पर अतार आविभूत और उसकी क्रियासे यह शोधित होता है। ससारमें प्राकृतिक नियमसे सुखदुःख उद्भावित है। जीवमात्र सुखान्वेपी और दुःखदूरकरणेच्छ होता है। इन्द्रिय और तद्ग्राही विषयके सयोगसे जो सुख दुःख मिलता, उसका अस्तित्व नहीं देख पड़ता। ऐसी अनित्य विषय ईश्वरको आत्मा मौपने और अभ्यास बलसे मनोविकार ला नहीं सकता। बुद्धिप्राप्त आन्तरिक सुख ही गीताके मतानुसार वेदनीय है।

ईश्वरके ध्यान, ईश्वरके अहिमानुभव, तत्कीर्तन और तत्सम्बन्धाय उच्च भाव आत्मसात् करने और उसके बन्ध पर स्वतः सर्वभूतका शत्रु मित्र भाव परित्याग करके हितसाधनमें रत होनेसे उक्त प्रकार शरुण्डनीय चिरवर्धनधर्म सुख उद्भूत, सर्वदुःख लुप्त और सर्वप्रकार अपर विषयक हृद् सुख इसी महानन्दमें भञ्जित होता है। फलाफल ईश्वरको अर्पण करके प्राकृतिक नियमसे जो कार्य अवश्य हो करना पड़ता, उसकी क्रियाके अनुष्ठान में कभी भी दुःख नहीं लगता। परन्तु निज इन्द्रिय

लभिकर सुखमाधनाके लिये पुण्यादि कर्म अर्थात् मकाम अनुष्ठान करनेसे वैसी सिद्धि कहाँ मिलती, इससे मुक्ति-लाभसे बाधा पड़ती और नानाविध दुर्गति लगी रहती है। किसी अणुके सूक्ष्मानुसूक्ष्म अंशसे अति विशाल ब्रह्माण्ड और उमकी समष्टि तक जो अनन्ताकाशमें अनन्त-कालावधि ससुद्रवालुकावत् व्याप्त हो रहा है, सभी एक दूसरे पर स्व स्व धर्मानुयायिक कार्य करता है। मनुष्य-को गर्भच्युतिसे यावज्जीवन मयस्त जगत् उस पर अपना कार्य देखाता और यह कार्यफल यावज्जीवन चला जाता है। अपना अपना नया कार्यगत फल इहलोक और जन्मजन्मान्तरमें भोग करना पड़ता है। सुतरां कर्म-बन्धमुक्त ही जीवात्माका परमात्मामें लय होना (निर्वाण-प्राप्ति) अ नर्वचनीय दोषकालव्यापी जटिल और दुर्ज्ञेय व्यापार है। योग नामक कर्मकौशल इस निर्वाणप्राप्ति का साधक है। योगकी नाना पन्थाएं नाना ग्रन्थोंमें विवृत हुई हैं। किन्तु आचारादिका नियम और अन्यान्य विविध चेष्टाओं द्वारा पिण्डविशुद्धिकारो मंयमन, महुरुके निकट तत्त्वोपदेशग्रहण और अन्तमें भक्त्युद्दीपनसे आत्मज्ञान लाभ करके तन्मय हो जाना सदयोगका मुख्य उद्देश्य है। ईश्वरको यद्यपि लोग नाना प्रकारसे भजन करते और सर्वपूकारमें कार्यान्तरूप सिद्धि पाते रहते, तथापि आत्मज्ञानानुशोलनमें को जानेवाली भजनाको ही प्रकृत समझते हैं। उम ज्ञानका चरम फल यज्ञो दृष्टोपलब्धि है कि सर्वभूतमें एकमात्र ईश्वर और सर्व-भूत ईश्वरमें अवस्थित है। सुतरां साधक निश्च होने पर अपने आपको ईश्वरसे भिन्न समझ नहीं सकता। इसी समय 'सोऽहं' (वह मैं ह), 'अहं सः' (वह मैं), 'ब्रह्ममयं जगत्' (संसार ब्रह्मरूप है) भाव उसका दृढ़ निश्चय हो जाता है। वह ज्ञानचक्षुसे जगत् एव' संसार-रूपि दर्शन कर नहीं सकता। महाकविका विशाल भावानुभाव अतिक्रम और उसके शोभादर्शनमें महावि-ज्ञानशास्त्रियोंको तोच्छा बुद्धिको अपेक्षा भी सूक्ष्मबुद्धि-से अनन्तकौशलका निगूढ़ तत्त्व भेद करके साधक सदा-नन्दसागरमें डूबा रहता, उसका चिन्त कभी भी किसी पूकारसे विच्युत नहीं पड़ता और सर्वदा निर्भय लगता है। अपनी उपमामें सबका सुख दुःख समभावसे देख

करके वह विश्व-टास्य-व्रतधारो, दयाशोल, सत्यपरायण, बालवत् ऋजुस्वभावविशिष्ट, सटीव्रतात्मा, नृदुभावापन्न इत्यादि सब उज्ज्वल तथा सहोत्कृष्ट गुणोंमें भूषित और सर्वप्रकार क्षुद्र अधम निकृष्ट भावमें अपरिचित हो जाता है। विषय कामनाएं सुबुद्धिको मलिन करता है। यही कामनाएं ईश्वरनिष्ठा सुतरां गान्ति और मुक्तिमें बाधा डालनेवाली है। ज्ञान तथा बुद्धिकौशल और अभ्यास-बलसे कामना न टवने पर सर्वनाशकारिणी हो जाती है। विश्वशून्यके भिन्न भिन्न पर्वस्वरूप जो एक एक पृथक् पृथक् पड़ता, उममें मनुष्य भी ठहरता है। अन्यान्य वस्तु जैसे अपने अपने प्राकृतिक नियम और गूढ़ भावमें परम्परकी अनुकूलता करते, मनुष्य तन्मयसवगतापन्न होते भी चित्शक्तिकी अपेक्षाकृत स्फूर्ति रहनेसे अपने वन पर स्वशरीर और मनको अन्यप्रकार बटन मन्ते हैं। मालूम पड़ता, इसीसे उनके पक्षमें उक्त प्रकारका कोई कार्य मानो स्थतन्वभावसे किया जा सकता है। परन्तु वास्तविक वह जहां तक बुद्धिमायोत्तीर्ण हो सकते, बुद्धि-शक्तिके नियमानुसार कार्य करते हैं और जब माया बुद्धिको मनाजड़ोभूत बना डालती, इस मायाबलसे उक्त जञ्जीरकी कड़ी (मानव) अपना तथा अन्यान्य शून्य पर्वका प्रतिकूलाचरण लगाती है। ऐसा होने पर भावना ही मायाके प्रतिनिधि-जैसा कार्य करती है। उक्त अनु-कूलता ही पुण्य और प्रतिकूलता पाप है। इहलोक या परलोकमें विषयभोग कामना ही पापका बीज ठहरती है। यह दुष्पूरण अग्निवत् कामना शुद्ध शरीर और शुद्ध-चित्तमें केवल ईश्वरके ध्यानसे दमित होते हैं। तब जीवभूत चिदंश चित्-मध्य (ईश्वर)में लगनेसे इस माया-की प्रतिनिधि कामना एककालको निर्वापित हो जाती, मनुष्य अपना और दूसरेका कल्याणसाधन करता है। इन्द्रिय, मन और बुद्धि कामनाका आधार हैं। सुतरां इन सबके दमनका कौशल समझना भी एक महत् कार्य है। यह गुरुतत्त्वविशेष गुरुरूपदिष्ट ज्ञानोको छोड़ कर-के किसी दूसरेका बोधगम्य नहीं - मनुष्यकी पापपुण्य विषयमें क्या स्वतन्त्रता और क्या परतन्त्रता है ? इस विषयमें हठात् अज्ञानियोंके बुद्धिभेदको चेष्टा करनेसे उनका विस्तार अनिष्टोत्पादन सम्भव है। उनके लिये

मीमांसा पर दृष्टि रख करके कहा हुआ है कि अव्यक्त निराकार अनादि अनन्त निर्विशेष, अव्यय इत्यादि केवल अभावसूचक शब्द द्वारा अनिर्दिश्य अचिन्तनीय ब्रह्मकी उपासना देहधारीके लिये दुःसाध्य है। फिर अपेक्षाकृत क्वचित् चिन्ताभाव (यथा—तमसः परस्तात्, दिव्यद्योतक भूतेश्वर, भूतभावन, स्थाणु, कवि, सर्वज्ञ, सर्वविव्यानि-माता, समदृष्ट, सर्वभूतका बीज, परम पुरुष, विश्व-नियन्ता, विधाता, विश्वपिता, विश्वमाता, स्रष्टा, रचक, सहर्ता, सुहृत्), मन, बुद्धि, ज्ञान, परिज्ञाता, प्राण, बल, वीर्य, सबका आदि-मध्य-अन्त इत्यादि भाव और सर्व-प्रकार उज्वल मनोवृत्तिका भाव (दया, सत्य, शम, दम, अभय, अहिंसा, क्षमा, पवित्रता, ऋजुता प्रभृति) तथा क्रमशः अनुभवातीत ज्योतिः (सूर्य, चन्द्र, अग्नि, प्राण-तिक महोज्ज्वल इन्द्रियगोचर पदार्थादि) और वेद, यज्ञ, तपस्या, दान, प्रणव इत्यादि (उसके पीछे बृहस्पति, शुक्राचार्य, व्यासमुनि तथा कपिलादि ज्ञानी और प्रह्ला-दादि भक्त पुराणवर्णित पुरुष इत्यादि) मूर्तिनिर्देशसे उपासना सुबोधगम्य बना दी गयी है। किन्तु शब्दोंका गूढार्थ यही है कि निर्गुण ब्रह्मकी अभावसूचक शब्द द्वारा वर्णित उपरि उक्त तथा तदतिरिक्त गुणोंके साथ मिश्रित पूर्ण ब्रह्म घनीभूत आकारसे कृष्णावतार महासुलभचिन्ता है और उसके ध्यानमें तद्भावाविष्ट हो करके इहलोक और परजन्मान्तरमें उसकी प्राप्ति होती है।

कृष्णोपासक स्व स्व प्रकृति, शिक्षा, बुद्धि, पूर्व पूर्व कर्मफल और इहलोकके विविध सङ्गठनभेदसे नाना भावोंमें उनका ध्यान पूजादि करते हैं। सर्वोच्च त्रेणिके ब्रह्मव्यञ्जक ध्यानयोगसे रूपक भावमें उनकी उपासना उठाते हैं। कोई उन्हें चतुर्भुज नारायणकी एक द्वि-भुज मूर्ति देवताके भावमें देखता है। कोई उनकी भजना दृष्टिवंशीय यदुकुलोद्भव वासुदेव माधव मधुसूदन योगेश्वर महातेजस्वी पुरुष जगद्गुरु स्वरूप समझ करके ही किया करता है। कोई उन्हें कामदाता समझ करके नाना कामनाओंके पूर्ण होनेके लिये उनके स्तव पढ़ता है। इसी प्रकार उसकी बहुत अर्चना है। इसमें जो इहलोक वा परलोककी सर्वकामना सिद्धिके अभिलाष वर्जित हो मोक्षलाभ पर भी दृष्टि न हो उनकी भक्ति

और उनके प्रेममें समा 'तदनुद्भवकदाकानमत्रिष्टानम् पराशया' वन ज्ञानयज्ञरत और सर्वभूतहितरत हुआ करते हैं; अति दुर्लभ है। वही सब त्रेष्ठ माने गये हैं। किन्तु अन्यान्य श्रृंगियोंके उपासक जो पुष्प पत्र फल जल इत्यादि द्रव्य द्वारा तथा होमादि क्रियामें उनको पूजते, केवल तत् कर्म फलमात्र पाते हैं।

जिस कालको गोता रचित हुई, उस समय भी कृष्ण-मतकी अवहेला करनेवाले बहुतेसे लोग रहे। उनके प्रति करुणाभावकी कथा भी गोतामें कही है। पूर्व-मीमांसा, उत्तरमीमांसा, योगशास्त्र मत्के आजकाल जो जो ग्रन्थ देखे पड़ते उनके मतोंकी अनेक कथाओंका मूल और नास्तिक मत भी यथायोग्य कृष्णमतके साथ गीता-में प्रकाशित हुआ है।

गीताका पूर्वोक्त विषय—प्रेम, उगत, नरगत, कर्म, प्राण, भक्ति, पूजा प्रभृति शब्दोंमें द्रष्टव्य है।

यद्यपि महाभारतके संग्रह कालको तत्पूर्व समयके वेद उपनिषत् प्रभृतिके अनेक मत और उद्धृत वचन गोतामें सन्निवेशित हुए हैं, तथापि कृष्णमत अन्यान्य नूतन उपादानोंके साथ मंघटित और विशेष विशेषस्थल-में "मे मतं" "मे मतिः" इत्याकारसे सुतेजित और सम-र्धित किया गया है।

सकल ज्ञानोंका सार और सब शास्त्रोंका मुख्यो-द्धेश्य साधन मानवजातिके लिये सर्व प्रधान कर्तव्य है। गीतारहस्य यही है—आनन्दस्व पर्यन्त अनन्त विषयका असीम विकास ७०० श्लोकगत चित्र कै से गीतामें कौनसी प्रणाली और किस नियमसे सन्निवेशित हुआ है। जैसे चुट्ट वट का अश्वत्थ बीजसे महाविशाल तरुशाखादि प्रवर्धित होते, गीताके प्रथम अध्यायमें अर्जुन-की विषादसूचक बड़ते थोड़ी और द्वितीयाध्यायमें तदानुसङ्गिक सामान्य कथासे उपर्युक्त एक विशाल तत्त्व निकले है। अर्जुनने कुरुक्षेत्रमें युद्धोत्साहो स्वीय तथा विपक्ष सैन्यदलको देख मोह प्राण हो करके अपने शरीर, मन और हृदयकी अवस्था तथा अपना उद्भावित मत कृष्णके समक्ष बतलाया था। इसी परिचयमें उन्होंने उपस्थित युद्धकर्म करनेकी अपनी अनिच्छा भी जतलायी और उसके लिये जो सब कारण निर्दिष्ट हुए, उनके

खण्डन पर लक्ष्योक्ति भी आयी है। इसी उक्तिमें अर्जुन को सोधो रीति पर समझाने लिये अल्प प्रश्न पर एक एक अध्याय है। गीताकी रचना समय पर अनेक मतामत मिलते हैं। महाभारत देखो।

३ मद्धीण रागका एक भेद। ४ २६ मात्राका एक छन्द जिसमें १४ और १२ मात्राओं पर विराम होता है। ५ वृत्तान्त, कथा, हान।

गीतायन (स० स्त्री०) गीतस्य अयन आश्रय, ६ तत् । गीतयुक्त।

गीतामार (स० पु०) गीताया सारो पत्र, बहुवो० । यद्वा गीतासु सार, ७ तत् । गरुडपुराण पूर्व खण्डके २३३ अध्यायसे २३६ अध्याय पर्यन्त अष्टविंशोप । जिसमें गीताका माराय सवेपसे कहा अथवा जो गीताकी अपेक्षा उल्कृष्ट हुआ, गीतासार कहलाता है। गीता वेदव्यासकी अष्टतमयी लेखनीसे निरुत्त पोय्य प्रधारा है। इस गीतासारमें उसीका माराय कहा हुआ है। इसके वक्ता स्वयं भगवान् हैं। गरुडपुराणमें उसने श्रीताका कोई उल्लेख नहीं है। फिर भी इतना लिख दिया गया है—'भगवान्ने कहा कि उन्होंने पूर्व कालको अर्जुनके निरुत्त जिस गीतासारका प्रकाय किया था, उसे कीर्तन करेंगे। इसमें मान्य पडता कि भारतयुद्धके आरम्भमें अर्जुनकी मोह उपस्थित होने पर भगवान् श्रीकृष्णने उन्हें जो विस्तृत उपदेश दिया, मोदयस्त अर्जुनने उसको धारण न किया था। पौष्टिकी भगवान् कहेके उसका माराय पुनर्वार उपदिष्ट हुआ। इसीको गीतासार कहते हैं। भारतमें उसका कोई प्रसङ्ग नहीं है। गीताका प्रधान उद्देश्य जो प्रतिपादन करना है कि फलका अभिलाषी न हो केवल कर्तव्यता बोधसे लौकिक और बौद्धिक कार्यका अनुष्ठान करनेसे ही मनुष्य सुखी हो सकता है। किन्तु इस गीतासारमें उसकी कोई कथा उल्लिखित नहीं हुई। इसमें तत्त्वज्ञान मुक्तिका साक्षात् कारण और अष्टाङ्ग योग चित्तशुद्धिका कारण जैसा उहाराया है।

गीति (स० स्त्री०) गै भावे क्लिन् । १ गान। २ मात्रा वृत्तविशेष। इसके मम चरणोंमें १८ और विषम चरणोंमें १२ मात्राएँ होती हैं। इसके अन्य नाम—उद्गाथा और उद्गाथा।

गीतिका (सं० स्त्री०) गीतिविषय कायति कै क टाप् । १ एकमात्रिक छन्द जिसके हरएक चरणमें २६ मात्राएँ होती हैं। १४ तथा १२ पर यति होती है और अतमें लघु गुरु होते हैं। २ एकवर्णिक छन्द जिनके हरएक चरणमें सगण, जगण, मगण, रगण और लघु गुरु होते हैं। ३ गीत, गान।

गीतिकाव्य (स० स्त्री०) गान-मिश्रितकाव्य।

गीतिन् (स० त्रि०) गीत गानमस्यस्य गीति इति । गान करनेवाला।

गीतिर्या (स० स्त्री०) छन्दविशेष, जिसमें चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरणमें १६ लघुपद रहते हैं।

गातिरूपक (स० पु०) कम गद्य तथा अधिक पद्यका एक तरहका रूपक।

गोथा (स० स्त्री०) गै थक् टाप् । १ वाक्य। २ गीत, गान।

गोदड (हि० पु०) शृगाल। मियार कुत्तेकी जातिका एक जन्तु जो लोमड़ीके सदृश होता है। यह भुँडके भुँड एशिया तथा अफ्रीकामें हरएक जगह पाया जाता है। दिनके समय पृथ्वीके भीतर मादमें रहता और रात्रिकाल ममूहमें बाहर निकलता और छोटे छोटे जानवरको पकड़ कर खाता है। यह मृत जन्तुके लाश भी खाता है। गोदड बहुत डरपोक जन्तु समझा जाता है।

गोदडरूख (हि० पु०) मध्यम आकारका एक तरहका पेड़। यह ममस्त उत्तर, मध्य और पूर्व भारतवर्षमें होता है। इसके पत्ते छोटे, बड़े तथा कई आकारके होते हैं और पशु बहुत चावसे इसे खाते हैं। शीघ्रमृतके आरम्भमें इसके समस्त पत्ते गिर जाते हैं। चैत्रसे श्वैष्ठ मास तक इसमें बहुत छोटे छोटे लानर गके पुष्प निकलते हैं और इसमें बरेसे कुछ छोटे फल भी होते हैं जो खानेके काममें आते हैं।

गोट (हि०) गोट देखो।

गीटी (पा० वि०) जिसको हिर्यत नहीं, डरपोक, कायर।

गीध (हि० पु०) यह देखो।

गीधना (हि० स्त्री०) लुब्ध होना, परचना।

गीधत (स० स्त्री०) शयनपक्षित, गैर जाजिरो। २ विद्ध नता, सुगुंलकीरी, सुगुलो।

गौर (सं० स्त्री०) वाणी ।

गौरय (सं० पु०) गी-रय इवास्य, बहुव्री० । १ बृहस्पति ।
२ जीवात्मा ।

गौर्य (सं० स्त्री०) गृ कर्माणि क्त । १ वर्णित, कक्षा
हुआ । २ सुत । ३ निगला हुआ ।

गौर्य (सं० स्त्री०) गृ भावे क्तिन् । १ स्तुति । २ वर्णन ।
३ ग्राम, निगलनकी क्रिया ।

गौदेवी (सं० स्त्री०) गिरोऽधिष्ठात्री देवी । सरस्वती,
शारदा ।

गौर्यति (सं० पु०) गिरां पतिः, इ-तत् । अहरादित्वात्
विसर्गस्य विकल्पे रेफादेशः । १ बृहस्पति । २ पण्डित,
विद्वान् ।

गौर्यता (सं० स्त्री०) गौरिव विस्तीर्णता । महाज्यो-
तिष्मती लता, बड़ी मालकंगनी लता ।

गौर्यत् (सं० त्रि०) गौरस्यस्य गिर-मतुप् । वाक्ययुक्त ।

गौर्यन् (सं० पु०) गौरिव वाणः कार्यसाधनत्वात् अस्त्र-
विशेषो यस्य, बहुव्री० । देवतासुर ।

गौर्यान्कुसुम (सं० स्त्री०) गौर्याणप्रियं कुसुमं, मध्व-
पदलो० । लवङ्ग, लौंग ।

गौर्यायोगोन्द्र—एक ग्रन्थकार, इन्होंने प्रपञ्चसार नामक
एक तन्त्रकी रचना की है ।

गौर्याण्ड सरस्वती—विश्वेश्वर सरस्वतीके छात्र, देवेन्द्र
और नृसिंहात्मके गुरु । इन्होंने गायत्रीपुरश्चरणविधि
और प्रपञ्चसार-सारसंग्रह नामके दो ग्रन्थ रचना किये हैं ।

गोला (हि० धि०) भोगा हुआ, तर, नम ।

गोलापन (हि० पु०) गोला होनेका भाव, नमो, तरो

गोली (हि० स्त्री०) एक बहुत ऊँचा ढूँह । इसकी
लकड़ी सुखी लिये पीले रंगकी होती है जिससे मोज
कुरसियाँ आदि बनाई जाती हैं । इसका पेड़ हिमालय
पर्वतकी तराईमें बहुतायतसे होता है । बरसो ।

गोपति (सं० पु०) गिरां पतिः इ-तत् । १ बृहस्पति ।
२ पण्डित, विद्वान् ।

गुंग (हि०) गुंग देवो ।

गुंगवहरी (हि० स्त्री०) एक तरहका दीर्घ मत्स्य जो
सर्पकी तरह देख पड़ता है । बामी मछली ।

गुंगा (हि०) गुंग देवो ।

गुंगो (हि० स्त्री०) दो मुखवाला मर्प । चुक्रेण्ड ।

गुंगुआना (हि० क्रि०) १ भुंआ देना, अच्छी तरह न
जलना । २ गुं गुं आवाज करना, असुष्ट शब्द बोलना ।

गुंचा (अ० पु०) १ कर्नो, कोरक । २ नाच रंग,
विचार ।

गुंची (अ० स्त्री०) गुंघची ।

गुंजरना (हि० क्रि०) १ गुंजार करना । भोरिका गुंजना,
भन भनाना । २ शब्द करना, गरजना ।

गुंजाइश (फा० पु०) १ स्थान, जगह । २ ममाई ।

गुंजान (फा० वि०) घना, अविरल ।

गुंजिया (हि० स्त्री०) एक तरहका आभूषण । इसे
स्त्रियों कानोमें पहना करती हैं ।

गुंटा (हि० पु०) छोटा जलाशय, ताल ।

गुंठा (हि० पु०) एक प्रकारका नाटे आकारका अन्न ।

गुंढई (हि० स्त्री०) गुंढापन, शोढापन । बदमाशी ।

गुंढली (हि० स्त्री०) १ कुंढली फेजा । गेंडुरो ।

गुंडा (हि० वि०) १ दुर्वृत्ति, पापी । २ कैला, चिक-
निया । (पु०) ३ दुष्टमनुष्य ।

गुंढापन (हि० पु०) बदमाशी ।

गुंढला (हि० पु०) ढल ढलके पास होनेवाली नागर-
मोथा नामकी घास ।

गुंधना (हि० क्रि०) जल मिला कर सानना ।

गुंधाई (हि० स्त्री०) १ गुंधनेका भाव । २ गुंधनेकी
मेहनताना या मजदूरी ।

गुंधावट (हि० स्त्री०) १ गुंधनेकी क्रिया । २ गुंधने-
का तरीका ।

गुंभज (फा० पु०) देवालियोंकी गोलछत ।

गुंभजदार (फा० वि०) जिस पर गुंभज हो ।

गुंभद (फा० पु०) गुंभज देखो ।

गुंभा (हि० पु०) मस्लक पर चोट लगनेसे एक प्रकारकी
सूजन । गुलमा ।

गुंभी (हि० स्त्री०) अद्भुत, गाम्भ ।

गुंमौ (हि० स्त्री०) पाल खीचनेकी रस्सी ।

गुआ (हि० पु०) सुपारी, गुवाक ।

गुआगुदी—एक जातीयहृत् । (Gumsea)

गुग्गार (हि० स्त्री०) गौराणी, ग्वार ।

गुग्गारपादा (हि० पुं०) शारणदाश्वि ।

गुग्गारी (हि० स्त्री०) नार श्लो ।

गुग्गानिन (हि०) मन्त्रो ।

गुग्गुर्या (हि० पुं० स्त्री०) माधी, सखा, सहचरी ।

गुग्गुर्याशवला—स्नानाम प्रमिद्ध हृच्चविशेष ।

गुग्गुला—द्राक्षा लताके मध्य एक तरहका वृक्ष (Vitis Isatifera) । इसका फल देखनेमें ठीक द्राक्षाजै जम् होता लेकिन भीतर ढोल रहता है ।

गुग्गुरू (हि०) गीम गी ।

गुग्गुरख (हि० पुं०) एक तरहकी वनस्पति ।

गुग्गानी (हि० स्त्री०) जलके ऊपरकी हलकी हिनोरी । खलमली ।

गुग्गुनिया (हि० पुं०) बन्दर नचानेवाला, मदारी ।

गुग्गुर—पञ्जाबके मोहम्मोसरी जिलेमें तहसील । यह अक्षा० ३० ३८ एव ३१ ३३ उ० और देशा ७२ ५८ तथा ७२ ४५ पू० मध्य रावीकी दोनों ओर अवस्थित है । क्षेत्रफल ८२४ वर्गमील और नोकसख्या प्राय ११८६२२ है । इसमें ३४१ गांव बसे हैं । गुग्गुर आम ही सदर है । मालगुजारी तथा सेस १३३००० रु० है ।

गुग्गुर (हि० पुं०) गुग्गुलु शब्द ।

गुग्गुल (सं० पुं०) गोजीत गुग्गु क्लिप, गुग्गु रोग ततो गुहति रचति गुग्गु गुह कस्य शकार । १ स्नानामम्यात हृच्चविशेष । गुग्गुल १ शरत्तयोभास्त्रनहृच्च ।

गुग्गुलु (सं० पुं०) गुग्गु रोगक्षामाद् गुहति रचति, गुह कु ड्यन्तकार १ हृच्चविशेष, कोरि पेह । २ उल्ल-हृच्चका नियाम तथा सुगन्धि द्रव्यविशेष, गुग्गुलु पिठका दूध और कोरि खुग्गुद्वार चोज । इसका सख्त पर्याय—कुग्ग, उल्लखलक, कीशिक, पुर, कुशोष्ण, खनक जटाशु, कालनिर्यास, देवदूध, मवमङ्ग महिपाच, पलङ्गपा, यवनहिट, भवाभीष्ट, निशाटक, जटाल, पुट, भूतहर, शिव, शाश्वत, दुर्ग, यातुष, [महिपाचक, टेवेष्ट, मरु-दिष्ट रघोष्ठा, रुचगन्धक और दिव्य है । बहू फट, तिक्त चण्ड, रसायनविशेष और रूप, वात, फास, क्षमि, पातरोग क्षेद, शोथ और अर्शनाशक है । (रासनि०) भावप्रकाशके मतमें गुग्गुलु विषद, तिक्त, कटु तथा

कपायरम, उखवीर्य, पित्तवर्धक, सारक, कटुविपाक, रुचक, अत्यन्त लघु, भग्नमन्थानकारक, शुक्रवर्धक, स्त्र-प्रसादक, अग्निवृद्धिकारी, पिच्छिल, बलकारक, और कफ, वायु, व्रण, अपचो, निदोदोष, प्रमेह, अग्नरो, आमवात, क्षेद, कुष्ठ, आमवात, पीडका, गण्डमाना तथा क्षमि-नाशक है ।

इसके मधुर रसमें वायु, कपायसे पित्त और तिक्तारम से कफ नष्ट होता है । नूतन गुग्गुलु मांसवर्धक तथा शुक्रजनक है । परन्तु पुरातन होने पर यह अत्यन्त निखनगुणयुक्त अर्थात् अतिशय क्षयकारक होता है । जो गुग्गुलु पके जम्बूफलकी भांति सुगन्धि, पिच्छिल और सुवर्णवर्ण आता, नया और शुष्क दुर्गन्धयुक्त विक्षतवर्ण तथा धीर्यहीन होनेसे पुराना समझा जाता है । गुग्गुलु सेवनकारिके पक्षमें अस्त्ररम, तीक्ष्णद्रव्य, अजीर्णजनक अर्थात् गुरुपाकद्रव्य, मैथुन, परिचय, रौद्र, मद्य और क्रोध अतिशय अहितकर है ।

गुग्गुलु जातिभेदसे पाच प्रकारका होता है—महि पाच, महानील, कुमुद, पद्म और हिरण्य । देखनेमें अञ्जन जैसा महिपाच कदमता है । अतिशय नीलवर्ण-की महानील, कुमुदकुसुम जैसी आभाविशिष्टकी कुमुद, पद्मवर्णकी पद्म और सुवर्णवर्ण गुग्गुलुकी हिरण्य कहते हैं । इसमें महिपाच तथा महानील द्राघीके लिये और कुमुद एव पद्म घोड़के लिये आरोग्यजनक है । केवल-माल हिरण्य जातीय गुग्गुलुमें ही मनुष्यका उपकार होता है । अवस्थाविशेषमें महिपाच भी आदमीके काम आता है । (निसर्गशास्त्र १ भाग)

बहुत गुग्गुद्वार होनेसे गुग्गुलुकी भारतवासी धप जैसा व्यवहार करते हैं । इसकी धनिमें हालने पर खुग्ग वृषे धर भर जाता और बडा चानन्द आता है । प्रयोगा-रतके मतानुसार ग्रीष्मकालकी मरुभूमिमें यह हृच्च उत्पन्न होता है । पीछे शीत ऋतुकी शिथिलके जनमें भीगने पर उसमें एक प्रकार रस वा निर्वास निकलता है । इसीका नाम गुग्गुलु है । इसकी विशेष परीक्षा करके लेना चाहिये । विशद गुग्गुलु भागमें शूलनेसे जन्म उठता, धुपमें उठता और जलमें निक्षेप करनेसे क्षिपचिपाने-नगता है । पुरातन, पद्मावर्धक, गन्धहीन वा विवर्णकी

ग्रहण नहीं करते। (प्रयोगचत) ३ मास पर्यन्त गुग्गुलु पूर्णवीर्य रहता, फिर गुण और वीर्य घटने लगता है।

इसकी शोधनप्रणाली यह है कि उसको खण्ड खण्ड करके गुड़ूची तथा त्रिफलाके काथ और दुग्धमें पाक करते हैं। शोधित गुग्गुलुको ही व्यवहार करना चाहिये। (रसवन्दिका) दशमूलके ईशदुग्ध काथमें उसका निक्षेप करके आलीड़न किया जाता है। फिर वारिक कपड़े से छान करके धुपमें सुखा घी मिला देते हैं। ऐसा करनेसे वह शुद्ध होता है। (वैद्यकनिघण्टु)

यह वृक्ष भारतवर्ष और अफ्रीकामें स्थान स्थान पर उत्पन्न होता है। इसके निर्यासकी चलती अंगरेजीमें (Bdelium) कहते हैं। देखनेमें यह राल जैसा लगता है। किसी स्थानका गुग्गुलु पीला-जैसा और कहीं कहीं-का गहरा लाल होता है। इसमें थोड़ीसी मीठी महक भी रहती है। अंगरेजी मतानुसार वह तारपीनके तैल जैसा उत्तेजक है, खानेसे श्लेष्माकी भिल्ली विशेषतः फेफड़े पर उसका कार्य होते रहता है। कठिन कफरोग, बहुकालस्थायी हृदरोग, जलयत् श्लेष्मास्त्राव रोग और कण्ठनलीय रोगमें खाने या उसके धुएँका नास लेनेसे विशेष उपकार देख पड़ता है। कठिन व्रणरोग, क्षत और स्कोटकाटिके पक्षमें भी वह तेजस्कर औषध है। १५ ग्रं नसे २ ड्राम मात्रा तक उसकी सेवन कराया जा सकता है।

गुग्गुलुक (सं० त्रि०) गुग्गुलुं पश्यमस्य, गुग्गुलूष्ठन् । गुग्गुलु-विक्रीता, गुग्गुलु वेचनेवाला ।

गुग्गुलुगन्धि (सं० पु०-स्त्री०) गुग्गुलुर्गन्धो लेशो यस्य, बहुव्री० । गो, गाय । (त्रि०) गुग्गुलुर्गन्ध इव गन्धा-ऽस्त्र, बहुव्री० । २ गुग्गुलुके सदृश गन्धयुक्त ।

गुग्गुलुनटक (सं० पु०) वातव्याधि ।

गुग्गु (सं० पु०) वेदप्रसिद्ध एक जनपद । (ऋक० १०।४८।८)

गुग्गुमेरु—जनपदविशेष । ८१६ ई०को इस स्थान पर भोटराज रत्नपाचन और चीन राजामें सन्धि हुई थी। दोनोके मंत्रतानिवन्धनमें यहां एक मन्दिर निर्माण किया गया था। इस मन्दिरके संलग्न एक प्रस्तरखण्डमें सूर्य तथा चन्द्रमाके प्रतिमूर्तियाँ खुदी हुई हैं जिसके नीचे इस प्रकार लिखा है “जब तक सूर्य और चन्द्रमा आकाश में भ्रमण करेंगे तब तक इन दोनो जातियोंमें तन्त्र-भाव रहेगा।”

गुच (हिं० स्त्री०) पञ्जावको डाढ़ीदार भेड़ ।

गुची (हिं० स्त्री०) मी पानोंकी गुच्छ, आधी टोली ।

गुच्चो (हिं० स्त्री०) १ भूमिमें खोटा गुग्गा गढ़ा । २ छोटे छोटे लड़कोंके गुच्ची खेलनेका गद्दा । (वि०) ३ वहुत-छोटी, नन्दी ।

गुच्चोपारा (हिं० पु०) छोटे छोटे लड़कोंके कौड़ी फेंकनेका गद्दा ।

गुच्छ (सं० पु०) गु-क्षपि-गुत्-प्रव्यविशेषः तं श्यति तनु-करोति निवारयति गुत्-शो-क । १ स्तवक । २ घामकी जूरी । ३ वह पौधा जिममें मजबूत काण्ड वा पेटी न हो, मिर्फ पत्त या पहली लचीली टहनियां फैले । ४ वत्तीम लड़ीका हार । ५ मोतीका हार ६ मोरकी पूंछ ।

गुच्छक (सं० स्त्री०) गुच्छ संज्ञायाम् कन् । १ ग्रन्थिपर्ण, गठीला पत्त । (पु०) गुच्छ स्त्रोर्घं कन् । २ स्तवक । इसका पर्याय—स्तम्ब, कुम्भसोच्चय, गुच्छ, गुम्, गुम्क, गीठाकरञ्ज और गुलञ्ज है । ३ एक प्रकारका वृक्ष । इसका बीज डिम्बक सदृश होता और व्यास (घेरा) १/६ से १/६ तक रहता है । इस वृक्षका बीज दृढ़ तथा मसृण होता और इसके चारो तरफ छाल होते हैं । इसका गुण बलकारक और पाला ज्वरनिवारक है । पञ्जाववासी इसमें हिंस्र मिलाकर खाते हैं । इसका बीज दीर्घकाल स्थायी रहता है । चट्टग्रामके मनुष्य इसमें मरिच मिलाकर वरी प्रसुत करते हैं । डाक्टर एनसलि साहवका मत है कि इसके तैलसे आक्षेप और पक्षाघातरोग आगेरव हो जाते हैं ।

गुच्छकच्छद (सं० पु०) ग्रन्थिपर्ण, गठीला ।

गुच्छकण्ठि (सं० पु०) गुच्छवत् कण्ठिः, बहुव्री० । धान्यविशेष, रागी धान ।

गुच्छकन्द (सं० पु०) कन्द शाक ।

गुच्छकारञ्ज (सं० पु०) गुच्छकारः करञ्जः । एक प्रकारका करञ्ज । इसके पत्ते अतिशय स्निग्ध और पुष्प गुच्छाकार होते हैं, जो देखनेमें बहुतेर मनोहर लगता । इसका पर्याय—स्निग्धटल, गुच्छपुष्पक, नन्दी, गुच्छी, मानन्द और दन्तधावन है । इसका गुण कटु, तिक्त उष्ण, विष, वातरोग, कण्ड बिचर्चिका, कुष्ठस्पर्श एवं त्वक दोषनाशक ।

इसको शाखा दन्तधावनके काममें आती है ।
 गुच्छगुणिका (स० स्त्री०) स्नुहीहृत्तविशेष ।
 गुच्छदन्तिका (स० स्त्री०) गुच्छा गुच्छोभूता दन्ता
 फलरूपा यस्याः, बहुव्री० । गुच्छदन्त-कप् टाप । कदली
 हृत्त, केलाका पेड़ । इसका फल गुच्छाकारमें होनेके
 कारण यह गुच्छदन्तिका कहा जाता है ।
 गुच्छपत्र (स० पु०) गुच्छाकृतानि पत्राणि यस्य, बहुव्री० ।
 तालहृत्त, ताड़का पेड़ ।
 गुच्छापुष्प (स० पु०) गुच्छाकृतानि पुष्पाणि यस्य, बहुव्री० ।
 १ समच्छदहृत्त, मनिषन या हृत्तिवनका पेड़ । २ अशोक-
 हृत्त ।
 गुच्छपुष्पक (स० पु०) गुच्छपुष्प स ज्ञाया कन । १
 रीठा । २ गुच्छ करञ्ज ।
 गुच्छपुष्पी (स० स्त्री०) गुच्छपुष्प जाती डीप । १ धात
 को हृत्त, धाईका पेड़ । २ शिगूडो नामक क्षुप ।
 गुच्छफल (सं० पु०) गुच्छाकृतानि फलान्यस्य, बहुव्री० ।
 १ रीठा । २ निर्मली । ३ दौना । ४ गुच्छकरञ्ज हृत्त ।
 ५ जलवेतस ।
 गुच्छफला (सं० स्त्री०) गुच्छफल टाप । १ अन्नितमनी
 हृत्त । २ कामामोची मकोय । ३ ट्राचा । ४ कदली हृत्त,
 केलेका पेड़ । ५ निष्यावो, लोविया ।
 गुच्छगुन्था (स० स्त्री०) गुच्छेन बध्नाते वन्ध बाहुलकात्
 रक् टाप । गुण्डालिनी लघ्न, एक प्रकारकी घास, गौदना ।
 गुच्छमूलिका (स० स्त्री०) गुच्छाकृति मूलमस्याः,
 बहुव्री० । कप टाप । गौदना घास ।
 गुच्छमहा (सं० स्त्री०) धातको ।
 गुच्छा (हि० पु०) १ एक डालमें लगे पत्ते फूलों वा
 फलके समूह । २ फूलका भन्वा ।
 गुच्छातारा (हि० पु०) कचपचिया नामका तारा ।
 गुच्छार्ध (सं० पु०) गुच्छ द्व ऋप्रोति १ चौबीस लडोका
 षार । (पु० स्त्री०) गुच्छस्य अर्ध अर्धे वा ६ तत् । २
 गुच्छका भाषा ।
 गुच्छान्न (सं० पु०) गुच्छमालानि, गुच्छ आ ना क ।
 १ भूहृत्त, एक तरहकी सुगन्धित घास । २ भूकटम्ब ।
 गुच्छाङ्गकन्द (सं० पु०) गुच्छमाङ्गयति, गुच्छ या ङ्क ।
 गुच्छाङ्ग कन्दोऽस्य, बहुव्री० । गुन्धकन्द ।

गुच्छी (स० स्त्री०) गुच्छ जातीडी प । १ करज, कंजा ।
 २ रीठा । ३ पजावके ठठे स्थानोंमें उपजनेवाला एक तरह
 का पौधा । इसके फूलोंकी तरकारी बनती है और वे
 सूखा कर बाहर दूसरे देगमें भेजे जाते हैं ।
 गुजर (फा० पु०) १ गीत, निकास । २ प्रवेश, पैठ,
 पड़च । ३ निर्याह, कालक्षेप ।
 गुजरगाह (फा० स्त्री०) १ रास्ता । २ नदीके पार होने-
 को सट ।
 गुजरत् (फा० पु०) हस्त द्वारा ।
 गुजरना (फा० क्रि०) १ समय व्यतीत करना । २ किसी
 स्थानसे होकर आना वा जाना । ३ नदी पार करना ।
 ४ निर्वाह होना, निपटना ।
 गुजरबसर (फा० पु०) निर्याह, कालक्षेप ।
 गुजरवान (फा० पु०) १ मलाह, पार करनेवाला । २
 घाटकी उतराई बसूल करनेवाला मनुष्य, घटवार ।
 गुजरात—पञ्चाब प्रदेशका एक जिला । यह अक्षा०
 ३२ १० तथा ३२ १० और देश्या० ७३ १७ एव
 ७४ २८ ५० की मध्या अवस्थित है । इसके उत्तरपूर्व
 कामोरीराज्य, उत्तर पश्चिम फिनलम जिला तथा वितस्ता
 नदी, दक्षिण पश्चिम ग्राहपुर जिला और दक्षिण पूर्वको
 गुजरातगला तथा गियालकोट एव तापी तथा चन्द्र-
 भागा नदी पड़ती है । भूपरिमाण २०५ वर्गमील है ।
 लोभमस्या प्राय ७५५४८ है चन्द्रभागाके उपकूलसे
 जमीन क्रमश जलकी भीतरी थोरकी ऊँची हुई थीर
 जल तथा हृत्तादिविधान मरू जैसी बन गयी है । पर्वो
 नामक गिरियों को ही यहा प्रधान है । छोटे छोटे गुष्पादि-
 पूर्ण स्थानोंमें ही गोमहिष प्रश्रुतिके शायका अस्थान
 है । चन्द्रभागा नदीकी निम्नतर तीरभूमि खूब उबरा
 है । पार्वतीय जलस्रोतसे एक नहर निकली जिससे
 खेतो सिंचती है और भी कई नदियाँ हिमालयसे निस्त
 कर इस जिलेमें बहती हैं । इस जिलेके पनोंमें घडादुरो
 लकडो होती है ।

इस जिलेके प्रसत्तखका बहून निर्दग्न मिलता है ।
 प्राचीन स्तूपादि, मुद्रा और हटकादि देखते ही अमु
 मित होता कि बहुत पहले यहाँ हिन्दुओंका नाम रहा ।
 आज भी उन्हीं पुराने हिन्दुओंके गृहमन्दिरादि शिष्य

नैपुण्यका परिचय प्रदान करते हैं। कनिङ्गहम साहबन मोग नामक ग्रामके स्तूपोंमें कोई विकृताकार स्तूप देख करके ठहराया है कि वह अलकमन्दरका स्थापित 'निकाया' नगर था। उन्होंने पुरुराजको जय करके अपनी कौर्तिघोषणाके लिये इसको स्थापन किया। यह विकृताकार स्तूप पर्वी पहाड़से ६ मील पश्चिमको अवस्थित है। इसकी ऊंचाई ५०, लम्बाई ६०० और चौड़ाई ४०० छुट है। इन सब स्तूपोंके मध्यमें भारतवर्षके शक-राजाओंकी अनेक ताम्रमुद्राएँ निकली हैं, यहाँ जाटो और गूजरोका अधिक वाम हैं।

दिल्लीके बादशाहोंमें सबसे पहले (१४५०-५४ ई०) बहलोल लोदी इस जिलेमें आ करके बसे थे। उन्होंने चन्द्रभागा नदीके तीर बहलोलपुर नगर स्थापन किया। इसके एक शताब्दी पीछे अकबरने यहाँ पहुँच गुजरात नगर बसा दिया। आज भी इस नगरके पुरुषानुक्रमिक 'काननगो' परिवारमें अकबरके राज्यशामनसंक्रान्त पत्र पाये जाते हैं। इनमें लिखा है कि अकबरके समयको वहाँ २५६२ ग्राम या मौजा और उसका राजस्व १६३४५५० रु० था। मुगलोंके सीभाग्यावर्तनके समय रावलपिण्डीके गकरोने १७४१ ई०को इस प्रदेश पर अधिकार किया। अदमट शाह दुरानीके आक्रमणकालको यातायातके कारण यह स्थान विशेष उत्थित हुआ था। १७६५ ई०को गूजरसिंहने इसको अधिकार किया। १७७८ ई०के मूजरसिंहके मरने पर उनके पुत्र साहबसिंह पिलसिंहासन पर अधिष्ठित हुए। राज्यभार मिलते ही गुजरातवालाके सामन्त मोहनसिंह और रणजित्सिंहके साथ उनको लड़ाई छिड़ गयी। क्रमागत कई महीने लड़ने पीछे १७८८ ई०को इन्होंने रणजित्की अधीनता मानी थी। १८१० ई० तक साहबसिंह स्वराज्यमें प्रतिष्ठित रहे। पीछे मिख सम्राट् रणजित्सिंहके राज्यच्युत करने पर वह विना कुछ कहे सुने पार्वत्य प्रदेशको भाग गये। शेषको रणजितको वदानामुतासे स्थालकोट जिलेकी कुछ जमीन्दारी उन्हें प्राप्त हुई। १८४६ ई०को यह जिला अहमरेजीके हाथ लगा था। द्वितीय सिख युद्धके समय गुजरात रणक्षेत्र रूपमें परिणत हुआ। मुलतानके अवरोध समय मिख सरदार शेरसिंह

अपना सैन्य चन्द्रभागा नदीके उत्तरकूलमें रख करके रामनगरमें लाठ गफके आनेकी प्रतीक्षा करते थे। १८४८ ई० २२ नवम्बरको लाठ गफ शेरसिंह कर्टक पराजित तथा विशेष क्षतिग्रस्त हो भाग खड़े हुए। पीछेसे सैन्याध्यक्ष जोसेफ थाकवेलने वजीरावाटके निकट नदी पार हो शेरसिंहको आक्रमण और गादुमापूरमें उन्हें पराजय किया था। शेरसिंह भाग करके पर्वी और वितस्ता नदीके मध्यवर्ती स्थानमें अपने आपकी बचाने लगे। इसी समय १८४८ ई० १३ जनवरोको चिनियांवालाका युद्ध आ पड़ा। उसमें सिख इतिहासका सौभाग्य और गौरवरधि प्रकाशित हुआ और अंगरेज लोग हारे तथा उन्हें बड़े भारी क्षति लगी।

६ फरवरीको शेरसिंह फिर लाठ गफकी आशु बचा गये और लाहौर पर भ्रष्ट पड़नेको टर्किण और चले पड़े। परन्तु अंगरेजोंने उन्हें पीछेसे खूब दबाया था। २२ फरवरीको यह गुजरातमें लड़नेको लोटे। इस युद्धमें सिखोंकी शक्ति चोण हो गयी। पञ्जाव विजितायके हाथ लगा और अंगरेजी शासनभुक्त हुआ।

यहाँ बहुतसे इमलामधर्मावलम्बी राजपूत हैं। उनमें शूरणादि राजवंश प्रधान है। औरङ्गजेबके समय शूरणादि राजने इसलाम धर्म ग्रहण किया था। मिखराज रणजित्सिंहके बाहुबलसे यह लोग सदा जैसे पगधीन और हीन हो गये। गुजरातके सैयद बतलाते कि अरबसे जा करके हम पहले पहल उमी जिलेमें बसे थे, फिर नाना स्थानोंमें फैल पड़े।

इस जिलेमें नहर नहीं है। केवल कूपके पानीसे सब काम चलता है। जलवायु खूब स्वास्थ्यकर है।

२ पञ्जावके गुजरात जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० ३२' २४" तथा ३२' ५३" उ० और देशा० ७३' ४७" एवं ७४' २२" पू०के मध्य अवस्थित है। इसका क्षेत्रफल ५५४ वर्गमील है।

३ पञ्जावके गुजरात जिलेका बड़ा नगर और सदर। यह अक्षा० ३२' ३५" उ० और देशा० ७४' ७" पू०में चन्द्रभागा नदीके वर्तमान गर्भसे २॥ कोस उत्तरको अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः १८०५० होगी।

प्राचीन धर्म सावशिष्ट नगर पर वर्तमान नगर आबाद

है। प्रबलत्ववित्कनिहृदम साहस्य अनुमान करते कि यहा जो प्राचीन नगर रहा, १३०३ ई०को विध्वस्त हुआ उसके प्राय २०० वर्ष पीछे शेरशाहने इस अञ्चलकी दिकको दृष्टिपात किया। उन्होंने या भ्रमकरने इस नगरको बसाया होगा। शाहजहानके समयको यहाँ पीर शाहदीला नामक कोई मुसलमान साधु रहते थे। यह इस नगरमें बहुतसे घर बनाये गये हैं। नगरके मध्यास्थलमें अकबरकी निर्मित और गुजरसिंह कलक मस्तक दुर्ग आज भी खड़ा है। इसी जिलेमें तहसीली और मुनसिफी कच हरी है। सिंग इसके गुजरात नगरमें ६६ मसजिदें, ५२ हिन्दू मन्दिर और ११ सिख धर्मशालाए भी बनी है। यहाँ बटिया शाल दोशाला और सुतो तथा जनी वस्त्र प्रसूत होता है। सोमि लोहे और पीतलकी गटाईके लिये गुजरात शहर बहत दिनोंसे मगहर है। यहा म्ब निमपानिटो विद्यमान है।

४ बम्बई प्रेसिडेन्सोका उत्तर समुद्रकुलधर्ती विस्तीर्ण भूभाग। गुजराती।

गुजराती (हि० वि०) गुजरात देशका, गुजरातका निवासी।

गुजराती—बम्बईके गुजरात प्रान्तकी भाषा। इसकी लिपि देवनागरीके आदर्भ पर गठित है। कोई ८०० वर्ष पहले यह चली थी। साहित्य उन्नतिगील है। भोल और खान टेगके अधिगारो भो टूटी फूटी गुजराती बोलती है। गुजराती भाषा प्राचीन सोराष्ट्री प्राकृत पर आधारित है। गौरी भोसे निकली है। यह कोई ८४३८२२५ लोगोंको भाषा है।

गुजराती जैन—बम्बई प्रान्तके अहमदनगर जिलेमें रहने वाले जैन। इन्हें व्यावक भी कहते हैं। इनकी सख्या प्राय ३०० है। यह त्रकाला, जामखेड, कोपरगाव, सङ्गमनेर, शिवगांव और त्रिहोदमें रहते हैं। अपने ही वर्षनाके अनुसार यह व्यवधके रहनेवाले थे। सूर्यवशीय किसी राजाके साथ उन्होने जैन धर्म ग्रहण किया। गुजरातमें बस जानेसे यह गुजर कहलाये। माहभाषा गुजरानी और कुलदेवता जिनेन्द्र हैं। यह निरामिप भोजी, परिश्रमी, सयमी, मितव्ययी और आशाकारी है। दूकानदारी, मढाजनी और जमीन्दारीका काम करते

हैं। यह दिगम्बरस प्रदाय भुक्त है। श्रमदाह किया जाता है। वान ववाह और बहुविवाह साधारणत नहीं होता। इनमें विधवाविवाह नहीं होता।

गुजराती पीटा—गन्धाम प्रदेशके अन्तर्गत चिकाकोलके निकट लाङ्गुनिया नदीके दक्षिण तट पर अवस्थित एक नगर। यहा लक्ष्मी तथा नरसिंहस्वामीके मन्दिर हैं। मन्दिर बहुत प्राचीन कालके हैं। ऐसा प्रवाद है कि बलरामने इस मन्दिरकी निर्माण किया था। प्रायः दो तीन शत वर्ष हुए हो गे यहाँ गुजराती व्यापारियो ने आकार उपनिवेश स्थापन किया है।

गुजराती बनिया—दक्षिणात्यवामी वणिक् जाति की एक शाखा। बम्बई प्रेसिडेन्सीके नाना स्थानोंमें इनका वास है। परन्तु अहमदाबादमें यह अधिक देख पडते हैं। इनमें बडनगरी और विशनगरी २ श्रेणियां हैं। सब लोग अपनेको वैश्य जैमा बतलाते हैं। २१ मी वय हुए यह गुर्जर देग छोड करके दक्षिणायकके नाना स्थानोंमें जा बसे हैं। गुर्जरके उत्तरस्थित बडनगर तथा विशनगरमें इनका आदिवास है। भालूम होता है कि इन दोनों नगरी से हो उनका जातिगत विभाग हुआ होगा।

उभय दल एकत्र भोजनादि करते, परन्तु परस्परके मध्य दानग्रहण अप्रचलित है। यह बहुत सुखी और सुन्दर होते हैं। स्त्रिया मर्दाकी अपेक्षा अधिक सुन्दर होते हैं। ये लोग मध्य माम कुछ भी नहीं खाते। स्वास्थ्य भी इनका अच्छा रहता है। सिर्फ पानके साथ भांग और तम्बाकू खाते हैं। इनकी स्थिति अच्छो है।

ये लोग आचार व्यवहार और वेगविचारमें दक्षिण के ब्राह्मणो जा अनुकरण करते हैं। सबहोके मिर पर चोटो रहती है और दाडी मुंडी डूई रहतो है। इनका स्वभाव भोलेपनका लिये हुए अच्छा है, पर दीप इनता हो है कि, ये लोग प्राय क्षण होते हैं। वाणिक्य करना उनकी जा तगत उपजीविका है। जिसके पास पैसा नहो वे भी दूमरेका दाखल स्वोकार नही करते, परन्तु किसी व्यापारीकी दूकानका काम करना मजूर कर लेते हैं।

ये लोग अपनेकी ब्राह्मणोंसे नीचे और मराठी जातिसे

ज'चे समझते हैं। ये लोग स्वजातीय ब्राह्मण, दक्षिणात्यवासी शैन्वी ब्राह्मण और पांचालोंके सृष्ट अन्नके मिवाय और किसीके भी हाथका अन्न नहीं खाते। हिन्दुओंके समस्त देवता उनके लिए पूज्य हैं। ये लोग उच्च श्रेणीके हिन्दुओंको भांति उत्सव आदि भी करते हैं। तिरुपतिके बालाजी और परावरपुरके विठोवा इनके कुल-देवता हैं। कभी कभी ये लोग हिन्दुओंके तीर्थोंमें जाकर पूजा आदि भी करते हैं। सब सबरे शौच स्नान आदिके बाद नियमसे कुलदेवताकी पूजा करते हैं। इनकी गर्भाधान, विवाह और आइकी क्रिया गुजराती ब्राह्मण ही करते हैं; और उनके अभावमें उस देशके ब्राह्मण भी कर सकते हैं। इनमेंसे सब हो ब्रह्मचार्य प्रवर्तित सम्प्रदायमें शामिल हैं। ब्राह्मण जातिके दस प्रकारके संस्कारोंमेंसे ये लोग नामकरण, चूड़ाकरण, विवाह, गर्भाधान, आइ आदि कुछ संस्कारोंका पालन करते हैं। बालकको पहिले पहिल विद्यालयमें भर्ती करानेके लिए ये लोग शुभदिनको देख कर गाने बाजेके साथ ले जाते हैं। बच्चों बालकको ताड़पत्र और पुस्तकादि सरस्वतीके नामसे पूजा होती है। उस समय बालकसे सबसे पहिले "ॐ नमः सिद्धेभ्यः" लिखाया जाता है। इसके बाद शिचककी पान, सुपारो और रुपये दक्षिणामें दिये जाते हैं। बालिकाएं कमारो अवस्थामें मंगला गौरीकी पूजा करती हैं।

इनमें बाल्यविवाह प्रचलित है। बहुविवाह और विधवा विवाह करनेवालेकी जातिसे च्युत कर दिया जाता है। समाजमें कोई प्रकारका विभ्रट हो जानेसे ये लोग उसे स्वयं ही शान्त कर लेते हैं। सब मराठी और गुजराती भाषामें बात चीत करते हैं। शोलापुरके गुजराती वनियोंमें हुम्बड़, खड़ायत, लाड़, नोध, नागर, पोरवाड़ और श्रीमाली आदि श्रेणियां हैं। तथा उनमें भी दशा और वीशा इस प्रकार दो भेद हैं। जो जातिच्युत हैं उन्हें दशा और जो जातिच्युत नहीं हैं, उन्हें वीशा कहते हैं। बहू मूल श्रेणियोंमें एकत्र भोजन वा दान ग्रहण नहीं चलता। ये भी निरामिषभोजी होते हैं। पुत्र प्रसवके पांच दिन बाद बहू या पछीकी पूजा करते हैं। बारह दिनमें पुत्रका नामकरण करते हैं, और एकसे दो मास तक चूड़ाकरण करते हैं।

पूनाके वनियोंमें दो स्वतंत्र नाम हैं। एक तो ब्रह्मचार्यकी शिष्य सम्प्रदाय मिथी और दूसरे दिगम्बर जैन-सम्प्रदायके आवक नामसे प्रसिद्ध हैं। मिथीओंमें कपोल, खड़ायत, लाड़, मोध, नागर, पाञ्चाल, पोरवाल आदि तथा जैनियोंमें हुम्बड़, पोरवाल, श्रीमाली आदि कई शाखाएं हैं। मिथीओंके विवाहमें "लहान् गणेश" की वा गणपतिकी और जैनियोंके विवाहमें "गोतम गणधर" "सिद्ध परमेष्ठी" और "देव-शास्त्रगुरु" की पूजा होती है। ये लोग अशौच दश दिनका मानते हैं। मिथी लोगोंके १०वें, ११वें और १२वें दिन आइ होता है और १२वें या १३वें दिन जातिभोज (तेरन्नी) होता है। आवकोंके आइ आदि नहीं होता; वे १२वें दिन दिगम्बर जैनमन्दिरमें जाकर अक्षत पुष्प आदि अष्ट द्रव्योंसे अर्हन्त आदिकी पूजा करते हैं। ये लोग अशौचके ग्यारह दिनोंमें मन्दिरकी फाड़ भी बस्तु नहीं छूते और न जिनाभिषेक ही लगाते हैं। ये शास्त्र सभामें पृथक् बैठ कर शास्त्र सुनते हैं; तथा श्रद्धा समाधान भी करते हैं। आवकोंके १३वें दिन जातिभोज होता है; इसका नाम तेरन्नी है। गुजराती ब्राह्मण—किसी श्रेणीके दक्षिणात्यवासी ब्राह्मण। प्रायः १०० वत्सर गत हुए यह गुर्जर छोड़ करके जगह जगह बस गये हैं। पूना जिल्लेमें श्रीटीन्थ, देगायल, खेड़ा-वल्ल, नोध, नागर, श्रीगौड़, श्रीमाली प्रभृति देख पड़ते हैं।

यह निरामिषाशी होते, केवल मादकताके लिये अफीम, भांग और तम्बाकू सेवन करते हैं। यह स्वभावतः परिष्कार, सत्, कर्मठ, चतुर और आतिथ्य हैं। इनमें कितने ही लोग वाणिज्य व्यवसायसे पीरोहित्य पर्यन्त किया करते हैं। कोई कोई जमीन खरोट करके जमोन्दार बना और उसको उत्पन्न द्रव्यके आधे वंटवारे पर दूसरे किसानोंके हाथ उठा दिया है।

यह बालाजी, गणपति, मारुती, तुलजाभवानी और शङ्करकी पूजा करते हैं। इन्हें अपदेवता, डार्किनो और भविष्यदाशी पर भी विश्वास है।

इनमें बाल्यविवाह और बहु विवाह प्रचलित है, परन्तु विधवाविवाह कोई नहीं करता। कोई सन्तान आदि प्रसूत होने पर मराठी धात्री वा स्वजातीय रमणी उसकी

नाडी चीर देती और फूलको। किमी पात्रमें रख करके सुतिकागारमें नावदानके पास गाड़ रखते हैं। तलवार, तीर, कागज, कलम और पट्टीसे पट्टी साताकी पूजा करते हैं। अग्यौच १० दिनमात्र रहता है। १०वें दिनको आत्मीय कुटम्बका भोजन होता और सभ्याके समय स्त्रिया मन्तानका नामकरण करते हैं। ४० दिन तक प्रसूति घरसे बाहर नहीं निकल सकती, फिर किसी दिनका सुन्दर वेशभूषा करके आत्मीय स्त्रियोंसे मिलती है। ५ माससे ५ वत्सरके मध्य पुत्रका चूड़ाकरण होता है। यदि कोई ठाकुरजोके नाम पर बाल रखता तो, वह घोड़ेसे बाल विवाह पर्यन्त कभी भी कटा नहीं सकता। विवाहके दिन यह बाल बनाते हैं। १२से १५ तक पुत्र और ८से १५ वर्ष तक कन्याका विवाह होता है। विवाहसे पूर्व आत्मीय कुटम्बको पान सुपारी भेज करके सूचना दी जाती है। इसीका नाम मङ्गनी है। इनका गर्भाधानसंस्कार नहीं होता। यह शवदाह किया करते हैं। शवदाहके ३ दिन पीछे भस्म पर दुग्ध, दधि, घृत, गोमय और गोमूत्र छोड़ आते हैं। अहमदनगरवासो गुजराती ब्राह्मणोंके धीच पिढ तथा मातुलगोत्रमें विवाह नहीं होता। इनकी 'त्रिवाड भेवदास' शाखा में भरहाज, शाण्डिल्य और वशिष्ठ तीन गोत्र चलते हैं। यह यजुर्वेदी होते और सब लोग शङ्कराचार्य की हिन्दू धर्मके प्रधान प्रदर्शक जैसा भक्ति करते हैं। गणपति, महादेव और विष्णु इनके उपास्य देव हैं।

गोलापुर जिलेमें श्रीदोद्य नागर तथा श्रीमालो ३ श्रेणिया हैं। इन विभिन्न श्रेणियोंके लोग एकत्र आधा रादि वा परस्पर दान ग्रहण नहीं करते। इनके मधा आचारमें भद्र, पाण्ड्य, रावल, ठाकुर और व्यास कई पद विद्या प्रचलित हैं। एक पदवीधारी किन्तु विभिन्न गोत्र होनेसे विवाह किया करते हैं। अम्बानाई और बालाजी इनके कुलदेवता हैं। श्रीदोद्य कान्यकुल ब्राह्मणोंका पौरोहित्य करते और युक्त प्रदेशके गांध गांव देख पड़ते हैं। बीजापुर जिलेमें इनकी नागर, श्रीमाला और पोकर्ण ३ श्रेणिया है।

गुजराती राजपूत-वर्गइंके कच्छ जिलामें रहनेवाले क्षत्रिय वा राजपूत। इनको सभ्या प्राय १६५१० है। प्रधान विभाग दो हैं।

गुजरान (फा० पु०) ५३१ ईसा।

गुजरान्वाला—पञ्जाबके लाहौर डिविजनका एक जिला। यह अक्षा ३१ ३१ एव ३२ ३१ उ० और देशा ७२ १० तथा ७४ २४ पू० मध्य रेचना दोआबमें पड़ता है। क्षेत्रफल ३१६८ वर्गमील है। इसके उत्तर-पश्चिम चिनाव नदी, पूर्व स्थानकोट, और पश्चिम भद्र है। बागो और फुलवारियोंमें वन बहुत होता है। जन-वायु स्वास्थ्यकर है। बोह कालके मन्दिरों का ध्वसावशेष बहुत मिलता है। तत्कालीन मुद्राएँ और बड़े बड़े इटक आविष्कृत हुए हैं।

मुसलमानों की अमलदारोंमें यह जिला बटा। अरब-रसे ले करके औरइजिप्टके समय तक यहा कितनी ही कूप बने। दक्षिण उच्च भूमि पर जहा पहले गांव थे, अब घास और भारी है। ६ जरखेज परगने लगते थे। मुसलमान साम्राज्यकी अन्तम शताब्देमें बार बार युद्ध होनेसे गुजरान्वाला उजड़ गया। सिखोंके अभ्युदय कालकी यह उनका सदर बना।

लाहौरके अधिकार कालतक गुजरानवालामें राजा रणजित्मिहको राजधानी रही। यहा रणजित्मिह और उनके पिताका स्मारक बना है। सिखोंने क्षयिकी उन्नति की थी। १८४७ ई०को यह अंगरेजोंके हाथ लगा। और १८४८ ई०को अंगरेजों राज्यमें मिला।

गुजरान्वालाको लोकसंख्या प्राय ८८०५७७ है। इसमें ८ नगर और १२३१ गांव बसे हैं। तहसीलें चार हैं। अधिवासियोंमें जाटोंकी संख्या अधिक है। गेहूँकी फसल बड़ा होती है। कड़रकी कोई कमी नहीं। काट छाटकी भोजरा, चाटोकी मूठवाली कड़िया और गन्ने मगइर हैं। सूती कपड़ा बहुत बना जाता है। राजको पुतलोघर और कारखाने हैं। गेहूँ, दूसरे अनाज रुई, तेलहन, पोतलका सामान और धीकी रफतनी होती है। नार्थवेस्टर्न रेलवे चला करता है। ७५ मील पक्की और १३०८ मील कच्ची सड़क है। डिपटी कमिश्नर बड़े धाकिम हैं। मालगुजारी और सेम कोई १२ लाख ८० हजार लगते हैं। मुनिमपानिटिया है।

गुजरान्वाला—पञ्जाब प्रान्तके गुजरान्वाला जिलेकी तहसील। यह अक्षा ३१ ४८ एव ३० २०' और देशा ७०

प्रसृत होता है। इसको लगानसे गलगण्ड रोग नहीं रहता। (रसरत्नाकर)

गुञ्जाभद्रस (सं० पु०) वैद्यकोक्त ग्रीषधविशेष, एक दवा। १॥ तोला पारा, ६ तोला गन्धक, ३ तोला गुञ्जाबीज और आध आध तोले जयन्तोबीज, निम्बुबीज तथा जैपालबीज सबको जयन्ती, धुस्तूरपत्र, मन्वीर एवं काकमाचीके रसमें अलग अलग भावना दे धीमें घोट करके बटी बना लेना चाहिये। मात्रा ४ रत्ती है। इसके सेवनेसे ज्वरस्तम्भ और हृद्रोग नष्ट होता है।

(रसेन्द्रमत्सरस ५४)

गुञ्जा (सं० स्त्री०) गुञ्ज एव स्वार्थे कन्-टाप्। गुञ्जा तीन यव परिमाण।

गुञ्जित (सं० स्त्री०) गुञ्ज भावे क्त। १ गुञ्जन, कल कल शब्द। (त्रि०) २ कल कल शब्दयुक्त।

गुञ्जा (हिं० पु०) गोभा नामकी बाँसकी झील। २ एक प्रकारका काँटायुक्त वृक्ष। ३ गूदा, रेशेदार गूदा।

गुटकना (हिं० क्ति०) कवृत्तकी तरह शब्दकरना।

गुटका (हिं० पु०) १ गुटिका देवी। २ छोटे आकारकी पुस्तक। ३ लहड़ा। ४ गुपचुपमिठाई। ५ जावित्री, पिस्ता, कत्या, लींग, इलायचो, सुपारी इत्यादिसे मिश्रित मसाला। इस तरहका मिश्रित मसाला कहीं कहीं पानके स्थान पर खाया जाता है।

गुटवैगन (हिं० पु०) एक तरहका कण्टकयुक्त पौधा, एक कंटौला पेड़।

गुटरगू (हिं० स्त्री०) कवृत्तकी बोली।

गुटलखलम्—मान्द्राज प्रेसिडेन्सीके कदापा जिलान्तर्गत एक ग्राम। यह मदनपल्लीसे ६ कोस उत्तरपश्चिममें अवस्थित है। यहांके सामन्तकों और सुमलमानोंके मध्य इस ग्राममें घोर लड़ाई हुई रही, उसीके स्मरणार्थ यहां रक्त पहाड़ नामका एक वृहत् स्तूप विद्यमान है।

गुटि (सं० स्त्री०) गवते गु-क्तिप् गुतं अव्यक्तशब्दं वटति वैष्टयति, गुत-वट-इ ष्षोढरादित्वात् साधु यद्वा कुच्यते वक्षीक्रियते, कुट कर्मणि इ निपा०। १ वटिका, गोली। २ वतु लाकार पदार्थ, गोल चीज।

३ कौटविशेष ग्रहवृत्तका कीड़ा। दूसरा नाम रेशमका कीड़ा है। इस जातीय कौटको अंगरेजीमें Bomby-

cina कहते हैं। पहले वह छोटा कीड़ा जैसी लगती, फिर धीरे धीरे बड़ करके रूप बदलती है। उस समय यह जपरसे सूधी पर्ती लपेट करके अपना गर्भर टिपा लेती है। इसी डिम्बाकार अवस्थामें अंगरेज उसे Cocoon कहते हैं।

गुटि अपने गठनानुसार नाना प्रकारके विभक्त है। अंशोभिदसे यह भी भिन्न प्रकार होती और तरह तरहकी रेशम उत्पन्न करती है। अभी तक ६० किष्मका रेशमी कीड़ा स्थिर किया गया है। कीड़ा कोपमें बढ़ा होने पर उसको काट करके कोड़े १० तितलियोंका आकार बनाता और बाहर निकल आता है। फिर उस कोपसे रेशम नहीं निकलता। इसलिये कौटके गुटिमें रहते ही रेशम खींच लेना आवश्यक है।

गुटिको निम्नलिखित कई एक प्रकारके प्रधान हैं— चीन देशका Bombyx mori, बङ्गालमें उसको 'पाट' कहा जाता है। आजकल चीन, श्याम, भारतवर्ष, ईरान, फ्रान्स, अमेरिका और इटली प्रदेशमें इसकी बहुत पालती हैं। चीनमें कहावत है कि ई० सन्से २६४० वर्ष पहले सम्राट् हीयाङ्गतकी महिषोनि सबसे पहले रेशमका कीड़ा देखा था। आज भी नानकिन नगरमें ३२० उत्तर अक्षांश पर उसकी खेती खूब होती है। परन्तु भारतवर्षमें २६ अक्षांशके किसी स्थान पर गुटि तोड़ कर कहीं भी रेशम नहीं निकालते। इङ्ग्लैण्डके केण्ट नगरमें ग्रहवृत्तके पेड़ पर वैसी गुटि मिलती है।

चीनके मुल्कमें Saturnia Pyretorum नामक दूसरी भी कीड़े जाती है।

Bombyx religiosa को हिन्दीमें देवमूंगा या जोड़ी कहते हैं। यह आसाम और कर्कार प्रदेशमें उत्पन्न होता है। इसका रेशम सबसे अच्छा और चिकना समझा जाता है।

Bombyx Huttoni हिमालय प्रदेशके मसूरी नगरके पास पर्वतमें जमीनसे कीड़े ७००० फुट ऊँचे और हिमालयके पश्चिम भागमें समुद्रपृष्ठ अर्थात् कीड़े ३००० से ८००० फुट ऊँचे तक सब स्थानों पर खूब उत्पन्न होता है। रंग कुछ पीलापन लिये रहता है। रेशम अन्यान्य जातीय रेशमोंसे ज्यादा मुलायम लगता है। यह वर्षमें

दो बार उत्पन्न हुआ करता है । यथा *Actias Sciene* नामकी दूमरी भी गुटि है । यह पर्वत पर ५००० से ७००० फुट ऊँचे तः उपजती है ।

Pombyx Horsfieldi पनहोपीय है ।

मन्द्राज प्रान्तमें *Bombyx lugubris* होता है ।

जापानमें *Bombyx Yamama* उपजता है ।

अब इङ्ग्लैण्डमें भी उसकी खेती है । जापान यह पेशाब ज्यादा पीमती समझा जाता है । राजपरिवारमें उसके व्यवसायका एकाधिक्य है ।

Bombyx Peroni, *Actias sinensis*, *A. ligue* *scens* और *A. lolo* चार जातियाँ उत्तर चीनमें मिलती हैं ।

Bombyx Maltra भारतीय है । इसका फोवा अन्यान्य भारतीय गुटियोंसे बड़ा होता है । भारतमें *B. Actias sinensis*, *tertiantus sinensis* *textor* प्रसूति कई भिन्न श्रेणीके रेशमी कीडे हैं ।

Cricula trifenestrata उत्तर पूर्व तथा दक्षिण भारत ओहट्ट, आसाम, ब्रह्म और यवद्वीपमें उत्पन्न होता है । मिरा इसके *C. drepanoides* भी मिलता है ।

Salassa lola और *Actias Moenas* ओहट्टदेय जात है ।

Antherocera papua चीरभूममें होता है । उसका नाम 'बुवी' है । सिङ्गल, दक्षिण, उत्तर पूर' एवं उत्तर पश्चिम भारत, बङ्ग, विहार, आसाम, ओहट्ट और यव द्वीपमें भी उसकी उत्पत्ति है । बहुत समयसे इस देशमें उस कीड़ेको रेशम टमरका कपड़ा बनानेकी काम है ।

Antherocera Perny चीन देशोय है ।

Antherocera Roali *Antherocera Aelfei* और *Attacus Idwudi* दारजिलिङ्गमें उत्पन्न होते हैं ।

A. Irisa और *Antherocera Java* यवद्वीपज है ।

Antherocera Platti पृ दिचेरीमें होता है ।

A. Simla शिमला चोग दारजिलिङ्ग पर्वतजगत है ।

A. Assama आसाममें होता है । आसामी भाषामें उसका नाम भू गा है ।

Antherocera महारियाकी गुटि है । फ्रांसदेशमें उसकी खेती होने लगी है ।

Loepa Rutinka आसाम, ओहट्ट, मोट और यवद्वीपमें उत्पन्न होता है । सिवा इसके *L. miranda*, *L. Sikkima* और *L. Sivalika* कई जातीय श्रेणीकी गुटि भी देख पडती है ।

Attacus Atlas का बोवा सबसे बड़ा होता है । सिङ्गल, चीन, ब्रह्म, यवद्वीप और भारतमें सर्वत्र उसकी उत्पत्ति है ।

Attacus Cynthia और *Attacus ricini* की बहानामें ए डी ए डिया या एरगुगुटो कहते हैं ।

Attacus Guerin एरगु गुटोसे शक्तिमं शुद्ध बैठता है । यह देशमें ही यह अधिक परिमाणसे उत्पन्न होता है । एतद्ब्यतीत *A. Canningu*, *A. lunula*, *A. obscura*, *A. Silhetica*, *Caligula*, *Cachara*, *C. Simla*, *C. Ihebeta*, *Neoris*, *Huttoni*, *N. Shadulla*, *N. Stoliczkana*, *Oreina lactea*, *O. Moorei*, *O. diaphana*, *Rhodia newara*, *Binnaci*, *Zullika*, *Theophila*, *Bengalensis*, *Th. Huttoni*, *Mandarina*, *religiosa*, *Sherwilli* प्रसूति कई दूमरी किस्में हैं ।

गुटिक (स० पु०) मख्याण्डो ।

गुटिका (स० स्त्री०) गुटिग्न गुटि खाद्ये कन् टापु ।
१ गुटिका, बटो गोली । २ वर्तुलाकार पदार्थ, गोस चीज ।

गुटिकाञ्जनम् (स० स्त्री०) चयन श्लो ।

गुटिका पात (स० पु०) गुटिकाया पात, इ तत् ।
किसी विषयके निरूपणार्थ गोली निम्न, किसी चीज पर नियान कर गोली फेंकना ।

गुटिकाद्वय (स० पु० स्त्री०) लवणविशेष, एक प्रकारका नमक ।

गुट (हि० पु०) समूह, भण्ड, दल ।

गुहा (हि० पु०) नाजाकी बनी चौकोर लकड़ियार्थि खेलनेको मोटी ।

गुटिकोखड़ा—कृष्णा जिलेके अन्तर्गत दाक्षिणतीर्षि ६ कोस दक्षिणमें अवस्थित एक ग्राम । यहाँ एक प्रति प्राचीन शिवालय है । ग्रामके निकट ही एक गुहा है । ऐसा प्रवाद है कि इस कन्दरामें सुषुक्तु सोया करते थे ।

आर श्रीकृष्णके अनुरोधसे इन्होंने कालयवनको मार
या। सुगन्ध देखी। पर्वतके ऊपर कर्णके समाधिस्थान
और शिवमन्दिर विद्यमान हैं। शिवलिङ्गके निकट ही
तलङ्ग अक्षरकी एक शिलालिपि विद्यमान है।

गुठल (हिं० वि०) १ बड़ी गुठलीवाला फल। २ मूर्ख,
जड़। ३ गुठलीके आकारका।

गुठली (हिं० स्त्री०) किसी फलका बड़ा एवं कठिन
बीज।

गुड़ (सं० पु०) गवते अव्यक्तशब्दं करोति, गु-ड़। १ वतु ला-
कार पदार्थ, गोल। २ हस्तिसन्नाह, हाथीको सन्ना।
३ ग्रास, कीर। ४ कड़ाहमे गाढ़ा उबाल कर जमाया
हुआ जखकारस जो मृत्तिकाटिके जैसे कठिनाकारमें
परिणत हो जाता है। पर्याय—इक्षुमार, मधुर, रम-
याकज, खण्डज, द्रव्यज, सिद्ध, मोदक, अमृतमार, शिशु-
प्रिय, मितादि, अरुण, रसज, इक्षुरसकाय, गखील, गुल,
खादुखण्ड और खादु।

गुठकाना (हिं० स्त्री०)
गुड़का साधारण गुण शुक्रवर्धक, स्निग्ध, वायुनाशक,
मूत्रशोधक, पित्तनाशक एवं मेद, कफ, कृमि और बल-
वृद्धिकर है।

पुराने गुड़का गुण—लघु, हितकर, अनभिष्यन्दी,
अग्निवर्धक, पुष्टिकारक, पित्तनाशक, शुक्रवृद्धिकर, वायु-
नाशक और रक्तपरिष्कारक।

नूतन गुड़का गुण—कफ, श्वास, कास, क्रिमि और
अग्निवृद्धिकारी। अदरसके साथ गुड़ खानेसे कफ,
हरीतकीके साथ पित्त एवं शीठके साथ खानेसे अनेक
तरहके वातरोग नष्ट होते हैं। ५ चू, हीब्रह्म। ६ कार्पासी,
कपास।

गुड़क (सं० त्रि०) गुड़ें न पक्कः वाहुलकात् कन्। १ गुड़-
पक्क, गुड़से बनाया हुआ। (पु०) गुड़ एवं गुड़ स्वार्थ
कन्। २ वर्तुलाकार पदार्थ।

गुड़करी (सं० स्त्री०) गुड़ं गुड़वत् सुमिष्टं श्रुतिसुखकरं
करोति। रागिणी विशेष।

गुड़काष्ठ (सं० पु०) इक्षु, जख, केतारी।

गुड़कुष्माण्डक (सं० स्त्री०) श्रीषधविशेष, एक दवा।
किसी पुराने सूखे कुम्हड़े से १०० पल अंश निकाल करके
आग पर गर्म करना चाहिये। कुम्हड़ा उतार होने पर

उसमें एक प्रस्थ या २ सेर घी और तीन छांड़ते हैं। फिर
दालचीनी, तेजपत्र, धनिया, त्रिकटु, जीरा, इलायची,
लाल चीत, नागरमाथा, चिबक, धीपन, सोंठ, सिंघाडा,
केसर, प्रलम्ब और तालमन्तक प्रत्येक एक पल परिमित
ले चूर्ण करना चाहिये। इसके वाट १०॥ सेर गुड़ उगा
चूर्णमें मिला करके पहले तेल और घीके साथ पकाने
है। गाढ़ा पड़नेसे इसमें ८ पल शहत डाला और सब
पकाने पर पाक उतार लिया जाता है। इसीका नाम
गुड़कुष्माण्ड है। अधिकमान्य रहते भी उस श्रीषधकी
सेवन कर सकते हैं। इससे कफ, पित्त और वायु प्रश-
मित होता है। हृद्य व्यक्तिके लिये वह बलवृद्धिकर है।
अनियम स्वीसन्भोगमें जो अतिशय जोगवीर्य हो गया
है, उसके लिये गुड़कुष्माण्डक विशेष उपकारी है। इसके
सेवनेसे कास, श्वास, ज्वर, हिक्का छर्दि और अक्षुब्ध रोग

होते हैं। वह अतिप्राचीन औषध है। अश्विनी-
कुमारने ही सर्व प्रथम उसका आविष्कार किया था।

(चक्रवर्त्य)

गुड़खण्ड (सं० पु०) गुड़कत खण्ड, गुड़की खांड। यह
मधुर, सित, वातपित्तनाशक, किञ्चित् शीतल, बन्ध,
वृथ और रुचिप्रद है।

गुड़गुड़ (हिं० पु०) जलमें नली आदिके द्वारा वायु प्रवेश
होनेका शब्द।

गुड़गुड़ा (सं० स्त्री०) यावनालशर्करा।

गुड़गुड़ापुर—बम्बई प्रान्तके धारवाड़ जिलेमें रानीवेंदूर
तालुकका नगर तथा तीर्थस्थान। यह अक्षा० १४' ४०'
३० और देशा० ७५' ३५' पू०में अवस्थित है। जनसंख्या
कोई ८४७ होगी। अक्टूबर मासको मल्लारि (शिव)
का जो मेला लगता, हजारों यात्रियोंका समागम रहता
है। मल्लारिका एक मन्दिर है। उन्होंने भैरव रूप धारण
करके मल्ल राक्षसको मारा था। इनके सेवक वाग्गप
कुक्षुरका अवतार बतलाये जाते हैं। वह शेर या भालुके
खाल पहन करके यात्रियोंको हंभाते और पैसा कमाते
हैं। १८७८ ई०की यहां अस्थायी मुनिसपालिटो हुई।

गुड़गुड़ाना (सं० स्त्री०) गुड़गुड़ शब्द होना।

गुड़गुड़ायन (सं० त्रि०) गुड़ गुड़ इत्येवं यत्नं यस्य,
बहुव्री०। जिससे गुड़गुड़का शब्द हो।

गुड़गुड़ाहट (हिं० स्त्री०) गुड़गुड़ शब्द होनेका भाव।

गुडगुडी (हि० खी०) फारसो, एक तरहका डुका ।
 गुडगुडी--बम्बई प्रान्तके धारवाड जिलेका फसावा । यहाँ कलापका मन्दिर है । इसी मन्दिरमें १०३८ और १०७२ ई०के प्रदत्त दो प्रशस्ति खोदित है ।
 गुडग्राम--राजगडके अन्तर्गत एक गण्डग्राम । यह बहिया नदीसे ६ कोश पश्चिममें अवस्थित है ।
 गुडची (म० स्त्री०) गुड मिटरम चिनोति गुडेन चीयति वा गुड चि ड डीप् । गृणी ६०० ।
 गुडदण (सं० स्त्री०) गुडमाधन तत् प्रधान वा दण मध्यपदलो० । इक्षु, ऊज्र, केतारी ।
 गुडदण (म० स्त्री०) गुडप्रधान दण निपातने म्नाथु ।
 गुडत्वच् (म० स्त्री०) गुडतुन्य त्वक् मध्यपदलो० । स्वनाम न्यात गन्ध द्रव्य । यह मधुर रस तथा पीतवर्णका औषधि है । इसका पर्याय--सूकट, शृङ्ग, त्वक्पत्र, वराङ्गक, त्वच, वीन, त्वचा, पच, हृदय, सुरभिवल्कन और त्वक् है । राजवल्लभके मतसे इसका गुण-कफ, शुक्र और आमवातनाशक, मधुर पथ कटु है । किन्तु भावप्रकाशके मतसे इसका गुण--लघु, उष्ण, कटु, मधुर और तिक्तारस, रुच्य पित्तवर्द्धक एव कफ, वायु फण्ड, आमदोष, अरुचि हृद्दरोग यक्ष्मिगत रोग, वातजनित शर्श, क्रिमि, पीनस और शूक्रनाशक है ।
 यह पीतवर्ण सुगन्धि मूलत्वक् 'केशिया' नामक वृक्षकी छाल है । यह चीन तथा तातार देशमें उत्पन्न होती है । इसमें कुछ मिठास होनेके कारण इसे गुडत्वक् कहते हैं । यह केशादिकी सुगन्धित करनेके लिये व्यवहृत होता है । इस तरहकी एक और पतली छाल होती है । जिसे दालचीनी कहते हैं । किन्तु इसका स्वाद कटुमिश्रित मीठा है । किमी किमी वैद्यकग्रन्थके मतसे गडत्वक् शब्दका अर्थ दालचीनी कहा गया है ।
 गुडत्वन् (म० स्त्री०) गत्वर राजभोग्य, जायती ।
 गुडदाह (म० स्त्री०) गुडप्रधान दाह मध्यपदलो० । इक्षु, ऊज्र, केतारी ।
 गुडधनिवा (हि० खी०) गड और गुड मिश्रित एक तरहका सखट ।
 गुडधेनु (सं० स्त्री०) गुडनिर्मिता धेनु, मध्यपदलो० । दाहके लिये गुड द्वारा निर्मित धेनु, गुडकी गाय ।

हेमाद्रि दानसगडमें उसका विधान इसप्रकार लिखा है जहाँ गुडधेनु दो जाविकी, गोमय द्वारा अच्छी तरह लीपना पड़ेगा । उस पर कुश वा दर्भपत्र विस्तीर्ण करके चार हाथका कोई क्षणाजिन पूर्वमुख करके रचना और उसके निकट दूसरा छोटा क्षणाजिन वस्त्रके लिये स्थापन करना चाहिये । पहले पर गुडकी एक गाय और दूसरे पर बकड़ा बनाते हैं । चार भार अर्थात् २५ मन गुडमें गौ और एक भार पानी है । मनसे धत्त प्रसृत करना उत्तम है । दो भार (१२५ मन) गुडकी धेनु और आध भार (३ मन ५ सेर)का बकड़ा मध्यम होता है । दाता अपनी अवस्थाके अनुसार जितने चाहे गुडसे यह काम कर सकता है । धेनु और वस्त्र दोनोंका सुख दूत द्वारा निर्मित होता और शुभवर्ण सुन्दर वस्त्रसे आच्छादित करके रखना पड़ता है । कान सीपके, जयन भोतोक, शिराए सफेद सूतकी, गलकबल श्वेत कम्बलके, ककुत् तथा घट्टदेव तर्बिके और उजले चामरके रोम लगाते हैं । इसी प्रकार सू गेने भौँह, नवनीतमय चीम वस्त्रसे स्नान एव पुच्छ, कास्य द्वारा नोह, इन्द्रनीलमणिसे चक्षुकी तारकाए, सोनेसे मींग, चादोमे श्वर और विविध फर्नासे दांत बनाये जाते हैं ।
 इसी प्रकार गुडधेनु निर्माण करके धूप, दोष आदिने उसकी पूजा करना चाहिये । प्रत्येक पार्वणयाह करने की तरह इसका भी विधान दृष्ट होता है । गुडधेनु दानसे समस्त यज्ञका फल मिलता और सब पाप जाता रहता है । विपुवमक्रान्ति, पुण्याह तिथि, व्यतीपात और ग्रहण समयकी गुडधेनु दान करना उचित है ।
 गुडनई--घासुदेवपुरसे दो योजना उत्तरमें भयस्थित एक प्राचीन ग्राम । (१८५०)
 गुडना (हि० स्त्री०) एक तरहका मडकीका खोल । इसमें मडके टण्डे या नाठीकी इमतारफ फेंकेते हैं कि नाठी मिराँक चल पलटा जाती हुई बहने दूर तक चली जाती है ।
 गुडपर्वत (सं० पु०) गुडेन निर्मित पर्वत, मध्यपदलो० । दानके लिये गुडका बनाया हुआ पहाड़ । मध्यपुराणमें उसका विधान इस प्रकार लिखा है--तीर्थ, गोष्ठ या गृहके प्राङ्गणमें एक वरदारो अथवा मण्डप निर्माण

करना चाहिये। उसके बीचमें अच्छी तरह गोबरसे लीप करके कुछ दिना देते हैं। इस पर विष्कम्भ आदि पर्वत युक्त एक गुड़का पहाड़ बनाया जाता है। दश (१२॥ मन) का उत्तम, पांचका मध्यम और तीन भार गुड़का पर्वत अथम कड़ा है। टाताकी अवस्था बहुत हीन होनेसे इससे थोड़ेमें भी गुड़पर्वत बनाया जा सकता है। विष्कम्भ पर्वत, सुवर्णहृत्त आदि भ्रान्त्याचलके नियमानुसार रखते हैं। होम और लोकपालोंका अधिवास प्रभृति भी वैसे ही होता है। गुड़पर्वत टान करनेमें स्वर्ग मिलता है। भ्रान्त्याचलके सब काम करके यह मन्त्र पढ़ते हैं—

“यथा देवेषु विद्याया प्रबोध्यते” अभादगं ।
 सामवेदस्तु वैशानां सप्तदशैस्तु योजिताम् ॥
 प्रणवः सप्तसन्नायां नागोपां पार्वती यथा ।
 तथा रमाणां प्रवर, मदेवेचुरसो मतः ॥
 नम तस्मान् परी लक्ष्मीं गुड़पर्वतदिति मे ।
 यथात् श्रीभाग्यदायिण्यां सात्त्व गुड़पर्वत ।
 निःशुभानि पार्यन्त्या तस्मात्पदानि प्रशब्द मे ॥ (मन्त्र ० ८५ ५०)

जो इस नियमसे गुड़पर्वत टान करेगा, पहले गोरी लोकमें रह करके सप्तहीपका एकाधिपत्य पा सकेगा।

संस्कृत टिप्पणी ।

गुड़पाक (सं० पु०) गुड़स्य पाकः, ६-तत् । वैद्यशास्त्रोक्त पाकविशेष । चक्रदत्तके मतसे गुड़पाक करनेके समय एक जलपूर्ण पात्र उसके निकट रखना चाहिये। गुड़पाक भली भांति हुआ वा नहीं इसके जाननेके लिये थोड़ा गुड़ उठाकर रखे हुआ जलपूर्ण पात्रमें छोड़ दें । यदि निश्चित गुड़ एक स्थानसे दूसरा स्थान न जाय एवं उसका कोई अंश गल न जाय तो जानना चाहिये कि गुड़पाक अच्छी तरह हो गया । यदि गुड़ हलमें लग जाय अथवा स्तंभके सदृश हो जाय तो गुड़का पाक हीना नहीं समझा जाता है । (चक्रदत्त)

गुड़पाक (सं० पु०) इक्षु, जख ।
 गुड़पिप्पलीघृत (सं० ली०) गुड़पिप्पलीभ्यां सह पक्व घृतं मध्यपदलो० । औषधविशेष । पीपर, गुड़ और घृतको लिपित कर चौगुना दूधके साथ पाक करनेकी गुड़पिप्पलीघृत कहते हैं । यह अस्त्रपित्त और शूलरोगका एक महीषय है ।

गुड़पिट (सं० स्त्री०) गुड़युक्तं पिटं मध्यापदलो० ।
 गुड़सिला हुआ एक तरहका पीठा ।
 गुड़पुष्प (सं० पु०) गुड़ इव मधुरं पुष्पसम्य प्रश्री० ।
 मधुकपुष्प, मोलसरीका पुष्प ।
 गुड़पुष्पक (सं० प्र०) गुड़पुष्पं यत्र स्तार्यं जन्तु । मधुकपुष्पयुक्त, मोलसरीका पेड़ ।

गुड़फल (सं० पु०) गुड़ इव मधुरं फलसम्य, बहुव्री० ।
 १ पोलुष्टघ । २ वटरहृत्त ।

गुड़फला (सं० स्त्री०) अश्वयाकराक्षी, टोटी मफोय ।
 गुड़भजातक (सं० पु०) गुड़ो न पत्तो भजातकाः, मध्यपदलो० । औषधविशेष, एक दवा । उसकी इस तरह बनाने हैं—एक ट्रेण पानीमें दो हजार गिनारें उबालना चाहिये । यह पानी चौदाई घटने पर भिलावे नियान लेंते और उसी पानीमें १२॥ नीर गुड़ डाल करके खीलने देते हैं । फिर फलोंको चार चार टुकड़ों करके उसमें निक्षेप किया जाता है । भिलावों मूत्र पर जाने पर त्रिफला, प्रिकटु, अजवायन, नागरमोचा और मैथव एक एक कर्पे डालना चाहिये । फिर दालचोनी, इनायची, तेजपत्र और केसर होंड़ करके उतार लिया जाना है । इसीका नाम गुड़भजातक है । बलशाली व्यक्ति अग्निवृद्धि रहनेसे यह औषध सेवन कर सकता है । इसको सवेरे खाना चाहिये । गुड़भजातक लेनेमें शीशोदर, कास, कृमि और भगन्दरोग विनष्ट होता है ।

(चक्रदत्त)

गुड़भा (सं० स्त्री०) गुड़ इव भांति भाक । शर्करा, मकड़ ।
 गुड़मञ्जरी (सं० स्त्री०) १ कणशात्मली । २ जिङ्गिनी ।
 गुड़मण्डुर (सं० स्त्री०) १ पुराना गुड़ । २ अन्नद्रव शूल ।

गुड़मूल (सं० पु०) गुड़ इव मूलं यस्य, बहुव्री० । १ जख केतारी । २ खल्पमारिपशम,

गुड़योगफला (सं० स्त्री०) मधुरालावु, मिठी कट्टु ।
 गुड़र (सं० त्रि०) गुड़से बना हुआ ।

गुड़ल (सं० स्त्री०) गुड़ं कारणतया नाति गुड़-ला-क ।
 १ गौड़ी नामक मटिरा, जो गुड़से प्रसृत किया जाता है । (त्रि०) गुड़ोत्पन्न ।

गुड़लगी—बरेलई प्रान्तके बेलगांव जिलेका एक मौजा ।

यज्ञा कादसोध और पादसोध नामक दो लिहायत देव प्रंत वाधा दूर करनेके लिये मगहर है तीन अमास स्यामीकी बराबर भूलमे सताया हुआ आदमो वहाँ ले जानेमे अच्छा हो जाता है।

गुडलिह (स० वि०) गुड सेडि गुड लिह लिपि । गुड चाटनेवाना ।

गुड वीज (स० पु०) गुड इव मधुर वीज यस्य बहुश्री० । मसूर ।

गुड शर्करा (स० स्त्री०) गुड जाता शर्करा । उत्तम चीनी ।

गुड गियु (स० पु०) गुड इव मधुर गियु । रक्त गोभाजन ।

गुड शक (स० स्त्री०) अन्न रसविशेष, किसी किसका मिरका । यह तीन, गुड, पानी, ऋषडमाक भादि एकत्र मिला करके बनाया जाता है । (मधुधर)

गुडहर (हि० पु०) अक्षुलका पेड़ या फूल ।

गुडहल (हि० पु०) शर्करा (शर्करा)

गुरा (स० स्त्री०) गुड टाप । १ खुड़ीहच । २ वटिका गुटिका, गोली । ३ उगीरी हय, एक तरहकी सुगन्धि धास । ४ गुडूची ।

गुडाका (स० स्त्री०) गुड यति सङ्कोचयति देहेन्द्रिया दीनि स गुड त भाकति प्रकाशयति गुड भा को ज टाप । १ निद्रा, निन्द । २ आलस्य ।

गुडाक (हि० पु०) गुड मिश्रित पीनेका तस्मात् ।

गुडकेदा (स० पु०) गुड क्षुद्ध्यै केशयस्य, बहुश्री० ।

गुडाकाया निद्राया आतस्यस्य वा ईश, ६ तत् अर्जुन । "शुद्धं च गुण" (उल्लस) (वि०) जितनिद्र, जिनने निद्राको यथाभूत कर लिया हो । १ जितानस्य, आलस्य शून्य । (पु०) ४ गिय, महादेव ।

गुडास्य (स० पु०) खुड़ीहच ।

गुडाचन (स० पु०) गुडने निर्मितः चन मध्यपदलो० । तानके लिये गुड द्वारा निर्मित धरत । शुद्धं च देको ।

गुडादि (स० पु०) पाणिनेका एक गण । गुड, सुतमाप, मसू, अपूप, मर्मोदन, डसु, वैण्ड, मधाम, सवात, सकाम, मन्माह प्रयाह, निधाम और उपयास इन मर्माको गुडादि गण कहते हैं ।

गुडादिवटिका (स० स्त्री०) शोधरम ।

गुडापूप (स० पु०) गुडने मिश्रितःपूप, मध्यपदलो० । गुडामिश्रित पिष्टक, गुडपीठा ।

गुटापूपिका (स० स्त्री०) गुडा पृषा प्रायेण अक्षमस्या गुडापूप कन् टापू भत इत्यत्र । पूर्णमा तिःशिविमेप ।

गुडास्यु (स० स्त्री०) गुड कृत जल । गुड मिला हुआ जल ।

गुडारिष्ट (स० स्त्री०) गुडनिर्मित अरिष्ट, मध्यपदलो० । सदिरा, दाह ।

गुडाना (स० स्त्री०) गुड मधुरम आनाति वाहलकात् क तत टापू । गुण्डासिनीहच । इसका रस गुडके मद्य मीठा लगता है ।

गुडाशय (स० पु०) गुड इव मधुर रम आशयः सन् आशी आधारे अच, ६ तत् । अशोदहच, अशरीटाका पेड ।

गुडाशमक—पुराणोक्त एक जनपद । धर्मोपमा भोतिविहा गोवोना मशाम्बा । (मन्वन्व बुधवा ५१०)

गुडाष्टक (स० स्त्री०) शोषविशेष, एक दवा । निकट, पिपरासूल, मिश्रतुकी जड, दन्तोमूल और शीतकी जड बराबर बराबर चूण करके गुडके साथ सबेर खाना चाहिये माना अग्निबलके अनुसार दी जाती है । यह अजीर्ण और पदावर्त दूर करता है ।

गुडसव (स० पु०) गुडकृत पासव, गुडकी शराव । यह पातनायक, तर्पण और दोषन है । (५५५)

गुडिका (स० स्त्री०) गुटिका, गोला ।

गुडिमेटला—मन्द्राज प्राक्के कृष्ण जिनिका एक गाँव । यह नन्देधामसे ८ मील दक्षिण-पश्चिम अवस्थित है । यहाँ पहाड़ पर एक भग्न दुर्ग टुटे फूटे मन्दिर आदिके प्राचीन और मण्डप प्रभृतिका ध्वंसावशेष देख पड़ता है । कहते हैं कि १३२८ में १४२० ई०के बीच शहीदी नायकों ने यह भव मन्दिर भादि बनाये थे ; कोर कोर इमे सुरद्वारायुद्ध कथा करता है । ११८० शकके दिया हुआ राजेन्द्र चौहक के पुत्र काशतोय शूद्रमहाराज, १०८६ शकमें प्रदत्त वास्तुटप और रुद्राग्रा देवीके राजतकाल पर दिया हुआ भिन्न भिन्न मिनाफलक मिलता है ।

गुड़िया (हि० स्त्री०) कपड़ोंकी बनी हुई लड़कियोंके खेलनेकी पुतली ।

गुड़िया—उड़ीसेकी एक जाति । यह हलवाईका काम करते हैं । गुड़की मिठाई बनानेसे ही उनकी गुड़िया कहा जाता है ।

गुड़िलो-हहटाचलम्—मन्द्राजप्रान्तके विशाखपत्तन जिलेका एक पहाड़ । यह विमलोपत्तन तालुकसे ८ मील पश्चिम पड़ता है । इसकी समावरम राहसे एक मोल दक्षिण रङ्गनाथ स्वामीका मन्दिर और उसीके पास पत्थर पर खुदी हुई एक लिपि है । सिवा इसके मण्डपके खम्भे पर पहाड़ और भग्नेके निकट दूसरी भी कई एक अस्पष्ट शिला लिपियां देख पड़ती हैं । इसी स्थानसे एक मोल दूर १० फुट गहरी और ३० फुट चौड़ी एक गुहा है ।

गुड़ीवाड़-मन्द्राज प्रान्तके कृष्णा जिलेका एक सबडिविजन और तालुक । यह अक्षा० १६° १६' तथा १६° ४७' उ० और देशा० ८०° ५५' एवं ८१° २३' पू० मध्य अवस्थित है । क्षेत्रफल ५८५ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः १५१८१६ है । इसमें कोलार भौल आ गया है । मालगजारी और सेस कोड़े १०१८००० रु० है । जमोन्की सींच कृष्णा नदीकी नहरसे होती है । एक नगर और २१२ गांव आवाद हैं ।

गुड़ीवाड.—मन्द्राज प्रान्तके कृष्णा जिलेमें गुड़ीवाड़ तालुकका सदर । यह अक्षा० १६° २७' उ० और देशा० ८१° पू०में पड़ता है । जनसंख्या प्रायः ६७१८ है । गुड़ीवाड बहुत पुरानी जगह है । नगरके मध्यभागमें एक टूटाफुट बौद्ध स्तूप देखते हैं । कहते हैं, कि उसमें पांच भटके मिले । पश्चिमको एक सुरक्षित जैन मूर्ति है । थोड़ी दूर आगे नगरका प्राचीन स्थान टोला है । यहाँ मट्टीके बड़े वर्तन, धातु, पत्थर तथा शीशे सब तरहकी मालाएँ और आम्बू कांस्य मुद्राएँ आविष्कृत हुई हैं ।

गुड़ी (सं० स्त्री०) १ सुहीवृक्ष । २ गुड़ूची ।

गुड़ी (हि० स्त्री०) पतंग, गुड्डो ।

गुड़ूची (सं० स्त्री०) गुड़ वाहुलकात् उचत् ऊीप् । गुरुच ।

गुड़ू (हि० स्त्री०) १ किवाड़की चूर । २ मण्डकार रेखा । ३ छीटा छद्र ।

गुड़ूवा (हि० पु०) कपड़ेका बना हुआ लड़कीके खेलनेका पुतला ।

गुड़ूह—एक टेंगका नाम । (इ लः ५/१८०३)

गुड़ूची (सं० स्त्री०) गुड़ वाहुलकात् उचत् टन् गुड़ूची वाहुलकात् उकारभ्य ऊकारादेशः । न्ताविगिप, एक वेल । चलती बालीमें गुर्च कहते हैं । (*Ceculus cordifolius*) इसका संस्हन पर्याय—बसादनी, छिन्न रुहा, तन्दिका, अमृता, जोर्वान्तका, सोमवसा, विगन्था, मधुपर्गी गुड़ूची, गुड़ूचा, चक्र, नक्षगा, अमृतवल्ली, ज्वरार, श्यामा, वरा, सुकता, मधुपर्गिका, छिन्नोडवा, अमृतलता, रसायनी, मोमलतिका, भिषकप्रिया, कुण्डलिनी, वयस्या, नागकुमारिका, कृषिका, चन्द्रहामा, अमृतवल्ली, मध्राजोवन्ती, सोमा, चक्रलक्ष्मिका, वयस्या, मण्डली और देवनिर्मिता है ।

गुड़ूचो कटु, तिक्त स्वादुपाक, रसायन, संग्राही, कषाय, उष्ण, लघु, बलकर, अग्निवृद्धिकारक, और त्रिदोष, आम, तृष्णा, दाह, मोह, कास, पाण्डू, कामला, कुष्ठ, वातरक्त, ज्वर, कृमि तथा चर्मनाशक है । (इ लः) राजवदभक्त मतमें यह गुरु, वीर्यकर और भ्रमनाशक होती है ।

गुर्चकी पत्ती अग्निवृद्धिकर सर्वप्रकार ज्वरनाशक, लघु, कषाय और दूसरे गुणोंमें लताके समान है घीमें मिला हुई गुर्चकी पत्ती घात, गुड़युक्त पित्त, एरगडतेल योगसे उग्र वातरक्त और सौंहड़के मेलमें आमवात दूर करती है । (राजवदभक्त)

भावप्रकाशमें बतलाया है कि राम रावण युद्धमें राक्षसाधिपति रावणके हथियारोंको कड़ी चोटसे रामचन्द्रका बहुतसा वानर गैन्ध निहत हुआ । रामने उन्हें बचानेके लिये इन्द्रसे प्रार्थना की थी । सुरपतिके अमृत वर्षण करनेसे मरे हुए वानर जी उठे । उनके शरीरका अमृत चारों ओर मट्टीमें लगा था । उसी अमृतसे सबसे पहले गुर्च उपजी ।

भारतवर्षके प्रायः सब वनोंमें गुड़ूची लता देख पड़ती है । जड़ काट डालनेसे भी यह नहीं जाती ।

आमके हृत्तमें हो वह ज्यादा बढ़ती है। गुर्चं दो प्रकार की है,—एरुको काटनेसे उसके जोरमें चक्राकार चिह्न भलकता है। दूसरीमें वैसा नहीं होता। चक्राकार चिह्नयुक्त नता पद्मगुडूची भी कहलाती है। यह अपेक्षा कृत कुछ मोटो रहती और चालीस पचास घाय बढती है। इसकी गांठसे लम्बे लंबे रेशे निकलते हैं। नीम की गुर्चं सबसे अच्छी ममभी जाती है।

युरोपीय चिकित्सकों के मतमें वह बलकर, मृत्रहर और श्लेष्मज्वर है। ट्यूमा, फाबिल आदि डाक्टरीका कठना है कि सविराम ज्वरमें गुर्चूची बड़ा उपकार करती है। परन्तु डा० श्रीमकनसी यह बात नहीं मानते। उनके मतानुसार गुर्चूके काटेका विग्रह गुण यहाँ है कि वह श्रैत्यनियारक होते भी उष्ण नहीं। पुराने उप दश रोगमें यह मानसैनी तरह काम आती है। ज्वर आदिके घेई शरीर दुर्बल पड़ जाने पर इसको खानेसे क्षुधा, जीर्ण और बलवृद्धि होती है।

गुडूचीघृत (स० क्ली०) घृतविशेष, गुर्चका घी। १२॥ शरावक गुर्चं ४ श० गायके घी और ६४ श० पानीमें डाल खूब उबालते हैं। जब १६ श० जल घट आता, १ श० गुर्चका चूर्ण उसमें डाल दिया जाता है। इसीका नाम गुडूचीघृत है। यह वात-रक्तके लिये बहुत उपकारी होता है।

शामवातका गुडूचीघृत इस प्रकार बनता है—४ शरावक गव्यघृत और ४४ श० जलमें ६४ पल गुडूची डाल करके खूब उबालते और १६ श० पानी बचने पर उतार करके उसमें १ श० शण्डीचूर्ण मिलाते हैं।

गुडूचीतैल (स० क्ली०) तैलविशेष, गुर्चका तैल। स्वल्प गुडूची तैल इस तरह बनता है—४ शरावक तिल तैल और ६४ श० जलमें १०० पल गुर्च उबाल करके १६ शरावक पानी बचने पर उतारते फिर उसमें १०० पल गुडूची चूर्ण मिलाते हैं।

मध्यम यथा—४ श० तिलतैल, १६ श० गुडूचीकाय और ४ श० दुग्ध यथाविधि पाक करनेसे मध्यम गुडूची तैल प्रसृत होता है।

बृहत् यथा—८ श० तिलतैल और ६४ श० जलमें १०० पल गुडूची डाल करके १६ श० पानी बचनेसे त्राय उतार

लेना चाहिये। इसमें शुनफा, हर, त्रिकटु, गुर्चं, मीया, यन अजवायन, झलदी, दारहलदी, कुट, धनिया, पद्मकाष्ठ, विडङ्ग, तेजपत्र, वच तथा जटामासो चार चार तोलें और ८ तोला लालचन्दन डालनेसे बृहत् गुडूची तैल तयार होता है।

दूसरा गुडूचीतैल बनानेकी प्रणाली यह है—१६ श० तिलतैल, ६४ श० दुग्ध और ६४ श० जलमें १२॥ श० गुर्च उबाल करके १६ श० पानी रहनेसे उतारा जाता है। इसमें मुलहठी, मञ्जिष्ठा, ऋद्धि (अभावमें बला), वृद्धि (न मिलनेमें गोरच चाक्षुष्य), मेढा (न रहनेसे अश्वगन्धा), महामेढा (अभावमें अनन्ता), गुर्चं, ऋषभक (न मिलने पर वशरोचना), काकालो, घोरकाकीनी, जीवनी, कुष्ठ, इलायची, अगुरु, द्राक्षा, जटामासो, पद्मनखी, शटो, रेणुक, विकड्वत, जटा, मीठ, वीपल मिर्च शुनफा, श्यामालता, अनन्तमूल, गुडूत्वक तेजपत्र, चव्य, बराहकान्ता, भूश्यामलकी, शालपर्णी, तगरपादुका, नागेश्वर, पद्मकाष्ठ, सौगन्धिक और रक्तचन्दन दो दो तोला पडता है। (शारङ्गोष्ठी)

यह तैल लगानेसे वातरक्त रोग मिटता है। गुडूचीपत्र (स० क्ली०) गुडूचीका पत्र, गुर्चका पत्तो। इसका शाक बनता है। गुण—आग्नेय, सर्वज्वरहर, लघु, कटु, फोषाय, तिक्त स्वादुपाक, रसायन बन्ध, उष्ण सग्नी और लघ्णा, प्रमेह, दाह, कामला, कुष्ठ तथा पाण्डू है। (भावप्रकाश)

गुडूचीमत्व (स० क्ली०) गुडूचीसार, गुर्चका सत। गुडूच्यादि (स० पु०) गुडूची आदिय सब, बहुश्रो०। वैद्यकशास्त्रोक्त एका गुण। गुडूची, निम, धनिया, पद्मकाष्ठ और चन्दन इन सभीको गुडूच्यादि कहते हैं। इसका गुण—ठिक्का, अरुचि, कृद्धि, पिपासा और दाह नाशक है।

गुडूच्यादिकपाय (स० पु०) पाचनविशेष। गुडूची, आतडच, धनिया, शठ, त्रिव्वसुम्सा और वाला इन समस्त द्वारा प्रसृत पाचनको गुडूच्यादिकपाय कहते हैं। इस पाचनके सेवनसे ज्वरातिमार, हिका, अरुचि, कृद्धि, पिपासा और गात्रदाह नष्ट होते हैं।

गुडूच्यादिकाय (स० पु०) पाचनविशेष। भावप्रकाश

में तीन तरहके गुड़, च्यादिक्वाथ निरूपित हैं। १म-गुरुच और आंवला संयुक्त जैतपापड़के क्वाथको एक तरहका गुड़, च्यादि क्वाथ कहते हैं। इसके सेवनसे दाह, शोष और भ्रान्ति उपसर्गयुक्त पित्तज्वरमें विशेष लाभ होता है। २य—गुरुच, चिरीता, वाला, वेणाकी जड़, मोथा, तेउडी, आंवला, किसमिस, वासक और जैतपापड़, इन समस्त द्रव्यके क्वाथकी भी गुड़, च्यादि क्वाथ कहते हैं। इसके सेवनसे ज्वर विनष्ट होता है। प्रातःकाल मधुके साथ सेवनीय है। ३य—गुलच, निम्बपत्र, धनिया, रक्तचन्दन और कटकी इन समस्त पदार्थसे जो क्वाथ प्रसृत होता है उसे गुड़, च्यादिक्वाथ कहते हैं। यह पित्तघ्नोष्णक ज्वरमें सेवन करना उचित है। इसके सेवनसे पिपासा, दाह, अरुचि और वमि दूर हो जाते हैं

गुड़, च्यादि लौह (सं० पु०) रसविशेष, एक टवा। गुर्चका सत, त्रिफला, विडङ्ग, मोथा तथा चौतको जड़ एक एक तोला और १० तोला लौह मिला करके मापाप्रमाण गोली बना लेना चाहिये। इसका नाम गुड़, च्यादि-लौह है। यह रस सेवन करनेसे वातरक्त दूर होता है।

(१सेठचिलामणि)

गुडूर—बंबई प्रान्तके बीजापुर जिलेका ग्राम (मन्दिरपुरी)। यह वादामीका एक छोटा गांव है। जनसंख्या प्रायः ११८२ है। ग्रामके मध्यभागमें रामेश्वरका एक प्राचीन मन्दिर है। उसमें लिङ्ग प्रतिष्ठित है। मठकी छोड़, करके और सब गिर पड़ा है। मन्दिरमें १२ चौकीर और ६ गोल नक्काशीदार खम्भे हैं। द्वारकाष्ठ पर गजलक्ष्मीकी मूर्ति है। हाथी अपनी मूंडमें धड़े लिये उनके मस्तक पर जलधारा छोड़, रहे हैं। यहां कपड़े, तांबे पीतलके वर्तन और मूर्तियोंका काम होता है।

गुडेर (सं० पु०) गुड-एरकू। १ गुडक, वर्तुलाकार पदार्थविशेष। २ ग्रास, कौर। ३ लण, घाम।

गुडेरक (सं० पु०) गुडेर स्वार्थे कन्। गुडेरिका।

गुडोदक (सं० स्त्री०) गुड़ मिश्रित जल।

गुडोडवा (सं० स्त्री०) गुड, उडवोऽस्याः, बहुव्री०।

१ शर्करा, शर्कर। (त्रि०) २ जो गुड़से बनाया गया हो।

गुडोडना (सं० स्त्री०) गुडात् उडूता, ५-तत्। शर्करा, शर्करा।

गुडुक (सं० पु०) गुडुगाली।

गुडडा (हि० पु०) गुड, गा देखा।

गुडडी (हि० स्त्री०) पतंग, कनकीवा।

गुडू (हि० स्त्री०) १ गुडुदली। (पु०) २ एक प्रकारका कीट जो धूलमें घर बना कर रहता है।

गुण (सं० पु०) गुण भावे कर्त्तरि या अच। १ धनुषकी प्रत्यंघा। इसका पर्याय—सर्वोच्च, शिखिनी, शिखरा, ज्यावा, पतञ्जिका और जीवा है। २ रज्जु, रस्सी, डोरा।

३ शीर्षादि धर्म। ४ छह प्रकारकी राजनीति। सन्धि, विग्रह, यान, आमन, दैध और संशय इन सर्मोंको गुण वान्ति हैं। ५ सूत्र। “शांख्यसूत्रे १। २। ३। ४। ५। ६। ७। ८। ९। १०। ११। १२। १३। १४। १५। १६। १७। १८। १९। २०। २१। २२। २३। २४। २५। २६। २७। २८। २९। ३०। ३१। ३२। ३३। ३४। ३५। ३६। ३७। ३८। ३९। ४०। ४१। ४२। ४३। ४४। ४५। ४६। ४७। ४८। ४९। ५०। ५१। ५२। ५३। ५४। ५५। ५६। ५७। ५८। ५९। ६०। ६१। ६२। ६३। ६४। ६५। ६६। ६७। ६८। ६९। ७०। ७१। ७२। ७३। ७४। ७५। ७६। ७७। ७८। ७९। ८०। ८१। ८२। ८३। ८४। ८५। ८६। ८७। ८८। ८९। ९०। ९१। ९२। ९३। ९४। ९५। ९६। ९७। ९८। ९९। १००।”

६ ज्ञानविद्यादि। ७ अच्चा स्वभाव, शान्त, सहृत्ति। ८ सांख्यमतसिद्ध पदार्थविशेष, सांख्यमतमें माना हुआ एक पदार्थ। “गुण” शब्दसे साधारणतः द्रव्यके धर्म रूप रस आदि हीका बोध होता है, किन्तु सांख्यमतमें गुणको ऐसा नहीं माना है, वे कहते हैं यह एक प्रकारका द्रव्य है और इसके भी कई एक धर्म हैं। विज्ञान-

भिन्नु कहते हैं, कि पुरुष वा आत्मारूप पशुके बन्धनके कारण महत्तत्त्व वा बुद्धिरूप रज्जु जिसमें बन्ती है, उसीको सांख्यप्रणेता कपिलने गुण शब्दसे उल्लेख किया है। (सांख्य १। ६। १। २। ३। ४। ५। ६। ७। ८। ९। १०। ११। १२। १३। १४। १५। १६। १७। १८। १९। २०। २१। २२। २३। २४। २५। २६। २७। २८। २९। ३०। ३१। ३२। ३३। ३४। ३५। ३६। ३७। ३८। ३९। ४०। ४१। ४२। ४३। ४४। ४५। ४६। ४७। ४८। ४९। ५०। ५१। ५२। ५३। ५४। ५५। ५६। ५७। ५८। ५९। ६०। ६१। ६२। ६३। ६४। ६५। ६६। ६७। ६८। ६९। ७०। ७१। ७२। ७३। ७४। ७५। ७६। ७७। ७८। ७९। ८०। ८१। ८२। ८३। ८४। ८५। ८६। ८७। ८८। ८९। ९०। ९१। ९२। ९३। ९४। ९५। ९६। ९७। ९८। ९९। १००।)

उत्पन्न होते हैं। इसी लिए समस्त जन्म पदार्थको त्रिगुणात्मक कहते हैं। ये गुण तीन प्रकारके हैं—मत्वः, रजः और तमः। सुख, लघुता और प्रकाश आदि जिमका धर्म है, उसे मत्वः, दुःख, उपष्टम्भ और चाञ्चल्ययुक्तको रजः तथा विषाद, गुरुत्व और आवरकत्व आदि जिममें है उस गुणका तमः नामसे उल्लेख किया जाता है। इनमें एक एक जातीय अनन्त गुण हैं। सत्वजातीय अर्थात् जिसमें सत्वगुणका धर्म है, उसे सत्व, रजोजातीय सभी गुणोंको रजः और तमोजातीय समस्त गुणोंको तमः कहा जाता है। इन जातियोंको ले कर तीन गुण खोकार किये जाते हैं। वास्तवमें गुण सिर्फ तीन ही नहीं हैं। एक एक जातिके अनेक गुण हैं। विज्ञान भिन्नुके मतसे—आकाशके कारण जो गुण हैं, उन्हें छोड़ कर अन्य सभी गुण अणुपरिमाण हैं। इन गुणोंका कभी भी विनाश नहीं होता। ये समस्त पदार्थोंके रूपमें परि-

णत होती है। नैयायिक वा वैशेषिकगण भौतिक परमाणुओंकी निरयत्त नित्य मानते हैं। उनके मतसे परमाणु ही चरमद्रव्य है, उन्हीं में समस्त जन्म द्रव्योंकी उत्पत्ति होती है, किन्तु परमाणु किसी पदार्थसे उत्पन्न नहीं है। मारत्यप्रणेताने इस मतका युक्ति और प्रमाणों द्वारा खण्डन कर, परमाणुका उपादानकारण वा अवयव तन्मात्र, तन्मात्रके उपादानकारण अहङ्कार अहङ्कारके उपादानकारण महत्तत्त्व और उसके उपादानकारण सत्त्व रज और तमोगुण है, ऐसा स्थिर किया है। इनके अवयव वा उपादानकारण नहीं है। ये नित्य हैं। ये गुण परस्पर परस्परके सहचारी और परिणामयोग हैं और एक जातीय गुण अन्य जातीय गुणका अभिभव किया करते हैं।

भगवद्गीताके मतसे—सत्त्वगुण निर्मल कलुषादिसे रहित है, ज्ञान (वृत्ति) सुख और प्रकाशकत्व इसका धर्म है। तृष्णा, आसक्ति और रज्जुमूल रजोगुणके धर्म हैं। मोह, प्रमाद, आलस्य और निद्रा तमोगुणके धर्म हैं। एक गुण दूसरे गुण पर आवरण डाल कर अपना कार्य करता है। (गीता १४ व०)

ये गुण जब अपरिणत वा अकार्य अयस्थानि रहते हैं, तब इनका कोई भी धर्म उपलब्ध नहीं होता। किन्तु महत्तत्त्व आदि कार्य द्रव्य रूपमें परिणत होने पर इनके पृथक् पृथक् धर्मोंका अनुभव किया जा सकता है। परिणामके तारतम्यके अनुसार निम्नमें जिस गुणकी अधिकता होती है, उसमें उसी गुणका धर्म प्रकट होता है।

गुणका सर्वप्रथम परिणाम महत्तत्त्व वा बुद्धि है, इसी में गुणके पृथक् पृथक् धर्मोंका विशेष परिचय मिलता है। गीताके मतसे महत्तत्त्व वा बुद्धिमें सत्वगुणका आधिक्य होने पर ज्ञानमें निरतिशय बुद्धि ही जाती है। बुद्धिमें सत्वगुणका आधिक्य होने पर आर्युक्तर, धनकर, सुखकर, प्रोत्तिवर्धक रमयुक्त और सिद्धि आहार करनेकी प्रवृत्ति होती है। इस प्रकार रजोगुणके आधिक्यसे लोभ प्रवृत्ति, कार्यका उद्योग, सर्वदा कार्य करनेका निरतिशय आग्रह और सृष्टा होती है तथा कटु, अद्भरस, लवण, अतिशय उष्ण, तोष्य, रुच और दुःख शोक वा रोयजनक द्रव्य खानेकी इच्छा होती है। तमोगुणकी वृद्धि होने

पर ज्ञानकी अल्पता वा अभाव, कार्यमें अप्रवृत्ति, अनवधानता और मोह दुष्कार करता है तथा रमहीन, दुर्गन्धयुक्त, पशुपित और उच्छिष्ट द्रव्य भक्षण करनेकी इच्छा होती है।

भावप्रकाशमें लिखा है—धर्म, मुक्ति और परलोक आदिमें विश्वास, सत् अस्तुको विवेचन करने भोजन (करना), क्रोधहोना, सत्यवाक्यप्रयोग, मेधा, बुद्धि, भूतप्रेत, काम क्रोध और लोभ आदिके आवेगका अभाव, चमा, दया, विवेकज्ञान, पटुता, अनन्दित कर्मका अनुष्ठान सृष्टाका अभाव, नियम और रुचिके साथ धर्मकर्मका अनुष्ठान ये सब वर्द्धित मानसिक सत्त्वगुणके धर्म हैं। क्रोध, ताडनशीलता, निरतिशय दुःख, अत्यन्त सुखको इच्छा, षपटता, कासुकता, मिथ्यावाक्यप्रयोग, अधीरता, गर्व ऐश्वर्य, मनता, अधिक आनन्द और भ्रमण, ये सब मानसिक वर्द्धित रजोगुणके धर्म हैं। नास्तिकता, अतिशय विषयभाव, अधिक आलस्य, दुष्ट-बुद्धि, निन्दित कर्मानुष्ठानसे उत्पन्न सुखमें प्रीति, सबसमय निद्रा, सब विषयोंमें ज्ञानकी अल्पता, सर्वदा क्रोधाभ्यता और सुखता, ये सब मानसिक वर्द्धित तमोगुणके धर्म हैं। सत्, रज और तम गुणोंमें विशेष विवरण दीक्षणा आदि है।

७ अग्रधान, गोण । (म ३ हरि)

१० नैयायिक और वैशेषिक मतसिद्ध द्रव्याश्रित पदार्थ विशेष, नैयायिक और वैशेषिक मतमें माना हुआ एक द्रव्याश्रित पदार्थ । वैशेषिक-उपस्कारके कर्तानि गुण का लक्षण इस प्रकार लिखा है—

‘ शान्तावस्थे सति कर्मान्धे च सति अगुण स ।’

कर्मसे भिन्न जातिविशिष्ट पदार्थका नाम गुण है। सूत्रकारने इस तरहसे लक्षण किया है—सयोग और विभागके प्रति अन्याकी अपेक्षा न कर जो पदार्थ कारण नहीं होता और जो गुण शून्य है तथा द्रव्य ही जिसका आश्रय है, उसका नाम गुण है। (वैशेषिक १०० १०)

स योग और विभागमें दृग्गोकी अपेक्षा छोड़ करके जो पदार्थ कारण नहीं है तथा, गुणशून्य पदार्थ और द्रव्य हीकी अपना आश्रय रखता, वही गुण कहलाता है। सुभावलीके मतसे समर्थाय कारणमें अपनी वृत्ति न रखते हुए भी नित्य पदार्थ वृत्ति रञ्जितसे और मत्ताके

साक्षात् व्याप्य पदार्थका नाम गुण है। मिवा इमके सुक्तावलीकारने गुणके और भी कई एक लक्षण लिखे हैं। वैशेषिक-सूत्रप्रणेत कणाद मिर्फ १७ ही गुण मानते हैं। यथा—रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष और प्रयत्न। (वैशेषिक १।०) किन्तु उपस्कारप्रणेत इस सूत्रके चकारसे मात गुण और मिला करके चौबीस बना देते हैं। तदनुसार भाषापरिच्छेद-प्रणेताने भी २४ गुणोंका उल्लेख किया है। नैयायिक भी इसी पक्षको समर्थन करते आते हैं। अतएव नैयायिकों और वैशेषिकोंके मतमें गुण चौबीस हैं—रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व अपरत्व, ज्ञान, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, यत्न, गुरुत्व, द्रवत्व, स्नेह, संस्कार, धर्म, अधर्म और शब्द। इन्हीं सब गुणोंके अनुसार द्रव्यका विभाग होता है। नैयायिक कई द्रव्योंको मूर्त और कितनों ही को अमूर्त जैसा कहते हैं। इनके मतमें आकाश और आत्माको छोड़, करके बाको मातो चीजें मूर्त होते हैं। पूर्वकथित चतुर्विंशति गुणोंमें रूप, रस, स्पर्श, गन्ध, परत्व, अपरत्व, द्रवत्व, गुरुत्व, स्नेह और वेग (संस्कार विशेष) कई गुण केवल मूर्त अर्थात् आकाश तथा आत्मा भिन्न और द्रव्योंके धर्म हैं। धर्म, अधर्म, भावना (एक संस्कार), शब्द, बुद्धि, ज्ञान, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष और यत्न गुण अमूर्त द्रव्योंमें होते हैं।

सांख्याचार्य और वेदान्तिकोंके मतमें वह चौबीस गुण द्रव्यसे अलग नहीं। इन्होंने धर्म और अधर्मका अमट मान करके उनकी द्रव्यस्वरूप जैसा ठहराया है।

१० वैयाकरणोंके मतानुसार एक आदेश। इइके स्थानमें एकार, उंजकी जगह ओकार, ऋ ऋका अर और लृ लृसे अल् होनेका नाम गुण है।

११ आलङ्कारिक मतमें अहीभूत रसके उत्कर्ष हेतु माधुर्य प्रभृति धर्म गुण कहलाते हैं। रसमें गुणकी स्थिति बहुत ही आवश्यक है। (काव्यप्रकाश)

साहित्यदर्पणमें ३ गुण कहे हैं—माधुर्य, ओजः और प्रसाद। किन्तु टण्डीके मतमें वह दश है। स्नेह, प्रसाद, समता, माधुर्य, उदारता, अर्थव्यक्ति, साकुमार्य,

ओजः, कान्ति और समाधि। वेदमें रीतिमें इन १० गुणोंका रहना निहायत जरूरी है।

१२ आदृष्टि, दुर्हवाव। (मन) १३ उचर्ष, अट, इइ।
१४ विशेषण, तार्किक।

१५ प्राणिनि भाष्यके मतानुसार द्रव्यको छोड़ करके जो पदार्थ द्रव्यके आन्वयमें रहता, कमी कभा उनसे घट पड़ता, भिन्न जातीय पदार्थ लगता और नित्यानित्य भेदमें दो प्रकार ठहरता, वह गुण है। जैसे घट आदि रत्न और आकाश प्रभृतिका परिमाण। (म। १७, १८, १९)

१६ देश एव कालज्ञत्व आदि च दह धर्म। यथा—देश, कालज्ञता, दृढ़ता, सर्व लक्षणमहिम्नता, सर्व विज्ञानता, दृढता, ओजस्विता, मन्वगोपन, अमंवादिता, गौर्य, भक्तिज्ञता, कृतज्ञता, गरणागतवात्मन्य, यक्षोधनम्भाव और अचञ्चलता। शास्त्रकारोंने इन्हीं ही गुण जैसा लिखा है।

१७ भगवद्गीताके मतमें सब प्राणियोंके प्रति दया, क्षमा, अनुक्षया, शौच, अनायाम, मङ्गल, अक्षयणता और अपृष्ठा आठ धर्म। १८ सूद, व्याज। १९ इन्द्रिय। २० त्याग। २१ वटी, गोली। २२ दोषभिन्न धर्म, भलाई। २३ मुक्तिसाधनविवेक, वैराग्य और सुशुषा प्रभृति। २४ अङ्ग प्रधानका निर्वाहक। (मंनिःसुध) २५ वसुके साहित्य प्रभृति धर्म। २७ वर्णोत्पत्तिके अनन्तरजात विवार आदि वाच्य प्रयत्न।

२० सुशुतोक्त अष्टविध वीर्य। उष्ण, शीत, स्निग्ध, रूच, विशद, पिच्छिल, मृदु और तीक्ष्ण आठ प्रकारके वीर्यका नाम गुण है। यह सब द्रव्यमें रहा करते हैं।

२८ गणित। ३० भोमसेन। ३१ तन्तु, डोरा। ३२ व्यञ्जन। ३३ गणितविशेष, जवरा। कणाद के मत। ३४ त्रित्व संख्या, तीनकी अदद। ३५ कोई योगेश्वरीभक्त राजा। यह पञ्चाक्ष मुनिकुलज थे। उनके पिताका नाम पञ्चराज रहा। (सद्भाद्रिखण्ड १।३।२)

३६ जैनमतमें गुण उसे कहते हैं जो द्रव्यके पूरे हिस्सेमें और उसकी प्रत्येक अवस्थामें (सब टा) विद्यमान रहे। यह सामान्य और विशेष इन दो भेदोंमें विभक्त है। जो सर्व द्रव्योंमें व्यापक हो उसे सामान्य और जो सर्व द्रव्यमें व्यापक नहीं ही उसे विशेष गुण कहते

हैं। सामान्य गुणके प्रधानतः ६ भेद हैं—अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, प्रमंयत्व, अगुरुत्वयुत्व और प्रेतेशवत्त्व।

(संज्ञा ५३)

गुणक (१० पु०) गुणयति आवर्त्तयति गुण ग्वुल् ।

१ पूरकाङ्क्षविशेष, वह अक जिससे किसी अकको गुणा को। २ गुण। ३ इन्द्रिय। ४ लघ्वादि धर्म।

गुणकर्णिका (स० स्त्री०) इन्द्रवारुणी लता।

गुणकथन (स० स्त्री०) गुणस्य कथन, ६ तत् । १ गुण वर्णन। २ विरहमें कामकृत दश अवस्थाओंमेंसे चतुर्थ अवस्था।

गुणकर (स० त्रि०) लाभदायक।

गुणकरी (स० स्त्री०) गोष्पारोऽर्थात्।

गुणकर्णिका (स० स्त्री०) इन्द्रवारुणीलता।

गुणकर्मन (स० स्त्री०) गुण गुणीभूत कर्म, कर्मधा०।

१ अप्रधान गौण कर्म। द्विकर्मक धातुके अर्थमें जिस कर्म का साक्षात् सम्बन्ध नहीं है, किन्तु वह अप्रधानी-भूत क्रियाके साथ सम्बन्ध रखता है उसीको गुणकर्म कहते हैं। गुणाना कर्म ६ तत्। २ सत्य, रज और तम गुणकी कर्म।

गुणकली (स० स्त्री०) एक रागिणी। गुणकरी शब्द।

गुणकामदेव—नेपालके कोई राजा। बौद्ध पार्वतोय वंश वलीके मतमें वह मानवदेववर्माके पुत्र थे, ३५ वर्षमात्र राजा रहे। नेपालके स्वयम्भू पुराणमें कहा है—एक बार नेपालमें सात वर्ष बराबर अनाहृष्टि रहो। उससे राज्य में दारुण दुर्मिष पडा था। अनाहार बहुतेसे लोग मरने लगे। उसी समय गुणकाम नेपालके राजा थे। इनके अतुरोधसे शान्तिकर एक अष्टदल पत्र उठा करके अष्ट नागका मन्त्र पढने लगे। अष्टनागने प्रसन्न हो करके प्रसुर हृष्टि को धी। शान्तिकरने अष्टनागका रक्त ले करके किसी जगह रख दिया। जहां वह लह भ्यापित हुआ, नागपुर नाम पड गया।

पाव तोय य शाबलोमें उनके पुत्रका मिथदेव और पौत्रका नाम नरेन्द्रदेव लिखा है। परन्तु स्वयम्भू पुराण को देखते गुणकामने बुद्धापिमे अपने लहके नरेन्द्रको राज्य दे करके म मार परित्याग किया था। स्वयम्भू और शान्तिकरके अतुरोधसे उन्होंने दिहान्त होमें पर सुखा वती धाम पाया। (संज्ञा ५३)

गुणकार (स० त्रि०) गुण व्यञ्जन पाकजनितरमविशेष-रूप गुण वा करोति गुण क्त अण् । १ सूपकार, रसोद्दे करनीनाला, रसोर्धया। (पु०) २ भीमसेन। पाण्डव गणोंके अज्ञातवासके समय भोमने विराट राजाके दरवार-मे सूपकारका कार्य सम्पादन किया था। इस लिये इन का नाम गुणकार पडा। ३ सङ्कोतविद्याका पूर्णज्ञाता। ४ पाकशास्त्रका ज्ञाता।

गुणकारक (स० त्रि०) लाभदायक।

गुणकारी (स० त्रि०) गुणकारक दया।

गुणकिरी (स० स्त्री०) एक रागिणी। यह श्रोत्रिय रागिणी है। अल्पम और धैर्यत उसमें नहीं लगता। यहंगादि निपाद स्वर है, मतान्तरसे पड्ज भी हो सकता है। यह रागिणी भैरव रागाश्रित है। यथा—

नि स० ग म प० नि।

सा० ग म प० नि म॥

किसीके मतमें इसका काम गुणकेली है।

गुणकोत्त—एक जैन ग्रन्थकर्त्ता। इनकी जाति गोलानारी थी। सवत् १०३० में आश्विन शुक्ल १ को इनकी मृत्यु हुई।

गुणकेली (स० स्त्री०) रागिणीविशेष। यह गुजरी तथा

मालवके योगसे बनी हुई भैरवरागकी पत्नी है। मता न्तरमें वह धामायरी, देशकार, गुजरी, देश० टोडो और ललितके मेलसे निकली हुई मालकापकी पत्नी भी बतलायी गयी है। कोई इसे अ ड्य और कोई पाडव कहता है।

'नि सा अ म प प०। सा अ म म०० नि' (११६)
'नि सा अ म प०। (धर्मा श० शरीररक्षाक)

गुणकेयी (स० स्त्री०) इन्द्रकी सारथी मातलीकी कन्या तथा सुधर्माकी माता। भोगवतो नगरीके अधिपति आर्यक नागके पीठ और चिकुरनागके पुत्र सुमुषसे इनका विवाह हुआ था। (भारत उद्योग १०३ च०)

गुणगतं—नेपालस्य शान्तिपुरके पूर्वमें अवस्थित एक युद्ध। यह राजा शान्तिकरने निर्माण को गयी थी और एक योजन विस्तृत है। नेपाली बौद्धगणाका यह एक पुण्यस्थान माना गया है।

गुणमान (स० स्त्री०) गुणस्य मान, ६ तत्। गुणकी संन।

गुणगाङ्गाविजयादित्य—एक प्राच्य चालुक्य राजाका नाम जो प्रम कलिविष्णुवर्द्धनके पुत्र थे। इन्होंने ४४ वर्ष पर्यन्त राज्य किया था।

गुणगृह्य (स० त्रि०) ग्रह पक्षार्थे क्वप् गुणस्य गृह्यः, ६-तत् । गुणपक्षपातौ ।

गुणगौरी (स० स्त्री०) गुणैर्गौरी श्रद्धा, ३-तत् । १ पतिव्रता स्त्री, सोहागिन स्त्री । २ पार्वतीके सदृश गुणवाली स्त्री । ३ स्त्रियोंका एक व्रत जो चैतमें चौथके दिन किया जाता है ।

गुणग्राम (स० पु०) गुणानां ग्रामः, ६-तत् । गुणमन्त्र, गुणकी खान ।

गुणग्रहण (स० स्त्री०) गुणस्य ग्रहणं ज्ञानं ६-तत् । गुणवान् मनुष्यसे गुण ग्रहण ।

गुणग्राहक (स० त्रि०) गुणस्य ग्राहकः, ६-तत् । १ गुण ग्रहण करनेवाला, गुणग्राही । २ रस्सी धारण करनेवाला ।

गुणग्राहिता (स० स्त्री०) गुणग्राहिणो भावः गुणग्राहिता-तत् । गुणज्ञता, गुणप्रियता ।

गुणग्राहिन् (सं० त्रि०) गुणं गृह्णाति गुण-ग्रह-णिनि । गुणघ्न, गुणकी खोज करनेवाला, गुणियोंका आदर करनेवाला ।

गुणघातिन् (स० त्रि०) गुणं हन्ति गुण-घन्-णिनि । गुणनाशक, गुण नाश करनेवाला ।

गुणचन्द्र—१ एक संस्कृत ग्रन्थकार । ये देवसूरिके शिष्य थे । इन्होंने तत्त्वप्रकाशिका नामक सूत्रटीका और हैम-विभ्रम प्रणयन किये हैं ।

गुणचन्द्र—१ एक दिगम्बर जैन ग्रन्थकर्ता । ये गोलापूरव जातिके थे । सम्वत् १०४८ में भाद्र शुक्ल चतुर्दशीको इनकी मृत्यु हुई । २ जैनिके एक भट्टारक और ग्रन्थकार । ये संवत् १६०० में विद्यमान थे । इन्होंने जैनपूजापद्धति और अनन्तव्रतोद्यापन नामक दो ग्रन्थ लिखे हैं ।

गुणज्ञ (स० त्रि०) १ गुणका जाननेवाला । २ गुणी

गुणज्ञता (स० स्त्री०) गुणकी जानकारी, गुणकी परख। गुणता (स० स्त्री०) गुणस्य भावः गुण-तत् । १ गुणत्व २ द्रव्य ज्ञानके अधीन ज्ञान । ३ अधीनता ।

गुणत्व (स० स्त्री०) गुणस्य भावः गुण-त्व । १ गुणता २ अधीनता । ३ रस्सीकी आकृति ।

गुणत्रय (स० स्त्री०) सत्व, रज और तम गुण ।

गुणदेव (स० पु०) गुणाध्यके एक प्रधान शिष्य ।

गुणाध्यके ली।

गुणदेव—हिन्दी भाषाके एक कवि । इनका निवास स्थान बुंटे लखण्ड था । १७८५ ई०को इन्होंने जन्म लिया ।

गुणटोपविचार (स० पु०) गुणटोपयो विचारः, ६-तत् । गुण और टोपका विचार, गुणागुण विवेचना ।

गुणधर (स० त्रि०) गुणं धरति धृ-अच् । जिसको गुण हो, गुणवान् ।

गुणधरस्वामी—दिगम्बर जैनिके एक ग्रन्थकार, आचार्य और ऋषि । इन्होंने जयधवलसिद्धान्त नामक एक प्राकृत भाषाका जैन ग्रन्थ (जिसकी गाथा संख्या ८०० है) और 'सुर्गिसिद्धान्त' की संस्कृत टीका रची थी, जिसकी श्लोकसंख्या प्रायः ६ हजार है ।

गुणधर्म (स० पु०) गुणेन प्रवृत्तो धर्मः । क्षत्रियोंके प्रजा पालनादि रूप धर्म ।

गुणन (स० स्त्री०) गुण भावे लुपट । १ मन्त्रणा । २ अभ्यास । ३ एक अङ्ककी दूम्मे अङ्कसे गुणा । ४ गुणा । ५ आवृत्ति । ६ वर्णन ।

गुणनन्दि—१ एक दिगम्बर जैन ग्रन्थकार । इनकी मठारक उपाधि थी । इनके बनाये हुए ग्रन्थोंमें त्रैकालिक चतुर्विंशतिका उद्यापन, ऋषिमण्डलविधान और रोट-तृतीया कथा ये तीन ग्रन्थ पाये जाते हैं । २ उक्त सम्प्रदायके अन्य एक ग्रन्थकर्ता, इनकी जाति गोलापूरव थी । सम्वत् ३६३ में जेठ शुक्ल ४थीको इनका शरीरान्त हुआ । ३ जैनेन्द्रप्रक्रिया नामक व्याकरणके रचयिता ।

गुणनफल (स० पु०) वह संख्या जो दो अङ्कोंके गुणासे हो ।

गुणनिका (स० स्त्री०) गुणयति अस्त्रे डयति गुण युच् स्वार्थे कन् । १ अभ्यास । २ नृत्य । ३ शून्याङ्क । ४ माला ।

गुणनिधि (स० पु०) गुणस्य निधिः समुद्र इव । १ गुणाधार, गुणका आश्रय । २ पुराणप्रसिद्ध कोई दुर्वृत्त ब्राह्मणकुमार । काशीखण्डमें उसका उपाख्यान इस तरह कहा है—

काम्पिला नगरमें यज्ञदत्त नामक एक दीक्षित रहते थे। उनके पुत्रका नाम गुणनिधि था। लडकपनमें पिताके शासन और उपदेशसे यह सबके प्रथमपुत्र हो गये और उपनयनके बाद गुरुद्वयमें रह करके निम्न पढ़ने लगे। योवनके प्रारम्भमें ही गुणनिधिसे नागरिक युवकोंका मिल बढा। उनका हाव भाव देख करके फिर यह रुक न सके, उन्हो का अनुकरण करते रहे। मांके पाससे चुपके चुपके रुपया ले जा करके उन्होंने जूआ खेला था। थोड़े दिनमें ही थ थकीडाओं वह अत्यन्त आमक्त हुए। ब्राह्मणका आचार व्यवहार छोड करके उन्हे दस ग्राहकोंकी असरता प्रमाणित करना अच्छा लगता था। गीत, वाद्य आदि कुछ भी गुणनिधिसे जाननेको वाकी न बचा। उनकी जननी उन्हे नाना प्रकार उपदेश यह समझ करके देने लगी कि लडकेका भाग्य फूटा था। किन्तु गुणनिधिने कोई बात न सुनी। वह सिर्फ रुपया लेनेके समय मातासे मिलते और दमेश फल पर बैठे खेला कूटा करते थे। गुणनिधिके बाप एक सम्भ्रान्त व्यक्ति थे। सब लोग उन्हे बुलावा भेजा करते थे। वह प्राय घरमें बैठ न सकते थे। जब वह घर जा करके लडकेकी बात पूछते, उनकी महधर्मिणी कह देती थी—गुणनिधि अभी घरसे बाहर निकल गया है। माताने देखा, कितना हो उपदेश देनेसे भी कोई फल नहीं हुआ। इस पर उन्होंने पैसा देना बन्द कर दिया। फिर गुणनिधि मासे पैसा न मिलने पर भी जूआके लिये छूट पटाने लगे। इसीमे उन्होंने अपने घरमें चोरी करना सीखा था। थानी, लोटा, कटोरी आदिके पीछे मांकी धोतो तक चुराये गये। जननी जान बूझ करके भी इकलौते बेटेके वाक्यासे कोई बात जाहिर न करती थीं। किसी दिन वह सोती थीं। लडकेने अचानक देख करके उनके हाथकी एक अगूठी चुरा ली। जूआखियोंका कर्ज अदा करनेमें वह अगूठी चली गयी। द्युतधारिके पास अपने जानो मानो अगूठी देख करके जब यज्ञदत्त ने पूछा, उन्होंने गुणनिधिकी सब कच्ची बात बतला दी। यज्ञदत्तने यह खयाल करके कि मांके लाड प्यारसे हो लडका बिगड गया है, गुणनिधि और उसको जननी दोनोंको परित्याग किया।

उस समय गुणनिधि निरुपाय हुए। विद्या बुद्धि भी वैसी न थी। वह यह सोच करके ध्वरा उठे—कहाँ जायें, क्या करें, कैसे बचेंगे। एक दिन गुणनिधि भूखे थे। उन्हे दारुण चिन्ता हुई कि मर्या पडती थी। उस पर सुधा लक्ष्णाका जोर था। गुणनिधिमा जी ध्वराने लगा। उसी समय शिवरात्रिव्रतका उपवासी एक शिवभक्त नानाविध उपहार ले करके नगरके बाहर निकला था। उन्हे ने इसके हाथमें खाने पीनेकी चीजें देख ठहरा लिया—जब यह व्यक्ति शिवकी पूजा कर मन्दिर भव रखके चला आवाग मैं चुगा करके खा डालूंगा। इसी प्रकार विचार करके गुणनिधि उसके पीछे पीछे चल दिए। शिवभक्त मन्दिरमें प्रवेश करके आसुषोषे छाती भिगो भक्ति गद्गद स्वरसे शिवकी आराधना करने लगे। इन्हे ने उसके बाहर आनेकी अपेक्षामें दरवाजे पर बैठ समस्त पूजा देखी थी। पूजाके अन्तमें वह मन्दिरसे बाहर न निकल वहाँ मो गया। गुणनिधिने उसी भुयोग पर मन्दिरमें जा करके देवका चिराग ठण्डा पडा है। यह ख्यान करके कि दीप न जलनेसे हमारे काममें अडचन पडेंगे अपने वस्त्रके अडचनकी उन्हे ने बत्ती बनायी और रौशनी जलायी। ब्राह्मणकुमार जब उपहार उठा करके बाहर निकलने लगे, इनके पैरकी आघटसे पूजककी आशु खुल गयी। वह चोर चोर कहके चिल्लाने लगा, चारो ओरसे चौकीदार जा पहुँचे। गुणनिधि न वैध फँक करके भागे थे। रची गड बड देख करके उनको भारने पर उद्यत हुए। उनके दारुण प्रहारसे गुणनिधिकी जान निकल गयी।

यमराजने ब्राह्मणकुमारको ले जाके लिये किहरीसे अनुमतिकी थी। "वह गुणनिधिकी बांध करके ले चले। इधर शिवने भी अपने अनुचरो को बुला दिया था—'तुम यहा बैठे क्या करते हो। नही देखते कि यमदूत गुणनिधिकी लिये चले जाते है। जद जावो और रथ पर चढा करके बडे आदरके साथ उसरी यहा ले आवो।' शिवदूत एक रथके साथ वहा जा पडूचे और यमकिहरी को रोक धरके कहने लगे शिवने इसकी शिवपुरी ले जानेकी अनुमत दी है। यमदूतो ने मो आमानीसे छोडना न चाहा। वह शिवके अनुचरो से

लड़ने भगड़ने लगे। अनेक वादानुवादके वाट स्थिर हुआ ब्राह्मणकुमारने आचारभ्रष्ट और आजन्म कुकार्यरत रहते भो शिवरात्रिव्रतके टिन उपवास, शिवमन्दिरमें निर्वाणोन्मुख प्रदीपकी रक्षा और आद्योपान्त शिवपूजा की दर्शन किया था। इसीसे वह शिवपुरी जायेंगे यमदूतोंका उन पर कोई अधिकार नहीं। तजवीजमें हार करके यमकिङ्कर लौट गये। (वाशेखण्ड १३००)

२ कोई विख्यात संस्कृतग्रन्थकार। ये श्रीनिवासकी पुत्र थे। उनके बनाये हुए परमात्मविनोद (अलङ्कार), अन्न पूर्णास्तुति, ईशतुष्टिस्तुति, गणपतिस्तुति, भगवतीस्तुति विष्णुस्तुति, व्यासस्तुति और शिवशिखरिणीस्तुति नामक ग्रन्थ मिलते हैं।

गुणनी (सं० स्त्री०) गुण्यतेऽनया गुण-लुगट्-ङीप्। पाठ्य ग्रन्थके दृढ़तर संस्कारके लिये वार वार अनुशीलन। इसका पर्याय—भविनी और शीलन है।

गुणनीय (सं० पु०) गुण्यते पुनः पुनरनुशील्यतेऽनेन गुण-अनौयर। १ अभ्यास। (त्रि०) २ गुणितव्य, गुणा करने योग्य।

गुणनीयक (सं० पु०) गुणनीय संज्ञार्थे कन्। जिस राशि से दूसरी राशिमें भाग देनेसे भाग शेष कुछ नहीं बचे तो वह राशि दूसरी राशिका गुणनीयक है।

गुणपदी (सं० स्त्री०) गुणौ गुणितौ पादौ यस्याः, बहुव्री० जिस स्त्रीका पद गुणित है।

गुणपूर्ण (सं० त्रि०) गुणेन पूर्णः, ३-तत्। जिसमें अनेक गुण ही, गुणाधार।

गुणप्रत्ययअवधि (सं० पु०) जैन मतानुसार अवधिज्ञानका एक भेद। अवधिज्ञानके प्रधानतः दो भेद हैं—एक भव-प्रत्यय और दूसरा गुणप्रत्यय। भवप्रत्यय अवधि देखो। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान आदि कारणांकी-अपेक्षासे अवधिज्ञानावरण कर्मका क्षयोपशम हो कर जो अवधिज्ञान होता है, उसे गुणप्रत्यय अवधि कहते हैं। अवधिज्ञान देखो। यह गुणप्रत्यय अवधिज्ञान पर्याप्त मनुष्यों और मनसहित पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च (पशु आदि) के भी (नामिके ऊपर शङ्ख आदि शुभ चिह्नोंके आत्मप्रदेशोंमें होनेवाले अवधिज्ञानावरण कर्मके क्षयोपशमसे) होता है।

(गोमन्मसार जावकाण्ड गाथा १६२)

गुणप्रवृद्ध (सं० त्रि०) गुणैः प्रवृद्धः, ३-तत्। जो गुणमें वर्द्धित हो।

गुणप्रकर्ष (सं० पु०) गुणस्य प्रकर्षः, ६-तत्। गुणका आधिक्य।

गुणप्रभ (सं० पु०) एक बौद्धआचार्य, श्रीहर्षराजाके गुरु और चक्षुवन्धुके शिष्य। इन्होंने तत्त्वविभङ्गशास्त्र और तत्त्वसत्यशास्त्र रचना किये हैं। पहले पहल ये महायानमतावलम्बी रहे, किन्तु थोड़े समयके बाद विभाषा शास्त्र अध्ययन-करनेसे इन्होंने हीनयान मत ग्रहण किया। मतिपुरके निकट ये रहते थे। वर्तमान विजनाईर जिलाके लालपुर ग्राममें जामा मस्जिदसे आध कोस दक्षिणपूर्वमें गुणप्रभ-सङ्घारामकी भग्नावशेष देखा जाता है।

गुणप्रिय (सं० त्रि०) गुणः प्रियो यस्य, बहुव्री०। गुणानुरागी।

गुणभद्र (सं० पु०) १ एक चीनदेशवासो बौद्ध पण्डित।

गुणभद्र—२ एक जैनाचार्य। 'ज्ञानार्णव' नामक ग्रन्थकी लेखकप्रशस्तिके पढ़नेसे मालूम होता है कि, सन्वत् १५२१ में ये ग्वालियरकी काठामण्ड मायुरान्वय और पुष्करगणकी गद्दी पर आरूढ़ थे। ३ मठारक उपाधिधारी एक जैन ग्रन्थकार। इन्होंने पूजाकल्प, अनन्तव्रतोत्थापन, धन्यकुमार-चरित्र आदि कई एक ग्रन्थोंका प्रणयन किया था।

गुणभद्र आचार्य—१ विभुवनाचार्यके एक शिष्य और जैन ग्रन्थकर्ता। इन्होंने कुन्दकुन्देन्दुप्रकाश काव्य और हरिवंशपुराण नामक दो ग्रन्थोंकी रचना की थी। यह हरिवंशपुराण जिनसेनाचार्यकृत हरिवंशपुराणसे पृथक् है।

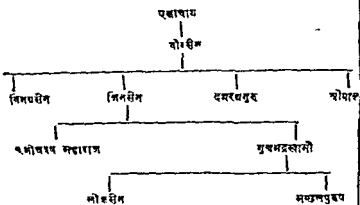
४ दिगम्बर जैन सम्प्रदायके एक प्रसिद्ध और प्राचीन आचार्य, भगवत् जिनसेन आचार्यके अन्यतम शिष्य। इन्होंने—उत्तरपुराण, आत्मानुशासन, भावसंग्रह, जिनदत्तकाव्य, टिप्पण ग्रन्थ और आदिपुराणके उत्तर भागकी रचना की है। द्राविड, भाषाके चूड़ामणिनिघण्टुके पढ़नेसे मालूम होता है कि ये दक्षिण अर्काट जिलेके अन्तर्गत तिरुनसङ्कुण्डम् नामक ग्रामके रहनेवाले थे। इसके अतिरिक्त इनके रचित द्राविड भाषाके

ग्रन्थोंके देखनेसे भी यही अनुमान होता है कि ये कर्णाटक देशगोत्री ही थे।

ये ई० नवम शताब्दीमें विद्यमान थे। इनके गृहस्थ श्रवस्थाके वंशका कुछ परिचय नहीं मिलता। परन्तु मुनिवंशका परिचय उनके ग्रन्थों और दूसरे उर्ध्वखोसे भलीभाँति मिलता है। महावीर भगवान्‌के निर्वाणके उपरान्त जब तक श्वेताम्बर सम्प्रदायकी उत्पत्ति नहीं हुई थी, तब तक जैनधर्म स घर्भेदमें रहित था। पौर्णि जब विक्रमकी श्रव्युके १२६ वर्ष बाद श्वेताम्बर सम्प्रदाय पृथक् हुआ, तब दिगम्बर सम्प्रदाय मूलम वधे नामसे प्रसिद्ध हुआ। फिर इसके चार भेद हुए—१ नन्दि सघ, २ देवम घ, ३ सेनस घ, और ४ सि हस घ। इनमें से सेनस घकी परिपाटीमें गुणभद्र अवतीर्थ हुए।

गुणभद्रस्वामीके ये तो बहुतसे शिष्य थे, किन्तु दो का विशेष परिचय मिलता है—एक लोकसेन, जिनके लिये आत्माशुभासन ग्रन्थकी रचना हुई और दूसरे मण्डल मुरुष, जिन्होंने बुडामणिनिघण्ट, नामक द्राविड भाषाका कोश बनाया।

गुणभद्रस्वामीके १ शुरुपरम्पराका इस प्रकार पता चला है—



गुणभद्रस्वामीके समयमें अर्थात् विक्रमकी ७वीं शताब्दीमें दिगम्बर मुनि प्रायः भारतवर्षके सर्वत्र विहार किया करते थे और साथ ही धर्मोपदेश देते और ग्रन्थोंका प्रणयन किया करते थे। यही कारण है कि उत्तरपुराण की समाप्ति पारवाह प्राक्तके अन्तर्गत अकारपूर्वमें हुई थी। उस समय पहाड़का राज्य अफालवर्षके नामान्त लोकादित्यके अधिकारमें था।

जैनेका सबसे बड़ा प्रथमाशुयोग (पौराणिक) ग्रन्थ

आदिपुराण है, जिसमें कुल ४० पर्व या अध्याय हैं। इस ग्रन्थके ४२ पर्व और ४३ पर्वके ३ श्लोक इनके गुरु जिनसेनाचार्यके रचे हुए हैं तथा शेषके ५ पर्व (१६२० श्लोक) गुणभद्रस्वामीने रचे हैं। इनकी रचना गुरुकी रचनासे मिल गई है, यही इनकी रचनाशक्तिका काफी परिचय है।

उत्तरपुराण—इनके उत्तरपुराणकी रचना ऐसी मनोहारिणी है कि, एक जैनितर विद्वान (श्रेयुक्त ० कुप्यु-स्वामो शास्त्री) ने इसमें जीवन्धरचरित निकाल कर छपा डाला है।

आत्माशुभासन—इस ग्रन्थकी रचना शैली भट्ट हरिके वंशायगतकके टङ्गकी और यैसो ही प्रभाशालिनो है। यथा—

सद्यः श्रुते यदि जन्तवि न पुत्रस्य मातः तदा किमवि नमः प्रनादिसादीम्।
तावन्नेव चामलि सत्यं प्रयानु कथमप्युपनिहितं तव मन्मथि ॥ ८२ ॥”

है भाई (आत्मा)। यदि तूने अपने इस जन्ममें अपने वन्धुजनोंसे कुछ वन्धुताका नाम पाया हो, तो मच 'सच बता तो सजे। हमें तो उनका इतना ही उपकार अनुभव होता है कि, मरनेके उपरान्त ये सब इकट्ठे हो कर तेरे अपकार करनेवाले इस शरीरका जन्म देते हैं।

“आनसि वल प्राये ननु श्रेयसमन्तरम्।
अथो मोक्षस्य साक्षात्कामनाप्यव सत्यम् ॥ ८३ ॥”

ज्ञानका फल ज्ञान ही है, जो सर्वथा प्रथमा योग्य और अविनाशी है। इसकी छोड़ कर, अन्य जो मांसारिक फलोंकी इच्छा की जाती है, वह श्रवश्य ही मोक्ष या मूर्खताका साहाय्य है। अभिप्राय यह कि, ज्ञानके रहनेसे जो निराकुलता रूप सुखला अनुभव होता है, उसको छोड़ कर लोग विषयसुखोंकी टटोलने फिरते हैं, वह जितान्त मूर्खता है।

गुणभद्राचार्य गुरु सम्बत् ८२० तक जीवित थे। इनके स्वर्गवान्‌का ठोक समय मानूम नहीं होता।

गुणभर—चौपदेशके एक शंभु राजा। कीड़ कीड़े इन्हें पक्षयवगीय अनुमान करते हैं। विगिरापने पहाड़के ऊपर बसोटी हुई गिलाफलक पर इनकी अनुगासननिधि देख पडती है।

गुणभूषणकवि—जैनसम्प्रदायके एक कवि । इनकी रचो हुई पुस्तकोंमेंसे सिर्फ एक ही पुस्तक प्राप्य है,—भय-जनचित्तवल्लभश्रावकाचार ।

गुणभोक्तृ (सं० त्रि०) गुणानां भोक्ता, ६-तत्० । गुणका भोग करनेवाला ।

गुणभृत् (सं० त्रि०) गुणं विभर्त्ति भृ-क्विप्, तुगागमय-जिसमें गुण हो, गुणाधार । (पु०) गुणान् सत्वरज-स्तमांभि विभर्त्ति अधिष्ठात्वेन आश्रयति भृ-क्विप् । २ परमेश्वर ।

गुणभ्रंश (सं० पु०) गुणस्य भ्रंशः, ६-तत् । गुणका नाश ।

गुणमति (सं० पु०) एक पण्डित इन्होंने अभिधर्म कीषको व्याख्या रचना की है चीनपरिव्राजक चुयेन चुयाङ्गने अपनी किताबमें लिखा है कि इन्होंने ही तब शास्त्रमें माधवकी पराजय कर बौद्ध धर्मकी श्रेष्ठता प्रतिपादन की थी ।

गुणमय (सं० त्रि०) गुणात्मक गुणप्रचुरो वा गुणमयत् । २ गुणात्मक, गुणस्वरूप । ३ गुणाढ्य, गुणयुक्त गुणमहार्णव—कालिङ्गके एक गङ्ग वंशीय राजा

गङ्गेय देखो।

गुणमहोदधि (सं० पु०) वैद्यकोक्त औषधविशेष, एक दवा । पारा, गन्धक, लोहा, मंखिया, गुर्चको काल, तांबा, वङ्ग एवं अभ्रक एक एक तोला और त्रिकटु, तेजपत्र, मोथा, विरङ्ग, नागकेशर, रेणुक, इलायची तथा पिपरामूल दो दो तोले बालक तथा पिप्पली काथ और विजौरा नीबूके रससे भावना देने पर गुणमहोदधि बनता है । मात्रा चनेके बराबर है । इस औषधको सेवन करनेसे कासरोग बिनष्ट होता है । (रघुसूरी)

गुणयुक्त (सं० त्रि०) गुणेन युक्तः, ३-तत् । गुणविशिष्ट, जर्मके गुण हो ।

गुणयोग (सं० पु०) गुणेन योगः ६-तत् । गुण गुणीके साथ सम्बन्ध । सम्बन्धीय ।

गुणयोनि (सं० पु० स्त्री०) जैनमतानुसार योनि प्रधानतः दो प्रकारकी होती है, आकारयोनि दूसरी गुणयोनि । सम्पूर्ण, गर्भ और उपपाट जन्मकी आधारभूत संचित (आत्मप्रदेशोंसे युक्त पुद्गलका पिण्ड) शीत संवृत (ठको हुई) और अचित्त उष्ण विवृत (खुली हुई) ये

दो गुणयोनि कहलाती हैं । (गोमटमार जीवशास्त्र ५१—२१) गुणरत्न (सं० स्त्री०) गुण एव रत्नं । गुणस्वरूप रत्न, रत्नके जैसा प्रशंसनीय वा आदरणीय गुण ।

गुणरत्न आचार्य—एक जैन आचार्य, देवसुन्दर स्त्रीके गिण्य । इन्होंने संस्कृत भाषामें तर्कतरङ्गिणी, पडटर्गनममुञ्जय-टोका और क्रियारत्नममुञ्जय नामका एक व्याकरण ग्रन्थ रचा है ।

गुणराग (सं० पु०) गुणेषु रागो निरितगयसभिलापः, ७-तत्० । गुणमें अनुराग या प्रेम, गुणप्रियता ।

गुणराज—पद्मावती देवीभक्त सोनल्प मुनिकुलज एक राजा, नागराजके पुत्र । (मशास्त्र ११७५७)

गुणराजखॉ—बङ्गालके कुलीनग्रामग्रामी एक कवि । उनका अमल नाम मालाधर वसु था । पिताको भगीरथ वसु कहते थे । गुणराज खॉने मीठी बङ्गला कवितामें श्रीकृष्णकी लोला पर श्रीकृष्णविजय लिखा है । चैतन्य-चरितामृत पढ़नेसे समझ पड़ता है कि चैतन्य मछाप्रभु उस बङ्गला ग्रन्थका बड़ा आदर करते थे । यह पुस्तक १३८५ ई० में आरम्भ और १४०२ ई० में समाप्त हुई । ग्रन्थकारने लिखा है कि गौड़के राजाने उन्हें गुणराज खॉ उपाधि दिया श्रीकृष्णविजय बङ्गला भाषाकी बहुत पुरानी किताब है ।

गुणराशि (सं० पु०) गुणानां राशिः, ६-तत्० । १ गुणसमूह । २ शिव ।

गुणलयनिका (सं० स्त्री०) गुणाः गुणमयाः पटाः लीयन्ते इत्यां ली आधारे ल्युट् स्त्रियां डीप् ततः स्वार्थे कन् टाप् पूर्वङ्गस्त्वञ्च । वस्त्रनिर्मित गृह, कपडेका बना हुआ घर, तंबू । इसका पर्याय कणिका और पटकुटी है ।

गुणलयनी (सं० स्त्री०) गुणाः गुणमयाः पटाः लीयन्ते इत्यां ली आधारे ल्युट् डीप् । कपडेका बना हुआ घर, तम्बू ।

गुणलुब्ध (सं० त्रि०) गुणे लुब्धः, ७-तत्० । गुणग्राही, गुणको चाहनेवाला ।

गुणवचन (सं० पु०) गुणमुक्तवान् वच कर्त्तरि लुग । १ गुणवाचक शब्द । २ गुणवद् द्रव्यवाचक शक्तादि शब्द ।

गुणवत् (सं० त्रि०) गुणो विद्यते अस्य गुणमतुप् मस्य चकारः । १ गुणविशिष्ट, गुणी । (पु०) । २ यदुवंशीय सुनामके दौहित ।

गुणवती (स० स्त्री०) १ एक। अम्बरा। २ यदुष्य शीघ्र
सुनामकी एक दौहित्री। ३ गायत्रीस्वरूपा एक महा
दधी। ४ गुणवाली, जिसमें कुछ गुण हो।

गुणवतीवति (स० स्त्री०) शोषधिविशेष, एक दवा।
धूनक, लोध, सिन्दूर, अतिविषा, जलदो, वहेडा, कम्पि
झक, श्रीवास तथा गुग्गुलु बराबर बराबर घी और तेलसे
अच्छी तरह रगड़ लेते हैं। फिर इस पिण्डकी तुल्यमीम
झाल करके घीमी आचमें पकाया जाता है। सब चीजें
एकमें मिल जाने पर गुणवतीवति प्रशुत होती है। यह
व्रणरोगमें बहुत फायदामन्द है। (रसरत्नाकर)

गुणवत्तरा (स० स्त्री०) जोवन्तीशक।

गुणवत्ता (स० स्त्री०) गुणवतो भार गुणवत् तत्।
गुण धारण करनेवाली स्त्री।

गुणवन्तागट—एक पहाड़ और पहाड़ी किना। यह मलय
में मद्राष्ट्र प्रदेशके दक्षिणपूर्व तक फैला और मत्तारा
जिलेके पाटन नगरसे ६ मील दक्षिणपश्चिम बसा है
लोग उसे झोड़गिरि भी कहते हैं। किना कोड़े १०००
फुट ऊंच परत पर है। वहाँ बहुत टूट फूट गया है।
इसीसे दक्षिण-पूर्वकी परतके नीचे गाँव है। यह निरू-
पण किया जा नहीं सकता, किम समय वह दुर्ग निर्मित
हुआ। ई० १२वीं शताब्दीको पत्थरके प्रतिनिधिका पत्थ
ले करके गुणवन्तागटके लोग गवर्नमेण्टमें विगडे थे।
उसो समय पेशवाने लोगोंको रक्षाके लिये किलेमें फौज
रखी। १८१८ ई०की जब महाराष्ट्र युद्ध होता था, यह
दुर्ग बिना लडे मिडे अङ्ग्रेजोंकी मिल गया।

गुणवर्तन (स० स्त्री०) गुणे वर्तन, ७ तत्। गुणवृत्ति,
गुणका व्यवसाय।

गुणवर्त्तिन् (स० स्त्री०) गुणे वर्त्तते इत् णिनि। गुण-
वृत्ति अवलम्बन करनेवाला।

गुणवर्मन् (स० पु०) १ तेजस्वतीके पिता। ३ प्रवतो देवो।
२ एक कर्णाटक देशवासी जैन यथकार। इन्होंने पुष्प
दन्तपुराण नामक एक जिनचरित्रो रचना की है।
३ इस नामके और एक यथकारका पता चलता है, जो
जैन कवि थे।

गुणवाचक (स० स्त्री०) गुणस्य वाचक, ६ तत्। जो
गुणको प्रगट करे।

गुणवाद (स० पु०) गुणस्य वाद, ६ तत्। मोर्मासामें
अर्थवादविशेष। मोर्मासावार्त्तिक प्रणेता कुमारल्लके
मससे अर्थवाद तीन तरहका है, गुणवाद, अनुवाद और
भूतार्थवाद। जहा विशेषण और विशेष्यके समानाधि-
करण पर अन्वय करनेसे ठीक अर्थ सिद्ध नहीं होता है,
वहाँ विशेषणका कुछ दूसरा अर्थ मान लेते हैं उसे अङ्ग-
कथन वा गुणवाद कहते हैं। यथा जयमान प्रस्तर। इस
स्थान पर जयमान विशेष्य और प्रस्तर विशेषण है।
प्रस्तर शब्दका अर्थ कुयमुट्टि है, यहाँ विशेषण और
विशेष्यका अर्थ अन्वय किया नहीं जा सकता, इसी
लिये यहाँ प्रस्तर शब्दका अर्थ प्रस्तरविशिष्ट अर्थात् कुय-
मुट्टधारी कर लिया गया है। अर्थवाद देखो।

गुणवान्—ब्राह्मणीदेवीभक्त माण्डव्य मुनि वंशीय एक
राजा, वैतानकके पुत्र। (स० त्रि०) २ गुणवासा,
गुणी।

गुणविजयगर्ण—एक जैन यथकार, प्रमोदमाणिक्यके
प्रशिष्य और जयसीमसुरिके शिष्य। इन्होंने खण्डप्रगप्ति-
टीका विश्वेश्वरबोधिका नामक रघुवशकी टीका एव
दमयन्तोकायाटोका प्रणयन की हैं।

गुणविध (स० स्त्री०) गुणस्य विधा इव विधा यस्य, बहुव्री०।
गुणतुल्य।

गुणविधि (स० पु०) गुणस्य शब्दस्य विधि, ६ तत्।
मोर्मासामें वह विधि जिसमें गुण कर्मका विधान हो।
जैसे दग्धा लुहोति' दधिसे अग्निहोत्र यज्ञ करना
चाहिये। अग्निहोत्र करनेका विधिवाक्य दूसरा है।
अत उसी अग्निहोत्रके अन्तर्गत जो आहुतिका विधान है
उसको विधि इस वाक्यमें है।

गुणविशेष (स० पु०) गुणस्य विशेष ६ तत्। एक
प्रकारका गुण।

गुणविष्णु (स० पु०) एक वैदिक षण्डित, दामुकके पुत्र।
इन्होंने छान्दोग्यमन्त्रभाष्य नामक सामवेदीय सभ्या
और दशकर्म पद्धतिको टीका प्रणयन की हैं। टीका
अतिसरल भाषामें लिखी गई है। वर्त्तमान समयके सभी
विद्वान् मुख्य उक्त टीकाका आधार करते हैं। रघुनन्दन
प्रशस्ति लक्ष्मणात् गणीनें इत्तका मत उद्धृत किया है।

गुणज्ञ (स० पु०) गुणानां ज्ञोकार्कषकरञ्जना

वन्दनाधारः वृत्तः । नौका या जहाजका मस्तूल ।

गुणवृत्तक (सं० पु०) गुणवृत्त स्वार्थे कन् । गुणवृत्त, मस्तूल ।

गुणवृत्ति (सं० स्त्री०) गुणेन वृत्तिः, ३ तत् । १ लक्षण-विशेष । (त्रि०) २ गुणके ऊपर जिसका मामर्थ्य है । (स्त्री०) गुणानां सत्त्वादीनां वृत्तिः ६-तत् । व्यापार परिणामविशेष, सत्त्वादि तीनों गुणोंकी वृत्ति । यथा—सत्वगुणकी वृत्ति सुख, रजोगुणका दुःख एवं तमोगुणकी वृत्ति मोह आदि । सत्त्वादि शब्द देखो ।

गुणवैचित्र्य (सं० स्त्री०) गुणानां वैचित्र्यं ६-तत् । गुणकी विचित्रता, विभिन्नता ।

गुणव्रत (सं० पु०) जैनियोंके मूलव्रतोंकी रक्षा करनेवाले तीन व्रत । यथा—दिग्व्रत, देशव्रत और अनर्थ-दण्डव्रत ।

गुणशब्द (सं० पु०) गुणवाचकः शब्दः, मध्यपदलो० । गुणवोधक शब्द ।

गुणशालिता (सं० स्त्री०) गुणशालिनो भावः गुणशालिन्-तत् । गुणाधारता, गुणवृत्ता, गुणयोग ।

गुणशालिन् (सं० त्रि०) गुणेन शालते शोभते शाल-णिनि । गुणविशिष्ट, गुणवान् ।

गुणशील (सं० त्रि०) गुणयुक्तः शीलः स्वभावो यस्य, बहुव्री० । मच्चरित्र, जिसमें अनेक तरहके गुण हों ।

गुणश्रेणीनिर्जरा (सं० स्त्री०) जैनमतानुसार—कर्मोंके असम्पूर्ण क्षयकी निर्जरा कहते हैं । निर्जराके एक भेदका नाम गुणश्रेणी है । सातिशय मिथ्यादृष्टि, आवृत्तविरत, अनन्तानुवन्धी कर्मका विसंयोजन करनेवाले दर्शनमोहनीयकर्मके क्षय करनेवाले, कषायों (क्रोध मान माया, लोभ) को उपशान्त करनेवाले, ८, ९, १०वें गुणस्थानवर्ती जीव, मोहको क्षीण करनेवाले और सयोगी अयोगी दोनों प्रकारके जिन, इन ग्यारह अवस्थामें स्थित जीवोंके द्रव्यकी अपेक्षा कर्मोंकी क्रमसे अमंख्यातगुणी अधिक निर्जरा होती है, इसीको गुणश्रेणीनिर्जरा कहते हैं ।

(गोश्रुतसार जीव० ६६८-९)

गुणशाघा (सं० स्त्री०) गुणस्य आघा, ६-तत् । गुणकी प्रशंसा ।

गुणसंक्रमण (सं० स्त्री०) जैनमतानुसार—ज्ञानावरणादि कर्मोंके क्षय समयमें श्रेणी (पंक्ति) रूप अमंख्यातगुणी २ परमाणु अन्य प्रकृति रूप हो कर परिणमते हैं, उसका नाम गुणसंक्रमण है ।

गुणसंकीर्त्तन (सं० स्त्री०) गुणस्य संकीर्त्तनं ६-तत् । गुणकथन, गुणानुवाद ।

गुणसंख्यान (सं० स्त्री०) गुणाः संख्यायन्ते ऽनेन संख्याकरणे ख्य, ट्, ६-तत् । मांख्य या पातञ्जल शास्त्र ।

गुणसङ्ग (सं० पु०) गुणेषु गुणकार्येषु सुखादिषु सङ्ग आसक्तिः ७-तत् । सुख प्रभृतिमें आसक्ति ।

“कारण गुणसङ्गोऽस्य” (गोश्रुत)

गुणसंमूढ (सं० त्रि०) गुणैः संमूढः, ३-तत् । गुणकार्य प्रभृतिमें आत्माभिमानविशिष्ट, जिसे अपने गुणका गौरव हो ।

गुणसमुद्र (सं० पु०) गुणस्य समुद्र इव । गुणनिधि, गुणाधार ।

गुणसागर (सं० पु०) गुणानां सागर-इव । १ गुणाधार । २ चतुर्मुख ब्रह्मा । ३ हिंडोल रागका एक पुत्र । ४ बुद्धविशेष ।

गुणसिन्धु (सं० पु०) गुणस्य सिन्धु-इव । गुणाधार गुणसागर ।

गुणसिन्धु—बुटेलखण्डके एक हिन्दी कवि । १८२५ ई० की उन्होंने जन्म लिया था ।

गुणसू (सं० स्त्री०) कार्पासोत्तुप ।

गुणस्थान (सं० स्त्री०) जैनमतानुसार—मोह और योग (मन, वचन और शरीरका हलन चलन) के निमित्तसे सम्यग्दर्शन, १ सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र्यरूप आत्माके गुणोंकी तारतम्य रूप अवस्थाविशेषको गुणस्थान कहते हैं । गुणस्थान चौदह होते हैं—१ मिथ्यात्व, २ सासादन, ३ मिथ्य, ४ आविरतमस्यग्दृष्टि, ५ देशविरत, ६ प्रसत्तविरत, ७ अप्रसत्तविरत, ८ अप्रवृत्तकरण ९ अनिष्ट-क्तिकरण, १० सूक्ष्माम्भराय, ११ उपशान्तमोह, १२ क्षीणमोह, १३ सयोगकेवली और १४ अयोगकेवली । ये नाम मोहनीय कर्म और योगोंके कारण हुए हैं ।

मिथ्यात्व, सासादन, मिथ्य और अविरतमस्यग्दृष्टि ये आदिके चार गुणस्थान दर्शनमोहनीय कर्मके निमित्तसे

होते हैं। इसके बादके ५वें से लगाकर १२वें तक आठ गुणस्थान चारित्र्यमोहनोय कम के निमित्तसे तथा १३वां और १४वां ये दो गुणस्थान योगिके निमित्तसे होते हैं।

१ मिथ्यात्व गुणस्थान—मिथ्यात्वप्रकृतिके उदयसे अत स्वायंयद्धानरूप आत्माके परिणामविशेषकी मिथ्यात्व गुणस्थान कहते हैं। इस गुणस्थानमें रहनेवाला जीव विपरीत ज्ञान करता है और सच्चे धर्मकी तरफ उसकी रुचि नहीं होती। जैसे पित्तज्वरवाले रोगीको दूध, मलाई, मखडू आदि मिष्ट पदार्थ भी कड़वे लगते हैं। उन्ही प्रकार इस श्रेणीके जीवको भी ममोचीन धर्म अच्छा नहीं लगता।

२ माहात्म्य गुणस्थान—प्रथमोपपत्त्यज्ञके समय अधिक-से अधिक ६ प्रावली और कमसे कम १ समय बाकी रहने उस, समय किसी एक अनन्तानुबन्धी कषायके उदयसे सम्यक्ज्ञके नाश हो जानेसे, जीवके भावोंकी जो अवस्था होती है, उसको माहात्म्य गुणस्थान कहते हैं।

३ मित्र गुणस्थान—सम्यक्त्व और मिथ्यात्व इन दोनों प्रकृतियोंके उदयसे जीवके जो डमाडील परिणाम होते हैं। उस अवस्थाका नाम मित्रगुणस्थान है।

४ अविशतमयदृष्टि गुणस्थान—दुर्गमोहनोयको तोन और अनन्तानुबन्धीकी चार इन सात प्रकृतियोंके उपगम वा लय, प्रयवा चयोपगमसे और अपत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया और लोभके उदयसे—व्रतरहित सम्यक्पारो जीवके अविरत सम्यग्दृष्टि नामक ४थं गुणस्थान होता है।

५ दशविरत गुणस्थान—जीवके प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया और लोभके उदयसे यद्यपि सधम भाव नहीं होता, तथापि अपत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया और लोभ के उपगमसे त्रावक्रयतरूप देशचारित्र्य होता है। इसीको देशविरत गुणस्थान कहते हैं। पाँचवें छठे आदि ऊपरके गुणस्थानोंमें सम्यग्दर्शन तथा उसका अविनाभावो सम्यग्ज्ञान अवश्य होता है, इनके विना पाँचवें छठे आदि गुणस्थान नहीं होते। परियुद्ध महित गृहस्थों वा त्रावक्रयके इससे ऊँचे परिमाण नहीं होते।

६ धमक १२१ गुणस्थान—संज्वलन और नोकषायके तीव्र

उदयसे सधम भावके हो जानेसे मनुष्यकी वैराग्य भाता है और वह उस वैराग्यके कारण समस्त परियुद्धको छोड़ कर खुद दिग्म्बर (नग्न) मुनि हो जाता है। मुनिके होनेके उपरान्त उस जीवके सम्यक्त्वरूप जो परिणामो की अवस्था है, उसको प्रमत्तविरत गुणस्थान कहते हैं। छठे गुणस्थानसे लगाकर १४वें गुणस्थान तकके परिणाम दिग्म्बर मुनिके ही होते हैं, अन्यके नहीं।

७ अग्रतविरत गुणस्थान—संज्वलन और नोकषायके मन्द उदयसे प्रमाद (आलस) रहित सधमभावका नाम अग्रमत्तविरत गुणस्थान है।

८ अग्रतविरत गुणस्थान—जिस कारण (परिणाम)में उत्तरोत्तर अपूर्व हो अपूर्व परिणाम होते जाय अर्थात् भिन्नमयवर्त्ती जीवोंके परिणाम सदा विभेदय हो ही और एक समयवर्त्ती जीवोंके परिणाम सदैव भी हो और विभेदय भी हों उसको अपूर्वकरण कहते हैं। और यही आठवां गुणस्थान है।

९ परिश्रित गुणस्थान—जिस कारण (परिणाम) में भिन्नमयवर्त्ती जीवोंके परिणाम विभेदय हो ही और एक समयवर्त्ती जीवोंके परिणाम सदैव हो ही उसको अनिदृष्टिकरण कहते हैं। यही नवमां गुणस्थान है। इन तीनों कारणोंके परिणाम प्रतिसमय अनन्तगुणी विमुहता लिये होते हैं।

१० अज्ञानाभाय गुणस्थान—अत्यन्त सूक्ष्म अवस्थाको मात्र लोभ कषायके उदयको अनुभव करनेवाले जीव (मुनि)के परिणामोंकी अवस्थाका नाम सूक्ष्मसाम्य राय गुणस्थान है।

११ अज्ञानमाह गुणस्थान—चारित्र्यमोहनोयको २१ प्रकृतियोंके उपगम होने पर यथाव्यात चारित्र्यको धारण करनेवाले मुनिके परिणामो की स्थितिके उपगान्तमोह गुणस्थान कहते हैं। इस गुणस्थानका फल समाप्त होने पर जीव मोहनोयके उदयसे नीचेके छठे गुणस्थान तक उतर आता है, फिर चपक श्रेणीका अधनम्न कर बड़े कठिनतासे १२वें गुणस्थानमें पहुँचता है।

१२ अज्ञानमाह गुणस्थान—मोहनोय कर्मके अत्यन्त लय होनेसे स्फटिक पादमें स्थित जन्मकी तरह अत्यन्त निर्मल अविनाशी यथाव्यात चारित्र्यके धारक मुनिके परिणामों

की अवस्थाको क्षीणमोह गुणस्थान कहते हैं।

१३ अयोगकेवली गुणस्थान घातिया कर्मोंकी (ज्ञाना वरणकी ५, दर्शनावरणकी ८, मोहनोयकी २८ और अन्तरायकी ५ =) ४७ और अघातिया कर्मोंकी १६, कुल ६३ प्रकृतियोंका ज्ञय होनेसे लोकालोकप्रकाशक केवलज्ञान तथा मनोयोग, वचनयोग और काययोगके धारक अरहंतके शुद्ध परिणामोंकी अवस्थाका नाम सयोग केवली गुणस्थान है। ऐसे परिणाम और ऐसा दिव्यज्ञान ईश्वरकी होता है। जैनोंने इन्हींको अरहन्त वा ईश्वर माना है और येही मोक्षमार्गका उपदेश दे कर संसारमें मोक्षमार्गका प्रकाश करते हैं।

१४ अयोगकेवली गुणस्थान—उपर्युक्त अरहन्त मन, वचन और कायके योगोंसे रहित हो कर केवलज्ञान सहित जिस समय मोक्ष प्राप्त करते हैं उस समयसे अन्तर्मुहूर्त्त पहिलेके परिणामोंकी अयोगकेवली गुणस्थान कहते हैं। 'अ इ उ ऋ ऌ' इन पाँच ऋस्व स्वरोके उच्चारण करनेमें जितना समय लगता है, उतना ही इसका काल है गुणस्थानकरण—१ जैनोंका एक धर्म ग्रन्थ। २ वीदोंका एक ग्रन्थ।

गुणज्ञानि (सं० स्त्री०) जैनोंके अनुसार—गुणकाररूप हीन हीन द्रव्य जिसमें पाये जाय, उसको गुणज्ञानि कहते हैं। जैसे—किसी जीवने एक समयमें ६३०० परमाणुओंके समूहरूप समय प्रवर्द्धोंका बन्ध किया और उसमें ४८ समयकी स्थिति पड़ी, उसमें गुणज्ञानियोंके समूहरूप नाना गुणज्ञानि ६, जिसमें प्रथम गुणज्ञानिके परमाणु ३२००; द्वितीय गुणज्ञानिके १६००, तृयके ८००, ४थके ४००, ५मके २०० और ६ठी गुणज्ञानिके १०० परमाणु हैं। यहाँ उत्तरोत्तर गुणज्ञानियोंमें गुणकाररूप हीन हीन परमाणु (द्रव्य) पाये जाते हैं, इसलिये इसकी गुणज्ञानि संज्ञा हुई। (जैनसिद्धान्तप्रवेशिका)

गुणज्ञानि आयाम—जैनशास्त्रानुसार एक गुणज्ञानिके समयके समूहको गुणज्ञानि आयाम कहते हैं। गुणज्ञानि ३। दृष्टान्त दोषी। जैसे—४८ समयकी स्थितिमें ६ गुणज्ञानि हैं, उस ४८में ६का भाग देनेसे प्रत्येक गुणज्ञानिका परिमाण ८ हुआ, इसीका नाम गुणज्ञानि आयाम है।

(जैनसिद्धान्तप्रवेशिका)

गुणहीन (सं० त्रि०) गुणहीन हीनः, ३-तत्। गुणग्रन्थ, किसी प्रकारका गुण न हो।

गुणस्तम्भ (सं० पु०) गुणाधारः स्तम्भः। गुणवृत्त, मन्तूल। गुणा (सं० स्त्री०) गुणाऽस्त्यस्याः गुण अच्, स्त्रियां टाप्। १ दुर्वा, दूव। २ मांसरोहिणी, एक प्रकारका सुगन्ध द्रव्य।

गुणा—मध्य भारतकी एक मव एजेन्सी। परोन और रघुगढ़ नामके दो विषय इसके अन्तर्भूत हैं। उक्त दोनों स्थानके सरदार ग्वालियरके अधीन रह कर जागीर स्वरूप भोगदखल करते आये हैं। परोन और रघुगढ़ देखो।

गुणा (हिं० पु०) गणितको एक क्रिया।

गुणाकार (सं० पु०) गुणानामाकरः, ६-तत्। १ बुद्धविशेष। २ गुणयुक्त, गुणाधार। ३ महादेव शिव। ४ बुद्धके एक शिष्य। ५ सूक्तिकर्णामृतदत्त एक प्राचीन कवि। गुणाकार—हिन्दी भाषाके एक कवि। यह युक्त प्रान्तीय उनाव जिलेके कांठा गांवमें (१८८३ ई०) रहते थे।

गुणाकरसूरि—एक जैन ग्रन्थकार, गुणचन्द्रसूरिके शिष्य। इन्हींने पड्डर्शन समुच्चयटीकाकी रचना की है।

गुणाख्यान (सं० स्त्री०) गुणस्य आख्यानः, ६-तत्। १ गुण कौर्त्तन, गुणकथन।

गुणागुण (सं० पु०) इन्द्रसमा०। गुण और दोष, अच्छा और बुरा।

गुणाङ्ग (सं० पु०) वह अङ्ग जिसको गुण करना हो।

गुणाव्य (सं० स्त्री०) गुणैराव्यः, ३-तत्। १ गुणयुक्त, गुणवान्, हुनरमन्द।

(पु०) २ कोई ब्राह्मणकुमार। कथासरित्सागरमें उनका उपाख्यान इस प्रकार कहा है—प्रतिष्ठान प्रदेशके सुप्रतिष्ठित नगरमें सोमशर्मा नामके कोई ब्राह्मण रहते थे। उनके बत्सक तथा गुल्मक नामसे दो पुत्र और श्रुतार्था नामकी एक मात्र कन्या थी। श्रुतार्थाके साथ यौवन समयको अलौकिक रूपलावण्यसे मोहित हो नागराज वासुकिके छोटे भाई कीर्तसेनने गान्धर्व विवाह कर लिया। उन्हीं श्रुतार्थाके गर्भसे गुणाव्यका जन्म हुआ। इनकी शैशवावस्थाकी माता और मातुलहय अकाल काल-प्रासमें पड़े थे। बालक गुणाव्य किसी प्रकार उनको जर्धदैहिके कार्य सम्पन्न करके विद्याभ्यासके लिये

दक्षिणापथकी चले और घोड़े ही दिनमें विख्यात पण्डित हो गये। सब देशोंमें उनका पाण्डित्य फैल पड़ा।

उम समय महाराज शालिवाहन (सातवाहन) प्रतिष्ठान राज्यके अधिपति थे। यह उनकी सभामें पहुँचे। महाराज गुणाद्यका पाण्डित्य देख परम आश्चर्य दित हुए थे, यह बड़े आदरके साथ मन्त्रिपद पर रखे गये। गुणाद्य वही कितने रमणीयदश पाणिग्रहण करके शिपोंके साथ बड़े सुखसे समय बिताने लगे।

राजा शालिवाहन पहले मूर्ख थे, परन्तु उनकी रानी अतिशय विद्यावती थी। एक दिन राजा और रानी जनमौड़ामें प्रवृत्त हुये। विदुषी रानीने उनकी अकृत वाक्यमें किसी विषयके लिये अतुरोध किया था। राजा इसका अर्थ समझ न सके और विपरीत आचरण करने लगे। उस पर रानीने इन्हे डाँटा था। राजाकी ज्ञानोदय हुआ। उन्होंने सोचा था—इस ससारमें विद्या ही मानवका प्रधान धर्म है, विद्याके अभावमें कोई सुख नहीं। रानीके निरस्कारसे आज मेरे लिये ससार असार जैसा हो गया। यदि विद्याभ्यास कर न सकूँ तो जीनेसे क्या फल है ? राजाका सकल्प मालूम होने पर गुणाद्य ने कुछ वर्षमें उन्हें व्याकरण पढा देना स्वीकार किया था। उसी समय शर्ववर्मा नामक कोई पण्डित बाल उठे—मैं कुछ मासमें ही महाराजकी व्याकरण सिखाना सकता हूँ। वह बात सुन करके यह चिन्तित गये और आपसे बाहर हो कानने लगे—गर्व कारिन् ! यदि ६ महीने में आप यह काम कर सके, धरण रखें कि मैं सङ्कत, प्राकृत और देशी भाषा परित्याग करनेकी दृष्टप्रतिज्ञा हूँ। पण्डितप्रवर शर्ववर्माने असाधारण प्रतिभावन्से सच्चिद्र कलाप व्याकरण रचना करके ६ मासके मध्यमें ही महाराजकी विद्वान् बना दिया। इन्होंने पराम्ना ही तोनी भाषाएँ छोड़ी थी। बात न करके जनसमाजमें रहना असम्भव समझ अपने प्रिय शिष्य गुणदेव और जन्दिदेव के साथ गुणाद्यने निविड अरण्यमें प्रवेश किया। मनुष्य मन्त्र्य परित्याग करके वह पिशाचोंके साथ रहने लगे। दिन दिन प्रतिवेशी पिशाचोंकी कथावार्ता सुन करके उन्होंने पिशाचभाषा सोखी थी। कुछ दिन बाद वह काणमूर्तिसे मिले। इन्हीं ने मधुमय सुतिवाक्यसे उनको

मनुष्ट करके पुष्पदत्तकथित सप्तकथामय उपाख्यान सुन था। फिर गुणाद्यने उसी उपाख्यानको भ्रूलब्धन करके पिशाच भाषामें सात लाख श्लोकोंकी हृहलकथा बनायी। इस बड़े ग्रन्थकी रचनामें सात ही वर्षका समय लगा था। इन्हीं ने अपने रक्तसे उक्त पुस्तक लिख करके काण-भूतिकी दिखलाया, वह शपथुक्त हो गये। काणमूर्ति शब्दः।

गुणाद्यने यह हृहलकथा मानव समाजमें प्रचार करने के विचारसे दोनो शिपोंके साथ प्रतिष्ठाननगर पहुँच राजाके पास भेजी थी। किन्तु विद्यामदगर्हित सातवाहनने उस ग्रन्थका विषय आदर नहीं किया। राजाके व्यवहारसे यह अतिशय क्रुद्ध हो ग्रन्थको भागमें जलाने लगे। वह एक एक पृष्ठ पढके जलाते जाते थे। पशुपत्नी अनाहार वह अमृतमयी कथा सुनने लगे। यह सवाद सुन करके महाराज सातवाहनने वह पुस्तक माँगा। उस समय सप्तकथाके ६ खण्ड जल चुके थे। महाराजकी बहुत कहने सुनने पर इन्हीं ने वह दे डाली।

यह शिवके माल्यवान् नामक एक अनुचर थे, शपथसे गुणाद्य नाममें भूलतल पर भवतीषण हुए और घोड़े दिन मर्त्यलोकमें रह करके शपथसे कूट गये।

विमलकी हृहलकथामञ्जरी और सोमदेवका कथा-सरित्सागर दोनो ग्रन्थ इनकी उसी हृहलकथाके आधार पर रचित हुए हैं। दण्डी, सुवन्धु, त्रिविक्रम, गोवर्धन प्रभृति पण्डितों ने पिशाचों भाषामें बनी हुई हृहलकथाका उल्लेख किया है।

गुणाद्यक (म० पु०) गुणाद्य मन्त्राया कन् । अष्टौठहृह, अश्वरोटका पेड ।

गुणातीत (म० पु०) गुणान् सत्वादिगुणान् तत्कार्यं सुखादीन् अतीतं, २ तत् । १ सुख दुःखादि शून्य परमे श्वर । आत्मज्ञ, स्थितप्रज्ञ, जीवन्मुक्त । भगवद्गीतामें भगवानने प्रिय शिष्य अर्जुनको उपदेशके क्रमसे बतलाया है, जो त्रिगुण अतिक्रम कर सकते, कभी नहीं जोते मरते और प्रारब्ध श्रेय होने पर निर्वाण प्राप्त करते हैं। भक्ति बलसे एकान्त चिन्तित हो करके ईश्वरकी भेदा करनेवाले ही गुणातीत अतिक्रम कर सकते हैं। ईश्वरकी सेवा छोड़ करके उसका कोई उपाय नहीं। जो गुणातीत हो सके

अनभिलषित किमो घटनाका हेतु या अभोष्ट विषयका आग्रह नहीं रखते। वह सब विषयोंसे उदास हो जाते हैं, कभी सुख, दुःख वा मोहमें पड करके नहीं घबराते। इनको विश्वास है कि वह सब गुणोंका काम है, जो होता है होता रहे। गुणातीत महात्मा सुख या दुःखमें सुख चित्तसे अवस्थान करते हैं। सामान्य लोभ एवं मशार्थ मणि, हिताहित, निन्दास्तुति और मान अपमान उनके लिये बराबर है उनका कोई मित्र अमित्र नहीं। यह सब विषयोंका औत्सुक्य छोड़ देते हैं।

(गीता १४ अध्याय)

गुणादि (सं० पु०) पाणिनीय एक गुण । गुण, अक्षर, अक्षराय, सूक्त, छन्दस्, मान, इन सर्वोंको गुणादि कहते हैं।

गुणाधार (सं० पु०) गुणस्य आधारः ६-तत् । गुणवान्, गुणसम्पन्न व्यक्ति ।

गुणाधिष्ठानक (सं० स्त्री०) वक्षस्त्रलका वह स्थान जहाँ मेखला बांधा जाता है।

गुणानन्द विद्यावागीश—एक दार्शनिक, मधुसूदनके शिष्य। इन्होंने न्यायकुसुमाञ्जलीविवेक, शब्दालोकविवेक और आत्मतत्त्वविवेकटीका की रचना की है।

गुणानुरोग (सं० पु०) गुणेषु अनुरागः ७-तत् । गुणप्रियता, गुणमें आसक्ति, गुणका आदर ।

गुणानुरोध (सं० पु०) गुणस्य अनुरोधः ६-तत् । गुणकी प्रतिज्ञा, गुणका अनुसरण ।

गुणानुवाद (सं० पु०) गुणकथन, प्रशंसा, बड़ाई, तारोफ़।

गुणान्तर (सं० पु०) अन्यो गुणः, नित्य-सभा । अन्यगुण गुणान्तराधान (सं० स्त्री०) गुणान्तरस्य आधानं, ६-तत् ।

किमी पदार्थके पूर्व गुण भिन्न अपर गुणके उत्पादन वी प्राप्तिकी गुणान्तराधान कहते हैं।

गुणान्तरापादन (सं० स्त्री०) गुणान्तरस्य आपादनं, ६-तत् । भावान्तरकी प्राप्ति ।

गुणान्वित (सं० त्रि०) गुणैरन्वितः युक्तः ३-तत् । १ विवेक ज्ञान या वैराग्य और उपशम प्रभृति मुक्तिके उपाय । २ गुणयुक्त, गुणवान् ।

गुणापवाद (सं० पु०) गुणस्य अपवादः, ६-तत् । गुणकी निन्दा ।

गुणाधि (सं० पु०) बुद्धविशेष ।

गुणाभरण (सं० स्त्री०) गुण एवाभरण । १ गुणरूप अनक्षर । (त्रि०) गुण एवाभरणं यस्य । २ गुणरूप भूषणयुक्त, गुणालङ्कृत ।

गुणायन (सं० स्त्री०) गुणस्य अयनं आश्रयः, ६-तत् । १ गुणका घर, गुणवान् । (त्रि०) गुणोऽयनं आश्रयो यस्य, बहुव्री० । २ गुणान्वित, गुणकी धारण करनेवाला ।

गुणायननन्दि—एक जैनग्रन्थकार । ये गगरी जार्तिके थे ।

मस्वत् ११८८ में मार्गशीर्ष शुक्ल ११शुको इनका स्वर्गवास हुआ ।

गुणारिया—मन्दार पर्वतसे तीन मील दक्षिण-पूर्व पुनपुन और मुगहर नदीके मद्गमस्थान पर अवस्थित एक नगर ।

इसका प्राचीन नाम योशुणचरित है । पूर्व समयमें यहाँ एक बौद्धविहार था । वर्तमान समयमें भी बहुत से शिवमन्दिरका ध्वंसावशेष देखा जाता है ।

गुणारिष्ट (सं० स्त्री०) मद्य, मद, मदिरा ।

गुणालङ्कृत (सं० त्रि०) गुणैरलङ्कितः, ३-तत् । गुणभूषित, गुणवान् ।

गुणालाभ (सं० पु०) गुणस्य अलाभः, ६-तत् । गुण अप्राप्ति, फलहीनता, वह पुरुष जिसको गुणका लाभ न हो ।

गुणावली (सं० स्त्री०) गुणस्य आवली, ६-तत् । १ गुणश्रेणी । २ गुणा करनेको प्रणाली ।

गुणावा,—जैनियोंका एक तीर्थ (सिद्ध) चैत । यहाँसे गौतम गणधर मोक्ष गये हैं । यहाँ तालावके बीचमें एक विशाल (दि० जैनियोंका) मन्दिर है ; जो कि भागलपुर प्रान्तमें नवादा एगनसे १॥ मील दूरी पर है ।

गुणिका (सं० स्त्री०) गुण-एनू स्याथ कन-टाप् । शून्याङ्क ।

गुणित (सं० त्रि०) गुणं कर्णितं । गुणन किया हुआ ।

गुणिता (सं० स्त्री०) गुणिनो भावः गुणितत् । गुणियोंका धर्म, गुण

गुणी (सं० पु०) गुणः ज्ञ्या विद्यतेऽस्य गुण-इनि । १ धनुः, धनुष । (त्रि०) गुणी विद्यादिरस्यस्य गुण-इनि । २ गुणयुक्त, जिसमें गुण हो, गुणवान् । ३ निपुण मनुष्य, कलाकुशल पुरुष हुनरमंद आदमी । ४ आवर्तकी ।

गुणीभूत (सं० त्रि०) अगुणी गुणीभूतः गुण-चि-भू-क्त । अप्रधानीभूत, अवस्था या कार्यमें अप्रधान भावसे अवस्थित ।

गुणीभूतव्यङ्ग्य (स० स्त्री०) गुणीभूत अथवा नीभूत व्यङ्ग्य यत्न, बहुते० । काव्यविशेष, किमी किम्पकी शायरो ।

आलङ्कारिकीं मतमें रसात्मक वाक्यको काव्य कहते हैं । यह काव्य प्रधानत दो भागोंमें बटा हुआ है—ध्वनि और गुणीभूतव्यङ्ग्य । काव्य लकी ।

आलङ्कारिक शब्दकी तीन शक्तियां मानते हैं । यथा—अभिधा, लक्षण और व्यञ्जना । शब्दकी अभिधा शक्तिमें निकलनेवाला वाच्य और व्यञ्जनाका अर्थ व्यङ्ग्य कहलाता है । शब्दना होता ।

गुणीभूतव्यङ्ग्य काव्य वही है, जिसमें व्यङ्ग्यार्थ वाच्यार्थ से न्यून वा ममान लगे । यह गुणीभूतव्यङ्ग्य आठ प्रकारका है—१ इतराङ्ग, २ काकाक्षिप, ३ वाच्यमिहाङ्ग, ४ सन्दिग्धप्राधान्य, ५ तुल्यप्राधान्य, ६ अस्फुट, ७ अगूढ और ८ व्यङ्ग्यसासुन्दर ।

व्यङ्ग्य किसी एक रसका वाच्य और अङ्ग हीनेसे इतराङ्ग गुणीभूतव्यङ्ग्य कहलाता है । (साहित्यप्रब ४ ४६०) काव्यप्रकाशकारने उमका नाम अपराग लिखा है ।

(काव्यप्र० ३६ अदि०)

जिस स्थान पर वाच्यार्थ काकुं द्वारा आक्षिप्त होता, काकाक्षिप गुणीभूतव्यङ्ग्य पडता है ।

व्यङ्ग्यार्थको वाच्यार्थनिष्ठिका हेतु हीनेसे वाच्य सिद्धव्यङ्ग्य कहेंगे ।

ओ प्रस्तावर्षः उपयोगी और वर्णनीय दिखलाता, प्रधान जैसा माना जाता है । किन्तु व्यङ्ग्यार्थ और वाच्यार्थ दोनों प्रधान लगाने अर्थात् उनमें कोई प्रधान जैसा ठहर न सकनेसे—सन्दिग्धप्राधान्य कहते हैं ।

वाच्यार्थ और व्यङ्ग्यार्थ दोनों ही प्रधान वा प्रकृत रहनेसे तुल्यप्राधान्य होता है ।

अस्फुट व्यङ्ग्यार्थका नाम अस्फुटगुणीभूतव्यङ्ग्य है । जहां वाच्यार्थकी भांति व्यङ्ग्यार्थ सहजमें ही बोध गम्य हो जाता, अगूढगुणीभूतव्यङ्ग्य गम्य होता है ।

व्यङ्ग्यार्थसे वाच्यार्थका समकार अधिक रहने पर व्यङ्ग्यसासुन्दर होता है ।

दोषक और तुल्यगीता प्रभृति स्थानों पर जो उपाया आदि अलङ्कार व्यङ्ग्य लगते, ध्वनिकारादिके मतमें उनको भी गुणीभूतव्यङ्ग्य कहते हैं । आलङ्कारिकीं इसको

छोड करके गुणीभूतव्यङ्ग्यके और भी कई भेद निरूपण किये हैं । (साहित्यप्रब ४ ४६०)

गुणेश्वर (स० पु०) गुणेश्वर गुणानामीश्वरो वा । १ चित्रकूट पर्वत । २ तीनों गुण पर प्रभुत्व रखनेवाला, परमेश्वर, ईश्वर । (त्रि०) ३ गुणके अधिपति ।

गुणोज्वला (स० स्त्री०) सुदृढवैतयुधिका, छोटी सकेद जेहू ।

गुणोत्कर्ष (स० पु०) गुणस्य उत्कर्ष इतत् । गुणातिशय, बहुत गुण ।

गुणोक्तीर्त्तन (स० स्त्री०) गुणानामुक्तीर्त्तन कथन । नायक या नायिकाका प्रथ सादि कथन ।

गुणोपेत (स० त्रि०) १ गुण, गुणयुक्त, जिसमें गुण हो । २ किसी कलामें निपुण ।

गुण्टानाल—मन्द्राज प्रान्तके करनूल जिलेका एक गांव । यह नन्द्यालसे १५ मील दक्षिण-पश्चिम पडता है । इस स्थानमें विजयनगरराज सदाशिवके राजत्व समयकी रामराजवेद्वटाट्टि देवके आदेशसे १४६८ शकका उत्कीर्ण एक शिलालिपि है ।

गुण्टपत्नी—मन्द्राज प्रान्तके कृष्णा जिलेमें इजूर तालुकका एक गांव यह अक्षा० १७ ७० और देशा० ८१ ८ ० में इजूर शहरसे २४ मील उत्तर पडता है । लोकसे क्या प्रायः १०८२ है । कहते हैं, पहले यहां जैनपुरम्-नामक कोई नगर था । इस गांवकी पूर्व दिक्की पर्वतमें एक सुन्दर गुहामन्दिर है । मन्दिरका मध्य भाग गोल, छत्ती महाराष्ट्रदार और भीतरकी ८ हाथ चौकीर तथा २ हाथ ऊंचा एक प्रस्तरमय वेदी है । उस पर २ हाथ ८ अगुल ऊंचा शुभ्रज और इसके ऊपर लज्जामूर्ति दिखते हैं । मन्दिरके अन्तर्गम्य मार्गको कोई २०० हाथ दूर तक पहाड तोड करके दोवार और घर वगैरह बनाये गये हैं । दानान ८० हाथ मर्य और १२ हाथ चौड है । एक दानानमें छोटी गुहा टेप पडती है । कहते हैं कि पूर्वकालको महादेवके ध्यानार्थ उमो गुहासे जन जाया करता था । यहाँ प्रति वत्सर शिवरात्रिके समय बड़ा उत्सव होता है ।

आजकल मन्दिरमें ब्राह्मण धर्मका प्रभाव रहने भी काइ सदेह नहीं कि पूर्वकालको यहां भौड संहारोंमें

और चैत्य रहे । इस गोलाकृति मन्दिरको चारों ओर ११ फुट ७ इंच प्रदक्षिणा है । प्रदक्षिणासे ७ फुट ऊँचे 'दागोव' दृष्ट होता है । वारगिस साहवने इस गुहा-मन्दिरसे जुन्नारकी वीढ़ कीर्ति तुलजालिनकी तुलना किया । है । चैत्य गुहाके सामने एक भग्न दागोव है । इससे दक्षिण कुछ छोटे छोटे घर देख पड़ते हैं ।

उत्तर दिक्को विहार-गुहा है । इसके मध्य एक टुकड़े शिलाफलक पर दो कूत्र खोदित लिपियां लगी हैं इनके अक्षर ई० प्रथम शताब्दी अथवा उससे भी कुछ पूर्व समयके जैसे अनुमित होते हैं ।

गुण्टूर—मन्द्राज प्रान्तका एक जिला । १८०४ ई०को यह नीलूरके ओड्डोल तालुक और कृष्णा जिलेका कुछ अंश ले करके बना । १८५८ तक इसी नामका एक दूसरा जिला भी था । इसका क्षेत्रफल ५७३३ वर्गमील, लोकसंख्या प्रायः १४८०६३५ और मालगुजारी कोई ५६॥ लाख रुपया है ।

गुण्टूर—मन्द्राज प्रान्तके गुण्टूर जिलेका सबडिविजन ।

गुण्टूर—मन्द्राज प्रांतके गुण्टूर जिलेका तालुक । यह अक्षा० १६° ८' एवं १६° ३५' उ० और देशा० ८०° २०' तथा ८०° ४१' पू० मध्य अवस्थित है । क्षेत्रफल ५०० वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः २००५५७ है । इसमें दो नगर और १०८ गांव वसते हैं । मालगुजारी और सेस कोई ५१३०००, रु० पड़ती है । दक्षिणमें काली भूमि बहुत उपजाऊ है । सड़के अच्छी हैं चौर दक्षिण-पूर्व कोणसे बङ्गनाल (नहर) निकल गयी है ।

गुण्टूर—मन्द्राज प्रांतके पुराने गुण्टूर जिलेका सदर । यह अक्षा० १६° १८' उ० और देशा० ८०° २८' पू०में पड़ता है । १८५८ ई०से गुण्टूर कृष्णाके सब कलकटरका निवास स्थान रहा और हालमें नये गुण्टूर जिलेका सदर हुआ । १८६६ ई०को मुनिसपालिटी पड़ी । सम्भवतः ई० १८वीं शताब्दीके उत्तरार्ध भागमें फ्रान्सीसियोंने इसे बसाया था । तेलगु 'गुण्ट' शब्दसे जिसका अर्थ 'सरोवर' है, गुण्टूर बना है । यह अपने प्रांतमें सबसे अधिक स्वास्थ्यकर स्थान जैसा प्रसिद्ध है । पहले वह सलावत-जङ्गकी जागीर था । १७७८ ई०को मन्द्राज गवर्नमेण्टने उससे इसका पट्टा लिखाया और १७८० ई०को फिर उन्हें

सौंप दिया । १७८८ ई०को वह अङ्गरेजोंके हाथ लगा और १८२३ ई०को ब्रिटिश गवर्नमेण्टका अधिकार भुक्त हुआ । यहाँ दूसरी जगहोंकी ५ सड़कें आ करके मिली हैं । रुईका बड़ा कारवार है । कई एक पुतली घर चलते हैं । ईष्ट कोष्ट रेलवेका स्टेशन बना हुआ है । गुण्ड (म० पु०) वृत्तदण ।

गुण्डन (म० लो०) गुठि-ल्युट । १ आवरण, परदा । २ वेष्टन, घेरा ।

गुण्डित (स० त्रि०) गुठि कर्मणि-क्त । १ आवृत, आच्छादित, ढका हुआ । २ धूलसे भरा हुआ, धूलमें लिपटा हुआ । ३ गुण्डित, ढका हुआ ।

गुण्ड (स० पु०) गुड़ि अच् । १ दणविशेष, एक घास (Scirpus kysoor) । इसका पर्याय—काण्डगुण्ड, टीवेंकाण्ड, त्रिकोणक, कूत्रगुच्छ, असिपत्र, नीलपत्र और त्रिच्छत्रक है । इसके कन्दको कशेरु कहते हैं । इसका गुण मधुर, शीतल, कफ, पित्त, अतोसार, दाह और रक्तनाशक है । यह दण अनूपदेशमें उत्पन्न होता है । इसका काण्ड चार या पांच हाथ तक लम्बा रहता है । इसका शीर्षभाग कूत्रके जैसा और मूल मोथाके सदृश होता है । इसके काण्डसे अच्छी अच्छी चटाईयां बनती हैं । गुड़ि भावे घञ् । २ चूर्णन, पेपण, पीसा या चूर्ण किया हुआ ।

गुण्ड—बम्बई प्रान्तकी काठियावाड़ एजिन्सीमें नवानगर राज्यके मानवाड़ मन्सलका एक गांव । यह अपने प्राचीन सिंह शिलालेखके लिये प्रसिद्ध है । उसमें लिखा हुआ है—'क्षत्रप राजत्वकालके १०२ वर्षको स्वामी रुद्रसिंह राजा थे । इनके पिताका राजा महाक्षत्रप स्वामी रुद्रदामा, पितामहका राजा क्षत्रप स्वामी जयदामा और प्रपितामहका नाम राजा महाक्षत्रप स्वामी चष्टान था । वैशाख कृष्ण—पञ्चमीको अथवा नक्षत्रमें चन्द्रके रहते अहीर सेनापति वाहकके लड़के रुद्रभूतिने रसोपद्र ग्राममें पशुओंके लाभ और सुखके लिये यह कूप बनाया ।' यह शिलालेख एक पुराने कूपमें मिला था । गुण्डको लोकसंख्या कोई १०८६ होगी ।

गुण्डक (स० त्रि०) गुण्ड स्वार्थ कन् । १ मलिन, मैला, कुचेला ।

(पु०) २ धूलि, धूर। ३ कलध्वनि, कलकलका गच्छ। ४ स्त्रीहृत्पात्र।

गुण्डकन्द (स० पु०) गुण्डलूर कन्द ६ तत्त्वं। कंगूर, कैंगूर।

गुण्डता (स० स्त्री०) याचनाल शर्करा।

गुण्डचोलु—मन्द्राज प्रांतके नेल्लूर जिलेका एक गाँव।

इसकी दक्षिण दिक्की आने जानिको राह पर तालाब है। उसमें एक पत्थरके खम्भे पर तैलङ्ग अक्षरोंकी लिपि है। जलाशयके दक्षिण भी तामिल अक्षरोंमें खुदो हुई लिपि लगी है। यह गांव आजकल उजाड हो गया है। गांववालोंका कहना है, किभी समय वहाँ राजप्रासाद था।

गुण्डल—मन्द्राज प्रांतके करनूल जिलेका कम्पा। यहा गोपाल स्वामीका मन्दिर बहुत पुराना है। इसी मन्दिरके पास एक पत्थर पर अनुशासनलिपि उत्कीर्ण है।

गुण्डलशम्भ दाक्षिणात्यको एक नदी। यह मन्द्राज प्रांतीय करनूल जिलेके नल्लमलय पर्वतसे अक्षा० १५ ४८ उ० और देशा० ७८ ५१' पु०में निकलती है। फिर जमपनेर और एनुमनेर नामक दो पहाडी नदियोंका मङ्गल है। उसके बाद यह कमवलघाटकी राह मैदान पट्ट चली है। सोचनेके लिये कमवल तालाब बनाया गया है। यह करनूल, गण्टूर और नेल्लूर जिला होती हुई पेटदेवरमके पास अक्षा० १५ ३४ उ० और देशा० ८० १०' पु० पर समुद्रमें प्रवेश करती है।

गुण्डलपाडु—मन्द्राज प्रांतके कृष्णा जिलेका एक गाँव। यह मार्चर्लेसे १० मील और तुञ्चिरीटसे १८ मील दक्षिण पश्चिम पडता है। यहा दो प्राचीन मन्दिरोंका ध्वंसा धरोहर दृष्ट होता है। ग्रामके पश्चिम भाग पर शिवकेगवके मन्दिरमें एक भङ्ग गिनालिपि है। शिव तथा विष्णु मन्दिरके पास दुर्भति सप्तम्बर १२४३ शककी उत्कीर्ण शूलरी भी गिलाप्रशस्ति मिलती है।

गुण्डलपाडेडु—मन्द्राज प्रांतके नेल्लूर जिलेका एक गाँव। कुन्दुकसे यह ७ मील दक्षिण पश्चिम पडता है। पर्वत पर तीन और नीचे एक पुराना मन्दिर है। पहाड पर शम्भेश्वर स्वामीका भी मन्दिर विद्यमान है। इस मन्दिरमें ध्वजस्तम्भके निकट १४६३ शककी उत्कीर्ण एक प्रशस्ति है। फिर मन्दिरसे दक्षिणको एक टुकड़े पत्थर

पर जोड़े गिनालिपि भी मिली है। नदीको रेतमें अथ प्रोत्थित दो शिवमन्दिर है। कहन कि एक चोलराजने यह दोना मन्दिर बनाये थे।

गुण्डलपेट—महिसुर राज्यके महिसुर जिलेका दक्षिण तालुक। यह अक्षा० ११ ३६ तथा १२ १ उ० और देशा० ७६ २४' एव ७६ ५२ पु० मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ५३५ वर्गमील और लोकसंख्या प्राय ७४८८७ है। इसमें एक नगर और १५५ गांव बसे है। मानुशारी कोई १००० रु० है। पश्चिम तथा दक्षिणको बडा जङ्ग है। पास ही पहाडों पर घनी बसती है। गौडल नदी दक्षिणमें उत्तरकी प्रवाहित है। सी चनेके लिये बांध है। यहा चावल और पान बहुत अच्छा होता है। नदियोंपर जङ्गली खजूरके बाग हैं।

गुण्डलमज—युक्तप्रदेशके सीतापुर जिलेका एक परगना। इसके उत्तर मऊरेता तथा करोन परगना, पूर्व सरायन नदी और दक्षिण एव पश्चिम गोमती नदी है। पहले यहाँ काँटेरा लोग रहते थे। बाहल चर्चियोंके तीन सतानोंने उन्हें भगा दिया। उनमें एकका नाम गौडमिहय। उन्होंने ही अपने नाम पर यह परगना स्थापन किया। इसमें कोई ६७ गाँव हैं। उनमें आज भी ५३ गाँवों पर बाहल अधिकार रखते हैं। जगह पहाडों और ऊँचो है। अनाज धरोहर अच्छा नहीं होता। क्षेत्रफल ६५ वर्गमील है।

गुण्डलमाड—मन्द्राज प्रांतके कडापा जिलेका एक गाँव। यह सिडवटसे १४ मील दक्षिण पश्चिम अवस्थित है। यहा मुक्तिश्रीश्वर स्वामीका एक प्राचीन मन्दिर दृष्ट होता है। प्रवादातुषार महर्षि नारदने वर मूर्ति स्थापन की थी। मन्दिरके पास ही एक अस्पष्ट गिलाफलक भी है।

गुण्डलश्व—मन्द्राज प्रांतके कडापा जिलेमें लुधमपेट तालुकका गाँव। यह लुधमपेटकी सदर अदानतसे ५ मील उत्तर पश्चिम पडता है। स्थानीय प्राचीन विष्णुमन्दिरके पास दो पत्थरों पर ग्रन्थ और तैलगु अक्षरोंमें खोदित गिनालिपि है। इसके दक्षिण अगस्त्येश्वरके मन्दिरमें और भी कई एक ग्रन्थगिनालिपिया हैं। सभिकटस्थ चोरभट्टस्वामीके मन्दिरमें कितने ही ग्रन्थ और तैलगु

भाषाके शिलाफलक देख पड़ते हैं। उनमें एक १४७० और दूसरा १४८० शककी उत्कीर्ण है। ग्रामवासी वतलाते कि ४१५ वर्षके अन्तर मन्दिरके लिङ्गको गङ्गा नह लाते, वह जल निर्दिष्ट दिक्कको मन्दिरकी कतसे भूमि पर गिरता है।

गुग्गुलूक—मन्द्राज प्रान्तके कदापा जिलेमे वायलपाड तालुकका एक गांव। वायलपाडकी कचहरीसे यह १३ मील उत्तर-पूर्व पड़ता है। यहां एक शिलालिपि है, वह १५२१ शकको विजयनगरराज वेङ्कटपतिदेवके राजत्व समय पेन्नकोंडाके सरदार कर्तृक प्रदत्त हुई थी। गुग्गुलूकका विष्णुमन्दिर अति प्राचीन है।

गुग्गुवा—युक्त प्रदेशके हरदोई जिलेका एक परगना। इसके उत्तर तथा पूर्व गोमती नदी एवं टलिहाट और पश्चिमकी संडीला तथा कल्याणमल है। गोमती नदीका तीरवर्ती स्थान वालुकामय है। पहाड़ पर बीच बीच बड़ी खाड़ियां हैं। एक प्राचीन नदी खतमें गत पड़नेसे अब यह जगह बड़े भील जैसी हो गयी है। कितनी ही छोटी नदियां और पहाड़ी भरने इस परगनेके बीच बहते हैं। खेतबारीका खूब सुभीता है। क्षेत्रफल १४० वर्ग-मील है। ११७ गांव बसे हुए हैं।

गुग्गुम (स० पु०) मर्पजाति भेद, सांपकी एक जाति।

गुग्गु (स० स्त्री०) काश्लण।

गुग्गुफलो (स० स्त्री०) देवदालो, एक प्रकारका पेड़।

गुग्गुार—मन्द्राज प्रान्तके मदुरा जिलेको एक नदी। यह अक्षा० ८०° ३६' उ० और देशा० ७८° १४' पू०में अन्दिपत्ति तथा वर्षनाड पर्वतसे प्रवाहित चुद्र चुद्र जल स्त्रीतसे मिल करके बनती और दक्षिण-पूर्वको प्रायः १०० मील चल करके किलराई नामक स्थान पर समुद्रमें गिरती है।

गुग्गुार—मध्य प्रदेशस्थ रायपुर जिलेके सरदारकी एक डिहो। इसके बीच ५२ गांव हैं। भूमिका परिमाण ८० वर्गमील है। जमीन उपजाऊ है। वर्तमान सरदार कोई ३०० वर्षसे इस स्थानकी उपभोग करते आते हैं। गुग्गुारडिही गांव अक्षा० २०° ५६' ३०' उ० और देशा० ८१° २०' ३३' पू०में अवस्थित है।

गुग्गुारोचनिका (स० स्त्री०) गुग्गुा सती रोचना इव।

वृक्षविशेष। इसका पर्याय - काम्पिन्नक और रत्नाद्र है। गुग्गुारोचनी (स० स्त्री०) गुग्गुारोचनिका, एक प्रकारका सुगन्ध द्रव्य।

गुग्गुाला (स० स्त्री०) गुग्गुं चूर्ण आलाति आ ला-प-टाप्। १ एक तरहकी जलजलता या भाडी। इसका नामान्तर जलोद्भूता, गुच्छवधा और जलाशया हैं। इसका गुण कटु, तिक्त, उष्ण, शोथ और व्रणनाशक है। २ गुग्गुासिनोत्पण, गांडर घास।

गुग्गुासिनी (स० स्त्री०) गुग्गुासिनो आस्ते आम-गिनि। लणविशेष, एक प्रकारकी घास। इसका पर्याय-गुग्गुाला, गुग्गुाला, गुच्छमूलिका, चिपिटा, लणपत्नी, यवामा, पृष्टुला और विटग है। इसका गुण कटु, पित्त, टाह, शोथ और व्रणोपनाशक है।

गुग्गुडक (स० पु०) गुग्गुोऽम्यस्य गुग्गुड-ठन्। चूर्णकृत तण्डुलादि, चावलका चूर्ण।

गुग्गुडचा (स० स्त्री०) पुरुषोत्तम क्षेत्रका एक मन्दिर। स्कन्दपुराणके उत्कलखण्डमें लिखा है—

जगन्नाथ देव विन्दुसरोवरके तीरवर्ती गुग्गुडचा मन्दिरमें रथारोहणके वाट ७ दिन तक रहें। पूव कालमें जगन्नाथ देवने राजाके प्रति सन्तुष्ट हो यह वर दिया था— हम सात दिन तक स्थिर भावसे गुग्गुडचा मन्दिरमें वास करेंगे। पृथिवीके समस्त तीर्थ हमारे साथ वहां उपस्थित रहेंगे। जो मानव भक्तिभावसे विन्दु तीर्थमें स्नान करके समाह पर्यन्त गुग्गुडचा मन्दिरमें बलराम तथा सुभद्राके साथ हमारा दर्शन करेगा वह हमारा सायुज्य लाभ करेगा। इस मन्दिरके दर्शनसे दर्शकोंका सब पाप विनष्ट होता है। सब देवता इसकी पूजा करते हैं। यह मन्दिर ब्रह्मतेजको अवगुणहन जैसा करनेसे ही गुग्गुडचा कहलाता है।

इसका विशेष प्रमाण नही मिलता—वह मन्दिर कितने दिनोंका पुराना है। उड़ीमाके लोग कहते कि महाराज इन्द्रयुन्की एक मन्त्रिणीका नाम गुग्गुडचा था, उन्होंने यह मन्दिर बनाया और उन्हींके नाम पर यह गुग्गुडचा कहलाया। महात्मा चैतन्यदेवने अपने शिष्यों और भक्तोंके साथ उस मन्दिरमें मार्जना की थी। आजकल भी रथयात्राकी बड़ी धूमधामसे जगन्नाथदेव गुग्गुडचा मन्दिरमें जा करके रहते हैं।

गुण्डित (स० खो०) गुण्डि वेष्टने कमणि क्त । १ धूलि धूरारित, धूलसे भरा हुआ । २ चूर्णकृत, चूर्ण किया हुआ ।

गुण्डियाली—बम्बई प्रान्तकी काठियावाड एजिन्सीका एक छोटा राज्य । इसको आधादो कोई १४६५ और माल गुजारी १०८३५, रु० ह । यह राज्य अङ्गरेजोंकी १४०८, रु० वार्षिक कर देता है ।

गुण्डियानी—बम्बई प्रान्तके कच्छ जिलेका एक गाव । यह मांडवोके निकट सागर तट पर बसा हुआ है । जनसंख्या काँडे ४०४६ होगी । एक ऊँचा भूमि पर बट वृक्षोंसे घिरा हुआ रावलपोरका मन्दिर है । १८१७ ई० को यह सेठ सुन्दरजी तथा जेठा शिवजी कर्तृक पुनर्बाग निर्मित हुआ । कहते हैं, कि ई० १४ वीं शताब्दीकी राधलने अपनी माताका हथेलीके फोड़ेसे जन्म लिया था, फिर लखाऊमें उल्लाने धर्मनाथके भक्तोंकी सतानिवाले मुसलमान संहार करके सुकान्ति अर्जन की । वर्षमें एक बार हिन्दू और मुसलमान वहा जाते और पत्थरके घोड़ों की, जो मन्दिरकी घाँरी और बने हुए हैं, फूलीको मालाए घटा आते हैं ।

गुण्डीकोनियाक—बम्बई प्रान्तकी काठियावाड एजिन्सी का ग्रामद्वय, यह दोनों गाव ग्रामने भामने मालेश्वरी नदीके उत्तर तथा दक्षिण तट पर भावनगरसे ६३ मोल दक्षिणपूर्व अवस्थित है । इनमें गुण्डो समधिक प्राचीन है । पहले वहाँ नागर ब्राह्मणोंका उपनिवेश था । आईन अकबरीमें इसको बन्दर और मौरत पहलदीमें बारा लिखा है । जनसंख्या प्राय १७३० है । गुण्डो खाड़ी के मुहाने पर एक प्रखरमय नौलकण्ठकी शिवमूर्ति है । कहते हैं कि उसकी पाण्डवने स्थापन किया था ।

गुण्ड भट्ट—तर्भापाके एक टीकाकार ।
गुण्ड (स० वि०) गुण कमणि यत् । १ गुणनोय, यह एक जिसको गुणा करना हो । २ प्रयुक्त गुणयुक्त, जिसमें अच्छे अच्छे गुण हो ।

“गुणः साधकः ।” (हि० की०)

गुण्डाड (स० पु०) यह एक जो गुणा किया जाय ।
गुतला (हि० पु०) एक प्रकारकी मकली, जो बगु भी कहलाती है ।

गुत्तल (गुडल)—बम्बईके धारवाड जिलेका एक कमरा । यह कडजगीसे ६ कोस पूर्वको पडता है । १८६२ ई० तक वहा सदन अदालत रही । समाहमें प्रति सोमवारको बाजार लगता है । गावमें सङ्गमसासे बना हुआ चूड़-शेखरका मन्दिर है । उसमें २४ और ८६ पत्थरोंके दो निखे हुए शिलाफलक लगे हैं । तालाबमें नहर खोद करके पानी लाया गया है । बाधके मुहाने पर पत्थरकी मेहराब बनी है ।

११०३ शककी श्रव सवत्सरको उत्कोर्ण जो कलचुरि शिलालिपि है, उसमें गुटमीलन नगरका नाम मिलता है । इन फलकमें लिखा है कि पठ कलचुरिराज यादवमन्त्रके अधीन (११०६-११८३ ई०) गुट भरदार उस नगरमें राजत्व करते थे । वह गुट भोलन नगर वर्तमान गुडल जैसा समझ पडता है । फिर १२३० ई०की देवगिरि यादववशोय २य सिहण प्रदत्त प्रयुक्ति पठनेसे मानूम करते कि गुटनायक जगदेवकी अनुमतिसे गुडल नगरके निकट उक्त शिलालिपि उत्कीर्ण हुई ।

गुत्ता (हि० पु०) १ लगान पर जमीन देनेका व्यवहार । २ लगान ।

गुत्य (स० पु०) गुप्त प्रयोदरादिवत् साधु । १ च्वार नाम का धानविशेष । २ गुडूची, गुरुच ।

गुत्य (हि० पु०) १ दुक्के नैचोंकी बुनावट । २ चटाई की बुनावटका नैचा ।

गुत्यक (स० लो०) गुच्छेन कायति गुच्छ कैक, प्रयोदरादि त्वात् साधु । य धिपर्ण, गठिवन ।

गुत्यमगुत्या (हि० पु०) १ उलभाक, फसाय । २ मिड त, लडाई ।

गुत्यो (हि० खो०) कइ वसुधोके एकमें गुप्तनेसे उत्पन्न गाँठ, गिरह ।

गुत्त (स० पु०) गुधते लणादिभि परिवेष्टते गुध म । १ य धिपर्ण हृष, गठिवन । २ स्तवक, घासका गुच्छा । ३ दात्रि शूद्र यष्टिकहार । गुत्त ६७० ।

गुत्तक (स० पु०) गुत्त स्वार्थे कन् । गुत्त ६७० ।
गुत्तकपुष्प (स० पु०) गुत्तक स्तवकीभूत पुष्प गुत्त, वसुधो । सप्तच्छदवृक्ष, एक तरदका पेड़ ।
गुत्तपुष्प (स० पु०) गुत्तकपुष्प ६७० ।

गुल्माह (सं० पु०) गुल्मस्य अर्धः, ६-तत् । चीबीशनर-
-हार ।

गुथना (हिं० क्रि०) १ कई चीजोंका तागिके द्वारा एकमे
करना । २ भट्टी सिलाई होना टाँकना । ३ एकका दूसरे-
के साथ लड़नेके लिये भिड़ जाना ।

गुथनी—विहारमें मारण जिलान्तर्गत एक नगर । यह
अक्षा० २६° ८' ४५' उ० और देशा० ५४° ५' पू०के
मध्य छोटी गण्डक नदीके पूव उपकूल पर और कृपरासे
२१ कीस उत्तरपूर्वमें अवस्थित है । यहां चीनी स्वच्छ
करनेके चार कल हैं । इस स्थानसे दूर दूर देशमें
चीनीकी रफतनी होती है ।

गुथुवाँ (हिं० वि०) जो गुथकर बनाया गया हो ।

गुथवाना (हिं० क्रि०) दूसरेके द्वारा गुथनका काम
-कराना ।

गुट (स० क्ली०) गौदते खेलति चलतीति यावत् अपान
वायुनेन गुट-क । १ मलत्यागहार, जिस रास्तेसे मल
बाहर निकलता है । इसका पर्याय—अपान, पाज, गुह्य
और गुदवर्त्म है । सुन्युतके मतसे गुह्यदेश पांच अङ्गुल
आयतका है । इसमें कई एक स्थूल अन्त्र अर्थात् मलां-
शयसे मलहार पर्यन्त विस्तृत मल बाहर निकलनेकी
प्रणालियां हैं । उन समस्त प्रणालियों वा स्थूल अन्त्र-
युक्त पञ्चाङ्गुल परिमित स्थानको गुट कहते हैं । गुह्य-
देशसे अर्द्धाङ्गुलसे कुछ अधिकको दूरी पर प्रवाहणी,
विमर्जनी और सस्वरणी नामकी तीन वली हैं । वे
तीनों वलियां चार अङ्गुल आयतके हैं । हाथीके तालुके
जैसे इसका वर्ण है । गुह्यदेशजात रोगके अन्तर्भागसे
आधा यव परिमित स्थानको गुटौष्ठ कहते हैं । अन्त्र देखा ।
(पु०) २ वलयाकार गुदस्थान । ३ गुह्यदेशके निकट-
में रहनेसे साधारणतः योनि शब्दके अर्थपर गुट शब्द
व्यवहृत होता है ।

गुटकार (हिं० वि०) गूदेदार, जिसमें गूदा हो । २ गुट-
गुदा, मोटा ।

गुदकील (सं० पु०) गुदे कील इव । अर्शरोग, बवासीर ।
गुदकीलक (सं० पु०) गुदकील एव स्वार्थे कन् । अर्श-
रोग, बवासीर ।

गुदकीलहन् (सं० वि०) गुदकीलं हन्ति हन्-कृिप् ।

गुदकीलनाशक, जिससे अर्शरोग नाश हो, जिससे बवा-
सीर अच्छा हो ।

गुदकुष्ठक (सं० पु०) शिशुका गुदज ताम्रवर्णं व्रणविशेष,
बच्चैश्चि पाखानिकी जगह होनेवाला एक सुख फोड़ा ।
यह मलके उपलेप वा खेदसे रक्त और कफके कारण गुद-
में उत्पन्न हो जाता है, इसका रङ्ग लाल है । खुजली
बहुत लगती है । फोड़े उसकी माटकाटोप और फोड़े
पूतन बतलाता है । (बागभट)

गुदगुदा (हिं० वि०) १ गूदेदार, मांसयुक्त । २ नरम,
जिसकी सतह दबानेसे दब जाय ।

गुदगुदाना (हिं० क्रि०) १ छोटे छोटे बच्चोंको प्रसन्न करने-
के लिये काँख या ठेहुनेमें हाथ टेकर शब्द करना ।
२ मनबहलाव । ३ चित्तको चलायमान करना ।

गुदगुदाहट (हिं०) गुदगुदी देखा ।

गुदगुदी (हिं० स्त्री०) काँख और पेट आदि मांसल
स्थानों पर अङ्गुली द्वारा सुरसुराहट वा मीठी खुजली ।

गुदगुदी—बम्बईके धारवाड़ जिलेका एक लुद्र ग्राम । यह
हांगलसे ५ मील उत्तरपश्चिम पड़ता है । आवादी कोई
२३७ है । यहां कल्पका एक मन्दिर है । उसमें १०३८
और १०७२ ई०के दो शिलालेख लगे हैं ।

गुदग्रह (सं० पु०) गुदं तद्व्यापारं गृह्णाति ग्रह-अच-
६-तत् । १ उदावर्त रोग । कोष्ठवद्धका रोग । उदावर्त देखा ।
२ पायुवेदना । मलहारमें दर्द ।

गुदजघ्न (सं० पु०) कटुशूरणं जङ्गली जमीकन्द ।

गुदजारि (सं० पु०) देवताडहृत्त, राम वांस ।

गुदड़—१ गुदड़ी, संन्यासियोंके पहननेका वस्त्र । २ सम्प्र-
दाय विशेष, ब्रह्मगिरि इस सम्प्रदायके प्रवर्तक रहे ।
लोगोंके कथनानुसार गोरक्षनाथने ब्रह्मगिरिको मन्त्र न
देकर कर्णकुण्डलादि प्रदान किये थे । ब्रह्मगिरिने भी
गुदड़ प्रभृतिको इसे व्यवहारके लिये दिया । ये मदा
गिरुआ वस्त्र परिधान करते हैं, इनके एक कानमें कुण्डल
और दूसरे कानमें श्रीधड़के पदचिह्नित ताम्रके गद्दी
रहती हैं । ये अपने कुण्डलोंको खेचरीमुद्रा कंचा करते
हैं । ये हाथमें धूपदानों लेकर और उसमें धूप जलाते हुवे
इधर-उधर भिक्षाके लिये बाहर निकलते हैं । किसी
संन्यासीकी मृत्यु होने पर वे उसकी अन्त्येष्टिक्रिया
करते हैं ।

गुदडिया (हि० पु०) गुदडी पहनने वा ओढनेवाला ।
गुदडी (हि० पु०) फटे बुधे वस्त्रका बनाहुवा ओढना
या विधानन ।

गुदडीवाजार (हि० पु०) जोषे पदार्थके विक्रिका
वाजार ।

गुदनहारी (हि०) गो० नारी शब्द ।

गुदना (हि०) गो० शब्द ।

गुदनी (हि०) गो० शब्द ।

गुदपरिणद (सं० पु०) ऋषिविशेष, एक ऋषिका नाम ।

गुदपाक (सं० पु०) गदस्य पाक, ६ तत् । गुदस्थानका
पाकविशेष, पाखानेकी जगहका पकाय । अतिशय अती-
सार होनेसे वह रोग उठता है । इससे पीव बहा
करता है ।

सुश्रुतके मतमें बालकको गुदपाक रोग उपस्थित होने
से पित्तत्र क्रिया और पान तथा शालिपनमें रसाञ्जन व्यव-
हार करना चाहिये । (शाश्वर १० अध्याय) कुपय सेवन
कारी व्यक्तिको पित्तसे गुदपाक रोग निकलने पर पित्त
नाशक द्रव्य सेवन और उसके साथमें अतुवासन विधेय
है । इस रोगमें वायुका योग रहनेसे दधिमण्ड, मद्य
तथा शिल्कके साथ तैल पाक करके पिचकारी लगाते हैं ।
चौरणो मूलके साथ दुग्ध पाक करके पौनेसे भी उपकार
होता है । गुदपाकमें बहुत खून गिरने या वायु न होनेसे
पिच्छिल वस्त्रिप्रयोग करना चाहिये । (सुश्रुत चर्मा १००)

गुदभ्रश (सं० पु०) गुदस्य गुदमामस्य भ्रशः, ६ तत् ।
रोगविशेष, एक बीमारो । रुच तथा दुर्बल व्यक्तिके प्रथा
हून एवं अतीसार द्वारा मलद्वारका जो मांस बाहर
निकल जाता, गुदभ्रश कहलाता है । (सुश्रुत चर्मा ११५)

इस रोगकी चिकित्सा करनेमें पहले बहिर्गत गाडो
तथा मांस छुताऊ तथा शिब प्रथया स्वेद प्रयोग करके
गुदमध्य पट्टा घेना चाहिये । फिर मलद्वार चर्म द्वारा
बांधा जाता है । चमड़े का जो भ्रश मलद्वारके छिद्रको
भवरण करता, उसमें एक छेद रहता है । वायु नि म
रणके निय वार वार स्वेद प्रयोग करना उचित है ।

दुग्ध, महापद्ममूल, चन्द्रगन्ध मूषिकका देह पर
वातत्र पोषध मन्त्रके साथ तैल पका करके पौने और
मगानेमें व्यवहृत होता है । इसमें कटुसाध्य गुदभ्रश

रोग भी शरीरग्व हो जाता है । (सुश्रुत चिकित्सा ११५०)
अतीसार रोगमें गुदभ्रश उभरनेसे मधुर एवं श्वस
योगमें तैल वा घृत पाक करके लगाते हैं ।

(सुश्रुत चर्मा १०५०)

गुदमा (हि० पु०) एक तरहका नर्म और मोटा कम्बल ।
यह ठण्डे पहाडी देगोंमें प्रयुक्त किया जाता है ।

गुदहना (फा० क्रि०) १ त्याग करना, अलग रहना ।
२ निवेदन करना ।

गुदरिया (हि०) गुद शब्द ।

गुदरो (हि०) गुद शब्द ।

गुदरेन (हि० स्त्री०) १ पटा हुआ पाठ भनी भाति
सुनाना । २ परीक्षा, इम्तदान ।

गुदरोग (सं० पु०) गुदस्य रोग, ६ तत् । गुदस्थानमें
उत्पन्न एक प्रकार रोग, पाखानेको जगह होनेवाली कोई
बीमारी । शातातपके मतानुसार देवालय भयवा जलमें
पेशाब करनेके पापमें जन्मान्तरको गुदरोग उठता है ।
यह उमो पापका चिह्नस्वरूप है । एक मास पर्यन्त देवा-
र्चन तथा मोदान करके एक प्राजापत्य यज्ञ करनेसे उस
रोगका प्रतीकार होता है ।

भगन्दर और अशो पादि गुदजात रोगोंका अन्यस्य
कारण तथा प्रायश्चित्त है । इससे मालूम पड़ता है
शातातपने जो गुदरोग निवा, वह भगन्दर भादि रोगोंसे
भलग है । परन्तु प्रचलित भिषग्शास्त्रमें गुदरोग नामका
कोई पृथक् रोग लक्षित नहीं होता ।

गुदवर्त्म (सं० स्त्री०) गुदरूप वर्त्म । मलद्वार, जिध
रास्त्रे से मल निकलता है ।

गुदस्तम्भ (सं० पु०) गुदस्य तद्व्यापारस्य मलनि सार-
णस्य स्तम्भः, ६ तत् । मलनि सारण प्रतिरोधक रोग-
विशेष । यह रोग जिममें मल कठिनतामें निकले ।

शातातपका मत है कि षष्ठीनिर्मे गमन करनेसे
गुदस्तम्भ रोग उत्पन्न होता है । एक मास पर्यन्त सुदृश
कमल द्वारा शिवजीको स्नान करानेसे इसका प्रतिकार
होता है ।

गुदा (सं० स्त्री०) गुद विकल्पे टाप । १ नाडोविशेष,
शरीरको समस्त नाटियां जो समान वायु द्वारा परस्पर
धातु स्याममें से जातो हैं उन्हींको गुदा कहते हैं ।

२ मलहार । ३ पक्षीविशेष, एक तरहकी चीड़िया ।
(*Loxia hypoxantha*)

गुदाङ्कुर (सं० पु०) गुदे अङ्कुर इव । अर्शरोग, बवा-
सीर ।

गुदाज (फा० वि०) गूदेदार, मांससे परिपूर्ण ।

गुदाना (हिं० क्रि०) गोदनेकी क्रिया कराना ।

गुदाम—जहां पर एक तरहके अनेक द्रव्य रखे जाते हैं,
गोला । 'गुदाम' शब्दकी उत्पत्तिमें कुछ मतभेद देखा
जाता है । किसीके मतसे 'Godam' शब्दका अपभ्रंश
और किसीके मतमें मलयभाषा 'गदोङ्ग' शब्दसे 'गुदाम'
निकला है । जिस घरमें माल रखा जाता है, तामिल
भाषामें उस घरकी 'किटशु' और तेलङ्ग भाषामें 'गिटङ्गि'
कहते हैं । सिंहलमें भी उपरोक्त शब्द 'गुदाम' नामसे
व्यवहृत होता है । इसीसे मालूम होता है कि तामिल
और तैलङ्गसे ही अपभ्रंश गुदाम शब्द निकला है ।

गुदामय (सं० पु०) अर्शरोग ।

गुदामयहर (सं० पु०) कटुशूरण, जङ्गली जमीकन्द ।

गुदार (हिं० वि०) गूदेदार, जिसमें अधिक गूदा हो ।

गुदा (फा० वि०) नदी पार होनेकी घाट ।

गुदारा (फा० पु०) नौका द्वारा नदी पार होनेकी क्रिया,
उतारा ।

गुदियात्तम—मन्द्राजके उत्तर अरकाट जिलेका तालुक ।

यह अक्षा० १२° ४२' तथा १३° ५' उ० और देशा० ७८°
३५' एवं ७८° १६' पू० मध्य अवस्थित है । क्षेत्रफल
४४७ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः १८५६६५ है ।
इसमें एक शहर और १८३ गांव आवाद है । मालगुजारी
और सेस काई ३२७५०० है । पालार नदीके उत्तर तटको
इसकी भूमि फैली हुई है । पश्चिम विभागमें पहाड़ है ।
सुखे सटीमें बालू मिली है ।

गुदियात्तम—मन्द्राजके उत्तर अरकाट जिलेमें गुदियात्तम
तालुकका सदर । यह अक्षा० १२° ५८' उ० और देशा०
७८° ५३' पू०में रेलवे स्टेशन तथा पालार नदीसे कोई
३ मील उत्तर पड़ता है । जनसंख्या प्रायः २१३३५ है ।
१८८५ ई०को यहां मुनिसपालिटो हुई । सड़के अच्छी
हैं । प्रधान व्यवसाय कपड़ेकी बुनाई है । गुड़, चमड़ा,
इमलो, तम्बाकू और घी खूब विकता है । प्रत्येक मङ्गल-
वार मवेशियोंके बाजारका दिन है ।

गुदियारा (फा०) गुदकारा देखो ।

गुदी (सं० स्त्री०) गुद-डीष् । वह स्थान जहां नौकादि
सरम्भत की जाती हैं ।

गुदोगर—बंबई प्रान्तके कनाड़ा जिलेकी एक जाति ।
इनकी संख्या प्रायः ३८० है । यह सिरसी, सिद्दापुर,
होनावाड़ और कुमतामें कुछ कुछ मिलते हैं । दूसरा नाम
चितार है । प्रत्येक नामके पीछे 'मेठी' उपाधि लगता
है । गोवासे पोतगीज राज्य स्थापित होने पर यह कनाड़ी
आये । उनके क्षत्रिय होनेका दावा किया जाता है ।
किन्तु ब्राह्मण यह बात नहीं मानते । इनकी घरू बोलो
कनाड़ी है । परन्तु नमुद्र तट पर रहनेवाले कोङ्कणी भी
बोलते हैं । पुरुष शिल्पी होते भी चञ्चल, अमितव्ययी, और
आलसी हैं, अपने काम पर ध्यान नहीं देते । यहां चन्दन,
हाथो दाँत और आवनूस पर अच्छी नक्काशी की जाती
है । प्रधान उपजोविका नक्काशी और रङ्गरेजो है । यह
हाविग ब्राह्मणोंको छोड़ करके दूसरेका बनाया भोजन
ग्रहण नहीं करते । महिसुरस्य शृङ्गेरिमठके आचार्य इनके
गुरु हैं । अपने कुलपुरोहित हाविग ब्राह्मणोंका यह
बड़ा सम्मान करते हैं । कन्याओंका विवाह ६ और ११
वर्षके बीच होता है । बालकोंकी कनाड़ी भाषा सिख-
लायी जाती है ।

गुदुरी (हिं० स्त्री०) १ मटरकी फली । २ एक तरहका
कीड़ा जो प्रायः मटर और चनेकी फसलको नष्ट कर
देता है ।

गुदौठ (सं० पु०) गुदस्य ओष्ठ इव । १ गुदाके अवयव
विशेष । २ मलहारका मुख ।

गुहा (हिं०) १ गुहा देखो । २ हृत्तकी मोटी डाल ।

गुही (हिं० पु०) १ किसी फलके मध्यका गूदा, गिरी ।
२ सिरका पिछला भाग, ल्यौड़ो । ३ हथेलीका मांस ।

गुधित (सं० वि०) परिवेष्टित, घिरा हुआ ।

गुधेर (सं० लि०) गुदयति वेष्टयति रक्षयति इत्यर्थः ।

गुध-एरक्, रक्षक, बचानेवाला ।

गुन (हिं० पु०) गुण देखा ।

गुनगुना (हिं० वि०) नाकसे बोलनेवाला ।

गुनगुनाना (हिं० क्रि०) १ गुन-गुन शब्द करना ।

२ अस्पष्ट स्वरमें गाना । ३ नाकसे बोलना ।

गुनतकल—मन्दाज प्रान्तके अन्तपुर जिलेमें श्रुतो तातुक
 का गाँव। यह अक्षा० ७५ ८' उ० और देशा० ७०
 २३ पु०में अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय ६०५८ है।
 यह रेलवेका बड़ा जडगन है। दक्षिण पश्चिमकी उच्च
 भूमिपर प्राचीन कालके यन्त्रादि आविष्कृत हुए हैं।
 गुनवन्त (स० त्रि०) गुणो। जिसमें कोई गुण हो।
 गुनहगार (फा० वि०) १ पापो। २ दोषो, अपराधो।
 गुनहगारी (फा० स्त्री०) १ पाप। २ दोष, अपराध।
 गुनहो (फा० पु०) अपराधो गुनहगार।
 गुना (हि० पु०) एक प्रलय, जो सिर्फ मख्यावाचक
 शब्दोंके आखिरमें आता है। यथा दुगुना, चीगुना, दस
 गुना और बसोगुना। २ गुणा या गुणन।
 गुना—मध्य भारतके खालियर राज्यमें ईसागत जिलेका
 शहर और अजरजी कावनी। यह अक्षा० २४ ३८' उ०
 और देशा० ७७ १८' पु०में आगरा बवई महक और ग्रेट
 इन्डियन पेनिनसुला रेलवेकी बीना वारा शाखापर अव-
 स्थित है। जनसंख्या प्राय ११४५२ है। पहले वह
 एक लुट्टयाम था, परन्तु १८४४ई०की कावनी पटनेसे बढ
 गया। शहरमें खैराती शफा खाना, रियासतो डाकघर,
 सराय और स्कूल है। कावनी नगरसे कोई एक मील
 पूर्व पडती है।
 गुनाह (फा० पु०) दोष, पाप।
 गुनाहगार (फा० वि०) १ अनिष्टकारी, बुराई करनेवाला।
 (पु०) २ दुष्ट।
 गुनाहो (फा० पु०) १ पापकरनेवाला। २ दोषो,
 अपराध करनेवाला।
 गुनिया (हि० पु०) गुणधान, वह मनुष्य जिसमें गुण ही।
 (स्त्री०) २ राजी, बढइयों प्रभृति कारिगरीके कोनेकी
 सीध सापनका यन्त्र। (पु०) ३ नोकाकी गुण खोचने
 वाला मझाह।
 गुनी (हि० वि०) १को धना।
 गुनी—सिन्धु प्रान्तके हैदराबाद जिलेका तातुक। यह
 अक्षा० २४ १०' तथा २५ १०' उ० और देशा० ६८
 २०' एष ६८ ५०' पु० मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ८८६
 वर्गमील और लोकसंख्या प्राय ८१५०६ है। इसमें एक
 शहर और १५८ गाँव आवाद हैं। मानसुजारी और

सेम २। लापसे ज्यादा पडती है। हमवार मंडानमें
 निर्फ दो छोटे छोटे पहाड, है।
 गुनुपुर—मन्दाज प्रान्तके विजगपटम जिलेकी एजन्सी
 तहसील। यह मन्नाम सीमा पर पडती है। क्षेत्रफल
 ६०० वर्गमील और लोकसंख्या प्राय ११३६८२ है। इस
 में ११४८ गाँव आवाद हैं।
 गुनोवर (फा० पु०) एक तरहका टेवदार या मनोवर।
 इसका पेड उत्तर पश्चिम हिमालय पर्वत पर ६००० से
 १०००० फुटकी ऊँचाई पर होता है। इसके काष्ठ बहुत
 मजबूत और कड़े होते हैं। चिनगोजा नामक मेषा इसी
 वृक्षका फल है।
 गुन्यफल (स० पु०) नारिकेलवृक्ष।
 गुन्दगड—हिमालयकी पश्चिम सीमा पर अवस्थित एक
 पर्वत। अन्नरेजोंके आनेके पहलने इस पर्वत पर लुटेरेका
 दल रहता था। इस पर्वतके उत्तर हरिपुरके समुख
 भागमें सुरियाम है। विद्रोहके समय मेजर एवट इसी
 पर्वत पर आ छिपे थे।
 गुन्दगुच्छक (स० पु०) गुच्छकरुद्र।
 गुन्दल (स० पु०) गुन् इति शब्देन दन्त्यतःसी दल णिच्
 कर्मणि अच्। महर्लधनि, मृदङ्गका शब्द।
 गुन्दान (स० पु०) एक तरहका पत्थो, तीतर, दुराज।
 गुन्दिकोटा—दक्षिणात्यमें एक नगर और दुर्ग। यह दुर्ग
 बडापाके मध्यस्थलमें अक्षा० १४ ५१' उ० और देशा० ७८
 २२' पु०के मध्य पर्वतशृङ्गके ऊपर अवस्थित है। इसके
 दक्षिणकी ओर पर्वत फोड कर पेन्ना नदी कहापा
 जिना हो कर प्रवाहित है। १८०० ई०की निजामने
 यह जिन्ना अन्नरेजोंकी दिया था।
 गुन्द्र (स० पु०) गुद्रि कर्मणि अच्। १ एक तरहकी
 घाम। २ मूलयुक्त हृहत् लण, जड्याली बडी वही
 घाम। इसका गुण कषाय मधुररस, शीतवीर्य, पित्तघ्न,
 रक्तनाशक, मूत्रकृच्छ, स्नायु, सूत्र और रजगोधक है।
 (भावप्रकाश पु १ म भाग)
 गुन्द्रमूला (स० स्त्री०) गुन्द्रम्य मूल मिव मूल यस्या
 बहुमी०। १ एकका लण, एक तरहकी घाम। (भा
 वप्रकाश पु १ भाग) २ मुस्तकलण।
 गुन्द्रा (स० स्त्री०) गुन्द्र तकाहृगमस्यस्य मूले गुन्द्र

अचटाप। १ एरका हण। २ मद्रमुस्तक, एक तरहकी सुगन्धित घास। ३ प्रियङ्गु वृक्ष, यह औषधिक काममें लाया जाता है। ४ गविधुका, एक तरहकी घास। ५ देवधान्य। ६ रोचनिका। ७ गुडुची। ८ गिरीपत्र। ९ टर्भ कुश। गुन्द्राल (मं० पु०) गुन्द्रं मिथ्यावचनं आलार्त्त आ-ला-क। एक तरहका पत्नी, चकोर।

गुना (गना) वेगम, एक शाहजादी। यह नवाव अली कुली खाँकी लड़की थीं। पहले उनकी शादी नवाब सफदर जङ्गके बेटे शुजा उद्-दौलाके साथ हुई थी, परन्तु पीछेकी वजह से इमदाद-उल्-मुल्क गाजो-उद्-दौनको ब्याही गयीं। धौलपुरके पास नूराबाद नागमें उनकी कब्र है। वह अपने काम और जहनके लिये मशहूर है। कविता बहुत उत्साहपूर्ण होती थी। उन्होंने हिन्दी भाषामें गाने बनाये, आज भी गाये और अच्छे समझे जाते हैं। १७७५ ई०को उनका मृत्यु हुआ।

गुनी (हि० स्त्री०) एक तरहका कोड़ा। इसका व्यवहार ब्रजमंडलमें होता है। होलीके अवसर पर स्त्री पुरुष इसी कोड़ेसे एक दूसरेको मारते हैं।

गुनौर—युक्तप्रदेशके वदाज जिलेकी उत्तरपश्चिम तहसील। यह अक्षा० २८° ६' तथा २८° २८' ३०' और देशा० ७८° १६' एवं ७८° ३८' पू०के मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ३७० वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः १६२२८१ है। एक नगर और ३१३ ग्राम प्रतिष्ठित हैं। मालगुजारी कोड़े २१६००० और शेष २६००० रु० है। जङ्गल बहुत पड़ता है।

गुनौर—युक्तप्रदेशके वदाज जिलेकी गुनौर तहसीलका सदर। यह अक्षा० २८° १४' ३०' और देशा० ७८° २७' पू०में अवध रुहेलखंड रेलवेके बवराल स्टेशनसे ४ मील दक्षिण पड़ता है। जनसंख्या प्रायः ६६४४ है। अकबरकी अमलदारीमें गुनौर किसी महाल या परगनेका सदर था। मठोके भोपड़े बहुत, परन्तु पक्के मकान थोड़े हैं। १८५६ ई०की २० वीं धाराके अनुसार शहरका इन्तजाम होता है। बवराला स्टेशनको गुनौर ही करके बहुत माल जाता है।

गप् (सं० क्रि०) १ बचाना, रक्षाकरना, (पु०) २ न्यायकरनेवाला, रक्षाकरनेवाला, विष्णु।

गुपचुप (हि० स्त्री०) १ एक तरहकी मिठाई जो मुखमें देनेसे ही गल जाती है। इस तरहकी मिठाई खोबे और मैदे या मिंघाड़ेके आटेकी घीमें पका कर और शीरेमें डाल कर बनाई जाती है। २ लड़कीका एक खेल। इसमें एक लड़का अपना गाल फुलाता है और दूसरा लड़का उस पर घूंसा मारता है। ३ एक प्रकारका खिलौना।

गुपाल (हि०) गोपाल देखो।

गुपिल (सं० पु०) गोपायति गुप-इलच्-क्विच्। राजा।

गुप्त (सं० त्रि०) गुप कर्मणि क्त। १ रक्षित, जिसकी रक्षा की गई हो। इसका पर्याय—दात, प्राण, रक्षित, अहित और गोपयित है। २ छिपा हुआ। ३ गूढ़, जिमके जाननेमें कठिनाता हो। (पु०) ४ मद्रत। ५ वैश्याकी उपाधि। ६ परमेश्वर। ७ भारतवर्षके विख्यात प्राचीन राजवंश। गुप्तराजवंश देखो।

गुप्तक (मं० पु०) १ राजा जयद्रथके एक सेनापति। (मात १ २६४ च०) (त्रि०) गुप्त स्वार्थे कन्। २ गुप्त। (पु०) ३ वीद्वीकी एक शाखा।

गुप्तकथा (सं० स्त्री०) गुप्ता चासी कथा चेति कर्मधा०। गूढ़वाक्य, वह बात जो सभीके सामने प्रकाश नहीं की जाती।

गुप्तकाल—गुप्तराजाओंका प्रतिष्ठित एक स्वतन्त्र अर्थ। यह गुप्तनृपतिभुक्ति, गुप्तसंवत्, गुप्तकाल प्रभृति शब्दों द्वारा भी उक्त हुआ है। यह स्थिर करनेके लिये, किस समय वह गुप्तसंवत् चला पाश्चात्य और देशीय भारत-प्रेमिक प्रधान प्रधान प्रायः सब प्रवृत्तत्वविद्वेन लेखनी उठायी है। परन्तु बहुत दिनोंके अशेष अनुसन्धान और असाधारण अध्ययनसे भी कोई असन्दिग्ध प्रकृत गुप्तकाल ठहरा न सका। थोड़े दिनों हुए बड़े चिंताके बाद सर्ववादि सम्मत प्रकृत गुप्तकाल निर्णीत हुआ है। अब लिखते हैं, कैसे वत्त गुप्तकाल ठहराया गया—

१०३० ई०को अल वेरुनीने अरबी भाषामें भारतवर्षके विवरण सखन्ध पर एक पुस्तक बनायी थी। फरसीसी विद्वान् रेनोने सबसे पहले उस ग्रन्थका फारसी अनुवाद प्रकाशित किया। (१-) उस अनुवादका तात्पर्य यह है—भारतके साधारण लोग श्रीहर्ष, विक्रमा-

दित्य, शक वज्रभी और गुप्तके नामसे सम्बन्धका व्यवहार करते हैं। शक सम्बन्धसे २४१ वर्ष पीछे वज्रभी सम्बन्ध चला है। गुप्तकालके विषयमें ऐसा है—गुप्ता नामके निडर और दुर्दान्त कुक्षु लोग थे उनके लक्ष्मणके बादसे ही यह सम्बन्ध चला है। गुप्तोंके बाद वज्रभी सम्बन्ध चला। इसी तरह जिस समय यजुर्जिदका सम्बन्ध ४०० था, उस समय श्रीरुप सम्बन्ध १४८८, विक्रमसम्बन्ध १०८८ शक ८५३, वज्रभी और गुप्तकाल ७१२ था।

फरोमीसी विद्वान् रैनीकी उक्त पुस्तककी पृष्ठ कर पहिले पहिल प्रवृत्तस्वविदोने यह निर्णय किया कि, जब गुप्तवशके ध्व मके बाद शकसम्बन्ध (२४१ ३१-१८ ई०) से गुप्तकाल प्रारम्भ हुआ है, तब यह बात निश्चित है, कि गुप्तराजगण उससे बहुत पहले विद्यमान थे। गुप्त मन्त्राटोके जितने भी अनुग्रामन पत्र आविष्कृत हुए हैं, उनमेंसे अधिकांशमें किसी निर्दिष्ट सम्बन्धके अङ्क लिखे हुए हैं। अब उन अङ्कको प्रथम किम समयसे गणना प्रारम्भ होती है, इसका निर्णय करनेके लिये सभीको बड़ी भारी समस्या में पड़ना पड़ा है। सबसे पहले जिम्स प्रिन्सप साहबने फहाउम स्तम्भ पर खुदे हुए स्कन्दगुप्तके शिलालेखमें इस तरहके १३३ अङ्क देखे थे, उन्होंने भ्रमसे उस लिपि को स्कन्दगुप्तकी समसामयिक न लिख कर उनकी मृत्युके १३३ वर्ष पीछेकी लिखा है। (२)

इसके बाद टमस साहबने फरोमी विद्वान्के मर्मानुसार और ८४५ वनभो सम्बन्धके वैराचलके शिलालेखके अनुसार ऐसा स्थिर किया—वनभो सम्बन्ध ई० स० ३१८ से प्रारम्भ हुआ है। यह सम्बन्ध सम्भवतः गुरुसेन द्वारा चलाया गया है। इलाहाबाद, जूनागढ़ और भितरोंके शिलालेखमें वर्णित गुप्तराजाधोनि उक्त समयमें पहिले राज्य किया था। शकराजाधोके बाद ही सोराट्टमें गुप्तराजाधोका एकाधिपत्य हुआ था। (३)

(१) M. Re naud's Fragments Arabes et Per an p 175 ff

(२) Journal of the Asiatic Society of Bengal Vol VII p 16-37

(३) Journal of the Royal Asiatic Society, Vol X11 (O S) p 111

इसके उपरान्त उक्त टमस साहबने १८५५ ई०में गुप्तकालके विषयका एक निबन्ध प्रकाशित किया, जिसमें अपने लासिनके मत (४)का अचल वन कर १५० से १६० ई०के भीतर भीतर (५) गुप्तराजाधोका अभ्युदयकाल स्थिर किया। परन्तु कुछ दिन बाद अपने इस मतकी बदल दिया और लिखा कि, गुप्तराजाधोके शिलालेखमें लकोर्ण स वत चोर शककाल दोनों एक ही है। (६)

१८४४ ई०में प्रधान प्रवृत्तस्वविद् कनिङ्गहामने भेनसाके बौद्धस्तूपके विषयमें एक बड़ी पुस्तक प्रकाशित की थी जिसमें लिखा था—“३१८ ई०से गुप्तराल प्रारम्भ हुआ है। मान ली जाता है रैनी साहबका अनुवाद ठीक नहीं, अथवा अबूहान (चलबोखनी) ही भ्रममें पड़ गये होंगे। गुप्तवशके ध्व मसे गुप्तकाल चला है, यह विन्कल प्रसम्भव है। क्योंकि इस बातकी इस नियमसे जानते हैं कि, इसकी प्रथी या हठी शताब्दोमें गुप्तराजगण राजत्व करते थे (७) किन्तु इन्होंने थोड़े दिन बाद ही इस सिद्धान्तकी बदल दिया और पीछे गहरी गवेषणाके बाद स्थिर किया कि, १६६-६७ ई०में गुप्तसम्बन्ध प्रारम्भ हुआ है। (८) इसी तरह फिज एडवर्ड हालने (वापु टयगास्लीकी सहायतासे) १८०-८१ ई०से और भारतके सुपण्डित डाक्टर भाऊदाजोने ३१८ ई०से गुप्तकालका प्रारम्भ स्थिर किया है। भाऊदाजोके मतसे वनभोराज व शका अन्त होने पर कुमारगुप्त और स्कन्दगुप्त राजा हुए थे (९)। इसके प्रतिवृत्त और भी बहुतसे ऐतिहासिकोंने विपरीत मार्गका अचलम्बन कर गुप्तसम्बन्धके प्रारम्भकालके निर्णयका प्रयत्न किया है।

फार्गुसन साहबने १८६८ और १८८० ई०में गुप्तकालके विषयमें दो निबन्ध प्रकाशित किये थे (१०)। उन लेखों में आपने रैनी साहब द्वारा वर्णित अचलवेत्नीके मतकी

(४) Indische Alterthum kunde, Vol 11

(५) Journal of the Asiatic Society of Bengal Vol १५ IV p 371 ff

(६) Fleet's In scriptionum Indicarum, Vol III p. 32

(७) Gen Cunningham's Bhilar, Topes, p 138 ff

(८) Indian Fra p ०3 50

(९) Journal Bombay branch R A S Vol. VIII p 36 ff

अश्वान्त माना है। इनके मतसे ३१८-१८ ई०से गुप्तकाल प्रारम्भ हुआ है। इनका मत सम्पूर्ण अश्वान्त न होने पर भी कुछ ठीक है। इसमें सन्देह नहीं है। इसके बाद १८८४ ई०में बंबईके प्रसिद्ध प्रवृत्तत्वविद् रामकृष्ण-गोपाल भण्डारकरने अपने दक्षिणात्यके इतिहासमें इस गुप्तसंवत्की समालोचना की, जिससे स्थिर हुआ कि, शक सं० २४१ या ई० सं० ३१८से ही गुप्तसंवत् प्रारम्भ हुआ है (११)।

१८८७ ई०में गवर्मेण्टके आनुकूल्यमें फिलट साहवने कठिन परिश्रमसे पहलेके आविष्कृत गुजराजाओंके समस्त शिलालेखों और ताम्रशामनोंकी एकत्र प्रकाशित किया था (१२)। इन्होंने पूर्ववर्ती लेखकोंके मतोंकी एकत्र करके तथा उनका खण्डन कर स्थिर किया कि, ३१८-२० ई०से ही गुप्तसंवत् चला होगा। उसमें यह भी दिखाया कि, गैनी साहबका अनुवाद ठीक नहीं है। अलवरुनीके मूल अरबी भाषाके वृत्तान्तकी पढ़नेसे स्पष्ट मालूम होता है कि, उन्होंने—“गुप्तवंशके ध्वंससे गुप्तकाल प्रारम्भ हुआ”—यह बात कहीं भी नहीं लिखी है उन्होंने सिर्फ इतना ही लिखा है कि, गुप्तवंश दुर्बल और बलवान् था। इस वंशके लोप ही जानिके बाद भी जनसाधारण इनकी गणना करते थे। (१३)

फिलट साहवने शङ्कर बालकृष्ण दीक्षितकी सहायतासे शिलालेखोंके आधार पर गुप्तकालका इस प्रकार निर्णय किया है—

१. एरनके स्तम्भ पर खुदे हुए शिलालेखमें गुप्तसंवत् १६५ = शक सं० ४०६ लिखा गया है।

२. सहाय्या टाड द्वारा प्रकाशित वैरावलके शिलालेखमें बलभी सं० ८४५ = शक सं० ११८६ गत।

३. पण्डित भगवानलाल इन्द्रजी द्वारा प्रकाशित

वैरावलके शिलालेखमें बलभी सं० ८२७ = शक सं० ११६७ गत।

४. खेड़ासे प्राप्त ताम्रपत्रमें, बलभी सं० ३३० = शक सं० ८२६ और ८२७ गत।

५. नेपालसे पण्डित भगवानलाल हारा मंगरहोत मानदेवके (१४) शिलालेखमें, गुप्तसंवत् ३८६ = शक सं० ६२७ गत।

६. मोरवीसे प्राप्त जाहङ्गदेवके ताम्रशामन पर, गुप्तसं० ५८५ गत = शक सं० ८२६ और ८२७।

उपर्युक्त प्रमाणोंसे ज्ञात होता है कि, अलवरुनी द्वारा कथित २४१ शक, उनके मतसे गताब्द था। इस तरह शकसं० २४१ = गुप्तसंवत् ० और शकसं० २४२ = गुप्तसं० १ होता है। इसी तरह उन्होंने शक २४१ गत की और वर्तमान २४२ अर्थात् ३१८—२० ई०की गुप्तसंवत्का प्रारंभ काल बतलाया है। किन्तु यह नहीं बतलाया कि, उन्होंने गुप्तसंवत्की गताब्द न समझ कर चलिताब्द क्यों समझा है। हमारी समझसे यद्यपि उन्होंने अपने ग्रन्थमें गभीर गवेषणा, प्रगाढ़ अनुशीलन और पुनः पुनः अनुसन्धानका काफी परिचय दिया है, तथापि वे जिस सङ्कल्पमें उपनीत हुए हैं, वे भ्रमशून्य नहीं कहा जा सकता।

अलवरुनीने साफ लिखा है कि—विक्रम सं० १०८८, शक ८५३, और बलभी या गुप्तकाल ७१२-परस्पर समान हैं। इस प्रकारसे गुप्त सं० १ = शकसं० २४१ = विक्रम सं० ३७६ हुआ। इस जगह गुप्त सं० ० = शक सं० २४० हुआ। सुतरां जब २४१ शक गताब्द है, तब १ गुप्त सं० भी गत समझना चाहिये, ऐसी दृष्टामें फिलटके मतसे ३१८—२० ई०की छोड़ कर ३१८—१८ ई०की ही गुप्तसंवत्का प्रारंभकाल माना जा सकता है। इसके माननेका कारण भी है।

५८५ गुप्त गताब्दमें फाल्गुन मासकी शुक्लपञ्चमोके दिन मोरवीका ताम्रशासन उत्कीर्ण हुआ था। यह

(१४) फिलट साहवने मानदेवके शिलालेखकी ३८६ संवत्का बतलाया है, पीछे विचक्षण डाक्टर डोगेनो भी इन्हींके अनुवर्तों हुए हैं, Jour. A. S. of Bengal for 1889, pt. I. Table Col. 19.) किन्तु दोनोंकाही सिद्धान्त युक्तिविद्ध नहीं है।

(१०) Jour. Roy A. S. Vol IV. p 105 ff. and Vol. XIII p-281.

(११) R. G Bhandarkar's Early History of Dekan, p 99 ff.,

(१२) इस वृहत् ग्रन्थका नाम है—Corups Inscriptionum Indicarum, Vol III

(१३) Fleet's Inscriptionum Indicarum, Vol. p. III: 30.

ताम्रशासन सूर्य ग्रहणके उपलक्षमें प्रदत्त हुआ था। फ्लिन्ट माहयके मतसे ८०५ ई०में ७ मईकी यह ग्रहण हुआ था। उक्त ग्रहणके ८ मास ४ दिन बाद वह ताम्र फलक खोदा गया था। परन्तु ८२६ शक गताब्दमें भी कार्त्तिक या मार्गशीर्षमें, अर्थात् ८०४ ई०में १६ जूनकी भी ग्रहण हुआ था। यह ग्रहण उक्त ताम्रशासनके खोदे जानेसे ३ मास ४ दिन पहले हुआ था। ग्रहणके थोड़े समय बाद ही ताम्रशासन लिखे जानेकी बात है। विशेषतः पूर्ववर्ती सूर्य ग्रहणका उल्लेख न हो कर उक्त ग्रहणके पूर्ववर्ती ग्रहणका उल्लेख होगा, यह सम्भव नहीं हो सकता। सुतरा जय शक ८२६ गताब्द और गुप्त ५८५ गताब्द मिल रहा है। तब २४१ शक गताब्द = १ गुप्तकाल गत स्वीकार करना पड़ेगा।

गुप्त राजाओंके समस्त शिलालेखोंका मनन करनेसे ३१८ ई०से ही गुप्तकालका प्रारम्भ मानना पड़ता है। डाक्टर पिटर्सन, भाण्डारकर और ओल्डेनवर्गका भी ऐसा ही मत (१५) है। और भी नाना कारणोंसे मि० फिल्टका सिद्धान्त समीचीन नहीं ज चता है।

गुप्तकाशी—हिमालय प्रदेशके गढ़वाल जिलेके अन्तर्गत नागपुर विभागमें स्थित एक ग्राम। यहा गौर नदी आकर मन्दाकिनीके साथ मिली है। पुण्यधाम काशीचैतमें जिस प्राकर बहुत शिवलिङ्ग देखे जाते हैं, यह भी वैसे ही है। इस प्रकारसे शिवलिङ्गकी बहुलता और स्थान का माहात्म्य कहते हुए यहाके लोग कहते हैं—“जितने कङ्कर उतने गङ्गर”—अर्थात् यह स्थान शिवमय है। काशीधाममें जिस तरह विश्वेश्वर और भाग्येशीकी दो धाराओंसे पूजा होती है, उसी प्रकार यहा भी विश्वनाथ तथा यमुना और भागीरथीकी पूजा होती है। इन दोनों नदियोंका जल विष्णुनाथके मन्दिरके सामनेकी पुष्करिणीमें आकर गिरा है। इन मन्दिरको प्रात्यहिक सेवाके लिये गोरखालियोंने रुपये दिये हैं।

गुप्तगति (स० पु०) गुप्ता गतिर्यस्य, उड्डीनी० । १ गुप्त चर । (स्त्री०) गुप्ताचामी गतियेति कर्मधारय समास । २ गूढ़ गमन ।

गुप्तगन्धि (स० स्त्री०) एलवालुक, एक प्रकारका गन्ध द्रव्य ।

गुप्तगोदावरी—एक सुदूर नदी। यह बुन्देलखण्ड जिलेमें चित्रकूट पर तसे ८ मील दक्षिण पूर्व पहाडकी कन्दरासे निकलकर गोदाईनालामें गिरती है। इसके पवित्र जनमें स्नान करनेके लिये दूर दूर देखके मनुष्य यहा आते हैं। इस गुहामें नागरी अचरने लिखा हुआ एक शिलाफलक है।

गुप्तघाट—मरयूतीरम्य एक तीर्थस्थान। इसी स्थानसे रामचन्द्रने स्वर्गोत्थान किया। इसका वर्त्तमान नाम गोभारघाट जो फेयजावादमें अवस्थित है।

गुप्तर (स० द्वि०) गुप्तयरो यस्य, बहुव्री० । १ जिमको गुप्तचर हो । (पु०) गुप्तयासो चरयेति । २ दूतविशेष, जो किसी बातका चुपचाप भेद ले, भेदिया, जासूस ।

गुप्तदान (स० पु०) वह दान जिसे दाताके अतिरिक्त और दूसरा कोई जानने न पावे ।

गुप्तपत्र (स० पु०) मध्याह्न, एक प्रकारका कन्द ।

गुप्तपुष्प (स० पु०) सप्तपर्णवृक्ष, छतिवनका पेड ।

गुप्तवोज (स० स्त्री०) लण, घास ।

गुप्तमणि (स० पु०) कुमारियोंके क्रीडाविशेष ।

गुप्तमार दि० स्त्री०) १ इस तरहकी चोट देना जिससे शरीर पर कोई चिह्न दोख न पड़े, भीतरीमार । २ छिप कर किया हुआ अनिष्ट ।

गुप्तराजवंश—भारतवर्षका एक महावली और प्रबल पराक्रमी राजवंश। विष्णु, वायु, ब्रह्माण्ड और मक्षयपराणमें इस राजवंशका उल्लेख है। यथा—

‘सर्वे राघवपुगे रत्नो नामा भावालि सप्त वै ।

चतुर्गण प्रयाग च दार्कैत मयथ तथा ।

पतान् जगद्वान् सर्वान् भीषाने गुप्तराजम् ।’

ब्रह्मर्षे उपस हारवा” ।

नागवंशीय सात राजा मथुरापुरीका भोग करगे, किन्तु गुप्तवंशीय गण मथुरा, चतुर्गण, प्रयाग, अयोध्या और मगध इन सभी जनपदोंका उपभोग करगे।

वास्तवमें किसी समय गुप्तराजोंने सम्पूर्ण उत्तर-भारतमें अपना आधिपत्य विस्तार किया था और प्रबल पराक्रमी राजचक्रवर्ती रूपसे प्रसिद्ध थे, यह बात गुप्तराजाओंके समयके शिलालेखोंसे भली भाँति मालूम हो जाती है।

गुप्तवंशीयोंमेंसे एक वंश राजचक्रवर्ती और भारत-का सम्राट् हुआ था, तथा अन्य कई एक वंश केवलमात्र जनपदविशेषके राजा हुए थे। पहले गुप्तसम्राटोंका ही इतिहास लिखा जाता है।

गुप्तसम्राट् गुण—गुप्तगण किस जातिके थे, इसका कोई विशेष प्रमाण नहीं मिलता। अध्यापक उहलमनने गुप्त राजाओंकी वैश्य जाति बतलाई है; उनके मतसे 'गुप्त' वैश्यकी उपाधि है। परन्तु नाना स्थानोंके शिलालेखोंसे यह मालूम हुआ है कि, गुप्त नामके एक राजा हुए थे, वे ही इस वंशके आदिपुरुष थे। सम्भवतः इन्हींके परवर्ती गुप्तसम्राटोंने 'गुप्त' उपाधि व्यवहृत की होगी।

गुप्तवंशका उदयकाल ३१८ ई०से आरम्भ हुआ है। कुशन वंशके अधःपतनके समय उत्तरी विहारके लिच्छवि दक्षिणमें गङ्गाके उस पार तक अपना आधिपत्य जमाये हुए थे और उन्होंने पुरानी राजधानी पाटलीपुत्र भी अपने अधिकारमें कर लिया था। पहले ये लोग मगधके अजातशत्रुसे पूर्णरूपसे पराजित किये गये थे। चन्द्रगुप्त नामके एक स्थानीय प्रधान हिन्दूने लिच्छवियों लड़कीसे विवाह किया। अब ये पाटली-पुत्रके राज्यसिंहासन पर अभिषिक्त हुए और इन्होंने क्रमशः वहाँकी आस पासकी दूसरी दूसरी शक्तियों पर अपना आधिपत्य फैला दिया। इनका प्रभाव यहाँ तक बढ़ गया कि उसी समय अर्थात् ३१८ ई०से इन्होंने गुप्त नामका एक शक चलाया। इनका राज्य उत्तर तथा दक्षिण विहार, अवध, गङ्गाकी उपत्यका और प्रयाग तक विस्तृत था।

थोड़े समय राज्य करनेके बाद इन्होंने अपने पुत्र समुद्रगुप्त पर राज्यभार अर्पण किया। कहा जाता है कि समुद्रगुप्त सब राजाओंसे उद्योगी, सहनशील और उत्साही थे। राज-सिंहासन पर बैठनेके बाद ही इन्होंने समस्त भारतवर्ष जय करनेकी इच्छा की। इन्होंने अपने असीम उत्साहसे विन्ध्य पहाड़के जङ्गलों और कई एक हीपों पर अपना अधिकार जमाया। शीघ्रही ग्यारह राज्य इनके अधिकारभुक्त हुए।

इनकी ख्याति यहाँ तक फैल गई कि एक दिन लङ्काके अधिपति मेघवर्माने एक दूतको बहुतसे अमूल्य उप-

हार देकर समुद्रगुप्तके निकट भेजा था। दक्षिणमें इनका आधिपत्य बहुत कम स्थानों पर था।

भारतवर्षके उत्तरमें इनका प्रभुत्व बहुत बड़ा बढ़ा था। नौ राजा सिंहासन च्युत किये गये और उनके राज्य गुप्त राजामें मिला लिये गये। बहुत दूर तक इनका ऐश्वर्य तथा आधिपत्य फैल जानेके कारण ये अपनेकी चक्रवर्ती समझते थे। इसी गौरवसे इन्होंने प्राचीन अश्व-मधयज्ञ किया था। यह यज्ञ चक्रवर्तीके अतिरिक्त दूसरे राजा नहीं कर सकते थे।

विन्ध्यपर्वतके जङ्गलवासी असभ्य जातियाँ समुद्र-गुप्तके अधीन आ गईं। इस समय इनका राज्य पूर्वमें ब्रह्मपुत्र, उत्तरमें हिमालय, पश्चिममें अतलज, यमुना और वेतवा नदी तथा दक्षिणमें नर्मदा तक विस्तृत था।

राजा समुद्रगुप्त कवि, गायक तथा संस्कृतके मञ्चे प्रेमी थे। राजा दरवारके एक प्रसिद्ध कविने एक शिलालेखमें राजाका राज्य विवरण संस्कृतके गद्य तथा पद्यमें सुचारु रूपसे लिखा है।

यद्यपि समुद्रगुप्तकी मृत्युकी नियत तिथिका पूरा पता नहीं चलता है तथापि यह निश्चय है कि इन्होंने कमसे कम ५० वर्ष तक राज्य किया था। इनके मरनेके बाद प्रायः ३७५ ई०में इनके पुत्र चन्द्रगुप्त राजगद्दी पर बैठे। इनके पितामहका नाम भी यही होने कारण इन्होंने विक्रमादित्यको उपाधि ग्रहण की। इनका राजकार्यके संचालन की और विशेष ध्यान था जिससे इनके पूर्वजोंका यश लुप्त न हो। पश्चिममें समुद्रगुप्तका अधिकार केवल मध्य भारत तक ही था। इन्होंने सुराष्ट्रके शकसत्तपके प्रवल राजाओंकी जोतनेकी चेष्टा नहीं की। इस लिये द्वितीय चन्द्रगुप्तने ३८० ई०में ममस्त मालवा तथा सुराष्ट्र (काठियावाड़)के हीपोंकी अपने राज्यमें मिला लिया। अब इनका राज्य पश्चिममें अरब समुद्र तक फैल गया। क्षत्रपवंश जो एक समय भारतवर्षमें एक वलिष्ठ तथा प्रभावशाली वंश गिना जाता था, वह इनके इस आक्रमणसे सदाके लिये लुप्त हो गया।

दिल्लीके लौहस्तम्भमें इनके सांशामिक यशका वर्णन संस्कृत भाषामें अच्छी तरहसे किया गया है। कहा जाता है कि इन्होंने अपने आत्मबलसे समस्त भारतवर्ष

पर आधिपत्य जमा लिया था। बहुत दिन राजा करनेके बाद ४१३ ई०में इनका प्राणान्त हुआ।

चोनके शोहयावी फाहियनने चन्द्रगुप्तके राज्यका सम्पूर्ण विवरण अपने ग्रन्थ में लिखा है। ये ४०६ ई०में भारतवर्ष आय थे और छह वर्ष तक यहा रहे। इतने दिनोंमें इन्होंने चन्द्रगुप्तका मारा राज्य परिभ्रमण कर जो कुछ देखा या सुना उसे अपने किताबोंमें लिख लिया था। वे लिखते हैं—प्राचोन राजधानी घाटलोपुत्र अब भी एक उन्नति टगामें है और यहा बहुत मनुष्य वास करते हैं। इनके शरीर और बड़े बड़े शहर हैं। प्राय सभी मनुष्य मन्त्र और धर्मात्मा देख पड़ते हैं। राजधानीमें दो ब्राह्मण हैं जिनमें कममें कम छह या मात सौ विद्व मन्त्री रहते हैं। कोई भी बौद्ध उक्तव बहुत धूम धाममें किया जाता और उसमें बहुतसा खर्च होता है। राज्यकार्य शान्त और सुचारु रूपसे चलाया जाता है। प्रजा पर किमो तरफका कर निरूपित नहीं। यानी भी इच्छानुसार जहा तज्जा यात्रा कर सक्ते हैं। केवल कमीनकी मालगुजारी ही राज्यको आमदनी है। अपराधीको सागरण दण्ड दिया जाता और राजकर्म चारियोंका वेतन नियत है। अच्छे कुलके आदमी शिकार नहीं कर सकते, घयवा मङ्गली भी नहीं वेचने पाते। यह सब काम नीच जातियोंके नियत है। अच्छे आदमी किसी प्रकारका मादक द्रव्य तथा मांस, मङ्गलो और लज्जन नहीं खाते। शहरमें एक भी कसाई तथा शराबको दूकान नहीं दीख पड़ती। उस समय नेपालके पहाडी स्थानोंकी दशा शोचनीय थी। प्रसिद्ध यावन्तो शहर तथा कपिलवस्तु और कुली नगर का मन्नावशेष दृष्टिगत होता था।

समस्त राज्यमें शान्ति फैली हुई थी। चोर या डकैतका नामोनिशान भी न था। यात्रो भयरहित यात्रा कर सकते थे और विद्याको यथेष्ट उन्नति थी।

ई०के ५३ वर्ष पहले सज्जनके विक्रमादित्यके समय में मङ्गलका जैमा आदर था चौथो गताप्दीकी समुद्रगुप्त और उनके लडक द्वितीय चन्द्रगुप्तके समयमें भी मङ्गलकी वैसा ही स्थान मिला था।

द्वितीय चन्द्रगुप्तकी मृत्यु के बाद उनके लडके प्रथम

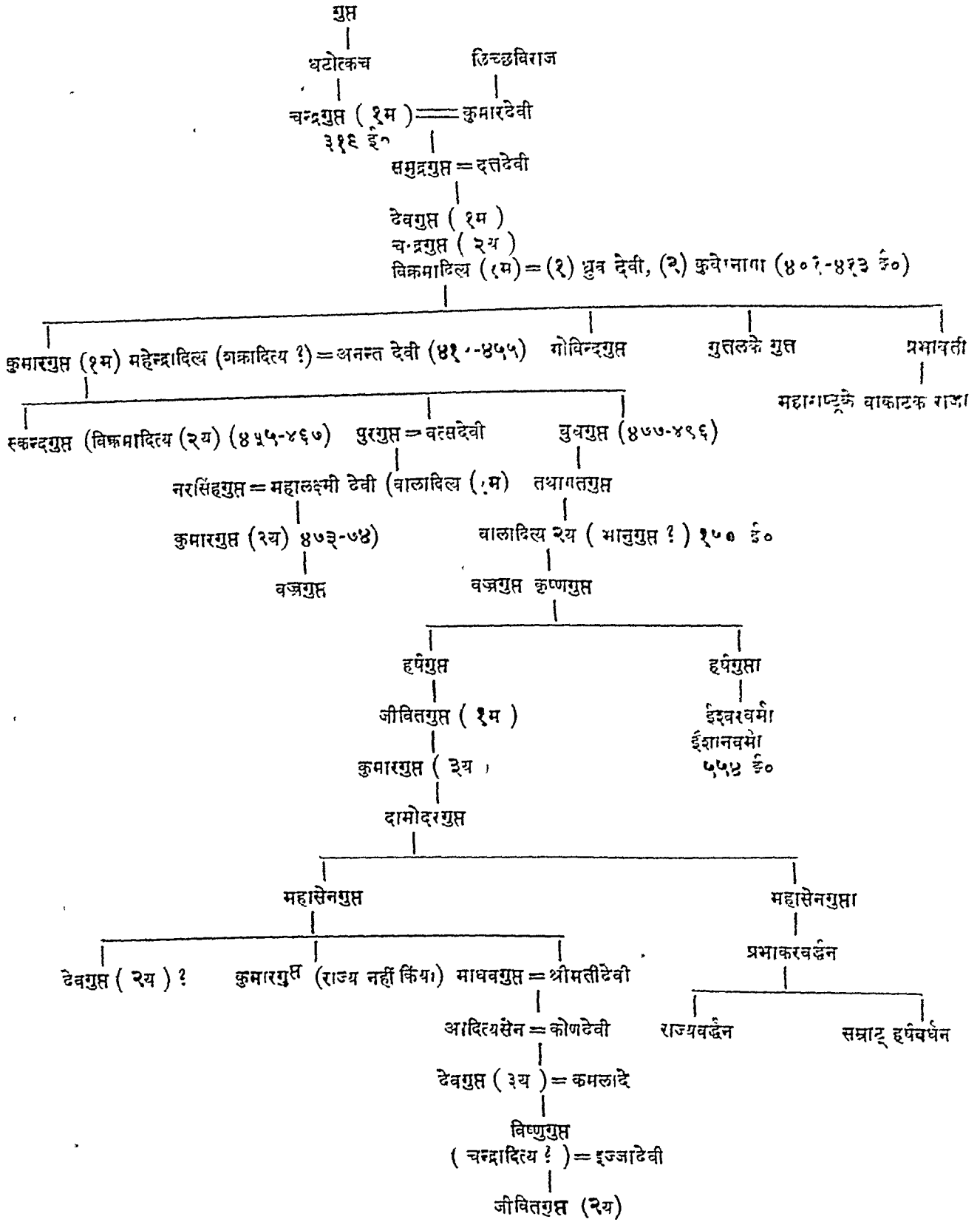
कुमारगुप्त सिंहासन पर अभिषिक्त हुए। इनके समयमें कोई विशेष घटना न हुई थी। ये भी पिताको नाई बड़े शूर वीर थे। राज्यके अन्तिम समयमें विदेशी आक्रमणकारियोंसे इन्हें बहुत कष्ट भिलना पडा था।

४३० ई०में खारिजसके श्वेनह्वय मध्य एशियासे रोमन राज्यके पूर्विय प्रदेशों पर धावा करनेके लिये चले, उस समय वहाके राजा थेटडोस थे। इस वार वे लौट जानेके लिये बाध्य हुए। योडे समयके बाद पुष्यमित्रव शकी महायता पाकर इन्होंने दूसरे रास्ते से चलकर भारतवर्ष पर चढाई की।

इस आक्रमणसे कुमारगुप्त बहुत क्षति ग्रस्त हुआ और राज्यका प्राय समस्त भाग नष्ट भ्रष्ट हो गया। गुप्तव शकी अवनति इसी समयसे थारम्भ हुई। इसी चिन्तासे कुमारकी मृत्यु हुई। बाद इनके पुत्र स्कन्दगुप्तने ४५५ ई०के अप्रेल मास राजसिंहासन पर आरोहण किया। इन्होंने अपने राज्यका खोया हुआ बहुतसा भाग पलटायो और पश्चिमीय तथा पूर्विय प्रदेश पर पुन अपना अधिकार जमाया था। इनके राज्यशासनके अन्त समय अर्थात् ४८० में इन्हें शत्रुओंमें बहुत तर्कलोफ भिलना पडी। इनकी मृत्युके साथ साथ गुप्तव शकी भी जाते रहे। इनके मरनेके बाद इनके भाई पुरगुप्त तथा दो और उत्तराधिकारो राज्यके केवल पूर्विय प्रदेशों पर शासन करते रहे।

पुरगुप्तके बाद इनके पुत्र नरसिंहगुप्त राजा हुए। इन्होंने और दूसरे दूसरे राजाओंकी महायतासे इनके प्रधान मिहिरकुलकी ५२४ ई०में कागमीरकी मार भगाया। इस तरह राज्यके बहुतसे भागों पर इन्होंने पुन अधिकार जमाया। इनकी मृत्युके बाद उनके पुत्र द्वितीय कुमारगुप्त ४७३ ई०में राज्यभिषिक्त हुए। इन्होंने 'सफ तोन चार वर्ष तक राज्य किया। इनके बाद इनके उत्तराधिकारो सुटगुप्त हुए। इनके समयके बहुतसे शिलालेखोंसे पता चलता है कि इन्होंने २७वर्ष (४७७-४८६) तक राज्य किया था। सुएन लुचगने मालूम होता है कि ये शकादित्यके पुत्र थे। दिनाजपुर जिलेके टामोदरपुर ग्रामके दो तास्त्रने खोमि पता चलता है कि बुध गुप्तका राजपुण्ड्रवर्धनभुक्ति या उत्तरीय और पूर्विय

गुप्तराजवंश



यहाँके स्त्री पुरुष दोनों ही हम्मगासे सुरसिक और सुवक्ता कष्ट कर प्रमिद हैं।

गुप्तो (हि० स्त्री०) एकतरहकी किरच या पतली तलवार जो छडीके अन्दर इस तरह रखी हुई रहती है कि आवश्यकता हो आने पर बाहर निकाली जा सके।

गुप्तोष्ठा (स० स्त्री०) वह उष्ठा जिममें मानो, 'जानो' आदि सादृश्यवाचक शब्द न हों।

गुप्ता (हि० पु०) १ फूटना, भङ्ना। २ फूलोंका गुच्छ।

गुफा (हि० स्त्री०) कन्दरा, गुहा।

गुफगू (फा० स्त्री०) वार्त्तालाप, बात चीत।

गुवरला (हि० पु०) एक तरहका छोटा कीडा जो मदा गोबर या मलमें रहता और उसे खाता है।

गुवार (अ० पु०) १ गट, धूल। २ मनमें दबाया हुआ क्रोध, दुःख या द्वेष।

गुवारा (हि०) श्वारा दश।

गुबिद (हि०) गोविन्द शब्द।

गुब्बा (स० पु०) रस्मीके मध्यमें डाला हुआ फन्दा।

गुब्बाडा (हि०) गुब्बारा शब्द।

गुब्बारा (हि० पु०) लव आकारकी कोई चीज जिसमें गर्म वायु या किसी प्रकारकी वाष्प आदि टिककर आकाश में उड़ती है। यह रेशम अथवा और दूसरे तरहके चस्त्र के यैलेमें रबरकी वार्निश चटा कर बनाया जाता है और उसके वायु निकलनेका मार्ग बन्द कर दिया जाता है। उस यैलेके नीचे एक बडा सन्दूक या खटोला आदमीके बैठनेके लिये बांध दिया जाता है। २ गुब्बारेके आकारका एक बडा गोला जो फागजका बना हुआ रहता है। इसके नीचे तेलसे भौंगा हुआ कपडा जला कर रख दिया जाता है। इस कपडेके धूपसे गोला भर जाता और आकाशमें उड़ने लगता है।

विवाहादिके उपलक्षमें इसका व्यवहार किया जाता है।

३ एक प्रकारका बडा गोला जो आकाशकी और फोकन पर फट जाता है और जिममेंसे आतशबाजी छूटती है।

गुब्बो—महिसुर राज्यके तुमकूर जिलेका दरमियानी तालुक। यह अक्षा० १३ २ तथा १३ ३६' उ० और देशा० ७६ ४२ एच ७७ ०' पू०के मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ५५२ वर्गमील और लोकसंख्या प्राय ८०४६८

है। इसमें २ नगर और ४२१ गाव बसे हैं। माल-गुजारो प्रायः १८२००० है। शिमसा नदीका कदव तालाब मगहर है। उत्तर पश्चिम सृजे पर्वत है।

गुब्बो—महिसुरके तुमकूर जिलेमें गुब्बो तालुकका सदर। यह अक्षा० १३ १८' उ० और देशा० ७६ ५७' पू०में माउदर्न मरहटा रेलवे पर अवस्थित है। जनसंख्या प्राय ५५८० होगी। कहते हैं, प्राय ई० १५वीं शताब्दीके समय नोनव वोक्लीगकी राजाने उसे बसाया था। यहां व्यापार खूब होता है। बाजारमें सब चीज विकती है। यहां सुपारी और नारियलकी गिरी बहुत होती है। १८७१ ई०में मुनिमपालिटो लगी।

गुम (हि० पु०) ससुद्रकी खाडी।

गुभीला (हि० पु०) गोटा, जो मल रुकनेके कारण पेटमें पड जाता है।

गुम (फा० वि०) १ गुम, छिपा हुआ, अप्रकट। २ अप्रसिद्ध। ३ खोया हुआ।

गुमक (हि० स्त्री०) गमक दश।

गुमका (हि० पु०) भूसीसे दाना पृथक् करनेका काम।

गुमगा—सधामदेगके नागपुर जिलेके अन्तर्गत एक नगर यह नागपुर नगरसे १२ मील दक्षिणमें घना नदीके किनारे अक्षा० २१ १' उ० और देशा० ७८ २ ३०' पूर्वमें अवस्थित है। यहांके अधियासा प्राय सभी क्षत्रिय जीवी है, सिर्फ कोटि जातिके लोग रुईका रोजगार करते हैं। यहां धानके पास नदीके किनारे एक महाराष्ट्रीय दुर्गका खण्डहर देखनेमें आता है। इसके पास ही एक गणपतिका मन्दिर है। उक्त दुर्ग और मन्दिर दोनों ही राजा अथ रघुजैकी पत्नी चोमाबाईने बनवाये थे और इन्हीके समयसे यह प्रदेश भौसले वंशके अधिकार में रहता है।

गुमची (फा० स्त्री०) गुजा, घुमची।

गुमटा (हि० पु०) १ कपामके फूलमें रहनेवाला एक कीट। यह फूलका भारी शत्रु है। (पु०) २ वह गोल सृजन जो मत्सक पर चोट लगनेसे हीती है।

गुमटो (फा० स्त्री०) मकानके उपरी भागकी छत। गुमनायकन पत्नी—महिसुरके कोला जिलेके अन्तर्गत वागपत्नी तालुकका एक ग्राम। यह अक्षा० १३ १४' उ०

श्रीर ७७' ५५' पू० तथा वागपत्नी शहरसे १० मील पूर्वमें अवस्थित है। यहाँकी लोकसंख्या २०७ है। यह ग्राम १३५० ई०में स्थानीय सरदार गुमनायकसे स्थापित किया गया था और इसलिये उसीके नाम पर इस ग्रामका नाम पड़ा है। गुमनायक तथा उसके भाईने कड़ापामे डकैतोंका दल ला कर इस ग्रामकी बसाया था। डकैतोंसे उमने शर्त करा लिया था कि जो कुछ वे लूट पाट लावेंगे उसमें आधा उसकी मिलेगा। १४१२ ई०को इस ग्राममें शांति स्थापन करनीका एक नियम बना जिससे वहाँके समस्त डकैत ग्राम छोड़ कर भाग चले। थोड़े समयके बाद यह विजयनगरके नायक-वंशके अधीन आ गया। बाद हैदरअलीके समयमें इस वंशका अधःपतन हुआ।

गुमनाम (फा० वि०) अप्रसिद्ध, अज्ञात, जिसे कोई नहीं जानता हो।

गुमर (फा० पु०) १ अभिमान, घमंड, श्रेणी। २ मनमें छिपाया हुआ क्रोध। ३ धीरे धीरेकी बातचीत।

गुमराह (फा० वि०) १ कुपथगामी, खराब गम्लेमें चलनेवाला। २ भूला हुआ, भटका हुआ।

गुमराही (फा० स्त्री०) १ भ्रम, भूल, कुपथ, बुरा मार्ग।

गुमल—गुमलनदीकी एक घाटी। यह दक्षिण वजीरिस्तान एजिप्तीके बीचसे मुरतजा और दोमण्डी हो करके अफगानिस्तानको चली गयी है। इस विभागमें यह सबसे पुराना कारवारका रास्ता है। हर साल हथियार बन्द काफिलीका सिल सिला इस राह अफगानिस्तानसे आया करता है।

गुमल—भारतके उत्तर-पश्चिम सीमाप्रान्तकी नदी। यह अफगानिस्तानके कोहनाक पहाड़से सरवन्दीके निकट निकलती और दक्षिण-पूर्वकी बहती हुई, दोमण्डीके पास अङ्गरेजी सीमामें पहुंचती है। यहीं कुन्दर नदीका सङ्गम है। वनातोडे, तोडेखुसला और जोब इसकी सहायक नदियाँ हैं। ऋग्वेदमें इस नदीका नाम गोमती लिखा है।

गुमल—विहार प्रान्तके रांची जिलेका दक्षिण-पश्चिम सब-डिविजन। यह अक्षा० २२' २१' तथा २३' ३८' उ० और देशा० ८४' ०' एवं ८५' ६' पू० मध्य पड़ता है। क्षेत्रफल ३६२२ वर्ग मील और लोकसंख्या प्रायः ४३४६८८ है। इसमें एक नगर और ११५७ ग्राम बसे हैं।

गुमल—विहार प्रान्तके रांची जिलेमें गुमल सब-डिविजनका सदर। यह अक्षा २३' २' उ० और देशा० ८३' ३३' पू०में अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः ७७७ है। यह वर्धिण्य वाणिज्यका केन्द्र हो रहा है।

गुमसुर—दक्षिणालयमें गञ्जाम जिलेके अन्तर्गत एक तालुक और नगर। यह अक्षा० १८' ३५' तथा २०' १७' उ० और देशा० ८४' ८' एवं ८४' ५६' पू०के मध्य अवस्थित है। इसका क्षेत्रफल ११४१ और लोकसंख्या प्रायः २०० ३५७ है। यह १८३५ ई० तक टेशी राजाके अधीन रहा। उसी साल स्थानीय सहाय अङ्गरेजके विरुद्ध लड़ने लगे। अन्तमें अङ्गरेजने उनका राज्य छीन लिया। उस समयमें भी यहाँ कन्य जातिमें नरहत्या प्रचलित था। ब्रिटिश गवर्नमेंटने इस प्रथाको सदाके लिये रोक दिया।

उक्त तालुकका प्रधान नगर। यह अक्षा० १६' ५०' और देशा० ८४' ४२' पू० पर अवस्थित है। यहाँ १८३५ ई०में एक राजप्रामाट था। यह नगर बहरमपुरसे ३८ मील उत्तर-पश्चिम अवस्थित है। उक्त राजाके अधीश्वर रघुनाथ भञ्जराजने यहाँ एक दुर्ग निर्माण किया था। प्रवाद है कि वे ही गुमसुर राजवंशके आदिपुरुष थे।

गुमान (फा० पु०) १ अनुमान। २ घमंड, अहङ्कार, गर्व।

गुमानसिंह—जैतपुरके एक राजा। इन्होंने बन्दा जिलेके केन नदीके बायें पार्श्वस्थित भूरागढ़ ग्राममें १७४६ ई०को एक दुर्ग निर्माण किया था।

गुमानि—१ सन्ताल परगणा होकर बहती हुई एक नदी। यह राजमहल पर्वतके दक्षिण भागसे निकल कर उत्तर-पूर्वमुख होती हुई बड़ाइव उपत्यकामें आ मोरल नदीसे मिली है, और उस जगहसे दक्षिण-पूर्वकी ओर बहती हुई महादेवनगरके निकट गङ्गामें गिरती है।

२ उत्तरवङ्गके आत्रेयी नदीका दूसरा नाम। यह राजशाही जिलेके चलनविलसे दक्षिणकी ओर प्रवाहित होता हुई पावना जिला पर्यन्त चली गई है।

गुमानिकवि—१ एक कवि। त्रिहुत जिलेमें इनकी बनाई हुई बहत्ती कवितायें प्रचलित हैं। यह कर्हाके रहने वाले एवं किसके पुत्र हैं यह आज तक किसीको कुछ मालूम नहीं है; किन्तु कोई कोई इनका जन्मस्थान

पठनमें बतलाते हैं। इनके बनाये हुए श्लोक चार चरण विग्रहित हैं, प्रथम तीन संस्कृत भाषामें और शेष एक हिन्दी भाषामें रचित है। गुमानो देखो।

गुमानो (हि० वि०) अहंकारी, घमछी।

गुमानो—विहार प्रान्तीय पटनाके एक कवि। उनकी बनाये कविता विहारके लोगोंको कष्टप्रस्य है। इसके प्रथम तीन पाद स संस्कृत और चौथा हिन्दीकी लोकोक्ति है। जैसे—

‘ वासुदेवम शंभुधरो मायालौक्यं त्वमस्य हारो।

नाशकं शंभुधरो ज्यो भीति शो बभूव न भारोइ’

मोदरी रावणसे कहती है—जब तक राम यहाँ हथियार बाध करके आपसे लड़ने न आवें, उनकी जानकी प्रत्यर्पण कर दो, क्यों कि जितना ही कम्यन भोगता, भारी पड़ता है।

गुमानजी मिश्र—युक्तप्रान्तके हरदोई जिलेमें साड़ोके रहनेवाले एक हिन्दी कवि। १७४० ई०की उनकी खूब चहल पहल थी। संस्कृत और वाक्य रचनामें वद वद्वृत्त कुशल थे। युगलकिशोर भट्टके साथ गुमानजी दिल्लीके बादशाह सुहृद्दशाहके दरवारमें जाते थे। फिर उनकी प्रवेश अली अकबर खा सुहृद्दशैकी सभामें हुआ। उन्होंने नैपथकी टीका कालनिधि, पञ्चनलीय टीका सखिल और क्षणचन्द्रिका ग्रन्थ लिखे।

गुमशता (फा० पु०) कर्मकारक, प्रतिनिधि।

गुमाशतागरी (फा० खी०) १ गुमाशतका पद। २ गुमाशतका काम।

गुमिटना (हि० क्रि०) लिपटना, लपेटा जाना।

गुमट्टी (स० खी०) लण धान्यविशेष।

गुम्फ (स० पु०) गुम्फ नज। १ ग्रन्थन, गौठ। २ बाहु में पहननेका भाभूषण। ३ श्मश्रु, मूछ।

गुम्फना (स० खी०) गुम्फ युक्त टाप। १ वाक्यकी सुंदर रचना, उत्कृष्ट रचना। २ ग्रन्थन, गिरह।

गुम्फत (स० खि०) ग्रथित, गूथा हुआ।

गुम्बज (फा० पु०) मस्जिदका गोलाकार डकड़ कत, घरुका गोल कत।

गुम्बट (फा० पु०) गुप द, गुपज।

गुम्भा (हि० पु०) अमरेजी टडकी इमारतमें लेने जायक मोटी ईंट।

गुयासुवा—ब्रह्मालमें २४ परगनेके अन्तर्गत एक नदी। यह गङ्गाकी एक शाखा है जो अक्षा० २१ ५८ उ० और देशा० ८८ ५४ पूर्व पर समुद्रमें आ मिली है। यह नदी विस्तार होने पर भी मुहानाके निकट इतनी धरु ही गई है कि इसमें प्रवेश करना दुसाध्य है।

गुयिन्दी—चिद्दलपेट जिलेके अन्तर्गत एक ग्राम। यह अक्षा० १३ उ० और देशा० ८० १६ पू०में मन्द्राजसे ४ मील दक्षिण पश्चिम पर अवस्थित है। यहाँ मन्द्राजके गवर्नरके रहनेका एक सुन्दर घर है, और इसके निकट ही रोममवागमें गवर्नरमें रहती एक आठत एव गार्हस्थ्य शिक्षाको एक विद्यालय भी है।

गुर बा (हि० पु०) गुरुका देश।

गुर (हि० पु०) १ किसी कार्यकी सिद्धिके मन्मन्त्र। २ तीनकी संख्या।

गुरखई (हि० खी०) एक तरहकी रेहन या बंधक।

गुरखाई (हि० खी०) एक तरहकी रेहन जिसमें रेहन रखनेवाला जमोनेकी खत्याम मालगुजारी देता है।

गुरगा (हि० पु०) १ मिश्र, गुरुका अनुगामी, चेना। २ अनुचर, टहलुआ, नोकर। ३ चर, दूत, गुमचर, भेदिया।

गुरगावी (फा० पु०) सुडा जूता।

गुरच (हि०) गुरुके लो।

गुरची (हि० खी०) सिकुहन, बल, बट।

गुरचीं (हि० खी०) आपसमें धीरे धीरे बात करना, कानाफूसी।

गुरज (हि०) गुरुके लो।

गुरजा (हि० पु०) गोवा नामक एक तरहका पत्थी।

गुरडा—ब्राह्मण जातिविशेष। यह राजपूतानेमें रहते हैं।

इनका प्रधान कार्य अकृत लोगोंकी वृत्ति है। उनकी दानमुख्य मते और विवाह आदि कार्य करा देते हैं।

किसी विद्वानुके मतानुसार वद ब्रह्माके पुत्र मेघ ऋषिसे उत्पन्न हुए हैं। दूसरोंका कहना है कि उन्होंने एक मरी दुई गायकी उठा करके फिक दिया था। उसी समय से यह पतिता हुए और ब्राह्मणोंमें न रह सके। और प्रवाद है—गर्ग ऋषिके मन्तान पहले अकृत लोगोंका विवाह कराते थे। ब्रह्माने उन्हें केषन विवाह कराने

की आज्ञा दी थी, दक्षिणा लेनेकी नहीं। परन्तु इसके विपरीत वह सूतकी एक लच्छी अपनी पगड़ीमें छिपा करके ले गये। इस पर ब्रह्माने क्रुद्ध हो करके उन्हें जातिच्युत किया था। उसी समयसे इनकी लोग गुरदा कहने लगे।

गुरदा (फा० पु०) १ रौड़दार जन्तुके भीतर कलेजके निकटका एक अङ्ग। इसका रङ्ग भूरा और कुछ कुछ लाल भी है और यह आलूके कटका होता है जिसके चारो ओर चरबी रहती है। साधारणतः जन्तुमें दो गुरदे गीठके दोनों ओर लगे रहते हैं। इनका काम पेशाबको वहिर्गत करना तथा लेहकी स्वच्छ करना है। इनमें किसी प्रकारकी गड़बड़ी होनेसे ही जीव निर्बल हो जाता है। मनुष्यमें बायाँ गुरदा कुछ ऊपरकी ओर और दाहिना कुछ नीचे रहता है। जो प्रायः ८-९ अंगुल लंबे ५ अंगुल चौड़े और दो अंगुलसे अधिक मोटे होते हैं।

२ साहस, हिम्मत। ३ एक तरहकी छोटी तोप। ४ गुड़ उबालनेका लोहेका बना एक बड़ा करछा या चमचा।

गुरनियआरु (हि० पु०) रतालू जमीकन्दकी जातिका एक कन्द। यह बङ्गाल और मध्य, पश्चिम तथा दक्षिण भारतमें होता है। यह कंद लाल किलकाका होता है और इसकी बहुत बड़ी लता होती है।

गुरमकोण्डा—मन्द्राज प्रदेशके कड़ापा जिलेके अन्तर्गत वाइलपाउ तालुकका एक दुर्ग और नगर। यह अक्षा० १३° ४७' ३०" और ७४° ३६' पू० में अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः १७१४ है। यह दुर्ग कड़ापासे सर्व प्रधान है। कहा जाता है कि यह गोलकोण्डाके सुनतानोंसे निर्माण किया गया था। दुर्ग एक सुन्दर पहाड़ीकी ५०० फुट ऊँचाई पर अवस्थित है। इसके तीन ओरकी जमीन ढालू है, चौथो ओर ऊपर आने जानेके लिये एक सुगम पथ बना दिया गया है। इसके चारों ओरकी पहाड़ियाँ चार दौवारोंका काम करती हैं। दुर्गके नीचे एक प्राचीन राजभवन था, आज कल उसमें राजकर्मचारी आकर ठहरते हैं।

अठारहवीं शताब्दीके आरम्भमें इस नगरमें कर्णाटके हैदराबाद वालाघाट सरकारकी राजधानी थी।

वाट यह पत्तिगार जातिके कड़ापाके नवाबके अधीन आ गया। १७६६ ई०में मीरसाहब इस नगरकी महाराष्ट्रीय जागिररूपमें भोग करने लगे। दो वर्षके बाद इन्होंने इसे अपने बहनोंई हैदरअलीकी प्रदान किया। १७७१ ई०में हैदरके सेन्याध्यक्ष मयदशाहने यहाँके दुर्गकी ब्रह्मचाराव पर अर्पण कर दिया। १७७३ ई०में टीपूने इसे पुनः हस्तगत किया। १७८१ ई०में निजामने ब्रिटिशसेन्याध्यक्ष कप्तान रेडकी सहायतासे गुरमकोण्डाको अपने अधिकारमें कर लिया। १८०० ई०में निजामने समस्त कड़ापा जिला तथा यह नगर अंगरेजोंकी प्रदान किया।

गुरमकोण्डाका अर्थ 'घोड़े का पहाड़' है। इस तरह क्यों नाम पड़ा इसका पुरापुरा पता नहीं चलता है। परन्तु स्थानीय प्रवाद है कि एक घोड़ा दुर्गकी रक्षाके लिये उस पहाड़ी पर रहा करता था। जब तक वह घोड़ा वहाँ रहता तब तक कोई शत्रु ऊपर नहीं जा सकता था। पहाड़की चाटी पर घोड़े का अस्तवल था। अन्तमें एक दिन एक मराठा चोर पहाड़ीमें लोहेकी कील ठोक कर उसीके सहारे ऊपर तक चला गया। ऊपर आकर उसने अस्तवलमें प्रवेश किया और उस अङ्ग त घोड़े को बाहर निकाला। घोड़े को साथ लेकर वह किसी तरह नीचेको आया। जब वह विन्ध्याम करनेके लिये जंगलमें बैठा था उसी समय राजकर्मचारियोंने उसे पकड़ा। वे उस चोरके असौम उक्ताहसे चकित हो गये और इस दण्डमें उसके दोनों हाथ कटवा लिये। वह घोड़ा पुनः किलेकी पहाँचाया गया। घोड़े टिनके बाद वह दुर्ग नष्ट भ्रष्ट हो गया। दुर्गके निकट टीपू सुलतानके चचा मीर राजा अली खाँकी समाधि तथा और दूसरे दूसरे भवन हैं।

गुरमुख (हि० वि०) दीक्षित, जिसने गुरुसे मन्त्र लिया हो।

गुरम्बर (हि० पु०) मीठे आमका वृक्ष।

गुरव—दक्षिण देशके बीजापुर शोलापुर आदि जिलेमें रहनेवाली एक पुरोहित जाति। इनमें किसी प्रकारकी उपाधि नहीं है, सिर्फ स्थानके नामसे जातिगत पार्थक्य देखनेमें आता है। काश्यप और ईश्वर ये दो गोत्र ही इन लोगोंमें प्रधान हैं।

ये स्वर्गोत्थम विवाह नहीं करते। टेखुनेमें ये कनाडियों जैसे लगते हैं। ये मध्य, मांस खादि कुछ भी नहीं खाते फलजले समय ये लोग खेतसे अनाज माग लाते हैं। इनमेंसे कोई ग्रैव और कोई हनुमान्के मन्दिरमें पौरोहित्य करते हैं। कोई तो दैवज्ञ है और कोई ब्राह्मण आदिके विवाहमें बाजा बजाने का काम करते हैं। कोई खेतो बारी कर अपनी जीविका चलाते हैं।

मार्कती सरस्वती रामेश्वर, शिव, विष्णु और रावण नाथ इनके उपास्य देवता हैं। विवाह या अन्यान्य सामाजिक मस्कार सुनार जातिके समान हैं। ये लोग अपनी जातिके सिवा अन्य किसी भी जातिका कुंधा दुश्चा अन्न नहीं खाते।

बेल्गाकर्वेमें विधवाविवाह प्रचलित है। ये दशवें दिन मरे हुए व्यक्तिको पिण्ड देते तथा ग्यारहवें दिन याद और बारहवें दिन जातिभोज करते हैं। इनमें प्राय सभी लोग कनाडी भाषा बोलते हैं।

गुरवक (स० पु०) गरुडशालि ।

गुरवपिम्भी—गुजरातके अहमदनगर जिलेके अन्तर्गत एक ग्राम। यह करजात नामक स्थानसे ७ मोल दूरी पर अवस्थित है। यहां जेमहपत्नियोंका पिम्बेश्वर महादेवका एक प्राचीन मन्दिर और रामेश्वर मन्दिरका खुण्डहर देखनेमें आता है। पिम्बेश्वर मन्दिरके धामपासके दक्षिण पर नो गुम्बज है। मन्दिरकी लिङ्गमूर्त्ति, एक गडहमें स्थापित है। इस मन्दिरके प्रवेशद्वारमें और भीतरके एक छथक् स्तम्भ पर मिलानेस्य खुदा हुआ है।

गुरवार (हि०) दशवार देवा ।

गुरवी (हि० वि०) अहंकारी, घमण्डी ।

गुरमराय—युक्तप्रदेशके भाँसी जिलेका राज्य। इसका क्षेत्रफल १५५ वर्गमील है। गवर्नमेण्टकी २०००० मानगुजारी और ५५००० रु० गेय देना पड़ता है। राजा जमीन्दारीमें ५४००० रु० घसूल करते हैं। यह महााराष्ट्र ब्राह्मण है, १०२० ई०के लगभग या करके बसे थे। इसी वंशके एक व्यक्ति पैगवाके अधीन जानीन और दूसरे प्रान्तके मुखेदार थे। बलधेमें भरकारकी माहाय्य करने पर "राजा घषादुर उपाधि और दूसरा मुस्कार मिला। किन्तु १८८५ ई०की पुरी मानगुजारी देनेका जो भगडा

लगा, राजा उपाधि छिन गया और अङ्गरेजी-इन्तजाम बन्धा। फिर १८८८ और १८०२ ई०की प्रिवी कौंसिल के फैसले पर उवारी माफी बहाल हुई। गुरमराय नगरकी आबादी कोई ४२०४ है।

गुरसन (हि० पु०) गिलगिलिया, सिरौडी, किलह टो ।

गुरमी (हि०) गामके शब्दो ।

गुरसुन (हि० पु०) मोनारोंकी एक तरहकी छिनो ।

गुरहा (हि० पु०) १ नौकाके नेचे दोनों मिरों पर बहा हुआ तखता । २ एक विलस्त लम्बे आकारकी एक तरहकी मछली। यह युक्तप्रान्त, बङ्गाल और धामामको नदियोंमें पाई जाती है।

गुराई (हि०) गाराई शब्द ।

गुराव (हि० पु०) १ एक तरहकी गाडी जिस पर तोप लादी जाती है। २ एक मस्तू लवानी बडो नाव ।

गुराव (हि० पु०) १ चौपायाकी खिलानिका चारा । २ चारा फाटनेका हथियार, गहासा ।

गुरिट (फा० पु०) गदा ।

गुरिटल (हि० पु०) १ जलामयोंके निकट रहनेवाला किलकिलाकी जातिका एक पक्षी, यह मछलो ही खाकर रहते हैं। २ कचनारका पेड ।

गुरिया (हि० स्त्री०) १ किसी माला या लडीके एक अथवा दाना, मनका या गाठ । २ कटा हुआ गोल छोटा टुकडा । ३ दरी बुननेके करघेकी बडो लकाडी । ४ हरेमें लगे हुए रस्मी। इसका एक मिरा है गेमें और दूसरे जुएके बीचमें बंधा रहता है।

गुरिमा (हि०) गोरिकाईको ।

गुरु—(स० पु०) गृणाति उपदिशति धर्म गिरत्यज्ञान वा गुरु उच्यते । अथवा उपात्तः । यदा गौर्यते स्तूयते देवगन्धर्वादिभिः गुरु उच्यते । इत्यमरः, देवीके गुरु या आचार्य । (भाष २५०)

२ प्रभाकर नामक एक सुप्रसिद्ध मीर्मांसकका दूसरा नाम। प्रभाकर वचनमें ही शब्दशास्त्रका अध्ययन कर विशेष व्यत्यय हो गये थे। पीछे उन्होंने किसी एक प्रधान मीर्मांसकके पास मोमांसादर्शन पढ़ना शरू किया। एक दिन इसके गुरु किसी एक छात्रकी लम समयमें प्रचलित मोमांसाशय्य पढ़ा रहे थे। लम समयमें "अथ तत्पु-

नोक्तं तवापिनोक्तं अतः पौनरुक्त्यं" ऐसा पाठ निकला । अध्यापक महाशय अनेक चेष्टा करके भी इसका कोई महत् अर्थ न लगा सके । इसका तो अर्थ ऐसा होता है कि— यहाँ भी नहीं कहा गया, वहाँ भी नहीं कहा गया, अतः पौनरुक्त्य हुआ । परन्तु यह अर्थ बिल्कुल ही असम्भव था । छात्र और अध्यापक दोनों मिलकर बहुत जोशिश की, मगर इसका कुछ महत् अर्थ न निकाल सके । इससे अध्यापक अत्यन्त दुःखित हुए और चतुष्पाठीसे निकल घने जङ्गलमें जा कर इसका अर्थ विचारने लगे । प्रभाकरने अपनी प्रतिभाके बलसे इस पंक्तिका अर्थ लगा लेने पर भी उस समय—गुरुजी अपना अपमान समझ कर दुःखित होगी—इस भयसे कुछ नहीं कहा । पीछे उस पुस्तकमें उन्होंने 'तुना' और 'अपिना' ऐसा एक पद कर दिया । इससे उस पंक्तिका यह अर्थ हुआ कि, यहाँ तु शब्द द्वारा कहा और वहाँ भी अपि शब्द द्वारा कहा गया है । इसलिये पौनरुक्त्य होता है । अध्यापक महाशय गभीर गवेषणा करके भी कुछ निर्णय न कर सके और चतुष्पाठीकी लौट आये यहाँ उन्होंने पुस्तक निकाल कर देखी, तो उसमें पदच्छेद किया हुआ पाया । बहुत ही सन्तुष्ट हुए, पूछने पर उन्हें मालुम हुआ कि, वह प्रभाकर की ही करामात है । अध्यापकने प्रभाकरको अपना गुरु माना और उसी दिनसे इनका 'गुरु' नाम हो गया ।

प्रभाकर देखो ।

३ निषेक आदि क्रियाका कर्त्ता । विधिके अनुसार जो सम्पूर्ण निषेक आदि कर्मोंका अनुष्ठान करते और अन्न दे कर पालते हैं, उन्हें गुरु समझना चाहिये । (मनु १।१।२)

४ शास्त्रीपदेशक, आचार्य । मनुके मतसे—थोड़ा ही चाहे ज्यादा, जो वेदका ज्ञान दे कर उपकार करते हैं, शास्त्रानुसार वे ही गुरु हैं । बालक ही कर भी यदि वेद या शास्त्रका उपदेश दे, तो उन्हें ही गुरु समझना चाहिये, वे वृद्धोंके भी माननीय हैं । प्राचीन समयमें भी शास्त्रज्ञ बालकोंसे ब्रह्मगण उपदेश लिया करते थे और उसे अपना गुरु मानते थे । मनुमें इस विषयकी एक आख्यायिका भी मिलती है—“अङ्गिराके एक पुत्र वचपनमें ही समस्त शास्त्रोंका पारदर्शी हो गये थे । ये अपने पिछव्योंको शास्त्रसे पराङ्मुख देख, उन्हें शास्त्र

अध्यायन कराने लगे । एक दिन शास्त्रापदेशके समय उक्त बालकने अपने पिछव्यों को पुत्र कह कर संबोधन किया, जिमसे उनके हृदय पर बड़ी चोट पहुँची । आगिर अनेक वादानुवादके उपरान्त सबके सब देवसभामें उपस्थित हुए और देवोंसे इस बातकी शिकायत की । समस्त देवताओंने विचार कर उत्तर दिया कि, 'इसमें कुछ दोष नहीं' । क्यों कि सूर्व व्यक्ति ब्रह्म होने पर भी बालक है और जो ज्ञानोपदेश है, वह बालक होने पर भी पिछवत् पूजनोय है ।' (मनु १।१।२।५२)

मनुका मत है कि, गुरुके पास हमेशा हीन दगामें बैठना चाहिये । गुरुके उठनेसे पहले उठना और सोनेके बाद सोना, यह शिष्यका परम कर्त्तव्य है । सोने हुए वा बैठ कर, भोजन करते हुए अथवा दूर खड़े हो कर वा दूरसे तरफ मुँह करके गुरुकी आज्ञा ग्रहण या उनके साथ सम्भाषण नहीं करना चाहिये । गुरु यदि आमन पर बैठ कर कुछ आदेश दे, तो शिष्यको चाहिये कि, वह खड़ा हो कर उनकी आज्ञाको ग्रहण करे । परीक्ष भी गुरुका नाम नहीं लेना चाहिये । (मनु १।१।२।५३)

५ आचार्य आदि ग्यारह पूजनोय व्यक्तियोंको गुरु कहते हैं । देवलमें लिखा है कि, शास्त्रोपदेश, पिता, ज्येष्ठ भ्राता, रात्रा, मातुल, स्वशुर, त्राणकर्त्ता, मातामह, पितामह वणोजेष्ट और पिछव्य इनकी गुरु कहा जा सकता है । गुरुतत्त्व देखो ।

कूर्मपुराणमें—माता, मातामही (नानी), मामो, मौसा, सासु, पितामही (दादी), बड़े बहन और धात्री इनकी भी गुरु कहा गया है

माता आदि अर्थमें गुरु शब्द स्त्रीलिङ्ग है । हिन्दीमें गुरु शब्दका स्त्रीलिङ्ग 'गुरुआनी' होता है ।

६ सम्प्रदायप्रवर्त्तक । ७ धर्मोपदेशक ८ कपिकच्छु, कौच । (गणितः) ९ वर्णविशेष, दोष अक्षर जिमकी मात्राएं दो समझो जाती हैं, टा मात्राओंवाला अक्षर जैसे—“लाल” का ‘ला’ । एक बार जानुमण्डल (घुटने) पर हाथ फेरनेमें जितना समय लगता है, उतने समयका नाम माता है जिस वर्णके उच्चारण करनेमें दो मात्रा समय लगता है, उसको दीर्घवर्ण कहते हैं । दीर्घ, अनुस्वार, और विसर्गयुक्त तथा युक्त वर्णके पहलेके अक्षरको

(लघु होने पर भी) गुरु कहते हैं । पाद वा श्लोकके चरणका अन्तिम वर्ण विकल्पमें गुरु हुआ करता है । पिङ्गलमें गुरु वर्णका सक्रोत ५ इस प्रकार है ।

१० शिव (मारु १११/१२०) ११ परमेश्वर । (पाल ४)

१२ इन्द्रा । १३ विष्णु । (मारु १३/१४८४५) १४ द्रोणाचार्य । १५ पुण्य नक्षत्र । गुरु अर्थात् बृहस्पति इसमें अधिष्ठाता होनेके कारण इनका नाम गुरु हुआ है ।

(जीतिमन्त्र) १५ बृहस्पति नामका ग्रह । १७ वह व्यक्ति जो अपनेमें विद्या, बुद्धि, बल, पद और उच्चमें बड़ा हो, गुरु जन । १८ किसी कन्या या विद्याका मिथ्यानेवाला शिक्षक, उस्ताद । १९ म मोतका एक ताल । जिमें सिर्फ एक ही गुरु वा दीर्घ मात्रा हो, उसका नाम गुरु ताल है । (महात्मामोचर)

(त्रि०) २० अधिक ध्यादा । (भाष्यविमल०) २१ दुर्जर, जो सुस्विकल्पमें पचता हो । २२ दुष्पाक, जिसका पाक करना कठिन हो । (भाष्यविमल०) २३ गुरुत्वविशिष्ट, भारी, बजनी । २४ पूजनीय, माननीय । (भाष्य ४४४) २५ गभीर । २६ बलवान् ।

(प०) २७ तान्त्रिक मन्त्रोपदेष्टा, जो तत्रकी दीक्षा दे । मारदातिलकके मतमें तान्त्रिक गुरुका लक्षण इस प्रकार है जो पवित्र कुर्ममें उत्पन्न हुए हों, जो शुद्धस्वभाव, जितेन्द्रिय, आगमपारदर्शी, तत्त्वज्ञ परोपकारनिरत, जप और पूजामें तत्पर, मन्त्रवादी और शान्तिप्रिय हैं, वेद और योगशास्त्रमें जिनका अधिकार है, तथा जो सर्वदा हृदय में देवताका चिन्तन किया करते हैं । उन्हींको गुरु बनाना चाहिये । इन गुणोंका होना ही गुरुका लक्षण है । अथवा बालक, वृद्ध, पद्म, रुद्र, विष्णुताड और शोनाड, ये सब गुरु होनेके लायक नहीं हैं । (र ४३४६)

चिन्तामणिके मतमें — जयरीगणेश, दुर्गामा, कुन्तकी, श्यामदन्तक, वधिर, अश्व, कुसुमजम्बीरी, शर्करावाला, खन्धाट (ग जा) और दन्तुर (जिमेंके दाँत आगे निकले हैं) इनको गुरु बनाना उचित नहीं है ।

मन्कारहीन, मूर्ख, बेटेगारमविवर्जित, वैदिक और धार्तर क्रियाकलापगुन्य, शक्यभाषी, कुम्भित, याजन कर्मोपजीवीकामी, क्रूर, दभी, मन्त्री ध्यमनयुक्त, छपण, खल, ना हस्तक, असमर्थकारी, भीरु, महापातकके किमी

एक चिह्नमें युक्त, देवता, अग्नि और गुरुपूजा भादिकें ब्रह्महीन, सन्ध्या, तर्पण पूजा और मन्त्र भादिके ज्ञानमें रहित, अलस विनामो और धर्महीन, इनमें गुरु होनेकी योग्यता नहीं है । मत्स्यसूक्तके मतमें अपुत्रक, गृहहीनगुन्य, शक्तिविहीन और हृदयलोपति, ये भी बलान्नीय हैं । (राघ ४६)

ज्ञानार्णवके मतमें — जो गृहम्य हैं, जनके पुत्र और कालव हैं, उन्हें ही गुरु बनाना चाहिये । मूण्डमानामें लिखा है कि, वैश्वानर और शैव मध्यम गुरु हैं । जो शक्तिमन्त्रमें दीक्षित हैं, वे ही उत्तम गुरु हैं ।

तान्त्रिकगण गुरु शब्दके अर्थोंक वर्णका अर्थ कर उनका लक्षण करते हैं । उनमें मतमें गकारका अर्थ मिथिष्ठाता, रफका अर्थ पापनाशक और उकारका अर्थ गम्भू है अर्थात् जो मिथि दे सकते हैं पापोंके विनाश करनेको जिनमें क्षमता है और जो मद्भलकार हैं, उन्हींको गुरु समझना चाहिये । अथवा गकारका अर्थ ज्ञान, रफका अर्थ तत्त्वप्रकाशक और उकारका अर्थ शिव तादात्म्यद है । अर्थात् जो तत्त्वज्ञानको प्रकट कर शिवके साथ अभिन्न करा देते हैं, उन्हें ही गुरु समझना चाहिये । (भाष्यमहा)

योगिनोत्तममें लिखा है—पिता, मातामह, सपेठर कनिष्ठ और रिपुपत्नीय इनमें मन्त्र लेना उचित नहीं, अर्थात् इनको गुरु नहीं बनाना चाहिये । गणेशवि सर्पिणीतन्त्रके मतमें — यति, धनधामो वा आयम परि त्यागी इनके पाम दीक्षित होनेमें अमद्भल होता है । परन्तु शक्तियामलके मतमें घद्याचारपरायण, मन्त्री, ज्ञानी, समाधिपुत्र और ब्रह्मविशिष्ट यतिये मन्त्र ग्रहण करनेमें किमी प्रकारका अमद्भल नहीं होता । रुद्रया मन्त्रमें लिखा है—भर्ता पयोका, पिता पुत्र वा कन्याको और भ्राता भाईको दीक्षित नहीं कर सकता । हा ' स्वामी मिहमन्त्र होने पर श्लोकी दीक्षा दे सकता है ।

तन्त्रमग्रहकारोंके मतमें — तन्त्रमें जो निन्दनीय गुरुओं और उनमें टोला लेनेका निषेध किया गया है, वह केवल उन गुरुओंके लिए है जिनको मन्त्र मिह नहीं हुआ हो । मिहमन्त्र होनेके उपरान्त फिर कुछ लक्षण देवनेको आवश्यकता नहीं, जिसके पाम जो चाहे उमीके पाम दीक्षित हो सकते हैं । (भाष्यमहा)

कोई यदि व्यक्ति अज्ञानवश निन्दनीय वा वर्जनीय गुरुके पामसे टीका ग्रहण कर ले, तो दस हजार गायत्री जपकर प्रायश्चित्त कर उस मन्त्रका परित्याग कर सकता है। (गणेशविमर्षणी)

मत्स्यसूक्त मतसे निवीर्य पिताका मन्त्र प्राप्त और शैवीके लिये टीकावह नहीं है; ये लोग पिताका मन्त्र ग्रहण कर सकते हैं। कोई संयहकार मत्स्यसूक्तके प्रमाणको टीकाविषयक कौलिक मन्त्र बतलाते हैं और कोई कहते हैं कि, मत्स्यसूक्तमें तागामन्त्रके प्रस्तावमें यह बात कही गई है। बहुतसे तन्त्रोंमें पिता ज्येष्ठ पुत्रको अपने मन्त्रमें टीका कर सकता है—एसा विधान मिलता है।

(तन्त्रसार)

भारतमें अति प्राचीन कालसे ही टीकाप्रणाली चली आ रही है। प्रत्येक टीकामें एक न एक गुरुकी आवश्यकता होती है। अस्त, शस्त्र और मन्त्रटीका आदि सभीके एक एक गुरु होते हैं। गुरुके बिना कोई भी टीका नहीं हो सकती। ऋषियों और तान्त्रिकोंने गुरु शिष्यके विषयमें नानाप्रकारके कर्त्तव्याकर्त्तव्योंका निर्णय किया है। उनकी पर्यालोचना करनेसे मालूम होता है कि, जिस समय यह देश धर्मोन्नतिकी पराकाष्ठा तक पहुँच चुका था, उस समय इस देशके लोग गुरुकी साधारण मानव न समझते थे, बल्कि उन्हें देवता समझ अपने को उनके अधीन मानते थे। उन लोगोंका विश्वास था कि, गुरु जो चाहें वही कर सकते हैं। ये ही देवद्वार वा हमारे देवता हैं। गुरुगीतामें गुरुके जो लक्षण और नाम निरुक्तियाँ लिखी हैं, वे ठीक वेदान्तवर्णित ब्रह्मके लक्षणके समान हैं। शैवा, शिवा आदि शब्दोंमें विशेष विवरण देवों।

२८ जैनोंके पञ्च परमेष्ठियोंमेंसे ३रे, ४थे और ५वें परमेष्ठी। रत्नकरण्ड्यावकाचारमें गुरुका लक्षण इस प्रकार लिखा है।

“विषयाशावशातीते निररिणोऽपरिग्रहः।

ज्ञान-व्यान-तपीरहस्यपक्षी स प्रशस्यते ॥ १० ॥”

जो मांसारिक विषयोंके बशीभूत नहीं हों, आरम्भ— (ऐसी क्रिया जिससे हिंसा हो) रहित हों, चौबीस प्रकारके परिग्रहसे रहित हों, ज्ञान, ध्यान और तपमें लवलीन हों, वे ही तपस्वी अर्थात् गुरु प्रशंसा करने योग्य हैं।

जैनशास्त्रानुसार ये तीन अंगियोंमें विभक्त हैं— आचार्य, उपाध्याय और साधु। १ आचार्य—जो मुनियोंके संघके अधिपति हों और संघके मुनियोंको टीका (शिक्षा) प्रायश्चित्त (दण्ड) आदि देने हों तथा १२ प्रकारका तप, १० प्रकारका धर्म, ५ प्रकारका आचार, ६ प्रकारका आवश्यक-कर्म, ३ प्रकारकी गुणि इन ३६ गुणोंके धारण करनेवाले हों, उन ऋषियोंको आचार्य कहते हैं। २ उपाध्याय—जो आचाराङ्ग, सूत्रकलाङ्ग आदि ११ अङ्ग और उत्पाद, अग्रायणी आदि १४ पूर्वके पाठों हों, उन्हें उपाध्याय कहते हैं ये स्वयं पढ़ते और अन्य मुनियोंको पढ़ाया करते हैं। ३ सर्वसाधु—जो मुनि ५ महा-दत्तों और ५ समितियोंको भलीभाँति पालते हैं, और ५ इन्द्रियोंको संपूर्ण व्रतमें करते हैं, और जो ममता, वंदना आदि ६ आवश्यक कर्म और स्नानत्याग आदि ७ प्रकारका त्याग स्वीकार करते (अर्थात् जो २८ मूलगुणके धारक) हैं, उनको साधु कहते हैं। इनके पुत्राक, वकुण आदि और भी दण्ड भेद हैं।

ये तीनों प्रकारके गुरु दिगम्बर (नग्न) अवस्थामें रहते हैं। इस समय ऐसे गुरुओंका प्रायः अभाव ही है।

२८ पिण्डालु, गोल आलू। ३० शीमधातु, रांगा।

गुरिजा (हिं०) गोरिजा देखो।

गुरुआइन (हिं० स्त्री०) १ गुरुकी स्त्री। २ शिक्षा देने-वाली स्त्री।

गुरुआइ (हिं० स्त्री०) १ गुरुका धर्म। २ गुरुका कृत्य-गुरुका काम। ३ धूर्तता, चालाकी।

गुरुक (सं० त्रि०) गुरु स्वार्थे कन्। अतिशय भारयुक्त, भारी।

गुरुकण्ठक (सं० पु०) गुरुः कण्ठक मत्तमदृश चिह्न विशेषो गात्रे यस्य, बहुव्री०। एक तरहका मयूर।

गुरुकार (सं० त्रि०) गुरुं भारातिशय-युक्तं करोति गुरु-क-अण्। १ अतिशय भारयुक्त करनेवाला मनुष्य। २ (पु०) २ उपासना, गुरु पजा।

गुरुकार्य (सं० त्रि०) गुरोः कार्यः इ-तत्। १ गुरुका कर्तव्य (स्त्री०) २ गुरुका कर्म।

गुरुकुण्डली (सं० स्त्री०) गुरोः बहुरूपतेः कुण्डली, इ-तत्

ज्योतिषमें एक प्रकारका चक्र । इससे जन्मनक्षत्रके अनु-
सार एक एक वर्षके अधिपति ग्रहका निर्णय किया
जाता है । इस चक्रके बाचमें वृहस्पति और उसके आगे
तरफ आठ ग्रह स्थापन करने पड़ते हैं । इसमें गुरु प्रधान
होनेके कारण इसका नाम गुरुकुण्डली पड़ा है ।

गुरुकुण्डली बनानेका तरीका—ऊपरमें नीचेकी
तरफ पाच रेखाएँ खोच कर उसके बीच एक आड़ी
रेखा खोचना चाहिये । फिर उक्त चक्रके प्रथमस्थान
अर्थात् ऊर्ध्वमुखी जो रेखाएँ खींची गई हैं उनमेंसे बाईं
ओरकी रेखाके ऊपरके हिस्सेमें रवि, द्वितीय स्थान अर्थात्
आड़ी लकीरे जिस स्थानको भेटती है, वहाँ मङ्गल,
द्वितीयस्थान अर्थात् उक्त खड़ी रेखाके निम्न भागमें केतु
रखना चाहिये । इसी तरह द्वितीय रेखाके मध्य स्थानमें
चन्द्र, २य स्थानमें बुध, और ३य स्थानमें सुवा, तृतीय
रेखाके १म स्थानमें सुवा, २य स्थानमें वृहस्पति, और
३य स्थानमें सुवा, चतुर्थ रेखाके १म स्थानमें सुवा, २य
स्थानमें शुक और ३य स्थानमें सुवा तथा पञ्चम रेखाके
१म स्थानमें शनि, २य स्थानमें शुक और ३य स्थानमें
राहु ग्रह रखे जाते हैं । जिस जिस स्थानमें ग्रह बैठिये
गये हैं उस उस स्थानमें पुथ्य आदि नक्षत्रोंको यथाक्रम
में बैठाना चाहिये । जिस जिस स्थानमें सुवा है, उस
स्थानमें कोई भी नक्षत्र नहीं बैठाना जाता । पहले
रविके स्थानमें पुथ्य नक्षत्र स्थापन कर यथाक्रमसे राहुके
स्थान पर्यन्त त्रिशाशु नक्षत्र रखना चाहिये । और फिरसे
रविके स्थानमें अनुराधा स्थापन कर क्रमसे राहुके स्थान-
में पूर्वभाद्र बैठाना चाहिये । इसके बाद रविके स्थानमें
उत्तरभाद्र और राहुके स्थानमें पुनर्वसु स्थापित किया
जाता है । इसीका नाम गुरुकुण्डली है । जिसका जन्म
नक्षत्र जिस स्थानमें पड़ेगा, वही यह उसके प्रथम
वर्षका अधिपति है ।

केतुकुण्डलीमें जिस तरह वर्षाधिपतिके फलका वर्णन
किया गया है, गुरुकुण्डलीमें भी वैसा ही फल जानना
चाहिये । किसी किसी ज्योतिषीके मतसे प्रथम स्थानमें
रवि, द्वितीयमें मङ्गल, द्वितीयमें केतु, चतुर्थमें चन्द्र, पंचम
में बुध पष्ठमें वृहस्पति, सप्तममें शुक, अष्टममें शनि और
नवममें राहुग्रहके स्थानमें क्रमसे पुथ्य आदि नक्षत्रोंको

स्थापन करनेसे उसको गुरुकुण्डली कहते हैं । (१)

पञ्चस्वराके मतसे—प्रथम स्थानमें रवि, २यमें चन्द्र,
३यमें मङ्गल, ४थमें बुध, ५वेंमें वृहस्पति, ६ठेमें शुक, ७वें-
में शनि, ८वेंमें राहु और ९वेंमें स्थानमें केतु ग्रहको रख
कर रविसे लगा कर प्रत्येक ग्रहके स्थानमें कृत्तिका आदि
नक्षत्र यथा क्रमसे स्थापन करने पड़ते हैं । (१७५४)
इन तीन प्रकारकी गुरुकुण्डलियोंमेंसे पहली ही सब
आदर्शणीय है, इसलिये उसीका चित्र दिया गया है ।

गुरुकुण्डली ।

	१११०१६	१११०१९	०	०	१११०१६
रवि	चन्द्र	बुध	वृहस्पति	शुक	शनि
१११०१०					
मङ्गल	१११२१	१	१११२१०१५	१२१	
केतु					१११
	१११२१	०	०	०	१११२१०

गुरुकुल (स० ली०) गुरो, कुल, ६ तत् । १ गुरुका वय ।
२ गुरुका वह स्थान जहाँ वे विद्यार्थियोंको अपने साथ
रख कर शिक्षा देते हैं । प्राचीन समयमें हिन्दुस्थानमें
यत्र प्रथा थी कि गुरु वा आचार्यका निवासस्थान बहुत
दूर एकान्तमें रहता और मनुष्य अपने लडकेको पढ़नेके
लिये वहाँ भेजते थे, जब तक शिक्षा समाप्त नहीं होती
थी तब तक बालक लौट कर घर नहीं आते थे । ऐसे
ही स्थानको गुरुकुल कहते थे ।

गुरुकृत (स० वि०) गुरुणा कृत अनुष्ठित, ६ तत् । गुरुके
जिसका अनुष्ठान किया गया हो ।

गुरुकोप (स० पु०) अतिशय क्रोध, अत्यन्त गुस्सा ।

गुरुक्रम (स० पु०) गुरुके क्रमो यत्र, बहुव्री० । परम्परा-
गत उपदेश, एक दूसरेको उपदेश देना ।

गुरुगल (स० वि०) गुरु सखन्धीय ।

गुरुगन्धर्व (स० पु०) इन्द्रतालके छह भेदों मेंसे एक भेद ।

गुरुगन्धिक (स० ली०) १ गुलमेहदीका पत्र । २ सुसब्बर-
का वृक्ष ।

गुरुगौता (स० स्त्री०) गुरुस्नवनभूता गौता । गौता-

[१] १७५४ नीलचन्द्र बुध चन्द्र सीमा वृहस्पति ।

१७५४ नीलचन्द्र बुध चन्द्र सीमा वृहस्पति ।

ककारनापि साधु । एक तरहका मयूर जो तिलमयूर कहलाता है ।

गुरुतण्डुला (स० ग्नी०) उपसगानी, किसी किष्कका धान ।

गुरुतम (स० त्रि०) अतिशय न गुरु गुरु तमप० । १ अति गुरु । माता पिता और आचार्य इन तीनोंकी गुरुतम कहते हैं । २ माता पिता प्रभृति गुरुजन । ३ अतिशय गुरुत्वविशिष्ट, बहुत भारी । (पु०) ४ परमेश्वर, ईश्वर ।
(भाष्य १११४६९०)

गुरुतल्प (स० पु०) गुरो पितृमन्थ भार्या यस्य, वह वी० । विमातृगामी, विमाताके गमन करनेवाला पुत्र । मनुने ऐसे मनुष्यकी मत्स्यपातकी बतनाया है । उसकी या तो जलते हुए ताम लोहपात्रमें भोकर अथवा ज्वलन लोह मयी स्तोमूर्तिकी आनिद्धन कर मरजाना भला है । इस प्रकारसे प्राणतारागसे भिन्न उसका और दूसरा कोई प्राय द्रव्य भी नहीं है । (म० ११४६) गुरुतल्प, ६०त् ।
२ गुरुकी भार्या, गुरुकी स्त्री ।

गुरुतल्पग (स०) गुरुतल्प ईवा ।

गुरुतल्पिन (स० पु०) गुरोस्तल्प गम्यत्वेनाख्यस्य गुरु-
इनि । विमातृगामी ।

गुरुता (स० स्त्री०) गुरोर्भाव गुरु तन् टाप् । १ गुरुत्व, भारीपन । २ महत्त्व, बढपन । ३ गुरुपन, गुरुका कर्तव्य, गुरुआई । ४ जाडा, अङ्गकी जडता ।

गुरुताप (स० पु०) अधिक गर्मी, कडो धूप ।

गुरुताल (स० पु०) गुरुरेष तानो यत्न, बहुव्री० । ताल विशेष, जिसमें मिर्क एक गुरु रहे ।

गुरुताई (स० स्त्री०) गुरुता ईषी ।

गुरुतोमर (स० पु०) एक तरहका छन्द, जो तोमरछन्दके अन्तमें दो मात्राएं और अधिक रव देनेसे बन जाता है ।

गुरुत्व (स० स्त्री०) गुरोर्भाव गुरुत्व । १ वैशेषिक मत मित्र चौबेस गुणोंके अन्तर्गत एक गुण । भाषापरिच्छेद के मतमें—पतनक्रियाका असमवायिकारण अर्थात् जिस गुणके रहनेसे द्रव्यका पतन होता है, उसको गुरुत्व कहते हैं । यह गुण अप्रत्यक्ष है, किसी भी इन्द्रिय द्वारा इसका प्रत्यक्ष नहीं हो सकता । इस गुणवाने किसी द्रव्यको तराजके एक तरफ रखनेसे उस पत्राके झुक जानेके

कारण इस गुणका अनुमान कर लिया जाता है । नौकिक व्यवहारमें इस गुणका रस्ती, मामा, तोला सेर, मन इत्यादि भिन्न नामोंसे उल्लेख किया जाता है । (भिन्नहरो और कषाण्ड ४) ब्रह्मभाचार्यके मतमें स्पर्मविशेषको ही गुरुत्व माना गया है । उनके मतसे इसका प्रत्यक्ष होता है ।

नैयायिक और वशेषिकोंने मिर्क जल मट्टीमें ही गुरुत्व गुण माना है । उनके मतसे—तेज, वायु आदि अन्य किसी भी पदार्थमें गुरुत्व गुण नहीं है । यह गुरुत्व दो प्रकारका है—एक नित्य और दूसरा अनित्य । जल और भृत्तिकोके परमाणुओंमें जो गुरुत्व है, वह नित्य है, कभी भी उसका विनाश नहीं होता । इनके सिवा अन्य ह्राण्युक्त आदिका गुरुत्व अनित्य है । इनकी उत्पत्ति और नाश हुआ करता है । (भाषापरिच्छेद)

भाङ्गमतमें अतिरिक्त गुणका उल्लेख न होने पर भी भाष्याचार्य द्रव्यस्वरूपमें वैशेषिक मतमिद बहुतेसे गुणोंको मानते हैं । परन्तु द्रव्यके आश्रयके बिना गुणका अस्तित्व नहीं इसलिये वैशेषिक मतमिद गुणोंको द्रव्यका स्वरूप ही मानते हैं, उसे द्रव्यके अतिरिक्त नहीं मानते । इनके मतसे भूल कारणके अन्वयतम तम गुणका धर्म गुरुत्व है, सत्व वा रजोगुणमें गुरुत्व नहीं है ।

(भाषापरिच्छेद)

भाङ्गमतमें ममस्तु जन्म पदार्थ त्रिगुणमय अर्थात् सत्व, रज और तम गुणसे उत्पन्न हैं । महत्तत्त्व आदि सभी द्रव्योंमें कारणरूपसे तमोगुण है । सांख्यमतकी पर्यालोचना करनेसे यह स्वीकार करना पड़ेगा कि, अन्य द्रव्य मात्रमें ही गुरुत्व है, तमोगुणके तारतम्यानुसार किसी द्रव्यमें इसकी अधिकता और किसीमें न्यूनतापाइ जाती है । मिट्टी और पानीमें तमोगुणके अथ अधिक होनेके कारण, इन दोनोंका गुरुत्व महज ही अनुभव होता है । परन्तु तेज आदि पदार्थोंमें तमोगुणके अथ वक्षत छोडे होते हैं, इसलिये उनके गुरुत्वका महजमें अनुभव नहीं होता । आधुनिक वैज्ञानिकोंने बहुतसे प्रमाणां द्वारा वायुमें गुरुत्व सिद्ध किया है ।

भाष्य और ४ गुणपरिच्छेद ईषी ।

जैनदर्शनमें रूपा पदार्थ मात्रमें गुरुत्व माना है ।

उनके मतसे गुरुत्व पुत्रलका गुण है ; जीवात्मा, धर्म-
अधर्म, आकाश और काल इन पञ्चद्रव्योंके अतिरिक्त जगत-
में जितने भी पदार्थ हैं, उन सबमें गुरुत्व गुण मौजूद है।

२ महत्त्व, गौरव, बड़प्पन । ३ अध्यापकत्व, उपदेश-
कत्व, मुद्दरिसका काम । ४ पूज्यत्व, पूजापना । ५ काठिन्य-
कठिनता ।

गुरुत्वक (सं० पु०) भारीपन ।

गुरुत्वकेन्द्र (सं० पु०) पदार्थविज्ञानमें पदार्थोंके बीच वह
बिन्दु जिस पर यदि उस पदार्थका सारा विस्तार सिसट
कर आ जाय तो भी गुरुत्वकर्षणमें कुछ प्रभेद न हो ।

गुरुत्वलक्ष (सं० पु०) किसी पदार्थके गुरुत्वकेन्द्रसे मीथे
नीचेकी ओर खींचो गई रेखा ।

गुरुत्वाकर्षण (सं० पु०) भारी चीजोंके पृथ्वी पर गिरने-
का आकर्षण । भास्कराचार्यने १२०० संवत्में इस आक-
र्षण-शक्तिका पता लगाया था । उन्होंने अपने सिद्धान्त-
शिरोमणिमें स्पष्ट लिखा है—

“साकृदिशन्ति सहीतयात, स्वस्य गुरुत्वाभिमुखं सगृह्णात् ।

आकृष्याने तत्पततोऽभिमि, समे समन्तान्कृपितत्वयं रवे ॥”

अर्थात् पृथ्वीमें आकर्षणशक्ति रहनेके कारण ही वह
भारीसे भारी पदार्थोंको अपनी तरफ खींचती है ; और
यह निश्चय है कि कोई पदार्थ पृथ्वीके आकर्षण सेही
भूमि पर गिरता है । य रोपके रहनेवाले न्यूटनने भी
सन् १६८७ई०में गुरुत्वाकर्षणके सिद्धान्तका पता चलाया
था । एक दिन अपने उद्यानमें बैठे हुए उन्होंने वृक्षसे एक
फल नीचे पृथ्वी पर गिरते देखा । उसी समय उन्होंने
अनुमान किया कि अगल बगल फल न गिरकर नीचे पृथ्वी
पर ही गिरा इसका कारण पृथ्वीको आकर्षणशक्तिसे
भिन्न दूसरा कुछ नहीं है ।

गुरुत्वानुभावकता (सं० स्त्री०) गुरुत्वानुभावकस्य धर्मः
गुरुत्वानुभावक-तल्-टाप् । जो वृत्ति द्वारा गुरुत्वका
अनुभव कर सकता है ।

गुरुदक्षिणा (सं० स्त्री०) गुरुप्रदेया दक्षिणा । अध्ययन
समाप्त होने पर गुरुको सन्तुष्ट करनेके लिये जो कुछ भेंट
दो जाती है उसे गुरुदक्षिणा कहते हैं । इस देशमें बहुत
प्राचीन कालसे गुरुदक्षिणा देनेकी प्रथा चली आती थी ।
उत्कल प्रभृति कई एक मुनिने गुरुदक्षिणासे उद्दण होने-

के लिये असाधारण साधन किया था । गुरु शिष्यसे दक्षिणा
स्वरूपमें जो कुछ चाहते थे, शिष्य प्राणपणसे उसीको
साधन करनेकी चेष्टा करते थे । उस तरहको गुरुदक्षिणा-
की प्रथा अब कहीं पर देखी नहीं जाती । विष्णुपुराणमें
लिखा है कि ह्यग्यवल्लरामने गुरुदक्षिणा सुकानके लिये
मान्दीपनके सृत या अपहृत पुत्रको ला अपने गुरुको
दिया था । उतक, कथ प्रभृति शब्द देखो ।

गुरुदासपुर—पञ्जाबके लाहौर विभागका एक जिला । यह
अक्षा० ३१° ३५' से ३२° ३०' ३०' और ७४° ५२' से ७५°
५६' पू०में अवस्थित है । इसका क्षेत्रफल १८८८ वर्ग-
मील है । इसके उत्तरमें काश्मीर, पश्चिममें मियानकोट
जिला, दक्षिण-पश्चिममें अमृतसर, दक्षिण-पूर्व और
पूर्वमें विज्जास नदी, कपूरथल राज्य, होगियारपुर और
कांग्रा जिला तथा उत्तरपूर्वमें चम्बाराज्य है ।

यह विपासा और रावी इन दोनों नदियोंके मध्य-
वर्ती वारी दोआबके अन्तर्भूत तथा दरावती नदीके
कूल तक विस्तृत हो कर मियानकोटसे त्रिकोणाकृति
में हो गया है । यह जिला छोटी छोटी पहाड़ियोंसे परि-
पूर्ण है और बीचमें हिमालय श्रेणीके एक पहाड़के श्रृं-
खले महारं उत्तरकी ओर जानेसे डलहौमीके पार्वतीय
स्वास्थ्यनिवास तक पहुँच सकता है । उलहामीका
शैलावास धवलाधार नामक हिमावृत पर्वतके ऊपर
अवस्थित है । पर्वतके नीचे स्थान स्थान पर बहादुरी
काष्ठ तथा दूसरे दूसरे वृक्षोंसे परिपूर्ण अधितप्रकाका
समूह देखा जाता है ।

साधारणतः जिलेका सम्पूर्ण क्षेत्र समतल है, केवल
पश्चिमका भाग कुछ ढालू है । जिलेमें बहुतसी भौतियोंके
मध्य जमीन पड़ी है, जहां धान तथा सिंघाड़ेकी फसल
अधिक होती है ।

मोगल राजाओंके समय बटाला और पठानकोट
इसके प्रधान नगर थे । बटाला नगरमें सम्राट्के सैतिले
भाई समसेर खाँका राजप्रसाद था और वहां उनकी
बनायी हुई एक सुन्दर पुष्करणी आज भी विद्यमान है ।
पठानकोट नगरमें एक समय राजपूत राजाओंकी राज-
धानी थी । प्रवाद है कि—१२वीं शताब्दीमें जैतपाल
नामक एक राजपूतने दिल्लीसे आकर यह नगर स्थापन

किया। बाद उनके व शशधरेने काङ्गडाके निकटवर्ती नूरपुर नगरमें अपना राजभवन निर्माण किया। कलानो नगरमें सम्नाट अकरवरेने उनके पिताकी मृत्युका समाद पाया और उसी जगह उन्होंने स्वयं सम्नाटकी उपाधि ग्रहण की थी। इरावतीकुलस्थ ईरा नामक नगर मिख गुरु नानकका परिचायक था। उक्त नगरके निकटवर्ती एक ग्राममें १५३८ ई०में नानककी मृत्यु हुई थी। मोगल राजत्वके समयमें इस जिलेका कुछ विशेष इतिहास नहो पाया जाता है। परन्तु मिख जातिके अशुद्धय होने पर एक पचमे राजकीय शासनकत्ता और दूसरे पचमे अहमद शाह दुरानोके विरुद्ध युद्ध करके मिख मर्दार क्रमशः अपने अपने प्रावश्यकतानुसार पञ्जाव और शतदुके दीनीं पार्ववती स्थानो पर अधिकार कर रहने लगे थे। कान्दिशा दलके अधिपति मान जाटव शीय अमरमिहने वारी दोभावका पश्चिमगत किया तथा रामधरिया दलके मर्दार जगरामिहने दोना नगर कलानोर श्रीगोविन्दपुर बटाला प्रभृति नगर अधिकारमें कर लिये। कान्दिशा मर्दारसे जगरामिह परास्त हो कर भाग चले, फिर भी १७८३ ई०में उन्होंने अपना राज पलटा लिया। १८०३ ई०में जगरामिहकी मृत्यु हुई। बाद उनके पुत्र योधसिंह राजा हुए। ये राजा रणजित सिंहके मित्र थे। १८१६ ई०में इनकी मृत्युके बाद रणजितने यह स्थान अपने राजपते मिला लिया। १८०८ ई०में अमरमिहका अधिकृत राजा सिख शासनके अधीन आ गया। प्रथम मिखयुद्धकी समाप्तिके बाद १८४६ ई०में मिखोसे पठानकोट और उसके निकटवर्ती पार्वतीय विभाग इष्ट दृग्दृष्टया कम्पनोको अर्पण किये गये। इस समय यह प्रदेश काङ्गडा जिलान्तर्गत था। बाद १८४६ ई०में वारी दोभावका उत्तराध स्वतन्त्र जिलेमें परिणत हुआ। इस समय बटाला नगरमें इसको सदर अदालत थी।

१८५५ ई०को रावी नदीको दूसरी पारमें शंकारगडकी तहसील इनके अन्तर्भूक्त हो कर गुरुदासपुर नगरमें सदर अदालत स्थापित हुई। १८६१ ई०में डलहौसी-गलावाम और उसके निकटस्थ समतल जित समूह पर अङ्गरेज गवर्नमेंटने अपना अधिकार जमाया। कुछ काल

तक बटालावामी मर्दार भगवानसिंह गुरुदासपुरके एक प्रधान भूम्यधिकारी थे। ये मिख मैन्धाधरच तेजसिंहके भागिनिये होते थे। १८६१ ई०में फिरोज शाह और मोवावजनके युद्धमें तेजसिंहने अङ्गरेजोंसे बटालेका अधि कार पाया था।

इस जिलेमें बटाला, देरानानक, दीना नगर, सुजन पुर, कलानीर, श्रीगोविन्दपुर और गुरुदासपुर प्रभृति कई एक नगर हैं, जिनमेंसे देरानानक और श्रीगोविन्दपुर नगर सिखोंके परम पवित्र स्थान हैं। डलहौसीका शैलावास मनुद्वष्टसे ७६८७ फुट ऊंचे पर है। श्रीभस्वतु में यहाँ बहुतेसे मनुष्योंका समागम होता है।

यहाँके जङ्गलमें चीता, भेंडिया, बिनाव, सुधर, नील गाय और हिरण पाये जाते हैं। इस जिलेकी जलवायु अत्यन्तम है। वर्षा भी यहाँ अधिक होती है। यहाँ लगभग १५ सेक्रेट्री, १४२ प्राइमरी स्कूल, ५८ एलिमेंट्री स्कूल और ३ ऐङ्ग्लोवर्नाकुलर हाई स्कूल हैं। विद्या विभागमें प्राय ८२००० रुपये खर्च होते हैं, जिनमेंसे गवर्नमेंट ७००० रुपये देतो है।

जिलेकी प्रधान उपन गेहूँ, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, रुई और ईख है। १८६८ ७० ई०में जो दुर्भिक्ष पडा था उससे अमृतसरके मनुष्योंकी भी अभीम कष्ट भोगना पडा था। देशके उत्पन्न द्रव्योंकी रफतनी करनी ही जिलेका प्रधान व्यवसाय है। आसपानके ग्रामोंमें रुईसे एक प्रकारके मोटे वस्त्र प्रसृत होते हैं।

२ पञ्जाब प्रदेशके अन्तर्गत गुरुदासपुर जिलेकी तहसील। यह अक्षा० ३१ ४८' से ३२ १३' ७०" और देशा० ७५ ६' से ७५ ३६' पूर्वमें अवस्थित है। क्षेत्रफल प्राय ४८६ वर्गमील है। इसके पूर्वमें बियास और उत्तर-पश्चिममें रावी है। इन दोनों नदियोंकी अधित्यका जङ्गलसे घिरी और उर्वरा है। यहाँकी लोकसंख्या प्राय २५८३०८ है। इसमें गुरुदासपुर, दीनापुर और कलानीर शहर तथा ६६८ ग्राम लगते हैं।

३ इसी नामके जिले और तहसीलका मर्दार। यह अक्षा० ३२ ३' ७०" और देशा० ७५ २५' पूर्व उत्तर पश्चिमीय रेलवेकी अमृतसर पठानकोट शाखा पर अवस्थित है। यह रेल द्वारा कान्दाससे १२५२ मील, बम्बईसे १२८३

मील और करांचीसे ८३८ मीलकी दूरी पर है ।

सिपाही विद्रोहके समयका सिखोंके प्रधान बन्दाका बनाया हुआ यहाँ एक दुर्ग है । इमने बाटशाह वहादुर-शाहको १७१२ ई०में मार डाला था । अन्तमें मोगलोंने इसे तथा इसके अनुयायियोंको मार डाला और दुर्ग अधिकार कर लिया था । आजकल यह मारखत ब्राह्मणोंका विहार बन गया है । शहरकी आय प्रायः १६००० रुपये और व्यय १७७०० रुपये है । यहाँ एक ईसाई वर्नाकुलर और एक अस्पताल है ।

गुरुदत्त—१ रसरत्नावली नामक संस्कृत वैद्यक ग्रन्थकार । २ हिन्दीभाषाके एक कवि । १८३० ई०को उन्होंने जन्म लिया था । वह जयसिंहपुत्र शिवसिंह सवालको सभामें उपस्थित रहते थे ।

गुरुदत्तशुक्ल—एक कान्यकुब्ज ब्राह्मण । वह कानपुर जिलेके मकरन्दपुरमें रहते थे । १८१३ ई०को उनका जन्म हुआ । इनके देवकीनन्दन और शिवनाथ दो भाई थे । गुरुदत्तशुक्ल रचित प्रधान काव्यका नाम पचीविलास है । वह हिन्दी भाषाके अच्छे कवि थे ।

गुरुदत्तसिंह—हिन्दी-भाषाके एक कवि । वह अवध प्रांतमें अमेठीके रहनेवाले राजा थे । उपनाम भूपति कवि था । १७२० ई० उनका अभ्युदयकाल रहा । वह कवि ही नहीं, कवियोंके पृष्ठपोषक भी थे ।

गुरुदास (पु०) १ किसी एक गुरुका नाम ।

गुरुदास—२ जैनग्रन्थकर्ता । इन्होंने प्रायश्चित्तसमुच्चयकी टीका लिखी है ।

गुरुदोक्षातन्त्र—(सं० ली०) टीचाप्रतिपादकं तन्त्रं टीचातन्त्रं गुरोरवलम्बनीयं दौक्षातन्त्रं मध्यपदलो० । एक तन्त्र जिममें गुरुसे शिष्य किम तरह दीक्षित किया जा सकता है उसकी प्रणाली अत्यन्त सुन्दर रूपमें वर्णित है ।

गुरुदीनपांडे—एक कान्यकुब्ज ब्राह्मण । १८३४ ई०को उनका अभ्युदय हुआ । उन्होंने वाक्मनोहर पिङ्गल नामक एक आवश्यक ग्रन्थ (१८०३ ई०) लिखा था । इसमें केवल छन्द ही नहीं अलङ्कार, ऋतुवर्णन, नखशिख आदि अनेक विषय वर्णित हुए हैं ।

गुरुदीनराय (वन्दीजन) युक्तप्रदेशस्थ सीतापुर जिलेके पातेय ग्रामवासी एक भाट । १८८३ ई०को वह जीवित

थे खैरो जिलास्थ ईमानगर्क राजा रणजित्मिंह शाह जांगड़ेकी सभामें इनका आना जाना रहा ।

गुरुदेव (सं० पु०) गुरुचामी देवसे ति कर्मधा० । १ इष्ट-देवता । जिमके निकट दीक्षित होनेके लिये जाय उसीको गुरुदेव कहते हैं । २ वीरशैवप्रदीपिका नामक संस्कृत ग्रन्थकार ।

गुरुदेवत (सं० पु०) गुरुर्वह्म्यतिदेवतमस्य, बहुव्री० । उपपानक्षत्र ।

गुरुद्वारा (हिं० पु०) गुरुका स्थान, गुरुके रहनेकी जगह ।

गुरुपण्डित—एक नैयायिक पण्डित । इन्होंने भवानन्दो टोका और गुरुपण्डितोय नामक न्यायग्रन्थ प्रणयन किये हैं ।

गुरुपत्नी (सं० स्त्री०) गुरोः पत्नी, इ-तत् । गुरुः आचार्यः पतिर्यस्याः । १ गुरुकी अमवर्णा वा सवर्णा स्त्री । मनुने लिखा है कि गुरुकी सवर्णा स्त्री गुरुके सदृश पूजनीया है, किन्तु गुरुकी अमवर्णा स्त्रीको केवल प्रत्युत्थान और अभिवादनसे ही सम्मान करना चाहिए । शिष्यको गुरुपत्नीका अङ्गराग, गात्रमार्जन और केशमस्कार प्रभृति कार्य नहीं करना चाहिए । उन्हें स्नान भी करना उचित नहीं है । युवक शिष्य युवती गुरुपत्नीका पाद ग्रहण कर प्रणाम भी नहीं कर सकता ।

गुरोः पितुः पत्नी, इ-तत् । २ माता । ३ विमाता ।

गुरुपत्र (सं० ली०) गुरुभारयुक्त पत्रं पत्राकारफलक यस्य, बहुव्री० । धातुविशेष, रांगा, शीसा ।

गुरुपत्नी (सं० स्त्री०) गुरु गुरुपाकं दुर्जरं घत्रमस्य बहुव्री०, टाप् । तिन्तिडोवृत्त, इमलीका वृत्त ।

गुरुपरिचर्या (सं० स्त्री०) गुरोः परिचर्या इ-तत् । गुरुकी सेवा, गुरुकी शूश्रूषा ।

गुरुपाक (सं० त्रि०) गुरुः पाको यस्य, बहुव्री० । दुष्पाच्य, जो सहजसे परिपक्व न हो ।

गुरुपादुकागिरि—बौद्ध शास्त्रोक्त एक पवित्र पर्वत । इसका दूसरा नाम कुक्कुटपाद भी है । यह महानदीके पूर्वमें स्थित है ।

गुरुपुत्र (सं० पु०) गुरोः पुत्रः इ-तत् । आचार्य प्रभृति गुरुके पुत्र ।

मनुका मत है कि गुरुपुत्रको भी गुरुकी नाई व्यवहार करना चाहिये। टोकाकार कद्रूकभट्टने लिखा है कि यदि गुरुपुत्र अल्प वयस्क वा अपना गिण्य न हो तो उसके प्रति गुरुमा भाव दि दलावे, किन्तु गुरुपुत्र वानक समानवयस्क या अपना गिण्य हो तो उसके प्रति वैसा व्यवहार करना नही चाहिए। जो पिताके गिण्यक पास अधयन करता है उसे चाहिए कि वह उनको गुरुकी नाई मान्य करे।

शिष्यको न्यूनवयस्क वा समानवयस्क गुरुपुत्रका गाव भाजन, उच्छिष्टभोजन या पदमर्दन करना नहीं चाहिए एवं वैसे गुरुपुत्रको स्नान भी कराना मना है। शिष्य दबा।

तान्त्रिकोंका कथन है कि मनुका यह विधान सिफ आचार्य गुरुपुत्रके प्रति उपयुक्त है, किन्तु मन्वदाता गुरुपुत्र चाहें कौसाहो क्यों न हो तो भी उन्हें गुरुमा व्यवहार करना चाहिये।

‘गुरुवत् गुरुवत्तु।’ (नमगार)

वस्तुमान सामाजिक नियमसे बहुतमे तान्त्रिक उपासकानि गुरुके मह्य गुरुपुत्रको पादपूजा और उच्छिष्टादिका भोजन किया करवे है।

गुरुपुत्र्य (म० पु०) ऋसुकवृत्त, सुपारोका पेंड।

गुरुपुत्र्य (म० पु०) हृहृस्वतिके दिन पुष्य नक्षत्रके पहने का योग। ज्योतिषो इसे शुभ योग मानते हैं।

गुरुपूजा (म० ख०) गुरो पूजा, ६ तत्। गुरु वा मन्वदाताको पूजा। दीक्षित हो कर निम तरह प्रति दिन दृष्टदेवताकी पूजा करनी पडतो है उमी तरह गुरु पूजा करनेका भी विधान है। पृ० १६५।

गुरुप्रमाद (म० पु०) गुरो प्रमोद, ६ तत्। गुरुक प्रति प्रेम या प्रीति। (वि०) गुरु प्रमोदयति गुरु प्र मुट णिच षण। २ गुरुका मत्तोपकारक, जिमसे गुरु मनुष्ट हो।

गुरुप्रमाद (म० पु०) गुरो प्रमाद, ६ तत्। गुरुको प्रमथता।

गुरुप्रिय (म० वि०) गुरो प्रिय, ६ तत्। जिमको गुरु चाहने हो, वा गुरुका प्यारा हो। गुरुके प्रियो यस्य, षट्ठी०। गुरुपरायण, गुरुके जिमकी षचना भक्ति हो। गुरुशु—प्रातिगिण्य। गुरु भोग गिवकी उपासना और मन्म धारण करते हैं। कृतात्तरी भाना पहननेका भी

उन्हे अधिकार है गिवकी पूजामें जो चढाया जाता, उनके घर आता है। टोन माहवने उन्हे शूद्र जैसा लिखा है। यह दाक्षिणात्यके अधिवासी और गिव, मारुती, हनुमान आदि मन्दिरेके पुजारी हैं।

गुरुभ (म० क्लो०) गुरोर्भ, ६ तत्। १ पुष्यनक्षत्र। हृह अति इस नक्षत्रका अधिप्रति होनेके कारण इसे गुरुभ कहते है। २ धनुराशि। ३ मोनराशि।

गुरुभाई (हि० पु०) वैसे मनुष्य जिममें प्रत्येकका गुरु एक हो व्यक्त हो।

गुरुभार (म० पु०) १ गुरुके पुत्र। २ बहुत भारो।

गुरुभाव (म० पु०) गुरोर्भाव, ६ तत्। उरुता, भारीपन, गुरुदासी भावयति कम धा०। १ अतिगय गौरवान्वित अभिप्राय। (वि०) गुरुगौरवयुक्त भावोऽभिप्रायो यस्य, बहुव्रो०। ३ जिसका अभिगय वा तात्पर्य गौरव युक्त हो।

गुरुभृत् (म० पु०) गुरु गुरुत्व विभर्ति गुरु भृत् क्रिपु, तुगागमच। गुरुत्वयुक्त, जिसको गौरव हो।

गुरुमत् (म० वि०) गुरु, गुरुवर्णोऽप्य भस्ति गुरु मत्पु, १ जिममें गुरुवर्ण हो। २ गुरुयुक्त।

गुरुमर्दन (म० पु०) नित्यकर्मधा०। वायविगिण्य, एक तरहका वाजा।

गुरुसुख (हि० पु०) दोक्षित, जिमने गुरुसे मन्म लिया हो।

गुरुसुखी (हि० स्त्री०) एक प्रकारको लिपि, इसे गुरु नानकने चनाया था। आज भी यह लिपि पञ्जाबमें प्रचलित है।

गुरुरत्न (म० स्त्री०) गुरु गौरवान्वितं रत्न। १ पुष्य रागमणि। पुष्यराज नामका रत्न। २ गोमेद नामक रत्न।

गुरुराज—१ एक वैदिकान्तिक। इन्द्रेनि चन्द्रिका टीका प्रणयन की है। २ इन्द्रायनायानमस्तोत्र रचयिता।

गुरुरामकवि—सुमद्राधनश्रय नामक मरुतन नाटक प्रणेता। गुरुराहु (म० पु०) गुरुणा सह राहुयत्र, षट्ठी०। योगविगिण्य। हृहृस्वति राहुके साथ एक नक्षत्रमें आनेसे ‘गुरुराहु’ योग जाता है। इस योगमें विवाह प्रण और यज्ञ प्रभृति कार्य निषिद्ध हैं। भविष्यपुराणमें मन्था

केन्द्र गुरु और शनि के भिन्न भिन्न नक्षत्रमें रहने पर भी यदि एक राशिगत हों तो भी यह योग लगता है ।

राशिगत हों ।

गुरुवर्ष । सं० पु० । गुरुवर्ष वातादिप्रकोपजनित-
कोष्ठमेषः तं वर्त्तन्ति तन्-टक् । निम्नाकवृत्त, कागजी
शेखरादि ।

गुरुवर्ष । सं० पु० । गुरु गुरुकुले वर्त्तते वृत्त-ग्निनि ।
वृत्त-ग्निनि । वि० । = गुरुकुलमें रहनेवाला ।

गुरुवर्ष (सं० की० पु०) वर्षद्विगुण, क्रिपे एक वर्षका नाम ।
इसके प्रभाव मानके ग्रेट्टिन तकके सौर वर्ष कहते हैं,
जिस प्रकार वृत्त-ग्नि सौर राशिके प्रथमांशसे चलना
प्रारम्भ कर जितने समयमें मीन राशिके शेष अंशमें पहुँ-
चता है उतने समयको गुरुवर्ष कहते हैं । वर्तमान
समयमें मानवका दिनदिन व्यवहार सौरवर्षके अवलंबन
में ही चलता करता है अन्य किसी ग्रहके वर्षको उसमें
प्रयत्न नहीं होता । परन्तु ज्योतिर्विज्ञानियों ने मभी यही-
का एक एक वर्ष स्थित किया है । वज्रवर्ष । वराह-
सिंहिके मतमें बृहस्पतिकी माध्यमिक गतिमें एक राशि-
के सौर-सालको गुरुवर्ष कहा जाता है ।

वृत्त-ग्निनाम निवा है जि. बृहस्पति जिस साम
और जिस नक्षत्रमें उदित होगा, उसके अनुसार सामके
नामकी भांति उस वर्षका नाम होगा । बृहस्पतिके कुल
बारह वर्ष हुआ करते हैं, जिसको बृहस्पत्य मान
(12-Year Cycle of Jupiter) कहते हैं । यथा—
ज्येष्ठ, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुण, चैत्र, वैशाख,
ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्र और आश्विन कृत्तिका वा
मेरुद्विगुण नक्षत्रमें बृहस्पतिके उदय होनेसे कार्तिक नामक
वर्ष होता है । इस वर्षमें शकटजीवी, अग्निजीवी और
राशिके पीटा होती है । बहुतसे लोग व्याधियस्त्र और
शस्त्रे प्रायतनमें मर्माहत होते हैं । नान और पाने
कृत्तिका पूर्ण होती है ।

समिधा वा शार्दा नक्षत्रमें बृहस्पतिका उदय हो
तो उस वर्षका नाम मार्गशीर्ष होता है । इस वर्षमें
शय्या परसे दे धार रुज, चूहे, पक्षी, और टिट्टीयों आदि
के प्रयत्न शक होता है । मनुष्योंकी व्याधिका भय और
शय्या परसे निकलने का शक्यता होती है ।

पुनर्वसु वा पुष्य नक्षत्रमें बृहस्पतिका उदय हो,
तो पौष नामका वर्ष होता है । इस वर्षमें धान्यका
मूल्य दूना वा तिगुना हो जाता है । राजाको शत्रुका
भय नहीं रहता और पौष्टिक कार्योंकी भी वृद्धि हुआ
करती है ।

अश्लेषा अथवा मघा नक्षत्रमें बृहस्पतिके उदय
होनेसे, उसको माघवर्ष कहते हैं । इसमें पितृगणकी
पूजाकी वृद्धि, समस्त प्राणियोंका मङ्गल, आरोग्य, सुवृष्टि
धान्य सुलभ, सम्पत्की वृद्धि और मित्रोंका लाभ होता है ।

पूर्व फाल्गुनी, उत्तर फाल्गुनी वा हस्ता नक्षत्रमें बृह-
स्पतिका उदय होने पर वर्षका नाम फाल्गुन होता है ।
इस वर्ष मङ्गल, शस्यवृद्धि, स्त्रियोंका दुर्भाग्य, चीरोंकी
वृद्धि और राजाओंको सर्वदा उग्रता रहती है ।

चित्रा वा स्वाती नक्षत्रमें बृहस्पतिके उदयसे वर्ष का
नाम चैत्र होता है । इस साल थोड़ी वर्षा, राजाओंका
सुदुस्वभाव, कोष और धान्यकी वृद्धि, परन्तु रूपवान् व्य-
क्तियोंको पीड़ा होती है । इस वर्ष लोगोंको अन्नका कष्ट
नहीं रहता ।

जिम् वर्षमें विशाखा वा अनुराधा नक्षत्रमें बृहस्पति
उदित होता है, उस वर्षको वैशाख कहते हैं । इसमें
राजा और प्रजाके धर्मकी वृद्धि और प्रसन्नता होती है ।
किसी तरहका भय नहीं होता ।

जिस वर्षमें ज्येष्ठा वा मूला नक्षत्रोंमें बृहस्पतिका
उदय होता है, वह वर्ष ज्येष्ठ कहलाता है । इस साल
राजा और धर्मज्ञ व्यक्ति प्राधान्य लाभ करते हैं । कङ्क
और शमीके सिवा और सब धान्योंकी ज्ञानि होती है ।

पूर्वाषाढा वा उत्तराषाढा नक्षत्रमें बृहस्पतिके उदय-
से वर्षका नाम आषाढ़ होता है । इसमें सूखा पड़ता
है और अलक्ष्य वस्तुओंका लाभ तथा लक्ष्य वस्तुकी रक्षा
होती है । परन्तु राजाओंको व्ययता होती है ।

जिस वर्ष बृहस्पति श्रवणा वा धनिष्ठा नक्षत्रमें उदित
होता है, उस वर्षको श्रावण कहते हैं । इसमें सब
तरहका अनाज निर्विघ्न पकता है, पर उक्त अनाज-
की रानिमें मनुष्य और पाखण्डियोंको पीड़ा होती है ।

शतभिषा, पूर्वभाद्र और उत्तरभाद्रपद, इनमेंसे किसी
एकमें बृहस्पतिका उदय हो, तो उस वर्षको भाद्रवर्ष

करते हैं। इस वर्ष अर्ध अताजातीय शम्यकी वृद्ध होती है, और कोई अनाज बिलकुल ही नहीं होता। कहीं कहीं मयदूर दुर्भिक्ष पड़ जाता है।

बैती, अश्विनी और भरणी इनमेंसे किमी एक नक्षत्र में वृहस्पतिका उदय हो, तो वह वर्ष आश्विन कहलाता है। इस वर्षमें अतान्त वर्षा, प्रजाको हर्ष और सम्पूर्ण प्राणियोंको सुख होता है। कहीं भी अन्न कष्ट नहीं रहता। (१३१४००००) १३१४ पुनिषार ४ श्री

गुरुवली (स० स्त्री०) मकीर्ण रागका एक भेद।

गुरुवायुदेवी—दक्षिण कनाडा जिलेके उप्पिनङ्गडी तालुकके अन्तर्गत एक ग्राम। यह वेन्नतङ्गरोके पास तालुकको कचहरीसे १२ मोल उत्तरपूर्वमें अवस्थित है। यहाँ एक जैन मन्दिर है। फर्गुसनने उक्त मन्दिरको 'गुरुवाङ्गरो वतनाया है। उक्त मन्दिरके मण्डपकी छत पाँच स्तम्भों पर उठो हुई है, और भित्तिके पास चारों तरफ पत्थरको मप मूर्त्तिया खुदो हुई हैं। लोगोंका विश्वास है कि, यह मन्दिर बहुत प्राचीन कालका है।

गुरुवायूर—मन्द्राजके मलवार जिलेके अन्तर्गत पौनानी तालुकका एक ग्राम। यह अक्षां १० ३५ उ० और ७६ ३ पु० चौड़ाट पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय ३६८३ है। यहाँ नवद्विजाधरण, नाथर और उच्च श्रेणीके हिन्दुओंका वास अधिक है। यह पौनानीसे १६ मोलको दूरी पर बसा है, यहाँके प्राचीन कृष्णमन्दिर तथा नगरके प्रवेशद्वारके गोपुरका शिल्पकार्य अतान्त सुन्दर है। १७०४ ई०में टोपू सुलतानने यहाँके बहुतसे मन्दिरोंको नष्ट भ्रष्टकर दिया था। १७६४ ई०में फालिकटके सामुरिराजने कई एक जी० मन्दिरोंका संस्कार किया था।

गुरुवार (स० पु०) वृहस्पतिका दिन, वृहस्पतिजो देव तापोंके गुरु थे इसीसे गुरु शब्दसे वृहस्पतिका ग्रहण हुआ।

गुरुयामो वैश्वव—उत्कलदेशके एक मम्पटागका नाम। ये शृङ्गयु होती हैं। इनमें न्यागे न्यागे मठ और मन्त्र हैं। ये मन्त्र वहाके क यरी, किमान, मालाकार इत्यादको मन्त्र दे कर अपना शिष्य बनाते और उनमें सेतो वारा करा कर अपने जायिका निर्वाह करते हैं। इनकी

पदांत मो दूमरो तरहकी है। ये अन्यान्य वैश्ववोंके नाथ एक प किमें बैठ कर भोजन नहीं करते।

गुरुवीज (स० पु०) मन्दूर।

गुरुवृत्ति (स० स्त्री०) गुरुपु वृत्तिर्व्यवहार, ७ तत्। गुरुके प्रति शिष्याका कर्त्तव्य व्यवहार। (शिष्य दे०)

गुरुशि शपा (स० स्त्री०) नित्यकर्मधा०। शि शपावृत्त, शोममका पेड़।

गुरुशत्रुपा (स० स्त्री०) गुरो शत्रुपा, ६ तत्। गुरुसेवा। गुरुश्रेष्ठ (स० स्त्री०) धातुविशेष, रांगा।

गुरुस (स० पु०) गुरुडगाली, किमी किम्बका धान।

गुरुसारा (स० स्त्री०) गुरु गुरुत्ववान् सारी यम्प, बद्धी०। शि शपा शोसमका वृत्त। (त्रि०) २ महाभारयुक्त वस्तु, बहुत भारी चीज।

गुरुमिह (स० पु०) एक पर्व, द्योहार। जब वृहस्पति म ह राशि पर आता है तो यह पर्व लगता है। इस द्योहारमें नासिक चित्रकी यात्रा और गोदावरी नदीका स्नान पुण्य माना गया है।

गुरुसेवा (स० स्त्री०) गुरो सेवा, ६-तत्। गुरुकी शत्रुपा।

गुरुस्कन्ध (स० पु०) गुरुस्कन्धोऽस्य, बद्धी०। १ एक पवत। २ क्षीरक्षीट्ट, खिरनीका पेड़।

गुरुस्वन्द (स० पु०) अम्बका स्वन्दविशेष, घोडेका पसीना। गुरुह (स० त्रि०) गुरु देवता।

गुरुहन् (स० पु०) गुरु गुरुपाक हन्ति गुरु हन्-क्षिप्। १ उजना मरपी। (त्रि०) गुरु पाचार्यादिक हन्ति क्षिप। २ गुरुहस्ता।

गुरु (हि० पु०) गुरु देवता।

गुरुचटान (हि० वि०) १ अत्यन्त चतुर, सुप्रचानाक। २ चालवाज, धूर्त।

गुरुत्तम (स० त्रि०) गुरुपु गुरुणा वा उत्तम। १ पूज्य-तम, सबसे अधिक पूजा। (पु०) २ परमेश्वर।

(शश ६)

गुरुपीत्तम और गुरुत्तम प्रादि पटीके समामके विषय में वैश्याकरणीका मतभेद है। किमी किमी वैश्याकरणीके मतमें गुरुत्तम प्रादिके ध्यान पर गुरुपु उचाम इस प्रकारका मयमी तत्पुरुष मयामही होता है, परन्तु समाध

नहीं। पाणिनीय सूत्र भी इन्हींके मतका समर्थन करता है। (न निर्धारणे : पा २।२।१०) कैयटके मतसे—जिम स्थान पर निर्धार्यमाण, निर्धारणका कारण और जिमसे निर्धारण किया जाता है—इन तीनोंका उल्लेख रहता है, वहाँ निर्धारणमें विहित षष्ठीका समास नहीं होता; किन्तु इन तीनोंके न रहने पर ही जाता है। (कैयट)

जैसे—'मनुष्याणां द्विजः श्रेष्ठः' इस जगह निर्धार्य-माण द्विज, निर्धारणका कारण श्रेष्ठत्व और जिमसे निर्धारण किया गया है वह अर्थात् मनुष्य, इन तीनोंका उल्लेख है, इस लिये षष्ठी समास नहीं हुआ। किन्तु गुरुत्तम आदिमें तीनोंका उल्लेख नहीं होनेके कारण वहाँ षष्ठी और संज्ञामो तत्पुरुष ये दोनों समास हो सकते हैं। गुरुपदेश (सं० पु०) गुरोरुपदेशः, ६-तत् । गुरुका वाक्य; गुरुका उपदेश।

गुरुपासना (सं० स्त्री०) गुरोरुपासना, ६-तत् । गुरुको सेवा।

गुरेट (हिं० पु०) एक तरहका बेलन जिससे कड़ाहमें पकता हुआ देखका रस चलाया जाता है। यह लगभग चार या पाँच हाथके डंटेमें लगा रहता है।

गुरेरा (हिं० पु०) गुल्लिमा देखो।

गुर्गाँव (गुड़गाँव) पञ्जाबके छोटे लाटके अधोन एक जिला। यह अक्षा० २७° ३६' से २८° ३३' उ० और ७६° १४' से ७७° ३४' पू०में अवस्थित है। भूपरिमाण १६४५ वर्गमील है। इसके उत्तरमें रोहतक, पश्चिम और दक्षिणमें अलवर, नाभा और भिन्द राज्य, दक्षिणमें मथुरा जिला, पूर्वमें यमुना नदी और उत्तरपूर्वमें दिल्ली जिला हो। गुर्गाँव नगरमें जिलेकी सदर अदालत है। परन्तु जिलेका रेवाड़ी नामक स्थान ही वाणिज्यके लिये प्रधान है।

दो छोटे पहाड़ जिलेके दक्षिणसे ले कर बराबर उत्तरकी ओर समतल क्षेत्रतक फैले हुए हैं। इसके पश्चिममें एक और पहाड़ है जिसने अलवर राजकी स्वतन्त्र कर रखा है। इस पहाड़की एक शाखा दिल्ली तक चली गई है। दोनों पहाड़ोंमेंसे एक भी ६०० फुटसे अधिक ऊँचा न होगा। यहाँकी जमीन बालुकामय है। कहीं कहीं पहाड़ भी है। पार्वतीय छोटे छोटे असंख्य जलस्रोत

इस जिलेके मध्य प्रवाहित हो कर नजफगढ़ नामक भीलमें परिणत हो गये हैं। [यह भील गुर्गाँव मठरमें रोहतक और दिल्ली जिला तक विस्तृत है। यहाँके नौके निकटवर्ती वारह ग्रामोंके कूपोंका जल नवगाऊ है तथा रोहतकके निकटवर्ती नजफगढ़ भीलके समीप भी जलमें लवण प्रस्तुत किया जाता है इस पहाड़के दक्षिणके भागमें लोहेकी खान है जिलाके दक्षिण फिरोजपुरमें एक समय लोहे गलनिका कारखाना था। अन्यान्य खनिज धातुमें तवा, सीसा, गेरुमट्टी, हरभान्न प्रसृत पाये जाते हैं। पश्चिम ओरके पहाड़के नीचे एक झरणा है जिसका जल गन्धकमिश्रित है। वात, क्षत तथा दूरमे दूरमे चर्मरोगोंके लिये यह जल बहुते उपकारी है। इस जिलेमें जङ्गल अधिक नहीं पाया जाता है, परन्तु पहाड़के ऊपर वाघ, चीता, हरिण, नीलगाय, शृगाल और खरगोस प्रभृति जन्तु देखे जाते हैं।

इस जिलेके प्राचीन इतिहासके विषयमें विशेष पता नहीं चलता है। मुसलमान इतिहासमें इस जिलेका नाम 'मेवात' अर्थात् मेव जातिका वासस्थान कह कर उल्लिखित है। अभी भी गुर्गाँवके अधिवासीमें मेव जातिकी संख्या ही अधिक है। दिल्लीमें जब मोगल, प्रभाव जाञ्जल्यमान था, तब ये मेव दस्युके दलमें दिल्लीके प्राचीर तक आकर लूट पाट किया करते थे। ये पहाड़ोंमें इस तरह छिप कर रहते थे कि मोगल सम्राट किसी उपायसे उन्हें दमन नहीं कर सकते थे। १८०३ ई०में लोडलोक की जयके बाद यह जिला अंगरेजोंके अधिकारमें आया।

१८३६ ई०से इस जिलेकी अधिक उन्नति हुई है। परन्तु दस्युका उत्पात और दुर्द्वर्ष राजपूत जातिका अत्याचार आज भी नहीं गया है। पहले भरतपुरके राजाने जिलेकी समस्त जमीन इजारे पर लगा दी, बाद १८०४ ई०में भरतपुर युद्धकी गडबडीसे वह समस्त बन्दोवस्त बन्द हो गया।

रेवाड़ोके निकट भरवा जातिके मैनिकावासमें पहले इसी जिलेकी सदर अदालत थी, बाद १८२१ ई०में यह उठकर गुर्गाँव नगरकी चली गई। १८३२ ई०में यह जिला तथा दिल्लीका अधिकांश उत्तर-पश्चिम गवर्नेमण्टके

अधिकारमें आ गया। १८५७ ई०के मईमासमें मिपाहो विद्रोहकी समय फरकलनगरके नवाब विद्रोही हो उठे, मेव जाति तथा राजपूत इनके अनुगामी हुए। १८५८ ई०में नवाबकी विद्रोहीका सहकारी समझ कर उनको ममस्त सम्पात्त सरकारने जद्वत् कर ली।

इस जिलेमें शेवाडी, फिरोजपुर, पलवल फरकलनगर, गुर्गाँव, मोहाना, होदल और मो ये कई एक नगर लगते हैं। यहाँ मेव, जाट, गूजर, अहौर, राजपूत, वेणिया रहन और मोना जातिका वाम बहुत है। ममस्त गुर्गाँव जिलेमें शोतना देवीकी पूजा ही अधिक प्रचलित है।

जनको विशेष सुविधा नहीं रहनेमें १७८३ ई० १८०३ १८१२, १८१७, १८३३, १८३७, १८६० और १८६६ में मात बार दुर्भिक्ष पहा था।

परन्तु १७८३ ई०का महामारी दुर्भिक्ष आज भी हिन्दुस्थानियोंके हृदयमें जायत है। यहाँ चार दातव्य चिकित्सालय हैं।

२ पन्नावके गुर्गाँव जिलेकी तहसोल। यह अक्षा० २८ १२' से २८' ३३' ७० और देशा० ७६ ४२' से ७७ १५' पु०में अवस्थित है। भूपरिमाण ४१३ वर्गमील और लोकसंख्या प्राय १२५०६० है। इसमें गुर्गाँव, मोहन और फरकलनगर नामक तीन शहर तथा २०७ ग्राम लगते हैं। तहसोलके उत्तरको चमोन उर्वर; तथा उषिम को यानुनामय है।

३ उक्त जिले और तहसोलका प्रधान नगर। यह अक्षा० २८ २६' ७० और देशा० ७७ २' पु० राजपूताना मानवा रनयके गुर्गाँव छे मनसे ३ मीलकी दूरी पर अवस्थित है। इस नगरमें प्राय १ मील उत्तर पूर्व यहाँ दुरगढ़ जैनके शाले पर एक स्तूप है। जिमकी ऊँचाई ३ फुट, चौड़ाई १२' १' १' और मोटाई ५ फुटकी है। यहाँ शोतना देवीका एक मन्दिर, एक मिडिल स्कूल तथा १ चिकित्सालय है।

गुर्पेनी (दि० स्तो०) १ गेह और चना मिनी दुधा पनाज।

२ भारतके युक्तप्रान्तमें रहनेवालो एक अफगानजाति। इनमें कोई कोई ममतल भूमि पर चैती थारो करते हैं और मभो लोह पथरी पर गुमा करते हैं। उक्त पर्वतों

के दक्षिणमें हुन्दर नामक एक स्थानमें एक दुर्ग है इस जातिको दमन करनेके लिये मञ्जमलने यह दुर्ग बनवाया है। हुन्दरके पाम कन्दाहार जैनके लिए एक गिरिसड्ड है। १८५०, १८५२ और १८५३ ई०में अफगान सेना यहाँ टिखाई दी। इस पर ब्रिटिश गवर्नेण्टने घोषणा निकाली कि किमो भो अफगानको अङ्गरेको राज्यमें पानिसे, उसे कैद कर लिया जायगा। १८५५ ई०में गुर्चनो मर्दारके गिरिसड्डकी रक्षाके लिये नियुक्त होने पर, अङ्गरेजने उन्हें (खुर्चके लिए) वार्षिक हजार रुपये देते थे। इस जातिको लियरो शाखा बहुत ही बलवान है, ये लोग हर वषत सुरोजातिके साथ युद्ध करनेमें लगे रहते हैं। गुर्चनो और लियरो जाति पर्वतके सामने, तथा ट्रेण्डक जाति हुन्दर और मियुनकोटकी बीचकी समतल भूमि पर वाम करते हैं।

गुज (फा० पु०) गटा, मोटा।

गुजेमार (फा० पु०) एक तरहके सुमलमान फकीर।

यह मदा लोहगुज हाथमें लिये इधर उधर घूमता है।

गुजर (म० पु०) गुरु जरयति जृणिव् अण्। १ गुज रात टेय। (अष्टाध्याय १।१०)

गुजरात कर्चनेमें इस समय बम्बई प्रेमोडियोके समुद्र-कुलवर्ती सम्पूर्ण उत्तराग अर्थात् उत्तरसोमामें राजपूताना, दक्षिणमें कोट्टण, पूर्व दिग्ध और पश्चिममें सागर तकका बोध होता है। इसके भीतर सूरत, मडौच खेडा, पञ्चमहल, अहमदाबाद, वडोदा, महोकाटा, शेवा, पालनपुर, राधनपुर, वानामिनोर, कास्ये दद्र, चीरार, वामंटा, पेट, धरमपुर धरड, सचोन, वमरयो आद नगर आते हैं। इसके सिवा इसमें १८० लुट्ट राज्यसिगिट काठियावाड प्रदेग भी आता है। इन सबके लेकर गुजरातका भूपरिमाण प्राय ४१५३६ वर्गमील होता है। यहाँ गुजरातो, मराठा और कनाडी भाषा चलती है।

ऊपर जिम प्रकार गुजरातका आकार लिखा गया है, पश्चिमी गुजरात राज्य पहले उतना बड़ा नहीं था। उक्त स्थानमें गुर्जरयोमो गुजरातियांक धीरे धीरे फैल जानेके कारण पश्चिम उक्त मभो जनपद गुजरातमें गिने जाने लगे। प्राचीन गुर्जर शुराष्ट्र, पानर्त, भरकलक

(भड़ौंच) आदि जनपदोंमें पृथक् ही था, यह बात पुराण आदि प्राचीन ग्रन्थों और युयुनक्षुआङ्गके भ्रमण-वृत्तान्त-से भली भाँति मालूम हो जाती है। प्राचीन गुर्जर वर्तमान बड़ोदा, खेड़ा और जावरा जिल्लके उत्तरसे राजपूतानाके दक्षिणसीमा तक विस्तृत था। अब भी उक्त प्रदेशको गुजरात कहते हैं। ७वीं शताब्दीमें जब चीन परिव्राजक युयुनक्षुआङ्ग (क्यू-चे-लो) गुर्जर राज्यमें आये थे, तब इसका भूपरिमाण ५००० ली अर्थात् प्रायः ४०० कोस था। उस समय यहाँ बीस वर्षकी उम्रवाले एक क्षत्रिय राजा राज्य करते थे, जिनकी राजधानी पिन्लो मो-लो अर्थात् राजपूतानास्य बालमेरमें थी। ईसाकी ८वीं शताब्दीमें गुर्जरमें चापोल्कट राजाओंका अभ्युदय हुआ। इन चापोल्कट वंशके राज बनराजने गुजरातकी राजधानी अनहिलपत्तनमें स्थापित की। ६६८ विक्रमसंवत्में गुर्जरराज चालुक्य राजाओंके हाथमें आया। चापोल्कट और चालुक्य देखो।

वि० सं० १३०२ में वधेलावंशोय वीसलदेवने गुर्जर पर अधिकार पाया। उसके बाद इनके पुत्रादि क्रमसे अजुनदेव, सारङ्गदेव और कणदेवने कुल ५८ वर्ष राज किया। पोछे सुलतान अलाउद्दीनने गुर्जर अधिकार किया। इनके पोछे उदय खाने २५ वर्ष, सुलतान मुजफ्फरने १८ वर्ष, सुलतान अहमदने ३२ वर्ष ७ महीने ७ दिन (इन्होंने अहमदाबाद बसाया था), सुलतान कुतुब-उद्-दीनने १० वर्ष ५ मास ६ दिन, सुलतान टाउदशाहने ३६ वर्ष, (संवत् १५७८ में) सुलतान सिकन्दरने ८ दिन, (सं० १५८२ में) बादशाह महमूदने १ मास १० दिन और इनके बाद बादशाह बहादुरने १० वर्ष राज किया था। इन बहादुर शाहने गुर्जरराज्य बहुत कुछ बढ़ाया था। इनके बाद मोगल-सम्राट् हुमायूँ ८ महीने गुजरातमें आ कर रहे थे। पोछे बहादुरने अधिकार पाया, किन्तु समुद्रमें उनको मृत्यु हो गई। १५६३ संवत्में बादशाह मुहम्मद राजा हुए और उन्होंने १७ वर्ष राज्य किया। बहरा नामक किमी एक घातकके हाथ इनकी मृत्यु हुई। १६१७ संवत्में मुजफ्फर शाह राजा हुए। इनके समयमें अकबर बादशाहने आ कर गुजरात देखल कर लिया।

तभीसे यह स्थान दिल्लीके मोगल बादशाहोंके अधीन हुआ। सिन्धु-प्रदेशके अधिकार करनेके उपरान्त यह स्थान भी अंग्रेजी राज्यमें शामिल हो गया।

(वह, ०) गुर्जरोऽभिजनोऽस्य गुर्जर अण् बहुत्वे तस्य लुक्। २ गुर्जरदेशवासी, गुजरातके रहनेवाले।

३ गुजरातवासी ब्राह्मणोंका एक भेद, पञ्चद्राविड़ोंमें एकतम। (सद्भाद्रि २११२) गुर्जर नामक स्थानमें रहनेके कारण इनका गुर्जर नाम पड़ा है। इनमें ८४ श्रेणियाँ हैं। यथा—

अक्षमाला, अगस्त्यवाल, अनवाल, इतावाल, उनेवाल, उदुखरा, कनौजिया, कन्दोलिया, कपिला, करखेलिया, करोरा, कलिङ्गा, खरयता, खेड़ावाल, गङ्गापुत्रा, गयावाल, गर्गवी, गिरनारा, गुर्जरगोरा, गुगला, गोमतीवाल, गोमित्रा, गोरवाल, चतुर्वेदीमोड़, चंवेश, चित्रोरा, जम्बू, झरोला, तंनोरिया, तलिङ्गा, तिलोक, तिलोकीय, उटीच, त्रिवाड़ीमेवारा, त्रिविड़ामाड़, टधीच, टाहिया, दोमावाल, द्राविड़ा, नरसामपरा, नादोदरा, नापला, नार्मदिक, निदुवाना, पगोरा, पर्वालिया, पल्लीवाल, पुरवाल पुष्करणा, प्रेतवाल, भड़मेवावा, मनोरिया, भरडाना, मरोवा, मालवी, मारु, मेरत्वाल, मोतमैत्रा, मोताला, याज्ञिकवाल, राजवाल, रायपुरा, रायकोवाल, रोरवाल, ललाठ, बड़नगर, विमनगर, बयड़ा, बरकारा, बलोदरा, बाल्मीक, विष्णोदरा, शिहोराउटीच, सनोरिया, सजोदरा, सयोदरा, सनोविया, सहचोरा, सहस्र-उटीच, सारखत, सिन्दुवाल, श्रीगोड़ा, श्रीमाला-सोमपरा, सोरठिया और हरसोरा। गुजराती ब्राह्मण देखो।

गुर्जरी (सं० स्त्री०) गुर्जर उत्पाटकत्वेन अस्त्यस्य गुर्जर अच्-बाहुलकात् ङीप्। १ रागिणीविशेष। प्राचीन सङ्गीतवेत्ताने इसे भैरव रागकी सहचरी कह कर वर्णन किया है। (सद्भात० प० गान० १६) दर्पणकारका मत है कि शीघ्र ऋतुमें भैरवरागके साथ यह रागिणी गान करना उचित है। प्रातः कालके एक प्रहरके बाद यह रागिणी गान गाया जाता है। २ गुजरात देशकी स्त्री।

गुर्जाल—कृष्णा जिल्लके अन्तर्गत एक ग्राम। यह टाचे-पल्लीसे ८ मील दक्षिण पश्चिममें अवस्थित है। “पलनाड़-वीर” नामक ग्रन्थमें इसका प्राचीन नाम पलनाड़ लिखा

है। यहा चार मन्दिरोंके खण्डहर पडे है। मन्दिर बहुत ही प्राचीन मान्म होते हैं। यहा तीन गिन्गानेप सिन्तते है, जिनमेंसे एनेमें वीरेश्वर स्वामीके मन्दिरके प्रतिष्ठाता राजा राजनरेन्द्रको प्रशस्ति है। २य गिन्गानेख ध्वजस्तम्भके पूर्वको तरफ एक पत्थर पर है, इसमें शक १४३०के मन्दिराज रामप्यदेवकी प्रशस्ति है। ३य गिन्गानेख वीरभद्रस्वामीके मन्दिरमें है, इसमें सत्याश्रय-व श्रेय चालुक्यकुलतिलक तिरुमलदेवको प्रशस्ति है। मि० डिमवेलका कहना है कि, इस मन्दिरका भग्दप मुसलमानाो टङ्का है। परन्तु यह मुसलमानोंके आनेसे पहले बना था। मन्दिर आदिमें वहीहोंके गिल्पनैपुण्यका बहुत निदर्शन मिलते है। यहा एक प्राचीन दुर्गभी है।

गुर्ण (म० वि०) चेट्टि ।

गुर्द (फा० पु०) गुदि स्तानका नियामी

गुदि स्तान (फा० पु०) फारसके उत्तरका एक प्रदेश

इस प्रदेशका कुछ अश भ्राजकाल रुमराज्यके अधीन है।

इसे कुर्दिस्तान भी कहते है।

गुरो (हि० स्तो०) भुनेहू, ए जो।

गुर्वङ्गना (म० स्तो०) गुरो रङ्गना, ६ तत् । गुरुपत्नी, गुरूकी स्त्री० ।

गुर्वादित्र्य (सं० पु०) शुद्धता सह आदित्यो यत्र, बहु०, योगविशेष।

हृहस्पति और सूर्यके एक नक्षत्र और एक राशि पर मिलनेकी 'गुर्वादियोग' कहते है। इस योगमें,

यज्ञ, विवाह प्रभृति कार्य करना निषिद्ध है। ज्योतिषमें

एक और दूसरा ही वचन है। 'गुरोरेणा' = अर्थात्

गुर्वादि योगमें दशदिन मात्र भकाल (कुगमय) रहता

है, किन्तु अग्रहकारोंने विचार करके यह नियम किया

है कि विभिन्न नक्षत्रमें अर्थात् हृहस्पति और रवि

एक राशि गन होने पर दशदिन मात्र अथवा समय है,

किन्तु एक नक्षत्रमें रहनेमें जब तक यह योग रहगा

तब तक भकाल माना जाता है। ३००० हि ५०।

गुर्वर्ध (म० वि०) गुरु गौरवान्वितोऽर्थो यस्य, बहुव्री० ।

१ जिनका प्रधान अर्थ हो, दुरवगाह व्याप्यायुक्त । २ सम

धिक प्रयोजन।

गुर्विणी (म० स्तो०) गुरुर्गर्भा, क्यव्या गुरु इनि निपात

नाम् मिह तमा डोव् । मगर्मां, गर्भिणी, गर्भवती ।

१००के ६०।

गुर्वी (म० स्तो०) १ गर्भिणी, गर्भवती । २ गोरवयुक्त स्तोत्रोधक पदार्थ। ३ बडो वा अष्ट स्त्री । ४ गुवाक हृह । ५ गुरुपत्नी । ६ गायत्री ।

गुल (म० पु० स्त्री०) गुड डम्प ल' । इक्षुका विकार,

अश्लक्ष्ण गुड । २ जनाया हुआ तम्बाकू । ३ कोयनेकी

गोटो । ४ विस्फोटक, शीतला । ५ एक तरहका हृह ।

गुल (फा० पु०) १ गुलाबका फूल । २ फूल पुष्प ।

३ शौर, हस्ता ।

गुल—पञ्जाब प्रान्तके करनान जिलेमें केवल तहसीलकी

छोटो तहसील । इसका क्षेत्रफल ४५५ वर्गमील है ।

यहा २०४ गाव बसते है । गुल गाँवमें ही सदर है। माल-

गुजारा और सेस लगभग १ लाख २० हजार रुपया पडती

है ।

गुल भजायव (फा० पु०) १ एक प्रकारका पुष्प । २ एक

पुष्पका पौधा ।

गुल-धनार (फा० पु०) एक तरहका दाहिसका वृक्ष ।

गुल अन्वाम (फा० पु०) अन्वास नामक पोधा । इसमें

वर्षाकालके समय अत या पीत रंगके पुष्प लगते है ।

गुल अन्वामी (फा० पु०) कुछ काले रंग लिये एक प्रकार-

का लाल रंग । इस तरहका रंग चार छटाके शहावके

फूल ' छटाके आमको खटाई और षाठ मागे नीलकी

स योग करनेमें बनता है । इसमें यदि नीलका रंग बढ़ा

दिया जाय तो एक तरहका किरमिजो रंग बन जाता है ।

गुल अशर्फी (फा० पु०) एक प्रकारका पोने रंगका

पुष्प ।

गुलतर (फा०) शोर अंश ।

गुल औरग (फा० पु०) एक प्रकारका गन्दा ।

गुलक (म० पु०) गुणदृष्टण, एक तरहकी घाम ।

गुलकद (फा० पु०) १ गुलाबी मिठाई । २ औरका

मिठाई, दूधकी बनी हुई मिठाई ।

गुलगुटक (फा० पु०) कपडे पर बने बूटे छापनेका शीगम-

का बना हुआ एक तरहका ठप्पा ।

गुलकार (फा० पु०) कपडे पर बने बूटे बनानेवाला

कारिगर ।

गुलकारो (फा० स्तो०) १ बने बूटे का काय । २ बने

बूटेदार काम ।

- गुलकेश (फा० पु०) १ मुर्ग केशका पौधा । २ मुर्ग केशका पुष्प ।
- गुलखैरू (फा० पु०) १ नीलरंग पुष्पवाला पौधा या चसका पुष्प ।
- गुलगर्चिया (फा०) गिनगिलिया देखो ।
- गुलगुपाड़ा (अ० पु०) शोर-गुल, हल्ला ।
- गुलगौर (फा० पु०) बत्ती काटनेकी कैची ।
- गुलगुल (फा० वि०) नरम, मोलायम, कोमल ।
- गुलगुला (हिं० पु०) १ मैदा और घृत या तैलसे बना हुआ एक तरहका पकवान । २ आंख और कानके मध्यका स्थान, कनपटी ।
- गुलगुलिया (फा० पु०) बंदर नचानेवाला, मदारी ।
- गुलगुली (हिं० स्त्री०) हिमालयके भरनामें पाये जानेवाली एक प्रकारकी मछली । यह प्रायः दो हाथ तक लम्बी होती है । इसके मांसमें बहुत कांटे रहते हैं ।
- गुलगोधना (हिं० पु०) कपोलका फुला हुआ मनुष्य, वह मनुष्य जिसका गाल फूला हो ।
- गुलचला (फा० पु०) गोलाचलानेवाला, तोपची ।
- गुलचाँदनी (फा० पु०) पुष्प लगनेवाला एक तरहका पौधा । यह पुष्प श्वेत रंगका होता और प्रायः रात्रिकालमें ही खिलता है ।
- गुलचा (फा० पु०) प्रेमपूर्वक तथा धीरे धीरे गालों पर किया हुआ आघात ।
- गुलची (फा० पु०) बड़इरियोंका एक प्रकारका यन्त्र, जो रन्देकी तरह होता है ।
- गुलचीन (फा० पु०) कलमसे लगाये जानेवाला एक तरहका वृक्ष जो हर महिनामें फूलता है । इस वृक्षका पुष्प ऊपरसे श्वेत और भीतर कुछ पीले रङ्गका होता है । इस पुष्पमें केवल चार या पांच दल रहते हैं । ऐसा कहा जाता है कि इस फूलका अधिक सुगन्ध लेनेसे पीनस रोग हो जाता है ।
- गुलकर्रा (हिं० पु०) भोगविलास या आराम जो स्वच्छन्दता और अनुचित रीतिसे किया जाय ।
- गुलजलील (फा० पु०) रेशम रङ्गानेका असवर्गका पुष्प । यह खुरासानमें उपजता है ।
- गुलजार (फा० पु०) १ वाटिका, बाग, उद्यान । (वि०) २ हराभरा, आनन्द और शोभायुक्त ।

- गुलजारीलाल—एक जैन कवि, इन्होंने 'आत्मविलास' नामक एक पद्य ग्रन्थ रचा था ।
- गुलभाटी (हिं० स्त्री०) १ तागी आदिका लपेट जं बैठ कर गोलीके आकारकी ही जाती है । २ सिकुड़न, शकन ।
- गुलभङ्गी (हिं०) गुनभरी देखो ।
- गुलञ्चकन्द (सं० पु०) गुल गुड़ रस अञ्चति अञ्च-अण-गुलञ्च कन्दोऽस्य बहुव्री० । कन्दविशेष, गुलकन्दा । इमका पर्याय—गुच्छाहकन्द, वलाहकन्द, और निघण्टिका है ।
- गुलतराश (फा० पु०) १ बत्ती काटनेकी कैची । २ बत्ती काटनेवाला नौकर । ३ बागके पौधोंको कतरने या काटनेकी कैची । ४ पौधोंको काटनेवाला माली । ५ प्रस्तर पर पुष्प पत्ती बनानेका एक तरहका यन्त्र ।
- गुलता (हिं० पु०) गुल्लममें छोड़े जानेवाली मिट्टीकी बनी गोली ।
- गुलतरा (फा० पु०) एक तरहका पुष्प, मुर्गश, जटाधारी ।
- गुलथी (हिं० स्त्री०) जमे हुए पानीकी गुठली वा गोली ।
- गुलदस्ता (फा० पु०) १ कई तरहके सुन्दर पुष्प और पत्तियोंका समूह जो एक साथ बंधे रहता है । फूलोंका गुच्छा । २ एक तरहका घोड़ा । ऐसे घोड़ेका अगला बाँया पैर गाँठ तक श्वेत और दाहिने पैरका रंग पिछले शेष पादोंके रंगके जैसा होता है । इस तरहका घोड़ा दोषी नहीं समझा जाता ।
- गुलदाउदी (फा० स्त्री०) एक प्रकारका फूलका पौधा । (Chrysanthemum Indicum) क्रांतिर्क मासमें इसमें फूल लगते हैं जो देखनेमें बहुत सुन्दर होते हैं । वर्षाके पानीमें यह पड़े नष्ट हो जाता है । इस लिये मनुष्य इसे गमलोंमें लगाकर छायामें रखते हैं । इस पौधेके पुष्पको भी गुलदाउदी कहते हैं ।
- गुलदाना (फा० पु०) गुलदस्ता रखनेका चीनी मट्टी या काँचका पात्र ।
- गुलदाना (फा० पु०) बुंदिया नामकी मिठाई ।
- गुलदार (फा० पु०) १ एक तरहका श्वेत रंगका कबूतर । इसके शरीर पर लाल या काले रंगके छोटे छोटे बहुतसे चिन्ह होते हैं । २ एक प्रकारका कशोदा ।
- गुलदावदी (फा०) गुलदावदी देखो ।

गुलदुपहरिया (फा० पु०) १ दो ज्ञाय ऊचाइका एक प्रकारका पोधा। इस पोधिको पच्छिया लम्बी और कटावदार होती है। २ इसी पोधिका कटोरिके आकारका पुष्प जो गहरं लाल रंगका होता है। यह पुष्प सूर्यके ऊपर आने पर खिलता है।

गुलदुम (फा० स्त्री०) तुलतुल।

गुलनरगिग (फा० स्त्री०) एक तरहकी लता।

गुलनार (फा० पु०) १ अनारका पुष्प। २ अनारके पुष्प के जैसा लाल रंग। ३ एकतरहका फलहीन अनार वृक्ष। इसमें सिर्फ बड़े बड़े सुन्दर पुष्प ही लगते हैं।

गुलपपडी (फा० स्त्री०) एक तरहकी मिठाई जो पपडी भी कही जाती है।

गुलप्यादा (फा० पु०) सदा गुलाब, जिसमें सुगन्ध कम होता है।

गुलफानूम (फा० पु०) एक प्रकारका बड़ावृक्ष। यह सिर्फ शोभाके लिये लगाया जाता है।

गुलफिरकी (फा० स्त्री०) गुलाबी रंगके पुष्प लगनेवाला पोधा।

गुलफिरिङ्ग (फा० स्त्री०) एक तरहका फूलका पोधा। (Vene roses)

गुलफु दना (हि० पु०) खेतोंमें उगनेवाली एक तरहकी घास।

गुलवक्वानी (फा० स्त्री०) १ हलदी पीठ, एक प्रकारका पीठ। यह बर्मदा नदीके उदगमके निकट अमरकटकके वनमें होता है। २ इसी पोधिका खेत और सुगन्धित फूल। आख आने पर यह फूल पीम कर लगाया जाता है।

गुलवक्कर (फा० पु०) नकमके खिलनें जीतकी बाजी।

गुलवदन (फा० पु०) एक प्रकारका धारीदार चट्टमूल्य रेशमी वस्त्र। प्राचीन कालमें यह सिर्फ काशीमें बनता था, किन्तु आज कल पञ्जाबके कई नगरोंमें भी प्रसृत होने लगा है।

गुलवर्ग—हैदराबाद राज्यके दक्षिण पश्चिम कोणका डिविजन। इसकी दक्षिण विभाग भी कहते हैं। यह अक्षा० १५ ११ तथा १८ ४० उ० और देशा० ७५ १६ एव ७७ ५१ प० मध्य अवस्थित है। इसके पश्चिम तथा

दक्षिण क्रमशः बम्बई और मद्राज प्रेसिडेन्सी पडती है। क्षेत्रफल १६५८५ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः ४६२८३४ है। इसमें ४ जिले लगते हैं। ३२ शहर और ५६५२ गांव हैं।

गुलवर्ग—हैदराबाद राज्यके गुलवर्ग डिविजनका जिला।

इसके उत्तर उसमानाबाद तथा बटर, पूर्व अतराफ बलटा एव महबूब नगर, दक्षिण महबूब नगर, रायपुर तथा लिङ्गसुगूर और पश्चिम उसमानाबाद बीजापुर तथा बम्बई प्रान्तका अकालकोट राज्य लगा है। गुलवर्ग जिला अक्षा० १६ ४० एव १७ ४४ उ० और देशा० ७६ २२ तथा ७८ २० प० मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ४०८२ वर्गमील है। उत्तरसे दक्षिणपूर्वकी पहाड़ चला गया है। जमोन उत्तरसे दक्षिण और दक्षिणपूर्वकी ढाल है। नदियां कई एक हैं। सिवा पहाड़के दूसरी जगह जङ्गल नहीं। आबहवा कहीं ठण्डी कहीं गर्म है।

मुसलमानोंके अधिकारसे पहले गुलवर्ग जिला बरङ्गलके काकतीयोंका शासनाधीन था। ई० २४वीं शताब्दीके आदि भागको मुसलमानोंने उसे दिल्लीको बादशाहतमें मिलाया। फिर यह बहमानी और बोजापुरका राज्य भुक्त हुआ। इसके बाद वह फिर दिल्लीकी बादशाहतमें लगा और हैदराबाद राज्य प्रतिष्ठित होने पर अलग हुआ। इसमें कई एक भग्नहर किले और ११०८ शहर और गांव हैं। लोकसंख्या प्रायः ७४२७४५ है। नोग कनाडी तेलगु, उर्दू और मराठी भाषा चलते हैं। प्रधान खाद्य लुवार है। पशु बलिष्ठ हैं। १२६ वर्गमील जङ्गल है। खानसे पत्थर निजलता है। सूती और रेशमी माडिया, जरदोजी कपडा, मामूली सूती कपडा और सूत तैयार किया जाता है। गहरिये कम्बल बहुत अच्छे बनते हैं। दो एक कपाम श्रोतने और कपडे बनानेके पुतलीघर भी हैं। लुवार, बाजरा आदि चनाज, दाल, चमडा रुइ, गुड तेलहन, तम्बाकू और तरवरके बहलकी रफतनो होती है। श्रेष्ठ इण्डियन पेनिनसुला रेलवे और निजामकी गारण्टेड ट्रेट रेलवे चलती हैं। ७८ मील मडक है। यह जिला ३ भव डिविजनमें विभाजित है। बुरे समयमें भविष्योंकी चोरियां और डकैतियां बढ जाती हैं। १८७३

ई०को गुलबर्ग जिला हुआ। मालगुजारी कोड़े १० लाख ४० हजार है। शिक्षा बहुत कम है।

गुलबर्ग—हैदराबाद राज्यके गुलबर्ग जिलेका दरमियानी तालुक। इसका क्षेत्रफल ६७४ वर्ग मील और लोकसंख्या प्रायः १०३०५१ है। एक शहर और १४५ गांव आवाद हैं। मालगुजारी लगभग २ लाख ८० हजार रुपया है। जमीन काली है।

गुलबर्ग—हैदराबाद राज्यके गुलबर्ग डिविजन और जिलेका पुराना शहर और सदर। यह अक्षा० १७° २१' ३०" और देशा० ७६° ५१' ५०" में पड़ता है। आवादी कोड़े २८२२८ है। पहले वह हिन्दुओंका बड़ा नगर था। १३४७ ई०से अहमद शाह बालीके शासन कालतक यहां बहमानी राजधानी रहा, फिर बहमानी राजाओंकी इमारतें और मसजिदे गिर गयीं। यह काली जमीनके मैदानमें बसा हुआ है। १८७४ ई०के लगभग एक डिविजनका सदर होनेसे इसने तरकी पायी। आजकल यहां सूबेदारका महल, बहुतसी सरकारी और अहल-कारोकी इमारतें, सेण्ट्रल जेल, लोगोंकी हवाखोरीका वाग, एक बड़ा तलाव, एक लंबा चौड़ा बाजार, स्कूल, डाकखाना, दूसरे पब्लिक दफ्तर और सूत तथा कपड़ेके पुतलीघर हैं। ग्रेट इण्डियनपेनिनसुला रेलवेका छेसन शहरसे २ मील दूर है। वाणिज्य व्यवसायकी बड़ी धूम रहती है। उत्तर-पश्चिमकी पुराना किला है। परन्तु उसकी दीवारें, दरवाजे और इमारतें विगड़ गयी हैं। बाला-हिसार दुर्ग अभी अच्छा है। पुराने किलेकी मसजिद, जो पूरे तीर पर नहीं बनी, खूब लम्बी चौड़ी है।

गुलबादला (फा० पु०) एक तरहका पेड़, उदल। इसके रेशीसे मोटे रस्से बनते हैं।

गुलबूटा (फा० पु०) बेल बूटा नकाशी।

गुलबेल (फा० स्त्री०) एक तरहकी लता।

गुलभकमल (फा० पु०) एक प्रकारका पुष्पका पौधा।
(Gomphenaslobosa)

गुलमस्त (फा० पु०) औषधविशेष।

गुलमा (फा० पु०) बकरीकी अंतड़ी, दुलमा, लगूचा।

गुलमुहम्मद खाँ—दिल्लीके एक मुसलमान कवि। इनका

उपनाम नातिक था। उन्होंने जोहर-उल्-मुयजुम नामकी किताब लिखी है। १८४८ ई०की इनका मृत्यु हुआ।

गुलमेहदो (फा० स्त्री०) एक प्रकारका पौधा जो आग्निन साममें फूलता है। इसके पुष्प कई रंगके होते हैं।

(Impatiens balsamina)

गुलमेख (फा० पु०) गोलसिरका एक प्रकारकी काल। फुलिया।

गुलरेज (फा० पु०) आतिगवाजीकी फुलभण्डो।

गुललाला (फा० पु०) पोम्तेके पौधेके सदृश एक प्रकारका पौधा। इसके पुष्पके भी गुलनाला कहते हैं जो बहुत सुन्दर और कोमल दीख पड़ते हैं।

गुलशकरी (फा० स्त्री०) एक प्रकारकी गुलाबी मिठाई।

गुलशन (फा० पु०) उद्यान, वाटिका फुलवारो वाग।

गुलशन—फारसी भाषाके एक गुप्त कवि। यह उनका उपनाम है, प्रकृत नाम शेख सैद-उल्लाह था। कुछ दिनों वह दिल्लीमें रहे और कोड़े १००००० गजनें छोड़ चले। यह शाह अब्दुल अहद सरहिन्दीके चले थे और उनके मक्का तोरें करने भी गये थे। १७२८ ई०को इनका मृत्यु हुआ।

गुलशन पीर—हिन्दी भाषाके एक पञ्जाबी कवि।

“यहाँ कोई लगबीच नजर न आया किशन, धान सुगर्भा।

मगदो मुरादा बारी पुरियानो मैं याँ चली गुलशन पीर मगर्भा ॥”

गुलशब्बो (फा० पु०) १ एक प्रकारका पौधा जो लहसुनके पौधे जैसा होता है। इसका हिन्दी पर्याय रजनीगंधा, सुगंधरा वा सुगंधिराज हैं। २ इसी पौधिका श्वेत और सुगन्धित पुष्प। ३ एक खेल जो टोप बुझाकर खेला जाता है।

गुलसुम (फा० पु०) सोनारोंका एक यन्त्र यह नकाशने और फूल आदि बनानेके काममें आता है।

गुलसीशन (फा० पु०) हलके आममाने रंगका एक प्रकारका पुष्प। यह पुष्प सिर्फ फारसमें होता है।

गुलजारा (फा० पु०) एक प्रकारका गुलगुला।

गुलहली (फा० स्त्री०) गुलहली देखो।

गुला (सं० स्त्री०) गुलः शुद्ध इव रसोऽत्यस्याः। गुल, सुही वृत्त।

गुलाब, या गुलाबफूल—खनाम प्रसिद्ध एक पुष्पविशेष ।

गुलाबके संस्कृत नाम—शतपत्नी और पाटलि, धारव-
बर्द्ध, पारसी—गुल, चीन यि मि, सियाचै, मुटकाई ज्ञा, क्रीचाम चीन होयाट्ट तो, ग्रीक रोजीन, रूप—रोजा,
ओलन्दाज रूस अङ्गरेजी—रोज (Rose), मलय—
मवर तामिल—गुलाप्पु, तेलङ्ग—रोजायुवी, गुलपुवी ।
Rose Centifolia वा मिरिया देशका गुलाबवृक्ष ।
संस्कृत भाषामें इसे शतपत्नी, हिन्दीमें करम कल्ल या कठ
गुलाब और अङ्गरेजीमें कैब्रिज रोज (Cabbage Rose)
कहते हैं । यूरोपमें, भारतमें सर्वत्र, पारस्य और चीन
देशमें इसकी पैदायश होती है । इसी फूलसे गुलाब-
का पत्र और एसेन्स बनता है । भारतमें इसी फूलसे
‘गुलकन्द’ बनता है । गुलकन्द खानिमें अत्यन्त सुखादु
और पिच शान्त करता है ।

इसके पानोको गुलाब जल कहते हैं । इस फूलकी मधुर
सुगन्धिमें सब ही का मन मोहता होता है, इसीलिये
इसका विशेष आदर है । गुलाबके पेड़की डाली अत्यन्त
काटेदार होती है । पत्तें चिकने होने पर भी उनके
किनारे नोकदार खरखरे होते हैं । भारतमें यह फूल
घरमें, बगीचोंमें और जङ्गलोंमें सर्वत्र पैदा किया जा सकता
है और देखनेमें आता है । काश्मीर, लाहूल और भूटान
जङ्गलोंमें पीले रङ्गके गुलाब अपने आप पैदा होते हैं ।
लाधमें मसुद्रपृष्ठसे ११००० फीट ऊँचेमें पीले रङ्गके बड़े
बड़े गुलाब देखनेमें आते हैं । चीनमुल्कमें भी ऐसे
पीले गुलाब देखे जाते हैं । यह पेड़ हमारे गुलाबके
वृक्षोंसे बड़े और लता-जैसे होते हैं । इसी लिये हमारे
देशमें इस वृक्षको बेत समय चारों ओर खपवें लगा
देते हैं । अङ्गरेज लोग इस फूलको “मार्सेलनीन” कहते
हैं । इसका गुच्छा बड़ा आदरनीय और भेंट देनेके
कायल होता है ।

माधारणत १८ अक्षांशसे ७० अक्षांशके भीतर यह
वृक्ष उषज सकता है । सूखी जमीन या मिट्टीमें अगर
यह वृक्ष बोया जाय, तो ऊँट्टी पैदा होती है । यूरोपके
उत्तरांशमें मिर्क इकहरी पापडोवाल्ला फूल पैदा होता
है । परन्तु इटाली, ग्रीस और स्पेन प्राप्ति देशोंमें बहुत
पापडोवाल्ले फूल काफी पैदा होते हैं ।

Rose Glendifera—पञ्जाबमें इसे गुल शिउती
या शिवती कहते हैं ।

हिमालय प्रदेशमें मसुद्रपृष्ठसे ४५०० से १०५००
फीट ऊँची जगहमें एक तरहका गुलाब (Rose Ma-
crophylla) पैदा होता है । इसका फूल जब पक
कर काला हो जाता है, तब लोग उसे खाया करते हैं ।
यह खानिमें बड़ा मधुर और मीठा होता है ।

पञ्जाबमें और हिमालयसे ५०००से ८५०० फीट
ऊँची जमीनमें Rose webbiana नामका गुलाब होता
है । इसका भी फूल खानिमें मीठा और आदरनीय होता
है ।

फूल और बीज वैचनेवालोंके सूक्ष्मपत्रमें अब सैकड़ों
तरहके गुलाबोंके नाम देखनेमें आते हैं । उनमेंसे (१)
बसोरा वा पारस्य देशका उत्पन्न एक तरहका गुलाब,
(२) म्याथीगन्ध दामास्क जातीय, (३) स्थायीगन्ध,
भियजातीय (इङ्गलैण्डमें इस फूलका विशेष आदर है),
(४) बुर्जु देशका गुलाब, (५) चीनिया गुलाब, और
(६) चायकी गन्धयुक्त,—ये ही गुलाब प्रसिद्ध हैं । इसके
सिवा जितने नामधारी गुलाब हैं, वे सब इन्हीं ६ श्रेणि-
योंमें शामिल किये जा सकते हैं ।

गुलाब फूल जैसा मनोहर है, उसका पत्र और
जल भी उतना ही प्रिय और उम्दा होता है । गुलाबका
फूल मनुष्यका प्रिय है, इसलिए उसकी पैदायश भी
खुब की जाती है और इससे लाभ उठानेके कारण
गुलाबके पैदायशके लायक जमीनको कोमत भी ज्यादा
है । इटालीमें केनि नामक तरहकी गुलाबके कुछ खेत
हैं । उनमें प्रत्येक बोधाका मासिक लाभ तान मो रूपसे
है वहाँ प्रति वर्षमें अट्ठाई लाख रूपयेके सिफ गुलाब
फूल ही पैदा होते हैं । गाजीपुरमें भी ऐसे गुलाबके
खेत हैं । गाजीपुरमें गुलाबकी खेतोंके लिए माडे चार
सौ बीघा जमीन मौजूद है । वहाँ भी छोटे छोटे खेतोंमें
विभक्त है । प्रत्येक खेतके चारों तरफ काँटोंकी भांडो
और मिट्टीकी टोबार लगे हुँद हैं । प्रत्येक बोधा पर
५ रु०के हिमाशमें कर और इसमें अनावा १ हजार पेड
पर २५ रु० और भी लिया जाता है—इस प्रकार कुल
३० रूपये जमोदारोंकी मिलते हैं । प्रति बोधामें ८
और भी खर्च पड़ता है । जनवायु और उत्पाके प्रयुक्त
नीनेमें उन एक हजार इन्हीं अनावसे भी अधिक फूल

होते हैं। आजकल एक लाख फूलोंका दाम ६० से १०० तक है। इस पर भी लषकोंकी किसी तरहका नुकसान नहीं। फाल्गुनमासके अन्तमें गुलाबकी पैदायश होती है। उन दिनोंमें कृषक प्रातःकाल हो उठ कर खी युतोंको साथ ले फूल तोड़ने जाते हैं। उन फूलोंका व्यवसायी लोग खरीदकर उनसे गुलाब-जल और अंतर बनाते हैं।

गुलाबकी कलम बनानेके नियम—पेड़की डालीको काट कर या कलम बाँध कर कुछ जं'ची मिट्टीमें गाड़ देनेसे लता उत्पन्न होती है। ज्यादा पानी देनेसे तथा सूखी जमीनमें कलम उत्पन्न नहीं होती। वसंतमें अधिक पानी बरसनेके कारण जड़ गल जाती है। इसलिए कलम ऐसे जगह लगानी चाहिये जिससे उसकी जड़में पानी न जम सके। गरमियोंमें ज्यादा घास होनेसे सूख न जाय, इसलिए कुछ कुछ पानी देते रहना चाहिये। इसके सिवा मार्चके महीनेमें इस वृक्ष पर एक तरहका कीड़ा बैठता है, जो पत्तोंको खाता रहता है। यह कीड़ा वृक्षके लिये बहुत अनिष्टकर है और ती क्या, इससे पेड़ सूख तक जाता है।

किसी किसीका कहना है कि, सूखे पत्तोंको जला कर मिट्टीके साथ मिला देनेसे एक तरहका सार बनता है। कोई कोई ऐसा भी कहते हैं कि, घासके छोटे छोटे टुकड़े करके उसको तवा पर सेक कर मिट्टीमें मिलानेसे अच्छा सार बनता है। अगर महीने महीने फूल उत्पन्न करनेकी इच्छा हो, तो पेड़को छाँटनेसे पहले जड़में ज्यादा मिट्टी लगा कर जमीनसे पेड़को उखाड़ लेना चाहिये। बादमें जब तक उस पेड़के तमाम पत्ते न भर जाँय, तब तक उसमें पानी न देना चाहिये। पत्तोंके भर जाने पर उस पेड़को पुनः मिट्टीमें गाड़कर उसमें उतना पानी देते रहना चाहिये, जिससे कि, वह उठे। फिर उसकी डाली छाँट कर थोड़ा थोड़ा पानी देते रहना चाहिये। ऐसा करनेसे छह सप्ताहमें फूल लगने लगेंगे। गुलाबका पेड़ साल साल भरमें उखाड़ कर गाड़ते रहनेसे अच्छे फूल पैदा होते हैं। यदि पेड़को उखाड़ कर दूसरी जगह लगाना चाहो, तो वसंतके बाद अक्टोबर मासमें जड़की सब मिट्टी इकट्ठी करके २।३ सप्ताह तक

जड़ निकाल रखनी चाहिये, पीछे गोबरके साथ नवीन मिट्टी उस स्थानमें देने चाहिये। इससे वृक्ष पहलेकी तरह हरा-भरा और फूलोंवाला हो जायगा।

दिसम्बर और जनवरीमें गुलाब-वृक्षकी जड़ साफ करनेसे पेड़ खूब हरा भरा हो जाता है। उस समय उस पेड़की जड़से मिट्टी निकाल कर १ फुटकी दूरी पर चारो तरफ जं'ची मँड़सी बनानी चाहिये फिर उस मँड़के भीतर एक पला नया गोबर डाल कर जं'चसे पानी डालनेसे, गोबरका पानी सहज ही मिट्टीमें घुस जायगा, यह पानी सारका काम करेगा अथवा कच्चा गोबर डाल देनेसे भा सारका काम चल जायगा।

जमीनमें गड़े हुए पेड़ोंसे जैसे फूल उत्पन्न होते हैं, टवमें गड़े हुए वृक्षोंसे वैसे नहीं होते। इस दृश्यमें अधिकांश लोग टवमें ही गुलाब लगाते हैं। अक्टोबर मासमें टवकी मिट्टीमें खार मिला देनेसे, एक माहमें अच्छे फूल पैदा होते हैं।

कोई कोई ऐसे भी कलम बाँधते हैं,—किसी एक पात्रमें सार वाली मिट्टी भर कर उसे जमीनसे गाड़ देते हैं, बादमें उसमें नियमके अनुसार फर्बरी मासमें कलम बाँध कर जमीनमें गाड़ देते हैं। फिर उस कलमके ऊपर दूसरे एक पात्रको आधा मिट्टी और आधा पानीसे भर कर रख देते हैं। उस पात्रका पानी क्रमशः चूकर कलमको हर वख्त भिजोता रहता है। वसंतसे पहले उस कलमको काट कर गाड़ देते हैं।

यदि डालियोंको काट कर चारा बाँधना हो तो नवम्बर मासमें डाली गाड़नी चाहिये। क्योंकि मार्चमासमें थोड़ी जड़ निकलती है, इस लिये उस समय उखाड़ कर टवमें लगा सकते हैं। गुलाबकी डाली वसंतमें गाड़नेसे जल्दी जड़ निकलती है। डालीसे जल्दी पेड़ उत्पन्न करना ही, तो पत्थरके कोयलेकी चूरके साथ तिहाई हिस्सा बालूको मिलाकर उसमें डाली गाड़नेसे जल्दी जल दो पेड़ बढ़ता है और फूल भी खूब लगते हैं। उक्त मिली हुई मिट्टीमें पुगने पेड़को जड़ काटकर कलम बनाना चाहिये, उस कलमको टवमें रख, मिट्टीको जलर रख कर उस कलमके ऊपर एक काँचका ढकना रख देना चाहिये।

बोतलमें पानो भरकर उसमें गुलाबको कलम लगाई जा सकती है। इसको प्रणाली बहुत ही कठिन है। जिस नरम डालीमें पुष्प गिरा हो, इस प्रकारको नरम एक या दो डालीको काटकर शीत ऋतुमें बोतलमें लगाना चाहिये। बोतलके पानोको साफ रखना चाहिये। रोज पानो बदलते रहना हो उचित है, नहीं तो डाली सड़ जानेकी सम्भावना रहती है। उन बोतलो में घर्कें उत्तरकी तरफ या पर्दाकी ओटमें ऐसी जगह रखना चाहिये जिससे उसमें सूर्यका प्रकाश और हवा जरा भी न लगने पावे। अथवा बिना टकनके एक बकम उस बोतल पर रख कर सूर्यके उत्तापमें रख देना चाहिये। इसके लिए कमसे कम १० आउन्स भी बोतलकी जरूरत होगी।

एक गुलाबके प्रेमी उद्भिदवेत्ताका कहना है कि एक सालकी पुरानी डालीके एक फुटक नापसे काटनी चाहिये। प्रत्येक डालीको गाड़नेकी तरफ सम्भावसे कनीकी गाठके पास काटना चाहिये, और ऊपरका भाग कलमकी तरह बनाना चाहिये और उसकी दो एक वलियाँके सिवा और सबको काट देना। चाहिये बाद को माचके महीनेमें २ इंच जल जो जगह पर यह कलम गाड़ देने चाहिये, और उसकी जड़ मिट्टीसे ढक देने चाहिये। शुनाह और अगस्त मासमें यह कलमी पौधा फूल देने लगता है। इसके बाद जल जो जगहकी समतल करके पोढ़ेकी जड़ जो मिट्टीके भीतर थी उसे निकाल देना चाहिये। ऐसा करनेसे वह पौधा जड़से दो तीन इंच जल चाँडेमें ही फूल देने लगता है।

साधारणतः शोग जिस रीतिसे गुलाबकी कलम बनाते हैं, उसके नियम यह हैं—जहाँ पानी न जम सके, ऐसी जगहमें एक फुट अन्तर पर कुछ गड्डे खोद करके उसमें भारयुक्त मिट्टी दे कर झुका झुका कर पोधि गाड़ते हैं। फिर उन गड्डेकी सिर्फ मिट्टीसे ढक देते हैं। दिनमें उन पर सूर्यकी रोगनी न पडने पावे, इस लिये उसके ऊपर कूस खादिका छप्पर डाल देते हैं, और रातको उसे उठा लेते हैं।

जहाँ कहीं ऐसा भी देखनेमें आया है कि फूल में केसर और पल्लवियोंका भी कुछ कुछ परिवर्तन हुआ है। गुलाबका पेंड खूब नरम मिट्टीमें गाड़नेसे



एक गड्डे पर एक भीतरसे डालीका निष्पन्न।

कभी कभी उसके फूलमें केसर न पौदा हो कर डाली उत्पन्न ही जाती है।

ग्रीक लोगोंके प्राचीन ग्रन्थोंमें लिखा है कि गुलाबका फूल डिउनिमास देव और अफ्रोडाइट (Aphrodite) नामक देवीकी अतिप्रिय वस्तु है। पुराने रोमक भी गुलाब उखव करते थे, उसका नाम रोसालिया (Rosalia) था। साकिदूनमें मिदासका गुलाबका बगोचा पहिले बहुत प्रसिद्ध था वह स्थान अब भी वर्तमानके तुल गेरिया नगरमें है। अभी तक तुलगेरियाका गुलाबका अंतरजल प्रसिद्ध है। पहिले भारतमें भी गुलाबका खूब आदर था, संस्कृत ग्रन्थोंमें शतपथीके नामसे गुलाब का उल्लेख पाया जाता है। आर्येय संहितामें लिखा है—

'शतपथी तु गन्धाना शोभाय नृप शिविः ॥

शुभोता च सुश्रवा च सुमना शतपथिका ॥

सतपथी हिमा तिला सरादच्छानिषप्रश्नः ॥

दाशरथ्यायविश्वेशो कुष्ठशिव्याटकनामिनी ॥'

शतपथीकी दूसरी संस्कृत पर्यायें ये हैं—गन्धादरा सोम्यगन्धा, शिवमिया, सुगोता, सुश्रवा, सुमना और शतपथिका। गुलाबका फूल शीतल, तिक्त, मारक, रोचक, वायुनाशक, दाहनाशक, रक्त, पित्र, कुष्ठ, और धिम्माट नाशक होता है। इस देशके वैद्योंका विश्वास है कि शतपथी नाम शिवती हीका है। गुलाब और शिवती दोनों भिन्न भिन्न पुष्प हैं। शतपथीका अथवा शिवती हो सकता

है, और पञ्जाबमें अब भी गुलाबको शोबतो ही कहते हैं। शिवप्रिया, शिववल्लभा आदि शब्दोंसे ऐसा ज्ञात होता है कि, पहिले गुलाबका फूल भी शिवका प्रिय था। वास्तवमें शतपत्रीके कहनेसे प्रधानतः पाटलवर्णके गुलाबका और कठगुलाबका बोध होता है। इसको अंग्रेजीमें Damask rose (Rosa Damascena) और Hundred-leaved rose (Rose Centifolia muscosa) कहते हैं। पुराने पारसी ग्रन्थोंमें गुलाबकी विशेष प्रशंसा लिखी है।

अरबी और पारसी ग्रन्थोंमें नर्द एल् हसक (अर्थात् बाहरमें पोला और भीतरमें लाल गुलाब) दालिक (Dog rose) आदि पाँच तरहके गुलाब फूलोंका वर्णन पाया जाता है।

प्रसिद्ध पदार्थतत्त्वत्रित् लिनिने १२ प्रकारके गुलाब और उससे ३२ प्रकारकी औषध बननेका वर्णन किया है।

इस देशमें इस समय नाना प्रकारके गुलाब देखनेमें आते हैं। गुलाबकी पखुड़ियां बालकोंके लिए मृदुविरचक (साधारण दस्तावर) औषध रूपमें व्यवहृत होती हैं।

हकीमी किताबोंमें गुलाबसे बननेवाली कुछ उपादेय वस्तुओंका उल्लेख मिलता है, उनके नाम ये हैं, - दुइनो-वरद-ए-खाम, दुइनो-वरद-ए-मतवुख, गुलकन्द, गुलझविन, गुलाब-जल और गुलाबका अंतर।

गुलाबकी पत्तियोंको चन्दनके तेलमें डालकर उसे घाममें सुखा कर चुआनेसे जो खुशबूदार तेल निकलता है उस तेलको दुइनी-वरद-ए-खाम कहते हैं। इसी प्रकारमें जो मट्टी पर चढ़ाकर चुआया जाता है, उसे दुइनी-वरद-ए-मतवूख कहते हैं। हकीमोंके मतानुसार इन दोनों तेलोंके गुण ये हैं—यह मृदुविरचक, सङ्गीचक और क्लेट (मवाट) का नाशक है। ऐसा चार जिममें कि प्राण वचनेका मंग्य हो शरीरमें प्रविष्ट होनेसे इसका सेवन करना चाहिये। यह बहुत फायदा पहुँचता है। गुलाबकी सूखी पखुड़िया और मिथी—दोनोंको आधो आधो मिला कर पीसनेसे गुलकन्द बन जाता है। भारतमें नाना स्थानोंमें हिन्दू और मुसलमान, बूढ़े और

जवान, स्त्री और बालक—सब ही गुलकन्द खाना पसन्द करते हैं। प्रसिद्ध मुसलमान हकीम हवनभिनके मिदान्ता सुमार—गुलकन्द बन और मेटकी बढ़ानेवाला होता है। उन्होंने सिर्फ गुलकन्दको खिला कर यन्त्रा रोगमें पीड़ित एक स्त्रीको आरोग्य कर दिया था। भारतमें बहुतसे लोग भाँगके माथ भी गुलकन्द रखा करते हैं। इसी गुलकन्दमें शहद मिलानेसे गुलझविन बन जाता है। उसके गुण भी गुलकन्द जैसे हैं।

गुलाब या गुलाब जल—गाजोपुरमें गुलाबसे इस प्रकार अंतर बनाया जाता है। जिसमें एक मन पानी आ जाय ऐसा एक नामेका पात्र (डेगची) होता है, जिसका मुँह सुराई सरीखा लखा होता है। उसके ऊपर तमला सरीखा एक ताँबेका पात्र रहता है, उसके एक बगलमें एक छोटा छेद रहता है। उस छेदके मुँह पर एक वांसकी नली लगा कर, उसका नीचला हिस्सा भवका नामक पात्रसे जोड़ दिया जाता है। नलीसे भाफ निकलने न पावे, इस लिये नलीको रस्सीसे अच्छी तरह बाँध कर उस पर मँटा थोप दी जाती है। भवकाके भीतर ज्यादा गरम होनेकी सम्भावना है इस लिये वह पात्र पानीमें डुबा कर रखा जाता है। इस प्रकार जब वक्तयन्त्र (एक खान तरहका वाष्पयन्त्र) तयार हो जाय, तब उस डेगचीमें पानी और गुलाबके पत्ते छोड़ कर उसे चूल्हे पर चढ़ा देना चाहिये। अग्निके उत्तापसे पानी उबलता रहता है और उसकी भाफ जिसमें कि सुगन्धिके परमाणु रहते हैं, वांसकी नलीके द्वारा उस भवका नामक पात्रमें पहुँचती है। उस पात्रमें भाफ पहुँचते ही जल रूपमें परिणत हो जाती है, क्योंकि, वह पात्र ठण्डे पानीमें डूबा हुआ रहता है। इसीको हम लोग गुलाब या गुलाबजल कहते हैं। एक हजार गुलाबके फूलोंसे एक सेर गुलाब-जल जो बनता है, वही सबसे अष्ट है। इससे भी उल्कृष्ट गुलाब जल बनाना ही तो दस हजार गुलाबोंमें यथेष्ट जल मिला कर आध मन गुलाब-जल बनाना चाहिये, फिर आठ हजार गुलाबके फूलोंमें आध मन गुलाबजल मिला कर १८ अठारह सेर गुलाब-जल चुआना चाहिये। चुआए जानेके बाद २०, २५ दिन धूपमें रखना चाहिये, क्योंकि ऐसा करनेसे

गुलाबके खुगवूका अग्र अर्धात् अतर पानीमें अच्छो तरह मिलन जाता है, नहीं तो ऊपर ही अतर तैरता रहता है और इसोसे उसकी खुगवू भो स्यायी नहीं रहतो । आज कल बाजारोंमें जो गुलाब जल विकता है, वह एक हजार फूलोंसे दो सेर बनता है । बहुतसे दूकानदार तो अतरके बचे हुए पानीमें जरामा चन्दनका अतर मिला कर उसे ही बढिया गुलाब जल कह कर बेचा करते हैं । गाजीपुरमें करोब चालोस जगह गुलाब बनता है, वहाँ गुलाबजलमें खुर्च बाद देकर करीब ४० हजार रुपये लाभ होते हैं । इस देगमें गुलाब जल बनाते समय फूलके डण्डन नहीं तोड़ते, इस लिय उसको खुगवू भो ज्यादा दिन नहीं रहतो, शीघ्र ही खड़ापन आ जाता है । अतएव गुलाब जलको सुगन्धि बहुत दिनों तक स्थायी रखनेवालीको चाहिये कि, फूलोंके डण्डन तोड़ कर गुलाब जल बनावे ।

अन्य ११११११११—गुलाब जलको तरह इसमें भी ताँबेकी डेगचीमें फूल और पानी रखकर उबालना पडता है, और उसमेंसे भाफ निकर भवका पात्रमें आती है । इस प्रकारसे जब तमाम पानी जल जाय, तब उस भाफको एक चपटी डेगचीमें ढाल कर उसका मुँह मोटे कपडेसे बांध देना चाहिये । बादमें २ हात नीचा जमान खोद कर उसे ठण्डकमें गाड़ देना चाहिये । मारा रात गले रहनेमें, उस पानीके ऊपर तेल सरीखा अतर तैर निकलैगा । रातमें जितनी ठण्ड पडेगी, उतना ही ज्यादा अतर निकलैगा । इसलिये हेमन्त और शीतऋतुमें अतर बनाना चाहिये । सुबह उस तैरते हुए अतरकी निकाल कर शोभमें रखना चाहिये, और फिर घाममें सुवा लेना चाहिये । पल्ले पल्ले वह अतर देखनेमें कुछ कुछ हरा सा देखता है । फिर कुछ दिन बाद असली अतरका बेसा रङ्ग नहीं रहता असली अतर एक मस्राहके भीतर भीतर कुछ पीना हो जाता है । यही सबसे अँष्ट है । ऐसा अतर एक लाख गुलाबोंसे एकहो तोना बनता है और समय समय पर ८० से १०० तोले तक विकता है । ऐसा बहुमूल्य अतर सङ्गमें नहीं मिलता । बाजारोंमें जो अतर सबसे उल्टूट कह कर विकता है वह भी इसमें बहुत गिळट है ।

बजारू अतर ऐसे बनता है,—जिम पात्रमें भाफ आकर जमती है, उसमें पहिले होसे चन्दनका तेल रखा रहता है । सुगन्धयुक्त भाफ पात्रपात्रसे भवका पात्रमें आते हो उसका गन्धांश चन्दनके तेलके साथ मिल जाता है, और भाफ अलग हो जाती है । इस प्रकार थोडेसे गुलाबसे बहुतसा चन्दनका तेल सुवासित हो जाता है, और वही गुलाबका अतर कह कर बाजारोंमें बेचा जाता है । बेला, चमेली जूहो, केवडा आदिके अतर भो ऐसे ही बनते हैं । इस प्रकार चन्दनके तेलसे दूसरोकी सुगन्धि घुसेड कर मिय अतर बनता है । विलायतमें अतर अग्निसे उत्तापसे नी सुआया जाता । वहाँ गुलाबके ऊपर साफ चर्बी विछाकर उसके ऊपर ताजे फूल रखेटेते हैं, इससे फूलोंकी खुगवू चर्बीमें मिल जाती है । इसी प्रकार १५—२० वार फूल रखकर बादमें चर्बीकी सुगन्ध (गराव या तैनाब) में घोल कर रख देते हैं, इससे चर्बीकी सुगन्धि सुरामारने आ जाती है, और चर्बी अलग हो जाती है । इसमें बहुत बढिया असली अतर बनता है ।

ऐसा प्रवाद है कि—सुप्रसिद्ध नूरजहान ब गमने १६१२ ई०में सबसे पहिले अतरका आविष्कार किया था । मन्नाद जहागोरके साथ उनके विवाहके समय गुलाब जलका स्त्रोत बहा था, बगीचेके नालेमें गुलाब जलके ऊपर तेल सरोखा कुछ तैरते देख न रजहानने उसे सङ्ग्रह करनेका हुक्म दिया । उन ही में फिर अतर बना था । बम्बईमें गुलाबको सुखी पखुडिया ३, ५० सेर विकती है ।

गुलाब—हिन्दीके एक कवि । कविताका नमूना यह है—

‘गुलाब’ नामे सुबह सुभोत्र भाग
 * योत्र भागे १०४३ विद्युत्तिलके दिवा ।
 सुभोत्र भागे सुभोत्र नयन भागे
 नयन सुभोत्र भागे शोभितके दिवा ।
 कदम गुलाब वन सुभोत्र पलायन भागे
 सुभोत्र विभाजनके सुभोत्र सुभोत्र ।
 १०४३ विद्युत्तिल भागे सुभोत्र विद्युत्तिल भागे
 न न सु १०४३ विद्युत्तिल भागे विद्युत्तिल ३”

गुलाबचम (फा० पु०) एक तरहका पत्तो । यह खैर रङ्गका

होता है। इसकी चींच काली और पैर लाल होते हैं।

यह बहुत मधुर स्वरसे गान करता है।

गुलाब-छिड़काई (हिं० स्त्री०) १ विवाहमें एक प्रथा।

इसमें दोनों पक्षोंके मनुष्य आपसमें गुलाब जल छिड़कते हैं। २ दान, दहेज।

गुलाबजम (फा० पु०) एक प्रकारकी भाड़ी जो आभामको पहनाइयोंमें होती है। इसकी छालके रेशेसे रस्सियां बनाई जाती हैं।

गुलाबजामुन (हिं० पु०) १ एक प्रकारकी मिठाई। इसके बनानेमें पहिले आटे और खोयाको मिलाकर छोटे छोटे टुकड़े किये जाते हैं और फिर घृतमें छानकर चाशनीमें डुबो देते हैं। २ एक प्रकारका वृक्ष जो शोभाके लिए उद्यानमें लगाया जाता है। ३ इस पेड़का फल जो खानेमें बहुत स्वादिष्ट होता है, इसके अन्दर एक कठिन बीज रहता है।

गुलाबतालू (फा० पु०) एक प्रकारका हाथी। ऐसे हाथी का तालू गुलाबी रंगका होता है जो शुभलक्षण समझा जाता है।

गुलाबपाश (फा० पु०) गुलाबजल रखनेका एक तरहका पात्र जो भारीके आकारका होता है।

गुलाबपासी (फा० स्त्री०) गुलाबजल छिड़कनेकी क्रिया।

गुलाबराय—हिन्दीके एक जैन कवि, इन्होंने वि० सं० १८४२ में इटावामें मोतीराम और सिरलालके साथ रहकर 'शिवरविलास' नामक एक पद्य ग्रन्थ रचा था।

गुलाबसिंह—हिन्दी भाषाके एक कवि। वह पञ्जाबी थे। १७८८ ई०को उनका जन्म हुआ। उन्होंने रामायण, चन्द्रप्रबोध नाटक, मोक्षपत्र्य आदि कई एक वेदान्त ग्रन्थ लिखे।

गुलाबसिंह—राजपूतवंशीय काश्मीरके महाराज और वर्तमान काश्मीराधेश्वर प्रतापसिंहके पितामह।

१८वीं शताब्दीमें काश्मीरके उत्तरवर्ती जम्बू प्रदेशमें रूपदेव और उनके बाद उनके पुत्र रणजित् देव राज्य करते थे। ये अपनेकी चन्द्रवंशीय राजपूत बतलाते थे। रूपदेवके कुशदेव और सुरतदेव नामके दो पुत्र थे और कनिष्ठ सुरतदेवके वंशमें विख्यात गुलाबसिंह उत्पन्न हुए थे।

१७८० ई०में रणजित्देवके मृत्युके बाद उनके पुत्र विजयराय, इसके बाद विजयके पुत्र सफरीदेव और विजयके कनिष्ठ भ्रातृपुत्र जयसिंह जम्बूके राजा हुए। जयसिंहके अभिषेक वर्ष १७८८ ई०में गुलाबसिंह पैदा हुए थे।

पंजाबकेशरी रणजित्सिंहने मिश्र टीवान चंट नामक एक सेनापतिको जम्बू जीतनेके लिये भेजा था। यहां राजपूत राजाओंके साथ सिखसैन्यका घमसान युद्ध हुआ। उस युद्धमें अठारह वर्षके गुलाबसिंहने जिम तरह वीरत्व दिखलाया था, उससे मिश्र सेनापति टीवान चन्द सुगंध होकर पंजाबसिंहके निकट गुलाबसिंहकी अधिक प्रशंसा की थी।

जम्बू शिखराजाके हाथ आ गया। जम्बू-राजपरिवार अत्यन्त विपन्न और विपण्न हो गया। उस समय गुलाबसिंह और उनके छोटे भाई ध्यानसिंह मीयां मोती बहुत कष्टसे काल क्षेपण कर रहे थे। इस कारण वे थोड़ी ही उम्रमें अपनी अष्टपरीक्षाके लिये दशवर्षके लड़के ध्यानसिंहको साथ ले बाहर निकले। टीवान चन्दका प्रशंसावाद उन्हें कर्णगोचर हुआ। वे आशापूर्ण हृदयसे सिखमहाराजके अनुग्रह प्रार्थी हो लाहौर आ पहुँचे। किन्तु इस वार उनका इतना कष्ट और परिश्रम निष्फल गया, प्रायः तोन महीने लाहौरमें रहने पर भी महाराज रणजित्का उन्हें दर्शन न हुआ। इस लिये निराश ही अपने छोटे भाईको साथ ले जन्मभूमि लौट गये। यहां आकर भी आत्मीय स्वजनोंका कष्ट देख वे बहुत ही दुःखित हुए। उच्च राजपूतवंशमें जन्म ले प्रेममें कायर पुरुषको नाई रहना उन्हें तनिक भी पसन्द न आया। इस समय ये अकेले ही बाहरको निकले। वितस्ता नदीके तीरे आ वे बहुत ही आन्त ही गये। उस स्थानसे थोड़ी ही दूर पर मुञ्जला नामक दुर्ग अब स्थित है। संयोगवश किलेदार वहां टहलते हुए आ पहुँचे और गुलाबका सुन्दर और वीरोचित कान्ति देख उनसे परिचय पूछा। युवक गुलाबसिंह उस किलेदारके निकट ३,५०० मासिक वेतन पर एक सामान्य सैनिक पद पर नियुक्त हुए। किन्तु यहां भी अधिक दिन रह न सके। उनका युद्धनैपुण्य और कार्यकुशलता देख किले-

के दूसरे दूसरे सैनिक उनसे ईर्ष्या करने लगे थे। गुलाब थोड़े दिनोंके बाद ही मुज्जाना दुर्ग छोड़ भीमवर सुलतान खाँके अधीन काम करने लगे। कुछ काल वे कोटानी दुर्गमें रहते थे। यहाँके सरदारसे भी उन्हें अच्छा बनाव न था। इस लिये उक्त कार्य छोड़नेके लिये वाध्य हुए।

इस समय वोर गुलाबको चारो ओर निराशाकी विषादमय कवि दीख पडती थी। ' किमकी महायता लू ? किस तरह भविष्य उन्नत करू ? ' इसी तरहकी भावना इनके हृदयमें उत्पन्न होने लगी। हृदयकी व्यथा दूर करनेके लिये इम्फाइनपुरमें ताकनिकट उपस्थित हुए। किन्तु यहाँ आकर भी सप्ताहकी विषम वेडोसे निवृत्त हो शय्यमान ही कष्ट पाने लगे। यहाँ उनके पिताने अपने दोनों पुत्रोंको उपयुक्त देख दुर्लभ नामके किसी मनुष्यसे बहुतसे रुपये काज ले उन दोनोंका विवाह करा दिया। इस विवाहसे भी गुलाब कुछ भी प्रसन्न न हुए। उन्होंने देखा कि जिस तरह पिता ऋणजाल में जकड़े हुए हैं, सासारिक कष्ट भी उसी परिमाणसे बढ़ता है। १८११ ई०के प्रारम्भमें गुलाब एक दिन पितामें बोले—“मुझे यहाँ रहना अच्छा नहीं लगता है। यदि आप छुड़—सवाराका उपयुक्त पोगाक खरीद दे तो मैं एकवार और लाहौर दरवारमें जा अपने भाग्यकी परीक्षा करूँ”। किन्तु उस समय उनके पिता किशोर सिंहके पास एक कोडी भी न थी। जो कुछ ही रुपये लौटकर पानिकी कोई सहायना नहीं रहने पर भी टयालु दुर्लभने फिर भी काज दे गुलाबकी अमिलायी परी की। गुलाब और उनके भाई ध्यान सिंह मियाँमोतीमें एक सिपारिमो चिड़ी ले दीवानचन्द मियके निकट लाहौर जा पहुँचे। दीवानचन्दने चिड़ी पठ दोनों भाइयोंकी बहुत ही खातिर की और उनकी यथामाध्य मदद देनेके लिये कटिबद्ध हुए। उस समय गुलाबसिंहने सुना कि उनके परम उपकारो मियाँ मोती विद्रोही दामोदरसिंह और ग्यालसिंहसे मारे गये हैं। यह सुन उन्हें जैसा दुःख हुआ था वह अकथनीय है। उनके हृदयमें प्रतिहि माफी आग जल उठो थी, किन्तु इस समय उनमें मनकी आग मनमें ही गान्त की। इस

अवस्थामें प्रतिहि साष्टि दिखनाना उनके लिये अच्छा नहीं होता।

सुयोग पाकर मिय दीवानचन्द दोनों राजपूत युवकीको महाराज रणजित्सिंहके पास ले गये। पञ्जाब केशरी पहनेसे ही गुलाबके वोरत्वको कया सुन रहे थे। आज दोनों भाइयोंको सुयी सुगठित वोरकान्ति देण बहून ही मत्त हुए, और दोनोंको प्रतिदिन ३, ५० वितन पर अपना अत्रुचर बनाकर रखलिया। इसतरह दोनों भाइयोंने कुछ समय राजदरवारमें रहे राजकीय अद्य कायदा सीख लिया। १८१२ ई०में दोनों अग्वारोही मैन्में भर्ती किये गये। महाराज रणजित्सिंह ध्यानसिंहको बहुत ही चाहते थे। इस समय ध्यानसिंह प्रतिदिन ५, ५० और उनके ज्येष्ठ भ्राता गुलाबसिंह सिर्फ ४, ५० पाने लगे। थोड़े ही दिनोंमें दोनोंका वितन दो गुनासे तीन गुना तक बढ़ गया। इस वर्षमें अन्तमें राजपूत वोरने अपने पितानेके पास लगभग तीन हजार रुपये भेजे थे। गुलाब और ध्यानसिंहके ऐसे उन्नत समयमें उनके पिता किशोरसिंहकी मृत्यु हुई।

१८१३ ई०में महाराज रणजित्सिंह अत्रुरोधसे गुलाबसिंह अपने बारह वर्षके कानिष्ठ भ्राता सुचेतसिंहकी दरवारमें लाया। सुचेतसिंहने अपने रमणीय सुकुमार कानिष्ठगुणसे रणजित्सिंहको विमुग्ध कर उनका यथेष्ट अत्रुयह लाभ किया। तीन सामान्य राजपूत युवकीने लाहौरके दरवारमें शोर्पस्थान पाया। थोड़े ही दिनोंमें तीनों भाई ममोसे थोड़े गिने जाने लगे।

उक्त वषमें दामोदरसिंह और ग्यालसिंह लाहौरमें आये हुए थे। उनका आगमन सुन गुलाबसिंह और ध्यानसिंहके हृदयमें प्रतिहिमा फिर भी जाग उठो। दोनों भाई शानरकुली नामक रातों पर घोड़े पर चढ़ कर उपस्थित हुए। इस म्यान पर मियाँमोतीके मानवैवानिसे उनकी भेंट हो गई। गुलाबसिंहने दामोदरको अपना परिचय देते हुए बन्दूकका निगाना भार। दामोदरने आर्तनाद करते हुए पृथ्वी पर गिर अपना प्राणत्याग किया। तब ग्यालसिंहने दोनों भाइयों पर आक्रमण किया। किन्तु गुलाबके दारुण अघाघातसे वे भी परलोककी सिधारे। राजपय पर इस तरहकी दुष्टता

होती देख, बहुतसे मनुष्योंने गुलावसिंह पर आक्रमण किया। गुलाव और ध्यानसिंहने किसी तरह भाग कर सिन्धु दीवानचन्दकी छावनीमें आ आत्मरक्षा की। वह हत्या कहानी महाराज रणजित्के कर्णगीचर हुई। किन्तु वे इससे तनिक भी दुःखित नहीं हुए, वरन् उन दोनों भाइयोंके ऊपर बहुत मन्तुष्ट हुए थे, साथ ही साथ उनकी पट्टवृद्धि भी को गई। अभी गुलाव विविध पारितोषिकके सवा प्रतिदिन १८५ रु० पाने लगे थे।

जम्बुराज्य सिखोंके हस्तगत होने पर रणजित्सिंहने दीवान भवानीदासको सभैय्य जम्बु शामन करनेके लिये भेजा। मिख सैन्यको देख कर ही जम्बुराजके परिवार शतद्रु नदीके दूसरे पार भाग आये। इसके बाद जम्बुवासी राजपूतोंके साथ सिखोंका सर्वदा विवाद रहा करता था, किन्तु इससे राजपूत ही अधिक कष्ट भोगते थे। इस समयमें हिद्दू नामके एक मनुष्यने पर्वतसे गुहाभावमें जंबु आ सिखोंके ऊपर अत्यन्त ही अत्याचार करना आरम्भ किया। धीरे धीरे हिद्दू के उपद्रवसे जम्बुका राजकर तक भी बन्द हो गया। यह संवाद रणजित्सिंहके निकट पहुँचा। उस समय गुलावसिंह पञ्जावकेशरीके पास ही मौजूद थे। उन्होंने सिखराजसे कहा कि जम्बुका जमादार कुशियालसिंह स्वयं स्वाधोन होनेके लिये पार्वतीय जातिको सिखोंके विरुद्ध उन्तेजित कर रहा है। इसके पहले ही गुलावने दीवानचन्दको समझाया था कि उन लोगोंकी मातृभूमिकी रक्षाका भार यदि उन्हीं पर सौंपा जाय, तो इस तरहको दुर्घटना कभी भी नहीं हो सकती है। दीवानचन्दने भी गुलावका पक्ष ले महाराज रणजित्सिंहके निकट जम्बुकी कथा कह सुनाई। पञ्जावकेशरीने गुलावको जंबु और भीमवटके निकटवर्ती चालीस हजार रुपये आमदनीको सम्पत्ति जागीरमें दे उन्हे पार्वतीय जातिको दमन करनेके लिये नियुक्त किया।

गुलावसिंह ५१६ सौ सैन्य साथ ले जम्बुकी ओर रवाना हुए। वे बहुतदिनके बाद अपनी जन्मभूमि पहुँचे। यहाँ राजपूतोंने उनका यथेष्ट सम्मान किया। चतुर गुलाव प्रधान प्रधान मनुष्योंको अर्थद्वारा वश करने लगे। इस तरह घूस देकर हिद्दूके पक्षके बहुत

मनुष्योंको अपनी मुद्रोमें कर लिया। थोड़े ही समयमें वे हिद्दूका छिन्न मुण्ड ले लाहौर पहुँचे। महाराज रणजित्ने गुलावके कार्यमें मन्तुष्ट ही उन्हे प्रचुर अर्थ और बहुतसी जागीर प्रदान की। फिर भी रणजित्सिंहके आदेशसे गुलावसिंह क्षणवा और जम्बुके उत्तरवर्ती पार्वतीय भूभाग जीतनेके लिये बाहर निकले। उनके सौभाग्यक्रमसे दुर्दान्त पार्वतीय जातियोंने महज हीमें उनकी वश्यता स्वीकार की थी। १८१७ ई०में राजपूतवीर सफलता लाभकर पंजावकेशरीके निकट लौट आये। इस बार भी इन्होंने यथेष्ट पुरस्कार पाया था।

इस समय ध्यानसिंह टेवड़ीवाला अर्थात् सर्वप्रधान द्वाररक्षकके पद पर नियुक्त हुए थे। रणजित्सिंह गुलावकी अपेक्षा ध्यानसिंह और चेतसिंहको अधिक



गुलावसिंह

चाहते थे। उन्हींने दोनों भाइयोंको "राजा" उपाधि अर्पण की। किन्तु ज्येष्ठ भाईको ऐसा उच्च उपाधिके न मिलने पर उन दोनोंने रणजित्सिंहसे कहा, "महाराज! हम दोनोंसे जो ज्येष्ठ हैं, सब कामोंमें जो हम लोगोंकी अपेक्षा उपयुक्त तथा वीर और विद्वान हैं, जब उनके भांग्यमें ऐसी उपाधि न हुई, तो हम दोनों किस तरह राजाकी उपाधि ग्रहण कर सकते हैं?"

कनिष्ठ भाइयोंके ऐसे कौशलपूर्ण वचनोंसे महाराज रणजित्ने गुलावसिंहको भी "राजा" उपाधि दी। इस तरह १८१८ ई०में सिख नरपति द्वारा गुलाव जम्बुके राजा, ध्यानसिंह भीमवर और कुशलके राजा तथा सुचेतसिंह रामनगर और चम्वा प्रभृति स्थानोंके राजा बनाये गये।

गुलाबसिंहने उपकारी सिखनरपतिसे बिदा ले बहुत ही समारोहके साथ जम्बूराज्यमें प्रवेश किया जो मनुष्य एक समय सिर्फ ३, ६० मासिक वेतनकी नोकरीके लिये लालायित हुआ था, आज वही मनुष्य जम्बूके एक स्वाधीन राजा है। अष्टचक्र किम तरह परिवर्तनशील है गुलाबसिंह ही इसका दृष्टान्त बन गये। बहुत धूम धामसे गुलाबसिंह ज वुराज्यमें अभिषिक्त हुए थे। सिख राजके कर्मचारी और उनके अधीनस्थ सभी सैन्य जवु छोड़ पञ्जाब चले आये। गुलाबके साथ रणजित्सिंहका शत्रु कोई लगाव न रहा। सिर्फ इतना निश्चित था कि राजा गुलाब प्रतिवर्ष दुर्गापूजाके समय ससैन्य लाहौर आ पञ्जाबके शरोंके आनन्दकी बटावें।

गुलाब जम्बूका एकाधिपत्य लाभकर निकटवर्ती महारोंकी वशीभूत करने लगे। राज्यनिष्ठाके साथ उच्चा भिलाप, परश्रोकातरता, परपीडन और अर्थलाभ ये सब महादोष उनके हृदयमें आगये थे। यहाँ तक कि जम्बू के बालसे हठ तक सबके सब गुलाबका नाम सुननेसे ही डरते थे।

बाहरसे गुलाब इतने सुखमधुर थे, उनके मुखमण्डल में ऐसा स्वच्छ सुन्दर आवरण था कि एक वार जो उन्हें देखता और उनके साथ आनाप करता वह उनको मोहिनी शक्तिमें आकृष्ट हो जाता था।

१८२० ई०में गुलाबसिंहने राजोपारिके राजा अपरखीं पर आक्रमण कर उन्हें बन्दी किया था।

१८३८ ई०में पजाबके शरों रणजित्सिंहकी मृत्यु हुई और इनके पुत्र वीरवर खडसिंह सिंहासन पर बैठे। गुलाबसिंह तथा उनके भाइयोंने समझा था कि रणजित्सिंहकी मृत्युके बाद उनके भाई ध्यानसिंहके पुत्र हीरासिंह पजाबके सिंहासन पर अभिषिक्त होंगे, परन्तु उनका अभीष्ट सिद्ध नहीं होनेसे राजा ध्यानसिंह महा राज खडसिंहको नाश करनेके लिये पडयत्न रचने लगे। राजा गुलाबसिंह भी इस निदाराण पडयत्नमें शामिल हुए थे। जब कुमार नवनिहालसिंह खेवरसे पिताके शत्रु रूपमें लाहौरकी ओर आरहे थे, उस समय राजा गुलाबसिंह राख्तेंमें उनसे मिल गये। गहरो

रात्रिमें जिन लोगोंने मिल असहाय खडसिंहको बन्दो किया था, उनमेंसे गुलाबसिंह भी एक थे।

सद गति है शंको।

जब खडसिंह के कारागारमें और उनके पुत्र नवनिहालसिंह के पजाबके सिंहासन पर बैठे थे, उस समय गुलाबसिंह प्रभृति तीन भाइयोंका एक तरह पजाबमें आधिपत्य था। रणजित्सिंहके पोत्र नवनिहालको यह श्रवण्य असह्य मान्य पडने लगा। खडसिंहकी श्रवण्येष्टिकादिने नवनिहालके भाये पर टाल गिरा था। जिससे उन्हें बहुत चोट आई थी। लोग कहते हैं कि उससे उनको मृत्यु हुई। किन्तु किसी किसी पंतिहासिकने लिखा है—“इस सामान्य आघातसे उनके मृत्यु होनेकी कोई संभावना नहीं थी।” सुप्रसिद्ध सिख इतिहास लेखक कनिहमने लिखा है “जम्बू के राजा नवनिहालके हत्यारके काण्डमें शामिल थे इसका यद्यपि कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलता है तो भी इस घोरतर अपराधसे उन्हें छोड़ देना भी बिलजुल असंभव है।” सचमुच ध्यानसिंह प्रभृतिके पडयत्नसे हो प्रवल पराकाण्ड सिखराज्यके शत्रुपतनका आरम्भ हुआ।

नवनिहालको मृत्युके बाद उनकी माता चांदकुमारो राजगद्दी पर बैठी। वह ध्यानसिंहको अच्छा तरह पहचानती थीं। उस समय भी ध्यानसिंह राज्यके शासन सचिव थे। महारानो चांदकुमारोने ध्यानसिंहको उपेक्षा कर सिन्धुवाल उत्तरसिंहको प्रधान मंत्रीके पद पर नियुक्त किया। रानी प्रवलप्रतापसे राज्य करने लगीं। क्रूरप्रकृति ध्यानसिंह बुद्धिमती विचक्षण रमणीको सिंहासनसे अलग करनेकी चेष्टा करने लगे। रणजित्सिंहका शेरसिंह नामक व्यसनासक्त और मद्यपायी एक जारज पुत्र था। ध्यानसिंहने सोचा कि इसीको सिंहासन पर बैठाकर स्वयं राज्यके हर्ता कर्ता हो जावेंगे। चतुर गुलाबसिंहने भी भ्राताके साथ इस पडयत्नमें योग दिया था। ध्यानसिंहने शेरसिंहको अपना शत्रु प्राय प्रगट करते हुए उन्हें समनेप लाहौर आनेकी निष्ठा। १८३१ ई०की १२वीं जनवरीको शेरसिंह ससैन्य फतेगड आ पहुँचे। रानी चांदकुमारोने शीघ्र ही सिंहद्वार बन्द करनेका आदेश किया। द्वार बन्द किया

गया मही, किन्तु द्वारके रत्नक शेरसिंहके पक्षमें हो गये थे। मानो गुलाबसिंह और शीरासिंह चांदकुमारीके पक्षमें हो किलासे गोला बरसाने लगे। दुर्बल ध्यानसिंहने फरासीमो सेनापति भेञ्चुराके साथ शेरसिंहका पक्ष अवलम्बन किया था।

अवरोधके सातवें दिन, रानी चांदकुमारीने देखा कि गुलाबसिंह और डोग्रा सैन्यके सिवा प्रायः सभी उनके विरुद्ध हो उठे हैं। आज महावीर रणजित्का पुत्रबधू अपने सम्मानको रक्षाके लिये विकल हो उठीं। चतुर गुलाबसिंहने उनसे कहा, “अब राज्य रक्षाका कोई उपाय नहीं सूझता, अब भी आप उनके भाईके अभिप्रायानुसार शेरसिंहको राज्य छोड़ दें, तो वे आपको इज्जतको रक्षाके लिये प्राणपणसे यत्न करेंगे।” उस समय अबला रमणी हाथ जोड़ रो रो कर कहने लगीं, “मैं समस्त भार आप पर सौंपती हूँ, आपही मेरे एकमात्र रक्षक हैं, जिससे मेरी इज्जतकी रक्षा हो, वही कीजिए। दुष्ट शेरसिंह मेरा करप्रार्थी है, परन्तु मैं अपने पवित्र शरीरको बेच कुछ भी कलङ्कित नहीं हो सकती।” गुलाबसिंहने उन्हें बहुत कुछ आशा दी।

लड़ाई बन्द हो गई। महारानी चांदकुमारीने जंघुके निकट ८ लाख रुपये आमदनीका कदिकुदियाली नामक स्थान जागीरमें पाया। गुलाबसिंह महारानी और उनकी सम्पत्तिके रक्षक हुए तथा लाहौर दुर्गमें जो प्रचुर अर्थ रक्खा था वह समस्त उन्होंने चांदकुमारीसे उन्हींकी रक्षा करनेके वहाने अपने साथ कर लिया।

शेरसिंह पञ्चनदके सिंहासन पर अभिषिक्त हुए। गुलाबसिंहने शेरसिंहको राजभक्ति दिखलानेकेलिये जगत् विख्यात कीहिनूर ला उन्हें पहना दिया था। उस समय शेरसिंहके साथ प्रायः ४५ घण्टे तक गुलाबकी बात चोत हुई थी। उस सम्भाषणका यही कारण था—गुलाबने समझा था कि उनके साथ बहुत थोड़ी सेना हमारे लाहौरमें उपस्थित है। और जो बहुमूल्य मणिरत्न हड़प कर लिया है, उसे ले रास्तेमें जानेसे सम्भव है कि दुर्दान्त सिखसैन्य लूट ले। ऐसे समय पंजाबपतिकी सहायताके विना दूसरा कोई उपाय नहीं है। इसलिये ऐसा ही उपाय करना चाहिए कि जिससे

वे निरापदसे जंघु पहुँच जावें। इरावतीके तीर पर उपस्थित हो उन्हींने जंघुसे दो हजार सैन्य मंगवाये। इस तरह गुलाब प्रायः करोड़ रुपयेकी सम्पत्ति ले स्वराज्यको लौट आये।

गुलाबसिंह जंघु पहुँच स्थिर रह न सके। यहां आकर उन्हींने सुना कि काश्मीरके शासनकर्त्ता मोयांसिंह विद्रोही सैन्यसे मारे गये हैं और विद्रोहोगण बहुत ही जधम मचा रहे हैं। गुलाब शीघ्र ही काश्मीर पहुँचे। यहां दो टल राजद्रोही सैन्यके प्रत्येकका शिरशक्रेटकर ये हजारकी ओर अग्रसर हुए। चिनोलके नवाब पेन्थ खाँ हजारों अञ्चलमें बहुत ही उपद्रव मचा रहे थे। गुलाबसिंहने जा उन पर आक्रमण कर पूर्णरूपसे पराजय किया। यहां उन्हींने सुना कि ब्रिटिश जातिके साथ काबुलमें लड़ाई हो रही है। बहुत टिनकी बात नहीं है कि ब्रह्म अमीर जमानशाहने काबुलसे लौटते समय गुलाबसिंहकी कुछ विश्वस्त सेनाओं द्वारा सहायता पाई थी। उमी समयसे दोनोंमें मित्रता हो गई और हमेशा एक दूसरेकी खबर लिया करते। जमानशाहके प्रत्यागमनके थोड़ेही समयके बाद काबुलमें ब्रिटिश सैन्यकी बड़ी दुर्गति हुई। इसके सिवा उक्त लड़ाईके पहलेसे ही बरकजद सदोजद प्रभृति काबुलके सर्दार गुप्तभावसे गुलाबसिंह और ध्यानसिंहकी पत्र लिखा करते थे। इसी कारण अङ्गरेज लोग गुलाबसिंहके ऊपर विश्वास नहीं करते थे। चतुर गुलाबने इस संदेहको दूर करनेके लिए ब्रिटिश सेनानायकको कहला भेजा कि वे कभी भी ब्रिटिशके विरुद्ध हो नहीं सकते, परम् युद्धमें वे उनकी सहायता करेंगे। इस समय गुलाबसिंहके कथनानुसार सिख राज्यके सचिवने भी ब्रिटिशको यों कहला भेजा “खैबर गिरिसङ्घटमें सिखसैन्य जा ब्रिटिश सैन्यकी सहायता करेगा, प्रयोजन होने पर जलालाबाद तक जाकर भी साहाय्य कर सकता।

गुलाबसिंह उस समय हजारामें थे। वे भी ब्रिटिश गवर्नरकी मदद देनेमें कटिबद्ध हुए थे, किन्तु उस समय किसी विश्वासी मनुष्यसे सुना कि ब्रिटिश राजपुरुष उन पर अप्रसन्न है और दोषारोप कर रहे हैं। यह सुन कुछ खुश हो तुरत ही सैन्य आटक लौट आये। यहां नदीके उस पार सिख सैन्य ठहर गये।

इधर काबुलमें बहुतसे अंगरेजों के निकल मारे गए। सेनापति पोलक मसैन्य काबुल पहुँच कर और गुलावसिंह को इस लड़ाईमें योग देनेके लिये सवाट भेजा। गुलावसिंह पहले दुविधामें पड़ गये, क्या करना चाहिए उनकी कुछ समझमें न आया। अन्तमें सेनाके साथ हजारासे पैशावर नेत्रको आये। किसी किसी अंगरेज ऐतिहासिकने लिखा है जिसने इटिग सैन्य महजमें हो खैवर पथ पर न पहुँच मके एव देगोय सैन्य जिसमें भयभीत और विचलित हो जाय, गुलावसिंह गुप्तभावसे वहाँही कार्य करनेकी चेष्टा करते थे। किन्तु जब उन्होंने देखा कि इटिग सैनिक नानाप्रकारके दुर्वर्तकों दूर करते हुए अपने कार्यमें सफलता दिखना रहे है, तब उन्होंने निराश हो इटिग सेनापतिको कहला भेजा कि "वह यद्यपि इटिगकी सहायता कर रहे है, किन्तु अभी साहाय्यका कोई प्रयोजन न जान वह स्वराज्यको नोटे जा रहे है।"

उक्त विदेशी ऐतिहासिकका कथन विश्वासयोग्य नहीं है। गुलावसिंह जिन तरह इटिग गवर्नरको सैन्य द्वारा साहाय्य किया था, उममें तनिक भी सदेह नहीं किया जा सकता। क्योंकि इटिग राजपुरुषने गुलावसिंहके कार्यमें सतुष्ट हो उन्हें जलानावादका स्वाधीन अधिकार प्रदान किया था।

इस समय लाहौरमें एक भयङ्कर दुर्घटना हुई। महा रानो चान्दकुमारी नयनिहालके घरमें रहती थीं। गैरसिंहने उन्हें पानेको इच्छामें पनेक तरहके उपाय रचे थे, किन्तु उनका अभीष्ट सिद्ध नहीं हुआ। वर चांदकुमारीने अत्यन्त दुःखमें गैरसिंहकी इस तरह खबर दी थी "प्रसिद्ध कुणियासगमें पैरा जस है, मैं सुविख्यात जयमानकी कथा हूँ, गैरसिंह जैसे—रजकपुत्रके हाथ चातुरसर्पण करनेमें अत्यन्त लज्जा होती है।" महा राज गैरसिंहने सोचा कि ध्यानसिंह और गुलावसिंह चांदकुमारीके प्रथमपति हैं, इस लिये प्रयत्नाधीन होने पर भी चांदकुमारीने उनकी प्रवृत्तियों को वे जानत थे कि चांदकुमारी भी उनक मित्रमनका एक मात्र कटक है। इसलिये उन्होंने चांदकुमारीकी चार महारथियोंकी आगीरका शोभ दिखानेकी योग्यता किया और उनके द्वारा अत्यन्त कठोरतामें चांदकुमारीका प्राणसंहार भी

कराया। गैरसिंहने सोचा कि अब सिंहासनका दावा करनेवाला कोई न रहे गया। किन्तु दुष्ट ध्यानसिंह भी जिससे उसके ऊपर किसी तरहका आधिपत्य कर न सके, उसकी भी कोई तरीकीव सोचने लगे। सिन्धुवालाके सरदार लेनासिंह और अजीतसिंह राजाका पक्ष अवलम्बन कर ध्यानसिंहके नामकी चेष्टामें थे।

धानसिंहने जम्मुमें भाईकी सख्त खबर जतना कर उन्हें शोषण ही आने लिखा। गुलावसिंह चांदकुमारीके शत्रुसवाट पाकर निश्चिंत हो गये। चांदकुमारीका रखा हुआ लाख रूपयेका मणिरत्न आज उन्हींके हाथ लगा। सर्वदा उन्हें एक यही चिन्ता लगी रहती थी कि यदि चांदकुमारी गैरसिंहके साथ मिल गई तथा उनके पास जो सब धन रत्न रखा हुआ है वह गैरसिंह जान जावे तो उन्हें एक भारी आपत्तिमें गिरनेको मश्वी वना है। जो ही, आज प्रसन्नचित्तसे गुलावसिंह लाहौर पहुँचे। यहाँ अधिक दिन रहने पर शायद किसीके मनमें कोई सदेह हो जाय, इसी लिये वे ध्यानसिंहकी उपयुक्त सलाह देकर शोषण ही जम्मुराज्यकी लौट आये। गुलावसिंहके चांदकुमारी ध्यानसिंहने राजपुत्रके एक पाच वर्षके उत्तराधिकारीको राज्यसिंह नाम पर बैठाना स्थिर किया। उन्हींका नाम सुविख्यात टलीपसिंह था।

दोहर म च ६१।

गैरसिंह ध्यानसिंहके व्यवहारमें भयभीत हुए, इस लिये उन्हें ध्यानसिंहके विरुद्ध कोई कार्य करनेका साहस न हुआ। किन्तु यह उपयुक्त काल समझ दुष्ट सिन्धुवाला मर्दारने सटमस गैरसिंहमें ध्यानसिंहका गिरावट करनेके लिये आदेशपत्र ले लिया। इधर उन्होंने राजाका दण्डादेशपत्र देखा कर ध्यानसिंहकी चिन्तामें डाला। उस समय दुष्ट सिन्धुवाला मर्दारने ध्यानसिंहके कक्षा "यदि आप आज्ञा करें तो हमलोग अभी उस दुष्ट गैरसिंहका मसक दो खण्ड कर सकते हैं" ध्यानसिंह इसमें सहमत हुए। दूमेरे दिन दुष्ट सिन्धुवालाने मर्दार राज गैरसिंह और ध्यानसिंह दोनोंको मार डाला।

दोहर म च ६२।

गैरसिंहके यद्यपि ध्यानसिंहके टलीपसिंह पक्षनदक सिंहासन पर अभिषिक्त हुए। गैरसिंहने मर्दारका

पट पया। थोड़े समयके बाद ही हीरामिंह और उनके चान्चा सुचेतमिंहमें द्वेष आरम्भ हुआ। सुचेतमिंहके ऊपर अनेक राजमहिलावें विमुग्ध थीं; यही हीरामिंहकी द्वेषताका कारण था। यहां तक कि टलीपकी साना महारानी चन्दा भी सुचेतकी अत्यन्त पसन्द करती थी। पण्डित जल नामके हीरामिंहके एक प्रियपात्र थे, सुचेतमिंहके मद्दग राज अन्तःपुरमें वे भी जाते आते थे। संयोगवश एक दिन अन्तःपुरके शयनगृहमें दोनोंकी भेंट हो गई। इससे सुचेतमिंह पण्डितके ऊपर बहुत ही क्रोधित हो उठे। उन्हें मालूम था कि पण्डित इस घटनाको हीरामिंहसे कह देगा। जो कुछ हो, सुचेतमिंहने राजमाताकी सहायतासे प्रधान मन्त्रीके पद पानेकी चेष्टा की, रानी चन्दाके भाई जवाहिरमिंहने भी इसमें योग दिया। हीरामिंहने ज्येष्ठ भ्राता गुलावमिंहको सुचेतमिंहके इस व्यवहारके विषयमें लिख भेजा तथा उन्हें एक बार लाहौर आनेकी प्रार्थना की। किन्तु धृत्त गुलावमिंह पहले आनेको राजी न हुए। अन्तमें न मालूम क्या सोचकर वे लाहौर आपसे आप आ पहुँचे। लाहौरवामियोंने उनका यथेष्ट सत्कार किया। यहां आ गुलावमिंहने मुना कि—जवाहिरमिंह टलीपकी ले वृष्टिग राज्यामें भाग जानेकी चेष्टा करते थे। सुचेतमिंह भी इस पट्टयन्त्रमें लिप्त थे। मिख सैन्यके मालूम होने पर उन्होंने टलीपमिंहकी जा घेरा। वजीर हीरामिंहके कहनेपर जवाहिरमिंह लोहके पिंजड़ेमें बंधे हैं।

गुलावमिंह सुचेतमिंह पर जिससे किसी तरहकी शोषित न पहुँचे पहले उसीका बन्दोबस्त करने लगे। किन्तु तो भी हीरामिंहने किलेमें सुचेतमिंहके अधीन जो दो सैन्यदल थे, उन्हें भगा दिया और साथ ही साथ यह भी आज्ञा दी कि उनकी अनुमतिके बिना सुचेतमिंह अथवा उनके किसी मनुष्यके साथ किसी तरहका सम्बन्ध न रखें।

गुलावमिंहने हीरामिंहको बहुत समझा बुझा कर गहनप्रियाट शान्त कर दिया। सुचेतमिंह उनके साथ अगु जानेकी प्रसूत हुए। तब अर्थ गृह, गुलावमिंहने हीरामिंहसे कहा, “यह तुम्हारा जो प्रधान प्रतिबन्धक है, उसे मैं अपने साथ ले जा रहा हूँ। तिस पर भी

तुम्हारे चारों ओर शत्रु हैं। जैसा मैं देखता हूँ, उससे कब किस तरहकी आपत्ति आ पहुँचेगी, इसका कुछ ठीक नहीं है। मेरी इच्छा है कि तुम्हारे पिताकी और मेरी यहाँ जो समस्त बहुमूल्य अस्थावर सम्पत्ति है, उसे अभी हम लोगोंको पितराज्य जंजुमें ले आकर रखना ही ठीक है। उसमें तुम्हारी क्या सम्पत्ति है?” हीरामिंह ज्येष्ठतातके कौशलपूर्ण वचनों पर किसी तरहका प्रतिवाद कर न सका। इस तरह गुलावमिंहने कनिष्ठ सुचेतमिंह और अमंख्य मणिरत्नादि ले स्वराज्यका प्रस्थान किया। उस समय ऐसा मालूम पड़ने लगा कि, लाहौरके राजभण्डारमें एक प्रकारकी चोरी हो गई है।

जंजुमें आ गुलावमिंहने सुचेतमिंहसे कहा “भाई! देखो, सुके तोन चार पुत्रमन्तान हैं, किन्तु तुम्हें एक भी मन्तान नहीं है, मेरी इच्छा है कि तुम मेरे एक पुत्रको दत्तक पुत्र बना लो।” ज्येष्ठ भाईके वचनों पर सुचेतमिंह राजी हो गये। इस तरह गुलावमिंहके एक पुत्र सुचेतकी ममस्त जागीर और भूमिसम्पत्तिके भावी उत्तराधिकारी हुए।

इस बार गुलावमिंह अपने स्वार्थसिद्धिका दूमरा उपाय सोचने लगे। रणजित्मिंहके काश्मीरा और पेशोरा नामके दो पुत्र थे। गुलावमिंहने उनके नामका जाल कर एक पत्र तैयार किया उसमें लिखा गया, था कि सिन्धुवालाओंके राजहत्या और मन्त्रिहत्याकाण्डमें उन्हीं दोनों भाइयोंका प्रहयंत्र था। रणजित्मिंह काश्मीरमिंहको मियालकोट और पेशोरासिंहको चन्द्रभागाके गड़ियावाला दुर्ग दे गये थे। काश्मीरके अधीन मयूरमिंह नामक एक बड़ किलेदार थे। उनने भी दोनों भाइयोंके विरुद्ध भूठी गवाही दी। लाहौरसे उन दोनों भाइयोंकी बन्दी और उनकी सम्पत्ति जब्त करनेका हुकम आया। लोभी जस्युराजने मियालकोट और गड़ियावालेमें सैन्य भेजकर दोनों भाइयोंपर आक्रमण किया और उनको समस्त धन सम्पत्ति लूट ली गई। काश्मीरा और पेशोरा स्वप्नमें भी नहीं सोचते थे कि इस तरहसे अकस्मात् उन दोनोंके ऊपर कोई आक्रमण कर सकेगा। जो हो, अभी उन्हींने निराश्रय अवस्थामें परिवारके साथ एक मिखगुरुका आश्रय ग्रहण किया। इस स्थानसे उन्हींने लाहौर और

जम्बू को एक पत्र या लिख भेजा—“हम दोनों स पूर्ण रूपसे निर्दोष हैं, हमारे किमो शत्रु न सिध्या दोषो रोपण कर हम लोगोंको कलङ्कित किया है।” किन्तु दुष्ट सं गुलाबसिंहने उनके कपटन पर कुछ ध्यान न दिया अन्तमें वा दोनों राजपुत्रोंको बगोभूत करनेके अभिप्राय से उन्हें जम्बू नगर आनेकी लिखा, और धूर्त गुलाबने यहाँ उन्हें नजरबन्दी कर कहा “आप लोग यदि सुभक्त ७५ लाख रुपये दण्ड स्वरूपमें दें, तो भविष्यमें, आप लोगोंके ऊपर किसी तरहका अत्याचार न होगा।” किन्तु वे इतने रुपये कहा पाते ? महावीर रणजित्मिहके पुत्रोंके प्रति इस तरहका अत्याचार होता देख खालसा सैन्य सबके सब विरक्त हो उठे। उन्होंने गुलाबकी खबर दी रणजित्मिहके पुत्रोंके प्रति इस तरहका अत्याचार मानने गालमाका अपमान करना है। यदि आप शीघ्र ही उन-दोनोंकी सम्मानपूर्वक छोड़ न देंगे तो खालसा सैन्य अत्याचार करेगा। इस पर गुलाबसिंहने भयभोग ही सिर्फ २५ हजार रुपये ले काश्मीर और पेशवरासिहको छोड़ दिया।

कुछ दिनोंके बाद काश्मीरसिंहने उस दुष्ट किलेदार को एक सख्त सजा दी, जिसमें उस अभिमानकी मृत्यु, हो गई। इस सजादेकी पाकर गुलाबसिंहने लाहौरको एक पत्र लिखा। फिर भी उन दोनों राजपुत्रोंकी कैद करनेका आदेश आया। गुलाबसिंहने गडियाखाना आक्रमण कर मात सी सैन्य मियालकोट भेचि। इस समय काश्मीरसिंहने पकड़ने ही मतर्क थे। उनमें अपने दो सौ सैन्यको दुर्गबन्दीके लिए नियुक्त किया। उनके युद्धकौशलसे गुलाबका सैन्यल पराजित और विशेष क्षतिग्रस्त हो रणक्षेत्रमें भाग गया।

गुलाबसिंहने अपने मैनकां विद्वजतो पर क्रोधान्ध हो कई सौ पगारोंको और पदाति सैन्य तथा तोपें दुर्ग ओतनेके लिये भेजीं। किन्तु इस धार में उनको मैनको पुर्ययत् क्षतिग्रस्त हो मीठाटोकी बाध हुए। जब गुलाब सिंहने देखा कि दो हजार पेशवाराजा और मात हजार पलायनिके आने पर काश्मीरसिंहने पक्षा सहस्र वर्षोंका न्यो बना है तब उन्हें लाहौरमें सिध्या सैन्य भिक्षुनेत्र पत्र दिया। लाहौरमें भेजेगिया और पेशवाराजा के मुसल

मानसैन्य आये किन्तु वे भी काश्मीरसिंहने दका बालवाका न कर मके। गुलाबसिंहने देखा कि अब अपना मान सभ्रम रक्षा ही करना उचित है, अब उनके बहुतेमें सैन्य सामान्य सैन्यको पराजय कर न सके, तब उनके इतने गौरव और इतने दम्भ पर धिक्कार है। इसलिये उन्हें इच्छा बढना लेनेके लिये हीरामिहकी एक पत्र लिखा—खालसा सैन्य रणजित्मिहके पुत्रके विरुद्ध युद्ध नहीं करेगा यह जान हीरामिहने ध्यानसिंहके पराक्रान्त पांच हजार अश्वारोही और घोड़े परसे चलाये जानेवाले छह सठत् कामान सियाल कोटके दुर्ग ध्वंस करनेके लिये भेज दिये। इन योद्धाओंके गोला वर्षणसे सियालकोटका दुर्ग काँपने लगा था। काश्मीरसिंहने परिवारकी चारों-ओर दावानल—जैसा दीखने लगा। वे सबके सब भयभीत हो गये और काश्मीरसिंहने लडाई बन्द कर देनेका अतुरोच किया। काश्मीरसिंहने भो देखा कि वचनेका अब कोई उपाय नहीं है, शीघ्र ही गुलाबका सैन्य दुर्ग अधिकार कर उनके सामनेमें ही उनके परिवारोंका अपमान करेगा, इसलिये वे गुमहार हो कर मध्य प्रदेशको भाग गये। गुलाबकी सेनाने दुर्ग अधिकार कर लिया

इधर जब लाहौरमें ध्यानसिंहने सैन्यल भेजा गया था तब खालसा सैन्य महाराज रणजित्मिहके दोनों पुत्रोंपर भावो विपत्ति समझ उल्लेखित हो उठा। उन्होंने तीन दिन तक हीरामिहकी नजरबंद कर रखा और सुचेतसिंहको मंत्रीका पद टिलानिके लिये बुलाया। हीरामिहने भयभीत हो उन्हें खबर दी कि वे रणजित्मिहके पुत्रोंका कोट अनिट न करेंगे, उनका पूर्ण अधिकार मीठाटेंगे और खालसा सैन्यके इच्छानुसार वे सब कार्य करेंगे। इस तरह हीरामिहने स्वयं खालसा सैन्यका फिर भी भेज ही गया।

घोड़े ही क्षमयके बाद सुचेतसिंहने लाहौर का खालसा सैन्यको अपने आनेकी सूचना दी। किन्तु इस समय खालसा और हीरामिहमें मेल था। तब एव सुचेतसिंहको आगा पर पानी पड़ गया। उस समय सुचेतसिंहके पास सिर्फ ४५ मनुष्य थे। हीरामिह अपने चक्का सुचेतसिंहका आगमा सवाट पाहर लगभग

चौदह पन्द्रह हजार सैन्य ले उन पर टूट पड़े और अन्तमें उनका प्राणान्त ही गया।

सुचेतसिंहकी मृत्युसंवाद पाकर गुलावसिंह हीरासिंहके ऊपर बहुत रुष्ट हो गये थे। कुछ दिनके बाद उनने हीरासिंहको कहला भेजा कि ध्यानसिंह और सुचेतसिंहकी सम्पत्तिके वे ही (गुलाव) अधिकारी हैं। पत्र पाकर हीरासिंह बहुत क्रुद्ध हो गए और उनने भी वे समस्त सम्पत्ति और अपना स्यावर अस्यावर सम्पत्ति जो गुलावके पास रखी हुई थी, समस्त उन्हींके हाथ सौंप देने चाही। इस तरह दोनोंमें विवाद प्रारम्भ हुआ। हीरासिंहने लाहौरमें एक महामभा कर उपस्थित प्रधान प्रधान सहायकोंको गुलावके स्वार्थपरता की कहानी कह सुनाई और उनकी सम्पत्ति ले कर जम्बुमें एक पत्र भेजा—

१, लाहौर-राजसरकारके अधीन जो समस्त सम्पत्ति गुलावसिंह भोग करते रहे हैं, इसका चौथा भाग और अधिक मालशुजारी देने ली होगी। २, उन्हें राजा सुचेत सिंह और राजा ध्यानसिंहकी जागीर और समस्त जायदाद लौटा देने पड़ेगे और ३, उन्हें स्वयं लाहौर दरवारमें उपस्थित होना पड़ेगा।

शायद गुलावसिंह इस पत्रकी अग्राह्य करें, इसलिये २२ दल सिखसैन्य उनके विरुद्ध भेजे गये। किन्तु खालसा सैन्यने जाना कि गुलावसिंहका भी सैन्यबल कम नहीं है। वे भी यदि चाहे तो समस्त पार्वतीय सहायकोंको उच्छेजित कर सकते हैं, हाँतक कि काबुल, काश्मीर प्रसस्थानोंके शासनकर्ता ससैन्य आ गुलावको सहायता अवश्य देंगे। गुलावसिंहने पत्र पाकर उत्तर दिया कि हीरासिंहके कनिष्ठ भाई मीयां जवाहिरसिंहके जंबु आने पर वे समस्त विषयोंकी मीमांसा करेंगे। इस कार्यके लिये जवाहिरसिंहको जंबु आना पड़ा। चतुर गुलावने उनके साथ परामर्श कर एक तरहकी निष्पत्ति कर ली और सपुत्र लाहौर आ पहुँचे। हीरासिंहने ज्येष्ठतातका स्वागत किया। इस समय गुलावके निकट दारुण संवाद पहुँचा कि गुजरातमें उनके जितने सैन्य थे, वे सबके सब पेशौरासिंहसे मारे गये और उनका राजभण्डार लूट लिया गया है। ऐसी दुर्घटना होनेका

कारण भी था। गुलाव और हीरासिंहमें जब विवाद चला था, उस समय जंबुराज गुलावने पेशौरासिंहकी सैन्यसंग्रह करनेकी कहा था। उनके कथनानुसार पेशौराने गुलावको सहायताके लिये लगभग दो हजार सैन्य एकत्र किये। किन्तु हीरासिंहके साथ सैन्य हो जाने पर गुलावने सेनाओंको कुछ भी तनखाह न दे कर सबको भगा दिया था। उन्हींने आ कर पेशौरासिंहसे अपना वेतन मांगा। पेशौराने सेनाओंका प्राप्य चुका देनेके लिये गुलावको कई बार पत्र लिखा था, अन्तमें गुलावने उन्हें इस तरह उत्तर दिया था—“दुष्ट सेनाओंका अस्त्र शस्त्र छीनकर उन्हें मार भगावें।” पेशौरासिंहने उस पत्रकी उन्हीं उच्छेजित सैनिकोंके सामने पढ़ा। गुलावके आचरणसे अत्यन्त क्रुद्ध हो उन सेनाओंने गुजरातमें ऐसा भयङ्कर काण्ड कर डाला था। किन्तु पेशौरासिंह उस समय वहाँ उपस्थित नहीं थे।

गुलावसिंहने अपनेकी निर्दोष बतलाते हुए, पेशौरासिंह पर दोष लगा कर लाहौरके दरवारमें उनके नाम पर अभियोग चलाया। परंतु इसका पेशौरासिंहकी कोई पता न लगने पर उसने उनके विरुद्ध सेना न भेजी।

इसके थोड़े दिनके बाद ही महाराज टलीपके मामा जवाहिरसिंहने हीरासिंहके विरुद्ध खालसा सेनाओंको उच्छेजित किया। इस पड़यन्त्रमें हीरासिंह शत्रुओंसे मारे गए। इस समय गुलावसिंह वरकजई जाति-का खालसा सैन्यके विरुद्ध उच्छेजित कर रहे थे।

संवाद पाकर जवाहिरसिंहने उन पर शासन जमानेके लिये जंबुकी ओर मित्र सैन्यको भेजा। लालसिंह, श्यामसिंह अठरवाला, फतेसिंह मान और सुलतान मुहम्मद खान नामके प्रधान सहाय तथा सेनापतिगणने सैन्य परिचालनका भार ग्रहण किया। गुलावसिंहने सिख सैन्यके आगमनकी खबर पा हीरासिंहके भाई मीयां जवाहिरको सेनाके साथ यशरोता नामक स्थानको भेजा। सिखसैन्यके यशरोता पहुँचनेके बाद सहाय उत्तरसिंह खालसा सेनामें मिल गये और तब मीयां जवाहिरसिंहके अन्याय सैन्य भी छोड़ जाने लगे। अतएव मीयां जवाहिर वाध्य हो कर जंबुकी भाग आये। तब खालसा सैन्य बहुतही उस्ताहसे जंबु राजधानी पहुँचे। गुलाव-

मि हने देखा कि अब विपद नजदीक आ गयो। दुर्दान्त सिखसैन्य सहजमें ही उन्हें छोड़ नौट नहीं जावेगा। उनने कहला भेमा कि यदि श्यामसिंह मेजतिथा, फतेसिंह मान, वीर मुलतान मुहम्मद आ उन्हें अभयदान दे तो वे नाहीं दरबारका आदेश पालन कर सकतें हैं। परन्तु कोई सद्दार् पढ़ने पहल उम महायजी जव राजाके निकट जा अपने जीवनकी मद्दतमें डालनेके लिये मस्यत न हुआ। अनेक तर्क वितर्कके बाद रणोत्ति हके समयका हृद सेनापति फतेसिंह मान गुलाबके पाम नानेकी राजी हुआ। जवुपति गुलाबसिंह हने उम हृदवीरका यथेष्ट सम्मान किया और कहा, कि हम तोन करोड़ रुपये कड़ा पावेंगे ? हा। दीरामि ह और सुचेतमि हको जो सम्पत्ति है व। समस्त वे माहोर दरबारमें अर्पण करनेको प्रस्तुत है। गुलाबसिंह हने इस तरह फतेसिंह हको लालच देकर जिदा किया। कितु हृद सेनापति नगर छोड़ एक कोस भी जाने न पाया या कि कहीं पाँच नो डोगरा सैनाने आ कर अत्यन्त निष्ठुर भावसे उम हृद सेनापति तथा उनके भागियोंको मार डाला। सिर्फ एक मनुष्य प्राण बचा कर भागा और उसने इस दारुण हत्याकाण्डको सुपर उन सबको कह सुनाई। बुढ़वीरभी अचानक मृत्युसे समस्त खालसा सैनाने धूत गुलाबकी ही इस हत्याकाण्ड का नायक जान प्रयत्नवेगमें जवु नगर पर आक्रमण किया।

चतुर गुलाबने फतेसिंहकी मृत्यु होने पर बहु-तही ग्रीक प्रगट किया और अपनेको निर्दोष साबित करनेके लिए बहुतेमें मनुष्योंको कैद किया। पन्तमें जब देखा कि अब रक्षाका कोई उपाय नहीं है तो उन्हें सिख सेनापतिमें जा घोषण की कि वे मजाके लिए खालसाके छतदास हैं और नो कुछ उनके पाममें है यह खालसाके लिये रख दें तयार हैं। यह इच्छा ही तो समस्त खालसा सैन्य उनकी धन सम्पत्ति बाँट कर ले सकतें हैं। पीछे उनक जीवनमें किमी तरहका अनिष्ट हो जाय एनी भयमें वे माहोर दरबारकी नहीं जातें हैं। अभी यह खालसा सैन्य उनकी रक्षा करें तो वे अपनी इच्छानुसार सब कुछ कर सकतें हैं। यह कह कर उनने मगभग एक भावसे अधिक दृश्य खालसा सेनापतिमें बटने

का आज्ञा दी। गुलाबके पामे मोठे बचन और अर्थ मोहिनो शक्तिसे अधिकतर खालसा सैनो उनकी जीवन रक्षा करनेके लिये कटिबद्ध हुए। तब चतुर गुलाब वन्देीरपने लाहौर आये और दरबारमें उपस्थित हो अपने जागीरके सिवा समस्त अधिकृत प्रदेश और दण्ड स्वरूप ६८०००००० रुपये दना शोकार किया। यह थोड़े दिन ठहर कर विपदको आग कामे स्वराज्यको लोट गये।

थोड़े दिनके बाद दुर्दान्त खालसा सैन्यने मत्रो जवा हिरसिंहको मारडाला। तब प्रधान प्रधान सद्दार्सिंह गुलाबसिंहकी लाहौर आने और मन्त्रीका पद ग्रहण कर निका अनुरोध किया। किन्तु धूत गुलाबसिंह स्वाधी नताप्रिय सिख सैन्यों पर शासन करनेमें सक्षमत हुए।

१८४५ ई०में पहले पहल सिखयुद्धका आरम्भ हुआ। सिखसैन्यो दुर्द्वैर उटिंग सैन्यकी धोरे धोरे गतदु नदो पार होतें देख, समस्त प्रधान सद्दार् विपद और चिन्तित हुए। इस समय सिखसैन्यका प्रधान सेनापतित्व ग्रहण करनेवाला पञ्जाबमें कोई नहीं था। महारानो दलीप सिंहकी माताने सद्दार्सिंहकी सलाह लेकर गुलाबसिंहकी बुलाया। १८४६ ई०की २५ वीं जनवरीको जम्नार गुलाबसिंह लाहौरके दरबारमें आ मन्त्री तथा प्रधान सेनापतिके पद पर नियुक्त हुए। उम समय गतदुनदो के तीर पर हटिंग और सिखसैन्यमें लड़ाई चम रही थी। किन्तु गुलाबसिंह हने प जावके उम दारुण विपत्कालमें सर्वोच्च पद पर रह कर भी किमी तरहका साहाय्य न किया। घरन् युद्धकालमें जो समस्त अग्रणी सैन्यवन्देी हुए थे गुलाब उन्हें लाहौरमें डाक्टर साहब हनिग्वर्कके घरमें रख यथेष्ट चिकित्सा करने लगे थे। ग्रीक ही गुलाब ने सुना कि अजिबाल सेवमें सिखसैन्य पराजित हुए हैं। सेनापतिको उन्माद देना तो दूर रहे, उन्हें निहत्माह करनेके लिये बहुत गानियाँ दीं। दुष्ट सद्दार्सिंह पह यन्त्र, स्वाधपरता और अत्याय आचरणने अनेक सिख सैन्य हटिंगके हाथमें हारने लगे। भोवराउनुमें विजय प्राप्त कर स्वयं बड़े नाट हाटिञ्ज लाहौरकी पार अयमर हुए। इस पार सैन्य बड़े नाटका आगमन मयाद पाकर गुलाबसिंह चिन्तित हो गये। जिनमें मयनर जन

रक्त लाहौर दरवारमें उपस्थित न हो सकें, उसी लिये वं कसूर नामक स्थानमें बड़े लाटसे ग्रा मिले, किन्तु बड़े लाटने उनके कथन पर कुछ भी ध्यान न दिया। तब गुलाव सिंहने अभिमानसे कहा था—“यदि मैं युद्ध करता, तो दूसरे ही प्रकारसे लड़ाई समाप्त हो जाती। वैसा होनेसे अपने ही फंदेमें अपनेको बंधा न रहता। यदि मैं लड़ाईकी इच्छा करता तो दिल्ली और फिरोजपुरमें अस्सी हजार सैन्य जमा कर सकता।” वीरवर हार्डिञ्जने भी कहा था, “पंजावकी राजधानीमें अंगरेजोंके रक्तपात का बदला लिया जायेगा।” गुलावसिंह हताश हो लाहौर लौट आये। गुलाव कोड़े उपाय न देख वालक दलीपसिंहको ले ललियाना नामक स्थानमें लार्ड हार्डिञ्जको छावनीमें पहुँचे। बड़े लाटने दलीपको अत्यन्त आदरसे अस्त्रण किया और सर्दारोंको सम्बोधन कर कहा, “दलीपसिंह पंजावके सिंहासन पर प्रतिष्ठित होगा तथा युद्धका खर्च डेढ़ करोड़ रुपये देना पड़ेगा। किन्तु विपशा और गलफुके मध्यका प्रदेश वृटिश गवर्नमें गृहके अधीन रहेगा।”

उसके बाद लार्ड हार्डिञ्जने लाहौर आ दलीपको सिंहासन पर बैठाया। दरवारमें बड़े लाटने कोहिनूर देखना चाहा तब गुलावसिंहने अपनेसे ही कोहिनूर ला अंगरेज राजपुरुषोंको दिखाया।

८ मार्च १८४६ ई०में बड़े लाटकी छावनीमें एक बड़ा दरवार लगा। उस दरवारमें सिख पक्षके महाराज दलीपसिंह और उनके समस्त प्रधान सर्दार उपस्थित थे। यहाँ वृटिश गवर्नमें गृह और लाहौर दरवारमें मन्थि पत्र स्वीकार किया गया बड़े लाटने पहले ही से गुलावसिंहके विषयमें कुछ विचार करनेका निश्चय कर लिया था। अब उन्होंने एक करोड़ रुपये ले गुलावसिंहको काश्मीरके साथ विपशा और सिन्धु नदीके मध्यवर्ती पार्वतीय राज्य वैच देनेका प्रस्ताव किया। गुलाव भी इस प्रस्तावमें सहमत हुए। वे उसी दिन एक स्वाधीन राजाके जैसा गिने गये। १५वीं मार्च में अंगरेजोंने गुलावको ‘महाराज’ की उपाधि दी। इस दिन स्थिर हुआ कि “सिन्धु नदीके पूर्व इरावती नदी पश्चिममें चम्पाके साथ जो विस्तीर्ण पार्वतीय भूभाग है, वृटिश गवर्न-

में गृहकी ७५ लाख रुपये देकर महाराज गुलावसिंह उम विस्तीर्ण भूभागके स्वाधीन राजा हुए। वृटिश गवर्नमें गृह तथा लाहौर दरवारमें इनका कोई सम्पर्ग न रहा। गुलावसिंह तथा उनके वंशधर स्वाधीन राजा हो कर उक्त राज्यका भोग टक्कल करते रहेगे।”

जो कुछ ही गुलावसिंह इतने दिनों पर पूर्ण मनो रथ पाकर काश्मीरकी ओर रवाना हुए। उस समय लाहौर दरवारके प्रधान गेण इमामुद्दीन काश्मीरके शासनकर्त्ता थे। वे सहजमें काश्मीरराज्य छोड़ने राजी न हुए। वृटिश सेनापति लीरेन्सने त्रिगुडियर हर्टलरको समर्थ काश्मीर भेजा। वृटिश सेनाने इमामुद्दीनको वहाँसे भगा दिया। बहुत समारोहके साथ महाराज गुलावसिंह स्वाधीन राजाके सदृश काश्मीरके सिंहासन पर अभिषिक्त हुए। सामान्य ३, १० मासिक तनखाह पानेवाले सैनिकसे आज गुलावसिंह काश्मीरके स्वाधीन राजा ही गये, यह कम आश्चर्यको बात नहीं है। इस सहोच्च पद पर शोभायमान होते हुए उन्होंने जीवनके शेषकाल सुखस्वच्छन्द और शान्तभावसे व्यतीत किया। २री अगस्त १८५७ ई०में गुलाव अपने पुत्र रणवीरसिंहको काश्मीर राज्य प्रदान कर आप परलोकको सिधारि।

गुलावसिंहभङ्गी—पञ्जावके एक विख्यात भङ्गी सर्दार। इन्होंने महाराज रणजित्सिंहके विरुद्ध कई बार लड़ाई की थी। १८०० ई०में वालक गुरुदत्तसिंहको अपने स्थानपर रख आप परलोकको चल बसे। उनकी मृत्यु के अंशुदसे उत्साहित हो महाराज रणजित्ने भङ्गी सर्दारकी विधवा सहिषी, रानी सुखासे अमृतसरका लोहगढ़ दुर्ग छीन लिया। विधवा सहिषी शिशु पुत्रको साथ ले जंगल जा कर आत्मरक्षा करनेके लिये बाध हुई थीं। गुलावसिंह सेजितिया—एक सिख सर्दार। ये महाराज रणजित्सिंहके पूर्वपुत्रप थे। इन्होंने ही सबसे पहिले सिखधर्म ग्रहण किया था। रणजित्सिंह देवों

गुलावास (फा०) गुल आवास या आवास देवों।

गुलाव वाड़ी (हिं० स्त्री०) एक तरहका उत्सव जिसमें हर एक जगह शोभाके लिये गुलावके फूलोंसे सजाई जाती है। यह उत्सव प्रायः चैत्र मासमें हुआ करता

है। इसमें सभी मनुष्य गुलाबो रगके कपड़े पहनते हैं। गुलाबा (फा० पु०) एक तरहका पात्र।

गुलाबी (फा० वि०) १ गुलाबके रगका। २ गुलाब सम्बन्धी। ३ गुलाब जलसे सुगन्धित किया हुआ। ४ थोडा हलका। स्त्री०) ५ म दरा पौनिका पात्र। ६ एक तरहको मिठाई जो गुलाबकी पखलियोसे बनाई जाती है। ७ एक तरहकी मीना। यह मध्य एसिया और युरोपमें पाई जाती है, यह समूहके समूह एक साथ रहती है। ग्रीक कालमें यह पर्वतों पर चली जाती है। यह चार पांच अण्डे एक समय देतो है।

गुलाम (अ० पु०) १ खरोदा हुआ भूत्व। २ साधारण सेवक। ३ गजीफिका एक रग। ४ ताम्रके पत्तोंमेंसे एक। यह दहलेसे बडा और बेगमसे छोटा होता है।

गुलामअली—एक मुसलमान ऐतिहासिक। इन्होंने 'शाह आलमनामा' नामका दिल्लीश्वर शाहआलम और उसके राजत्व कालका इतिहास बनाया है।

गुलामकादर खाँ—एक रोहिला सदाँर। ये जाविता खाँके पुत्र और रोहिला सदाँर नाजिब उद्दौलाके पोत्र थे। यह सम्राट शाह आलमके दरबारमें रहते थे। अन्तमें विश्वासवातकतासे इसने रोहिलाओंकी सम्राटकी आरवे निकाल लेनेका आदेश किया था। १७८८ ई०के १० वी अगस्तकी वह जघन्य आदेश प्रतिपालन किया गया। दिल्लीश्वरके प्रति ऐसा अत्याचार करनेके बाद गुलाम कादरने मुहम्मद शाहके पीत और अहमद शाहके पुत्र 'वेदर बकत' को दिल्लीके तखत पर बैठाया।

बाद एक दिन वे अपने राज्य घोपगडकी और जा रहे थे, रास्तेमें महाराष्ट्रसेव्य उन पर टूट पडे। उन्होंने गुलामकादरके नाक कान, हाथ, पाव खण्ड खण्ड कर दिल्ली भेज दिये। थोडे समयके बाद गुलामका देहान्त हो गया। आगरा जिलाके अन्तर्गत आडल नामक स्थान में गुलामकी कब्र है।

गुलाम कुतबुद्दीन शाह—इलाहाबादवासी एक प्रसिद्ध कवि। यह शाह मुहम्मद फकीरके पुत्र थे। कवितामें इन्होंने 'मुसोवत' नामसे आत्मपरिचय दिया है। १७२५ ई०के २८ वी अगस्तकी ये पैदा हुए थे और मका जाकर

१७७३ ई०में मरे। इनके बनाये हुए "नानूकलेग" और 'नानहलुयो' ग्रन्थमें प्रत्युत्तर रूपसे लिखा गया है।

गुलाम गर्दिश (फा० स्त्री०) १ एक तरहको छोटी दोवार जो परदेका काम देती है। यह इस तरह बनी रहती है कि स्त्रिया आंगनमें घूम फिर सकती है और बाहरके मनुष्यकी दृष्टि उनपर नहीं पड सकती है। २ नोकरीके रहनेके लिये महलके चारो ओरका बगमद।

गुलाम नवी—युक्तप्रान्तके हरदोई जिलेमें बिलग्रामके रहनेवाले एक हिन्दी कवि। वह मुसलमान थे। उपनाम रमलीन रत्न। भिवा अरबी और फारसीमें विद्वान होने के सैयद गुलाम नवी हिन्दी उर्दू भी खूब जानते थे। उन्होंने (१६३७ ई०) अद्ददर्पण नख सिख और (१७४१ ई०) रसप्रबोध नामक हिन्दी भाषाका अलङ्कार ग्रन्थ लिखा।

गुलाम महम्मद—टीपू सुलतानके नाती। लगभग १८०१ ई०में ये अङ्गरेजके हाथसे बन्दी हुए थे। इसके बाद १८७१ ई०में इन्हे ब्रिटिश गवर्नमेंटसे नाइट कमाण्डर ऑफ दो स्टार ऑफ इण्डिया (K C S I)की उपाधि मिली थी। ११वीं अगस्त १८७१ ई०की ७८ वर्षकी अवस्थामें इनका देहान्त हुआ।

गुलाम हुसैन खाँ—१ एक मुसलमान ऐतिहासिक और विख्यात पण्डित। इन्होंने १७८० ई०में जोषं उदनी साहबकी अनुरोधसे "रियज उस सलतौन" नामक बह टेंगका इतिहास पारसी भाषामें रचना की थी। इनकी बुद्धिमता देख मुग्ध हो गवाब इब्नाहिम खाँने इन्हे निजामत अदालतके एक सभ्यपद पर नियुक्त किया था।

२ नवाब सैयद गुलामहुसैन नामसे प्रसिद्ध। इनका दूसरा नाम तिववा तिववाई था। ये हिदायत अली खाँ बहादुर आमदजङ्गके पुत्र थे। पहिले ये मुर्शिदाबादके नवाबके समय अमीर रूपसे गण्य रहे, इसके बाद इष्ट इण्डिया कम्पनीके समयमें भी बडे लाटसे सम्मानित हुए। १७८० ई०में इन्होंने "सियार उल मुनाखिरोनु" नामक पारसी भाषामें मुसलमान नवाबोंका इतिहास प्रणयन किया था। इस ग्रन्थमें उस समयके बङ्गकी अवस्था अति सुन्दर रूपसे वर्णित हुई है। बङ्गके ऐतिहासिक माल ही इस ग्रन्थका आधार किया करते है, इसमें अङ्गरेज

राजाओंकी भी यथेष्ट प्रशंसा की गई है। फरान्सीसी पंडित रेनिगड वरफे मस्ताफा, ब्रग और वालफोर मारब ने इस ग्रन्थका अङ्गरेजी अनुवाद प्रकाश किया है। उक्त पारसी ग्रन्थकी सहायतासे गुलाम अली साहब नामक एक सोलवीने १८५६ ई०में हिन्दुश्रानिमें 'गुलामसू-इ-तवारिख-इ-लियर उल मुताखिरीम' नामका एक इति-हास प्रणयन किया है।

उस इतिहासके अलावे गुलामहुसेन "वशाहत उल् इमानत" नामका एक काव्य भी लिख गये है।

गुलाम-माल (अ० पु०) कंवल, लोई प्रभृति।

गुलामराम—हिन्दी भाषाके एक कवि। कहते हैं कि उनकी कविता अच्छी होती थी।

गुलामी (अ० स्त्री०) १ टामत्व, गुलामका भाव। २ सेवा, श्रुषा। ३ पराधीनता, परतन्त्रता।

गुलामी—एक हिन्दी कवि। उनकी कविता अच्छी होती थी।

गुलाल (सं० पु०) भूटण, कोड़े घास।

गुलाल (फा० पु०) होलोकें टिनीमें एक दूमरेके सुव पर लगानेका लाल चूर्ण। यह रूण जलमें भी मिलाकर चांस या टोनकी बनी पिचकारीसे एक दूमरे पर छिटकते हैं।

गुलाल—हिन्दी भाषाके एक कवि। १८१८ ई०की उनका जन्म हुआ। गुलालका प्रधान ग्रन्थ शान्तिहोत्र है, जिसमें पशुओंकी चीरफाड़ बतलायी गयी है।

गुलालसिंह—हिन्दी भाषाके एक कवि। १७२३ ई०की उनका जन्म हुआ था।

गुलाला (फा०) गुल लाला देखो।

गुलिका (सं० स्त्री०) गुलः गोलाकारोऽस्त्यस्या गुल ठन्-टाप्। १ गुटिका, गोली। २ वसन्त-रोग। ३ पक्क कुभाण्डखण्डविशेष, पके कुम्हड़ेका खण्ड। इसकी प्रस्तुत-प्रणाली इस तरह है—पुरातन शुष्क कुम्हाण्डको गोलाकार खण्ड करके छूत और गुड़में पाक करते हैं। थोड़े समयके बाद उसमें जीरा और मिर्च डाल देते हैं। भली भाँतिसे सिद्ध होने पर वह नीचे उतार लिया जाता है, इसीको गुलिका कहते हैं।

गुलिकालवण (सं० स्त्री०) गुटिकालवण, साँवर नमक।

गुलिङ्ग (सं०) कुलिङ्ग देखो।

गुलिया (हि० वि०) मह, एक बीजसे निःसृत।

गुली (सं० स्त्री०) गुलः गुडाकारोऽस्त्यस्याः गुल्-अच गौरादित्वात् डीप्। १ गुटिका, गोली, गुमी। २ वसन्त-रोग। वसन्तरोग देखो।

गुलुच्छ (सं० पु०) गुच्छ पयोदगादिवत् माधुः। गुच्छस्त वक।

गुलुच्छकन्द (सं० पु०) गुच्छकन्द।

गुलुच्छ (सं० पु०) गुड क्षिप् गुलं गोलाकारं उच्छगति वध्नाति गुल्-उच्छति-अण्। १ गुच्छ, गुच्छा, वहतुर्मे फलीका मसूह। २ गुच्छकन्द।

गुलुच्छक (सं० पु०) गुल उच्छति गुल्-उच्छ-गण्, ल्। स्तवक, गुच्छ।

गुलुफ (फा०) गुल फ देखो।

गुलुह (सं०) गुद, फ देखो।

गुलू (हि० पु०) १ एक तरहका पेंड जो नेपालकी तराई, बुन्देलखण्ड और बङ्गालके छोटे छोटे पहाड़ों पर और दक्षिण भारत तथा वरमाके जंगलोंमें पाया जाता है। यह २५से ४० हाथ तक ऊँचा होता है, इसमें लम्बे लम्बे पत्ते होते हैं। जाड़ा ऋतुके आते ही इसके समस्त पत्ते नीचे गिर जाते हैं और भाव फाल्गुन मासमें इसमें पुष्प लगते हैं। इसका प्रत्येक अङ्ग औषधमें उप-योगी है। इसकी जड़ और बीजकी गरीब मनुष्य खाते हैं जब यह वृक्ष पुरातन हो जाता तो चार पाँच हाथ लम्बे टुकड़े इसके तनेसे काटे जाते हैं। इसके मध्यमसे सुन्दर रेशा निकलता है जिससे रस्मी तथा कपड़े बनाये जाते हैं। इसके काष्ठसे भाँति भाँतिके खिलीने बनाये जाते हैं। इसी वृक्षसे कतीरा नामका गोंद निकलता है। २ प्रायः एक हाथ लम्बी एक तरहकी मछली। ३ एक प्रकारको बटेर।

गुलूबंद (फा० पु०) १ एक विलग्न चौड़ी कपड़ेको पट्टी। यह सूत, ऊन या रेशमकी बनी होती है, जो सरदीसे बचनेके लिये कानों पर लपेटी जाती है। २ गलेमें पहन-नेका स्त्रियोंका एक आभूषण।

गुलूदा (हि० पु०) मह, एका पका फल, कोलिंदा।

गुले (हि० पु०) उत्तर भारतवर्षमें होनेवाला एक तरहका पेड़। इसके काष्ठ बहुत मजबूत तथा चमकीले

दीते हैं। कोई कोई इसके बीजाँको माला बना कर पढ़ते हैं।

गुलेटन (हि० पु०) मसाला रगडनेका कुरड प्रस्तरका छोटा खगड।

गुलेडगढ—वर्गई प्रान्तके बीजापुर जिलेमें वादाभी तालुक का नगर। यह अक्षां० १६ ३० उ और देशां० ७५ ४० पू०में वादाभीसे ८ मील उत्तर पूर्व पडता है। लोक मर्यादा प्राय १६७८६ है। सूती और रेशमी कपडेका यहाँ काम होता है। इसके पडोसमें पत्थरकी कोमती खाने है। १८६७ ई०की मुनिमपानिटी हुई। १५८० ई०की २५ इब्राहिम खादिलके समय किला बना था। वर्तमान नगर १७०६ ई०की एक सुखे झडकी जगह निर्मित हुआ। १७५० ई०की रास्तिखालोके एक अफम रने उसे लूटा था। १७८७ ई०की टीपू सुल्तानने उसे अधिगत किया। मराठोंके एक बार फिर लूटने पर कुछ दिन तक नगर खाली पडा रहा। परन्तु देसाईने गुलेड गढ दोबारा आवाट किया था। नरसिं हने जब बलवा किया, यह फिर लूटा और खाली हुआ। १८१८ ई०की जनरल मुनरोने देसाई द्वारा अधिवासियोंका लोटनेका प्रलोभन दिया था। १८२६ ई०की गुलेडगढ पर गैरजोंके हाथ लगा।

गुलेराना (म० पु०) १ सुन्दर फूल। २ एक तरहका पुष्प जिसका मधका भाग लाल और ऊपरका भाग पीला होता है।

गुलेल (फा० श्री०) पची मारनेका कमान या धनुष, जिसमें महीके गोलिया चलाई जाती हैं।

गुलेलची (हि० पु०) जो गुलेल चलानेमें निपुण हो।

गुलेला (फा० पु०) १ कमान या धनुषमें चलाए जानेवाले मिट्टीकी गोली जिससे चिडिया प्रभृति मारो जाती है। २ गुलेल।

गुलेदा (हि०) ग दा ६७।

गुलेइ (फा० श्री०) गुडूष।

गुलेठी—गुल्गुलियाके सुन्दरगढ़ जिले और तहसीलका नगर। यह अक्षां० २८ ३५ उ० और देशां० ७७ ४८ पू० कीरठकी मडक पर पडता है। आबादी कोई ७००८ है। यहते है कि यह नगर मियाती या मङ्गनीत राज

पतीका बसाया हुआ है। यहां प्रधानत सैयद और खानिये रहते हैं। कुछ दिन हुए मिहरवां खली नामक सैयदने कई मजान, एक मुल, एक बडी मस्जिद, अरबी और फारसीकी पाठशाला तथा काली नदी तक पकी सडक बना गुलेठीकी बडी उन्नति की। १८५६ ई०की २०वीं धाराके अनुमार गहरका इन्तजाम होता है। व्यापारकी चलफिर रहनेसे लोग मजिमें है।

गुलीर (हि० पु०) वह स्थान जहाँ रस पकानेका भट्टा हो। गुला (हि० पु०) भताकी तरह फैलनेवाला एक तरहका ताड यह सुन्दरवनके पानोंके किनारे, चटगाँव, वरमा आदि देशोंमें पाया जाता है। गोलफल नामके इसके पुरातन फल बहुते बडे बडे होते हैं, ये इतने हलके कि समुद्रमें बहुत दूर तक बहते बहते चले जाते हैं। इसके पत्ते क्यूर बनानेके काममें आते हैं।

गुलुला—वाशियानके निकटवर्ती एक प्राचीन नगर। जङ्गी खाने इस नगरको नष्ट कर दिया। यहां बहुतसे गुहामन्दिर और पहाड काट कर घर बना हुआ है।

गुलुलिया—भारतकी एक जाति। कोई इन्हें वेदिया लोगकी एक शाखा बतलाते हैं। यह पशु पक्षियोंकी मार, नाना प्रकार शीघ्र धार बेश्, भीख माग और बन्दर का नाच दिखला जीविका निर्वाह करते हैं। गयाके गुलुलियोंमें कोई कोई कहता कि कविणो नामकी उनमें एक आदि रमणी रहीं। उन्होंने मोहवाच नामक एक पुत्र प्रसव किया। मोहवाचकी फिर भात लडके हुए। इन्हींमें एक गुलुलिया भो थे। उन्होंने तालके पीडेसे कूद अपने अपने बलकी परीक्षा ली। एक तो फाँट करके निकल गया, परन्तु दूसरा गिर पडा। मोहवाचने यह देख उनको कूद फाँटसे बिरत किया था। गुलुलिया को यह देख सुन करके आत्माभिमान हुआ कि उनके भाइ ताडो बचते फिरते थे। यह आत्मीय स्वजनोका क्रोध बाहर निश्ल पडे उसो रोषमें इनके य गहर नाना स्थानों में घुमा फिरा करते, अपना कोई निदिष्ट वामस्थान नहीं रखते।

गुल्गुलिया रोग अपनेक इन्डू कहते हैं। परन्तु उनके देव देवी भवत्य हैं। परनेके गुल्गुलिया वगैरा यर, राम ठाकुर, जगद माई, बरन, मेही गौरैया, बर्डी,

परमेश्वरी आदिकी पूजा करते हैं। हजारीबागमें पत्थरके एक टुकड़ेको पांच बूँटकी मन्दूर चढ़ा 'दामू' नामसे पूजते हैं।

इनमें बालविवाह प्रचलित है। स्त्रियां बड़ी सचरित्रा होती हैं। व्यभिचार नहीं जैसा है। पुरुष अवस्था-नुसार बहुविवाह कर सकते हैं। पतिके मरने पर विधवा अपने देवरसे विवाह कर लेती है। पञ्चायतसे पूछ लेने पर दूमरे आदमीके साथ शादी करनेमें भी कोई अड़चन नहीं।

यह सृष्ट देहकी भूमिमें गाड़ देते हैं। गोमांस घृणाह समझा जाता है। इनकी स्त्रियां दांतका कीड़ा नकालतीं और वात आदि रोगोंको अच्छा कर सकती हैं।

गुल्मगुलु (सं० पु० गुग्गुलु ।

गुल्फ (सं० पु०) गल्-फक् अकारस्य उकारः । १ पाद-ग्रन्थि । एड़ीके ऊपरकी गाँठ ।

गुल्फजाह (सं० स्त्री०) गुल्फस्य मूलं गुल्फ जाइच् । गुल्फमूल ।

गुल्म (सं० पु०) गुड़ति वेष्टयति, गुड़करणे बाहुलकात् सकतस्य लकारः । १ प्रधान पुरुष वा अधिनायक द्वारा परिचालित सैन्यकी एक संख्या, कोई फौज ।

एक रथ, एक हाथी, पांच पदातिक (पैदल) और तीन घोड़ोंके समुदायको पत्ति कहते हैं। तीन पत्तिका सेनामुख और तीन सेनामुखका एक गुल्म होता है। अर्थात् ८ रथ, ८ हाथी, २७ घोड़ा और ४५ पैदलकी फौजका नाम गुल्म है। (भारत १।२।१८—२०)

२ घट्ट देश, थाना, चौकी, घाटी । ३ चौकी या घाटीकी फौज । ४ रक्षासमूह, सिपाहियोंका बंदा । (मनु ० ११४) ३ श्लिहा, लरफ । एक मूलमें गुच्छाकार उत्पन्न दृणवशेष, जो घास एक ही जड़में गुच्छे जैसी लगती हो । (मनु १।४८) कारणशून्य वृक्ष जाति, पेड़ जिसमें तना न रहे । ७ आड़ी । ८ ग्रन्थिपर्णवृक्ष, गंठ-वन । ९ उदरज रोगविशेष, पेटकी एक बीमारी । (A chronic enlargement of the spleen or glandular enlargement of the abdomen.)

भावप्रकाशके मतमें अनियमित आहार और विहार-

से वायु, पित्त तथा कफ अत्यन्त दूषित हो गुल्मरोग उत्पादन करते हैं। इसका कोई ठिकाना नहीं, पेटमें किस जगह गांठ पड़ेगी। हृदयके नीचेसे वस्ति पर्यन्त कहीं भी गुल्म उठ सकता है। यह गोली जैसा निकलता है।

यह गुल्म रोग प्रधानतः पांच प्रकारका होता है— वातज, पित्तज, कफज, सान्निपातिक और गुल्मविशेष । प्रथमोक्त चार प्रकारका गुल्म तो स्त्री पुरुष दोनोंको ही जाता है, किन्तु शेषोक्त स्त्रियोंको आर्तव रक्त दूषित होनेसे निकलता है। यह पुरुषोंको होना कम सम्भव है। किमीके मतमें पार्श्वहृदय, हृदय, नाभि और वस्ति पाँचों गुल्मस्थान जैसे निर्दिष्ट हैं।

हृदय एवं वस्तिके मध्यस्थलमें भवन्न वा निश्चल गोलाकार गुटिका निकलने और उसके घटते बढ़ते रहनेका नाम गुल्मरोग है।

गुल्म उठनेसे पहले अधिक उद्वेग, मलका कठिनाता, आहारमें अनिच्छा, उदरमें वेदनाके साथ गुड़गुड़ाहट, बलका लाघव, उदराभान, भुक्त द्रव्यका अपाक और शूल हुआ करता है।

सब तरहके गुल्ममें अरुचि, मल एवं मूत्रका कष्टके साथ निर्गम, पेटमें गुड़गुड़ाहट और अधिक उद्वेग होता है।

रक्त अन्न पानीय, विषम भोजन, अतिशय भोजन, बलवान्के साथ युद्ध प्रभृति विरुद्ध चेष्टा, मलमूत्रादिके वेगधारण, शोकप्रयुक्त मनःक्षोभ, विरचन आदि द्वारा अत्यन्त मल क्षय और उपवाससे वायु कुपित हो वातज गुल्मरोग उत्पन्न करता है। यह कभी कभी घटता बढ़ता, गोल या लम्बा पड़ता और पार्श्व आदि वा नाभिदेश पहुँचता है। उसमें जब तब वेदना भी होती है। मल और वायु तथा अधोवायुको वह रोकता और गले या मुँहको सुखाता है। शरीर काला और सुखं पड़ जाता, शीतज्वर आता और हृदय, कुच्छि, पार्श्व, अङ्ग तथा शिरोदेशमें वेदनाका प्राबल्य दिखलाता है। भुक्तान्न जीर्ण होनेसे वह बढ़ता और भोजन करनेसे कितनाही अच्छा रहता है। रक्त, कषाय, तिक्त तथा कटुरसयुक्त द्रव्य सेवनसे उसको वृद्धि होती है।

कटु, अम्लरसयुक्त, तीक्ष्ण, उष्ण, विदाही तथा रुच द्रव्य सेवन, क्रोध, अतिरिक्त मद्यपान, रोद्ध एव अग्निके उत्थाप, लगुह आदिके अभिघात, आम अर्थात् विदग्ध अजीर्ण और किसी भी दूसरे कारणसे रक्त विगडने पर पित्तज गुल्म उठता है। पित्तजय गुल्मरोगमें ज्वर, पिपासा, शरीरकी अवसन्नता एव रक्तवर्णता, घम उद्गम और भुक्त द्रव्यकी परिपाक अवस्थामें अतिशय वेदना होती है। यह व्रण जैसा दाहयुक्त और स्पर्शासह भी रहता है।

श्रोतल, शुक्र एव स्निग्ध द्रव्य सेवन, तृप्ति पूर्वक परिप्राण भोजन और दिवा निद्रामें शैथिल्य गुल्म निकलता है। घातज, पित्तज तथा श्लेष्मिक गुल्मके जो कारण कहे गये हैं, उनके समुदायसे मान्निपातिक गुल्मकी उत्पत्ति है।

श्लेष्मिक गुल्ममें रोगीजो ममभ पडता, मानो उमके मारे शरीरमें कीड़े तर कपडा लिपटा है। श्रोतज्वर, देहका भारीपन तथा अवसन्नता, वमन उद्वेग, खासी अरुचि, अग्निमान्द्य और थोडा दर्द, प्रकृति अपरापर समस्त श्लेष्मज लक्षण देख पडते हैं।

मान्निपातिक गुल्म पत्यरके टुकड़े जैसा कडा और उठा हुआ रहता है। उसमें बहुत पीडा और जलन होती है। शीघ्र विदाह, मनको व्याकुलता, शरीरका दुबलापन अग्निवैषम्य और कमजोरी आ जाती है। यह असाधारण है।

नवप्रसूता (प्रसवके बाद तिसके अग्नि, वल, वर्ण, आम आदि स्वाभाविक नहीं होता), आमगर्भ प्रसवा (नो महीने पूर्व ज्ञानसे पहने ही जो प्रसव करती है) और ऋतुमतो श्री यदि किसी प्रकार अहितजनक द्रव्य भोजन कर नेतो उसका वायु रक्तद्वारा गर्भाशयमें गुटिकाकार गुल्मरोग उत्पन्न करता है। उसमें जनन और दर्द होता है। लक्षण लगभग पित्तके गुल्म जैसा है। मिथाइमके रक्तज गुल्ममें गर्भके समस्त लक्षण अर्थात् ऋतु न होना, मुद् पीना पडना, स्तनके चप्र भागका कालापन और दोहद प्रभति देख पडते हैं। परन्तु गर्भसे हस्तादि चद्र प्रत्यङ्ग सञ्चालनपुषक नि गुल्म स्पष्टित होता है, रक्तज गुल्म यैसा नहीं करता। यह गुल्म या रक्त

पित्त बहत दिन बाद वेदनाके साथ गर्भाशयमें स्थित होता है। दश मास वीत जाने पर वैद्यको उसकी चिकित्सा छोड देना चाहिये।

जो गुल्म पत्यरके टुकड़े जैसा कडा, ऊँचा, वेदना तथा दाहयुक्त और मनकी व्याकुलता, शरीरकी ह्यता, अग्निवैषम्य एव बल ह्राम करनेवाला ही, असाधारण ममभा जाता है। वह गुल्म भी असाधारण है, जो क्रमान्वयसे मद्धित ही सारे घेठमें व्याप्त होता, धास्वन्तरके साथ मिल करके शिराजालमें लिपटता एव कङ्कणकी तरह उठता और रोगीको दुर्बलता, अरुचि, ह्राम, खासी, कै, र्नानि, बुखार, ध्याम, तन्द्रा तथा प्रतिश्याय उत्पन्न करता है।

गुल्मरोगीको बुखार, दमा, कै और दस्त तथा दिन, तीद, हाथ एव पावमें शोध होनेसे फिर जीनेकी आशा नहीं रहती। जिस गुल्मरोगीको दमा, शूल, अवका विक्षेप और दोर्बल्य उपस्थित होता तथा शत्रि जैसा गुल्म एकाएक विलुप्त हो जाता उसने भी जीनेकी उम्मेद कम होती है।

वातजन्य गुल्म रोगमें जुलाबके लिये रेडीका तेल या दूधके साथ हरे पीना और चिकना भपारा लेना चाहिए। मञ्जीवार ५ मापा, कुट २ मापा और केवडेकी बीका चार ४ मासा रेडीके तेलमें मिला करके पीनेसे वातज गुल्म विनष्ट होता है। वात गुल्मके रोगीको तीतर, मोर, मुर्गा, बगना और वर्तक पचीके मांसका रसा, घी, शालि चायलका भात और शराव देते हैं।

पित्तज गुल्ममें विरेचनके लिये त्रिफलाके त्वायमें त्रिहृत् चुण अथवा शरर और शहदके साथ कामला गुडीका चूर्ण सेवन करना चाहिये। दाह या गुठके साथ हर खानिसे पित्तज गुल्म दब जाता है। वातज गुल्मके जो औषध घतनाया गयी हैं, श्लेष्मिक गुल्ममें भी प्रयोज्य हैं। कफप्र क्रियासे भी उसका उपग्रम होता है।

हींग, पीपल, धनिया, जोरा, वच, चोत, चाकनादि, शरो अरु वंतेम, फामुद्रनवण, यिटनवण, मैश्व, त्रिकट, ययचार, सर्जिचार, अनार, हर, पुकरसूत, पैवड, हनुवा और जाना जोरा मयका बगदर बराबर

चूर्ण ले करके अदरकके रसमें सात तथा विजोरे नीबूके अर्कमें सात दिन भावना दे सर्वे गर्म पानीके साथ खाने पर गुल्मरोग मिट जाता है।

वातज प्रकृति तीन गुल्मोंकी जो चिकित्सा बतलायी है, बुद्धिमान् चिकित्सकको विवेचनाके साथ उमोसे और त्रिदोषनाशक क्रिया द्वारा भी सान्निपातिक गुल्ममें काम लेना चाहिये।

सामुद्रलवण, सैन्धव, काचलवण, यवचार, सौवर्चल, सोहागीकी फुली और खर्जिका चार सबका चूर्ण सम-भागमें ले मनसासिजके चारसे तीन और आकन्दके चारसे भी तीन दिन भावना दे करके धूपमें सुखाते हैं। फिर आकन्दके पत्तेसे इसको लपेट करके एक वर्तनमें रख छोड़ा जाता है। वर्तनका मुँह अच्छी तरह बन्द करके लना आग पर उसको पकाते हैं। चार बन जाने पर इसे उतार जीरा और चीत बराबर बराबर ले समस्त चूर्ण जितना पूर्वोक्त चार होता, एकत्र मिला पानीके साथ एक एक तोला सेवन करनेसे गुल्मका उपशम होता है।

गुल्मरोगीके पक्षमें सूखा मांस, मूली, मछली, सूखी सजी, दाल, मौठा फल और आलू अनिष्टकारी है। आरोग्य कामना करनेवालेको उन सबका खाना सर्वथा ही छोड़ देना चाहिए।

सुश्रुत टीकाकारके मतमें वैदल निषिद्ध जैसा उल्लिखित होते भी उड़द और करधीको बुरा नहीं समझते।

रक्त गुल्मरोगमें प्रथमतः स्निग्ध स्वेद, उसके बाद विरेचन प्रदान करना चाहिये। शुल्फा, जंगली करौंदेकी छाल, देवदारु, ब्रह्मयष्टि और पीपल सब सम-भागमें पौस तिलके काढ़े में पीनेसे रक्तगुल्मनिवारण होता है। तिलके काथमें गुड़, त्रिकटु, घृत तथा ब्राह्मणयष्टि डाल करके पीनेसे आतं व रक्तजन्य और रजोबन्ध भी अच्छा हो जाता है। आंवलेका रस मिर्चका चूर्ण मिला करके पान करनेसे रक्त गुल्म मिटता है। रक्त गुल्मके रोगीको कमलागुड़िका चूर्ण शकर और शहदके साथ खिलाना चाहिये। पलासका चार पानीके साथ घी पका करके पीनेसे रक्तगुल्ममें रक्तस्त्राव होता है। यवचार,

त्रिकटु और घृत एकत्र पान करनेसे रक्त गुल्म नहीं रहता। (भावप्रकाश)

सुश्रुतके मतमें लहसुनका अर्क, पञ्चमूलीका रस, शराव-काजी, टन्नी और मूलीका रस सबके योगमें घृत पाक करना चाहिये। फिर इसमें त्रिकटु, टाडिपत्र, आम्ना-तक, पामानी, चीत, सैन्धव, हिङ्गु, अश्ववेतस और कृष्णाजौरक कई द्रव्योंका कल्क पाक करते हैं। इसके सेवनसे अम्लरोग अच्छा हो जाता है।

गुल्मक (सं० पु०) रक्तकारवीर वृक्ष।

गुल्मकालानल रस (सं० पु०) गुल्मस्य कालानल इव नाशको रसः। गुल्मरोगकी औषध। पारा, लौह ताम्र, हरिताल, गन्धक, यवचार, प्रत्येकके दो दो तोले, मोथा, मिर्च, सोंठ, पीपल, गजपीपल, हरीतकी (हरड़), वच, कूड़, प्रत्येकके चूर्णका एक एक तोला, इन सबको अच्छी तरह मिलाकर पितपापडा, मोथा, सोंठ, अपामार्ग और परवल इनके रसके साथ चार चर हरीतकी कायके साथ चार रत्ती परिमाण प्रत्येक दिन सेवन करना चाहिये। इसी औषधका नाम गुल्मकालानलरस है। इसके सेवन करनेसे वातिक, पित्तज, श्लेष्मिक, इन्धज और त्रिदोषज गुल्मरोग नष्ट होते हैं। वातगुल्ममें यह बहुत उपकारी है। (रसेन्द्रसारसंग्रह)

गुल्मकेतु (सं० पु०) गुल्मः केतुरस्य, बहुव्री०। अश्व-वेतस। एक तरहका वेंत, सरकण्डा।

गुल्मकेश (सं० पु०) गुल्मकानां गुल्मानामीशः, इतत्।

गुल्मका अधीश्वर, वह जिसके अधीन गुल्म रहे।

गुल्मगवेधुका (सं० स्त्री०) १ गवेधुका। २ देवधान्य, एक तरहकी घास (Coixbarbata)

गुल्मघ्न (सं० स्त्री०) हिङ्गु, हींग (Ferula asafoetida)

गुल्ममूल (सं० स्त्री०) गुल्म इव मूलं यस्य, बहुव्री०। आर्द्रक, अदरक,।

गुल्मवज्रिणीवटिका (सं० स्त्री०) रसेन्द्रसारसंग्रहोक्त एक तरहकी औषध। पारा, गन्धक, ताँबा, काँसा, सोहागा, हरिताल प्रत्येकके आठ तोलिको चूर्ण करके शरीरके अवस्थानुसार सेवन करना चाहिये। इसीका नाम गुल्म-वज्रिणीवटिका है। इसके सेवन करनेसे रक्तगुल्म, पीह,

घघोना, यक्षत्, आनाह, कामला, पाण्डु, ल्वर और गुल्म नाश होते हैं।

गुल्मवह्नी (स स्त्री०) गुल्म मप्रधाना वह्नी । सोमलता । गुल्मगार्दूलरस (स० पु०) गुल्म मध्य गार्दूल इव नाशको रस । एक तरहकी शोषध । पारा, गन्धक लौह, गुग्गुलु, पोपल, त्रिष्टु वाना सोठ, जीरा, धनिया और शर्ठी प्रत्येकके आठतोले और जयपालके बारह तोले ममों को एकत्र करके छतके साथ मर्दन कर ६ रस्ती परिमाण की गोली बनाते हैं । इसीको गुल्मगार्दूलरस कहते हैं । अदरकके रस और उष्ण जलके साथ यदि उक्त शोषध सेवन को प्राय तो प्रोहा, यक्षत्, गुल्म, कामला, उदरी, शोथ, वातिक, पित्तिक, तथा शैथिलिक गुल्म नाश होते हैं । रक्तज गुल्मरोग भी इससे दूर हो जाता है । गहना नन्दनाथ नामक क्रिमो योगीने इस शोषधका आविष्कार किया था । (रसे ० धार०)

गुल्मगुल् (स० पु०) गुल्म मसूलक शूलमव । शूलरोग-विशेष । यन् देवा ।

गुल्मिक (स० पु०) रक्तकरवीर, एक तरहका लालकनैर । गुल्मिन् (स० त्रि०) गुल्मोऽस्यस्या गुल्म इति । गुल्मरोगयुक्त, जिसकी गुल्मरोग हुआ हो ।

गुल्मिनो (स० स्त्री०) गुल्मोऽस्त्वस्या गुल्म इति तत् डोप । विरुद्धता नता, लक्ष्मी नता । इसका नामा नार—बोरत्, उत्रप, विरुधा, अवर्त्तु है ।

गुल्मी (स० स्त्री०) गुल्मोऽस्त्वस्य गुल्म अर्ग आदित्वात् अच् ततो गौरादित्वात् डोप । १ आमलकी, आवला । २ इनायची । ३ वस्त्रनिर्मित रूह, तम्बू, खिमा । ४ फलवृक्षविशेष हरफरी । ५ रूढनखी वृक्ष । ६ कण्टकपालीवृक्ष, जिजा गरनाका पेड़ ।

गुल्मुहग्रद र्या—द्वित्रीक एक राजकवि । इनके बनाये हुए ग्रन्थोंमें 'जस्र उच सुयाचिन नामक काव्य अन्य दो स्वर्षिणा उत्कृष्ट हैं । कवितार्क प्रभावमें इसे "नातिक" को उपाधि मिली थी । १८४८ ई०को इनका देहान्त हुआ ।

गुल्म (स० त्रि०) गुड तद्वत् रस अर्हति गुड यत् उष्ण मत्व । मधुर मीठा

गुल्मिह—शोषधके उभाव जिनानाम्त एक नगर । यह

अथा० २६ २४ उ० आर देशा० ८१ १' पू०में अवस्थित है । प्राय पाँच सा वर्ष पहले गुल्मरसि ह ठाकुरसे यह नगर स्थापित किया गया था । यहां एक विद्यालय है । जिममें गर्वमें ठसे भी कुछ सहायता मिलती है ।

गुल्मर (हि० पु०) दैनिक प्राय रखनेका सन्दूक या बैली । गुल्मर (हि० पु०) गुल्मरधकी ।

गुल्मर—रिचोर्डमें रहनेवाली एक जाति । इनमें श्रद्धवी गुल्मर और गद्दा गुल्मर ये ही दोनी विभाग स्वतन्त्र हैं । इनके सिवा कई एक विभाग और भी देखे जाते हैं । ये हैदराबाद और पृना जिलेके ग्रामसमूहमें तथा कुल वर्गके निकटवर्ती मैलर ग्राममें रहते हैं । ये अपनेकी 'गोल' या 'इनमगोल' कहते हैं ।

श्रद्धवी गुल्मर जातिके पुरुष ग्राम तथा वनके नाना स्थानोंमें जा कर देशीय कविराजोंके लिये फल फूल एवं शोषधकी लता लाया करते हैं, और उनकी रित्रया घर घर भिचा भागतो फिरती हैं । इनकी शारीरिक गठन प्रणाली राजपूतानावासिगोंके मध्य है, शरीरका वर्ण भी तदनुसृत है, किन्तु ये उनसे पतले तथा छोटे होते हैं । ये हिन्दी, कााडी और तेलगु भाषा समझ तथा बोल सकते हैं । ये अपने वस्त्रको गेरू मटोमें रंगा कर पहनते हैं, और भेड़, छाग, खरगोश तथा गोमामके भिष अनाहार जन्तुओंका मांस भक्षण करते हैं । यैद जातिको नाईं ये भी कट्टएका माम खाते हैं । गद्दागुल्मर जातिके साथ ये अपने पुत्र वा कनयाका विवाह नहीं करते ।

गद्दा गुल्मर जातिके मनुष्य कुत्ते तथा गदहे पालते और शिकारके लिये वन वन घूमते हैं । ये शृगाल, ककू, शक्य या खरमुस्तका मांस खाते हैं । पुरुषगण चौर्य एवं दम्बुर्वात्तमें पटु हैं ।

गुन्ना (हि० पु०) १ गुनेलमें फेकनेकी महीकी यनी गोली । २ एक तरहको मिठाई, रसगुन्ना ।

(स० पु०) १ ऊँचा गुण्ड । गेरू, हल्का । ४ इरफा कटा हुआ छोटा टुकड़ा, ग डेरी, गाँड़ा । ५ पानी लींच नके लोटेकी रग्गीमें बंधो चूई छोटा लकड़ी । ६ नैनो-ताममें मिलनेवाला एक पहाडी पेड़ । इसकी लकड़ी सुगंधित, हलकी और भूरे रंगकी होती है । ७ गोटा पहा इननेवालोंका एक डोरा । इसके दोनी मिराँ पर भर

कांटेकी लकड़ी लगी रहती है। ८ डेढ़ बालिश लम्बो लोहेकी छड़ जो रुई ओटनेकी चरखीमें लगी रहती है।

गुल्सानी—एक सुसलमान कवि। इनका यथार्थ नाम शेख मैयद उल्ला था। ये गुजरातराजमंली इस्लाम खाँके वंशधर और शाहगुलके शिष्य थे। ये सर्वदा दरवेग रूपमें भ्रमण करते एवं 'गुल्सन कवि' से मशहूर थे। इन्होंने दिल्लीमें रहकर १००००० गजल रचना की थी। इनकी कवितायें गूढ़ार्थक होती थीं। ये अपने शिष्या-गुरु शाह अबदुल आहद सरहिन्दके साथ मक्का तीर्थस्थान गये थे। ११४१ हिजरीको दिल्ली नगरमें इनकी मृत्यु हुई।

गुल्लाला (फा० पु०) एक तरहका लाल पुष्प। इसके तीन्हे और पुष्प पौधोंके पौधे और पुष्पके जैसे होते हैं।

गुली (हि० स्त्री०) १ बीज। फलकी, गुठली। २ महुवेकी गुठली। ३ गोलाकार लंबोतरा छोटा टुकड़ा।

४ छोटे छोटे लड़कोंके खेल खेलनेका काठका टुकड़ा। यह चारसे छः अंगुल लम्बा होता है। इसके दोनों छोर जीकी तरह नुकीले होते हैं और गोल तथा मोटा होता है, अंटी। ५ पत्तेका मधुयुक्त स्थान। ६ केतकी, केवड़ेका फूल। ७ दाने निकाले हुए मकई की बाल। ८ एक प्रकारकी मैना, गंगा मैना। ९ ईखका काटा हुआ टुकड़ा, गाँड़ा। १० छोटा गोल पासा।

गुवाक (स० पु०) गुवति मलवत् कायमुत्सृजति गु आ क। १ सुपारीका वृक्ष। इसका पर्याय—छोटा, पूग, क्रमुक, खपुर, गूवाक, पूगवृक्ष, दीर्घपादप, वल्कतरु, दड़-वल्क, चिकण, पूगी, सुरञ्जन, गोपटल, राजताल और छोटे फल है। इसके फलका नाम क्रमुकफल पूग, चिकणी, झकक, उद्देग, पूगफल और पूगीफलन है। इसके शीर्ष भागका गुण—स्वादु, तिक्त, कषाय, बल, प्राण, शुक्रवृद्धि, भेद और मदकारक एवं सूत्ररोग नाशक है। इसके निर्यासका गुण—शीतल, मोहकद गुरु, उष्ण, चार, कृक कृक अस्तरस, वातघ्न और पित्तवृद्धिकर है। इसके फलका गुण—गुरु, शीतवीर्य, रूच, कषाय, कफघ्न, पित्तनाशक, मदकारक, अग्निवृद्धिकर, रुचिकारक एवं मुखका विरसतानाशक है। अपरिपक्व सुपारीका गुण—गुरु,

अभिपन्दी एवं अग्नि और दृष्टिनाशक है। सिद्ध की हुई सुपारी खानेमें त्रिदोष नाश होता है। भिषग्शास्त्रका मत है कि जिस फलका मध्यभाग कठिन होता है वही फल अष्ट है। (भावप्रकाश)

राजनिघण्टुके मतसे कच्ची सुपारीका गुण—कषाय, सुखमल, रक्ताभ्रशेषा, पित्त और उदराधान नाशक, कण्ठशुद्धिकारक और सारक है। सुपारीका गुण—कण्ठरोग-नाशक, रुचिकारक, पाचन और उच्चक है, पानके साथ सुपारीका गुण पाण्डु, वात और शोथकारक है। राजवल्लभके मतसे इसकी पीकका गुण—पहली पीक विपतुल्य, दूसरी भेदक और गुरुपाक तथा तीसरी पाण्डुकुतूहल

डाक्टर मर्ट साहबका कहना है कि सुपारीका जूरा १०से १५ ग्रेण मात्रामें व्यवहार करनेमें दुर्बल मनुष्यका उदरामय अच्छा हो जाता है। मोरिंग साहबने परीक्षा कर देखा है कि सुपारीमें टैनिन और गैलिक एसिडका भाग ही अधिक है (Journ. de Pharm. Vol VIII po 449) एसियाके प्रायः समस्तदेशोंमें यह प्रचलित है सुपारी वृक्षका मध्यभाग शून्य है, यह तृक्सार जातीय लणमध्यमें गिना जाता है। सुपारीका वृक्ष ४० से ५० हाथका लम्बा देखा गया है। अग्रहायण या पौष मासमें इसको मुकुल (कली) बाहर निकलती है और चैत्र वैशाख मासमें फल लगते हैं। तथा अश्विन कार्तिक मासमें ये फल पक जाते हैं। थोड़े देशोंके मनुष्य सुपारी फलके किल्लेकी अलग कर उसे पतले पतले खण्डोंमें काटते और पानके साथ खाते हैं। बङ्गालमें चार तरहकी सुपारी देखी जाती हैं। पहली 'देशाल' जो देखनेमें बड़ी और काटने पर मध्यभाग शुभ्रवर्ण सी होती, दूसरी 'भेटल' जो 'देशाल' सी होती और तीसरी चिकणी जो देखनेमें बहुत छोटी होती है। कोई कोई कहते हैं कि अपक फलको शुक करने पर चिकणी सुपारी बनती है चौथी 'रामपुग' जो इस देशमें नहीं होती है। यह सुपारी दक्षिण और पश्चिम प्रदेशमें पायी जाती है। एक तरहकी सुपारी और है जो दक्षिणसे इस देशमें लायी जाती है और जहाजी सुपारी कहलाती है।

गुवार (हिं० पु०) ग्वाल देखो।

गुवारपाठा (हि० पु०) श्वारपाठा १००।

गुवारिच—अयोध्यामें गोण्ड जिलेके अन्तर्गत एक परगना इसके उत्तरमें तीहि नदी और गोण्डपरगना, पूर्वमें दिग्गार परगना, दक्षिणमें घघरा नदी एवं पश्चिममें कुरार परगना है। यहां राजपूत राजाओंके सेनानायक सुहलदेवने १०३२ ई०को मुसलमान विजिता सैयद सालर, मुमाउदकी पराजित कर देशसे बहिष्कृत कर दिया था। घोडे समयके बाद यह परगना गोडराज्यके रामगढ गौडिया परगनेमें मिलाया गया। वर्तमान गोण्ड, वस्ती और गोरखपुर प्राचीन गोडराज्यके अन्तर्गत थे। गण्य १०।

इस परगनेमें बहुतमी नदिया और छोटे छोटे स्रोत उत्तर पश्चिमसे दक्षिण पूर्व मुख हो कर प्रवाहित हैं। इस लिये भूमिका निम्नतर प्रदेश उर्वरा है। भूपरिमाण २६७ वर्ग मील या १७०८६२ एकड़ है। जिनमेंसे ८८१ ४२ एकड़ जमीनमें फसल होती है।

गुमन (हि० पु०) गुप्त १००।

गुमाई—वैष्णव सम्प्रदाय विशेष। यह स स्तुत गोस्वामी श्रुतका अपभ्रंश है। इन्द्रिय जय करनेवाले का ही नाम गोस्वामी वा गुमाई है। भारतके सब प्रधान पुण्यस्थानों, तीर्थस्थानों और बड़े नगरोंमें गुमाइयोंके भठ या अखाड़े देख पड़ते हैं। इनके चिरदिन अविवाहित वा मसार निर्निग्रह रचनेकी बात है। परन्तु आजकल उस नियमका काम स्थान रखते हैं। अखाड़ोंके महन्त विवाह नहीं करते। दाक्षिणात्यके गुमाई पृथक्जाति बन गये हैं। वह सब वर्षोंके लोगांको कुछ रुपया पाने पर अपने दानमें मिला सकते हैं। महाराष्ट्रकी माधोजी सेधियाके अश्वत्थ कान्ठी उन्होंने अस्त्रधारण किया था। पेशवाके पास गुमाइयोंकी बहुत फौज रहीं। मालगपरि वर्तन द्वारा ही उनका विवाहकार्य सम्पन्न होता है। बङ्गालके गोसाई कण्ठी और दाक्षिणात्यवान् रुद्राक्ष पहनते हैं। गिवाओ "श्री सौंडम्" मन्त्रकी टीला दी जाती है। इनमें जाति भेदकी खटपट नहीं है।

गुमाई आनन्दकृष्ण ब्राह्मण,—एक प्रसिद्ध कवि और पण्डित। इहाँसे फारसी भाषामें ४००० श्लोकोंमें सप्त

काण्ड रामायण, १२००० श्लोकोंमें मत्स्यपुराण और मिता

चरका फारसी अनुवाद किया है। इन्होंने अपने अनुवादमें दस प्रकारसे अपना परिचय दिया है—शाहजहानावादमें उनका जन्म हुआ था। १८३५ संवत्तमें ये काशी गये थे। १८४७ सालमें इन्होंने जोनाथन डब्लु म्हाडवके अनुरोधसे रामायणका अनुवाद किया था।

गुमाईकवि,—राजपूतानेके एक प्रसिद्ध कवि। इनके दोहों का राजपूतों में बड़ा आदर है।

गुमाईगञ्ज—लखनऊ जिलेका एक नगर। यह अमेठी टीनगुरनगरसे ३ माइल दक्षिणपश्चिममें है और लखनऊसे सुलतानपुर जानेके रास्तेमें पड़ता है। हिन्दातगिरि गुमाईने १७५४ई०में यह नगर बसाया था। यहाँ मिथी से बने हुए एक बड़े किलेका पक्ष सावशेष अब भी मौजूद है। यहाँके लोग एक प्राचीन मूर्त्तिको चतुर्भुज देवी मान कर उसको पूजा करते हैं।

उक्त राजा १००० अश्वारोही राजपूत सेनाके नायक थे और सैन्यके वीरन स्वरूपमें अमेठी परगनाके जागीरदार हो गए थे। एक समयमें उनका खूब बल था। कच्छर युद्धके बाद नवाब सूजा उहोलाने अङ्गरेजोंके डरके मारे इनसे आश्रय चाहा था। इन्होंने आश्रय नहीं दिया। बादमें नवाब और अङ्गरेजोंमें जब मन्धि हो गई तब इनको भाग कर अपनी जन्मभूमि हरिद्वारसे जाना हो पड़ा। वहाँ उन्होंने अङ्गरेजोंके एक छोटीसी जागीर पाई थी।

यह नगर बड़ा साफ सुथरा है। रास्ता आदिके साथ करणमें जो खर्च होता है, वह प्रत्येक घरसे कर स्वरूप कुछ कुछ ले लिया जाता है। कामपुर और लखनऊ तक समान रास्ता होनेसे, यहाका रजगार अच्छा चलता है। यहाकी अधिष्ठात्री देवीके उत्सवके उपलक्ष्यमें सालमें दो बार मेला लगता है। इस मेलेमें करीब पाँच सप्त हजार आदिमियोंकी भीड़ होती है।

गुसा (अ० पु०) गुप्त १००।

गुस्ताख (फा० वि०) छटा, टीठ, बडोंका मद्धोच न रखनेवाला।

गुस्ताखी (फा० स्त्री०) छटता, ठिठाई, अगिष्टता, भटवी।

गुप्त (अ० पु०) खान।

गुह्यखाना (अ० पु०) स्नानागार, नहानेका घर ।

गुह्या (अ० पु०) क्रोध, कोप, रिस ।

गुह्यल (अ० वि०) चिड़चिड़ाहा, जिसको छोटीसी बातमें क्रोध आ जाय ।

गुह्याण—शक जातिकी एक शाखा । किसो किसोका मत है कि महाराज कनिष्क इसी जातिके थे । कनिष्क देखो ।

गुष्टि (सं० स्त्री०) गाम्भारी वृक्ष, गम्भारका पेड़ ।

गुष्पित (सं० स्त्री०) गुम्फ भावे त् निपातनात् मकारस्य प्रकारः । १ निर्गत शाखा, निकली हुई डाली । २ गुम्फन-वृक्षके शाखादि निर्गम, गुम्फन पेड़की डालियोंका निकालना ।

गुह (सं० पु०) गुहति रक्षति देवसेनां गुह-क । १ कार्त्तिकेय, पार्वतीके पुत्र । इन्होंने देवसेनाको रक्षा की थी और ये गुह या कन्दरामें रहते थे । इन्हीं दोनों कारणों से इनका नाम गुह पड़ा । २ अश्व, घोड़ा । ३ परमेश्वर । ४ मृङ्गवेरपुरके अधीश्वर एक चण्डाल जातीय राजा । महाराज रामचन्द्रजीके साथ इन्होंने मित्रता की थी । यह अतिशय धर्मपरायण और मित्रप्रिय रहे । ५ बङ्गाली कायस्थगणोंकी एक उपाधि । ६ सिंहपुच्छी लता, पिठवन । ७ शालपर्णी, सरिवन । ८ बुद्ध । ९ गुफा, कंदरा । १० हृदय । ११ माया । १२ मेढा ।

गुहक (सं० पु०) निषादराज, रामचन्द्रके मित्र ।

गुहगुम (सं० पु०) एक बोधिसत्व ।

गुहचन्द्र (सं० पु०) एक वणिकपुत्र । कथासरित्सागरमें इनकी कथा वर्णित है । ये धर्मगुप्तकी कन्या सोमप्रभाकी देखकर उन्मत्त हो गये थे ; फिर अनेक चेष्टा और कष्टके बाद उन्हें प्राप्त किया था । सोमप्रभा देखो ।

गुहड़ा (हिं० पु०) चतुष्पद जन्तुका एक रोग । इसमें पशुके मुखसे लार निःसृत होता है और शरीर गर्म हो जाता है एवं चलनेके समयमें वह लड़ड़ाता है ।

गुहदवद्य (वै० त्रि०) प्रच्छन्नावद्य । (चक्र-१११५)

गुहदेव—एक प्राचीन पण्डित । देवराजने इनका वैद-भाष्य और शोनिवासदेवने इनका वैदान्तिक मत उद्धृत किया है ।

गुहर (सं० त्रि०) गुहेन निर्वृत्तः गुह अश्मादित्वात् र । गुह द्वारा निर्वृत्त, सम्पादित ।

गुहराज (सं० पु०) प्रामादविशेष । महल जिसका विस्तार १६ हाथका होता है । प्रामाद देखो ।

गुहराना (हिं० क्रि०) पुकारना, चिन्नाकर बुलाना ।

गुहलु (सं० पु०) गोत्रप्रवृत्त क एक ऋषि ।

गुहल्ल—गोपकपुरके कदम्बरराजगणोंके आदि पुरुष ।

गुहवाना (हिं० क्रि०) गुंघवाना, गुहनेका काम करना ।

गुहशिव—कलिङ्गके एक राजा ।

गुहपट्टी (सं० स्त्री०) गुहप्रिया पट्टी, मध्यपटला० अथ-हायन मासकी शुक्ल छठ । यह कार्त्तिकेयकी जन्म तिथि मानी जाती है । कदम्बछो देखो ।

गुहसेन (सं० पु०) १ वलभीके एक पराक्रान्त महाराज । ये महाराज धरपट्टके पुत्र थे । इनके चलाये हुए २४६, २४७ और २४८ गुम-वलभी सम्बन्धित तीन अनुशासनपत्र पाये गये हैं । वलभी राजवंश देखो ।

२ ताम्रलिङ्गनिवासी वसुदत्त नामक एक विख्यात वणिकके पुत्र । इनकी स्त्रीका नाम देवस्मिता था । इनका दाम्पत्य-प्रेम ऐसा प्रबल था कि गुहसेन एक क्षण भी स्त्रीको छोड़कर कहीं जा नहीं सकते थे । देवस्मिता भी उनको देखे बिना एक क्षण भी रह न सकती थी । गुहसेनके पिताकी मृत्युके बाद उन्हें कटाहद्वीपमें वाणिज्य करनेके लिये जाना पड़ा । संयोग वश उन दोनोंने एक दिन दो कमलके फूल पाये । फूलोंमें विशेष गुण यह था कि यदि दो व्यक्तियोंमेंसे किसी एकका भ्रष्ट हो जाय तो दूसरेके हाथका कमल मलिन हो जाता । गुहसेन अत्यन्त कष्टसे देवस्मिताको परित्याग कर वाणिज्यके लिये चले । कटाहद्वीपमें पहुँचकर वे वाणिज्य करने लगे । एक दिन वहाँके वणिककुमारोंने उस कमलके फूलका रहस्य-प्रकाश करनेके लिये उन्हें कोई भादक वस्तु खिला दी । बाद उसका रहस्य जानने और देवस्मिताका चरित्र दूषित करनेके लिये उनमेंसे चार वणिककुमार ताम्रलिङ्गकी और रवाना हुए । यहाँ पहुँचकर उन्होंने योगकरण्डिका नामको एक परिव्राजिकाकी शरण ली । योगकरण्डिकाके सिद्धिकरी नामकी एक शिष्या (चेली) थी । वह अपनी शिष्याको साथ लेकर देवस्मिताके निकट पहुँची और उसे परपुरुषमें आसक्त होनेको यथेष्ट चेष्टा करने लगी । बुद्धिमती देवस्मिता

जान गई कि कोई उसके स्वामीके हस्तस्थित कर्मलका रहस्य जानकर उसका सर्वनाश करनेमें उद्यत हुआ है। इस लिये उस पापाग्रयकी उपयुक्त दण्ड देनेका विचार कर उसने अपनी दासीकी बुलाया और उसे धतुरा मिला हुआ शराव तथा कुत्तेके पद चिह्नयुक्त एक मोहर सपन्न करनेकी आज्ञा दी। बाद उसने योगकरण्डिकाकी उसके पास एक बणिक्कुमार भेज देनेके लिये कहा। परिव्राजिकाके कथनानुसार एक बणिक्कुमार देवस्मिताके प्रेममें आमत्त हो मद्धतस्थान पर उपस्थित हुआ। उस स्थान पर देवस्मिताका वेश शरण कर उसकी दासी बणिक्कुमारकी अपेक्षा कर रही थी। उसके मायाबलसे वह बणिक्कुमार धतुरा मित्यत शराव पीकर भ्रष्ट हो पड़ा। अन्तमें दासोने उस कुत्तेके पद चिह्न युक्त मोहरकी तपाकर उसके कपालमें छाप दे दी और पासके किसी पानोके गड़ेमें फेंक दी। इसी तरहसे एक एक कर चारों कुमार अपने कर्मका उपयुक्त दण्ड पाकर स्वदेशकी लौट आये, परन्तु किसीने यह गुप्त रहस्य दूसरेके सामने प्रकट न किया।

इसके दोडे समयके बाद ही देवस्मिताने परिव्राजिका और उसको गिथाको भी उसी तरह भ्रष्ट कर उनकी नाक और कान फाट करके उसी जगह फेंक दी। बाद देवस्मिताने सोचा कि सायद बणिक्कुमार उसके पति का कोई अनिष्ट भी न कर डाले इसी भयसे वह बणिक्वेशमें काटाहड़ीपीओ रवाना हुई। वहाँ पहुँच कर उसने राजासे कहा, "धर्मावतार। मेरे चार भृत्य यहाँ भाग आये हैं, अतः उन्हें मुझे प्रत्यर्पण करनेकी कृपा करें।" राजाने कर्मचारियोंसे उन भृत्योंका अनुसन्धान करनेकी आज्ञा दी। देवस्मिताने उन चार बणिक्कुमारोंकी बतला कर कहा कि ये ही उसके भृत्य हैं। इस पर नगरवासी विशेषकर बणिक पुत्र क्रुद्ध हो उठे। देवस्मिता राजसभामें उपस्थित होकर बोली—'राजन्। इसके कपालमें एक रपद चिह्नयुक्त मुहरकी छाप है, परीक्षा कर देखी जाय' यह सुनकर सबके सब स्तब्ध हो उठे। सभी को ही उन चारों बणिककुमारोंकी देवस्मिताके क्रोतदास कीकारना पड़ा। अन्तमें देवस्मिताने राजसभामें आदि से अन्त तक इस रहस्यकी सच्ची बात कह सुनाई। यह

सुनकर सब कोई उसकी यथेष्ट प्रशंसा करने लगे। महाराजने मन्त्रुष्ट होकर देवस्मिताके पातिप्रत्यक्षा उपहार स्वरूप उस अनेक धनरत्न दिये। बाद गुहसेन पत्नीके माथ ताम्बनिर्मित आकर परम सुखसे कालयापन करने लगे। (ब्रह्मसंहिताधर)

गुहार्जनी (हि० स्त्री०) एक तरहकी फुडिया जो कभी कभी चञ्चुके पलक पर हुआ करती है।

गुहा (स० स्त्री०) गुह क टाप् च। १ मि हपुच्छीलता। २ गर्त, गुहा। ३ गुफा, कन्दरा। ४ शालपर्णी, सरिवर्ण। ५ पुष्टिपर्णी, पिठवन लता। ६ हृदय। ७ माया। ८ गुहाधिष्ठात्री देवता। "गुहाभ्युत्थता" (शालपर्णी ३।१६) ९ बुद्धि। गुह भावे भिदादित्वात् अड् १० स वरण, आच्छादन, ठुकरना। ११ मेटा।

गुहागर—बम्बई प्रान्तके रत्नगिरि जिलेका एक बड़ा गाव। यह समुद्र तट पर अञ्जनवल्से ६ मील दक्षिण पड़ता है। लोकसंख्या प्राय ३४४५ है। पोर्तुगीज इसे ब्राह्मणोंकी खाडी जैसा समझते थे। १८१२ ई०को पेशवा बाजीरावने यामसे दक्षिण पर्वत पर एक मन्दिर निर्माण किया। १८२७ ई०को इसका बहुतमा सामान रत्नगिरि के सरकारी मकानमें लूटा करके लगा दिया गया, परन्तु ध्व सावशेष अब भी पड़ा है। ब्राह्मण अधिक रहते हैं। देवालय कई एक हैं।

गुहागृह (स० स्त्री०) गुहा गृहमिव। गुहावास, गुफाके जैसा घर।

गुहाचर (स० स्त्री०) गुहान्ते प्रादशेषानपदार्थ अस्यां गुह घञ्, गुहा ह्रिडि तस्या विपयतया चरति गुहा चर ट। ब्रह्म, परमात्मा।

गुहादित्य (स० पु०) सुप्रसिद्ध बाष्पाके पुत्र। इनका दूररा नाम गुहिल था।

गुहायुध (स० स्त्री०) गुहाया युध, ६ तत्। गद्दरदार, कन्दराश दर।

गुहार (हि० स्त्री०) रचाके लिये पुकार, दोहाइ।
गुहान (हि० पु०) गोशाला। गायोंके रहनेका स्थान।
गुहावदरी (स० स्त्री०) गुहा गुहा वदरोव। शालपर्णी सरिवर्ण।

गुहावासा (सं० स्त्री०) गुहावुद्धिगवामो यस्याः बहुव्री०,
ततः टाप । गायत्री । (दे वीमा० १२ ६।४२)
गुहाशय (सं० पु०-स्त्री०) गुहायां गते गते गुहा-शो-
अच् । १ सूपिक, मूसा, चूहा । २ जो समस्त जन्तु
गुफामें वाम करते है । भावप्रकाशमें लिखा है कि सिंह,
व्याघ्र, हक, भाल, तरचु, हीपी, वभ्रु, जंबुक और
मार्जार प्रकृति जन्तु गुहाशय कहलाते हैं ।

इन्होका—वातघ्न, गुरु, उष्ण, मधुर, स्निग्ध, वलकर एवं
नेत्ररोगी और गुह्यरोगीके लिये विशेष उपकारी है ।

(पु०) गुहायां हृदि गते गुहा-शो-अच् । ३ पर-
मात्मा, ब्रह्म । ४ प्राण ।

गुहाहित (सं० त्रि०) गुहायां बुद्धी हृदये वा आहितः,
७-तत् । हृदिस्थ, जो हृदयमें अवस्थान करता है ।

गुहिन (सं० स्त्री०) गुह वाहुलकात् इवन् । वन जङ्गल ।

गुहिल (सं० स्त्री०) गुह इलच् क्तिच् । १ वन जङ्गल ।

(त्रि०) २ गुहाके निकटवर्ती देशादि । (पु०) ३ गहलोत्
वंशके आदिपुरुष । गहलोत् देखो ।

गुहेर (सं० त्रि०) गुह-एरक् । १ रक्षाकर्ता, रक्षक ।

(पु०) २ लोहकार, लोहार ।

गुहेरा (हिं० पु०) गोध, गोह नामका कीट ।

गुह्य (सं० स्त्री०) गुह भावाटो यत् । १ गोपन, छिपाव ।

२ उपस्थ; भग, लिङ्गा आदि गोपनीयशब्द । ३ (त्रि०)

छिपानेलायक । (पु०) ४ कामठ, कच्छप, कछुआ । ५ दंभ,

कल, कपट । ६ विष्णु । ७ महादेव, शिव । ८ उप-

देवताविशेष ।

गुह्यक (सं० पु०) गूहन्ति रक्षन्ति निधिं धनविशेषं गुह-

श्वल्, प्रयोदरादिवत् यगागमे साधुः । गुह्यं कुत्सितं

कायति कै क । यद्वा गुह्यं गोपनीयं कं सुखं येषां

बहुव्री० । १ देवयोनिविशेष, कुवेरके खजानोको रक्षा

करनेवाला यक्ष, निधि-रक्षक यक्ष । इनका आवासस्थान

पिशाच लोकके ऊर्ध्व और गन्धर्व लोकके निम्नमें है । ब्रह्म

वैवर्तपुराणमें लिखा है कि क्षणाके गुह्य देशसे पिङ्गलवर्ण

अनुचरका जन्म हुआ था । इसीलिये वे गुह्यक कहलाये ।

(ब्रह्मवैवर्त, ब्रह्म० ५।६०)

काश्याखण्डका मत है कि जो मनुष्यसे अधिक धन
उपाजन कर छिपा कर रखते और कभी भी अनाय पथ

पर पदचिप नहीं करते और जो अतिगय धनशाली अथवा
क्रोध वा असुखाशुन्य हैं और आपसमें धन विभाग कर
निर्विवादमें भोग करते हैं, जो सर्वदा सुखाभिन्नापी हैं,
किमी पुण्य तिथि, वार, संक्रान्ति वा पर्वदिनमें किमी
तरहका पुण्य कार्यका अनुष्ठान नहीं करते या अनुष्ठान
करना जानते ही नहीं, सिर्फ ब्राह्मणकी ही पूज्य सम-
भक्ति और समय समय पर उन्हें गोदान किया करते एवं
कभी भी ब्राह्मणवाक्य उल्लङ्घन नहीं करते वे ही मनुष्य
मृत्युके बाद गुह्यलोकको प्राप्त होते हैं ।

२ पक्वानविशेष, एक तरहका मधुर स्वाद द्रव्य ।
मैटा या सृजोकी घृतमें भंज कर उसमें चीनी और किंग-
मिश मिश्रित कर दें और सुगन्धिके लिये दो एक एलाची,
नवङ्ग और कर्पूर भी डे दें । इतना करनेके बाद उसे
एक समितालम्ब पात्रमें रखकर घृतसे पाक करें । भली
भांति पाक होनेके पश्चात् चीनीका रस उसमें डाल दें ।
इसको गुह्यक कहते है । यह अति उपादेय स्वाद है ।
इसका गुण—वृंङ्गण, अनिश्चय हृदयशाली, वृष्य, पित्त
और वायुनाशक, मधुर एवं गुरुपाक है ।

३ अश्विरा कुलज तमसादेवोके भक्त एक राजा,
गोपालके पुत्र । (महादि १।२३।१५)

गुह्यकाली (सं० स्त्री०) नित्य कर्मधा० । कालीमूर्ति-
विशेष । विश्वसारतन्त्रमें इनकी उपासनाकी कथा,
दोक्षाप्रणाली और मन्त्रोद्धार लिखे हुए हैं । इनकी उपा-
सनासे चतुर्वर्ग लाभ होते हैं, माधकका अभीष्ट यह
सर्वदा पूर्ण किया करती हैं, दिनोंदिन माधककी भक्ति
वृद्धि होती जाती एवं पाञ्चभौतिक देहपात होने पर उसे
मोक्षकी प्राप्ति होती है । इनका मन्त्र यथा—(१)

“क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं गुह्ये कालिके ।”

अथ विश्वरूप दीक्षा मन्त्रमें देखो ।

गुह्यकेश्वर (सं० पु०) गुह्यकानां ईश्वरः, इ-तत् । कुवेर ।

गुह्यगुरु (सं० पु०) गुह्यो गोपनीयो गुरुः । शिव । तन्त्र-

शास्त्रमें बहुत जगह 'शिव' का 'गुह्यगुरु' नामसे उल्लेख
किया है ।

गुह्यग्रन्थ (सं० पु०) गुह्यो गोपनीयो ग्रन्थः । १ गोपनीय-

ग्रन्थ, गुप्त पुस्तक । २ तन्त्रशास्त्र । २ वीह शास्त्रज्ञ

गुह्यतन्त्र (सं० स्त्री०) गुह्यं च तन्त्रं चेति कर्मधा०

एक तत्र । इममें तात्रिक धमको बहुतसी गोपनीय कथाये अच्छो तरहसे लिखो हैं । तात्रिक गणोंके पक्षमें यह विशेष आदरणीय है ।

गुह्यदीपक (स० पु०) ख्य गुह्य सन् दीपयति प्रकाशयति दीप णिच् ष्वन् । ख्योत, जुगन् ।

गुह्यदेग (स० पु०) पायु, मलहार ।

गुह्यनिष्यदन (स० पु०) गुह्यात् उपस्थात् निष्यन्दति निष्यन्द अच् । सूत्र, प्रस्त्राव, पेयाव ।

गुह्यपति (स० पु०) गुह्याना पति, ६ तत् । गुह्योके अधिपति, वज्रधर, कुवेर । १ वचन २ वः ।

गुह्यपिधान (स० स्त्री०) गुह्यस्य पिधान, ६-तत् । गुह्य देगका आवरण, गुह्य देश टाकनेका वस्त्र ।

गुह्यपुष्य (स० पु०) गुह्य गोपनीय पुष्य यस्य, बहुव्री० । अश्वत्थवृक्ष ।

गुह्यभाषित (स० स्त्री०) गुह्य गोपनीय भाषित । १ मत्र । २ गुप्तकथा ।

गुह्यग्रमण्डल—पुराणोक्त एक पवित्र स्थान ।

(२५५७० १५०५०)

गुह्यग्रमय (स० पु०) गुह्य प्रासुर्यार्थं मयट् । कात्ति-कय ।

गुह्यबीज (स० पु०) गुह्य बीजमस्य, बहुव्री० । भूदण, गन्धखड ।

गुह्यस्थान—नेपालस्य एक पवित्र स्थान ।

गुह्य्याष्टक (स० स्त्री०) गुह्याना तीर्थविशेषाणांमष्टक, ६-तत् । आठ तीर्थविशेष । भारभूति, आपाटी, डिडिल, अकुली, भमरकण्टक, पुष्कर, प्रमास और नैमिय इन आठों तीर्थोंको गुह्य्याष्टक कहते हैं ।

गुह्यखरो (स० स्त्री०) गुह्याना ईखरी, ६ तत् । १ गुह्यकर्मणोकी अधिष्ठात्री देवी । गुह्या गोपनीया अप्रकाश्या ईखरी कर्मधा० । २ गोपनीय देवी, इष्ट-देवी । ३ कालो, आद्या, विद्या ।

गूगा (फा० वि०) जो बोलनेमें अममर्थ हो । मूक, जिमके मुखमें माफ माफ शब्द न निकले ।

गूगा (हि० स्त्री०) एक प्रकारकी विख्यां जिसे स्त्रियां अपनी अशुनीमें पहनती हैं ।

गूच (हि० स्त्री०) एक तरहकी मछली ।

गूह (हि० पु०) एक तरहका मत्स्य जो लगभग चार हाथ लम्बा होता है इस तरहको मछली भारतके प्रायः सभी नदियोंमें मिलती है यह अपना मुख सदा नीचे को और खुलती हुई रहने पानीमें चलती है ।

गूज (हि० स्त्री०) १ कलध्वनि, भौरेकी गूजनका शब्द, २ प्रतिध्वनि, व्याघ्रध्वनि । ३ लट्टकी कोल, जिम पर लट्ट धूमता है । ४ कानमें पहननेको बालियोंका छोटा पतला तार ।

गूजना (हि० क्रि०) १ गूजन करना, भौरेका भिनभि-नाना । २ प्रतिध्वनित होना ।

गूठ (हि० पु०) पहाड़ी टट्ट, टागन ।

गूदा (हि०) गौर श्लो ।

गूदी (हि० स्त्री०) गिरगिटी जातिका गधेना नामक पेड़ ।

गू (स० स्त्री०) गच्छति अपानवायुना देहात् गम कृति लोपय । १ विद्या । २ मल ।

गूगल (हि०) गृण्ण देवो ।

गूजर—पंजवा राघोजी भोमनाकी लडकीकी नडकीके पुत्र वा पोत्र १८१८ ई०की अफ्गानासहव ७७ सिंहा-सन अत हूण, यह मध्यप्रदेशके नागपुर राज्यमें अस्मि-पित्त हुए ।

गूजर—युक्तप्रदेशवासी जातिविशेष । यह लोग शान्ताव-से कायिक परिश्रम करके जीविका चलाते हैं । इनके उत्पत्ति सम्बन्धमें बहुतसे आदमी बहुतसी बातें कहते हैं । कोई कोई कहता है कि गुर्जरदेश अथवा पञ्जाव प्रदेशके गुजरावाला या गुजरात नामक स्थानमें ही इनकी नाम गूजर नाम पडा है । नागपुरके गूजर अपनेको राजपूत और श्रीरामचन्द्रजीके पुत्र राजा लवका वधधर बतलाते हैं, परन्तु युक्तप्रदेशवासे अपनेको उतना ऊँचा नहीं समझते । पानीपथके रावल गूजर अपनेको खीखर राजपूतोंका वधधर जैसा अनुमान करते हैं ।

राजकल टिप्पणीके निकटवर्ती स्थानसमूह, उत्तर दे-प्राय और उत्तर हृदयखण्डमें इन लोगोंकी मर्या अधिक है । गुजरांमें ८४ भिन्न येणिया होती हैं । पिहगोत्र, मातुलगोत्र और पितामही तथा मातामहीके गोत्रमें इन का विवाह नहीं होता । पानीपथके सुमनमान गूजरों-

को कनिङ्गम साहब चोना, यूनानो तथा मुसलमानी ऐतिहासिक कथित तोखारी, कुशान या क्यूस्त्रियाङ्ग (तातार) जाति जैसा अनुमान करते हैं। यह और भी बतलाते हैं कि उन्हींसे गुर्जरराष्ट्र तथा खुरमान दो राष्ट्रोंका नाम पड़ा है। कह नहीं सकते, वह अनुमान कहां तक सत्य है। परन्तु आवयविक गठन देख करके जाटोंसे इनकी तुलना की जा सकती है। १३०३ ई०की प्राचीन गुर्जर नगरध्वंस हुआ था। १५४४ ई०को सम्राट् अकबरके राजत्वसमय इन्होंने उसको फिर निर्माण किया।

शोलापुरके गुजरोमें बहुतसे गुजरातो जन आवक-वंशीय हैं। कोई १०० वर्ष हुए, गुर्जर देशसे जा कर के वह वहां रहने लगे हैं। इनके बीच खगोलमें विवाह होता और उसमें बड़ा खर्च पड़ता है। यह बड़े टान शील हैं। शोलापुरमें पार्श्वनाथके दो और कई एक अन्यान्य मन्दिर उन्हींके बनवाये हैं। ब्रज भाषाके कवि योंने इस जातीय स्त्रियोंको 'गुजरि,' 'गुजरो' वा 'गुजरेटी' लिखा है।

गुजर (हि०) गुजर देसो

गुजर खां—रावलपिण्डी जिलाके दक्षिणपश्चिम और मूरि पर्वतसे २० मील दक्षिणमें एक तहसील। यह अक्षा० ३३° ४' तथा ३३° २६' उ० और देशा० ७२° ५६' एवं ७३° ३८' ३०" पू० पर अवस्थित है। भूपरिमाण ५६५ वर्ग मील है। यहांके विचारविभागमें एक तहसीलदार और एक मुन्सिफ है।

गुजरसिंह—एक सिख योद्धा। यह भङ्गो जातिके मरदार थे। १७६३ ई०की भङ्गियोंके जातीय एकता सूत्रमें आवड होने पर इन्होंने उनके सैन्यको साथ ले फीरोजपुर आक्रमण और जय किया। फिर वहां पर इन्होंने दुर्गसंस्कार किया और अपना राज्य शतद्रु पर्यन्त बढ़ा दिया। १७६५ ई०की सरदार गुजरसिंहने लाहौरसे ग़ज़रराज मुकारव खांके विरुद्ध यात्रा की और उन्हें पराजित करके गुजरात के बहिर्देशमें भगाया था। मुकारवने वितस्ताके पर पारको पलायन किया था। वहां वह स्वजातिकर्तक निहत हुए। इसी समय गुजरसिंहने जा करके उनको विनाश किया और राज्य पर अधिकार कर लिया।

गुजरो (हि० खी०) गुजरो देश।

गूजो (हि० खी०) एक तरङ्गका छोटा काना कौट।

गूभा (हि० पु०) १ एकवानविशेष। गुजर देस। २ गूटा। ३ फलके मध्यभागका रंग।

गूटी (देश०) १ लोचोका पेट रोषनको एक तरकीब। २ चौपायांका एक रोग।

गूटी—मन्द्राज प्रान्तके अनन्तपुर जिलेका सब डिविजन। इसमें दो तालुक लगते हैं।

गूटी—मन्द्राज प्रान्तके अनन्तपुर जिलेका उत्तर तालुक। यह अक्षा० १४ ४०' तथा १५ १४ उ० और देशा० ७७ ६' एवं ७७ ४८' पू० के मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल १०५४ वर्गमोल और लोकसंख्या प्रायः १५६१५५ है। तीन नगर और १४२ ग्राम बसते हैं। मालगुजारी कोई ३१६०००) रु० है। दक्षिण और पश्चिम अञ्चलमें भूमि अधिक उर्वरा है। उसके पूसे १० फुट नीचे तक चुनेका पत्थर मिलता जो पानीमें घुला करता है। पेट जैसे ही उनको जड़ चुनेसे मिलती फिर नहीं फूलते फलते। उत्तर और पूर्वको जमीन पथरीली है। पत्थर मटो ही अकेले इस तालुकमें बहते हैं।

गूटी—मन्द्राज प्रान्तके अनन्तपुर जिलेमें गूटी मण्डिवि-जन और तालुकका सदर। यह अक्षा० १५ ७' उ० और देशा० ७७ ३८ पू०में मद्रास रेलवे पर पड़ता है। जनसंख्या प्रायः ८६८२ है। इसका मध्यभाग प्राचीन पार्वत्य दुर्गोंके लिये प्रसिद्ध है। बहुतसी जमीनको चारों ओर पहाड़ घेरे हुए हैं। पहाड़ोंको उस ओर एक मजबूत चहारदीवारी है। उस पर जगह जगह बुर्ज बने हैं। उत्तर और पश्चिम दिक्को शहरमें जानिके लिये इसी दीवारमें दो सराक हैं। किला जमीनसे १००० फुट ऊंचा है। रक्षाके उपकारणोंमें कोई कमी नहीं। वह विना दुर्भिक्ष या छलनाके टूट नहीं सकता। पानीके लिये पहाड़ पर भी होज मौजूद है। एक पहाड़ी पर 'सुगनी रावक डेरा' नामकी इमारत है। कहते हैं, यहां वह शतरंज खेलते और कदियोंको पहाड़से नीचे धकेला जाता हुआ देखते थे। यहां १८३८ ई०की गज़ाम विद्रोहके पहाड़ी लोक कैद किये गये थे। जब यह जगह कम्पनी-

को मिनो, वारीकीमें रंगो पैदल फाज रही। अब किने और इमारतीका देख भान सरकार करती है।

गहर बहुत घना है। ग्रीष्म ऋतुमें गर्मी बहुत पडती है। इसीसे सब सरकारो दफ्तर मैदानमें लठ गये है। किनेका पूरा इतिहास अज्ञात है। वह विजयनगरके राजाओं का एक अर्थात् सुदृढ दुर्ग था। मुमनमान कितनी ही समय तक उसे अधिकृत कर न सके। १७४६ ई०को मुरारिराय नामक महाराष्ट्र वोरने उसको मरभ्रत की। १७०५ ई०को बहुत दिन तक घेरा डालनेके बाद हैदर अलाने उसे अधिकार किया था। १७८८ ई०को टीपूके मरने पर वह निजामके हाथ लगा। १८०० ई०से यह अंगरेजों के अधिकारमें है। १८६० ई० तक वहा दी अन्न रोजो फौजे रहनी।

गूही (सं० स्त्री०) वाजरेकी बानकी प्याली, जिसमें दाना भगा रहता है।

गूडर—१ कन्नडा जिलामें मसुलीपत्तन तालुकके अन्तर्गत एक प्राचीन नगर। यह मसुलीपत्तन नगरसे ४ मील पश्चिममें अवस्थित है।

० मन्द्राजमें कर्णूल जिलामें अन्तर्गत एक नगर। यह कर्णूल नगरमें १८ मील उत्तर पश्चिममें अक्षा० १५ ४३ उ० और देशा० ७८ ३४ ४० पू०के मध्या अवस्थित है। यहां कार्पास और रेशमी वस्त्र प्रसृत होते हैं।

३ विजापुर जिलामें अन्तर्गत एक पुरातन ग्राम। रामेश्वरके प्राचीन मन्दिरके लिये यह प्रसिद्ध है। यहां प्रतिमा और ताम्रके बरतन या पात्र प्रसृत होते हैं।

गूद (सं० वि०) गुहृत् । १ गुम, छिपा हुआ। २ अग्नि प्राय गर्भित, जिसमें बहुतसा अग्निप्राय गुम ही। कठिन, जटिल अवोधगम्य। ३ महत् । (पु०) ४ अतिसिद्धि पांच प्रकारके गवाहों में एक गवाह। ५ एक अन्न कार।

गूदकामो (सं० पु०) काक, कौया।

गूदगर्भक (सं० पु०) गर्भजरोगविशेष।

गूदचारिन् (सं० वि०) गूद मन् चरति चरणिनि। जो गुम शीतके विचरण करता है। गुमचारी।

गूदज (सं० वि०) गूद गुम्यानि पायते गूद जन उ। गूदोत्पन्न पुत्र। बारह प्रकारके पुत्रोंमेंसे एक पुत्र अपने ही गूदमें किमी गुम जारमें पैदा किया हुआ पुत्र।

गूदता (सं० स्त्री०) गूदस्य भाव गूद-तन्-टाप् । १ गुमता, छिपाव। २ अवोधगम्यता, गभीरता, कठिनता।

गूदत्व (सं० क्ली०) गूदस्य भाव गूदस्व । १ गूदता, गुमता २ गभीरता, कठिनता।

गूदनामि—वशिष्ठ गोदोय चण्डिकाभक्त पृथ्वीशय एक राजा, कर्मके पुत्र।

गूदनीड (सं० पु०) गूद गुम नोड' यस्य, बहुव्री०। अञ्जनपत्नी।

गूदपत्र (सं० पु०) गूद पत्रमस्य, बहुव्री०। १ अदो-सूच, अखरोटका पेट। २ करीमवृक्ष।

गूदपय (सं० पु०) गूदपया यस्य बहुव्री०, समामान्त उच्यते। १ अन्नकरण, अन्तात्मा। २ गुमपय।

गूदपद (सं० पु०) गूद पादयति पद पिच क्तिप्। यद्वा गुमा, पादा यस्य, बहुव्री०। निपातने माधु। सर्प, मांय। गूदपाद (सं० वि०) गूद आहतः पादो यस्य, बहुव्री०। आहत चरण, जिमका चरण आच्छादित हो।

गूदपुरुष (सं० पु०) गूदयामो पुरुषयेति, कर्मधा०। राजपरित कृदवैगी पुरुष, गुमचर, भेदिया।

गूदपुष्पक (सं० पु०) गटानि स हतानि पुष्पाण्यस्य, बहुव्री०। १ पीपल, बड़ गूलर, पाकर इत्यादि वृक्ष। २ बहुलवृक्ष, मौलमिरी।

गूदफल (सं० पु०) गूद फल यस्य, बहुव्री०। बिरका पेट।

गूदफला (सं० स्त्री०) गूदधनवो।

गूदमण्डप (सं० पु०) देवमन्दिरके भीतरका बरामदा या दानाल।

गूदमजिका (सं० स्त्री०) अदोनिवृक्ष, अखरोटका पेट। गूदमाय (सं० वि०) गूदा गुमा अयेरलक्षिता माया यस्य, बहुव्री०। जिमकी माया दूसरोंमें अलक्षित है।

गूदमार्ग (सं० पु०) नित्यकर्म०। गुमपय, सुरङ्ग, पृथ्वीके नीचे खोदा हुआ रास्ता।

गूदमथुन (सं० पु० स्त्री०) गूद गुम केनाप्यनक्षित मेथन यस्य, बहुव्री०। काक, कौया।

गूदनूट—मदुरा जिलामें पेरिपकृष्ण नामक अन्तर्गत एक ग्राम। इस ग्राममें एक पुरातन गियमन्दिरमें बहुत-सी गियामिषि देवो आते हैं।

गूढ़वर्चस (सं० पु० स्त्री०) गूढ़ं वर्चोऽस्य, बहुव्री० । भक्त, मेढक ।

गूढ़वक्रिका (सं० स्त्री०) अक्षोठवृक्ष, अखरीटका टरख्त ।

गूढ़वल्ली (सं० स्त्री०) १ अक्षोठवृक्ष । २ क्षया जिलाके रेपल्ली तालुकके अन्तर्गत एक छोटा ग्राम । यहां लक्ष्मी नरसिंहका पुरातन मन्दिर है ।

गूढ़व्यङ्गदा (सं० स्त्री०) गूढ़ं गुप्तं काव्यार्थभावनपरिपक्व बुद्धिमात्रवेद्यं व्यङ्गं यत्न, बहुव्री० । ततः टाप् । काव्यमें एक प्रकारकी लक्षणा ।

माहित्यदर्पणके मतसे लक्षणा दो तरहकी हैं—गूढ़-व्यङ्गदा और अगूढ़व्यङ्गदा । इनका अभिप्रायः सर्व-साधारणकी शीघ्र समझमें नहीं आ सकता ।

गूढ़साक्षिन् (सं० पु०) गूढ़साक्षी साक्षीचति कर्मधा० । साक्षीविशेष । अर्थी या वादी अपनी इष्ट मित्रके लिये प्रत्यर्थी या विवादीकी समस्त कथा जिस साक्षीको सुनाता है वही गूढ़साक्षी कहलाता है ।

गूढ़ागूढ़ता (सं० स्त्री०) गूढ़ागूढ़ास्य भावः गूढ़ागूढ़-तल्-टाप् । गूढ़ागूढ़त्व, जटिल, कठिन ।

गूढ़ाङ्ग (सं० पु० स्त्री०) गूढ़ानि अङ्गानि यस्य, बहुव्री० । १ कच्छप, ककुषा । २ उपस्थ, भग, लिङ्ग आदि गोपनीय अङ्ग । (त्रि०) गूढ़ं गुप्तं अङ्गं यस्य, बहुव्री० । ३ गुप्त-देह, जिसका शरीर कृपा हुआ हो ।

गूढ़ाङ्गि (सं० पु० स्त्री०) गूढ़ाङ्गियस्य, बहुव्री० । सर्प, साँप
गूढ़सन्नूर—अर्काटसे उत्तर बालाजापेट तालुकके मध्य एक पुरातन ग्राम । यह बालाजापेटसे ३ मील दक्षिणमें अवस्थित है । यहां पाला नदीके तट पर आत्रेयमहर्षिके उद्देशसे चोलराज कर्तृक एक सबूज पत्थरका मन्दिर निर्मित है । सुमलमानोंने शाहदत्त-उल्लाकी मस्जिदके निर्माणके लिये उक्त मन्दिरके बहुतसे प्रत्थर खोल कर अर्काट ले गये थे । किन्तु पीछे ग्रामवासियोंके यत्नसे ये णाइट प्रस्तर द्वारा मन्दिरका पूर्ण संस्कार किया गया ।

गूढोक्ति (सं० स्त्री०) एक अलङ्कार । इसमें कोई गुप्त बात तृतीय मनुष्यके प्रति किसी दूसरेके ऊपर छोड़कर कही जाती है ।

गूढोत्तर (सं० पु०) किसी गूढ़ अभिप्रायका उत्तर ।

गूढोत्पन्न (सं० पु०) गूढमुत्पन्नः, द्वादश प्रकारके पुत्रोंमेंसे

एक पुत्र । मनुका मत है कि दूसरेके धारण (वीर्य) से यदि कोई सन्तान उत्पन्न हो और उसका यह प्रकृत सम्वाद दूसरा कोई नहीं जानता हो तो जिसकी स्त्री उसीका पुत्र कह कर यह गण्य है । इस तरहके गुप्त उत्पन्न पुत्रको शास्त्रकारगण गूढोत्पन्न कहा करते हैं ।

गूढात्मन् (सं० पु०) गूढात्मो आत्माचेति कर्मधा० । परमात्मा ।

गूढ (सं० पु० स्त्री०) गूढ-यक् । विद्या, मैला ।

गूढलक्ष (सं० पु० स्त्री०) गूढं विद्यायां रत्नोऽनुरक्तः, ७ तत् । गूढगान्धिक, एक तरहका पर्चा । इसका पर्याय-शरमाल, छद्मचूड़ और मादिक है ।

गूढना (त्रि० पु०) १ ग्रन्थन, कई चीजोंको एक सूत्रमें एकत्र करना । २ किसी पदार्थको दूसरे पदार्थमें सूई तागमें अटकना । ३ भट्टी सिलाई करना, मोना, गायना ।

गूढ (त्रि० पु०) १ गूढा, मगज । (स्त्री०) २ गर्त, गद्दा । ३ निगान, दाग ।

गूढगरी—बम्बई प्रान्तके कर्णाटक जिलेमें छोटी मिराज रियामतका सब डिविजन और इसीका सदर । यह धारवाड़में लक्ष्मेश्वरसे ३ मील दक्षिण-पश्चिम पड़ता है । लोकसंख्या प्रायः ३१२८ है । मग्राहमें एक बार बाजार लगता है । यहां सामन्तदारका दफ्तर, धाना, बालक और बालिका-विद्यालय, डाकखाना तथा धर्मशाला है ।

गूढर—हिन्दी भाषाके एक सुप्रसिद्ध कवि । कविताका नमूना यह है—

“हो कोरे राम रटे सोई जानै ।

जो जो मजो सो सुरपुर गयक नरक मलि घयाने ॥

ताको महिमा क्या कहियेको सागर दुइ लक्षपाने ॥

प्रिय मित्रकेको सज्ज भाव है सज्ज हो दीनता बाणी ।

जाऊ जय तप जान मदीको वेदु कहत बखानी ॥

जाको गति मति भस पावत है तबे भाग बहु जानी ।

गावे गूढर गूढकी दया जब तब हो जने उर ध्यानी ॥”

गूढलूर—मन्द्राज प्रान्तके नीलगिरि जिलेका पश्चिम तालुक ।

यह अक्षा० ११° २३' तथा ११° ४०' उ० और देशा० ७६° १४' एवं ७६° ३६' पू० मध्य अवस्थित है । मालगुजारी के १२ गाँव हैं । लोग मुलायम भाषा व्यवहार करते हैं । कहवा, सोने और अवरकका काम बन्द हो जानेसे गूढलूर विगड़ा है । लोकसंख्या प्रायः २११३८ और मालगुजारी ५३००० है ।

गूदलूर—मन्द्राजके नौनगिरि जिलेमें गूदलूर तालुकका सदर गाँव। यह अक्षा० ११ ३०' उ० और देशा० ७६ ३०' पूर्वमें गूदलूर घाट पर्वतकी नीचे अवस्थित है। लोक-मख्या प्राय २५५८ है। सामाजिक बाजार अच्छा लगता है।

गूदा (हि० पु०) १ किमी फलकी छिलकेके नीचेका सार भाग, गरी। २ भोजा, मगज, खोपडीका सारभाग।

गून (स० त्रि०) गू ऋ तस्य नकार। कृतविष्टोत्सर्ग, जिम व्यक्तिये विष्टा त्याग किया हो।

गून (हि० स्त्री०) २ नाव खींचनेकी रस्सी। २ रोहाटण।

गूना (फा० पु०) पीतल या सोनेका बना हुआ एक तरह का मुनहला रङ्ग।

गूमडा (हि०) गृह इक्षी।

गूमा (हि० पु०) एक छोटा पोधा। इसके ग्रन्थन पर गुच्छासा रहता है, और इसमें श्वेत पुष्प लगते हैं। यह श्रीयधके काममें आता है।

गूरण (स० स्त्री०) गूर उद्यमें भावे ल्युट्। उद्यम, उद्योग।

गूरा (हि० पु०) गुला, डेला।

गूर्ण (स० त्रि०) गूर ऋ तकारस्य नकारः। १ उद्यम विगिट। २ प्रयत्न।

गूर्त (स० त्रि०) गूरो उद्यमे ऋ निपातनात् नत्वाभाव। १ उद्यमविगिट। २ प्रयत्ननीय।

गूर्तमनस् (स० त्रि०) गूर्त उद्युक्त मनो यस्य, बहुव्री०। जिसका मन उद्योगविगिट है।

गूर्तवचस् (स० त्रि०) गूर्त उद्यते वचो यस्य, बहुव्री०। जिसका वाक्य उद्यमविगिट है।

गूर्तत्रयस् (स० त्रि०) गूर्ते प्रयत्नोय त्रयो यस्य, बहुव्री०। प्रयत्नान्, जिसका भोजनीय द्रव्य प्रयत्ननीय है।

गूर्त्तवसु (स० त्रि०) गूर्त्त वसु यस्या, बहुव्री०, साहित्यिकी दीधय। दान करनेके हेतु जिमने अपने धन धारण किया हो।

गूर्ति (स० त्रि०) गृणन्ति श्रुवन्ति गृ कर्त्तरि क्तिच्। १ स्त्रीता, स्तव्य कारनेवाना। (स्त्री०) गूर भावे क्तिन्। २ श्रुति।

गूलर (हि० पु०) वटवर्ग, पीपल और वरगदकी जाति का एक वृहत् पेड़। उद्भवदेशे।

गूलर कवाव (फा० पु०) एक प्रकारका कवाव। यह सिव मासको चूर्ण कर उसके मध्य अदरक, पोदीना आदि भरकर भूननेसे बनता है।

गूलू (हि० स्त्री०) पुड़क नामका एक तरहका पेड़। कतौरा नामक श्वेत गोद इसे नि रत होता है। इसको छिलकासे रमिया बनाई जाती है। इसकी पत्तिया और शाखायें चारो और श्रीयधका काम आते हैं। कोई कोई इसको जडकी तरकारोके काममें लाते हैं और घोडा-गुड मिलाकर खाते हैं। यह उत्तर भारत, मध्य भारत, दक्षिण तथा बर्माके सूबे वनमें तथा पश्चिमी घाटके पर्वतों पर मिलता है।

गूवाक (स० पु०) गुवाक प्रयोदरादित्वात् साधु।
गुवाक इक्षी।

गूष्णा (स० स्त्री०) मयूरचन्द्रक, मोरकी पूंछ पर बना हुआ श्रद्धेचन्द्र चिह्न।

गूह (हि० पु०) गलीज, विष्ठा, मल। गृह इक्षी।

गूहन (स० स्त्री०) गूह ल्युट्। गोपन, गुप्त।

गूहा छीको (हि० पु०) बुरे रूपका भगडा, बदनामी, कलङ्क।

गूहित्य (स० त्रि०) गूह तस्य। गोपनीय, जो स्थान छिपाने योग्य हो। यथा—लिङ्ग, कुच (स्तन), भग और गुह्यदेय।

गृञ्ज (स० स्त्री०) गृञ्जन्।

गृञ्जन (स० स्त्री०) गृञ्जते अभ्यक्षत्वेन कथ्यते गृजि ल्युट्। १ गृत् पशुका मांस। २ मूलविशेष शनगम, गाजर। इसका पर्याय—गिखिमूल, यवनेष्ट, वर्तुल, ग्रन्थिमूल, गिखिकन्द और कन्द है। यूरोप तथा एशियाके नानास्थानोंमें यह पाया जाता है। वैद्यक मतमें इसका गुण—कटु, उष्ण, कफ, वातरोग और शुक्मरोगनाशक, रुचिकर, दीपन, हृद्य और दुर्गन्ध है।

मनुका वचन है कि—जान वृष्कर गृञ्जन मद्यय करनेसे ब्राह्मण पतित हो जाता है, और यदि अज्ञानसे गृञ्जन खाया तो कश्चूसानापन शयया यति चान्द्रायण पत करके पापमें मुक्त हो सकता है। (मृ ३१।२०) (पु०) ३ मूलविशेष, लहसुन, रसुन। ४ ज्ञान लहसुन।

गृञ्जनक (स० पु०) गृञ्जन स्वार्थे कन्। गृञ्जन।

गृञ्जर (स० पु०) गजर, गाजर।

गृह्यनि (सं० पु०) यदुवंगीय शूरके पुत्र, वसुदेवके भ्राता ।
 गृहीवन् (सं० पु०) स्त्री, स्तव ।
 गृहीव (सं० पु० स्त्री०) वृहत् शृगाल, वड़ा गीदड़ ।
 गृह्य (सं० पु०) गृह्यति लिप्सति अनेन गृध्र मन्कित्, दका-
 रान्तादेशः । १ कामदेव । (त्रि०) २ स्तवकर्त्ता, स्तव-
 करनीवाला । ३ सुत्य, जिसको स्तव करना उचित है ।
 ४ मेधावी, परिणत, विज्ञ । ५ विषयाभिलाषी ।
 गृह्यपति (सं० पु०) गृह्यानां विषयाभिलाषिणां मेधा-
 विनां वा पतिः, इ-तत् । १ विषयाभिलाषीगणका प्रति-
 पालक रुद्र । २ मेधावी प्रतिपालक रुद्र, विद्वानोंके रक्षक
 रुद्र । गृह्य इति ।

गृह्यमति (सं० पु०) एक राजा । इनका जन्म वृहस्पति-
 वंशीय सुहोत्रके औरमसे हुआ था । (हरिवंश २३ अ०)
 गृह्यमद (पु०) १ एक मुनि, शुनक गोत्रके प्रवर-प्रवर्त्तक ।
 विश्वपुराणका मत है कि ये ऋषभवंशीय सुहोत्रके
 तृतीय पुत्र रहे । इनके पुत्रका नाम शुनक था ।

(विश्वपुराण ४८ अ०)

महाभारतमें लिखा है कि पूर्वमयसे देवराज इन्द्रने
 सहस्रवर्षव्यापी एक यज्ञका अनुष्ठान किया था । महर्षि
 गृह्यमद उस यज्ञमें सामवेद पाठ पढ़ते थे । उनका पाठ
 सम्यक् न होनेके कारण चाक्षुषमनुके पुत्र भगवान्
 वरिष्ठने उन्हें शाप दिया । इस शापसे उन्होंने सृगयोनि-
 में जन्म ग्रहण किया । ११८०० वर्ष पयन्त सृगरूपमें
 ये जलवायुविहीन विशाल जङ्गलमें रहे । तत्पश्चात्
 अपनी दुर्दशाको दूर करनेके लिये इन्होंने महादेवजीका
 स्तव किया । शिवजीके वरसे इनकी इन्द्रसे मित्रता हुई
 एवं शास्त्रके पारदर्शी हुए ।

२ ब्रह्मर्षि वीतहव्यके पुत्र । ये देखनेमें ठीक देव-
 राज इन्द्रसे मिलते जुलते थे । एक दिन इन्द्रहीषी दैत्य-
 गण इन्हें इन्द्र समझ पकड़ कर ले गये, किन्तु अधिक
 चेष्टा करनेके उपरान्त इन्होंने हाथसे कुटकारा पाया ।
 ऋग्वेदमें इनकी अनेक प्रशंसा की गई है ।

(भारत अनु० १० अ०)

गृह्यनि—गृह्यनि इति ।

गृध्र (सं० पु०) गृध्रत्यनेनास्माद्वा गृध्र-कु । १ कामदेव
 कन्दर्प । (त्रि०) २ अभिलाषुक, इच्छुक ।

गृध्र (सं० पु०) गृध्र वाटुलकात् कृ । १ बुद्धि ।
 २ कुम्भित । ३ अपान ।

गृध्र (सं० त्रि०) गृध्र, पृषोड राट्त्वादुकारस्य अकारः ।
 गृध्र, इति ।

गृध्रु (सं० त्रि०) गृध्रति कामयते लिप्सति वा धनमिति-
 शेषः । लुब्ध, लोभयुक्त ।

गृध्रुता (सं० स्त्री०) गृध्रोर्भावः गृध्रु-तन्-टाप । अभि-
 लाप, अतिशय इच्छा, लुब्धता ।

गृध्र्य (सं० त्रि०) गृध्र कर्मणि क्यप् । १ अभिनयणीय,
 वाञ्छनीय । (क्ती०) गृध्र भावे क्यप् । २ इच्छा, अभि-
 लाप ।

गृध्रिन् (सं० त्रि०) गृध्रमस्यास्ति गृध्र-इनि । अभि-
 लापयुक्त, अभिलाषी ।

गृध्र (सं० पु०-स्त्री०) गृध्रति अभिकाङ्क्षति मंसं गृध्र-
 क्रन् । १ पक्षीविशेष, गिड़, गीध । इसका संस्कृत पर्याय—
 टाक्षाय्य, वज्रतुण्ड, दूरदर्शन है । मस्तकके ऊपर अथवा
 जिसके घरके ऊपर गृध्र भ्रमण करे उसका सत्य, निकट-
 वर्ती गमभना चाहिये । २ जटायु पक्षी । (त्रि०) ३ लुब्ध,
 लोभी ।

गृध्रकूट (सं० पु०) गृध्रं प्रधानं कूटं यस्य, बहुव्री० ।
 मगधदेशके निकटवर्ती एक पर्वत । यह पर्वत गिरि-
 व्रजसे २३ मीलकी दूरी पर अवस्थित है । इसका दूसरा
 नाम शैलगिरि है ।

गृध्रचक्र (सं० पु०) गिड़ और चक्रवा ।

गृध्रजम्बुक (सं० पु०) शिवजीका एक अनुचर ।

गृध्रनखी (सं० स्त्री०) गृध्रस्य नखस्तटाकारोऽस्त्यस्याः
 गृध्र, नख-अच्, गौरादित्वात् डोप । १ कण्टकपानी
 वृक्ष, काकादनीका पेड़ । २ कोलिहल, बोरका पेड़ ।

गृध्रपति (सं० पु०) गृध्राणां पतिः, इ-तत् । गृध्रगणोंके
 अधीश्वर । गिद्धोंका राजा, जटायु ।

गृध्रपत्र (सं० पु०) गृध्रस्यपत्रमिव पत्रमस्य, बहुव्री० ।
 १ बाण, तीर । २-कार्तिकके एक सैनिकका नाम ।

गृध्रपत्रा (सं० स्त्री०) गृध्रस्य पत्रमिव पत्रं यस्याः,
 बहुव्री० । धूमपत्रा वृक्ष, तम्बाकूका गाछ ।

गृध्रपुरीषः (सं० पु०) गृध्र, पक्षीकी विष्टा ।

गृध्रमल (सं० पु०) इ-तत् । गृध्र पक्षीकी विष्टा

गृध्रभोजान्तक (स० पु०) श्वफरकके एक पुत्रका नाम ।
 गृध्रयातु (स० पु०) गृध्ररूपेण याति या तुन् । अथवा
 गृध्रे परिकरभूते सह यातयति यात उण् । राक्षस
 विशेष, जो गृध्र रूपधारण कर आकाशमें परिभ्रमण
 करता है ।

गृध्रराज (स० पु०) गृध्राणा पक्षिणा राजा, इ तत् ।
 गरुडके पुत्र जटायु ।

गृध्रघट (स० पु०) गृध्रोपलक्षितो वटोऽत्र वक्ष्मी० ।
 तीर्थ विशेष, देवस्थान । इस तीर्थमें हृषवाहन शिव-
 जीकी मूर्ति है । इस स्थान पर उपस्थित हो स्नान करके
 शरीरमें मग्न लगानेसे ब्राह्मणोंकी हृदयवायु का प्रताप
 धानके समान फल होता है, और दूसरे वर्णके ममस्त
 पाप विनष्ट होते हैं ।

गृध्रव्यूह (स० पु०) गिहके (भारत १८४३०) आकारकी
 सेनाकी रचना ।

गृध्रमद् (स० त्रि०) गृध्रे भौदति गृध्रेण भौदति गच्छति
 वा मद् क्तिप् । जो गृध्र पर उपवेगन करता है अथवा
 जो गिह पर चढ़ कर भ्रमण करता है ।

गृध्रमो (स० स्त्री०) गृध्रमपि स्यति मो ऋ गौरादित्वात्
 डीप् । वातरोगविशेष । (Lumbago) भावप्रकाशमें
 इनका लक्षणोदित यों लिखे है—कुपित वायु नितबदेगमें
 आश्रय कर स्थायता और वेदना उत्पन्न करता, इससे
 नितशयस्थान बार बार स्पन्दित हुआ करता है । इसीकी
 गृध्रभी कहते हैं । क्रमसे रोग बढ कर गाढ़मूलसे ऊरु,
 कटि, पृष्ठ, जांघ, जंघा और पदद्वयमें पहुँच जाता और
 स्थान स्थानमें स्थायता, घटना तथा स्पन्दन उत्पादन करने
 लगता है ।

यह गृध्रभी रोग दो तरहका है—पस गृध्र वायु
 जनित तथा कफम गृध्रवायुजनित । पस गृध्र वायुज
 गृध्रभी रोगमें शरीरमें घटना, रुथा जानु, जंघा और ऊरु
 मन्थिमें स्थायता और स्फुरण होते हैं । कफ म गृध्रवायु-
 जनित गृध्रभी रोगमें शरीरकी मुकता, अग्निमात्र्य, तन्द्रा
 (उत्थाहं), मुग्धमें आनन्द्याह तथा परुषि होती है ।

गृध्रभी रोगाकासा मनुष्याकी मथसे पत्ने वसन द्वारा
 शोधन करना चाहिये । यदि रोगमें आमदोष न रहे

अथवा अग्निकी वृद्धि मानूम पडे तो वस्तिक्रिया द्वारा
 चिकित्सा करना उचित है । विरेचन या वमनसे शोधन
 किये बिना वस्तिक्रिया करना निषिद्ध है ।

प्रातः काल गोमूत्रके साथ थोडे परिमाणमें रेडीका
 तेल एक माम तक सेवन करनेसे गृध्रभी रोग दूर हो
 जाता है अथवा आर्द्रकका रस, जम्बीर नोबूका रस, अन्न
 वेतस (खहा माग)का रस और गुड बराबर भाग लेकर तैल
 या हृत प्रत्येक कर पान करनेसे गृध्रभी रोगका प्रतिकार
 होता है । रेडीकामूल, विलमूल, हृहतो और कण्टकारी
 सर्व समित २ तोलाकी आधमेर पानीमें सिद्ध करे । आधा
 पाव या दो छटाक पानी रहने पर उतार ल । इसमें थोडा
 शीतचूर्ण लवण (सोरानमक) डाल कर पान करनेसे गृध्रभी-
 जनित शूल नष्ट होता है । गोमूत्र और एरण्ड तैल ४
 तोलाके साथ ४ भाया पिप्ली चूर्ण मिस्रित कर पान
 करनेसे पुराना वात और कफसे उत्पन्न गृध्रभी रोग दूर
 हो जाता है । वामक, दन्तो और भौदान २ तोला आधा
 मेर पानीमें सिद्ध कर आधपाव पानी रहने पर उतार ले
 और उसे अच्छी तरह छान कर थोडा एरण्डका तैल
 मिला कर पान करनेमें अचल गृध्रभी रोगीकी स्थायता
 दूर होकर ममनशक्तिका सञ्चार होता है । भात ६०॥

गृध्राकार (सं० पु०) भापपक्षी ।

गृध्राण (सं० पु०) १ गृध्रके जैसा स्वभाव । २ गृध्रपदा
 हृत्त, तम्बाकूका पेंड ।

गृध्राणी (सं० स्त्री०) गृध्र इवानित भन् पचु गौरादि
 त्वात् डीप सञ्चार्याणव । धूम्रपत्राहृत्त, तम्बाकूका
 पेंड ।

गृध्री (सं० स्त्री०) कश्यपकी भी ताम्बाकी एक कन्या ।

(विश्व० १११११४)

गृध्र (सं० पु०) गृध्र प्रकारभ्य भकारं कान्दमत्वात् । गृध्र,
 घर ।

गृध्रि (सं० पु०) ग्रह कि म प्रमाणे कान्दमत्वात् कृत्वा
 रभ्य भकार । पकडनेकी क्रिया, यष्टन करनेका भाव ।

गृभीत (सं० त्रि०) ग्रह ऋ कान्दमत्वात् कृत्वाभ्य भकार ।
 १ गृहीत, पकड़ा हुआ, यष्टनयुक्त । २ गृहीतयज्ञ, जिस
 ने यज्ञ ग्रहण किया हो । (भाष्य १०८०१०)

गृहीतताति (सं० स्त्री०) गृहीतानां गृहीतयज्ञानां तातिः,

६-तत् । गृहीतयज्ञसमूह ।

गृष्टि (सं० स्त्री०) गृह्णाति सकृद्गर्भं ग्रह कर्तारि क्तिच्
प्रपोदरादिवत् साधु । १ छोटी गाय जिसने सिर्फ एक
बार बच्चा बना हो, एक बार प्रसूत धेनु, इसे सकृत्प्रसू-
तिका भो कहते हैं । सकृत्प्रसूता स्त्री, युवती स्त्री जो
सिर्फ एक बार प्रसव हुई ही । ३ वराहकान्ता । ४ वेर-
का पेड़ । ५ काश्मरी या गांभारीवृक्ष ।

गृष्टिचीर (सं० स्त्री०) सकृत्प्रसूतिका गोका दूध ।

गृष्ट्या (सं० स्त्री०) वत्सा ।

गृष्ट्यादि (सं० पु०) गृष्टिरादिर्यस्य, बहुव्री० । पाणिनीय
एक गण । गृष्टि, हृष्टि, वलि, हलि, विष्टि, कुट्टि,
अजवस्ति और मित्रयु, इन सभीको गृष्ट्यादिगण कहते हैं।
गृह (सं० स्त्री०) गृह्यते धर्माचरणाय ग्रह-क । १ गेह,
घर, ईंट या मिट्टीसे बना हुआ वासस्थान । 'गृह' शब्द
अर्द्धार्चादि गणान्तर्गत होनेसे दोनों लिङ्ग ही सकृता है।
पुंलिङ्गमें गृह शब्द बहुवचनांत है । उसका उत्तर एक
वचन वा दो वचन नहीं होता ।

“गृहैर्विशालैरपि भूरिशालैः ।” (माघ)

पर्याय—गेह, उद्वसति, वैश्रम, मग्न, निकतन, निशांत,
वस्त्य, सदन, भवन, अगार, मन्दिर, निकाय्य, निलय,
आलय, वास, कूट, शाला, सभा, परत्य, सादन, आगार,
कुटि, कुटीर, निकेत, माला, मन्दिरा, ओक, निवास,
संवास, आवास, अधिवास, निवसति, वसति, केतन, गय,
कुदर, गर्त-हर्म्य, अस्त, दुरोण, नील, दुर्या, स्वसराणि,
अमा, दम, वृत्ति, योनि, शरण, वरुथ, कर्हि, कया, शर्म,
अज ।

गृहस्थीवाले सब ही गृह (घर) में रहते हैं । धनी
हो या दरिद्र, सब हीके लिये गृहकी आवश्यकता है।
गृहके बिना किसीकी भी गुजर नहीं हो सकती । इसी
लिए आर्योंने गृह-निर्माण करनेकी विधि और उसका
शुभाशुभ संस्कृत भाषामें लिखी है । उन सब प्राचीन
ग्रन्थोंको देखनेसे मालूम होता है कि, पहिले गृह बना-
नेके कोई नियम ही नहीं थे । बादमें दिनों दिन उन्नति
वा रुचिका परिवर्तन होनेसे आर्योंने बहुत गवेषणापूर्वक
गृह-निर्माण करनेकी प्रणाली चलाई; पीछे उनहीको

उन्नति होती आई और नये नये नियम बनते गये ।
मत्स्यपुराणमें लिखा है कि, “भृगु, अत्रि, वशिष्ठ, विश्व-
कर्मा, मय, नारद, नग्नजोत्, विशालाच पुरन्दर, ब्रह्मा,
कुमार, नन्दीश्वर, शौनक, गर्ग, वासुदेव, अनिरुद्ध, शक्र
और वृहस्पति—ये अठारह ही वास्तुशास्त्रके उपदेष्टा हैं
(१) ।” इनमेंसे प्रत्येकका बनाया हुआ एक एक
वास्तुशास्त्र हैं । उनमेंसे मयकृत मयशिल्प, विश्वकर्मा
कृत विश्वकर्मप्रकाश, विश्वकर्मशिल्प, मानवसारशिल्प
और राजवल्लभमण्डन—इन ग्रन्थोंमें घर बनानेके नियम
विस्तृत मिलते हैं । इनके अलावा मत्स्यपुराण और
वृहत्संहितामें भी बहुतसा विवरण मिलता है । उपर्युक्त
प्राचीन ग्रन्थोंके अनुसार गृह निर्माण-प्रणाली लिखी
जाती है ।

जिस जगह घर बनवाना हो सबसे पहिले वहांकी
मिट्टीकी परीक्षा करनी चाहिये । विश्वकर्माने मिट्टीकी
परीक्षा करनेकी विधि इस प्रकार लिखी है—मिट्टी
साधारणतः चार प्रकारकी होती है,—ब्राह्मणी, क्षत्रिणी
वैश्या और शूद्राणी । जिस मिट्टीको रंग सफेद ही और
अच्छी सुगन्धवाली तथा मधुर रसवाली हो, वह ब्राह्मणी
है । जिसका रंग लाल हो, रक्तकी भाँतिकी गन्धवाली
और कषाय रसवाली हो वह क्षत्रिणी है । जो मिट्टी
पीतवर्णवाली, मधुके समान गंधयुक्त और अम्लरसवाली
होती है, वह वैश्या है । तथा जो मिट्टी काली, शराव
जैसी गंधवाली और कड़ुई होती है, वह शूद्राणी कह-
लाती है । यह चार वर्णकी मिट्टी यथाक्रमसे चारों
वर्णवालोंके लिये प्रशस्त है । चतुरस्र द्वीपाकार, सिंहा-
कृति, वृषभसदृश, गोलाकार, भद्रपीठ, त्रिशूल वा लिंग
सदृश भूमि ही उत्तम होती है । त्रिकोण, शकटाकार,
मृदंगतुल्य सर्प वा भेक सदृश, गधा अजगर आदिकी
भाँतिकी भूमि तथा धनु वा परुश तुल्य, दुर्गन्धयुक्त भूमि
वर्जनीय है, ऐसी भूमि पर गृह-निर्माण नहीं करना
चाहिये । जो स्थान देखनेमें मनोहर हो, उसी स्थान-

(१) “भृगुरत्रिवशिष्ठश्च विश्वकर्मा मयस्तथा ।

नारदो नग्नश्चैव विशालाच पुरन्दरः ॥

ब्रह्मा कुमारी नन्दीशः शौनको गर्ग एव च ।

वासुदेवोऽनिरुद्धश्च तथा शक्र-वृहस्पतिः ॥

“अष्टादशैते विख्याता वास्तुशास्त्रोपदेष्टकाः ॥” (मत्स्यपुराण ३५२३०)

की परीक्षा करानो चाहिये। दृढ और नीची भूमि ब्राह्मणोंके लिये अच्छी होती है। क्षत्रियोंके लिए गहरी जमीन वैश्योंके लिए ऊँची और शूद्रोंके लिए समान भूमि ही उत्तम है।

जिम स्थान पर कुग, काग, ब्राह्मी दुर्वा न पैदा होती हो, वह स्थान क्षत्रियोंके लिए, फल और पुष्पयुक्त स्थान वैश्योंके लिए, तथा साधारण लणयुक्त स्थान शूद्रोंके लिये उत्तम है। जिम स्थानमें बड़े बड़े पत्थर हो, जो देखनेमें मूसल मरीखा हो, अतिशय वायुके वेगसे पीठित हो, विकटाकार हो, वल्लक्षण वा भल्लकयुक्त हो जिस स्थानके आम पाम चैत्र, शशमान, वक्रोक्त या धूर्तिका वाम हो, जो स्थान चतुष्टय हो, देवालय या मन्दिभवनके निकटवर्ती हो और जिस स्थानमें बहुतसे गहरे हो, वह स्थान मनोरम होने पर भी त्याज्य है।

जिम वण के लिए जिस रगकी और जो गन्धयुक्त मृत्तिका प्रयुक्त है उस वर्णवानेको उसीमें धन, धान्य और सुखकी वृद्धि हो सकती है। परन्तु इसके विपरीत होनेसे विपरीत फल होता है। चतुरस्र भूमि पर घर बनवानेसे धनकी वृद्धि, मिडाकार जमीन पर घर बनवानेसे गुणगालो पुत्रका लाभ वृष मद्य स्थान पर बनवानेसे पशुवृद्धि, हत्ताकारमें विचलाभ, तथा भद्रपौठ और त्रिशूलाकार भूमिमें वोरका जन्म और नाना प्रकारके सुखोंकी प्राप्ति होती है। लिङ्गभूमि लिङ्गोंके लिए प्रयुक्त है। प्रासादध्वज मद्य स्थानमें पदोन्नति होती है, और कुम्भाकार, त्रिकोण, शकटाकार, तथा सर्प वा व्यञ्जन मद्य भूमि घर बनानेसे यथाक्रमसे धनवृद्धि, सुख सौम्य, अर्थ और धनहानि होती है। रुद्रङ्गाकार भूमि व शनायिनी है, सप वा मण्डकाकार भूमि पर घर बनानेसे भय, गर्दभ मद्य स्थानमें धननाश अजगर मद्य भूमिमें श्वलु और विपिटाभूमिमें पौरुषकी हानि होती है। चैत्यके पाम घर बनवानेसे गृहस्वामीके लिए भय, धूर्तके वासस्थानके पाम बनवानेसे पुत्रकी श्वलु, चतुष्टयमें अज्ञोर्ति और मन्दिभवनके पाम गृह बनवानेसे धनकी हानि होती है। इस प्रकार लिन्दनीय स्थानके बुरे फल और उत्तम स्थानोंके अच्छे फल शास्त्रकारोंने लिखे हैं। उन विवरणोंकी मूलग्रन्थमें देवना चाहिये।

स्थान मनोनीत होने पर उस जगह एक हाथका एक गह्रा खोदना चाहिये। उस गहरेकी मिट्टी बाहर निकाल कर फिर उसीमें डाल देना चाहिये। मिट्टी अगर ज्यादा हो तो उत्तम, समान हो तो मध्यम और कमती हो तो उस स्थानकी घन्य समझना चाहिये। जघन्य स्थानमें गृह निर्माण करनेसे गृहस्वामीका अम गन होता है। अथवा उस गहरेको पानीसे भर कर एक मोपैर चलना चाहिये, फिर लोट कर अगर गहरेका पानी जरा भी न घटे तो उस जमीनका सबसे उत्तम समझना चाहिये या उस गहरेमें चार सेर पानी डाल कर सोपैर चलना चाहिये, और लोटकर यदि उसे ६४ पल पानो मिले तो उस भूमिको भी उत्तम समझना चाहिये। कच्चे मिट्टीके वर्तनमें चार बतों जला कर उस गहरेमें रख देना चाहिये जिस दिशाकी वृत्ति जोरसे जले, उस दिशाका प्रयुक्त समझना चाहिये। उस गहरेमें श्वेत, रक्त, पीत और कृष्णवर्णके चार फूल रख देना चाहिये। दूसरे दिन सुबह तक जिम वर्णका फूल बहान नष्ट हो उमो जाति के लिए वह स्थान मंगलकर होता है। वराहमिहिर का कहना है कि शास्त्रकारोंने भूमिको बहुत तरहकी परीक्षाएँ लिखी हैं, उसमेंसे गृहस्वामी जिस परीक्षा को पसन्द करे उस परीक्षा द्वारा जमीनकी जाँच करानेसे ही काम चल सकता है। इसमें एक स्थानको बार बार परीक्षा नही करनी पडती।

जो स्थान घरके लिये मनोनीत किया गया है, उस स्थानमें पहिले हल चला कर सर्वबीज बोना चाहिये। उक्त बीज तीन रात्रिमें अद्भुत हो, तो उसे उत्तम और पाच रात्रिमें अद्भुत हो, तो उसे अथम समझना चाहिये। वीहि, शालि, मुद्ग, गोधूम, सपप, तिल, और यव ये सात सब बीज हैं।

इस प्रकारसे वास्तु भूमिकी परीक्षा करके, फिर शुभ-दिन, शुभलग्न और शुभ शकुनमें गृहस्वामीकी राज मजूरोंकी साथ लेकर उस स्थानमें जाना चाहिये।

हहाम हितामें लिखा है कि, घर बनानेसे पहिले उस जमीनमें हल चलाकर वहा बोझरीपण करना पडता है। बादमें उस जगह एक दिशागति ब्राह्मण और गायको

रखना पड़ता है। इसके बाद उस जगह घर बनाना प्रारम्भ करना चाहिये। (बृहत् ० ५३।८८)

गृहकारका ग्रहाग्र विज्ञान शब्दों में देवी।

वृहत्संहिताके मतसे—समस्त वास्तु गृह पांच भागों में विभक्त हैं, उनमेंसे प्रथम तो उत्तम हैं, द्वितीय उससे मध्यम और उनसे अधम तृतीयादि हैं। परिमाणके अनुसार घरके ये पांच भेद होते हैं। जिस घरका विस्तार १०८ हाथ है और दैर्घ्य विस्तारके साथ उसका चतुर्थीश मिलाकर १३५ हाथ हो, वही राजाके लिये उत्तम घर है और उसके विस्तारमेंसे यथाक्रम ८८ हाथ बाद देनेसे दूसरे चार घरोंका परिमाण निकलता है, वे चार घर एक दूसरेकी अज्ञेया परस्पर-अधम हैं। २य प्रकारका विस्तार १०० हाथ और दैर्घ्य १५ हाथ है। ३यका विस्तार ८२ हाथ और दैर्घ्य ११५ हाथ है। ४य प्रकारका विस्तार ८४ हाथ और दैर्घ्य १०५ हाथ तथा ५म प्रकारका विस्तार ७६ हाथ और दैर्घ्य ८५ हाथ है। सेनापतिके पांच प्रकारके गृहके १म घरका विस्तार ६४ हाथ और दैर्घ्य ७४ हाथ १६ अंगुलि है। इस विस्तारसे छह छह बाद देनेसे यथाक्रमसे बाकीके चार घरोंका परिमाण होगा। जैसे—२य—वि० ५८, दै० ६७।८; ३य—वि० ५२, दै० ६०।१६; ४य—वि० ४६, दै० ५३।१६ और ५म—वि० ४०, दै० ४६।१६। मन्त्रीके पांच प्रकारके घरोंमेंसे प्रथम घरका विस्तार ६० हाथ होगा और दूसरे इससे चार हाथ कमती कमती होंगे। विस्तारके साथ उसका चौथाई और जोड़ देनेसे ही उसकी लम्बाई हो जाती है। १म—विस्तार ६०, दैर्घ्य ६७।१२. २य—वि० ५६, दै० ६३; ३य—वि० ५२, दै० ५८।१२, ४य—वि० ४८, दै० ५४ और पञ्चम—वि० ४४, दै० ४८।१२। मन्त्रीके घरसे आधा विस्तार और लम्बाई वाला घर राजमहिषो (रानी) के लिये उपयुक्त है। युवराजके पांच प्रकारके मकानोंका परिमाण,— १म—वि० ८०, दै० १०६।१६, २य—वि० ७४, दै० ८८।१६, ३य—वि० ६८, दै० ८०।१६, ४य—वि० ६२, दै० ८२।१६ और पंचम—वि० ५६, दै० ७४।१६। युवराजके अनुजोंका निवासस्थान इससे आधे विस्तार और दैर्घ्य युक्त होना चाहिये। अष्ट राजपुरुषोंके घरका परि-

माण उत्तमक्रमसे विस्तार ४८, ४४, ४०, ३६ और ३२, उत्तमक्रमसे दैर्घ्य—६७।१२, ६२।०, ५६।१२, ५१।०, और ४५।१२ है। कञ्जकी, वैश्या और नृत्यगीतादि वैचार्योंके घरका परिमाण उत्तमक्रमसे विस्तार २८, २६, २४, २२ और २०, उत्तमक्रमसे दैर्घ्य २८।८, २६।८, २४।८, २२।८ और २०।८ है। अध्वज और अधिष्ठान व्यक्तियोंके घरका परिमाण कोपगृह और रतिगृहके परिमाणके समान समझना चाहिये। कार्याध्यक्ष और दूतोंके घरका परिमाण उत्तमक्रमसे विस्तार २०, १८, १६, १४ और १२, दैर्घ्य ३५।८, ३५।१६, ३२।४, २८।१६ और २५।४ है। दैवज्ञ, पुरोहित और चिकित्सकोंके घरका माप उत्तमक्रमसे विस्तार ४०, ३६, ३२, २८ और २४, दैर्घ्य ४६।१६, ४२।०, ३६।१६, ३२।१६ और २८ हाथ है। वास्तु-गृहका जितना विस्तार हो, उसकी अगर उतनीही ऊँचाई हो, तो वह मकान मङ्गलकर होता है। परन्तु जिन घरोंमें सिर्फ एक ही कमरा है, उस घरकी लम्बाई विस्तारसे दूनी होनी चाहिये। कोपगृह और रतिगृहका माप उत्तमक्रमसे विस्तार ४४, ४२, ४०, ३८, और ३६, दैर्घ्य ६०।८, ५७।१६, ५४।८, ५१।८ और ४८।८ हाथ है। (बृहत् ० ५३ च०)

ब्राह्मण आदि पृथक् पृथक् जातियोंका जिन जिन मकानों पर अधिकार है, उसका भी वर्णन वृहत्संहिता में लिखा है। ये वास्तु भी पूर्वप्रदर्शित घरोंको भांति पांच भागोंमें विभक्त है। ब्राह्मणोंके पांच प्रकारके गृहोंका विस्तार ३२, २८, २४, २० और १६ हाथ है। क्षत्रियोंके रहने योग्य चार प्रकारके मकानोंका विस्तार २८, २४, २० और १६ हाथ है। वैश्योंके रहने योग्य गृह तीन प्रकार है, उनका विस्तार २४, २० और १६ हाथ है। शूद्रके रहने लायक घर दो प्रकारके है उनका विस्तार २० और १६ हाथ है। इसके अलावा अन्यत्र जातियोंको सिर्फ एक प्रकारके १६ हाथके घरमें ही रहनेका अधिकार है। ब्राह्मणके पांच प्रकारके गृहका दैर्घ्य इस प्रकार है,—३५।४।४८, ३०।१८।१२, २६।८।३६, २२।० और १७।१४।२२ है। क्षत्रियके चार प्रकारके गृहका दैर्घ्य ३१।१२, २७।०, २२।१२ और १८ हाथ है। वैश्योंके तीन प्रकारके वास्तुका दैर्घ्य इस प्रकार

है,—२८।०, २३।१६ और २८।८। शूद्रोंके दो प्रकारके घरकी लम्बाई २५ और २० हाथ है। अन्त्यर्जिके घरकी लम्बाई १६ हाथसे ज्यादा न होनी चाहिये। मन्त्र ही जातियोंके लिये अपने अपने परिमाणसे ज्यादा वा कम मापके मकान अमङ्गलकर है। परन्तु पश्वानय, प्रजाजिकालय, धान्यागार, अस्तागार अग्निशाला और रतिगृह वा बैठकका परिमाण अपनी इच्छानुसार कर सकते हैं। कोई भी घर ही एक से ज्यादा ऊँचा न करे और न कराना ही चाहिये।

मकानके भीतरी हिस्सेकी शाला कहते हैं। कौन से मकानकी शाला किस मापकी होनी चाहिये, उसका परिमाण दृष्टक्षेपितानमें इस प्रकार लिखा है—राजा और सेनापतिके मकानके व्यासके साथ ७० को जोड़ कर २ से भाग देकर जो भागफल हो, उस १४ से भाग देने पर जो उपलब्ध होगा, वही त्रुप गृहकी शालाका माप शाला भित्तिके वाहिरके हिस्सेके सोपानयुक्त आंगनकी प्राचीन वालुशास्त्रोपदेष्टाश्रीने अलिन्द नामसे उल्लेख किया है। पूर्वप्रदर्शित द्विविधक शकको ३५से भाग करनेसे जो फल उपलब्ध होगा, वही राजाके गृहके आंगनका परिमाण है। दूसरे जातिके मकानकी शाला और आंगनका परिमाण निम्नलिखिताने तो राजा और सेनापतिके घरके व्यासके योगफलके साथ ७० को जोड़कर, उसमेंसे अपनी जातिके व्यासका घटा देना चाहिये। पीछे उसमेंसे आधे अंग घटा कर, उसको यथाक्रमसे १४ और १५ द्वारा भाग करके जो दो अंके उपलब्ध होंगे, उसे अपनी जातिके शाला और आंगनका माप समझना चाहिये।

पछिले ब्राह्मण आदिके पाँचप्रकार वालुपरिमाण जो कहे गये हैं, उसमें यथाक्रमसे ४।१०, ४।३ ३।१५ ३।१३ और ३ हाथ ४ अङ्गुलकी शाला तथा ३।१८, ४।८, ३।२०, ३।१८ और २ हाथ ३ अङ्गुलके आंगन होने चाहिये। शालाका ३ अङ्गुल स्थान भवनके बाहर रखना चाहिये। प्राचीनकालमें वीथिका कहा जाता था। यह वीथिका मकानके प्रवेशकी तरफ रहनेमें, उस मकानको माण्डोप पश्चिममें रहनेमें मायाय्य और उत्तर या दक्षिणमें रहनेमें उस मकानका मायटथ नामसे उल्लेख

कर सकते हैं। यदि किसी मकानके चारों तरफ वैसी वीथिका रहे तो उसको सुस्थित कहते हैं। वालुशास्त्रमें इस प्रकारके मकानोंकी विशेष प्रशंसा की गई है। ये सब मकानही गृहस्थके लिए मंगलजनक हैं।

मकानकी ऊँचाई या उच्छ्रय—उत्तम मकानके विस्तारके—अथके साथ ४ हाथ और जोड़नेसे जितना होगा, उस घरकी ऊँचाई उतनी ही होनी चाहिये। बाकीके चार प्रकारके घरोंको ऊँचाई क्रमशः उससे बारहवें भाग घटती जायगी।

भीतः माप—जो भीत पको हुई ईंटोंसे बनाई जाती है, उनका परिमाण व्यासके १६ भागमेंका १ भाग करना चाहिये। परन्तु काठसे जो भीत बनाई जाती है, उसका परिमाण अपनी इच्छानुसार कर सकते हैं।

दरवाजका परिमाण—राजा और सेनापतिके घरके व्यासके साथ ७० जोड़ कर ११से भाग देनेसे जो फल उपलब्ध होगा, उतने हाथका विस्तार उसके दरवाजिका होगा। उस दरवाजिका विस्तार जितने अङ्गुलका होगा उतने ही हाथकी उसकी ऊँचाई होनी चाहिए तथा विस्तारसे आधा दरवाजिका फैलाव करना उचित है। ब्राह्मण आदि दूसरी जातिके लोगोंके गृहव्यासके पचासके साथ १८ अङ्गुल जोड़नेसे जितना हो, उतना ही उनके घरके दरवाजिका माप है। द्वारके मापका अष्टाग, दरवाजिका फैलाव और फैलावसे दूनों ऊँचाई होनी चाहिये। दरवाजिकी ऊँचाई जितने हाथकी होगी, उतने अङ्गुल प्रमाण उसको दोनों शाखा होनी चाहिये और शाखासे छोटी चौखट होनी चाहिये। ऊँचाई जितने हाथकी होगी उतनी मल्याकी १०से गुणा करके ८० सेभाग देनेसे जो फल उपलब्ध होगा उतना ही उसके पृथुत्व (मुटाई) का माप समझना चाहिये। (४०० × ५६।१०)

ऊँचाईकी ५से गुणा करके ८०से भाग देने पर जितना लम्ब वधा हो उसमेंसे अपना १०वा अंग घटानेसे जो बचे उतने मापको अन्तर्भको अगाडी करना चाहिये। अन्तर्भ यदि समचतुरस्र या चोखुटा हो तो उसे रचक अष्टास्र या अठकोन ही तो बच, मोलह कोणवाला हो तो दिव्य यक्षीय कोणवाला हो तो पुनीनक और हताकार वा गोल ही तो उसे हत कहते

है। ये पांच प्रकारके स्थान उत्तम होते हैं। गृहस्वामी इनमेंसे जैसा चाहे वैसा स्तम्भ बनवा सकता है। इनके अलावा दूसरे प्रकारके स्तम्भ नहीं बनाने चाहिये।

विश्वकर्म प्रकाशमें मकानकी लम्बाई चौड़ाईके हिमावसे, उसका शुभाशुभ फल जाननेका तरीका इस प्रकार लिखा है—गृहके विस्तारको दैर्घ्यसे गुणा करके ८ से भाग करनेसे जो बचेगा, उसके अनुसार ध्वजादि आय होती है। अर्थात् ८से भाग करनेसे यदि १ बचे तो ध्वज, २ बचे तो धूम, ३ बचे तो हरि, ४ बचे तो कुक्कुट, ५ बचे तो गाय, ६ बचे तो गर्दभ, ७ बचे तो हस्ती, और ८ या शून्य बचे तो वायस नामक आय होती है। यह ध्वजादि आठो आय यथाक्रमसे पूर्वादि आठो दिशाओंमें अवस्थित हैं। अपने अपने स्थानसे पांचवां स्थान इनके लिये वैरी है। घरकी आय विषम होनेसे शुभफल और सम होनेसे शोक व दुःख होता है। अग्निशाला और अग्निजोवियोंके लिए धूम आय अच्छी होती है। किसी वास्तुशास्त्रीपट्टेष्टाका मत ऐसा भी है कि, नक्षत्रादि जातियोंके लिये कुक्कुर आय उत्तम होती है। वैश्योंके घरके लिये गर्दभ आय और शूद्रोंके घरके लिये काक आय अच्छी है। वृष, सिंह और गज नामक आयमें प्रासाद और पुरगृह बनवाने चाहिये। हस्ती आयमें वा ध्वज आयमें हस्तिशाला, गर्दभ, ध्वज और वृषभ आयमें बाजिशाला, गज वृष वा ध्वज आयमें पशुशाला बनवानेसे शुभ फल होता है। ब्राह्मणोंके लिये ध्वज आय अच्छी है। ब्राह्मणोंकी पूर्वकी तरफ द्वार करना चाहिये। क्षत्रियोंके लिये सिंह आय प्रशस्त है, दरवाजा उत्तरमें होना चाहिये। वैश्योंके लिए वृष आय शुभ है, दरवाजा दक्षिणमें करना चाहिये। सब आयोंमेंसे ध्वज आय ही सबसे श्रेष्ठ है। बृहस्पतिके मतानुसार ध्वज आय क्षत्रिय और वैश्योंके लिए प्रशस्त है। ब्राह्मणोंके लिए सिंह और वृषभ नामकी आय सर्वथा त्याज्य है। सिंह और कुक्कुर आयसे अल्प आयास, ध्वज आयसे पूर्ण सिद्धि, वृष आयसे पशुओंकी वृद्धि और गज आय होनेसे सम्पद की वृद्धि होती है। इसके सिवाय अन्यान्य आयोंसे दुःख और शोक होता है।

मकानके पिण्डाङ्गको ८से गुणा करके फिर ८से भाग

देनेसे जो अवशिष्ट बचेगा, उसके अनुसार आय होती है। उसी प्रकार पिण्डाङ्गको ८से गुणा कर फिर ७से भाग करके जो अवशिष्ट बचेगा, उसके अनुसार रवि, भास आदि वार होते हैं। पिण्डको ६से गुणा करके फिर उसको ८से भाग देनेसे अंग, ८से गुणा करके १२से भाग करनेसे धन, ३ द्वारा गुणा करके ८से भाग करनेसे ऋण वा व्यय, ८ द्वारा गुणा करके ७से भाग करनेसे नक्षत्र, ८से गुणा करके १५ द्वारा भाग देनेसे तिथि, ४ द्वारा गुणा कर २०से भाग करनेसे योग और गृहपिण्डके ८से गुणा करके फिर १२ द्वारा भाग करनेसे वर्ष जाना जाता है। (विश्वकर्म प्रकाश) इसका फल पौषधारामें एमा लिखा है कि—विषम आय शुभकारक और सम आय दुःख और शोकजनक होती है। सूर्य और मङ्गलके वार तथा राश्यंश अग्नि भयकर होते हैं। इसके सिवा दूसरे ग्रहोंके वार और राश्यंश अच्छे हैं। पहलेकी प्रक्रियाके अनुसार गृहका नक्षत्र यदि द्विराश्यात्मक हो तो मकान बनवाना चाहिये।

धन और ऋणका फल प्रक्रियाके अनुसार मकानके ऋणसे धन अधिक होनेसे धनकी वृद्धि होती है, पर धनसे ऋण ज्यादा होनेसे धनकी हानि होती है; इस लिए ऋण अधिक हो; तो घर न बनवाना चाहिये।

मलयफल—गृहका नक्षत्र गृहस्वामीके लिए विपत्ति कर तारा होनेसे विपत्ति, प्रत्यरि होनेसे अमङ्गल और निधनाख्य होनेसे गृहस्वामीकी मृत्यु हो जाती है। इन नक्षत्रोंमें घर न बनवाना चाहिये। क्योंकि ये नक्षत्र नाना उपद्रव्योंके कारण हैं। किसी किसी ज्योतिर्वेत्ताके मतसे जिस नक्षत्रमें गृहकार्य प्रारम्भ करना हो, वह नक्षत्र गृह नक्षत्रसे जितनी संख्यामें अवस्थित हो, उसको ८ से भाग करनेसे जो बचे उसके अनुसार जन्म सम्पद विपद तारा आदि होते हैं। इस नियमसे विपद, प्रत्यरि वा निधन तारा होनेसे उसदिन गृह नहीं बनाना चाहिये। इसके सिवा किसी किसी ज्योतिर्वेत्ताका यह भी कहना है कि, गृहकर्त्ताके नक्षत्रसे गृहनक्षत्रकी गणना करने पर जो संख्या होती है, उसको ८से भाग करनेसे जो अवशिष्ट बचे; उसके अनुसार जन्म आदि तारा होते हैं। घर और गृहस्वामीके एकसे नक्षत्र होनेसे स्वामीकी अकाल

मृत्यु होती है। परन्तु वगिष्ठने ऐसा लिखा है कि, गृह और गृहस्वामीकी एकमी राशि तथा एकसे नक्षत्र होनेसे ऐसा होता है। भिन्न भिन्न राशिमै एकसे नक्षत्र होने पर भी मकान बनाया जा सकता है। इसमें कोई तरहका विघ्न नहीं आता। व्यवहारसमुच्चयमें ऐसा लिखा है—कृत्तिका आदि तीन तीन नक्षत्रोंके यथाक्रमसे नौ फल होते हैं जैसे,—१ रोगनाश, २ पुत्रलाभ, ३ धनकी प्राप्ति, ४ शोक, ५ शत्रुका भय, ६ राजाका भय ७ मृत्यु, ८ सुख ९ प्रवास।

वास्तुशास्त्रके अनुसार मकानके नक्षत्र अश्विनो, भरणी और कृत्तिका होनेसे भयराशि, रोहिणी और मृगशिरा होनेसे वृषराशि आर्द्रा और पुनर्वसु होनेसे मिथुनराशि, पुष्या और अश्लेषा होनेसे कर्कट राशि, मघा पुष्यफाल्गुनी और उत्तरफाल्गुनी होनेसे सिंह राशि, ज्येष्ठा और चित्रा होनेसे कन्या स्वाती और विशाखा होनेसे तुला, अनुराधा और श्रीर ज्येष्ठा होनेसे वृश्चिक, मूला, पूर्वाषाढा और उत्तराषाढा होनेसे धनु, श्रवणा और धनिष्ठा होने पर भकर, शतभिषा और पूर्वभाद्र होनेसे कुम्भ तथा उत्तरभाद्र और रेवती नक्षत्र होनेसे मकानकी मीनराशि होती है।

तिथिका धर—पूर्व प्रक्रियाके अनुसार घरकी तिथि रिक्ता वा अमावस्या होनेसे घर न बनाना चाहिये। इसके अलावा दूमरी तिथियोंमें घर बनानेसे मङ्गल होता है।

योगका धर—जो योग शुभ करे गए हैं घरके लिए वेही योग शुभ है। अशुभ योग होनेसे अमङ्गल होता है।

चतुष्पातन—प्रक्रियाके अनुसार जितने वर्ष को पायु निकलनेको उतने वर्ष तक मकानको स्थित समझना चाहिये।

महाकाय—द्वितीय अश्विन गृह बनानेसे मृत्युका भय, रोग और शोक उत्पन्न होते हैं। शुभग्रहके अशुकी दृष्ट्या और अशुभग्रहके अशुकी अनिष्टकार समझना चाहिये।

इमी नियमके अनुसार घरका आय व्यय आदि ज्ञानके तासोका—कोई एक घर लम्बाईमें २८ हाथ और विस्तार में ७ हाथ है, तो उसको लम्बाई २८ हाथकी विस्तार ७ हाथमें गुणा करनेमें २०३ होगा। यह घरका पिण्ड ८५। पिण्ड २०३को ८से गुणा करनेमें १८०७ होगा, इसको ८से भाग करनेमें बाकी बचेगा ३। इसलिये उस घरकी मिह नामक ३री आय हुई है।

५१—पिण्ड २०३को ८से गुणा करनेमें १८२७ होगा, उसको ७से भाग देनेसे बाकी ७ या शून्य बचेगा। इस प्रकार उभ घरका शनिवार हुआ। (नवाग्रक) पिण्ड २०३को ६से गुणा करनेमें १२१८ होता है, इसको ८से भाग करना चाहिये, बाकी बचेगा ३। इस प्रकार उस घरका अशुक्र ३ हुआ।

५२—पिण्ड २०३ × ८ = १६२४ - १२ अवशिष्ट बचा ४। मकानका धन हुआ ४।

५३—पिण्ड २०३ × ३ = ६०९ - ८ = ७६ बाकी ४ चा। इस प्रकार घरका ऋण १ हुआ।

५४—पिण्ड २०३ × ८ = १६२४ - २७ = ६० बाकी बचा ४। गृहका नक्षत्र रोहिणी।

तिथि—पिण्ड २०३ × ८ = १६२४ - १५ = १०८ अवशिष्ट रहा ४। गृहकी तिथि चतुर्थी हुई।

योग—पिण्ड २०३ × ४ = ८१२ - २७ = ३० बाकी बचा २। घरका योग प्रीति है।

५५—पिण्ड २०३ × ८ = १६२४ - १२० = १३ बाकी बचा ६४। मकानकी आय ६४ वर्षकी हुई।

विश्वकर्म प्रकाशके मतानुसार ११ हाथसे लेकर ३२ हाथ तक ही आयादिकी चिन्ता करने चाहिये। इससे ज्यादा होने पर आयादिकी चिन्ता करना व्यर्थ है। घरकी मरम्मत करते समय आय, व्यय वा मास शदि आदि देखनेकी जरूरत नहीं। वालुके ईशान कोणमें टिवगृह, पूर्वमें स्नानागार, अग्निकोणमें रसोई घर, दक्षिणमें शयनागार, नैर्ऋत त कोणमें अन्नखाना, पश्चिमको और भोजन गृह, वायुकोणमें धान्यालय, उत्तरमें भाण्डागार, अग्नि कोण और पूर्व दिशाके बीचमें दक्षिणमध्यघर, अग्निकोण और दक्षिण दिशाके बीचमें दृशगाना तथा दक्षिण और नैर्ऋत दिशाके मध्य भागम पायुघर वा पैखाना करना चाहिये। नैर्ऋत और पश्चिमके बीचमें विद्यालय, पश्चिम और वायु कोणके मध्यमें रोदनघर वायु और उत्तर दिशाके बीचमें रतिघर वा बैठक; उत्तर और ईशान कोणके मध्यमें श्रीय धान्य, ईशान और पूर्व दिशाके मध्य भागमें अन्नान्य घर बनाने चाहिये। मृत्तिकाघर नैर्ऋत कोणमें बनाना उचित है।

श्रीगन और दरवाजेके भेटमें घर १६ प्रकारका होता है।

१३—यह ऊर्ध्व मुख होता है। इसके किसी भी तरफ आँगन नहीं रखना चाहिये। ऐसे घरमें गृहस्थकी धन, धान्य और सुखकी वृद्धि होती है।

१४—इसका आँगन और द्वार पूर्व दिशामें रखना चाहिये। इसमें धान्यकी वृद्धि होती है।

१५—इसका दरवाजा दक्षिणकी ओर होता है। इसका आँगन भी दक्षिण दिशामें करना चाहिये। इस घरमें रहनेवाला सर्वत्र विजय लाभ करता है।

१६—इसमें पूर्व और दक्षिणमें दो दरवाजे करना चाहिये, और दोनों ओर दो आँगन भी। इसमें गृहिणीकी अकालमृत्यु होती है।

१७—जिस घरका दरवाजा और आँगन पश्चिम दिशामें हो, वह खर कहलाता है। इससे धननाश होता है।

१८—जिस घरमें पूर्व और पश्चिममें दो द्वार तथा दो आँगन रहते हैं। उसे कान्तक कहते हैं। फल—पुत्र और पौत्रकी वृद्धि।

१९—जिस घरमें दक्षिण और पश्चिममें दो दरवाजे तथा दो आँगन होते हैं, वह मनोरम है। फल—धनकी वृद्धि।

२०—जिस घरमें पूर्व पश्चिम और दक्षिणमें तीन दरवाजे तथा तीन आँगन हों, वह सुसुख कहलाता है। फल—भोगोंकी वृद्धि।

२१—जिस मकानका दरवाजा और आँगन उत्तर दिशामें हो, उसको दुर्मुख कहते हैं। इसका फल—विमुखता है।

२२—जिस गृहमें पूर्व और उत्तरमें दो दरवाजे और दो आँगन हों, वह क्रूर कहलाता है। इसमें रहनेवालेको सब तरहका कष्ट रहता है।

२३—जिस घरमें दक्षिण और उत्तरमें दो द्वार और दो आँगन हों, उसे विपन्न कहते हैं। इसमें शत्रु का भय रहता है।

२४—जिस मकानमें पूर्व, दक्षिण और उत्तरमें तीन तीन दरवाजे और आँगन हों, वह धनद कहलावेगा। इसमें धनकी वृद्धि होती है।

२५—जिस घरके पश्चिम और दक्षिणमें दो द्वार

तथा दो आँगन हों, उसका नाम त्र्यगृह है। इसमें रहनेवालेका सर्वस्वनाश होता है।

२६—जिस गृहमें पूर्व, पश्चिम और उत्तर दिशामें तीन तीन दरवाजे और आँगन हों, उस घरकी ऋषिगणोंमें आक्रन्द नामसे उल्लेख किया है। इसका फल—शोकप्राप्ति है।

२७—जिस घरमें दक्षिण, पश्चिम और उत्तरमें तीन तीन दरवाजे तथा आँगन हों, वह विपुल नामसे उल्लिखित होगा। इसमें वाम करनेवाला विपुल अर्थ लाभ करेगा।

२८—इसमें चारों तरफ दरवाजे और आँगन होते हैं। सब मकानोंमें यही अष्ट होता है। फल—विजयलाभ।

विश्वकर्मके मतसे—वास्तुकी ऊँचाई विस्तारके समान करना चाहिये। परन्तु यदि एकशाल (एक मजला) मकान करना हो, तो उसकी ऊँचाई विस्तारसे दूनी होनी चाहिये। इस प्रकार चतुर्शाल गृहकी ऊँचाई और व्यास समान करना चाहिये। एकमजले मकानकी विस्तारसे दूनी लम्बाई और विस्तारके बराबर ऊँचाई करनेसे भी काम चल सकता है। दुमजले घरकी दूनी, ति-मजलेकी तिसुनी, चौ मजलेकी पांचसुनी ऊँचाई करनी चाहिये। इससे ज्यादा ऊँचाई कदापि नहीं करना चाहिये।

किसो मकानमें यदि एक ही कमरा बनवाना हो, तो नागशुद्धि रहने पर उत्तरवालाके सिवाय दूसरी कोई भी शाला बनाई जा सकती है। परन्तु एकमजले मकानमें उत्तरशाला नहीं बनवानी चाहिये। ऐसे ही द्विशाल बनवाना हो तो दक्षिण और पश्चिममें तथा त्रिशाला बनवाना हो, तो दक्षिण पश्चिम और उत्तरमें अथवा पूर्व दक्षिण और पश्चिममें तीन घर बनवाने चाहिये।

पराशरका कहना है कि जिस वास्तुमें घर बनाने हों उसकी पूर्वसीमासे लेकर पश्चिम सीमा तकको पांच भागोंमें विभक्त करना चाहिये। उनमेंसे पूर्वकी तरफके पहले तीन भागोंको छोड़ कर चौथे भागको नाभि कहते हैं। उस जगहमें घर नहीं बनवाना चाहिये।

विश्वकर्मप्रकाशके मतसे—ब्राह्मणको एक मजला

दक्षिणको ति मजना, वैश्यको दु-मजना और शूद्रको एकमजना मकान बनवाना चाहिये। एकमजना मकान सबहीके लिए अच्छा है। इसमें किमोका भी अमङ्गल नहीं होता।

हृत्क जित्तामें जिस प्रकार प्रत्येकके लिए गृहका परिमाण लिखा है, वैसा विश्वकर्म प्रकाश और मयशिव आदिमें नही है। इसके मतसे प्रक्रियाके अनुसार आय, व्यय, वार और नचल आदि शुद्ध होने पर मकान बनाया जा सकता है। इसके सिवाय किमके लिए कौसा मकान अच्छा होता है, इसका सत्प्रि वर्णन भी लिखा है। हृत्क जित्तामें लिखा है कि—जिस वास्तुका आगन प्रदक्षिण क्रमसे दरवाजेके नीचे तक विस्तृत है, उसका नाम वर्द्धमान है। उसका दरवाजा दक्षिण दिशामें नही होना चाहिये। वर्द्धमान नामका मकान सबके लिए अच्छा है।

जिस मकानके पश्चिमका एक और पूर्वका दो आंगन आवीरतक विस्तोर्ण होते हैं, और बाकीके दो दिशाओंके आंगन उल्यित तथा शेष पर्यंत विस्तृत होते हैं, उसे स्वरितक कहते हैं।

जिस मकानके पूर्व और पश्चिमके आंगन शेष सीमा तक विस्तृत है तथा उत्तर और दक्षिण आंगन उनको सीमाको अवधिमें मिल गये हैं, उस वास्तुका नाम रुचक है। इसका द्वार उत्तर दिशामें करनेमें अमङ्गल होता है।

जिस वास्तुके आंगन प्रदक्षिणक्रमसे नीचे तक विस्तृत है उसका नाम गम्भावर्त्त है। इस मकानमें पश्चिमके सिवाय और तीन दिशाधर्मि दरवाजे बनवाने चाहिये। गम्भावर्त्त और बर्द्धमान नामके वास्तु सबहीके लिए प्रगम्भ वा उत्तम हैं, स्वस्तिक और रुचिक मध्यम तथा इसके अनायास दूरसे वास्तु राजाधिकि वास्तु शुभ होते हैं।

जिस मकानमें उत्तरको तरफ शाला नहीं रहती, उसे हिरण्यमान, पूर्वमें शाला न होनेसे सुनक, दक्षिणको तरफ शाला न रहनेसे शुक्लीविशालरु और पश्चिममें शाला न होनेसे पद्मन्न कहते हैं। इनमें पद्मनेके दो शुभ हैं। शुक्लीविशालरुमें धननाश और पद्मनेमें पुत्रनाश तथा शत्रुता बढ़ती है। जिस मकानमें पश्चिम और दक्षिणमें दो ही शालाएँ रहती हैं, उसका मिदार्थ, सिर्फ पश्चिम

और उत्तरमें शाला रहनेसे यमसूर्य, उत्तर और पूर्वमें शाला रहनेसे दण्ड, पूर्व और दक्षिणमें शाला रहनेसे बाल, पूर्व और पश्चिमकी और शाला रहनेसे घरसुखी, तथा सिर्फ दक्षिण और उत्तरको और शाला विविष्ट दु-मजले मकानको काच कहते हैं। मिदार्थ वास्तुमें धन की प्राप्ति, यमसूर्यमें मालिककी मृत्यु, दण्डमें दण्ड या बध वातमें कलह और उद्देग, सुखीमें द्रव्यका नाश, और काच वास्तुमें जातिविरोध उपस्थित होता है।

(गृहण ० २११२ २१)

विश्वकर्मप्रकाशके मतमें—दक्षिणमें दुर्मुख और पूर्वमें खर नामक वास्तु बनवानेसे उस दुमजले मकानको 'वात' कहते हैं। ऐसे घरमें वास करनेसे वातरोगकी वृद्धि होती है। दक्षिणमें दुर्मुख और पश्चिममें धान्य नामक मकान बनवानेसे उसका नाम होगा यमसूर्य। इसमें मृत्युका भय है। पूर्वमें खर और उत्तरमें धान्य नामके घर बनवानेमें उसको दण्ड मज्ञा होगी। इसमें दण्डका भय रहेगा। दक्षिणमें दुर्मुख और उत्तरमें जय नामके घर बनवानेसे उसकी नाम बीची होगी। इसमें वस्तुका विनाश और धनका चय है। जिसके पूर्वमें खर नामक घर और पश्चिममें धान्य मज्ञक घर है, उसका नाम सुखी है। फल—धन धान्यका नाश है। दक्षिणमें धाकद और पश्चिममें धनद घर बनवानेसे, उस दुमजले मकानका इत्तु नाम होगा। इसमें पशु और धनकी वृद्धि होती है। जिसके दक्षिणमें विपन्न और पश्चिममें क्रूर नामक घर रहे, तो उसका नाम शोभन समझना चाहिये। इसका फल—धन और धायकी वृद्धि है। जिस मकानमें दक्षिणकी और विजय और पश्चिमकी तरफ भी विजय नामक घर रहेगा उसका नाम कुम्भ होगा। इसमें रहने वालेके पुत्र और कलत्रकी वृद्धि होगी। जिसके पूर्वमें धान्य और पश्चिममें भी धान्य मज्ञक घर रहेगा उसका नाम नन्द है, फल—धन और शोभावृद्धि। किमी भी दो दिशा में विजय नामके दो घर बनवानेमें उसका नाम पद्माय होगा। इसका शुभ फल है। वास्तुकी नौ भागोंमें विभक्त करके उनके शुभाशुभकी चिन्ता करनेको चाहिये।

(२११२ २२)

जिन वृक्षोंमें दूध या गोंद पैदा होता है, उसकी

लकड़ीसे मकानका कोई भी काम न लेना चाहिये । जिस पेड़ पर चिड़ियोंका घोंसला हो, उसकी लकड़ी भी मकानके काममें न लेना चाहिये । गजभग्न, विद्युत्, निर्घात अनल वा वायुसे पीड़ित चैत्य अथवा देवालयेसे उत्पन्न वज्रभग्न श्मशानजात देवाश्रित कदम्ब, नीम, बहेड़ा, कण्टकयुक्त वृक्ष, अमार, बड़, पीपर, 'नर्गु' गडो, कीविदार प्लक्ष, शाल्मली और पलास इन सब वृक्षोंकी लकड़ियोंसे भी घरका कार्य न लेना चाहिये ।

नागका शिरोज्ञान करके जिस स्थान पर घर बनवाये किंसी तरहके असंगलकी सम्भावना न हो, वहाँ ही गृह निर्माण कराना चाहिये ।

वैशाख, आवण, आषाढ़, अगहन, फाल्गुन और कार्तिक इन मासोंमें घर बनवाना अच्छा है । शुक्लपक्षमें गृहारम्भ करनेसे सुख और कृष्णपक्षमें भय होता है । रवि और मङ्गलवारके सिवा अन्य वारोंमें घर बनवाना प्रारम्भ करना प्रशस्त है । पूर्णिमासे अष्टमी तक पूर्व द्वारी घर, नवमीसे चतुर्दशीके भीतर उत्तरद्वारी, अमावस्यासे शुक्ल अष्टमीके भीतर पश्चिमद्वारी और शुक्ल नवमीसे चतुर्दशीके भीतर दक्षिणद्वारी घर नहीं बनवाना चाहिये । वज्र, व्याघात, शून्य, व्यतिपात, अतिगण्ड, विष्कुम्भ और गण्ड ये सब योग गृहारम्भमें वर्जनीय है । अदित्यहय, रोहिणी, मृगशिरा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, उत्तराश्रय, रेवती, मघा, अनुराधा अथवा श्रवणा नक्षत्रमें, शुभ वारमें, गण्डके सिवा दूसरे योगमें, रिक्ता और विष्टिके सिवा दूसरी तिथिमें गृहारम्भ करनेसे मङ्गल होता है ।

वृश्चिक, कर्कट, मेष, कुम्भ, और धनु लग्नमें गृहारम्भ करनेसे कार्यमें विलम्ब तथा कन्या मीन और मिथुन लग्नमें गृहारम्भ करनेसे अर्थलाभ होता है किंसी किंसी ज्योतिर्विदके मतसे कुम्भ, सिंह और वृष लग्नमें गृहारम्भ करनेसे वृद्धि होती है—ऐसा भी है । गृहारम्भके जो जो नक्षत्र बतलाये गये हैं, उनमेंसे ज्येष्ठा और पुनर्वसुके सिवाय दूसरे नक्षत्रोंमें गृहप्रवेश किया जा सकता है । कन्या, कुम्भ, वृष, वृश्चिक, सिंह और मिथुन लग्नमें, तथा शुक्र, बृहस्पति सोम और बुध वारमें गृहप्रवेश करना शुभ है । (युक्तिरूपतः)

विश्वकर्म प्रकाशके मतानुसार—चैत्रमासमें गृहारम्भ

करनेसे व्याधि, वैशाखमें धनरत्न, ज्येष्ठमें मृत्यु, आषाढ़में मृत्यु और धनलाभ, आवणमें मित्रलाभ, भाद्रपदमें हानि, आश्विनमें युद्ध, कार्तिकमें धन और धान्य वृद्धि; अगहनमें धनलाभ, पौषमें चोरभय, माघमें अग्निभय और फाल्गुण मासमें लक्ष्मीवृद्धि होती है । (विश्वकर्मप्रकाश २५०)

गरुड़पुराणमें ऐसा लिखा है,—वास्तुपुरुष वाई' तरफ सोते है और तीन तीन महीने वाट एक दिशासे दूमरी दिशामें चले जाते है । इनकी गोदमें मकान बनवाना प्रशस्त है । सिंह, कन्या और तुलाराशिमें उत्तरद्वारी और वाकीके यथाक्रमसे वृश्चिक आदि तीन तीन राशिमें पूर्व, दक्षिण और पश्चिमद्वारे मकान बनाये जा सकते है । दरवाजकी लम्बाईसे चौड़ाई आधी करनी चाहिये । दिशाओंके भेदसे मकानके आठ प्रकारके दरवाजे होते है । दक्षिणद्वारमें वीर्यहानि, अग्नि दिशाके द्वारसे बन्धन, वायुकोणके द्वारसे पुत्रलाभ और सन्तोष, उत्तरके द्वारसे राजपीड़ा, बन्धन और रोग, पश्चिमद्वारसे राजभय, मन्ताननाश और विरोध तथा पूर्व द्वारसे अग्निभय, बहुकन्या, धन, सम्मान राजनाश और रोग होता है । ईशान दिशाके दरवाजेसे पूर्वदरवाजे मरीखा और नैऋतिके द्वारसे पश्चिमद्वार जैसा फल होता है । (गरुड़पुराण ४६५०) गृह प्रारम्भ करते समय याग और वास्तुपुरुषकी पूजा आदि करनी पड़ती है ।

वास्तुपुरुष और वास्तुविद्या ग्रन्थमें इसका विशेष विवरण देखना चाहिये ।

वृहस्पतिहितामें ऐसा लिखा है—वास्तु यदि पूर्व और उत्तरमें जंचा हो तो धन क्षय और पुत्रनाश होता है । दुर्गन्ध युक्त होनेसे पुत्रनाश, टेढ़ा होनेसे वन्धुनाश और टिकस्रमसे मकानबने तो नारीगणका वंशनाश होता है । वासभवनके चारों तरफ समानभावसे भूमि वर्द्धन करनेसे समस्त पदार्थोंकी वृद्धि होगी । यदि किसी भी कारणसे एक तरफ भूमि वर्द्धित करनेकी आवश्यकता पड़े तो पूर्व या उत्तरमें बढ़ा सकते है । वास्तुकी पूर्व आदि दिशा जलपूर्ण रहनेसे यथाक्रमसे सुतहानि, अग्निभय, शत्रुभय, स्त्रीकलह, स्त्रीटोप, निधन, धनवृद्धि और पुत्रवृद्धि ऐसे आठ फल होते हैं । मकानके कामके लिये वृक्ष छेदन करना ही, तो एक दिन पहिले वृक्षकी पूजा आदि करके, दूसरे दिन सुबह प्रदक्षिणपूर्वक वृक्षच्छेदन करना

उचित है। कटा हुआ हृत्त यदि उत्तर या पूर्व दिशा-
में गिरे, तो उसे शुभ समझना चाहिये। इसके अलावा
दूसरी दिशाश्रीमि गिरनेवाले हृत्तकी लकड़ीको अशुभ
जानना, ऐसी लकड़ी मकानमें लगाने लायक नहीं। पेड-
को काटने पर यदि उस काटी हुई जगहका वर्षा विवर्ण
न हुआ, तो उस लकड़ीको मकानके निचो उपयोगी सम-
झना चाहिये। काटने बाद यदि हृत्तका सार भाग
वर्णान्तरकी प्राप्ति हो जाय, तो उस लकड़ीसे मकान नहीं
बनवाना चाहिये। घरमें प्रवेश करके अनाज, गो, गुरु,
अग्नि वा देवताके कचे स्थान पर न सोना चाहिये।
जहा बांस या सोटे पडों हों, उससे नोचे सोना निषिद्ध है।

प्राचीन ऋषिगण प्रामाद एकमञ्जल, दुम जन, ति
मञ्जल आदि मकान किस प्रकारसे बनाना चाहिये और
किस प्रकारसे घरके खंभ, सभिया और भीतें आदि
बनानी चाहिये, इसके अर्च्छे अर्च्छे नियम बना कर
लिपिबद्ध कर गये हैं। उन्हीं नियमोंके अनुसार पहिले
मकान बना करते थे। शशाद और शशादि ३ आदि मन्त्र देखा।

२ कलव, भार्या वा स्त्री। ३ नाम। ४ मेपादि
राशि।

गृह कच्छप (सं पु०) गृहे कच्छप इव। पेषण शिना,
पीमनेका पत्थर।

गृहकन्या (सं स्त्री०) एक तरहका पौधा, छतकुमारो,
घोकुवार, ग्वारपाठा।

गृहकपोत (सं पु० स्त्री०) गृहे स्थित कपोत। पक्षी
विशेष घरान् या पोसाज कब्रतर।

गृहकरण (सं स्त्री०) घरका काम।

गृहकर्तृ (सं स्त्री०) गृह करोति कृत्स्व। १ घरकारक,
घरबनानेवाला। २ एक तरहका पक्षी, चटक, गौरैया।
(Sparrow) इसका पर्याय—धानमक्षण, चम, भोर,
छपिदिट, कणमिय है।

गृहकर्मन् (सं स्त्री०) गृहस्य कर्म, इ तत्। १ घर
निर्माण। २ गृहकार्य।

गृहकर्मदास (सं पु०) गृहकर्मणो दास, इ तत्।
गृहकर्मका भृत्य, जिस नौकरके ऊपर घरका कार्य भार
पड़ता है।

गृहकलह (सं पु०) गृहे कलह, इ तत्। गृहविरोध,
घरका भगड़ा।

गृहकारक (सं पु०) गृह करोति कृत्स्व, इ तत्।
१ वर्णसङ्कर जातिविशेष। पराशर पद्धतिमें लिखा है
कि कुम्भकारकके औरससे नापितकन्याके गर्भमें इसजाति-
की उत्पत्ति हुई है। (त्रि०) २ गृहनिर्माणकर्त्ता,
घरका बनानेवाला।

गृहकारिन् (सं स्त्री०) गृह करोति कृत्स्व। १ गृह-
कारक, घरका बनानेवाला। (पु०) २ एक तरहका
कीट।

गृहकार्य (सं स्त्री०) गृहस्य कार्य इ तत्। गृहकर्म,
घरका कामकाज।

गृहकुक्कुट (सं पु० स्त्री०) गृहे रुद्ध कुक्कुट। गृह-
पालित कुक्कुट, घरसुर्गा।

गृहकुमारो (सं स्त्री०) छतकुमारो, ग्वारपाठा, घोकुवार।
गृहकुलिङ्ग (सं पु०) गृहे पृष्ठ कुलिङ्ग। पक्षीविशेष,
गृहचटक, एक तरहकी चिडिया, घरान् गौरैया। इसके
मासका गुण—रक्तपित्तनाशक और शूलहृदिकर है।

गृहकूलक (सं पु०) गृहस्य कूले समीपे भव गृहकूल
कन्। कागाक। चिचिण्डा, चचीडा।

गृहकृत्य (सं स्त्री०) गृहस्य कृत्य, इ तत्। गृहकार्य,
घरका काम।

गृहगोधा (सं स्त्री०) गृहस्यगोधिव। ज्येष्ठी, क्षिप्रकनो,
टिकटिकिया। इसका पर्याय—पक्षी, सुमनो, विष्वम्बरा,
ज्येष्ठा, कुम्भटम्य, पन्निका, गृहगोधिका, गृहगोलिका,
माणिक्या, मित्तिका, गृहगोलिका।

गृहगोधिका (सं स्त्री०) चतुरा गोधा श्रमार्थं कन् टाप्
शत इत्य गृहस्य गोधिकेय। ज्येष्ठो, क्षिप्रकनो।

गृहगोमक (सं पु०) गृहस्थित गोमोक इव। पुत्रातीय
टिकटिकी, क्षिप्रकनो।

गृहगोलिका (सं स्त्री०) गृहे गोधिका इव प्रयोदरादि-
त्वात् धकारस्य लकार। ज्येष्ठो, घरान् क्षिप्रकनो।

गृहघ्नो (सं स्त्री०) गृह इन् डोप्। गृहनाशिका स्त्री,
घरकी नष्ट करनेवाला स्त्री।

गृहचटक (सं पु०) गृहस्थित चटक। पक्षीविशेष,
घरान् गौरैया पक्षी।

गृहचुष्टी (सं स्त्री०) गृहाणां चुष्टीय। दो घरबाना
मकान, दो ऐसे कीठरो जिनमें एकका मुख पश्चिमको
और और दूसरेका पूर्वको धोर हो।

गृहच्छिद्र (सं० स्त्री०) गृहस्य च्छिद्रं, ङ-तत् । गृहका च्छिद्र, घरका दीप, कलङ्क ।

गृहज (सं० पु०) गृहे दास्यं जायते गृह-जन-ड । मनुकथित सात प्रकारके टामोंमेंसे एक, टासीपुत्र ।

सं० ८१५

गृहजात (सं० त्रि०) गृहे जातः, ७-तत् । गृहोत्पन्न, जो घरमें उत्पन्न होता है ।

गृहजालिका (सं० स्त्री०) कपटता, कल, धूर्तता ।

गृहणी (सं० स्त्री०) १ काञ्जिक, काँजी । २ पलाण्डु, पियाज ।

गृहतटी (सं० स्त्री०) द्वारपिंडी, गृहावग्रहणो, घरके सामनेकी चबुतरा ।

गृहदाम (सं० पु०) गृहस्य दासः, ङ-तत् । गृहभृत्य, घरका नौकर ।

गृहदाह (सं० पु०) गृहस्य दाहः, ङ-तत् । घरका जलना ।

गृहदीप्ति (सं० स्त्री०) गृहस्य दीप्ति, ङ-तत् । १ घरकी शोभा । २ साध्वी स्त्री ।

गृहदेवता (सं० स्त्री०) गृहे वासी स्थिता देवता । १ वास्तु पुरुषके देहस्थित अग्नि प्रभृति ४५ देवता । २ घरकी देवता ।

गृहदेवी (सं० स्त्री०) गृहे गृहकाले विलिख्य पूजा देवी । एक राक्षसी, जिसका दूसरा नाम जरा है । जो घरकी भीत पर इसकी मूर्ति अङ्कित कर भक्तिपूर्वक पूजा करता है 'जरा' उसे किसी प्रकारका अनिष्ट नहीं पहुँचाता । यह राक्षसी मनुष्यके गृहमें वास करती जान कर इसका नाम गृहदेवी पढ़ा । जरा देखो ।

गृहद्रुम (सं० पु०) गृहमिव द्रुमः । १ मींद्रुम्लोच्छ । २ शाकवृक्षभेद, सोहञ्जिनिका पेड़ ।

गृहद्वार (सं० स्त्री०) गृहस्य द्वारं, ङ-तत् । घरका दरवाजा ।

गृहधूम (सं० पु०) गृहगतो धूमः, मध्यपदलो० । १ घरकी दीवार या छतमें धूँआँ लगनेसे एक तरहके काले रोगका पदार्थ लग जाता है उसीको गृहधूम कहते हैं, जाला । २ एक तरहका वृक्ष ।

गृहधूमार्थतैल (सं० स्त्री०) नासारोगका तैल । तिल-तैलके ६० तोलमें जाला; पीपर, दारुहरिद्रा, यवचार,

करञ्जबीज, सैन्धव, ब्राह्मण्यष्टिका बीज प्रत्येकके दो तोले ४ मासे ६ रत्तीकी दूर्ण कर मिला देनेसे उक्त तैल प्रस्तुत होता है ।

गृहनमन (सं० स्त्री०) गृहं नमयति नम गिच्-ल्यु । वायु, हवा ।

गृहनरक (सं० स्त्री०) गृहस्य नरकं, ङ-तत् । गृहके अपरि-सूत स्थान, वह स्थान जहाँ उच्छिष्ट पदार्थ फेंका जाता है ।

गृहनाशन (सं० पु०-स्त्री०) गृहं नाशयति नश-गिच्-ल्यु । कपोत, कबूतर ।

गृहनोड (सं० पु०-स्त्री०) गृहे नोडमस्य बहुव्री० चटक पत्नी, गोरैया ।

गृहप (सं० पु०) गृहं पारति पा-क । १ गृहपालक, घरका मालिक । २ घरका रक्षक, चाँकीदार । ३ कुत्ता । ४ अग्नि, आग ।

गृहपति (सं० पु०) गृहस्य, पतिः, ङ-तत् । गृहस्य हितो-यायमावलम्बी, वह जो गार्हस्थ्य धर्मके दूसरे आयममें हो, गृहस्थ । २ मन्त्री । ३ धर्म । ४ यजमान । ५ यजमान जो योगका अनुष्ठान करता है । ६ अग्निविशेष । ७ (पु० स्त्री०) गृहस्वामो, घरका मालिक ।

गृहपत्नी (सं० स्त्री०) गृहस्य पतिः, ङ-तत् । गृहपति स्त्रीषु विकल्पे नान्तादेशः । विभाषा स पूर्वस्य । सं० ४१२ ३४ । गृहपालिका पत्नी, घरकी रक्षा करनेवाली ।

गृहपशु (सं० पु०) कुक्कुर, कुत्ता ।

गृहपाल (सं० त्रि०) गृहं पालयति गृह-पालि-अण् । १ गृहरक्षक, जो घरकी रखवाली करता हो । (पु० स्त्री०) गृहे पाल्यतेऽसौ पालि-अच् । २ कुक्कुर, कुत्ता ।

गृहपुत्रिका (सं० स्त्री०) घृतकुमारी, घीकुवार, स्वारपाठा । गृहपोतक (सं० पु०) गृहे पीतः शिशुरिव यस्य, बहुव्री० कप् । वास्तु, वास, रहनेका स्थान ।

गृहप्रवेश (सं० पु०) गृहे प्रवेशः, ङ-तत् । १ नये घरके तैयार हो जाने पर शुभदिन और शुभनक्षत्रमें होमादि अनुष्ठान करके उसमें जाना । २ घरके भीतर जाना ।

गृहवम्भु (सं० पु०-स्त्री०) गृहस्थितो वम्भु । गृहस्थित नकुल, नेवला ।

गृहवलि (स० पु०) गृहे देयो वलि । गृहका अनुष्ठेय वलिकाम, वैश्वदेव काम ।

गृहवलिप्रिय (स० पु०) गृहवलिप्रियोऽस्य, बहुधो० । १ वक पक्षी वगुला । २ चटक, गोरैया । ३ काक, कोवा ।

गृहवलिभुज् (स० पु० स्त्री०) गृहे दत्त वलि अन्नादि मन्त्रद्रव्य भुङ्क्ते, भुज् क्तिप् । १ काक, कोवा । २ चटक गोरैया ।

गृहभङ्ग (स० पु०) गृहस्य भङ्ग, ६ तत् । १ वरु मनुष्य जो घरमे वसिष्कृत किया गया हो २ गृहको जोर्णता, घरका तहम नहम नना । ३ किषी मनुष्यको अवनति । गृहभञ्जन (स० स्त्री०) गृहस्य भञ्जन, ६ तत् । गृहभङ्गा, वर्षादिसे घरकी बरबादी ।

गृहमत् (स० त्रि०) गृहस्य भर्ता, ६ तत् । गृहस्वामो, घरका मानिक ।

गृहभूमि (स० स्त्री०) गृहस्य योग्या भूमि । वासुभूमि, वामकरने योग्य जमीन । गृहभूमि ।

गृहभेदिन (स० त्रि०) गृह भिनत्ति गृह भिद् णिनि । गृह भेदकारक, घरमें लडाइ करिवाला ।

गृहभोनिन (स० त्रि०) गृहे भोक्त गोलमस्य भुज णिनि । घरके मनुष्य, एक परिवारके आदमी ।

गृहमणि (स० पु०) गृहस्य मणिरिव । प्रदीप, दीपक, चिराग ।

गृहमाचिका (स० स्त्री०) गृह मचते गुणभावेन तिष्ठति मच ग्व्, लुटाप, अत इत्वच् । चर्मचटी, चमगादड ।

गृहमुधधी (स० त्रि०) गृहचिन्तामे पीडित ।

गृहभृग (स० पु० स्त्री०) गृहे भृग इव । कुकुर, कुत्ता ।

गृहमघ (स० पु०) गृहमभूह, घरको पक्ति ।

गृहमध (स० पु०) गृहेण दारै र्मेधते मगच्छते मेध अच् ३ तत् । १ वरु जिनने स्त्रीको ग्रहण किया है, गृहस्थ । निध हिमायां भावे घञ् । २ पशुना रूपमे हिमा, पशुके जीवनको नष्ट करनेके लिये प्रत्येक मनुष्यके घरमे पांच अक्ष मदा मोजूद रहते हैं । यथा—अग्निको जगह भाड भूगल, उखनो भोर पानाजा बरतन । उसोको पशुना कहते हैं । गृहे मेधा हिमाहेतुको यज्ञो यम्य, बहुधी० । ३ जिनने घरमें पशुयज्ञका अनुष्ठान किया है । गृहे कर्तव्यो यज्ञो यम्य, बहुधी० । ४ देवताविशेष । (च० १.१०१०)

गृहमेधिन (स० पु०) गृहेण दारै र्मेधते मगच्छते मेध णिनि । १ गृहस्थ । २ मरुत्वविशेष, चायु, हवा ।

गृहमेध (स० त्रि०) गृहमेधो देवतास्य गृहमेध यत् । गृहमेधि देवताओंको देने योग्य हवि प्रभृति, घरके देवताओंको हो अनाज इत्यादिका नैवेद्य ।

गृहयन्त्र (स० स्त्री०) गृहे यन्त्र ७ तत । गृहस्थित काठादि निर्मित वस्त्र रखनेका आधारविशेष, कपडादि रखनेके लिये लकडिकी बनी बूटी ।

गृहयाय्य (स० त्रि०) गृहयते गृह णिच् आय्य । गृहस्थ ।

गृहयालु (स० त्रि०) गृहयते गुह्राति । गृह णिच् आलु । ग्रहीता, याहक, ग्रहण करनेवाला ।

गृहराज (स० पु०) गृहाणा राजा, ६ तत् । अष्ट गृह, बडा घर ।

गृहलक्ष्मो (स० स्त्री०) गृहस्य लक्ष्मीरिव । सुगोला, सच्च रिवा स्त्री, सुलक्षणा शेरत ।

गृहवाटिका (स० स्त्री०) गृहसमीपे वाटिका इव प्याराम । गृहके निकटवर्ती उपवन घरके नजदीकीका उद्यान ।

गृहवास (स० पु०) गृहसा वास ६ तत् । १ घरका वास । २ गृहस्थ धर्म ।

गृहवामिन् (स० त्रि०) गृहे वसति वम णिनि । घरमें वास करनेवाला ।

गृहविच्छेद (स० पु०) गृहकलह, घर भगडा ।

गृहवित्त (स० त्रि०) गृह वित्त यमग, बहुधी० । गृह स्वामो, घरका मानिक ।

गृहगाथी (स० पु०) पारावत, कडतर ।

गृहस वेगक (स० पु०) गृह गृहनिर्माण सविगति उप जीवति सम् विग ख्, न । जो घर बना बना कर अपनी जीविका नर्वाह करता है, स्थिति ।

गृहस्थ (स० पु०) गृहे दारैषु तिष्ठति अग्निरमते गृह स्या क । गृही, द्वितीयायमस्य जो विवाहादि कर घरमें वास कर । इमका पर्याय—व्येऽयमो, गृहमेधो, स्रातक, गृहो, गृहपति, मत्री, गृहयाय्य, गृहाधिप कुटुम्बो, गृहायनिक । २ घरबारवाला, बालबच्चोंवाला आदमो । (त्रि०) गृहे तिष्ठति गृह स्या क । १ गृहस्थित ।

गृहस्थधर्म (स० पु०) गृहस्थस्य धर्म, ६ तत् । गृही वा द्वितीय पायमीके पयस्य करने योग्य धर्म, गृहस्थधर्म ।

कोई भी हो, चाहे बड़ा हो और चाहे छोटा, जब तक वह शरीर धारण करेगा, जब तक अज्ञानतिमिरमें आवृष्ट रह कर वास्तविक पथ पहचाननेमें असमर्थ है, तब तक उसे कुछ न कुछ करना ही पड़ेगा। रुचिमेंदसे वा प्रकृतिके भेदसे भिन्न भिन्न कार्य भले हो करे, परे कार्य अवश्य करना पड़ेगा। ये काम दो प्रकारके होते हैं— एक मङ्गलकर और दूसरा अमङ्गलकर। मनुष्य अपनी अभिलाषका पक्षपाती हो कर कार्योंका अनुष्ठान किया करता है। मनुष्य अमङ्गल कार्योंका अनुष्ठान करके नरकोंका दारुण क्षीष्ट खोकार करता है। पर अपनी अभिलाषको नहीं छोड़ता। परमकारुणिक परिणामदर्शी आर्य ऋषियोंने मानवकुलके मङ्गलके लिए अनेक गविपणा और योगलब्ध प्रतभाके बलसे उन सब कार्योंका फलाफल स्थिर करके कर्तव्यकर्तव्य निर्णय किया था। उन्होंने कर्तव्य कार्योंको चार विभागोंमें विभक्त कर अवस्थाके अनुसार मानवके लिए अनुष्ठेय वा अननुष्ठेय नामसे निरूपण किया है। वे चार विभाग ऐसे हैं,—ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ और भिक्षुधर्म। मानवके जीवनकालके चार भागोंमें विभक्त कर यथाक्रमसे चार प्रकारके धर्मका अनुष्ठानाधिकार निर्णीत किया है। (कौनसे वर्णवाले किन किन गुणोंसे युक्त होने पर धर्मके अधिकारी होते हैं, वह उन उन शब्दोंमें देखना चाहिये। इन चार धर्मोंमें जो धर्म वा कर्मान्तर मानवजोवनके द्वितीय विभागमें अनुष्ठेय है, उसे गृहस्थधर्म वा द्वितीय आश्रम कहते हैं। आर्य-धर्मशास्त्र सम्मत गृहस्थके अनुष्ठेय कार्योंकी पर्यालोचना करनेसे उनको तीन भागोंमें विभक्त किया जा सकता है। तीन विभाग इस प्रकार हैं,— सामाजिक, शारीरिक और पारत्रिक अथवा गार्हस्थिक। जिन कार्योंसे समाजकी उन्नति हो और उसके अनुसार अपना भी कुछ लाभ हो, वह सामाजिक कार्य है। जिन कार्योंके करनेसे शरीर नौरोग रहे, बलवान् और कार्यक्षम हो कर मनुष्यके गार्हस्थिक कार्य तथा धर्ममें सहायता पहुँचावे, वह शारीरिक कार्य है और जिन कार्योंके अनुष्ठानसे जन्मान्तरमें (दूसरे भवमें) सुख और शान्ति मिले, उसे पारत्रिक कहते हैं। आर्य ऋषिगण सांसारिक प्रीतिकी सुख नहीं मानते, दुर्बल मानवप्रकृति

जिस सुखके लिए मर्वाटा लालायित रहती है, धिविकी ऋषियोंके लिए वह घोर दुःखकर और निरुपद्रव है। वे मुक्ति (मोक्ष) को ही सुख मानते हैं और सबको उस सुखसे सुखी करनेका उनका अभिप्राय रहता है, (१) इमीलिए उनके प्रवर्तित सब धर्मोंका ही अन्तिम ध्येय मुक्ति है। किसी भी प्रकार अनुष्ठित क्यों न हो, आर्योंके किए हुए सारे कामही मुक्तिके अनुकूल हैं। धर्म और मुक्ति एक। मुक्तिका प्रधान सहाय अन्तःकरण है। गृहस्थायममें वह अन्तःकरण बनता है और मुक्तिका साक्षात् कारण मन्त्रे ज्ञानको उत्पन्न करके मानव मुक्तिकी प्रथम श्रेणीमें चढता है। सभी आश्रम या धर्मोंमें गार्हस्थ प्रधान और प्रथमनीय है। इमीलिए सारे धर्मशास्त्रोंमें गृहस्थधर्मका थोड़ा-बहुत उल्लेख पाया जाता है। उनमें मनु, काशीखण्ड, महाभारत, गरुडपुराण, याज्ञवल्क्य, व्यास-संहिता और बृहत्पाराशरमें बहुत अच्छा और विस्तृत वर्णन मिलता है।

मनुके मतानुसार ब्रह्मचारीकी गुरुकी अनुमति ले कर गृहस्थ धर्म अवनम्बन करना चाहिये। ब्रह्मचर्य समाप्त होने पर गृहस्थधर्मका अधिकारी बनता है। ब्रह्मचारी देना। गृहस्थधर्ममें सबसे पहिले दारपरिग्रह (स्त्रीका परिग्रह) करना पड़ता है। दारपरिग्रह विना किये गृहस्थ नहीं बन सकता। भार्या गृहस्थधर्ममें प्रधान सहायक होती है। स्वयं उपयुक्त और कार्यधिकारी होने पर भी स्त्रीके दोषसे धर्ममें व्याघात होता है और वास्तविक मार्गसे विचलित हो कर दुःखकर कुमार्गमें जाना पड़ता है। इसीलिए आर्यगण दारपरिग्रहके बारेमें बहुतसे नियम बना गये हैं। गृहस्थोंको उचित है कि, उन नियमोंको ध्यानमें रखते हुए दारपरिग्रह करें। यदि विवाह न किया जायगा, तो तरह तरहके दोष आवेंगे। (विवाह देना। गृहस्थकी स्त्री) जिससे सुखसे काल बिता सके, उनका प्रयत्न गृहस्थकी करना चाहिये। अलङ्कार और वस्त्र आदि देनेमें भी कभी मङ्गोच न करना चाहिये, जिस घरमें औरते आनन्दित और आदृत होती है, उस घरमें देवताओंका वास

(१) "सुखीके सुखका कामा" तथा धर्मसुख।

तथासुखीके कर्तव्यव्यवहारोंमें न बलत, १" (काशीखण्ड)

रहता है। अर्थात् जिन घरमें स्त्रियां सर्वदा प्रफुल्लित रहती हैं, उम घरमें स्वर्गीय सुख विराजता है। विना कारण श्रवणादीकी यातना देनेसे, उनके शोकनि श्वास से गृहस्थको टिन टिन भवन्नति होती है।

गृहस्थको पञ्चसूना पापके विनाशके लिए पञ्चमहायज्ञ वा श्रुतुदान करना पड़ता है। ब्राह्मणके लिए अध्यापन, पित्र्यज्ञ, होम, बनि और अतिथिसत्कार ये महायज्ञ करना आवश्यक है। इसको छोड़ देनेसे गृहस्थ मिटोमें मिन जाता है। अहृत, हृत, प्रहृत, ब्राह्मण हृत और प्रागित ये पाच यज्ञ भी गृहस्थके करने योग्य हैं। दृष्ट मन्त्रका जप करना भी पड़ता है, होमका नाम हृत, भौतिक बनिको प्रहृत ब्राह्मणोंको अर्चना करनेको ब्राह्म्याहृत और पित्र्याहृतको प्रागित कहते हैं। गृहस्थों के लिए अतिथिसत्कार एक प्रधान कार्य है, प्राण जानी पर भी गृहस्थको इसमें विचलित न होना चाहिये। जब जैसा श्रवणा हो, तब तैसी हो चीजोंमें अतिथिका सत्कार करना चाहिये। मधमे पहिले अतिथिको भोजन कराना चाहिये, पीछे गृहस्थको भोजन करना चाहिये।

अतिथि और आह इत्यादि।

मनुके मतमें—मानवजीवनका चार भागोंमें विभक्त करना चाहिये। प्रथमभाग—ब्रह्मचारी हो कर गुरुके घरमें रहना और यथाविधिमे गार्गीका अध्ययन करना है। फिर गृहस्थ बन कर गृहस्थधर्म पालन करना यह दूसराभाग है। गृहस्थोंको ऐसा काम करना चाहिये जिसमें किमो भी प्राणीको हिंसा न हो और रजगार भी बन्धी करना चाहिये, निमसे किमो भी प्राणीका जी न दुखे। विपत्तियोंमें भी इस बातको ध्यानमें रख कर भौतिका निर्वाह करना चाहिये कि जिसमें थोड़ा हिंसा हो। सब ज्ञानिके गृहस्थोंको अपना अपना काय करना चाहिये। कभीमो निन्दनीय कामोंमें हाथ न डालना चाहिये। जिन कार्योंके करनेमें गरीरकी विगिये सेग न पड़े, ठंमा ध्यापार करना चाहिये। गरीरकी दुर्बल करके जो धनका मध्य क्रिया जाता है उसमें पाप होता है। गृहस्थोंके लिए व्रत, चरुत, व्रत, प्रव्रत और मन्वावृत ये पांच प्रसिद्ध प्रथमनीय हैं और नौकरी निन्दनीय है। उन्मत्तको व्रत कहते हैं। याथा नहीं करना भी

अमृत है। मित्रानम्य हत्तिको मृत कहते हैं। कृपिकाय-का नाम प्रमृत और वाणिज्यका नाम मन्वावृत है। इनमेंसे पहिले पहिलेकी हत्तिया उत्तम भोग पित्र्यो हत्तियां मध्यम और लघुम्य हैं। सेवा करना नौकरी है गृहस्थको विपत्तिया भिन्नते हुए भी नौकरी नहीं करने चाहिये। इसको बराबर दु खकर, लाघवकारिणो और निकटहत्ति दूसरी नहीं है। जो गृहस्थ तीन वर्ष तक गृहस्थी चलायके लिये धन संचय कर रखता है, उसे कुशुलधान्यक कहते हैं। जो एक वर्षके लायक रख कर काम करता है, उसे कुम्भीधान्यक कहते हैं। जो तीन दिनोंके लायक धन रख कर वागैमिसे खर्च करता है, उसे "व्राह्मिणिक" और जो दूसरे दिनोंको परवाह नहीं रखता उसे अश्वस्तनिष कहते हैं। प्राचीन पाण्डि इनमें मोछे पीछेके गृहस्थोंकी प्रथमा की है इन चार प्रकारके गृह स्थोंमेंसे प्रथम गृहस्थ अर्थात् कुशुलधान्यकको उन्म-शोलता, अथाचित, याचित, क्षपि वाणिज्य और अध्यापन ये छह हत्तियां धारण करने चाहिये। कुम्भीधान्यक श्रुति और वाणिज्यकी छोड़ कर वाकीकी चार हत्तियोंमेंसे (जो हो) तीन हत्तियोंकी धारण करेगा। व्राह्मिणिक गृहस्थ क्षपि, वाणिज्य और याचित इन तीन हत्तियोंकी छोड़कर वाकीकी तीन हत्तियोंमेंसे दो हत्ति ग्रहण करेगा। और अश्वस्तनिक सिर्फ ब्रह्मसत्त गिनोन्नी अन्व्यतमहत्ति धारण करेगा।

अकुटिल गठतागुण्य और शुद्ध जी बसा ही ब्राह्मणकी योग्य है। ब्राह्मणकी सुवर्षी, मयत और सन्तोषी बनना चाहिये। मन्तोष ही सुखमा मूल है विना मतोप कृह खड का अधिपति चक्रवर्ती भी सुखी नहीं होमकता घेटमें जिन जिनके लिए जो जो कर्म बतनाये हैं यदि वैसा सब करे तो मनुष्य दो घर भी स्वर्गीय सुखकी प्राप्त कर देयक समान भोग भोग सकते हैं। तथा इन्द्राटि देवीके माय पक्ष गाम कर सकते हैं। प्रथम अर्थात् गीत पाथ्य और अवि दित या अकुतोचित काय करके अर्थात्पारन भी नहीं करना चाहिये। जैविषा निवाहके लिए यदि यद्यत् पेटक धन मोमूट की तो अर्थात्पारन नहीं करना चाहिये। इन्द्रियोंकी मयत रखनेके लिए गृहस्थको मत्त प्रथम रहने रहना चाहिये। इन्द्रियोंकी मत्तमाकी पुरतिके लिये उममें

आसक्त न हो जाना चाहिये। किसी भी विषयमें हृदसे ज्यादा आसक्ति रखना ठीक नहीं। अगर किसी कारणसे किसी विषयमें ज्यादा आसक्ति हो गई हो तो उसका शीघ्र ही प्रतीकार कर देना चाहिये। ब्राह्मणोंकी वेदाध्ययनके विरुद्ध किसी भी विषयमें अनुष्ठान न करना चाहिये। उमर, कार्य, धन, सम्पत्ति, पाण्डित्य और वंशके अनुसार ही वेद, वचन और वृद्धि ग्रहण करना चाहिये। ज्ञानके विकास और उन्नतिके लिए प्रतिदिन शास्त्र और वैदिकनिगम अवलोकन करना चाहिए। शास्त्रके अध्यायनमें दिन दिन ज्ञानकी वृद्धि और विज्ञानकी अभिरुचि होती है। (मनु ४ अ० १७)

काशोखण्डमें लिखा है कि, विना क्लेशके कभी भी धन उपार्जन नहीं किया जा सकता। अर्थके अभावसे क्रियालोप और क्रियालोपके अभावसे धर्मकी हानि होती है। धर्म ही सुखका कारण है, विना धर्मके सुखको प्राप्ति हो नहीं सकती। गृहस्थ आश्रममें धनका उपार्जन, धर्मसाधन और थोड़ा-बहुत सुख होता है, इसीलिए गृहस्थ आश्रम उत्तम माना गया है। सच्चे मार्गसे उपार्जन किया हुआ धन पारलौकिक सुखके लिए सत्पात्रमें दान करना चाहिये, भूल कर भी कभी असत् पापाचारियोंको दान नहीं देना चाहिये। विपत्तिके समय अपने परिवारवर्गकी पालन करनेके लिए और कर्ज चुकानेके लिए पापाचारियोंको दान देनेमें कोई दोष नहीं है। यथासाध्य परिवारवर्गका भरण पोषण करनेमें ऐहिक और पारिवारिक सुख होता है, और नहीं करनेमें पाप होता है। गृहस्थ मातृका यह कर्त्तव्य है कि, वह अपने पोष्य वर्गका अच्छी तरह भरण पोषण करे। माता, पिता, गुरुपत्नी, सन्तान, आश्रित, अभ्यागत और अग्नि इन सात श्रेणियोंको शास्त्रकारोंने पोष्य वर्ग कहा है। गृहस्थोंका कर्त्तव्य होना चाहिये कि,—वे अनाथोंको दान दें, पोष्य वर्गका समान भावसे प्रतिपालन करें। दयालु व क्षमावान् बन कर देवता और अतिथिकी पूजा करें। घर पर अतिथिके उपस्थित होने पर गृहस्थकी मिष्टवचन बोलना, ओहृष्टि रखना, मन और मुखको प्रसन्न रखना, अभ्युत्थान, स्नेहसम्भाषण, उपासना और अनुगमन करना चाहिये। आसन, पादशीघ्र, यथाशक्ति भोजन, पृथिवी,

गव्या, लण, जल, अभ्यङ्ग (तेल-मटन) और दीप ये गृहस्थकी उन्नतिके कारण हैं। ब्राह्मणोंको यथाशक्ति अतिथि और देवोंकी पूजा कर रात्रिमें एक प्रहर वीत जानिके बाद यज्ञ शेष हवि भोजन करके शयन करना चाहिये तथा शेष प्रहरमें पुनः उठ कर मन्वावन्दनादि कार्योंमें लग जाना चाहिये। खलता, परदाराभिन्नाप, परद्रीह, क्रोध, मिथ्या व्यवहार, अप्रिय आचरण, द्वेष, दम्भ और कपटना ये नौ विकर्म हैं। गृहस्थकी ये सब त्याग देना चाहिए। स्नान, मन्वा, जप, होम, वेदाध्ययन, देवार्चना, वैश्वदेव, अतिथिमन्वार, और पितृतर्पण—ये नौ आवश्यक कार्य हैं। सत्य, शौच, अहिंसा चान्ति ज्ञान, दया, दम, अस्तेय और इन्द्रिय-संयम—ये नौ सब धर्मोंके साधन स्वरूप हैं। [३७ आश्रममें विद्योक्त कर्म पाठन, अ. सोधनं मन्त्रं श्रवणं आदि] गृहस्थकी सर्वदा इनका अनुष्ठान करते रहना चाहिये। (काशोखण्ड ३२ अध्याय)

व्याससंज्ञितके मतसे गृहस्थके करने योग्य कार्य तीन हैं,—नित्य, नेमित्तिक और काम्य। गृहस्थकी रात्रिके शेषभागमें शय्या छोड़ कर भक्तिपूर्वक विष्णुका ध्यान करना, और मांगलिक द्रव्योंका अवलोकन कर आवश्यक कर्म अनुष्ठान करना चाहिये। पत्निके शौचक्रिया करके अग्निसेवन, दंतधावन और स्नान करके पवित्र भावोंसे मन्वा और देव देवीकी पूजा करनी चाहिये। इसके बाद यथारीति वेद वा वेदाङ्ग अध्ययन और इतिहास आदिका अभ्यासकर ब्राह्मणोंको उपयुक्त अधिकारी शिष्योंको पढ़ाना चाहिये। इसके बाद याग-यज्ञ आदि कर दैनिक व्यापार समापन करना उचित है।

(व्याससंज्ञिता ३ अ०)

धर्मशास्त्रप्रणीता दक्षके मतसे—उदयसे अस्तकाल तक ब्राह्मणोंको जगभरके लिए भी निष्क्रिय न रहना चाहिये। सर्वदा कोई न कोई कार्य करते ही रहना उचित है। ब्राह्मणके दैनिक कर्त्तव्य कार्य—उपाकालसे यथाक्रम शौच, स्नान, दन्तधावन, प्रातःस्नान, मन्वाको उपासना, होमके अनुष्ठान, देवताचर्न, गुरु और मांगलिक द्रव्योंका अवलोकन, ये सब कार्य दिनके प्रथम भागमें करना उचित है। द्वितीय भागमें करने योग्य कार्य ये हैं—वेदाभ्यास, जप, दान और अध्यापन।

द्वितीय भागमें करने लायक काम ये हैं—परिवारवर्गके प्रतिपालन करनेके लिए अर्थोपार्जन और अन्नदान। अतुल्य मागमें स्नान और मृत्तिका आहरण, पञ्चम भागमें पिष्टनोक और देवनोक आदिकी पूजा, तथा यथानियम से पोष्यवर्गको बाँट कर स्वयं बचे हुए भोजनको खाना चाहिये। भोजन करके जब तक न वह परिपाक हो, तब तक सुस्थचित्तसे अवस्थान करना चाहिये। इसके बाद इतिहास और पुराण आदिके प्रसङ्गमें कृता और सातवाँ भाग विताना उचित है। अष्टमभागमें प्रयोजनीय लौकिक व्यवहारका अनुष्ठान, सभ्या, उपामना, होम, भोजन और सामारिक कार्य यथाक्रमसे करना और फिर वेदका अध्यायन करना उचित है। फिर समय पर मो जाना चाहिये तथा एक प्रहर रात्रि रहते हुए उठना चाहिये। (१०००)

जैनमतानुसार—धर्म दो प्रकारका है, एक सागर या गृहस्थधर्म और दूसरा अनागार या मुनिधर्म।—मुनिधर्मका वर्णन मुनिधर्ममें किया जायगा, यहा गृहस्थधर्म वर्णन किया जाता है। गृहस्थ वह कहलाता है जो विवाह करके घरछीमें रह कर अणुव्रत पालना हुआ मुनिधर्मकी अभिलाषा रखता हो और धर्म अर्थ काम इन तीनों पुरुषार्थोंकी समान भावसे पालता हो। ऐसे मनुष्य जिम धर्मका सेवन करते हैं, उस धर्मका नाम गृहस्थधर्म है। गृहस्थियोंके पाँचव्रत होते हैं—पाँच अणुव्रत तीन गुणव्रत और चार शिचाव्रत। अहिंसा,—वि मो जीव वा प्राणीको मन वचन कायसे हिंसा न करना, सत्य दूररेके लिए लाभदायक मिष्ट वचन बोलना, अन्तिय,—बिना दो हृद्द वस्तुकी ग्रहण न करना, ब्रह्मचर्य—अपनी विवाहिता स्त्रीके विवाह दूररी स्त्रीसे मन वचन कायसे इच्छा न करना, परिश्रम परिमाण—जकूरतसे ज्यादा वस्तुकीका सग्रह न करना, तथा आत्मासे भिन्नपर द्रव्यसि समस्त भाव न रखना,—ये पाँच अणुव्रत हैं। तीन गुणव्रत ये हैं, दिग्वृत्त, देग त, और अनयदडव्रत। दिगार्थोंका प्रमाण करना अर्थान् न अमुक दिगामें वतनी दूर तक जाऊँगा—ऐसे प्रमाण करना, मो दिगव्रत है। अमुक देग तक जाऊँगा—ऐसे नियम वा यम करनेकी देगव्रत कहते हैं। पापके यदानेवाने पाँच प्रकारके अनर्थ दण्डके

आचरण करनेका त्याग करना है वह अनयदण्ड त्याग व्रत नामक तीसरा गुणव्रत है। सामयिक, प्रोपधोपवाम, भोगीपभोग परिमाण और वैयाहृत्य—ये चार शिचाव्रत हैं। व्रतोंकी वृद्धिके लिए प्रात, संध्या और सायंकाल इन तीनों सभ्याश्रामे एकाग्रचित्त हो कर उत्तम, मङ्गल स्वरूप, शरण देनेमें अद्वितीय श्रीअर्हत, सिद्ध, आचार्य, उपाधगय, सर्वसाधु (१) इन पञ्चपरमेष्ठियोंकी वृत्ति, स्तुति एवं प्रतिक्रमण आदि आध्यात्मिकी करनी और द्रव्य क्षेत्र काल भावकी शुद्धि देख कर समस्त आरम्भोंकी निवृत्तिपूर्वक दो आसन (पद्मासन या खड्गसन), बारह आवर्त्त, चार नतिका मन वचन कायसे आचरण करना सामयिक शिचाव्रत है। प्रत्येक अष्टमी और चतुर्दशीकी उपवाम (माम्मीके दिनमें बारह बजे खा कर नवमीके दिनके बारहवजे खाना बोचमें कुकुर न खाना, मो उपवाम है) करनेकी प्रोपधोपवामव्रत कहते हैं। उपवाम कालमें निरन्तर शास्त्र स्वाध्याय करते रहना चाहिए और किसी प्रकारकी मनमें क्लृपता न लानो चाहिये। अपनी आत्माके कल्याणके लिए भोग और उपभोगकी सामग्रियोंका जो प्रमाण करना है, वह भोगोपभोग परिमाणव्रत है। मयमी शुद्ध परिधितात्मा (जो सर्व परिग्रहके त्यागी हो, तथा रागद्वेषसे रहित हो) ऐसे दिगम्बर मुनि) पतिथि पुरुषोंके लिए जो अष्ट प्रासुक चार प्रकारके आहारोंका दान देना है, वह वैयाहृत्य नामक गृहस्थोंका उपामनीय चौथा शिचाव्रत है। इन बारह व्रतोंकी शक्तिके अनुसार गृहस्थोंकी अग्रयण पालन करना चाहिये। इन बारह व्रतोंमें प्रत्येक व्रतके पाँच अतीचार होते हैं। अतीचाररहित जो व्रत पाले जाते हैं, वे निर्दाप हैं और जिन व्रतोंके पालन करनेमें अतीचार लग जाते हैं, वे सदीप हैं।

(१) यो भक्ति नरो पुत्रं शिवस्यसम्पत्तम् ।

सर्वोपरिष्ठं प्रथमं ब्राह्मणो मोक्षमश्नुते ॥

(सुभाषितसंग्रहणी ६ पृ ८६४)

अर्थात् जो पुरुष इन पाँच व्रतोंकी निटाप रोतिसे

(१) अथवा मन उच्यते इति—यों वना परहणाय वना निहाय यतो वाहराण्ये वम उच्यते ॥ य यतो मोक्षस्यमद्वयं यथा ॥ वा नम निहाय चारि ॥

पालता है, वह अवशय ही मनुष्य और देवोंके सुखोंकी भोग कर मोक्षसुख प्राप्त करता है। इसलिए व्रतोंका निर्दोष पालना ही सर्वथा उचित है।

गृहस्थोंको चाहिये कि, वे अपने मनमें सर्वदा यही भावना रखें कि, मैं समस्त प्राणियोंसे मैत्री भाव रखूँ, पूज्य निष्पक्ष विद्वानोंमें प्रमोद रखूँ, समस्त प्राणियों पर दया भाव रखूँ और शत्रुओंके साथ भी मध्यस्थ भाव रखूँ (१)। इससे आत्मामें सदा शान्तिभाव रहता है।

यदि गृहस्थ इतने व्रतोंको पालन न कर सके तो कामसे काम उसे पाँच अणुव्रत तो अवशय ही पालना चाहिये तथा नित्य सुबह उठ कर शीचस्नानादिके बाद जिनमन्दिरमें जा कर मन्त्र देव, शास्त्र, गुरुकी पूजा करनी चाहिये। सच्चे देव वह हैं जिनमें रागद्वेष नहीं (वीतरागी) है, सर्वज्ञ हैं और हितोपदेशी है। इन्हींसे कहे हुए जो शास्त्र हैं, वे सच्चे शास्त्र हैं, और बाह्य आभ्यन्तर परिग्रहसे रहित दिगंबर मुनि सच्चे गुरु हैं। इनकी उपासना करनी चाहिये। इसके बाद शास्त्रोंका स्वाध्याय करना चाहिये। फिर सामयिक करनी चाहिये। गृहस्थ धर्म का विस्तृत वर्णन जानना हो तो 'रत्नकरणश्रावण-तारा' 'गृहस्थधर्म' 'अभितगति श्रावणश्रावण' आदि ग्रंथ देखने चाहिये। यहाँ संचोपसे वर्णन किया गया है। गृहस्थ धर्म का और विवरण जानना हो तो उन शब्दोंका तथा सातक शब्दोंकी देखो।

गृहस्थान (सं० स्त्री०) गृहस्थ स्थानं, ६ तत्। वास करनी योग्य स्थान, ऐसा स्थान जहाँ घर निर्माण किया जा सकता है। गृह देख।

गृहस्थाश्रम (सं० पु० स्त्री०) गृहस्थरूपमाश्रमं। गृहस्थके कर्तव्यधर्म चार आश्रमोंमेंसे दूसरा आश्रम।

गृहस्थधर्म देवो।

गृहस्थी (हिं० स्त्री०) १ गृहस्थाश्रम, गृहस्थका कर्तव्य। २ घरवार, गृहस्थवस्था। ३ कुटुम्ब, लड़केवाले, परिवार। ४ घरका सामान, माल असबाब।

गृहस्थूल (सं० स्त्री०) गृहस्थ स्थूलं, ६ तत्, समासे

क्लीवत्वं। गृहस्तम्भ, घरकी खूटी या खम्भा। गृहस्वामिन् (सं० त्रि०) गृहस्थ स्वामी अधिपतिः, ६-तत्। गृहपति, घरका मालिक।

गृहहन् (सं० त्रि०) गृहं हन्ति हन् क्तिप्। गृहनाशक, घरकी नष्ट करनेवाला।

गृहाक्ष (सं० पु०) गृहस्थोक्षीव समासे टच्। गवाक्ष, भरोखा, छोटी खिड़की।

गृहागत (सं० पु०) गृहमागतः, २-तत्। १ आगन्तुक, अतिथि। २ जो मनुष्य किसी दूसरेके घरमें आया हो।

गृहाधिप (सं० पु०) गृहस्थ अधिपः, ६-तत्। १ गृहस्थ। (त्रि०) २ गृहस्वामी, घरका रक्षक।

गृहापिका (सं० स्त्री०) ज्येष्ठी, छिपकली।

गृहास्त्र (सं० स्त्री०) गृहस्थितास्त्रं। काञ्जिक, काँजी। गृहास्वु (सं० स्त्री०) गृहे पर्युत्सवं अस्वु। काँजिक, काँजी।

गृहायनिक (सं० पु०) गृहरूपमयनं विद्यतेऽस्य गृहायन-ठन्। गृहस्थ।

गृहाराम (सं० पु०) गृहस्थ आरामः, ६-तत्। गृहके निकटवर्ती उपवन, घरके नजदीककी फुलवाडी।

गृहार्थ (सं० पु०) गृहे निष्पादोऽर्थः, मध्यपदलो०। गृहकर्म, घरका कामकाज।

गृहालिका (सं० स्त्री०) गृहे आलिरिव कायति कै-क। गृहगोधिका, घरालू छिपकली।

गृहावग्रहणी (सं० स्त्री०) गृहं श्रवणगृह्यते अनया अवग्रह करणे ल्युट्-ङीप्। देहरी, टीवार।

गृहावस्थित (सं० त्रि०) गृहेऽवस्थितः। गृहस्थित, जो घरमें स्थित है।

गृहाशया (सं० स्त्री०) गृहे इव च्छायायुक्त स्थाने आशिते आ-शी-अच्-टाप्। १ ताम्बूली, पानकी लता। २ पूगी-वृक्ष।

गृहाश्रमन् (सं० पु०) गृहस्थतोऽश्मा। पेषणी, मसालादि पीसनेकी शिला।

गृहाश्रम (सं० पु० स्त्री०) गृहमेव आश्रमं। १ गृह-रूपआश्रम, घरके सदृश रहनेकास्थान। २ गृहस्थके अनुष्ठेय धर्म, गार्हस्थ्य।

(१) "सर्वेषु भवति युष्मिन् प्रमादं क्लिष्टेषु जीविषु रूपपरत्वम्।

मध्यस्थभावं विपरीतवृत्तौ सदा समात्मा विदधातु देव।"

(अभितगतिश्रावण)

गृहाश्रमिन् (स० पु०) गृहायममस्वास्ति गृहायम इति ।
गृहस्थ ।

गृहासक्त (स० त्रि०) गृहे भार्याया आमक्तः । १ भार्या
सक्तः, घरकेमासारिक कर्ममें लवलीन । २ विषय वासना-
में लगा हुआ । ३ गृहस्थित पक्षी, घरान चिडिया ।
गृहिन् (स० पु०) गृह भार्या अस्वस्य गृह इति । गृहा
श्रमो, गृहस्थ ।

गृहिणी (स० स्त्री०) गृह गृहकतत्व गृहस्य वा
अस्वस्य गृह इति डीप् । १ भार्या, पत्नी, जिस स्त्रीके
ऊपर घरका समस्त कार्यभार अर्पित हो । प्राचीन समय
में आर्यागण जिन नियमोंसे गृहिणी द्वारा गृहकार्य
सम्पादन करते थे इतिहास और प्राचीन नीतिशास्त्रमें
वे सब नियम लिपिबद्ध हैं । श्रमनीतिके अनुसार ब्राह्मण
गृहिणीका कर्त्तव्य स्वामिसेवा है । इसके अतिरिक्त
स्त्रियोंकी और कोई दूसरा धर्मानुष्ठान करना निषिद्ध है,
किन्तु पति यदि कोई याग यज्ञका अनुष्ठान करे तो उस
समय स्वोक्तो सहायता देना उचित है । इसके अलावा
स्वतन्त्र रूपसे दूसरा धर्मानुष्ठान उनके लिये नहीं है ।
गृहिणीको उचित है कि स्वामीके श्रद्धा परित्यागके पहले
उठ जावे । तत्पश्चात् शरीरको शुद्ध कर विद्यावन उठा
रखना तथा भाङ्गूस घेर भलो भक्ति परित्यक्त कर लेप
देना चाहिये । इसके बाद यज्ञकाष्ठ और जलपात्र नियम
पूर्वक शोधन कर उपयुक्त स्थान पर रख दे । इस तरह
प्राज्ञिक कार्यके समाप्त होने पर पाककार्यमें नियुक्त हो
जाय । इस कार्यमें सबसे पहले पाकगृहके चरतनोंको बाहर
कर घरको लेपना और तब उन्हें मार्जन करना चाहिये ।
इसके बाद धान कर रमोईका समस्त आयाजन करे । ये
समस्त गृहिणीके पूर्वाङ्क कार्य हैं । घर और तथा भ्रूकी
सेवा करना गृहिणीका मुख्य कर्त्तव्य है मगदा
स्वामीकी प्राप्तानुवर्तिनी हो छायाकी नाई उनका पद
गमन और टामीकी नाई उनका प्रादेग प्रतिपानन करना
चाहिये इसके अनन्तर उपयुक्त समयमें पाक कर सबसे
पहले गुरुजनोंको और तब घरके दूसरे अनुष्ठानोंकी भाजन
करावे । घरतमें स्त्रियोंके पदमतिक्रमसे चाप भोजन
करे । भोजनके बाद स्यांकाल पढ़ना गृहके पाठ्य व्यय
और कर्त्तव्यार्थ पर ध्यान दे । मन्त्रा उपन्यत होने

पर पूर्वाङ्कके जैसे समस्त गृहकार्य अनुष्ठान कर पाकमें
लग जाय । पूर्ववत् घरके सभीको खिलाकर अन्तक। आप
भोजन करें, और इसके बाद श्रद्धा प्रस्तुत करें । पतिके
शयन करने पर उनकी चरणसेवामें नियुक्त हो जावे ।
पतिके सो जानेके बाद आप सोवे, एव रात्रिके शेषको
पति उठनेके पहले ही स्वयं श्रावोत्थान करें । अनवधानता,
मत्तता, रोष, ईर्ष्या वचन, परकी निन्दा, पिण्डता हिंसा,
विद्वेष, मोह, अहङ्कार, धूर्तता, नास्तिकता, साहस और
दम्भ इन सबका परित्याग करना माध्वोगृहिणीका एकान्त
कर्त्तव्य है । (पञ्चमी १५)

एक समय कृष्णपत्नी मत्स्यभामा स्त्रीधर्म जाननेके हेतु
श्रीपदीके निकट गई थीं । श्रीपदीने उन्हें भलो भक्ति
गृहिणीका कर्त्तव्यकर्त्तव्यका उपदेश दिया, जिसका
विवरण महाभारतमें विद्युत्तदपसे वर्णित है । उपरोक्त
नियमानुसार चलने पर स्त्रिया आनन्दपूर्वक समय व्यतीत
कर सकती और चन्तकी मोक्ष पाती हैं । (५५५)

२ काञ्चिक, फाजो । ३ घरको मालिकिन ।

गृहीत (स० त्रि०) गृह कर्मणि क्त । १ स्वीकृत, म जर
किया हुआ । २ अवगत ज्ञात मालुम । ३ प्राप्त, हासिल
किया गया । ४ छूट पकड़ा गया । (को०) यह भावे क्त ।
५ स्वीकार, म जूर । ६ ज्ञान, बोध, समझ । ७ प्राप्ति,
हासिल, धारण, पकड़ ।

गृहीतगर्मा (स० स्त्री०) गृहीतो गर्भो यथा, बहुव्री० ।
गर्भवती, गर्भिणी । गभि षो ढेत् ।

गृहीतदिग् (स० त्रि०) गृहीता दिक् षेन, बहुव्री० ।
१ पनायित, मगा हुआ । २ अटग, गायय ।

गृहीतनामन् (स० त्रि०) गृहीत प्रगम्य पुण्य जनक
नाम यन्, बहुव्री० । जिसका नाम प्रगम्य है, मगहर,
प्रग मनोय ।

गृहीतविद्य (स० त्रि०) गृहीता पथिता विद्या षेन
बहुव्री० । जिमने विद्या प्रदण किया हो, शिक्षित,
पण्डित, अज्ञमन् ।

गृहीतव्य (स० त्रि०) यह कर्मणि तव्य । १ पहण्योप्य,
जो प्राप्त करनेके लायक है । (को०) यह भावे तव्य ।
२ पहण, प्राप्त, हासिल ।

गृहीतास्त्र (सं० त्रि०) गृहीतमस्त्रं येन, बहुव्री०। अस्त्र-धारो, जिमने हथियार धारण किया हो।
 गृहीतिन् (सं० त्रि०) गृहीतं ग्रहणं अस्त्यस्त्र गृहीत-इति। हतग्रहण, जिसने ग्रहण किया है।
 गृह (सं० त्रि०) ग्रह-कू। ग्रहण करनेवाला, गृहीता।
 गृहज्ञानिन् (सं० त्रि०) १ अबहुदुर्गो, अज्ञान, जिसकी समझ नहीं है। २ नितान्त निर्वाध, जिमको बोध नहीं है।
 गृहेरुह (सं० पु०) गृहे रोहति रुह-क, अलुकस०। गृहजात वृक्ष, घरमें जन्मा हुआ गाऊ।
 गृहेनर्दन् (सं० पु०) गृहे एव नर्दति नर्दं गिनि अस्त्र-कस०। कापुरुष, कायर मनुष्य, डरपोक आदमी, वह मनुष्य जो लड़ाईमें भीरुता दिखलाता और घरमें बैठ कर लम्बी चौड़ी बात बोला करता है।
 गृहेश (सं० पु०) गृहस्य ईश्वरः, इ-तत्। १ घरके स्वामी, घरका मालिक। २ राशस्वर।
 गृहेश्वर (सं० पु०) गृहस्य ईश्वरः, इ-तत्। गृहके अधिपति, घरका मालिक।
 गृहीत्यात (सं० पु०) गृहस्य उत्पातः, इ-तत्। घरका विघ्न, घरका उपद्रव।
 गृहीपकरण (सं० स्त्री०) गृहस्य उपकरणं, इ-तत्। गृह-सामग्री, घरकी तैयार करनेमें जिन जिन चीजोंका प्रयोजन पड़ता है।
 गृहीलिका (सं० स्त्री०) गृहे चलते ग्रह-बल कुन् बाहुल-कात् संप्रसारण टापु अत इत्वच्। च्ये ष्ठी, छिपकली।
 गृह्य (सं० पु०) गृह्यते मानवादिभिः ग्रह-कषप्। १ गृहा-सक्त पत्नी, घरमें रखनेका पत्नी। २ गृहासक्त मृग। (स्त्री०) गृह्यते आक्रम्यते रोगेण ग्रह-कषप्। ३ शुदा, मलहार। (त्रि०) ४ अस्वतन्त्र, पराधीन। ५ आयत्त, वश्य, विनीत, शासनीय। ६ पच्य, पचपाती। गृहे भवः गृह-यत्। ७ गृहीत्यन्न, जो घरमें पैदा हो। (पु०) ८ गृह निमित्तक अग्नि। (स्त्री०) ९ उस अग्नि सम्बन्धीय काम। (पु०) गृह्यन्ते सगृह्यन्ते वेदविहितानि, कर्मकारणान्यत्र ग्रह-कषप्। १० वैदिक सूत्रविशेष। इसमें गृहस्थके जन्मसे मृत्यु पर्यन्त कार्य कलापकी अनुष्ठान-प्रणाली और कर्त्तव्याकर्त्तव्य भलीभांति वर्णित

है। हिन्दु गण वृद्धत दिनोंसे इस ग्रन्थके मतानुसार वैदिककार्यका अनुष्ठान करते आ रहे हैं। वर्तमान समयमें भी इसका मत आदरणीय है। मन्त्राचर व्यवहारमें यह गृह्यसूत्र नामसे उर्बं ख किया गया है। वेद एवं शाखाभेदमें बहुतसे गृह्यसूत्र हैं। इनकी भाषा प्रायः वैदिक भाषाकी नाई है। (सं० पु०)।

गृह्यक (सं० त्रि०) गृह्य स्वार्थे कन्। गृहासक्त पत्नी, घरमें रखनेकी चिड़िया। २ घरानृ चृग। ३ पराधीन।

गृह्यगुरु (सं० पु०) शिव, महादेव।

गृह्यग्रन्थ (सं० पु०) गृह्यसूत्र।

गृह्या (सं० स्त्री०) गृह्य-टाप्। बड़े ग्रामके नजदीक छोटा ग्राम।

गृ (सं० क्ति०) १ शब्द करना, पुकारना, आह्वान करना, प्रशंसा करना, प्रकाश करना। २ खाना, निगलना, सुखसे गिरा देना। ३ जानना निगान करना, प्रकाश करना, सिखाना।

गैडटा (हिं० पु०) ककट, केकड़ा।

गैण्ठी (हिं० स्त्री०) गैटि, वाराहीकन्द।

गैण्ड (हिं० पु०) १ काण्ड, ऊखके ऊपरका पत्ता, भगीरा। २ गोष्ठ, घेरा जो ऊखके पत्ते, सरसोंकी उगटी तथा अरहरके शुष्क काण्डसे बनाया जाता है, इसमें गृहस्थ भूसा देकर अन्न रखते हैं, ठेक।

गैण्डना (हिं० क्ति०) १ पतली छोटी द्विवारसे खेत घेरना। २ अनाज रखनेके लिये ठेक बनाना। ३ घेरना। ४ कुल्हाड़ीसे काटना।

गैण्डली (हिं० स्त्री०) कुण्डली, कुण्डल, फेंटा।

गैण्डिया (देग०) नानाप्रकारके रङ्गके रीए या जन।

गैड़ा (हिं० पु०) १ काण्ड, ऊखके शीर्षभागकी पत्तियाँ। २ देख, गन्ना, ऊख, केतारी। ३ खेतमें बोनेकी ईखके कंटे टुकड़े। ४ पोत अ और ताँविका लाल कर पीटनेकी पत्थरकी निहाई।

गैडूआ (हिं० पु०) १ तबिया, वालिश, सिराहना। २ बृहत् फन्दुक, बड़ा गैट।

गैडरी (हिं० स्त्री०) १ कुण्डली, घड़ा रखनेका रस्सीका बना हुआ मेंडरा, विड़वा। २ फटा। ३ सापोंका बजु-लाकार होकर बैठना।

गेडुनी (हि० स्त्री०) बहो श्वा।

गति (हि० स्त्री०) अवधमें छोटी २ नदियोंके किनारे और मैयालकी तराईमें होनेवाला एक तरहका पेड़ इसके पत्ते चार पाच प्रगुलके चाड़े और लम्बे होते हैं। ग्रीष्म कालमें पीने रङ्गके फूलके गुच्छे भी इसमें निकलते हैं।

गे'ट (हि० पु०) शिष्य अर्थात् शिष्य।

गे'टई (हि० वि०) पोत रङ्गका गेन्दा पुष्पके रङ्गका। (पु०) गेन्दा पुष्प कासा पीत रंग।

गेदधर (हि० पु०) १ गेद, क्रिकेट, टेनिस खेल खेलने का स्थान, क्लब घर। २ अङ्गरेजके विनियर्ड नामक खेल खेलनेका मकान विनियर्ड हूम।

गेदतही (हि० स्त्री०) एक दूरको गेदसे मारनेका एक प्रकारका खेल। इस खेलमें लडके आपसमें उभोको चोर बनाते हैं जिमको गेद लगता है।

गेदवन्ना (हि० पु०) लकडीकी एक पट्टीसे गेद मारनेका एक तरहका खेल।

गेदवा (हि० पु०) गेण्डुक, तक्रिया, वालिय, सिरहाना।

गे'दा (हि० पु०) एक तरहका पौधा जो दो टाई हाथ ल या रहता है और जिसमें पीने रङ्गके पुष्प लगते हैं। गेदा फूल दो तरहके होते हैं, एक 'जङ्गलो' जिसमें सिर्फ चार पाच टल होते हैं, दूसरा 'हजारो' जिसमें बहुत टल रहते हैं। फूलके रंग भो कई तरहके होते हैं, कोई हलके पीत रंगके, कोई नारंगी रंगके और कोई लाल रंगके होते हैं। गेदेके पत्तोंको शुष्क कर यदि फिटकिरीके साथ पानीमें डबाना जाय तो गधकी रंग प्रसृत हो जाता है। २ एक प्रकारकी आतिगवाजी (Fire works) जिसके गुल गेदेके फूलसे निकलते हैं। ३ शुवर्ण या रौप्यका बना एक गोल सुशुद्धार भाभूपण, जो जोगन या वाज्रमें घडोकी जगह पर रहता और नीचे की ओर लटकता है।

गेदुवा (हि० पु०) शिष्य अर्थात् शिष्य।

गेदीहिया (हि० स्त्री०) बैंगनोंकी एक जाति।

गेदीरा (हि० पु०) एक तरह गोमिठाई, चीनीकी रोटी।

गेगम (देग०) एक धारोदार वस्तु।

गेगना (देग०) १ एक तरहका पौधा जो मसूरको जाति का होता और प्रायः ६०० फीटकी ऊँचाई पर उत्पन्न

होता है। यह बिना बोये उपजता है, किन्तु कभी कभी पशुके चारेके नित्य बोया भी जाता है। इसमें काले रङ्गके दाने भी निकलते जो देखनेमें गेड़ के मद्दग होते हैं।

(वि०) २ मूर्ख, जड, बेवकूफ।

गेगलापन (हि० पु०) मूर्खता, जडता, भीडूपन।

गेगुनिया (देग०) गुल दुपहरिया।

गेटिस (अनु० पु०) घटनेसे लेकर एडो तक पर दाकनेका एक आवरण जो कपडे या चमडेका बना रहता है, मोजा। २ मोजा आदि बांधनेका स्वर, कपडे या चमडेका फोता।

गेहना (हि० क्रिया०) १ लकोरसे घेरना। २ परिक्रमा करना चारों ओर घूमना।

गेडी (हि० स्त्री०) १ लडकीका एक खेल। २ इस खेलमें रखनेको नकडी।

गेडो—बम्बई प्रान्तकी काठियावाड एजन्सीका सुद्र राज्य। राजा भाला राजपूतवश्रोय है। लोकसंख्या ५०४ और आय ४५००० रु० है। १३३६ रु० वार्षिक कर वृद्धि गवर्नमेण्ट और जूनागढके नवाबको दिया जाता है।

गेण्डु (म० पु०) गच्छति गम ड, गो गन्ता इन्द्रिय प्रयोदरादिवत इकारस्य तत्वे माधु। गेण्डुक, गेद।

गेण्डुक (म० पु०) गेण्डु, स्वार्थ कन्। कन्दुक, कपडेका बना बुधा गोलाकार खेलनेका पदार्थ, गेद।

गेदा (हि० पु०) विडियका छोटा बच्चा जिसे पर न निकले हो।

गेदुर (देग०) पशुके चारेके काममें आनेवाली एक तरहको वारामामी घास।

गेप (म० क्रि०) कापना, घरघराना।

गेवा (देग०) तानकी कडीकी नीलिया जो नकडीकी चिरी दुई पतली फाईयोकी होती है। यह तानके सुतकी एक दूसरेमें मिलजाने या उभनभनेसे बचती है।

गेय (म० स्त्री०) गायत् (गेयोयत् । ण १। १। १००) १ गीत, गान। (वि०) २ गायक, गानके योग्य, गानके मायक।

गेयप्रिय (म० पु०) मुदरपुष्पह्वल, गन्धराजका पेड़।

गेर (फा० पु०) घन्टि, गाठ, गिरहा।

गिरना (फा० क्रि०) १ गिराना । २ डालना । ३ डालना, आरोप करना ।

गिरवां (फा० पु०) गिराव, पशुके गलेमें लपेटनेका बंधन, गरदनी ।

गिरसप्पा—वम्बई प्रान्तके उत्तर कनाड़ा जिलेमें होनावाड़ तालुकका एक गांव । यह अक्षा० १४° १४' उ० और देशा० ७४° ३८' पू०में शरावती नदी पर पड़ता है । इस नामका भरना कोई १८ मील दूर है । नारियलके पेड़ बहुत हैं । यहांसे कोई १॥ मील पूर्व नगरवस्तिकर नामक गिरसप्पा जैनोंकी राजधानीका धर्मावशिष्य है । कहते हैं, किसी समय वहां १००००० घर और ८४ मंदिरो थे । एक जैनमन्दिरमें आज भी ४ द्वार लगे और ४ मूर्तिया रखी हैं । दूसरे पांच टूटे फूटे मन्दिरोंमें भी कुछ मूर्तियां और शिलालिपियां हैं । वर्तमानके मन्दिरमें २४वें जैनतीर्थङ्कर महावीरस्वामीकी एक काले रङ्गकी मूर्ति है ।

कहते हैं, विजयनगरके राजाओंने (१३३६-१५६५ ई०) गिरसप्पाके किसी जैन वंशकी कनाड़ामें शक्तिशाली बनवाया था । १४०८ ई०की मङ्गीके पास बुचाननमें गुणवन्ती मन्दिरके लिये गिरसप्पा अधिपति इतचव्या बोडियारु प्रितानीके भूमिकी उत्सर्ग किया । कहा जाता है वहां बहुत दिनों तक स्त्रियोंका राज्य रहा । ई० १७वीं शताब्दीमें बटनूरके वेङ्कटप्पा नायकने भैर देवीको हराया था । इटलीके परिव्राजक डिलावालेने लिखा है कि १६२३ ई०की गिरसप्पा एक प्रसिद्ध राजधानी था, यह देश मिर्चके लिये मशहूर है ।

गिरसप्पा—वम्बई महिसुर सीमाका एक जलप्रपात । यह अक्षा० १४° १४' उ० और देशा० ७४° ४८' पू०में अवस्थित है । जो गांव पास रहनेसे उसको जोग भरना लोग कहते हैं । यह शरावती नदी पर गिरता है । दिसम्बर महीने भरना देखनेकी बहार है । १० मील ऊंची सड़क जङ्गलके बीच गिरसप्पा गांवसे आवश्यककी गयी है । भारतमें ऐसा कोई भी दूसरा भरना नहीं और ऊंचाई, लम्बाई चौड़ाई तथा सुघराईमें दुनियामें दूसरी जगह भी इसकी मिसाल काम मिलती है । सन्ध्याको सूर्यास्त समय भरनेमें एक सुन्दर इन्द्रधनुः बनता और रातको चन्द्रमा भी उसकी शोभा बढ़ाया करता है । महिसुर तटसे देखनेमें वह

बहुत अच्छा लगता है । नदीके दक्षिण किनारे बांसका एक पुल है ।

गिराई फा० स्त्री०) गिराव ।

गिराव (फा० पु०) गिराव ।

गिरुआ (हि० वि०) १ गिरुके रङ्गका, मटमैलापन लिए लाल रङ्गका । २ गिरुमें रङ्गा हुआ, गैरिक, जोगिया । (पु०) १ गिरुके रङ्गका एक कोट । मात्र मासके वर्षाकालमें इस तरहके कोटकी उत्पत्ति होती है । अन्नके खेतोंमें इसके लग जानेसे पेड़ पौधे रङ्गके हो जाते हैं । २ गिरु फसलका एक रोग । इस रोगमें गिरुके पेड़ कम बढ़ते और क्रमशः कमजोर होते जाते हैं, जिसके कारण अन्न भी पैदा नहीं हो सकता है । इस रोगको गिरुई और कुकुली भी कहते हैं ।

गिरुई (हि० स्त्री०) गिरुआ देखो ।

गिरु (हि० स्त्री०) गवैरुकाधानोंमें निकलनेवाला एक तरहकी लाल कठिन मिट्टी । इसके दो रूप हैं एक जो कडी नहीं रहती वरन् भुर भुरी होती है वह कच्ची गिरु कहलाती है दूसरी जो कड़ी होती है पकी गिरु कहलाती । इस तरहकी मिट्टी बहुतसे काममें लायी जाती है, मोनार मोनेके आभूषणों पर इसके द्वारा रंग देते हैं, रंगरेज भी इसके संयोगसे कई तरहके रंग प्रस्तुत करते हैं । आपधमें भी इसका व्यवहार होता है, इसका पर्याय—लालमिट्टी, गिरमटो, गिरिमट, सुरंगधातु, गवैरुका, गैरिक, ताम्रवर्णक और कठिन है ।

गिर्द (फा० पु०) घेरा, गिर्द ।

गिल (सं० पु०) विशिष्ट संख्या, खास अङ्क ।

गिला (अनु० पु०) छापेखानेमें बड़ी गिलो ।

गिलो (अं० स्त्री०) छापेखानेको छिड़लो किशतौ जो धातु या काष्ठकी बनी होती है और जिमपर टाइप रखकर प्रथम बार वह कागज छापा जाता जो पीछे संशोधित किया जाता है ।

गिल्हा (हि०) तेलीके तेल रखनेका चमड़ेका कुप्पा ।

गिवर (देश०) एक पेड़ । - गंगवा देखो ।

गिवराई—हैदराबाद राज्यके भौड़ जिलेका उत्तर तालुक । इसका क्षेत्रफल ५०६ वर्गमील, लोकसंख्या प्रायः ५८३६१ और मालगुजारी लगभग २ लाख ३० हजार है । उत्तर

को गोदावरो श्रीरङ्गाबाद जिसे उसे भलग करती है।
१३५ गाँव है। गेवराई गाँवमें कोई ३८६५ आदमी
रहते हैं।

गेवोंखाली—बङ्गालके मिदनापुर जिलेमें तमलुक मत्र
डिविजनका एक गाँव। यह अक्षा० २२ १० उ० और
देशा० ८७ ५७ पू०में दुगली नदीके दक्षिण तटपर पड़ता
है। जनसंख्या ५२४ है। यहाँ व्यापार बहुत होता
है। ईस्टर्न बङ्गाल स्टेट रेलवेके लिए एक जहाज डाय
मण्डू, हारवर आता जाता है। स्थानोय आनोकगटद
को 'कोकोनी' कहते हैं।

गेशु (स० पु०) गा इण्ड। १ रङ्गोपजीवो, जो नाचग
कार अपनी जीविका निर्वाह करता है, रणडी, भाँड।
२ सामगानकर्ता, सामवेदका गान करनेवाला। ३ पर्व
ग्रन्थि अवयवभेद।

गेशु (स० पु०) गा इण्ड। १ गायग, गानेवाला, गवैया,
गायक। २ नट, भाँड। ३ सामगानकर्ता, सामवेद
का गायक सामवेदका गान गानेवाला।

गेह (स० स्त्री०) गो गणेशो गन्धर्वा वा ईह ईप्सितो यत्
बहुव्री०। गृह, घर, मजान, निवासस्थान।

गेहदाह (स० पु०) गेहस्य दाह ६ तत्। गृहदाह
घरका जलना। घरमें आग लगना।

गेहधूम (स० पु०) गृहधूम, भूल।
गेहनी (हि० स्त्री०) घरवाली, गृहिणी, भार्या, पत्नी।
गेहपति (स० पु०) गेहस्य पति, ६ तत्। गृहपति,
घरका मालिक।

गेहभू (स० स्त्री०) गेहस्य भू, ६ तत्पु०। गृहस्थान,
वह जगह जहाँ घर निर्माण किया गया हो।

गेहिन (स० पु०) गेहमस्यास्ति गेह इति। गृही, घरका
मालिक।

गेहनी (स० स्त्री०) गेहिनो डीपु। गृहिणी, घरवाली,
भार्या।

गेहिल्लेडिन (स० त्रि०) गेहे च्छेडते च्छेड इति पात्रे समि
तादित्वात् अलुकसमा०। डरपोक, कायर, वह मनुष्य
जो लडाईमें अन्नम या भोक रहता किन्तु घरमें बैठ कर
अपने पराक्रमकी डींग हाकता है।

गेहदाहिन (स० वि०) गेहे दहति दह इति अलुकसमा०।

१-कापुरुष, कायर, डरपोक, भोक। २ घरमें आगका
लग जाना। घरका जलना।

गेहेष्टम (स० त्रि०) गेहेष्टम अलुकसमास०। कापुरुष,
कायर, जो सिर्फ घरमें बैठ कर आत्मप्राणा किया करता
है।

गेहेष्टट (स० त्रि०) गेहेष्टट अलुकसमा०। जो अपने
घरमें घृष्टता प्रकाश करता है, गर्वयुक्त।

गेहेनर्दिन (स० त्रि०) गेहे नर्हेति गर्जति नर्हे णिनि अलुक-
समा०। कापुरुष, जो घरमें बैठकर गर्जता है, किन्तु बाहर
जानेसे एक बात भी मुखसे नहीं निकलती।

गेहेर्मोहिन (स० त्रि०) गेहे मुह्यति मुह्य णिनि। सुस्त, महा,
आनमी।

गेहेविजितम् (स० त्रि०) गेहेविजित अस्मास्ति गेहेविजित-
इति। कापुरुष। गेहेले। इति श्लो०।

गेहेथाड (स० पु०) दाभिक, धूर्त, छलो, कपटी।

गेहेगूर (स० पु०) अलुकसमा०। कापुरुष, जो सिर्फ
घरहीमें गुरवीर हो। गेहेहत दको।

गेहोपवन (स० स्त्री०) गेहे ममीपवर्त्तो उपवन। गृहके
निकटस्थ उद्यान, घरके नजदीककी फुलवाडी।

गेह्य (स० त्रि०) गेहे भव गेहाय हित वा। १ गृहोत्पन्न,
जो घरमें उत्पन्न हुआ हो। २ घरके हितकर। (पु०)
३ धन, दौलत, जायदाद।

गेहुअन (हि० पु०) मटमैले रगका विपधर सर्प।

गेहुआ (हि० वि०) वादामी, गेह के रंगका।

गेह (हि० पु०) गापुस श्लो०।

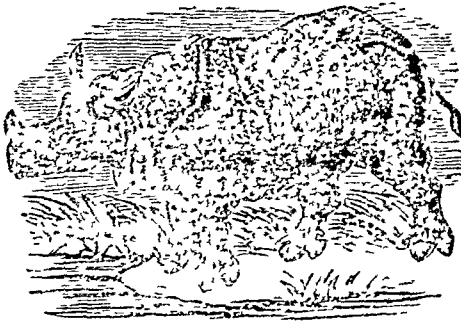
गैडा (देग०) कुल्हाडी।

गेडा—एक चतुष्टयद जन्तु, कोई चोपाया जानवर। यह
स्थूलचर्म और विभक्त खुरविशिष्ट पशुवर्गमें गण्य, अति-
शय दृढकाय और हस्तीकी अपेक्षा भी अधिक बलशाली
रहता और भुक्त वस्तुको उद्धारण करके फिर रोमन्थ नहीं
करता। इसकी नासिकाके अग्रभागमें एक या दो खुद
(सींग) निकल आते और चारों पावो के खुर ३ खण्डोंमें
विभक्त हो जाते हैं। यह पालनेमें हिल जाता, परन्तु
हठात् किसी कारणसे क्षुपित होने पर वह सज्जमें
प्रमन्न नदी आता। वनमें श्रावक आदिके साथ विचरने
कालको यदि शव आ करके इसकी घेर लेता, तो प्राण

अधरमें भागनेके वदले अपने उभर सींगोंसे उसको मारने चल देता है। इसके निम्नलिखित कई एक संस्कृत नाम मिलते हैं—खड्गी, गण्डक, खड्गसृग, क्रोडि, भुङ्गसुख, वज्रचर्मा, युग्म, वली, वर्धनीस, खनीसाह. एकचर, गणो साह और गण्ड। फारसोंमें इसको गगोटन कहते हैं।

भगवान् मनुने इस खड्गधारी जन्तुको पञ्चनखीमें गिना है। एतद्भिन्न वाईवलके पूर्वभागमें बहुतेसे स्थलों पर मिसर राज्यके गेंडेका (*Rhinoceros unicornis*) उल्लेख है। टैसियाम (*Otasia*) कल्पित खड्गविशिष्ट वन्य गर्दनका विवरण कुछ कहानी जैसा लगते भो अधिकांश गण्डककी प्रकृति परित्यायक है। इन्होंने लिखा है कि उसके सींगसे पानपात्र बनते और उनमें पानी पीनेसे वात तथा मृगीरोग हटते हैं। उसका गुल्फस्थि सुन्दर रूपमें गठित, हृषभका जैसा दृढ और खुरविभिन्न होता है। वन्य वा पालित गर्दभ या क्रिमी अपर एक शफ जन्तुको वैसी एड़ी नहीं पायी जाती आरिष्टल अपने अत्यन्त टैसियासके विवरणका प्रतिवाद करके लिखते हैं कि उन्होंने एक खड्ग और एक शफ जीव नहीं देखा और केवलमात्र गुल्फ विशिष्ट एक खड्गी भारतीय गर्दभका उल्लेख किया है।

फिर ई०से १८० वर्ष पहले एगाथारकाडडिमने किसी खड्गी गण्डककर्तक हस्तीके उदर विदारणकी बात लिखी। उसीसे अंगरेजीमें इसका नाम *Rhinoceros* पड़ा है। रोमराज्यकी अनेक प्राचीन मुद्राओंमें भी



गेंडेको मूर्ति मिलती है। (*Descriptive Catalogue of a Cabinet of Roman Imperial large Brass medals*) भारतमें एक जातीय गेंडा (*R. Indicus*) है। इसका गात्र ईषत् रक्ताभ पांशुवर्ण, गण्डविशिष्ट तथा लोमविहीन होता है। चर्म अतिशय स्थूल तथा

स्वाभाविक रूपसे दृढ़ रहता और स्कन्धोपरि और मामने और पीछेके दोनों पैरोंके ऊपरी भागमें दोपरता पड़ता है। उसीसे इसका शरीर अस्व वा गोनीसे अभेद्य है। लांगूल्के अग्रभागमें और कानके ऊपर मसृण तथा कठिन लोम निकलता है। नासिका पर एक खड्ग है। मल्यकी करोटोका आकार चूड़ा जैसा लगता है। अपराशर देशीय गण्डक ऐसे नहीं होते। इसके सब मिला करके ३६ दांत होते हैं।

भारतवर्षका गेंडा वहिर्भूत देगमसूह—विशेषतः वज्र, श्याम और कोचीनके जङ्गल, नदा तोरवती स्थान और अनूप भूमिमें रहता है। यह घास पात और पेड़ोंके डालिया खा करके जीवन धारण करता है।

भारतवर्षमें उसका अपेक्षा और भी एक जातीय छोटा गेंडा (*R. Soudanicus*) देव पड़ता है। सुन्दरवन, मेदिनीपुर, राजमहलके गण्डकटवती पार्वत्य प्रदेश और महानदीके तीरस्थ वन्य भूमिमें इसकी संख्या अधिक है। कोई कोई उसे यवद्वीपवासी गेंडेसे उत्पन्न जैसा बतलाता है।

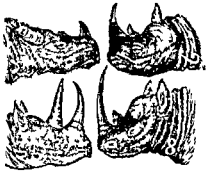
यवद्वीप मसूहमें एक प्रकार गेंडा (*R. Javanus*) है। इसके गलेको तह भोतरको छिपी है। नासिका पर एक कचकड़ा निकलता है। यह टलवड हो करके विचरण करता है।

भारतीय गण्डककी तरह इसको तह नहीं होती, सिर्फ घुटनेके पास परत पड़ता है। सर्वाङ्गमें गोल गोल गण्ड होते हैं। इसका लोम छोटा तथा दृढ़ रहता और कर्णाग्रभाग और पूंछमें निकलता है। युथन नर्म नर्म लगता और बढ़ानेसे बढ़ता है। मस्तक प्रायः त्रिकोणाकृति होता है। पिपरके बाद कचकडे नीचे मुखका आयतन कुछ छोटा और दोनों पार्श्वका मांस गोल जैसा लगता है।

यवद्वीपवासी इस जातीय गण्डकको 'वरक' और मलयवासी 'बड़क' कहते हैं। साधारणतः यह ८ फुट लम्बा और ४ फुट ३ इंच ऊंचा होता है।

सुमात्रा द्वीपके गेंडाको २ कचकड़े आते और भारतीय तथा यवद्वीप गण्डककी भांति ३६ दांत देखे जाते हैं। गात्रचर्म वलियुक्त तथा पिङ्गलवर्ण लोमसे आच्छा-

दित रहता है। स्कन्ध और नितम्ब पर थोड़ा परत देख पड़ता, अपर सकल ही स्थान सरल लगता है। मस्तक



१ सुमाता होम्डे २ अफ्रीकाई बोरिनो।
३ किरन्धोय और ४ शत दिवसों सुवृक्ष

अपेक्षाकृत लम्बा, चतुर्दोटा तथा धुंधला, ऊपरी छोट तुकोला और सामनेकी लटकता हुआ, कान छोटा, पतला और चारों ओर भ्रान्त जैसे काले बालोंसे सजा हुआ सामनेका सींग पोछेका टैडा और दोनों आंखोंके नीचे चूड़ाकृति और एरु छोटा खड्ड होता है।

अफ्रीका देशीय गेंडेका (R. Adicanns) वण पीताम कपिंग, मस्तक तथा मुण्डविवरके पाश्वर्यमें वैंगन जैसा नीला कोखे लाल, आंखि धुंधली और दोनी कच कडे काले लगते हैं। सामनेका सींग पोछेवालेसे कुछ बड़ा और टैडा पडता है। गले और मस्तकके सन्धिस्थल में गोलगोल कटाव रहता और पृष्ठ तथा कानके अग्र भागमें कृशवर्ण लोम निकलता है। अपरापर देशीय गेंडाश्रीकी तुलनामें यह अलस रहता और अल्पमात्र खाया करता है। इसको केवलमात्र २८ चवण दन्त आते, छेदनदन्त बिलकुल देखे नहीं जाते। यह १० फुट ११ इंच लम्बा होता है।

अफ्रीकामें और भी तीन प्रकार गेंडे हैं। इसमें प्रत्येक जातिकी ही दो दो खड्ड निकलते हैं। यह कच कडे भारतवर्षीय गेंडाश्रीके सींगसे बड़ होते हैं। इन का चमड़ा मोटा रहता और उसमें परत नहीं लगता यह देखनेमें किसी बड़े सूवर जैसे समझ पडते हैं।

दक्षिण अफ्रीकाका 'वारिला गेंडा' (R. Bico rnis) खूब काला हाता है। यह अति चतुर और दुर्धध है। शिकारी उसको सिंहकी अपेक्षा खभावत बनगालो और भयङ्कर जैसा समझते हैं। 'कोटनीया' (R. Ke-

ttlo.) जातीय गण्डक सर्वोपेक्षा भयानक और बलिष्ठ है। इसके दोनी कर्ण बराबर रहते हैं। सभ्र खका पथाको लटकता और पथात्का सम्पुखकी झुकता है। ऊपरी होठका अग्रभाग नोकदार और कुछ लटकता हुआ होता है। हाँठ तुकीला जैसा होनेसे यह छोटी लता, गुल्म और वृक्ष आदिको ताजी ताजो पत्तिया छोट करके खा सकता है। अन्यान्य गेंडाश्रीकी अपेक्षा इसकी गुहो ज्ञादा लम्बी लगती है। जोधमें भोतरीके कानि कालि धब्बे और नाक पर तथा आंखके चारो पाश्वर्य पर छोटे छोटे गहरे पड जाते हैं। इसका प्राणन्द्रिय अतिग्रय सूक्ष्म है। यह क्रोधाधिक दूरसे भी सूच करक शत्रुका आगमन भालूम कर सकता है इसीसे गेंडेके आक्रमण कालको शिकारी वायुगतिकी अवरोत दिक्की गमन करने पर वाधा है। शत्रुको निकटवर्ती देख करके यह पलायन नहीं करता वरन उसको विनाश करके छो चान्त पडता है। इसके चतुर् अति लुद्र और स्थूलकाय प्रयुक्त है द्रुत गमनकालको यह हठात् पाश्वर्यमें दृष्टि डाल नहीं सकता। इस गेंडेके द्वारा आक्रान्त होने पर एकाएक किसी औरको घूम करके ही वच जाना चाहिये। यह ११ फुट आध इंच लम्बा और ५ फुट ज चा होता है।

श्वेत खड्डी (R. Simus) देखनेमें कुछ कुछ पोत मिश्रित धूमर तथा पिङ्गलवर्ण है। कान और पूछकी जडमें कानि कानि कडे बाल होते हैं। मुख कड कुड गीका जैसा लगता है। नाक पर २ खड्ड उठते हैं। अगले भागका कचकडा पिङ्गलेको धनिश्वत चोगुना बड़ा होता है। चतुर् पोताम पिङ्गल लगता है। शरीर १२ फुट १ इंच ल बा और स्कन्ध पर्यन्त ५ फुट ७ इंच ज चा होता है। अफ्रीकाके गेंडाश्रीमें यहा जाति सर्वोपेक्षा बृहत् है। यह अतिग्रय निरोध और केवलमात्र घास खा कर के जीवन धारण करनेवाला है जहाँ घास प्रचुर परिमाणमें उपजती इसको रहना अच्छा लगता है। मधा अफ्रीकाके वेनुयाना लोग इसको मोडुङ्ग कहते हैं। इनमें प्रवाद है कि वही अफ्रीकाका आदि जीव है जो उनको परसुर्यके साथ एक ही सुझामे निकला था। सिवा इसके उसकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें कोटनीयामे प्रमेद भी देख पडता है।

एशियाके दिखल्लो गेंडेका सीङ्ग सुगमतासे नहीं मिलता । चीनवासो इस सीङ्गको सोल ले करके उससे सुन्दर सुन्दर पानपातादि बनाते और उन्हें विकनेके लिये भारत, श्याम, कोचीनचीन, सुमात्रा आदि निकटवर्ती राज्योंमें पहुँचाते हैं । काले रङ्गके नोकदार सींग विशेष आदरणीय हैं ।

चाण्डवाड़ीके वनवासो मनुष्य जिस उपायसे गेंडेका शिकार करते, अति आश्चर्यजनक है । पहले वह किसी ठोंस बाँसका अग्रभाग छील करके पतला बना लेते और उसे आग पर गर्म करके कड़ा कर देते हैं । फिर वनमें प्रवेश करके चीत्कार और करतालि द्वारा गण्डकको ललकारते हैं । यह अपना स्वभावसुलभ सुख फाड़ते फाड़ते उनके प्रति धावित होता है । उस समय शिकारी कौशलक्रमसे वंशफलक इसके मुखविवरमें जोरके साथ घुसेड़ करके चारो और भागते हैं । यह यत्नसे अस्थिर हो भूमि पर गिर करके चिन्नाता और प्रसुर रक्तपातके कारण क्रमशः निर्जीव हो जाता है । मिया इसके वनस्थलसे ग्रामको जानेवाले सभी प्रवेशपथ जालीसे घेर करके शिकारी जङ्गलमें आग लगा देते और भागनेवाले गेंडाओंको गोलीसे मार लेते हैं ।

प्राचीन रोम राज्यमें गेंडेकी कई वार अनेक अद्भुत क्रीड़ायें देखी गयी हैं । पुस्तकादि पाठसे समझा जाता कि आगष्टस्ने क्लूपेटराको अपनी जयघोषणा करनेकी रोम नगरकी क्रीड़ाभूमिमें गण्डक और जलहस्तीकी लड़ाई देखलायी थी । एतद्भिन्न सम्राट् एण्टोनियास हेलीगविलास और गार्डियानने भी वैसा ही गेंडेका तमाशा दिखलाया ।

१५१३ ई०को प्रथम भारतवर्षसे युरोपमें पुर्तूगालराज इमानुयेलके निकट एक गेंडा भेजा गया । फिर १७७१ ई०को भरसायलहूँनगरमें गेंडेका एक शावक पहुँचा । कुवियार और वीफों साहब उसका सविशेष विवरण लिख गये हैं । वह जन्म २६ वत्सर जीता जागता रहा । १७८० ई०को जो गेंडा इङ्ग्लैण्ड ले जाया गया, विङ्गले साहबने लिखा है—'यह जानवर पालू लगता, चालकके मतानुसार चलता, दर्शकोंके देह नोचने पर विलकुल नहीं विगड़ता और १० सेर घास १० विसकूट

तथा प्रचूर परिमाणमें ताजा पत्ती उतरस्य करता है । दिनमें दो या ३ वार इसकी ५ घड़ा पानी मिलता । जो एक ही निश्वामसे पेटमें पहुँचता है ।'

डाक्टर हर्मफोल्डन १८१६ ई०को यवक्षोपमें रहते समय किमी गेंडेके वारमें कहा कि वह पृष्ठ पर चढ़नेमें हमें बहन किये रहता और मजेमें गूलरकी छालें और किले खाया करता था ।

इसको साधारणतः कीचड़में रहना अच्छा लगता है उसीसे इसको दूसरे पुरुषोंसे अलग रहते हैं । बहुत दिनों बाद यह एक बच्चा देता है ।

वैद्यशास्त्रके मतमें इसका मांस वलकर, हृहण, गुरु, कफ तथा वायुनाशक, कषाय, पित्तलोक तृप्तिकार, पवित्र, आयुको हितकर, मूलवदकारक और रुच है । भगवान् मुनुने भी इसका मांस भक्षणयोग्य जैसा लिखा है । (मन ५। ८) अफ्रीकामें स्थान स्थान पर आज भी यह मांस खाया जाता है ।

मुगल सम्राट् बाबर अपने आप पेशावरमें गेंडेका शिकार खेनने निकलते थे । पाटरी जर्डनास साहबने भी पञ्जाब और सिन्धुप्रदेशमें जीवित गण्डक होनेका उल्लेख किया है । एतदव्यतिरिक्त भूतत्त्वविद् नोगोके माहाय्यसे मटोके बोच जो समस्त प्रस्तुरोभूत गण्डास्थि मिला है, मालुम पड़ता कि परकान्तकी पृथिवी पर और भी कई प्रकारके गेंडेका अस्तित्व रहा । यथा—(कानवे उपसागरके मध्यस्थित पेरिस द्वीपमें (१) *Acerotherium Perimense*, (२) १८७१ ई०को वेल्गांव प्रदेशके गोकक ताम्बुकसे ३॥ मील उत्तरपूर्व चिकटोली नालेके पार्श्वस्थानमें एक नाली निकालनेके लिले मटो खोदते खोदते ८ फुट नीचे भिन्न जातीय (*R. Deccanensis*.) गेंडाओंका दांत और पञ्जरास्थि. (३) पटवार प्रदेशमें *R. Sivalensis* (४) हिमालयके निकट शिवालिका गिरिय ग्नीकी उपत्यकामें *R. Palaeindicus*, *R. Platyrhinus* तथा *R. Planidens*. तीन भिन्न जातीय, (५) नर्मदा नदीके उपकूलमें *R. Namadiens*, (६) ब्रह्मदेशके नाना स्थानों और आवा नगरमें *R. Itavadicus*, (७) चीन देशमें *R. Sinasis*, (८) मलका द्वीपपुञ्जमें *R. Lasiotis* और भारतवर्ष में भी किसी स्वतन्त्र गेंडा जातिके अस्तित्वका निदर्शन मिलता है ।

बयोट डकिनने अपने बनाये प्राणितत्वमें कहा है कि टेम्स नदीके ककरोनि उपकूलमें किसी समय तीन भिन्न जातीय गैंडाश्रीका वास रहा। (Boyd Dawkins' Nat Hist Rev 1860 p 403)

१६६८ ई०की लन्दन नगरकी मूद्रित 'चार्यान्नुज' नामक पत्रिकामें प्रकाशित हुआ कि उस शहरका कोर्न गिरा हुआ कूवा खोदते समय एक जातीय (R. tichorhina) गेंडेकी हड्डी निकली थी। प्राणितत्वविदुने उक्त जातीय गण्डका अस्थि प्राप्त, जर्मनी और इटलीमें जगह जगह देखा है।

१७०१ ई० दिग्बर मामको उत्तर साइबेरियाकी जिमोवे दि-वोलीइसकी नदीके वालुकामय उपकूलमें अर्ध प्रोत्थित किसी गण्डका देह मिला था। बहुत दिनों तक उसका गात्रचर्म नहीं गला। शोपेन साइवने उसी जातीय (tichorhina) गेंडेका मस्तक और पदकी डरकु टस्क नगरमें देखा था और भी मालूम हुआ है कि उस जातिके गेंडे शीतप्रधान लोन नदी किनारे तक पहुँचते हैं। (एक विद्वान विवरण Memoirs of the Academy of St Petersburg नामक ग्रन्थमें द्रष्टव्य है।) इसैक प्रदेशके श्रोथानटन नगर और नागफोकके क्रोमार बन्दरमें भी किसी स्वतन्त्र जातीय गण्डकाका अस्थि मिला। एक समय इङ्ग्लैण्ड और तत्रिकोटवर्ती द्वीप समूहमें उसी जातिके बहुतसे द्विखन्नी गेंडे रहते थे।

गैंती (देश) जमीन खोदनेका एक हथियार, कुदान।
गैं (सं क्रि०) गीतमाना, गानमें प्रथमा करना।
गैंतो (देश) हिमालयके किनारे पर होनेवाला एक पेड़ इसकी लकड़ी बहुत कठिन और अदरसे सुख्य होती है। इससे जानाप्रकारके सामान बनते हैं।

गैंन (हि० पु०) १ गैल, मार्ग रास्ता।
गैंना (हि० पु०) छोटा हथभ, नाटा बैल।
गैंफन (फा० पु०) जहाजका एक छोटा पाल।
गैंफज कच्चा (फा० पु०) पालकी नीचे और ऊपर करने की रस्सी।
गैंव (अ० पु०) परोक्ष, वह जो सामने न हो।
गैंबदाँ (अ० वि०) परोक्षका जाननेवाला, सर्व देश और कालका ज्ञान जानता हो।

गैंवर (देश) एक तरहका पत्थी जिसके डैने, छाती और पीठ उजले, दुम फाली और चोच तथा पैर लाल होते हैं।

गैंवी (अ० वि०) १ शुभ, क्षिया हुआ। २ अज्ञात, अयोग्य, अजनयवी।

गैंवर (अ० पु०) गजवर, हाथी।
गैंया (हि स्त्री०) गी, गाय, गज।
गैंर (अ० वि०) १ अन्य, दूसरा। २ अपने कुटुम्ब या समाजसे बाहरका मनुष्य।

गैंर (अ० स्त्री०) अत्याचार, अनुचित कर्म, अधर।
गैंर (सं वि०) गिरौ भव गिरि अणु। १ पर्वतोत्पन्न, जो पर्वतसे उत्पन्न हो। २ एक वृक्षका नाम लाङ्गुलीका पेड़।

गैंरकवूल (सं स्त्री०) नीलकण्ठताजकीत वर्ष और लग्न कालिक ग्रह योग विगेष, नवम ग्रह योग।
गैंरखी (हि० स्त्री०) गलेमें पहननेका एक तरह आभूषण, हसुली।

गैंरत (अ० स्त्री०) लज्जा, शर्म, ग्लानि।
गैंरमनकुला (अ० वि०) स्थिर, अचल, वह पदार्थ जो एक स्थानसे दूसरे स्थान तक उठाकर न ले जा सके। (यह शब्द मिर्फ 'जायदाद' शब्दमें व्यवहृत किया जाता है।)
गैंरमानुली (अ० वि०) १ असाधारण। २ नित्य नियमके विरुद्ध।

गैंरमुनासिय (अ० वि०) अनुचित, अयोग्य।
गैंरमुमकिन (अ० वि०) असंभव, न होने योग्य।
गैंरवसली (अ० स्त्री०) घरकी छत बनानेकी क्रिया जिसमें बाँसकी पतली कामाचियोंकी मजबूतीसे केवल तुन देते हैं।

गैंर वाजिव (अ० वि०) अयोग्य, अनुचित, बेजा।
गैंर हाजिर (अ० वि०) अनुपस्थित, जो मौजूद न हो।
गैंर हाजिरी (अ० स्त्री०) अनुपस्थिती, नामौजदगी।
गैंरायण (सं पु० स्त्री०) गिरिगोत्रापत्य गिरि फञ्।
गिरिका गोत्रापत्य, गिरिगोत्रकी मत्तान।
गैरिक (सं स्त्री०) गिरौ भव गिरि घञ्। १ उद्यपात-विगेष, गेहूमिष्टी। इसकी पर्याय—रक्तधातु, गिरिधातु, गवधुक, धातु सुरङ्गधातु, गिरिच्छद्व, वनालक, गवेरुह

प्रत्यक्षा, गिरिभूत, लोहित-मृत्तिका, तथा गिरिज है।
पीतवर्ण गैरिकका पर्याय—सुवर्ण गैरिक, सुवर्ण, स्वर्ण-
गैरिक, स्वर्णधातु, वभ्रुधातु और शिलाधातु है। इन
दो प्रकारोंके गैरिकका गुण—मधुर, शीत; कपाय, विस्फोट,
अर्श तथा अग्निदाह नाशक, निर्मल और स्निग्ध है। २
सुवर्ण, सोना। ३ एक तरहका वृक्ष।

गैरिकं वू (स० स्त्री०) गैरिकं वू वंश।

गैरिकाक्ष (स० पु०) गैरिकमिवाक्षि पुष्पमस्य, बहुव्री०
समासान्त टच्। जलमधुक् वृक्ष, जल मधुश्रा।

गैरिकाञ्जन (स० स्त्री०) गैरिक निर्मित अञ्जन, गेरू
भिद्रोका वनाहुश्रा अञ्जन।

गैरिचित्त (स० पु०) गिरिचित्तस्य गोत्रापत्यं गिरिचित्त-
ञ्जन्। गिरिचित्त वंशोत्पन्न एक अति प्राचीन राजर्षि।
इनका दूसरा नाम त्रसदस्यु रहा। ऋग्वेदमें इनका
उल्लेख है। (ऋक् ५।१।१८)

गैरी (देश०) १ खरही, खेतसे कटे हुए डंठलोंका ठेर।
(स० स्त्री०) २ लाइली वृक्ष, विपलांगला। (हिं० स्त्री०)
३ गर्त, गड्ढा, कूड़ा, करकट, गोबर आदि फेंकनेका
गर्त।

गैरिय (स० स्त्री०) गैरी भव-ठक्। शिलाजतु, शिला
जीत।

गैल (हिं० स्त्री०) मार्ग, रास्ता, गली कूचा।

गैलड़ (हिं० पु०) किसी स्त्रीके प्रथम स्वामीका पुत्र जिसे
लेकर वह द्वितीय स्वामीके यहाँ जाय।

गैलन (अ० स्त्री०) एक तरहका अङ्गरेजी माप जो तीन
खैरके बराबर होता है। इससे जल, दूध प्रभृति द्रव्य
या पदार्थ मापे जाते हैं।

गैलरी (अ० स्त्री०) १ नीचे ऊपर बैठनेका सीढीके जैसा
स्थान। इस तरहका स्थान थियेट्रो और व्याख्यान-
ालयों आदिमें बनाया जाता है। २ सीदागरीका सीढी-
नुमा स्थान।

गैला (हिं० पु०) १ गाड़ीके पहियेकी लीक, पहियेकी
लकीर। २ गाड़ीका मार्ग, गाड़ी जानेका चोड़ा रास्ता।

गैलीलिषी—इटालीवासी प्रसिद्ध विज्ञानविद् पण्डित और
क्रियासिद्ध विज्ञानके उद्गावक। इन्होंने १५६४ ई०में
फ्लोरेंसकी १५ तारीखमें पाईसा नगरमें फ्लोरेंटाइन

परिवारमें जन्म ग्रहण किया था। पिताके धनाढ्य न होनेसे
उन्हें चिकित्साशास्त्र और आरिष्टल-प्रवर्तित दर्शनशास्त्र-
का अभ्यास करनेका आदेश मिला। परन्तु योड़े दिन
पढ़नेके बाद दार्शनिक मतांमें उनका विश्वास हटने
लगा।

जब उनको उमर १८ वर्षकी हुई, तब उन्होंने आवि-
ष्कार करना प्रारम्भ किया। एक दिन गैलीलिषीने पाईसाके
धर्ममन्दिरमें एक जलती हुई बत्ती देखी जिसको शिखा
काँप रही थी। उन्होंने देखा कि नाडोकी चालके समय-
से शिखाके काँपनेका समय एकमा मिलता है, वस इमी-
से उन्होंने समय निरूपणकी एक अपूर्व युक्ति निकाल ली;
बादमें ज्योतिर्विद्याके प्रचारके लिए एक घड़ी बनाई और
उसमें अपना आनुमानिक “लटकन” (Pendulum)
बनाया।

यन्त्र बनानेमें और परोक्षालब्ध विज्ञानशास्त्रमें उनको
नितान्त इच्छा रहने पर भी, एक दिन उनमें पिटवन्धु
अष्टलिषी रिकिसीके साथ वार्त्तालाप करते करते अद्भुत
विद्या सीखनेके लिए अनुरोध किया। इस पर अष्टलिषीने
उन्हें अद्भुतशास्त्रमें प्रवेश करनेका सरल उपाय बता दिया,
पुत्रके इस अनुरागको देखकर पिता बहुत खुश हुए उन्होंने
उत्साह दिया। ज्यामितिस्वकी उन्होंने विशेष खोज की
और कुछ ही दिनोंमें पानोमें किस चीजका आपेक्षिक
वजन ज्यादा है, इस बातका निणय करनेवाले यन्त्र
(Hydrostatic balance) का आविष्कार किया। इस
यन्त्रसे भारी चीजका आपेक्षिक गुरुत्व (Specific gr-
avity) सहजहीमें अच्छी तरह मालूम हो जाता है।

१५८८ ई०में इनकी अद्भुतशास्त्रमें पारिदर्शिताकी बात
टास्कानिके ग्रैण्ड डियुकके कानमें पड़ी। उन्होंने उनको
पाईसाके विश्वविद्यालयमें अध्यापक नियुक्त किया। इस
अवस्थामें भी उन्होंने बहुतसे वैज्ञानिक आविष्कार निकाल
कर अपनी ज्ञान-ज्योतिका विकास किया था। इसी
समयमें वे गतिके नियमके (Laws of Motion)
अनुधावनमें नियुक्त हुए थे। उन्होंने इस बातका निश्चय
कर दिया कि, आकाशसे गिरे हुए छोटे और बड़े पदार्थ
दोनों समानतासे नीचे गिरते हैं। इसमेंसे उन्होंने तीन
प्रकारके गति नियम (Three laws of Motion) और

पतित पदार्थ को आकर्षण शक्तिका इसी नियमसे (क ३ फिट २) आविष्कार किया था । इस गति नियमको लेकर परिष्टलन् मतावलम्बियोंसे बहुतसा झगडा हुआ, इसलिये उन्हें पाईसाको परित्याग कर पादुआ नामके नगरमें चला आना पडा था । यहाँ वे भिनिसियान् विज्ञानविद्यालयमें अठारह वर्षके लिए अद्वैतशास्त्रकी वक्तृता देनेके लिए नियुक्त किये गये । कुछ दिन बाद उनकी इच्छा हुई कि, जन्मभूमिमें ही रहे । उन्होंने पाईसामें पहिलेके कामके लिए पुन प्रायः ना पत्र भेजा । उनकी इच्छा पूर्ण हो गई ; पर शक्त इतनी रही कि, जब तक वे अध्यापकका काय करेगे तब तब अपना निज अभिमत जनतामें न फैला सकेगे । वे पाईसा पहुँच गये । पादुआमें वे जब तक रहे थे, तब तक उनकी वक्तृता सुननेके लिए यूरोपके नाना स्थानोंसे बहुतसी छात्रमण्डली आया करती थीं । उन्होंने पहिले पहिल दर्शनशास्त्रके उपदेसोंकी सरल इटालीकी कन्धमें पनु बाद किया था । उनके आविष्कारोंमें एक प्रकारका ताप यन्त्र, दिग्दर्शनयन्त्र और सर्वज्योतिर्विद्यार्थोंका आदरणीय दूरबीक्षणयन्त्र (Refracting telescope) ये तीन ही प्रधान हैं । १६०८ ई०में उन्होंने अपना आविष्कृत प्रथम दूरबीक्षण मिनिसके प्रधान विचारपतिको भेटमें दिया था । इसी सालमें उन्होंने दूसरा एक अणुबीक्षणयन्त्र बनाया था ।

इन दिनों वे अपने दूरबीक्षणयोगी ज्योतिष्कमण्डली का परिदर्शन किया करते थे । १६१० ई०में ७ जनवरीकी रातको उन्होंने हृद्यक्षतिपद्मेके ४ पारिपार्श्विक उपपद्म देखे थे । १६११ ई०में वे रोम नगरीमें गये थे । वहाँ पर उन्होंने खूब सम्मान पाया और 'निव्मियाई एकाडेमी' नामके विज्ञानविद्यालयके सभासद बनाये गये । इसके कुछ ही दिनों बाद वे कोपर्निकसके मतके समर्थक बन गये । इससे जनताने उन्हें भाँतिाक मतका प्रचारक समझ कर निरादर किया था । उन्होंने किसीकी बात पर ध्यान न देकर 'सूर्यमें कण्डू' नामक एक पुस्तक लिखी, उसमें उक्त मतका खूब ही समर्थन किया गया था । अपने मतके प्रसारके लिये वे दूसरी बार भी रोममें गये थे । परन्तु वहाँ पर उनकी धामध विपद् जान कर पौच्छ

टिउकने उन्हें टासकानिमें लौट जानेके लिए—अनुरोध किया था । इसी समय पोपने उन्हें अपना मत छोड़ देनेके लिये आदेश दिया था । इस घटनाके थोड़े दिन पीछे गैलीलियोका एक प्रवान ग्रन्थ प्रकाशित हुआ, इसमें भी उन्होंने कोपर्निकस, टेलिसि और आरिस्टलके पक्षका समर्थन किया था । इस पर पोपने ऐसा आदेश दिया कि, जिससे वे फिर कोई भी पुस्तक न प्रकाशित कर सके । परन्तु गैलीलियोने नाना प्रकारके कीयनीसि पोपसे पुन अनुमति ले ली और १६३२ ई०में लोरन्स नगरमें "Un Dialogo intorno due massimi Sistemi dal Mondo" नामकी एक पुस्तक प्रकाशित कराई था । पुस्तकके प्रकाशित होते ही विचारार्थ दण्डनायकोंके हाथमें पडे । पोपने पुस्तक पढ़ कर ऐसा समाप्त किया कि, 'गैलीलियोने मेरो ही दिग्गो उडानिके लिये यह पुस्तक प्रकाशित की है ।'

उस समय गैलीलियोकी उम्र ७० वर्षकी थी । इस उदापेमें भी उन्हें विचारधोल होना पडा था । उनके ऊपर काफी अत्याचार किया गया, जिससे वे उन्हें तब ही कर अपना मत परित्याग करना ही पडा था । इतने पर भी उन्हें छुटकारा न मिला, जेलको सजा भुगतनी पडी थी । फिर टासकानिके ग्रंथ डिउकके बार बार प्रायः ना करने पर पोपने गैलीलियोको मुक्ति प्रदान की थी ।

अन्तिम जीवन उन्होंने आसंतो नामक स्थानमें बिताया था । उस समय वे आँखोंसे अच्छा देख न सकते थे । परन्तु तब भी उन्होंने जीवनके आखिरो दिनोंमें वैज्ञानिक चर्चा करते हुए ७८ वर्षकी उम्रमें १६४२ ई०की ८वीं जनवरीमें इष्ट जीवन छोडा था । साण्टाक्रुसके मन्दिरमें उनका श्रुतिधरु भव भी मौजूद है ।

गैस—१ एक प्रकारकी वाष्प विषय । पहिले रासायनिकों ने दो प्रकारके गैसोंका नियय किया था,—एक स्थायी गैस (Permanent Gas) और दूसरी अस्थायी गैस (Nonpermanent Gas) । उनके मतमें, यद्ये ट उष्णता और द्रव्यनेसे जो गैस नष्ट नहीं होती, उसे स्थायी गैस कहते हैं, जैसे अविद्यजन, हाइड्रोजन इत्यादि और जो गैस तरल की जा सके, यह अस्थायी गैस है ।

प्रसिद्ध रासायनिक फारेडे माह्वसे पहलेसे रासायनिकोंकी ऐसी ही धारणा थी। परन्तु उन्होंने जब स्थायी गैसकी भी तरल कर दिखलाया, तब लोगोंकी धारणा पलट गई। उनके वादकी मुख्य मुख्य रासायनिकोंने परीक्षा द्वारा स्थिर किया कि, अक्सजन, हाइड्रोजन आदि गैस भी यथेष्ट उष्णता और दाब पड़नेसे तरल और जड़ी भूत हो जाती है।

२ कोयलेसे पैदा हुआ तीव्र गन्धयुक्त आलोकप्रद वाष्पविशेष।

सौ वर्ष पहले कोई भी नहीं जानता था कि, कच्चे कोयलेकी भाफ या गैससे आलोक उत्पन्न होता है। विलियम् मरडक नामके एक अंग्रेज विलायतमें कोयलेकी खानमें काम करते थे, उनसे सबसे पहले १७८२ ई०में कोयलेकी खानके कोयलेकी लोहेके पात्रमें बन्द करके उष्ण गैस बनाई थी। इसी समयमें फरामीदेशमें लवेन नामके एक फरामीने ऐसे ही गैस बनाई, और उसके गुण और अवगुणोंका आविष्कार किया था।

परीक्षा करके मरडकने जब देखा कि, उस गैसके आलोकसे घरमें खूब ही उजियाला हुआ, तब उनसे अपने दृष्ट मित्रोंसे गैसकी उपकारिताकी चर्चा की। पहले तो सबने हंस कर उनकी बातको उड़ा ही दिया। वे निःसहाय दरिद्र थे, इसलिए 'पेटेण्ट' न कर सके। कामशः लोगोंकी गैसके आलोककी उपकारिता मालूम पड़ने लगी। रासायनिकोंकी सहायतासे विलायतमें गैसका कारखाना खुल गया। परन्तु वह सुचारुरूपसे न चला। तब मरडकके एक शिष्यने उस कारखानेका कामनीके साथ योग दिया। फिर गैसके कारखानेमें काफी लाभ होने लगा। इस नफेकी देख कर बहुतोंने कोयलेसे और बहुतोंने तेलसे * ही गैस पैदा कर गली गलीमें गैस वित्तियां कर दीं। कोई कोई वकसमें भर कर गैसकी आमदनी और रफ्तनी करने लगे। अब विलायतमें प्रत्येक नगर और ग्राममें गैसके कारखाने हो गये हैं।

* तेलसे भी गैस पैदा हो सकती है, परन्तु उसमें खर्च ज्यादा पड़ता है, इसलिए उसमें नफा कम होता है। महाराज रामसिंहने तेलसे गैस बनना कर जयपुरकी सड़कों पर वित्तियां जलवाई थी।

पत्थरके कोयलेकी जलनेमें जो वाफ निकलती है, उसे रोक कर कोयलेकी गैस बनाई जाती है। हाइड्रोजन और अद्धारके भिवा यह कोई दूमरा चीज नहीं है। सबसे बढिया कोयला, जो पत्थरके समान दीखता है और जिममें अद्धारका भाग अधिक रहता है, उसमें उत्तम गैस बनती है। जिन कोयलेमें तेलका भाग अधिक हो (Bituminous Coal), उसमें ही सबसे अच्छी गैस बनती है। जिन कोयलेमें गैस बनती है, उनको बाहर न रखना चाहिये। क्योंकि वर्षा होनेमें उनमें पानी लग जायगा, और वह पानी भाफके साथ मिल जायगा। इस पानीको गैससे पुनः निकालना पड़ता है। पत्थरके कोयलेमें आग लगानेसे उसमेंसे जो खूब घना और काला धुआं निकलता है, वहही जलानेकी गैस है। परन्तु इसमें बहुतसे कोयलेके सूक्ष्म टुकड़े रहते हैं, और उनसे घरमें कार्गैच पड़तो है। कभी कभीतो बत्तीके धुआंके साथ उड़ कर घरसे बाहर जमीन पर भी गिरते हैं। अद्धारज लोग जिम मिट्टीके पाइपमें तमाखू पीते हैं, उसमें अगर पत्थरके कोयलेको चूर रख कर ऊपरका भाग मिट्टीसे ढक दिया जाय, और फिर उसको आगमें रक्वा जाय, तो उस पाइपके मुंहसे धुआंमा निकलेगा। यही गैस है। उस धुएँमें आंच लगा देनेसे वह जलने लगेगा। इसी प्रकार बड़े बड़े लोहे या मिट्टीके पात्रोंमें कोयलेकी चूर भर कर नीचे आग जला देनेसे बहुत गैस पैदा होती है, इन पात्रोंको रिटर्ट (Retort) कहते हैं। पहले लोहेके पात्रमें कच्चे कोयले बन्द करके गैस बनाई जाती थी; अब भी बहुत जगह मिट्टीके पात्र भी काममें आने लगे हैं। क्योंकि, अग्निके उष्णतासे मिट्टीका पात्र जल्दी विगड़ता नहीं। अब लोग ज्यादा उष्णता देकर जल्दी जल्दी गैस बना कर बेचते हैं। परन्तु साधारण उष्णतासे जो गैस पैदा होती है, उजियाला उसीका अच्छा होता है।

गैस बनानेके पात्र साधारणतः १०१२ हात लम्बा होता है। कोई कोई पात्रके ऊपर और नीचे, दोनों तरफ ढकन रखते हैं। कच्चे कोयलेसे गैस निकल जाने पर वह कोयलेकी अर्थात् वह रसोई करनेके काममें आता है। दोनों तरफ ढकन रखनेसे कोयलेकी

आसानोसे निकल आते हैं, और पात्र साफ करनेमें भी आसानो होती है। इसीलिए दोनों तरफ टक्कन बनाये जाते हैं। कोई पात्र विस्तृत गोल और कोई गोलाई लिए हुए लम्बे होते हैं। गैसके कारखानोंके ये पात्र जमीनसे ऊँचे और मिलमिले वार लगाये जाते हैं। एक पक्षमें बारह पात्र तक लगाये जा सकते हैं। गैस बनाते समय नोचिका टक्कन बन्द कर देना पड़ता है, और फिर कोयला भर कर ऊपरका टक्कन भी बन्द करना पड़ता है। सिर्फ ऊपरमें दोनो तरफ दो छेद रह जाते हैं। इसमें गैस निकलने रहनेके लिए दो नल लगे रहते हैं। इस प्रकारसे जब पात्र कोयलेसे भर जाते हैं, तब उनके नीचे आग जला दी जाती है। पात्रके आस पास भी आग जलाई जा सकती है। एक पक्षके सब पात्रोंमें जिमसे समान भावसे आँच लगे, उसका भी विशेष ध्यान रखना चाहिये। कामती बढती होनेसे किसी पात्रके कोयलेतो कच्चे ही रह जाते हैं, और किसी किसीके विस्तृत नल भो जाते हैं। इससे सिवा और भी बहुतसे दोष उत्पन्न हो जाते हैं। पत्थरके कोयलेमें कुछ गन्धकका भी भाग रहता है। यह गन्धक भाग रूपमें परिणत हो कर जिम गैसके साथ मिल जाते हैं, वह गैस बड़ते ही अनिष्टजनक होती है।

प्रायस गैस निकलनेके लिए दो नल रहते हैं। गैस बननेके साथ साथ उन नलों द्वारा वह निकलती रहनी चाहिये। देगे होनेसे पात्रके ऊपरसे कणसे भरने लगते हैं, जिमसे पात्र जोष ही पुराब हो जाता है, और गैसकी आलोकदायिका शक्ति घट जाती है। पात्र या रिटर्डके भीतरके कोयले जब पूर्ण पक जाते हैं, तब उन्हें कोक कोयला कहते हैं। कोक कोयलासे वाष्पीय भाग निकल जाता है। इसलिए वह देखनेमें अन्ना दृश्यासा मान्य पड़ता है। कच्चे कोयलेसे यह हलके होते हैं। इसमें प्रहारका भाग (C:arbon) भो ज्यादा रहता है। अन्नाते घषत इनसे धुंधा कम निकलता है और दुर्गंध भो कम होती है। इसलिए यह रमोई करनेके काममें लाया जाता है।

सुन्दर गैसके निकल जाने पर पात्रके दोनो टक्कनोंको गोद कर पके हुए कोयले निकाल लेने चाहिये। इस

समयमें उन दोनो नलके मुहको बन्द कर देना चाहिये जिमसे कि, गैस निकलती है। ऐसा नहीं करनेसे बाहर की हवा उस नलमें घुस जायगी या उसकी गैस बाहर निकल जायगी। बारहकी हवा नलमें घुस कर गैसमें मिन जानसे बचीका उजाला काम हो जाता है। इसलिए कालकत्तमें जिम प्रकार डूँन जोडनेमें S अक्षरके माफिक नलको टेढा कर देते हैं, गैसके नलको भो बहुतमे लोग देसा हो टेढा कर देते हैं। नलको ऊपरकी ओर घटा कर फिर नीचे झुका देनेसे ऐसा टेढा हो जाता है। इस स्थानका तल भाग नलसे मोटा है इस एक गड्ढा भो कहा जा सकता है। इसको 'हाइड्रोलिक मेन' (Hydraulic man) कहते हैं। इस गड्ढेके भीतर हमेशा पानो या अलकतरा भरा दशा रहता है। पात्रसे गैस बन कर पहिले नल द्वारा ऊपर चढती है। फिर वह गैस गड्ढेके पास आजाती है। वहा पर जाकर सामने पानी या अलकतरा देखतो है। पात्रमें यदि जल्दी जल्दी गैस न बने और नीचेसे अगर जोरसे धक्का न आवे तो गैस उस अलकतराको पार कर आने नहीं बढ सकती। परन्तु ऐसा नहीं होता। पात्रमें बराबर कोयले मिकते रहते हैं गैस भी बराबर बनता रहती है और धक्का भी बराबर जारी रहता है। इसलिए पोछेकी गैस आगे गैसको धक्का देतो हुई अलकतरामें प्रवेश करती है। अलकतरासे गैस हलकी होती है। इसलिए अलकतरामें घुस कर सुदुदाकारमें ऊपर आजाती है। ऊपरमें आनेसे फिर कोई चिन्ता नहीं। फिर वह नलकी रास्तासे बराबर चली जाता है। कोक कोयला निकालने समय भी वह फिर निकल नहीं सकती क्योंकि, उसके पोछेसे कोई धक्का नहीं लगता। न नोट तो सामने अलकतरा है; उसे पार करनेकी ताकत नहीं, इसानए पुन वह नोट जाती है। इसी प्रकार बाहरको वायु भो अलकतराको पार कर भीतर नहीं जा सकती।

कोयला मिकने पर पहिले पहिले जो गैस निकलती है, वह विशुद्ध नहीं होती। शीयलेमें जो तैलादि पदार्थ रहते हैं, वे ही उच्चाप लगनेसे वाष्पाकार धारण करते हैं और गैसके साथ मिल जाते हैं। इसके बाद ठण्डे होने पर जम जाते हैं। जम कर जो पदार्थ बनता है, उसे अलकतरा कहते हैं। अलकतरा जम कर गैससे अलग

होने पर भी वह गैस विशुद्ध नहीं होती। उस अवस्थामें भी गैसमें अमोनिया, गन्धक, अङ्गारास (Carbonic acid) आदि पदार्थ वाष्पाकारमें मिश्रित रहते हैं। ये सब कच्चे पत्थरके कोयलेमें भी रहते हैं। कोयला जब उष्णतासे सेके जाते हैं, तब ये वाष्पाकार धारण कर गैसके साथ मिल जाते हैं। गैसके ठण्डे होने पर अलकतराको तरह यह पृथक् नहीं होते। ये वाष्पको भाँति बराबर गैसके साथ रहते हैं। इसलिए गैससे इनको पृथक् करनेमें बड़ी दिक्कत उठानी पड़ती है, और कभी कभी पूर्णतया पृथक् करना असाध्य जान पड़ता है। परन्तु साध्यानुसार पृथक् करना ही पड़ता है। क्योंकि, ये पदार्थ लौहकी धरमें जलनेसे नाना तरहके अनिष्ट कर सकते हैं और करते भी हैं। इसलिए गैस नलके भीतर पहुँचने पर जहाँ तक बने, इसको विशुद्ध करनेका प्रयत्न करना चाहिए। पहिले गैससे अलकतरा निकाल लेनेका प्रयत्न किया जाता है। क्योंकि अलकतरायुक्त गैस ज्यादा दूर तक जानेसे नलमें जम कर नल बंद हो जाती है। गैससे अलकतराके पृथक् हो जानेपर अमोनिया, गन्धक आदिको पृथक् करनेका प्रयत्न करना चाहिए। इसके लिए गैसको नलोंके और नाना तरहके यन्त्रोंमें घुमाना पड़ता है। जिसप्रकार बांध द्वारा वाढ़ रोकी जाती है, उसी प्रकार ये यन्त्र उम गैसके वेगको रोक देते हैं। जिस प्रकार बांधके पास बहुतसा पानी इकट्ठा होकर बांधके ऊपरसे पानी निकल जाता है। उसी प्रकार उन यन्त्रोंके पास बहुतसो गैस इकट्ठी होकर फिर आगे बढ़ती है। सामने इस प्रकार विलम्ब हाँते रहनेसे पोछेको गैसका वेग क्रमशः घटता जाता है। हाइड्रोलिक मेनके लिए उस अलकतराको पार करना कष्टकर हो जाता है। कोयलाके रिटर्ट पात्रमें भी गैस जम जाती है। ऐसा होनेसे सब तरहसे विपत्तिको सम्भावना रहती है। इसलिए पोछेसे गैसको जोरसे टकिलनेके सिवा दूसरा कोई उपाय नहीं। साधारणतः बाहरकी वाष्प द्वारा ही यह काम किया जाता है। हाइड्रोलिक मेनके उस अलकतरके पास गैस पहुँचनेके पहिले वह यन्त्र लगाया जाता है। वाष्पोय बलसे वह यन्त्र गैसको बराबर ठेलता रहता है। इससे वह गैस बड़ी आसानीसे अलकतरके पार कर जाती है। और

सामनेकी अन्यान्य वाधाओंकी अतिक्रम करती हुई वेगसे चलती रहती है।

गैस जब नलके द्वारा पहिले पहिले ऊपर चढ़ती है, तब उममें अलकतराका जो अंश रहता है, उसे निकाल कर गैसको साफ करना पड़ता है। गैस जब गरम रहती है, तब उसमें अलकतराके अंश वाष्पाकारमें मिले रहते हैं, और उसके ठण्डे होते ही अलकतरा जम कर पृथक् हो जाता है। नलके भीतर गैसके पहुँचने पर उससे कुछ अलकतरा तो अपने आप ही पृथक् हो जाता है और वह एक होदमें जा करके जमता रहता है। इसके बाद गैस जब ठण्डी हो जाती है तब उससे अवशिष्ट अलकतरा भा निकल जाता है। उत्तम गैसको सहसा शीतल न करना चाहिये। ऐसा करनेसे नलमें नमक सरोखा एक पदार्थ जम कर उसके छिद्रोंकी बन्द कर देता है। इस पदार्थका नाम नैफथालिन् (Naphthalin) है। नैफथालिन्का भा मूल्य है। इसे लत्तेमें बांध कर कपड़ोंमें रख देनेसे उनमें कीड़ नहीं लगते। परन्तु गैस बनाने समय नलमें नैफथालिन्की जमते देना ठीक नहीं क्योंकि उससे नलके अनिष्ट हानिको ही सम्भावना रहती है। इसके सिवाय गैसको कुछ आलोकप्रदायिनी शक्ति जम कर इस नैफथालिन्को आलोक सृष्टि होती है। इस लिए जिम गैससे नैफथालिन् निकला हो वह गैस अच्छी नहीं अतएव उत्तम गैसको सहसा ठण्डी न कर धीरे धीरे शीतल करना योग्य है। कोयलेके रिटर्ट पात्रसे गैस निकलते ही उसे ठण्डा करना ठीक नहीं वल्कि उसे बहुतसे नलोंमेंसे चलाना ही उचित है। नलोंमेंसे गैस जँचो नोचो होती हुई क्रमशः ठण्डी होती रहती है। अन्तमें स्निग्ध नल और पात्रोंमें गैसके चलने-फिरते रहनेसे अलकतरा विल्लुल पृथक् हो जाता है। बहुतसे खड़े नल जिसमें बाहरको हवा लग कर भीतरको गैसको ठण्डी करती है, उन्हें स्निग्ध नल कहते हैं। किसी किसी कारखानेमें इन नलोंके भीतर कोक-कोयले या ईंटके टुकड़े भी रहते हैं। इनके सहयोगसे गैसका अलकतरा जल्दी ही पृथक् हो जाता है। और कहीं कहीं ये स्निग्ध नल पानीमें भी बिछा दिये जाते हैं। इससे भी

गैससे अलकतरा जल्दो अलग हो जाता है। इस प्रकार नाना स्थानोंमें अलकतरा जम कर हीदमें इकट्ठा होता है। बादमें फिर यह चढ़ाईमें उठाकर बेच दिया जाता है। विनायतमें अलकतरा पहिले बहुत कम कोमतमें बिकता था। अब उसमें मैजिफ़ा, नील पीत, लोहित आदि तरह तरहके रंग बनने लगे हैं। इससे इसका मूल्य बढ गया है। इसके अलावा इससे सैन्डेरिण नामको एक प्रकारको चीनी भो बनने लगी है। इससे मोठी दूमरी चीज दुनियामें नहीं है। यह बड़े आश्चर्यकी बात है, इसमें मन्देह नहीं।

अलकतराके हाथसे बचने पर गैससे आमोनियाकी पृथक् करना पडता है। गैसके साथ नौसादर नामका पदार्थ वायुरूपमें मिला हुआ रहता है। घरोंमें अगर गैस और नौसादरवायु एक साथ जलें, तो पीतल, काँसे आदिमें दाग पड जाते हैं। आमोनिया गैस एक योगिक पदार्थ है। मूल पदार्थ नहीं। यह एक भाग नाइट्रोजन और तीन भाग अक्जिजनसे बनता है। आमोनिया गैस जिम समय जलतो है, अर्थात् जब यह वायुकी अक्जिजनके साथ मिलती है, तब दोनों तरफ नये दो योगिक पदार्थकी छटि होतो रहती है। यवचारजन (Nitrogen) के साथ पहिले कुछ अक्जिजन मिल कर नाइट्रम एसिड, फिर उसमें और भी अक्जिजन मिलनेसेना इट्रि एसिड या नौराका द्रायक बनता है। दूसरी और उद्भवनके साथा अक्जिजन मिल कर पानी हो जाता है। पानी हो जाय, तो कुछ हजं नहीं पर घरके भीतर नाइट्रम एसिड उपपन्न होती रहनेसे विषय जाति होती है। घरकी हवा बराबर होनेके सिवा पोतल काँसे आदिमें घरतन भी बिगड जाते हैं। इसलिये आमोनियाका घनग करना बहुत ही जरूरी है।

उक्त आमोनियामे हो नोमादर घनता है। नोमादर कुछ के क दनेको चीज नहीं है, इसको भो कीमत है। पहिले विनायतमें नोमादरका ज्यादा प्रदार न था। पहिले मिगर देगमें ऊटकी गिठावे नोमादर बनना था। वही विनायतमें थोडा बहुत पदु छा करता था। गैस बनते बनाते विनायतके सुघतुर आक्षिपति देगा कि, गैससे हो बहुत आमोनिया निकलती है। निकलने

से ही रूपये प्रावेंगे। तब उन्हीने उमें पृथक् करनेका प्रयत्न किया। उन्हीने यह भी देखा कि, जलके साथ आमोनियाका खूब ही सहाव है। पानी आमोनियागैसके साथ इतना मिलता है कि, एक भाग जल ७७० गुणो आमोनियागैसके साथ। इना मिले वह तम नहीं होता।

पहिले पहल लोग बढ बढे पानीके होटोंमें एक तरफ गैस डुबो देते थे, और दूसरो और बढे बढे बुट बुटोंके साथ गैस तरने लगती थी। इस प्रकार गैसकी आमोनिया छोड़े जाते थे, अर्थात् आमोनिया पानीके साथ मिल जाती थी। परन्तु इसमें देर बहुत लगती है। हीदमें जाकर गैसको बहुत देर तक ठहराना पडता है। पोछेको तरफ गैसकी द्रुतगति मन्द हो जाती है। इस प्रकारसे गैसके धीनेमें और भो एक यह दोष है कि, गैसके चारो तरफ पानी नहीं लगने पाता। बढे बढे बुटबुटोंके समान जो गैस है, उसमें बाहर तो पानी मग ज ता है, पर भीतर नहीं लगने पाता। भीतरमें जो आमोनिया रहतो है, वह पानीके साथ नहीं मिलती इसलिये गैसमें आमोनिया रह जातो है।

फिर इसके लिए एक व्यक्तिने क्ल्रिम वर्पाकी छटि को। जनकनकं द्वारा मूलधारसे पानी वर्पाया जाता था, और उम वर्पाको भेद कर गैस ऊपर चढतो रहतो थी। इससे गैस चारों तरफसे धुल जातो था। और आमोनिया गैस भो पानीके साथ मिल जाती थी। इस तरकोवसे कुछ नाभ तो अवश्य हुआ, पर पीछे इसमें भो दोष दीखने लगे। यास्तवमें कोयलेकी गैस एक प्रकार की हाइड्रोकारबोन है, अर्थात् हाइड्रोजन और कारबोन (चद्दार) मिश्रित एक योगिक पदार्थ है। इस हाइड्रोकारबोनकी जलानेसे उष्णप चार प्रकारको उत्पत्ति होतो है। उम क्ल्रिम वर्पामें ज्वल आमोनिया ही निकल जातो हो ऐसा नहीं, बल्कि उमकी हाइड्रोकारबोन भी बहुत नष्ट हो जाया करता था। जिमने गैसकी पानी और उष्णप प्रदायिका ग्राह भो घट जातो थी। इसके लिए और एक समाधानसे एक नया उष्णप निशाना। बहुतसे छडे क्रिये हुए बड़े बड़े नर्था में कोक जोयमा रच कर उसमें गैस घना दी। गैसके

चलते समय उन पर थोड़ा थोड़ा पानी छिड़का जाना चाहिए। उस पानीके साथ सिर्फ आमोनिया तो मिली, पर हाइड्रोकार्बोन नष्ट नहीं हुआ। परन्तु गैससे आमोनिया पृथक् करनेके लिए और एक व्यक्तिने इससे भी बढ़िया युक्ति निकाली। एक नये प्रकारकी कल निकाली गई, जिसके नलीमें कुछ चक्के लगे हुए हैं। इन चक्कों पर घुस लगे हुए हैं। चक्के घूमनेके साथ साथ घुस भी पानो में भोग जाया करते हैं। इसके भीतरके गैस जाते समय उसके पानीमें आमोनिया लग जाती है। इसका मूल्य लगभग ४५००० रुपये हैं। परन्तु मूल्य अधिक होने पर भी इससे लाभ ज्यादा होता है। इससे निकाला हुआ आमोनियाका पानी बाजारोंमें बिकता है। इससे लोग नौसादर बनाते हैं। जिस कारखानेमें ४५००० रुपयेकी मशीन काममें लायी जाती है, उस कारखानेमें इतना नौसादर पैदा हो सकता है, जिससे साल भरमें उस मशीनके दास बसल हो जाय।

गैससे आमोनियाके पृथक् होने पर इससे फिर गन्धक और कार्बोनिक एसिड निकालनी पड़ती है। कार्बोनिक एसिड थोड़ी ही रहती है, और वह ज्यादा हानिकर भी नहीं होती। परन्तु गन्धक अत्यन्त अपकारी है। गन्धक होनेसे गैससे बहुत बुरी बदबू निकलती है और उससे घरकी चीजें भी बिगड़ जाती हैं। सर्वथा गन्धक दूर करना तो दुःसाध्य है, परन्तु चूनेके भीतरसे गैस चलाई जाय तो गैसकी छोड़ कर, गन्धक चूनेके साथ मिल जाता है, यह निश्चित है। कार्बोनिक एसिड भी चूनेके साथ मिल जाती है। इस तरीकेसे भी बहुतसे लोग गैसकी साफ किया करते हैं। लोहेकी चरके भीतरसे गैस पृथक् करनेसे भी गन्धक अलग हो जाता है।

इस प्रकार गैसके साफ होनेके बाद उसे इकट्ठी कर सुरक्षित रखना पड़ता है।

गैस रखनेका पात्र लोहेसे बना हुआ बकस जैसा गोल होता है। इसका नीचेका भाग खुला रहता है। यह पात्र एक जगहसे उठा कर दूसरी जगह भी रखा जा सकता है। इसके तल भागमें एक बड़ा पानीका हीट रहता है। उस हीटके भीतरसे गैसका नल आता है

और उसका मुंह पानीसे कुछ ऊंचा रहता है। कारखानोंमें गैस बन कर जब इस नलके सुखमें बाहर निकलती रहती है तब लोहेका पात्र उतार दिया जाता है। इसके चारों किनारे हीटके पानीमें डूब जाते हैं। नलके मुंहसे गैस निकल निकल कर उस पात्रमें भर जाती है। इसके चारों किनारे पानीमें डूबे हुए रहते हैं, इसलिए गैस बाहर नहीं निकलने पाती। यह गैस फिर आवश्यकतानुसार नली द्वारा लोगोंके मकानों और रास्ताओंके लिए छोड़ी जाती है।

विलायतमें गैसके लिए प्रतिवर्ष तीस करोड़ मन कोयला खर्च होता है और सिर्फ एक लगान शहरमें ही पांच करोड़ रुपयेकी गैस बिकती है। बम्बई और कलकत्ता शहरोंमें भी गैसका खर्च कुछ कम नहीं है। गोडंठा (हिं० पु०) गोवरका शुष्क चिप्पड़ जो जलानेके काममें लाया जाता है।

गोडंड़ (हिं० पु०) ग्रामका किनारा, ग्रामकी भीमा, गाँवकी आस-पामकी जगह।

गोडंया (हिं० स्त्री०) गोश्या देखा।

गोडं (हिं० स्त्री०) बैलोंकी जोड़ी

गोंगवाल (दे प्र०) वैश्योंकी एक जाति।

गोच (हिं० पु०) गोचन्दना, जाँक।

गोच (हिं० स्त्री०) गलमोछा, गलगोछा।

गोटा—उत्तर भारतवर्ष, पेशावर, भूटान, दक्षिणभारत तथा जावामें पाये जानेवाला एक तरहका छोटा पेड़। वर्षा समयमें इस पर छोटे छोटे पुष्प और जाँके समयमें लक्षणवर्णके छोटे मीठे फल लगते हैं जो खानेमें बहुत मीठे मालूम पड़ते हैं।

गोट (हिं० स्त्री०) गोष्ठ, कमर परकी धोतीकी लपेट।

गोटनी (हिं० स्त्री०) लोहे या पीतलका बना एक हथियार।

गोड—मध्यभारतके पहाड़ी देशोंकी बोली। बहुतसे गोडोंने अपनी भाषा छोड़ हिन्दोको अपनाया है। प्रकृत गोड भाषा द्राविड तथा आन्ध्रकी मध्यस्थानीय है। इसमें कई जवाने हैं। इसकी लिखा नहीं जाता और न कोई साहित्य ही देखनेमें आता है।

गोड, —मध्यप्रदेशकी एक असभ्य जाति। वर्तमानमें

इनमेंसे बहुतसे मध्यभारतके खानदेशमें और उडियाके अधिपत्यकामें तथा नर्मदा, तामी, वर्षा, वेणगङ्गा आदि नदीप्रवाहित स्थानोंमें तथा वैतुल, छिन्दवाडा, सिवनी और मण्डला इत्यादि जिलोंमें भी वास करते हैं।

इस जातिका किरीने गोंड और किरी किरीने गोंड नामसे उल्लेख किया है। डिक्लीप साहबका अनुमान है कि, सम्भवतः तेलगू कोण्ड (पहाड़) शब्दसे मुसलमान ऐतिहासिकोंने "पहाड़ी जाति" ऐसे अर्थके अपभ्रंशमें गोंड लिखा है। भू-विज्ञानियों भी इन लोगोंको "गोंडलोइ" (Gondaloi) नामसे उल्लेख कर गये हैं। मुसलमान इतिहासमें इनकी वासभूमि "गोंड वन" लिखी है। गोंडवंशियों। पहिले उक्त स्थानमें मन्दहियाली गोंडराज्य था। ७८० ई०से लेकर ८०८ ई० तक राष्ट्रकूटराज गोंडने मरुदेश पर आक्रमण किया था। मरुदेशाधिपति बलराज गोंडराजके धनसे ही धनो थे। ८१२ ई०में लाटेश्वरराज कर्क राष्ट्रकूटने गोंडराजके ज्ञायसे मालवराजको बचाया था। १०४२ ई०में गोंडराज्य चेदिराज कर्णदेवके राज्यमें मिला हुआ था। उक्त प्रमाणोंसे मालूम होता है कि, पहिले एक गोंडदेश ही चेदि, मालव, राष्ट्रकूट और बरारराज्य का सीमान्तवर्ती था। सम्भव है कि, वह गोंडदेश पश्चिम गोंडोंमेंसे एक हो। गोंडों। गोंडदेशवासी होने के कारण इस जातिका नाम गोंड पडा हो, ऐसा भी सम्भव हो सकता है।

गोंड लोगों में राजगोड, रघुवल, दादावे, कतुन्या, पाडाल, टोली, शोफियाल, ठोटियाल, कौलाभूतान, कौकोपाल, कोलाम, मादियाल और नीचपाडाल इतने श्रेणीयाँ भी पाई जाती हैं। राजगोड, रघुवल और दादावे श्रेणीके गोंड खेती करते हैं, इन लोगोंमें गेटोका व्यवहार तो है, पर गेटोका व्यवहार खानू नहीं है। इन लोगोंमें हिन्दुओंकी क्रियाओंका बहुतसा अनुकरण किया है और धोरे धोरे हिन्दुओंमें मिननेका प्रथम भी करते हैं। राजराजादेके गोंडराज अपनेकी हिन्दू कृष्ण कर परिचय दते हैं। ये लोग दरिद्र राजपूत कन्याओंका पाणिग्रहण करते हैं। पाडाल श्रेणीके लोग धर्मोपदेशका काम करते हैं। कहीं कहीं इनकी पार्याडो या

राजवहन वा देगाट भी कहते हैं। टोली लोग टोलक वशते हैं। नागारची या छेरव्या नामसे इनमें एक नोची श्रेणी भी है। इस श्रेणीके मर्द लोग बकारियोंकी चराते हैं और इनकी स्त्रियाँ दाईका काम करती हैं। शोफियाल लोग मजिरी बजाते हुए गाते फिरते हैं। टोलियाल लोग शीतला देवोके उपासक होते हैं। चिचन फौनके समय ये लोग उसकी उपगम करनेके लिए घर घर जा कर शीतला देवोके गीत गाया करते हैं। इसीलिए कहीं कहीं इनकी मातियाल, ठाकुर और पेण्डा बहिया भी कहते हैं।

कौलाभूतान लोग भी सबको पर गाते फिरते हैं। इनकी लडकिया भी नत्तोंकीका काम करते हैं। कौकोपाल वा गोंडगोपाल लोग खानोका काम करते हैं। मादियाल गोंड सबसे ज्यादा अमभ्य और जङ्गलो होते हैं। वैनादिला पर्वत पर ये लोग कुलड़ाडी काममें लेकर सर्वथा नङ्गे घूम करते हैं। इनकी स्त्रियाँ भी बगडा पहरना नहीं जानती। गिर्फ कुल पत्तोंकी लेकर कमरके आगे पीछे बांध लेती हैं। वस्त्रारके लोग इनकी जोधिया कहते हैं। ये लोग अपरिचित व्यक्तिको देखते ही डरसे भाग जाते हैं। वास्तारके राजाकी ये लोग कई तरहसे कर देते हैं। कर बसूल करते समय तहसीलदार गांवके बाहर आकर टोल वजवा कर कहीं छिप जाता है, पीछे ये लोग उस स्थान पर जाकर अपनी इच्छानुसार कर रख कर भाग जाते हैं। वर्षा नदोके दक्षिणमें पिण्डा पहाड़ पर कौलास श्रेणीका वास है। ये लोग अपनी जातिके माथ बेट कर खाते पीते हैं पर ब्याह शादे नहीं करते। ये लोग भीमसेनकी पूजा करते हैं।

इसके अनाया छिन्दवाडा और महादेव पर्वतके बीचमें रहनेवाले मादि या गोंड हिन्दुओंकी भाषा और धर्मिक क्रियाकलापोंका बहुतसा अनुकरण करते हैं। वास्तार, मण्डारा, और रायपुर जिलेके इनका गोंड वास्तार राज प्रदत्त यज्ञोपवीत धारण कर अपनेकी उच्च श्रेणीका मानते हैं। वास्तारके गीत वा कौतोर और माडियाल लोगोंको उपजोविका प्रधानत खेती पर हो निम्न है। वेणगङ्गाके किनारेके नैकुंजने हिन्दुओं जैसा अपना वेप बना लिया है। ये लोग शिकार करके अपना

पेट भरते हैं। जङ्गल और घास काटकर भी पड़ोसियोंकी बेचा करते हैं। ये गऊका मांस नहीं खाते। समय समय पर चोरी और कौतो करके पड़ोसियोंका धन लूट लेते हैं।

इनकी धार्मिक कार्यप्रणाली शक जातिके समान है। ये लोग जीवित घोड़ेके बटले देवकी मिट्टीके घोड़े चढ़ाते हैं। प्रेतलोकके पितृपुरुषोंको तृप्त करनेके लिए मिट्टीका ब्रीड़ा, चाँवल, उड़द, अण्डा, मुरगा और भड़ चढ़ाते हैं। भीन्स्ले-राजने इनके प्रचलित गोवधप्रथाकी सर्वथा बन्द कर दिया था। लड़के लड़कीयोंके मर जाने पर ये लोग उन्हें जमीनमें गाड़ देते हैं, कहीं कहीं वृद्धोंके भी गाड़ देते हैं। परन्तु वस्तारकी मादिया जाति और हिन्दुधर्मानुसारी गोंड लोग मुर्देको दाह क्रिया करते हैं।

ये लोग तीस देव देवियोंकी पूजा करते हैं। इनमें वृद्धदेव और दुल्लादेवकी अधिक सम्मान करते हैं। कभी कभी सृष्टिकर्ताको स्तुति द्वारा पूजा करते हैं। और उनके उद्देशसे घी और चीनी द्वारा होम भी किया करते हैं।

ये लोग प्रति वर्ष फसलके समयमें वृद्धदेव वा वृद्धलपेन (सूर्य) के लिए शूकर उत्सर्ग करते हैं। वृद्धलपेनकी व्याघ्रमूर्ति लोहेसे बनी हुई है। मातियाल शीतला देवीकी कहते हैं। भण्डारा जिलेके दक्षिणमें परस्पर जुड़ो हुई चौखूँटे काठ पर कुछ मूर्तियाँ बनी हुई हैं, उनका नाम बङ्गरवाई है ऐसी किस्वदन्ती सुननेमें आते हैं कि घण्टराम, चम्पाराम, नेकाराम, पोतलिङ्ग आदि उनके पाँच भाई हैं और दन्तेश्वरो (काली) नामकी एक बहिन है। गोंड जातिके लोगोंकी ऐसी धारणा है कि, ये हो देवदेवियाँ जीवोंकी मृत्युका कारण हैं। नागपुरके रहनेवाले गोंड इन देवदेवियोंकी विशेष भक्ति करते हैं, और बहुत डरते भी हैं।

जगदलपुरसे ६० मील दक्षिण-पश्चिममें शङ्करी और इन्द्रवती नदी है, इन नदियोंकी दङ्गनशाखाके संयोगस्थल पर वस्तारके निकटवर्ती दण्डेवार नामक ग्राममें दन्तेश्वरी (काली) का मन्दिर है। वस्तारराजने किसी कार्यके उपलक्षमें १८३५ ई०में उक्त देवीके सामने

२५ आदमियोंकी बलि दी थी। यह मन्वाट धीरे धीरे १८८३ ई०में तक नागपुरके राजाके पास पहुँचा था। बन्धुकवचके नोचे श्ली, गोज़ेरा मल, पलो, गण्डावा, खाम वा कङ्क, वृद्धलपेन और मानियाल इन सात देवताओंकी एक साथ "मातदेवल"के नामसे पूजा की जाती है।

इसके सिवा कौटोपेन, मातुया, फार्सपेन, हर्टल, बङ्गराम, भीवास वा भीमसेन, समरकन्द, वाघोव, सुलतान शाकद, शकलदेव वा शकपेन और मान्यालपेन वा सेनलकदन देवताओंकी पूजा यो प्रचलित है।

मण्डलावासो गोंडमें 'लम्जिना' विवाह प्रचलित है। इस प्रथाके अनुसार वरको विवाहसे पहले कुछ दिनों तक कन्याका आज्ञावाहो बनकर रहना पड़ता है। कन्या अपनी इच्छानुसार पुरुषके साथ चली आ सकती है। इनमें जो विवाह जवरदंस्ती किया जाता है, उसका नाम है,—'माधवन्धनी'। यदि कन्या वरके घर पर विवाह करने आवे तो उस व्याहको 'सादिवेश्यो' कहेंगे। इस जातिको विधवायें अपने देवरके साथ या और किसी भी पुरुषके साथ अपना व्याह कर सकती हैं।

पुरुषके मर जाने पर वह जला दिया जाता है और स्त्रीको गाड़ देते हैं।

बङ्गदेशकी गोंड जातिमें राजगोंड, धोकड़ गोंड, दोरोपा गोंड वा नायक, भोरा आदि चार थोक हैं। इनमें राजगोंड ही गण्यमान्य है। क्योंकि बहुतांका ऐसा अनुमान है कि, ये असलमें ये ही गोंडराजवंश-प्रसूत हैं। धोकड़ लोग रास्तीपर भीख मांगा करते हैं। सिंहभूममें टोरोया गोडोंकी ज्यादा संख्या है। कर्णल डैल्लन साहबने लिखा है कि, ये दोरोया गोंड ही वामनघाटोके मन्नापातको सेनामें भर्ती थे। अपने स्वामीके विरुद्ध अस्त्र धारण करनेके अपराधसे ये लोग वामनघाटोसे निकाल कर सिंहभूममें रखे गये थे।

इन लोगोंमें बाल्यविवाह और पूरीउम्रमें विवाह अब भी प्रचलित है। हिन्दूधर्मके संस्पर्शसे ये लोग क्रमशः बाल्यविवाहके पक्षपाती होते जाते हैं। सिन्दूरदान और आम्बुचक्रके साथ विवाह ही इसका प्रधान अङ्ग है। कहीं

कहीं विवाहवन्धनके समय नाइ आकर वर और कन्या के ऊपर एक एक गागर पानी ढाल जाता है। विधवाए अपने देवरसे विवाह कर सकते हैं। परन्तु ऐसे विवाह में कोई क्रिया नहीं होती, और तो क्या ब्राह्मण और नाई तककी भो जरूरत नहीं पड़ती। मिर्फ अपनी जातिके भाइयोंके सामने वर उस विधवाको एक नई साडो और चूडी देता है, तथा "इस विधवाका भरण-पोषणका भार मेरे ऊपर रहना" ऐसा अङ्गीकार करने पर उपस्थित जातिभाइयोंको अनुमति लेकर विवाह कर दिया जाता है।

विहारके गौड क्रमग अपनीको कट्टर हिन्दू कह कर अपना परिचय देने लगे हैं। ये लोग हिन्दुओंके बहुत से देव देवियोंको पूजा करते हैं। इसके अतिरिक्त बूडा देव और दुवहादेवकी भो पूजा क्रिया करते हैं। देव पूजा और विवाह आदिके कार्यामि निम्न येषीके ब्राह्मण ही पोरोहित्यका काम करते हैं। ये लोग मृतदेहको दाग देते हैं। पातक तोन दिनका मानते हैं। ये लोग दाढी मूक और मिर मुडा कर खान करके शुद्ध होते हैं, और मृत आत्माके लिए दूध रोटी चढाते हैं।

पहले निखा जा चुका है कि, गौण्डयानाके अन्तर्गत भूमि पर प्राचोन गौडराज्य था और उन राजाओंके समय में उक्त प्रदेशमें गडा और मण्डला नामकी दो राजधानियाँ थीं। इन दो स्थानके प्राचोन ध्व सावशेषों और हिन्दूराजाओंके समयके शिलानलेखसि पहिलेको मन्दि को काफी प्रमाण मिलते हैं। अब वैसी-मन्दि नहीं रही, गडा और मण्डला ये दोनों नगर अपना पूर्व परिचय मात्र दे रहे हैं। पहले जो गौड या गौड राजगण गडमण्डलमें राज्य करते थे, वे अपनेको हिन्दू और क्षत्रिय बताते हैं।

प्राचोन समयमें मानवके राजपूत राजाओंके साथ इन गौडराजाओंका समय समयपर युद्ध होता था, इस लिए सम्भव है कि, उस समयमें ही दोनों जातियोंमें विवाह सम्बन्ध प्रचलित हुआ हो। उनके वंशके लोग अब भी राजपूत या राजपूतगोंधके नामसे अपना परिचय देते हैं। गडाके राजा नागदेवके मर जाने पर उनके दामाद यादवराय उस राज्यके उत्तराधिकारी हुए थे और

उन्होंने गढानगरको ही अपनी राजधानी बनाया था। ६८८ ई०में यादवरायके वंशधर गोपालशाहीने मण्डला पर दखल जमाया था। सयामशाहीने जब १४८० ई०में राज्यारोहण किया था, तब वे मिफ एक ही जिलेके राजा थे। पीछे उन्होंने ५२ जिलों पर दखल जमा लिया था। १५३० ई०में ये मर गये।

फिरिस्ताके पठनेसे मालूम हो सकता है कि, १५६३ ई०में आसफ् खाने जब गडा पर आक्रमण किया था, तब वहाँके राजा वीरनारायण थे। इस युद्धमें इनकी मृत्यु हुई थी। फिर १६१० ई०में छद्देव्यवर वहाके राजा हुए थे। इन्होंने रामनगरमें भोतीमहल नामका एक प्रासाद बनाया था। उस भोतीमहलके १०० फीट दक्षिण पश्चिममें उनकी पत्नी रानोसुन्दरोका बनाया हुआ एक विष्णुमन्दिर है। उस मन्दिरमें विष्णु, शिव, गणेश, दुर्गा और सूर्यदेवका मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं मन्दिरकी लम्बाई चौष्टाई कुल ५६ फुट है। इसके भीतरमें २८ फीट चतुरस्र एक घर है, उसको छत पर शुभ्र है। यह मन्दिरकी घनावट मुसलमानोंको मसजिद जैसा है। बहानाके लोग इसे पधरत मन्दिर कहते हैं। १७४२ ई०में शिवराजशाहीने राज्यभार ग्रहण किया था। मझा राष्ट्रीय मर्दार बालाजी बाजोरावके साथ इनका युद्ध हुआ था।

सातपुरा पूर्वतके दक्षिणकी तरफ किन्दवाडाके अन्तर्गत देवगढ में और बतूलके अन्तर्गत खेरना ग्राममें दूमेरे गोड राजा राज्य करते थे। १४३३ ई०में खेरनाके राजा नरमिहराय मानवराज इन्द्र घोरीके युद्धमें पराजित हो कर मारे गये। औरङ्गजेबके राजत्वकालमें शिवनीगढ में एक, पार्श्वतीय राजा स्वाधीनभावसे राज्य करता था। महाराष्ट्रो ने ई० स० १७६०में ७५के भीतर भीतर इसकी स्वाधीनता नष्ट कर दी थी। वहाँ नदीके पाम चन्दानगर है, इसमें भी गोड वंशके लोग रहते हैं। गोडकिरी (हि० खी०) एक राक्षिणी जो गोड रागका एक भेट ममभो जाती है।

गोडरा (हि० मु०) मोटक मुख पर बंधे जानेके एक मोल लकडी या लोहकी छड़। २ कुण्डलके आभारकी कोई चीज। ३ परिधि, लकीरका मोल घेरा।

गोंडरी (हि० स्त्री०) कोई गोलाकार पदार्थ ।
गोंडला (हि० पु०) परिधि लकीरका गोल घेरा ।
गोंडा (हि० पु०) १ बाडा, घेरा हुआ स्थान । २ ग्राम, गांव;
मोहला, पुरा, बस्ती । ३ खेतोंका उतना घेरा जितना
एक किसानका हो और एक ही जगह पर हो । ४ बड़ी
चौड़ी सड़क । ५ आंगन, चौक । ६ परकन ।

गोंडा—टेहरादून, अबध, गोरखपुर, बुंदेलखंड, बंगाल
और मध्यभारतके जङ्गलोंमें उत्पन्न होनेवाली एक तरहकी
लता । थोड़े ही वर्षोंमें यह बहुत फैल जाती है । समय
समय पर यह फाटी नहीं जानेसे जङ्गलोंकी बहुत हानि
पहुँचाती है । इसके पत्ते बहुत लम्बे चौड़े होते जो चर-
के काममें आते हैं । औषध कालमें इसकी टहनियोंके गीर्ष
पर गुच्छेके पुष्प लगते हैं ।

गोंडी—विहारकी मत्स्य और क्षत्रियोंकी एक जाति । इन्हें
गुंडी, मल्लाह, मछुआ, आदि भी कहते हैं । गोंडियोंका
कहना है कि, “जिन निषादन श्रीरामचन्द्रको नदी पार
कराया था, हम लोग उन्हींके वंशके हैं ।” निषाद देश ।
इनकी आकृति अनार्योंसे कुछ कुछ मिलती है । इनकी
उपाधियां ये हैं,—चौधरी, जयमन, मन्दर, सुखियार,
नाखुदा और सहनी । इनमें कुरिन्, खुनीत्, कोल, चाव
या चावो, पहाडी कुरिन् और वनपर आदि कई एक
श्रेणियां हैं । उक्त श्रेणियोंमेंसे कोल और कुरिन् आपस-
में रोटी-बेटीका व्यवहार रखते हैं, परन्तु इतर श्रेणियों
के लोग दूसरी श्रेणियोंके साथ बेटी-व्यवहार नहीं करना
चाहते । वालिकाविवाह ही इन लोगोंमें प्रचलित है,
परन्तु ऋतुमती होनेके बाद भी लड़कियोंका ब्याह होता
है, इसे ये लोग निन्दनीय नहीं समझते । पहिली स्त्री-
के वध्या या चिररुग्ण होने पर ही ये लोग दूसरा विवाह
करते हैं, अन्यथा नहीं । इनकी विधवाये अपनी
इच्छानुसार दूसरी बार विवाह कर सकती हैं । आपसमें
कुछ खट-पट या और कोई कारणसे विद्वेष हो जाय तो
ये लोग पञ्चायतकी आज्ञा लेकर विवाह-वधनको तोड़
डालते हैं । गोंडियोंमें अधिकांश वैष्णव ही मिलेंगे ;
और कुछ थोड़ेसे सौर भी देखनेमें आते हैं । निम्न
श्रेणियोंके मैथिल ब्राह्मण लोग इनके पुरोहित हैं । ये
लोग पाँचपीर, कैलावावा, बाराही, जयसिंह, अमरसिंह

चन्द्रसिंह, टियालसिंह, केवल, मरझ, बन्दो, गौराइया,
कमलाजी और हनुमानकी पूजा करते हैं । कैलावावा-
की ये लोग गङ्गातीरा बेलदार बतलाते हैं । बाराही-
पूजामें ये लोग ब्राह्मण पुरोहितको बिना बुलाये हो
एक शूकरका बच्चा चढ़ा देते हैं । जयसिंह गोंडी
जातिके ये और वे उज्जयिनीमें रहते थे । किसी समय-
में सुन्दरवनके राजाके साथ एक लकड़ीके पीछे इनकी
भगड़ा चला था, उसमें राजाने बात मी गोंडियोंको
कौट किया था । जयसिंहने राजाको मार कर इनका
उद्धार किया था । तब हीसे ये लोग जयसिंहकी पूजा
करते हैं । ये लोग मुट्टेकी जन्माते हैं । तेरहवें दिन
इन लोगोंमें आठ हुआ करता है ।

मछली मारना और नाव चलाना ही इनकी उपजी-
विका है । परन्तु अब बहुतेरे ये काम छोड़ दिया है,
और वे खेतों करने लगे हैं । वे लोग शराब, मछली, चूहे,
कछुए और शूकर खाना पसन्द करते हैं । हाँ, इनमें जो
भगत हैं वे मद्य, मांस कुछ भी नहीं खाते । विहारके
उच्चश्रेणियोंके ब्राह्मण इनके हातका पानी नहीं पीते । वहाँ
ये कुम्हारोंसे भी नोच समझ जाते हैं । ये लोग केवल,
धानुक आदि नोच जातिके हाथका पानी और मिठाई
आदि भी खाते हैं । विहार-बंगाल भरमें ६ लाखके करीब
गोंडी रहते हैं ।

गोंद (हि० पु०) चिप चिपा या लसादार पसेव जो पेड़ोंके
तनेसे निकलता है । यह शुष्क होने पर कठिन और चम-
कीला हो जाता है ।

गोंदनी (हि० स्त्री०) गोंदीका पेड़ । गोंदी इन्दी ।

गोंदपंजरी (हि० स्त्री०) प्रसूता स्त्रीकी खिलानेकी
गोंद मिश्रित पंजीरी ।

गोंदपाग (हि० पु०) गोंद और चीनीके संयोगसे बनी
हुई एक तरहकी मिठाई, पपड़ी ।

गोंदमखाना (हि० पु०) गोंद मिश्रित भूना हुआ
मखाना ।

गोंदरा (हि० पु०) १ मोलायम घास या पोआलका बना
हुआ एक प्रकारका बैठनेका आसन । २ गोनरा घास ।
गोंदरी (हि० स्त्री०) जलमें उत्पन्न होनेवाली एक तर-
हकी घास जो बहुत लम्बी और गर्म होती है । २ इसी
दणकी बनी हुई चटाई । ३ खड़की चटाई ।

गाटला (हि० पु०) गुन्द्रा, जलाशयोंके किनारे होनेवाला बड़ा नागरमोया । इसकी ऊँचाई लगभग एक गज की होती है ।

गो दा (हि० पु०) १ भुने चनेका बेंसन । यह पानोमें गूध कर बुनबुनो को खिलाया जाता है । २ गारा मिट्टीका कपसा ।

गोंदो (हि० स्त्री०) एक तरहका पेड़ जो मोलसिरोके सदृश होता है । फागुन चैत मासमें इसमें लाल रंगके छोटे छोटे पुष्प लगत हैं । इसके फल पुष्प छाल आदि औषधके काममें आते हैं । यह जड़लो तथा मैदानोंमें उपजता है ।

गो दोना (हि० पु०) वह जिसमेंसे गो द निकलता हो । यथा—बमूल, ढाक प्रभृति ।

गो (सं० पु० स्त्री०) गच्छति गम कर्त्तरि ङी । यद्वा गच्छत्यनेन ह्यप्ययानसाधनत्वात् स्त्रीगवाय दानेन स्वर्गसाधनत्वात् तथात्वं । गो शब्द योगरूढ है । 'इरागण न्य भोजा वीगिका वाचकादयः ।' ('भाष्यरथ) वाचस्पत्यु गोशब्द की व्युत्पत्ति प्रदर्शन स्थल पर आनन्दारिक प्रधान दर्पणकार विश्वनाथजी भूल पकड़ कर कहते हैं कि, 'गम धातुके उत्तर करणवाच्यमें डो प्रत्यय होनेसे गेग्यद् निष्पन्न होता है । उणादि प्रत्यय कर्तृवाच्यमें हो ऐसा कोई नियम नहीं है । किन्तु दर्पणकारका कथन है कि "यदि व्युत्पत्तिप्रत्यय अर्थको ही केवल मुख्यार्थ कहकर स्त्रोकार किया जाय तो "गो शेत" इत्यादि स्थानमें भी यह लक्षण हो सकता है । गम धातुके उत्तर डो प्रत्यय होनेसे निष्पन्न गो शब्दके शयनकालमें प्रयोग लक्षण व्यतोत्त भ्रमभाव है । वाचस्पत्युके मतमें टपणकारका ऐसा कहना भूल है, यह अनवधानतासे भ्रमवा विना समझें वृत्ति लिखा गया है, क्यों कि करणवाच्यमें डो प्रत्यय होनेसे निष्पन्न गोशब्दका शयनकालमें प्रयोग होनेसे किसी तरहकी वादा नहीं है । कर्त्तृवाच्यमें उणादि प्रत्यय हो ही नहीं सकता ऐसा कहीं वचन नहीं है । वाचस्पत्युके मतमें सुवके अनुसार केवल सप्रदान और अपदानवाच्यमें उणादि प्रत्यय नहीं होता, किन्तु इससे अतिरिक्त कर्त्तृकमें प्रभृति समस्त वाच्यमें उणादि प्रत्यय लगा ही करता है । दर्पणकारने कर्त्तृवाच्यमें

निष्पन्न गोशब्दकी व्युत्पत्ति लभ्यार्थ "गमनकर्त्ता" धर कर ऐसा लिखा है । वाचस्पत्युमें गो शब्द देखा ।

१ खनामग्यात चतुष्पद पशुविशेष, ह्य तथा गो, चौपाया पशु, बैल और गाय, भवेद्यौ । (Bovina) स्त्रीगोका पर्याय—माहिपो, भौरभेयी, उखा, माला, शृङ्गिणी, अर्धुनी, अग्रग, रोहिणी, माहिन्दी, इव्या, धेतु, अग्रा, दोग्री, भद्रा, भूरिमहो, अनडुही, कल्याणी, पावनी, गोरी, सुरभि महा विनिनाचि, सुरभौ, अनडुही, डिडा, अघमा, बडुला, मही, अदिति, इला, जगती और शर्करा है ।

पु गोकाम पर्याय ११११५ शब्दमें २५० । शृङ्गस्थोक्ति लिए गोके जैसा उपकारी पशु दूसरा कोई नहीं है । इहलक्षितामे इसका शुभाशुभ लक्षण इस प्रकार लिखा है—जिस गोके दोनों नेत्र रूज और मूषिक सदृश हों तथा उनकी कोणमें सर्वदा मल देखा जाता हो, तो वह गो अशुभममकी जाती है । जिन गौश्रीको नासिका विस्तृत, शृङ्ग प्रचनशील वर्ण गर्धके सदृश तथा देहकरटा तुल्य हो एव जिनकी दन्तसंख्या १०, ७ या ४ हो, मुण्ड तथा मुख लम्बमान पृष्ठ विनत, शीवाङ्ग और स्थूलरहे, गति मध्यम तथा खुर विदारित हो, वे गो शृङ्गस्थकी अशुभत्व उत्पादन करते हैं । जिस गोकाम जिह्वा क्षयवर्ण और पोतमिय, गुल्फ (एडी) अतिग्रय सूत्र वा स्थूल ककुद (घोना) अपेक्षाकृत बृहत्, टेंह क्षय तथा कोई एक अङ्गसे हीन हो, तो वह गाय शृङ्गस्थके लिए मङ्गलकर नहीं है । गायके विषयमें जो लक्षण कहे गये हैं, उन लक्षणोंके ह्य भो अशुभप्रद हैं ।

जिस बैलका मुख स्थूल और अतिग्रय दीर्घ हो, क्रोडदेश गिराजानसे परिव्याम हो और गण्डदेशका सूक्ष्म गिराममूर्त्त देखा जाय तथा जो बैल स्थानत्रयमें सूत्रव्याप करता हो, उस बैलकी अशुभकर जानना चाहिए । जिसके नेत्र मज्जरीके जैसे तथा शरीर कपिल वर्णका हो इसे ही करट कहते हैं । ऐसा बैल अशुभ समझा जाता है । केवल ब्राह्मणोंके लिये उक्त लक्षणका वैल प्रशस्त है । हर्षके भोड, ताजु और जिह्वा क्षय वर्णके रहे तथा सर्वदा निदारुण श्वाभ चलता हो तो वह बैल अपने भायके मय भवेद्योको नाग करता है । जिस बैलका बिठा, मदि और शृङ्ग स्थल, उदर अंत्यवर्ण तथा दृमने अग्रका वर्ण

कुमारिका अन्तरीपसे हिमालयके प्रान्तदेश पर्यन्त जङ्गलोंमें गो देखे जाते हैं। भारतवर्षके पश्चिम नीलगिरि, वायनाड, कुर्ग, वावावुदन और महावलिश्वर पर्वतोंमें ये भुगडके भुगड रहते हैं। नर्मदा और ताली नदीके मध्यवर्ती वनोंमें पुलन, दुगिडगल पहाड़, शान्दासङ्गल पर्वत पर तथा वेन्गुरके निकटवर्ती सर्वरव पर्वत पर गोदावरो और कृष्णा नदीके मध्यवर्ती स्थानमें, कटक, मैदिनीपुर, मध्यभारत, महिसुर, नेमूर, अयोध्या, रोहिलखण्ड, शाहाबाद और मुजफ्फरनगरके निकटवर्ती दोआबमें ये जंगली अवस्थामें देखे जाते हैं।

हिमालय प्रदेशके हिमावत स्थानोंमें एक तरहका बन्धु गो (Poephagus Srunniens) देखा जाता है एवं वहाँके रहनेवाले खेतोंके काममें लानेके लिए चमरी गो (Yak) पोषते हैं। चमरी गो देखा। ब्रह्मपुत्र नदीके पूर्वस्थ पार्वतीय स्थानोंमें, आसाम उपत्यकाके मिश्रि पहाड़ और उसके निकटवर्ती स्थानसे उत्तर और पूर्वमें चीनदेशके प्रान्तसीमा पर्यन्त एक दूसरी तरहका गोजाति देखी जाती है। (Gavocus frontalis) हम लोगोंके देशमें इस तरहके भवेशीको गयाल या मिथुन कहते हैं। ये बहुत जल्द हिल जाते हैं। त्रिपुरा, चट्टग्राम प्रभृति स्थानोंमें इनको संख्या अधिक है। श्रीहृष्टमें एक

प्रकारका सङ्कर गो (Ros sylhetanus) पाया जाता है। ब्रह्मदेशके 'विन्देङ्ग' नामक जंगली गाय (Gavocus Sondaicus) उत्तरसे चट्टग्राम तथा दक्षिणसे मलय तक समस्त स्थानोंमें रहती है।

यूरोपीय प्राणितत्त्ववेत्ता पालित गोक मध्य जिसे ककुट होता उसे Zabu अर्थात् तथा ककुटविहीन गोलाकार-शृङ्गविशिष्ट गोको Taurus और ककुट हीन चिपटे-शृङ्ग गोको Gavalus अर्थात् गोक पशु कहते हैं।

यूरोपके पोलैण्ड, कार्पेथीयपर्वत, लियुयनीया तथा एशियाके ककेशस पर्वतके निकटस्थ वनोंमें एक जातिका गो रहता जिसे वाइसन (Bison) कहते हैं। बहुतांका अनुमान है कि वर्तमान गृहपालित भवेशी वाइसनसे ज्ञा उत्पन्न हुवे है। उत्तर अमेरिकामें जो वाइसन देखे जाते उनका शरीर बड़े बड़े मच्छिपोंसे भी बृहत् होता है। इनके मस्तकके लोम विशेषतः गर्दनके जमीन पर लटकते रहते हैं। एक गुच्छा लोम तौलामें चार सेर होता है। लोमसे जो सूत प्रसृत होती उनसे उत्कृष्ट वस्त्र और दस्ताना बनाये जाते हैं। प्रातः और मन्ध्या समय ये दल बान्ध कर बाहर चरने निकलते। रौद्रमें वृक्षकी छाया में शयन किया करते हैं। मनुष्यका इन्हें बड़ा भय रहता है। आहत होने पर ये क्रोधान्वित हो आक्रमणकारी-



का विनाश करनेके लिए दौड़ते हैं। उक्त टेंगके अमध्य मगुथ अग्नि जला कर इन्ह किमो अपरिसर स्थानमें ले जाते और सबके एकत्र होने पर मार डालते हैं।

नियुयेनियाके विरुद्ध अरथ्थमें इडउरस नामको एक जाति देखी जाती है। चान्मू मेकेञ्जि माइवने लिखा है कि इनका शरीर हाथोंके सदृश छद्दत्त चत्तु छज्जल और रक्तवर्ण शोवा छोटी होती है और मींग मोटे तथा छोटे इनका सम्पूर्ण शरीर कृष्णवर्ण नीमसे ढका रहता और गात्रमें माधारणत एक तरहका दुर्गन्ध निर्गत होता है।

अमेरिकाके जगनेमें पहिले एक भी मवेशी नहीं था। स्पेनवासी दूसरी जगहमें गो लाकर उसे जगलमें छोड़ दिया करते। आजकल उनमें इतनी वृद्धि हो गई है कि एक पम्पाके वनमें ही लाख लाख गो देखे जाते हैं। शिकारोगण जगल जा इम गोकी शिकार कर घर ले आते हैं।

वेदाक मतके अनुसार गोमासका गुण—सुस्निग्ध, पित्त और त्रैफणहिकर, हृद्य, वलकर, पौनस और प्रदरनाशक है। (भाष्यरत्न) गोदुग्धका गुण—पथ्य, अत्यन्त रुचि कर, स्वादु, स्निग्ध, पित्त और वातरोगनाशक, पवित्र कान्ति, प्रज्ञा, चन्द्रपुष्टि और वीर्यवृद्धिकर है। दधिका गुण—पति पवित्र, गीत, स्निग्ध, दोषन, वलकर, मधुर, अरुचि पार वातरोगनाशक एवं याहो। नवनीत (मखन) का गुण—शीतवर्ण, वल, शुक, कफ, रुचि, सुव्य, कान्ति और पुष्टिकर, पतिमधुर, मृगशी, चक्षुका हितकर, च त सर्वाङ्गशूल, काम, अम और विदोषनाशक है। इसका घृतका गुण—सुखप्रिय, वृद्धि, कान्ति, स्मृति, वल, मेधा पुष्ट, पविन, शुक और शरीरको म्यूलता वृद्धिकर, वात, त्रैषा अम और पित्तनाशक है। हृद्यमें गौका घो अं छ बहुगुणविगट है। राजनिघण्टुके मतमें प्रत्यूपकालमें गोदुग्ध गुद, विटम्बो और दुर्जर है। इसी कारण मूर्धा न्यरुं एक प्रहर पीछे दुग्ध धरण करना अच्छा है। यह मया दोषन पार लघु है। इसका विषय दुग्ध २०१ पृष्ठा। मया या पके पामर्ज मय गोदुग्धकेन अग्निसे यदणी रोग दूर हो जाता है।

गोमूत्रका गुण—घार कटु, तिक्त और कषायरस, नौस्य, उष्णवैश, मधु, अग्निदोषिकारक, मेधाजनक, पित्तवृद्धिकर कक, पायु, गुण, गुण्य उदर, पापाह,

कण्डू, निवरीग, किलास रोग, आमवात, वस्ति, वेदना, कुष्ठ, कास, श्वास, शोथ, कामला और पाण्डुरोगनाशक है। सब तरहके मूत्रमें गोमूत्र ही अधिक गुणवि श्रेष्ठ है।

(भाष्यरत्नाग पृष्ठ १ भा०)

गम्यते ज्ञायते अनेन गम करणे डी यहा शीघ्र गच्छति गम् कर्तारि डो। (पु०) २ रग्नि, किरण, प्रकाश। ३ यन्त्र। ४ क्षीरक, होरा। गम्यते बहुदानादिभि गम् कर्मणि डो। ५ स्वर्ग। गम्यते इत्यापूर्वादि कर्मणा डो। ६ चन्द्र, चांद। गच्छति प्राप्नोति भुवन स्वतेजसा गम कर्तारि डो। ७ सूय ८ गोमिधयत्र। ९ ऋषभ नामकी एक तरहकी घोषध। (स्त्री०) गम्यते विपयो यया गम करणे डो। १० चक्षु, खोंव। ११ वाण, तीर। गम कर्मणि डो। १२ दिक, दिगा। १३ वाक्व। गम्यतेऽस्या गम् अधिकरणे डा १४ पृथिवी जमोन। १५ जल, पानो। १६ पशु, यया बकरी, भैंस, भेडो प्रभृति दुग्ध देनेवाला पशु। १७ माता। १८ पुनस्यको भार्याका नाम। इसका दूसरा नाम गविजाता था। गविजाता देवा।

१९ नवमर्या, नौका पद्द। २० इन्द्रिय। (पु० स्त्री०) गम्यते ज्ञायते स्पर्शसुखमनेन गम करणे डो। २१ नीम, रोम। (पु०) २२ ह्यपराशि। २३ घोटक पीडा। २४ गायक गवैया, गानेवाला। २५ मश मक। २६ भाकाग। २७ नदो नामक गिववाण। (स्त्री०) २८ विजानो। ३० मरस्वतो। ३१ जिह्वा, जीभ।

गोषय (म० वि०) गावो ऽयं यय्य, बहुप्रो, मन्थिनिषेध। १ जिसके अयमागमें गो रहें जिसके आगमें गाय हो। (पु०) २ गोममूत्र, गायका मुण्ड।

गोषजन (म० वि०) पञ्जति चान्यति पञ्च म्बु, गावां पजन, ६ तत्। गोचालक।

ग पर्व (म० वि०) एक गौका मूत्र्य, एक गायका दाम। गोषर्णम् (म० वि०) गावो ऽयं उदकमिव प्रह्ला यस्मिन् बहुप्रो०। जिसमें चल्की नार गायकी हडि हो।

गोषम (म० की०) गोष चामय, दह। गो और चम, गाय और घोडा।

गोषमाय (म० पु०) मन्मर्षट। गोषा—मनवार उपजूनमें पीत गीज पधिलन एक भूभाग। यह पसा १४ ५१ तथा १५ ४८ उ० और देगा ०३ ४५ एवं ८४ ४९ पु०के मध्य अवस्थित है। उत्तरमीसामें

सैन्य बाध ही नोट गये। इस समय गोंत गोंजको एक दूसरा संकट आ पड़ा। पोर्तुगल और स्पेनराज्यमें परस्पर विशेष सम्बन्ध था। यद्यपि ओलन्दाज स्पेनकी अधीनतासे मुक्त हो गये थे तोभी पोर्तुगोजां पर उनका अधिक डाल था। ये भारतके उपकुलमें आ पोर्तुगोजके ऊपर अनिष्ट करनेकी चेष्टा करने लगे।

ऐसी गड़बड़ी और उत्पातमें भी गोआ श्रीहीन नहीं हुआ। मोगलवादाशाहके प्रबल आधिपत्यकालमें दिल्ली और आगराका जैसी श्रीवृद्धि हुई थी और १६वीं शताब्दीमें पोर्तुगोजके अधीन गोआ भी वैसी ही मरुद्धि और 'अपूर्वो' धारण की थी। इनकी समुच्च सौधावली, पृथ्वीके नाना स्थानके वणिकोंका समागम, ईसाई धर्ममन्दिरके नित्य उत्सव और योद्धृगणोंके अस्त्रकी भनभनाहटमें दर्शकोंके लिए यह नगरी सुरपुरी सद्यः समझी जाती थी। उस समयके भ्रमणकारियोंने सुत्तकण्ठसे इनके गौरवकी घोषणा की है।

पोर्तुगोजों ने जिस तरह अखबलसे आधिपत्य विस्तार किया था, उसी तरह अपने अखके जोरसे ही सैकड़ों व्यक्तियोंको ईसाई धर्ममें दीक्षित किया था। धर्मप्रचार ही इनके अधःपतनका कारण हुआ। ईसाई देखा।

१६वीं शताब्दीमें जिनके वीरदपसे भारतभूमि कांपित हो उठी थी, १७वीं शताब्दीमें वेही वीरतेजा पोर्तुगोजगण अत्यन्त विलासी हो गये। विलासिता ही इनके अधःपतनका अन्यतम कारण था। उस समय गोआ नगरमें यद्यपि पाप्यनिवास नहीं था तोभी नगरके सर्वत्र जूआ खेलनेके अड्डे और प्रमोदगृह मौजूद थे। जुआ खेलनेका अड्डा आजकालके अच्छे अच्छे बैठकखानोंके सद्यः अतिसुन्दर रूपसे मज्जित रहा करता था। पोर्तुगोज गवर्मेण्ट उन अड्डाओंसे यथेष्ट कर लिया करती थी। प्रमोदगृहसमूहमें दिन रात गायिका, नर्तकी, नटनटो, वाजीकर और शराब रजा करती थी। सकल अणीके मनुष्य प्रमोदगृहमें आया जाया करते थे।

पोर्तुगोजकी स्त्रियां देशीय रमणियोंके जैसे वस्त्र पहन अन्तःपुरमें रहती थीं। पुरुष भी घरमें देशीय वस्त्र पहनते थे, किन्तु बाहरमें ये अपनेकी सुसज्जित रखते थे। कोई कोई रास्तेमें घोड़े की मणि मुक्ता और स्वर्ण रौप्यके

अलङ्कारोंसे सजा कर चलते और भृत्यगण आमा मोटा कत चासर और पानका टोना हाथमें ले साथ साथ जाते थे। देखनेसे मान्यम पड़ता है कि कोई नवावपुत्र जा रहे हों। गरीब मनुष्य भी धनी मनुष्यका अनुकरण करते हैं। सुतरां उनका पैट भर या नहीं, बाहरमें वे मजधज कर रहते थे। थोड़ा अवकाश पानसे ही अधिकांश मनुष्य जूआके अड्डे या प्रमोदगृहमें जा आमोद करते थे। इधर उनकी स्त्रियां भी विलासितामें डूब कर इतनी मत्त हो जाती थीं कि, उन्हें घरके कामकाजका भी होश न रहता था और कभी कभी वे अच्छी अच्छी पोशाकोंमें अपनेकी सजा कर नौजवानोंके साथ सहस्र करनेकी कोशिश करती थीं।

कोई-कोई अपने पतिको माटक वस्तु पिना अचेतन कर दूसरे पुरुषके साथ सुख भोग करतीं थीं। पोर्तुगोज राज्यको ऐसी अवस्था थी। इसी धूमधामके समयमें १६०३ ई०की ओलन्दाजोंने गोआ अवरोध किया था। यद्यपि उस समय उनका उद्यम निष्फल हुआ था, तथापि उन्होंने अपने पैर पीछे न हटायें, क्रमशः पोर्तुगोजकी बहुतसी रणतरि (फौजी जहाज) हस्तगत कर लीं। इस समय गोआके चारो ओर प्रबल ज्वरका प्रादुर्भाव हुआ। १६३५ ई० तक इस ज्वरसे अधिवासियोंको यथेष्ट कष्ट हुआ। १६३८ ई०की फिर भी ओलन्दाजोंने गोआ अवरोध किया था। इस समय भी उनको पूर्ववत् पृष्ठ प्रदर्शन करना पड़ा था। इन समस्त दुर्घटनाओंसे गोआ धीरे धीरे श्रीहीन होता गया। १६४८ ई०की टावारनियरने गोआको सौधावलोके शिल्पनेपुण्यको अधिक प्रशंसा की थी, किन्तु उन्होंने अपने प्रथमागमनमें गोआके थोड़े पोर्तुगोज परिवारका जिस प्रकार सुखसे रहते देखा था, इस बार उन्हें मंपूर्ण विपरीत पाया। उन्होंने लिखा है—“कह वर्ष पहले जिनको यथेष्ट सम्पत्ति थी, अभी वे शुभभावसे भिक्षाद्वारा जीविकानिर्वाह करते हैं। किन्तु इतना होने पर भी इनका अभिमान घटा न था। अब भी बहुतसी दरिद्र पोर्तुगोज रमणियां पालकीमें बैठ नौकरकी साथ ले दूसरेके दरवाजे पर जातीं और नौकर उस रमणिकेलिये घरके मालिकसे भिक्षा प्रार्थना करता।” इस समय १६६६ ई०की केवेनो (Kevenot) ने लिखा है—“गोआ नगरी

में प्रामादमाना सुन्दर सुमञ्जित, धत्वुच्च गिर्जा शोर
 अच्छे अच्छे मठ है। भारतमें पोर्तगोजकी नाई धन
 वान् मसामें बहुत घोडे हैं, किन्तु यह धनगोरव ही
 इन्हे के ध मका मूल है।" १६७५ ई०की एक दूमरे
 मनुष्यने गोषा प्रदर्शन कर लिखा है,—"भारतमें यह रोम
 नगरके जैसा समग्रालके ऊपर अवस्थित है। चारो ओर
 विश्वविद्यालय, उच्च भजनालय और बडे बडे अदालतिका
 है, किन्तु अधिकांश ध ग ही जाने पर यह नगरी लज्जा
 से अधोवदन की छडे मालूम पडती है।"

१६८२ ई०हुी गम्भाजोने अकस्मात् गोषामें प्रवेग कर
 नगर लूटा था, उस समय किमीसे महायता पानीकी भागा
 न थी। उमे समयमें मघाद्रिसे बहुतसे मोगलसैन्यने आ
 महाराष्ट्री की पराजय और वगीभूत किया। दोडे दिनों
 के याद फिर मायन्ताडोसे भीनमनेने आकर गोषा
 राज्य पर आक्रमण किया परन्तु वे भी पोर्तगोजसे
 परास्त हो गये।

इस समय पोर्तगोजोंने महाराष्ट्रके अधिष्ठत विचो-
 लिम् दुर्ग ध ग तथा कोर्युतम् और पन्नेम् नामक द्वीप
 अधिकार कर लिया। १७१७ ई०की वारदेश और
 चपोराकी सीमामें दो दुर्ग निर्मित हुए। १७३२ ई०में
 १७४१ ई० तक पोर्तगोजीके साथ महाराष्ट्रका युद्ध होता
 रहा। इस समय भीन्मनेसे गोषा राज्यके नानास्थानों-
 में भूटमार करते थे। अन्तमें नये राजप्रतिनिधि मार
 कुइम थोफ नरिगालने १२०० यूरोपीय सैन्यके साथ ले
 वारदेशमें महाराष्ट्र की पराजित किया और गोषा राज्य
 से उन्हें भगा कर पोराडा तथा दूमरे कई एक छोटे कोटे
 दुर्गों पर अधिकार कर लिया। इस समय भीन्मनेके सदर
 सेममामन्त पोर्तगोजके करदरुपमें गए हुए थे। इस
 पौर युद्धके बादभी महाराष्ट्र गान्त न हुए, उन्हें भीन्मने
 के साथ मिल पोर्तगोजके साथ फिर भी लडाई ठान दी।
 और मारकुइम थोफ काटने (Marquis of Ul
 t'io Nova) ने आलोमा, मीरकान निरतितम् ररिम् और
 मड्डुलिम्को टपन किया। १७५० ई०की पोर्तगोजके
 प्रतिनिधि मारकुइम थोफ तवोराने सुन्दरके राणाके
 पराजय कर पोरी टपन किया। इसके बाद राजप्रति
 निधि आत्मारु समयमें महाराष्ट्रके साथ घममान युद्ध

हुआ था। इस समय ररिम् और दिवतितम् पोर्तगोजके
 हाथसे निकल गये। पोर्तगोजराज्यके प्रतिनिधि भी
 दुर्गके प्रवरोधकालमें मारे गये। पीरो और जिब्लुम्
 दुर्ग सुन्दाराजाको तथा विचोनिम्, सकुलिम् और अलोर्पा
 सेममामन्तको लौटा देनेके लिए पोर्तगोजने आदेश दिया,
 उस समय हैदरअलीके हाथमें बचनेके लिए सुन्दाराजा-
 ने पोर्तगोजकी जातुनी, रामेश्वर और कोणकोण नामक
 भूमग अर्पण किये। एक वर्षके बाद सेममामन्तने पोर्-
 गोजके साथ फिर भी विरोध ठाना, अन्तमें पोत गोजसे
 परास्त हो, उन्हें आलोर्पा, पर्णम, मड्डुलिम् और चिरो-
 लिम् छोड देने पडे। मैकडो आक्रमण और मरी रोमसे
 गोषा नगरी धीरे धीरे उजाड होने लगी।

पोर्तगोज गवर्नमेंपणने राजधानीका पुन सभ्कारकी
 चेष्टा की। अधिक रुपये व्यय होने पर भी कुछ सफलता
 हाय न आई। पहनेसे ही अधिवासीगण धीरे धीरे
 नदोके मुहाने पर अवस्थित पञ्जोम या नये गोषामें बन
 रहे थे, तब यहा नयी राजधानी स्थापित हुई। १८वीं
 शताब्दीमें गोषाकी अवस्था बहुत शोचनीय हो गई थी,
 यहाँ तक कि भायसे भी वहाका खर्च अधिक था, और
 सेनाध्यक्ष (Captain) ६, ६०से अधिक बेलन नहीं
 पाते थे। महाराष्ट्रसे रक्षाके लिये जो दो हजार यूरोपीय
 सेना नियुक्त हुई थी, उनका खर्च पोर्तगोजके राजाको ही
 देना पडता था। कप्तान हर्मिटन लिख गये हैं कि
 उस समय भी गोषाके निकट पूर्व तक ऊपर बहुत गिर्जे
 और कुमारीमठ तथा प्राय तीन हजार रोमन कैथोलिक
 याजक थे।

१७३८ ई०की महाराष्ट्रने गोषा राज्य पर बहुत उप
 द्रव भवाया था। ईसाइ यति और सन्यासियोंने भीति ही
 मार्गाव नामक स्थानमें धायय लिया था। जो कुछ ही
 गोषाकी दरिद्रता घटी नहीं। पदम्य राजपुत्रय और
 सेनापतीके समित्ययिता भी दूर नहीं हुए।

१८०१ ई०की फरामोसीपतीके युद्धकालमें घ मरेज
 पोर्तगोजके साथ मिने थे। १८१७ ई०की पोर्तगोजके
 प्रतिनिधि काटण थोफ निधोपनेने उषा पौर ररिम्के
 दुर्ग पर आक्रमण किया था १८१५ ई०की रात्री (२०)
 डोनामे रियाने चार्ना डी वेर्येडा मिनभा नामक एक

गोआके रहनेवाले पोर्तूगोजको पोर्तूगालके अधीन को एक तीय राज्यमसूहका शासनकर्ता बनाये थे। उन्होंने पर-राज्यका इन्तजाम तो अच्छा किया था। लेकिन इनका शासनकाल १७ दिनसे अधिक स्थायी न रहा। इस समय इनके विरुद्ध कुछ लोगोंके पड़यन्त्र रचने पर इन्होंने बख्ई भाग कर आत्मरक्षा की। इसके बाद १६ वष गोआमे और किसी तरहका उपद्रव न हुआ। १८४५ ई०की सामन्तवाड़ीमें विद्रोह उपस्थित हुआ। बहुतसे विद्रोहियोंने गोआ आ कर आश्रय लिया था। इन्हींके लिए पोर्तूगोजोंके साथ वृष्टिश गवनमेण्टके विवाद होनेका सूत्रपात हुआ। इस समय पेस्ताना गोआके शासनकर्ता थे। १८५२ ई०की दोपजीके भड़काने पर सतरीकी रानी विद्रोही हुई। १८७१ ई०की गोआके रहनेवाले देशीय सैन्य अपनी प्रार्थनाके अनुसार वेतन न पानेके कारण विद्रोही हो उठे। विद्रोहियोंके दमन करनेके लिये पोर्तूगालके राजाके भाई डोम अगष्टो स्वयं मसैन्य पहुंचे। इन्होंने आकर शान्ति स्थापन और विद्रोहियोंको निरख किया था।

पहली सेनाका पुनःसङ्गठन हुआ न था और देशो सेनाएं मुझेभर युरोपी फौजके लिए खतर नाक हो सकती थी। फिर समस्त भारतमें अङ्गरेजोंके शान्ति रखनेसे उनकी कोई आवश्यकता भी न थी। १८८५ ई०की जब सरकार गोआ फौजकी जो सोजम्बिकावलवाई काफरोंको दवानेके लिए भेजी जा रही थी, मांग पूरी कर न सकी पैदल सिपाहियोंने बलवा कर दिया। सतारीकी रानी विद्रोहियोंसे मिल गई। जब तक लिसवनसे हिज हाडनेस इनफोण्ड डोम अल्फोन्सो हेनरिक कुमक ले कर न आये, आशान्ति बनी रही। १८८७ ई०में साधारण क्षमाप्रदान की गई। १८९१ ई०की रानी फिर बिगड़ी। यह बलवा ६ नवम्बरकी बलपाय (सतारो) में एक अफसरका मार डालने पर शुरू हुआ था। हत्यारे और बहुतसे रानीके नेता पकड़े गये और दण्डित हुए। रानी लोग तिरकी निर्वासित किये गये।

गोआके प्रधान नगर (नये) गोआ या पञ्जोम्, सर्गाओं और मयुगा है। डमान, टिज, मोजास्विक, मकाओ,

अलङ्कारोंसे सजा कर चलते और भृत्यगण आमा मोटा क्त्र चामर और पानका दोना हाथमें ले साथ साथ जाते थे। देखनेसे मालुम पड़ता है कि कोई नवाबपुत्र जा रहे हों। गरीब मनुष्य भी धनी मनुष्यका अनुकरण करते हैं। सुतरां उनका पेट भरे या नहीं बाहरसे वे सजधज कर रहते थे। थोड़ा अवकाश पानेसे ही अधिकांश मनुष्य लमा, या अड्डे या प्रमोदगृहमें जा आमोद करते थे। डहर हैं। चन्द्रनाथ या भी विलासितामें डूब कर इतनी मत्त हो मञ्जाद्विखण्डमें विस्ततरूपसे वास काजका भी होण न का मत—

“पूर्वकालमें किसी समय दस हजार वष तक अनावृष्टि हुई थी। दारुण अनावृष्टिसे पृथ्वी पर हाहाकार मच गया। अन्तमें बहूनसे ऋषि मिल कर अगाध मलिल कुशवती नदीमें उपस्थित हुए एवं जल पानेके लिए देवदेव महादेवका स्तव करने लगे। शिवजी इनके स्तवसे मन्तुष्ट हो बहत् पवत रूपमें अवतीर्ण हुए। इसका जचाई एक योजना थी। इसके शिरोदेश पर चन्द्रकान्त पत्यर है, इसीसे जल निःसृत हो अनावृष्टिसे पाड़िन समस्त भूमण्डल को रक्षा हुई। फिर भी अनावृष्टि होने पर क्या उपाय किया जाय। यह सोच कर ऋषियोंने शिवजीको वहीं रहनेका अनुरोध किया। ऋषियोंके अनुरोधसे महादेव उसी पर्वतशिखर पर लिङ्गरूपमें रहने लगे। इसका नाम चन्द्रचूड़ है। इनका दर्शन करनेसे समस्त पाप नाश होते हैं। थोड़े दिनके बाद भूतनायक भैरव शिवजीको देखने आये। शिवजीकी अनुमतिसे ये भी इसी स्थान पर रहने लगे। इसके बाद नानादेशीय ऋषिगण इस स्थानमें आ वास करने लगे। तीर्थके प्रभावसे सब किमोने सिद्धि लाभ की है। जिस स्थान पर जिस ऋषिकी सिद्धि मिली है, वह स्थान उन्हींके नाम पर तीर्थ हो गया है। इनके मध्य कपिल, गीतम, सोम, भरद्वाज, चन्द्रोदय, सुशर्मिष्ठ और अश्वठ तीर्थ ही प्रधान हैं।”

“चन्द्रचूड़के पश्चिममें कुशवती प्रभृति कई एक पुण्य मलिला नदियां तथा इसके चारों ओर प्रसिद्ध तीर्थ हैं। कुशवती ब्रह्माके पदसे उत्पन्न हुई है। इस नदीके दोनों कूल पर बहुतसे कुश हैं इस लिये ऋषियोंने इसका नाम

में प्रामादमाना गन्धर सुमन्वित, चत्सुष गिनां पौर
 चक्षुं चक्षुं मरुं है। भारतमें पौराणिकी मारु धन-
 यानु मभारमें वरुत छोडें है, किन्तु यह धनगौरव ही
 नृत्नी क ध मका म्म है। १६७५ ई०की एक दूमरी
 मन्थने गोपा प्रदगन कर निघा है, "भारतमें यह रोम
 नगरक जैमा ममोमके ऊपर चवम्बित है। चारो पौर
 विरविद्यान्व, उच मजनालय पौर बडो बडो पहाडि।
 है, किन्तु अधिकांश ध म ही जाने पर यह है। दुरा
 ने पयोवदन को दुई मान म एतामे पयोविका गिकार
 १६८० ई०देरि व्याधको बुटाया पाया। किमी

श्यावणी पुर्विमा तिथिके मोमवारकी टेंग विट्टेगमे तीर्थ
 यात्रिगव भुण्डके मुण्ड चम्बवद तांथेकी आरु है ये, पन्ने
 उरुं दुग्गपनी नदीकी टेंग कर ही वर्षा जागा पडता।
 दन तीर्थयात्रियों को टेंग चम्बवदके मनेमें एक
 दूमरा हो भाग उरुव हो पाया, पौर वरु यात्रियोंके
 भाग ही चम्बुवुवकी पड पा। यात्रियों का भक्तिभाव,
 पुत्रा पौर पाचार व्यवहार टेंग व्याधकी भजिका मभार
 हो गया। उस दिन इमने कुछ भी न ग्याया। मन्थके
 बाट गिबर्षके उरुगमे एक टोप जन्मा कर गुभा पौर
 विपामोमे कातर हो थोरी वरु पाले जगा ली ही प्रथम
 पाम मनेमें पटक उम व्याधकी म्बु हो गई। म्बु क
 बाट ममकी पाशमे उमदून उमे मंत्रा रखा था, मन्थमें
 गिवापुत्र वदुगने उरुं राक टिया। पनेक वादा
 बुवादन वाट म्बु वा कि वाचकाममे पावाचारो होमे
 पर भी मने पौर निममाहासमें यह वदुमोर्कमेंका नाम
 करेगा। वामदूमे उरुं मभनेमे पाराजिम हो चदन
 बाह मी। चम्बु उरुं म्बुवके भाग वदुमकाकी चन्मा
 म्मा। इमोन्विय वरु व्याम चम्बुमोर्क नाममे विख्यात
 है। आवन्मापक मोमवारकी पुर्विमा तिथि होमे पर
 योग होता है इम निम वर्षा का छान टान करनेमे
 निवलोवकी मन्ि होत है।

कविच नामक एक राजा म्बुने पाराजिम को इम
 म्ममे रहत प दन विरि छान म्मन चर गिपडाकी
 चम्बुवका कर दुग्गरे चम्बु म्मन म्मन किया था। है
 किम म्मन पर इम विरवका चम्बुवका काम है, यह
 कविचम य म्मन पदिह है।

दुष्पुत्रवृत्तिगवरके दक्षिणकी पौर मोतमतीथ है।
 ईकाममें मोतम नामक ब्राह्मणने कठिन तपस्या, यत
 ब्रह्मोय म्बु एव मन्वीचान मन्थने गिबर्षीकी चाराधना
 की थी। उनका चाराधनामे गिबर्षी मन्थुट ही गुहा
 दारमे उनके निकट उपस्थित हुए तथा मोतमकी प्राथ
 नामे उमी स्थान पर निद्वारपमे चयस्थान करना ब्रह्मी
 वार किया। वही स्थान मोतमतीर्थ नाममे प्रसिद्ध है।
 उममें छान टान पौर भक्तिपूर्वक मोतमनिष्ठा टंगन
 करनेमे ममन पाप ज्ञाने वरुते पौर म्बु अधिन्याप पूष
 होत है।

'दानवीरि उपद्रवमे मोत ही चगपूर्वति हरि इमके
 एक गुहामें आ गिबर्षीकी चाराधना करने मने। उप
 यामी वरु तान वार छान पौर म्बु च्चव म्मन ए कर
 चमीट वर पौर एक उन्कृष्ट रथ पाये थे। इमी कारण
 यह कन्दरा मोमतीर्थ नाममे विख्यात है। इमके प्ररुव
 मनें छाा वरनेमे मनें यरुके फल तथा वरु वार चम्बुवत
 करनेका फल होता है।

'छयरीगपपन कीर्ति मरुपति इम पर्वतरु चम्बिनीपमें
 मनीहर मोमोदकमें छान कर गिबर्षीकी चाराधना
 करक चयरीगमे म्बु एव थे। इमिमे यह चम्बोदयतीर्थ
 कहा जाता है। इममें छान करनेमे छयरीगका प्रतीकार
 होता है।

'पवर्क उरुवकी पौर काममपुत्र नामक एक तीर्थ
 है। कीर्ति मुनिजन्मा वरुं वरु तपसा करती थी। तप
 पार्के फम्मे मुनिजुमारो पाव तीर्थ मयो ही केजाम
 गामिनी हो गई।

'मिमा हा नामकी एक चम्बुवा थी। उमने यह निम
 किमी प्रामादके भाग विहार करकेको इच्छा थी।
 ममम प्रामाद म्बुके म्मन निव मोहित हो म्मने म्मने
 मने किदाको मो उमद म किया। एक दिन उरु
 म्बुकी सोवैव चम्बुवकी उरु वरु देर मुनिज म्मने
 दुक्कन हो उमने उरुवदरुत किया। इमिमे विरव
 उरु वरु म्मने म्मने म्मने म्मने म्मने म्मने म्मने
 म्मने म्मने म्मने म्मने म्मने म्मने म्मने म्मने म्मने
 म्मने म्मने म्मने म्मने म्मने म्मने म्मने म्मने म्मने

नाईं अलौकिक रूपलावण्य या स्वर्ग को चली गईं । इसमें तीर्थ का नाम सुशमिष्ठ हुआ ।

(सहायद्रिखण्ड मन्त्रकुं सं० ६ अ०)

‘चन्द्रचूड़के ईशान कोणमें सूलगङ्गातीर्थ है । यह शिवजीको जटासे निकली है । एक मास इसमें स्नान करनेसे ममस्त रोगोंका प्रतिकार होता है । इसके स्नानमें साधु वीरप्रमविणी, दरिद्र धनवान्, क्षत्रिय राजा और राजा मस्त्राट हो जाते हैं । शकुन्तलाने इसमें स्नान कर राजचक्रवर्ती पुत्र पाया था । जो सूलगङ्गाके जलमें स्नान कर चन्द्रचूड़ दर्शन करता, वह शिवलोकको प्राप्त होता है ।

‘चन्द्रचूड़के पश्चिममें मालती नदी है । इसके जलमें स्नान कर चन्द्रचूड़ अवलोकन करनेसे मुक्ति प्राप्त होती है । स्वयं शिवजीने इस तीर्थको निर्माण किया था ।’

(सहायद्रि मन्त्रकुं सं० ८ अ०)

‘नागाह्वय या नागेश—इसका मन्दिर गोआवामीके लिए प्रसिद्ध है । सहायद्रिखण्डमें लिखा है—“क्षत्रियकुलान्तक परशुरामने सहायद्रिके पश्चिममें समुद्रके निकट अघाशी नदीके तीर पर एक मनोहारिणीपुरी निर्माण की थी । गरुड़के भयसे कातर ही नागीने इस स्थान पर रह एक शत दिव्य वर्ष तपस्या को थी । तपस्यासे सन्तुष्ट हो परशुरामने सर्पोंको गरुड़से रक्षाके लिए कैलास जा शिव और पार्वतीको लाया था । शिवजी और पार्वतीके इस क्षेत्रमें पहुँचने पर नागगण स्तव करने लगे । सर्पोंके स्तवसे तुष्ट हो एवं परशुरामकी प्रार्थना पर शिव और पार्वती इस तीर्थमें रहने लगे । एक दिन खगपति गरुड़ चुधार्त हो सर्प खानेकी इच्छासे इस स्थान पर पहुँचे । सर्पोंने सोचा कि अभी शिवजीकी आज्ञाके सिवा और दूसरा कोई उपाय नहीं है । इसलिए समस्त सर्प शिवजीके शरीर पर चढ़ उठे जोरसे परड़ा । शिवजीने कहा—“गरुड़ ! तुम इस तीर्थ स्थित सर्पोंको भक्षण मत करो ।” महादेवकी आज्ञासे गरुड़ कुछ न कर सका । सर्प भी निर्भयसे रहने लगे । इसी कारण इस तीर्थ का नाम नागाह्वय या नागेश पड़ा । फणिगण-विभूषित शिव और पार्वती-नियत इस स्थान पर रहने लगे । इसके बाद शान्त नामक कोई मुनि भगवतीको आराधना करते थे ।

उनकी आराधनासे संतुष्ट हो भगवती भी वानिकाभयर्षि आविर्भूत हुई एवं मुनिको अनिरुद्धकी आराधना करनेकी अनुमति दी । ब्राह्मण देवोंके आदिगमें अनुरुद्धकी उपासना करने लगे, तथा उनकी आराधनासे संतुष्ट हो अनिरुद्ध साक्षात् द्रुप । मुनिने शान्तादेवीके साथ उठे इस स्थान पर रहनेकी प्रार्थना की । तभीसे शान्तादेवी तथा अनिरुद्ध इस स्थान पर अवस्थान करते आ रहे हैं । इन्हें छोड़ विघ्नराज और भूतनाथ ये दो देवता भी इस क्षेत्रमें नियत अवस्थान करते हैं । यहाँ देवदर्शन, जप और होमादि करनेसे अनन्त फल होते हैं । (नागाह्वयमां)

शान्ता अभी शान्ता दुर्गा नामसे ख्यात है ।

वरुणापुर—किमी समय वरुणकी नगरीमें जा वहुतसे मनुष्य परशुरामकी उपासना की थी । रामजीने संतुष्ट हो वरुणकी एक पुरी निर्माण करनेकी अनुमति दी । वरुणने भी अपना पूर्व सदृश एक मनोहर पुर बना दिया । परशुरामने खुश हो उस पुरका नाम वरुणापुर रखा था । किसी एक वर्ष वैशाख मासके शुक्रवारकी नवमी तिथिमें सात दिन पर्यन्त रामोत्सव होता था । वरुणापुरवासी आमोदमें मतवाले हो गये थे । ऐसे समय समुख नामक एक दैत्य मौका पा कर सबको कष्ट पहुंचाने लगा । पुरवासियोंने असुरके ज्ञाथसे रक्षा पानेके लिये परशुरामकी उपासना की । परशुरामने दैत्यनाशका उपाय करनेके लिये एक देवमूर्ति स्थापन कर सकल पुरवासियोंको उनकी आराधना करनेकी अनुमति दी थी । इन्हेंको उपासनासे संतुष्ट हो देवीने भीषण खड्गाघातसे भाव भासकी शुक्लपत्नीय पत्नी तिथिमें उस असुरको विनाश किया था । उक्त तिथिमें इस देवीकी आराधना करनेसे मनोभीष्ट पूर्ण होता है । दुर्गा, भद्रकाली, विजया, वैष्णवी, कृष्णा, माधवी, कन्यका, माया, नारायणी, शान्ता, शारदा, अम्बिका, कात्यायणी, बालदुर्गा, महायोगिनी, अधीश्वरी, योगनिद्रा, महालक्ष्मी, कालरात्रि और मोहिनी इन नामोंसे उक्त देवीमूर्तिकी आराधना की जाती है । इस देवी मूर्तिका नाम महालसा है । (वरुणापुर) गोआके रहनेवाले हिन्दू इन्हें “मालसा” कहा करते हैं ।

माङ्गीश—किसी समय शिवजी पार्वतीके साथ व्यत

झोडा कर रहे थे। देवक्रमसे खेलनेमें पार्वतीको जोत हुई। गृहस्थोंने द्यूतक्रीडामें पराजित पतिको दो एक उपहार या चाटुवाक्यसे तिरस्कार किया। शिवजीके मनमें बहुत दुःख हुआ। ये घर छोड़ वनवासी हो गए थे। वृद्ध भोला सासांगिक सुखको आशा पर जन्माञ्जलि दे वन दनमें घूमने लगे। इन्होंने पहने कण्ठा और बेषोके सङ्गम पर तपस्या की थी। वह स्थान मङ्गलेश्वर नामसे प्रसिद्ध हुआ। परशुरामसे वह स्थान ब्राह्मणोंको दान दिए जाने पर शिवजो वह स्थान छोड़ भागरके निकट जा रहने लगे। इसके बाद चम्पावतीमें आए अनेक दिन तपस्या को थी। इस स्थानमें रामेश्वर नामके एक लिङ्गकी दक्षिण और स्वयं मदाशिव विराजमान है। इसके बाद शिवजो गोमन्तक पर्वत पर गए थे। इस स्थान पर शिवजो गोमन्तकेश नामसे सर्वजनप्रसिद्ध लिङ्गरूपमें आविर्भूत हुए। इस लिङ्गको पूर्व और ब्रह्मा विष्णु श्रुति ममस्त देवता विराज करती है। लिङ्गके पश्चिममें यमेश, उत्तरमें ब्रह्मवादी श्रुति गण एवं दक्षिणमें भैरवाः दक्षिणमें अवस्थित है, श्रुतियोंने शिवके दर्शन पानिके लिए सातकरोंड वर्ष तक अघाशो नदीके तीर पर तपस्या को थी। शिवजीके साक्षात् होने पर श्रुतियोंने इन्हे लिङ्गरूपमें उस स्थान पर रहनेको प्रार्थना की। उनकी प्रार्थनासे उस स्थान पर समकीटेश्वर नामक एक लिङ्ग स्थापित हुआ। पञ्चनदीमें स्नान कर मसमीटेश्वरका अवलोकन करनेसे मनोभोष्ट पूर्ण होता है।

‘गोमन्तके दक्षिण भागमें सागरके निकट अघाशो नामकी एक नदी है। यह नदी सद्योदिके पाददेशसे उत्पन्न हुई है। अघाशोके तीर पर प्रसिद्ध कुशम्बोपुरी है। इस पुरीमें लोमग नामक एक पुण्यात्मा ब्राह्मण रहते थे, लोमग किसी समय चन्द्रग्रहण उपलक्षकी सङ्गमस्थलमें स्नान करनेके लिए गए थे। ज्योंही उस ब्राह्मणने नदीमें प्रवेश किया त्योंही एक भीषण मगरने उन्हें पकड़ लिया। दारुण विपदसे लोमग शिवजोका स्तव करने लगे। शिवने दग्न न दे उनकी रक्षा की थी। उस स्थान पर लोमग नामका एक लिङ्ग स्थापित हुआ। शिवजोने लोमगको कहा था कि ‘इस गोमन्तक पर्वत पर शतसहस्र लिङ्ग हैं, किन्तु उनमें मैं पूर्णाग्रसे अवस्थित नहीं हूँ। कलि

कालमें अघाशो नदीके तीर पर इमी लोमग लिङ्गमें हो पूण भावसे वास करूंगा। कलिकालमें यही क्षेत्र मेरा एकमात्र वसतिस्थान होगा।’ इसके दर्शन करनेसे समस्त दुःख विनाश होते।

‘इधर पतिके वनवासी होनेके बाद पार्वती भी उन्हें दूठनेके लिए बाहर निकली थी। किन्तु कहीं भी पतिको न पाया। अन्तमें अघाशो नदीके तीर पर पहुँच शिवकी तपस्या करने लगी। शिवजो पार्वतीको जाँचनेके लिए एक भयङ्कर व्याघ्रमूर्ति धारण कर उपस्थित हुए। व्याघ्रको देख पार्वती भयभीत हो गईं। भयसे ‘मा गिरीश रच’ ऐसा कहनेमें ‘मामोश’ बोल उठी। इसके बाद शिवजोके साक्षात् होने पर पार्वती बोली, ‘नाथ ! आप इस स्थान पर माङ्गीय नामसे प्रतिष्ठित हो वास करें।’ शिवजो भी इस पर सहमत हुए। उस स्थान पर माङ्गीय नामसे शिवलिङ्ग और देवी मूर्ति स्थापित हुए। पहिले ये दोनों जलके मध्य स्थापित थे। ‘माङ्गीय’ यह नाम उच्चारण करनेसे समस्त यज्ञका फल होता और इनका दर्शन करनेसे सर्व दुःख दूर होते हैं।

‘थोड़े दिनोंके बाद कान्यकुब्जनिवासी वास्य गोवीर्य देवगर्मा नामक एक ब्राह्मण अपनी स्त्रीके साथ तीर्थयात्रा करते हुए अघाशो मङ्गलमें पहुँचे। वहाँ ब्राह्मणने देखा कि एक गाय जलमें गोता लगा कुछ काल ठहरनेके बाद बाहर निकली। ब्राह्मणने इसका रहस्य न समझ अधिवाशियोंसे इसका कारण पूछा, किन्तु कीड़े भी कुछ कह न सका। इसके बाद दूसरे दिन ब्राह्मणने गोकी पूछ पकड़ जलके नीचे जा तंजोमय लिङ्ग और देवीमूर्ति देखे। देवगर्माने भक्तिपूर्वक लिङ्गकी पूजा और आराधना की। शिवजीने दर्शन दे अपना माहात्म्य और माङ्गीय नामका कारण कह सुनाया, उन्होंने यह भी कहा कि प्रतिदिन कपिलाधितु यज्ञा या मुक्ति दुग्ध दे स्नान करके लीट जाती है, अतएव इसका नाम कपिलतीर्थ होगा। इस तरहसे जलमग्न तोथ और लिङ्गमूर्तिका प्रकाश हुआ। इसके दग्न नसे मनोवाञ्छा पूर्ण होने लगे।

‘गोमन्तके दक्षिणमें ममुद्रक निकट गङ्गावली नगरी है। इस नगरमें एक सिद्ध ब्राह्मण रहते थे। सिद्ध सर्वदा शिवजोको उपासना किया करते। रावसीरूप

धारिणी सुमुखी नामकी एक ब्राह्मणकन्या वहां जा कर सबीको कष्ट दिया करती थी। एक दिन कई एक स्त्रियां आ रहो थीं, राजसीने उन पर आक्रमण किया। स्त्रियां जोरसे चिल्लाने लगीं। सिद्धपुरुषने ऐसा देख और रक्षाके लिए अपनीकी अममथ ममभ शिवजीका आह्वान किया। टीनवत्सल भगवान्ने आविर्भूत हो एक ही हुंकारसे राजसीका विनाश किया; तथा वे लिङ्गरूपसे उस स्थानमें रहने लगे। सिद्धने आराधना की थी इस-लि। उनका नाम सिद्धेश्वर हुआ है। इनके दर्शनसे समस्त पाप विनष्ट होते हैं।' (सद्गादि० माहेश्वरमा०)

फिर भी मह्याद्रिखण्डके उत्तरार्द्धमें लिखा है कि "परशुगमने त्रिहोत्रपुरसे भारद्वाज, कौशिक वत्स्य, कौण्डिन्य, कश्यप, वसिष्ठ, जमदग्नि, विश्वामित्र, गौतम और अत्रिगोत्र इन दश ब्राह्मणोंको ला कर आडयज्ञादि निर्वाहके लिए उन्हें पञ्चक्रोशी गोमाञ्चलके मध्य स्थापन किया था। इसके सिवा त्रिहोत्रमें उन्होंने माङ्गिरीश, महादेव, महानन्दा, महालभा, शान्तादुर्गा, नागेश और महाकोटीश्वर प्रभृति बहुतसे देवता ला गोमन्तमें स्थापित किये थे।" (सद्गादिखण्ड उत्तरार्द्ध १ म अ० ४८-५४ अ०)

गोआके देशीय ईसाईओंको गोआइज कहते हैं। पोर्तगालीने गोआ पर अधिकार कर बहुतसे मनुष्योंको ईसाई बनाये थे, उनके वंशधर आजकाल गोआइज नामसे मशहूर हैं। ये सफेद जिनके पाजामा और कोट पहनते हैं, मर पर जरीदार टोपी और पनहीं पहनते हैं। स्त्रियां घरमें रंगीन साड़ी और चोली व्यवहार करती, किन्तु गिर्जा जाते समय सफेद साड़ी और ओढ़नी काममें लाती हैं। इनका खान-पान बङ्गालियों और उड़ियोंसे बहुत कुछ मिलता-जुलता है। प्रातः कालमें काञ्चि, मध्याह्नमें भान और सन्ध्याके बाद भात खाते हैं। इनके ईसाई होने पर भी उनमें अब भी वर्णभेदकी प्रथा पाई जाती है। प्रसिद्ध ईसाई-धर्म प्रचारक सेन्ट-जेभियरको ये विशेष भक्ति अडा करते हैं। पोर्तगालीके प्रथम प्रतिष्ठित प्राचीन गोआमें सेन्टजेभियरका समाधिस्थान है। गोआइज लोग वहां जा हाथ जोड़ कर भक्तिभावसे उस सिद्धपुरुषको पूजा कर आते हैं। इसी सेन्टजेभियरके लिए गोआ ईसाईओंका महापुण्यस्थानके जैसा गण्य है। १८४२,

१८७८ और १८८० ई०को उनका मृतदेह प्रदर्शित हुआ था। उस समय पृथ्वीके नाना स्थानोंसे सर्व सम्प्रदायके ईसाई, विशेषतः लाखों कैथोलिक और बहुतसे हिन्दू भी उनके पवित्र देहकङ्कालको देखनेके लिये आये थे। बहुतोंका कथन है कि, उनके मृतदेहकी ऐसी महिमा रही कि अनेक असाध्य रोगों भी दर्शन और स्पर्शनसे रोगमुक्त हो गये थे सेन्टजेभियरके शवाधारकी एक चाभी गोआक विग्रह और दूसरी रोमके पापके निकट है।

यहां एक तिहाई भूमिमें खेतो होता है। कितनी ही जगह कद्दर पत्थर भरा है। खाद बहुत डालते हैं। चावलकी उपज अधिक है। इसकी दो फसलें होती हैं। गर्मीमें सींचसे काम लिया जाता है। नारियल लगानेकी भी बड़ी चाल है। फलोंमें आम और कटहल प्रधान है। वेलहाम कनकिसताम प्रान्तमें कृषकोंको दशा खेतीकी चीजोंका दाम बढ़ने और अङ्गरेजी राज्यको लोगोंके चले जानेसे सुधरी, किन्तु नोवस कनकिसताममें कहते हैं जमीन्दारोंके अव्याचारसे बिगड़ी है।

नोवस कनकिसताममें ११६ वर्गमील जङ्गल है। कुमरो (परिवर्तनशील) खेतीसे कीमती पेड़ मारे गए हैं। जङ्गलकी आमदनी कोई २५ हजार रुपया सालाना है। कई जगह लोहा निकलता है। अपने अभ्युदयके समय गोआ पूर्व तथा पश्चिमके मध्य व्यवसायका प्रधान स्थान था। ईरानो खाड़ीके साथ घोटोंका कारवार अधिक रहा। किन्तु पोर्तगाली साम्राज्यका अधःपतन होने पर गोआमें व्यवसाय कम पड़ गया। कोई बड़ा काम काज नहीं होता। नारियल, सुपारी, आम, तरबूज, कटहल, अन्यान्य फल, मिर्च, गोंद, रस्सीकी चीजें, जलानेकी लकड़ी, चिड़ियों और नमककी खास रफ्तानो है। चुङ्गी से सालाना कोई ५ लाख रुपया आता है। मरमा-गोआसे दक्षिण मराठा-रेलवे मिली हुई है। १८ सड़के चालू है।

पोर्तगालके राजा गोआ, दमन और डिऊ प्रान्तके लिए एक गवर्नर-जनरल नियुक्त करते हैं। उनका कार्य-काल ५ वर्षमें पूरा होता है। वहाँ जङ्गीलाटका भी काम करते हैं। उनके चीफ सेक्रेटरी नामक मन्त्रीकी भी नियुक्ति पोर्तगाल-नरेश ही करते हैं। गवर्नर-जनरल

प्रधान अधिकारी तो हैं, परन्तु वह बिना पोतगाल सरकारके आज्ञाके नया कर नहीं लगा सकते, वर्तमान कर नहीं उठा सकते, नए नहीं ले सकते, नई नियुक्तियाँ नहीं कर सकते, पुरानी जगहको तोड़ नहीं सकते। नोकरोंको तनखाहें नहीं घटा सकते, जाननके खिलाफ कोई खच नहीं कर सकते और न किसी प्रकार अपना प्रान्त छोड़ सकते हैं।

प्रथम गवर्नर जनरलको एक कौंसिल, जिनमें चीफ सेक्रेटरी गोआके बड़े पाटरो, हाइकोर्टके जज, गोआके दो बड़े जौजी अफसर, सरकारो वकील, इन्स्पेक्टर, स्वास्थ्य विभागके अफसर और म्युनिसिपालिटीके महापति रहते हैं साहाय्य करते हैं। दूसरे भी पाँच कौंसिले होते हैं। किन्तु गवर्नर जनरल इनके प्रस्तावोंको तब तक स्थगित रख सकते हैं, जब तक पोतगाल सरकार से उसके बारेमें पूछ न लिया जावे। गोआ प्रान्त पुराने और नये अधिकार दो भागोंमें विभक्त है। पुराने अधिकार या वेलहाममें ३ जिले और ८५ परगने हैं। पुराना अधिकार ७ भागोंमें बटा हुआ है। प्रत्येक जिलेमें म्युनिसिपालिटी है। उसकी खालाना आमदनी लगभग १५ लाख रुपया होती है। जजका इजलास जफ तमें दो बार लगता है। उनकी अपील हाइकोर्टमें होती है।

वार्षिक आय प्राय २० लाख और व्यय भी लगभग उतना ही है। गोआमें एकमाल नहीं है। १८७१ ई०के पहले यहा देसी सेना बहूत थी। किन्तु इसी वर्ष विद्रोह उठ खडा होनेसे वह तोड़ दी गयी और पोतगालसे केवल युरोपीय फौज भर्ती हो करके आयो। सब मिला कर कोई २७३० फौज और ३८० पुलिस है। वरमें कुल १ लाख वार्षिक व्यय होता है।

कुछ सालसे गोआमें शिक्षा प्रचार बढ गया है। पोतगाल भाषाके कितने ही अखबार निकलते जिन्हे दृष्टी नोग लिखते हैं।

२ पोतगालके अधिकृत उक्त गोआ राजाका एक प्रधान नगर। यह अक्षा० १५ ३० उ० और देशा० ७३ ५० पू०के मध्य अवस्थित है। इस नामकी तीन नगरो हैं, पहली कदम्बरराजाई हारा प्रतिष्ठित प्राचीन गोपकपुरी, जो नदीके किनारे अवस्थित है। मुसलमानशासक

मणके पहले यही पर राजधानी थी। अभी पूर्व अटालिकाश्रीका चिन्ह मात्र भी नहीं है। २ रा पोतगालकी प्रथम अधिकृत गोआ नगरी, जो अभी पुरातन गोआ नामसे विख्यात है। १४७८ ई०को मुसलमानोंने इस गोआको स्थापन किया था। यह कदम्बरराजधानी गोपकपुरीसे प्राय ५ मील उत्तरमें अवस्थित है। १५१० ई०की आठबुकार्कने इस नगरको अपने अधिकारमें लाया था और एशियाख्य पोतगालकी राजधानी रूपमें परिणत हुआ। १६वीं शताब्दीमें यह उन्नतिको चरम मोमा तक पहुँचा था, और यह भारतका एक प्रसिद्ध वाणिज्यस्थान समझा जाता था। इसके बाद पोतगालकी प्रबल प्रताप खव होने पर यह स्थान ईसाई धर्ममण्डलीका एक प्रधान अड्डा बन गया। बार बार प्रेग होनेसे यहाके अधिवासियोंने इस नगरको परित्याग कर दिया था। इसके बाद पजीम या नये गोआमें राजधानी आने पर पूर्वतन सख्दियाली गोआ नगरी एक वारगी शोचन हो गई थी। इस समय प्रधान गिर्जा और ईसाई मठसमूहमें प्रति सामान्य मनुष्य रहते हैं। परिव्राजक यहाँके प्राचीन अस्तामार, वीम जिनकी बृहत् गिर्जा, सेण्ट फान्सिसका मठ, सेण्टजेमियरकी समाधि, सेण्ट कैटरीनाका कैथिड्रल, सेण्टमणिकामठ प्रभृति देखने आते हैं। मणिका मठमें कई एक देवीय और पोतगाल कुमारी आकोमार ब्रह्मचारिणी हो ईसाई की सेवामें दीक्षित हैं, जिधर ये रहती है उधर पुरुष जा नहीं सकते। १६०६ ई०की यह मठ बनाया गया था। सेण्टकडटानो कैथिड्रलमें पोतगाल शासनकर्त्ताश्रीका अधिष्ठाक होता और मृत्यु होने पर पोतगाल पठानकी पूर्वावधि तक अन्तर्देह रक्षित रहता है। यहाके गिर्जामसूहमें ईसाई याजकोंका जैसा मूचवान् पोषाक है, भारतके किसी दूसरे गिर्जामें वैसा देखा नहीं जाना है। एक एक बस्ता मूल्य ४५ लाख रुपयें होगा। उपरोक्त गिर्जाके अन्तर्वा सेण्टमणिकामठ, सेण्टजन डेविडस, और सेण्ट रोजानो भी उड़े बड़े मठ और गिर्जा रहते थे जो अभी भग्न अवस्थामें पड़े हैं। पूर्वोक्त गिर्जाश्रीकी छोड प्राचीन गोआमें श्रुत वामगृह नहीं है। अभी चारो और नागिनका वागान शोभा दे रहा है।

१७५८ ई०को नदीमुख पर पञ्जीम या नये गोआमें राजधानी स्थापित हुई जो ३२ गोआ कहलाना है। उक्त वर्षमें वैशुट लोग भाग गये, इनके साथ साथ गोआका वाणिज्य जगत् भी अन्धकार हो गया। नये गोआ ही अभी पोर्तूगीज भारतकी राजधानी है। पञ्जीम्, रिवन्दर और पुराना गोआका कुछ अंश निकले हुए नगर ६ मील विस्तृत और साण्डवी नदीके वामकूल पर अवस्थित है। पूर्व समय पञ्जीम्में सिर्फ वीरजातिके मनुष्य रहते थे, यूमफ आदिल शाहने यहाँ एक दुर्ग निर्माण किया था। १८४३ ई०से यह दुर्ग पोर्तूगीज राजप्रतिनिधिका सुंदर वासभवन हो गया है। इसके अतिरिक्त यहाँ उच्च अदालत, सेमनकोर्ट, शुल्कग्रहणालय, पुलिस, डाकघर, टेली-ग्राफ आफिस, विश्वविद्यालय, पाठागार, साहित्य और विज्ञानमिति सैनिक अस्पताल, कारागार, बहुतसे बाजार और नमकके गोले हैं। अङ्गरेज गवर्मेंटने यहाँ नमक प्रस्तुत करनिका ठीका लिया है। यहाँ प्रायः पन्द्रह हजार मनुष्य रहते और लगभग चार हजार घर हैं।

गोआलन्द—१ बङ्गालमें फरिदपुर जिलेके अन्तर्गत एक उप-विभाग। यह अक्षा० २३° ३२' तथा २३° ५५' उ० और देशा० ८८° १८' एवं ८८° ४८' पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ४२८ वर्गमील है। लोकसंख्या प्रायः ३१८२८५ है। इस उपविभागमें ११७८ ग्राम और नगर लगते तथा गोआलन्द, वेल्गाङ्की और पांगसा नामक स्थानमें तीन पुलिस थाना हैं। इस उपविभागके उत्तर और पूर्वमें पद्मा नदी प्रवाहित है। भूमि उर्वरा है। दूसरे सब-डिवि-जनोंकी अपेक्षा इसकी कुरसी ऊँची है, परन्तु जलवायु कुछ भी स्वास्थ्यकर नहीं। मलेरिया ज्वरका प्राबल्य रहता है। यहाँ ईष्टर्न बङ्गाल एंटे रेलवेका पूर्व भाग आ गया है। जहाजोंसे भी लोग यातायात करते हैं।

२ उक्त जिलेकी नदीकुलस्थित प्रधान वाणिज्य स्थान और नगर। यह अक्षा० २३° ५१' उ० और देशा० ८६° ४६' पू०में गङ्गा और ब्रह्मपुत्र नदी पर अवस्थित है ५० वर्ष पहले यह सिर्फ मङ्गली वैचनेका स्थान था। उस समय यह एक सामान्य ग्राम रूपसे परिचित रहा। उक्त नदी पर आरौहियोंके ऊपर बहुत उत्पात मचाय करता। वर्त्तमान समय गोआलन्द नगरने पूर्वबङ्गालमें

वाणिज्यका शीर्षस्थान अधिकार किया है। यहाँ ईष्टर्न बङ्गाल एंटे रेलवेका अन्तिम स्टेशन और आगाम जाने आनिके लिये टीमर छोड़नेका अड्डा है। नदीकी दुर्धर्ष गतिसे नगरकी अवस्था क्रमशः बढ़ती जाती है। इस नगरमें रेलवे कम्पनीका स्टेशन, बाजार और दोनी नदी-के मङ्गम स्थान पर वाणुकामय जर्मनके ऊपर अदालत है। टीमर या नौकामे रेलगाड़ीमें मान लटनेके लिये शीतकालमें नदीके कूल पर रेलपथ दिया रहता है, किन्तु आपाढ़ और आवण माममें जब नदीकी बाढ़में निकट वर्ती ग्राम जलमग्न हो जाते तब वह रेलपथ उठा लिया जाता है। एक समाह पहले जिस नदीके कूल पर सर्वदा माल ले रेलगाड़ी जाती आती थी, कुछ टिनके बाढ़ वह स्थान समुद्रकी नाईं टेंग पड़ता है। इस समय नदीके उत्तर अथवा पूर्व अंशकी ओर दृष्टि करनेमें लगभग ३४ माइल विस्तृत अखण्ड जलराशि ही देख पड़ती। तूफान आने पर टेंग्रीय मांभी नौकाओंकी किर्सी दूर-वर्ती खेतमें रख छोड़ते हैं। समय समय पर टीमर भी कुठिया हाटमें रखे जाते, क्योंकि वहाँ तूफानमें कोई उपद्रव होनेकी सम्भावना नहीं रहती है। १८७० ई०को गोआलन्दसे कुठिया तक रेलपथ खोला गया तथा नदीकूल पर बाँध टें कर स्टेशनकी रक्षा की गई है। यह बाँध तैयार करनेमें लगभग १३०००००) रु० लगे थे, किन्तु उक्त वर्षके अगस्त मासमें नदीमें इस तरहकी बाढ़ आई कि उस बाँधका मुट्टा मूल्भ, रेल स्टेशन, और निकटस्थ ग्रामके बहुतसे अंश नष्ट हो गये थे।

नदीमें नौका या टीमरने रेलगाड़ी द्वारा माल बोझ कर लाना ही गोआलन्दकी व्यवसाय है। आसाममें होने-वाले द्रव्योंको छोड़ पार्श्वस्थ जिला समूहकी उत्पन्न फसल उक्त रेल द्वारा कलकत्ता भेजी जाती है। गोआलन्दसे कई एक टीमर आसाम, मिराजगञ्ज, ढाका और काकाड़ आते जाते हैं।

गोइंजी (देश०) क्लिका रहित एक प्रकारकी मङ्गली जिसका मुख और पूछ एक ही तरहके होते हैं।

गोइंठा (हि०) गोइंठा देखो।

गोइंठीरा (हि० पु०) गोइंठा रखनेका स्थान वह जगह जहाँ गोइंठा जंसा किया जाता है।

गोड्ड (हि०) गोंड ११० ।

गोड्डा (फा० पु०) गुणचर, गुण भेदिता, जो गुणरूपसे गोपनीय सवाद सय करता है । -

गोड्डनका (देश०) भारवाडो वैश्योंकी एक उपाधि ।

गोड्डया (हि० स्त्री०) माथी, सहचर, साथमें रहनेवाला ।

गोड्डयार (देश०) एक छोटा पचो जिसका वर्ण खाकी रंगका होता है ।

गोड्डलवाला (हि० पु०) वैश्योंकी एक उपाधि ।

गोड्ड (हि० वि०) चुरानेवाला, हरण करनेवाला, छिपाने वाला ।

गोड्डोपदेश (सं० त्रि०) गाव ओपशा समीपवर्तिन्य यस्य, बहुव्री० । जिसके निकट गाव सोड्ड पडी हो ।

गोकण्ट (सं० पु०) गो पृथिव्या कण्ट इव । गोपुरहृत्, गोखरुका पेड ।

गोकण्टक (सं० पु०) गो पृथिव्या कण्टक इव । गोचुर हृत्, गोखरुका पेड । इसका पर्याय—गोचुर, गोचुरक,

त्रिकण्ट स्वादुकण्ट, गोकण्ट, श्वदष्टा और इक्षुगन्धिका है । ० गो पादके पुर, गाय पैरका खुर । ३ गाय या बैल जानिका शम्भा । ४ गो खुरका चिह्नित स्थान ।

५ विकण्टक हृत्, एक तरहका पेड । ६ माप तैल ।

गोकण्टी (सं० स्त्री०) गोपघण्टा ।

गोकया (सं० स्त्री०) कामधेनु ।

गकर (सं० पु०) सूर्य, भातु रवि ।

गोकर्ण (सं० पु०) गौनित्र कर्ण यस्य, बहुव्री० । १ सर्प, नाप । गोवि र कर्ण यस्य, बहुव्री० । २ अश्वतर, खच्चर ।

३ कुलचर, अंगविशेष, गौहरिण । -

इसके नामका गुण—मधुर, स्निग्ध, मृदु, कफनाशक और रक्तपित्तनाशक है । ४ शिवजीके एक गणका नाम ।

५ परिमाणविशेष, घालित विसा । ६ काशीस्य एक शिवलिङ्ग । ७ काश्मीर देशके एक प्राचीन राजा, गोपादित्यके पुत्र ।

८ अश्व प्रशस्ते उत्तर कनाड़ा जिलेमें कुमता तालुक का नगर । यह अक्षा० १४ ३२ उ० और देशा० ७४ १८ प०में कुमता नगरसे १० मील उत्तर पडता है । जनसंख्या प्रायः ४८३४ है । यह हिन्दुओंका एक पवित्र तीर्थस्थान है । ममस्त भारतवर्षके मधु टिबटर्गनको

आते है । प्रति वर्ष फरवरी मास मेला लगता है । रामायण और महाभारत दोनों ग्रन्थोंमें गोकर्णका उल्लेख है ।

इस पुष्पलैत्रका उल्लेख कूर्म, गरुड, नारगखण्ड प्रभृति पुराण तथा हृत्स्नोलतन्त्रमें किया गया है । स्कन्दपुराणीय तापीखण्डमें और नारदपुराणमें (उप० ७४ अ०)

इसका माहात्म्य सविस्तर वर्णित है । भागवतके मतसे इस तीर्थमें सर्वदासि शिव श्रवस्थान करते है । हिन्दू तीर्थयात्रीगण यहांके गोकर्णेश्वर और महाशिवेश्वर शिव

लिङ्गके दर्शनके लिए आया करते है । रावण तथा कर्मकर्णने इसी स्थान पर तप किया था । १८७० ई०की

भूनिष्पानिटी हुई । यहां महाशिवेश्वरका मन्दिर, २० छुट्ट मठ, ३० लिङ्ग और ३० नहानिका घाट है । आर्त और लिङ्गायत उनको यथा भक्ति किया करते है ।

८ धु धकारोके एक आताता नाम जिससे भागवत सुन कर धु धकारी उद्वार हो गया था । १० एक मुनिका नाम । ११ गायका कान । १२ नृत्यमें एक प्रकारका हस्तक । १३ नीलश्याम । १४ अश्वगन्धा (त्रि०) १५

जिसके गोत्रे समान लक्ष्ये षान छे ।

गोकर्णा (सं० स्त्री०) अश्वगन्धा ।

गोर्ण (सं० स्त्री०) गों कण इव पत्रमस्या बहुव्री० । डीप । १ मुरहरी, चुरलहार । २ मूर्धानता । ३ वाजिवलयमेद । ४ हृत्णविशेष ।

गोर्णेश्वर—१ गोर्ण तीर्थस्य एक शिवलिङ्ग । तापी खण्ड और नारदपुराणमें इसका माहात्म्य लिखा है । २ नेपालस्य एक पवित्र लिङ्ग । स्वयम्भुपुराणमें इसका प्रसङ्ग है ।

गोका (सं० स्त्री०) गोरेव गो श्वार्थे कन् टाप । गोहू गो, गाय ।

गोकाक—अश्वके प्रान्तके बलतगज जिलेका पूर्व तालुक । यह अक्षा० १५-५७ एव १६ ३० उ० और देशा० ७४ ३८ तथा ७५ १८ पू०के मध्य अवस्थित है । क्षेत्रफल ६७१ वर्गमील है । इसमें एक नगर और ११७ ग्राम बसे है । लोकसंख्या प्राय ११६१२० है । मालगुजारी १४ लाख भार मेम १३०००, ४० पडती है । चावहत्या यत्न खराब है । जाडमें मलेरिया बुखार बढता और गर्मीमें जो घबराने लगता है । यमुने पत्तारके पहाडोंमें गौत

कालकी पानी वरस जाता और यहां दुभि ज पडने नहीं पाता। गोकाक नहरसे २८ वर्ग एकर जमीन मि चतो है। घाटप्रभा नदी पर गोकाकका सुप्रसिद्ध निर्भर है।

गोकाक—३३३ ई. प्रान्तके बेलगांव जिलेमें गोकाक तालुकका सदर। यह अक्षा० १६' १०' उ० और देशा० ७४' ४८' पू०में दक्षिण-वराठा-रेलवेके गोकाक रोड स्टेशनसे ८ मील दूर पड़ता है। जनसंख्या प्रायः ८८६० है। पहले यहां रंगार्ड और बुनाईका काम बड़ा होता था। लकड़ो और मट्टीके खिलौने भी खूब बनाये जाते थे। १८५३ ई०की मुनिमपालिटी हुई। नगरके पश्चात् भागमें एक निर्जन पर्वत शिखर पर दुर्ग है। कहा जाता है कि उसकी बीजापुरके आदिलशाही सुलतानोंने बनाया था। १६८५ ई०की यह एक सरकारका सदर रजा। १७१७ और १७५४ ई०की मावनूरके नवाबोंने गोकाक अधिकार करके मसजिद गंजी खाना निर्माण किया। १८३६ ई०की गोविन्दराव पटवर्धनके मरने पर यह अङ्गरेजोंके हाथ लगा

नगरसे ३॥ मील दूर गोकाक भरना है। यहां घाट प्रभा नदीका पानी एक चटान पर १७० फीट नीचेकी गिरता है। घाटीकी शोभा विचित्र है। वर्षा ऋतुमें उसको देखते ही बनता है। नदीके दक्षिण तट पर रुईका पुतली घर है। १८८६—१८०२ ई०की गोकाक बांध १७ लाखकी लागतसे तयार हुआ था।

गोकाम (सं० लि०) गां कामयते गो-कामि अण् । गो इच्छु क, जो गाय लेनेकी इच्छा करे।

गोकामुख (सं० पु०) भारतवर्षस्य एक पर्वत, हिन्दुस्तानके एक पहाड़का नाम।

गोकाश—उत्तर कनाड़ाका एक नगर। यह गोकर्णतीर्थके आस पास अवस्थित है। यहां तीर्थयात्री आकर ठहरते हैं, विशेष कर माघ महीनेके मेलमें प्रायः आठ दश हजार संन्यासी साधु और तीर्थयात्री यहां ठिकते है।

गोकिराटिका (सं० स्त्री०) गां वाचं किरति गो-क-क तथा सती अटति अट खुल् टापु। सारिकापत्ती, मैना।

गोकिराटी (सं० स्त्री०) गोकिरा वाचं रटन्ती सती अटति अट अच् गौरादित्वात् डीष् । सारिका पत्ती, मैना।

गोकिल (सं० पु०) गोः पृथिव्याः कील इव । १ मूसल, २ लाहल, हल।

गोकौल (सं० पु०) गोः पृथिव्याः कौल इव । गोकिल ईश्वर। गोकंठ (हि० पु०) भारतकी दक्षिणकी नदियोंमें पाये जानेवाली एक तरङ्गकी मऊली।

गोकुञ्जर (सं० पु०) खूब मोटा ताजा और बलिष्ठ बैल। गोकुल (सं० स्त्री०) गोः कुलं, इतत् । १ गोममूङ्गः भुण्ड । २ गोष्ठ, गोश्रीके रहनेकी जगह, गोशाला, गुहाल। ३ मथुराके दक्षिण कोण पर और यमुनाके वाम तीरवर्ती एक पुण्यस्थान। गोपराज नन्द इसी ग्राममें रहते थे। कृष्ण और बलरामने अपना बाल्यावस्था इसी स्थानपर बिताई थी। पूतनावध, शकटमञ्जन प्रभृति अलौकिक कायका अनुष्ठान भी यहीं पर हुआ था। कृष्णलीलाक्षेत्र समझ कर गोकुल वैष्णवोंका एक तीर्थ है। यहां कई एक देव मन्दिर भी हैं। शिवशतनाम पाठ करनेसे जाना जाता है कि गोकुलमें गोपीश्वर नामक एक शिव विद्यमान है।

गोकुल—एक जैन ग्रन्थकार। इनके ग्रन्थोंमें 'सुकुमाल-चरित्र भाषा' नामक सिर्फ एक ही ग्रन्थ मिलता है।

गोकुलचन्द्र—१ आह्निकचन्द्रिका नामक संस्कृत ग्रन्थ-रचयिता। २ भगवद्गोतीर्थ मारके प्रणीता। ३ रमिक-चन्द्रिका नामक गोवर्धनरुत आर्याममशतोका एक टीकाकार।

हिन्दीके एक मशहूर कवि। इन्होंने बहुतसी कवितायें रची हैं, जिनमेंसे एक नीचे दी जाती है :—

ए मन मेरी लागेरे श्याम सुन्दरवा सी।

गोकुलचन्द्र मनीहर नूरत वित पटक्यो बाहो लहरवा सी।

गोकुलजित् (सं० लि०) गोकुलं जयति जि-क्विप् तुगा-गमश्च । जिसने गोकुल जय किया है।

गोकुलजित्—एक स्मार्त पण्डित। इनके पिताका नाम हीरंजित् था। इन्होंने इलदुर्गाधिपति कल्याणवर्माके आदेशसे १६३२ ई०की मञ्जुपतिथिनिर्णयसार नामक संस्कृत ग्रन्थ प्रणयन किया था।

गोकुलजी सम्पत्तिराम जाला—सुराष्ट्रके एक विख्यात वैदान्तिक एवं पारम्य संस्कृत और अङ्गरेजी भाषावित् पण्डित। आप एक समय जूनागड़के प्रधान सचिव थे। लड़कपनसे ही आपको वेदान्तमें अनुराग उत्पन्न हुआ। एक समय जब जूनागड़में रामबाबा नामक एक वैदान्तिक

सन्धासो आये थे, तब आपने उनके मुखसे वेदान्तका विमल उपदेश सुनकर उनका शिष्यत्व स्वीकार किया। तत्पश्चात् आपने परमहंस मन्दिदानन्द स्वामीके निकट वेदान्तका गूढ तात्पर्य मानभूम किया। इसके श्रेष्ठ समय के बाद आपने उच्च पदगौरव और विषयसम्पत्ति परित्याग कर वानप्रस्थ अवलम्बन किया। उन्नीसवीं शताब्दीके शेष भागमें आपने ईश्वरके ध्यानमें ही अपना जीवन उत्सर्ग किया।

गोकुलदेव—तीर्थकल्पलता नामक संस्कृत ज्योतिशास्त्रकार।

गोकुलनाथ—एक विख्यात पण्डित। इन्होंने सुललित संस्कृत भाषामें करणप्रबोध, प्रमाणप्रबोध, भक्तिरमासूत सिंधु, शाण्डिल्यसूत्रकी भक्तिसिद्धान्तविवृति नामक टीका प्रणयन की है।

२ ऋषिनाम नामका संस्कृत ज्योतिशास्त्रकार। ३ मियिलान्के एक प्रधान पण्डित। यह मैथिल महात्म्यको पाश्चाय नामसे प्रसिद्ध हैं। यों तो इन्होंने बहुतमें संस्कृत ग्रन्थ रचे हैं। परन्तु उनमें निम्नलिखित ग्रन्थ ही प्रधान हैं—हैतुनिर्णयको कादम्बरी नाम्नी टीका माम सोमासा, राममहार्णव, शिवशतकस्तोत्र, रश्मिचक्रतत्त्व, चिन्तामणिटीका तत्त्वचिन्तामणिदीधितियोत, तर्कनक्ष निरूपण, न्यायसिद्धान्ततत्त्व और पदवाक्यरत्नाकर।

४ काशीके रहनेवाले एक विख्यात हिन्दी कवि। ये कवि रघुनाथके पुत्र थे। पञ्चकेशीके अन्तर्गत चोरागाँवमें इनका जन्म हुआ था। काशीराज चैतुमित्र कविके प्रतिपालक थे। प्रतिपालकके इतिहास अवलम्बन कर इन्होंने चैतुचन्द्रिका नामक ग्रन्थ, गोविन्दसुखदविकार और हिन्दी भाषामें महाभारत तथा हरिवंशका अनुवाद रचना किया।

गोकुलप्रसाद—एक हिन्दी कवि। ये कायस्थ आतिके थे। गौडा जिनके अन्तर्गत वनरामपुरमें ये रहते थे। इन्होंने राजा दिग्विजयप्रसिद्धसे सम्मानार्थ १८६८ ई०में दिग्विजयभूषणको रचना की थी, जिसमें प्राय १६२ हिन्दी कवियोंको कवितायोगका मग्न है।

गोकुलबिहारी—हिन्दीके एक सुप्रसिद्ध कवि। इनका जन्म १६०१ ई०में हुआ था।

गोकुलभद्र—हरिरायके वेदान्तकारिका ग्रन्थका एक टीकाकार।

गोकुलस्य (स० त्रि०) गोकुले तिष्ठति गोकुल स्या क। १ गोकुलवासी जो गोकुल ग्राममें रहता हो। कृष्ण उपासक सम्प्रदायविशेष। ३ तैलद्र त्राह्मणोंका एक भेद।

गोकुलाष्टमी (स० स्तो०) गवा कुल पूजनौय यस्या, बहुव्री०। तादृगी अष्टमी, कर्मधा० पु वद्भावश्च। दाक्षिणात्यमें श्रीकृष्णकी जन्माष्टमी इसी नामसे प्रसिद्ध है।

गमाष्टमी ईको।

गोकनिक (स० त्रि०) गोनितस्य कुलमत्र गोकुल उन्। १ केकर, पंचा, भेंगा। गविपद्भ्रम्यगव्या कुलिक जड इव। पद्भ्रम्य गव्युपनेपक, पद्भ्रम गिरी इई गायकी उपेचा करनेवाला।

गोकुलेश—हिन्दीके एक सुप्रसिद्ध कवि। इनकी बनाई हुई बहंतमो अच्छी अच्छा कविताये हैं जिनमेंसे कुछ नीचे दिये जाते हैं—

बाबो तू जो कात मयुवनकी गलियन छत झराराज कु वर सिधे होरो।
 मुनाल चरीर १३३ कुड मा साजन भर भरो है भरो है
 सङ्ग सजसाय गवान चय वाचक करत कोषाइन कतिशय भरो।
 यद सिधे जो सङ्गीसके भिय गोकुलेशिय विष रसिक बिगीरो है
 रङ्ग न रङ्ग रङ्ग है विहारीनाय गीश भरो।
 गवाभान सय सग सवा विर चोर सकल सगभारी।
 गानत कोबा गङ्ग चङ्ग डक भक्तिनी मनकारी।
 गोकुलेश भद्र होरो सिधे गायत ई ई गारी।

गोकुलोद्भवा (स० स्त्री०) गोकुल उद्भव यस्या, बहुव्री०। दुर्गा, महामाया।

गोकुल (स० स्त्री०) गोमि हत, ३-तत्। १ गोमय, गोबर। (त्रि०) २ गोकुलक अनुष्ठित।

गोकौस (द्वि० पु०) १ उतनी दूरी जहाँ तक गौके बोलने का शब्द सुन पड, २ छोटा कोस, हलका कोस।

गोक (स० पु०) गोक नामक कीडा।

गोचौर (स० स्त्री०) गर्वा चौर, ६-तत्। गोदुग्ध, गायका दुध।

गोचौरज (स० स्त्री०) गोचौरात् कायते जन् ड। १ घृत, घी। २ तयचौर, तमसे, खौर।

गोचुर (सं० पु०) गो घृथिव्या चुर इव। १ गोखरु नामक क्षुप या उमका फल (Tribulus terrestris)

इसका संस्कृत पर्याय—त्रिकण्ट, स्थलशृङ्गाट, गो-
कण्टक, त्रिपुट, कण्टकफल, क्षुर, गोक्षुरक, इक्षुगन्धा,
श्वदंष्ट्रा, स्वादुकण्टक, गोकण्ट, वनशृङ्गाटक, क्षुरक, भक्ष्य-
कण्ट, इक्षुगन्धिका, क्षुरङ्ग, श्वदंष्ट्रका, कण्टकी, भद्रकण्ट,
व्यालदंष्ट्र, षडङ्ग, गोखूर, त्रिकट त्रिक और इक्षुर है।
गोखरू देखनेमें चना या वूँटके सदृश होता है।

इसका गुण—शीतल, बलकर, मधुर, वृंहण, कृच्छ्र,
अश्वरो, मोह और दाहनाशक एवं रसायन है। भाव
प्रकाशके मतसे इसका गुण—स्वाद, वस्तिशोधक, टीपन-
पुष्टिकर, श्वासकाश, अर्श और व्रणनाशक है। राज-
वल्लभके मतमें गोक्षुरका गुण—वायुनाशक एवं हृष्य है।
इसके शाकका गुण—तिक्त, हृष्य और स्त्रोतशोधक है।
गोक्षुरके दो भेद हैं—क्षुद्राकार और वृहत्। इन दोनोंमें
वृहत् गोक्षुर ही प्रशस्त है। दुर्भिक्षके समय पश्विमाञ्चल-
के मनुष्य गोक्षुरके बीजको चूर्ण कर जीवन पालते हैं।

२ एक तरहका वृक्ष। (*Ruellia longifolia*)
३ गोखरूके फलके आकारके धातुके बने हुए गोल कंटीले
टुकड़े। मस्त हाथियोंको पकड़नेके लिए ये टुकड़े उनके
रास्तेमें फैला दिये जाते हैं। चलते समय जब ये उनके
पैरोंमें चुभ जाते तो ये चल नहीं सकते। ४ एक प्रकार
का साज जो गोटे और बादलेके तारोंसे गूथ कर बनाया
जाता है। ५ एक प्रकारका आभूषण जो कड़ेके आकार-
का होता है। यह हाथों और पैरोंमें पहना जाता है।
६ कांटा गड़नेके कारण तलवे हथेली आदिमें पड़ा हुआ
घड़ा।

गोक्षुरक (सं० पु०) गोक्षुर स्वार्थे कन् । गोक्षुर देखो।

गोक्षुरादिगण (सं० पु०) गोक्षुर आदिर्यस्य, बहुव्री० ततः
कर्मधा० । भीषकशास्त्रोक्त एक गण । गोक्षुर, क्षुरक,
व्याघ्री, सिंहपुच्छी और कुशिम्विका, इन सबको गोक्षुरा-
दिगण कहते हैं। इसका गुण वातश्लेष्म नाशक है।

गोक्षुरि (सं० पु०-स्त्री०) गोक्षुर देखो।

गोक्षुरीबीज (सं० स्त्री०) गोक्षुर्या बीजं, इ तत् । गोक्षुर-
का बीज । इसका गुण—शीतल, सूत्रवृद्धिकर, शोथनाशक
हृष्य, आयुष्कर, शक्र, मेह और कृच्छ्रनाशक है।

(भावे घसंहिता)

गोक्षुरक (सं० पु०-स्त्री०) एक प्रकारका पत्ती । पशुद देखो।

गोखग (हि० पु०) यन्त्रचक्र, पशु, जानवर।

गोखली—दक्षिण प्रान्तके काँकनस्थ ब्राह्मण सम्प्रदायकी
एक उपाधि। ये महाराष्ट्र जातिके अन्तर्गत हैं और पूना,
मतारा और कोल्हापुरमें रहते हैं। पूनेमें इस श्रेणीके
ब्राह्मणोंकी बड़ी प्रतिष्ठा है। इस जातिमें ऐसी प्रथा है
कि हर एक मनुष्यके नामके साथ उसके पिताका नाम भी
साथमें ही बोला जाता है। इस जातिमें बड़े बड़े भारत-
के भूषण अनैकी भद्र पुरुष हो गये हैं जिनमेंसे सुप्रसिद्ध
लोकमान्य प्रातःस्मरणीय महात्मा गोपाल कृष्ण गोखली
को कौन नहीं जानता।

गोखरू (हि०) गोक्षुर देखो।

गोखा (सं० स्त्री०) गां भूमिं खनत्यनया खन-ड । १ नख,
नाखून।

गोखा (हि० पु०) १ गोखा, भरोखा।

गोखुर (सं० पु०) खुरति विलिखति खुर-अच् । १ अम्ब-
विशेष । गोः पृथिव्याः खुर-इव । २ गोक्षुरवृक्ष, गोखरूका
पेड़। (स्त्री०) गवा खुर, इ-तत् । ३ गौके खुर।

गोखुरा—एक तरहका तीव्र विषधर सर्प, करैत माँप।
इसका फन गौके खुरका जैसा होता है, इसी लिये इसका
नाम गोखुरा पड़ा। सर्प देखो।

गोखुरि (सं० पु०) गवां खुरिर्गव । गोक्षुर देखो।

गोगा (हि० पु०) छोटा काँटा, मंख।

गोगा चौहान—१ एक मित्र वीरपुरुष। हिमालयसे नर्मदा
तक क्या हिन्दू क्या मुसलमान सबके सब इन महापु-
रुषकी भक्ति अदा किया करते हैं। हिन्दू इन्हें गोगा
चौहान या गोगा वीर तथा मुसलमान “गोगापीर” वा
“जाहिरपीर” कहा करते हैं। हिन्दुओंका कथन है कि
घघरा नदीके तट पर धर्मरक्षार्थे लिये इन्होंने मुसल-
मानोंके विरुद्ध अस्त्रधारण किया था। इसीलिये ये पूज-
नीय हैं। मुसलमान कहते हैं कि गोगा इस्लाम् धर्ममें
दीक्षित होनेके कारण उन लोगोंके सम्मानार्थे थे।

प्रवाद ऐसा है—वागड़ देशसे राजा वत्सराज चौहान
ने तोमरराज जयमलको दो कन्याओंसे विवाह किया
था। उन कन्याओंके नाम वाचल और काचल थे।
वाचलका दूसरा नाम श्रीलवतो था। यमुना तीरस्थ
शिर्षावा नगरमें दोनों कन्याओंका जन्म हुआ था। बहूतः

दिन तक उनके कोई सत्तान न हुई । म योगवश गुक गोरक्षनाथ वागडट्टेयकी या राजोद्यानमें अवस्थान करने लगे । बहुत दिनों तक वाचल रानीने गोरक्षनाथकी सेवा श्रुत्वा की । एक दिन वाचल अपनी बहिनका पोषाक पहन गोरक्षनाथके निकट आकर आशीर्वाद प्रार्थना करने लगी । महापुरुषने उसे दो जो खानेके लिए टिकर कहा कि इसीसे दो पुत्र उत्पन्न होंगे । अन्तकी वाचल गुकके सामने उपस्थित हुई । अपनी बहिनकी चातुरी तथा अपना दुःख जना कर रोने लगी । अनेक अनुनय विनयके अनन्तर गोरक्षनाथने उसे एक गुगुल दे कर कहा—तुम्हारी बहिनके पुत्रके दाम होंगे । यथा समय शीलप्रती रानोकी गम रहा । काचलने उसके गम की नट करनेकी बहुत चेष्टाये की परन्तु सब निष्फल गई । ८ मास गर्भवारण कर वाचलने भाद्रमासकी नवमी तिथिमें एक पुत्र बद्ध प्रसव किया । गुगुलमें जन्म होनेके कारण पुत्र का नाम गुगा या गोगा पड़ा । यथाकाल गोगा वागडट्टेयके राजा हुए । काचलके दो पुत्र अर्जुन और सुजर्जनने दिल्लीके राजाकी सहायता या वागड ट्टेय पर अधिकार करनेकी चेष्टा की । किन्तु गोगाने दोनोंको पराम्प तथा निरुत्तर कर उनके छिद्र मुण्डकी अपनी माताके पास भजवा दिया । रानीवाचल अपने पुत्रके दुर्घटन पर अत्यन्त मन्तम और क्रुद्ध हो उठी और शोक प्रगट कर बोली—जिम स्थान मेरी बहिनके लउके गये उसी स्थान पर मेरे पुत्र भी जाय । माताको इस वचनसे गोगाके हृदयमें एक भारी आघात पड़ चा और तब प्राथना कर प्रथीसे बोली—“माता वसुन्धरे ! आप विदीण हो जावें और मैं आपको गोदमें गयन करू, इस पाप मुझको अब किसीसे दिव्यनिको इच्छा नहीं करता ।” उनकी प्राथना पर प्रथी विदीण हो गई और वे जवादिया नामक घोड़े पर चढ़ भूगाममें मदाके लिये छिप रहें ।

अवशेषको वे एक दिन जवादिया घोड़े पर चढ़ पर्वत की छेदते हुए वाहर निकल उठे । उनकी घड़ अथवा रोहो प्रस्तरमय भीममूर्त्तिके राजस्थानके मन्दिर राजधानी में आज तक भी रचित है ।

मुसलमानोंका स्थान है कि गोगापोरकी प्रार्थनासे पहले पृथ्वी नहीं फटा किन्तु जब वे मका जा रतन

हाजोका शिष्यत्व ग्रहण कर लोटे तब वसुन्धराने उन्हें ग्रहण किया था । गोगाको स्त्रीका नाम शिरियाल था । प्रति रात्रिको जाहिरपोर अपनी स्त्रोसे मुलाकात करते तथा उसे भाति भातिके अलङ्कारसे भूषित करते थे ।

पश्चिमाञ्चलकी रमणिया गोगाके जन्म तिथि उत्सवमें उनका स्तुतिगान किया करते है । किसी किसीके मत से गोगा दिल्लीपति छुबिराजके सम सामयिक थे । राजस्थानके मख्दामी गोगावत् नामक राजपूत उनके वंशधर है । इकेम पतिरहित इसलामधर्मावलम्बी बहुमतसे चौहान अपनेको गोगा वंशोय बतलाते है । ११६१ ई० ।

२ माचाडाके एक राजा, आमलदेवके पुत्र । फिरोज शाहके राजत्व कालमें १३०४ ई०का उत्कीर्ण इनका एक शिलालेख पाया जाता है । (Cunningham's Ach. Sur. Report Vol VI Plat III)

गोगापोर (हि० पु०) एक पोर वा माधु । राजपुताना तथा पञ्जाब देशोंकी जोच जातिके हिन्दु और मुसलमान इनकी पूजा करते है । गोगाचौहान ११६१ ।

गोगट्टि (म० स्त्री०) गोगाको गट्टिर्षति कर्मधा० । एक बार प्रसूता गामो, वह गाय जिसने सिर्फ एक बार बच्चा दिया हो ।

गोगीयुग (म० स्त्री०) गोगित्व गो दित्वात् गो युगच् प्रत्यय । गोगा दित्व स ख्या । गाय या बैलकी जोड़ो । (सृष्टिशेष)

गोगूड—राजपूतानास्थ उदयपुरके गोगूड राज्यका प्रधान नगर । यह अक्षा० २४ ४६' उ० और देशा० ७३ ३२' पू०में अरावली पर्वत पर समुद्रपृष्ठसे ३०५० फुट ऊँचे अवस्थित है । जनसंख्या प्राय २४६३ है । इस राज्यमें ७५ गाँव आवाद हैं । राजा आला राजपूत वंशीय भरदार है । राज्यका आय प्राय २४००० रु० है । १०४०, ६० कर उदयपुर दरवारको दिया जाता है ।

गोगोष्ठ (म० स्त्री०) गो स्थान गोस्थानार्थं गोष्ठच प्रत्यय । गोस्थान, गाय रहनेका स्थान ।

गोगयन्त्रि (म० पु०) गोभ्यो जातो यन्त्रिरिव । १ करोप शब्द गोमय, सूखा गोबर । गोत्रं न्यिर्यत्र, बहुवो० । २ गोष्ठ, गो रहनेको जगह, गोशाला । ३ गोजिह्मिफा, एक तरहको भोपध ।

गोयास (सं० पु०) मिड अन्न जो खानेके समय वा आजा-
टिकके आरम्भमें गौके लिये अलग रख दिया जाता है।
गोधरी (हिं० स्त्री०) भडोंच और बगोदामे होनेवाली
एक प्रकारकी कपास।

गोघा—वम्बई प्रान्तके अहमदाबाद जिलेमें धनधुक तालुक-
का नगर। यह अक्षा० २१° ४१' उ० और देशा० ७२°
१७' पूर्वमें खम्भातकी खाड़ी पर पडता है। जनसंख्या
कोई ४७५८ है। नगरसे पौन मील दूर एक अच्छा बन्दर
है। वलभी राजाओंके समय मश्रवतः उसे गुण्डीगर
कहते थे। १३२१ ई०में फ़ियर जोर डानमने उसको
Cagn जैसा लिखा। गोघाके लोग भारतवर्षमें
सबसे अच्छे मलाह समझे जाते हैं। यहां जहाज रमत
पानी ले और मरम्मत करा सकते हैं। मुंजानेकी दक्षिण
जो आलोकगृह बना, १० मील क देख पडता है।
कुछ वर्षसे इसका काम काज बि ड गया है। अमेरि-
कामें जब गृहयुद्ध चलता, यह काठियावाडमें रुईका
खास बाजार था। नगरसे उत्तर और दक्षिण नमकके
भील हैं। १८५५ ई०की मुनिमपालिटी हुई।

गोघात (सं० पु०) गां हन्ति गो-हन् अण्। गोहन्ता,
गोहत्या।

गोघातक (सं० पु०) गवां घातकः, ङ-तत्। गोहत्या-
कारी, गोहिंसक, गायकी मारनेवाला, बूचर, कमाई।

गोघातिन् (सं० त्रि०) गां हन्ति गो-हन्-णिनि।

गोघातक देखो।

गोघृत (सं० स्त्री०) गोः पृथिव्याः घृतामिव शस्यपोषकत्वात्।
१ घृष्टजल, वर्षाका पानी। गोघृत्, ङ-तत्। २ गव्य-
घृत, गौका घी। घ-हेन्।

गोघ्न (सं० पु०) १ गौको मारनेवाला, गौका वध करने-
वाला। २ अतिथि, मेहमान, पाहुना। प्राचीन समयमें
किमी अतिथिके आने पर मधुपर्कके लिए गोहत्या करने-
को प्रथा थी, इसीसे अतिथिका नाम गोघ्न पडा है।

गोघ्नधिकारी—कन डा जिलेके सेलापुर और सिहापुरमे
रहनेवालो एक नीच जाति। ये शहर और ग्रामोंमें
हिन्दुओंके साथ रहते हैं। कहा जाता है कि, ये महि-
शुरसे आकर उक्त देशोंमें बस गये हैं। इनकी मातृभाषा
कनाड़ी है। ये वीरभद्रकी अपना नन्ददेवता मानते हैं।

इनकी दो शाखायें हैं—दम्भोमरु और मुलजनम। एक
दूसरेमे आदान प्रदान चलता है। ये नाटे और मजबूत
होते, इनको नाक चिपटो होती और शरीरका रंग काला
होता है। इनका प्रधान मोजन चावल है। ये शराब
नहीं पीते लेकिन मास मछली इत्यादि खाते हैं। इनके
कपडे लच्छे बहुत मँने रहते हैं। ये मच्चे, इमनदार
और शान्त स्वभावके होते हैं। ये ब्राह्मणोंको अपना पुरो-
हित मानते हैं। नीच जातिके होने पर भी ये कष्टर
धार्मिक होते हैं। ये अपने घरमें कुलदेवताकी मूर्ति
स्थापन करते और प्रतिदिन भक्तपूर्वक उनकी पूजा
किया करते हैं। मृतदेहको ये पृथ्वीमें गाड़ देते हैं और
तेरह दिनों तक अशौच मानते हैं।

गोचना (हिं० क्रि०) रोकना केंकना, किसी चीजकी चाल
रोकना। (पु०) चना मिश्रित गड़।

गोचनी (हिं० स्त्री०) गोचना देखो।

गोचन्दन (सं० स्त्री०) गोशोर्षाख्यं चन्दनं, मध्यपटलो०।
सुश्रुतके अनुसार एक प्रकारका चन्दन।

(सुश्रुत चिकित्सा० २६ अ०)

गोचन्दना (सं० स्त्री०) एक प्रकारकी जींक। सुश्रुतका
मत है कि जिस जींकका अधोभाग या पुच्छदेश गोवृषण-
की नाईं दो भागोंमें विभक्त एवं मुख बहुत छोटा हो
वहो गोचन्दना कहलाता है। इसके काटनेसे सूच्छा,
ज्वर, दाह, वमन, मत्तता या मनकी विकलित और शरीर
को अवसन्नता होती है, और काटाहुआ स्थान सूज आता
है। ऐसी अवस्थामें 'अगद' नामक औषधका पीना,
दंशनस्थान पर लेप देना और उसका नस लेना उप-
योगी है।

गोचर (सं० पु०) गाव इन्द्रियाणि चरन्त्यस्मिन् गो-चर-
अच्। ग चर सञ्चर पठ व्र गृह्यजा० ऋगिगमाद्य। पा ३।१।८। १ इन्द्रिय
जिसे ग्रहण करतो है, विषय, रूपरस आदि।

“घ्राणस्य गोचरो गन्धः।” (भाषा-रि०)

२ ज्ञानविषय। “मदसत्तम शयगोचरोऽमी।” (नेपथ०)

(त्रि०) गवि भूमौ चरति गो-चर कर्त्तरि अच्।

३ भूचर, जमीन पर रहनेवाला।

(पु०) गावश्चरन्त्यस्मिन् पूर्ववत्साधु। ४ गोप्रचार-
का स्थान, गोष्ठ, चरागाह, चरो।

"वशात्ता एव मगः मीः वरा" वारह्मिण्यं पतंजु जनेन गम् ३

(विरात० ३१०)

५ गन्ताय देग ।

'इतिगोचरः, गुरुविषयानि तु मोक्षदानाः' (अडानिषत्)

६ देग ।

'वसन्तीं ग्राहयित्वा युवा नरादिभिर ३ (भागवत १०-५५)

'ददन् ५५ गोचरा' - भागवत ३

गायो व्योमगतयो ग्रहाच्चरन्त्वम्बिन् पर्यवत् साधु ।

७ जन्मराशि तक ग्रहाक्रान्त राशिका नाम । फलित ज्योतिषक मतमें यह अपनी गतिके अनुसार जिन राशिमैं उपस्थित हो, यह राशि जन्मराशिको अपनेसा जिन मन्व्याको राशि होती है, उस मन्व्यावालो राशिके शुद्ध होने पर यह शुभफल देता है और अशुभ होनेमें अशुभफल देता है । ग्रहके लिए कोई भी राशि अशुद्ध या बुरी नहीं है । परन्तु ज्योतिषशास्त्रमें जन्मराशिकी अपनेसा किसी किसी राशिमैं ग्रहका रहना शुभ माना गया है और किसी किसी राशिमैं अशुभ ऐसा निश्चित हुआ है । जिन स्थान पर जिन ग्रहकी अवस्थित भग भ्रमट है वही यह उस राशिमैं रहनेमें उसे गोचर अशुद्ध और जिन राशिमैं रहनेमें शुभ फल हो, उस स्थानमें ग्रहके रहनेमें गोचर गुरुि कही जाती है ।

धैर्यात्मिक मतानुसार—मनुष्य अपने अपने कर्मके अनुसार समय समय पर सुखी और दुखी हुआ करते हैं । मनुष्यके यह उभरने कारण नहीं । परन्तु यहाँके व्यवस्थानके अनुसार मानव और मनुष्यका भावी मङ्गल या विपत्तियोंका अनुमान किया जा सकता है । यहाँके अनुसार भविष्यामें विपत्तिकी सम्भावना होने पर, उसको रोक्नेके लिए सातव्या अनुष्ठान करनेमें फिर विचारयत्न नहीं होता पड़ता । किसी क्रिया ज्योतिषिकका मत है कि दूसरे कारणोंसे भीति यहाँका व्यवस्थान भी मनुष्यके सुख दुःखमें अत्यन्त कारण है । कुछ भी हो, यहाँके व्यवस्थानमें मनुष्योंकी मङ्गलुभ कर्मकी प्राप्ति होता है, इसे मनुष्य ही साकार अपने धार प्रत्यक्षमें भी देखनेमें आता है । प्राचीन काल ज्योतिषमें इन विषयमें व्यवस्था मतामन है । परन्तु प्राचीन पर्याय यहाँके व्यवस्थानके अनुसार जिन ग्रहमें वेम फलाफलका निश्च

रण करते थे, उसका कोई भी उपाय उन्होंने प्रकाश नहीं किया । मिर्क फल होता है—इतना ही निरूपण कर गये हैं ।

केतु राहु रवि, चन्द्र, मङ्गल और शनि ये सब ग्रह जन्मराशिमैं तृतीय या षष्ठ स्थान पर रह तो शुभ फल समझना चाहिये और जन्मराशिमैं दशम स्थानमें हों तब भी शुभ फल समझना चाहिये । यदि ये ग्रह जन्म राशिमैं सात, नवम वा षष्ठम स्थानमें रहें तो भी शुभ फल देते हैं । बुधके जन्मराशिमैं अवस्थित रहनेमें और शुकके षष्ठ, मंगल और दशममें सिवा अन्य राशिमैं रहनेमें शुभ फल होता है । एकादश राशिमैं कोई भी ग्रह हो वह मनुष्यके लिए शुभ ही है । यहगण धर्म अथवा अतिचार आदि कोई भी व्यवस्थामें क्यों न हो, सब ही दशममें शुभाशुभ फल देनेवाले होते हैं । सब ही ग्रह यकी वा अति गुरो हो कर जिन राशिमैं ठहरेंगे, उसी राशिको शुभाशुभ फल प्राप्त होगी । परन्तु बुध और शुक अति चित्त राशिमैं यकी वा अतिचारी होंगे, उसी राशिका 'नरूपित फल देते हैं । चन्द्रको राशिमैं जाते समय यदि नक्षत्र शुभ हो, तो सब ही राशिमैं चन्द्र शुभ फल देता है और रविके चलते समय चन्द्रके शुद्ध रहने पर भी शुभ फल होता है । मङ्गल आदि ग्रहोंके मङ्गलस्थानमें यदि रवि गुरु रहें, तो भी शुभ फल होता है । रवि, मङ्गल और शनिके चलते समय यदि नाडीमण्डल हो, तो गोचर अत्यन्त शुभ फल और क्लेश देता है ।

चन्द्ररवि और रविचन्द्र २ की ।

जन्मराशिमैं चन्द्रके रहनेमें मिटाव भोजन, शुकके रहने पर चासोट प्रमोद रवि या मङ्गलके रहनेमें मनुष्यके शक्ति रहनेमें प्राणजानि, बुधके रहनेमें अन्धर और दुःखदैनिक रहनेमें मनुष्यके धनकी तर्हि धार क्लेश उत्पन्न होता है ।

द्वितीय स्थानमें यदि रवि रहे तो मित्तमें सुख, चन्द्र रहे तो क्लेश शक्ति रहे तो विलक्षण दुःख हो तो मङ्गल हो तो जानि, शुक हो तो भोग, और शुकशक्ति रहे तो ज्ञानकी प्राप्ति होती है ।

तृतीय स्थानमें रवि, मङ्गल, शनि और शुकके रहनेमें दशमके विषय होकर दश स्थानकी प्राप्ति, चन्द्र और बुध

रहने पर शत्रुनाश तथा बृहस्पतिके रहनेसे मानसिक पीड़ा उत्पन्न होती है।

चतुर्थ स्थानमें बृहस्पतिके रहनेसे मनुष्यमें शास्त्रोंके विरुद्धमें तीक्ष्णवृद्धि पैदा होती है। रविके होनेसे महा दुःख, चन्द्रके रहनेसे उदररोग, बुधके रहनेसे आरोग्यता, शुक्रके रहनेसे रोगका नाश, मङ्गलके होनेसे शत्रुका भय और शनिके रहनेसे वित्तनाश होता है।

चन्द्र यदि जन्मराशिसे पञ्चम स्थानमें रहे तो दौर्भाग्य, मङ्गल होनेसे मानसिक उद्वेग, शनि होनेसे नाना प्रकार के दोषोंकी उत्पत्ति, रवि होनेसे प्रिय व्यक्तिका विच्छेद, बुध होनेसे दौर्भाग्य और बृहस्पतिके पञ्चम स्थानमें रहनेसे मनुष्यको सब विषयोंमें सुखकी प्राप्ति होती है।

छठे स्थानमें रवि, चन्द्र, मङ्गल, बुध और शनि ग्रह रहें, तो बहुत धनधान्यादिकी प्राप्ति होती है। बृहस्पतिके छठे स्थानमें रहनेसे शत्रुवृद्धि और मानसिक कष्ट होता है तथा शुक्र रहे तो नाना प्रकारकी शत्रुता नष्ट हो जाती है।

जन्मराशिकी अष्टम सातवीं राशिसमें चन्द्र रहे तो स्त्रीलाभ, शनि रहे तो मानसिक उद्वेग, मङ्गल रहनेसे धनक्षय, बृहस्पतिके रहनेसे सम्पत्ति लाभ, शुक्रके रहनेसे रोगोंकी वृद्धि और रविके रहनेसे नाना प्रकारका अनिष्ट होता है।

मङ्गल यदि जन्मराशिसे अष्टम स्थानमें रहे तो अग्नि-भय, बुध रहे तो सुख, शनिसे धन हरण, शुक्रसे अर्थलाभ, रविसे मृत्यु, बृहस्पतिसे स्थानका नाश और चन्द्रके रहनेसे नेत्ररोग होता है।

जन्मराशिसे नौवें स्थानमें शनिके रहनेसे अर्थनाश, बुधसे रोग, मङ्गल या शुक्रसे अर्थलाभ, चन्द्रसे वास, रविसे शोक और क्लेश तथा बृहस्पतिके रहनेसे सम्मान और पशु आदिका लाभ होता है।

जन्मराशिसे दशवें स्थानमें बुधके रहनेसे मनमें सुखता, रविसे इच्छानुरूप कीर्ति, मङ्गलसे सम्पत्ति-लाभ चन्द्रसे प्रधान पदकी प्राप्ति, रविसे कार्यकी सिद्धि, शुक्रसे मित्रोंके यशकी वृद्धि और बृहस्पतिके रहनेसे प्रीतिकी हानि होती है।

रवि, चन्द्र, मङ्गल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि—

ये जन्म राशिके ग्यारहवें स्थानमें रहें तो मनुष्यके धन, धान्य और मानकी वृद्धि होती है। ग्यारहवें स्थानमें रह कर कोई भी ग्रह अशुभ फल नहीं देता।

बृहस्पति, रवि, शनि, राहु, मङ्गल और चन्द्रके जन्म राशिसे बारहवें स्थानमें जानेसे मनुष्यके लिए वध और बन्धनका भय रहता है। बुध या शुक्रके बारहवें स्थानमें रहनेसे धैर्यकी वृद्धि होती है।

किमी किली ज्योतिषशास्त्रोंमें गोचरोंका फल इस प्रकार लिखा है,—रवि यदि जन्मराशिसमें पंचमे तो मनुष्य स्थानभ्रष्ट होता है। ऐसे हो द्वितीयस्थानमें रहनेसे भय, तृतीय स्थानमें स्त्रीलाभ चतुर्थमें मानहानि, पञ्चममें दैन्य, षष्ठमें शत्रुनाश, सप्तममें अर्थनाश, अष्टममें पीड़ा, नवममें कान्तिपुष्टि, दशममें कार्यकी सिद्धि, ग्यारहवेंमें सम्पत्ति वृद्धि और बारहवें स्थानमें रविके रहनेसे सम्पत्तिका नाश हो कर मनुष्य घोर विपत्तिसमें पड़ जाता है।

जन्मराशिसमें चन्द्रके रहनेसे अर्थलाभ, द्वितीयराशिसमें चन्द्रके रहनेसे वित्तनाश, तृतीयमें द्रव्यलाभ, चतुर्थमें उदर पीड़ा, पञ्चममें कार्यहानि, छठे स्थानमें वित्तलाभ, सातवेंमें स्त्रीलाभ, आठवेंमें मृत्यु, नौवेंमें राजभय, दशवेंमें महासुख, ग्यारहवेंमें धनकी वृद्धि और बारहवें स्थानमें रहनेसे रोग और धनक्षय होता है।

जन्मराशिसमें मङ्गलके रहनेसे शत्रुभय, द्वितीय स्थानमें रहनेसे धननाश, तृतीयमें अर्थलाभ, चौथेमें शत्रुभय, पाँचवेंमें प्राणनाश, छठेमें वित्तलाभ, सातवेंमें शोक, आठवेंमें अस्वाभाव, नौवेंमें कार्यहानि, दशवेंमें शुभ फल, ग्यारहवेंमें भूमिलाभ और बारहवें स्थानमें रहनेसे रोग, अर्थनाश और अमङ्गल होता है।

जन्मराशिसमें बुध रहनेसे बन्धन, द्वितीयमें धनलाभ, तृतीयमें धन और शत्रुकी वृद्धि, चौथेमें अर्थलाभ, पाँचवेंमें तङ्गी, छठेमें अशुभ फल, सातवेंमें नाना तरहके रोग और विपत्तियाँ, आठवेंमें धनलाभ, नौवेंमें असाध्य रोग, दशवेंमें शुभफल, ग्यारहवेंमें अर्थलाभ और बारहवें स्थानमें जानेसे वित्तलाभ होता है।

जन्मराशिसमें बृहस्पतिके रहनेसे भय, द्वितीय स्थानमें बृहस्पतिके रहनेसे अर्थलाभ, तीसरेमें शारीरिक क्लेश, चौथेमें अर्थनाश, पाँचवेंमें शुभ फल, छठेमें अशुभफल,

सातवेंमें राजपूजा, आठवेंमें धननाश, नोवेंमें धनवृद्धि, दश
वेंमें प्रोतिनाश, ग्यारहवेंमें धनलाभ और बारहवें स्थानमें
रहनेमें शारीरिक और मानसिक पीटा होती है।

शुक्र यदि जन्मराशिमें रहै तो शत्रुनाश, हितेय
स्थानमें रहनेसे अर्थलाभ, हृत्तीयमें शुभफल, चौथेमें
धनलाभ, पाचवेंमें पुत्रलाभ, छठेमें शत्रु वृद्धि सातवेंमें
शोक, आठवेंमें अर्थलाभ, नोवेंमें वस्त्रोंकी प्राप्ति, दशवेंमें
शुभफल, ग्यारहवेंमें बहुतर धनका लाभ और बारहवें
स्थानमें रहनेसे धनका आगमन होता है।

शनि जन्मराशिमें रहनेसे वित्तनाश और मन्ताप,
द्वितीय स्थानमें चित्तमें क्लेश, तीसरेमें शत्रुनाश और वित्त
लाभ, चौथेमें शत्रुघातकी वृद्धि, पाचवेंमें पुत्र और भृत्यादि
का नाश, छठेमें अर्थलाभ, सातवेंमें अनिष्ट, आठवेंमें
शारीरिक पीडा, नोवेंमें धनक्षय, दशवेंमें मानसिक
वृद्धि, ग्यारहवेंमें वित्तलाभ और बारहवेंमें स्थानमें शनि
रहनेसे निहायत अमङ्गल होता है।

जन्मराशिमें द्वितीय, पञ्चम, सप्तम, अष्टम, नवम,
और दशम राशिमें राहु रहनेसे अर्थका क्षय, शत्रु का
भय, कार्यको हानि, रोग, अस्मिभय और मृत्यु दृष्टा
करती है। इनके अलावा दूरमें स्थानमें राहुके रहनेसे
कोई अनिष्ट नहीं होता, बल्कि शुभफल ही होता है।

जन्मराशिमें ग्यारहवीं, तीसरी, दसवीं वा छठी
राशिमें केतु रहै तो मन्त्रान, भोग, राजपूजा, सुख और
पर्यलाभ होता है और आत्माकारो पुण्य वा स्त्रीमें
सुखभोग और पुण्य मन्त्र होता है।

गोचरके ग्रहोंका फलाफलनिर्णय—रवि और मङ्गल ये
दो ग्रह प्रवेश करते समय फल देते हैं। वृहस्पति और
शुक्र ये दोनों मध्य समयमें, शनि और चन्द्र आखिरमें
तथा बुध ग्रह हरवक्त अपना फल देता रहता है।

रवि चन्द्र आदि ग्रहोंमें विभिन्न विवरण हैं।

सूहृत्तचिन्तामणिके मतानुसार—सूर्य गन्तव्य राशिमें
पहले पांचदिन फल देता है। मङ्गल गन्तव्य राशिमें
पहिले आठ दिन, बुध गन्तव्यराशिमें पहिले सातदिन, चन्द्र
गन्तव्य राशिमें पहिले तीन दण्ड, राहु गन्तव्यराशिमें पहिले
तीन मास, शनि छह मास और वृहस्पति दो मास पहिले
अपना फल देता है।

रवि और मङ्गल प्रथम दशाश्रीमें रह कर ही अपना
सम्पूर्ण फल दे देता है। इसके सिवा दूसरे ग्रहोंमें
रहते हुए कुछ कुछ फल होता रहता है। इसी प्रकार
शुक्र और वृहस्पति बीचके दशाश्रीमें, बुध तीसरे अश्रीमें,
चन्द्र और शनि चरम दशाश्रीमें रहते हुए फल देते हैं।
इसके सिवा दूसरे अश्रीमें रहते हुए थोडा फल देते हैं।
ग्रह यदि गोचरमें विरुद्ध हों, तो शान्तिके लिए दान और
ग्रहपुरस्कारादि करना पडता है। इससे फिर किसी
तरहके अमङ्गलकी सम्भावना नहीं रहती।

गोचरो (हि० स्त्री०) भिच्चावृत्ति, भोग्य भागनिका पेशा।
गोचर्म (स० स्त्री०) गथा चर्म ६ तत्। १ गीका चमडा।
तन्त्रमें लिखा है कि स्तम्भनकायमें गो चर्म पर बैठना
उचित है। २ परिमाणविशेष, एक नाप। वृहस्पति
के मतसे सात हाथका एक टण्ड, तीस दण्डका एक निव
तन एव टण्ड निवर्तनका एक गो चर्म अर्थात् २१००
हाथ लम्बो और इतनी हो चौडी होती है। महाभारत
में लिखा है कि जो एक गोचर्मपरिमित भूमि दान करता
है उसका ज्ञान और अज्ञानकृत समस्त पाप विनष्ट हो
जाते हैं। (भृगुसंहिता ६२२०)

गोचर्मकण्टक (स० पु०) पर्पटक, भोग्य उपयोगी एक
तरहका पोधा।
गोचर्मवसन (स० पु०) गोचर्मवसनं यन्त्र, बहुव्री०।
महादेव, शिव। (भारत १।१।२०००)
गोचारक (स० वि०) गा चारयति घामादि गो चर शिच्
श्वुल। गोरक्षक, गोकुली रक्षा या पालन पोषण करने
वाला।

गोचारण (स० स्त्री०) गथा चारण ६ तत्। गीका चराना,
गीकी किवलानेकी क्रिया।
गोचारिन् (स० वि०) गोशिव्य चरति चर गिन्नि। गीके
पोछे पोछे चलनेवाला, एक तरहका तपस्वी।

(भारत ३५० १०)

गोचो (स० स्त्री०) गामघति अन्वृत्तिप डीप् नलोपे
अनोप। १ मत्स्यविशेष, एक प्रकारकी मछली। गा
शिवशुक्तिरूपा वाच अक्षति अन्वृत्तिप डोप।
२ हिमालयपर्वत। हिमालयको श्लोका नाम।
गोचरान (स० पु० स्त्री०) गोमय, गोबर।

गोच्छान्त (सं० पु०) गौ भूमिं काटयति कट-गिच् अच्
पृषोदरादत्वात् साधु । भूकटस्व, कुक्गिस नामका पौदा ।

गोच्छान्ता (सं० स्त्री०) गोरक्षमुण्डो ।

गोज (सं० पु०) मद्धर जातिविशेष । उशनाका मत
है कि प्रसाद क्रमसे नृपके और ममे नृपाके गर्भमें जो पुत्र
उत्पन्न होता है उसे गोज कहते हैं । यह जाति भी
क्षत्रियान्तर्गत मानी गई है, क्योंकि इनका आचार व्यव-
हार क्षत्रियोंकी भाँति है, किन्तु इनमें अभिषेकको प्रथा
नहीं है ।

(स्त्री०) २ गौ वा छागी (बकरी) दुग्धका विकार
विशेष । भावप्रकाशमें लिखा है कि, गोदुग्ध या छागी
दुग्धसे जो फेन उत्पन्न होता है, उसे गोज वा गोफेन
कहते हैं ।

इसका गुण—त्रिदोषघ्न, रुचिकारक, बलवृद्धिकर,
अग्निवर्द्धक, हितकर, भोजन सात्वतं तृणिकारक, लघु,
अतीसार, अग्निमान्य और जीर्णज्वरमें प्रशस्त है ।

(भावप्रकाश पूर्व खण्ड २ भाग)

(त्रि०) ३ गोजात, गायसे जो उत्पन्न हो । यथा—
दुग्ध, दही, घृत, मक्खन प्रभृति ।

गोज (फा० पु०) अपान वायु, पाट ।

गोजई (हिं० स्त्री०) गेहूं और जी मिश्रित अन्न ।

गोजर (सं० त्रि०) गोपु मध्य जरी जीर्णः । बृहं, बली-
वर्द्ध, वृद्धावैल । (भागवत १।२०।१४)

गोजर—पञ्जाब प्रान्तके लायलापुर जिलेकी तोवटेक नह-
रीलका नगर । यह अक्षा० ३१° ८' ७०" और देशा०
७२° ४२' पू०में अवस्थित है । जनसंख्या कोई २५८८
होगी । यहां लायलापुर जैसी मण्डी लगती है । रूईके
काई कारखाने हैं ।

गोजरा (हिं० पु०)-जी मिश्रित गेहूं ।

गोजल (सं० स्त्री०) गवि जातं जलं । गोसूत्र, गायका
सूत्र ।

गोजा (सं० त्रि०) गवि पृथिव्यां व्रीक्षादिरूपेण जायते गो-
जन विट् आत्वं । १ व्रीहि प्रभृति । (ऋक् ४।४०।१)

धान, चावल, तण्डुल । (स्त्री०) २ गोलोसिका वृक्ष ।

(राजान०) (त्रि०) ३ सुरभिजात, जो पृथ्वीसे उत्पन्न हो ।
४ जो दूधसे प्रसृत किया गया हो ।

गोजा (हिं० पु०) १ छड़ी या लाठी जिमके द्वारा चर-
वाहा गौ साँकता है ।

गोजागरिक (सं० स्त्री०) गवि स्वार्थं जागरः प्रप्रमत्तना-
स्वस्य गोजागर-ठन् । १ मङ्गल, आनन्द । (पु०) गवि
भूतो जागरिकः प्रहरीव अस्वरूपकगण्ठधारित्वात् ।

२ कण्टका वृक्ष, एक तरहका पेड़ जो काटसे भरा रहता
है । (त्रि०) गोपु व्रीक्षादियु जागरीऽम्यस्य गोजा-गर-
ठन् ३ भक्ष्यद्रव्य रक्षा करनेवाला, पाचक, रमोईया ।

गोजात (सं० पु०) गवि जातः । १ गौ नामक पुनस्यको
पत्नीका गर्भजात पुनस्यकी स्त्री 'गो'के गर्भसे जो उत्पन्न
होती है । (त्रि०) २ गायसे जो उत्पन्न हो । यथा
घृत, दही प्रभृति । गोः स्वर्गात् जातः । ३ स्वर्गजात, जो
स्वर्गमें उत्पन्न हो, जो स्वर्गमें वास करे । (ऋक् १।४।१०)

गोजापर्णी (सं० स्त्री०) गोजा दुग्धफेन इव शभत्वात्
पर्णमस्य, बह्वर्णी० । गारादित्वात् डोप । दुग्धफेनी
वृक्ष, एक तरहका पेड़ जिमसे दूधके फेनके जैसा रस
निस्सृत होता है दूधिया ।

गोजि (सं०) गोजो दंष्ट्रा ।

गोजिका (सं० स्त्री०) १ गोजिज्ञा, गायकी जीभ । २ एक
तरहकी लता ।

गोजिकाण (सं० पु०) मध्यमाण्ड, मध्य आकारका घोड़ा ।
१४ दंष्ट्रा ।

गोजित् (सं० त्रि०) गां पृथिवीं जयति गो-जि क्तिप् तुगा
गमच्च । १ पृथ्वीको जय करनेवाला । (ऋक् १।१०।१)

(पु०) २ राजा वाहुवलसे जो पृथ्वीको जय करता है
उसीको गोजित् कहते हैं । ३ (त्रि०) गौका जीतना,
गायका प्राप्त करना ।

गोजिया (हिं० स्त्री०) गोजिज्ञा, गोभी या वनगोभी नास-
की घास ।

गोजिज्ञा (सं० स्त्री०) गोजिज्ञेव । १ लताविशेष ।
(Premna Escentia) औषधके काममें आनेवाली

गोभी नामकी घास । इसका संस्कृत पर्याय—दार्विका,
दर्विका, दार्विपर्त्रिका, खरपत्ती, वातोना, अधोमुण्डा,
अनडुज्जिहवा, अधःपृष्ठी, दर्वी और गोजिज्ञिका है ।

इसका गुण—कटु, तोक्षण, शीतला, विसर्प, दन्त
और विषान्तिनाशक एवं व्रण उत्पादक है । (राजनि-)

भावप्रकाशके मतमें इसका गुण वातहृदिकर, शोथल, घ्राही, कफ और पित्तनाशक, प्रमेह, काय, रक्त, व्रण और ज्वरानवारक, लघु कपाय, तिक्तारम और स्वादुपाक है।
२ गुन्द्रा, गटपटे। ३ देवधान्य।

गोत्रिका। स० स्त्री०) गोत्रिका स्वार्थे कन् टाप् अत इत्वञ्च। गत्रिका देवा।

गोजी (स० स्त्री०) ? गोजिजालता। (४४१)

गोजी (हि० स्त्री०) ? गौ हाँकनेकी छडी या लाठी।
२ लठ्ठ, बडी लाठी।

गोजीत (स० लि०) जितेन्द्रिय, जिसने इन्द्रियोको जीत लिया हो।

गोजीर (स० लि०) पशुप्रेरक, जो स्तोत्रगणके उद्देश्यमें पशुप्रेरणा करता है। (४३२)

गोभनवट (हि० पु०) अचल, पक्का। श्रियोंकी साडीका वह घ ग जो पीठ और निर पर रहता है।

गोभा (हि० पु०) १ गुह्यक, एक तरहका पकाय जो मीठे तथा मंवेके मयोगमें बनाया जाता है। २ एक प्रकारका कर्टाना हथ। ३ जेय, स्त्रीसा, खनीता।

गोत्रानिम्—एक विख्यात पोतगोज दम्बु (डकैत)।

इसका यथार्थ नाम—मियाटियों गोत्रानिम् था। १६०८ ई०को आराकानमें जब पोतगोज दम्बुका थड्डा (डेरा) उठाया गया और जब वे शनहीपमें था वसे थे, उस समय गोत्रानिम् एक मामान्य सैन्य और लवच-व्यवसायो था। इसमें कुछ पीछे एक आराकान राजाने स्वराज्यमें भगाये जाने पर शनहीपमें था आश्रय ग्रहण किया था। यहां राजाको गुत्रानिसने सहायता दी एवं मग सैन्योको पराजय कर उसने अपनेकी स्वाधीन राजा के जेमा घोषणा कर दी। उस दुष्टने आश्रित राजाकी वफासे बल पूर्वक विवाह कर लिया और गुप्त रीतिमें राजाको मार डाला। इसके अनन्तर गोभाके पोतगोज राजपति निधिजी आराकान पर आक्रमणके लिए बुलाया।

१६१५ ई०को गोत्रानिम् ५० हजार सैन्य लेकर आराकान पर था। उसके भाव्याचारमें मग जातिने नितान्त उत्पीडित हो भोनन्दाजका माहाय्य ग्रहण किया। भोनन्दाज तत्रा आराकान राजाको मनाचानि पत्र भेो दम्बुपति गोत्रानिम् पर आक्रमण किया। इस

युद्धमें पोतगोजके नौ सेनापति निहत हुए, बादकी भोजा निम् अपने सहाय सम्पत्ति खोकर बहुत कष्टसे मरा।

गोट (हि० स्त्री०) गोट, कपडेके किनारे शोभाके लिए लगाये जानेवाली फीता, मगजी। २ किसी तरहका किनारा। (पु०) ३ गोट, गाँव, खेडा, टोली। (स्त्री०) ४ म डली, गोठो। ५ नगरके बाहर किसी बाग या उपवनको भैर या परिभ्रमण।

गोटवस्त्री (हि० स्त्री०) वह जमोज जिम् पर याम बसा हो।

गोटा (हि० पु०) १ सुनहले र गण पतला फीता, जो वस्त्रके किनारे शोभा बढानेके लिये लगाया जाता है। २ भूने या साटी धनियाको गिरी। ३ इलायची सुपारी और खरबूज तथा बादामके एकत्र छोटे छोटे खण्डोको गिरी। ४ सूखा हुआ मल, क डो, सुखा।

गोटो (हि० स्त्री०) १ लडकोंके खिल खिलनेके व बड, गुरु तथा पत्थरका छोटा गोल टुकडा। २ चोपड खिलने का मोहरा जो हाथोदेत, हड्डो, लकडो इत्यादि का बना रहता है, नरद। इस खिलमें १६ गोमिया होती है जिन्मेंमें ४ माल, ४ हरे ४ पीले और ४ काले रंगको रहती है। ३ एक प्रकारका खिल जो बाही और मोधी रेखाए बना कर खेला जाता है। इसमें ८, १५, १८ या इसमें ज्यादा गोटिया रख कर खेला जाता है। ४ उपाय, युक्ति, तदर्थीर।

गोट (हि० स्त्री०) १ गोट, गोशाला, गोम्यान। २ गोठो याड। ३ सैर सपाटा।

गोटिल (हि० वि०) कुण्डित, जिमकी धार तेज गर्भ हो, कुन्द।

गोट (स० पु०) ? उन्नतनाभि, बडी हुई नामो।

गोट (हि० पु०) पैर, पाँव।

गोटडत (हि० पु०) १ याममें चौकमी टेनेथाला, चोका दार। २ प्राचीन कालका लकारा या कर्मचारी। इस का काम एक ग्राममें दूसरे ग्राममें पद पहुँचाना था।

गोडगाय (हि० पु०) घोडेके पिछने पैरमें धाँवनेकी रमी।

गोडन (हि० पु०) मिठीमें नमक बनानेकी क्रिया।

गोडुना (हि० क्रि०) कोटना।

गोडम्बी (स० स्त्री०) भ्रान्त नामक लताशा धीष।

गोडली (हि० पु०) संगीतविद्यामें त्वास कर नृत्यमें प्रवीण पुरुष या स्त्री ।

गोडवांस (हि० पु०) पशुओंके पैरमें फंसाकर खूँटेसे बांधनेवाला रस्सा ।

गोडवास्तुक (स० पु०) वास्तुकशाक, एक तरहका शाक ।

गोडसंकर (हि० पु०) एक प्रकारका आभूषण जिसे स्त्रियां पैरोंमें पहनती हैं ।

गोडमिहा (हि० पु०) होंषो, डाह करनेवाला, जलनेवाला ।

गोडहरा (हि० पु०) एक तरहका गहना जो पैरमें पहना जाता है, काड़ा ।

गोड़ांगी (हि० स्त्री०) पायजामा ।

गोड़ा (हि० पु०) पैर तथा जांघके मध्यकी मन्धि, घुटना । २ पलंग प्रभृतिका पाया । ३ घोड़िया । ४ सैन या टोरीकी रस्सी जिसे पकड़ कर खेतमें पानी फेंका जाता है ।

गोड़ाई (हि० स्त्री०) १ गोड़नेकी क्रिया या भाव । २ गोड़नेकी मजदूरी ।

गोड़ारी (हि० स्त्री०) १ हरीघाम । २ पलंगका वह सिरा जिधर पैर रखा जाता है, पैताना । ३ जूता ।

गोड़िम्ब (स० पु०) गोभूँसैर्डिम्ब इव । शृगाल, जम्बुक, गोदड़ ।

गोड़िया (हि० स्त्री०) १ छोटा पैर । (पु०) २ उपाय लगानेवाला, तरकीब लड़ानेवाला । (पु०) मन्नाह, मांभी ।

गोड़ी (हि० स्त्री०) लाभ, फायदा ।

गोडुम्ब (स० पु०) गां भूवं तुम्बति अर्दति । गोतुम्बक पृषोटरादित्वात् साधुः । कालिङ्गलता, तरबूजकी लता ।

गोडुम्बा (स० स्त्री०) गोडुम्ब-टाप । गवादनी, (Cucumis madraspatanus, Cucumis melo.) फलशालताविशेष ।

गोडुम्बिका (स० स्त्री०) गोडुम्बा स्वार्थे कन् टाप अत इत्वञ्च । गोडुम्बा देखा ।

गोडुमडि—मान्द्राज प्रदेशके अनन्तपुर जिलामें ताड़पत्रितान्नकके अन्तर्गत एक प्राचीन गण्डग्राम ।

गोण (स० पु०) वृषभ, गाँड़, बैल ।

गोणा (स० स्त्री०) मनःशिला ।

गोणिक (स० स्त्री०) एक तरहका ऊनी वस्त्र ।

गोणिकापुत्र—१ एक प्राचीन वैयाकरण । २ कामशास्त्र और पारदाराधिकरण नामक संस्कृत ग्रन्थकार ।

गोणी (स० स्त्री०) गोण आवपनार्थ डोप । १ अन्न दोनेका आधारविशेष, गोन, बोरा । २ छिन्नवस्त्र, भीना कपड़ा । ३ परिमाणविशेष । वैद्यक परिभाषाके मतसे एक गोणी दो सूपकें बराबर होती है ।

गोणीतरा (स० स्त्री०) ऊँचा गोणी गोणी-टरन् पित्वात् डोप । चूट गोणो, छोटा बोरा ।

गोण्ड—१ नीच जातिविशेष । गोंड देश ।

२ उन्नतनाभि, बड़ो हुँडे नाभी । (त्रि०) ३ जिसकी नाभि बड़ी हो ।

गोण्डउसरी—मध्यप्रदेशमें भण्डारा जिलाके अन्तर्गत एक चूट राज्य । यह शानिगडसे १० मील उत्तर-पूर्वमें अवस्थित है । इसके अन्तर्गत १० दश ग्राम हैं जिनमेंसे गोण्डउमीरी नामक ग्राम ही बृहत् है । यहाँ सिर्फ एक विद्यालय है, अधिवासीयोंमें गोंड और धेरजातिकी संख्या अधिक है । यहाँके सामन्तगण ब्राह्मण-वंशीय हैं ।

गोण्डकिरी (स० स्त्री०) एक तरहकी रागिणी ।

(गीतगीविन्द)

गोण्डक्री (स० स्त्री०) गोण्डकिरी रागिणी ।

गोण्डवन—स्थानविशेष । गोण्ड जातिके रहनेके कारण इसका नाम गोण्डवन पड़ा । यह नाम मुसलमानोंने रखा था । इसका वर्तमान नाम मध्यप्रदेश है ।

गोंड और मध्य प्रदेश देखो ।

गोण्डब्राह्मण—मध्यप्रदेशके ब्राह्मणोंकी एक जाति । पूर्व-समय मध्यप्रदेशमें गोण्डोंका राज्य था । आजकल भी जबलपुरसे नागपुर प्रान्तके देशोंमें गोण्डब्राह्मणोंके बहुतसे ग्राम हैं । इसी कारण उस देशका नाम गोण्डवाना पड़ा और वहाँके रहनेवाले गोण्डब्राह्मण कहलाये । किसी एक दूसरे विद्वान्का मत है कि ये भारा ब्राह्मण भी कहलाते हैं क्योंकि इनका देश मघन वनसे आच्छादित है । फिर किसीका मत है कि ये शुक्ल यजुर्वेदके माननेवाले हैं, अतएव ये पहले शुक्ल या गौर यजुर्वेदी

ब्राह्मण कहलाते थे, पीछे धीरे धीरे गोर या गोड (गोड ब्राह्मण कहलाने लगे है । इनकी माध्यन्दिनी धोर काण्व ग्रीवा है तथा आपत्तस्यसूत्र है । इनमेंसे थोड़े ऋग्वेदी आग्नेयनायनशाखाके अन्तर्गत है । ये शास्त्र धाराशुभार सदाचारी ब्राह्मण सम्प्रदाय है । ये मछली मांस नहीं खाते है । इनकी विद्यास्थिति भी अच्छी है ।

गोण्डवा—मि हभूमके अन्तर्गत एक ग्राम । बड़ा बाजार से १६ मील दक्षिण पश्चिम चाइवामा जानेके रास्ते पर अवस्थित है । गोण्डग्राम तथा धेमनालानाके निकट वर्त्ती विजयक पहाडके पाटदेगमें बहुतसी गिलालिपिया खोदित है । इनमेंसे दो शम्बू काकति अक्षरमें और दो उडिया अक्षरमें खोदो हुई है । ग्रिपोक्त दो गिलाफलक देखनेमें मालूम होता है कि उडिशाके राजा मुकुन्ददेवके शासनकालमें ये लिपि खोदी गई थी मुकुन्ददेव दुगली पर्यन्त राजत्व करते थे तथा उन्हीके राज्यकालमें इस ग्राममें दोनों प्रदेशोंका प्रधान व्यवसाय स्थान था ।

उक्त शम्बू काकति अक्षर बहुत दिनके है । कनिहम साहबका अनुमान है कि राजा मुकुन्ददेवके बहुत पहले ई० ७म शताब्देमें राजा शशाङ्क राज्य करते थे, उन्हीके समयमें इस तरहका अक्षर प्रचलित था । उस समयसे आजकल ग्रामकी अवस्था समृद्धिगानो है

गोण्डवाना—मध्यप्रदेश और मध्याभारतका एक पुराना मुसलमानों प्रांत । अबुल फजलने निम्नलिखित रूपसे उसकी सीमाकी निर्देश किया है—पूर्व रघपुर, पश्चिम मालव, उत्तर पवा और दक्षिणमें दक्षिणात्य । यह वर्णन वर्तमान सातपुरा अधिव्यकाका बोधक है । मुसलमान गोंडोंके टैगको गोंडयन समझते थे, परन्तु आजकल यह नाम ट्राविडोंका है । इस विषयमें कि ट्राविडों को गोड कैसे कहा गया पुरातन तत्त्वविद् कनिहमसाहबने लिखा है—गोड शब्द "गोड का अपभ्रंश है । वाराणसीके एक गिलाफलकमें विदित होता है कि तैवार (अबलपुरके निकट) के एर सेटिराज मालव प्रान्तके पश्चिम गोड जिनमें रहते थे और भी चार पांच गिलाफलकोंमें वहाँ गोड होनेको कहा गया है ।

गोण्डा—अयोध्याके फैजाबाद विभागका एक जिला । यह अक्षा २६ ४६ तथा २० ५० उ० और देशां ८१

३१ एच ८२ ४६ पूर्वमें अवस्थित है । इसकी उत्तरको सोमामें हिमालयके नोचे गी पर्वतश्रेणी है, पूर्वमें बस्ती जिला, दक्षिणमें फैजाबाद, बराबादी और घर्घरा नदी तथा पश्चिममें बराइच है । भूमिका परिमाण २८१३ वर्गमील है । लोकसंख्या प्राय १४०३ ८५ है ।

तमाम जिला समतल जान पड़ता है । कहीं कहीं थोड़ा बड़त ऊंचा नीचा भी है । यहाँ कहीं भ्रामकी और कहीं महुआके पेड़ोंकी पत्तिका नजर आती है । दम जंचकी जमीन तराई ऊपरहार और तरहार इन तीन भागोंमें विभक्त है । तराई या पानीकी जगह जिलेकी उत्तर सीमासे दक्षिणकी तरफ राप्ती नदीसे दो मील दक्षिण तक विस्तृत है, इसी नीचमें बनरामपुर और उतरीना ये दो नगर भे हैं । यहाँकी भूमि कोचडयानी है मिर्फा तिन तिन स्थानोंमें पाव तोय जलखोन जिलेमें हो कर राप्ती और बूडी राप्ती नदीमें जा पड़ा है । उन उन स्थानोंमें बाढ आनेके समयमें पहाडकी धना हुई वानू जम गई है जिससे वना कोचड नहीं है । तराई भूमिके बाढ गोण्डा नगरमें दो मील दक्षिण तक जा चो भूमि है । यहाँकी जमीनमें कोचड और वानू दोनों हैं । इनके बाद घघरा नदीके किनारे तक तरहार जमीन है । यहाँकी तीनों तरहकी जमीन हो ज्यादा उपजाऊ है । इस जिलेमें उत्तर पश्चिमसे दक्षिण पूर्वको तरफ बहनेवाली कुण्डनदिया है, चिनके नाम इस प्रकार है—बुडी राप्ती, राप्ती, सुवावन, कुवाना, विशुही, चमनाई, मनवर, तिरही सरयू और घर्घरा । इन नदियोंमेंसे मिर्फा घर्घरा और राप्ती नदीमें हो नाव चला करती है । राप्ती नदीमें सिवाय वर्षातके दूसरे महीनोंमें नाव नहीं चलती । चिलेके भीतर भी बहुतसे जल मौजूद है । गरमियोंमें ये सूख जाते हैं, धीरे वहाँ छोटे छोटे महुआ जासुन, आदिके पेड़ पैदा हो जाते हैं । नदीके किनारेके वानू बड़े भयावने होते हैं । जगह जगह छोटे छोटे इद या तानाव भी देखनेमें आते हैं । इन तानावोंमें खेतवालों को खूब सुविधा होती है । जिलेके उत्तरांगमें पर्वतके सोमानावर्ती वनविभागमें, जोकि गवर्नरके अधीन है, मान आयन्य और बबुल आदिके पेड़ ही अधिक है । इस जिलेमें शेर, चीता, भालू, भिडिया,

तरह तरहके हरिण और जङ्गली सूअर देखनेमें आते हैं। नदियोंमें मछलियाँ, मगर और कछुए आदि भी असंख्य हैं। यहां दीर्घचञ्चु, वनकुक्कुट, मयूर, कव, तर आदि नाना प्रकारके पक्षियाँ देखनेमें आते हैं।

इस जिलेका प्राचीन इतिहास यावस्ती नगरके पुरातत्त्वसे मखन्ध रखता है। कूर्म और लिङ्गपुराणमें इस भूमिका गाडदेशके नामसे उल्लेख मिलता है। सूर्यवंशीय यावस्तीके पुत्र वंशकने यहां यावस्ती नगरी बसाई थी। * नगर श्रीरामचन्द्रके पुत्र लवकी राजधानी थी। उस नगरीका वर्त्तमान नाम गेटमहेट्ट है।

यावस्ती और गौड़ देखा।

ईस्वीकी ३य शताब्दीमें अयोध्याके राजा विक्रमादित्यके राजत्वके समयमें यह राज्य बहुत ही मज्जिगाली था। परन्तु उनको मृत्युके कई वर्ष बाद गोण्डाका राजदण्ड गुप्तवंशीय राजाओंके हाथमें आया। ब्राह्मण और वीडधर्मके परस्परके विद्वेषसे यह नगर क्रमशः नष्ट हो गया। चीनपरिव्राजक जव यावस्ती और कपिलवासु नगर देखनेके लिए आये थे, तब उन्होंने उक्त दोनों नगरोंकी बीचकी रास्ताओंमें जङ्गल देखा था। इतिहासके पढ़नेसे मालूम होता है कि, गोण्डाके जैन राजा मोहिलदेवने गजनोवाले मामूटके बहनोई मैयट सलारको सेना सहित मार डाला था। जिस समय मुहम्मद घोरोने भारत पर आक्रमण किया था, उस समय यहां डोमराजा राज्य करता था और गोरखपुरके पास ही डोमनगढ़में उसकी राजधानी थी, इस वंशके प्रसिद्ध राजा उग्रसेनने महादेव परगणाके डुमरियादि ग्राममें एक छोटासा किला बनवाया था। उन्होंने थारू, डोम, भर, पाशो आदि जातियोंको बहुतसे गांव दिये थे।

ई० १४ वीं शताब्दीमें यह डोमराज्य कलहंसी, जनवाड़ और विशेन-वंशीय क्षत्रियोंके अधिकारमें आ गया था। कलहंसी राजाओंने हिसामपुरसे लेकर गोरखपुर तक अपना आधिपत्य फैला लिया था। ऐसा प्रवाद सुनते हैं कि,—दिल्लीके किमो तोगलक सम्राटकी सेनाके साथ

* यावस्ती महावंश २३३ सू तनेऽभवत्।

जमिना देव यावस्ती गौड़देशी विज्ञानमः ॥”

(लिङ्ग पृ० २५३४)

कलहंसियोंके सर्दार सहाजसिंह रम टानटोकी तरहटोसे यहां आये थे। पीछे इनकी सम्राटने हिमानय और घर्वराके मध्यवर्ती लोगोंकी वग करनेके लिए नियुक्त किया। उन लोगोंने पहले वर्त्तमानके कुरागा नगरसे २ सोल दक्षिणको तरफ जो कोणली जंगल है; उसमें अपना वासस्थान बनाया था। प्रत्येक सर्दारकी ३५ कौर्बो जमीन जायगोर मिली थी।

गोण्डा-राजवंशके पतनके विषयमें ऐसा प्रवाद है कि, राजा अचलनारायणसिंह किमो ब्राह्मण जमादारकी कन्याको बलपूर्वक लुरा लाये थे। इसमें उस लड़कीके पिताने उस अत्याचारी राजाके दरवाजे पर बिना रुक खरिये ही अपना प्राण त्यागा और मरने समय “छोटी रानीके गर्भस्य पुत्रके सिवा समस्त राजवंशका गीञ्ज नाश हो” — ऐसा अभिशाप दे गये। उनका यह अभिशाप फल गया। गीञ्ज ही मरयू नटोने किला और राजप्रसादकी पुजा दिया। राजा और उनका परिवारवर्ग भी उसमें लुप्त हो गया। सिर्फ छोटी रानी सपुत्र बच गयी। ई० १५ वीं शताब्दीके अन्तमें ऐसी दुर्घटना हुई थी। बहनोपाईके वर्त्तमान कलहंसी जमादार लोग उसी छोटी रानीके पुत्रके वंशज हैं। इससे कुछ दिन पहिले जनवाड़ने इस जिलेको तराई भूमि पर अधिकार जमाया था। सम्राट अकबरके समयमें इकौना और उतरीलाके सिवा अयोध्या प्रदेशमें और दूसरी जगह दूमरा कोई बलवान् सर्दार नहीं था। विशेन और बन्दलघोरो ये दो जातियाँ इस जिलेके अवशिष्ट अंशमें बस करती थीं। गोण्डाके विशेन राजाओंकी उन्नतिके समय, उनका राज्य १००० वर्गसोलके करीब विस्तृत हो गया था, बलरामपुर, तुलसीपुर और साणिकपुरमें भिन्न भिन्न जनवाड़ सर्दार राज्य करते थे।

दिल्लीसे अयोध्या तक खातन्वा लाभ करनेसे पहिले सयाट्टु खाने कुछ दिनों तक स्वाधोनभावसे राजस्व-सुखका उपभोग किया था। बराइचके प्रथम शासनकर्त्ता आलावल खान गोण्डाके राजाके विरुद्ध युद्ध करके मर गये थे। फिर गोण्डाराजके विरुद्धमें सेना भेजी गई थी, परंतु इस बार भी उन्होंने मुसलमानोंको परास्त कर दिया था। इनके बाद करीब ७० वर्ष तक विशेन राजाओंने

अपनी स्वाधीनताको रक्षा को थी और पत्रिक राज्य गोगड़ा, पहाड़पुर, टिगमार, महादेव और नवागञ्ज इन पाँच परगनाओंका स्वतन्त्रतापूर्वक शासन किया था। अन्तमें राजा इन्दुपतिमिहकी मृत्यु होने पर पाँडे ब्राह्मणों का महायतामि गुमानुमिहने गोगड़ागज्य पर आधिपत्य जमाया था, अन्तगामपुर और तुलसीपुरके मर्दारनि बहुत युद्ध करके अपनी स्वाधीनताको रक्षा को थी। परन्तु माणिकपुर और भद्रनिपाईके मर्दार नाजिमको कर दिया करते थे। गोगड़ा और उत्तरोला राज्यके अधिपतनके समयमें नाजिमने महजमें धर वसूल होनेके लिए कुछ ग्रामोंमें जमीदार नियुक्त किये थे। उत्तरोला और गोगड़ा पट्टपुत्र राजाधनि उक्त जमीदारोंके पानिके लिए प्रयास किया था। उत्तरोलाके राधानि कई वर्ष बाद जमादारो पाँडे श्री और गोगड़ाके विशेषराज विश्वभूपुरकी जमीदारो पाकर उमका उपभोग करने लगे थे। नाजिमके कर्मचारो वसपूर्वक कर वसूल करते थे। इसलिए बहानो प्रना बहुत ही नाराज थी। पीछे अयोध्या जय अर्थजोंक हाथ में आइ तब ये मन्त्र अत्याचार दूर हो गये। मिपाही विद्रोहके समय गोगड़ाके राजा पहने अर्थजोंको पक्षमें थे। पीछे फिर विद्रोही ही कर सखनऊमें जाकर अयोध्या को वगमके भाग मिल गये थे। अन्तरामपुरके राजा बराबर राजभक्त थे। इन्होंने गोगड़ा और बराइचके कमिगनर विद्वकिण्ड तथा अत्यान्त्र अर्थज कर्मचारियोंको अपने क्लेशमें आश्रय दिया था। गोगड़ाराजने सेना मर्हत जाकर चम्पनारके तीरवर्ती लम्पतो नगरोमें तम्बु गार्डे थे। घोडामा युद्ध करके ये अपनी सेना मर्हत नेवानकी तरफ भाग गये थे। जमीदारोंने इन राजद्रोहके लिए वामा मर्गो थी। परन्तु गोगड़ाराज और तुलसीपुरकी रानीने वामा नहीं मर्गनेमें, उनका राज्य कान लिया गया था। फिर मधमें गाने यह राज्य अन्तरामपुरके महाशय इन्द्रियमिहकी और गोगड़ा मन्तगञ्ज मर मानमिपकी शेट दिया था।

७ मर्गमें गोगड़ा, अन्तरामपुर, कर्णगञ्ज, नवाग मञ्ज उत्तरोला, कातरा और मन्तपुर पाँडे नगर ४। नेपापाटन वाममें पाँडेमरोलेको मन्दिर, हापियाका दाकुद्वार महादेव परगणाक विनेमन्तपुर, मन्तलीगधि

के कदारनाथ, अन्तरामपुरकी विनेमरो टैवी और मन्तपुरके पचरानाथ व सुखीनाथका मन्दिर ये ही वफाक हिन्दुओंके महापुण्डके स्थान है।

१ तराईमें धान बहुत होता है, परन्तु धान अना अच्छो नहीं और बाट आनेका भी डर रहता है। जपरी जमोन चिकनी है। गेहूँ और चावलको खेती चाा और परहर मिला करके ज्यादाकी जाती है। गाँवोंके पाम ईख तथा पोयन और तानावीके करोब जड इन बोते हैं।

स्थानिक पशु अच्छे नहीं होते। भेड़ और बकर बहुत हैं। तानावीं और भीलोले चाय पायी जाती है।

२ उक्त प्रान्तके गौडा जिलेको मटर तम्होल। यह पचा० २७ १' तथा २० २६ ०' और देश० ८१ ३८ एव ८२ १८ ५० मध्य अवस्थित है। नेतफल ६१८ वर्गमील और लोकसंख्या प्राय ३८४००१ है। यहा ७८४ गाँव और ३ शहर वसे हुए हैं। मालगुजारी कोड ४८१०००, और नेम प्राय ५००००, ४० है। एगा सुभीता वरत कम गाँवोंमें देख पडेगा। १६२ वर्गमील सुरक्षित जङ्गल है। इसमें मालाना कोड ५००००, ४० को आमदनी होती है। खानमें केवल बद्धर निकलता जो मडक पर विकाने और चूना बनानेमें लगता है।

मिवा खेतोंके इस जिलेमें दूरमा वाम काज घोडा है। कई जगह स्थानिक व्यवहारके लिए मोटा सूती कपडा बुना जाता है परन्तु बागेक सूत तयार नहीं होता। मटोके खुगनुमा वर्तन भी बनते हैं। चावल, मटर, खर्रा, चकोम और लकड़ीको वाम करक रफतनी होती है। नेवानके साथ भी घोडा शक्वार किया जाता है। रैन और मडककी कोड कमी नहीं। यहा बडाल और नार्थ थर्टन नेनके प्रधान माइन गेहूँकी है। ६०६ मीन मडकमें ११० मीन तरु पर्वी है। चपरा सामान्य प्रकारका होता है।

१८१० ईमें इन जिलेके उत्तरपूर्व अर्धतमी जमीन पट्टरीको मनुईकी गयो थी, परन्तु १८१३ ईमें उर्जने यह अर्थके नवागञ्जको वापस दी। १८५६ ईको जय नीप चमरको राज्य भूक हुआ, मालगुजारी १ लाग २० हजार रपी। १८७६ ईको दूरमा यन्तुपच

किया गया। आजकल गोंडा किलेकी मालगुजारी कोर्डे २३ लाख १७ हजार रुपया है।

यहां २ मुनिसपालिटियां और दो 'नोटापाइड एरिया' हैं। ४ शहरोंका इन्तजाम १८५६ ई०की २०वीं दफ्तासे होता है। सिवा इमके स्थानिक प्रबन्ध डिप्टिकट बोर्ड करते हैं। १७ पुलिस थाने हैं। लोग ज्यादा पढ़े लिखे नहीं। मीमें कोई ३ आदमी ही शिक्षित हैं। पाठशालाओं और छात्रोंकी संख्या बढ़ रही है। शिक्षामें कुल ४६००० रु०का खर्च है। भूमि बहुत उर्वरा है। उत्तरकी झुलाना पड़ती जहा जङ्गल मिलता है। तिरही दक्षिण और विस्सही उत्तरके आरपार प्रवाहित है। कोर्डे ४२२ एकड़ खेतीमें १८७ एकड़ सींच है

३ युक्त प्रान्तके गोंडा जिले और तहमीलका मटर। यह अक्षा० २७° ८' उ० और देशा० ८१° ५८' पू० में बङ्गाल और नाथ बँटर्न रेलवेकी कई शाखाओंकी जङ्गल पर पड़ता है। आवाटो लगभग १५८११ है। यह नाम गोठा (गोठ) शब्दका अपभ्रंश है। कहते हैं, बिशेन राजपूत मानसिंहने जो सम्भवतः अकबरके प्रथम राजत्व कालकी जीवित रहे, उसे वमाया था। १८५७ ई०के बलवेमें गोंडाके राजाने विद्रोहियोंका साथ दिया। उसीसे इनका राज्य जप्त करके अयोध्याधिपतिको सौंपा गया। नगरकी शोभा दो तालाबोंसे बढ़ी हुई है। १८६८ ई०से यहाँ मुनिसपालिटो है। कृषिजात द्रव्योंका अधिक व्यवसाय होते भी कोई उद्योग देख नहीं पड़ता।

४ उक्त जिलेका प्रधान नगर। फौजवाटसे २८ मील उत्तर-पश्चिममें अक्षा० २७° ७' ५०' उ० और देशा० ८२° पू०में अवस्थित है। पहिले यहाँ जङ्गल ही जङ्गल था, और अहीर लोग यहाँ रातमें अपनी गायें बाँधा करते थे। बाटसे फिर कुरासाके राजा मानसिंहने यहाँ अपना प्रासाद और किला बनाया था। तवहीसे यहाँ राज-परिवारकी वासभूमि ही गई है। नगर भी तवहीसे बसा है।

यहाँ दो ठाकुरद्वार, राधाकुण्ड सरोवर, औपधालय, और राजा शिवप्रसादका बनाया हुआ तालाब, विद्यालय और किलारे पर ही अज्ञ मान-ए-रिफा नामका प्रसिद्ध साहित्यमन्दिर है।

५ वदोमा तहसीलमेंका एक ग्राम। बान्दामे ३० मील दक्षिण पूर्वमें अवस्थित है। यहाँ पर दो चन्देनी मन्दिर हैं। उक्त मन्दिरोंमें गंगा, यमुना, शिव, काली, गणेश, ब्रह्मा और विष्णुकी मूर्तियां हैं।

६ अयोध्याके प्रतापगढ़ जिलेका एक नगर। यहाँ अष्टभुजादेवीका मन्दिर है, इसी लिए इसकी प्रसिद्धि है। गोगडाल—१ बम्बई प्रान्तकी काठियावाड़ पोलिटिकल एजन्सीका देशी राज्य। यह अक्षा० २१° ४२' तथा २२° ८' उ० और देशा० ७०° ३' एवं ७१° ७' पू० के बीच पड़ता है। क्षेत्रफल १०२४ वर्गमील है। सिवा उममान् पहाड़के बाकी सब देग बराबर है। कितनी ही नदियां प्रवाहित हुई हैं। जलवायु अच्छा है।

गोगडालके राजा जाड़ेजा बंशीय राजपूत हैं। इनको ठाकुर मानव कहा जाता है, आर्डिन-अकबरी और मीरात अहमदीसे लिखा कि गोगडाल सोरठ सरकारकी बधेला रियासत था। १म कुम्भोजीने इसे स्थापित किया था। २य कुम्भोजीने उसे इस हालतको पहुँचाया। १८०७ ई०की अङ्गरेजोंके साथ गोगडालके राजाकी सन्धि हुई। उन्हें गोद लेनेका अधिकार है। ११ तोपोंकी सालामी होती है।

गोगडालकी लोकसंख्या प्रायः १६२८५८ है। इसमें ३ नगर और १८८ गाँव बसे हैं। सींचने और पीनेके लिये ५॥ लाख रुपया लगा कर पानीका एक कारखाना खोला गया है। घोड़ों और बैलोंकी नस्ल बढ़ानेके लिये कई सांडु हैं। रूई और अनाजको खास पैटावार है। सूती तथा ऊनी कपड़े, जरदोजी, ताँवे पीतलके बर्तन, लकड़ीके खिलौने और हाथी दांतकी चूड़िया बनाते हैं। ११॥ मील पक्की सड़क है। लाखों रुपयका रियासतमें पैदा हुआ माल हर साल बाहर भेजा जाता है। यहाँ भावनगर गोगडाल-जूनागढ़-पोरबन्दर रेलवे चलती है। जितलमर-राजकोट रेलवेकी भी एक शाखा है, इन दोनों में रियासत हिस्सादार है।

काठियावाड़में गोगडाल प्रथम अंगीका जैसा राज्य है। वार्षिक आय प्रायः १५ लाख है। उसमें १२ लाख मालगुजारी आती है। यह राज्य ब्रिटिश गवर्नमेण्ट, बड़ोदाके गायकवाड़ और जूनागढ़के नवाबकी ११०७२१,

२० फर डेतो है । पाच मुनिमवालिठिया हैं ।

२ बभ्रुईकी काठियावाड पोनिटिकल एजिन्की गोगडाल राज्यकी राजधानी । यह अक्षा० २१ ५० उ० और देशा० ७० ५३ पूर्वमें गोगडाली नदीके पश्चिम तट पर अवस्थित है । लोकसंख्या प्राय १८५८२ है । गोगडालसे राजकोट आदि कई स्थानोंको अच्छी सडक लगी है । यहा रेलवे स्टेशन भी है ।

गोगण्डिया—मध्य प्रदेशके भण्डारा जिलेको तिरीरा तहसील का एक गांव । यह अक्षा० २१ २८ उ० और देशा० ८० १३ पूर्वमें बडाल नागपुर रेलवे पर पडता है । यहा सातपुरा-रेलवेका जडेशन है । जन संख्या फीई ४४५७ होगी । गौण्डियमें दूमरे जिलेसे कितना ही माल चालान के लिये या आ करके इकट्ठा होता है । समाहमें अनाजका बडा बाजार लगता है । हिन्दो पाठशाला स्थापित है ।

गोत (हि० पु०) १ गोत्र, कुल, वंश, खानदान । २ समूह, जत्या ।

गोतम (सं० पु०) गोभिर्ध्वस्त तमो यस्य, बहुव्री० । प्रयोदरादिवत् साधु । १ एक मुनि, गोत्रप्रवर्त्तक ऋषि महाभारतमें इस नामकी व्युत्पत्तिके विषयमें लिखा है कि इनके शरीरके तेजसे समस्त अश्वकार नष्ट हुवा जान कर इनका नाम गौतम पडा । वायुपुराणमें लिखा है कि इन्होंने श्वेतवराहकल्पमें ब्रह्माके मानसपुत्ररूपसे जन्म ग्रहण किया था । (श्व १५० १५०) । इन्होंने न्यायदर्शन प्रणयन किया है । श्व १५० । (पु० स्त्री०) १ अतिग्रयेन गौ गो तम । अतिग्रय जड, भारी जड । २ बुद्ध भेद ।

गोतमस्त्रीम, १ स्त्रीविशेष । २ एक प्रकारका यज्ञ ।

गोतमस्वामिन (सं० पु०) जैन धर्मावलम्बो एक ब्राह्मण । ये तीर्थ द्वर महाबोरस्वामोके एक प्रधान गणधर थे, इनका दूसरा नाम दन्द्रभूति भी था । भारतके नाना स्थानोंमें तथा समूहद्विपुत्र पर्वत पर इनको सुवहत् पायाण स्मृतिर्था देवनेमें आती है । इनको स्मृति कर्णाट और मनवार उपकुलमें ही अधिक है । महिसुरस्य त्रायण वेनगोलामें ५६ फीट, जैनूरम ३५६ फीट और कर्काना नामक स्थानमें ४१६ फीट ऊ ओ गोतम स्वामोकी पायाण स्मृतिर्था है । गी० १५५४ ६५० ।

गोतमान्वय (सं० पु०) गोतमोऽन्वयो व श्रवणत्तं को यस्य बहुव्री० । मोयादेवीके पुत्र शाक्यमुनि ।

गोतमो (सं० स्त्री०) गोतमस्य भार्या गोतम डोप । गोतम ऋषिकी स्त्री अहल्या । कृत्तिवासी रामायणमें लिखा है कि अहल्या गौतम ऋषिके शापसे एक गिला हो गई थी, किन्तु वाल्मीक रामायणका मत है कि अहल्या गोतमके शापसे नितान्त क्रुद्ध होकर तपस्या करने लगी थी । तपस्याके व्रतसे उनका शरीर च्योतिर्मय हो गया, उस रूपको रामचन्द्रजीने देखा था । (राम० ५१५)

गोतमोपत्र (सं० पु०) गोतम्या पुत्र, ६ तत् । अहल्या का पुत्र, शतानन्द ।

गोतमेश्वर (सं० पु०) गोतम ईश्वरो यस्य, बहुव्री० । तीर्थ-विशेष । (५५११५)

गोतर्दि—बम्बईमें रेवाकान्ताविभागके मध्यवर्ती एक तुट्ट राज्य । यह चार स नन्तकोंके अधीन है । लोकसंख्या प्राय २२८ है । मालाना सामदनी ४७८८ रु० उनमेंसे ३२७ रु० वरोदा गायकवाटको कर दिया करतें हैं ।

गोतहज (सं० पु०) प्रगस्थो गौ नित्यसमाप्त । उत्तम गो, सुन्दर गाय ।

गोता (सं० पु०) जन आदिमें ज्वनेकी क्रिया, हुब्बी । गोताखोर (अ० पु०) गोता नगानेवाला, हुबकी मारने वाला ।

गोतामार (हि० पु०) ग शावर ऋषी ।

गोतिया (हि० वि०) अपने गोत्रका, गोती ।

गोती (हि० वि०) गोतीय अपने गोत्रका, जिसके साथ गौवागोचका म वश ही, भाई वधु ।

गोतीत (सं० वि०) यगोचर, जो ज्ञानेन्द्रियों द्वारा न जगना जा सके ।

गोतीय (सं० स्त्री०) गवा कृत तीर्थ मध्यपदनी० । १ गोष्ठ, गो रहनेका स्थान । २ कन्नोजके अन्तर्गत तीर्थविशेष ।

(भाष्यत १११२१)

गोतीर्थक (सं० पु०) वैद्यशास्त्रोक्त एक प्रकारकी छेदन प्रणाली । (६३०) फोडे आदि चीरनेकी एक तरकीब जिसके अनुसार कई छेदों वानि फोडे चीर जाते हैं ।

गोतीन (सं० स्त्री०) गोयगा वाक्क गाय ।

गोत्र (सं० पु०) गां पृथिवी वायते ऋषित गो त्रे ऋ ।

गोत्राऽनुपपत्तेः ४ । ५० ११५ । १ पर्वत, पहाड ।

“मात्रा नदुनदी नाम्नु गोत्रा नामस्थि संहतिः।” (भाग० २।६।६)

(स्त्री०) गवते शब्दायतेऽनेन गु कारणे त् । गु-धृवि पठि
वाटि, यमि पठि चदिमा च् । उण् ४।१६६ । २ आख्या, नाम । ३
मन्धावनोयबोध, वह ज्ञान जिसमें कुछ सँदेह हो । ४
कानन, वन, जङ्गल । ५ क्षेत्र । ६ मार्ग, सड़क । (मिदिनी)
७ राजाका छत्र । (हिम) ८ सङ्घ, समूह । ९ वृद्धि, बढ़ती ।
(शब्दचन्द्रिका) १० धन, वित्त, दौलत । (विश्व) गवते शब्दा-
यते पूर्वपुरुषान यत्, पुत्र । (भरत) ११ वसु, भाई । १२
एक प्रकारका जातिविभाग । १३ वंश, खानदान ।
संस्कृत पर्याय—सन्तति, जनन, कुल, अभिमान, अन्वय,
वंश, अन्ववाय, सन्तान । (अमर०)

अति प्राचीन कालसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और
शूद्रोंमें गोत्रका नियम चला आ रहा है । प्राचीन आर्य-
शास्त्रोंकी पर्यालोचना करनेसे जाना जाता है कि, पहिले
गोत्रका नियम नहीं था । क्रमशः मनुष्यसंख्या वृद्धि होती
रहनेसे, आर्य ऋषियोंने गोत्रनियम बनाये और उसी
समयसे आर्योंमें गोत्र नियम चला आ रहा है । टि० जैन
शास्त्रोंमें ऐसा पाया जाता है कि, प्रथम तीर्थङ्कर ऋषभ
देवके पुत्र भरत चक्रवर्तीने जाति आदिके नियम चलाये
थे । (आदिपुराण) हिन्दुओंकी जात कमसे लेकर अन्त्येष्टि
तक प्रत्येक कार्यमें ही आत्मपरिचय देते समय गोत्रका
उल्लेख करना पड़ता है । गोत्रका उल्लेख करते समय यदि
कुछ भूल या गड़बड़ होनेसे किमी भी कार्यकी सिद्धि
नहीं होती । इसके सिवा विवाहोंमें भी गोत्रकी जरूरत
पड़ती है । मनु आदि स्मृतिप्रणीताओंने; वीधायन, आप-
स्तम्ब आदि सूत्रकारोंने और मत्स्य आदि पुराणकारोंने
समान गोत्रोंमें विवाह निसिद्ध बतलाया है । भ्रम या
और किमी कारणसे यदि सगोत्रमें विवाह हो जाय तो
नियमानुसार प्रायश्चित्त करना पड़ता है । प्रायश्चित्तके
बाद उस स्त्रीसे माताके समान व्यवहार करना पड़ता
है । कभी भी उस स्त्रीको ग्रहण करना उचित नहीं और
स्त्रीको भी उस पुरुषको पुत्रवत् देखना चाहिये । इस
लिए प्रत्येक हिन्दूको अपने गोत्रके विषयमें खूब ज्ञान
रखना चाहिये ।

मैदिनी और अभिधान-चिन्तामणि आदिके कर्त्ताओं-
के मतसे गोत्र शब्दका अर्थ सन्तान या वंश है । इस

देशके लोग 'मिरा शाण्डिल्यगोत्र है', 'मिरा गोत्र काश्यप
है', 'मैं गर्ग गोत्रका हूँ' इस प्रकार भिन्न भिन्न गोत्रोंका
उल्लेख करके अपना परिचय दिया करते हैं ।

वीधायन, आपस्तम्ब, मत्स्यापाठ, कुटिल, भरद्वाज,
लौगाक्षि, कात्यायन और आश्वलायन आदिके रचे हुए
श्रौतसूत्र, मत्स्यपुराण, महाभारत आदि इतिहास और मनु
आदिको रची हुई स्मृतिश्रीमें थोड़ा-बहुत गोत्रका कथन
मिलता है । इनमें परस्परमें कुछ विरुद्ध कथन भी हैं,
जिनका वास्तविक अर्थ सर्वसाधारणके समझमें नहीं आ
सकता है । इसलिए और शास्त्रोंकी आलोचनाकी श्रियि-
लता देखकर पण्डितप्रवर पुरुषोत्तमने 'गोत्रप्रवरमञ्जरी'
नामका एक संस्कृत ग्रन्थ लिखा था । इसके सिवा धन
ञ्जयकृत धर्मप्रदीप, वालभट्ट और महादेव टैवज्ञ द्वारा
रचित गोत्रप्रवर, विश्वपण्डित कृत गोत्रप्रदीप, अनन्तदेव-
आपटेव, केशव, जीवदेव, नारायणभट्ट, भट्टोजी, माधवा
चार्य और विश्वनाथदेव रचित गोत्रप्रवरानर्णय, लक्षण-
भट्ट कृत प्रवररत्न और गोत्रप्रवरभास्कर तथा कमलाकर-
कृत गोत्रप्रवरदर्पण नामक कुछ ग्रन्थ भी मिलते हैं ।
इनमेंसे 'गोत्रप्रवरमञ्जरी' ही सबसे श्रेष्ठ है । इसमें
समस्त पुरातन मतोंकी पर्यालोचना और सीमांसा की
गई है ।

गोत्रकी आलोचना करनेसे पहिले इस बातका भी
निर्णय कर लेना चाहिये कि, गोत्र किस चीजका नाम
है और उसका लक्षण क्या है ? अभिधानके कर्त्ताओंने
गोत्रका लक्षण जैसा लिखा है, उसके अनुसार तो गोत्रोंके
भेद असंख्यात हो जाते हैं, अर्थात् सब ही अपने अपने
पुरखाओंमेंसे किसी एकका नाम, लेकर अपने गोत्रका
परिचय दे सकते हैं । ऐसा होनेसे तो गोत्रका नियम
रहना न-रहना बराबर ही हो जाता है । लौकिक व्यव-
हारमें भी ऐसा नहीं पाया जाता, सब ही लोग अति
प्राचीनकालसे चला हुआ एक ही नामसे गोत्रका परिचय
देते हैं । कोई भी बदल कर दूसरा नाम नहीं कहता ।
इसलिए यह कहा जा सकता है कि, अभिधानके अनु-
सार गोत्र व्यवहार नहीं होता, अर्थात् इस गोत्र शब्दसे
मामूलो तौरसे वंश या सन्तानका बोध नहीं होता ।
“अपत्यं पीवपत्त गोत्रम् ।” (पाणि० ४।१।६२) पाणिनिको इस

परिभाषाके अनुसार जाना जाता है कि, पोत्र आदि सन्तानोंका नाम गोत्र है। पाणिनीसम्मत अर्थको स्वीकार करने परभी पहिला दोष नहीं छूटता। इसीलिए बौधायन आदि सब हो ग्रन्थकारोंने गोत्र शब्दका दूसरा एक पारिभाषिक अर्थ किया है कि,—

'विधाधिको जम प्रथमः कौ० च गोत्रम ।

अथविश्वः कश्यप इत्येते सप्त कश्यपः ॥

सप्तानां कश्यपामगन्तोऽन्तर्गत्तं यैर्दम्बं तद् गोत्रम् ॥ (१) (बौधायन)

विश्वामित्र, जमदग्नि, भरद्वाज, गोतम, अथि, वशिष्ठ, कश्यप और अग्रयण इन आठ मुनिप्रायिके पुत्र और पोत्र आदि सन्तानोंमेंसे जो मुनि हो सके हैं, वे ही उसमें पूर्ववर्ती और परवर्ती सब हीके गोत्र हैं, अर्थात् उन्हींके नामसे उस वंशका गोत्र चलता है।

अतएव विश्वामित्रको सन्तान देवरात आदि विश्वामित्रके गोत्रके हैं और जमदग्निको सन्तान मार्कण्डेय आदि जमदग्निके गोत्रके हैं (२) । आश्वलायन श्रौतसूक्तकी नारायणकृत वृत्तिमें लिखा है कि विश्वामित्र आदि आठ ऋषियोंको सन्तानोंको उन्हीके गोत्र समझना चाहिये। जैसे—जमदग्नि ऋषिके गोत्र वसु आदि, गोतमके गोत्र आयव्यादि भरद्वाजके दक्ष, गर्ग आदि, (३)। अथ वात इतनो हो है कि, बौधायनके "विश्वामित्" इत्यादि वाक्योंमें कश्यप और गोतमका उल्लेख है। इसलिए नारायणकृत वृत्तिको स्वीकार कर तो कश्यप गोत्र और गोतमव श्रियोंको गोतम गोत्रिय मानना पड़ेगा। परन्तु प्राचीन समय में कश्यप गोत्र और गोतमगोत्रका व्यवहार चला आ

रहा है। इसके सिवा वशिष्ठ, भरद्वाज आदि व श्रमें उच्यव लोकीको यथाक्रमसे वशिष्ठ और भरद्वाज गोत्र कहते हैं।

और फिर कोई कोई कहते हैं कि गोत्र शब्द स्वभाव से ही नपु सक लिङ्ग है, पूर्ववर्ति व्याख्याके स्वीकार करने से कहना पड़ेगा कि, विश्वामित्रगोत्र, वशिष्ठगोत्र और भरद्वाजगोत्र इत्यादिमें पठोतत्पु रूप समास हीको स्वीकार करना पड़ेगा। व्याकरणके नियमानुसार तत्पु रूप समासका उत्तरपद जो लिङ्ग होगा, समास होने पर भी वह शब्द वही लिङ्ग होता है। तो गोत्रशब्दके नपु सकलिङ्ग होने पर विश्वामित्रगोत्र आदि शब्द भी नपु सकलिङ्ग हुए जाते हैं, और "विश्वामित्रगोत्रमह", "वशिष्ठगोत्रमह", "भरद्वाजगोत्रमह" तथा "विश्वामित्रगोत्राणि वय" इत्यादि का भी व्यवहार किया जा सकता है। परन्तु भौतिक और वैदिक ग्रन्थोंमें ऐसा नहीं पाया जाता। बल्कि विश्वामित्र-गोत्रोऽह, भरद्वाजगोत्रोऽह और विश्वामित्गोत्रावयं, ऐसा ही देखनेमें आता है। आश्वलायन (२०१०१) श्रौतसूक्तकी नारायणकृत वृत्तिमें भी "मित्पुवगोत्रोऽह, मुद्गल गोत्रोऽह" ऐसा प्रयोग मिलता है। अतएव बौधायन आदि द्वारा कहे हुए गोत्र लक्षणके "यदपत्यं तद्गोत्रम्" इस अशकी व्याख्या दूसरी तरह माननी पड़ेगी। विश्वामित्र आदि आठ ऋषियोंकी सन्तानोंके गोत्र, विश्वामित् आदि इस प्रकार होनेसे विश्वामित्गोत्र, वशिष्ठगोत्र, भरद्वाजगोत्र इत्यादि स्थानमें विश्वामित्गोत्र गत्य-ऐसा बहुव्रीहि समास हो सकता है (४)। बहुव्रीहि समास होनेसे वह शब्द वाच्यलिङ्ग होगा, इस लिये "विश्वामित्-गोत्रोऽह इत्यादि लिखनेमें कोई भी बाधा नहीं आती। अगर ऐसा न मानें, तो "भरद्वाजगोत्रस्य अमुकी दैव्या" ऐसा अभूतपुत्र वाक्य भी स्वीकार करना पड़ेगा। परन्तु इस व्याख्याके अनुसार भी गोतमगोत्र और काश्यपगोत्रका व्यवहार किया जा सकता है। यदि हम जगह गोतम

(१) यद्यौं बहुत जगह पाठम्—इत्थंमे जाताम् । उनमें जो वाद स गत और बहुतेके ग्रन्थोंमें मिला है। वही पाठ लिखा गया है। "विधकोप चार्णव" में स एतोन इत्यनिलिन शैलवचरण एरो और वाचसपथि "गोत्रम और कौ हूँई चार्णवम औवसुकी वृत्ति और विपहाप काया भव में स एतोन इत्यनिलिन शैलवचरण एरु में "गोत्रम्" पाठ मिलता है। इसमेंसे यहाँ पर "गो म" पाठ ही स गत मान्य पकड़ता है।

(२) यत्पु स भवति अर्थात् एतद्भव सप्तानां तां यजेत् इत्याप्य वदितल मान तत्पु स तत्पुव्यने (शैलवचरण एरो)

"प्राश्नो वनपुत्रोत्पादाय च अथिन्त तद्गोत्रं भाविना वनपुत्रं भाविना च गीतमिधिविधं धर्मैः । (शैलवचरण एव)

(३) "वतगाम ग्लभितिये अथ अतो न हीन विधय अये वरा क्त त्तं गति वहाडव मः कौवसप १२५ ० २ । (बौधायन १२५ १ ३५)

४ "अग्ने तु विद्येत गोत्रकथकाह । न । तात्पर्यात्तदवयु त् गोत्र-सुवात् । यद्य-ईशराधादीनां शैल विश्वामित्र इति मात्रैर्जातोनां जन-पुत्रा-दानं शैवादीनि । (गोत्रवचरण एरो)
इस पद्यमें "व यत् तद्गोत्रम्" इस अर्थको स प्रकृत वाक्या गीर्णोत्पन्नोक्ति से—पुत्रवहाडवानी सप्तानां तां यजेत् इत्यादि यद्य अथ पुत्रवहाडव यत् (तद्) तद्गोत्रं स यद्ये गोत्रं यद्य तद्गोत्रं मन्तोहि शिष्यः ।

श्रीर काश्यप पाठ कर दिया जाय तो कोई गड़बड़ ही न रहे। छपे हुये आश्वलायनश्रीवसूत्रमें श्रीर हस्तलिखित गोत्रप्रवरदर्पणमें गोतम पाठ है।

किमीके मतानुसार वीधायनने गोत्रसंग्राहक श्लोकीमें जिन आठ गोत्रोंका उल्लेख किया है, उसके अतिरिक्त भी वहनमें गोत्र देखनेमें आते हैं और अन्यान्य ग्रन्थोंमें उनका उल्लेख भी है। इसलिये उस रचनाको उपलक्षण मानना पड़ेगा और वीधायनने लिखा भी है कि —

‘न वापा तु सहस्राणि प्रयुक्तान्यु दानि च।

ऊ-पञ्चाशद्वैषा प्रथरा ऋषिदर्मनाम् ॥’

अर्थात्—गोत्रोंकी कुल संख्या तीन करोड़ है। व्याख्याकारोंने इस श्लोकका ऐसा अर्थ किया है कि, — वास्तवमें तीन करोड़ गोत्रोंका प्रतिपादन करना—इस वचनका उद्देश्य नहीं है। हाँ, सहस्ररश्मि, सहस्रपाद, सहस्रशीर्षा इत्यादि शब्द जिस प्रकार अनियत संख्याके लिए प्रयोग किये जाते हैं, वैसे ही इसका भी प्रयोग किया गया है। अन्यान्य ग्रन्थोंमें गोत्रोंकी संख्या जितनी लिखी है, वही मान्य है। असलमें बात यह है कि, वीधायन भी उक्त श्लोकमें यह स्वीकार करते हैं कि, इन आठ गोत्रोंके सिवा और भी गोत्र हैं, और इस वचनको उपलक्षण समझना चाहिये। ऐसी अवस्थामें गोतम और काश्यप पाठ होने पर भी कोई हर्ज नहीं, क्योंकि वीधायनने उक्त रचनामें काश्यप और गोतमगोत्र हीका निरूपण किया है। सुप्रसिद्ध काश्यप और गोतमगोत्रका निश्चय अन्यान्य ग्रन्थोंके अनुसार करना पड़ेगा, क्योंकि वीधायनने शाण्डिल्य, मार्कण्डेय आदि दूमरे प्रसिद्ध गोत्रोंकी भांति काश्यप और गोतमगोत्रका उल्लेख नहीं किया।

मञ्जरीके कर्त्ता पुरुषोत्तम शेषोक्त व्याख्याको स्वीकार ही नहीं करते। उनके मतसे यदि वह व्याख्या स्वीकार कर ली जाय तो वीधायनके उस वचनसे यह समझा जाता है कि वे सिर्फ आठ ही गोत्र मानते हैं और फिर “गोत्राणां तु सहस्राणि” इस वचनसे बहुतसे गोत्रोंका उल्लेख करते हैं, इसलिए शेषोक्त व्याख्या स्वीकार कर ली जाय तो स्वयं वीधायनके वचनोंमें ही परस्पर विरोध आता है (१)। वास्तवमें अन्तकी व्याख्या असङ्गत ही

(१) ‘श्व द्रुमः वीधायनमतानभिज्ञस्य आख्ये ग’, ‘गोत्राणानु सहस्राणां यदस्यश्लोके गोत्राणि कौटिल्यभङ्ग्यामुक्ता कानि कानोत्याकां नाणां विशा-

प्रतीत होती है। किमी तरह “यदपत्यं तन्नोदं” इस अंशकी वमौ कूट व्याख्या कर ली तो क्या परन्तु रघु-नन्दन और धनञ्जय आदि ग्रन्थकारधृत “एतेषा यान्यपत्यानि तानि गोत्राणि मन्यन्ते” इत्यादि वचनांको अन्य किमो प्रकारकी व्याख्या हो ही नहीं सकती। इनके पुत्रपौत्र आदि सन्तानोंको उनके गोत्र समझना चाहिये। ऐसी दशामें यही व्याख्या स्वीकार करनी पड़ेगी।

‘इहस्पति गीतमञ्च संवर्त्तकपितृपुत्रम्।

मृत्यं वासदेवश्च अजात्यमपित्रं तथा ॥

इतेषां ऋषयः सर्वे गोत्रकाराः प्रकीर्त्तितः।

तेषां गोत्रममुत्पन्नान् गोत्राणां गन्धि र्निधने ॥” (सत्यपु० २१।५६)

यहाँ पर जो “तेषां गोत्रसमुत्पन्नान्” ऐसा पाठ है, उससे साफ ही मालूम ही रहता है कि, गोत्रप्रवर्त्तक ऋषियोंके साथ गोत्र शब्दका पठो समान होता है। आश्वलायनके वृत्तिकार नारायण, मञ्जरीकर्त्ता पुरुषोत्तम और दर्पणकार कमलाकर आदिके मतसे गोत्र शब्दका अर्थ अपत्य वा सन्तान है। गोत्रप्रवर्त्तक ऋषियोंके वंशधरोंके साथ गोत्र शब्दका अभेद अन्य होना है। परन्तु ऐसा होनेसे तो “काश्यपगोत्रस्य श्रीमतरा अमुकीदेव्याः” यह वाक्य भी बन सकती है। इसके अलावा “स गोत्राद् भ्रश्यते नारी विवाहात् सशमे पटे। पतिगोत्रेण कर्त्तव्या स्तस्याः पिण्डोदकक्रियाः ॥” ऐसा भी देखनेमें आता है। ऐसी दशामें गोत्रप्रवर्त्तक ऋषियोंके वंशधरोंके साथ गोत्र शब्दका भेदान्वय (अर्थात् पतिका गोत्र यह है) है, वह भी स्वीकार करना पड़ेगा। इसलिए इन विरोधोंकी मोमांसाके लिए उभय लिङ्ग स्वीकार कर लिया जाय तो भगड़ा ही निपट जाय।

१-गोत्र शब्द नपुंसकलिङ्ग है, उसके तीन अर्थ हैं—

१- वंश, कुल। * २- वंश परम्परा प्रसिद्ध आदि पुरुष ३। ३- अपत्य, सन्तान, पुत्र पौत्रादि †। २ - गोत्र

। मया उक्तमश्वलायनोक्तान्वाप्येटी गोत्राणोत्तकः पूर्वाप। विरोधादस गत स्यात् । ऋषीदेवपत्नी तु नाति कश्चिद् दीपः। (गोत्रप्रवरसङ्घ १)

* ‘गोत्रं चाभिजनः कुल’ (अमर)। ‘गोत्रा भूगवायोर्गोत्रैः श्रुते गोत्रं कुलाख्यायोः। मेदिनी।

† ‘अतएव विशानिचरः गोत्रं व शपरम्परप्रसिद्धं’ (गोत्रप्रवरदर्पण)।

‘‘गोत्रं वंशपरम्परप्रसिद्धमादिपुरुषं प्राञ्जल्यरूपं।’’ (शब्दकल्पद्रुम)

‡ ‘‘एतेषां यान्यपत्यानि तानि गोत्राणि मन्यन्ते।’’ (धनञ्जयधृत धर्मप्रदीप)

‘‘पत्यं पुत्रोत्पत्तिगोत्रम्।’’ (५।० ४ १.६९)

शब्द पुत्रादिकी भांति उभय निङ्ग ह, विभेयके धनुमार धपने निङ्गकी छोड कर म्योनिङ्ग वा पु निङ्गमें व्यव हत होता है । (६) कम काण्डमें जिम वाक्याटिको रचना करनी पडती है, उसमें द्वितीय गोत्र शब्दका ही प्रयोग होता है । इमके अतिरिक्त दूसरी जगह अपनी इच्छानुसार कोइ भी शब्दका प्रयोग किया जा सकता है । इस अवस्थामे किसी प्राचीन शास्त्रमें विरोध नहीं पडता ।

गोत्र कितने है ? प्राचीन मुनि वा ऋषियोंने किन किनके नाममे गोत्र चले हैं ? इन विषयीका निरूपण प्राचीन शास्त्रों और मयह ग्रन्थोंकी ही आराधनासे करना पडगा । परन्तु मय्य् धनुगोत्रानके अभावमे अथवा निवृत्तिकी प्रमादमें उन मूल ग्रन्थोंका तथा मयह ग्रन्थोंका पाठ इतना विगड गया है कि उसके वास्तविक पाठका पता लगाना असाध्य है । इसी लिए मयहवार पुरुषोत्तमने अपने मञ्जरी ग्रन्थमे आपस्तम्ब आदि के मत को ले कर उनके परंपरिक विरोध मिटानेका बहुत प्रयत्न किया है । उनके बादके मयहकार कमलाकरने अपने गोत्रप्रवरदर्पणमें एसा लिखा है, "कात्यायनापस्तम्बादि सूत्रभाष्यालोचनेन न्यूनधिक्शभावात् गोत्राणां प्रवराणाञ्च गणम रथास्वरूपम व्याप्रवरविकल्पयादिभिर्विमन्या दास सर्वसूत्रपुराणोपस हारेण निर्णय कार्य इत्युक्तं भवति महर्ष्याम् । अर्थात् पुराणादि मय ग्रन्थोंका नाम न्यून्य रचते हुए ही गोत्र निर्णय करना चाहि ।

मय्यपुराणमें १८५ मे २०२ अध्याय तक गोत्र और प्रवरका निरूपण किया गया है । उसमें "गात्रकारान् ऋषान् वष्ये इत्यादि लिख कर पौष्टिके चिन ऋषियों का नाम लिखा है शायद वे ही (मय्यपुराण अभिप्रेत) गोषिकी नाम हैं । यद्यपि यह कल्पना को जा सकती है कि किसी समय उन नामों क गोत्र प्रचलित थे, तथापि यह मानना पड़ेगा कि, बहुत दिन पहिले जो उन गोत्रों का लोप हो चुका है, अब उतका चिन्ना तक नहीं मिलता ।

(६) 'मय्यपुराण' (मि. १००) के १८५ व २०२ अध्यायों में गोत्र और प्रवर का निरूपण किया गया है। उसमें 'गात्रकारान् ऋषान् वष्ये' इत्यादि लिख कर पौष्टिके चिन ऋषियों का नाम लिखा है। शायद वे ही (मय्यपुराण अभिप्रेत) गोषिकी नाम हैं। यद्यपि यह कल्पना को जा सकती है कि किसी समय उन नामों के गोत्र प्रचलित थे, तथापि यह मानना पड़ेगा कि, बहुत दिन पहिले जो उन गोत्रों का लोप हो चुका है, अब उतका चिन्ना तक नहीं मिलता।

वीधायन आदि सूत्रकारों ने कुछ गोत्रगण और प्रवरगणका निरूपण किया है । श्रुतार्थमार आदि ग्रन्थोंकी मतानुसार एसा मानलम होता है कि, गोत्रगणमें जिन जिन ऋषियों के नाम हैं, उन उन नामके एक एक गोत्र भी हैं । जैसे—वक्श, विद, आर्षिपेण, यस्क शुनक, मिश्रयुव और वैश्वभृगुके ये मात गोत्रगण हैं । इस नामसे ये सात गोत्र और इनके गणमे अन्यान्य दूमरे नामके भी गोत्र प्रचलित हैं । इसी प्रकार अर्थगोत्रगण और विष्णामित्रगोत्रगण आदि भी निरूपित हैं । परन्तु वे सब गोत्र अब प्रचलित नहीं ।

धनञ्जयकृत धर्मप्रदीपमे गोत्रप्रवर्तक ऋषियोंके कुछ नाम लिखे हैं । वे इस प्रकार हैं—१ जमदग्नि, २ भरहाज, ३ विष्णामित्र, ४ अत्रि, ५ गोतम, ६ यगिष्ठ, ७ काश्यप, ८ अगस्त्य, ९ सांक्रान्ति, १० मोक्षन्, ११ पराशर, १२ वृहस्पति, १३ धाञ्ज, १४ विश्व १५ क्रौञ्च, १६ कात्यायन १७ आत्रेय, १८ कण्व १९ अत्रात्रेय, २० साङ्गुति, २१ क्रौञ्चिन्, २२ गर्ग, २३ आद्विरम २४ अनाद्वरान, २५ अत्र्य, २६ जैमिनि, २७ हृदि २८ शाङ्गिन्, २९ वास्य, ३० भालम्बरायन ३१ धैयात्रप्य, ३२ छतक्रौञ्चिक ३३ शक्ति, ३४ कान्वायन, ३५ वासुकि, ३६ गोतम, ३७ शुनक और ३८ मीवायन । वीधायन, आपस्तम्ब और भागवतायन आदि सूत्रकारों और पौरानिका ने, पहिले कुछ गोत्रकाण्डोंका उल्लेख करके फिर उनके कुछ गोत्रगणोंका भी उल्लेख किया है । एक गोत्रगणमें जितने गोत्रोंका उल्लेख किया गया है, उनके प्रवर समान हैं । जैसे श्रुतगोत्रकाण्डके आर्षिपेण गोत्रगणके अन्तर्गत जितने गोत्र हैं, उन सबहीके मार्ग्य, अथन, आप्रयान्, आर्षिपेण चार चानूप ये पांच प्रवर हैं । (आर्षिपेणानी मार्ग्यप्रवरान् आर्षिपेण चानूपेति । आर्षि ३० । १५। १०८) प्रवरका लक्षण अत्रिके (मय्य २४। २०६) । जिसप्रकार समान गोत्रमें विवाह 'नियदि' उन्मोप्रकार समान प्रवर होने पर भी विवाह नियदि है ।

वीधायन आदिने जिन जिन गोत्रगणोंका उल्लेख किया है, उनके नाम आदि 'आर्षिपेण' जैसे लिखे जाते हैं—

श्रुतगोत्रकाण्डमें वक्श, आर्षिपेण विश्व, यस्क, मिरपुर, यय्य और शुनक—इन सात गोत्रगणोंका उल्लेख है । वीधायन

यन्त्रे इनके प्रत्येक गणके अन्तर्गत जितने गोत्र हैं, उन सबका निर्णय किया है। इस लिए यहां सिर्फ वीधा-यनके मतानुसार गोत्रगण लिखे जाते हैं।

वत्स, मार्कण्डेय, माण्डुक्य, माण्डव्य, कार्पायण, दार्भायण शार्कराक्ष, देवलायन, शोनायन, माधुक्य, वार्पिक, शाक, प्रभायण, पैल, पैलायन, वार्धयिक, वाच्यक, वैश्वानरि, वैहिनरि, विरोडिन, वाच्य, रुध्र, गोष्ठायन टिकी, काण्य, कृष्ण, वाटभूतक, ऋतभाग, रोहिनायन, जानायन, पाणिनि, वाल्मीकि, स्थान पिण्ड, शातन, जिह्नि, सावर्णि, वाक्यायन, वाल्नायन, लोडति, मण्डविष्टि, हस्ताग्नि, मार्कायण, कात्यायण, वायकव, वायनो, शाकारव, कारवच, चान्द्रमस, गाङ्गेय नोधेय, याज्ञिय, वाहु, मित्रायण, आपिशलि, वैष्टपुरेय लोहितायन, उतसृच, मालायन, शरद्वतायन, रजतशाह, वाख्य और वाख्यायन—ये सब वत्सगण हैं। इनके प्रवर इस प्रकार हैं,—भार्गव, चवन, आप्रवान, और और जामदग्न्य। (वीधायन १ प्रवराध्याय)

२ विट, शैल, अवट, प्राचीनयोग्य, अभयदि, काण्ड रथि, वैनस्यि, पुलस्ति, आर्कायन, ताग्नायन, क्रोत्रायन और फामन—इनको विटगण कहते हैं। इनके भी पांच प्रवर हैं, भार्गव, चवन, आप्रवान, और और वैट।

(वीधायन, ४ प्रवराध्याय)

३। आष्टिषेण, रथि, काटम्बायन, कीलायन, चन्द्रायण, षोडकलायन, सिद्ध, सुमनायन, गोरभी और आन्ध—ये आष्टिषेणगण हैं। इनके प्रवर भी पांच प्रकारके हैं—भार्गव, चवन, आष्टिषेण, आप्रवान और आनूप। (वीधायन ५ प्रवराध्याय)

४ यस्क, भीनसूक, वाधूल, वर्षपुण्य, भागलेय, राजितायन, भागलेय, उर्दिन, भास्कर, रैवतायन, वाफनि, माध्यमेय, वानि, कोशाख्येय, क्रोवित्य, सात्विक, चित्रसेन, भागुरि और कापिशायन इतने यस्कगण हैं। इनके प्रवर तीन हैं,—भार्गव, वैतह्वय और साचेतस।

(वीधायन ६ प्रवराध्याय)

५ मित्रयुव, रौचायण, सापिण्डित, सरभिनि, माहा-महावाज्ञा, ताक्षायण, उचायण, वाजायन, मोजाघय, कौषतवायन—इनको मित्रयुवगण कहते हैं। इनके भी

तीन प्रवर हैं,—भार्गव, टैवदाम और वाध।

(वीधायन ७ प्रवराध्याय)

६ शनक, रथसमट, यज्ञपति, मोगन्धि, खार्डभायण गाभारण, मत्स्यगन्ध, अत्रिय और तैत्तिरीय—इनको शनकगण कहते हैं। इनका एक ही प्रवर है—शनक अथवा गार्क्समट। (वीधायन ८ प्रवराध्याय) कात्यायनके मतानुसार इनके दो प्रवर हैं,—एक भार्गव और दूसरा गार्क्समट। आश्वलायनके मतमें इनके प्रवर तीन हैं,—१ शोनक, शोनहोत्र और गार्क्समट। (पाथ० शी० १२१०११)

७ वैन्य, पार्थ और वाल्कल—ये वैन्यगण कहलाते हैं। आश्वलायनके मतमें—वैन्यकी जगह 'गिरत' पाठ भी मिलता है। (पाथ० शी० १२००११) इनके प्रवर तीन हैं—भार्गव, वैन्य और पार्थ। (वीधायन प्रवरा०)

गौतम गोत्रकाण्ड—

१। आयस्य, योगिचेय, मिद्वर्य, सात्विक, नैदेह, कोमारवत्य, तौडि, टर्भि, टैकि, मत्वमुनि, कौवाह्य, वोव्य, नैकरि, तैपिकि, किलालि, कदग्नि, कडोकामि और कन्नि, इनको आयस्यगौतमगण कहते हैं। आङ्गिरस, आयस्य और गौतम ये तीन इनके प्रवर हैं।

(वीधायन गौतमकाण्ड १ ५०)

२। शरद्वन्त, अभिजित, रोहिण्य, क्षीरकरम्भ, सीमुचि, सौरागुण, कीर्पिन्दु, रहुगण, गणि और माषण्य—ये शरद्वन्तगौतमगण कहलाते हैं। इनके भी प्रवर तीन हैं,—आङ्गिरस, गौतम और शरद्वन्त। (वीधायन गौ० का० २ ५०)

३। कौमण्ड, मामन्दु, ईपणा, यामुराक्ष, काठेरषि और आञ्जयन—ये कौमण्डगौतमगण हैं। इनके पांच प्रवर इस प्रकार हैं,—आङ्गिरस, अतथ्य, काञ्चिवत्, गौतम और कौमण्ड। (वीधायन गौ० का० ३ ५०)

४। दीर्घतमागणके भी पांच प्रवर हैं,—आङ्गिरस, अतथ्य, काञ्चिवत्, गौतम और दीर्घतमम्।

(वीधायन गौ० का० ४०४)

५। औशनस, आदित्य, अनुपप्रशस्त, सुरूपान्न, मन्दीर, विकन्दत, सुवुधा, निहत, इनको औशनसगण कहते हैं। इनके तीन प्रवर हैं—आङ्गिरस, गौतम और औशनस।

(वीधायन गौ० का० ५ ५०)

६। कारिणुपालि, खेतोय, गौजिष्ठ, यौदञ्जायन,

माधुक्षार और अनगन्धि—इनको कारिणुपालिगण कहते हैं। इनके प्रवर तीन हैं,— आङ्गिरस, गोतम और कारिणुपालि। (बोधायन शौतम काण्ड ६ च०)

भरहाज गीतकाण्ड—

१। भरहाज, चाम्यायण, मङ्गडा, देवश्वानुद्वह्व्या, प्रगयोसि, शौमायन, तैट्हेह, अत्ताह्ला, योत्ताभूरि, परिणहेय, केशरवेय, इपुवत्, वोटयेधि प्रवाहणय, कम्बोण, स्तम्बि, मयोय, प्रहतपर, हेरि, सैद्वद्रग, चारि श्रीवि, श्रोपमि, वायात्ति, भेट, अग्निरेह्लाघट, गोरि, वायवि, कर्ण, धाक्ष मानविद्य, कङ्कवसेका, खीज्वलि, खारुडाटि, तरुङ्गेय, भद्रामय, मोरभ, मैह्लाकेय, कोण्डायन कोङ्गप्य प्रवाहणय, धलभीकि कडाङ्गपय, शालाहनि, वेटवेलायण, नृत्यायन, शालानय, शार्दूलि, ब्रह्मस्तम्ब, अग्निस्तम्ब, वायुस्तम्ब, सूर्यस्तम्ब, सोमस्तम्ब, विणुस्तम्ब, यमस्तम्ब इन्द्रस्तम्ब, आपस्तम्ब तथा अन्यान्य स्तम्बान्त गन्ध, आरण्याकि मिथुसौगन्धि शिखात्रन, आत्रेयायण, कुचा, कीकात्ति, पतिनैतृति, टाभिस्त्रामिय, मश्वकाय, कारुणायन, कारुपथि, कारियायण और कारत्स इन सबको भरहाजगण कहते हैं। इनके प्रवर तीन प्रकार हैं—आङ्गिरस, वाह्वेस्त्य और भरहाज।

(बोधायन भरहाज शौतम काण्ड)

शेवनाङ्गिरस गीत काण्ड—

१। हरित, शडस्थोदन, सौभग, लोमरव, मलायु, नावोदर, नैमिथ, आम्थिद्वेन, कीतप कारिपि, कोलि, यौलि, पोण्डल, माधूय, माधातु और माण्डकारि इनका गण हरित है। इनके प्रवर तीन हैं—आङ्गिरस, आम्थरोप और योवनाम्ब।

२। कद्रु, योपमजरायण, वाष्कन, पोलहानि, लोमाञ्जि माञ्जि, मोधिगन्ध, विनिवाजि और वाजयवम, ये सब कद्रुगण हैं। इनके तीन प्रवर हैं—आङ्गिरस, आजमीठ और काद्रव।

३। रथीतर, हस्तिशामि, काचायण, नोतिरनु, शैलानि, भिनेभि, निडायन, साजह्व, भैनावाह और हंमनायाद—इनको रतिगण कहते हैं। इनके भी प्रवर तीन हैं—आङ्गिरस वेरूप और रथीतर।

४। विणुशुद्ध, शटामरण, भद्राण, मद्राण, वादा

यन, गव्य प्रायण, धात्वकि, सात्वकायन, नैतुह, सुतप, भाह्व्य और देवस्थानो—इनको विणुशुद्धगण कहते हैं। ३ प्रवर ये हैं—आङ्गिरस पोरकुत्त और जामदस्य।

५। सङ्कृति, मलक, पोलस्तुण्डि, शम्बुशैभव, तारक, आघारि, श्रीवाशिपय, श्रौतायन, शयम्नायन, धाघ्रापि और प्रतिमाप—ये सब सङ्कृतिगण हैं। इनके ३ प्रवर—आङ्गिरस गोरवीत और साह्रत है।

६। कपि, वैतल अनाश्व मायन, पतञ्जल, अन्तर-स्विन, ताङ्गिन, आम्भोज, मिनाह्लाश, ध्वनाङ्कर, शिखडा यन, आमोपितकि, सागसङ्ग और वोथि—इनको कपि गण कहते हैं। इनके आङ्गिरस, आमहोय और उरु चयम ये तीन प्रवर हैं। (बोधायन)

शक्तिगणकण्ड—

१। अत्रि, छान्दादि, पौटिका, माह्लय, नेपाच्छूरा, लाच्छुनाकि प्रोणभावा गोरिश्रीव, योग विशिष्टिरा, शिथु पाल, क्थानत्रेय, गौरानत्रेय अरुणानत्रेय निनानत्रेय ज्वेता न्रेय, महानत्रेय, पालेयेता, गेयारामरधि, वैतभाव, सोद्रेय, कोद्रेय, गोपयत्थ कालायचय, अनिनायन, आनङ्गि, मानङ्गि, सोरङ्गि, गौरङ्गि, पुष्य, सैव्य, साकेतायन भार हाजायन और चन्द्रातिग्मि—इनको अत्रिगण कहते हैं। इनके प्रवर तीन प्रकारके हैं,—आत्रय आर्चनान और आनमश्याव।

२। वाम्भूतकगणके तीन प्रवर ये हैं,—आत्रय, आनसग्गव और वाम्भूतक।

३। गविष्टिरगणके तीन प्रवर—आत्रय, आर्चनान और गविष्टिर।

४। सुदृगल व्यानि, सधि, आरणच, बोधाक्ष, गवि ष्टिर, वैतवाह, शिविपय शानिमन, गोरिति, गोरकि और वायवन इनको सुदृगलगण कहते हैं। इनके भेो तीन प्रवर हैं—आत्रेय, आर्चनान और मोह्व्य।

(वषा म शक्तिगणकण्ड)

विशामिधवांत काण्ड—

१। कुगिक, पूर्णस्रध, यारवत्र, शोर्टलि माणि हृहदन्नि यानविरा, यद्गिरापडधा, कामन्तसा, यह कथा, चिकि, गाल, मकरायण, शालहायन, शाजायन, लाक, गोर, भोगन्धि, यमहुत, अत्रभिव, शनवकायन,

चीवल, जावाल, याज्ञवल्क्य, उगडावलि, सौसुतया, औपदहन्व, उदम्भरि, भाष्यग, श्यासिय, चैत्रेय, वला, मयूरान, शौचतयात्रि, नव, सयस्त्रायन, त्रानूत, काम्यान्तर, यच्य, कालि और उत्सरि । इनको कुशिकगण कहते हैं । इनके तीन प्रवर हैं,—वैश्वामित्र, अष्टक और लौहित ।

२ । रौत्तक, स्वीदहल और रेवण—इनके तीन प्रवर ये हैं—वैश्वामित्र, रौत्तक और रेवण ।

३ । वैश्वामित्र, देवरात, अक्स, देवतवस, मिति ज्यास, कारण और काकायनिन्—इनके तीन प्रवर ये हैं—वैश्वामित्र, देवस्रवस और देवतवस ।

४ । अज, माह्य और मधुच्छन्द—इनके तीन प्रवर इस प्रकार हैं—विश्वामित्र, मधुच्छन्द और सार्जात ।

५ । अघमर्षण गोत्रगणके तीन प्रवर ये हैं,—विश्वामित्र, अघमर्षण और कौशिक ।

६ । इन्द्रकौशिक गोत्रगणके दो प्रवर हैं,—विश्वामित्र और इन्द्रकौशिक । (बौधायन विश्वामित्र-गोत्रकाण्ड)

काश्यपगोत्रकाण्ड—

१ । काश्यप, आङ्गिरस, भारद्वाज, एतिसायन, भृत्य, वैशिप्रा, धूर्मायन, सौम्य, धर्मायण, अष्टवृक्ष, प्रयायण, पैधकि, प्राचर्य, हृद्रोग, आतप, पाञ्चायतिक, नैयातिक, सामसि, मासरि, सौवचि, मायस्य, आस्तवायन, कागव्य, सौनि, स्थेपर्कशि, वापि, औपव्य, लाक्षण, क्रीष्ठाजीव, खाडायन, रोहितायन, मितकुम्भ, पिङ्गाक्षि, मारायण, पचवर, कर्ण्य, कौपीतकी, धूमलहायन, सुरा, गौरिवायन, महाचक्रोय, यैचिनसप्त, पाणस्याणि, पगण, टाक्षपाणि, भालन्दन, माह्यमित्रेय, हरित्या, जारमात्य, औरमाणिश, विन्नावस, वैशम्पायन, खैरकि, काशलि, उक्तायनि, मार्जनायन, कांसलायन, देवहोता, सूचि, रेभि, भागुरि, पथिकायन, गोमायन, हिरण्यरयि, अग्निदेवी, सौशल, आविच्येय, सुश्रुतदत्ता, मन्वित, वैकर्णि और स्थलारिन्दम—ये सब निध्रुवगण हैं । इनके तीन प्रवर इस प्रकार हैं—निध्रुव, आपसार और काश्यप ।

२ । रेभगोत्रगणके तीन प्रवर हैं—काश्यप, आपसार और नैध्रुव ।

३ । शाण्डिल्य, पाचक, वायिक, ओटमेध्या, सौटान

सावचस, कारिय, कौकरण्डकि, तैत्ति, माह्यकि, वहोदकि, कौपि, मौञ्जायन, जाण्वंश, खर्वायण, गावभाव, सभालि, गोभिल, वटायन, वाश्यायन, वहदरि, भागुरि, खादंतीमुख, हिरण्यवाड, तेदेह, गोपुत्रा, वाक्यष्टा, जालम्भरि और धन्वन्तरि, इनको शाण्डिल्यगण कहते हैं । इनके काश्यप, आपसार और देवल ये तीन प्रवर हैं ।

४ । लौगाक्षि, टाभपण, मैत्रवादि, पहतवादि, हपाशुचि, तथाकलि, कसपात्र, कायनितप्रवस्त, विरोधकि, कौनामि, सौलय, मैति, किष्टि, भेरोनिष्टि, चैरत्ति, चौप्यन, पौधकालक, चय और जप, ये सब लौगाक्षिगण कहलाते हैं । इनके काश्यप, आपसार और वसिष्ठ—ये तीन प्रवर हैं । (बौधायन काश्यपगोत्रकाण्ड)

वशिष्ठगोत्रकाण्ड—

१ । वैतनकि, वाहरकि, सारण, गौरिध्वंश, आश्वलायन, कपिष्ठ,सौचि,वाह्यकायनि, गायनि, कौशायन, मुन्दहरित, सोपवमायन, आनन्तायन, पर्णव्यायन, पण्णवाङ्ग, देवन, गौरवाश्म, वाहव्यथि, अवाकि, वशपाय, पूतिमाष और मप्रावन—ये चैतानकगोत्रगण हैं । इनका प्रवर सिर्फ एक ही है,—वाशिष्ठ ।

२ । कुण्डिन, लोहायन, युग, कौक्रोव्य, माङ्गनिन्, पेटक, नवयि, हिरण्यानयन, पैयनादि, भोज्याक्षि, मध्योदित, स्यान्ति और शौपासिन्, इनको कुण्डिनगोत्रगण कहते हैं । इनके प्रवर तीन हैं—वशिष्ठ, मैत्रावरुण और काण्डिन ।

३ । पराशर, कद्रुपि, वाजि, वामिति, वैमतायन और गौराणि, इनको कृष्णपराशर, प्ररोहि, वेकलि, प्लाक्षि, कौमुटि और हर्षवाश्वि, इनको गौरपराशर, तथा काम्पायनि, गोप्रायण, स्याति और वारुणि, इनको अरुणपराशर कहते हैं । भानुकि, राजानि, क्वानहायन, कौकुलेय और क्रैमथायी, इनको नीलपराशर तथा कृष्णाजिन, कपिमुख, श्वाश्यापायन, श्वेतमुखि और पौष्करसादि इनको श्वेतपराशर गोत्रगण कहते हैं । इनके भी प्रवर तीन हैं—पराशर, शक्ति और वशिष्ठ । (बौधायन वशिष्ठ गोत्रकाण्ड)

शक्तिगोत्रकाण्ड—

१ । काण्वायन, आदङ्गकि, माषदण्डिन्, लोणनक्ष, वरह, वैरणि, बुधौदि, शौरपथि, शाल्यतप, मौञ्जीकर,

पाथोटगत हारियोवा रोहिण्य घोरनोशनहि इनका नाम अगस्तिगोत्रगण है। इनके अगस्ति, दार्व्यच्युत और इधवाह—ये तीन प्रवर हैं। (बोधायन ब्राह्मण १.१०)

बोधायनके अनुसार गोत्र और प्रवरका विषय लिखा जा चुका है। "कात्यायन प्रणीत श्रौतग्रन्थमें और मत्स्य पुराणमें भी ये सब गोत्रका उल्लेख लिखे हैं। परन्तु नीनों ग्रन्थोंमें एकसा नहीं लिखा कही पर किसी ग्रन्थमें दो एक गोत्र ज्यादा भी हैं और कम भी। (गार्ग्यप्रवचन)

गोत्रप्रवरद्वयके कर्त्ता कमलाकरने अपने ग्रन्थमें बोधायनके भृगुगोत्रका उल्लेख करते हुए कक्षा के कि, "एते बोधायनोक्ता यद्यपि प्रवरमञ्जरीरुतबोधायन मूल आकरमूलै च भृगुान् न्यूनाधिकभाव तदप्युभयानुसारेण वदाम।" अर्थात्—यद्यपि ये बोधायनके कहे हुए गोत्र हैं, परन्तु तो भी प्रवरमञ्जरीमें बोधायनके जो जो मूल उद्धृत किये गये हैं, उनमें और (जो प्राप्त हैं) बोधायनके मूल ग्रन्थमें बहुतसे पारोंमें व्यतिक्रम या न्यूनाधिकता पायी जाती है। ऐसी दृष्टिसे हम यहां दोनोंके मतानुसार ही लिखे गे। इसीसे साफ ही जाहिर होता है कि, बोधायनके मूलग्रन्थके साथ पुरोपेक्षमूलत प्रवरमञ्जरीका पाठ बहुत जगह मिलता नहीं। कमला कर भी यह निश्चित नहीं कर सके कि, किसका पाठ यथाय है और किसका भ्रमालम्ब। इसी लिए उन्होंने दोनोंके अनुसार लिखा है। अतिप्राचीन हस्तलिखित प्रवरमञ्जरीमें जैसा पाठ लिखा है वहा वैसा ही पाठ सन्निवेशित किया गया है। बोधायनने जिन जिन गोत्रों और प्रवरोंका उल्लेख किया है, वतमानमें उनका प्रचार बहुत ही कम देखनेमें आता है। जितने भी गोत्र देखे जाते हैं, उनके प्रवर बोधायनके प्रवरसे भिन्न हैं। अत एव धनञ्जयकृत धर्मप्रदीपमें जितने गोत्र और प्रवर लिखे हैं, यहा भी उनका उल्लेख करना जरूरी था।

वतमानमें प्रचलित गोत्र और प्रवरके नाम (१) इस प्रकार हैं—

गोत्रके नाम।	प्रवरके नाम।
१ जमदग्नि	जमदग्नि, शोवे और वशिष्ठ।
२ विश्वामित्र	विश्वामित्र मरीचि और क्रोशिक।
३ अत्रि	अत्रि, आथेय और शातातप।
४ गोतम	गोतम, वशिष्ठ और वार्हस्पत्य।
५ वशिष्ठ	वशिष्ठ। मतान्तरमें वशिष्ठ, अत्रि और साङ्गति।
६ काश्यप	काश्यप, अम्बार और नैधुव।
७ अगम्य	अगस्ति, दधोचि और जैमिनि।
८ सोकालीन	सोकालोन, आत्रिरम, वार्हस्पत्य, अम्बार और नैधुव।
९ मोतव्य	शोर्व, अयन, भार्गव, जामदग्न्य और आम्रवत्।
१० पराशर	पराशर, शक्ति और वशिष्ठ।
११ वृहस्पति	वृहस्पति, कपिल और पार्वण।
१२ जाञ्जल	अश्वत्य, देवल और देवराज।
१३ विष्णु	विष्णु, वृद्धि और कोरव।
१४ कौण्डिक	कौण्डिक अत्रि और जमदग्नि।
१५ कातशाउन	अत्रि, भृगु और वशिष्ठ।
१६ आत्रेय	आत्रेय शातातप और मांथ्य।
१७ काण्व	काण्व, अश्वत्य और देवल।

(१) "जमदग्नि रक्षामो विश्वामित्रादिगोत्राः।

वशिष्ठ काण्वमत्स्य। सुनयो गोत्रकारिणः ॥
 एतेषु याच्यन्त्यानि तानि गोत्रानि सन्तः।
 पपदुनमेषमन्वया माय दश नाम तदायः।
 भीक्षानोक्तमन्वयायो पराशरवृहस्पतो ॥
 कासना विष्णुशौण्डिकी कात्यायनतयशाण्डकाः।
 अथानेय ब्राह्मणिकौण्डिको मरुगं शशः ॥
 ब्राह्मण इति त्वाता अना चाशान्तिः ॥
 अशान्तिनीं ह्याशां शोण्डिक्यां मत्स्ये ॥
 मायदीनव्याने वाशरः। ए च नौगिरिः।
 गिरि कात्यायनश्च व साधुकी मा मन्वयाः।
 एतश्च कीनायनश्च व सुमदी गोत्रकारिणः।
 एतर्षु मांथ्यवर्षानि तानि सावर्षिमेवन्तः। (धर्मप्रदीप)

* महापुराण बोधायन और मत्स्य आश्विनयन शैवमत्स्य वपुस्वत्स्य प्रत्स्य चारि दशोक्तो शैवमाचारिणः।

† धर्मप्रदीपके बोधायनके नाम पर प्रवरके नाम लिखे गये हैं। इसलिखे नामोंमें बहुत जगह मत्स्य उल्लेख है।

गोत्रके नाम	प्रथमके नाम
१८ कृष्णाक्षिय	कृष्णाक्षिय, आक्षिय और आङ्गिरस। मतान्तरमें आङ्गिरसकी जगह आवास।
१९ साङ्गृति	अव्याहार, अत्रि और साङ्गृति।
२० कीण्डिल्य	कीण्डिल्य और तिमिकोत्स।
२१ गर्ग	गार्ग्य, कौमुन्ध और माण्डव्य।
२२ आङ्गिरस	आङ्गिरस, वशिष्ठ और वार्हस्पत्य।
२३ अनावृकाक्ष	गार्ग्य, गौतम और वशिष्ठ।
२४ अव्य	अव्य, वलि और मारस्वत।
२५ जैमिनि	जैमिनि, उत्थय और साङ्गृति।
२६ वृद्धि	कुरुवृद्ध, आङ्गिरस और वाहस्पत्य।
२७ शाण्डिल्य	शाण्डिल्य, अमित और देवल।
२८ वात्स्य }	श्रीवं, चवन, भार्गव, जामदग्न्य
२९ मावण }	और आप्रुवत्।
३० आलस्यान	आलस्यायन, शालङ्गायन और शाकटायन।
३१ वैयाघ्रपद्य	साङ्गृति।
३२ घृतकौशिक	कुशिक, कौशिक और घृतकौशिक मतान्तरमें बन्धुल।
३३ शक्ति	शक्ति, पराशर और वशिष्ठ।
३४ काण्वायन	आङ्गिरस, वार्हस्पत्य, भरद्वाज और अजमीढ़।
३५ वासुकि	अक्षोभ्य, अनन्त और वासुकि।
३६ गौतम	अप्सर, गौतम, आङ्गिरस, वार्ह- स्पत्य और नेध्रुव, मतान्तरमें गौतम, आङ्गिरस और आवास।
३७ शुनक	शुनक शौनक और गृत्समद। मतान्तरमें शुनक, सुनिहोत्र और गृत्समद।
३८ सोपायन	श्रीव, चवन, भार्गव, जामदग्न्य और आप्रुवत्।

ब्राह्मण ऋषि ही गोत्रके प्रवर्तक हैं। उनके वंशके लोगोंके गोत्र उन्हींके नामसे चलते हैं। क्षत्रिय आदि अन्योन्य वर्णोंके लिए यह बात असंभव जान पड़ती है। उनके गोत्र उन्हींके पुरोहितोंके नामसे चलते हैं। अति

प्राचीन समयमें या गोत्रके नियम बननेके बाद ही, जिन पुरोहितके नामसे जिनके अपने गोत्रका परिचय दिया या, वर्तमानमें उनके वंशधर भी उसी गोत्रका नाम लेते हैं। जिनके पुरोहितोंके नामसे कोई भी अपने गोत्रका परिचय नहीं देता।

“पुरोहितप्रथमं गोत्रं।” (आय० श्रौ० २५ १५५)

“क्षत्रियवर्गं गोत्रं पुरोहितानि दित्तौ। तं गोत्रं गोत्रं दित्तौ दत्तं तं”

(ऋ० ५५ ५५)

गोत्रक (सं० की०) गोत्रमेव गोत्र म्वार्थे कन् । गोत्रं गोत्रो ।
गोत्रकर्तृ सं० पु०) गोत्रस्य कर्त्ता इ-तत् । गोत्रप्रवर्तक ।
(भार० १२५)

गोत्रकर्म (सं० पु०) टिगभ्रर जेन गिहान्तानुमार—आठ
कर्मोंमें गोत्रकर्म सातवाँ कर्म है। यह कर्म जोवाँकी
ऊँच और नीच गोत्रको प्राप्त कराता है। इसके दो
भेद हैं,—

“उच्चोर्गो चो य ।” (तन्वाय० मू० ८ ५०)

ऊँच गोत्र और नीचगोत्र ये दो गोत्र कर्मकी प्रकृति-
याँ हैं। जिसके उदयमें लोकपूज्य और सहान् कुलमें जन्म
हो उसे गोत्रकर्म कहते हैं। जैसे—इच्छाकुवंश, चन्द्र-
वंश, सूर्यवंश आदि और जिसके उदयमें निन्द्य तथा
दरिद्रताके साथ अप्रसिद्ध, दुःखमें व्याकुल—ऐसे वंशमें
जन्म हो, वह नीच गोत्रकर्म है। जैसे—भट्टी, चमार,
डोम, धोवी आदि।

गोत्रकारिन् (सं० पु०) गोत्रं करोति कृ-णिन् । गोत्र-
कर्त्ता गोत्रप्रवर्तक ।

गोत्रकौला (सं० स्त्री०) गोत्रः पर्वतः कौल इव विष्टम्भक-
त्वाद् यस्याः, बहुव्री० टाप् । पृच्छो ।

गोत्रज (सं० त्रि०) गोत्रे समानगोत्रे जायते गोत्र-जन-
ड । १ एकही गोत्रमें उत्पन्न, एक ही पूर्वजकी सन्तान ।
२ चौदह पुरुष (पिदिहीं) तक एक गोत्रोत्पन्न मनुष्यों-
को 'गोत्रज' कहते हैं ।

गोत्रद्रुम (सं० पु०) धन्वन वृक्ष ।

गोत्रभित् (सं० पु०) गोत्रं पर्वतं मेघं वा भिनत्ति भिद्-
क्षिप् । १ इन्द्र । गोत्रं नाम भिनत्ति भिद्-क्षिप् ।
नामभेदक, जो मनुष्य एक नाम उच्चारण करनेके समय
दूसरा नाम उच्चारण करता है । ३ पर्वत ।

गोत्ररिक्त्य (१० स्त्री०) गोत्ररिक्त्य, ६ तत् । गोत्रघन । गोत्रवत (स० त्रि०) गोत्र अस्त्वस्य गोत्र मतुपु मकारस्य वकार । गोत्रयुक्त, जिनको गोत्र है ।

गोत्रघ्न (स० पु०) गोत्रजात घ्न । धन्वन्घ्न ।

(भाष्यभाग)

गोत्रसुता (स० स्त्री०) पर्वतकी पुत्री, पावतो ।

गोत्रस्खलन (स० स्त्री०) गोत्रे नामनि स्खलन ७ तत् । एक नाम बोलनेके अभिप्रायसे किमी दूमरे नामका उच्चारण, मनुष्य अतिशय गाढ चित्तार्थे मग्न रहता है तो इस तरह की घटना घटती है किन्तु आलङ्कारिक गणिका मत है कि नायक और नायिकाका अनुराग वर्द्धित होने पर गोत्रस्खलन हुआ करता है ।

गोत्रा (स० स्त्री०) गा पशुन सर्वान् जीवान, वायते तै क टाप् । १ पृथ्वी । गवां समूह गोत्र टाप् । २ गोमसूह, गायका भुण्ड । ३ गायत्रोस्वरूपा महादेवी

(गोभा० १२ (११))

गोत्रादि (स० पु०) पाणिनीय एक गण । गोत्र, ध्रुव, प्रवचन, प्रहसन, प्रकथन, प्रव्यायन, प्रपञ्च, प्राय, न्याय, प्रचक्षण, विचक्षण, अवचक्षण, स्वास्थ्य, भूमिष्ठ और वानाम इन सर्वोंको गोत्रादि गण कहते हैं । गोत्रगण तिङन्तके बाद होने पर अनुदात्त ही जाता है ।

गोत्रान्त (स० पु०) गोत्रव्यान्त इ तत् । गोत्रका विनाश व शका नाश ।

गोत्रान्तर (स० स्त्री०) नित्यम० । अन्य गोत्र, दूसरा गोत्र ।

गोत्रिक (स० त्रि०) गोत्रे भव गोत्र इकन् । गोत्रोत्पन्न, गोत्रिय ।

गोत्रो (स० त्रि०) ममान गोत्रवान् गोत्रज्ञ, गोतिया ।

गोत्र (स० स्त्री०) गोभार्थ गोत्र । १ जातिविशेष जिन जातिको सिर्फ गौ है, दूसरा कोई पदार्थ नहीं, उसीको गोत्र जाति बोलते हैं । २ गोकुल धर्म ।

गोद (स० पु०) गां नेत्र दायति गोधयति दै क । १ मन्त्रिक, सगज । (त्रि०) गा ददाति दा क । २ गोदाता गोदान करनेवाला । (पु०) ३ गोदावरीके निकटस्थ एक देग ।

गोद (हि० स्त्री०) १ उल ग, कोरा, ओनी । २ वच स्वनके पासका स्त्रियोंको साडीका एक भाग ।

गोदगुदनी (हि० पु०) गूलू नामका पेड़ ।

गोदत्र (म० स्त्री०) गोद त्रायते त्रै क । १ मन्त्रिक रत्नक मुकुटादि । (पु०) २ इन्द्र । (त्रि०) ३ गोदान करनेवाला ।

गोदधि (स० स्त्री०) गायका दही ।

गोदनहर (हि०) गोत्रघाती इच्छी ।

गोदनहरा (हि० पु०) टीका लगानेवाला, माता छापनेवाला ।

गोदनहारी (हि० स्त्री०) नटजातिकी स्त्री जो गोदना गोदनेका काम करती है ।

गोदना (हि० क्रि०) १ गडाना । २ किमी कामके लिए बार बार यत्न करना । ३ छेड़ छाड़ करना । ४ हाथोंको अ जुग देना । (पु०) ४ एक विशेष प्रकारका काला चिह्न जो तिलके आकार होता है । नट जातिकी स्त्रिया अपनी सृष्टीकी नील या कीयलेके पानीमें डुबा कर मनुष्यके शरीरमें छेद देती हैं । इसमें दो तीन रोज तक शरीरमें बहुत बदेना मालूम पड़ती है । किन्तु उसके बाद वह चिह्न सदाके लिए रह जाता है ।

गोदना—सारण जिनके अन्तर्गत एक नगर । यह अक्षा० २५ ४० उ० और देशा० ८४ ३८ पूर्वमें गङ्गा और घेवरा नदीके सङ्गम पर अवस्थित है । लोकम न्या प्राय ६०६५ है । सारण जिनमें यहाँ नगर प्रधान वाणिज्य स्थान है । चम्पारण, नेपाल बङ्गाल और उत्तर पश्चिम भारतके द्रव्यजातकी रफतनी और आमदनी इसी स्थानसे हुआ करती है । निम्नवृक्षसे जो समस्त नाबं चावल और लवण बोध कर युक्तप्रदेश जाती है उनका माल गोरखपुर और फाँजावाटकी नावोंमें रख कर पश्चिमाञ्चल भेजा जाता है । प्रतिवर्ष दो बार कालिक और चैत्र माममें यहाँ मेला लगता है । ऐसा प्रजाट है कि न्यायदर्शनकार गौतम श्रेयि अहश्वाके साथ यहाँ वाम करते थे । एक भग्न कुटीरमें काष्ठपादुका भो देखा जाती है । अधिवानी यात्रियोंकी बहो स्थान गौतमका पाथम धतनाया करते हैं ।

१८८८ ई०की रिवल साहब गर्वमें ग०के शुभक स प्रह कर्ता होकर यहाँ आये थे । जिन्होंने एक धागा तथा शुक सप्रहके लिये एक घर निर्माण किया था । पाचनों

भी बाजारके मनुष्य उनकी कन्नकी देखते और भक्ति प्रदर्शन करते हैं।

गोदनी (हि० स्त्री०) गोदना गोदनेकी सूई।

गोदन्त (म० स्त्री०) गोदन्त इवावयवोस्य । १ हरिताल ।

२ गौका दांत । ३ दानवविशेष ।

गोदन्ता (म० स्त्री०) टारुमोचभेद. एक स्थावर विषका नाम ।

गोदरी (म० पु०) इन्द्र ।

गोदा (म० त्रि०) गा स्वर्गं ददात दा-क-टाप् । १ गोदावरी नदी । २ गायत्रीस्वरूपा महादेवी । (त्रि०) गां ददाति गो-दा क्तिप् । ३ गोदाता, गोदान करनेवाला ।

गोदागारी—बङ्गालके राजशाही जिलेमें सदर सबडिविजन का गाँव । यह अक्षा० २४° २८ उ० और देशा० ८८° १८' पू० में महानन्दा और पद्मा नदी सङ्गमस्थलके निकट अवस्थित है । जनसंख्या प्रायः १२३५ है । यहां नदीकी तरह युक्त प्रदेश तक व्यवसाय चलता है ।

गोदान (सं० स्त्री०) गावः केश लोमानि वा दीयन्ते खण्डयन्ते यत्र आधारे ल्युट् । १ द्विजातिका एक संस्कार, द्विजातियोंकी एक क्रिया, इसका दूसरा नाम केशान्त संस्कार भी है । केशान्त देवो । गवि पृथिव्यां दीयते निधीयते दा कर्मणि ल्युट् । २ दक्षिणकर्णका समीपवर्ती स्थान । गोदानं, इ-तत् । ३ गाय या बैलका दान । अपना मत्व परित्याग कर दूसरेको गोदान करनेकी क्रिया । हेमाद्रिके दानखण्डमें गोदानप्रणाली इस तरह लिखी है—विश्वामित्रके मतानुसार वत्सयुक्त गौकी पूर्वमुखी कर रखना चाहिए । दाता स्नान और शिखा बन्धन कर गौके पुच्छकी ओर उपवेशन करें । जिस ब्राह्मणको गोदान करना हो उसे उत्तरमुखी कर बैठावे । तदनन्तर दाता एक घृतपूर्ण पात्रमें कुछ सुवर्ण लेकर उसमें गौपुच्छ धारण करे । ब्राह्मणके हाथमें तिल दे पूर्वमुखी कर रखें । इसके बाद तिल और कुशादि ले यथानियमसे ऐसा कहना पड़ता है—

“यद्ब्रह्मभूतमृता वा निश्चायप्रणामिने । दिव्यर्षे, वशोर्देवः प्रीयतामनया नवा ॥”

यह मन्त्र पढ़ ब्राह्मणके हाथमें जल अर्पण करना चाहिए । ब्राह्मणके गौ ले जानिके समय उन्हें भी गौका अनुगमन करते हुए गोमती मन्त्र जपना पड़ता है ।

(विश्वामित्र)

गोमती मन्त्र यथा—

“गावः सुरभवी नित्यं गावो गुग्गुलु गाधिकाः ।

गावः प्रतिष्ठा भूतानां गाव स्रस्वर्नं सद्गत् ॥

अन्नमेव परं गावो देवाना हविर्ब्रह्मणम् ।

पात्रं सर्वं भूतानां रक्षन्ति च वहन्ति च ॥

हविषा मन्त्रपूतेन तर्पयन्त्यनरांश्च दिवि ।

ऋषाणामप्रिहीतृणां गावो हेमप्रतिष्ठिकाः ॥

सर्वं पामिव भूतानां गावः शरणमुत्तमम् ।

गावः पवित्र परं गावो सङ्गल्लुत्तमम् ॥

गावः सर्वस्य लोकस्य गावो धन्याः सुखावहाः ।

नमी गोमाः श्रीमतीभ्यः सौरभेयभ्य एव च ।

नमी ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमी भूमः ॥

ब्रह्मणायैव गावश्च कुलमेकं द्विधा कृतम् ।

एकव मन्त्रलिच्छन्ति हविरैकत्र निष्ठति ॥” (यम)

महाभारतमें दूसरी तरहका गोमतीमन्त्र लिखा है ।

तिष्ठन्धनु देखी ।

गोदानका फल—कृष्णवर्ण गौ पट्टवस्त्रसे आच्छादित तथा सुवर्णालङ्कार द्वारा अलङ्कृत कर दान करनेसे उस व्यक्तिको यमलोक जाना नहीं पड़ता तथा आयुः, आरोग्य, ऐश्वर्यवृद्धि और मनोभीष्ट पूर्ण होते हैं । रत्नालङ्कार, घण्टामाला और पुष्प द्वारा परिशोभित गौके मुखमें घृत दे शृङ्ग सुवर्णमय और चार खुर रौप्यमय निर्माण कर पट्टवस्त्र द्वारा आच्छादन करें । इस प्रकार श्वेतवर्ण गोदान करनेसे उसके तथा उसके वंशजके पाप विनष्ट होते हैं । इस तरह गौरवर्ण गाय दान करे तो वह हजार करोड़ वर्ष पर्यन्त स्वर्गवास करता, नीलवर्ण गा दान करे तो हजार करोड़ वर्ष वरुणलोकमें बसते हैं एवं उसके पूर्व पुरुष नरकसे मुक्ति प्राप्त करते हैं । (बशिष्ठ)

कपिलवर्ण वत्सयुक्त और दुग्धवती धेनु दान करनेसे ब्रह्मलोक प्राप्त होता है । इस प्रकार वत्सयुक्त दुग्धवती रोहिणी धेनुदानसे इन्द्रलोक, विचित्रवर्ण धेनुदान करनेसे चन्द्रलोक, कृष्णवर्ण धेनुदानसे अग्निलोक, वातरेणुके जैसा वर्णयुक्त धेनुदानसे वायुलोक धूम्रवर्ण धेनुदानसे यमलोक, सुवर्णवर्ण धेनुदानसे वरुणलोक, पिङ्गलवर्ण चक्षुयुक्त हिरण्यवर्ण धेनुदानसे कुबेरलोक, गौरवर्ण धेनुदानसे वसुलोक एवं पांडुकम्बलवर्ण धेनुदान करनेसे गन्धर्व लोकमें वास करता है । जो शुद्धचित्त तथा पवित्र

भावसे अनवरत गोदान करते वे सूर्यवर्ण विमानमें आरौ
हणकर स्वर्गको गमन करते हैं। स्वर्गीय रमणिया क्रीडा
कौतुक कर मर्षटा उनको आनन्दित किया करती है।
(महाभारत)

विश्व धर्ममें लिखा है कि पुण्य दिनको स्नान कर
प्रथम पिण्डतर्पण करे। इससे पूर्व दिन केवल पञ्चगव्य
खाकर रहे। तदनन्तर घृत और चौरद्वारा विशु या
शिवजीका अभिषेक कर पुण्यादि उपहारसे भक्तिपूर्वक
उनकी अर्चना करे। इसके बाद एक दुग्धवती गृष्टि
धेतुको उत्तरमुखी कर स्थापन करे, जोके अन्न सुवर्णमय
और सुंदर रोप्यमय हो। अन्तकी मन्त्र पाठपूर्वक ब्राह्मण
को अर्पण करे उसमें यथाशक्ति दक्षिणा दे जाती है।

दानका मन्त्र—

“माता ममायत मनु रागे मे मनु वृष्टत ।

मात मे वृत्ते मनु गवा मया वशाप्य च ।

इमां च पतियशोच धेनुं मा मया मर ।

म मे ऽपान्मीनाय सोविन्द गोदानमिति ॥ (अथिपु०)

भारत श्रुतशासन ६६ अध्याय उभृतिमें भो गोदानकी
प्रशंसा और नियम लिखे हैं। भविष्यपुराणमें लिखा है
कि श्वेत सूर्यकी कन्या है, सर्व लोकके मङ्गल और यज्ञ
मिद्धिके लिए इसको उत्पत्ति हुई है। ब्राह्मण तथा गो
एक कुलमें ही उत्पन्न हैं। गोसे यज्ञकी मिद्धि होती है।
देव और पंडित चतुर्वेद इमोसे उत्पन्न हुए हैं। गौर्कि
शुद्धके अथभागमें ममस्त तोर्य तथा चराचर, शीर्ष पर
सब भूतमय शिव, ललाटायम देवो, नासिकाके अथभाग
पर कात्तिकेय, दोनो नासापुटीमें कश्यप और शत्रुतर
नाग, कर्ण हृदयमें अश्विनोक्तमारयुगल, दोनो धार्षोणिमें चंद्र
तथा सृष्ट, दक्षमें वायु, जिह्वामें वरुण, कक्षदेशमें राक्षस
गण, सुदारमें मरुत्वती मुण्डमें यम और यज्ञ शीठ पर
मरुत्या, ग्रीवामें इन्द्र वक्षस्यल पर साध्यगण, जह्वादेश पर
धर्म, सुरके अथभाग पर पद्मगण, सुरके पशान्नाम पर
अक्षरागण, शृष्ट पर वसुगण, योणितटमें पिण्डलोक,
नाल्लस चन्द्र जगमें सूर्यरश्मि, सूर्यमें गङ्गा, गोमर्जमें
यमुना, सुधुमें मरुत्वती दधिमें नर्मदा, घृतमें कृताग्न,
रोमकृपमें २० करोड़ देवता, उदरमें पृथिवी तथा अङ्गमें
चतु मांगर और पयोधर अथस्नान करते हैं। इस तरह
समस्त ब्रह्मांड ही गोमें अथस्थित है।

गोदानिक—गोदानिक रथा।

गोदाम (हि० पु०) माल अमवाव रखे जानिका सुरक्षित
स्थान।

गोदाय (म० त्रि०) गा ददाति गो दा अण् उपपदम० ।
गोदाता, गो दान करनेवाला।

गोदारण (म० क्ली०) गा भूमि दारयति ट णिच न्यु ।
१ इच । २ जमीन खोदनेकी कुदाल।

गोदावरो (म० स्त्री०) गा स्वर्ग ददाति दा वाणप् डोप्
रथान्तादिग । यद्वा गोदाना वरो अर्थात्, ६ तत् । नदी-
विशेष। यह नदी बहुत दिनोंसे हिन्दुओंको आदरणीय
है, हिन्दू इसे एक पुण्यतोर्थके जैसा समझते हैं। ममस्त
कायाके पहले ही जलशुद्धि करनेके लिये मन्त्र द्वारा इस
नदीका भो आवाहन करना पड़ता है। ब्रह्मसैवर्ष
पुराणमें लिखा है कि कोई ब्राह्मणो अकेलो तोर्पयात्रा
कर रहे हो। जाते जाते रास्तेमें एक निविड निर्जन
पुष्पोद्यानके मध्य किसी एक कामुकने उसे देखा। युवती
का सुन्दर रूप देख वह कामुक कुक्ष देर भी स्थिर न रह
सका। ब्राह्मणीने उसे बहुत वारण किया, किन्तु अन्तमें
उस कामुकने वलपूर्वक अपना पाशवर्षात्ति चरतार्थ
की। ब्राह्मणीको गर्भमन्त्रार हुआ। ब्राह्मण यह देख
कर क्या कहेंगे इस भयसे ब्राह्मणीने उसी समय गर्भ
परित्याग किया और उससे उसी समय तपकाश्चनवर्ष
एक पुत्र उत्पन्न हुआ। पुत्रका सुन्दर मुख देख ब्राह्मणी
उसे फेक न सकी इस मद्योजात बालकको गोदमें ले
रोती रोती ब्राह्मणके निकट पहुँचो और समस्त घटना
साफ साफ कह सुनाई। ब्राह्मणने पुत्रके माय वसे परि-
त्याग किया। लज्जा और परिमानसे ब्राह्मणने योग
करना आरम्भ किया। योगजलसे वह नदी ही गई।
उमाका नाम गोदावरो है। (मत्स्य ११०)

गोदावरोका दूसरा नाम—गोतमी है। ब्रह्माण्ड
उपपुराणके अन्तर्गत गोतमीमाहात्म्यमें गोदावरीकी उत्-
पत्ति कथा अन्य रूपमें वर्णित है—जब महर्षि गोतम
ब्राह्मणिकके आश्रममें रहते थे, उस समय एक बार बारह
वय भनाशुष्टि रची, जिसमें चारो और एक दुर्भिक्ष उप-
स्थित था। यशुष्टादि षटविगण गोतमके आश्रमको
पहुँचे। गोतमने षटपियाँकी अथ दे रचा की। ये

प्रतिदिन सबरे मैदानमें बीज बोते और उनके तपोबल द्वारा उस बीजसे अद्भुत, गाँव तथा फल निकलते थे। सस्याके पहलीही पक्क शस्य काट कर चण्डल प्रसूत किये जाते और उसे मिद्ध कर ऋषि आहार करते थे। द्वादश वर्ष के बाद सुवृष्टि हुई, जिससे वसुमती फिर भी शस्य-शालिनी हो गई। इस समय कैलासमें एक विभ्राट् आ पड़ा। शिवजी गङ्गाको अपने जटाके मध्य रखे हुए हैं, ऐसा जानकर एक दिन पतिमोहाग्निनी हैमवती (पार्वती) का बड़ी इर्षा हुई। वह कातर हो शिवजीसे बोली—'नाथ! आपने गङ्गाको मस्तक पर और मुझको गोटेमें धारण किया है इससे मेरा अपमान होता है। इस लिए आप शीघ्र ही गङ्गाको नीचे उतार रखें।' शिवजाने उनकी बात पर कुछ भी ध्यान न दिया, इससे पार्वतीको और अधिक दुःख हुआ। पार्वतीने गणेशको अपने मनकी व्यथा कह सुनाई। गणपतिने अपनी माताके दुःख दूर करनेकी प्रतिज्ञा ठानी। वे कार्तिकके साथ बृह ब्राह्मणके भेषमें गौतमाश्रमके वह्निर्भागमें आ ऋषियोंको देख कर बोले—'ब्राह्मणगण! अब सर्वत्र ही शस्य उपज गये है, इस समय आप लोगोंकी परान्न पर निर्भर करना उचित नहीं, आप लोग अपने अपने आश्रमकी चले जाँय।' ऋषियोंने गौतमके निकट आ विदा माँगे। गौतमने उन्हें उत्तर दिया—'दुर्दिनमें आप लोगोंकी अन्न दिया है, अभी अच्छा समय देख आप लोग मुझे छोड़ जाते यह उचित नहीं है। मेरी इच्छा है कि आप यहीं ठहरें।' बृह ब्राह्मणवेशी गणेशने ऋषियोंसे यह कथा सुनी। वे वहांसे चल कार्तिकके निकट आ बोले—'भाई! तुम गौ हो कर गौतमके क्षेत्रमें जा समस्त शस्य नष्ट कर डालो। गौतमके ताड़ने पर तुम मृतवत् हो जमीन पर पड़ रहोगे।' कार्तिक भी गौ रूपमें गौतमके क्षेत्रमें जा समस्त शस्य नष्ट करने लगे। गौतमकी दृष्टि उस पर पड़ी। ज्योंही वे गौको मारनेके लिए टौड़े, त्योंही गौ मृतवत् हो पृथ्वी पर लेट गई।

आश्रममें गोहत्या हुई है, यह सुन कर ऋषि लोग जानकी तैयारी करने लगे। इस समय भी गौतम ऋषिने उन्हें ठहरनेका अनुरोध किया। किन्तु उन्होंने उत्तर दिया—'यदि आप भगीरथकी नाई' गङ्गाजीकी

ला गौको पुनर्जीवित कर सकें तब हम लोग ठहर सकते नहीं तो किस तरह इस अपवित्र स्थानमें रहें!' गौतम ऋषि उनकी बात पर मन्मत्त हुए। उन्होंने ऋषियोंको आश्रममें रात्र तस्वक पहाड़ पर जा हरपार्वती और गङ्गाकी पृथक् पृथक् तपस्या कर उन्हें मन्तुष्ट किया। तस्वकेश्वर पार्वतीके साथ गौतमको टिपाई टिये और उन्होंने वर मांगनिका आदेश किया। गौतमने प्रार्थना की—'यदि आप मुझे वर देनेकी इच्छा करते हैं तो अपनी जटास्थित गङ्गा मुझे प्रदान कर, मैं उन्हें ले जाकर मृत गौको पुनर्जीवित करूँगा।' महादेवजीने उनकी प्रार्थना स्वीकार की। गौतमने पुनः एक और वर मांगा—'भगवन्! गङ्गा मृत गौको जीवनदान कर मागरमें गमन कर तथा मेरे नामसे विख्यात होवें।' शिवजीने कहा—'यह गौतमा गङ्गा और गोदावरी नामसे ख्यात होंगी। जिस तरह भागोरथी मागरमङ्गल पर, यमुना त्रिवेणिसङ्गम पर तथा नमटा अमरकण्ठमें पुण्यप्रदा है, उसी तरह गौतमा गङ्गा भी सर्वत्र पुण्यप्रदा होगी एवं मैं इनके दोनों तीर पर लिङ्गरूपमें अवस्थान करूँगा।' ऐसा कह शिवजीने गङ्गाको गौतमके हाथ समर्पण किया। गौतम हृष्टचित्तसे जटाके साथ गङ्गाको ले ब्रह्मगिरिस्थ आश्रमकी पहुँचे। इस स्थान पर गङ्गाजो त्रिधारा हुई। एक धारा ब्रह्मगिरिस्थ मृत गौको पुनर्जीवित कर दक्षिणमागरमें मिल गई, दूसरी ब्रह्मगिरि भेटकर पातालको चली गई और तीसरी धारा आकाशमार्गको जा विद्यद् गङ्गा नामसे विख्यात हुई।

गोदावरी नदी मध्यभारतके पश्चिम घाटसे पूर्वघाट पर्वत तक विस्तृत है। जलकी पवित्रता, दोनों कूलोंका सौन्दर्य तथा मनुष्यकी उपकारिताके सम्बन्धमें यह गङ्गा और सिन्धु नदीके तुल्य है। यह ८६८ मील लम्बी एवं प्रायः ११२२.०० वर्गमील भूमिके ऊपर ही कर बहुत वेगसे प्रवाहित है। मनुष्योंसे सुना जाता है कि नासिक जिलेके तस्वक ग्रामके पश्चाद्द्वती पहाड़से उस नदीकी उत्पत्ति है। इस स्थान पर एक कृत्रिम कूप है। जिससे नीचे जानिके लिये ६६० एक एक कदमवाली सीढ़ियाँ हैं। यहाँ खोदित मूर्त्तिके ओष्ठ प्रान्तसे वृन्द वृन्दमें जल टपकता है।

स्वभावतः नदीको गति दक्षिण पूर्ववाहिनो है। पहले नामिक जिला अतिक्रम कर अहमदनगर और निजाम राज्यके सोमारूपमें प्रवाहित हो सिरोञ्चा नामक स्थानमें आ प्राणहिता नदीके साथ मिली है। तदनंतर बर्दा, पेन गङ्गा और वेणगङ्गा ये सब नदियाँ आ इसके जलमें मिल गई है। सिरोञ्चासे जिस स्थान पर यह पूर्व घाट पवत अतिक्रम करती है वहा इसके मध्यवर्ती नदीके दक्षिण कूल पर निजाम राज्यभूक्त तथा उत्तर तीर पर उत्तर गोदावरी जिला सीमारूपमें परिणत है। गोदावरीके दक्षिण कूल पर प्राचीन तेलङ्गराज्यके ध्व सावर्ण्य आज भी देखे जाते हैं। ध्व मनेश्वर ग्रामके निकट नदीमें एक डेहरा है। यहा समीपवर्ती बाध द्वारा जल खेतीमें पत्र चाया जाता है। गोदावरीके समुखोर्मिसे गौतमी गोदावरी की सबसे बड़ी है इसके कूल पर फरामीसी अधिभार भूक्त यूनान नगर अवस्थित है। समुद्र कूल पर इस शाखाके ऊपर कोरिड्र नन्दर है। नमरपुरके निकट वशिष्ठ गोदावरीकी वैतन्तम् गोदावरी नामकी शाखा निर्गत हो समुद्रमें गिरी है।

इस नदीके वाम भाग पर भद्राचलम् नगर और इससे १०० मील उत्तरमें राजमहेन्द्रो नगर है। राजमहेन्द्रो नगर तथा कोटिफली ग्राम गौतमी शाखाके ऊपर अब स्थित है।

भिषकशास्त्रके मतसे इसके जलका गुण—पथ्य तथा पितारिक्त, रक्तारिक्त, वायु पाप, कुण्डादि दुष्टरोग और लघुपानाशक है। (राज० ०)

गोदावरी मात भागीमें विभक्त हो उड़ीपसागरमें मिली है, इन सात भागोंके नाम तुल्या, आनेयो, भारद्वाजी गौतमी, वृद्धगौतमी, कौशिकी और वशिष्ठा है। काक नाडामें २ मीलकी दूरी पर चोन्नडी ग्रामके निकट तुल्या वर्तमान है। यहा चोन्नडीश्वर महादेवको मूर्ति स्थापित है। कोरिड्र बन्दरके निकट गोदावरीके उत्तर तीर पर आत्रेयोमन्दिर है। ध्वनेश्वरके दूसरे बगल विजयेश्वर ग्राममें विजयेश्वर शिखर है। ध्वनेश्वर और विजयेश्वरसे गोदावरी दो भागोंमें विभक्त हो सागराभिमुखकी गई है। उसके उत्तर भागके शीतका नाम गौतमी और दक्षिणका वशिष्ठा है। गौतमीके उत्तर भागमें यथाक्रममें

तुल्या, आत्रेयी और भारद्वाजी नामकी तीन शाखायें, दक्षिण भागमें वृद्धगौतमी एवं वशिष्ठाके घाम तीरसे कौशिकी नामकी शाखा प्रवाहित हो सागरमें मिली है। ये सागशाखायें समीपगोदावरी नामसे ख्यात है। जहाँ ये समशाखायें मिली है वहा उनका नाम समशाखावरी सागरमङ्गल पडा है। भागीरथीका सागर मङ्गल जैना महापुण्य तीर्थ माना गया है वना ही दाक्षिणात्यमें समीपगोदावरी सागरसङ्गम महापुण्यप्रदके जैसा विख्यात है।

गौतमीमाहात्म्यमें प्रत्येक भागका माहात्म्य इस तरह लिखा है -

तुल्याभागा—चन्द्रमा रोहिणीकी हो अधिक चाहते थे इसलिये दूसरी स्त्रियोंकी उत्तजनासे दक्ष कतुक अभिमान हो वे चर्यरोगकी ग्राम हुए। पापमुक्तिके लिए उनीने विष्णुको तपस्या की। विष्णुने मन्तुष्ट हो उन्हे तुल्या सङ्गममें स्नान करनेका आदेश किया। चन्द्र भी यथाविधि तुल्यामङ्गलमें स्नान कर शापमुक्त हुए। साथ साथ ही सोमवार अमावस्याको तुल्यामङ्गलमें स्नान कर सोमेश्वर की पुजा करनेसे कोटिगुण फल होते है। इस स्थान पर तर्पण और पिण्डदान करनेसे अश्वमेधका फल और सहस्र जन्मके पाप दूर होते है। (गान्धर्वी)

आत्रेयी—आत्रेय ऋषि गोामीसे जिस नदीकी लाये थे वही आत्रेयी नामसे ख्यात है। इसके तीर पर ऋषिने इन्द्रत्व लाभके लिए महायज्ञ किया था। इस स्थान पर सारीच कुरगरूपसे महादेवकी तपस्या किया करता था।

भारद्वाजी—पूव कालमें भरद्वाज ऋषिने गौतमीके पूर्वतीरसे ऋषियुक्त्याकी लाकर उसके तीर पर तपस्या की थी, इसीसे इसका नाम भारद्वाजी हुआ है। इसका दूसरा नाम रेवतीमङ्गल भी है। भारद्वाजके रेवती नामके एक अतिकुम्भिता भगिनी (वहिन) थी। वधस्था होने पर भी कोई उसे विवाह करना नहीं चाहता था। एक दिन भरद्वाज ऋषि अपने आश्रममें बैठ रेवतीके विवाहके विषयमें सोच रहे थे इसी समय कठ नामक एक खड्गमूर्त ब्राह्मण कुमारने आश्रममें आ उनका गिण्य होनेके लिये प्रार्थना की। ऋषिने उसे शिष्य रूपमें ग्रहण कर समस्त विद्या सिखा दी। इसके अनन्तर कठने शुरु

दक्षिणा देनेके लिये प्रार्थना की। इस पर भरद्वाज उसको बड़ाई कर बोले—‘तुम इस कन्यासे विवाह करो, इसीसे तुम्हारा गुरु-दक्षिणा ही जायगी।’ कठ गुरुका आदेश उलङ्घन कर न सका, उसी समय उसने कुक्षिता कामिनीका पाणिग्रहण किया। तदन्तर कठने नवविवाहिताके साथ भरद्वाजीसङ्गमके निकट शिवलिङ्ग प्रतिष्ठापूर्वक वेदोक्त स्तवसे शिवजीकी आराधना की। शिवजी साक्षात् ही उसे भस्मीक भारद्वाजीसङ्गममें स्नान करनेका आदेश कर अन्तर्हित हुए। उसी समय उन दोनोंने सङ्गममें स्नान किया। स्नान कर ज्योंही बाहर निकले, ज्योंही रिवती सुधी और परमा सुन्दरी देखने लगी। स्नान कर रिवतीके सुन्दर हो जाने पर सङ्गमका दूसरा नाम रिवतीसङ्गम हुआ है। (गौतमीमाहात्म्य)

गौतमीसङ्गमका दूसरा नाम अहल्यासङ्गम भी है। गौतमीमाहात्म्यमें लिखा है—ब्रह्माको कन्या अहलया जप्ती सुन्दरी और रूपवती कोई स्त्री न थी। इन्द्रादि देवगणने अहलयाके पानेको इच्छा की थी, किन्तु ब्रह्माने गौतमको उपयुक्त पात्र स्थिर कर उन्हे अपना कन्यारत्न सम्प्रदान किया। गौतम अहलयाको साथ ले ब्रह्मगिरि आश्रममें सुखसे रहने लगे। इन्द्र अहलयाके रूपमें मुग्ध हो कुश्रभिप्रायसे आश्रमके निकट अवस्थान करने लगे। एकदिन उन्हींने गौतमका रूप धर अहलयाके साथ संभोग किया था। संयोगवश उसी समय गौतम ऋषि सशिष्य आश्रम आ पहुँचे। इन्द्र गौतमके भयसे विडालरूप धर अपेक्षा करने लगे। गौतम गृहमें प्रवेश कर अहल्याको अवस्था देख क्रुद्ध हो बोले—‘पापेयसि। तू यह क्या कर रही है।’ इसके बाद उस विडालको देख गौतमने कहा—‘तुम कौन हो। मत्स्य सत्य बोली, नहीं तो अभी तुम्हें भस्म करता हूँ।’ इस पर मार्जाररूपी इन्द्र भयसे कताञ्जलिपुटमें बोले—‘प्रभो! मैंने मायासे विमुग्ध हो यह पापकार्य किया है, अब आपका शरणपत्र हुआ हूँ। कृपया मेरी रक्षा कीजिए।’ ऋषिने यह कह कर उनको शाप दिया—‘पापके प्रतिफलस्वरूप तुम्हारे शरीरमें एक हजार भग होंगे।’ तदन्तर अहल्यासे कहा—‘पापेयसि। तुम भी अतिकुक्षित हो।’ इस समय अहल्या रो

कर बोली—‘स्वामिन्! इस पापिष्ठने आपके रूपसे मोहित कर मुझे सर्वनाश किया। मैं पापिनी नहीं हूँ। मुझे क्षमा कीजिए।’ गौतम ऋषि ध्यान योगसे सब जान फिर बोले—‘अहल्ये! तुम नदीरूपमें प्रवाहित हो मुझसे पुनः मिल जावोगी।’ वाट इन्द्रको अपने चरणां पर निर्पतित देख कहा—‘इन्द्र! तुम भी गौतमोंमें स्नान कर पापमुक्त हो सहस्रचक्षु लाभ करोगे।’ अहल्या नदी रूपसे फिर भी पतिके साथ मिल गई। इन्द्रने भी इस अहल्यासङ्गममें स्नान कर सहस्र चक्षु लाभ किये। तभीसे इस सङ्गमका और एक नाम इन्द्रतीर्थ हुआ। सङ्गम स्थल पर अभी तीर्थलमण्डी नामका ग्राम देखा जाता है।

वृद्ध गौतमीकी नामोत्पत्तिके मन्वन्तरमें भी गौतमीसाहात्म्यमें इस तरह लिखा है,—‘महर्षि गौतमने एक वृद्धासे विवाह किया था। एक दिन वशिष्ठादि कई एक ऋषि गौतमके आश्रम पहुँचे और उस वृद्धाको देख उनमेंसे एकने कहा—‘गौतम! इस वृद्धासे तुम्हें पुत्रीत्पादन की सम्भावना नहीं है।’ यह सुन अगस्त्यने गौतमसे कहा—‘गौतमी नामको तुम्हारे लायी हुई नदीके तीर पर वृद्धाके साथ ईश्वराराधना करनेसे तुम्हारा मनस्काम सिद्ध होगा।’ यह सुन गौतम गौतमीतीरको आ शिव, गङ्गा और विष्णुको आराधना करने लगे। गङ्गाजीने साक्षात् ही दोनोंके अङ्ग पर पवित्र जल छिड़क दिया। इससे वे दोनों बहुत अच्छे देख पड़ने लगे। गङ्गासे अभिषिक्त वह जल नदीरूपमें वह सागरको जा मिला वही वृद्धगौतमी नामसे ख्यात है। गौतम ऋषिने इसके तीर पर वृद्धेश्वर नामक शिवलिङ्ग स्थापन किया था। स्वयं शिवजी इस वृद्धासङ्गममें स्नान कर ब्रह्महत्याजनित पापसे मुक्त हुए थे। इस स्थानमें स्नान करनेसे वन्ध्या स्त्री भी पुत्ररत्न लाभ कर सकती है।’

कौशिको—गौतमीसाहात्म्यमें लिखा है कि विश्वामित्रने ब्राह्मणत्व पानेके उद्देशसे वशिष्ठासे कुल्या नामकी नदी ला उसके तीर पर तपस्या की थी। कौशिकसे लाये जाने पर यह काशि नामसे मशहूर है। इसके दोनों तीर पर पुण्ड्रक रामेश्वरक्षेत्र और लक्ष्मणेश्वरक्षेत्र है। यहाँ राम और लक्ष्मणने शिवलिङ्ग स्थापन किया था।

वशिष्टके गौतमीसे क्लृप्ता लाने तथा उसके तीर पर तपस्या करनेके कारण इसका नाम वशिष्टासगम पडा। सागर और वशिष्टाके मध्य त्रिकोणाकृति भूभाग अन्तर्वेदो नामसे विख्यात है। यद्वा नरसिंह देव विद्यमान है, यह वैकृष्ण सहस्र पुण्यभूमि है। माघ मामकी रविधार शुक एकादशीको वशिष्टासङ्गममें स्नान कर नरसिंह देवकी पूजा करनेसे ममन्त पाप दूर हो जाते हैं।

गोदावरी-मन्द्राज प्रान्तका एक जिला। यह अक्षा० १६ १८ एव १८ ३ ७० और देशा० ८० ५० तथा ८२ ३६ पू०के बीच उत्तरपूर्व सागरतट पर पडता है। क्षेत्रफल ७८७२ वर्गमील है। इनके उत्तरपूर्व विजगापट्टम जिला, उत्तर विजगापट्टम जिला तथा मध्यप्रदेश, पश्चिम निजाम राज्य और दक्षिण पश्चिम कृष्णा जिला है गोदावरीके तीन विषम विभाग हैं—एजिन्सी प्रान्त, गोदावरी नदीका सिधाडा और ल चा तालुक। उत्तर पूर्व कोण में द्विभ्र भिन्न पर्यत थैगियां हैं। गोदावरी नदी मध्य भागसे प्रवाहित हुई है। धवलेश्वरम् बाधसे समुद्रतट तक धा०के खेत हैं। वर्षाकालको वडा कितना ही पानी भर जाता और सिधा गाँवा, नहरके किनारे, सडकी तथा खेतकी मेडोंके कुछ भो देखनेमें नहीं आता। धान बटने पर सारा प्रान्त खेत जैसा देख पडता है। नदीके वाम तटकी पूर्व सिधाडा, दक्षिण तटको पश्चिम सिधाड और पानोसे घिरी हुई बडी तिलटी जमीनको मध्य सिधारा कहते हैं।

इस जिलेमें १७० मोल तक समुद्रका किनारा है। सिधा गोदावरी सावरीके दूरसे कोड भो बडी नदी नहीं। चिडिया बहुत अच्छी होती है। जिलेका स्वास्थ्य अच्छा है, परन्तु गीतकालको ज्वरका प्राबन्ध रहता है। रोगसे बचनेके लिये लोग अफीम खूब खाते हैं। वर्षा कालको बाढ धानेका बडा भय है।

पूर्वकालको गोदावरी जिला कनिङ्ग और बंगो राज्यमें नगता था। प्राचीन राज्य जहाँ तक मालूम है, था ध थे। इ०से २६० वर्ष पहले अशोकने उन्हे जीता। किन्तु पौडिकी यह ४०० वर्ष तक राज्य करते रहे। उनका साम्राज्य दम्पद और मैसूर तक विस्तृत था। इ० श्य शताब्दीके प्रथम काल पक्ष राजाधाने उनका ध्यान प्रथिष्ठत किया। इ० ७वीं शताब्दीको यह प्रान्त

पूर्व चातुर्व्याका अधिकारभुक्त हुआ। ८८८ ई०को यह चीन साम्राज्यके इस शर्त पर जागोरदार बने कि लडाईके समय मदद देगे। १२वीं शताब्दीके मध्य वरङ्गलके राजत्व हुआ। परन्तु यह सुदूर सुदूर राज्योंमें विभक्त थे। १३२४ ई०को कुछ समयके लिये मुसलमानोंने गोदावरी पर अधिकार किया। परन्तु कौडवीड और राजमहेन्द्री के राजाश्रीने उन्हे निकाल बाहर किया था। १५वीं शताब्दीके बीच उडीमाके गजपति राजा हुए। इसके बाद फिर मुसलमान पक च गये। १४७० ई०को गुल बर्गके सुलतानको यह प्रान्त उनके साहाय्यके बदले मिला था। कुछ वर्ष बाद उन्हेने सब गजपति राज्य अपने अधिकारमें कर लिया। परन्तु गुलबर्ग राज्य क्षिन्न भिन्न होनेसे शताब्दी समाप्तिके पहले ही गजपतियोंका राज्य पुन प्रतिष्ठित हुआ। १५१५ ई०को विजयनगरके सब से बडे राजा कृष्णदेवने कुछ समयके लिए इस प्रान्तको अपना अधीनस्थ बनाया था। परन्तु १५४३ ई०को गोलकुण्डाके पहले सुलतान और गजपति राजाश्रीसे भगडा हुआ। उन्हेने इनसे कृष्णा और गोदावरीके बीचका सब देश मागा था। इससे उन प्रान्तोंमें बलवा हो गया। राजमहेन्द्रीके गजपति राजाने जब विद्रोहियोंको माहाय्य किया, मुसलमान विगड उठे। उन्हेने गोदावरी पर करके सुदूर उत्तर पूर्व तक अपना अधिकार बढाया था। १५७२ ई०को राजमहेन्द्र हस्तगत हुआ और कुछ वर्ष बाद गोदावरीके उत्तर समय देशों पर उनका आधिपत्य हो गया। १६८७ ई०को और गजबन गोलकुण्डाके सुलतानको परास्त किया था। उस समय सब बडे बडे जमोन्दार स्वाधीन हो गये। १७६५ ई०को अ गेर्जेसे यह जिला पाया था। पहले गोदावरी जिलेका पडा फोजदार हुसैन अली खाक नाम लिखा गया, किन्तु १७६८ ई०को प्रकृत अ गेर्जे अधिकार हुआ। जमोन्दारोंको सर कर्गीसे फिर कलेक्टरेट बनाये गये। १८५८ ई०को गोदावरी जिला कायम हुआ। १८४० ई०को गोदावरीका बाध बनाया। १८७८ ई०को पावत्य प्रदेशमें रथा विद्रोह फूट पडा, जो १८८२ ई०को शान्त हुआ। इस जिलेमें वि तने ही बाढ मठोंका ध मययोग और हिन्दू कीर्ति निर्दग्धन मिला है।

गोदावरी जिलेकी लोकसंख्या प्रायः २३०१७५६ है। इसमें २६७८ शहर और गांव आवाट है। यह जिला १६ तालुकों और तहसीलोंमें बंटा हुआ है। पहाड़ोंमें कोई और मैदानोंमें तेलगु लोग रहते हैं। हिन्दुओंमें प्रति शत ५ ब्राह्मण हैं।

मवेशियोंमें बीमारी बहुत होती है। कुसग्ना भेड़ अपने रूपके लिये मशहूर है। गोदावरीका जङ्गल अधिक मूल्यवान् है। इससे वार्षिक कोई १॥ लाख रुपया आता है। ५॥ मील कोयलेकी खान है। किन्तु कोई अच्छे तरह नहीं मिली। ग्रेफाइट कई जगह निकाला जाता है। एजेन्सीमें लोहेके कामके चिह्न पाये जाते हैं। सिंघाड़ेमें गन्धककी दो छोटी छोटी खानें हैं। जने कालीन और मोटे कम्बल बनाये जाते हैं। पहले यह जिला अपने नफोस मूतो कपड़ेके लिये प्रसिद्ध था। परन्तु अब वह बहुत थोड़े गांवोंमें होता है। मोटा मूतो वस्त्र कितनी ही जगह बुना करते हैं। शकर और शराबका भी कारखाना है। ताड़का गुड़ खूब तैयार होता है। इसके लिये जिलेमें कोई ४००००० पेड़ोंका रस खींचा जाता है। धानकी कुटाई भी कम नहीं चलती। रेडीके तेल और चमड़ेके कुछ कारखाने हैं। एक जगह लोहा गलाया जाता है। नीलकी कई कोठियां हैं। दो सरकारी और एक साधारण कुल तीन स्थानों पर नमक बनता है। चावल, दूमरे अनाज, तम्बाकू, तेलहन, घी, नारियल, चमड़े और फलकी रफ्तानो जाती है। दक्षिणसे रुई भी ला करके विदेश भेजते हैं। सालमें कोई ८४ लाखका माल विलायत जाता है। प्रधान व्यवसायी मारवाडी हैं। वह कपड़ेके साथ अफोमका विनिमय खूब करते हैं। छोटा मोटा काम कोमतिथीके हाथमें है। कितने ही हफ तावार बाजार लगते हैं।

मन्दाज रेलवेकी ईष्टकोष्ठ शाखा इस जिलेमें चलती है। ८१८ मील पक्की और २८८ मील कच्ची सड़क है। ८१४ मील तक उस पर दोनों ओर पेड लग हैं। ४८३ मील नहरमें नावें चलती हैं।

प्रबन्धके लिये गोदावरी जिलामें ४ उपविभाग हैं। एजेन्सी प्रान्तकी पूर्वा सब-डिविजन समझते जिसका प्रबन्ध एक युरोपीय डिप्टी कलेक्टर करते हैं। मामूली चोरी बहुत होती है।

मुसलमानोंके समय मंजिक स्थानोंकी छोड़ करके यह जिला जमीन्दारियोंमें बंटा था। वह उपजका पञ्चमांश पाते थे। १८०२-३ ई०को बङ्गाल जैमा टायरी बन्दोवस्त हुआ। किन्तु जमीन्दारोंके विगड़ जनसे बहुत-सी जमीन गवर्नमें गटके हाथ लगी। १८४६ ई०को मालगुजारी कायम की गयी थी। उसको टट्टेने पर किसान सब तरह आवाट हुए। गोदावरीकी आबपाशी खुल जानेसे १८६० ई०को सब जिलेमें रयतवारी बन्दोवस्त कायम किया गया। १८८६ ई०को पैमायश पूरा हुई। १८८८ ई०को दूमरे पैमायश को गयी थी। फिर मालगुजारी बढ़ करके एक तराई पहंचो। इस जिलेकी कुल मालगुजारी ४२३२०००० रुपया है।

यहां ३ मुनिमपालिटियां हैं। इसके बाहर जिला-बोर्ड और तालुक बोर्ड इन्तजाम करते हैं। २५ छोटे शहरोंका इन्तजाम १८८४ ई०की ५ मन्दाज धाराके अनुसार होता है। शिक्षाका प्रभावे पहले बहुत अच्छा था। किन्तु अब विगड़ गया। इसमें प्रति वर्ष कोई ३८०००० रु० खर्च होता है। यहां दूमरे जिलेकी वनिस्वत मुसलमान ज्यादा पढ़े लिखे हैं। मन्दाजके जिलेमें तालोमकी निगाहसे गोदावरीकी गणना छोटी है। एजेन्सी प्रान्त शिक्षामें सबसे पिछला है। बालिकाओंकी भी शिक्षा दी जाती है। सीमें चारसे अधिक आदमी शिक्षित नहीं। १६०४ ई०को गोदावरी जिलेमें सब मिला करके १७४० शिक्षण संस्थाएं थीं।

गोटो (हिं० स्तो०) १ बड़ी नदी या समुद्रमें घेरा हुआ स्थान। इस स्थान पर जहाज मरम्मतके लिए वा तूफान आदिके उपद्रवसे रक्षित रहनेके लिए रखे जाते हैं। (पु०) २ बरार पञ्जाब और अवधमें होनेवाला एक तरहका बवूल। यह नहरोंके किनारोंके ऊंचे स्थान पर लगाया जाता है।

गोदुग्ध (म० लो०) गायका दूध। भावप्रकाशमें वणके भेदसे गोदुग्धका गुण लिखा है—कालोगायके दूधका गुण वायुनाशक और अत्यन्त उपकारो है। पीली गायके दूधका गुण पित्त और वायुनाशक है। सफेद गायके दूधका गुण कफकारक और गुरुपाक है। लाल या विचित्रवर्णकी गायके दूधका गुण वायुनाशक है। बसहोना गायके

दूधका गुण त्रिदोषनाशक है। बहुत दिनोंकी प्रसूता गायके दूधका गुण—त्रिदोषनाशक, तृप्तिकारक और अत्यन्त बलकारो है। जो गाय जङ्गलमें तथा पहाड पर विचरती है उसके दूधका गुण गुरु और क्षिप्त है। जो घास बहुत कम खाती है उसके दूधका गुण गुणुपाक, बलकारो, अत्यन्त शुरुद्धिकर तथा सुप्त मनुष्योंके लिए बहुत उपकारी है। जो गाय पयाल, घास या कपासका बीज खाती है उसका दूध रोगीके लिये हितकर है।

(भा. १०७१)

गोदुग्धटा (सं स्त्री०) गोदुग्ध टटाति सम्पादयति रा क। 'एक प्रकारकी घास, चणिका टण।'

गोदुग्धा (सं स्त्री०) १ चणिका टण, एक प्रकारकी घास। २ इन्द्रवारुणो नता। ३ गोडुम्बा। ४ चिर्मटिका। ५ ककडी।

गोदुग् (सं स्त्री०) गा दोग्धि दुग् क्तिप्, ६ तत्०। १ गाय दूधनेगला। (पु०) २ गोप, ग्वाला।

गोदूनीका (हिं स्त्री०) पूर्विय बगाल और आमास आदि प्रदेशोंमें होनेवाला बेशुको जातका एक वृक्ष। इसको चिकनी और चमकीली टहनिया खाड़ी बनानेके काममें आती है।

गोडो—बङ्गाल प्रान्तमें रहनेवाली एक जाति। यह शब्द गदुका अपभ्रंश है। जो गड (Goat) के स्वामी थे वे गोडो कहते कहते धीरे धीरे गोदो कहलाने लगे। किमो दूसरे विद्वान्का मत है कि गदाको धारनेवाले महाधीर जाति गोडो कहलाए। धुनेक प्रमाणोंमें जान पडता है। कि पूव बगालमें हिन्दू या मुसलमान राजा या यादगात्रों के समय यह जाति बडो जेर गिना जाती थी और फ्रांसीसमें भरतो को जाती थी। अजयल यह जाति पर्नामीके पास पाम जुम्पो पैगा करनेवाली मानी जाती है। इटिया गयनसंगके राज्यमें पहने यह जाति लट मार करनेमें प्रसिद्ध थी। परन्तु एमो देगा इस जातिना भवत्र नहीं है। अजयल अरतमें खेतो और व्यापार करते हैं और मान प्रतिष्ठा भी इन्होंने कुछ घटा ली है। ये धट्टे बडो धीरताके चिह्न प्रकट करते हैं। ये कठिनमे कठिन अमानाधिक (कमरत) कर सकते हैं।

गोदोह (सं पु०) गया दोह ६ तत्०। १ गोदोहन,

गायका दुहना। २ गोदुध, गायका दूध। ३ कालविशेष, गाय दुहनेमें जितना समय लगे।

गोदोहन (सं स्त्री०) गोर्दोहन, ६ तत्। १ गोका दोहन गायका दुहना। २ गोदोहनकाल, गाय दुहनेका समय। (भा. १०७१)

गोदोहनी (सं स्त्री०) गावो दुहन्तेऽस्यां गो दुह आधारे ल्युट डोपे। गोदोहनपात्र, वह पात्र जिममें गाय दुहो जाती है।

गोहा—छोटानागपुर प्रान्तके मन्तान परगनेका सब डिविजन। यह अक्षां २४ ३०' तथा २५ १४ ०' और देगां ८० ३ ३ एव ८० ३६' पू०के मध्य अवस्थित है। अक्षल ८६० वर्गमोल और लोकसंख्या प्राय २८०३२३ है। यहाँ पश्चिम तथा दक्षिण जङ्गल एव पहाड और पूवको उपज.क जमीन है। इसमें १२०४ गाव बसते हैं। गोहा—छोटा नागपुर प्रांतके मन्तान परगने जिलेमें गोहा उपविभागका सदर। यह गाव अक्षां २४ ५०' ०" और देगां ८० ६० १० पू०में पडता है। खावादी कोई २२०८ है।

गोष्टव (सं पु०) इवति द्व अच गोष्टव, ६ तत्। गोमूत्र, गावका मूत्र।

गोध (हिं स्त्री०) गोह नामक जगनी जानवर। गोध—ये हिन्दीके एक प्रसिद्ध कवि थे। इनका जन्म १६८४ ई०में गुवा था।

गोधज (सं पु०) गोधा। गोधन (सं स्त्री०) गवा धन समूह, ६ तत्। १ गांसमूह, गोश्रीका कुण्ड। (वि०) गौरव धनमय्य, वृद्धी०। २ जिमको गोरूपी सम्पत्ति है। (ज्ञो०) गौरव धन। ३ गोरूप धन गी रूपी सम्पत्ति। (पु०) धन रथे भावे अच गोधन रथ इय धन रथो यम्य वृद्धी०। ४ म्युलाय याण, एक तरङ्गका तीर (जिमका फल चाटा होता है।

गोधन (हिं पु०) एशिया, युरोप तथा अफ्रिकामें पाये जानेवाला एक तरङ्गका पत्थर। इसको चीब माल, मक्का भूरा पार पौर हरे रंगके होते हैं। एक बार यह ५ में ८ पाण्डे देगा है।

गोधता (सं स्त्री०) एक प्रकारका घोंघ।

गोधन्य—घोमपरिघाजक वर्णित एक विन्ध्यन महाद्वीप।

गोधर (सं० पु०) गां पृथिवीं धरति धर-ग्रच् । १ पर्वत, पहाड । २ प्रभामखण्ड वर्णित एक प्राचीन पुण्यतीर्थ, यहाँ भगवान् गोपति विराजमान हैं । ३ काश्मीरके एक राजाका नाम ।

गोधरा—बम्बई प्रांतके पांचमहाल जिलेका उत्तर तालुक । यह अक्षा० २२' ४३' एवं २३' ६' उ० और देशा० ७३' २२' तथा ७३' ५८' पू०के बीच पड़ता है । क्षेत्रफल ५८५ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः ८६४०६ है । माल-गुजारी और सेस कोई ८२०००) रु० पड़ता है । इस तालुकमें खेती कम और जंगल भारी बहुत है । उत्तर को ये नाइट पत्थरकी चट्टानें पड़ी हैं । आवहवा अच्छी नहीं । ज्वार ज्यादा बोई जाती है ।

गोधरा—बम्बई प्रांतके पांचमहाल जिलेमें गोधरा तालुक-का सदर । यह अक्षा० २२' ४६' उ० और देशा० ७३' ३७' पू०में गोधरा-रतलाम रेलवे पर पड़ता है । जन-संख्या प्रायः २०८७५ है । पहले वहाँ अहमदाबादके मुसलमान नवाबोंका एक सूबेदार रहता था । आजकल यह रियाकाण्टा पोलिटिकल एजेंसियोंका भी सदर है । १८७३ ई०की मुनिमपालिटी हुई । चमड़ेके दो कार-खानोंमें रंगाईका मामूली काम होता है । लकड़ीका बड़ा कारवार है । शहरके पाम ही ७० एकरका पका तालाव है ।

गोधर्म (सं० पु०) गोर्धर्मः, ६-तत् । पशुकी नाईं अत्रि-चारशून्य मथुन, पशुओंको भाँति समागम करना ।

(भारत १।१०४ ५०)

गोधम (सं० पु०) अङ्गिरा वंशके एक ऋषिका नाम ।

गोध सामन् (सं० पु०) साम भेट ।

गोध्रा (सं० स्त्री०) गुध्यते परिविध्यते बाहुरनया गुध करणे-घञ्-टाप् । १ धनुषके गुणाघातनिवारणार्थं चाम-प्रकोष्ठनिवद्ध चर्मनिर्मित पट्टिका, धनुषके गुणाघात निवारणके लिए बायें प्रकोष्ठमें बंधी हुई चमड़ेकी पट्टरी । (भारत १।१७३) २ जन्तुविशेष, गोह नामक जन्तु । ३ वटपत्रा पाषाणभेट । मनःशिला ।

गोध्राख्य (सं० पु०) गोधा सर्प, गोसाँप ।

गोध्राह्नी (सं० स्त्री०) गोधाया इव अग्निः मूलमस्याः, बहुव्री० । गोधापटी नामकी लता । गोधापटी इका ।

गोध्रापट्टिका (सं० स्त्री०) गोधाया इव पादो मूलमस्या, बहुव्री० । १ गोधापटी लता । २ तालमूली । रक्त-लज्जालुका ।

गोध्रापटी (सं० स्त्री०) गोधाया इव पादो मूलमस्याः, बहुव्री० । स्वाङ्गत्वात् डीप्-पद्भावश्च पूर्ववत् । लताविशेष, हंसपटी नामकी लता (*Cissus Pedata*) इसका संस्कृत पर्याय—सुवहा, हंसपटी, गोधाह्नी, त्रिफला, त्रिपटी, मधुस्रवा, हंसपाटी, हंसपाटिका, हंसाह्नी, रक्त-पाटी, त्रिपटा, घृतमण्डिका, विश्वयन्त्रि, त्रिपाटिका, त्रिपाटी, कीटमारी, कर्णाट, ताम्रपाटी, विक्रान्ता, ब्रह्मादनी, पदाह्नी, शीतांगी, सूतपाटिका, सञ्चारिणी, पट्टिका, प्रह्लादी, कोटपाटिका, धार्तराष्ट्रपटी, गोधा-पट्टिका, वली, द्विदला और हंसवती है । इसका गुण कटु, उष्ण, विष और भूतभ्रान्तिहर, अप्स्मारटोपनाशक एवं रसायण है । (रत्ननि०)

इस लताके मूल या पत्रकी सादृश्यमें मतभेद देखा जाता है । किसी भिषक्शास्त्रवेत्ताके मतसे इसका पत्ते गोधा या हंसचरणके जैसे त्रिदलविशिष्ट है, और कोई कोई कहता है कि पत्तेका मूल ही गोधा या हंसके पद सरीख है एवं मूल हंसचरणके जैसा रक्तवर्ण है । पत्तेका सादृश्य देख चिकित्सकगण हंसपटी लताको ही गोधापटी कहा करते हैं । इस लताके तीन भेद हैं । जिसके हस्तस्थित शीनों हन्तीमें तीन तीन पत्ते रहते उसे चिकित्सकगण प्रकृत गोधापटी कहते हैं । जिस जातिके गोधापटीके केवल एक हन्तमें तीन तीन दल रहते एवं प्रत्येक दलके पाम छोटे छोटे छेद देखे जाते उसे तीन पत्ती या छोटी गोधापटी कहते हैं । तृतीय जातिको बड़ी गोधापटी मानते हैं । इसके प्रत्येक हन्तमें एक एक पत्ता रहता जो देखनेमें बड़ा कलमीके पत्तेके जैसा लगता किन्तु उसकी अपेक्षा कुछ छोटा और गोलाकृति होता है । यह लता अग्नियुक्त और अत्यन्त विस्तृत होती है । इसके फल मटराकृति, गुच्छ भावापन्न तथा पकने पर लक्षणवर्णके हो जाते हैं ।

२ मूसली नामकी औषध ।

गोध्रासांस (सं० स्त्री०) गोधा सर्पका सांस ।

गोध्रायस (सं० स्त्री०) गा ददाति गो-धा बाहुलकात् असुन् । गोधारक, गो धारण करनेवाला ।

गोधायतो (स० स्त्री०) गोधा तत्पदसादृश्य विद्यतेऽस्या
गोधा मत्पु मस्य व डीर् च । १ गोधापदी । ० घटपनी,
उट हृचकी पत्ती ।

गोधापत्ती (स० स्त्री०) गोधासदृशो लता । १ गोधायतो
२ इमपदी नामको लता ।

गोधावीणाका (स० स्त्री०) गोधायाश्मरणा नडा वीणा,
ह्रस्वा गोधावीणा, ह्रस्वाय कन् गोधाके चमे द्वारा आवड
कुद्रुगीणा, गोहके चमडे से बधा हुआ वीणा ।

गोधास्कन्द (०) गोधास्कन्द ०के।

गोधास्कन्ध (स० पु०) गोधिय स्कन्धोऽस्य, बहुव्री० । अरि
मेद नामका एक तरहका हृच ।

गोधि (स० पु०) गौर्नत्र धीयतेऽस्मिन् धाअधिकारके कि ।
० लनाट । गुभाति सङ्गमा कुप्यति गुध इन् । २ गोधिक
गोह कतु । (शब्दरत्नाशुकी)

गोधिका (स० स्त्री०) गुभाति गुध ण्वुल् टापु । १ गोधा
गोह । २ एक तरहकी द्विपकली ।

गोधिकात्मज (स० पु०) गोधिकाया आत्मज, ६ तत् ।
१ एक तरहका जानवर जो नर मर्प और मादा गाइके
स योगसे उत्पन्न होता है । २ गोहको आकृतिका एक
प्रकारका छोटा जतु । यह हृचके कीटर (खोदर) में
रहता है । कभी कभी यह बहुत भयानक शब्द भी किया
करता है । बहुतेका विश्वास है कि उसको अवस्था
जितनी अविश्रु होती जाती है उतनी ही बार यह शब्द
किया करता है । इसका पर्याय—गोधिय, गोधेर और
गोधार ह ।

गोधिकासूदन (स० पु०) गोधिरक, जनगोह, यह गोह
जो जलमें रहता है ।

गोधिनी (स० स्त्री०) गोध क्रौडाविशेषोऽस्यस्या गोध
इनि । सविका, कटाई, बरह टा ।

गोधो (हि० स्त्री०) शिव मन्त्रो ।

गोधोग (स० पु०) ट्रोण मुष्ठी ।

गोधूम (स० पु०) गुध वाटुलकात् ऊम् । गोधूम, गेहू ।
गोधूम (स० पु०) गुधते विटयते स्वगादिभि गुध ऊम् ।
१ नागर ग नार गो । २ रोहिद्विगीय । इसका सङ्कृत
पर्याय—मृदुगुध, अपूप, खे च्छभोजन, यवन, निसुपकोर

रत्नान् शोर सुमनसा । बडाना भावामें इसे गम, गोम,
शोर हिन्दीमें गेहू कहते हैं, फारसीमें गुन्दुम्, आरबीमें
हिल्ले, तामिलमें गोदुखी, तेलगुमें गोदुमलु, मलयमें
गन्दुम, पञ्जाबमें खानक, प्रोकमें वामि, हिब्रूम खिच्चा,
इटालीमें ग्रोनी, (Grano) जर्मनीमें Weetzen रूपमें
Pschemiz, सुइसमें Hvele, पोर्तगीजमें Trigo, थोल
न्दाजमें Tarw, डेनमारमें Hvede, फरासीसीमें Fro
ment, Bled और अंगरेजीमें इसे Wheat कहते हैं ।
इसका पौधा डेढ या दोने दो हाथ ऊचा होता है और
इसमें कुयको तरह लम्बी पतली पत्तिया पीडोसे लगी
हुई निकलती हैं । पीडोके बोधसे सीधे ऊपरकी ओर
एक सीक निकलती है । इसमें बाल लगती हैं । गेहू की
खेतो अत्यन्त प्राचीन कालसे होती आई है । गेहू से
समस्त देगोंमें मैदा और आटा प्रसृत होता है । पृथ्वीके
नानास्थानोंमें यह शस्य उत्पन्न होता है । यूरोपके अटला
ण्टिक महासागरके उपकूल पर ३०से ५० अचान्तरवर्ती
स्थानमें, रोक्री पर्वतके पश्चिम और उत्तरमें, दक्षिण
अमेरिकाके पश्चिम कूलमें एवं उष्णकटिबन्धके मध्यवर्ती
समतल और उच्च भूमिमें गेहू अधिकतासे उत्पन्न
होता है ।

बवार, कीधम्बुर और ब्रह्मदेशमें भी गेहू अधिक
हुथा करता है । भारतवर्षमें जिस तरहके गेहू उपजाये
जाते हैं उनका नाम यह है,—

१ Triticum vulgare var hybernum ग्रीक
कालिक ।

२ T Vulgare, var, aestivum वासन्तिक ।

३ L. Compositum, । मसरदेश्यजात ।

४ T I pelta फरासीय ।

५ T Monococcum (इस गेहू का दाना अन्ध
गेहूको नाई दो भागमें बँटे नहीं हैं ।)

ईङ्गलैण्डमें गर्त और वसन्त कालमें पूर्वोक्त प्रथम दो
जातिके गेहू उपजाये जाते हैं, किन्तु भारतवर्षमें समस्त
प्रकारके गेहू पैदा होते हैं । कार्तिक मासमें अथवा
माघ मासमें आरम्भमें ही गेहू बोया जाता पथ बेसाख
मासमें काट लिया जाता है । पत्र तक ऊपर १३०००से
१५००० फीट ऊँची भूमि पर भी गेहू जन्मता है ।

कप्तान वेवसाहवने हिमालय पर्वतके त्रिजिण्को और १२००० फुट ऊंची स्थान पर गेहूँकी उपजको देखा था। स्थिति उपत्यकाके लाड़ा और लट्ज़ नामक स्थानमें १३००० फीट ऊंची जगह पर एवं मिन्धुनटोके निकट वर्त्ती उपत्यकाके मध्य उगसी और चिमरा नामक स्थानमें ११०००से १२००० फीट ऊंची भूमि पर गेहूँ उपजाया जाता है। युक्तप्रदेशमें एक तरहका सफेद गेहूँ होता है जिसको 'दुग्ध गोधूम, कहते हैं। शतद्रु नदोके दोनों उपकूल पर एवं उनके किनारेकी जलमिक्त वालुकामय भूमि पर इस तरहके गेहूँ उपजते देखे गये हैं। पञ्जाब प्रदेशके गेहूँमें बाल होती है और उसके आटेकी रोटी लाल और हल्दी रंगकी होती है। मुलतानके गेहूँमें बाल नहीं होते। अयोध्या प्रदेशमें श्वेत मोरिलवा, बालहीन, रामोदवा और लालिया ये चार प्रकारके गोधूम उपजते हैं। सम्बलपुर जिलेमें भी गेहूँकी खेती बहुत होती है। जव्वलपुर, नरसिंहपुर, होसेङ्गावाट, मन्द्राज प्रदेश और ब्रह्मराज्यमें प्रचुर परिमाणमें गेहूँकी फसल होती है। वस्वई प्रदेशका गेहूँ काठियावाड़ जिलेके गेहूँसे कुछ सफेद और भारो होता है, इसलिये उसमें सूजी और मैदा अधिक प्रसृत होता है।

परीक्षा कर देखा गया है कि भारतवर्षका गेहूँ पृथ्वीके समस्त स्थानोंके गेहूँसे उत्कृष्ट है। इसी कारण भारतवर्षसे प्रतिवर्ष सात करोड़ रुपयेके गेहूँ विलायत भेजे जाते हैं।

चीन देशमें भी गेहूँका प्रचुर व्यवहार देखा जाता है।

यूरोपीय चिकित्सकके मतसे इसका गुण—स्निग्ध और बलकारक है। रक्तपित्त रोगमें और टैक्किक प्रदाहमें इसका प्रलेप विशेष स्निग्धकर है। विष खाने पर मैदा और जलके साथ पारा, ताम्र, दस्ता, रूपा, लौह और अयोडाइन मिला कर सेवन करनेसे विषका प्रतिकार होता है। उत स्थान पर मैदेकी पुलटिम लाभ दायक है।

वैद्यकाशस्त्रके मतसे इसका गुण—स्निग्ध, मधुर, वात, पित्त और दाहनाशक, गुरुपाक, श्लेष्मा, मत्तता, मल, रुचि और वीर्यकारक। (राजनि०) बृंहण, जीवनका हितकारक शीतवीर्य, भग्नसन्धान और धैर्यकारी एवं मारक है। (राजवृद्ध) भावप्रकाशमें लिखा है कि गोधूम तीन प्रकार-

का होता है—महागोधूम, माधुली और नान्दीमुख। महागोधूम इस देशमें बड़ गोधूमा नामसे प्रसिद्ध है, यह पश्चिम देशमें लाया जाता है और माधुलीसे कुछ बड़ा रहता है। माधुली गोधूम मध्यदेश वा प्रयाग प्रदेशके पश्चिममें यहाँ लाया जाता है। नान्दीमुख गोधूम बलहीन और दीर्घकृतिक होता है।

महागोधूमका गुण—मधुर रस, शीतवीर्य, वातघ्न, पित्तनाशक, बलकारक, स्निग्ध, भग्नसन्धानकारक, धातु वृद्धिकर, रुचिकारक, वर्णप्रसादक, व्रणका हिनकर, रुचिकर और शरीरका स्थिरतासम्पादक है। नया गेहूँ खानेसे कफकी वृद्धि होती है, किन्तु पुराना खाने पर उसमें कफवृद्धि नहीं होती। माधुली गोधूमका गुण—शीतवीर्य, स्निग्ध, पित्तनाशक, मधुर रस, लघुपाक, शुक्रवर्द्धक, शरीरका उपचयकारक और सुपथ्य है।

नान्दीमुख गोधूमका गुण मधुली गोधूमके सदृश।

(भावप्रकाश पूर्वकण्ड १ भाग)

गोधूमक (सं० पु०) गोधूम इव कं शिरो यस्य, बहुव्री०।

सर्पविशेष, गेहूँग्रन नामक सर्प। (मनु०)

गोधूमचूर्ण (सं० स्त्री०) गोधूमस्य चूर्णं, इ-तत्। चूर्णीकृत गोधूम, मैदा, आटा।

गोधूमज (सं० पु०) तवजोर, पायस, तममै, खीर।

गोधूमफल (सं० स्त्री०) गोधूम, गेहूँ।

गोधूममण्ड (सं० पु०-स्त्री०) गोधूमकृत मण्ड, गेहूँका बना मण्ड।

गोधूमसम्भव (सं० स्त्री०) सम्भवत्यन्मात् सं भू अपादाने अप् गोधूमः सम्भवो यस्य, बहुव्री०। मैदाकी बनी खड़ी लप्सी।

गोधूमसार (सं० पु०) गोधूमस्य सारः, इ-तत्। गोधूमका सारांश, गेहूँका निर्याम। प्रसृत प्रणाली यों है—गेहूँकी अच्छी तरह साफ कर जखलमें चूर्ण करती है। सन्ध्या समयके पहले इस चूर्णको मट्टीकेपात्रमें रख कर जलसे भर देते हैं। दूसरे दिन सुबह जलको फेंक कर उसे सुखा लेते, इसीको गोधूमसार कहते हैं।

गोधूमचोरिका (सं० स्त्री०) गेहूँकी खीर।

गोधूमाद्यष्टत (सं० स्त्री०) रमायनाधिकार। इसकी प्रसृत प्रणाली इस तरह है—ष्टत ४ शराव, दुग्ध १६ श०

में गोधूम १०० पल, जल २० श० डाल कर काटा प्रभुत कर जब अन्तमें केवल ८ श्राव वच जाय तो उसे नीचे उतार ले और गोधूम, मुञ्जाफल (अभावमें तालमुस्तक), मापकलाय (उरट), द्राक्षा (दाख), परुषफल (नोनी कटमरैया) काकोलो, चीरकाकोलो, जीवन्ती, शतमूली, अश्वगन्धा, पिण्डी खर्जूर, मधुक फल, त्रिकटु, शर्करा, भद्रातक (अभावमें रक्तचन्दन) और आत्मगुणफल या मूल इत्येकके ३॥ तो ४॥ र को चर्ण कर उसमें मिलाते हैं । इसके बाद गुडवक (दारचोनी), एला (इलायची) पिप्ली, धन्याक (धनिया), कर्पूर, नागकेर प्रत्येकके १०॥ तोले और शर्करा ८ प०, मधु ८ प०को उस में डाल कर ६कुकाण्डमें उसे अच्छी तरह घोटना चाहिए । बाद १२ प० सेवन करनेका विधान है ।

(अक्षरविधान ४८३ पृ ८)

गोधूमि (स० स्त्री) गा धूमयति धूम गिच् अण्-गौरा दित्वात् डोप् । गोलोमिका, श्वेतदूर्वा, एक तरहकी घास जिममें पुष्प भी लगते हैं ।

गोधूमि (स० स्त्री०) गवा क्षुरीयिता धूमि । कालविशेष, मध्या समय । ज्योतिषशास्त्रमें लिखा है कि गोधूमि लग्न सब कार्यामें ही प्रयुक्त है । इससे नक्षत्र, तिथि, करण, लग्न, वार, योग और जामिवादि दोषोका भय नहीं रहता, गोधूमि समस्त दोषोंको नाश करती है । ललाटि ज्योतिर्वेत्ताओंके मतमें शुभ दिन या शुभलग्नके अभावमें अथवा गोधूमिमें अपरिहाय कार्य किया जा सकता है, किन्तु शुभलग्न पाने पर गोधूमिमें कार्य करना निषिद्ध है, करने पर अमङ्गल होता है ।

नारदके मतानुसार पूर्वदिग और कनिष्ठदेशवासियों के लिए गोधूमि शुभप्रद है । गोधूमिमें गन्धर्वादि विवाह और वैश्याका विवाह हो सकता है । दैत्य मङ्गलके मतमें शूद्रके पक्षमें गोधूमि प्रयुक्त है, किन्तु द्विजके लिये अशुभ नर्तक है ।

गोधूमि समयका निरूपण लेकर ज्योतिषशास्त्रमें मतामत ललित होता है । किमो किमी ज्योतिर्विदके मतमें सूर्ययम्यके कुछ अक्षत होनेके बाद दो दण्ड समयकी गोधूमि कहते हैं । शोढे ज्योतिषिक कहते हैं कि सूर्य विम्वके तीन भागोंमें दो भागोंके अक्षत होनेके

बाद दो दण्ड समयकी गोधूमि कहते हैं । सूहृत्तचिन्ता मणिके टीकाकारका कथन है कि उपरोक्त दो मत देगभेट और आचारभेदसे आदरणीय हैं । मुद्गूत्तचिन्तामणिके मतसे हिमन्त और शीत ऋतुमें सूर्य पिण्डोद्धति होने पर गोधूमि होती है । इस प्रकार चैत्र, वैशाख, ज्यैष्ठ और आषाढ मासमें सूर्य अर्द्धास्त, तथा श्रावण, भाद्र, आश्विनी और कार्तिक मासमें सूर्य मङ्गलके स पूर्ण अस्त होने पर गोधूमि हुआ करती है ।

सूहृत्तचिन्तामणिके मतसे हृष्यतिवारमें सूर्यके अस्त होने तथा शनिवारमें स्थित रहने पर गोधूमि शुभप्रद है । गोधूमि समयके लग्नसे अष्टम या पष्ठमें चन्द्र रहे ऐसे गोधूमि समयमें विवाह देनेसे कन्याकी मृत्यु होती है । लग्नमें या अष्टममें मङ्गल रहे तो वरकी मृत्यु होती तथा चन्द्र एकादश वा द्वितीय राशिमें रहे तो वर और कन्या अनेक तरहके सुख पाते हैं

ज्योतिस्तत्त्वके मतमें अथहायण और माघ मासके गोधूमि योगमें विवाह करने पर कन्या विधवा होती, फाल्गुनके गोधूमि लग्नमें विवाह करनेसे पुत्र, आयु और धनकी हृदि होती है । इसी तरह वैशाखमें शुभ और प्रजाहृदि, ज्यैष्ठमें वरकी सम्मानहृदि एव आषाढ मासके गोधूमि लग्नमें विवाह करनेसे धन, धान्य और पुत्र हृदि हुआ करतो है ।

गोधेनु (स० स्त्री०) गौरीव धेनु । दुग्धयती गाम्भी, दुधारी गाय ।

गोधेर (स० त्रि०) शुध वाहुलकात् परक् । रक्षक, रक्षा करनेवाला ।

गोधेरक (स० त्रि०) गोधेर स्वाद्य कन । रक्षक । (पु०) गोधैर म ज्ञाया कन । २ चतुष्टय सर्पविशेष ।

गोधू (स० पु०) गा भूमि धरति गो धू मूलविभुजादित्वात् क । भूधर, पर्वत पहाड ।

गोधा—गुजरातके पाचमहल जिनके गोधा उपविभागके अन्तर्गत एक प्रधान नगर । यह पचा० २३° ४६ ३०' उ० और देश० ७३° ४०' पु० पर अवस्थित है । यहाँ जिनैकी मटर चदानत, टियानी चदानत, शककर कारागार और रीपथालय हैं ।

गोन (हि० स्त्री०) १ पनात्र भरनेका समटा, या कर्षणकी

बनी हुई छोटी थैली। इसमें अनाज भरकर बँलोंकी धीठ पर रख एक स्थानसे दूसरे स्थान पर ले जाते हैं।
२ साधारण बीरा। ३ टाटका कोड़े थैला। ४ नाव खींचनेकी रस्सी। (देशज) एक प्रकारकी घास जिमका माग भी बनता है।

गोनन्द (सं० पु०) १ कार्तिकेयके एक गणका नाम।
२ काश्मीरके एक राजा, ये गोनन्द नामसे परिचित थे। काश्मीर देवा। ३ मत्स्यप्रदेश।

गोनन्द—सूक्तिकर्णामृत घृत एक कवि।

गोनन्दी (सं० स्त्री०) गवि जले नन्दति नन्द-अच् गौरादि-त्वात् डीप। सारसी पत्ती।

गोनरखा (हिं० पु०) नावका मस्तूल।

गोनरा (हिं० पु०) एक प्रकारकी लम्बी घास जो उत्तर भारतवर्षमें होती है।

गोनर्द (सं० पु०) गवि जले नन्दति नर्द-अच्। १ सारसी पत्ती। (Crane) २ देशविशेष। बृहत्संहिताके कूर्मविभागमें इस देशका उल्लेख है। यहाँ महर्षि पतञ्जलिका जन्म हुआ था। (स्त्री०) ३ कैवर्तमुस्तक, एक प्रकारकी घास, नागरमोथा। ४ काश्मीरके एक राजा। (हरिवंश ६१ प०) (पु०) गवि वृषे नर्दति नर्द-अच्। ५ महादेव, शिवजी। (भारत १२२६१ प०) ६ एक प्राचीन ग्रन्थकार। मल्लिनाथने इनके बनाये काम-शास्त्रको उद्धृत किया है।

गोनर्दीय (सं० पु०) गोनर्द देशे भव' गोनर्द-ङ्। १ पतञ्जलि मुनि।

गोनस (सं० पु०-स्त्री०) गोरिव नासिका यस्य, बहुव्री०। अच् नासिकाया नसादेशश्च। १ सर्पविशेष, एक प्रकारका साँप। इसका पर्याय—तिलित्स, गोनास, घोनस, मण्डली और वोड़ है। बोड़ा श्लो। (पु०) २ वैक्रान्तमणि।

गोनसी (सं० स्त्री०) गोनमस्तदाकारो ऽस्त्यस्याः गोनन-अच् गौरादिवात् डीप। ओषध बृहत्विशेष। गोनम सर्पके शरीरके जैसा मण्डलाकार कृष्णवर्ण चिन्ह युक्त रक्ताभ पत्रविशिष्ट मूलप्रधान वृक्षको गोनसी कहते हैं। सुश्रुतमें लिखा है कि यह वृक्ष कृष्णवर्ण मण्डलयुक्त, मूलजात होता है और इसमें सिर्फ दो पत्र रहते हैं। इसका रंग लाल होता है और ऊँचाई लगभग डेढ़ हाथकी रहती है। (सुश्रुत चिकित्सा १० प०)

गोनाडीक (सं० पु०) चञ्चु, शाक, चञ्चु नामक एक प्रकारकी लता।

गोनाय (सं० पु०) गोर्नायः, इ-तत्। १ वृष, बैल, मांड़। २ भूमिपति, राजा। ३ गोस्वामी।

गोनाय (सं० पु०) गां नयति गो-अच्। १ गोप, ग्वाना।

गोनाम (सं० पु०) गोर्नामा इव न या यस्य, बहुव्री०। गोममपे। (स्म० भाष्य ११) (स्त्री०) गोर्नामा इव आकृति-यस्य, बहुव्री०। २ वैक्रान्त मणि।

गोनिकोपल—कोडुगप्रदेशके अन्नप्राप्ती एक नगर।

गोनिवाला—बम्बई प्रदेशवामो सुम्नमान शस्यविक्रेता, इनका आचार व्यवहार श्रेष्ठके जैसा है। श्रेष्ठ श्लो०।

गोनिया (हिं० स्त्री०) १ टीवारको मिथाई मान्य करने का बटई तथा राजका औजार। यह औजार मसकौणकी आकृतिका होता और लोहे तथा लकड़ीका बना रहता है।

(पु०) २ बीरा डोनिवाला। ३ रस्सी बाँध कर नाव खींचनेवाला।

गोनिष्कमण—एक पुण्यतीर्थ, वराहपुराणके १४१ अध्याय में इसका साहाय्य वर्णित है।

गोनिष्यन्द (सं० पु०) गोर्निष्यन्दते निष्यन्द अच् प्र-तत्०। गोमूत्र, गायका सूत।

गोनी (हिं० स्त्री०) १ टाटका थैला, बीरा। २ पहुआ, मन।

गोनूपत्ती—मन्द्राज प्रदेशस्थ नेदुर जिलेके रायपुर तालुकके अन्तर्गत एक ग्राम। यह रायपुरसे ५ मील उत्तर पश्चिममें अवस्थित है। यहां एक पुराना विष्णुमन्दिर है, इसके निकटवर्ती पर्वतके ऊपर पिङ्गलकोण मन्दिर पर प्रति वर्ष एक बड़ा मेला लगा करता है।

गोन्दोलि—सतारा जिलेमें मान नदीसे निःसृज्य एक विस्तृत नहर। १८६७ से १८७२ ई० पर्यन्त इस नहरको बनानेमें लगा था। गोन्दोलि ग्रामसे इसका नावकरण हुआ है।

गोम्वलगार (गोम्वाली) बम्बई प्रदेशवामो सराठाकी एक जाति। ये नृत्य कर जोविका निर्वाह करते, इसीलिए इनका नाम गोम्वलगार या गोम्वाली हुवा है। इनकी उपाधि गरोड़, गुरु, पचङ्गि और वुगड़े हैं। इनका गठन लम्बा और दृढ़काय है। ये अपरिष्कार और बहुत छोटे

घास फसके धरमें रहते तथा कगनीके दाने निख आहार करते हैं। मिफ पर्यं दिनमें ली मिटाव और मास खाते हैं। मादक सेवनमें ये बड़े पटु हैं। पुरुष जाति भी कानमें पोतलके कुगडल धारण करते हैं। इनके गुप्त नर्ही होते हैं, तब कभी कभी कोई निकट द्राघण इनका पुरो हित हो जाता है।

मत्तानके भूमिष्ट होने पर उमकी नाडी काट कर फेक दो जाती और शहस्य जातिभोज देते हैं। ७वें दिन की गिशका नामकरण और दोल रोहण होता है। इसके बाद विवाह पर्यन्त और कोई उखव ये नही मनाते। इनके विवाहके पूर्व दिन वर और कन्याके शरीरमें हड्डो लगाई जाती है। विवाहकालमें गाँवका ग्रहविप्र आ वरको पुत्रमुख और कन्याको पश्चिमुख खडा कर मन्त्र पाठ करते और शरीर पर धान फेंक कर आगोवाँट देते हैं। तदनर दोर्नो पचका ज्ञातिभोज हो विवाह उखव हो जाता है। इन लोगमें बाल्यविवाह, विधवा विवाह और पुरुषके लिए बह्वाविवाह प्रचलित है। जातिमें किसी तरहको घटना हो जाने पर पञ्चायतसे उमकी मीमांसा होती है। ये मुदेको जनाते हैं। ममस्त हिन्दू पर्वमें और सुत्तमानके मोहरममें योग देते हैं।

प्रतिदिन चार पाच गोम्वलगर मिन कर वायादि माघ ने दार दार घूमा करते हैं। किसीको इच्छा हो जाने पर ये उसके प्राङ्गणमें समस्त रावि गोम्वल नाच करते हैं। प्रमात होनेके कुछ पहले इनमेंसे एक व्यक्ति भग्वा देवीको लेकर उमककी नाँइ फुदता और नाचता तथा भविष्यत् वाक्य कहना आरम्भ करता है। इस समय प्रत्येक दर्गक उमके चरण पर दो दो पैसे रख उमें प्रणाम करता है और फिर वह गोम्वलगर जन्ती हुई समान ली अपने शरीरमें लगा कर खडा रहता है। इसके बाद देवीके शरीरकी हड्डी ने आगन्तुकीके कपालमें ध्यर्ग करता और अपुत्रक कियोकी पुत्रोत्पन्न तिथि कष्ट दिया करता है। प्रात काल होने पर ये विदाई ले अपने अपने घरको चने आते हैं।

गोन्योधम (मं० पु०) गमनगोल, जो दुधमें प्रवाहित हो। गोप (म० पु० स्त्री०) गाँ पाति रहति गो पा फ। १ जाति विशेष, ग्याना, पाहोर। इसका स श्रुत पर्याय—गोसद्गा,

गोदुह, आभोर, वल्लव और गोपाल है। साधारणत ग्वान नामसे मगहर है। पश्चिमाञ्चलमें मव जगह आहीर और दाक्षिणात्यमें गाल्नी नामसे अभिहित है।

पाहोर और राव लो पवो।

पूर्व कालसे यह जाति गोप और आभोर नामसे प्रसिद्ध है। मनुके मतानुसार द्राघणके श्रोरम और अम्बष्ठ कन्याके गर्भसे आभोरका जन्म हुआ है (१) परशुराम पदतिके मतसे कसेरो और मणिकार (जहीरो)के कन्यासे गोप जातिकी उत्पत्ति है। (२) किन्तु रुद्रजामनोक जातिमालामे लिखा है कि जुलाहा और मणिवन्धकन्याके सभोगसे गोपजीवका जन्म पश्चण हुआ है (३) ब्रह्मवैवर्तके मतानुसार श्रीकृष्णके लोमकूपसे गोपगण उत्पन्न हुए हैं (४)। ये सत्गुद्रमें गण्य हैं।

यह जाति पूर्वकालसे ही गोपालन करती आ रही है, इसीलिए ये गोप कहलाये। मनुस हितामें लिखा है कि गोप वेतनप्रायी नर्ही है, वह गोस्वामोकी अनुमति ले दश गोधोमेंसे एक अठ गोका दुग्ध टोहन कर ले जा सकता है। व्याससहितके विद्वत वचनमें ये अन्वयज जातिके मध्य गण्य है। किन्तु यम, परागर, मनु प्रभृति स हितामें ये शुद्र और भोज्यायक जैमे शहीत हैं (५)।

वर्तमान समयमें इस जातिके मध्य अनेक अणो और शाखाभेद देखे जाते हैं। बह्मदेशमें ग्वानाकी कई एक अणियाँ हैं—राणो, वागडो, वारेन्द्र, पल्लव या यल्लव, गोड या घोपवाला, मधुग्वाना, गुमिया, करञ्जी, काजास

(१) "आनो गोम्वलगरमाय। (मनु० १ १४)

(२) "सदुपुत्रां बाल्यकारणतेशाकास्य च सभय।"

(भागवतपुस्तक जातिमाला)

(३) "० वि अया मनुशरी मीमोयव सभय" ब्रह्मजामनक आदिमाला।

(४) ब्रह्मवैवर्तमेवम स गीमोयवै सुते।

पारिव श्रव दधेव वैमैतव च सत्पुत्रम ।

वि मनुके 'डोवरिनि' कसय हो मभोर ।

स कर्त्तविय स ग्याना पञ्चशतं स च पुत्री । (ब्रह्म० ३।१४ ३३)

मीमोयविसिद्धय तथा मो० कृष्णो ४

वम वम दार विरे० सन्पुत्रा परिचिति मा १" (ब्रह्मवै० १।१८८)

(५) 'दासजातिनीयपुत्रमिताममा १० ।

पने श्रुते पुत्र मन्वा पथाकाय निरेदपु०" (वन १० परागर १।१।०)

आहीर या सहिपा ग्वाला, मगल या मागधो और भोगा । वारेन्द्र गोपीके मध्य पल्लाल, लाहेडि, झूलगावां, टागानिया प्रभृति, तथा भोगा अणीके मध्य साटा ग्वाला और लाल ग्वाला है ।

उत्तरपश्चिममें—देशो, नन्दवंशी, यदुवंशी, सूर्यवंशी, ग्वालवंशी, अहीर प्रभृति अणियां हैं ।

विहारमें—गारिया या दहियारा, मजरीत, सात-झूलिया या किष्नीत, कनौजिया, वर्गोवार, धनरोआर, चौआनिया, चौधा, गुजिआर या गोटागा, गोडन, काँटी-ताहा, पुहोया, सेपारो और वनपूर प्रभृति मूल हैं ।

उड़ीसामें—दुमाला, यदुपुरिया, मगधा, मथुरा वा मथुरावंशी, गौड़ या गोपपुरिया प्रभृति अणियां हैं ।

छोटानागपुरमें—किष्नीत, गोरो, चौआनिया, मभवत्, लारि, भोगता, सदीर और साओडा प्रभृति शाखायें हैं ।

बङ्गालके ग्वालोंके मध्य वारिक, चोमर, टालि, घोष, जाना, मगडल, परामाणिक प्रभृति पदवियां और अल-मासि वा आलम्यान, भरद्वाज, गौतम, काश्यप, मद्रुप्रि वां मधुकुल्य और शाण्डिल्य गोत्रादि प्रचलित हैं ।

विहारमें—भाँडारी, भोगत, चौधरी, घोरैला, मिराहा, महतो, मगडर, माभी, मारिक, पञ्जियारा, राय, रास्त और सिं प्रभृति पदवियां देखी जाती हैं ।

युक्तप्रदेश, विहार और छोटानागपुर प्रभृति स्थानोंके ग्वालोंमें मूल वा अणीके अतिरिक्त गाँजिके सदृश और कई एक 'थाक' या गोष्ठ प्रचलित हैं ।

बङ्गके 'पल्लव' या 'वल्लव' अणीका ख्याल है कि अणिके पमीनासे घामघोष पैदा हुए, यही घामघोष उन लोगोंके आदिपुरुष हैं । किन्तु वागड़ी अणीवाले कहते हैं कि उन लोगोंके पूर्वपुरुष उल्लथिनोसे आ वागड़ी अण्डलमें रहते थे, इसीलिये वे उजैनिया नामसे भी मशहूर हैं । राठी गोप वैलके शरीरमें तमलोह द्वारा अङ्कित तथा वधिया करते हैं, इसीसे वे दूसरे दूसरे अणियोंके निकट हिय और नीच गिने जाते हैं । गोड़गोप बहुत दिनोंसे बङ्गालमें लाठियाल नामसे विख्यात हैं, ये अपनेकी मत्शुद्धके जैसे परिचय देते एवं दूसरे किसी अणीके साथ आदान प्रदानमें आपत्ति नहीं करते हैं । प्रधानतः ठाका जिलामें लाल और साटा ग्वाले वास करते हैं ।

लाल ग्वाला विवाहकालमें लाल वस्त्र और साटा ग्वाला सफेद वस्त्र परिधान करते हैं । इन दोनोंमें साटा गोप अपनेको प्रधान मसभते और लाल ग्वालेसे कन्यादानके समय बहुत रुपये लिया करते हैं । बङ्गालके ग्वाले स्व गोत्र और मातासह गोत्रमें विवाह नहीं करते । इन लोगोंमें कन्याका बाल्यविवाह ही आदरणीय है; विधवा-विवाह प्रचलित है । विवाह-प्रणाली उच्चश्रेणीके हिन्दूके जैसा है । इन लोगोंमें अधिकांश वैष्णव तथा शाक्त और शैव अल्प हैं । इनके ब्राह्मण पुरोहित भी स्वतन्त्र हैं जो इन देशमें निम्नश्रेणीमें गिने जाते हैं ।

विहारके ग्वालोंमें गोत्रनियम प्रचलित नहीं है, ये मूल लक्षकर विवाहादि सम्बन्ध निर्णय करते हैं । सप्तमूल और नवमूल छोड़ कर आदान प्रदान किया करते हैं । सप्तमूल वा किष्नीत अपनेको क्षणसे उत्पन्न बतलाते हैं । इन दो अणियोंके गोप दधि प्रस्तुत नहीं करते, वे सिर्फ दुग्ध विक्रय किया करते हैं । गोरिया या दहियारा मूलके गोप दुग्धको गरम किये बिना उससे दधि तैयार कर लेते इसलिये वे पतित गिने जाते हैं । काँटिताहा मूलका ग्वाला गौके शरीरमें काँटेसे दाग देता इसी कारण इसका ऐसा नाम रखा गया है । कनौजिया और वर्गोवार उत्तर-पश्चिमसे आ विहारमें बस गये हैं, ये अपने ही हाथसे नवप्रसूत शिशुकी नाड़ी काटा करते हैं इसीलिये दूसरे मूलके गोप इन्हें नीच समझते हैं । विहारके गोपोंमें बाल्यविवाह प्रचलित है तथा पतिको मृत्यु पर विधवा देवरसे विवाह कर सकती है । यहाँके ग्वाले विषहरी, गणपत, गोसावन, कालामाँभो और भूतकी विशेष भक्ति अदा किया करते, तथा वर्षमें एक बार सत्यनारायणकी पूजा करते हैं । विहारमें शैव और शाक्त अधिक हैं ।

उड़ीसामें गोप अपनेको बङ्ग और विहारके गोप-जातिको अपेक्षा अष्ट तथा शुद्ध समझते हैं । उच्चश्रेणीके हिन्दूकी नाईं ये शास्त्रके मतसे चलते हैं । इनका आचार व्यवहार बहुत कुछ विहारके गोपोंसे मिलता जुलता है । ये कहते हैं कि यदि विवाहके पूर्व लड़को ऋतुमतो ही जाय तो उस कन्याकी पहले एक नितान्त वृद्ध मनुष्यसे व्याहना चाहिए और विवाहके बाद वह वृद्ध भी उसे

परित्याग कर दे। तदनन्तर वह स्त्री विधवाको नाईं किसी दूसरेसे विवाह कर सकती है। इनके रमणियाँ पूर्ण गर्भा होने पर एक स्वतन्त्र लणघ घरमें रहनी जाती हैं। प्रसवके २१ दिन पर्यन्त उन्हें गर्भ घरमें रहना पडता है। इकोम दिनों तक पति और पत्नी दोनों अशुचि रहते और कोई कार्य कर नहीं सकती है।

छोटा नागपुरके ग्वालानोमें वायविवाह और ज्यादे उमरमें विवाह दोनों प्रचलित है। विवाहके चार मास बाद रोकमदि या कन्या बरुशरालय जाती है। इन लोगोंमें जव तक रोकमोधि नहीं होती तव तक विवाह मिद्ध नहीं समझा जाता है। विधवा रिवाहको प्रथा भी इनमें प्रचलित है।

ये गोमें पाटि पालन तथा टधिदुग्धाटि छिद्रय कर जोधिका निर्वाह करते हैं। किसी किसी स्थानसे कुछ गोप खिती भी करते हैं।

(पु०) २ यामाधिकारो, गौरका मालिक। ३ भूपाल, राजा। ४ गोठाध्यक्ष, गोशालाका प्रबन्ध करनेवाला। (त्रि०) ५ गोरक्षक, गौकी रक्षा करनेवाला। गोपायति शुप-अच्। ६ रक्षक, रक्षा करनेवाला। ७ उपकारक, भलाई करनेवाला। ८ चोर चारुजल, मुर या बोल नाम की औषध। ९ गन्धर्वविशेष, एक गन्धर्वका नाम। गोपक (स० त्रि०) गोप स्वाद्यं कन शुप शुबुन्वा। १ गोप, ग्वाला। २ वदन्तमें प्रामोके एक अधिपति। ३ रक्षक, रक्षा करनेवाला। ४ वर्तमान गोशाला प्राचीन नाम।

गाथा पंथी।

(पु०) ४ वणिक दृश्यभेद। ५ रत्नवाले। ६ शारिवा, चनन्तमूल। ७ नीसादर।

गोपकन्या (स० स्त्री०) गोपस्य कन्ये च प्रियतरा। १ औषध विशेष। गोपस्य कन्या, ६ तत्त्वं। गोपजातीय कन्या, ग्वालाकी लडकी।

गोपकपुरि—गाथा पंथी।

गोपककटिका (स० स्त्री०) गोपप्रिया कफटिका, मध्य पदनी०। गोपालककटो, गोपाल काकरी या कुन्दक।

गोपनेत्र—प्रभाम धरुण्ड वर्णित एक पुण्य स्थान।

गोपघोषण (स० स्त्री०) गोपप्रिया, घोषण, मध्यपदनी०।

१ वृक्षविशेष, फाइ पेड। निविड वनमें इस आतिका

वृक्ष देखा जाता है। इसका फल तथा गारु वैरजे जैसे होते हैं। २ इस्तिकोनिष्ठक। ३ विकटतृष्टक। ४ ककाटो, करन्तो। ५ पुगभेद, एक प्रकारकी सुपारी।

गोपता (स० स्त्री०) गोपस्य भाव गोप तन् टापु। गोप का धर्म।

गोपति (स० पु०) गो पति, ६ तत्त्वं। १ शिव, महादेव।

२ वृष माद, बैल। ४ विशु। ४ भूमिपति, राजा। ५ किरणपति, सूर्य। ६ स्वर्गपति, इन्द्र। ७ अग्रभ नामकी औषध। ८ भोजवगोय एक राजा। कन्नडने इरावती नगर में इसे निहृत किया। ९ गन्धर्वविशेष। १० नो नन्दिमि से एक। ११ गोपाल, ग्वाला। १२ थाचाल, मुखर।

गोपतिचाप (स० पु०) इन्द्रधनुष।

गोपत्य (स० स्त्री०) गोपति यत्। गोपतिका धर्म, ग्वालाका भाव।

गोपय (स० पु०) अथर्व वेदका एक ब्राह्मण। भाष्य पंथी।

गोपट (स० स्त्री०) गो पद पदस्थान योग्यस्थान। १

मोर्षीके रहनेकी जगह। २ छत्रो पर चिह्नित गोशाला।

गोपदल स० स्त्री०) गोपट गोचरणन्यामयोग्य स्थान तदाकार वा न्नाति ला क। गुवाकवृक्ष, सुपारीका पेड।

गोपदी (स० त्रि०) गायके सुरके समान शल्यन्त छोटा।

गोपन (स० स्त्री०) शुप भावे ल्युट्। १ अपह्व, छिपाव, दुराव। २ रक्षण, रक्षा। ३ कुसा, घृणा, तिरस्कार। ४ व्याकुलता। ५ दीमि। ६ तेजपव तेजपत्ता। ७ ग्रन्थि पर्ण।

गोपना (स० स्त्री०) शुप दीमो भावे ल्युच्। दीमि, कान्ति।

गोपनाथ—हिन्दीके एक प्रसिद्ध कवि। ये १६१३ ई०में विश्वमान थे।

गोपनीय (स० त्रि०) शुप कर्मणि अनोयर्। १ अप्रकाश्य, जिमका प्रकाश करना उचिम नहीं, छिपाने योग्य, गोप्य, २ रक्षणीय।

गोपवधू (स० स्त्री०) गोपस्य वधुरिय प्रियत्वान्। १ शारिवा, चनन्तमूल। गोपस्य वधू ६ तत्त्वं। २ गोपपत्नी, ग्वालानी स्त्री।

गोपवधूटो (स० स्त्री०) वधू पम्पाठे टी गोपस्य वधूटो, ६ तत्त्वं। युवती गोपाङ्गना, युवती ग्वालिन।

गोपभट्ट—गाथा पंथी।

गोपभद्र (सं० स्त्री०) शालूक वृक्षविशेष ।

गोपभद्रिका (सं० स्त्री०) गाम्भारीवृक्ष । (*Gmelina arborea*)

गोपमाउ—युक्त प्रदेशमें हर्दोई जिल्लेके अन्तर्गत एक प्राचीन नगर । यह अक्षा० २७° ३२' ३०" और देशा० ८०° १८' ५०" के मध्य अवस्थित है । यह हर्दोई सदनसे ७ कौम उत्तर पूर्वमें अवस्थित है । लोकसंख्या प्रायः ५६५६ है । प्रवाद है कि पूर्वकालमें ठठेरोंने जंगल काट यहाँ मब्बा खराया या मब्बाचाचर स्थापित किया था । १०वीं शताब्दीमें राजा गोपने यहाँ अपने नाम पर एक नगर वसाया ठठेरोंसे प्रतिष्ठित इस स्थानकी कीरसदेव और वादल देवकी प्रस्तरमूर्तियाँ आज भी पूजी जाती हैं । १०३२ ई०की मसायुदके अथीन लालपौर गोपमाउ नगर पर आक्रमणके लिये आये थे । किन्तु वह लड़ाईमें मारे गये और विजिताने उन्हें गोपीनाथके मंदिरमें गाड़ दिया । १२३२ ई०की अदतमासके आदेशसे ख्वाजा ताज उद्दीन-होसेन यहाँ ससैन्य उपस्थित हुये । इन्होंने यहाँ एक मस्जिद निर्माणकी जो १७८५ ई०की अर्काटके सुवादार नवाब मुहम्मद अलीखानके यत्नसे मरम्मत हुई थी । अकबरके समय इस नगरमें ६२ फुट ऊँची एक जुम्मा-मस्जिद निर्मित हुई और १६८८ ई०में नौनिहराय कर्तक यहाँ एक प्रसिद्ध गोपीनाथका मन्दिर स्थापित हुआ । इस मन्दिरमें संस्कृत शिलालेख है ।

गोपरस (सं० पु०) गां जलं पिवति पा क । गोपीरसोऽस्य, बहुव्री० । घोल, चारजल ।

गोपराजपण्डित—एक ज्योतिर्विदु, ग्रहणगणितकल्पतरु वासनाभाष्यके रचयिता ।

गोपराज—भानुगुप्तके अथीन एरणका एक राजा ।

गोपराष्ट्र (सं० पु०) गोपप्रधानाः राष्ट्राः । भारतवर्षस्य एक प्रदेश, ग्वालियर प्रान्तका एक प्राचीन नाम । यह गोप-गणोंका प्रधान वासस्थान था । महाभारतमें इस जनपदका उल्लेख है ।

गोपरिचर्या (सं० पु०) गोः परिचर्या, ६-तत्० । गोसेवा, गौका प्रतिपालन । हिन्दूशास्त्रमें लिखा है कि प्रत्येक गृहस्थकी गौ प्रतिपालन करना उचित है । पूर्वकालमें राजा महाराज गौ सेवा किया करते थे । गृहस्थ मात्र ही

गौ द्वारा उपलब्ध हैं, उनके लिये गोधन मह्य दूसरा धन नहीं है । इन सर्वेशियोंका आहार वन्यवृक्ष और वाम-स्थान अरण्य है । जो जल दूबरेके पीने लायक नहीं वही वन्य जल पीकर अपना जीवन पालते हैं । गौ प्रतिपालन करनेमें गृहस्थकी विशेष आयास करने नहीं पड़ते, वरन् वे इनके दुग्धसे बहुत लाभ उठाते हैं । गौका मूत्र और विष्ठा प्रभृति गृहस्थके लिए प्रयोजनीय और उपकारी है, गृहस्थ मात्र ही गौके ऋणसे आवद्ध है । वान्यकालमें माता और गो इन्हीं दोनोंके स्तन पान कर जीवन धारण किया जाता है, इसी लिए दोनोंको समान भावसे भक्ति करनी चाहिये । ब्रह्मपुराणके मतसे गृहस्थको प्रतिदिन गौ पूजा, नमस्कार और उनकी सेवा करनी उचित है । गोष्ठमें जा गौओंका प्रदक्षिण करनेसे चराचर भूमण्डल परिभ्रमणका फल होता है । गोमूत्र, गोमय, घृत, दुग्ध, दधि और रोचना गौके ये छः द्रव्य मङ्गलकर और सकल पापनाशक हैं । गायकी ग्रामदान करने पर स्वर्गवास होता है । गौके शरीर पर हाथ फेरनेसे सब पाप दूर हो जाते हैं ।

ब्रह्मपुराणके मतानुसार गौकी देख कर पहली "नमो गोभ्यः" इत्यादि मन्त्र पाठकर नमस्कार करना चाहिये । रामायणमें लिखा है कि रामचन्द्रके पूर्वपुरुष महाराज दिलोप स्वर्गसे लौट आनेके समय गौको नमस्कार करना भूल गये थे । इसी पापसे अनेक दिन पदन्त वे पुत्ररत्नसे वञ्चित थे ।

आदित्यपुराणका मत है कि गौको यथाशक्ति लवणदान करनेसे पुण्यलोकको प्राप्ति होती है । जो प्रतिदिन विना खाये गौकी खिलाता है, उसे सहस्र गोदानका फल होता है । देवीपुराणमें लिखा है कि मक्षिका और डाँभ प्रभृतिसे निवारणके लिए गोष्ठमें धूम देना चाहिये ।

गोष्ठमें धूम नहीं देनेसे गोपालक मक्षिकालीन नरकको जाता एवं नरककी भोषण मक्षिकायें उसके चर्मको फाड़ कर रक्त पान करती हैं । गौका बच्चा मर जाने पर इसे दूहना नहीं चाहिए, ऐसा करनेसे उस नराधमको नरकमें वाम कर चुधाके लिये हाहाकार करना पड़ता है । (२३पुराण)

है। गौकी ढडो कभी भी लहंन न करनी चाहिए। गायकी मृत्यु होने पर उसकी गन्ध परित्याग न करें। वह गन्ध जहां तक फैलती है, वहां तक जमीन पवित्र हो जाती है। जननीके मद्दश गाय भी मर्वादा रक्षणीय पूजनीय तथा पालनीय है, जो मनुष्य इन्हे तोड़ना करता, उसे रौरव नरक होता है। जब गाय क्रुद्ध हो आघात करनेके लिए उद्यत हो जाय उस समय जो मनुष्य "जम मातः" ऐसा कहकर स्थिर रह जाता है, उसे गौ आघात नहीं पहुँचाती और वह परम पदको पाता है।

(हे मादि १।११७३)

गोपवन (सं० स्त्री०) गोपभूयिष्ठं वनं मध्यपटली० ।

१ जिस वनमें बहुत बहुत ग्वाला वास करें। (पु०) २ एक ऋषिका नाम।

गोपवनादि (सं० पु०) गोपवन आदिर्यथ, बहुव्री० ।

प्राणिनीय एक गण। इस गणके उत्तरवर्ती अपत्य प्रत्ययका लोप नहीं होता है। न गोपवनादिभाः। पा० ४६० गोपवन, विन्दु भाजन, अश्ववतान, श्यामाक, श्यामक, श्यापर्ण, हरिण, किन्दास, वक्षस्क, अर्कलूप, वध्योग, शिशु, विष्णु, हृद्द, प्रतिबोध, रथीतर, रथन्तर, गविष्ठिर, निपाद, शंवर, अलम, मठर, सृडाकु, सृपाकु, सृदु, पुनर्भू, पुत्र, दुहित, ननाट परस्त्री और परशु इन सबको गोपवनादि, गण, कहते हैं।

गोपवरम्—मन्द्राज प्रदेशस्थ कड़ापा जिलाके अन्तर्गत एक गण्ड ग्राम। यह प्राङ्गुरसे ३ मील उत्तरको अवस्थित है यहाँ आज्ञानेयस्वामीके मन्दिरमें तीन पुरातन शिलालिपि विद्यमान हैं।

गोपवल्ली (सं० स्त्री०) गोपवल्ली स्वार्थं कन्-टाप् । गोपवल्ली ।

गोपवल्ली (सं० स्त्री०) गां पाति गो-पा-क-टाप् । गोपा-; चामी वल्ली चेति, कर्मधा० । १ मूर्खा नामका पेड़, जिसकी रेशासे धनुषका गुण और भेखला बनाये जाते हैं।

२ शारिवा, अनन्तमूल । ३ श्यामालता ।

गोपशु—(सं० स्त्री०) यज्ञिया गौ, यज्ञको गाय ।

गोपस (सं० त्रि०) गुप-असुन् । रक्षिता, रक्षक, बचानेवाला ।

गोपा (सं० स्त्री०) गां पाति पा-क-टाप् । १ श्यामालता ।

२ महाभक्तानक गुड़ । ३ अनन्ता । ४ माठशारिवा ।

५ गाय पालनेवाला, ग्वालिन ।

(त्रि०) गां पाति पा क्तिप् । ६ गौरक्षक । ७ लुग करनेवाला, छिपानेवाला (स्त्री०) ८ शाक्य किङ्किनी-श्वरकी कन्या एवं मिद्धार्थकुडकी स्त्री । एक दिन बुद्ध रथ पर चढ़ कर घरको लौटे जा रहे थे, रास्तेमें गोपाकी दृष्टि उन पर पड़ी। बुद्धदेवने गोपाके मनोहररूप पर मुग्ध हो कर उसी जगह रथको नोचा किया और उसके रूपको छटा देखने लगा। मिद्धार्थको इस तरह मोहित देख कर किसोने गोपाको कथा राजा शुद्धोदनको कह सुनाई। राजाने गोपाको ला अपने पुत्रसे विवाह कर दिया। भोट ग्रन्थ 'दुल्वके पटनेसे पता लगता है कि जब बुद्धदेव आवस्तो नगरमें रक्षते थे देवदेवने गोपाकी हरण करनेको इच्छासे उसका हाथ पकटा, किन्तु गोपाने अपना हाथ छुड़ा कर उसका हाथ इतना जोरसे मचोड़ा कि हाथसे रक्त गिरने लगा। तत्पश्चात् गोपाने उसको घरको छतसे बोधिसत्व (बुद्ध)के प्रमोद सरोवरमें फेंक दिया। 'दुल्व' ग्रन्थमें बुद्धदेवकी यशोधरा, गोपा और सृगंदजा तीन स्त्रियोंका उल्लेख है। मिफनर साहबका कहना है कि गोपाका दूसरा नाम यशोधरा भी था। यशोधरा देवी।

गोपा—हिन्दी भाषाके एक सुप्रसिद्ध कवि। इनका जन्म १५३३ ई०में हुआ था। इन्होंने रामभूषण तथा अलङ्कारचन्द्रिका रचना की है।

गोपाङ्गना (सं० स्त्री०) गोपस्याङ्गना, ६-तत् । १ गोपस्त्री,

ग्वालाकी स्त्री । २ शारिवा, अनन्तमूल नामकी ओषध ।

गोपाचल (सं० पु०) १ ग्वालियरका प्राचीन नाम ।

२ ग्वालियरके निकट एक पहाड़ ।

गोपाजिह्वा (सं० त्रि०) गोपा गोपी 'मा विमीत' इति वाक्योच्चारिणी जिह्वा यस्य, बहुव्री० । जिसकी जिह्वा 'भय नहीं' ऐसा शब्द उच्चारण करती है, जिसे कुछ भी भय नहीं है। (अक० ३२८)

गोपाटविक (सं० पु०) गोपाल, जो वन वन गौ चराता फिरता है।

गोपातीर्थ—बौद्धोंका तीर्थ विशेष। भद्रकालावदान ग्रन्थमें लिखा है कि देवदेवने यशोधरासे प्रेम रखनेके लिए प्राय ना की, किन्तु यशोधराको उसका यह व्यवहार

पमन्द न आया। इमोमे देवदत्त यगोधारका चिरयन्तु
हो गये एवं २१ वर्ष तक उमका प्राणनाय करनेकी चेष्टा
करते रहे। एक समय देवदत्तने यगोधारकी पुष्करिणी
में निक्षेप किया। ऐसा करने पर भी यगोधार मरी नहीं
एव पुष्करिणीम्यत सर्प राज कर्टक सुरचित हो कर
पितृमदन नाइ गई। उक्त पुष्करिणी यगोधारके दूरमे
नाम 'गोपातीर्थ' मे बहुत समय तक प्रसिद्ध थी।

गोपादित्य (स० पु०) १ काश्मोरके एक राजाका नाम।
ई०के ४०० वर्ष पहले ये काश्मीरके मिह्रासन पर आरी
हण हुए थे। ये अतिसुन्दरनामे राज्यशालन एवं ब्राह्म
णांकी वदंत भूमिदान किया करते थे। २ सुभाषितावली
धृत एक प्राचीन कवि।

गोपाध्यक्ष (स० पु०) गोपानामाध्यक्ष, ६ तत्व। गोपाल
कौंके कर्ता गोप त, श्रीकृष्ण। (महाभारत धार ५०)
गोपानमो (स० स्त्री०) गां जल पाति निवारयति गोपा
न ह्यट सिधति प्राप्ति गोपान सिध् ड डीव। १ वडभो,
घरकी छातका निम्नस्थ वक्र काष्ठ। २ कर्णिका, विष्क
म्भि काष्ठ। ३ वक्रोभूत धारणकाष्ठ, घरमें लगानेकी
देडी धरन।

गोपानोय (स० स्त्री०) गोसुद्ध, गायका मत।
गोपायक (स० द्वि०) गोपायति गुप् भाय खलू। रत्तक,
बचानेवाला।

गोपायन (स० स्त्री०) गुप् भाय भावे न्युट। १ गोपन,
हिपाय। २ रत्तक।

गोपायित (स० द्वि०) गुप् भाय कर्मणि क्त। १ रत्तित।
(स्त्री०) गुप् भाय भावे क्त। २ गोपन, हिपाय।

गोपायित (स० द्वि०) गुप् भाय लृच्। रत्तक।

गोपाल (स० पु०) गां भूमि पणविशेष पालयति पालि
धण् उपम०। १ राजा। २ गोरक्षक, गोपालक,
ग्वाना। ३ मकोर्ण आतिथिगोप। पराशरके मतानुसार
क्षत्रियके शौरम और शूद्रकन्याके गर्भमें गोपालकी उत्पत्ति
है। ब्राह्मणोंके लिए इसका अर्थ भोज्य कष्टा गया है। ०
दक्षिणात्यके मन्दाज और घेनगाय जिल्लमें गोपाल

जातिके बहुतसे मनुष्य वास करते हैं। कहीं कहीं ये
'गोत्र' नामसे परिचित हैं।

ये देवनेमें क्षत्रयाय, आकृति मध्याम, मुख लम्बा,
गाल चिपटा तथा गला छोटा और लम्बा है। मक्केभाधे
में चोटे, अल्प दाँते और मूँछ रहते हैं। साधारणत
ये दान और रोटी खाते और मत्स्य, छाग, भेडा, खरगोम,
मुरगाका शिकार कर उनका मांस भी खाते हैं। माट
कताके लिए ये ताड़ी, गाँजा और तम्बाकू सेवन करते।
ये धातु एवं नाना प्रकारके हथौसे भीषण प्रसुत करना
जानते हैं। स्त्रियां तथा छोटे छोटे लडके घरमें रह एक
तरहकी चटाई तैयार करते और बाजार जा विक्रय किया
करते हैं।

ये ब्राह्मणोंके प्रति विशेष श्रद्धा भक्ति रखते एव विधा
हृदि कर्म में उन्हें पौरोहित्यमें नियुक्त करते हैं। मिर्फं
विवाहमें ही ये जातिभोज देते हैं। ये हिन्दू देव देवी
की पूजा करते, इसके अन्वादा मानते, व्यङ्गोवा, नर्गावा
और यज्ञमादेवीको मूर्ति अपने अपने घरमें रख पूजते हैं।
पुत्र प्रसूत होने पर ये पचिव दंडोको पूजा, एव
नयम दिनकी पुत्रका नामकरण करते हैं। ये श्रवकी
गाइते और ५ मग्राह काल श्रगोच मानते हैं। निद्रायत
पुरोहित आ शह्र वजाकर इनका श्रगोच दूर करते हैं।

४ विशेषता अतारविशेष नन्दनन्दन श्रीकृष्ण पप्रपु
रणमें लिखा है कि ये सर्व दा वानकमुत्ति धारण करते
हैं। इनके शरीरका वर्ण नयोन जनधरके जैसा है।
गोपकया और गोपयानक भवदा इन्हे घेष्टन किया
रहते हैं। ये गोपवेश परिधान करते। इनका मुख हमेगा
शुद्ध मधुर हास्ययुक्त दीख पडता है। ये हृत्पावनके
कदम्बमूलमें रहना बहुत पमन्द करते हैं। श्रवगात्रकी
नाइ बहुतसे इन वानगोपालको उपासना करते हैं।
जगदीश तर्कानिहार और गदाधर भट्टाचार्य प्रभृति नैया
यिक श्रव्यकारने अत्यारभमें इष्टदेव वानगोपालको
नमस्कार किया है। तत्पश्चात्में इनको उपासनाप्रणाली
लिखी हुई है।

गोपालका ध्यान—

० 'दिवान् एव कथायां हनुमत्पुत्र इति ।
म गोपाल इति त्रिंशो भागो विंशो वक्त्रः ॥' (पराशर)

'समाट वाराणस गोपालाक्षरविरचयामोमनेमोःपुत्रमते ॥
'श्रीःकृष्णदेवःपुत्रःश्रीःकृष्णः' (दशमी उट्ट ३)

दीर्गा ईषद्वीन' दध दति विमन' पाथम' विश्वन्तो)

गोपीश्रीवोवोनाद रुमत्वशिलमम कण्ठमूष्पिर' यः ।" (तन्त्रसार)

५ राजा कीर्तिवर्मदेवके प्रपान मंत्री और सेनापति

इन्हींके उत्साहसे प्रबोधचन्द्रोदय नाटक रचा गया था ।

६ मन. इन्द्रियोंका पालनेवाला । ७ पन्द्रह मात्राओंका

एक छन्द, इसमें ७ और ८ पर ज्योति होती है ।

गोपाल—विदेहराज विक्रदकके मंत्री, सकलके ज्येष्ठपुत्र ।

सकल विदेह परित्यागपूर्वक सपुत्र वैशाली नगरमें आ

वास करते थे । गोपाल माहमी और वीर पुरुष थे ।

प्राचीन बौद्धसूत्रमें लिखा है कि बुद्धदेव वैशालीमें गोपाल

और सिंहके शालवनकी आये थे । मवकी मृत्युके बाद

उनके ललके सिंहने पिष्टपट प्राप्त किया था । गोपाल

अपनीको उपेक्षित ममभक्त वैशालीका परित्याग कर राज-

स्थलोंमें आ विश्विमारकी राजाके प्रधान मंत्री होकर रहने

लगे । थोड़े समयके बाद राजा विश्विमारने गोपाल-

को भ्रातृकन्या वासवीके साथ विवाह करा दिया ।

गोपाल—इस नाम पर बहुतसे संस्कृत ग्रन्थकारोंके नाम

धारे जाते हैं ।

१ एक धर्मशास्त्रकार, अदत्तने आडकल्पमें इनका

मत उद्धृत किया है ।

२ वृत्तदर्पणकार जानकीनन्दनके पितामह और

रामानन्दके पिता । इन्होंने कणादसूत्रको टीका और

काव्यकीमुद्दी रचना की हैं ।

३ संस्कृत चैतन्य-चरितामृत-रचयिता ।

४ द्रव्यगुण नामक वैद्यक ग्रन्थप्रणीता । १६०६ ई०-

को यह ग्रन्थ रचा गया था । इन्होंने चक्रपाणि और

नारायणकृत द्रव्यगुण उद्धृत किया है ।

५ पञ्चोपाख्यान-रचयिता ।

६ एक ज्योतिर्विद् । ये भास्वतोके टीकाकार ।

७ विवेकामृत नामक वैदान्तिक ग्रन्थ-रचयिता ।

८ शातवंशन्टपुस्तकालौ नामक ग्रन्थकार । ९ शुल्-

सूत्रका एक टीकाकार । १० विषमार्थदीपिका नामक

सारस्वत व्याकरणका एक टीकाकार । ११ विवाद-

भङ्गार्णवका एक संग्रहकार । १२ राजानक गोपाल

नामसे मशहूर है । इन्होंने दीनकन्दनस्तोत्र, प्रद्युम्न-

शिखरपीठाष्टक, महाराजीस्तव और शिवमालाकाव्य

प्रणयन किये हैं । १३ ये "परमहंस परिव्राजकाचाय

गोपाल" नामसे ख्यात हैं । ये गणपति और नृसिंहके

गुरु हैं । इन्होंने बहुतसे वैदिक ग्रन्थोंकी रचना की है

जिनमेंमें थोड़े ये हैं,—आपस्तम्बसूत्रविवरण, आपस्तम्ब-

शुक्लरहस्य, कात्यायनपरिशिष्टिमूल्याध्यायभाष्य, गोपाल-

कारिका, बोधायणीय चातुर्मास्यप्रयोगकारिका, दर्शपूर्ण-

मासाटिकारिका, पक्षयागटीका, बोधायनीय षण्णु प्रयोग-

कारिका, प्रायश्चित्तकारिका, बोधायनीयश्रीत्रयविवरण,

भरद्वाजमूत्रटीका, यज्ञप्रायश्चित्तविवरण, श्रौतकारिका

और सामकारिका ।

गोपाल आचार्य—१ आदेशकौमुदीखण्डन नामक एक

वैदान्तिक ग्रन्थ-रचयिता । २ विष्णुपूजाक्रम नामक संस्कृत

ग्रन्थकार ।

गोपालक (सं० द्वि०) गां पालयति पाल-ण्णुल् ६ नत् ।

१ गोरक्षक, ग्वाला । २ भूपाल, राजा । (पु०) ३ शिव,

महादेव । गोपाल स्वार्थं कन् । ४ नन्दनन्दन । ५ चण्ड

महासेन नरपति का एक पुत्र ।

गोपालकचा (सं० स्त्री०) गोपालानां कर्त्तव्यं । १ भारत-

वर्षके पश्चिम भागमें अवस्थित एक प्रदेश । (पु०)

२ तद्देवधामी, गोपालकचाके रहनेवाले ।

गोपालककटी (सं० स्त्री०) गोपालस्य गोरक्षकस्य प्रिया

कर्कटी । सुद्र कर्कटी, ग्वाला कर्कटी । इसका संस्कृत

पर्याय—वन्धा, गोपककटिका, सुद्रेवारु, सुद्रफला और

चिर्भिटा है । इसका गुण—शीतवीर्य, मधुर, पित्त,

मूत्रकृच्छ्र, अग्नी, मेह, दाह, और शोषनाशक है ।

गोपालकवि—१ एक विख्यात हिन्दी कवि । इनका जन्म

१६५४ ई०को हुआ था । ये राजा सितजित्सिंहके

सभाकवि थे । २ वाघेलखण्डके रेवाजिलान्तर्गत बन्धी

ग्रामके रहनेवाले एक कवि । ये ज्ञानिके कायस्थ एवं

बन्धीके महाराज विश्वनाथसिंहके मन्त्री थे १८३०

ई०में इन्होंने गोपाल पचीमी नामक एक प्रसिद्ध हिन्दी

ग्रन्थ रचा । ३ आनन्दलहरी नामक वैद्यक ग्रन्थकार ।

गोपालकृत्या—१ एक विख्यात संस्कृत ग्रन्थकार । इन्होंने

अम्बाहिशती, श्रायवर्णमालिका, उग्रसिंहस्तव, महे-

श्वराष्टक, कुमारकर्णामृत, दुर्गानवरत्न, देवोन्नवरत्न, पञ्च-

दशवर्णमालिका, वासुदेवहादशाक्षरी, वासुदेवनन्दिनी-

चम्पू, वीरराघवस्तव, श्वेताश्रिताधवाटक, सोमाश्व
नक्षत्रा प्रसूति प्रणयन क्रिये हैं ।

२ रत्नमरामर ग्रन्थ नामक वैद्यक ग्रन्थकार ।

गोपालकृष्णगोपाल — ये दक्षिण प्रान्तस्य महाराष्ट्र प्राध्वण ।
जातिमें कौकिलस्य प्राध्वणके अन्तर्गत थे । इनका जन्म
१८६६ ई०में कीर्त्यापुरमें हुआ था । मातापिताको श्रवस्या
गोचनीय होने पर भी इन्हें काले को शिक्षा मिली थी।
इन्होंने दक्षिण कालेज Dec in College और एल्फिन्
टन कालेजमें (Llpluust in Coll:gc) पढा था और
वर्हिमें १८८४ ई०में बी०ए पास किया था । स क्व पण्डितों
के समानमें भी ये एक प्रसिद्ध पण्डित मनि जाते थे । उन
के बाट दक्षिण एजुकेशनल सोसाइटीमें बोस वषके लिये
१५ रूपये मासिक पर पढानेके लिये प्रतिपाद्य १७
देगहित, देगमना और परापकारो काय करनेका इको
इतना अधिक प्रेम था कि कालेजको कुट्टोके टिनोमें
देगमेवाका चढा एकत्र करनेके लिये इन्हें पांव पाँच
घर घर घूमने और अनेक तरहके ऊट सहने पडते थे ।
स्वगंधामो रागाड अपने पोछे अपने शिथ मिटर गोख
लेकी छो देगमेवाके लिये अपना उत्तराधिकारो कर गये
थे । कुछ दिन तरुय पुना मार्जनिक् सभाके पत्र
(Quarterly Journal) क्वार्टली जर्नलके सम्पादक
हुए । बाट इन्होंने चार वर्ष तक एङ्ग्लो मरझटो भाषाके
सुधारक नामक पत्रका सम्पादन किया पार ये चार वर्ष
तक (Bombay Provincial Council) बम्बई प्रायि
नियल कौमिलके मन्त्रीके पद पर भी काय करते रहे
१८८५ ई०को जन पुनामें (Indian National Cong-
re-s) जातीय महासभामा अघिवेगन हुआ तब उनके मन्त्री
पद पर ये ही निर्वाचित हुए थे । १८८० ई०में पय प्रसिद्ध
मार्जनिक् पुर्णको माय ये भी भारतीय व्ययमन्त्री
(Welby Commission) वेल्बी कमिशनके सभ्य व
अपनी सम्पति देनेके लिये इङ्ग्लैंड भेजे गये । वहाँ इनके
कोगनमें सभके सय द ग रह गये । सदस्योंमें इन्हें नोचा
दिगानका बहुत कुछ प्रयय किया, परन्तु इनका विद
दशा और अभिप्रायके मामने उनकी एक न चली
विनायतमें अन्तमें समय लगेके पास पुनेमें योए पत्र गये थे
जन्में सयनमें टको प्रेगसम्बन्धी भौतिक विरुद्ध शिक्षा

यते श्री और गोरे सिपाइयोंके अत्याचारोका वण न
था । पत्र पठकर देगवासियोंके दु खमें नका हृदय
पिघल गया और तुरत ही उनपत्रोंका आशय द गने इके
समाचारपत्रोंमें छपा दिया । इस पर द गने उमें बढी
झलचल मचा ।

१८०० १ ई०में इन्होंने प्राचोय व्यवस्थापक कौमिल
के निर्वाचित सदस्यको इमियतमें बहुत कुछ उपयोगी
काम किया । १८०० ई०में ये वाइसरायकी व्यवस्था-
पक कौमिलके सदस्य चुने गये । वज्रटके मस्वभूममें इन-
को प्रथम वक्तृताने नोगी पर बडा भारी प्रभाव डाला ।
इनको यांयताको देख कर इनके विपक्ष मुक्तगुठसे
इनको प्रशमा करते थे । यहा तक कि लार्ड कर्जन
जैसे निरकुश शागजन भी इनको खूब तारीफ की थी
और इनके उपलक्ष्यमें इह सो, आई, इ को उपाधि भी
मिली थी ।

१८०५ ई०में गोखलेने भारतमें अपने टगकी निराली
आर अख्यन्त उपयोगो मख्या भारत सेवक समिति संगठित
की वयोकि इनका विस्वास था कि भारतको इस समय
एमे सेवकीकी आवग्यकता है जो मालूमिकी मेवाम
अपना जोवन अर्पित कर द । इस वष इन्हें पुन देग-
का भलाइके लिये विलायत जाना पडा । इस समय
वहाँ लाला लाजपतराय भा उपस्थित थे । दोनोंने मिल
कर अधाधारण परिश्रम किया तथा भारतवासियोंके
स्वलोके लिये और लार्ड कर्जनके कुशासनके विरुद्ध स्व
आन्दोलन मचाया । जब ये बम्बई और पुनेकी लीटे तो
वहा इनका यद्येठ स्वागत हुआ । स्वागतकर्त्ताओंमें
यायुत लाकमान्य पण्डित बालगङ्गाधर तिलक भी अशि-
लित थे । १८१४ ई०में यायुत गोखलेक ऊपर सय
सुच बडा कार्यभार पडा । इनके पक्षीकार करने तथा
स्वास्थ्य पुराय होने पर भी इन्हें कागोमें कार्य सजा सभा-
पति होना ही पडा । इस समय प्रतिफल भयत्या होने
पर भी इन्होंने इस काठन कार्यको बढी योग्यतामें निवाहा
अपना यक्षताके पारम्भ हीमें इन्होंने लार्ड कर्जनको
पौरगजमेसे तुलना को और फिर र्थगानियोंके द्वारा
विदेशी वस्तुओंके बहिष्कार किये जानका समर्थन
किया ।

प्रवासी भारतवासी भी श्रेयुत पण्डित गोपालकृष्ण गोखलेके अत्यन्त कृतज्ञ रहेंगे क्योंकि इन्हींके उद्योगसे नैटालको प्रतिज्ञावद्ध कुलियोंका जाना बन्द हुआ। १९१२ ई०में ये अपने दुर्दशाग्रस्त भाइयों और बन्धनोंकी दशा देखनेके लिये दक्षिण अफ्रिकाकी गये। वहाँ इन्होंने राजमन्त्रियोंसे मिल कर वार्तालाप की। इस वार्तालापका फल लाभदायक निकला। इन्होंने सोचा था कि देश तब तक उन्नति नहीं कर सकता है जब तक अशुक्त अनिवार्य आरम्भिक शिक्षा प्रारम्भ न हो। इस विषयका विल इन्होंने कौंसिलमें पेश किया, परन्तु अस्वीकार किया गया। इससे ये किञ्चित् निरुत्साहित तथा हताश न हुए। इन्होंने स्वयं कौंसिलमें इस तरह कहा, "मैं हतोत्साह नहीं हुआ हूँ और न मैं शिकायत हो करता हूँ क्योंकि यह सब कोई जानते हैं कि १८७० ई०के अनिवार्य शिक्षा एक षम होनेके पहले इङ्ग्लैण्डके लोगोंको कैसे कैसे उद्योग करने पड़े थे। इनके सिवा मुझे यह भी मालूम है तथा बहुत बार कह भी चुका हूँ कि वर्तमान पीढ़ीके हम भारतवासियोंको अफलता द्वारा ही स्वदेश-सेवा करनी पड़े है।"

१९१३ ई०में ये (Public Service Commission) पब्लिक सर्विस कमीशनके सदस्य नियुक्त हुए थे। १९१४ ई०में सम्राट् इन्हें सरकी उपाधि देते थे, परन्तु इन्होंने उसे सधन्यवाद अस्वीकार कर दिया। इनका विश्वास था कि 'सर'की उपाधि ग्रहण करनेसे देशसेवा में बाधा पहुँच सकती है। भारतवासियोंके अभाग्यसे ऐसे महापुरुषका देहान्त १९१५ ई०की १९ फरवरीको हो गया। इनके शवके साथ तथा श्मशानगृहमें लगभग बीस हजार मनुष्योंकी उपस्थिति थी। इनको मृत्यु पर लोकमान्य पण्डित बाल गङ्गाधर तिलकने श्मशानभूमिमें आसू बहाये थे और बड़े लाट माहवने भी अपनी कौन्सिलकी बैठक एक दिनके लिये बन्द की थी। गोपालकेशव (सं० पु०) कृष्णकी एक मूर्ति।

गोपालगञ्ज—१ बङ्गके फरिदपुर जिलान्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २३° ०' २२' उ० और देशा० ८९° ५२' पू०के मध्य मधुमती नदीके तीर अवस्थित है। धान, लवण, पाट, दधि और शीतलपट्टे (चटाई) के लिए यह नगर प्रसिद्ध है।

२ टिनाजपुरके अन्तर्गत एक गण्डग्राम। यहाँ एक सुन्दर देवमन्दिर है।

३ विहार प्रान्तके मारन जिलेका उत्तर मण्डिविजन। यह अक्षा० २३° १२' तथा २६° ३८' उ० और देशा० ८३° ५४' एवं ८४° ५५' पू०में पड़ता है। क्षेत्रफल ७८८ वर्गमील और लोकसंख्या कोड़े ६३५०४७ है पूर्वकी गण्डक नदी बहती है। इस उपविभागमें एक नगर और २१४८ ग्राम हैं।

४ विहार प्रान्तके मारन जिलेमें गोपालगञ्ज मण्डिविजनका सदर। यह अक्षा० २६° २८' उ० और देशा० ८४° ३७' पू०में अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः १६१४ होगी। यहाँ माधारण पब्लिक टफतरबने और सब जिलमें १८ कौटो रह सकते हैं।

गोपालगारि—एक गारि। संस्कृत ज्योतिर्विद्य यन्त्रराजके मतसे यह २७२९ अक्षांश पर स्थित है।

गोपाल चक्रवर्ती—एक विख्यात टीकाकार। इनका बनाया हुआ भागवत और अध्यात्मरामायणकी टीका प्रचलित है।

गोपालचन्द्रमहो—एक विख्यात हिन्दी कवि। ये प्रसिद्ध हिन्दीकवि हरिश्चन्द्रके पिता थे। इनका दूसरा नाम गारिधर बनारसी था। इन्होंने दशावतार काव्य और भाषाभूखनका भारतीभूखन नामक हिन्दी टीका रचना की है।

गोपालताताचार्य—एक विख्यात नैयायिक। इन्होंने संस्कृत भाषामें अनेक ग्रन्थ रचे हैं—जिनमेंसे कुक्कके नाम ये हैं—अनुपलब्धिवाद, अनुमितिमानसत्वविचार, अन्तर्भाववाद, आत्मजातिभिद्विवाद, ईश्वरवाद, ईश्वरसुखवाद, एकत्वभिद्विवाद, कारणता, ज्ञानकारणवाद, इन्द्रलक्षणवाद, नव्यमतवाद, परामर्शवादाय, बाधबुद्धिवाद, राजपुरुषवाद, वादार्थिगिडिम वादफक्किता, विधिवाद, शिष्यशिक्षावाद, नमाधिवाद और सादृश्यवाद।

गोपालतापनीय (म० क्लो०) गोपालस्तापनीयः सेव्या यत्र, बहुत्रो०। उपनिषद्विशेष। किसी किसी जगह गोपालतापन नामसे इसका उल्लेख मिलता है। शङ्कराचार्य, जौबगोखामो, नारायण, विश्वेश्वर प्रभृतिका रचा हुआ गोपालतापनीका भाष्य अथवा टीका पाई जाती है।

गोपालदासक (स० पु०) जैनियोंके एक आचार्यका नाम । गोपालदास—१ पारिजातहरण नामक संस्कृत नाटकके रचयिता एवं छन्दोमञ्जरोक्त गङ्गादासके पिता । २ वैद्यसारम ग्रह नामक संस्कृत चिकित्साग्रन्थ प्रणीता । ३ करटिनीतुक नामक संस्कृत ग्रन्थके रचयिता । इनके पिताका नाम चंनभद्र था । ४ भक्तिरत्नाकर नामक वैष्णव ग्रन्थकार । इन्होंने इस ग्रन्थको १५६० ई०में रचा था । ५ वल्लभास्थान नामक प्राकृत ग्रन्थकार । ६ एक प्रसिद्ध वैद्यक ग्रन्थकार । ये मिहेश्वरके पुत्र और रामरामके पौत्र थे । इन्होंने १७७१ ई०की योगामृत नामक संस्कृत चिकित्सा ग्रन्थ और सुत्रोधिने नामक उमकी टीका रची है । ७ एक भर्ता पण्डित । इनकी उपाधि सिद्धान्तवागीश महाचार्य थी । इनका बनाया हुआ व्यवहारा लोक नामका स्मृतिसंग्रह पाया जाता है । ८ व्रजके एक हिन्दी कवि । ये ई० सतरहवीं शताब्दीमें विद्यमान थे । इनकी प्रायः सभी कवितायें खडो बोलीमें हैं, जिनमें एक नीचे दी जाती है—

* श्रीमहाभा भारो डोनिवा कदाप ।

विष्टो चटकर दैसन भागे कौतुक दूर मोर विष कर राव ।

इस कालियामें दस दृश्यका बार बहार तिन घर पडु थाव ।

कवच गोपालनाम कहरवा चरक हसनको में बिन बिन जाय ।*

गोपालदास बरैया न्यायवाचस्पति—द्विगम्बर जैन सम्प्रदायके एक प्रसिद्ध विद्वान और ग्रन्थकार । इनके पिताका नाम लक्ष्मणदास और माताका नाम लक्ष्मामतो था । वि० स० १८२३में आगरामें इनका जन्म हुआ था । जिसबाल जाति और बरैया इनका गोत्र था । सातवर्षकी उम्रमें (स० १८३० में) इनके पिताका देहान्त हो गया । माताने बहुत कष्टसे इनको मैटिकुलेशन तक पढाया । गणितमें ये बहुत ही निपुण थे । २० वर्षकी उम्रमें झाँझूक ल छोड़ दिया । इनका १४ वर्षकी उम्रमें विवाह हो गया था । अजमेरमें इन्होंने पण्डित मोहनलालके पास रहकर दो वर्ष तक गौर्ण्टमार मराठे महान् ग्रन्थका अध्ययन किया ।

इनके उपरान्त ये स्वानियरके अन्तर्गत सुरेना नामक स्थानमें रहने लगे । यहां रहकर इन्होंने "जैनसिद्धान्तविद्यालय" नामका एक जैन विश्वविद्यालय स्थापन

किया । इनकी विद्वत्तासे मुग्ध हो कर कलकत्तेके पण्डित समाजने इन्हें 'न्यायवाचस्पति' उपाधि दी थी । इनके सिवा अन्य महाशयिसे इनको 'स्याहाटवारिधि' और 'वादिगजकीशरी इत्यादि कई एक उपाधियाँ प्राप्त हुई थी । इनके स्त्राघंठ्यागके लिये समस्त जैन समाज अब भी उनका स्मरण करता रहता है । आपके द्वारा जैन समाजमें न्याय और कमसिद्धान्तके जाननेवाले पचामो विद्वान तयार हुए हैं । इस समय जो "जैनमित्र" नामक ग्रांसाहिकपत्र निकल रहा है, उसकी सबसे प से इन्होंने निकाला था । इन्होंने सुशीला उपन्यास, जैनसिद्धान्तदण, जैनसिद्धान्तप्रवेशिका आदि कई एक हिन्दी ग्रन्थ लिखे हैं । पिछली पुस्तकका जैनसमाजमें खूब प्रचार है ।

इनका स्थापित गोपालजैनसिद्धान्तविद्यालय आजकल भी जीवित और सुचारु रूपसे कार्य कर रहा है । इसमें यं अर्थतनिक अध्यापन करते थे ।

१८१७ ई०में स्वानियरके अन्तर्गत मोरेना नामक स्थानमें इनकी मृत्यु हुई ।

गोपालदेव—१ राष्ट्रकूटवंशीय राजा भुवनपालके एक पुत्रका नाम । २ मीजप्रवेशवर्णित कुण्डिन नगरका एक कवि । ३ एक प्रसिद्ध वैयाकरण । इनका दूसरा नाम मन्वुदेव था, य शश देवके पुत्र और ह्यणदेवके कनिष्ठ भ्राता थे । इन्होंने परिभाषेन्दुशिखर, वैयाकरणभूषण, लघु वैयाकरणसिद्धान्तभूषण और लघुग्रन्थेन्दुशिखरकी टीका रचना की है ।

गोपालदेशिकाचार्य—एक विख्यात संस्कृतवित् पण्डित । इन्होंने संस्कृत भाषामें नितिनपचिन्तामणि और सारस्वादिनी नामक वेदान्त, रामनवमानिर्णय और आर्यसङ्कपदति प्रणयन किये हैं ।

गोपालधानी (स० त्रि०) गोपालो धोयतेऽत्र धा आधारे ल्युट् ङोप् । गोष्ठ, गो रहनेका स्थान ।

गोपालनगर—वज्रम नदिया जिनके अन्तर्गत एक पाणिज्य प्रधान नगर यह अक्षा० २३ ३५० ४० और देशा० ८८ ४८ ४० पू० पर अवस्थित है ।

गोपालनन्द वाणोविलास—भगीरथ मियके पुत्र । इन्होंने सारावलो नामक कुमारमभयको एक उत्कृष्ट टीका लिखी है ।

गोपालनायक—भारतवर्षके एक प्रसिद्ध गायक। दक्षिणा-
त्यसे इनका जन्मस्थान था। सुल्तान अला-उद्दीन-सिक-
न्दर मानीके राजत्वकालमें इन्होंने ख्याति प्राप्त की थी।
ये गायक अमीर खुशरूके समसामयिक थे। ऐसा प्रवाद
है कि जब गोपाल दिल्लीकी राजसभामें जा गान करते
थे तो उस समय दिल्लीमें उनके समान श्रेष्ठ गायक दूसरा
कोई नहीं था। सत्नाट अपने गायक अमीर खुशरूको
सिंहासनके नीचे पा कर गोपालको गानेकी आज्ञा
देते थे। अमीर खुशरूने गुप्त स्थानसे गोपालके गीत और
सुर तानका अभ्यास कर लिया था, एवं एक दिन गोपाल-
के अनुकरणसे इन्होंने 'कौवाल' और 'तराण' गा कर
सभामें सकल मनुष्योंको चमत्कृत कर दिया। गोपाल
भी इस घटनाको देख कर आश्चर्यान्वित हुए थे।

इनको कुछ कविताये नैचि दी जाती हैं।

“कदा वै गुनी ना नध नाट शब्द ज्ञान वर थोक गावै।

नारग देशे कर मूर्च्छना गण उपजे नति

सिद्ध गुरु साध चावै सो पञ्चन मध दर पावै ॥

उक्ति युक्ति भक्ति सुक्ति गुप्त भोवै ध्यान लगावै।

तब गोपालनायक श्रुत सिद्ध नव निद्ध जात जगन सत्य पावै ॥

लग गुरु समझ धरै क्यो नहि यत्न गुरुन प्रमाण।

जै कि लग तेहो गुरु लग गुरु विवेक न्ये कर लख

सौई उलट धरै जो कहै यत्न गुरुण प्रमाण ॥

मगन नगन जगन तग भगन सगन यगन न जान।

कन्द वनध प्रवनध मङ्गल मन गोपालनायक करत विनान ॥”

गोपाल न्यायपञ्चानन भट्टाचार्य—वङ्गदेशीय एक विख्यात
स्मार्त पण्डित। ये वैदिक ब्राह्मण वंशके थे। इनके
पाण्डित्यसे सुग्ध हो कर महाराज कृष्णचन्द्रने इन्हें
अपना सभासद नियुक्त किया था। ये अरिज गवर्मेण्ट-
के भी एक व्यवस्थापक थे, जिसके लिये इन्हें मासिक
वेतन भी मिला करता था। एक समय ढाकाके राजा
राजवल्लभने विधवा-विवाहके प्रचारके लिये नाना स्थानके
पण्डितोंसे मत ले कर एक मनुष्यको राजा कृष्णचन्द्रके
भी निकट भेजा। कृष्णचन्द्रके आदेशसे पहले दूसरे
दूसरे पण्डितोंने विधवा-विवाहकी शास्त्रीयता प्रतिपादन
की, किन्तु राजसभामें विख्यात पण्डित गोपाल न्यायपञ्चा-
ननने विधवा-विवाहकी अशास्त्रीयता और देशाचार-
विरुद्धता बतलाया। इस पर नवहीपक कोई भी विधान

विधवा-विवाहका आनुकूल्य मत दे न सका। इस तरह
राजवल्लभकी विधवा-विवाह प्रचलनार्थ समस्त चेष्टायें
निष्फल हुईं। इन्होंने आचारनिर्णय, उद्वाहनिर्णय, काल-
निर्णय तिथिनिर्णय, दायनिर्णय, प्रायश्चित्तनिर्णय,
विचारनिर्णय, शुद्धिनिर्णय, आद्याधिकारनिर्णय-संक्रान्ति-
निर्णय और मन्वन्वय निर्णय ग्रन्थ रचे हैं।

गोपालपण्डित—गृह्यभाष्य और प्रायश्चित्तकदम्ब नामक
संस्कृत ग्रन्थकार।

गोपालपट्टनम्—मन्द्राजमें विशाखपत्तन जिलेके अन्तर्गत
एक गण्डग्राम, जो सर्वभिक्षसे ८ कोस दक्षिण-पश्चिममें
अवस्थित है। ग्रामके पूर्व एक छोटे पहाड़के ऊपर पाण्डु,
कुलसिद्ध नामका एक पुरातन मन्दिर है। ऐसा प्रवाद है
कि पाण्डवोंने इस मन्दिरको स्थापन किया था। इसी
पहाड़के निकट प्रस्तरकी पञ्चसूक्ति एवं प्रवेशपथ पर
अस्पष्ट शिलालिपि भी है।

गोपालपुर—१ मन्द्राजके गञ्जाम जिलेका बड़ा बन्दर।
यह अक्षा० १६' १६ उ० और देशा० ८४' ५३' पू०में
भारतपुरसे ८ मील दक्षिणपूर्व पड़ता है। लोकसंख्या
प्रायः २,५० है। यहां ब्रिटिश-इण्डिया-ष्टीम-नेविगेशन
कम्पनीके और बहुतसे दूसरे जहाज आरकी लगते हैं।
अनाज, दाल चमड़ा, खाल, माल लकड़ी, सन, रस्सोकी
चोजो और तेलहनकी खास-रफ्तानो है। सालमें १४ १५
लाखका माल जाता है। बन्दरकी रीशनी १० मील तक
देख पड़ती है। एक लोहित आलोक भी है, उसका
प्रकाश ३ मील तक पहुँचता है। जहाज कोई १॥ मील
दूर लङ्गर डालते हैं। परन्तु रेलवे खुल जानेसे काम
कम पड़ गया है।

२ गोटावरी जिलेके अन्तर्गत एक ग्राम। यहां पुरा-
तन विष्णु मन्दिर पर अस्पष्ट शिलालिपि उल्कीर्ण है।

३ गोरखपुर जिलेके धुरियापार परगनाके अन्तर्गत
एक ग्राम, जो गोरखपुरसे ३३ मील दक्षिण है। ग्रामके
पश्चिमांशमें बहुतसे स्मृति चिह्न पड़े हैं जो प्राचीन नगर-
के अवस्थानका परिचय देते हैं।

४ त्रिहुत जिलेके अन्तर्गत एक परगना। यहांकी
जमोन नीची रहनेके कारण वर्षाकालमें इसका अधिकांश-
भाग जलमग्न हो जाता है।

गोपालभट्ट—इम नामके कई एक ग्रन्थकार हैं ।

- १ गोपाल रत्नाकर नामक सस्कृत धर्मशास्त्रकार ।
- २ गोपालपद्धति नामका सस्कृत ज्योतिष ग्रन्थ रचयिता ।
- ३ चैतन्यभक्त एक वैष्णवग्रन्थकार । इनका बनाया गया भगवद्भक्तिविलास नामक सस्कृत ग्रन्थ है । जो बङ्गीय वैष्णव समाजमें विशेष ममादृत है । ४ मिताचरके व्याख्यान नामकी टीकाकार । ५ मौर्मामतत्वचन्द्रिका नामका सस्कृतग्रन्थकार । ६ सस्कृत भाषामें मानन्दगोविन्द नामक नाटककार । ७ सुभार्गचर्नचन्द्रिका नामका मस्कृत ग्रन्थकार । ८ महामुनस्तवका स्तुतिचन्द्रिका नामक ठक्कूट टीकाकार । ९ गीतगोविन्दका अर्थ रत्नावली नामका टीकाकार । इनके पिताका नाम दुर्गादास और पोतामहेश नाम ज्ञान था । १६७६ ई०को इन्होंने उक्त टीका प्रणयन की थी । १० एक दार्शनिक जो मद्रनाथ भट्टके पुत्र और कृष्णभट्टके पीढ़ थे । इन्होंने मोमांसाविधि भूषण नामक सस्कृत ग्रन्थकी रचना की है ।

११ एक विख्यात तान्त्रिक । ये चागमवागीशके पाँच और हरिनाथके पुत्र थे । ये तन्त्रदीपिका नामक एक तान्त्रिक ग्रन्थ लिख गये हैं ।

१२ एक द्वाविड़ीय पण्डित, हरिवंश द्वाविहके पुत्र । आपने कई एक सस्कृत ग्रन्थ रचे हैं, जिनमेंसे प्रसिद्ध ये हैं,—कालकौमुदी नामक स्मृतिग्रन्थ, कृष्णशर्णाद्युक्तकी कृष्णशर्मा, शूद्रातिनककी रमतरङ्गिणी एव रसमञ्जरीकी रमिकरञ्जिनी नामकी टीका । १३ पद्याथली हृत एक प्राचीन कवि ।

गोपालपुत्रिका (म० स्त्री०) चिमिटा, ककड़ी ।

गोपालभट्टशुद्ध—गणेशभट्ट नाम व्याख्याके रचयिता ।

गोपालभांड—नथदोषाधिपती महाराज कृष्णचन्द्ररायके एक विख्यात सभासद् । रायगुणाकर भारतचन्द्रने अष्टदशमस्कन्दके प्रारम्भमें कृष्णचन्द्रके समावर्णन उपनयनराजपरिहार, चामात्य, पण्डित, भक्त्य, प्रभृति सभाका उद्देश्य किया है । किन्तु गोपालभांडका नाम उसमें लिखा नहीं है, इसमें कोई छोड़ अनुमान करता है कि गोपालभांड भारतचन्द्रके समकालीन नहीं भी हो सकते हैं चाहा किन समय अष्टदशमस्कन्द रचा गया था उस समय गोपाल कृष्णचन्द्रकी सभामें गान न पाया हो । किन्तु

कृष्णचन्द्र भारतचन्द्रकी पपिता गोपाल भांडकी अधिक चाहते हैं जिस कारण ईर्ष्यावगत रायगुणाकरने गोपाल भांडका नामोक्तेष्व न किया हो । जो कुछ हो, गोपाल भांड किम तरह भारतचन्द्रकी मानते और भक्ति अदा करते थे उसका एक सामान्य उपाख्यान इस तरह प्रचलित है ।

गोपाल जानते थे कि भारतचन्द्रके ऊपर पण्डित वाणेश्वर विद्यालङ्कार और जगन्नाथ तर्कपञ्चानन प्रभृतिके ईर्ष्या बनी है । एकदिन भारतचन्द्र अष्टदशमस्कन्दका प्रथम वाणेश्वरकी पढ़ने दिया । वाणेश्वरकी अग्रदामावसे उक्त ग्रन्थ लेते और विषयान्त भावसे ऊपर उधर ग्रन्थकी उन टाँटे देखे गोपाल उनके निकट जा करबद हो उश्वरसे कहने लगे, 'महाशय, यह क्या कर रहे हैं ? यह शब्द न्याय शास्त्र नहीं बरन रसपूर्ण काव्य है, भावधानसे पकड़िये नहीं तो समस्त रस गिर जायगा ।' गोपालके ऐसे रसपूर्ण पद्यनसे विद्यालङ्कार कुण्ठित हो आदरपूर्वक प्रथम देखने लगे ।

पद्मना चितीगवशावलीके मतानुसार गोपालभांड जातिके नापित थे और शान्तिपुरमें इनका वासस्थान था । किन्तु गुणिपाठा और शान्तिपुरके वचन मनुष्योंने ऐसा सुना जाता है कि गोपाल कायम्प जातिके थे और गुणिपाठामें इन्होंने जन्म ग्रहण किया था ।

गोपालमित्र्य—गोपालपुत्राधिपतिके रचयिता ।

गोपालयजुज्वन्—शाण्डव्याजकी टीका ।

गोपालयोगी—कठवल्लीभाषायाधिवरणका प्रणेता ।

गोपालराय—हिन्दीके एक प्रसिद्ध कवि । इन्होंने बहुसंख्यी अच्छी अच्छी कवितायें रची हैं ।

गोपालनान्न—हिन्दीके एक सुप्रसिद्ध कवि । ये लगभग १७६५ ई०में विद्यमान थे । इन्होंने शास्त्रिरसकी बहुसंख्यी कवितायें रची हैं जिनमेंसे कुछ इस तरह हैं—

“मैं तो नाँवरे सड़के सड़के सड़के सड़के सड़के सड़के सड़के ।

सड़के सड़के सड़के सड़के सड़के सड़के सड़के सड़के ।

और एक सड़के सड़के सड़के सड़के सड़के सड़के सड़के ।

साँठ साँठ साँठ साँठ साँठ साँठ साँठ साँठ साँठ ।

सिंहन साँठ साँठ साँठ साँठ साँठ साँठ साँठ साँठ ।

सिंहन साँठ साँठ साँठ साँठ साँठ साँठ साँठ साँठ ।

सिंहन साँठ साँठ साँठ साँठ साँठ साँठ साँठ साँठ ।

इनके सङ्ग सब गोप वधू है उनके सङ्ग सब खान ॥

बहुत दिनन पर भेंट मई है यह दिन दीनदयान ।

सन मान का फगुया लै ही जै है कथा गोपाल ॥" बादगोपाल देखो ।

गोपालवन्दोजन—बुन्देलखण्डके अन्तर्गत चरखाड़ी-निवासी एक कवि । ये १८४० ई०में चरखाड़ीके राजा रतन-मिहकी राजसभामें विद्यमान थे ।

गोपालव्यास—नारायणभट्टके शिष्य और उमेशभट्टके पुत्र । इन्होंने संस्कृतभाषामें नवरात्रनिर्णय प्रणयन किया है ।

गोपालशरण—ये राजा गोपालशरण नामके मगहर रहे । इन्होंने तुलसीकृत 'शतसई' ग्रन्थके प्रबन्धघटना नामके एक सुंदर हिन्दी टीका रचना की है ।

गोपालशर्मन्—१ एक विख्यात कवि । इन्होंने सूर्यशतक रचा है । २ एक विख्यात राष्ट्रीय ब्राह्मण कुलाचार्य । इन्होंने भ्रुवानन्दमतव्याख्या नामका कुलग्रन्थ प्रणयन किया है ।

गोपालसिंह—एक ब्रजवासी हिन्दीग्रंथकार । इनका बनाया हुआ तुलसीशब्दार्थप्रकाश नामक ग्रंथ ब्रजके वैष्णवमण्डलीमें विशेष आदरणीय है ।

गोपालसिद्धांत—अशोकमाला नामक धर्मशास्त्रकार ।

गोपालस्वामी वेद-महिसुर राज्यके महिसुर जिलेमें गुण्डल-पेट तालुकका पहाड । यह अक्षा० ११° ४३' ३०" और देशा० ७६° ३५' पू०में ४७७० फुट ऊंचा पड़ता है । आधारका घेर १६ मील और चढ़ाई ३ मील है । बादल और कुहरसे आच्छादित रहनेके कारण हिमवद्गोपाल स्वामी कहते हैं । पौराणिक नाम कमलाद्रि वा दक्षिण गोवर्धनगिरि है । इसमें भरनं बहुत हैं । प्रायः ई० ११वीं शताब्दीकी नवाटनायकोंने उसकी किलेबन्दी की और १५वीं शताब्दीकी समाप्तिसे १७वीं शताब्दीके मध्य-भाग तक वह कोटे या वेडकोटे राजाओंका दुर्ग रहा । किलेमें गोपाल स्वामीका मन्दिर है । यानी विष्णु भगवान्के दर्शन करने जाते हैं ।

गोपालि (सं० पु०) गां वृषभं पालयति पालि-इन् । १ शिव, महादेव । २ प्रवरविशेष ।

गोपालिका (सं० स्त्री०) गोपालकस्य पत्नी गोपालक-टाप् अत-इत्वं । १ गोपाङ्गना, ग्वालिन, अहीरिन । २ शारिवा, अन्नमूल । ३ कीटविशेष ।

गोपालो (सं० स्त्री०) गोपालस्तदाकारोऽभ्यव । १ गोपाल-अच् । कर्कटो । २ गोरक्षो नामक मत्स्यस्य गोपालस्य पत्नी डीप् । ३ गोपपत्नी ग्वालाङ्गी स्त्री । गां पानयति गो-पालि-अण् डीप् । ४ जो स्त्री गो पालन करती है, गो पालनेवाली । ५ कार्तिकेयकी महचारिणी मातृका विशेष ।

गोपावत् (सं० त्रि०) गोपा रक्षणमन्वयस्य गोपा-मतुप् मस्य वः । रक्षणयुक्त, गुण, रक्षित ।

गोपाटमी (सं० स्त्री०) गोप्रपिया अटमी । कार्तिक शुक्लाष्टमी, इसी दिन कृष्णने गोचारण आरम्भ किया था । इस दिन मंत्रत जो कर गोपूजा, गोयामटान गोप्रदक्षिण और गवानुगमन करनेमें अभीष्ट सिद्ध होता है ।
(कर्मपुराण)

गोपिका (सं० स्त्री०) गोपी-कन् टाप् पूर्व ङत्वञ्च । १ जो स्त्री गोपालन करती है, गोपालिका । गोपी स्वार्थे कन्-टाप् पूर्व ङत्वञ्च । २ गोपपत्नी, गोपका स्त्री । गोपा यति रक्षति वा गुप ग्वुन्-टाप् अत इत्वं । ३ रक्षित्री, छिपानेवाली । ४ कृष्णशारिवा ।

गोपिच्छिपालैथम्—मन्द्राज प्रांतके कोयम्बतोर जिलेमें सत्य मङ्गलं तालुकका सदर । यह अक्षा० ११° २७' ३०" और देशा० ७७° २६' पू०में एरोट रेलवे स्टेशनसे २५ मील उत्तर-पश्चिम पड़ता है । आवादी कोई १०२२७ है । यहां धनी लोग रहते हैं । कोरण्डम् धातु खूब पाया जाता है । गोपित (सं० त्रि०) गोपा गोपनं जातास्य गोपा इतच् । छिपाहुआ, गुप्त ।

गोपित्त (सं० स्त्री०) गोः पित्तमिव । गोरोचना, गोरोचन नामक सुगन्ध द्रव्य ।

गोपिन् (सं० त्रि०) ग पायति गुप-णिनि । रक्षक, रक्षा करनेवाला ।

गोपिनी (सं० स्त्री०) गोपिन् डीप् । १ गोपी । २ श्याम लता । ३ नायिकाविशेष । जो नायिका वीराचार-निरता होकर पश्वाचारीके निकट आत्मगोपन कर सकती हो उसे गोपिनी कहते हैं । (त्रि०) ४ छिपानेवाली ।

गोपिया (सं० स्त्री०) गोफना, डेलवाँस ।

गोपिल (सं० त्रि०) गोपयति रक्षति गुप-इलच् निपातने साधु । गोपा, छिपानेवाला, रक्षा करनेवाला ।

गोपिलपुरम्—मन्द्राजमें ब्रह्माचल तालुकके अन्तर्गत एक प्राचीन ग्राम। यह ब्रह्माजलमें ५ मील पूर्व दक्षिणमें अवस्थित है। यहांकी पुगतन शिवमन्दिरमें अनेक शिलालिपि चत्कोर्ण हैं।

गोपिठ (म० वि०) अतिगद्येन गोपी इण्डन् टिनोप । गोपूतम ।

गोपी (म० स्त्री०) गोपस्य स्त्री गोप_डोप_। गोपवती, ग्यान्तिनी। पूर्व समयमें वे समस्त क्षत्र्यकी सेवा करती थीं। ब्रह्माचरकी गोपी क्षत्र्यके प्रेममें मत्तगाली हो कर अपने पतिपुत्रको छोड़ कृष्णके साथ रहा करती थी। साधारण मनुष्य उन्हें मानुषी समझते एव क्षत्र्यके साथ रहनेके कारण उनके चरित्रमें कलह दहराते थे, किन्तु प्राचीन हिन्दुशास्त्रके प्रति लक्ष्य करनेमें जाना जाता है कि गोपीगण सामान्य मानवी नहीं, पार्थिव सुषुके लिए वे कृष्णकी वन्दना नहीं करती और वे कुण्व की मन्दगोपके मन्दन कह कर भी नहीं समझती, वरन् उनको विराट, अथवा सच्चिदानन्द और जगत्पति मानती थीं, इस लिए सामारिक सुषु परिव्याग कर मान, मन्त्रा और भीमभयको जलाज्जलो दे कर उहोंने कृष्णमें श्राव्य समर्पण की थी।

पद्मपुराणके पातालखण्डमें लिखा है कि गोपीगण मानवी थीं। श्रुति, देवकन्या और मुनिकन्यागण ही गोपीरूपमें ब्रह्माचरमें धाम करती रहीं। इनमेंसे राधा, चन्द्रायनी विद्याया और ललिता प्रभृति कई गोपियां प्रधान थीं।

गोपापति रश्मि गुप् भव गौरादित्वात् डीप् । २ शारिया, अमनाभूम। ३ रथिका रथा करनेवाली।

गोपीक—सृष्टिकर्णाश्रतष्ट एक प्राचीन कवि। गोपीकान्त—धैरीटसके पुत्र, ग्यायमटोप नामक मन्कृत धन्यके रचयिता।

गोपीकामोदी (म० स्त्री०) कामोद और फेंटारी योगमें लक्ष्य शान्तिनिधि।

गोपीगोता (म० स्त्री०) भागवतके ११म अध्यायमें गोपीगण छत क्षत्र्यकी श्रुति।

गोपीचन्द्र—वे जन्दि ६ एक सुप्रसिद्ध कवि थे। ७ मन्दि कई एक रचयार्थ रने हैं जिनमें एक नाथ हने है—

‘ दान क्षय ममान् मुनश्चि ज्ञान विक्रम नीन दीव गावन उर विमान । गोरेचन्द्रकी गोपी प राजा (म रावब मार गोता गरी भागे बपुर सुमान गोपीचन्दन (पु०) एक प्रकारकी पीनी मदी। यैश्वन् गग इन मदीका तिनक लगावे और समस्त घट्ट पर रनिनामका छाव टेटे हैं।

हारकाका गोपीचन्दन की सर्व्येष्ट हैं। उहत्तोंका विश्वास है कि जब क्षत्र्य लोनामस्वरण कर स्वर्ग चने गर्थ तब विरहकातरा गोशोगाने एक पोगुरमें डूब कर अपना प्राण त्याग किया था। उन्नी पोवर (तालाव) की मदी गोपीचन्दनमें प्रसिद्ध है।

गोपीचन्द्र—१ बङ्गपुरकी एक राजाका नाम। इनका गान अत्र तक भी बङ्गपुर अञ्चलमें प्रचलित है। कोच-विहारा और कामरूप देखो।

२ सृष्टिकर्णाश्रतष्ट एक प्राचीन कवि। गोपीजनवधम (म० पु०) गोव्यैव जनमृत्युय वधम । यो क्षत्र्य ।

गोपीत (म० पु० स्त्री०) गो गौरचनेव पीत । एक प्रकार-का यज्ञनपको जिमका देवता अशुभ समझा जाता है। गोपीय (म० स्त्री०) गा पशुन् पाति गो पा यक निपातने साधु। १ तीर्थस्थान। २ सोमपान। ३ रक्षण, रक्षा। ४ राजा। ५ गोक जल पीनका मरीचर।

गोपीय (म० स्त्री०) गो पृथिव्या पीय पानन गोपीय-मिय गोपीय म्यार्थे यत्। पृथ्वीपानन।

गोपीनाथ (म० पु०) गोपिदेकि ग्यामी, श्रीक्षत्र्य।

गोपीनाथ—१ भयहीपके प्रसिद्ध विशुविषय, धैतयदेय कर्तृक भूमिपिह और गोविन्दघोष ठाकुर कर्तृक प्रति द्विन। २ रथे-० और क्षिप-पीवनाड-देकी। ३ पञ्जाधाम प्रयोग नामक मन्कृत धन्यकार। ४ अनुमानयाद नामक ग्यायधन्यकार। ५ एक विख्यात ग्यात पण्डित। ६ नै पाकिचन्द्रिका, गुणापुत्रवधमहात्मारवति प्रेताधिकारि नामक ग्यायधन्यकार। ७ मन्काररथमाता, मापिग्यायिपय प्रभृति म स्तन पय रचे है। ४ विविकमगतप्रोर्ण नामक ज्योतिर्षयका और दुर्गमालाकाका टोयाकार। ६ ग्यायविनामके रचयिता। ७ पदयावरयायरथ प्रणना। ८ जानरतिके पुत्र। ९ नैने ग्यायनोकररथरथे रचयका का है। १० ज्ञानिपयिके रचयिता। वे ग्यामगापुत्र पुत्र

और साभराजके पीत थे। १० पशुपत्याचार्यसिंहके पुत्र और कातन्त्रपरिशिष्टप्रबोध रचयिता।

गोपीनाथ कविराज—एक प्रसिद्ध टीकाकार। इन्होंने कविकान्ता नामक रघुवंशकी टीका, सुमनोहरा नामका काव्यप्रकाशकी टीका, हर्षहृदया नामक नैपथकी टीका एवं दशकुमारकथा और मत्तश्री नामक दो संस्कृत ग्रन्थ प्रणयन किए थे।

गोपीनाथटीक्षित—आवणकर्म नामक संस्कृत ग्रन्थकार।

गोपीनाथदेव—उड़ीसाके एक राजाका नाम। आपने १७१८ से १७२८ ई० तक राज्य किया था।

गोपीनाथपत्र—एक विचक्षण महाराष्ट्र ब्राह्मण।

१६५८ ई०को जिस समय विजापुरके सुप्रसन्न राजदरवारमें अस्सालीके मध्य गोलयोग चल रहा था, उस समय अफजल खाँ नामक एक सम्भ्रान्त वीरपुरुष शिवाजी पर शासन करनेके लिये नियुक्त हुवे। ये ५००० अश्वारोही और ७००० उल्हाट पटातिक सैन्य साथ ले रवाना हुए। उस समय शिवाजी प्रतापगढ़में थे, इन्होंने कौशलक्रमसे अफजल खाँको लिख भेजा कि विजापुरके विरुद्ध अस्त्र धारण करना उनके लिये अभिप्रेत नहीं है। यदि अफजल खाँ मनोयोग करें तो वे सुलतानके आश्रय ग्रहण कर सकते हैं। अफजल खाँने देखा कि वन जंगल होकर शिवाजी पर आक्रमण करना सहज नहीं है। इस सुयोगमें शिवाजीको यदि हस्तगत कर सकें तो उनके गौरवकी सीमा न रहेगी। इस लिये इन्होंने गोपीनाथको अनुचरके साथ प्रतापगढ़को भेजा। गढ़के निकटवर्ती पार नामक ग्राममें गोपीनाथके पहुंचने पर शिवाजीने स्वयं आ उनका आदर सत्कार किया। गोपीनाथने शिवाजीको कहा “अफजल खाँ भी आपके साथ मित्रता स्थापन करनेके लिये अभिलाषी है, वे सुलतानके निकट आपके हेतु चमत्कार प्रार्थना कर आपको जागीरदार बना देंगे।” शिवाजी इस पर सन्मत्त हो गये और गोपीनाथका वासस्थान कुछ दूरमें निर्दिष्ट करा दिया। ठीक दो प्रहर रात्रिको शिवाजी अकेले गोपीनाथके घरमें प्रवेश कर उनसे भेंट की। गोपीनाथ ब्राह्मण थे, सुतरां शिवाजीने साष्टाङ्गसे प्रणिपात पूर्वक उन्हें यथेष्ट भक्ति दिखलाई। गोपीनाथ ऐसी गभीर रात्रिमें शिवाजीको

अपने गगनकूतमें देख चकित हो उठे, एवं अति समादरसे उनके आनेका कारण पूछा। शिवाजी धीरे धीरे बहुत गम्भीरतासे बोले—“मैं भवानोके आदेशानुसार गोब्राह्मणकी रक्षाके लिये नियुक्त हुआ हूँ, स्त्रैच्छके कराल क्रवन्तमें गोब्राह्मणका परित्याग करूंगा, यही मेरा एक मात्र आभप्राय है। आप स्वयं ब्राह्मण हैं! ब्राह्मण होकर क्या स्वजाति और स्वदेशकी रक्षा कर नहीं सकते! यदि आपने अर्थके लिये मुगलमानका दामत्व स्वीकार किया है तो मैं आपका यह अभाव दूर करनेमें प्रतिबन्धित हूँ। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि यदि आप अनुकूल होंगे तो हंवरना नामक ग्राम सदाके लिये आपको प्रदान कर दूँ।” ऐसा सुन कर गोपीनाथकी आँखोंमें जल आ गया, और आन्तिङ्गनकर शिवाजीको कहा—“मैं भवानोका आदेश शिरोधार्य करता हूँ, अवश्यही मैं आपकी महायता करूंगा।”

ऐसा कह कर इन्होंने अफजल खाँ की दुरभिमन्धि और मनका भाव प्रकाश किया। बहुतही थोड़े समयमें परामर्श स्थिर कर शिवाजी घर लौट आये। दूसरे दिन इन्होंने गोपीनाथके साथ कृष्णजी भास्कर नामक एक ब्राह्मणको अफजल खाँके निकट भेजा। गोपीनाथ और कृष्णजीने शिवाजीसे भेंटके लिये अफजलखाँके निकट अनेक अनुनय विनय किया। गोपीनाथका वचन मान वे शिवजीके माथ मुलाकातके लिये प्रस्तुत हुए। इधर शिवाजीने अफजलखाँकी अभ्यर्थनाके लिये प्रतापगढ़के नीचे एक स्थानको सुमज्जित किया और वनजंगल काटवा कर उनके आनेका रास्ता परिष्कार करवा दिया। पथके चारों ओर रोतिमत सेना रखी गई। अफजल अल्पसंख्यक सैन्य और गोपीनाथको साथ ले शिवाजीसे मुलाकातके लिये आये। जिस स्थान पर दोनों साक्षात् होते वहां अपने अपने पक्षका सिर्फ एक एक व्यक्ति सङ्ग ले उपस्थित हुवे। शिवाजीकी कमरमें वाघनख नामक दारुण अस्त्र रक्षित था। दोनोंमें ज्योंही परस्पर आलिङ्गन होनेको या ल्योही शिवाजीने कटिस्थ ‘वाघनख’ से अफजलका उदर विदोष कर हृत्पिण्ड छिन्न कर डाला। थोड़े ही समयमें अफजलखाँ निहत हो गए। शिवाजीने भी अपना अङ्गिकार पालन

क्रिया। गोपीनाथने अधिक अर्थ और महाराष्ट्र सैन्यके मध्य उच्च पद लाभ किया। विवाहो हेयो।

गोपीनाथपुर—उड़ीसाके काठक जिलेके अन्तगत गण्डग्राम यह कटक नगरसे प्राय ५ कोस उत्तर पूर्वमें अवस्थित है। यहां सुवर्त गोपीनाथजीके मन्दिरका ध्वंसावशेष पड़ा है। गोपीनाथजा मूल और गर्भरठहका कुछ भी चिह्न नहीं है। भग्न नाटमन्दिरके मध्यस्थलमें एक नूतन रठह निर्मित हुआ है जिसमें दक्षिणामन मूर्ति विराजित है। भग्नवाग्नेय नाटमन्दिरके चारों ओर उत्कृष्ट शिल्प ने पुष्पयुक्त स्तूपकाकार प्रस्तर पड़ा हुआ है। नाटमन्दिर जानेकी सीढ़ीकी वामपार्श्वको और प्राचीरगतमें प्राचीन उत्कलाचरसे उत्कर्ण शिलाफलकमें प्रशस्ति वर्णित है। उसके पठनेसे जाना जाता है कि उड़ीसेमें कपिलेन्द्र नामक एक सूर्यवशीय राजा थे। इन्होंने वाङ्मयसे दिल्लीके राजाश्रीको पराजय एवं गोल और मालव राज्य की जय किया था। इनके लक्ष्मण नामक एक पुरोहित और मन्त्री रहता रहा। लक्ष्मणके नारायण नामक एक पुत्र था और उनके अनुजका नाम गोपीनाथ था। इन्होंने अपने नाम पर गोपीनाथका उक्त देवमन्दिर निर्माण कर जगन्नाथ वनराम और सुभद्राकी मूर्ति स्थापन की थी।

इस ग्राममें ब्राह्मणशासन है। यहांके एक घर ब्राह्मण अपनेको गोपीनाथ महापात्रके वंशधरके जैसे परिचय देते हैं। इन्होंने मुखसे ऐसा सुना गया है कि गोपीनाथने मिर्क दो घण्टेके लिए कपिलेन्द्रका मन्त्रित्व पाया था, इन दो घण्टेके मध्य उक्त गोपीनाथका मन्दिर निर्माण किया गया था। किन्तु दो घंटेमें इस तरहका मन्दिर निर्मित होना नितान्त अमभव है।

गोपीनाथ बन्दीजन—बनारसके रहनेवाले एक बन्दी। इनके पिताका नाम गोकुलनाथ था। बनारसके राजा उदितनारायणके आदेशसे इन्होंने तथा इनके शिष्य मनि देवने सम्पूर्ण महाभारतका अनुवाद हिन्दीमें किया था। य १८२० ई०में प्रियमान थे।

गोपीनाथभट्ट—१ हिरण्यकेशिसूक्त 'व्योम्ना नामकटीवकार। २ निर्णयरत्नाकर नामक धर्मशास्त्रकार।

गोपीनाथमित्र—१ क्रियाकीमुद्रो नामक सस्कृत य धर्मप्रणता। २ तत्त्वचिन्तामणिमार नामक न्याय ग्रन्थकार।

गोपीनाथमौलिक—एक विख्यात नैशायिक और वाक्वीरोंके राजा जयमिहके सम्राजपति। इन्होंने राजा जयमिहके अनुरोधसे सिद्धान्ततत्त्वमार नामक पदार्थविवेककी टीका और न्यायकुसुमाञ्जलिविकाश प्रणयन किये हैं।

गोपीनाथ शर्मन्—१ शन्दमाला नामका सस्कृत अभिधानकार।

गोपीनाथय्य—माधवगैयके पुत्र और खानसूय दौपिकाके प्रणता।

गोपीनारायण—एक विख्यात स्मार्त्त। इन्होंने राजा सूर्यसेनके आदेशसे निर्णयान्त नामक धर्मशास्त्र रचे हैं।

गोपीन्द्रतिष्णभूपाल—वामनके काव्यालङ्कारहस्तिका काव्यालङ्कारकामधेनु नामक टीकाकार।

गोपोरमण—भानन्दलहरीके एक टीकाकार।

गोपोयन्त्र—एक तार वाद्ययन्त्रविशेष एक प्रकारका बाजा, जिसमें केवल एक ही तार लगा रहता है। आध हाथका गौंठदार एक पतले वामके उल्टेका ऊपरके शिथ युक्त भागका छह या सात उल्लो छोड़ कर शेष अशकी बराबर चार भागोंमें विभक्त करते हैं। उन चार भागोंके परस्पर विपरीत दो भागोंको फेक कर शेष दो भागोंके सिरे पर कड़ूका गोल खोखला अग्र बांध देते हैं और उसमें कौल एक तार लगा दिया जाता है। यह तार बाँसके दो खण्डोंके मध्य रहना चाहिये और तारका एक सिरा अखण्डित बासके उडमें कौलके साथ और दूसरा सिरा कड़ूके खोखलेमें आवद्ध रहता है। इसीको गोपोयन्त्र कहते हैं। कुछ जातिके लोग इसे बजाकर दरवाजे दरवाजे भीख मागत हैं।

गोपीनाल—हिन्दीके एक जैन कवि। इन्होंने नागकुमार चरिय, जम्बूहीपूजा और तीसवींवीमी पूजा ये तीन पद्य रचनाये हैं।

गोपुच्छ (म० पु०) गो पुच्छ इ पुच्छो यच्च, वक्षो० । एक तरहका बन्दर जिसको पूछ गायकी मो होती है। (क्लो०) गो पुच्छ, ६ तत् । २ गोकी पूछ, गायकी डुम। (पु०) ३ एक तरहका गायदुमा हार। ४ प्राचीन कालका एक बाजा।

गोपुर (म० पु०) सुद्रष्टा कोटा मोया।

गोपुटा (म० स्त्री०) गोरिव पुटमया वक्षो० । बही इनायची।

गोपुटीक (सं० लो०) गो: शिवद्वपस्य पुटिकं पुटयुक्तं
मस्तकं । शिवद्वपका मस्तक, महादेवजीके बैलका
मस्तक ।

गोपुत्र (सं० पु०) गो: पुत्रं, ६-तत्० । १ गोवत्स गायका
छोटा बच्चा । २ सूर्यके पुत्र, कर्ण ।

गोपुर (सं० लो०) गो: स्वर्गवत् रम्यं पुरं यस्मात् यद्वा
गोपायति रक्षति नगरं गुप् वाह्यलकात् उरच् । १ पुरद्वारा
शहरका फाटक । २ किलिका फाटक । ३ फाटक, दरवाजा ।
गवा जलेन विपत्तिं पूरयति आत्मानं पृ-क । ४ कैवर्त्ती-
मुस्तक । (पु०) ५ वैद्यशास्त्रके प्रणेता एक प्राचीन ऋषि
६ दक्षिणात्यमे मन्दिरोके सन्मुख निर्मित समुच्च प्रवेश-
रहविशेष । इस गोपुरका तल बहुत ऊँचा है, इसके
भित्तपने पुख और चिचकार्यके निरोक्षण करनेसे विन्मित
होना पड़ना है । * ७ स्वर्ग, गोलोक ।

गोपुरक (सं० लो०) गोपुर स्वार्थे कन् । १ गोपुर । (पु०)
गो: पृथिव्या: पूरकः, ६-तत्० । २ कुन्दुरकवृक्ष । गवा
पूरकः, ६-तत्० । ३ जो गोपालन करता है ।

गोपुरी—गोष्ठा ईसा ।

गोपुरीप (सं० लो०) गो: पुरीपं ६-तत्० । गोमय,
गोवर ।

गोपुष्ट (सं० लो०) परिप्लुष्टण, एक तरहकी घास ।

गोपेन्द्र (सं० पु०) गोपुपु इन्द्र: अष्टः, ६-तत्० । १ श्री-
लक्षण । गोपानामिन्द्र ईश्वरः, ६ तत्० । २ गोपाधिपति
नन्द, ये वृन्दावनके गोपीके अधोश्वर थे ।

गोपेश (सं० पु०) गोपानामीशः, ६-तत्० । १ नन्दगोप । २
शाक्य मुनि ।

गोपेश्वर—१ आत्मवाद और वाटकथा नामक वैदान्तिक
ग्रन्थकार, ये कल्याणरायके पुत्र थे । २ कुमाजु जिलामें
नागपुर परगनाके अन्तर्गत एक प्राचीन ग्राम । यहां एक
अति प्राचीन सुन्दर शिवालय है, जिसके अन्दर १५ फीट
ऊँचा एक लोहिका त्रिशूल गड़ा हुआ है और इसके एक
ताम्रपात्रमें उत्कीर्ण प्रशस्ति संलग्न एवं और कई एक
शिलालिपि देखी जाती है ।

इस खोदित लिपिसे जाना जाता है कि राजा अनेक-

मन्त्रने केदारभूमिकी जग कर ११३८ शककी एक
राजकीय मन्दिर निर्माण किया था ।

गोपीक—सूक्तिकर्णामृतधृत एक कवि ।

गोपव्य (सं० त्रि०) गुप्त कर्मणि तव्य । १ अप्रकाश्य, जो
प्रकाश करने योग्य नहीं है । २ रचनीय ।

गोष् (सं० त्रि०) गुप-त्त्च् । १ रक्तक । २ संवरक,
आच्छादनकारो । ३ विष्णु । (स्त्री०) ४ गङ्गा ।

गोप्य (सं० त्रि०) गुप्-रायत् । १ रक्षणीय । २ गोपनीय,
अप्रकाश्य, छिपाने योग्य । ३ टामोपुत्र ।

गोप्यक (सं० पु०) गोप्य एव स्वार्थे कन् । टामोपुत्र ।

गोप्यादित्य (सं० पु०) गोपिभिः स्थापित आदित्यः सध्या-
पटलो० । प्रभासतीर्थमें गोपियामि स्थापित एक सूर्य
मूर्त्ति । स्कन्दपुराणके प्रभास खण्डमें लिखा है कि प्रभास
तार्थकी भृतीशमूर्त्तिसे थोड़ी दूर वायुकीण पर गोप्या-
दित्य मूर्त्ति अवस्थित है । नारद प्रभृति प्रभासवामी
मुनिगणके द्वारा सोलह हजार गोपियोंने सूर्यकी मूर्त्ति
स्थापित कर ऋषियोंको विपुलधन दान दिया था । ऋषि
गणने संतुष्ट हो कर इस सूर्यमूर्त्तिके नाम 'गोप्यादित्य'
रखा ।

गोपाधि (सं० पु०) गोपय्यामी आधियेति कर्मधा० ।
आधिविशेष । आधि देवो ।

गोप्रकाण्ड (सं० लो०) प्रशस्ता गोः नित्य कर्मधा० ।
अष्ट गो, उत्तमा गाय ।

गोप्रचार (सं० पु०) प्रचरत्प्राम्निन् प्रचर आधारे घञ्
६-तत् । गोचारणस्थान, गाय रहनेकी जगह, गोष्ट । २
तीर्थ विशेष । (स्कन्दपु० प्रभास०)

गोप्रतार (सं० पु०) गवां प्रतारः प्रतरणतुल्यः संवद्धो ऽत्र
बहुव्री० । १ सरयुतीर्थ विशेष । महाराज रामचन्द्रजी
सरयूमें जिम स्थान पर पाञ्चभौतिक शरीर त्याग कर
स्वर्ग गये थे वही स्थान 'गोप्रतारतीर्थ' से विख्यात है ।
इस तीर्थमें स्नान करनेसे समस्त पाप विनष्ट होते और
मरनेके बाद आत्माको स्वर्गको प्राप्ति होती है ।

(भारत ३६४ पृ०)

२ शिव । गवां प्रतारः, ६ तत् । ३ गौओंका अवत-
रण ।

गोप्रवेश (स० पु०) गो प्रवेश, ६-तत् । १ गोर्वाका वनसे घर प्रत्यागमन । २ गोप्रवेशकाल, जिस समयमें गो घर कर घर लौटती हैं, म धारा, गोधूलो ।

गोफ (स० पु०) १ दास, सेवक । २ दामोपुत्र । ३ गोपियों का कुटुम्ब । ४ दृष्टव धक, एक तरहका रङ्गन जिसमें रङ्गन रखी हुई चीज पर महाजनकी कोई अधिकार न रहे वरन् वह सिफ मूढ़ लेनिका अधिकारी हो ।

गोफणा (स० स्त्री०) फोडे और जख्म आदि वाधनिका एक प्रकारका वस्त्र जिसका व्यवहार चिबुक, नासिका, श्रोत्र, स्कन्ध आदिको वाधनेके लिये होता है ।

गोफा (हि० पु०) नया निकला हुआ पत्ता, गाभा ।

गोवह (स० स्त्री०) गौका भारता ।

गोवर (हि० पु०) गोमय, गायत्री बिठा, गौका मल ।

गोवरगणेश (हि० वि०) १ महा, जो देखनेमें अञ्जान मालूम हो । २ मूर्ख, बेवकूफ ।

गोवरहारा (हि० पु०) गोवर उठाने या पाथनेवाला नोकर ।

गोवरिया (हि० पु०) हिमालय तथा नेपालमें होनेवाला एक तरहका पोधा । इसकी जड़ विष है ।

गोवरो (हि० स्त्री०) १ कडा, उपना गोहरा । २ गोघर का लीपन ।

गोवरैना (हि० पु०) गोवरमें रहनेवाला एक तरहका कोडा ।

गोवरोरा (हि०) गोवरोरा (लोके) ।

गोवन्ध (स० पु०) श्वेत यावनाल, सफेद चार ।

गोवान (स० स्त्री०) गौका बाल, गायका रोपण ।

गोवानधी (स० स्त्री०) चमरीरुग ।

गोवानी (स० स्त्री०) गोवाला चालीस्य बहुरो डीप । औषध विशेष, एक दवा

गोविद्या (देग०) आसामकी पहाडियोंमें पाया जानेवाला एक तरहका कौटा प्राण । यह देखनेमें सुन्दर होता और इसमें लम्बो लम्बो चने पत्तियां रहनेके कारण इसकी छोया पचन होता है । इसके पर्व पर्व चारिके काम आते और लकड़ोंमें तीर रमान टोकर बनाये जाते हैं । दुर्भिक्षके समय दीन अनुप्राप्त इस बीजाका भात भी बना कर खाते हैं ।

गोवी (हि०) गोभो देव ।

गोभ (हि० पु०) पीधीका एक रोग ।

गोमण्डोर (स० पु०-स्त्री०) गण्ड जले भण्डोर अग्निवाचाल । जलकुक्षुभपची ।

गोमातु (स० पु०) तुर्वसु राजकी पीत और वज्रिके पुत्र ।

गोभिरामा (स० स्त्री०) रामतरुणी । (५२२ ग १२ ७ गाय)

गोभिल (स० पु०) एक रत्नप्रणता स्तूपि । इन्होंने साम-वेदोय रत्नप्रणयन किया है ।

गोभिलपुत्र—गोभिलके पुत्र, एक स्मृतिकार ।

गोभी (हि० स्त्री०) १ गोजिह्वा गायकी जोभ ।

२ एक तरहकी तरकारी । यह प्रायः भूमस्त देशमें उपजायी जाती है । यह तीन प्रकारकी होती है—फूल गोभी, गडि गोभी और पातगोभी । फूलगोभीको डण्डी लगभग एक वनिशतकी होती और जमीनमें गडो रहती है । इसके ऊपर चारो तरफ चोडे, मोटे और बडे पत्ते रहते हैं और इनके मध्यमें फूलका गुद्या हुआ समूह होता है ही तरकारीके काम आते हैं । गोभी कार्तिक मासके अन्त तक तैयार हो जाती और जाडा पर्यन्त रहतो है । दूसरी स्तुत्योम खानेके लिये गोभी शुष्क कर रखी जाती है ।

३ पीधीका गोभ नामक रोग ।

गोभुज (स० पु०) गा घृथिवीं भुनक्ति गो भुज् क्तिप् । भूपाल, राजा ।

गोभृत् (स० पु०) गा भू म विभर्ति भृ क्तिप्, तुगागमस । पर्वत, पहाड ।

गोम (देग०) १ घोडाकी नाभी और छातीके मध्यकी भवरी । ऐसा घोडा दुरा माना जाता है । २ प्रथिवी ।

गोमक्षिका (स० स्त्री०) गो क्षेयदायिका मक्षिका । एक तरहकी मखी ।

गोमघ (स० वि०) गा महति दानार्थमलङ्कारिणि गो महि क, निपातनायकारलोप । गोटाता, जो गो दान करता है ।

गोमण्डल (स० स्त्री०) गवा मण्डल, ६ तत् । १ गो समूह, गायका कुण्ड । गोमण्डल, ६ तत् । २ भूमण्डल । ३ किरणमसूह ।

गोमत (स० त्रि०) गौरव्यस्य गो मतुप् । १ गोभाम्नी ।

२ गोयुक्त, जिसे गो हो। ३ किरणशाली, जिसमें प्रकाश हो। ४ स्तुतिवाटक, स्तुति करनेवाला।

गोमती (सं० स्त्री०) गवां मतं, इ-तत् । अध्वपरिमाण, गव्युति, दो कोम।

गोमती (सं० स्त्री०) प्रशस्ता गौः नित्यम० परनिपातः । प्रशस्ता गौ, अच्छी गाय।

गोमती (सं० स्त्री०) गोमत्-डीप । १ स्वनामख्यात नदीविशेष, एक नदीका नाम।

स्कन्दपुराणके प्रभासखण्डमें इसको उत्पत्ति, माहात्म्य और स्नानादि फलके लिए इस तरह लिखा है—

“गङ्गाधरस्वतीपुण्या यमुना च महानदी ।

ने शबरी गोमती च नदी तापो च नर्मदा ॥

नदीः सहस्रसंयोगात् सर्वाः पुण्याः प्रभावदाः ॥”

अथात् गङ्गा, सरस्वती, यमुना, गोदावरी, गोमती, तापी और नर्मदा प्रभृति पुण्यशालिनी नदियां असुद्धमें जा मिली हैं, इनका जल पवित्र है। उक्त वचनसे जाना जाता है कि गङ्गा प्रभृतिकी नाईं गोमती नदी भी पर्वतसे निकल समुद्र तक चली गई है। किन्तु महाभारतके मतसे गोमती नदी काशीके उत्तर गङ्गासे मिश्रित है। (भारत ३।२४) गोमती गङ्गासङ्गममें स्नान करनेसे अग्नि-ष्टोमका फल होता और कुलका उद्धार होता है। रामतीर्थमें स्नान कर गोमतीमें स्नान करनेसे अश्वमेधका फल और कुल पवित्र होता है। गोमतीमें शतसाहस्रक नामका एक तीर्थ है। इसमें संयत भावसे स्नान करने पर महस्र गोदानका फल होता है। (भारत ३।२४)

गोमती नदी उत्तरपश्चिम प्रदेशके शाहजहानपुर जिलेके अन्तर्गत फलजरताल नामक क्षुद्र झरसे निकलती है। यह अक्षा० २८° ३७' उ० और देशा० ८०° ७' पू०में अवस्थित है। देओहा और धर्धरा नदीके मध्यवर्ती वालुकामय भूमि हो कर प्रायः ५०० मील प्रवाहित हो अक्षा० २५° ३५' उ० और देशा० ८३° २३' पूर्व गङ्गाके वामकूलमें आ मिली है। प्रवल स्रोतमें दक्षिण-पूर्व गतिसे ४२ मील प्रवाहित हो अक्षा० २८° ११' उ० और देशा० ८०° २०' पूर्वमें अयोध्याके खेरी जिलेमें आ गिरी है। अक्षा० २७° २८' उ० और देशा० ८०° २७' पूर्वमें कथना नामक एक शाखा नदी आ इसके वामकूलमें मिली है। इस

स्थानसे प्रायः ८० मील दक्षिण-पूर्वाभिमुख आकर मरायण नामक एक शाखा देवी जाती है। इसके बाद लखनऊ गहर है। यहाँ नदीके ऊपर ५ सेतु है। इस स्थान पर सब ऋतुओंमें गर्दीके मध्य हो कर नौका द्वारा लोग आते जाते हैं। लखनऊ नगरके दक्षिण गोमती नदी क्रमशः सर्दीर्ण होती गई है। इस स्थान पर चारो धाराका दृश्य अतिशय मनोहर लगता है। अयोध्या नगरसे १७० मील दक्षिणपूर्व सुलतानपुरके निकट यह नदी २०० हाथ चौड़ी एवं स्रोतका वेग घण्टामें प्रायः दो मील होगा। गोमती सुलतानपुरसे ५२ मील दक्षिण जौनपुर जिला तक आई है। यहाँ नदीके ऊपर एक सुन्दर पुल है। जौनपुरसे १८ मील दक्षिण वाराणसी जिलेकी निन्दनदी आ गोमतीके दक्षिणकूलमें मिली है। जहाँ गोमती गङ्गाके साथ मिली है वहाँसे कुछ नौका मंलग्नसेतु हो कर ग्रीष्म और शीत ऋतुमें गोमती पार-पार होते हैं। वर्षाके समयमें नौकाके अलावा पार होनेका दूसरा कोई उपाय नहीं है। टिलवार घाटसे खेरी जिलेके मुहम्मदी नामक स्थान तक नदीमें सब समय ५०० से मनी नौका जाती आती है।

गौः गोपदमाधिक्येन वियतेऽस्य गो मतुपु डीप ।
२ वियाविशेष, गोदान प्रभृति करनेका मन्त्र । गोदान देवी ।
३ गङ्गा ।

४ पीठस्थानकी अधिष्ठात्री गोमन्त पर्वत पर अवस्थित भगवती मूर्ति ।

“गोमन्त गोमती देवी मन्दरे कानचारिणी ।” (देवी भागवत ७।२।५७)

गोमुदस्थि यत्रास्ति गो-मतुपु-डीप । सृत मवेशी फेंकनेका स्थान । ५ ब्रह्ममें त्रिपुरा जिलेके अन्तर्गत एक नदी । द्विपुरपर्वतश्रेणीके अतारपुरा और लङ्घरा नामक पहाड़से उत्पन्न चाडमा और राडमा नदी दुमरा प्रतापके ऊपर एकत्र मिल कर गोमती नाम धारण किया है। कुमिल्लासे प्रायः ७ मील पूर्व वीवीवाजार ग्रामके निकट त्रिपुरा राज्यमें प्रवेश करती है। इसके बाद पश्चिमाभिमुख हो टाउटकान्दी ग्रामके निकट अक्षा० २३° ३१' ४५" उ० और देशा० ८° ४४' १५" पू० पर सेवना नदीमें मिली है। इस नदीको लम्बाई प्रायः ६६ मील होगी। वर्षा कालमें इसकी गभीरता एवं स्रोतका

बेग बढ जाता है। पाव'तोग त्रिपुरा राज्यमें इस नदीके उत्तरकुल पर काशोगञ्ज, पियगगञ्ज, और मैलाक चेरल नामक तीन शाखाए हैं। नदीके कुल पर कुमिल्ला, जाफरगञ्ज और पाँचपुखु (रिया ये तीन प्रधान नगर हैं। कुमिल्ला, कम्पनीगञ्ज और नुरपुरमें नदी पार होनेके लिए नोकाई हैं।

६ गोरोचना ।

गोमतीशिला (स० खी०) हिमालयमे वह चटान जिम पर पडु च कर अर्जुनका शरीर गन गया था ।

गोमन्थ्य (स० पु०) गोरिव स्थूलो मन्थ्य । सृश्रुतके अनुसार एक तरहकी मछली ।

गोमन्ता (स० पु०) एक पव तका नाम । इसके ऊपर एक पाठस्थान है जिमको अग्निश्री देवोका नाम गोमतो है ।

गोमती, गोथप, शरामथ और हथ देवा ।

गोमन्द (स० पु०) पर्वतविशेष । यह श्रीसृष्टीपमें अवस्थित है, कामललोचन सर्वदा इसी पर्वत पर वास करते हैं ।

(भारत भोध० १२७०)

गोमय (स० पु० खी०) गो पुरीय गो मयट् । १ गौकी विष्टा, गोवर । १७६५ पु० मे। शब्दमें देवो। सृष्टिका मत है कि वन्ध्या, रोगपीडिता और नवप्रसूता एव वृद्धा गौका गोमय ग्रहण करना उचित नहीं है। पुराणमें लिखा है कि एक समय समस्त गौनि मिलकर आपसमें इस बातका परामर्श किया कि उन सबकी उन्नतिका क्या उपाय है।

अनेक वादानुवादके वाद स्थिर हुआ कि जो मनुष्य उनके गोबर तथा मूत्रसे स्नान करेगा उसीका शरीर पवित्र होगा ऐसा होनेसे ही उनकी उन्नति होगी अन्यथा नहीं। इसके लिये समस्त गौनि एक शत वर्ष कठोर तपस्या की। प्रजापतिनि तपस्थामे म तृष्ट हो कर बड़ी वर दिया जो उनका अभिष्ट था। उसी समयमें गौका गोमय और मूत्र पवित्र माना जाता है। गोमय द्वारा देवदेवियोंके अभिष्टक करनेका विधान है। महाभारतके दानधर्ममें लिखा है कि एक समय गौनि लक्ष्मीजीमें कहा कि "हम सब आपका सम्मान करेग और आप हमारे गोमय और मूत्रमें वास कोजिए।" भस्मो उन्की प्रार्थनाको अङ्गिकार कर तभीसे गोमूत्र और गोमयमें वास करने लगी। कोइ कोइ इन्हें साक्षात् यमुना कइ कर वणन करते

है। (बाधोत्पत्)। ऐसा प्रवाद है कि गोमयसे वृष्टिक होता है। (त्रि०) २ गोस्वरूप ।

गोमयच्छत्र (स० खी०) गोमयजात छत्रमिव । करक, कुम्भी, कुकुरमत्ता ।

गोमयच्छविका (स० खी०) गोमये गोमयप्रसुरस्थाने जाता छविकेव । गोमयच्छत्र, छातेके आकारका एक छोटा गाछ जो प्रायः गोमयकी ठेर पर निरूला करता। गोमयतैल (स० खी०) नेत्ररोगका तैल ।

गोमयप्रिय (स० खी०) गोमय प्रियमस्य उत्पादकत्वान् । १ भूटण, एक तरहको सुगन्धि घाम । २ बालह, सुगन्ध वाला ।

गोमयाद्युत्त (स० खी०) नेत्ररोगका छत, आंखकी बामारोका घो । इसकी प्रसृत प्रणाली इस तरह है— छागछत ४ शराव, गोमयरस ४ शरावमें काकोली, चौर काकोली, जीवक, कृपभक, सुन्नपर्णी, मायाणा, मेदा, महामेदा, गुलुध, कर्कटशुद्धी, व शलोचन, पद्मकाष्ठ, पुण्डरिया, ऋद्धि, वृद्धि, कियमिय, जीवन्ती और यष्टिमधु इन सबके १ शराव चूर्ण मिलाते हैं। इसके बाद उसमें १६ शराव जल डाला जाता है।

गोमयोत्था (स० खी०) गोमयादुत्तिष्ठति उद-स्था क टाप । १ गोमयजात कीटविशेष, एक तरहका कीडा जो गोबरसे उत्पन्न होता है, गोबरीला, पर्दभी ।

गोमयोद्भव (स० खी०) गोमय उद्भव उत्पत्तिस्थान यस्य बहुव्री० । १ गोमयजात, जो गोबरसे उत्पन्न हो। (पु०) २ आरग्वध, अमनतास ।

गोमर्द (स० पु०) सारस पत्नी ।

गोमर (हि० पु०) वृवूचर कमाई ।

गोमरी (स० खी०) वात्सङ्कुविशेष, रामवैगन ।

गोमल (स० पु०) १ गोमय, गोबर । २ पंजाबके पश्चिम सुलेमान पहाडसे नि सृत एक नदी। ऋग्वेदमें यहो नदी गोमती नामसे वर्णित है। इस नदीके निकट ही गोमल नामका गिरिस्मिडट प जावमे अफगानिस्तान तक गया है ।

गोमह्विषदा (स० खी०) गा मह्विषाय ददाति भक्षोभ्य गो मह्विष दा क टाप । कार्तिकेयकी अशुगामिनो मातृकाविशेष ।

गोमांस (सं० स्त्री०) गोमांस इ-तत् । गौका मांस । चरक-
के मतसे इसका गुण—वायु, पीनस, विषमज्वर, शुष्क
वास, यम, अग्निवृद्धि और चयरोगनाशक है । (चरक सूत्र
२० अध्याय) सुश्रुतके मतसे इसका गुण—श्लाम, काम,
प्रतिश्याय और विषमज्वर वायुनाशक एवं यमजीवी
और वर्द्धिताग्नि मनुष्यके लिये विशेष हितकर है ।
(सुश्रुत सूत्र ४६ अ०) हिन्दूधर्मशास्त्रके मतसे इसका
मांस खानेसे बहुत पाप होता है । अज्ञानसे गोमांस खाने
पर प्राजापत्य व्रतका अनुष्ठान कर पवित्र हो सकता है ।
“गोमांस भक्षणे प्राजापत्यं चरेत् ।” (मनु) यदि सज्जानसे गोमांस
भक्षण करे तो उसके प्रायश्चित्तके लिये समुद्रगामिनी
किसी नदीके तीर जा चान्द्रायण व्रतका अनुष्ठान
करे । व्रतकी समाप्ति होने पर ब्राह्मणभोजन करावे
और प्रत्येक ब्राह्मणको एक हृप और एक दुग्धवती गाय
दान दे । ऐसा करने पर ज्ञानकृत गोमांस भक्षणका
प्रायश्चित्त होता है । (अश्वलायन)

सज्जानसे यदि अनेक बार गोमांस खाया जाय तो
संवत्सर कच्छव्रतका अनुष्ठान करने पर पाप नाश होता
है । (शुक्ल)

द्विजजातिके लिए उपरोक्त प्रायश्चित्त करनेके बादभी
पुनर्द्वार उपनयनादि संस्कार करना उचित है ।

(प्रायश्चित्तविधि)

गोमांसभक्षण (सं० स्त्री०) गोमांसस्य भक्षणम्, इ-तत् ।

१ गौका मांस खाना । २ तालुस्थानमें जिह्वाका प्रवेश ।
गोसाक्षी (सं० स्त्री०) कर्णस्फोट, एक प्रकारको लता ।
गोसाह (सं० स्त्री०) गवां माता, इ-तत् । १ सुरभि,
काश्यपकी स्त्री । २ मरुत् देवता ।

गोमायु (सं० पुं० स्त्री०) गां विकृतां वाचं मिनीतीति मा-
डण् । १ शृगाल, मियार, गोदड़ । इसका मृत और
पुरीषादि भक्षण निषिद्ध है । द्विजाति यदि मूत्रादि भक्षण
करे तो उसे चान्द्रायणव्रत करना चाहिये । इसके शब्द-
से शुभाशुभका विचार किया जाता । शृगाल देखो । २ एक
गन्धवका नाम । (हरिवंश २६ अ०) (स्त्री०) ३ वंश
लोचन ।

गोमायुभक्त (सं० पुं०) गोमायुं भक्षयति भक्त-अण् उप-
पदम० । नीच जातिविशेष ।

गोमित्रो—दक्षिण देशमें रहनेवाली वाल्मीकि ब्राह्मणोंके
अन्तर्गत एक श्रेणी । इनकी उत्पत्तिके विषयमें प्रवाद
है कि जब श्रीरामचन्द्रजीने वाल्मीकि ऋषिको यथेष्ट धन
दिया था तब ऋषिने उस धनका सदुपयोग करनेके लिए
एक यज्ञ करना नियम किया और इस हेतु आवृ पहाड़
पर वाल्मीकेश्वरी देवोके मन्दिरमें अपना आश्रम स्थापित
किया । यज्ञारम्भके लिए उन्होंने दूर दूरसे ऋषियोंको
बुलाया । यज्ञमें गौतमजी, वाशष्ठजी, कण्व, च्यवन आदि
ऋषियोंके साथ साथ एक लाख अन्य ऋषिगण उपस्थित
हुए ।

“दशैते शिष्या मच्चै कसुलमा वेदविद्ययाः ।

तेषां विहितसंख्यानां गोमांसि निम्नानि च ॥ १६ ॥”

(मिश्रः ज्ञः मा० पु० ५६)

अर्थात् उस यज्ञमें आये हुए एक लाख ऋषि थे । वे
सब वेदपारग थे । उनमेंसे उन पचास हजार ऋषियों-
की गोमित्रो संज्ञा हुई । जो गोवींको रक्षा करनेके लिए
नियत किये गये थे ।

इनके गोत्र थे—

गोत्र	प्रवर
१ भरद्वाज	
२ वशिष्ठ	वशिष्ठ ।
३ काश्यप	काश्यप, वत्स, ध्रुव ।
४ गार्ग्य	काश्यप, वत्स, ध्रुव ।
५ आत्येय	आत्येय, अर्चनान्, गशावास्ता ।
६ गौतम	
७ वत्स	
८ कोण्डिन्य	वशिष्ठ, मैत्रावरुण, कौण्डिन्य ।
९ भार्गव	भार्गव, च्यवन, आश्वान, आर्ष्टि- पेण और अनुपेक्षा ।
१० मुद्गल	आङ्गिरस, ब्राह्म, मुद्गल ।
११ जमदग्नि	जमदग्नि, भार्गव, श्रीर्व ।
१२ आङ्गिरस	आङ्गिरस, ब्राह्म, मुद्गल
१३ कुत्स	मान्धाता, आङ्गिरस, कौत्स ।
१४ कौशिक	
१५ विश्वामित्र	विश्वामित्र, हैवत, हैद, यवम ।
१६ पुलस्त्य	

१७ अग्निसि विश्वामित्र, स्मररथ, वार्धन ।

१८ श्रागिन्ध

१९ कात्यायन भाग व, ध्वनन, श्रौर्व, जमटर्गिन, वस्त ।

गोमिथुन (स० स्त्री०) शवा मियुन, ६ तत्व० । हृष और गाम्भी, गाय और बैल ।

गोमिन् (स० त्रि०) गावो विद्य तेऽप्य गो मिनि । १ गोमान्, गोवाला, जिसकी गो है । २ उपासक । (पु०) ३ श्याल, गोदड । ४ बुद्धके एक शिष्यका नाम । ५ पृथ्वी ।

गोमीन (स० पु० स्त्री०) गौरिय स्यूलो मीन । मख्य विशेष, एक तरहको मछली ।

गोमुख (स० पु०) गोसुं खमिष सुख यस्य, बहुव्री० । १ नक्र, कुम्भीर, मकर, ग्राह । २ वृक्षविशेष । ३ मातलीके पुत्र ।

(भारत ३० • ८८ • ४०) ४ कुटिलाकारवाद्ययन्त्र, शृङ्गादि नरसिंहा नामका बाजा । (स्त्री०) ५ लेपनविशेष, घर

की भीतमें गोमुखाकारका चित्र बनाना । ६ गोमुखाकृति नस्त्रिविशेष, गोकु मुखके आकारका एक तरहका मेघ ।

७ माना रख कर जपनेकी यैनी जिसका आकार गो मुखके सदृश होता । शाक्त, सौर, वैष्णव प्रभृति गोमुखमें हाथ रख कर माना द्वारा इष्टमन्त्र जप किया करते हैं ।

गोमुख कृत्रिम आङ्गुल या एक हाथका बना रहना चाहिए, जिसमें आठ आङ्गुल परिमाणका मुख और अठा-

रह आङ्गुल परिमाणकी भीवा रहे ८ आमनविशेष ।

पृष्ठके वाम पार्श्वमें दक्षिण गुण्ड (ठेहन) और दक्षिण पार्श्वमें वामगुण्डके योग करनेमें गोमुखाकृति गोमुखा मन वनता है । (उ० वि०) ९ यक्षराज मन्त्रीके पुत्र ।

(भाषावर्षिका • १११२०)

१० नरवाहनदत्तके प्रतिहारि । ११ गणेशके पुत्र ।

१२ गौका मुख । १३ गोकु मुखके आकारका एक

तरहका शत्रु । १४ टेढ़ा सिंहा घर । १५ उपन

गोमुखव्याघ्र (स० पु०) एक तरहका व्याघ्र, जिसका मुख गोकु मुखके जैसा हो ।

गोमुखी (स० स्त्री०) गोमुखमिव प्राकृतिरस्या, बहुव्री० । डीप । १ हिमालयमें गन्नाके पतन स्थान पर अवस्थित एक गुहा या कन्दरा । २ रादृग्मय एक नदी ।

गोमुती—भारतीय होपपुञ्जजात वृक्षविशेष । (Diengra baccharifera) । यह देखनेमें नारियल या ताड़के वृक्ष जैसा होता है । इसके स्तम्भके ऊपर घोड़ेको दुमके बान जैसा रोधा रहता है । जिसको मन्यवासीगण गोमुती कहते हैं । इसकी भो हिनकासे मजवृत रस्मे आदि बनते हैं जो नारियलके रस्मेकी अपेक्षा हठ और बहुकाल स्थायी होते हैं ।

गोमुद्रा (स० स्त्री०) प्राचीनकालका एक बाजा, जिस पर चमड़ा मटा रहता है ।

गोमूढ (स० त्रि०) बैलके महश्र निर्वोध ।

गोमूत्र (स० स्त्री०) गोमूत्र, ६ तत्व० । गौका प्रस्ताव या पेशाव इसका मस्कृत पर्याय—गोजल गोश्रम, गोनिष्यन् और गोद्रव है । कृच्छ्रमान्तापनत्रतमें गोमूत्र भक्षण करने का विधान है ।

गोमूत्रवीजक— (स० पु०) रक्तवोजामन वृक्ष ।

गोमूत्राभ (स० पु०) मस्त्रविष हृथिकविशेष ।

गोमूत्रिका (स० स्त्री०) गोमूत्रस्थे व क्रमरनाकृतिरस्य स्या गोमूत्र ठन् टाप । १ हृणविशेष, एक प्रकारको घास जिसके बीज सुगन्धित होते हैं । इसका मस्कृत पर्याय—रक्तदण्डा, चित्रजा, कण्ठभूमिजा हैं । इसका गुण-मधुर हृषण एव गायकी दुग्धवृद्धिकारक है । गोमूत्रिका हृण देखनेमें ताम्रवर्ण है ।

गोमूत्रस्थेव गतिरस्यैव गोमूत्र ठन् टाप । २ चित्र काव्यविशेष । इस काव्यके पठनेको तरकाव है कि पहली पंक्तिके एक वर्णकी दूमरी पंक्तिके दूमरे वर्णसे मिलाकर फिर पहलीके तीसरेकी दूमरीके चौथेसे फिर पहलीके पाचवेंकी दूमरीके छठेसे और फिर आगे इसी प्रकार पढ़ते चलते हैं । जिस श्लोकके अर्थहयका एकान्तर वर्ण समान होते अर्थात् प्रथमादिके द्वितीय, चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, दशम द्वादश, चतुर्दश और पौडश अक्षर एव द्वितीयादिके द्वितीय, चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, दशम, द्वादश, चतुर्दश और पौडश अक्षर एक ही हों । उमीकी गोमूत्रिकावन्ध कहते हैं ।

उदाहरण—

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

इमें वर्धासूतन भी कहते हैं ।

गोसूत्रप्रकारः गोमूत्र प्रकारार्थं कन् टापु । इत इत्वञ्च । ३ गोमूत्रके सदृश वक्र और सरल प्रचारादि । गोमूत्री (सं० स्त्री०) रक्तकुलत्तिका, लालकुल्यो । गोमृग (सं० पु० स्त्री०) गवाक्षतिमृगः । गवय, नील गाय ।

गोमेट (सं० पु०) गां जलं सेटयति स्नेहपति गो-मिट गिञ् अच् । १ गोमेटकमणि । ग.सं० २ हीपविशेष । युक्तिकल्पतरु ग्रन्थमें लिखा है कि पूर्व समय इस हीपमें गोपति नामके एक राजा रहते थे, इन्होंने गोमत्र नामक यज्ञ किये थे । गोपति अग्नितुल्य तेजस्वी औतप्य गणके यजमान थे । किसी समय महाराज गोपतिने किसी दूसरे यज्ञमें भृगुवंशीयोंकी वरण दिया था । इस पर गोतमने क्रुद्ध होकर शाप दिया जिससे गोपतिका अकालमृत्यु हुआ एवं मुनिके अमोघ कोपाग्निसे यज्ञकी समस्त गायें भस्म हो गईं । भस्मीभूत गौका चार उक्त हीपके समस्त भूभाग पर आच्छादित हुआ जान कर हीपका नाम गोमेट पड़ा । (युक्तिकल्पतरु) ३ प्रचहीपका एक वर्षपर्वत । (ली०) ४ तेजपत्र ।

गोमेटक (सं० पु०) गोमेट स्वार्थं कन् । १ स्वनामख्यात मणिविशेष, गोमेट । इसका पर्यायः—राहुमणि तमोमणि स्वर्भानव और लिङ्गस्फटिक है । इसका गुण—अन्न, उष्ण, वायुके कोप और विकारनाशक, दीपन, पाचन एवं धारण करने पर पापनाशक है । (राजनिघण्टु) हिमालय पर्वत पर तथा सिन्धु नदीमें गोमेट मणिकी उत्पत्ति है । यह मणि स्वच्छकान्ति, भारयुक्त, स्निग्ध, दीप्तियुक्त एवं शुक्लवर्ण वा पीतवर्ण होती है । इस प्रकारका गोमेट अच्छा समझा जाता है । इसके चार भेद हैं । यथा—शुक्लवर्ण गोमेटकी ब्राह्मण, रक्तवर्णकी क्षत्रिय, ईषत् पीतवर्णकी वैश्य एवं ईषत् नीलवर्ण गोमेटकी शूद्र जाति कहते हैं । गोमेट मणिकी छाया भी चार प्रकारकी है, यथा—श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण । गुरु या भारयुक्त, प्रभाशाली, शुक्लवर्ण, स्निग्ध, मृदु और अधिक पुरातन एवं स्वच्छ गोमेट धारण करना चाहिये । इसके धारणसे लक्ष्मी और धनधान्यकी वृद्धि होती है । लघु, कुक्षिताकार, अस्वच्छ, स्नेहोपलिप्त और मलिन गोमेट

मणि पहनना नहीं चाहिये, इसमें धारण करनेमें सम्पत्ति, भोग, यत्न एवं वीर्य नष्ट हो जाते । गोमेट मणिकी परीक्षा अग्निमें की जाती है । शुद्ध गोमेट मणिका सूर्य सुवर्णमें द्विगुण है । चारी प्रकारके गोमेट धारण योग्य है । सुश्रुतके मतसे गोमेट मणिमें अश्वच्छ जल परिष्कार हो जाता है ।

(ली०) २ पीतमणि । ३ फाकोल नामक यिप जो काला होता है । ४ पत्रक नामक माग ।

गोमेटमणि (सं० पु०) दुग्धपापाण ।

गोमिध (सं० पु०) मिध हिंसायां भावे घञ् । गवां मंधो हिंसा यत्न, बद्धवै० । यज्ञविशेष । इसका दूमरा नाम गोमवयज्ञ भी है । यह यज्ञ कलिकालमें निषिद्ध ममभ्र कर बनेमान समयमें जिन ग्रंथोंमें यज्ञादिका विधान पाया जाता है, उनमें गोमिध यज्ञका विशेष विवरण नहीं है । कात्यायनश्रौतसूत्रमें गोमवयज्ञ नामसे इस यज्ञका उल्लेख है ।

मनुके मतसे अज्ञानरुत ब्रह्महत्याका प्रायश्चित्तके लिये अश्वमेधके जैसा इस यज्ञका अनुष्ठान किया जाता है । इसकी अनुष्ठान प्रणाली अश्वमेधके सदृश है ।

कात्यायनश्रौतसूत्रमें इस यज्ञका विधान इस तरह है—

“उत्सृष्टो गोसुको इतदक्षिणः ।” (कात्यायन २१।१।६)

अर्थात् गोसव नामक यज्ञ उक्त्य मस्थित हुआ करता है । उक्त्य देशी । इस यज्ञमें दश हजार दुग्धवती गाय दक्षिणा देना पड़ता है ।

किसी किसी मुनिके मतसे केवल वैश्यगणके लिये ही यह यज्ञ करनेका विधान है, दूसरा कोई वर्ण इस यज्ञका अनुष्ठान कर नहीं सकता । दूसरे दूसरे मुनिका कथन है कि ब्राह्मण क्षत्रिय प्रभृति अपर वर्ण भी गोसव यज्ञका अनुष्ठान कर सकते हैं । मनुसंहिताके ११।१५ श्लोककी व्याख्यामें टीकाकार कुल्लूकभट्टने इस यज्ञको त्रैवर्णिक अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीन वर्णोंका अनुष्ठेय कहा है । कात्यायनके मतानुसार राजा और प्रजा जिसकी सम्मान करें वह गोसवयज्ञके अधिकारी है, दूसरा इस यज्ञका अनुष्ठान कर नहीं सकता

है। आहवनीय आग्निको दक्षिणा और एक स्यण्डिल प्रस्तुत करें, यजमान उस स्यण्डिलमें उपवेगन कर धारोण्य दुग्ध द्वारा अभिषिक्त होंगे। जो गोमययज्ञका अनुष्ठान करते, उहें मंत्र कोड़े स्यपति कह कर पुकारते हैं। वैश्वस्योम दक्षिणाका जो मंत्र लिङ्ग वा चिह्न विहित है इसमें भी उसी तरहकी रीति प्रचलित है। मञ्जीदरगण या मित्रगण परम्पर मिल कर इस यज्ञका अनुष्ठान कर सकते हैं। इसका और एक नाम गणयज्ञ है।

(भाष्यानुशोतवत् १७१११६१९)

गोऽश्वम् (स० स्त्री०) गवामश्व , ६ तत् । गोमूत्र, गायका मूत्र ।

गोय (फा० पु०) गेद ।

गोयज्ञ (स० पु०) गवाक्षतो यज्ञ , मध्यपदलो० । १ गोमय यज्ञ, गौके द्वारा जो यज्ञ किया जाता है ।

गोभिलगृह्यसूत्रके मतसे पुष्टिकामनाके लिये गोयण किया जाता है इस यज्ञमें अग्नि पृ इन्द्र और ईश्वर ये चारो देवतायें अर्चनीय हैं। ह्यभकी पूजा ही गोयज्ञ का प्रधान अङ्ग है। वच देखो। (गोभिलगृह्य १६१० १९)

२ हन्दावनवामी गोपगणके लिए कृष्य कर्त्तक अनुष्ठित मञ्जीतय। हरियशमें लिखा है कि यर्षाकालके अवसान पर हन्दावनके समस्त गोपगण शक्रीश्वर किया करते थे। एक समय जब यर्षाकाल समाप्त हो गया तब मरुत ग्वाने हर्ष और उत्साहमें शक्रीश्वरके आयोजन कर रहे थे, उसी समय गोपोजनवक्त्रभ श्रीकृष्णचन्द्रने उन्हें रोक कर कहा कि "हम लोग ग्वाने हैं, जिसमें गौकी उन्नति हो वही हम सर्वाका एकान्त कर्त्तव्य है। इन लिए मैं समझता हू कि गिरिपुत्रा कर गोयज्ञ करना चाहिये, क्योंकि पय त ही हन्दावनके समस्त गोषोंकी पालन करता और पगर उन्हें पर्यंत परकी घाम नहीं मिलती तो हन्दावनमें पाण तक एक भी गौ बचो न रहती।" श्रीकृष्णचन्द्रके पयें वचनकी सुन कर समस्त ग्वाने गिरिपुत्रा हो करनेको वाध्य हुए, पय महाधूम धाममें गिरियज्ञ और गोयज्ञका अनुष्ठान किया।

(१६१० ७० ७०)

गोया (फा० स्त्री० वि०) मानो, जैसे। वच देखो।

गोयायन्द्र (स० पु०) संक्षिप्तभारतके एक टीकाकार। इन

की टीका अत्यन्त सरल भाषामें लिखी है। इन्होंने यपनी टीका प्रमाणित करनेके लिए कई जगह कनापटोका उद्धृत कर समझी सीमासा की है।

गोयुक्त (स० त्रि०) गवा युक्त , ३ तत् । गोविण्डित, जो गाय या बैलमें खींचा जाता हो।

गोयुग (स० स्त्री०) गवां युग , ६ तत् । गोयुगल, एक जोड़ा गौ।

गोयुत (स० त्रि०) गवा युत , ३-तत् । गोयुक्त ।

गोयुति (स० स्त्री०) गोयुति गमन, ६ तत् । गौका गमन, गायका जाना ।

गोर (फा० स्त्री०) मृत शरीर गाढनेका गृह। कद्र ।

गोर (घ० पु०) फारसदेशके एक प्रान्तका नाम ।

गोर (हि० वि०) १ गौरा । २ श्वेतवर्णका, जिसका रंग सफेद हो ।

गोरक (स० पु०) विषधरमर्ष, एक तरहका जहरीला सर्प ।

गोरका (देश०) दक्षिणी भारतमें पाये जानिवाना शरपल नामका वृक्ष ।

गोरक्ष (स० त्रि०) गा रक्षति गो रक्ष क्तिप् । गोरक्षक, गौकी रक्षा करनेवाला ।

गोरक्ष (स० पु०) गा रक्षति गो रक्ष ञ्ण-उपस० । १ नता-विशेष । २ नागरक्ष, नारङ्गी । ३ ऋषभ नामक श्रौषध । (त्रि०) ४ गोपालक, गौकी रक्षा करनेवाला । रक्ष भाये घञ् । ५ गोरक्षण, गोपतिपालन । ६ गोमाञ्चनमें स्थापित एक प्राचीन तीर्थ । (ब्रह्मसिद्धि ११११६)

गोरक्षक (स० त्रि०) गा रक्षति रक्ष वृत्तुन्, ६ तत् । गोपालक, ग्वाना ।

गोरक्षकर्कटी (स० स्त्री०) गोरक्षा घामो कर्कटी चेति कर्मधा० । चिर्भटा, भुङ्कुर । इन्द्रपारुणी ।

गोरक्षचातुर्वज्र, गोरक्षचतुर्भा ४० ।

गोरक्षजम्बू (स० स्त्री०) गोरक्षा घामो जम्बू चेति कर्मधा० । १ गोधूम, गेहू । २ गोरक्षतण्डुला, कौरु वृक्ष । ३ घोण्टावृक्ष, एक तरहका पेड़ । ४ यन्ता, यान्ता ।

गोरक्षतण्डुला (स० स्त्री०) गोरक्षतण्डुलो धीर्ज घञ् , षट्ठी० टाप । हृत्तविशेष । (Medycarum lagopus-oidoides) । इसका मन्त्रत पर्याय—गाङ्गे कर्की, नाग

धन्वा, ऋषयर्षधुका, अर्याविका और विराटेवा है। इस

पत्ते मोहड़ा वृक्षके पत्ते जैसे होते हैं, किन्तु मोहड़ाका वृक्ष इनसे मोटा और लम्बा होता है। इसकी शाखायें बड़े बड़े लम्बा छड़की नाईं बढ कर पीछे नख हो जाती हैं। इसमें छोटे छोटे पुष्प लगते जो शुक्रवर्ण और डीपत् पीताभ वर्णके होते हैं। भाद्र आश्विन मासको इसमें छोटे छोटे फल भी लगते हैं।

गोरक्षतण्डुली (सं० स्त्री०) गोरक्षतण्डुली यस्याः, बहुव्री०, गोरक्षित्वात् डीपत्। गोरक्षतण्डुली देवी।

गोरक्षतुखी (सं० स्त्री०) गोरक्षा चामो तुखी चिति कर्मधा०। कुम्भाकार तुम्बो, एक तरहकी मोठी लीकी। गोरक्षदुग्धा (सं० स्त्री०) गोरक्षं गोपोषकं दुग्धं निर्यामी यस्याः, बहुव्री०। क्षुपविशेष, एक तरहकी लता। इसका पर्याय—गोरक्षी, ताम्बदुग्धा, रसायनी, बाहुपत्री, अमृता, जोव्या और अमृतमञ्जीवनी है। इसका गुण—मधुर, वृष्य, संग्राही, शीतल, सर्ववश्यक, रसासिद्धि-गुणवर्द्धक।

गोरक्षनाथ—एक महासिद्ध पुरुष। कणफट्-योगी प्रभृति बहुतसे शैव सम्प्रदाय इन्हें शिवावतारके जैसा विश्वास करते हैं। प्रवाद यों है—

“आदिनाथके नाती मच्छन्दनाथके पुत। ते योगी गोरखवधभूत ॥”

उक्त प्रवाद वचनसे जाना जाता है कि गोरक्षनाथ अख्येन्द्रनाथके पुत थे। हठयोगप्रदीपिका प्रभृति ग्रन्थमें ये नौ नाथके एक नाथ अर्थात् नौ प्रधान गुरुके एक गुरु माने गये हैं। महात्मा कबीरके बनाये हुए वीजक पढ़नेसे एक स्थानमें ऐसा पाया जाता है कि इसके पहले ही गोरक्षनाथ विद्यमान थे। हिन्दी भाषामें कबीर और गोरक्षनाथके प्रबन्ध देखे जाते हैं। इससे अनुमान किया जा सकता है कि गुरु गोरक्षनाथ और कबीर एक ही समयमें अर्थात् पन्द्रहवीं शताब्दीमें विद्यमान थे।

कबीर देखो।

जिस समय चैतन्यदेवके विशुद्ध धर्मोपदेशसे बङ्गदेश बतवाला हो उठा था, प्रायः उमी समय उत्तरपश्चिममें गोरक्षनाथके अमृतमय वचन और असाधारण योगकीशलसे मोहित हो उत्तरपश्चिमके सैकड़ों मनुष्य उनके मतमें दीक्षित हुए थे। चैतन्य महाप्रभु जिस तरह उच्च नीच सभी वर्णोंके मनुष्योंको अपनाया था, गुरु गो-

रक्षनाथने भी उसी तरह सर्व जातिके मनुष्योंके मध्य अपना मत प्रचार किया था। राजामें रङ्ग तक उनको आदर करते और वे सभीको समान भावमें देखते थे। गुरु गोरक्षनाथ बहुतमें पातञ्जलका मत प्रचार करते थे। उनके मतमें योगी ही संसारमें सभीमें श्रेष्ठ माने गये हैं। क्योंकि योगफलसे मानव सर्व प्रकारके पशुव्य और सर्वोच्च अवस्था पा सकते हैं। वे हठयोगके भी प्रवर्तक थे। नेपालकी तुषारमय गिरिकान्दरमें लेकर भारतके प्रायः सभी ध्यानियों गोरक्षनाथके मन्थनमें वर्तमें अर्थात्किक गल्प प्रचलित हैं। ये सिर्फ योगी और महासिद्ध पुरुष ही नहीं थे, बरन इनके बनाये हुए हठयोग मन्थन्याय अनेक अच्छे अच्छे ग्रंथ हैं जिनमेंमें गोरक्षकल्प, गोरक्ष-संहिता, गोरक्षमहस्र और गोरक्षपिटिका प्रभृति ग्रंथ पाये जाते हैं। ई० प०में १०म शताब्दीके मध्य गुरु गोरक्षनाथका अभ्युदय हुआ था। कणफट और कर्पा देखा। गोरक्षी (सं० स्त्री०) गावां रक्षा, ६-तत्। १ गोपालन। गां रक्षति रक्ष-अच्-टाप्। २ वह स्त्रो जो गो रक्षा करती है।

गोरक्षी (सं० स्त्री०) गोरक्ष-डीपत्। १ गोरक्षदुग्धा, लता-विशेष। २ कुम्भतुखी। ३ क्षुद्र क्षुपविशेष, एक तरहकी छोटी लता जो सालवदेशमें पायी जाती है। इसका पर्याय—सपेटगडी, सुदण्डिका, चितला, पञ्चपर्णिका, गन्धवहुला और गोपाली है। इसका गुण—मधुर, तिक्त, शीतल, टाह, पित्त, विस्फोट, वान्ति, अतिसार और ज्वर टोषनाशक है। इसका फल खर्बुजाके फलके जैसा मीठा होता है। ४ ऋषभक।

गोरख डमली (हि० स्त्री०) दक्षिण भारतमें होनेवाला एक तरहका वृक्ष। इसका धड़ बहुत मोटा एवं इसकी शाखायें बहुत दूर तक फैली रहती हैं। इसकी लकड़ी बहुत कमजोर और छाल बहुत नर्म होती है। छालके रेशे से चटाइयां, रस्से और कहीं कहीं कपड़े भी बनाये जाते हैं। इसमें पदमके आकारके बड़े बड़े पुष्प आवण भाद्र मासमें लगते हैं। अफ्रिकाके मनुष्य इसके पत्तेको चूर्ण कर भोजनके साथ खाते हैं। इस वृक्षमें फल भी लगते हैं। जिनके बीज औषधके काममें आते हैं। ज्वर निवारणके लिये यह रामवाण है। इसका-गुण मधुर

शोतल और टाह, वमन, पित्त, अतिसार और ज्वरनाशक है। यह कल्पवृक्ष नामसे भी विख्यात है।

गोरख ककड़ी (हि० स्त्री०) एक तरहको ककड़ी।

गोरख डिव्डी (हि० स्त्री०) गर्म जलका कुछ या स्त्रोत।

गोरखघा (हि० पु०) १ कई तारों कडियों या लकड़ों के टुकड़ोंका समूह। २ भगडा या उनभनका काय। ३ भगडा, उनभन पेच।

गोरखनाथ—गोरखनाथ देव।

गोरखपथी (हि० वि०) गोरक्षनाथका अतुगामी, गोरख नाथके उपदेशका माननेवाला।

गोरखपुर—१ युक्त प्रदेशके उत्तर पूर्वका एक विभाग। यह अक्षा० २५ ३८ से २७ ३०' उ० और देशा० ८२ १३' से ८४ २६' पू०में अवस्थित है यह विभाग नेपाल की तराईसे लेकर घर्घराके उत्तर तक फैला है। इसका उत्तरीय भाग बहुत आद्र है तथा चारों ओर जङ्गल से घिरा है। भूपरिमाण ८५३४ वर्गमील और जनसंख्या लगभग ६३३३०१२ है। इसमें गोरखपुर, बस्ति और आजमगढ नामक तीन जिला लगते हैं। गोरखपुर और बस्ति घर्घरा नदी पर तथा आजमगढ उससे कुछ दक्षिणमें अवस्थित है। इस विभागमें कुल १८१३५ ग्राम पडते हैं। यहांके प्रधान वाणिज्य स्थान गोरखपुर, आजमगढ, बरहज बरहजगञ्ज, उसका, पटरीना और गोला है।

२ युक्त प्रदेशका एक पूर्विय जिला। यह अक्षा० २६ ५' तथा २७ २८ उ० और देशा० ८३ ४ ए० ८४ २६ पू०में अवस्थित है। यह जिला वाराणसी विभागकी अन्तर्गत है। इसके उत्तरमें नेपालराज्य, पूर्वमें सारण और चम्पारण जिला, दक्षिणमें घघरा नदी तथा पश्चिममें बस्ति और फाजाबाद जिला है। भूपरिमाण प्राय ४५३५ वर्ग मील होगा। लोकसंख्या प्राय २८५ ००७४ है।

इसमालय पक्षतर्न बहुतेसे योगदान अन्तस्तोत पहाडके वातुषणाको माथ लिये निकने है। यह बालू क्रमस्य लसकर जिनके धातुकासय नितमें परिणत हो गया है। इस जिलेमें एक भी बडा पर्वत नहीं है। यहां अततो

नदिया और जलस्रोत प्रवाहित है। स्थान स्थान पर जलाभूमि और गहरी भोल देखी जाती है। अधिक पानी रहनेके कारण मनुष्य जिला उबरा तथा छत्तादिसे परिपूर्ण है। जिलेके उत्तर और मध्यांशमें विस्तीर्ण शालवन है

पर्वत श्रेणिके निम्नभागमें तराई है। घने जंगल हो कर अनेक जलस्रोत प्रवाहित है। यहांके पहाडी अधिवासो देखनेमें ठीक गोर्खा या नेपालीके जैसे होते हैं। उनमेंसे थारु जातिकी ही सख्या अधिक है। सिर्फ थारु जातिके मनुष्य पर्याप्ततुमें तराई भूमिमें रह सकते दूसरो कोई जाति रह नहीं सकतो है, क्योंकि इस समय भयानक महामारी फैला करती है। जिलेके दक्षिण की ओर जितना ही अग्रसर होते जाय उतनाहो सुगो भित क्षेत्रकी कतार दृष्टिगत होती है।

अधिक पर्या होनेसे अग्नि उपत्यकाका जन पूर्व ओर की भूमिमें मिल कर एक समुद्रका आकार धारण करता है। इस जिलेकी प्रधान नदियोंके नाम ये हैं—रामी, घर्घरा, बडो गण्डक, कुशाना, रोहिंगो, अग्नि और शुद्धी। इसके अलावा रामगड, नन्दौर, नवर, मोंडि, बिहुरा, और अमियरतान प्रभृत कई एक भोल है।

घर्घरा नदीके उत्तर तथा अयोध्या और बिहारके मध्य जो सब स्थान वर्तमान समयमें गोरखपुर और बस्ति जिलेमें बटे है वे प्राचीन कोशल राज्यके अन्तर्गत थे और अयोध्या नगरी उक्त राज्यकी राजधानी थी। गौतम बुद्ध इस जिलेके निकट कपिलवास्तु नगरमें पैदा हुये थे। वर्तमान तराईके 'भूइला' नामक स्थानमें उनको मृत्यु हुई थी। आजतक भी उनके समाधिस्थानके ऊपर एक खोदी हुई बडी मूर्ति विद्यमान है।

ऐसा प्रवाद है कि अयोध्याके सूर्यवंशीय किमो राजाने इस जिलेमें काशीधामके महेश गोरवविशिट एक बडी नगरा स्थापन करनेकी चेष्टा की थी। जब वे उक्त नगरको सम्पूर्ण रूपसे निर्माण कर चुके, तब उस समय थारु और भरभोजिने आ उके परान्त किया तथा नगरकी बरबाद कर डाला। बहुत समयसे यह जाति अयोध्या और गङ्गाके उत्तर पृथ स्थान पर राज्य करती रही थीइ धर्मके उदात्तके माथ माथ फिर भी इनकी अनेक घटनाए

जानी जाती है। भरजातिके सर्दार पहले स्वाधीन भावसे राजत्व करते थे, अन्तको वे मगधके वीरराजाके आश्रित हुए। वीरोंके अधःपतनके बाद हिन्दुओंकी प्रधानता दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ने लगी। ६०० ई०की कनौजके हिन्दू राजाओंने इस जिले पर आक्रमण तथा वर्तमान गोरखपुर नगर तक अधिकार किया था। चीनपरिव्राजक युएनचुपाङ्ग जब इस देशको देखने आये उस समय वे बहुतसे वीरमठ और स्तूपोंके देख गये थे। ८०० ई०में टोमहतार नामक किमी ब्राह्मणके दलने राठौरोंको गोरखपुरसे भगा दिया था। ११वीं शताब्दीमें नागरराज विष्णुसेन इस राज्यके सामन्त (राजा) थे, किन्तु उस समय भरजाति भी जिलेके पश्चिममें राज्य करती थी। इसके बाद मोगलसम्राट् अकबरके समयमें जयपुरके राजसे उन दोनोंका सम्पूर्ण रूपसे अधःपतन हुआ। १४वीं शताब्दीके प्रारम्भमें मुसलमानोंसे भगाये हुए राजपूत राजगण इस जिलेमें आये। उनमेंसे धूरचन्द धुड़ियापाड़ेमें और चन्द्रसेन शतासी नामक स्थानमें आ कर रहने लगे थे। चन्द्रसेन टोमानगढ़ पर (वर्तमान गोरखपुर दुर्ग) आक्रमण कर टोमहतारके सर्दारको मार कर आप राजा बन बैठे। इसी शताब्दीमें बतवल और बंभीके राजाओंके साथ घमसान युद्ध होनेसे जिलेका अधिकांश मरुभूमिसा हो गया था। १३५०से १४५० ई० तक शतासी और मजहोलोके राजाओंमें अविच्छेद युद्ध होता रहा।

प्रायः १४०० ई०में गोरखपुर नगर स्थापित हुआ। उक्त ई०के बाद यह जिला क्रमशः विभक्त होने लगा। मजहोलोके वंशने दक्षिणपूर्व अधिकार किया था और धूरचन्दके वंशधर दक्षिण-पश्चिमांशमें राज्य करते थे। इसके बाद आवनल्ला और शतासी राज्य तथा जिलेके उत्तर पश्चिमांशमें छोटा बतवल राज्य संगठित हुए। उक्त राजगण स्वाधीनभावसे राज्य करते थे।

मोगल राजत्वके पहले योडे मुसलमान घर्षरा नदी पार हुए थे। लेकिन वे इस प्रदेशको आ न सके १५७६ ई०में बङ्गेश्वर टाउद खोंको परास्त कर अकबरका सैन्य दल इस जिला हो कर आया था तथा जिन राजाओंने उसे जाते रोका था, सम्राट्के सेनापति फटाई खोंने उन

सबको पराजित कर गोरखपुर देखने किया। औरङ्गजेबके समयमें उनके लडके बहादुरशाह शिकारके उद्देशसे इस जिलेको देखने आये थे। परन्तु १७२१ ई०में नवाब नज नगरमें अयोध्याके नवाब बजीरके प्रतिष्ठित होनेके पहले मुसलमानोंका गोरखपुरके ऊपर विशेष लक्ष्य न था। उस समय देशीय राजा इस प्रदेशमें राज्य करते थे। नवाब मयादत् अली राजगढ़ी पर बैठ गोरखपुर पर अधिकार करनेका यत्न करने लगे थे। १७५० ई०में अली कासीम खोंने बहुतसी सेना ले गोरखपुर हस्तगत किया। इस समय मुसलमान गोरखपुरके राजासे कर ले लेते और कोई उत्पात नहीं मचाने दे, देशीय राजाओंसे जो कुछ मिलता, उसे ही मन्त्र्य ग्रहण करते थे। १८ वीं शताब्दीमें बख्शराके उपद्रवसे यह जिला विशेष क्षतिग्रस्त हो गया। १७२५ ई०में बख्शरा पहले पहल देखे गये थे। तीस वर्ष तक वे शान्त रहे, इसके बाद ये बंभीके राजाके साथ मिल दूमरे दूमरे सर्दारोंको कष्ट पहुंचाने लगे थे। इस समय अयोध्याके नवाबके मनुष्य प्रजाकी धन सम्पत्ति लूट रहे थे। प्रजाके हाहाकारसे आकाश विदीर्ण हो उठा। १७४४ ई०में बक्सरकी लड़ाईके बाद एक ब्रिटिश सेनापतिके ऊपर नवाबके सैन्य परिचालन और गोरखपुरसे कर वसूल करनेका भार सौंपा गया। इन्होंने बहुतसे ताम्रकटारोंको जमोन ठीका दे दो। ठीका पाकर वे प्रजासे मन माना कर लिया करते थे। १८०१ ई०की सन्धिके अनुसार अयोध्याके नवाबने ब्रिटिश गवर्मेंटको यह जिला दे दिया। ब्रिटिश गवर्मेंटने गोरखपुर, आजमगढ़ और वस्ति जिलेमें शासनका सुप्रबन्ध कर दिया। समय समय पर प्रजाओंके राजत्वको भी घटाने लगे। १८१३ ई०में नेपालियोंने गोरखपुर पर आक्रमण किया, किन्तु योडे समयके बाद ही वे लौट जानेके लिये बाध्य हुए। इस समयसे लेकर सिपाही विद्रोह तक यहां किसी तरहकी गड़बड़ी न हुई। १८५७ ई०के अगस्त मासमें मुहम्मद होसेनके अधीनमें विद्रोहियोंने इस जिलेपर अधिकार किया था १८५८ ई०की ६ठी जनवरीको जङ्गबहादुरने गोर्खासैन्यके साथ आ मुहम्मद होसेन और दूसरे दूमरे विद्रोहियोंको गोरखपुर जिलेसे भगा दिया। तभीसे यह जिला ब्रिटिश

गवर्मेण्टके अधीन आ रहा है। यहाँ एक एक राजकी अधीन बहुतसे परगने हैं।

यहाँ ज्वार, बाजरा, जौ, गेह, लट्टे धोर मूग बहुत उपजते हैं। जंगलमें शहद यथेष्ट पाया जाता है। यहाँका बडाज नामक स्थान वाणिज्यके लिये प्रधान है। फौजवादा, अकबरपुर, जमानिया प्रभृति स्थानमें अनेक तरहके कारखाने हैं।

इस जिलेको जलवायु स्वास्थ्यकर है। पर्वतके निकट होनेके कारण गरमी और जाड़ा अधिक नहीं पड़ता। परन्तु तराई और जङ्गल अशुभ मलेरिया ज्वरका यथेष्ट प्रादुर्भाव है। गोरखपुर, रुद्रपुर कगिया और वडल गञ्जमें दातय औषधालय हैं। यहाँ ब्राह्मण, राजपूत, कायस्थ, कुर्मी, शेख, मैयट, मोगल और पठान रहते हैं। हिन्दू अधिवासियोंमें ब्राह्मण और कुर्मी जाति तथा मुसलमानोंमें शखीकी सन्ध्या अधिक है।

यहाँ चीनी परिष्कार कारखाना प्रधान व्यवसाय है तथा नोनका भी कारखाना यहाँ अधिक होता है। यहाँसे चावल, जौ, गेह और चीनीकी रफ्तारो दूर दूर देशोंमें होती है और दूसरे देशसे नमक, धातु मटीका तेल आदि आते हैं। घघरा नदी तथा B N R द्वारा व्यापार किया जाता है। यहाँकी सड़क अच्छी नहीं होनेके कारण व्यापारमें कुछ बाधा पड़ती है। गोरखपुर शहरसे गाजोपुर और फयजाबाद तथा उरहजसे पटरोना तक जो सड़क गई है वही कुछ कुछ अच्छी है। और मन्न जगहकी सड़क वर्षोंके दिनोंमें कौचडमें भर जाती है। यहाँ कई बार भयानक दुर्भिक्ष पड़ा है। औरजिवके समय तथा १८वीं शताब्दीमें ऐसा अकाल हुआ था कि च गलो हि मकपण मनुष्योंको पकड़ पकड़ खानेको भी ज्ञाते थे। अब गवर्मेण्टने दुर्भिक्षसे बचनेके लिये अच्छी व्यवस्था कर दी है।

पटरोना तहसील एक स्वतन्त्र उपविभाग हो गया है और यह इण्डियन मिनिस्टरके सेक्टरके अधीन है। तथा इता तहसील डीप्टी कमिश्नरको देख भालमें है। इनके अलावा यहाँ तीन जिला मुंसिफ और एक मजिस्ट्रेट हैं। इन्हींके ज्ञापनमें समस्त गोरखपुर तथा वास्तकी राज्य कार्यका प्रबंध है। पहले यहाँ राजबंदिभागका

प्रबन्ध अच्छा नहीं था, किन्तु अब उपजके अनुसार मालगुजारी ली जाती और प्रजा चैनसे रहती है। यहाँको राजस्व प्राय २५ लाख रुपये की है।

यह जिला गिचामें बहुत पीछे पड़ा हुआ है। अब गवर्मेण्टने विद्योन्नतिके लिए अधिक रूपसे खर्च करके बहुतसे स्कूल खोले। आजकल यहाँ ८० स्कूल ऐसे हैं जिनमें गवर्मेण्ट कुछ आर्थिक सहायता देती है और शोकेकी सरकार स्वयं चलाती है। स्कूलके अतिरिक्त यहाँ अब कालेज भी स गठित हुए हैं। स्कूल विभागमें लगभग ८४००० रुपये खर्च होते हैं।

यहाँ १३ चिकित्सालय हैं, बहुतेमि रोगी भी रखे जाते हैं।

३ उक्त जिलेकी एक प्रधान तहसील। यह अक्षा २६ २८ से २७ ७० और ८३ १२ से ८३ ३८ पू०में अवस्थित है। भूपरिमाण ६५ वर्ग मील और लोकसंख्या लगभग ४८६०११ है। इसमें १०८० ग्राम और दो शहर लगते हैं। यह तहसील रामो ग्रामी और रोहिणी नदियों से बट गई है।

४ उक्त जिले और तहसीलका नगर और शहर। यह अक्षा २६ ४५ और देगा० ८३ २० पू०में बङ्गाल और उत्तर पश्चिम बेलचे किनारे राणी नदी पर पड़ता है। यह लगभग कलकत्तेसे रेलद्वारा ५०६ मील और बम्बईसे १०५६ मीलकी दूरी पर अवस्थित है। कहा जाता है कि यह शहर १४०० ई०में मतामी परिवारकी किसी अंगीने स्थापित किया गया है। अकबरके समयमें यह अवध स्वामीके सरकारका मदन था। १६१० ई०में हिन्दुधर्मि मुसलमानको भगा कर अपना अधिकार इस पर १६८० तक जमाया। अठारवीं शताब्दीमें यह अवधमें मिला दिया गया। यहाँ जिलेका मदन अटालत विचारालय, कारागार, दातव्य औषधालय और म्युनिसिपालिटी हैं।

गोरखपुरी (हि० स्त्री०) एक तरहको घास जिमकी पत्तियाँ लगभग एक अङ्गुल लम्बी होती हैं। इसमें गुलाबी र गके पुष्प लगते जो रक्तगोधनके लिये बहुत उपकारी हैं।

गोरखर (फा० पु०) पश्चिमी भारत और मध्य एशियामें पाये

जानेवाला एक तरहका पशु जो गर्भ से बड़ा और घोंडेसे छोटा होता है। यह प्रायः तीन हाथ ऊंचा और पंच कः हाथ लम्बा होता है। इसका पेट श्वेत और शंघ अङ्ग हिरनके रंगका होता है। यह द्रुतगामी एवं इसके कर्ण बड़े और दुस पर रोएं होती हैं। ये मैदानमें झुंडके झुंड रहते और हरी घास तथा पत्तियां खा कर जीवन निर्वाह करते हैं।

गोरखा (हि० पु०) १ नेपालके अन्तर्गत एक प्रदेश। २ गोरख देशका रहनेवाला। गोर्खा शब्द।

गोरखाली (हि० पु०) नेपालके मध्य गोरखा नामक प्रदेश।

गोरखु (स० पु०-स्त्री०) गवा वा चारखुरिव। १ एक तरहका जलपत्ती। २ लग्नक, जमीनदार। ३ बन्दी, कैदी।

गोरचक्रा (देश०) एक तरहका जंगली पौधा जो मन जातिका होता और जिसके पत्ती घीझुआरकी तरह चिकने और लम्बे होते हैं। फिलहाल शोभाके लिये यह पौधा उद्यानमें लगाया जाता है। इसमें छोटे छोटे फल भी लगते हैं। यह टवाईमें बहुत उपयोगी है। इसका गुण कड़ु आ, गरम, भारी दस्तावर, और प्रमेह, कौढ़, त्रिदोष, रुधिरविकार तथा विषमञ्जरनाशक है।

गोरज (स० पु०) गौके खुरासे उड़ो हुई गटं वा धूल।

गोरट (स० पु०) गवि रहति रट-अच्। खदिर, खैर।

गोरटा (हि० वि०) गोर रंगवाला, गोरा।

गोरण (स० स्त्री०) गुर भावे ल्युट्। उत्तोलन, उद्यम।

गोरगाटल—मन्द्राजके कर्णूल जिलेके अन्तर्गत और, कर्णूल नगरसे ८५ कोस दक्षिणमें अवस्थित एक ग्राम। यहां बहुतसे प्राचीन मन्दिर और उनमें उत्कीर्ण शिलालिपि हैं।

गोरय (स० पु०) मगधदेशस्थित एक मनोरम पर्वत।

गोरयफ (स० पु०) गीयान, वैलकी गाड़ी।

गोरन (देश०) एक तरहका छोटा पेड़। इसकी लकड़ी लाल होती है। और किशियां बनाने और इमारतके काममें आती हैं। चमार इसके छिलकेसे छिमड़ा सिद्ध करता है। यह वृक्ष मिंध, बंगालकी नदियों और समुद्रके किनारेकी भीगी जमीनमें अधिकतासे होता है।

गोरमा (स० स्त्री०) लणविशेष, गऊ तरहको सुगन्धि घास।

गोरभस (स० त्रि०) गौः पयस्ताद् रभसं वै गौ वीर्यं ग्रस्य, बहुव्री०। वीर्यवान्, बन्दिट।

गोरया (देश०) अग्रहायण मसममें होनेवाला एक तरहका धान। इस धानका चावल बहुत दिन तक रखमकते हैं।

गोरल (देश०) एक तरहका जंगली बकरा।

गोरखा (देश०) एक तरहका घास। इसकी छोटी छोटी टहनियोंमें चूबे के नीचे बनाये जाने हैं।

गोरखाल—गुजरात प्रदेशको एक ब्राह्मण जाति। उदयपुरके राजाने इन ब्राह्मणोंको बुलाकर अपने यहां बस क्रिया था। यज्ञको समाप्ति होने पर इन्हें राजाकी ग्रामसे बाईस गाँव दान टक्षणसे मिलने थे जिनमेंसे गोल नायक ग्राम प्रसिद्ध था। उसी गोलके नामसे ये गोलवाल या गोरवाल ब्राह्मण फलनाने लगे हैं।

गोरम (स० पु०) गवां रमः, इ तत्। १ गोदुग्ध, गायका दुध। २ दधि, दही। ३ तक, मठा, छाछ ४ वाक्यगत रम ईन्द्रियोंका सुख।

गोरमज (स० स्त्री०) गोरमात् जायति गो रम-जन-ड। १ तक, मठा, छाछ। (त्रि०) जो गोरमसे तैयार हो।

गोरमर (देश०) वामके पंखोंकी डंठीमें बंधो हुई पतली कसाची।

गोरसा (हि० पु०) गायके दूधमें पाला हुआ बच्चा।

गोरसी (हि० स्त्री०) दग्ध गर्म करनेकी अंगाठी।

गोरस्थान (फा० पु०) कन्न, मुर्दा गाड़नेकी जगह।

गोरा (हि० वि०) १ गौरवर्ण, श्वेत और स्वच्छ वर्णवाला। (देश०) २ नोलके कारखानेकी एक तरहकी कल। ३ लंबोदरा आकारका एक तरहका नीत्र।

गोराई (हि० स्त्री०) १ गोरापन। २ सुन्दरता, सौंदर्य।

गोराचन्द—एक मुसलमानधर्मावलम्बी फकीर। ये पीर-गोराचन्द नामसे मशहूर हैं। ऐसा प्रवाद है कि एक समय ये मक्का दर्शन कर सुन्दल नामक भीकारके साथ लौटे आ रहे थे। हतियागढ़ परगनेके निकट दो पिशाचने उन पर आक्रमण किया। बहुत काल युद्धके बाद उनमेंसे एक मारा गया, किन्तु दूसरेने गोराचन्दकी विशेष रूपसे चीट दी और उनके कंधेकी दो खण्ड कर दिये

रक्तके स्रोतमें गोरचन्द बहने लगे। इन्होंने सुन्दलकी पान ला कर सतस्थानकी वा २ देनेके लिए कहा, किन्तु पान कहीं भो पाया न गया। तब गोरचन्द पानके अवे पणमें बालान्दा परगनेकी गये। वहा वे घाडेसे गिर मृतवत् हो गये। इस समय गोरचन्दने सुन्दलकी माता के पाम जा कर यह सधाद देनेके लिए कहा। इस स्थान में कालुघोषकी कपिला नामकी ए २ गाय थी, वह गाय गुग्गुभाषसे जङ्गलमें आ गोरचन्दकी दूध दे जाती थी। वही दू २ पीकर गोरचन्द जीवन धारण करते थे। ग्वाला कालुघोषने देखा कि कपिला गाय अब उसे दूध नहीं देती, इसका क्या कारण है? अन्तमें धीरे धीरे उसने कपिलाके इस रहस्यको जान लिया। कालु कपिलाकी मारनेके लिए दोडा। यह देख गोरचन्द कालुको शप देनेके लिये उद्यत हुए। तब कालुने उनका पैर पकड कहा "प्रभो! आज्ञा कोजिए मैं और मेरे भाई मिल आप का सत्कार करे।" अन्तमें गोरचन्द कह गए थे "देखो। इस यालादामें कोई भो पानकी खेतो न करे, जो पान उपजायगा, वह सवश नाश होगा।" यह कहते हुए वे परलोकाकी सिधारे। कालुघोष और उसके भाइने गोरचन्दकी गाड दिया तथा उनको कन्नके ऊपर वे प्रतिदिन प्रकाश दिया करते थे। थोडे दिनके बाद उन स्थान पर एक महिजद निर्मित हुआ।

बालान्दाके अन्तगत हाट्टोया नामक ग्राममें प्रतिवर्ष फाल्गुन मासकी गोरचन्दके समानार्थ एक बडा मेला लगा करता है, इसमें हजारों मनुष्य जुटते है। कालु घोषके व शपथ आज भो गोरचन्दकी कन्नके ऊपर फल और दूध उत्सर्ग करते है। तमोमे बालान्दामें कोई मनुष्य पानको खेतो नहीं करते है।

गोराज (स० पु०) गवा राजा, ६ तत्, समानान्त टच्।
श्रेष्ठपुत्र, माँद।

गोराटिका (स० स्त्री०) गा वाच रटति रट गवुत्। शारिका पत्नी, मैना।

गोराटी (स० स्त्री०) गा वाच रटति रटघण् डोपु।
शारिका पत्नी मैना।

गोराटू (देश०) बालू मिश्रित मट्टो जिसमें कोदी बहुत उपयुक्त होता है। यह मट्टी गुजरातमें बहुत होती है।

गोरामूग (हि० पु०) एक प्रकारको जङ्गलो मृग जो दुर्भिक्षके समय दोन मनुष्य खाते है।

गोरिका (स० स्त्री०) गोराटिका प्रयोदरादित्वात् साधु।
शारिका।

गोरिका (अ० पु०) अक्रिकामें पाया जानेवाला एक तरहका वनमानुष। यह काले वर्णका होता एव इसके कान छोटे और हाथ बहुत बडे होते है। यह बहुत बलिष्ठ पशु है, इसको ज चाड़े प्राय साढे पांच फुटकी होती है। यह वृक्ष पर भीपडे बना कर रहता है। इसका प्रधान भोजन फल है। इसके शरीरकी बनावट मनुष्यसे बहुत कुछ मिलती जुलती है।

गोरिविन्दूर—महिसुरमें कोलार जिलेके अन्तर्गत एक तालुक। इसका भूपरिमाण १५३ वर्ग मील है। यहाकी जमोन उर्वरा होनेके कारण धान, हरिद्रा (हल्दी), नारियल, सुपारी और ईश्वर यष्टी होती है।

२ उक्त तालुकका प्रधान नगर। यह अक्षा० १३ ३७ उ० और देशा० ७७ ३२ ५० पू०में पिन्याकियो नदीके बाए तीर पर अवस्थित है। यह नगर बहुत प्राचीन है।

गोरी (हि० स्त्री०) सुन्दर और गौर वर्णकी स्त्री, रूप वती स्त्री।

गोरामर (स० पु०) मालवा, उग्रवा।

गोरकज—मन्द्राजमें कर्णूल जिलेका एक विध्वस्त प्राचीन नगर। यह नन्द्यालसे सात मील उत्तर पश्चिममें अवस्थित है। यहा शिव तथा वोरमट्टके ध्व सावशिष्ट अर्थात् प्राचीन मन्दिर है।

गोरुचो (स० स्त्री०) गोपचना दम्पती।

गोरुत (स० स्त्री०) गर्वा शत, ६ तत्। १ गोरव, गौका शब्द गोरुत श्रुतिगोचरत्वे नाश्रयस्य गोरुत अर्थात् त्वादञ्च २ दो कोस

गोरू (हि० पु०) १ सीगवाला पशु, गाय, बैल, मैंस प्रभृति मय्यो। २ दो कोमका भान।

गोरूप (स० स्त्री०) गर्वा रूप, ६-तत्। १ गौका रूप, गौकी आकृति। (पु०) २ गिव अहादिय। (भात ५ १३ १७)

गोरोच (सं० क्लो०) गवां किरणान गोचते रुच-अच ।
हरिताल, हरताल ।

गोरोचना (सं० स्त्री०) गाभ्यो जाता रोचनेव । पीले रंग-
का एक तरहका सुगन्धि द्रव्य, गोकु मूलकस्थित शुष्क
पिक्त । इसका संस्कृत पर्याय—रुचि, शोभा, रुचिग,
शोभना, शुभा, गौरी, रोचनी, पिङ्गा, मङ्गल्या, शिवा, प्रीता,
गौतमी, गव्या, चन्दनीया, काञ्चनी, सेध्या, मनोरमा,
श्यामा, रामा, वन्द्या, रोचना है । इसका गुण—गौतन,
तिक्त, वश्य, मङ्गल और कान्तिकारी, विष, अलक्ष्मी,
ग्रह, उन्माद, गर्भस्त्राव और क्षतरक्तनिवारक है । (भा०
प्रकाश) तन्त्रके मतसे गोरोचना हाग देवयन्त्र प्रस्तुत किया
जा सकता है । पण्डितगण इससे देवताओंके कवच
प्रभृति लिखते हैं ।

गोर्खा—नेपाल राज्यके अन्तर्गत एक जिला । यह गण्डकी
नदीके उत्तरपूर्वमें अवस्थित है । सप्तियाँटि और त्रिशूल
गङ्गा नदीके मध्यवर्ती समुदाय भूभाग इस जिलेका
अन्तर्गत है । यहां लगभग दो हजार घर और राज-
प्रसाद है । राजप्रानाद अत्यन्त भग्नावस्थामें पड़ा है ।

गोर्खा—उक्त जिलेके रहनेवाले । ये गोर्खाली भी कह-
लाते हैं । अभी नेपाल और उसकी तराईके रहनेवाले
समुप्य अपनेको गोर्खा कहा करते हैं । किन्तु जिनके
पूर्व-पुरुष गोर्खा नामक जनपदमें वास कर स्वाधीन और
प्रवल हो उठे थे, वे ही यद्यार्थ गोर्खा या गोर्खाली है ।
पृथ्वीनारायणके अभ्युदयमें उनके साथ ये भी नेपालके
भिन्न भिन्न स्थानोंमें फैले हुये थे । नेपालमें गोर्खा राजाओं-
का विवरण देख । इनका कथन है कि एक समय गुरु गोरक्ष-
नाथ नेपालको आये, जिस स्थानमें रह कर उन्होंने १२
वर्ष तक कठोर तपस्या की थी, वही स्थान उनके नामा-
नुसार गोर्खा नामसे परिचित हुआ है । ये भी गोरक्ष-
नाथको विशेष भक्ति अर्पण करते और शिवावतार गोरक्ष-
के शिष्यके जैसे परिचय देते हुए “गोरक्षा” या गोर्खा
नामसे अभिहित है ।

गोर्खा कोई भिन्न जाति नहीं है । गोर्खाराज पृथ्वी-
नारायणके साथ ब्राह्मण, क्षत्रिय, मगर, गुरुङ्ग, कामाई-
धामाई प्रभृति नाना जातियोंने अस्त्रधारण किया था,
आजकल वे ही गोर्खा नामसे परिचित है

गोर्खे बलिष्ठ, माहसी, दृढ़काय, मन्ववादी और कष्ट-
महिष्णु होते हैं । पार्वतीय युद्धमें इनके समान योद्धा
भारतमें और दूसरे नहीं हैं । इनके शरीरको गठन चीन
या तातारोंमें तथा आँगु छोटी और नाक चिपटी
होती है ।

११ वीं शताब्दीमें मुसलमानके आक्रमणसे पीड़ित
हो हिन्दूराजाओंने समैन्य नेपालके पार्वतीय प्रदेशमें आ-
आत्मरक्षा की थी । किसी किसीका मत है कि उन्हीं
हिन्दुओंके साथ यहाँके मगर, गुरुङ्ग प्रभृति जातिको
स्वियोंके संभवसे गोर्खाकी उत्पत्ति है । नेपालके गोर्खा
नामक स्थानमें यही गोर्खा बहुत दिन तक निरापदमें
शान्तिसुख भोग करते थे । उनके सर्दार नाममात्र नेपाल-
राजाके अधीन थे । १७६८ ई०के कुछ पहलें मुहम्मद
तुगलक नेपाल जीतनेके लिये आगे बढ़े थे, किन्तु चीन
सैन्य आ तुगलक को पराजय कर नेपालसे भगा दिया ।
इस समय भाटगाँव, काढमांडू और ललितपत्तनके राजा-
ओंमें शत्रुता थी । पृथ्वीनारायण उस समय गोर्खाओंके
राजा थे । वे अपनेको उदयपुरके राणाके वंशधर वत-
लाते थे । भाटगाँवके राजाने दूसरे राजाओंके विरुद्ध
पृथ्वीनारायणका साहाय्य प्रार्थना की थी, किन्तु जब
उन्होंने देखा कि पृथ्वीनारायणसे सहायता पाना तो दूर
रहे, गोर्खाधीन ही उनके विपक्ष हो उठे हैं ; तब उक्त
तीन स्थानके राजा और उनके अधीनस्थ मामन्त सबके
सब गोर्खाराज पृथ्वीनारायणके विपक्ष हो लड़ने लगे ।
किन्तु एक एक कर सब राजधानी गोर्खा सर्दारके हाथ
आने लगी । अन्तमें एक राजा युद्धक्षेत्रमें मारे गये, दूसरे
बन्दे हो कर कारागारमें मरे और तीसरे राजा
भाग कर ब्रिटिश गवर्मेण्टके आश्रयमें आकर रहे । ब्रिटिश
गवर्मेण्टने उनकी सहायताके लिये सेना भेजी थी, किन्तु
वे कुछ कर न सके । पृथ्वीनारायणको मृत्युके बाद उन-
के पौत्रके प्रतिनिधि गोर्खावीर बहादुर शाहने गोर्खासैन्य
के साहाय्यसे समस्त नेपाल और भोटके बहुत अंशों पर
अधिकार जमा लिया ।

अब गोर्खा सिकिम राज्य जीतनेके लिये अग्रसर हुए ।
१८१४ ई०में ब्रिटिश गवर्मेण्ट और गोर्खासे लड़ाई छिड़ी ।
पहले गोर्खाने बहुतसी अंगरेजी सेना नष्ट कर दी ।

दृमरे वर्ष सर डेविड अकरलोनेनि एटिंग गोरवको वचा
नेके लिये प्रबल प्रतापसे गोर्खा पर आक्रमण किया,
किन्तु वे भो कुक विगप ज्ञानि पट्टुचा न सके।
१८१६ ई०में एटिंग गवर्मेण्ट और नेपाल राजामें सन्धि
हो गई, जमसे एटिंग गवर्मेण्टने कोशलक्रमसे गोर्खाके
करे एक स्थान ले लिये।

सन्धिके अनुसार नेपालकी राजधानी काठमाण्डू में एक
एटिंग रेसिडेण्ट रहने लगा। १८४० ४१ ई०में मिख युद्धके
समय नेपालके गोर्खा भी अ गरजके विरुद्ध अस्त्रधारण
करनेके लिये प्रस्तुत थे, किन्तु एटिंग रेसिडेण्ट सुविच
ब्रायण हजमन साहबके कोशलसे कोइ घटना न होने
पायो थो। १८३३ ई०में हजमन साहबने गोर्खा सैन्यके
सुहनिपुणताका परिचय देते हुए एटिंग गवर्मेण्टको
एक पत्र लिवा तथा नेपालसे गोर्खा सैन्य सयह कर
एटिंग सैन्यमें नियुक्त करनेका अनुरोध किया था। एटिंग
गवर्मेण्टने आदरपूर्वक इनके प्रस्तावको समर्थन
किया। गोर्खा भारतवासियोंको "मधेशिया" समझ कर
घृणा करते हैं। पहले वे एटिंगके अधीन नोकरी करना
नहीं चाहते थे, परन्तु जो गोर्खा सैय नेपालराज मर-
कारमें नियुक्त नहीं थे, वे ही हजमन साहबके बहवा
नेसे एटिंग राज्य धानमें खोसत हुए थे। धीरे धीरे
इसो तरह प्राय तीस हजार सैन्य एटिंग सेनामें भर्ती
हुए। उस समय चतुर नेपाल राजाने छिड़ छान्ट की थो
कि एटिंग गवर्मेण्ट नेपालसे किसीको भी ले जा नहीं
सकतो क्योंकि ऐसा होने पर नेपालराजका बल क्षाम
होनेको सम्भावना है। तभीसे एटिंग सरकार नेपालसे
यथार्थ गोर्खा सेना सयह नहीं कर सकी, एटिंग अधि-
कारभुक्त नेपालको तराइमें जो गोर्खा बाम करते हैं,
उन्हींमें उपयुक्त मनुष्य ले कर एटिंग गवर्मेण्टके
गोर्खामैन्य दल न गठित हुआ है। गोर्खा सैन्य अत्यन्त
प्रभुभक्त, मत्स्यवादी और माहमी है। एटिंग सरकार
गोर्खा सेनासे जितना उपकार पातो वह अशुभयोग्य है।
जह् बहादुरने गोर्खा सैन्यकी सहायतासे मियाहा विद्रोह
के समय एटिंग राजत्वको रचा थी थो। नेपाल राजाके
अधीन भी प्राय सात्वसे अधिक गोर्खा सैन्य है।

गोर्खा—जातिविशेष। यह गुप्तप्रदेगके खेरी जिलेमें रहते

है। म ग्या ६६३ से अधिक नहीं। कहते हैं, पहले वह
काङ्गण क्षत्रिय थे, गोरखपुरमें खेरोमें जा करके रहने पर
गोरखिया कहलाये। फिर गोरखिया गण्ट विगड कारके
गोर्खावन गया। यह अपनेकी चित्तोरसे आया
हुआ बतलाते हैं। पहले कृष्ण भाई थे। जब किसी
शत्रुने उन पर आक्रमण किया, सिर्फ दो भाई जा करके
लडे—चार मयभोत हो छिप करके बैठ रहे। विजयी
होने पर दोनों वीर भाइयोंने अपने चार भोग भ्राताओं
को निकाल बाहर किया और उनसे अपना सज सम्बन्ध
तोड़ लिया। इनकी व शावली भी थी परन्तु जह्
गोर्खाकी सरसतामें आगसे जल कारके भस्मीभूत हुई।

इनमें गोवकी वस्तु काम बतला सकते हैं विधवायें
प्राय अपने पतिके किसी सम्बन्धकी ले करके रहती
हैं। यह आस्तिक हिन्दू है। किसी अपने लोगोंके दूरमरोंके
हाथकी कसो या पकौ रसोई नहीं खाते। कहते हैं,
कभी वह जमीन्दार थे। आजकाल गोर्खा किमान्नी और
मजदूरी करते हैं।

गोर्दा (स्त्री०) गुर ददन् निपातने साधु। १२४५। ४५
४२५। १ मस्तिस्क, मगज, मस्तिकस्थ घृत, मगजका
घी।

गोल वर (हि० पु०) १ गु बद, गु बज। २ गोलाई।
३ उद्यानमें बना हुआ गोल चबूतरा। ४ कानिब।

गोल (म० पु०) गुड अच् लभ्य न। १ वस्तुनाकार
पदार्थ, जमका घेरा हत्ताकार हो, चमके आकारका
हो। २ मदनवृक्ष, सैन फलका पेड़। ३ विधवाका जारज
पुत्र। ४ सुर नामकी औषध। ५ मास्कराचार्यका बना
हुआ गोलाधाय नामक ग्रन्थ। ६ हत्त, चैतविशेष।
(स्त्री०) ७ मण्डल, गोलाकार पिंड, बटक। ८ यज्ञयोग
विशेष। प्रयुक्तोदोके मतमें एक रागिमें कृष्ण वृक्षके
रहनेमें गोनयोग हुआ करता है। ऐसे योगमें देवराज
इन्द्र भी नाय हो सकते। मनुष्याण राक्षस प्रकृतिके हो
जाते, माता पुत्रके प्रति दया भावा परित्याग करतो,
ममस्त राजाओंका विनाश होता, यक्षधामण्डल भोष्य
धननमें स्वयित हो जाता और नद नदी तड़ाग जनायय
मवके मव शुक्र पड जाते हैं। मयूरविश्रक्तके मतमें मात
प्रक्षीके एक रागिमें भा जनिसे गोनयोग होता है। ऐसे

को नलिकामें इस तरह रखें जिससे दण्डका अग्रभाग ध्रुवाभिमुखी हो। इसके बाद दण्डके आगे सरलपथमें पूर्वाभिमुखी एक जलप्रवाह ऐसा बनावें कि उसमें गोल के नौचिका भाग उसके पश्चात् भागमें अहत हो। आघात सबको देखनेमें न आवे, इसीलिये वस्त्रसे ढाँक देनेके लिये ऊपर कड़ा गया है। कोई-कोई कहते हैं कि आकाशकी नाई प्रस्तुत करना ही वखाच्छादनका उद्देश्य है। वह वस्त्र जलसे भीगने न पावे, इसीलिये उसको चिकने वस्तु द्वारा अर्थात् जिसके लेप देनेसे वस्त्र न तो जले और न भीगे ऐसे द्रव्योंसे लेपना चाहिए। गोलके चारों ओर खाईकी नाई इस तरहकी दोवार बनी रहे जिससे क्षितिजवृत्तके सदृश उस खाईमें गोलका अधोभाग आच्छन्न रह कर दृष्टिगोचर न हो। आधार दण्डका दक्षिण भाग शिथिल करना चाहिए, नहीं तो गोल घूम नहीं सकेगा और पूर्व परिवा विभागके बाहर आदृश्य जल प्रवाह करना चाहिए।

स्वयं वह करनेका दूसरा उपाय। गोल छिट कर वहिर्गत आधारदण्डके दोनों प्रान्तमें इच्छानुसार दो या तीन जगह परिधिकी तरह नेमि (चारखी) बना कर ताड़के पत्तोंसे अच्छी तरह आच्छादन करें और उसमें एक छिद्र भी रहे। इस छिद्र द्वारा परिधिका आधा भाग परिमित पारा और दूसरे अर्धपरिमित जल देकर पूर्ण कर दें। छिद्रको बन्द कर देना चाहिए। दण्डका अग्रभाग दोनों ओरकी नलीमें इस तरहसे रखे जिससे गोल शून्य भावसे रह सके। पारा और जलमें आकर्षणशक्ति है। दोनोंके आकर्षणसे दण्ड आपसे आप घूम जायगा और उसके आश्रित गोल भी भ्रमण करने लगा।

सिद्धान्त-शिरोमणिके मतसे गोल तीन प्रकारका है, खगोल, भूगोल और दृक्गोल। इसका विशेष विवरण उन्हीं शब्दोंमें किया गया है। किस तरहसे गोल बाँधा जाता है उसीका व्योरा इस स्थानमें दिखलाया गया है। चिकनी, गोल तथा भागचिन्हयुक्त सीधो बाँसकी शलाकासे गोल प्रस्तुत करें। एक सुन्दरका शालवन काष्ठका डंटा तैयार कर डंटेके मध्यस्थानमें शिथिलभावसे भूगोल बाँध दें। उसके बाहरमें यथाक्रम चन्द्र, बुध, गुरु, सूर्य, मङ्गल, वृहस्पति और शनिके ग्रहगोल और उपयुक्त स्थान

पर भूगोल स्थापन करना पड़ता है। इसके बाहरको नलीमें खगोल और दृक्गोल रखना चाहिए। इस गोलके यथा स्थान पर गणित-शास्त्रानुसार पूर्व-पश्चिमवृत्त दक्षिणोत्तरवृत्त और कोणवृत्तद्वय प्रभृति वृत्त या कक्षा खींचें।

पहले जिन चार वृत्तोंकी कथा लिखी गई है, उन्हींके नौचे क्षितिजवृत्त रखना चाहिए। पहले कहे हुए दक्षिणोत्तरवृत्तके मध्य उत्तर क्षितिजवृत्तके ऊपर एक ध्रुव चिह्न और दक्षिण क्षितिजवृत्तके ऊपर एक दूसरा ध्रुव-चिह्न अङ्कित कर दें। समवृत्त और क्षितिजवृत्तके दोनों स्थानमें सम्पात है। उनके पहलेंको पूर्व सम्पात और दूसरेकी पश्चिम सम्पात कहा जा सकता है। सम्पातसे ध्रुव-चिह्न तक एक मण्डल करें। इसका नाम उन्मण्डल है। इसी मण्डल हाग दिन और रात्रिका जय और वृत्ति जानी जाती है। पूर्व और पश्चिम सम्पातमें संलग्न दक्षिणोत्तरवृत्तके स्वस्तिक स्थानसे दक्षिण तथा अधः स्वस्तिक स्थानसे उत्तरमें अक्षांशकी दूरी पर एक वृत्त खींचें। इसका नाम विपुवद्वृत्त है।

ऊर्ध्व और अधस्तन स्वस्तिक स्थानमें दो कील मजबूतीसे रख उन पर दृक्गोलय बाधना पड़ता है। दृक्गोलयकी पूर्वाक्त वृत्तोंसे छोटा करना होता है। जिससे खगोलमें उसको अच्छे तरह घुमाया जा सके। यदि ग्रहगोल सिप एक रहे, तो एक दृक्गण्डल बनानेसे ही काम चल सकता है। ग्रहलोक जिस स्थान पर रहेगा, इस मण्डलको घुमा कर उसके ऊपर ले जाना पड़ता है; ऐसा हीनेसे दृक्गोल और शङ्कु (कोल) प्रभृति देखने आते हैं अथवा अलग अलग आठ दृक्गण्डल बनावें। इसीका दूसरा नाम दृक्क्षेप मण्डल है।

खगोलके ध्रुवचिह्न स्थानमें दो नली बाध उसमें खगोलके बाहर तीन अङ्गुलीकी दूरी पर दृक्गोल बनावें। खगोलवृत्त, भगणवृत्त, क्रान्ति और विमण्डल प्रभृति इस गोलमें निबद्ध रहेंगे। खगोलमें अवस्थित क्षितिज और दक्षिणोत्तरवृत्तकी नाई दो आधारवृत्त मजबूतीसे ध्रुवदण्डमें बाँधकर उसके ऊपर समान मण्डलाकारका एक दूसरा वृत्त बनावें। इस वृत्तकी बराबर बराबर साठ भागोंमें विभक्त कर चिह्नित करना पड़ता है। इसका नाम नाडीवृत्त है।

नाडो घुत्तके बराबर एक दूसरा घुत्त बीच कर उसमें मेपादि द्वादश राशि अद्वित करे अर्थात् बराबर बराबर बरह भागोंमें विभक्त करके चिह्नित करे । इसके नाम क्रान्तिघुत्त है । सूर्य इसी घुत्तमें भ्रमण करते है । रविसे आधी छायाके अन्तर पर पृथ्वीकी छाया है । इस घुत्तमें क्रान्तिपात मेपादिका विलोम क्रमसे घूमता है । यहोका विक्षेप पात भी इसीमें भ्रमण करता है । इस घुत्तमें क्रान्तिपातादि स्थान अद्वित करना चाहिए ।

इस घुत्तमें एक क्रान्तिपात चिह्न कर उसमें ६ नक्षत्रकी दूरी पर एक दूसरा चिह्न करे । यह चिह्न दो नाडो वृत्तके साथ योग कर पातचिह्नके आगे तीन नक्षत्रके अन्तर पर नाडोघुत्तसे २४ अंश घुत्तरमें तथा दूसरे विभागमें तीन नक्षत्रके अन्तर पर २४ अंश दूर रहे । इसी तरह वाधना चाहिए । क्रान्तिघुत्तक जैसा एक दूसरा घुत्त खींच कर उसमें राशि अह्न और मेपादिका क्षेपातस्थान चिह्नित करे, इसका नाम विमण्डल है । क्रान्तिघुत्त और विमण्डलके दोनों क्षेपातमें सम्पात कर उससे ६ नक्षत्रकी दूरी पर एक सम्पात करें । क्षेपातके आगेसे तीन नक्षत्रके अन्तर पर क्रान्तिघुत्तके उत्तरस्फुट क्षेपभाग जितना होगा, उतनी ही दूरी पर तथा उसके पयादृ भागमें तीन नक्षत्रके अन्तर पर क्रान्तिका उतना ही भाग दक्षिणमें स्थिर कर विमण्डलको स्थापन करना चाहिये । इसी तरह चन्द्रादि ग्रहोंके हह विमण्डल करने होते हैं । चन्द्रप्रभृति पहणण विमण्डलमें भ्रमण करते हैं ।

क्रान्तिघुत्तके स्फुटग्रहस्थानके नाडोघुत्तस वक्र रूपमें जितना अन्तर होता है, उसीको क्रान्ति कहते हैं । विमण्डलके ग्रहस्थानके क्रान्तिघुत्तसे तिर्यक् रूपमें जितना अन्तर होगा, उसे विक्षेप और विमण्डलके ग्रहस्थानमें नाडोघुत्तके तिर्यक् अन्तरको स्फुटक्रान्ति कहते हैं ।

विषय दृष्टत और क्रान्तिघुत्तके सम्पातकी क्रान्तिपात कहते हैं । यह क्रान्तिपात एक स्थानमें स्थिर नहीं रहता, धीरे धीरे पीछेकी ओर हट जाता है, अर्थात् मेपादिके पृष्ठभागमें विषय दृष्टत और क्रान्तिघुत्त आपसमें मिल जाता है उसीका नाम क्रान्तिपात है ।

इस क्रान्तिकी स्थिर कर ग्रहका स्फुट करन होता है । क्रान्तिघुत्त और विमण्डलके सम्पातकी क्षेपात कहते हैं । ग्रहसाधन करनेमें इसकी भी आवश्यकता होती है ।

भूगोलके मध्य ग्रहगोल वाधना पडता है । पूर्व नियमके अनुसार ग्रहगोलमें भी विषयदृष्टत और क्रान्ति घुत्त बांधे । क्रान्तिघुत्तको कक्षामण्डल मान कर उद्यकोक्त विधिसे अनुसार प्रतिमण्डल वाधना होता है । प्रतिमण्डलमें गणितके अनुसार मेपादिका पातस्थान करे । एक दूसरा राशि अह्न और क्रान्तिपातचिह्न अद्वित करना चाहिए । इसको विमण्डल कहा जा सकता है । प्रतिमण्डल और विमण्डलके पातचिह्नमें एक सम्पात कर उसके आधेके अन्तर पर एक दूसरा सम्पात करे । पातके अगले और पिछले भागसे तीन नक्षत्र अन्तर पर प्रतिमण्डलके दक्षिण और उत्तरमें जितना अंश विक्षेप होगा, उतने अंशको दूरी पर विमण्डल स्थापन करे । इस मण्डलमें मन्दस्फुट गतिके ग्रह भ्रमण करते हैं । मेपादिके अनुलोमसे मन्दस्फुट चिह्न करना पडता है । प्रतिमण्डलसे जितने दूर पर मन्दस्फुट हो, उस स्थान पर उतना ही विक्षेप हुआ करता है । ग्रह घुत्तके सम्पातस्थानों पर विक्षेपका प्रभाव होता तथा तीन नक्षत्र दरमें रहनेसे सर्वाधिक विक्षेप होता है । मध्यस्थित कानमें अनुपात अनुसार विक्षेप स्थिर करना चाहिए ।

नाडो घुत्तके उत्तर और दक्षिणमें दृष्ट क्रान्ति जितनी होगी, उतनी ही दूरमें अक्षोरात्रघुत्त बन्धन करना है । इसकी माठ बराबर बराबर भागोंमें विभक्त करे । इस मण्डलमें सूर्यकी दैनिक गति हुआ करती है ।

भूगोलके जैसा ग्रहगोल भी ध्रुवदण्डसे वाधना पडता है, भूगोलके अण्डमण्डलके नोचे सूत बांधकर ग्रहकक्षाकी उसमें नियह करें; इस प्रकार भूगोलको दण्डमें सजवृत्तीसे बांध कर दण्डकी दोनों ओर व धो हरे दोनों नक्षत्रोंमें एगोल और दृग्गोल रख भूगोलका भ्रमण अण्डनोक्त करे । विशेष विवरण वरुण और भूगोलके मन्त्र निम्न दत्त है ।

गोल—दालिण्णात्ममें विज्ञापुर जिनके रहनेवाले ग्वानाकी जाति । कहीं कहीं इन्ने गोत्र या गोत्रेण कहा करते हैं । इनमें आश्वि, इनम्, ह्यग, पाकनाक और माघ प्रभृति

कई एक शाखायें हैं। एक शाखा दूसरी शाखासे पान भोजन और आदान प्रदान नहीं करती। कृष्णगोल किसी स्थानमें यादव नामसे परिचित है। ये कनाड़ी भाषामें बोलते हैं, इसमें अनुमान किया जाता है कि ये लोग निजाम राज्यसे इन प्रदेशमें आये हुए हैं।

कृष्णगोलमें कोई भी जनज धारण नहीं करता है, इन्हीं लोगोंमेंसे एक स्वजाती गुरु होता जो 'उनुमोर' कहलाता है। वह गुरु विवाहके समय उपस्थित रहता है। इनका सृत शरीर जलाया जाता है।

मुद्दे विद्याल उपविभागेक तालिकोट, नुलुतिवाट और कौर नामक स्थानमें भिड्डीगोल नामका एक दूसरी श्रेणीका वाम है। ये देखनेमें 'इनम्'से मिलते जुलते हैं। ये साधारण गृहस्थ हैं। हनुमानके मन्दिरमें यात्रकता करनी ही इनका प्रधान कार्य है। इनके गुरुका नाम 'सोमिर' और सोमनाथ ही इन लोगोंका कुलदेवता है। ये सृत शरीरको जमोनेमें गाड़ते हैं। इसके सिवा निजाम राज्यमें केडुगी नामकी एक और शाखा है। सफेद भेडा या बकराका व्यवसाय ही इनकी उपजीविका है। ये लोग भी हनुमान और कृष्णकी पूजा करते तथा चतुर्देह जमीनेमें गाड़ रखते हैं। प्रवाद है कि जिस समय वाटासी उपविभागमें मनुष्योंका वाम नहीं था, उसी समय अदेवानी या अटोनी प्रदेशसे ये इस प्रदेशमें आ कर बसे हैं।

आडुवि या तेलगू गोल रास्ते रास्ते श्रेयध बेचा करते हैं। इनमें याधव, मोरि, पवार, शिन्दे, यादव और मन्नाराट्टोयोकी पदवी देखी जाती हैं। एक ही पदवीके वर और कन्यामें विवाह नहीं चलता। ये तेलगू और मराठी भाषा बोलते हैं, कुछ कुछ हिन्दुस्तानी भाषा भी जानते हैं।

ये रविवार और मङ्गलवारकी गृहदेवताकी पूजाके लिए स्नान किया करते हैं। जिसे गृहदेवता नहीं होता, वह मारुती मन्दिरमें जा पूजा करता है। विवाहके बाद ये तुलजा भवानीके सामने बकरा बलिदान देते हैं। ये मद्य, ताड़ी, गाँजा, भाँग, तम्बाकू और अफीम खाना बहुत पसन्द करते हैं।

इस जातिके मनुष्य निर्दय, अभिमानी, चतुर और

अपरिष्कार होते हैं। जब ये निगा नहीं लाते तब ये कर्मठ और मितव्ययी होते हैं। धार्मिक मामले शकमें जब वर्षा नहीं रहती, तब ये प्रायः दो तीन महीनों तक वन वनमें श्रेयधिया खोज कर संग्रह करने हैं।

स्त्रियां चटाई बुनतीं और खेतीके समय पुरुषोंका मदद करती हैं।

ये बड़े धार्मिक होते। श्रावण मासमें प्रति मङ्गल वार और गनिवारको स्नान कर माणिकोंकी पूजा किया करते हैं। व्यदोव, तुलजाभवानी, मरगाड, पारमगडके लक्ष्मा और मिराजके सौर साक्षर इनके पूज्य हैं ममात्र में किसी तरहकी बटना उपस्थित होने पर वृक्ष मनुष्यमें इसका निबटारा करा लिये हैं।

गोलक (सं० पु०) गुरु-गुल-इस्य लः १ मणिक, अलिखर । २ गुड । ३ गन्धरम । ४ कनाथ, मटर । गोल स्वार्थे कन् । ५ गौलाकृति पदार्थ । ६ गोलपिण्ड । ७ काल सक्कपवृक्ष । ८ रक्त सुगन्ध वील । ९ सुगन्ध रोचिपलण । (क्ली०) १० गौलीकधाम । ११ आंशका डेला । १२ आंशकी पुतली । १३ मष्टीका बड़ा कुण्ड । १४ पुष्पोका निकला हुआ सार, इव १५ गुम्बट । १६ रूपये रखनेकी थैली या मन्दुक । १७ रोजाना आगुटनी रखनेकी थैली या मन्दुक । १८ मनुष्यके विधवाके गर्भान्त्वन्न जारज पुत्र । (मन्० १।१५९) ये अपनेको गोवर्धन ब्राह्मण कह कर परिचय देते हैं। कम्बई प्रदेशके नामिक, पूना धारवार, बेलगांव, गौलापुर प्रभृति स्थानमें वाम करते हैं। गौलापुरमें इस जातिके सुण्ड, पुण्ड और रण्ड गोलक, बेलगाम और धारावारमें कुण्डगोलक और रण्डगोलक एवं नामिक जिलामें इनकी कई एक शाखायें हैं। केशमुण्डनकारिणी विधवा पुत्रका नाम मुण्डगोलक, पति मृत्युके एक वर्षके मध्य विधवामे जो पुत्र उत्पन्न होता उसे पुण्डगोलक, विवाहित होनेके पहले ब्राह्मण कन्यासे दूसरे ब्राह्मण द्वारा जो पुत्र उत्पन्न होता उसे कुण्डगोलक एवं विधवा ब्राह्मणोंके गर्भजात पुत्रका नाम रण्डगोलक है। इनके भारद्वाज, भार्गव, काश्यप, कोशिक, सांख्यायन, वशिष्ठ और वत्स प्रभृति गोत्र हैं। भिन्न शाखा और एक गोत्रमें इन लोगोंका विवाह नहीं होता है। ये समस्त अपनेको प्रकृत ब्राह्मण कह कर परिचय देते हैं, किन्तु

दक्षिणात्यक उच्च श्रेणीके ब्राह्मण इन्हें शूद्र समझते हैं। इनका शाहार, व्यवहार और साजसज्जा देगम्य ब्राह्मण ब्राह्मणिके जैसा है। मध्य प्राय २ वी।

दूसरे ब्राह्मणिके जैसे ये भी उपनयनादि मन्कारके अधिकारी हैं, किन्तु किमो स्थानमें ब्राह्मण इन्हें वेदपाठ कराने नहा देते।

गोलकमल (हि० पु०) चाँदाके पत्तर परकी नकामी ठीक करनेको एक तरहकी छिनी।

गोलकली (हि० स्तो०) दक्षिण और मध्यभारतमें होने वाली एक तरहका शूद्र।

गोलकुण्डा—(गोलगोण्डा) मन्दाजमें विगाखपत्तन जिनके अन्तर्गत गवर्मेण्डा एक स्वाम तालुक। यह अक्षां

१७ २२ तथा १८ ४ ३० और देगा० ८२' एव ८२ ५' पू०के मध्य अवस्थित है। इस तालुकमें ५१७ ग्राम

लगते और १५७४३६ मनुवीके वास हैं। जैत्रफल प्राय १२६३ वर्गमील है। यह तालुक पूर्वतमे घिरा है और

लगभग ७३८० वर्ग मोल गवर्मेण्डका वनविभाग है। पहिले यह जयपुर राजाके करत गज्यको भूमिपत्ति थी।

१८३५ ई०में रानोके हत्याकाण्डके बाद गवर्मेण्डे इसे टखल किया था और जलोन्दार भो कारागार भेजे गये थे। दूसरे वर्ष गवर्मेण्डे नोनाम पर इसे खरीट किया।

१८४५ ई०में स्थानीय मर्दार विद्रोहो हो तोन वर्ष तक गोलकुण्डाको अपने अधिकारमें रखा था। फिर भी

१८५० ई०में उनके विरुद्ध सेना भेजी गई और जमींदारो गवर्मेण्डेके तालुक मुक्त हुई। नर्मपत्तनमें इसको

मदर अदालत और पुलिस है। इस तालुकके एक दूसरे प्रधान नगरका नाम गोलकुण्डा है। यह अक्षां १७ ४०

४०' ३०' और देगा० ८२ ३०' ५०' पू०में अवस्थित है।

गोलकुण्डा—निजाम राज्यके अन्तर्गत एक ध्व सावगिट नगर और दुग। यह अक्षां १७ २३ ३०' और देगा०

०८ २४ पू०में हैदराबाद नगरसे ७ मोल पश्चिममें अवस्थित है। यह दुग बरहमनके राजासे निर्माण किया

गया था। राजासे १३६४ ई०में इसे गुलबर्गके मुहम्मद शाह आगमनो पर लौं दिया। कुछ काल तक यह मुहम्मद नगर नामसे प्रसिद्ध था। १५१२ ई०में यह बाह

सभी राजासे हुतवगाहोके श्राय चला गया। कई वर्षों

तक उनकी राजधानी यहीं रही। बाहमर्गी व शके अध पतनके बाद गोलकुण्डा दक्षिणमें एक हदह सभ्यदि

शालो राज्यमें परिणत हुआ था। १६८६ ई०में औरङ्ग-जिबने इसे अधिकार कर अपने राज्यमें मिला लिया था।

ग्रोणाइट पर्वतके शिखर पर गोलकुण्डा दुर्ग स्थापित है। यह शत्रुसे दुर्भेद्य और पूर्ण मस्कृत है। इस दुर्गसे ६००

गजको दूरी पर प्राचीन राजाओंको बनाई हुई बहुतसी जू जू जो जो मस्जिद है। समय पाकर इनके बहुत अग ट ट फूट गये हैं। दुर्ग चारों ओर कगुरेदार पत्थरकी

दीवारोंसे घिरा है। इसमें आठ दरवाजे लगते हैं जिनमें आञ्जकल केवल चारही काममें लाये जाते हैं। इसके

चारों ओर पानोसे भरा हुआ मन्दक है। दुर्गसे आध मोल दक्षिणमें कुतब शाही राजाओंके समाधि मन्दिर है। इनके

बनानेमें बहुत रुपये खर्च हुए थे और उस समयकी चमक दमक अपुव थी। किन्तु औरङ्गजेबकी चढाईके समय

उनका अधिकांश तहस नहस हो गया। दुर्गके दक्षिणमें सुमो नामकी नदी प्रवाहित है। यहां आञ्जकल तोपखाना है और रक्षाके लिये अरबो सेना रखी गई है। यह दुर्ग

अभी निजाम राजके कोपागार और राजकारागार रूपमें व्यवहृत है।

गोलक्षण (म० क्लो०) गोल क्षण, ६ तत्। गौका शुभा शुभ सूचक चिन्ह विगेष। भा० ५५।

गोलगप्पा (हि० पु०) एक तरहका खानेका पदार्थ जिसे खटाईके रसमे डुबा कर खाते हैं।

गोलत्तिका (म० स्त्री०) गवि भूमो लत्तिकेव। वनवर स्त्रीजातीय पशुविगेष, एक तरहका जगनो मादिन पशु।

गोलदार (फा० पु०) टुकानदार, क्रय और विक्रय करने-याना।

गोलदारो (फा० पु०) गोलादारका कार्य।

गोलन्दाप (फा० पु०) तोपमें गोला रख कर चलानेयाना।

गोलन्दाजी (फा० पु०) गोला चलानेका काम या विद्या।

गोलप वा (हि० पु०) मूढा जूता।

गोलपत्ता (हि० पु०) स दरवर्गमें पाये, जानेयाना गुणा नामक ताड़।

गोलफन (स० पु०) मदनछण, म गाका पक्ष।

भागी और उक्त गोकर्णनाथकी सेवाके लिये बहुतसो निष्कार जमीन दान की।

इस पवित्र भूमिके मध्यस्थलमें मन्दिर बना है और पवित्र क्षेत्रको चारो सीमा पर चार फाटक हैं जो मन्दिरसे १२ कोसकी दूरी पर होंगे। पश्चिममें शाहजहानपुर जिलाका मतोद्वार, उत्तरमें भूर परगणास्थ शाहपुर द्वार, पूर्वमें खेरी जिलास्थ देवकालोद्वार, दक्षिणमें मुहम्मदी परगणाका बरखार-द्वार है। इस मन्दिरमें प्रवेश करनेके पहले यात्रियोंको उक्त चारो द्वार प्रदक्षिण करने होते हैं। इस स्थानसे दो कोसकी दूरी पर एक मन्दिरके पूर्वको और वदरकुण्ड, उत्तरमें पनाह, दक्षिणमें कीर्णगड़ और पश्चिममें माइनकुण्ड आदि तीर्थ स्थान हैं।

गोलागोकर्णनाथसे ८ मीलमें भेटवा ग्राम है। इस ग्रामके निकटवर्ती शरणाग्रमें किसी प्राचीन नगरका ध्वंसावशेष देखा जाता। इसके मध्य फकोरकी मटी और विजना नामक स्तूप प्रधान है। उस स्तूपके निकट विष्णु और महिषमर्दिनी, दुर्गा प्रभृति देवमूर्तिका भग्नावशेष पड़ा हुआ है। बहुत स्थानमें अभी भी २० फुट ऊंचे भग्न ढह प्राचीर देखे जाते हैं।

गोलाघाट—आसामके शिवसागर जिलेका एक उप-विभाग। यह अक्षा० २५° ४८' से २६° ५५' उ० और ८३° ३' से ८४° ११' पू०में अवस्थित है। भूपरिमाण ३०१५ वर्गमील है। इसका पूर्वीय भाग समतल है। नीची भूमिमें धान और उच्च भूमिमें चाय और ईख उपजाई जाती है। यहां धनसिरी नामकी नदी प्रवाहित है। जिनके आसपास सघन वन दृष्टिगोचर होता है। लोकसंख्या लगभग १६७०६८ है। इसमें गोलाघाट नामक एक शहर तथा ७८२ ग्राम लगते हैं। यहाँ विशेष कर चायकी खेती होती है।

२ उक्त उपविभागका शहर। यह अक्षा० २६° ३१' उ० और देशा० ८३° ५८' पू० में धनसिरी नदीके दाहिने किनारे अवस्थित है। यहांकी लोकसंख्या प्रायः २३५८ है। यहांसे रुई, सरसों और गुड़की रफतनी होते हैं और दूसरे देशोंसे अन्न, दाल, मट्टी तथा दूसरा तेल और नमकको आम्दनी होती है। शहरसे ८ मीलकी दूरी पर कामरवन्द प्रलो नामका रेलवे स्टेशन है। यहां एक

साधारण कारागार, चिकित्सालय और एक उच्च श्रेणीका विद्यालय है।

गोलाङ्ग (पु०) ऋषिदिगेष।

गोलांगूल (सं० पु०) गान्गाङ्ग नवत् लांगूलमस्य, बहुव्री० । १ वानरविगेष। कथ्यपपत्नी कीर्णकी कन्या हरिकर्क गर्भमें इसकी उत्पत्ति हुई थी। (भाग ११६६ ५०)

कार्गीखण्डके मतमें लालमुख नील शरीर यद्यपि वानरको गोलांगूल कहते हैं।

गोलांगूल परिवर्तन (सं० क्ली०) राजगृहके निकटवर्ती एक लुट्ट पहाड़।

गोलाधार (हिं० धि०) मूसलाधार।

गोलाधाय (सं० पु०) भास्कराचार्य प्रणीत एक ग्रन्थ। इसमें भूगोल और खगोल प्रभृति अति विग्रह रूपसे वर्णित हैं।

गोलाई (सं० पु०) पृथ्वीका आधा भाग जो एक ध्रुवसे दूसरे ध्रुव तक उसे बीचो बीच फाटनेमें बनता है।

गोलापूर्व—एक अत्यन्त नीच श्रेणीके ब्राह्मण। युक्तप्रदेशमें ये 'गोलापूर्व' नामसे प्रसिद्ध हैं। इनका उत्पत्तिके विषयमें बहुतोंका मतभेद है। कोई कहते हैं कि गालव ऋषिके औरस एक नीच जातिकी विधवाके गर्भसे ये उत्पन्न हुए हैं। फिर कोई कहते हैं कि चन्द्रसेन राजाके शकसेनी नामकी एक कन्या थी, उसीके गर्भसे गोलापूर्वने जन्म ग्रहण किया है।

राजा लक्ष्मणसिंहके मतानुसार ये मनाख्य ब्राह्मणके अन्तर्गत हैं। इनका आचार व्यवहार ठीक उन्हींके जैसा है। इनमें विधवा विवाहकी प्रथा नहीं है। ये नीम-गाछके तले अपने छोटे लड़केका सुगुण करते हैं। जिस तरह उच्च श्रेणीके मनुष्य पीपलवृक्षको पवित्र मानते हैं उसी तरह इन लोगोंके लिए नीमका वृक्ष है।

इन लोगोंमें बहुविवाहकी प्रथा प्रचलित है। वही मनुष्य दूसरी बार शादी कर सकता है जिसको पहली स्त्री वांछनी हो अथवा उसे किसी प्रकारकी बीमारी हुई हो। नौ या दस वर्ष तककी लड़की कुंवारी नहीं रह सकती है।

सन्तानके भूमिष्ठ होने पर ये बहुत उत्सव मनाते हैं तथा बाहरवें दिन खजातियोंकी भोज देते हैं। ये शव-

को जन्मते है। जब कोई नदी समोपमें नहीं रहती है तो ये किमा दूसरी जगह मुर्देको जन्मते और उसको थोडो हड्डो गङ्गाजीमें फेंकनेके लिए रख लेते है। ये दस दिन तक अगोच मानते और ग्यारहवें और बारहवें शास्त्रानुसार आद्य करते है। मलानके जन्म लेने पर भी ये दस दिन तक अपनेको अपवित्र समझते है।

ये यमदेवता चासुण्डादेवो तथा पथवारोदेवोको पूजा करते है। इसके सिवा ये कार्तिक मासमें गोवर्द्धन के दिन गाय और भैंसकी तथा आश्विनमें घोडेको पूजा करते है। अथ या नक्षत्रमें इनका पूरा विश्वास है जिसके लिए ये ग्रहविप्रको समय समय पर कुछ दान भी दिया करते है।

गोनापूर्व वैष्णव होते है। ये नहसुन, प्याज और गाजर इत्यादि नहीं खाते है। उच्च श्रेणिके ब्राह्मणोको नाई ये भन्नी, धोबी तथा चमार इत्यादि नौच जातियों से रपश नहीं करते है। ये राजा, गुरु, पिता, बडे भाई, प्येष्ठ पुत्र तथा गुरुवरका नाम लेना दीप समझते है। विना पण्डितोसे शुभ दिन बताए ये प्रथम बार खेत नहीं जोतते है। आषण मासको क्षत्र सप्तमोमें वृष्टि होनेको ये शुभ और ज्येष्ठ मासकी शुक्र मंगलोमें बिजलो दिखाने देनेको अशुभ समझते है। ये गाँताको व्यवहारमें नहीं जाते है, किन्तु भाग और अफीम प्राय खाया करते है।

गोनापूर्व खेतो करके अपने जोविका निर्वाह करते है। ये परिश्रयो, सहनशाली और श्रध्ववसायी होते है। गोनापूर्व जैन—बुद्धे लपण्ड प्रदेशमें रहनेवालो एक वैश्य जाति। ये दिग्भर जैनधर्मके पालक और दो कपडे आदिका व्यवहार करते है।

गोनारायपुर—युक्तप्रदेशमें ग्राहजहानपुर जिलेके पवायन तहसोदके अन्तर्गत एक अति प्राचीन ग्राम। ग्रामकी अवस्था देखनेसे ही मालूम पड़ता है कि एक समय यहां मरुद्विशालो गरम था। यहां खेरा या स्तूपके भोतरमें बड़ी बड़ी इंट, मोल और मजूके पत्तादि तथा बीहरा जाभौके समयको अति प्राचीन मुद्रा पाये गये है। किसी मतसे चोन परिव्राजक फाहियनका वर्णित है जो नामक स्थान यहाँ पर था एवं बुद्धके कपालकी एक खड अस्थि यहाँके दावोवमें रखी हुई थी। तवारीख

फिरोजशाही और आइन-ए अकबरी पढनेसे जाना जाता है कि तेरहवीं शताब्दीसे मोलहवीं शताब्दी तक उस गोनामें कान्त गोनाकी सदर अदालत थी।

गोनाम (सं पु०) गा भूमि नासयति प्रजागति गो नस णिच अण् उपपदसमास। गिनोन्धू, क्ता, गोवर क्ता।

गोनि—क्षत्रा जिलेके पालनाडा तानुकके अन्तर्गत एक प्राचीन ग्राम जो तुम्बिजोटसे ४ मोल उत्तरपूर्वमें अवस्थित है ग्रामके दक्षिण पश्चिम भागमें एक पुरातन दुर्ग और चारो तरफ कई एक भग्न प्राचीन मन्दिर है। इसी स्थान पर विश्वामिदने यज्ञ किया था, आज भी उसका हीमकुण्ड विद्यमान है। यहांके मलेश्वर और हनुमान स्वामीके मन्दिरमें गिनालिपि उल्लोख है। इस ग्राममें प्राचीन असभ्य वासियोके समाधिप्रस्तर देखे जाते है।

गोलिका (सं २००) घोण्टा एक जगलो वृक्ष। गोलियाना (हिं० क्रि०) किमो चीजको गोल बनाना। गोलिह (सं पु०) गोभिर्लिह्यते लिह घञघे क। १ छत्रिका, छाता। २ कालमुष्ककट्टन मोखा।

गोलिहलि—बेलगाम् जिलेके अन्तर्गत एक ग्राम। यह विदिनगरसे एक मोल दक्षिणमें अवस्थित है। यहां कटमेश्वर, रामलिङ्ग, और मिहलिङ्गके तीन विख्यात मन्दिर है। कलमेश्वर मन्दिरके निजट ३५ चालुक्यराज सोमेश्वर या भू लोकात्मके राजत्व समयमें (११६१-११९८ ई०में) कटम्ववशके किमो, अधीन राजाकी दो हुई एक प्रशस्ति है। ग्रामके बाहर घामव-मन्दिरके सामने एक खोदा हुआ गिनाफलक देखा जाता है। उस गिना फलकके मध्य भागमें शालुकसे टको हुई एक लिङ्गमूर्ति है। इसको बाइ और घामव आर सूर्य तथा दाहना ओर वल्ल युक्त गो और चन्द्रकी मूर्ति खोदी हुई है। उस फलकमें गोथाके कदम्बर राज परमाडीके राजत्वकालमें (११४०-७५) प्रथम शासनादिका उल्लेख है। उक्त गोपक (गोथा)के राजा भी जनपदत्रिगिट कीर्तण और २२ हजार ग्रामयुक्त पलसिग या हल्लौके कपर आधिपत्य करते थे। वे कियमम्य गाडी जिलेके जमेश्वर की सेवाके लिए बहुत धन और जमीन दान कर गए है।

गोली (हि० स्त्री०) १ वर्तुलाकार पिण्ड, बटिका, बटिया ।
२ दवाईकी बटिका, बटी । ३ लड़केके खेलनेका काँच
या मिट्टीका गोलपिण्ड । ४ गोलीका खेल । ५ पशुओंका
एक रोग । ६ पीले या बदासो रंगकी गाय । ७ मदककी
गोली । ८ छोटा घड़ा ।

गोली—मुजफ्फर नगर जिलेमें रहनेवाली एक जाति ।
इनकी संख्या बहुत थोड़ी है । ये लुनिया जातिके अन्त-
र्गत है ।

गोलीड़ (सं० पु०) गोभिल्लिह्यते लिह-क्त । घण्टा पाटलि,
एक तरहका शाक ।

गोलेर—पञ्जाबके काङ्गरा जिलेके अन्तर्गत डेरा तहसील-
का एक राज्य । भूपरिमाण २५ वर्ग मील है । प्रवाद है
कि काङ्गरके कतोच राजा हरिचन्द शिकार करते समय
किसी एक कुएँमें गिर पड़े । इनके साथियोंने, राजाका
पता न पा कर सोचा कि वे कहीं मार डाले गए । अन्तमें
उन्होंने लौट कर राजाके उत्तराधिकारीको राज्यसिंहासन
पर अभिषिक्त किया । कुएँसे निकाले जाने पर राजा
हरिचन्दने राज्यका दावा न किया, वरन उन्होंने अलग
ही गोलेर नामकी एक राजधानी स्थापित की और वे
वहाँ रहने लगे । समयके फेरसे कुछ काल तक यह राज्य
शाहजहाँ, अकबर तथा सिखोंके अधिकार भुक्त रहा ।
अन्तमें अङ्गरेजके अधिकारमें आ जानेसे वहाँके प्राचीन
राजा शमशेरसिंहको २० ग्रामोंकी एक जागीर मिली
थी । आज भी वह जागीर उनके भतीजे रघुनाथसिंह
भोग कर रहे हैं । जागीरकी आय लगभग २६०००)
रुपये हैं ।

गोलेंदा (देश०) महुँवेका फल, कोइंटा ।

गोलोक (सं० पु०) गोभिव्योतिभिः परिव्याप्तः लोकः
मध्यपटन्त्रो० । १ एक परमधाम, एक सुन्दर पवित्र विष्णु
या कृष्णका वास स्थान, ब्रह्माण्डके अन्तर्गत समस्त
लोकके ऊपर एक लोक । अनेक पुराण और तन्त्रमें
गोलोकका वर्णन देखा जाता है । ब्रह्मवैवर्तपुराणके मत-
से व कुण्डके ऊपर गोलोक अवस्थित है । इसका आयत
पचास करोड़ योजन है । गोलोक अगम्य और अनिर्व-
चनीय विष्णुके अभिप्रायसे वायुके ऊपर बसा हुआ है ।

इस स्थानसे एक मनोहर नदी है । उस नदीके तीर पर
भांति भांतिके मुक्ता, माणिक्य, परशमणि प्रभृति बहुमूल्य
रत्न पाये जाते हैं । इसके दूरमें पारमें एक विशाल पर्वत
है जिसके मनोहर एक शृङ्ग है । इस पर्वतकी ऊँचाई
एक करोड़ योजन, चौड़ाई दश करोड़ योजन और शैल-
प्रस्थका परिमाण लगभग पचास करोड़ योजन माना
गया है । यह पर्वत गोलोककी दो बारके रूपमें अवस्थित
है । इसके शिखर पर दश योजन विस्तृत एक रासमण्डल
है । इस रासमण्डलके मध्य एक हजार पुष्प उद्यान और
एक हजार कोटिरत्नमण्डप हैं । मनोहारिणी गोपाङ्गना
रात दिन रासमण्डल घिरी हुई रहती हैं ।

पर्वतके बाहर विरजा नदीके तीर पर एक सुन्दर
वन है । यह वन राधिका और कृष्णका क्रीड़ा स्थान
वृन्दावन नामसे विख्यात है । इसके बाद ही गोलोकार
गोलोकपुरी है । इसकी चौड़ाई तथा लम्बाई एक करोड़
योजन है, चारों ओर रत्नमय दीवारसे घिरा है । इसके
चार गोपुर या प्रधान द्वार हैं । प्रत्येक द्वार पर असंख्य
गोप द्वार रक्षा कर रहे हैं । इस पुरीके मध्य कृष्णभृत्य
गोपोंके पचास करोड़, कृष्णभक्त सौ करोड़ और कृष्ण-
पार्षदोंके मनोहर नाना प्रकारके रत्नसे जड़े हुए एक करोड़
आश्रम हैं । इसके अलावा कृष्णकी प्यारी गोपियाँ और
उनकी दासियोंके भी अनेक आश्रम हैं । जो मनुष्य शत
जन्म तपस्या कर पवित्र हो गये हैं, कृष्णभक्ति जिनके
हृदयमें दृढ़ और निश्चल रूपसे अवस्थित है, कर्मफलकी
आशा न करते हुए जो सिर्फ ईश्वरके संतोषके लिये
सांसारिक समस्त कर्तव्य कर्मका अनुष्ठान करते, जो
सोते, जागते और स्वप्न अवस्थामें भी कृष्णकी मूर्त्तिको
ध्यानमें रखते तथा जो दिन रात “राधाकृष्ण, राधाकृष्ण”
जप किया करते, उन्हीं भक्तोंके रहनेके लिये महार्घ रत्न-
निर्मित एक लाख घर प्रस्तुत हैं । भक्तोंके पाञ्चभौतिक
शरीर छोड़नेके बाद ही वे गोलोक जा उक्त गृहोंमें वास
कर सकते हैं । इसके बाद एक विशाल अक्षयवट है
जिसका मूल पचास योजन और ऊपरका भाग उसका
द्विगुण है । इस वटवृक्षमें एक हजार स्कन्ध और असंख्य
शाखायें हैं । इसके फल रत्नमय हैं । नोचेंमें रत्नमयी वेदो
भी है । इसमें रत्नमय फल लगते हैं । वृक्षके मूलके पास

उदिक ग्रन्थ पढ़नेमें गोल्डस्टुकरका बड़ा ही प्रेम और यत्न था। एक अभिनव वैदिक ग्रन्थ पालनेसे ही आहार निद्रा छोड़ कर एकचित्त हो उसे पाठ करते थे एक दिन इन्होंने हठात् इण्डिया-आफिस पुस्तकालयमें एक पुस्तक बाहर की, पुस्तककी तालिकामें उसका नाम तक भी लिखा नहीं था। इन्होंने कोतुहलसे उम ग्रंथको षट् कर देखा कि वह कुमारिलभट्टका मानवकल्प-सूत्र है। इसके पहले उम ग्रन्थके विषयमें कोई कुछ नहीं जानता था, अतएव इस नवीन आविष्कारसे उत्साहित हो इन्होंने उस संस्कृत ग्रन्थकी प्रतिकृति और उसकी भूमिकामें पाणिनि-व्याकरण, मोसांमादर्शन और वैदिक क्रियाकाण्ड सम्बन्धमें बहुत गविषणा पूर्ण एक प्रबन्ध निकाला था। एमके बाद इनके पाणिनिका कालनिरूपण और उसके समालोचना-विषयक ग्रन्थ प्रकाशित हुए। इन्होंने संस्कृत भाषामें कितनी दूर तक पाण्डित्य लाम किया था और ये कितने सैकड़ों संस्कृत ग्रन्थ पढ़ कर उनकी अपूर्व समालोचना करनेमें साहसो हुए थे, वह उक्त दोनों ग्रन्थोंके पढ़नेसे ही जाना जाता और विस्मय होना पड़ता है। इस समय ये लण्डनके विश्वविद्यालयमें संस्कृत अध्यापक हुए थे।

लण्डनकी संस्कृत ग्रन्थप्रचारिका सभाके ये सभ-पति थे। उक्त सभाके यत्नसे इन्होंने माधवाचार्यका जैमिनेय न्यायमाला-विस्तर नामका एक बड़ा ग्रन्थ प्रकाश किया था। एक उत्कृष्ट संस्कृत और अंगरेजी अभिधान प्रकाश करनेकी इनकी इच्छा हुई थी, किन्तु अकाल मृत्यु होने से उक्त अभिधानका “अ” अक्षरका कुछ अंश प्रकाश हो कर बन्द हो गया।

सर्वदा मानसिक परिश्रम और गहरी चिन्तासे उन्हें काशरोग उत्पन्न हुआ। इसी रोगसे ५८ वर्षकी अवस्थामें १८७१ ई०के ६ मार्चको लण्डन नगरमें इनका देहान्त हुआ।

उनके दया, उदारता तथा अनेक तरहके सहुण थे। भारतवासियोंके प्रति उन्हें यथेष्ट अनुराग था। जब इस देशका कोई युवक विलायत पढ़नेके लिये जाता तो गोल्डस्टुकर उसे पुत्रवत् स्नेह करते और सर्वदा सद्पदेश देते थे।

उनको मृत्युके बाद उनके बनाये हुए दूसरे दूसरे संस्कृत साहित्यविषयक प्रबन्ध प्रकाशित हुए हैं।

गोवक (सं० पु०) एक तरहका छोटा बगला।

गोवत्स (सं० पु०) गोवत्सः ६-तत्० । १ गोका वत्स, बछड़ा। २ प्रभामके अन्तर्गत एक पवित्र तीर्थ।

(प्रभातरवत्)

गोवत्सादिन् (सं० पु०) गोवत्स अर्त्ति गोवत्स-अट-णिनि उपस० । भेड़िया।

गोवध (सं० पु०) गवा वधः ६-तत्० । गोक्षिप्ता, गोचर्या-गायका मारना। गोव्या टिप्पणी।

गोवन—निकुम्भवंशीय। एक राजा, कृष्णराजके पुत्र।

गोवन्दना (सं० स्त्री०) महदेवा, एक तरहका वृक्ष।

गोवन्दनो (सं० स्त्री०) गवि भूमौ वन्द्यते वन्द कर्मणि ल्युट्-डाप्। १ प्रियगू, एक तरहका पौधा जिसका बीज सुगन्धित होता है। २ पीतदण्डोत्पल, एक किष्किका पौधा।

गोवपुत्र (सं० त्रि०) चमकीला। २ गोआकारका।

गोवर (सं० लो०) शुष्क गोमय चूर्ण। भावप्रकाशमें लिखा है कि गोशालामें गौके खुरसे चूर किये हुए गोमयके ‘गोवर’ कहते हैं। पारदर्शोधनमें यह सर्वोत्कृष्ट है।

गोवरडङ्गा—वङ्गके २४ परगणाके वारामात उपविभागके एक नगर; अक्षा० २२° ५३ उ० और देशा० ८८° ४' मध्य यमुना नदीके पूर्व कूल पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ५८६५ है। चौनी, गुड़ और पाटके व्यवसायके लिये यह स्थान प्रसिद्ध है। ऐसा प्रवाद है कि श्री कृष्णचन्द्रजी इसी स्थान पर गो चरते थे। इसके पासके गायपुर ग्राम गोपीपुरका अपभ्रंश है जो श्रीकृष्ण सहेली गोपियोंके नाम पर रखा गया है। यहां अङ्गरेजी विद्यालय, औषधालय, पुस्तकालय और म्युनिसिपैलिटी है।

गोवरपुट (सं० लो०) औषध पुटविशेष।

गोवराट (सं० लो०) कपाटके निम्नस्थ काठ। किवाड़के नीचेकी लकड़ी जिसके ऊपर किवाड़के पाश्वस्थित अवलम्बन काठ संयोजित रहता है। गृह लेपनके समय उम काठमें अक्सर गोवर लग जाता है इसलिये उसका नाम ‘गोवराट’ पड़ा।

गोवर्णी (सं० स्त्री०) अश्वगन्धा।

गोवर्धन (५० ली०) गर्वा वडेन , ६ तत् ० । १ गोजी
 वृद्धि, गायको ब्रह्मती । हृष करणी व्युट ६ तत् ० । गिरि
 यज्ञविशेष । गोवर्धनको गा वर्धयति गो वर्ध गिच ल्यु ।
 ३ ह्यन्टा-रन्म्य एक पर्वत । श्लोष्णचन्द्रजीने मयानक
 शिलाहटिसे ह्यन्टावनवासो गोपीको बचानेके लिये उक्त
 पर्वतको अपने हाथके कनिष्ठ अङ्गुल पर उठाया था ।
 यह पर्वत अनादि एवं श्लोष्णका अतिप्रिय प्रिय है ।
 हरिभक्तिविनागरमें लिखा है कि कार्तिक मासको
 शुक्ल प्रतिपद तिथिमें पूर्वाङ्गको इसको पूजा करना
 वैष्णवोंका मुख्य कर्त्तव्य है । (१११०)

इस प्रतिपदके साथ अमावस्याका नमान आटार है ।
 जिस दिन प्रतिपदके साथ अमावस्याका योग रहता है
 उसी दिन गवोत्सव करना उचित है । परविद्ध तिथिमें
 करने पर भी स्त्री, पुत्र और धनकी हानि होती है ।

निर्णयानुसृत्यत "वा कृष्ण प्रतिपदिशा तव गा गोवर्धन ०"
 इत्यादि पौराणिक वचनमें भी अमावस्यायुक्त प्रतिपदमें
 ही गोवर्धनपूजाका विधान देखा जाता है । पद्मपुराणका
 मत है कि उस दिवसमें ह्यन्टावनवामी वैष्णवगणको
 गोवर्धनपूजा करना उचित है । दूसरे स्थानके वैष्णवोंको
 गोमय द्वारा गोवर्धन पर्वतका निर्माण कर उसको पूजा
 करना चाहिये । भक्ति पृथक् गोवर्धनकी पूजा और
 प्रदनिष्ण करनेमें गोलोकासे हरिके निकट रह बहूत तरह
 के सत्व भ्राम होती है । पूजाका मन्त्र—

ॐ ह्रीं ॥ धर धर ॥ शुक तानकारक ।

विश्वरूपको ज्यो वगो गोवर्धनी भवत (हरिभक्तिविनाय)

गोवर्धन—मथ्य रा जिलेके अन्तर्गत एक प्राचीन नगर
 और पवित्र तीर्थस्थान । यह मथ्यरा जिलेके पश्चिम
 प्रान्तमें पहाडके ऊपर अक्षा० २७ ३०' उ० चर देशा०
 ७७ ०८' पू०में अवस्थित है । लोकोस ख्या प्राय ६७३८
 है । यहा यथेष्ट प्राचीन हिन्दुकीर्ति देखी जाती है ।
 जिनमेंसे हरिद्वेषका मन्दिर प्रसिद्ध है । अकबरके राज्य
 कालमें अमराधिप राजा भगवानुदामने उक्त मन्दिरका
 निर्माण किया था । भरतपुराधिप रणधीरसिंह और
 वलदेवसिंह के ममाधिमन्दिर भी देखने लायक है ।
 यहाँके माता नामक मरोवरमें स्थान धरनेके लिये रू
 दर देशके जाती आते है ।

यह शहर मानमोगड़ा नामक एक सुन्दर तालाबके
 चारों ओर पडता है । टिवालोक उदलनमें यहा भारी
 उल्लव मनाया जाता है । प्रवाद है कि यहा श्लोष्ण
 चन्द्र जी वाम करत थे और उहाँके नाम पर 'शहरक'
 नाम गोवर्धन पडा है । यहा राजा यशवन्तसिंहका ए,
 समाधिभवन है । शहरक उत्तर कुसुम मरोवर नामक
 एक सुन्दर छत्रिम भोलके किनारे सूरजमलके बहूतमें
 ममाधिभवन है जो उनके लडके जवाहिरसिंह द्वारा निर्माण
 किये गये है । शहरकी आय लगभग ६२०० रु है ।
 यहा किसी प्रकारका व्यापार नहीं होता है । यहा केवल
 एक प्राइमरी स्कूल है ।

गोवर्धन—१ ताजिक पद्यमकोप नामक ज्योतिषन्यकार ।
 २ नामावली नामका संस्कृत अभिधान रचयिता । ३
 थोपतिपद्धति नामक ज्योति शास्त्रकार । ४ एक प्राचीन
 प्रलेङ्कार शास्त्रके रचयिता ।

५ तत्त्वचिन्तामणिदोधितिके टीकाकार । ६ एक तैलङ्ग
 पण्डित, धनश्यामभट्टके पुत्र । इन्हीने वेदान्तचित्तामणि
 कविकणोष्ण्य और १८६६ ई०को घटकपर्स्टीका रचना
 की है । ७ वैशेषिकसूत्रका सम्प्रन्धोपदेश नामक ग्रन्थके
 टीकाकार । ८ एक जैन शास्त्रकार । (इ० ४२१०)

८ मेटिनोकर उद्भूत एक प्राचीन कोयकार ।

१० एक हिन्दी कवि । इनकी बनाए हुए बहूतमें
 कविताये पाई जाती है ।

गोवर्धनशाचार्य—एक विख्यात प्राचीन कवि, गोलोकावर्धके
 पुत्र, बलभट्टके भ्राता और उदयनके गुरु । इन्हींके आया
 समशती नामक एक सुन्दर संस्कृत काव्य रचा है ।

गोवर्धन उपाध्याय १ उद्याहचन्द्रिका नामक संस्कृत ग्रन्थ
 कार । २ गोवर्धनकविमण्डन नामक संस्कृत ग्रन्थ
 कार ।

गोवर्धनगिरि—१ ह्यन्टावनरु निकट एक प्रसिद्ध पर्वत ।
 गिमा प्रघाट है कि श्लोष्णचन्द्रजीने इस पर्वतको
 उ गनी पर धारण किया था । (इ० ४२१०)

० महिसुर राज्यके नगर तालकके अन्तगत
 मिमोगा जिलेका एक पहाड । यह अक्षा० १४' १०' उ०
 और देशा० ७३ ४० पू० पर स्थित है । इसका दूरदर्
 नाम कमलाचल है । इसके ऊपर महिसुर राजाधिपि

निर्मित सुरस्य विष्णुमन्दिर, गार्शापा प्रपात और एक सुदृढ दुर्ग है ।

गोवर्द्धनदास—छन्दोमञ्जरीके एक टोकाकार । गोवर्द्धनदीचित त्रिपाठी—एक विख्यात वेदञ्च पण्डित । ये वेणीदासके पुत्र थे । इनके बनाये अग्निष्टोमप्रयोग, ज्योतिष्टोमोद्गातप्रयोग, वाजपेयसर्व प्रण्टाष्टोर्वामौद्गातप्रयोग और सप्तसोमसंस्था-पद्धति प्रभृति ग्रन्थ पाये जाते हैं ।

गोवर्द्धनधर (सं० पु०) गोवर्द्धन वृन्दावनस्य पर्वतं धरति धृञ्च । श्रीकृष्ण । श्रीकृष्णके गोवर्द्धन धारणकी कथा हरिवंशमें इस तरह वर्णित है—वृन्दावनके गोपगण प्रतिवर्ष वर्षाकालमें इन्द्रकी अर्चना किया करते थे उनका विश्वास था कि इन्द्रकी पूजा करनेसे उन लोगोंके गीमें किसी प्रकारका विघ्न नहीं होगा । श्रीकृष्णचन्द्रजीके वृन्दावन आने पर वे (गोपगण) एक वर्ष बड़े छत्साहके साथ इन्द्रोत्सवका आयोजन कर रहे थे । उसी समय श्रीकृष्णने उन्हें इन्द्रपूजा करनेसे मना किया और तत्क्षण गोवर्द्धनपूजा करनेकी आज्ञा दी । उस वर्षमें इन्द्रोत्सव नहीं मनाया गया, वरन् कृष्णकी आज्ञाको शिरोधार्य कर उन्होंने गोवर्द्धनकी ही पूजा की । उनके इस व्यवहारसे सुरपति इन्द्रने क्रोधित हो मेघगणको वृन्दावन ध्वंसके लिये बुलाया । मेघ इन्द्रके आदेशानुसार वृन्दावन पर शिलावृष्टि और वज्रपात करने लगे । गोपगण इस उत्पातको एक क्षण भी सन्न न कर रीते रीते कृष्णके निकट उपस्थित हुवे । उसी समय श्रीकृष्णचन्द्रजीने गोपकुल और गोकुलकी रक्षा करनेके लिये गोवर्द्धन पहाड़को जंगली पर उठा कर उन लोगोंके ऊपर धारण किया । ऐसा करनेसे सभीको आश्रय मिला । इसी तरह श्रीकृष्णने सात दिन पर्यन्त पर्वतको अङ्गुल पर रखा था । जब इन्द्रानुचर मेघने देखा कि सात दिन सात राति तक अधिव्यान्त शिलावृष्टि और वज्रपात होने पर भी वृन्दावन वासियोंका कोई अनिष्ट न हुआ तब वे उसी समय अपने कार्यको छोड़ इन्द्रके पास लौट आये । (हरिवंश ७६ प०) महाभारतके सभापर्वमें भी कृष्णके गोवर्द्धन धारणका अल्प प्रसङ्ग है ।

गोवर्द्धनधारिन् (सं० पु०) गोवर्द्धन धारयाति धारि णिनि । श्रीकृष्ण ।

गोवर्द्धननाथ—एक हिन्दी कवि । इनका बनाया हुआ सुन्दरीतिलक नामावली ग्रंथ हिन्दुस्तानी समाजमें आदरणीय है ।

गोवर्द्धनपणक भट्ट—वेदान्तप्रचारसंग्रह नामक एक उत्कृष्ट वेदान्ति ग्रन्थ प्रणेता ।

गोवर्द्धन पाठक—एक विख्यात पौराणिक । इन्होंने १४०४ ई०की सत्यखानके आदेशसे पुराणसर्व स्व नामक संस्कृत ग्रन्थ प्रणयन किया है ।

गोवर्द्धन मिश्र—एक विख्यात नैयायिक । वे वलभद्रके पुत्र, विश्वनाथ और इन्द्रनाभके कनिष्ठ भ्राता थे । इन्होंने तर्कभाषाप्रकाश और तर्कसंग्रहके न्यायबोधिनी नामकी टीका रचना की है ।

गोवर्द्धन योगीन्द्र—योगचन्द्रिकाके रचयिता ।

गोवर्द्धनरङ्ग—ब्रह्मसोहविदावण नामक संस्कृत ग्रन्थकार । २ वृन्दावनवासो एक नैयायिक, इन्होंने तर्कसंग्रहके न्यायार्थलघुबोधिनी नामकी टीका रचना की है ।

गोवर्द्धनवैद्य—चिकित्साशेष और रोगप्रदीप नामक संस्कृत वैद्यक ग्रन्थकार ।

गोवर्द्धन शोचिय—द्वीपदी-वृक्षरक्षण नामक संस्कृत काव्यके प्रणेता ।

गोवर्द्धनानन्द—एक प्राचीन संस्कृत कोषकार ।

गोवशा (सं० स्त्री०) वशा-वन्त्या गौः कर्मधारये वशा-शब्दस्य परनिपातः । वन्त्यागौ, तंभ-माय ।

गोवाट (सं० स्त्री०) गवां वाटु-इ-तत्० । गोशाला, गोष्ट, गौतहनेकी जगह ।

गोवृत्तरि (सं० स्त्री०) गोवृत्त-सुशयका-सूतः ।

गोवृत्त (सं० पु०) गोवृत्तः, इ-तत्० । गोका-सोस-शाशुका-सेवा ।

गोवृत्त (सं० पु०) गवां-वाम-इ-तत्० । गोका-वाम-स्थान-गोशाला, गोष्ट ।

गोवासादासन (सं० पु०) गोवासा-दशविशेष-पूर्वाय-देशः ।

गोवासन (सं० पु०) गवां-वाम-यति-वस-णिच्-त्वा-इ-तत्० । गवाहाणविशेष-गोपालक-मुनिविशेष ।

गोवि—मध्यएशियास्य जलहीन एक विस्तृत-मरुभूमि ।

मङ्गलान्य भाषामें 'गोवि' शब्दमें मरुका बोध होता है, उमोमें डम विस्फट भूभागका नाम पडा है। यह शब्दां ३० से ५० उ०, तथा देगा० ७५ से १२८ पु०में तिष्ठत, ग्राम और मङ्गलीय पर्यन्त विस्फट है। चीनदेशमें कभी कभी जालूकी दृष्टि हुआ करते हैं। लोंगीका विग्राम है कि वही बालू यहाँ आ जम जाता है।

गोविकर्त्त (स० पु०) गा विकल्पति वि कृ प्रण उपस० ।
१ गोघातक, बूचर, कमाय । २ कपक हलचलाने गला ।

गोविकर्त्त (स० पु०) गा विकल्पति वि कृत लृच्, ६ त्व ।
गोहि सक, गोशा मानेवान्ना ।

गोविट् (स० स्त्री०) गोमय, गोबर ।

गोवितत (स० पु०) गावो वितता अत्र बहुव्री० । गोभू
यिष्ठ अश्वमेध यज्ञ । (भारत १०१ प०)

गोविदापति (स० पु०) गा वेदवाणी विदन्ति गोविदो
वं दशास्त्रेषां पति, अलुक समास । परमेश्वर ।

गोविनत (स० पु०) गावो विनता अत्र, बहुव्री० । अश्व
मेध । (मत०पत्राद्य १११/११८)

गोविन्द (स० पु०) गा वेदमयीं वाणीं गा भूमिं स्वग
धेनु वा विन्दति गो विट् श । १ श्रीकृष्ण । हरिव श
प्रभृतिमें गाविन्द शब्दको अनेक तरहको व्युत्पत्ति देखो
जातो है। हरिव शमें लिखा है कि श्रीकृष्ण हृत्वावनमें
रह कर बहुतमें गोश्रीका प्रतिपालन करते थे, इसी कारण
'गोविन्द' इस तरहकी व्युत्पत्तिके अनुसार इन्होंने उनका
नाम गोविन्द रखा। विशुत्तिनकका मत—

गोविन्दोऽस्ति नाम वाच्ये विन्दतेऽस्ती पुष्य ।

विन्दति वाच्य पुष्य तत्पत्रा ३ ।

ब्रह्मवैवर्त पुराणका मत—

“श्रीं कृष्णमपि प्रथमो वैशालो विन्दति स्वमे इति गोविन्दम्”

विन्दतीति विन्द पानकः स्वामी वा, गवां विन्द
पानक ६ तत् । १ गवाध्वज, गोश्रीका अध्वज । ३ ब्रह्म
स्वति । ४ परगच्छ । धार्मिक हिन्दुगण दिभुजपुरलीधर
गोविन्द मूर्तिको पूजा करते हैं। इनका ध्यान यों है—

“पुत्र लोभोऽस्ति नित्यं न कदापि नश्ये ।

कोऽप्यहम् । नोऽप्यहं कोऽप्यहं नृप ३ ।

गोश्रीं नक्षत्राय नमः शिवाय नमः ३ ।

शिवो नमोऽस्तु नमः शिवाय नमः ३ ।

पूजाका मन्त्र— ओं ह्यं य गोविन्दाय नोऽजनाहं राय स्वाहा ।

५ वेदान्तविज्ञा, तत्त्वज्ञ । ६ गोमिदमणि ।

गोविन्द—१ राष्ट्रकूट वंशीय एक राजा । २ निकुम्भव श्रीय
एक राजा । ३ शङ्कराचार्यके गुरु श्री गौडपादके शिष्य ।

४ षडशुश्रूषिके एक गुरु । ५ भोजप्रबन्धवर्णित

एक कवि । ६ आत्मतत्त्वविवेकके एक टीकाकार ।

७ गणेशगोताके एक टीकाकार ।

८ एक विख्यात आन्ध्रकारिक और टीकाकार । इन्होंने

ने नलोदयटीका, शिशुपालवधटीका, मथ्याभरणटीका,

कुमारदेवके शालिवाहन मत सतीकी टीका एव हन्दो

दर्पण नामक सस्कृत ग्रन्थ रचे हैं । ९ एक प्रसिद्ध कवि ।

(य० शब्द० २१००)

१० जन्मदोषक और तिर्यगिर्णय नामक सस्कृत
ग्रन्थकार ।

११ नाडीप्रकाश नामक सस्कृत वैद्यक ग्रन्थकार ।

१२ तालदश प्राणदोषिका नामक संगीतशास्त्रकार ।

१३ परमार्थविवेक नामक वेदान्तिक ग्रन्थप्रणेता ।

१४ एक विख्यात ज्योतिर्विद । इन्होंने सस्कृत भाषा

में बालवृद्धिप्रकाशिनी, विवाहप्रकरण और मन्सारप्रक

रण नामकी ज्योतिषग्रन्थ रचना किये हैं ।

१५ पूजाप्रदीप नामक भक्तिशास्त्रकार ।

१६ ब्रह्मस्वपति भव प्रयोग और आम्बलायनीय प्राय

चित्तप्रयोग रचयिता ।

१७ मानसोक्ताम नामक सस्कृत ग्रन्थप्रणेता ।

१८ एक प्रसिद्ध वैद्यक ग्रन्थकार । इन्होंने रमसार,

रमहृदय और सविपातमञ्जरी नामके सस्कृत चिकित्सा

ग्रन्थ प्रणयन किये हैं ।

१९ लतादिनिर्णय नामका ज्योतिषग्रन्थकार ।

२० हनुमानुष और मधुसूदन प्रभृतिके शिष्य, शाङ्खा

यनश्रोतस्त्रोयी महाशक्तका एक टीकाकार ।

२१ कन्नड कथेश्वरके पुत्र, मन्वित्प्रकाश नामक

ज्योतिषशास्त्रकार ।

२२ सुवरनिवासी गदाधरक पुत्र । इन्होंने १६८० ई०

की कुण्डमाण्ड नामक सस्कृत ग्रन्थ प्रणयन किये हैं ।

२३ भद्र रत्नाचार्यके एक पुत्र सस्कृत भाषामें गोपाल

नीमार्णव नामका भाण रचयिता ।

२४ विगदैवज्ञके पुत्र, प्रथम भाग नामक ज्योतिषग्रन्थ बनानेवाले ।

२५ एक नैयायिक । इनके पिताका नाम नाहम था इन्होंने व्याघ्रशास्त्रके बालबोध नामकी टीका रचना की है ।

२६ गोविन्दाचार्य नामका ख्यात, अष्टश्लोकान्त एक व्याख्याकार ।

२७ सिखीके १० गुरुओंमेंसे एक ।

२८ एक मगहर कवि । इन्होंने हिन्दी भाषामें बसन्त-सी कविताये बनाई हैं जिनमेंसे दो नीचे दी जाती हैं—

“मोहन नखारविट पर मगहरण मिटिकु धारोमी मरै ।
 कहे श्रीर अकलि नाट परत है मरै मरै रगत एमारे ॥
 अथवा सिदक कुण्डल - पील हवि एक हमना सोपे वरपो म शरै ।”
 गोविन्द प्रभु श्री गणेश पर गनि वनि रमिक शुकुामदि आई है
 “छाल पागे फति मिलखण दस किरीये मुजात ।
 विविध व नुम सुभाम शोतल विनित ख्या रथो
 कानि मदन मोहन निशा आम ॥
 बेटे कंकडे दार मप पय जोवित भरि भरि चाधन
 मरण निशाल तन अशुभाग ।
 दुनोके वचन सुनि प्रेम पाहुण मरै किभी जाय
 गोविन्द भुकी मीठी उदय दाग ॥”

गोविन्द अटल—एक विख्यात हिन्दी कवि ।
गोविन्द अभिराम—हिन्दीके एक कवि । इनकी रची हुई एक कविता नीचे दी जाती है—

“वश गोपालजी आज गाँवें ।
 अहुत तान भरत मधुर धुन मस गुरधो गाँवें ॥
 लाज धोर कुल कान माग डर सुध बुध आगप सुनत सब गाँवें ।
 रमिक गोविन्द अभिराम खाम सो मिल सब ऊपर गाँवें ॥”

गोविन्दकूट (सं० पु०) पर्वतविशेष ।
गोविन्दगञ्ज—बङ्गालके बगुड़ा जिलेके अन्तर्गत एक ग्राम । यह अक्षा० २५° ८' २५" उ० और देशा० ८८° २८' ५०" पू०के मध्य करतोया नदीके कूल पर अवस्थित है । इसके निकट ही प्राचीन वरुनकोट नगरका ध्वंसावशेष देखा जाता है ।

गोविन्दगढ़—१ पञ्जाब प्रदेशके पटियाला राज्यके अन्तर्गत अनाहटगढ़ निजामतकी पूर्वीय तहसील । यह अक्षा० २८° ३३' से ३०° ३०' उ० और देशा० ७४° ४१' से ७५° ३१' पू० में अवस्थित है । भूपरिमाण ८६८ वर्ग मील

और लोकसंख्या प्रायः १४२५१७ है । इस गणसाम्यम भटिण्डा नामक शहर और १८१ ग्राम लगते हैं । यहाँकी प्राय दो भाग रघुवंश में अधिक है ।

२ मध्य-भारतके रिया राज्यके अन्तर्गत हुजर तहसील का एक शहर । यह अक्षा० २४° २६' उ० और देशा० १८° ५०' ममुदपुत्रमें १२०० फुट ऊँचे पर अवस्थित है । लोकसंख्या प्रायः ५००० है । पलायके समाप्त होने तथा अङ्गलोंने फिर रहनेके कारण गोविन्दगढ़का हत्या अत्यन्त मनीषर लगता है । यहाँ एक डाकघर विशाल तथा चिकित्सालय है ।

३ राजपूतानेमें अलवर राज्यके अन्तर्गत इसी नामकी तहसीलकी शहर । यह अक्षा० २७° ३०' उ० और देशा० ७७° ५०' पू० अलवर शहरमें पूर्वमें पड़ता है । यहाँका लोकसंख्या प्रायः ४८३२ है । १८०५ ई०का मराठा राजा बजावरसिंहका निर्माण किया हुआ एक दुर्ग है जो इस शहरमें बाध भोल उत्तरमें अवस्थित है । रीशनी तथा म्यास्य विभागका प्रबन्ध म्युनिस्त्रियलिटिके हाथ है । गोविन्दगढ़ तहसील १८वीं मताष्टाव राजा जोर्दके अधीन थी, लेकिन १८०३ में मजाराव राजा बजावर सिंहने मजारावकी सहायतासे उक्त निजाल भगाया और तहसीलकी अपने अधिकारमें कर लिया, यह अलवरके अधीन था रही है । इस शहरमें एक डाकघर और वर्नाक्यूलर स्कूल है ।

गोविन्दगढ़ - अन्तर्गत नगरके उत्तर-पश्चिममें अवस्थित एक दुर्ग । यह अक्षा० २१° ३०' उ० और देशा० ७४° ४५' पू०में है । सिव जातिके पवित्र अन्तर्गत नगरमें तोर्घयातिथीके आश्रयके लिये राजा रणजितसिंहने १८८ ई०की यह दुर्ग निर्माण किया था । १८५० ई०में सिपाहीविद्रोहके बाद यह दुर्ग अंगरेजोंके अधिकारमें आ गया ।

गोविन्दघोषठाकुर—इनका प्रकृत नाम गोविन्दचन्द्रघोष था । ये “घोषठाकुर” नामसे प्रसिद्ध हैं । ये अग्रहोपके प्रसिद्ध गोपीनाथ विग्रहके प्रकाशक थे ।

कोई कहता है कि अग्रहोपके निकट ही काशीपुर विशुतलामें घोषठाकुरका वाम था किमीका मतहै कि देणावतलामें उनका जन्म स्थान रहा, अभी तक भी

घोषघोषाधिके बहुते कायस्य रहते है । फिर कोई बोलते है कि घोषठाकुर उत्तरराटो कायस्य घे । स्त्रोके मरनेके बाद कोई मन्तान नही रहनेके कारण घे । उदाम हो गङ्गातो पर अघोषीके निकट आ वाम करते घे । एक दिन चैतन्यदेव भक्तम डभोके माथ जाऊवो तोर पर पहुँचे, इस समय गाविन्द उनसे जा मिने । नवान नन्यानाकी तेजासय अर्पुव सुखयो देख गोविन्दका चित्त पिघल गया । वे महाप्रभुके चरणों पर गिर रो रो कर कहने लगे, 'प्रभो !—मैं ससार नही चाहता । धन मान तथा ऐश्वर्य कुछ नहीं चाहता, सिर्फ आपके चरण कमलाको सेवा करना चाहता हूँ ।' तब गौराङ्गदेव उन्हें स सारके अनेक प्रलोभन टिखाने लगे । गोविन्द तनिक भी विचलित न हा बोले, 'धन, मान, ऐश्वर्य दूर रहे, मुझे अब इनमे कुछ भी प्रयोजन नहीं है । टग करके आप अपने चरणमें स्थान दोजिए ।' ऐसा कहते हुए उन्होंने चैतन्य महाप्रभुका पैर जोरसे पकड़ा । गोविन्दको प्रकृत भक्त समझ महाप्रभुने उनसे आनिष्टन किया और कहा, "यदि निष्काम व्रत पानन करनेमें समय हो तब मेरे माथ रत्न सकते हो ।" गोविन्दने ब्रह्म उद्धारमें बनका पट्टे-गु पहण किया और निष्काम व्रतपाननमें महमन हुए ।

चैतन्यदेव व्रतमें घैटल हो अघोषीप आये । यहा वे भोमनादिके बाद सुवशुदि न पाकर भक्तगणमे बोले, "आज मानूम पडता है कि सुवशुदि नहीं हूर है ।" इस पर गिरीने कुछ भी उत्तर न दिया तब गोविन्दने हाथ जोड कर प्रार्थना की, 'प्रभो ! मेरे पाम एक हरो तकौ है यदि आत्मा हो ले मेवामे अर्पण करूँ ।'

चैतन्यदेव ज स कर बोले, "गोविन्द ! तुम्हारे भक्ति को मानयो अत्यन्त पाछादमे वदण किया किन्तु आजमे हो तुम मेरा माथ छोड दा ।'

गोविन्दको हठात् वन्यमाना पाघात मानूम पडा और वे रो रो कर कहने लगे, देव । इस दामने कानमा परराध किया जिनमे मेरा कठोर पाट्टेग दिया गया है ।'

चैतन्यदेवने स्नेह पत्रक उत्तर दिया, "गाविन्द ! तुम यथाय भक्त घोर हरिपुत्रके अधिकारी हो, किन्तु निष्काम

व्रत पाननका अधिकारी नही हो, अभी तक मे तुम्हारे विषयवामना दूर नहीं हूँ है । अब मे तुम्हें मज्जय स्पृहा मोजू है । इसो निये कहता हूँ कि घर लोट जाओ, हरिको आराधना करो, उषीसे तुम्हारे मुक्ति होगी ।"

दोर्घनिष्ठाम लेते हुए गोविन्द सजन गयन हो बोले, 'मैं कुछ नहीं चाहता, सर्वस्व गिलाञ्चलि दो है, स मार लोट कर नहीं जा सकता हूँ ।"

चैतन्यदेवने भक्तको आनिष्टन करते हुए कहा, "तुमने सर्वस्व पतित्याग किया है सही, किन्तु अब भी तुम्हें विषम कण्ठक रह गया है । आज तुमने हरोतकी सज्जय की है, कलह, फिर एक नवोन प्राप्ति करनेकी इच्छा होगी इसो कामनाको याधक जानो । तुम घर लोट जाओ इसोमे कुशल है । जिस दिन तुम्हारे जीवनमें अलौकिक घटना घटेंगे, उषी दिन मुझमे भेट पाओगे । यदि कोई अनूठी चीज पाओ तो उसे यवपूर्वक रकलो उमोसे तुम्हारे आया पूण होगी ।"

इस तरह गोविन्दको शोकसागरमें डुबाने हुए आप अघोषीप छोड चल बसे । एक दिन भक्त गोविन्द गङ्गा जलमे शुद्ध हो ध्यानमें मन घे । उषी प्रयस्यामें किसी वोजमें उनको पीठ पर तोनवार धक्का दिया । अन्तमें उन्हें मानूम पडा कि यह सिर्फ शतदारका एक छोटा काठ है । किन्तु उमे उठानेके समय जान पडा कि वह सामान्य काष्ठ स्वाभाविक गुरुत्वकी अपेक्षा मे गुना भारी है ऐसा की होता है । विष्णुधमे गोविन्दके मनमें एक अर्पुव भाव उत्पन्न हो आया । वे कुटो पर नाट घाय, परन्तु मनका सदेह दूर नहीं था । रात्रिकानमें गो.व. ने स्वप्न देख, कि, गङ्गचक्रगदाधर मारने उगमे कह रहे हैं, "गोविन्द ! मत भूलो ! मत भूलो ! उस काठकी उठा नाओ । महाप्रभु पा रहे हैं आने पर उर्त्तिकी ले लेना ।" गोविन्दकी निद्रा टूट गई, उन्होंने देखा कि चारों घोर घोर अन्धकार छाया जपा है । वे उषी समय अन्धकारमें गङ्गाके किनारे पहुँचे यहाँ आ कर उन्होंने देखा कि यह नकले उसा स्थान पर पडो है । वस्तु यक्षमे उम काठकी कन्ने पर रात घोर घोर अघनी कुटीकी आये । उस रात गोविन्द दर्शन गनक

“कल ५ वि दशो कदमाद कुडलाश्रित शंभरे ।

केलि शोभित यष्ट कुण्डक साकला कत शंभरे ॥

केशरी कलि कम्बु कन्दर कुष्ठ केशर दामर ।

कलि यान शोभे तबलि कल्पित याम गोविंद नामरे ॥”

गोविंदोचित - एक संस्कृत अन्वकार । इन्होंने अपत्नीका-
धाननिर्णय और काश्यपिप्रयोगकी रचना की है ।

गोविंदहाटशी (सं० स्तो०) गोविंदप्रिया हाटशी मधा-
पदनी० पुष्याशुक्लतयुक्त फाल्गुन मासकी शुक्ल हाटशी ।
ब्रह्मपुराणमें लिखा है कि इस दिन उपवास करनेसे
समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं । लोकव्यवहारमें यह तिथि
आसर्ट की हाटशीसे भी प्रसिद्धा है । पापनाशिनो-माहा-
त्यका मत है कि फाल्गुण मासमें आसर्ट की व्रत करने-
से विष्णुलोकमें प्राप्ति होती है । प्रभासखण्डके मतमें
शुक्ल एभाटशीमें उपवासो रह कर हाटशीके दिन नदो
तड़ाग या दोर्विका (कूप) में स्नान करना उचित है
और उसके बाद पर्वत, वन अथवा अन्य किसी दूसरे
स्थानमें (जहां आसर्ट की वृक्ष पाया जाय वहाँ) उपस्थित
हो हरिकी पूजा कर समस्त राति जाग कर व्यतीत
करनी चाहिये । एक जलपूर्ण कमण्डलु भी सद्व्राह्मण-
की दान दे । हविष्य करके सारी रात जाग कर हरिकथा
श्रवण करें । ऐसा करनेसे मनुष्य समस्त पापोंसे मुक्ति
लाभ कर सकते और पाञ्चभौतिक शरीर पतन होने पर
ही निर्वाण (मोक्ष) लाभ करते हैं । (हरिभक्तिवि०)

गोविंदनाथ—गङ्गाराचार्यके गुरु और गौड़पादकी शिष्य ।
ये एक प्रसिद्ध योगी थे । सर्वेदर्शनसंग्रहमें इनका मत
उद्धृत है ।

गोविंदनाथक—एक शैवशास्त्रकार ।

गोविंदन्यायवागाथ—प्रसिद्ध वासुदेव सार्वभौमवंशीय
एक विख्यात नैयायिक ।

गोविंदपण्डित—१ एका प्रसिद्ध ज्योतिर्विद । इन्होंने संस्कृत
भाषामें ज्योतिषरत्नसंग्रह, यामलानुसारिप्रश्न, उत्पलपरि-
मलटीका, मुहूर्तचिन्तामणिके पौष्टपधारा नामकी टीका
तथा नीलकण्ठतांत्रिककी सरला नामकी टीका प्रणयन
की है ।

२ रामपण्डितके पुत्र, आर्यपण्डित नामका स्मृति-
संग्रहकार ।

गोविंदपत्नी—वैष्णवाका एक सम्प्रदाय । इनके गुरु
गोविन्द राम थे जिनकी कब्र फौजाबाद जिलेके अहिरानी
ग्राममें है ।

गोविंदपुर—१ मानभूम जिलेके अन्तर्गत उत्तरीय
उपविभाग । १८५१-५२ ई०को यह एक स्वतन्त्र उपवि-
भागरूपमें संगठित हुआ । यह अक्षा० २३° ३६' तथा
२४° ४ उ० और देशा० ८६° ७ एवं ८६° ५० पू०के मध्य
अवस्थित है । इसका भूपरिमाण ८०३ वर्ग मील है ।
१८७०-७१ ई०को यहाँ सिर्फ दो फौजदारी अदालत
स्थापित हुए थे ।

२ बंगालके अन्तर्गत मानभूम विभागका एक
सहर । यह अक्षा० २३° ५०' उ० और देशा० ८६° ३२'
पू०में अवस्थित है । यहाँकी लोकसंख्या २७७१२२ है ।
इस सहरकेमें दामोदर और बराक नदोंके मध्य त्रिभुजा-
कृति एक स्थान है । इसकी पश्चिम मोसा छोटा नागपुर
है । उत्तर और पूर्व में खुला मैदान है जो कुछ पहाड़ियोंके
रक्तनेसे ऊँचा नीचा है । इसमें १२४८ ग्राम लगते हैं,
जिसमें गोविन्दपुर ही सहर है, इसके सिवा और कोई
शहर नहीं है । भारियाकी कायनीकी खान भी इसी
उपविभागके अन्तर्गत है ।

३ कालकत्ताके दक्षिण अभी जहाँ फोर्ट विलियम दुर्ग
है उसको समतलभूमि और समस्त अंग पूर्व मध्यमें
गोविंदपुर नामसे मशहूर था । (इतिहास पृ० १०५)

गोविंदपुर—दक्षिण जिलेके अन्तर्गत एक ग्राम जो नरम-
राजुपेटासे ५ मील दक्षिण-पूर्वमें स्थित है । इस ग्रामके
पश्चिम एक मंदिरमें बहुतसी प्रतिमूर्तियाँ और दो
खोदित शिलालिपि हैं । ऐसा सुना जाता है कि हाटश
शताब्दीमें किसी चोलराजसे यह मंदिर निर्माण किया
गया था । इस ग्राममें रूपणदेवरायसे प्रतिष्ठित एक विष्णु
मंदिर है । इस मंदिरके प्रवेशद्वार पर तैलद्र भाषासे
लिखा हुआ एक शिलाफलक दृष्ट होता है ।

गोविन्दप्रभु—ये भी अच्छे कवियोंमें गिने जाते थे । योंती
इन्होंने बहुतसी कवितायें रची हैं लेकिन यहाँ पर सिर्फ
एक ही दो जाते हैं—

“कथा धरे है कुण्ड ही जाय

वहाँ नही कु जनता चलो बंकिम न द सुग ध न वासु १५१ ॥
 नही वहाँ सुनीयत यरथन व न पुन नृप न पुन १५२ ॥
 सारथ च सीता नही शीतल सहाजि बहव कोनका सीताय ॥
 नही वहाँ इन हृन्दावन वीर्यन गीतोंच दन यशो न माय ॥
 गीत द प्रसु गीतों चरचनवो इजन न वनिवर्षा ज्ञाय न्नाय ॥

गोविन्दभट्ट—१ आत्माकबोध नामक वेदान्त ग्रन्थके रचयिता ।

- २ तिथिनिर्णय नामका स्मृतिसंज्ञकार ।
- ३ पराशरमहिताके एक भाष्यकार ।
- ४ मोक्षानाम महत्व्यकोमुदो नामका स्मृतिसंज्ञकार ।
- ५ राजचन्द्रयशप्रबन्ध नामका संस्कृत काव्यरचयिता ।
- ६ हृत्तरताकारके एक टीकाकार ।

७ एक विख्यात अलङ्कारशास्त्रवित्, केशवके पुत्र और रुचिकरके वंशज थे । इन्होंने काव्यप्रदीप नामका काव्यप्रज्ञाशक्ति टीका रचना की है । काव्यप्रदीप पहले पहल शोधार्थने लिखना आरम्भ किया था । किन्तु उनके मृत्यु होने पर उनके अनुव गोविन्दने इसे पूर्ण किया । ८ वेदान्तसूत्रके एक वैष्णवीय भाष्यकार ।

गोविन्दभट्ट—एक जनश्रुत्यकार । ये जातिक काव्यस्थ थे । इनका बनाया हुआ एक ग्रन्थ "पुरुषार्थानुशासन" प्राम है । इनके शोकुमारकवि, सत्यवाक, देवचक्रवर्त, उद्यतभूषण, इस्तिमल कवि और वर्तमानकवि ये कुछ पुत्र थे और सभी उद्भट विद्वांसु थे । इनने मैथिलीपरिणय आदि नाटकोंके कर्त्ता हैं;सामल प्रसिद्ध हैं ।

गोविन्दभट्टाचार्यचक्रवर्ती—बृहदेशीय, एक विख्यात पंडित, इन्होंने संस्कृत भाषामें समासवाद और पदार्थखण्डन-टीका लिखी है ।

गोविन्दमहामहापाध्याय—एक विख्यात पण्डित । इन्होंने 'सुधामान्वाधूत नामकी एक आर उपाधि है । उन्होंने अधिकरणमाना नामका एक उल्लूक संस्कृत दर्शनग्रन्थ प्रणयन किया है ।

- गोविन्दमिश्र—१ पद्मावलीशत एक प्राचीन कवि ।
 २ शान्ततोय रचित द्वान्द्वश्लोक एक टीकाकार ।
 गोविन्दराय—काव्याणपुरके चातुर्नवगोय एक राजा, वीरसत्याग्रजके पिता । ५५१० ॥ ३ ॥
 गोविन्दराज—१ एक विख्यात पण्डित, माधवभट्टके पुत्र ।

इन्होंने मानवधर्मशास्त्रकी टीका और मञ्जरो नामकी प्राञ्चवस्त्रासृष्टतिकी टीका रचना की है ।

- २ सुभाषितावलीशत एक प्राचीन कवि ।
- ३ तैत्तिरीयोपनिषद्का एक भाष्यकार ।
- ४ रामायणचपू और राजवश नामक संस्कृत काव्यकार ।
- ५ मधुश्रीकीव्याख्या और शृङ्गारतिलकका 'भूषण' नामक टीकाकार ।

गोविन्दराम—१ गोविन्दविलास नामक वेदान्त ग्रन्थके रचयिता ।

- २ कुमारसम्भवके धीररञ्जिका नामक एक टीकाकार ।
- ३ टैर्षीमाहात्म्य और गङ्गासहस्र नामक एक टीकाकार ।
- ४ रामदेवके पुत्र, महिम्नस्तवप्रकाशिकाके रचयिता ।
- ५ राजस्थानके एक विख्यात कवि, इन्होंने सुन्दर छंदो कवितामें "हारावतो" नामक हरवशोय राजपुत्र राजगणिका इतिहासकी रचना की है ।

गोविन्दरामशिरोमणि—एक बृहदेशीय पण्डित । इन्होंने शब्ददीपिका नामक मुग्धबोधकी टीका रची है ।

गोविन्दरामसेननाडोपान नामक संस्कृत वैद्यक ग्रन्थकार ।

गोविन्दवल्क—अद्वैतादित्य नामक वेदान्त ग्रन्थ रचयिता ।

गोविन्दविद्यानिन्दभट्ट—एक विख्यात संस्कृत ग्रन्थकार । इन्होंने भागवतसार, क्रमदीपिकातन्त्रकी टीका और निपुराणारम्भमुच्यता पदार्थप्रकाश नामकी टीका रची है ।

गोविन्ददशमन्-वेदान्त कथारत्न नामक वेदान्तिक ग्रन्थकार ।

गोविन्ददशान्वा—१ आर्षवर्णरक्ष्य नामक संस्कृत ग्रन्थकार । २ अचोभ्यतीर्षका नामांतर । १०४८ ई०के इनका देहांत हुआ था ।

गोविन्दश्रेष्ठ—बागीरथी श्रेष्ठ यन्त्रेश्वरके पुत्र । एक विख्यात वेदवित् । इन्होंने त्रिधाश्रयीय दर्शपूर्णमासप्रयोग, त्रिधाश्रयीय घनिष्टोमप्रयोग मोक्षप्रयोग और यिनतानद्वययोग नामक ५३ एक धार्मिक ग्रन्थकी रचना की है ।

गोविन्दस्वामिन् १ एक परमवैष्णव और विख्यात कवि, भक्तिमाहात्म्य नामक प्राचीन वैष्णव ग्रंथमें इनका माहात्म्य विस्तार रूपसे वर्णित है। २ एक वैदिक पण्डित वीधायणीय धर्मसूत्र और ऐतरेय ब्राह्मणके एक भाष्यकार। माधवीय धातुवृत्तिमें इनका मत उद्धृत है।
गोविन्दा (सं० स्त्री०) जीवन्धरस्वामीकी पत्नी।

जोवंधरस्वामी देवी।

गोविंदाचार्य—१ शङ्कराचार्यके गुरु। गोविंदनाथ देवी।
२ एक फारसी और संस्कृतभाषावित् पण्डित। इन्होंने अध्यात्मरासायणका फारसी अनुवाद किया था।

गोविन्दानंद—१ अर्थरत्नप्रभा नामक जातकार्णवके टीकाकार। इनकी उपाधि “कविकाञ्चनाचार्य” थी।

२ एक विख्यात स्मृतिशास्त्रवित्, गणपतिभट्टके पुत्र। इन्होंने क्रियाकौमुदी, दानकौमुदी, वर्षकौमुदी, शुद्धिकौमुदी, आडकौमुदी, गोविंदानंदीय धर्मशास्त्र एवं शूलपाणिके प्रायश्चित्तविवेकके तत्त्वकौमुदी नामकी टीका प्रणयन की है।

गोविन्दिनो (सं० स्त्री०) प्रियङ्गु।

गोविन्दु (सं० त्रि०) गवां विन्दुः, ६-तत्। गोलभक, ग लास करनेवाला।

गोविराटी (सं० स्त्री०) शारिका पत्नी।

गोविष (सं० स्त्री०) गोविट्, ६-तत्। गोविष्टा, गोमय, गोवर।

गोविषाण (सं० स्त्री०) गोविषाणं, ६-तत्। गौके शृङ्ग, गायका सींग।

गोविषाणाह्वा (सं० स्त्री०) ववूलह्वत्।

गोविषाणिक (सं० पु०) गोविषाणं साधनतया अस्त्यस्य गोविषाण-ठन्। गोविषाण निर्मित वाद्यविशेष, गौशृङ्गका बना हुआ एक तरहका वाजा।

गोविष्टा (सं० स्त्री०) गोविष्टा, ६-तत्। गोमय, गोवर।

गोविसर्ग (सं० पु०) गोविसर्गः, ६-तत्। १ गोपरित्याग।
२ प्रातःकाल, सुबह, तड़का।

गोवीथि (सं० स्त्री०) गवां ग्रहाणां वीथिसर्गाविशेषः, ६-तत्। ज्योतिर्विदग्गण अश्विनी प्रभृति तीन तीन नक्षत्रमें एक एक वीथि या पथ कल्पना करते हैं। नक्षत्र-

मण्डलमें सर्वममेत नो वीथि है, जिनमेंमें हम्ना, चित्रा और स्वाती इन तीन नक्षत्रोंमें जो वीथि हो उसे गोवीथि कहते हैं। किमी किमी ज्योतिषोक्त मतमें अश्विनी, रेवती, पूर्वभाद्र और उत्तरभाद्र इन चार नक्षत्रोंमें गोवीथि हुआ करती है। (भृगुसिद्धि ८:२)

गोवीर्य (सं० स्त्री०) गवां वीर्यं, ६-तत्। गौका वीर्य।

गोवृट् (सं० स्त्री०) गवां वृट्, ६-तत्। गोमसूह, गौका भुण्ड।

गोवृन्दारक (सं० पु०) गोवृन्दारक इव उपमितम्।
श्रेष्ठ गौ, सुंदर गोरू।

गोवृष (सं० पु०) गोपु वर्षति गतः मिञ्जति वृष-क। १ श्रेष्ठ वृष, अच्छा सांड। गोवृष्य तो साष्टय्य नाम्ब्यम् गोवृष्य-अच्। २ न्यायविशेष। ३ शिवजी।

गोवृषध्वज (सं० पु०) शिव, महादेव।

गोवृषभ (सं० पु०) श्रेष्ठ वृष, सुंदर बैल या सांड।

गोवेष्ट (सं० स्त्री०) शोसक धातु, सोसा। (Lead)

गोवेद्य (सं० पु०) गौरिव वैद्यः। १ सूखे वैद्य। गोवेद्यः

चिकित्सकः, ६-तत्। २ गोचिकित्सक गौका वैट।

गोव्यच्छ (सं० त्रि०) गौके निकट गमनशील, वह जो गौके पास जाता हो।

गोव्याधिन (सं० पु०) गौतप्रवर्त्तक एक ऋषि।

गोव्याघ्र (सं० पु०) गौ और बाघ।

गोव्रज (सं० पु०) गवां व्रजः, ६-तत्। १ गोमसूह, गायका भुण्ड। गावो व्रजन्यत्र व्रज आधारे क। गो-गति-स्थान, गोष्ठ, गोशाला। २ दानवविशेष।

गोव्रत (सं० स्त्री०) गोपु व्रतम्, ६-तत्। एक प्रकारका व्रत जो गौहत्याके प्रायश्चित्तके निये किया जाता है। इस व्रतमें गोव्रतित्को केश मुण्डन कर एक साम तक किसी गौके पीछे घूमना पड़ता है। गायको ठहरानेके लिए एक मुहूर्त्त भी कोशिश करना निषेध है। हां, यदि वह अपनी ही इच्छासे ठहरे तो व्रती खड़ा हो सकता है, अन्यथा उसके पीछे पीछे चलना पड़ता है। गायके अवसन ही जाने अथवा किसी आपत्तिमें पड़ जानेसे उसे उड़ार तथा रक्षा भी करनी पड़ती है। गो-सूत्रमें स्नान करना एवं केवल गौदुग्ध पो कर ही जीवन

धारण करना पड़ता है। एक साम पर्यन्त उक्त नियमके अनुष्ठानको गोत्रत कर्तव्य है। भाष्यार्थ शब्दमें विशेष विवरण देखो। गोत्रतन्त्र (स त्रि०) गोत्रतमस्यास्ति अनुष्ठेयतया गोत्रत इति। गोत्रत आचरण करनेवाला।

गोदा—यथोर जिलाके सुन्दरवन विभागके अन्तर्गत एक ग्राम। यह कपोताच नदी कूल पर अवस्थित है। पूर्व समयमें यह बहुजनाकीर्ण रहता, ध्व शावशिष्ट वृहत् वास भवनादि आज भी उसका परिचय देते हैं। इस ग्रामकी रक्षाके लिये कपोताच नदी पर एक पुल है।

गोश (फा० पु०) १ सुननेकी इन्द्रिय, कान। (स्त्रो०) २ पर्दानगोन, जो स्त्री सदा घरमें ही रहती, किसी दूसरे पुरुषके समक्ष बाहर नहीं होती ही।

गोशरुत् (स० स्त्रो०) गो शरुत् ६ तत्०। गोमय, गोबर। गोशत (स० पु०) १०० गोश्रीका टाना।

गोसपेक्ष (फा० पु०) कानमें घड़नेका जीवर।

गोशफ (स० पु० स्त्रो०) गो शफ, ६ तत्०। गोकामर।

गोशमायल (फा० पु०) कानके पास लटका रहता हुआ मोतियोंकी लड़ीका गुच्छा जो पगडीमें एक और लगा रहता है।

गोशमानी (फा० स्त्रो०) १ कान उभेठना। २ ताडना, वडो चितायनी।

गोशर्व (स० पु०) शर्वा शीर्णा गोशर्व, बहुव्री०, विशेषण रूप परनिपातरुद्धादस। वृहत् सर्प, अजगर।

गोशवारा (फा० पु०) १ खञ्जक नामका पेड़। २ कुण्डल, कानका बाना। ३ शीपका बडा मोती। ४ पगडोफा किनारा जो कानावतसे जुना रहता है। ५ तुरी, कानगी, सिरपेच। ६ जोड़, मिजान।

गोगा (फा० पु०) १ कोण, कोना। २ एयान्तस्थान, जहाँ कोडे न हो। ३ तरफ, दिगा, और। ४ धनुषकोटि, कामानकी दोनों नोकें।

गोगाडवन (स० पु०) ग्रन्थिपर्णी।

गोगाल (स० स्त्रो०) गवा शाला, ६-तत्। विकल्पे स्त्रीयत्वञ्च। गोगाला, गोक रङ्गनेका घर।

गोगाला (स० स्त्रो०) गोगाला, ६ तत्। गोगरु, गीठ, गीठीके रङ्गनेका स्थान।

गोगिशरा—गोगाम्नी नगरका उपनगर। गोगाम्नी देश।

गोगोप (स० पु०) गो, शीर्षमिव शीर्ष यस्य, बहुव्री०। १ एक पर्वतका नाम जो देखनेमें ठीक गोशुद्धाकृति की है। २ चन्दनविशेष, जो उक्त पर्वत पर उत्पन्न होता है। ३ एक प्रकारका अन्न। (स्त्रो०) गोगोर्ष, ६ तत्। गोमृष्ट, गोकामस्तक।

गोगोर्षक (स० पु०) गो शीर्षमिव कायति कै क। १ द्रोणपृथ्वीवृत्त। गोगोर्ष स्वार्थे कन्। २ श्वेतच दन।

गोशुद्ध (स० पु०) गो शीर्षमिव शुद्ध शीर्षभागे यस्य, बहुव्री०। १ ऋषिर्षिषेप। (ल० पु० प्रभाषणम्) २ एक पर्वत। रामायणमें लिखा है कि इस पर्वत पर मन्देह नामके बहुतेसे राक्षस रहता करते थे। ये वृद्धाकृति अथवा एक हाथ परिमाणके ऊँचे थे। रात्रिके समय ये टहलने बाहर निकलते और सामारिक कार्य किया करते थे, किन्तु रात्रिके अवसान होने पर पुन जलमें छिप जाते और सूर्यास्त होने पर बाहर निकल आते थे। ये बड़े दुष्ट और दुराचारी रहे, इनके शापसे इस अवस्थाकी प्राप्ति हुई थी। यह पर्वत वैदिके धर्म-ग्रन्थमें एक पुण्य शैल कथ कर वर्णित है। स्वयम्भुपुराणमें लिखा है कि सत्ययुगमें इस पर्वतका नाम पद्मगिरि, त्रैतायुगमें वषट्कट, हापरमें गोशुद्ध और वत मान कलियुगमें गोपुच्छ पडा है। (मत्स्यपुराण १४०)

महाभारतमें भी इस पर्वतका उल्लेख है। चीनपरिब्राजक युएनचुयाङ्गने “किञ्चि शि लि किया” नामसे इस पर्वतका उल्लेख किया है। (स्त्रो०) गोशुद्ध, ६ तत्। गोकामशुद्ध, गोकामसिध। (पु०) गोशुद्ध तदाकारोऽस्यस्य गोशुद्धश्च। ४ वषट्कट, वडूलका पेड़। ५ हिन्दुधर्मके एक तरहका सामरिक यन्त्र।

गोग (फा० पु०) मांस, आसिप।

गोगुत्ति (पु०) वैयाघ्रपथ गोत्रोत्पन्न एक ऋषि।

गोगव (स० पु०) गोद्याग्वय इतरतरहृत्। गौ और श्वत्, वल और घोड़ा।

गोपति (स० पु०) गो मखा यस्य, बहुव्री०, छांदमत्वात् मत्त्वं। १ दुग्धमें मिश्रित वस्तु। २ वज्र मनुष्य निमका गौ ही मखा ही।

गोपत्रव (स० स्त्रो०) गवा पट्टक गो पत्रवच। गोपट्टक, गौकी ऊरु मन्वा ऊरु, गाय।

गोषणि (स० त्रि०) गां मनोति ददाति सन दाने इन् वा पत्व । गोदाता, जो गाय दान करता हो ।
 गोषट् (स० त्रि०) गवि वाचि सीदन्ति सद-क्लिप-पूर्व-पदात् पत्व । जो बात बोलनेमें तुतलाता हो ।
 गोषटादि (स० पु०) गोषत् आदिर्यस्य, बहुव्री० । पाणि, नीका एक गण । गोषट्, इपेत्वा, सातरिष्वन्, देवस्यत्वा, देवीरायः कृष्णास्या, खुरेष्ठा, देवीधियः, रत्नोक्षण, युञ्जान, अञ्जन, प्रभूत, प्रतुक्त, कृशादु और गोषट् इन सबको गोषटादि गण कहते हैं ।
 गोषन (स० त्रि०) गां मनोति सन्-विच् । गोदाता गाय दान करनेवाला ।
 गोषा (स० त्रि०) गां मनोति षन्-विट् । गोदाता, जो गौ दान करता हो ।
 गोषाति (स० स्त्री०) गो भावे क्तिन् गवां षातिः, इ-तत् । इत्वच् । १ गोलाभ । २ गोदान ।
 गोषाटी (स० स्त्री०) गां सादयति सद-णिच्-अण् उप-स० मत्वंगौरादित्वात् ङीष् । पक्षिविशेष, कोई चिड़िया ।
 गोषुचर (स० त्रि०) गोषु चरति चर-ट् अलुक्स० । गो मध्ये विचरण, गौके साथ चलनेवाला ।
 गोषुयुध (स० त्रि०) गोषु युध्यत इति युध्-क्लिप-अलुक्स० । जो गौके लिए लड़ता हो ।
 गोषूक्तिन् (स० पु०) एक ऋषिका नाम ।
 गोषेधा (स० स्त्री०) गौरिव सेध उक्तो धो यस्याः, बहुव्री० । पूर्वपदात् पत्व । दुर्लक्षणा स्त्री, खराब चाल चलनकी औरत ।
 गोष्टानदी—मन्द्राजमें गोदावरो जिलाके अन्तर्गत नदी-विशेष । कोई कोई इसे गोस्तनी अर्थात् गोदुग्धप्रवाहित नदी कहते हैं । इसका जल हिन्दुओंके लिए पवित्र माना गया है । वायुपुराणीय गोस्तनीमाहात्म्यमें इसकी पवित्रताकी कथा वर्णित है । यहाँकी जमीन उर्वरा बनानेके लिए नदीमें खाल काट कर निकाली गई है ।
 गोष्टोस (ग० पु०) गोसंज्ञः स्तोमोऽत्र, बहुव्री०, पत्वच् । १ स्तोमविशेष, प्रार्थनामार्ग, भक्तिका रास्ता । २ याग-विशेष ।
 गोष्ठ (स० स्त्री०) गावस्तिष्ठन्त्यत्र गो-स्था-क । १ गो-शाला, गौओंके रहनेका स्थान । (स्त्री०) गोठी बहुजनाः

कर्तृतया अस्त्यस्य गोठी-अच् । २ चाडविशेष, जो कई मनुष्य मिल कर करते हैं, गोठीयाड । ३ परामर्श, सलाह । ४ टल, मगडली ।
 गोष्ठकुक्कुट (स० पु०) १ भासपत्नी । २ काकविशेष-एक तरहका कौवा ।
 गोष्ठज (स० त्रि०) गोष्ठे जायते गोष्ठ जन-ड । १ गोष्ठ-जात, जो गोशालासे उत्पन्न हो । (पु०) २ एक ब्राह्मण-का नाम ।
 गोष्ठपति (स० पु०) गोष्ठस्य पतिः, इ-तत् । गोष्ठका अध्यक्ष, प्रधान गोरक्षक ।
 गोष्ठशाला (स० स्त्री०) सभाभवन. वह स्थान जहाँ कोई सभा होती हो ।
 गोष्ठश्व (स० पु०) गोष्ठे श्वा समासे अच् । १ गोष्ठ अवस्थित कुक्कुर, वह कुत्ता जो सदा गोशालामें रह दूमरों पर भूकता है । २ परिहंसक, वह मनुष्य जो केवलमात्र घरही पर रह दूमरकी हिंसा क्रिया करता है ।
 गोष्ठश्वन् (स० पु०) गोष्ठस्य श्वा, इ-तत् । गोष्ठदेवी ।
 गोष्ठागार (स० स्त्री०) गोष्ठस्य सभाया बहुजनस्थानस्य आगारं, इ-तत् । १ सभागृह, सभा करनेका घर । २ जिम घरमें बहुत मनुष्य वास करते हों । गोष्ठस्य गोप्रचार-स्थानस्य आगारं, इ-तत् । ३ गोप्रचार स्थानका घर ।
 गोष्ठाध्यक्ष (स० पु०) गोष्ठस्याध्यक्षः, इ-तत् । गोष्ठपति देखो ।
 गोष्ठान (स० स्त्री०) गोः स्थानं, इ-तत्, पूर्वपदात् पत्व । १ गोप्रचारस्थान, गोष्ठ ।
 गोष्ठाष्टमी (स० स्त्री०) गोषाष्टमी देखो ।
 गोष्ठी (स० स्त्री०) गावो वाग्विशेषास्तिष्ठन्त्यत्र स्था वाहुलकात् कः, इ-तत् । गोठी देखो ।
 गोष्ठिक (स० त्रि०) गोष्ठ्यां भवः गोष्ठी-इकन् । गोष्ठी-सम्बन्धीय ।
 गोष्ठी (स० स्त्री०) गावोऽनेका वाचस्तिष्ठन्त्यत्र स्था-क गौरादित्वात् ङीष् । १ सभा, बहुतसे लोगोंका समूह । २ परस्परालाप, वार्त्तालाप, बातचीत । ३ परामर्श, सलाह । ४ पोषात्रगं । ५ समूह, भुंड । ६ एक ही अङ्कका रूपक या नाटक, जिममें ५ या ७ स्त्रियां और ८ या १० पुरुष हों ।
 गोष्ठीपति (स० पु०) गोष्ठीनां पतिः, इ-तत् । १ परि-

वारका स्वामी, घरका मालिक । २ समापति या ममाजपति ।

राठी ब्राह्मणोंको कुलाचार्यकारिकामें लिखा है—

“कुलोना याति। उदे वरात्र मु न्ते हृष्ट ।

उप्रीभाप मुना म्त्वा स गोष्ठोपतिवृत्ते ॥”

कुलान और ओ वियगण जिमका भ्रम भाजन करते, जो अपनी कन्याको कुलीनको दान करते, उन्हें गोष्ठीपति कहते हैं ।

गोष्ठीपतिको लक्षण—मानाशास्त्रविशारद, रमिक, काव्यात्रागो, निर्दाप, कुलभूषण कुलज्ञ और भागवत व धा अधुषणपरायण ।

वह्नीय कुलाचार्यके यत्नमें लिखा है कि गगुली वगमें लक्ष्मीकांत मजुमदार मुखुटीव शर्म मदनभट्टाचार्य, इसक बाद उसी व शर्म गन्धर्वराय वन्द्य शर्म शमराज पान तथा चट्ट शर्म अन त भट्टाचार्य, ये पाँच मनुष्य प्राचीन गोष्ठीपति थे । अभी राठी ब्राह्मणोंमें बहुतसे गोष्ठोपति देखे जाते हैं ।

पायाल्य वैदिकोंमें हरिहरकी स तान फोडे गोष्ठी का पट मिला करता था ।

दक्षिणराठीय कायस्थोंकी कुलाचार्यकारिकाके मतसे कायस्थ गोप्टोपतिको लक्षण—नीतिज्ञ, कुलकर्माठ मान्य, गण्य धार्मिक, कुलीनप्रतिपालक, कुलमर्यादाकारो, दाता, मदय शीय और सम्मौलिक ।

कायस्थकुलीनके कुलाचार्य व शर्म इन समस्त गोप्टोपतिवर्गके नाम था है—

प्रथम १२वीं पर्यायमें सुबुद्धि खाँके पुत्र श्रीम त राय १३वीं पर्यायमें पुत्र दर खाँ, १४वीं पर्यायमें उनके पुत्र वैशद खाँ, १५वीं पर्यायमें केसवके पुत्र श्रीकृष्ण विश्रामस्वाम, १६वीं पर्यायमें दयाराम पाल, १७वीं पर्यायमें उनके पुत्र रामभद्रपाल, १८वीं पर्यायमें लन्कीक पुत्र, १९वीं पर्यायमें पालव शीय कन्यासे विवाह कर किशोरमेन, २०वीं पर्यायमें किशोरमेनको व शीय कन्यासे विवाह कर गोपीकातमि ह चतुर्पुरी २१वीं पर्यायमें गोपीकात व शके रामकांतमि ह, २२वीं पर्यायमें राम पाता शकी कन्यासे अपने दत्तकपुत्र गोपीमोहनका विवाह तें पुत्र राधा नवहृत्त, २३वीं पर्यायमें राजा

गोपीमोहन, २४वीं पर्यायमें उनके पुत्र परम पण्डित राज राधाकान्त देव गोप्टोपति हुए थे ।

गोहव शावली पटनेसे जाना जाता ह कि—

वद्वज कायस्थोंमें चन्द्रहोपके सिपे वक्षव शीय राजा वरावर समाजपति या गोप्टोपति होते थे । उनके बाद पसु शके अन्तिम राजा प्रेमनारायणके कोई पुत्र न रहनेसे उनके भाजा उदयनारायणमित्र और उसी व शके चन्द्रहोपके राजा वद्वज कायस्थोंके गोष्ठीपति होते आ रहे हैं ।

उत्तरराठीय कायस्थोंमें राजा वज्रानसेनके समसाम यिक व्यासमि ह व शके राजा लक्ष्मोधर पहले “कायस्थ गुरु” या मभापति हुए थे । इसी व शमें दोवान गङ्गा में विन्दसि ह पैदा हुए थे । गङ्गातीरे दक्षिण १६वां । राजा लक्ष्मोधर व शके प्रधान मनुष्य से मभापति या गोप्टोपति हुआ करते थे । किन्तु वहत स्थानोंमें उत्तर राठीय व शके राजा अपने ही उक्त समाजोंके मभापति या गोप्टोपतिके जैसा परिचय देते हैं ।

वैद्य भरतमल्लिकजी कुलपञ्चिकाका मत है किविना यक सेन ही पहले पहल गोप्टोपति हुए थे । उसी व शके राजा वरावर गोप्टोपति उभा करते थे, अन्तमें टाकाके नवाब राजवन्म और उसी व शके प्रधान व्यक्ति गोप ने पति हुए । (गोपमण्ड ६४) ।

गोष्ठीश्वर (स० पु०) उद्वज्वर ।

गोष्ठेच्छेडिन् (स० पु०) गोष्ठे च्छेडते च्छिह-णिनि पाठे भमितादित्वात् अलुकम्मा० । प्रगल्भ आत्मघावी, वृष्ट भतुषा जो अपनी भृशोवडाई करता हो ।

गोष्ठेगल्भ (स० पु०) गोष्ठे गभते गर्व करोति गल्भ अच् । प्रगल्भ ।

गोष्ठेपट्ट (स० त्रि०) पाठ भमितात्स्विदात्लुकम्मा० । प्रगल्भ, वह जो मिर्क घरनेमें गुर हो ।

गोष्ठेपण्डित (स० त्रि०) पूर्वं वृद्ध अणुकम्मा० । प्रगल्भ, जिमका पाण्डित्य घरनेमें चले बाहरसे किमोमे आदर न पाता हो ।

गोष्ठेप्रगल्भ (स० त्रि०) पूव वत् अणुकम्मा० । प्रगल्भ जा मभास्थलमें अपनी प्रगल्भता प्रकाश करता ह ।

गोष्ठेयय ' स० त्रि०) गोष्ठे गोस्थाने शंते गो-यय अणुक

समा० । जो मनुष्य गोव्रत अनुष्ठानके लिये गोशालामें शयन करता हो ।

गोष्ठीशूर (स० पु०) अलुक्म० । प्रगल्भ ।

गोष्ठा (स० त्रि०) गोष्ठी भवः यत् । १ गोष्ठोत्पन्न, जो गोशालामें उत्पन्न हो । (पु०) २ रूपविशेष ।

गोष्पद (स० स्त्री०) गोः पदं, ङ-तत्, गावः पदान्ते गच्छन्ति यस्मिन् देशे गो-पद-अच् । १ गौके खुरचिन्ह-परिमित स्थान, गौके खुरके इतना बड़ा गड्ढा । २ गोपदजात गर्त, वह गर्त जो गोखुरसे हो गया हो । ३ गोसेवित स्थान, वह स्थान जहाँ गौ सर्वदा आति लाते हैं । ४ गो कर्तृक असेवित स्थान, वह स्थान जहाँ गौश्रींका गमनागमन न हो । ५ प्रभासक्षेत्रस्थित एक तीर्थ । स्कन्दपुराणमें लिखा है कि सरस्वती प्रभासक्षेत्रमें पांच स्त्रोतमें प्रवाहित है । सरस्वती पञ्चम स्त्रोत और न्यङ्गुमतीके तीरके मध्याका स्थान गोष्पद नामक तीर्थसे ख्यात है । इस तीर्थका दर्शन और इसमें स्नानादि करनेसे समस्त पाप नाश होते हैं । पूर्व समयमें यह तीर्थ रुद्रगया नामसे प्रसिद्ध रहा ; किन्तु कलिकालमें यह गोष्पद कहलाने लगा । क्षीरोदसमुद्र मधे जानी पर कई एक लोकमाता गाम्भी (गाय) उत्पन्न हुई थीं । वे एक समय तीर्थ भ्रमणके लिए बाहर निकलीं । देवगण इनके तीर्थयात्राके अनुयायिक हुवे थे । वे गौएं अनेक तीर्थपर्यटन कर अन्तकी रुद्रगयामें उपस्थित हुईं । उनमेंसे प्रधान गौ नन्दिनी का एक पद शिलाफलक पर पड़ गया । यह देख कर नन्दिनीने चिन्ता कर देवगणसे कहा "हे देवगण ! मेरा एक पद शिलाफलक पर पड़ गया, इस पर पड़ा हुआ चिन्ह ठीक गगनाङ्गनमें उदित चन्द्रबिम्बका जैसा मालूम पड़ने लगा । अतः मेरे आदेशसे चराचर तैलोक्य आज से इस तीर्थकी गोष्पद नामसे उल्लेख करे ।" नन्दिनीके आदेशसे उसी दिनसे उमका नाम गोष्पद हुआ है और रुद्रगया नाम सदाके लिये विलुप्त ही गया ।

(स्कन्दपुरा० प्रभासक्षेत्र)

गोष्पदीकृत (स० त्रि०) गोष्पद-चि । जो गौके पद चिन्ह तुल्य बनाया गया हो ।

गोष (स० पु०) गां जलं स्पर्ति सो-क । १ बोल, चार-जल एक तरहका भाड़ जिससे गौंद निकलता हो ।

२ उष्णकाल, प्रातःकालमें दो घड़ी पहनेका समय । ३ प्रभात, प्रातःकाल, सर्वरा ।

गोमई (द्विश०) कपासके पीर्थाका एक रोग ।

गोमरिव (स० पु०) गौः सवा अस्य, बहुव्री० । गोमें जिम-को सहायता होती हो ।

गोमगृह (स० स्त्री०) शयनगृह, सोनेका घर ।

गोमद्ग (स० पु०) गाः सङ्घटे गो-मम्-चक्ष-क । गोप, खाला, गौ गिननेवाला ।

गोमद्ग्रातरी (स० पु०) गोमद्ग-इषा ।

गोमद्ग (स० पु०) प्रभात, सुबह ।

गोसत्र (स० पु०) गोभिः कृतं मंत्रं । यज्ञविशेष, गवामयन यज्ञ । गवामयन रोग ।

गोमदक्ष (स० पु०-स्त्री०) गोः मदक्षः, ङ-तत् । १ पशु-विशेष, नीन गाय । (त्रि०) २ गोमदक्ष, गोतुल्य, गाय, बैल ।

गोसनि (स० त्रि०) गां सनीति ददाति मन-इन् पक्षे पत्वाभावः । गोवधि इषा ।

गोमदाय (स० त्रि०) गोः सन्दाति गो-मम्-दा अण् । गोदाता, जो गोदान करता हो ।

गोसम्प्रदाय (स० त्रि०) गां सम्प्रदाति गो-सं-प्र-दा-अण् । गोदाता, गौ दान करनेवाला ।

गोमन्भवा (स० स्त्री०) गोरिव सम्भवो लोमादिरूपाकृतिर्यस्याः, बहुव्री० । १ श्वेतदुर्वा, उजली घास । (त्रि०) सम्भवत्यस्मात् सं भू अपाटने अप् गौः सम्भव उत्पत्तिस्थानं यस्याः, बहुव्री० । २ गोजात, जो गोसे उत्पन्न होता हो । गौलोभिका ।

गोसर्ग (स० पु०) गावः सृज्यते यत्र काले सृज आधारे घञ् । प्रातःकाल, वह समय जब गौयें चरनेके लिये खोले जाते हैं ।

गोसर्प (स० पु०-स्त्री०) गोधा, गोह नामक जन्तु ।

गोसव (स० पु०) गौः सुरते हिंस्यतेऽत्र गो-सू आधारे अप् । गोमिध यज्ञ । गोमिध इषा ।

गोसहस्र (स० पु०) गोस एव शशः तत्तुल्यः । बोल, एक-तरहका भाड़ जिससे गौंद निकलता है ।

गोसहस्र (स० स्त्री०) गवा सहस्रं दातव्यतया यथा यत्र, बहुव्री० । तुला प्रभृति सोलह भहादानोंमेंसे एक महा-

दान । मन्त्रपुराणमें लिखा है कि, पुण्यतिथि, युगादि या मन्वन्तरमें यह दान किया जाता है । तुलापुरुषदानके जैसा सबसे पहली लोकपालीको श्रावाहन करना चाहिए और उसी न्यिमके अनुसार पुण्याहवाचन और होम करे । नृत्विकमण्डपसज्जा, भूषण, आच्छादन प्रभृति और लक्षणयुक्त एक हृषको वेदोके मध्य माना चाहिए । वेदोके बाहर एक हजार गौकी वस्त्र तथा मूल्याद्वारा भूषित कर रखे । गोधोके शृङ्ग सुवर्णमय और खुर राष्य मय होना चाहिए । इसके बाद इन गोधोमेंसे दश गोधोको मण्डपमें ले जाकर वस्त्र तथा मानासे सुगोभित करे । सुवर्णका छोटा घण्टा, कर्मिका दोहनपान, सुवर्ण तिलक, हंसपट्ट रेशमो कपडा, माल्य, गन्ध, हेमरत्नमय शृङ्ग, चामर, पादुका, भूता, छत्र और धामन ये समस्त द्रव्य गौके साथ देने होते हैं । दश गोधोके मध्य एक काञ्चनमय नन्दिकेवरको मूर्त्ति भी रहे । उसे भी रेशमी वस्त्रादिसे सुगोभित करे । इस तरह हृष और गोधोको भूषित कर मण्डपमें रखे जानिके बाद पुण्यकाल आने पर सर्वोपधि जलमें स्नान और कुसुमाञ्जली ग्रहण कर निम्नलिखित मन्त्र पाठ करना चाहिए । मन्त्र यथा-

मनोऽस्तु विप्रमूर्तिभ्यो विप्रमात्राभ्य एव च ।
 लोकाधिपानिभ्योऽप्य गोविधोभ्या मही नमः ॥
 गवामहेतु तिष्ठति सुरमानावरि मति ।
 ब्रह्मादेवकथा श्रुत्वा रीरुष्य पातु मातर ॥
 गोधो मे चरत सन्तु गाव इह न एव च ।
 गाव क्षिरसि मे निष्य तेषां मध्ये प्रमास्य ॥
 यथात्त इवरेव च न एव सतात ॥
 चटवृत्त रविहामनः पादि सनातन ॥

यह मन्त्र पठ कर नन्दिकेवर गुरुको दान दे । इसमें साथ साथ एक गाय और अनेक तरहके उपकरण भी देने पड़ते हैं । उन दश गोधोमें एक एक गो यज्ञ करानिवानिको दान करना चाहिए और याजक तथा गुरुकी अनुमति ले कर दूधरे दूधरे ब्राह्मणोंकी एक एक गौ दान करे । एक मनुष्यको दो गो कटावि दान न दे । इस दानके पहले तोन दिन आर भ्रमणपक्षमें एक दिन विष्वक् दूध खा कर रहना पड़ता है । दूधरे दूधरे दानके जैसा इसमें पहले भी वृद्धिद्वय, गिवादिपुत्रा और याजकोंका यरण करना होता है । इस तरह गोमहस्र

दान करनेसे समस्त पाप नष्ट होती हैं । जो उपरोक्त रीतिसे गोमहस्र दान करते हैं किङ्किणीजाल परिहृत सुवर्ण रत्नपर चट्ट टिक्लोक जा कर सुखसे काल चोपण कर सकते हैं । एक मन्वन्तर पर्यन्त वर्त्ता पुत्र पीवादिद्योके साथ रह कर शिवपुर जाते हैं । उनको पिष्ट कुलके एकसोमे अश्वि तथा मातामह कुलके भी उतने ही पुरुष पापसे मुक्ति लाभ करतें हैं । वे एक नौ कल्प तक शिवलोकमें वास कर भूमण्डलमें राजचक्रवर्ती हो अन्धग्रहण कर सकते तथा इस जन्ममें शिवभक्त होते हैं । एकसौ अश्वमेध और वैष्णवयोग श्रवतम्बन कर सप्तर वन्धनसे मुक्तकारा पाते हैं । जो गोसहस्र दान करते हैं, समस्त पिष्टलोक उन पर सतुष्ट रहते हैं । पिष्टलोकके रहनेवाले पिष्टगण गोसहस्रदाताकी प्रशंसाके लिये सर्वदा निम्न दो श्लोक पाठ किया करते हैं—

‘सर्वे भूयः सुकृष्णभ्यः पुनातीति एव च ।
 गोसहस्रं भूत्वा परमादृष्टिर्भवति ॥
 तस्य जन्म कुर्यात्तथापि ददात्त तेषु च ॥
 सु सारसवायुः कान्तायुः श्यामयुः सारसिभ्यः ॥’

इस श्लोकसे जाना जाता है कि जो मनुष्य गोमहस्र दाताके भूत्व हैं और जो भक्तिपूर्वक श्राद्धोपान्त गोमहस्र दान देखते हैं उनको पिष्टकुल तथा भाटकुलका भी उद्धार हो जाता है । (मन्त्र ७०८-७०९ और श्रमणिगणसहस्र)

श्राद्धयुग गोपथब्राह्मणमें गोमहस्रकी विधि इस तरह लिखी हुई है—गोशालमें जलके समीप एक स्थान परिष्कार कर बहुतमा पुराना जलानिका काठ उस जगह रखे । बाद विधिके अनुसार अग्नि व्यापन कर होम करे । पहले आना सक्त द्वारा और उसके बाद ‘गंधार होयान् च ७६ इत्यादि मन्त्र द्वारा होम करना चाहिये । अग्निके पश्चिम भागमें तोथेदिक परिपूर्ण एक कलसी रख ‘वह नरो शक्रे न’ इत्यादि मन्त्र पाठ करके दश गोधोको स्नान करावे । इसके बाद महस्र गोधोका भी अभ्युक्षण कर उस गौके स्नान जन्मसे ‘इ-नि-क् वंश्व वदिय न’ इत्यादि मन्त्र पाठपूर्वक राजाको अभिषिक्त करना होता है । तप्यथात् ‘सो पात्र मन्त्रेण श्चञ्जन श्चभ्यञ्जन चौर श्चतुर्नेपन कर महस्र गोधोके आगिकी गायकी अलङ्कित करे, और नाथ मातृ-विभन कर्तव्यो सुभाषण इत्यादि मन्त्र पाठपूर्वक गौको

प्रिय भक्ष्य द्रव्य खानिके लिये दें। सहस्रतमो गौको स्पर्श करती हुए “विश्वमन्त्र” इत्यादि मन्त्र जप करना पड़ता है। “मया गावः” तिना मयवम्” इस मन्त्रसे अर्घ्यदान तथा फिर भी गौश्रींको स्पर्श कर ‘मन्त्रिणा प्रति स्पर्शान्’ मन्त्र सहस्रवार जप करते हुए मसस्तु गौश्रींकी प्रदक्षिण पूर्वक नमस्कार करे और ब्राह्मणोंकी स्वस्ति वाचन करा कर दान दे दें। सहस्रतमी गाय और वस्त्रयुगल तथा दक्षिणाके लिये दश गाये यागकर्ता ऋत्विक्की देनी पड़ती है। इस तरह भीसहस्रदान करनेसे सात पुरुषोंके किये हुए सप्त जन्मके पाप नाश होते हैं। (गोपथब्रा०) दूसरे दूसरे पुराणमें भी इसका विधान है। गवा महस्रं, ६-तत् । २ सहस्र गौ, हजार गायें ।

गोसहस्री (सं० स्त्री०) गोसहस्रं तद्दानफलं विद्यते अत्र गोसहस्र-अच् गीराट्वात् डीप् । १ मङ्गलवारयुक्त अमावस्या । मङ्गलवारको अमावस्या होने पर उसको गोसहस्री कहते । इस दिन गङ्गास्नान करनेसे सहस्र गोदान करनेका फल होता है । २ सोमवारयुक्त अमावस्या । इस दिन अरुणोदयकालसे स्नानकाल तक मौन रह स्नान करनेसे गोसहस्रदानका फल होता है ।

गोसा (हिं० पु०) गोइंठा, उपला ।

गोसाई (हिं० पु०) गोस्वामी देना ।

गोसाती (फा० स्त्री०) पाल उतार लेने पर भी जहाजके चलनेमें बाधा डालनेवाली हवा ।

गोसाद (सं० त्रि०) गां सादयति गो-सद्-णिच् अण् उप०-ख० । गो चालक, गौको चलानेवाला ।

गोसादिन् (सं० त्रि०) गां सादयति सद्-णिच्-णिनि, ६-तत् । गोसारथी, गोखालक, गौके चलानेवाला ।

गोसारथी (सं० पु०) गोः सारथिः, ६-तत् । गोचालक वह जो गौको चलाता हो ।

गोसी (देश०) एक प्रकारको नाव जो समुद्रमें चलती है । इसमें २से लेकर ७ तक मस्तूल होते हैं ।

गोसीपरवान (देश०) जहाजके मस्तूलमें पालके जपरोंकी छोरकी चटा बढानेकी एक लखी कड़ ।

गोसुत (सं० पु०) बकड़ा, गौका बच्चा ।

गोसूक्त (सं० पु०) अथर्ववेदका एक अंश । उसमें ब्रह्माण्डकी रचनाकी गौके रूपमें वर्णन किया गया है ।

गोभूत्रिका (सं० स्त्री०) गोवन्धनरज्ज, गा बांधनेकी डीरी ।

गोमेवा (सं० स्त्री०) गोः सेवा, ६-तत् । गोपरिचर्या, गायकी सेवा ।

गोमैयाँ (हिं० पु०) प्रभु, नाथ, मालिक ।

गोस्तन (सं० पु०) गोस्तन इव गुच्छो यस्य, बहुव्री० । १ फूलका गुच्छा । २ चार लड़ीका चार । गो-स्तनः, ६-तत् । ३ गायका स्तन ।

गोस्तना (सं० स्त्री०) गोः स्तन इव फलमस्याः, बहुव्री०, स्वाङ्गत्वात् वा डीप् भावपत्ते टाप् । द्राक्षा, टाक्, मनका ।

गोस्तनाकारा (सं० स्त्री०) खजूरका वृक्ष ।

गोस्तनी (सं० स्त्री०) गोस्तन-इव फलमस्याः, बहुव्री०, स्वाङ्गत्वात् डीप् । १ द्राक्षा, किशमिश । २ कपिलद्राक्षा, अंगुर । गोः स्तना इव स्तना यस्याः, बहुव्री० । ३ कार्तिककी अनुगामिनी सात्वकाश्रममें एक ।

गोस्तनीभव (सं० पु०) द्राक्षाका आमव. मनकाका रस ।

गोस्तोम (सं० पु०) गोनामकः स्तोमः विकल्पपत्ते यत्वा भावः । अग्निष्टोम यागका एक अङ्ग । गोष्टोम ईसा ।

गोस्थान (सं० स्त्री०) गोः स्थानं, ६-तत् । गोष्ठ, गोशाला. गौका स्थान ।

गोस्थानक (सं० स्त्री०) गोस्थान स्वार्थे कन् । गोष्ठ, गुहान, गोशाला ।

गोस्थानी—विशाखपत्तन जिलाके गजपतिनगरसे निगत एक नदी जो प्रायः ४८ सोल दक्षिण-पूर्वकी बहती हुई कोनाड़के निकट समुद्रमें मिल गई है । इसके तीर पर गजपतिनगर और अन्य ग्राम अवस्थित हैं ।

गोसूत्र (सं० पु०) गोसूत्र ।

गोखलु (पु०) शाकल्यके एक शिष्यका नाम ।

गोस्वामिन् (सं० पु०) गवां स्वामो, ६-तत् । १ गौका अधिपति । गवां इन्द्रियाणां स्वामो, ६-तत् । २ उपाधि-विशेष । पूर्वकालमें जो यति आराधना कर इन्द्रियोंकी जय कर लेते अथात् जो इन्द्रियोंके वशीभूत नहीं रहते, उन्हें ‘गोस्वामो’ का उपाधि मिलता था ।

गोस्वामिन्—१ गोस्वामी उपाधिभूषित अमरकोषके बाल-

बोधिनो नामके टीकाकार । २ माधवभट्टाचार्यके प्रसिद्ध गादाधरो नामक सुदृढत्वाययन्यके टिप्पणीकार । ३ नारायणचरित्रमाला, भक्तिरामस्तव और भागवतके टीकाकार । ४ त्रिधवल्लि नामके ज्योतिर्ग्रन्थकार ।

गोस्वामिस्थान (म० लो०) गोस्वामिना यतीनां वाम योग्य स्थान, ६ तत् । हिमालयके एक विख्यात शृङ्ग जिस पर बैठे यति आराधना किया करते थे ।

गोह (म० पु०) गुह्यतेऽत्र गुह्य आधारे धन बाहुलकात् उत्त्वाभाव । रह, घर ।

गोह (हि० स्त्री०) मरीच्यपविशेष, क्षिपकनोकी जातिकी एक जड़नी जन्तु । इसका संस्कृत पर्याय—गोधा, गोध, निहिका गोधिका और दाकमव्याह्रा है । अरबजोमें इसे इगुआना (Iguana) कहते हैं । गोह तीन प्रकारकी होती है—Varanus flavescens, V dracaena, 1 nculosus । दो तरहकी आगरा अञ्चलमें और शेष पूर्व होपुञ्जमें पायी जाती है । प्रथम दो तरहकी गोह दो फुट लम्बी होती और रात्रिकालमें क्षिपकर घर में प्रवेश करती तथा घरके पालित पक्षियोंकी खाई कर भाग जाती है । इसका चमड़ा बहुत मोटा और मजबूत होता है । यह देखनेमें डोक निवले जैसी होती है । इसके फुफकारमें विष रहता है । इसके दशन करने पर पहले शरीरका मांस गलने लगता और तब समस्त अङ्गमें विषका प्रवेश हो जानेसे मनुष्य पञ्चतत्वकी प्राप्त होता है । इसका चमड़ा मजबूत और मोटा रहने के कारण पूर्व समयमें लडाईके समय उ गलियोंकी रक्षा करनेके लिये इसके दस्ताने बनते थे । कोइ कोई मुसलमान तथा अङ्गने जातिया गोहका मांस खाती हैं । अने रिशके घेठ इगडोज होपवामी इसका मांस लवणाक्त कर भिन्न भिन्न देशोंमें रफ्तानो करते हैं । भारतवर्षमें इसका मांस सुग्गा घृत मियण कर एक प्रकारका लेश्याय प्रसुत किया जाता जो सद्यकाग रोगीके लिये एक चलकर मद्दोपध है । इस जंतुमें एक तरहका मेल भी निकलता है । भिन्नलवामी तामिन स्वातिवोश विग्नाम है कि जोधका गोहने जिहा काट कर यदि खाए जाय तो सद्य कागरोग आरोग्य ही आता है ।

वैद्यशास्त्रके मतमें इसके मांसका गुण—वात, श्वास

और काशनाशकारी है । इसका मांस पाक करने पर मधुर, कषाय, कटुरमयुक्त, पित्तनाशक, रक्त और शुक्लद्विकर एव वलकारक होता है ।

गोहत्या (स० स्त्री०) गोहर्नन गो हन कथ् तकारयान्ता-देग । (संस्कृत वा ११।१।००) लोकव्यवहारार्थस्त्री त्व ततय टाप । गोवध गायका कत्न करना । अग्निपुराणमें लिखा है कि राग, द्वेष और धनवधानतासे अपने या दूसरे द्वारा प्राणियोंके म हारके लिए जो काम किया जाता है उसको कत्न या वध कहते हैं ।

‘भाषावर्धगकलभदागारा इतन ५० त्म्
रागाः २६ शाप ६मा १६। १६त ६रत ६र ६। (५० पु०)

शास्त्रकार और मयहकारोंने अज्ञानकृत या अज्ञानकृत दो तरहकी गोहत्या निरूपण को है । ‘इस गंताके मैं स हार करूंगा’ एसी इच्छामें जो गोहत्या की जाती है उसको अज्ञानकृत गोवध कहते हैं । ‘यह गो है ऐसा अज्ञान रहने पर भी यदि गोवध करनेकी इच्छा न रहे तो भी अहित मित्रिके लिये जो गोहत्या की जाती है उसको अज्ञानकृत गोवध कहते हैं । फिर भी गोहत्याके दो भेद हैं, एक माचात् दूसरा परम्पराकृत या अमाचात् । पत्थर, लाठो, शस्त्र या किसी दूसरे हथियारसे यदि बलपूर्वक गो वध किया जाय तो उसे माचात् गोहत्या कहते हैं और रस्मीमें बधी रहनेमें यदि गायकी मृत्यु हो जाय तो उस जगह अमाचात् गोहत्या कही जा सकती है । गोहत्याके लिये जो मद्य प्रायश्चित्त निरूपित है माचात् गोवधमें हत्याकारियोंको दो ममस्त प्रायश्चित्त करने पड़ते हैं । अमाचात् गोवधमें हत्याकारोंके लिये एक चतुर्थांग प्रायश्चित्त नियत है । शास्त्रकारोंने जिस तरहक गोवा लनका विधान निरूपण किया है उस तरहसे पालन करने पर भी यदि गाय मर जाय तो उसे अपानन निमित्त गोवध कहते हैं । (भाषावर्धग)

शे हत्याका शास्त्रिक, शास्त्रिक और शिव २०० ६। १।

प्राचीन हिन्दूशास्त्रमें अनेक तरहके कार्य भी गोहत्या नामसे कई एक भेद उल्लेख किया गया है जो पारिभाषिक शाब्ध कहलाते हैं । विश्वनाथ भास्कर कि विद्याना-दशकौत् । (संस्कृत ० ५०१ ११।१६) सद्यवैयक्तके मतमें दो ममस्त कार्य आतिदेगिकी गोहत्या कए कर निह

पित है। यथा—गौको खानि या जल पीनेके समय बाधा देना, गौ और ब्राह्मणके बीच हो कर जाना, गौको डंटा-से मारना, बैलकी गांड़ीमें जोतना, उच्छिष्ट द्रव्य गौकी खानि देना वृषवाहकोंका पीरोहित्य करना या यजमान होना, अस्त्रमें पैर रखना, पैरसे गौको मारना, स्नानके बाद विना पैर धोये घग्से प्रवेश करना, शुष्क पादसे अर्थात् विना पैर धोये भोजन करना, पैर भिँग रहते गयन करना, कष्टर ब्राह्मणोंका दिनमें दो बार खाना, विधवा स्त्रियोंके हाथ भोजन करना, योनिव्यवसायमें जीविका-निर्वाह करना, मध्या नहीं करना, पर्वकाल (त्योहार) में पित्रुशरण और पुण्यतिथिमें देवताओंकी अर्चना न करना, अतिथि सत्कार न करना, अपने स्वामी और कृष्ण भगवान्में भेद समझना (वैष्णवकुलकामिनियोंके लिये), स्वामीकी कटुवाक्य कहना, गौमार्ग पर गड्ढा करना, तड़ाग या उसके ऊर्ध्वभाग पर शय्य होना, अर्थलोभ या अज्ञानसे गोवध प्रायश्चित्तका न लेना, मवेशीकी रीतिके अनुसार पालन न करना, गौको किसी तरहका दुःख देना, प्राणी देवपूजा, अनल, जल, नैवेद्य, पुष्प और अन्न लहान करना, झूठ बोलना, प्रतारणा, देवता या गुरुद्वेष करना, देवप्रतिमा, गुरु या ब्राह्मणोंकी प्रणाम न करना, इन सब कार्योंकी आतिदेशकी गोहत्या कहते हैं।

(मन्त्रबै० प्रकृति० ३०।१४९-१५१)

स्थलविशेषमें गोहत्या विधेय है या नहीं, इसका विचार उपस्थित होने पर हिंसाकी विधेयता और अविधेयता मानना आवश्यक है।

हिन्दूशास्त्रके मतानुसार हिंसा भाव ही पापजनक और अविधेय है। प्राणीहिंसासे इस लोकमें नरकसा कष्ट भोगना पड़ता है। इसी कारण प्राचीन सामाजिक नियमकर्त्ता या धर्मशास्त्रप्रणीता आर्यगण "नाहिंसोः पुरुष जगत्" इस यजुर्वेदीय उपदेशवाक्य अवलम्बन करते हुए शास्त्रोंमें हिंसाकी अविधेयता तथा हिंसाकारियोंको इस लोक और परलोकमें जो सब यन्त्रणायें भोगने पड़ते हैं, उनका लिपिवद्ध किया है। वेद, स्मृति, इतिहास, पुराण और उपपुराण प्रभृति हिन्दूशास्त्रोंमें हिंसाकी अविधेय कह कर माना है। इसमें तनिक भी मतभेद या व्यवस्थाभेद देख नहीं पड़ता। धर्मशास्त्र और वेदमें

जिस तरह हिंसाकी अविधान बतलाया है, उसी तरह फिर कहीं कहीं हिंसाका विधान भी देखा जाता है। यथा 'अश्वमेधेन यजेत स्वर्गकामः' अर्थात् स्वर्गकामनासे अश्वमेध यज्ञ किया जाता है इत्यादि। इस स्थान पर अत्र आपत्ति इस बातकी उठती है कि, वेद और धर्मशास्त्रमें एक बार हिंसाका निषेध बतलाया और फिर हिंसाका विधान भी किया गया है। इसमें एक दूसरेमें विरोध होनेकी सम्भावना है। प्राचीन ऋषियोंने इसकी मीमांसा कर विधिवाक्यको दो तरहका बतलाया है एक सामान्य और दूसरा विशेष। कोई विशेष बात न ले कर जो विधिवाक्य है उसे सामान्य तथा किसी विशेष स्थल या विषयके लिये जो विधिवाक्य है उसे विशेष कहते हैं।

सामान्य और विशेष देखा।

सामान्यविधि विशेषविधिकी जगह छोड़ दिया करती है। इस स्थान पर "नाहिंसोः पुरुष जगत्" अर्थात् इस जगत्के प्राणीमात्रकी ही हिंसा नहीं करनी चाहिए। इस लिये विशेषविधिका विषय परित्याग कर सामान्य विधिकी प्रवृत्ति होनेसे इस जगह सामान्य विधिवाक्यका ऐसा अर्थ हुआ है। अश्वमेध प्रभृति यज्ञमें जिन जिन पशुओंकी हिंसाका उल्लेख है, उन्हें छोड़ दूसरे प्राणीकी हिंसा नहीं करनी चाहिए, ऐसा होनेसे परस्पर विरोध नहीं रहता है। पशुहिंसाके जितने विधान कहे गये हैं, उन्हें वैधहिंसा और इनके अतिरिक्त हिंसाको अवैध हिंसा कहते हैं। वैधहिंसासे पाप नहीं होता और उसका कोई प्रायश्चित्त भी नहीं है। शास्त्रमें जो समस्त पाप या प्रायश्चित्त निरूपित है, वे सिर्फ अवैधहिंसाके लिये बतलाये गये हैं। ऊपरमें जो कुछ कहा गया है वह मीमांसादर्शनका मत है, स्मृतिसंग्रहकारोंने इसी मतको अवलम्बन किया है। वर्तमान समय यही मत प्रचलित है। लेकिन सांख्य और पातञ्जल इसे स्वीकार नहीं करते, उनके मतसे वैधहिंसामें भी पाप होता है।

प्राणीहिंसा देखा।

अब इस जगह कहना यह है कि जिस तरह अश्वमेधयज्ञमें अश्वहिंसाका विधान है, उसी तरह मनु प्रभृति शास्त्रमें गोमेधयज्ञमें गोहत्याका भी विधान देखा जाता है इस लिये गोहत्या भी विधेय है। गोमेध देखा।

वत मान समर्थम गोमामप्रिय अहिन्दू गारत्र मीमामा का गूढार्थ न जान कर अथवा अपना मत प्रचलित रखने के लिये षड्धा करते हैं कि, गौडहत्या हिन्दूशास्त्रानुमोदित है। इस लिये हिन्दुओंका गोमाम खानिमें किसी तरह की प्रापत्ति नहीं है क्योंकि मधुपर्कमें गौडहत्या करनेका विधान प्राय सभी शास्त्रोंमें देखा जाता है। हे 'महाभारत' महाज वाश्रीतथाध्यायवस्यत । (भा. ११२) अर्थात् श्रौतिय अतिथि होने पर उसे बड़ा बैल या बड़ा हाथ खानिके लिये दिया जाता था।

प्राचीन मस्कृत ग्रन्थ पट्टनेमें भी जाना जाता है कि पूर्व समय श्रौतिय अतिथिगण मधुपर्कमें दिये हुए सवेगी को खाते थे। सूर्यकुलपुरोहित वशिष्ठजी तत्र सहपि ब्राह्मिकिके आयम गये थे तो उन्हें मधुपर्कमें एक बड़डा दिया गया। पश्चिमने बहुत भाट्टमें लभका माम खाया था। इसके सिवा जिस तरह यज्ञयिगममें ङागाडि मारने का विधान है उसी तरह गोमेधयज्ञमें गो मारनेका भी विधान देखा जाता है।

फिर भी वैदिक सूत्रकारोंका मत है कि अथ्येष्टि कालमें एक गोबध करना चाहिए। शिबिन यदि कोई विघ्न हो जाय तो गायके सम्मुखका बायाँ पैर तोड़ कर उसके ऊपर मिट्टीका प्रलेप देवे और तीन बार चिता प्रदक्षिण करा कर उसे छोड़ देना चाहिए। प्राग्बलायन श्रौतसूत्रके मतमें निहत गोको चर्वा ' ४० ' इत्यादि मन्त्र पाठ कर मृत मनुष्यके मस्तक और चक्षु पर रखी जाती है। " ४१ " इत्यादि मन्त्र पठ कर उस गायको हकक गवसे दोनों हाथों पर और उसके मांसादि मृतके दूधमें धड़ पर रखना चाहिए। शिबिन यदि गो न रहे तो गौ के मांसादिके घटने यव और धान्यचूण तथा चर्वाको जगह पिष्टक देने होते हैं। १०

तैत्तिरीय धारण्यकका मत है कि गौ नला कर उस के बटने मृतदेहके साथ एक हाथ बांध कर नाना घाहिए। इन्हीं प्रमाणोंमें बहुत मनुष्या गौहत्याका पण समर्थन किया करते हैं।

यत्रायमें यदि शास्त्रीय मीमामा करने हो तो किस

समय और किम मनुष्यके प्रति किस उद्देशसे शास्त्रकारोंने कैसा विधान किया है, उसके प्रति विगोप लक्ष्य रखना चाहिए। प्राचीन धर्मशास्त्रमें जितने भी विधान देखे जाते वे खाम कर एक मनुष्य या एक कालके लिये नहीं हैं। मत्स्युगमें मानवोंके सात्विकभाव और प्रताप अधिक थे, उसी समयके लिये एक तरहका विधान था, द्वितीयादिन मानवप्रकृतिको सात्विकताकी न्यूनता और शक्ति ज्ञानके साथ साथ व्यवस्था तथा विधानका भी तारतम्य होता आ रहा है। मत्स्युगमें हापरके शेष काल तक मधुपर्कमें पशुबध और गोमेधयज्ञमें गौहृि मा प्रभृतिकी प्रथा प्रचलित थी एव उस हिमाकी वेधद्विधा कहा जाता था। किन्तु उस समय भी अथैध गौहृिमाका कठिन प्रायश्चित्त और ज्ञान पूर्वक गौहृत्या करनेसे हिमाकारियोंको सामाजिक नियमसे दण्ड मिला करता था। हापरके शेषकाल में धर्मशास्त्रवित् परिणामदर्शी ऋषियोंने मिन कर कनि कालके लिये जो नियम बनाये हैं, मधुपर्कमें पशुबध और गोमेधयज्ञ निषिद्ध है। १० अतएव हिन्दूधर्मशास्त्रके मत से कलियुगमें किसी तरहको गौहृि मा विधेय नहीं है। अज्ञानमें गौहृत्या करने पर यथाविहित प्रायश्चित्त कर लेनेसे पाप नाश होता एव हिमाकारी ममाजमें व्यवहार्य हो सकता है किन्तु ज्ञान पूर्वक गौहृत्याकारियोंका कोई निस्तार नहीं है।

निर्णयमिन्धुप्रणता कमलाकर कहते हैं कि धर्मशास्त्रमें लिखा है कि — ' ४४१ ' शिवादिष्ट पण मगाधरेतु' अर्थात् शास्त्रविहित होने पर भी जो कार्य पत्यन्त दुस्वजनक या स्वर्गप्रतिकूल है तथा जो कार्य पधिकार्य मनुष्योंकी समझमें अनभिमत है, उसका पाचरण कटावि न करना चाहिए। अतएव धर्मशास्त्रके मतमें

- श्रावणविधानम् (श्रावण मरणात्मकम्)
- म मरुदय पादुपु मयके पण ४४
- श्रौतमेतरेणाम् पुनम न परदृष्ट
- पानि लोकमय- कसेरौ महाप्रम ।
- निधनि नां कर्माणि चरन्त्यायुष क पुष ।
- ममयदवि पापुनां प्रमाय वि पदमर्षम्

(ईम विधान परिचयक)

' ४४४ ' मरुदय पादुपु मयके पण ४४

ममयुषमन्त्रे कनि, व भांशुपु मयोपे १० ' (इहकारौष)

किलकालमें मधुपर्कमें गोवध और गोमधयज्ञ निषिद्ध है इसके अनुष्ठानसे पाप होता है ।

शास्त्रमें इस तरह गोहत्या निषिद्ध और गौके प्रति विशेष यत्न और सम्मान प्रदर्शनकी कथा लिखित रहनेसे मात्त्विक हिन्दूगण गोहत्याके विशेष विरोधी हैं और इसी लिये गोहत्याकारी विधमि योंके साथ बहुत दिनोंमें विवाट विमर्वाद और सैक्रों हत्याकाण्ड हुआ करते हैं ।

मुसलमानोंके राजत्व कालमें गोहत्या ले कर सबे टा वादानुवाद हुआ करता था । आइन-अकबरि और मुत्ताख्व उक्तवारिख पढ़नेसे जाना जाता है कि इनी लिये प्रजा-रञ्जक अकाबर बादशाहने गोहत्याकी प्रथा कुछ कालके लिये उठा रखी थी । लेकिन हिन्दू विद्वेषी और इजिप्तके समयमें यह प्रथा फिर भी विशेषरूपसे प्रचलित हो गई थी । उस समय हिन्दू मुसलमानोंमें गोहत्या ले कर जैसा भीषण काण्ड हुआ था वह वर्णनातीत है । भारतमें हिन्दूके समक्ष गोहत्या न की जाय इसके लिये दिल्ली-खर शाह आलमने एक नियम प्रचार किया था । बङ्गालमें भी गोहत्या ले कर हिन्दू और मुसलमानोंमें कैसा द्वेष था और बङ्गालके नवाबोंने इसके प्रतिविधानके लिये किस तरह चेष्टा की वो वह गुलाम हुसैनके वनाये हुए 'सियार उल्ल मुताखिरीन' नामक इतिहास पढ़नेसे ही जाना जाता है ।

गोहृद—मध्यभारतमें ग्वालियर राज्यके अन्तर्गत एक नगर । यह अक्षा० २६° २६' ७०" और देशा० ७८° २७' पू० पर ग्वालियरसे इटावा जानेके पथ पर तथा सिन्धकी सहायक नदी वैसलीके दाहिने किनारे अवस्थित है । नगर अच्छी तरहसे सुगठित और सुरक्षित है । लोकसंख्या प्रायः ५३४३ है । पूर्व समयमें यह एक जाट सदाँरकी राजधानी थी । इसके वंशज अभी धोलपुरमें राज्य करते हैं । १७०७ से १७३८ ई० तक यह फिर भद्रुरिया राजपूतके अधीन रहा, किन्तु इसके दूमरे वर्षमें राना भीमसिंह पुनः इसे अपने अधिकारमें लाये । १७७८ ई०में गोहृदके राणा और सिन्धियामें लड़ाई छिड़ी । उस समय ब्रिटिश गवर्नरने गोहृदके राणाका पक्ष ले ग्वालियर जीत कर राणाको दे दिया । लेकिन थोड़े दिनोंके बाद ही सिन्धियाने रानाको मार भगाया और ग्वालियर

राज्यको अधिकारमें लाया । ये इतनेहीमें मन्सुखन हुए, परन्तु गोहृद नगर पर भी चढ़ाई कर दी । १८०३ ई०के बन्दोवस्तके अनुसार गोहृद नगर ग्वालियर राज्यमें मिला लिया गया और गोहृदके रानाको उसके बदले दोलपुर राज्य मिला । गोहृदमें चारों ओर पत्थरके ऊपर सटीकी दीवार है । यहाँका दुर्ग बहुत बड़ा था उसकी चोटी बहुत ऊँची है । पहले यहाँ बहुत मनुष्योंका वास था । लेकिन दिनों दिन नगरका ह्रास होता जा रहा है । यहाँ एक मक़ल, डाकघर तथा एक पुलिस घर है ।

गोहृन् (मं० त्रि०) गां हन्ति गो हृन्-विच १ गोहृन्ता, गांका मारनेवाला, कमाई, वृत्त । (पु०) २ से प्रस्थित जनभेटक इन्द्र ।

गोहृन (मं० त्रि०) गृह्णति मं हृणोति गृहृन्त्य, छान्दसत्वा दुत्वाभावः । १ मन्वरक, छिपानेवाला । (क्री०) २ गोमय-गोवर ।

गोहृन (हिं० पु०) १ मायो संग, रहनेवाला । २ सद्ग-माथ ।

गोहृना (गौना) युक्तप्रदेशके गढ़वाल जिलेका एक ज़ेद (भोल) यह अक्षा० ३०° २२' ३०" और देशा० ७८° २८' पू० गोहृना नामके ग्रामके पाम अवस्थित है । वादके समय इसमें अधिक पानी हो जानेके कारण इसके पाम ही एक सेतु भी बना दिया गया है ।

गोहृनियां (हिं० पु०) संगी, साथी ।

गोहृन्न (सं० क्तो०) हृद पुरीषोत्सर्गं क हृन्नं गोहृन्नः, ह-तत । गोमय, गोवर ।

गोहृमुख (मं० पु०) भारतवर्षस्य एक पर्वत । भागवतमें यह गोकामुक नामसे उक्त है और विष्णुपुराणमें इसका नाम गोहृमुख रत्न गया है ।

गोहर (सं० पु०) १ गोहरण गौका चुराना ।

गोहर (हिं० स्त्री०) १ विसखोपड़ा नामक जंतु ।

गोहरा (हिं० पु०) सुखा हुआ गोवर, जो जलावनके काममें आता है ।

गोहराना (हिं० क्तो०) पुकारना, बुलाना, शब्द करना ।

गोहरीतकी (मं० स्त्री०) गोहृ रोतकीव हितकारीत्वात् । विल्ववृक्ष, बेलका पेड़ ।

गोहरौर (हि० पु०) पर्वे टुवे कडाका डेर ।

गोहला (स० स्त्री०) शीषार १० वीं ।

गोहलोत (हि० पु०) राजपूतोंकी एक शाखा । मशहूरत रकी ।

गोहल (स० स्त्री०) गोमय, गोबर ।

गोहलम (देश०) एक प्रकारका वृक्ष ।

गोहान—१ पञ्जाब प्रदेशके राहंतक जिलेकी एक तह सोल । यह अक्षा० २८ ५७ तथा २८ १७ उ० और देशा० ७८ २६ एव ५२ पू० मध्य अवस्थित है । यहांकी लोकसंख्या प्राय १४७०८५ और भूपरिमाण ३३६ वर्ग-मील है । इसमें गोहाना बडोदा और बुटाना नामके तीन शहर तथा ७८ ग्राम लगते हैं । यहांकी आय दो लाखसे अधिक रुपयेकी है ।

२ पंजाबमें रोहतक जिलेके अन्तर्गत गोहान तह सोलका महर । यह अक्षा० २८ ८ उ० और देशा० ७६ ४० पू०में अवस्थित है । लोकसंख्या प्राय ६५६० है । यहां सुप्रसिद्ध मुहम्मद घोरके मज्ही शाह जिया उद्दीन मुहम्मद नामक एक सुमनमान साधुकी कब्र है । उन्हींके उपलक्षमें प्रतिवर्ष मेला लगता है । यहां पाषाणकाल के देवका मन्दिर, महर कचहरी, थाना डाकघर और विद्यालय हैं ।

गोहार (हि० स्त्री०) १ प्रकार, दुहाई । २ हस्ता शुद्धा, शौर, चित्राहट ।

गोहारी (हि० स्त्री०) १ गोहार । २ वह धा जो कोई हानि पूरी करनेके लिये हो ।

गोहालिका (स० स्त्री०) लताविशेष ।

गोहिमा (स० स्त्री०) गोहि मा, इतत् । गोहत्या, गो वध, गोका मारना ।

गोहिल (स० पु०) गोपु हित, इतत् । १ विस, बिलका पेड़ । २ घोषा नामकी लता । ३ विष्णु । (त्रि०) ४ गोहितकारक, गोकी भनाई करनेवाला ।

गोहिर (स० स्त्री०) गुह पाहुलसात् इरत् । १ पाद मूल, एडी । (पु०) २ अथम जातिकका घोडा ।

गोही (हि० स्त्री०) १ उराव, डिपाव । २ गुणवाप्रा, छिपी हुई बात । ३ महयुका बीज । ४ फलीका बीज गठनी ।

गोहुवन (हि० पु०) एक तरहका विपधर मर्प ।

गोहरा (हि० पु०) विमखोपरा नामक विपैला जन्तु ।

गोहेनवाड—बम्बई प्रदेशके काठियावाडका करद राज्य ।

गोहेन राजपूतोंके नाम पर इस भ्यानका नामकरण हुआ है । इसकी राजधानी भवनगर है, राजधानीके नामसे यह भवनगर कह कर प्रसिद्ध है । यहांके राजगण गोहेन राजपूतवर्गीय हैं । लोकसंख्या प्राय ५८१०७८ और भूपरिमाण ४-१० वर्गमील है । यहांकी आय ५५२७७८७ रुपयेकी है ।

गोह्य (स० त्रि०) गुह्य वा एतत् । १ गुह्य, गोपनीय, छिपाने लायक । २ अप्रकाश्य, जिसका प्रकाश करना उचित नहीं । ३ सचरणीय ।

गौ (हि० स्त्री०) १ सुयोग, मोक्षा, धात, टाँव । २ प्रयो जन, मतलब, गरज ।

गौच (हि०) गौच इति ।

गौट (देश०) उत्तर और पश्चिम भारतमें होनेवाला एक तरहका छोटा वृक्ष । इसकी लकड़ो पीनापन लिये बहुत कठो जेतो है ।

गौटा (हि० पु०) प्रजाकी भनाईके लिये या परीपकार धर्म आदिके विचारसे जमीन्दार कर्तक खर्च । २ छोटा गाँव, छोटी बस्ती ।

गौ (स० स्त्री०) गाय, गैरा । गौ दंशा ।

गौकच (स० त्रि०) गौकचस्य छात्र, गौकच्य अण् यलो पय । गौकचका छात्र, गौकच्यका विद्यार्थी ।

गौकच्य (स० पु० स्त्री०) गौकचस्य ऋषिर्गौत्रापत्य गौकच्य गर्गादित्वाद् षञ् । गौकच नामक गोलापतर, गौकचका वृक्ष ।

गौकच्यायणि (स० पु० स्त्री०) गौकचस्य अपतर गौकच्य तिकादित्वात् फिञ् । गौकच्यका अपतर ।

गौकाल (स०) गोवाच देवो ।

गौख (हि० स्त्री०) १ खिडकी, भरोखा । २ दालान या बरामदा ।

गौखा (हि० पु०) भरोखा, गोख ।

गौखी (हि० स्त्री०) जूता ।

गौगा (अ० पु०) १ गौर, गुन, जमा । २ जनश्रुति, अक वाह ।

गौगुलव (स० त्रि०) गुगुले मय । गुगुत्तु पण् । गुगुलमे उत्पद्य, जो गुगुलमे पैदा हुआ हो ।

गौड़व (सं० ली०) सामभेद ।

गौचरिक (सं० त्रि०) गौचर भवः गौचर-अण् । गौचर-
पात, जो गौचरसे उत्पन्न हुआ हो । गौचर दे० स्त्री ।

गौचरी (हि० स्त्री०) गाय चरानिका कर । जमीन्दार
गौ चरानेके लिये थोड़ा जमीन छोड़ देता और उसके
बदले अपनी प्रजासे कर लिया करता है ।

गौच्य (सं० पु०) गौचा हिमालयपत्तनः अपनरं गौची
वाहुलकात् यत् । हिमालयके पुत्र, मनाक ।

गौञ्जिक (सं० पु०) गुञ्जा परिमाणविशेषः तां ग्रन्थितुं शील-
संख्या गुञ्जा ठक् । स्वर्णकार, सोनार ।

गौड़ (सं० पु०) एक विस्तृत प्राचीन जनपद या देश ।
शक्तिसङ्घमतन्त्रमें ऐसा लिखा है कि, वङ्गदेशमें लगा कर
भुवनेश्वरकी सीमा तक गौड़देश कहाता है । (१) और
वहाँके लोग सब शास्त्रीमें विशारद होते हैं । शक्ति-
सङ्घमेंके अनुवर्ती ही कविकङ्कण ने “धन्यगजा मानमिंह,
विष्णुपदाभोजभृङ्ग, गौड़वङ्ग उक्कल अधिप ।” ऐसा लिख
कर गौड़राज्यकी वङ्ग और उड़िष्यासे पृथक् बताया है ।

परन्तु ई० ११वीं शताब्दीमें कृष्णमिश्रने अपने
प्रबोधचन्द्रोदयनाटकमें अनुपमा राड़ापुरीकी भी गौड़
राज्यके अन्तर्गत कहा है । (२) वर्तमानमें वर्द्धमान
और उसके दक्षिण हिस्सेकी लोग “राड़ा” या “राड़”
कहा करते हैं । ऐसे तो कृष्णमिश्रके मतसे वर्द्धमान
आदि स्थान भी गौड़राज्यके अन्तर्गत समझे जायेंगे ।

इसके अलावा ७वीं शताब्दीमें वराहमिहिरने ऐसा
लिखा है कि, गौड़, पीण्डू, वङ्ग और वर्द्धमान सब
पृथक्-पृथक्-जनपद हैं । (३)

कूर्मपुराण तथा लिङ्गपुराणमें यह लिखा है कि
सूर्यवंशीय आवस्तिपुत्र वंशकने गौड़देशमें आवस्ती
नगरी रची थी । आवस्तीका वर्तमान नाम शेटमहेट है
जोकि अयोध्याके अन्तर्गत है । अयोध्यामें गौण्डा नामका

(१) “वङ्गदेशं समारम्भ सुवन्दे शालगं शिवे ।

गौडदेशः समाख्यातः सर्वं शास्त्रविशारदः ॥”

(२) “गौडराष्ट्रमनुत्तमं निरुपमा तत्रापि राडापुरी ।”

(३) “उदयगिरि-भद्र-गौडक-पीण्डू-क्कल काशि-नेकलान्धराः ।

एकपद-तावदितिका कोशलकवर्द्धमानस्य ॥

आग्नेया दिशि कोशलकलिङ्गवङ्गोपवङ्गउडराहा ।”

एक बड़ा जिला है, उसका नाम भी गौड़ है, यही कूर्म-
और लिङ्गपुराण वर्णित गौड़देश है । (४) कर्णा दे० स्त्री ।
विष्णुशर्माके हितोपदेशमें लिखा है—

“यस्मि गौड़विषये कोशास्यो नाम नगरो ॥”

गौड़राज्यमें कोशास्यी नामकी नगरी है । कोशास्यी-
का वर्तमान नाम कोमाम् है, यह इलाहाबाद जिलेमें है ।
कोशास्यो दे० स्त्री ।

इन्दीकी नौवां, दशवीं और ग्यारवीं शताब्दीमें
उत्कीर्ण राष्ट्रकूट और चेदिगजाओंके तास्त्रशामन तथा
शिलालेखोंमें जाना जाता है कि,—चेदि, मालव और
वराह राज्यके सीमान्तमें एक गौड़देश था । गौड़ दे० स्त्री ।
राजतरङ्गिणीमें भी (४।४६५) लिखा है—

“पद्मीश्रधिवान् । जतः शगरः तदथ यम् ।”

अर्थात्—काश्मीरराज जयादित्यने पद्मगौड़के राजा-
ओंको जीत कर शशुरकी उनका अर्धाश्वर बना दिया
था ।

कविकङ्कणके पूर्ववर्ती माधवाचार्यने अपने दुर्गा-
साहाय्यमें एकबार वादशाहका परिचय देते समय लिखा
है कि—

“पद्मीश्र नाम ता देश प्राच्योमे सारश्च ।

अकबर नामका राजा पञ्च नका पदमारश्च ॥”

स्कन्दपुराणीय सहायद्रिखण्डमें भी लिखा है—

“सारस्वताः कान्यकुला उक्कला मंदिशाय धे ।

गौडाय पद्मधा धेव पद्मगौडाः प्रकीर्तिताः ॥” (उत्तरार्द्ध १५०)

सारस्वत अर्थात् सरस्वतीके किनारेके, कन्नोज, उक्कल,
मिथिला और गौड़के रहनेवाले ब्राह्मणोंको पद्मगौड़
कहते हैं : उपरोक्त प्रमाणसे ऐसा मालूम होता है कि,
गौड़ नामका देश एक ही नहीं था, बल्कि पांच थे ।
उनमेंसे सरस्वतीनदीप्रवाहित कुरुक्षेत्रमें एक था, इला-
हाबाद और कान्यकुब्जके बीचमें एक, अयोध्यामें एक,
मिथिला और वङ्गदेशके बीचमें एक तथा वर्तमान
उड़िष्या और मध्यप्रदेशके अन्तर्गत गोण्डावानाके बीचमें
एक, इस प्रकार पाँच गौड़ थे । इन पद्मगौड़के अधि-
वासी ब्राह्मण ही बादमें सारस्वत, कान्यकुब्ज गौड़,

(४) “आवस्थिय महातेजा वंशकन्तु ततोऽभवत् ।

निर्मिता येन आवकी गौडदेशे द्विकोत्तमाः ॥” (कूर्म और लिङ्गपुराण)

मैथिल और उल्ल नामसे प्रसिद्ध हुए ।

उक्त पञ्चगौडोम मिथिला और बङ्गदेशक बोचके गोडराज्यकी मत्र ही जानते हैं। इतिहासमें भी यही गोडराज्य प्रसिद्ध है, दूसरे गोडराज्यका उल्लेख नहीं है। पहिले इस गोडराज्यका आयतन कितना बड़ा था, यह नहीं कहा जा सकता ।

बाणभट्टके श्रीहर्षचरितमें लिखा है कि,—राज्यवर्द्धन और हर्षवर्द्धनके समयमें गोडके नरेन्द्रगुप्त नामके एक राजा थे। चीनपरिव्राजक ह्युएनत्सुयाङ्गने बोडहंपी शशाङ्क नामसे उस राजाका उल्लेख किया है। कर्णसुवर्ण-में शशाङ्ककी राजधानी थी।

उक्त चीनपरिव्राजकने पोण्डुवर्द्धन और कर्णसुवर्ण इन दोनोंको भिन्न भिन्न राज्य बतलाया है। कणसुवर्ण ५५५।

बाणभट्टने हर्षचरितमें कर्णसुवर्णके राजाको ही गोड राज कहा है। इसी गोडराज नरेन्द्रगुप्तने हर्षके भाई राज्यवर्द्धनकी मार डाला था। ईस्वीकी छठी शताब्दीके अन्तमें यह घटना हुई थी, अर्थात् सातवीं शताब्दीके अन्तमें नरेन्द्रदेव मारे गये।

राजतरङ्गिणीके पटनेसे मालूम होता है कि, सातवीं शताब्दीके अन्तमें काश्मीरराज ललितादिताने गोडराज्य जय किया था और गोडराज काश्मीर चले गये थे। उसके बाद आठमी शताब्दीमें काश्मीरराज जयादित्य गोडराज्यमें आये थे, उस समय गोडके राजा जयन्त थे और उनकी राजधानी पोण्डुवर्द्धनमें थी। राजतरङ्गिणी और ह्युएनत्सुयाङ्गके भ्रमणवृत्तान्तके पटनेसे जाना जाता है कि, ईस्वीकी ७वीं शताब्दीमें यह गोडराज्य भी कई भागोंमें विभक्त था। परन्तु आठवीं शताब्दीमें पौडुवर्द्धन के राजा जयन्त दामादकी महायतासे सारे गोडके अधीन कर हुए थे और उन्होंने एककृत राजा ह्युएन आदिगुर उपाधि ग्रहण की थी।

प्राचीन कुलाचार्य हरिमिथकी सूदीय कारिकामें लिखा है—आदिगुरके व शधरंनि बद्ध दिनां तक गोडमें राज्य किया था। ये सब ही ब्राह्मण्यधर्मावलम्बे थे। इनके बाद पालव शीय देवपाल राजा हुए थे। पाल व शीय राजाओंकी ताम्ब और शिलालिपियोंसे ज्ञात होता है कि, देवपालके ताजधर्मपालने इन्द्रराजकी पराजय किया था। सम्भव है कि, इन्होंने ८४० या ८४१ ई०-में गोडराज्य अधिकार किया हो और इसी लिए आदिगुर व शका अध पतन हुआ है। पालव शीय राजाओंकी राजधानी भी पौडुवर्द्धनमें थी।

इससे पहिले लिख आये है कि, आदिगुर पञ्चगौडके श्रीशिवर हुए थे, उनके समयमें बङ्ग और राठ भी गोड राज्यके अन्तर्गत था। परन्तु पालव शीय राजाओंके शेष समयमें बङ्ग और राठ गोड या पौडुवर्द्धन राजाके अन्तर्गत नहीं था। तिरुमलयगिरिके शिलालेखसे मालूम होता है कि द्दिग्विजयो राजेन्द्रचौलके समयमें (ई० १०वीं शताब्दीमें) उत्तरराठ, दक्षिणराठ, बङ्ग और पुंड्रभूमि ये सब पृथक् पृथक् स्वतन्त्र राजा थे। उस समय उत्तर-राठके राजा महीपाल, दक्षिणराठके रणशूर, बङ्गदेशके गोविन्दचन्द्र और पुंड्रभूमि । या पौडुवर्द्धनके धर्मपाल राजा थे। महाराज राजेन्द्रचौलने उक्त राजाओंकी परास्त किया था (१)।

• ये रणशूर संभवत आदिगुरके व शके कोट राजा हूँगे । गोपालाजीके पास मुजुपा परगणामें एक प्राचीन शायदप्राजय श्रुति, उल्लेख है कि, आदिगुर व शीय कोट राजा चन्द्रपालके दूरके दूतके निधि गये थे, उसी मौके पर पालव शीयने गोडराज्य दखन कर लिया था। आदिगुरव शीय राजाने मार्गमें यह शहर सुनो और वरुके दिवालयमें लक्ष्मी बाधव लिया। मुजु-पालके ये कायस्थ उन्नीके व शहर हैं। यदि यह बात सच हो तो ईस्वीकी १०वीं शताब्दीके अन्तमें और ११वीं शताब्दीके प्रारम्भमें आदिगुरव शीय रणशूर दक्षिणराठका राजा करले थे, यह भी संभवत सच ही है।

† सुप्रसिद्ध प्राचीनलिपिविद ह्युएनत्सु साहबने "दृष्टभूमि" पढ़ा है, पालव संभवत "दृष्ट" न ही कर "पुष्ट" हीमा।

(१) ह्युएनत्सु साहबने उक्त विवरणबद्धके शिलालेखकी प्रतिनिधि प्रकाशित की है; (F. Hultzsch's South Indian Inscriptions. Vol I p 94) उक्त प्रतिनिधिको ह्युएनत्सु साहबने लिखा है—'Takkana Ialam and Uttara Ialam are Northern and South India (Gujrat) the former was taken from a certain Ransar' (1) 97

• शब्दकल्पद्रुपमें शब्दपुराणोय वचन कथं वर 'सारभता च कल्पद्रुप' गोडके विनिःकल्पना । पंचगौड इति राजाता विष्णुव्यास(प्राचिन) । इत्यादि उक्तुं विद्या कथा है। परन्तु विष्णुव्यास(प्राचिन) यह बात चयन मत जान पड़ता है क्योंकि इसमें ता चदि, मालव और वराहके नामालय तो उल्लेख और शशकनाके शोचन प्राचीन गोडवर्द्धनपंचगौड देवसे भिन्न है। लाता है। वही वचनसे मज्जाविच्छेद पार हो चकत मान न पड़ता है।

इसके थोड़े ही दिन बाद सेनवंशीय प्रथम राजा विजयसेन, राढ़से आ कर गौड़ाधिपति हुए थे। उनके वंशके राजा गौड़ेश्वर नामसे प्रसिद्ध हैं। गौड़देश बहुत पुराना है, परन्तु उस समय भी इसका गौड़ ही नाम था, इसका कोई विशेष प्रमाण नहीं मिला। विजयसेनके पूर्ववर्ती राजा पौड्रवर्धन, कर्णसुवर्ण आदि नगरोंमें रहते थे। कर्णसुवर्ण, पौण्ड्र, आदि शब्द देखो।

विजयसेनके पुत्र बल्लासेनने गङ्गाके किनारे गौड़ नामके नगरमें अपनी राजधानी स्थापन की थी। उनके पुत्र सहाराज लक्ष्मणसेनने उस नगरका नाम लक्ष्मणावती रखा था। फिर उन्होंने नवद्वोपमें दूसरी एक राजधानी स्थापित की थी। जिस प्रकार हिन्दू राजा अपनेको गौड़ेश्वर कह कर परिचय देते थे, उसी प्रकार सेनराजके परवर्ती मुसलमान राजगण लखनौति या लक्ष्मणावतीके अधिपति कह कर अपना परिचय दिया करते थे। उस समयके सब ही मुसलमानी इतिहासोंमें गौड़का मुसलमान अधिपति भूभाग 'लखनौती' राजके नामसे वर्णित हुआ है। परन्तु आज तक भी वह नगर गौड़ नामसे प्रसिद्ध है।

अभी मालटह जिलेमें गङ्गाके प्राचीन गर्भमें अक्षा० २४° ५४' ३०" और देशा० ८८° ८' ५०"में वह प्राचीन गौड़ अवस्थित है, जो इस समय बाघ, भालू आँका जंगल ही रहा है।

उन्होंने मूल दामिलमें "तक्षण-लाडम" और "उत्तिर-लाडम" शब्द देख कर (गुजरातके) दक्षिणलाट और उत्तरलाटका निश्चय कर लिया, परन्तु यह निश्चयत अश्लेषिक ज्ञान पड़ता है। राजेन्द्रचौलने किस समयमें गुजरात पर अधिकार किया था, उसका कोई विशेष प्रमाण नहीं मिला। एक शिला लेखमें "बङ्गालदेश" के साथ साथ "तक्षण-लाडम" और "उत्तिरलाडम" का भी उल्लेख है। सिद्धलेके प्रसिद्ध पालिष्य 'महा०श'में बङ्गालके चतुर्गत्त 'लाड' नामके स्थानका वर्णन देखनेमें आता है। पहिले लिखा जा चुका है कि, ईस्वीकी ग्यारहवीं शताब्दीमें बचे हुए प्रबोधचन्द्रोदयनाटकके सबसे "गदापुरी" गौड़राजके चर्चमें है। बंगदेशीय प्राचेन कुलाचार्योंके ग्रन्थोंमें और वर्तमान बंगसमाजमें उत्तरराष्ट्रीय, दक्षिणराष्ट्रीय, बङ्गाल, वारिन्द्र आदि स्थानानुसार अनेकविभाग प्रचलित हैं। इस देशके कुलाचार्योंका विश्वास है कि, गौड़ाधिप आदिशूरके ममग्रसे ही वे अनेक विभाग चले आये हैं। इत्यादि कारणोंसे राजेंद्रचौलके शिलालेखमें मिले हुए 'तक्षण लाडम' और 'उत्तिर-लाडम' का उर्थ दक्षिणराट और उत्तरराट ज्ञान कर के बिना किसी सन्देहके पक्ष किये गये।

हरिसिंहकी प्राचीन कारिकामें लिखा है कि, लक्ष्मणसेनके पुत्र राजा केशवसेनने यवनोंके भयसे गौड़राज्य छोड़ दिया था। इसमें मालूम होता है कि, केशवसेनके राजत्वकालमें ही मुहम्मद-इ-बख्तियारने गौड़राज्य अधिकार किया था।

मुसलमानोंके अत्याचारोंमें सेनराजाओंकी प्रतिष्ठित यहाँकी तमाम हिन्दू कीर्तियाँ विनष्ट हो गई थीं। गौड़में किम जगह सेनराजगण रहते थे, मुसलमानोंने उसका चिह्न तक नहीं छोड़ा। इस नगरके दक्षिणगर्भमें "पातालचण्डो" और उत्तरगर्भमें "फुलवाड़ीटरवाजा" इन नामोंकी देख कर प्रवृत्तत्वविद् कनिङ्गहाम साहबने अनुमान किया है कि, सेनराजाओंके समयकी प्राचेन गौड़राजधानी इस अंशमें और उत्तर-दक्षिणमें करीब ४ वर्ग मील तक विस्तृत थी। इसमें गङ्गास्नानघाट, लोहगड़, धर्मपुर, व्यामपुर और राजचन्द्रपुर आदि नामोंके रहनेसे ऐसा मालूम होता है कि, यहाँ हिन्दुओंका वास था। फुलवाड़ीटरवाजिमें एक पुराना दुर्ग है। आइन-ए-अकबरीमें ग्राबुलफजलने लिखा है कि, "गौड़के दुर्गके निर्माता बल्लासेन है।" इससे अनुमान किया जा सकता है कि, फुलवाड़ीका प्राचेन दुर्ग बल्लासेनका बनाया हुआ है। फुलवाड़ी टरवाजिसे ४ मील उत्तरमें बल्लावाड़ी नामकी एक जगह है। इसके चारों तरफ ऊँची टीवार है। शायद इसी स्थानमें बल्लासेन कभी कभी रहते भी थे।

इस नगरसे १६०० गज विस्तृत "बड़सागर" नामका एक झर है। बड़तोका कहना है कि इतनी बड़ी भील बङ्गालमें दूसरी नहीं है। यह भी सेनराजाओंकी एक पुरानी कीर्ति है। बड़सागरकी छोड़ कर पावकोसके करीब जानेसे कमलावाड़ी नामका एक ग्राम पड़ता है, यहाँ गौड़ोंकी अधिष्ठात्री देवी "गौड़ेश्वरी"का मन्दिर है। पुण्यप्रदा हारवामिनीके नामसे यह स्थान प्रसिद्ध है। अभी तक प्रतिवर्ष जेठ मासमें यहाँ मेला भी लगता है।

मुसलमानोंके आधिपत्यके समय गौड़, बङ्गालके सब नगरोंसे ज्यादा समृद्धिशास्ती था। उस समय गौड़ नगर-उत्तर-दक्षिणमें ७ मील और पूर्व-पश्चिममें २ मीलके करीब

था। कुल भूपरिमाण १३ वर्ग मील था। उपनगरों सहित यहि माप रखा जाय तो करीब २० से ३० वर्ग मील तक विस्तृत था। यहाँ ६७ लाख आदिमियोंका वास था। मिन्हाजकी तबकत ए नासिरीके मतमें (११८८ ई०में) ब-तियार पुत्रने यहाँ शासनदण्ड स्थापन किया था। १२०५ ई०में उनके हल्याकाण्डके बाद दिल्लीके अधीनतामें मुसलमान नवाबोंने १२८६ ई० तक यहाँ रह कर मुसलमानअधिष्ठत गौडराज्यका शासन किया था। सम्ब्राट्-पलवाको मृत्युके बाद नासिरीउद्दीन बगरा खानिं यहाका स्वाधीन राज्य अधिकार किया था। कुत-उद्दीन् आइबकको मृत्युके बाद इसाम् उद्दीनने अपना गियाम उद्दीन नाम रख कर स्वाधीनतासे यहाँका राज्य किया था। उद्दीने यहाकी फुलवाडोसे एक कीमकी दूरी पर दक्षिणकी ओर एक मजबूत किला बनवाया था और टेबकोटसे कांकजोल तक ऊँचा बाँध बना कर रास्ता बनवाई थी। यह मडक करीब २७ कोस तक गई है।

१३२६ ई०में दिल्लीशर मुहम्मद तुगलकने लक्ष्मणा यती पर आक्रमण किया था। उस समय वहाँके सुलतान बहादुरशाहकी पुन दिल्लीजी प्रबोधना स्वीकार करनी पडी थी। इसी समयमें सुवर्णग्राममें और भी एक स्वाधीन राजधानी स्थापित हुई थी।

१३३८ ई०में हाजी इलियास स्वाधीन बन गये थे। दिल्लीके बादशाह फ़िरोजशाहने इनके राज पर दो बार हमला किया था, पर कुछ कर न सके थे। फ़िरोजशाहके आक्रमण करनेके समय हाजी इलियास पाण्डुया में रहते थे। उनके पुत्र मिक्न्दरने गौडको छोड़ कर पाण्डुआमें राजधानी की थी। इससे गौडमें लोकसख्या कुछ घट गई थी।

१४४२ ई०में प्रथम मामूद पुन आ कर गौडमें राजधानी स्थापित की थी। इसके बाद शेरशाहके आक्रमणकाल तक बङ्गालके सुलतान राजा यही रहते थे। शेरशाहके समयमें गौडका दूसरा नाम त्रिव्रतावाद भी था। फिर हुमायुनने इसका नाम बखलावाद रखा था। इस समयमें टैङ्गरा नामक स्थानमें फिर राजधानी स्थानांतरित हुई थी।

बङ्गदेशीय नवाबोंमें आपसमें युद्ध होनेके कारण धीरे धीरे गौडदेश श्रीहीन हो गया था और बहाकी प्रजा भी घट गई थी। इस पर भी आपगानवयोग्य बगालके शेष स्वाधीन राजा दाउद खानिं गौडराजधानीको न छोड़ सके थे। १५७५ ई०में दाउद खानिं पूण रूपसे पराजित होने पर अकबरके सेनापति मुनिम् खानिं गौड अधिकार किया था। यही बगदेशके शासनदण्डका सुप्य सदर बनानेकी भी बात चीत चली थी। मोगलोंके राजप्रतिनिधि हमेशा गौड नगरमें आ कर रहा करते थे। बादमें १६३८ ई०में शाहसुजाने जब राजमहलमें राजधानी स्थापित की, तब लोग धीरे धीरे गौडको छोड़ कर अयत जाने लगे। इस प्रकारसे बहुत दिनोंका पुराना गौड महानगर क्रमशः जनहीन हो कर अब जगनी जानबरीका रहनेका जङ्गल हो गया है।

गङ्गाके स्त्रीतसे इस नगरका पश्चिमका भाग विष्णुल धुल गया है और दूसरे हिस्सेमें कदम रसूल कोन वाली दरवाजा, दाखिल दरवाजा, फ़िरोजमोनार, गुण मन्त, लचन, ताँतीपाडा और मोना नामकी बड़ी बड़ी मसजिदों तथा बड़ी बड़ी अष्टालिकाओंका भग्नावशेष पडा है, जो मुसलमानोंकी मस्जिदका और बगदेशके शिल्प-नैपुण्यकी पराकाष्ठा दिखला रहा है।

गौडका प्रसिद दुर्ग बुडी गंगाके किनारेके फुलवाडी किला और कोतवाली दरवाजेके बीचमें अवस्थित है। इसको चारों तरफ चहार दीवारी घेर उसके बाद गहरी खाई है। यह प्राचीर ३० फुट ऊँची और तलेमें १६० फुट चौडी है। खाई भर जाने पर २०० फुट विस्तृत होती है। प्राचीर पर अब बड़े बड़े जगनी पेड़ उत्पन्न हो गये हैं। खाईमें काफी सरकण्डे और बड़े बड़े मगर देखनेमें आते हैं।

किमी किसोका अनुमान है कि, १म मामूदने और उनके उत्तराधिकारियोंने यह दुर्ग बनवाया था। इस किलेके दो प्रधान द्वार हैं जिनमेंसे उत्तरके प्रवेशद्वारका नाम दाखिल या सन्नामी दरवाजा है। यद्यपि इसका अधिकार्य नष्ट हो गया है, पर तोभी जितना है उससे उस दृष्टसे बने हुए किलेकी कारोगरीका काफी परिचय मिलता है।

किलेके पूर्वके दरवाजिका नाम लक्ष्मिपि है। यहां की खोटी हुई लिपिसे मालूम होता है कि, हिजिरा सं० ८१८ (१५१२ ई०) में गौड़ाधिप हुशैन शाहने उम दरवाजिकी बनवाया था। उत्तरद्वारकी जाति समय बीच में चन्द-दरवाजा और नीम-दरवाजा नामके दो प्राचीन द्वार मिलते हैं, जो हि० सं० ४७६ (१४६६ ई०) में सुलतान बार्बकशाहके बनाये हुए हैं।

गौड़के ध्वंससे आविष्कृत पारस्यभाषाके शिलालेखसे मालूम होता है कि,—६०० वर्गगज जंचा फिरोज मीनार ८८५ हिजरामें, तांतीपाड़ाको मसजिद ८८० हिजरामें, नर्तन मसजिद ८८८ हि०में, गुणमन्त मसजिद ८३२ हि०में तथा वड़मोना मसजिद और कोतवाली दरवाजा ६२७ हिजरामें बना था।

फिरोजमीनारके दक्षिण-पूर्वमें 'पियासवाड़ी' नाम की एक बड़ी पुष्करिणी है। इसका पानी तुनखरा और बहुत ही गन्दा है। आइन ए-अकबरीमें ऐसा लिखा है कि, पहिले अपराधियोंको सिर्फ उमौ तालाबका पानी पिलाया जाता था और उसे पी-पी कर वे मर जाया करते थे।

गौड़के पार्श्ववर्ती उपनगरोंमें भी मुसलमानोंकी काफी कोठियां मिलती हैं। उनसेसे फिरोजपुरकी (८८८से ८२८ हिजराकी बनी हुई) छोटी सोना-मसजिद और निजामत उम्राकी बारहदारी तथा सादुल्लापुरकी (७५० की बनी हुई) सेख आखिमिराजकी कब्र और (६४१ हि०की बनी हुई) फनफनिया मसजिद हो मुख्य हैं।

गौड़नगरका अधिकांश भाग जङ्गल हो गया था। थोड़े ही दिन हुए हींगे गवमेंएटने उसे साफ करानेके अभिप्रायसे वहां सामान्य करमें प्रजा बसा दीं हैं। अब वहाँ खेत बोये जाते हैं और धीरे धीरे जङ्गल भी साफ होता जाता है। (२)।

(द्वि०) गुड़स्य विकार गुरु-अण् । २ गुड़विकार-खण्ड, आमव आदि जो गुड़से बनता हो ।

“गुडस्य दशा मद्यस्य पोवा गौडं मृगमवम्।” (भारत १।४४ अः)

३ रागविशेष, देवगिरि और गान्धारके योगसे उत्पन्न हुए समस्त राग। इसका पञ्चम वादो और ऋ, ग, ध, नि, कोमल होता है। यह राग वीर और शृङ्गाररसमें रात्रिके समय गाने-योग्य है। यह मेघरागका पुत्र है और किसी किसीके मतसे योरागका पुत्र है।

(म० रत्नाकर)

४ एक धर्मशास्त्रकार और प्राचान वैयाकरण। चोरस्वामी और कमलाकरने इनका उल्लेख किया है। गौड़क (सं० पु०) गौड़निवासी, गौड़देशका रहनेवाला। गौड़ देशो।

गौड़कण्डग (सं० पु०) वन्यघोटकविशेष, एक तरहका जङ्गली घोड़ा।

गौड़कायस्थ—पश्चिम अञ्चलके कायस्थ जातिकी एक शाखा। कायस्थ देशो।

गौड़तगा—युक्तप्रदेशमें रहनेवाले ब्राह्मणोंकी एक जाति। देहली, रोहिलखण्ड और दोआबमें ये बहुत देखे जाते हैं। इनका कहना है कि जनमेजय सर्पसत्र करनेके लिए गौड़देशसे बहुत ब्राह्मणोंको लाया था, यज्ञकी समाप्ति पर जनमेजयने उन्हें पारितोषिक स्वरूप दान करनेको इच्छा की। किसी किसीने दान लेनेसे अस्वीकार किया, किन्तु थोड़ोंने भूमिदान लिया था। वे जिन्होंने भूमि दान ग्रहण किया था, ब्राह्मणधर्म त्याग कर कषिकार्यमें लग गए। इसी 'तगा'के अपभ्रंशसे उनका "तग" या तगा" नाम हुआ है। जिन्होंने अपनी उपाधि और ब्राह्मणवृत्ति नहीं छोड़ी थी, वे ही गौड़-ब्राह्मण नामसे विख्यात हुए। कोई कोई इसे स्वीकार नहीं करते कि गौड़ब्राह्मण गौड़देशसे आए हुए थे। वे बोलते हैं कि, हरियाणा और विकानौर अञ्चलमें उनके पूर्वपुरुष रहते थे।

दोआबके उत्तरवासी गौड़तगा अपनेको गौड़ ब्राह्मणसे सम्पूर्ण भिन्न बनलाते हैं।

इनके कई एक श्रेणीभेद हैं। यथा—मङ्गल, तित-वाल, महेश्वर, वमियान्, दत्तियान्, करावाल, मुक्त, दीक्षित, अईमलि और टभ।

(२) विध्वस्त गौड़ नगरका विस्तृत विवरण जाननेके लिए निम्नलिखित पुस्तकें देखनी चाहिये,—H. Creighton's Ruins of Gaur, Ravenshaw's Gaur, Martin's Eastern India, Vol. II., Journal Bengal Asiatic Society, Vols XLI and XLII, A Cunningham's Arch. Sur. Reports, Vol XV, 39-76, W. W. Hunter's Imp. Gaz. Calcutta Review, Vol. LXIX July.

देहान्तो अञ्चलमें गौड ब्राह्मण और गौडतगाके मध्य आदान प्रदान प्रचलित है, लेकिन दूसरे स्थानोंमें ऐसा नहीं है। नेरठ और मुणदाबाट अञ्चलमें बहुतसे इसलाम धर्मावलम्बी गौडतगा देखे जाते हैं।

गौडनट—गौड और नटके योगसे बना हुआ एक राग।

(सङ्गीतरत्नाकर)

गौडपाद (स० पु०) एक प्रसिद्ध वैदान्तिक, शङ्कराचार्यके गुरुके गुरु और गौविन्दनाथके गुरु। इन्होंने माण्डूक्योपनिषद्कारिका, अनुगीताभाष्य, उत्तरगीताभाष्य, साध्यकारिकाभाष्य, नृसिंहतापिनीभाष्य और द्वैवीमाहात्म्यके चिदानन्दविलास नामकी टीका रचना की है।

चमारिल यत् देखो।

गौडपार्श्व—बौद्धमत नामक स स्तुत ग्रन्थप्रणीता।

गौडपुर—एक शहरका नाम। गौड देख।

गौडश्रव्यपुर (स० स्त्री०) एक प्राचीन नगर।

गौडमझार (स० पु०) गौड और मझारके योगसे उत्पन्न एक राग जो वर्षाऋतुमें रातके दूसरे पहरेमें गाया जाता है। इसका स्वरधाम इस प्रकार है—ऋ ग म प ध नि म।

(स गौतरत्नाकर)

गौडराजपूत—राजपूतके छत्तौस कुलोंमेंसे एक। प्रसिद्ध ऐतिहासिक टाड साहबके मतसे वहके स्वाधीन हिन्दू राजा इसी गौडराजपूतवशसे थे। युक्तप्रदेशमें सब जगह गौडराजपूतोंका वाम है, इनमेंसे बहुत जमोन्दार हो गये हैं। पूर्व समयमें ये स्वाधीन थे। बुहान उल्मुल्क, सादत खां प्रभृतिक समय गौडराजपूत मुसलमानोंके ऊपर बहुत अन्याय किया करते थे, अन्तमें वे पूर्ण रूपसे पराजित हुए। टाड साहबके मतसे गौडराजपूतोंमें पांच शाखा हैं, न किन्तु युक्तप्रदेशके गौडराजपूत भाट गौड, बामन गौड और चमार गौड गिफे ये ही तीन शाखा मानते हैं। कठरिया नामकी एक चोथी थंणो भी नेकी जाती है। चमारगौडका कथन है कि किसी समय जब वे नौग विपदमें पड़े थे, उस समय उनको एक गध यती स्त्रीने किमी एक चमारके घर जा आश्रय लिया था। चमारने उसे सहायता दी थी इस कारण नव जात शिशुका नाम भी चमारगौड पडा। भाट धार बामनगौड भी इसी तरह आश्रय पा कर भी कृतज्ञता

प्रकाश न की थी, इसो लिये वे चमारगौडकी अपेक्षा कुलमर्यादामें नीचे गिने जाते हैं। चमारगौड अपनेको चोहार या चिमनगौड भी कहा करते हैं। इनका कहना है कि, इस जातिमें चोहार नामके एक राजा और चिमन नामके एक मुनि थे, उन्हीके नाम पर ये अपना परिचय देते हैं। चमारगौडमें फिर राजा और राय नामके दो भेद हैं। इन दोनोंमें आदान प्रदान चलता है। हिमालयस्थ क्षणवार, सुखेत मन्दी, किशोर्यल प्रभृति स्थानोंके राजा अपनेको गौडराजपूतके जैसा परिचय देते हैं। वे कहते हैं कि उनके पूर्व पुरुष बह्मदेशसे जा बहा वाम करते हैं।

गौडवान्मूक (स० पु० स्त्री०) गौडजात वास्तूक मध्य पदलो०। चिल्लीगार।

गौडब्राह्मण—दश तरहके ब्राह्मणोंमेंसे एक। गौड और भाद्रप देवा। युक्तप्रदेश और विहारमें इस थंणोके ब्राह्मण रहते हैं।

गौडब्राह्मणोंका कथन है कि, वे गौड राज्यसे उत्तर-पश्चिममें जा बसे हैं। गौडना देवी। टिल्लीमें भी इनकी सख्या अधिक है। कनोजिया प्रभृति थंणियोंको अपेक्षा ये अनेकागमें मूर्ख हैं। हिन्दीजातिमानांमें इनकी ऊह शाखा में है—गौड, परोक, वर्रानू, खण्डेनवाल, मारस्वत और सन्देन। किन्तु कीइ कीइ गौड ब्राह्मण उक्त शाखायें स्वीकार नहीं करते हैं, उनके मतसे गौड ब्राह्मणोंमें ४२ विभाग हैं जिनमेंसे प्राध, लुगद, कैथन, गूजर, धरम और सिद्धगौड प्रधान गिने जाते हैं।

गौडसारङ्ग—गौड और सारङ्गके योगसे बना हुआ एक राग।

यह श्रोत्रऋतुमें दो पहरेसे पहले गाया जाता है।

गौडमीधु (स० पु०) गुडकृत तीक्ष्णमध्य, गुडका बना हुआ एक तरहकी तेज श्राव।

गौडाचार्य—वर्त्तमान युगके एक प्रधान आचार्य।

गौडाभिनन्द—एक कविका नाम।

गौडारस (स० पु०) शूनरीगका शोषध। रमिन्दूर ५ भाग, शृतनौह ५ भाग, शतायरी, घामनकी एव गुडुचीकायमें तीन टिन भाषना देने चाहिये। चार रत्तो परिमाणकी मावाका प्रतिदिन छत घोर मधुके साथ सेवन करनेसे शूनरीग नाग होता है।

गौड़ासव (सं० पु०) गुड़कृत आसव, गुड़का बना हुआ शराव ।

गौड़िक (सं० त्रि०) गुड़े भवः गुड़-ठक् । १ गुड़ीत्वन्, गुड़से बना हुआ । (पु०) गुड़े साधुः गुड़-ठक् । २ इक्षु, ऊह, केतागे । गौड़ं गुड़विकारः साधनतया प्रस्यस्य गौड़-ठन् । ३ मद्यविशेष, गुड़से बनी हुई शराव ।

गौड़ी (सं० स्त्री०) गुड़स्य विकारः गुड़-अण् स्त्रियां ङोप् । १ गुड़से बनी हुई एक तरहकी शराव । इसका पर्याय—वाल्कली है । इसका गुण—तौक्षण, उष्ण, मधुर, वातनाशक, पित्त, वल, कान्ति और तृप्तिकर, दीपन और पथ्य है । (राजनि०)

हारोतके मतसे इसका गुण—कपाय, मधुर, अम्ल, शीतल, सन्दीपन, शूलरोगनाशक, रुचिकर, त्रिदोष, अजीर्ण, पाण्डु, आमय और अर्शनाशक है । (१११ प्र०)

तन्त्रमतमें इसकी प्रस्तुत प्रणाली यों है—वज्र, ल वृच की छालका चूर्ण २० सेर धातकौफूल या नारियल फूल २ सेर, हरीतकी और वहेड़ा ८ निष्क, चिता और विक्रूट (लवणविशेष) १ निष्क, इन समस्त द्रव्योंके साथ गुड़ मिला कर एक पात्रमें रखते एवं अनुलोम और विलोम-क्रमसे १०८ बार हस्त द्वारा संचालन करते हैं । तीन दिन तक इसी तरह करना पड़ता है । तत्पश्चात् १० दिन तक पाक करना चाहिये । इसीको गौड़ी कहते हैं ।

कुलाश्रय प्रम उद्गास, मनुके मतसे इसका सेवन ब्राह्मणोंके लिये अविधेय है । बृहस्पतिका कथन है कि गौड़ी मदिरा ग्रहण करने पर ब्राह्मणको तमसकच्छ, पराक और चान्द्रायणव्रत करना चाहिए ।

राजनिघण्टुका मत है कि सिद्धि, गजपिप्पली, दधि और गुड़ मिला कर पाक करनेसे गौड़ोमद्य प्रस्तुत होता है ।

आत्रेयसंहिताके मतसे धातकौफूलमें अधिक परिमाण गुड़ मिलाने पर गौड़ोमदिरा बन जाता है । इसका गुण—तौक्षण, उष्ण, मधुर, वातनाशक, वल और पित्तवृद्धिकर, कान्ति और तृप्तिजनक, पथ्य, अग्नि और कामवर्द्धक है ।

२ काव्यमें एक प्रकारकी रीति । शरीरके अवयव

संस्थानके न्याय पदमंयोजनाकी काव्यकी रीति कहते हैं । रीतिके चार भेद हैं—वैदर्भी, गौड़ी, पाञ्चाली और लाटिका जिस रचनामें ओज गुणप्रकाशक अनेक वर्ण एवं दीर्घ समास आते हैं, उसे गौड़ी रीति कहते हैं । गौड़वासीगण इस रीतिकी अपने व्यवहारमें अधिक लाते हैं । इसीसे इसका नाम गौड़ी पड़ा । ३ मंपूर्ण जातिकी एक रागिणी जो रातके पहले पहरमें गाई जाती है । कुछ लोग इसे कल्याण रागका एक भेद मानते हैं । यह वीर और शृङ्गाररसके वर्णनके लिये बहुत उपयुक्त होती है ।

गौड़ीय (सं० त्रि०) गौड़देशसम्बन्धी, गौड़देशका ।

गौड़ीया (सं० स्त्री०) गौड़ी रीति संज्ञा देखा ।

गौड़ेश्वर (सं० पु०) कृष्णचैतन्यस्वामी जिन्हें गौराङ्ग महाप्रभु भी कहते हैं ।

गौण (सं० त्रि०) गुणादागता गौणी तत आगतः गौणी-अण् । १ गौणी लक्षण द्वारा जिस अर्थका ज्ञान हो उसे गौण कहते हैं । २ अप्रधान, जो प्रधान या मुख्य न हो । ३ सहायक, सञ्चारी । ४ गुण सम्बन्धीय ।

गौणकाल (सं० पु०) गौणीमुख्यः कालः । मुख्यकालके कर्तव्य कर्मका करने योग्य कालान्तर ।

गौणचान्द्र (सं० पु०) गौणीप्रधानचान्द्रचान्द्रमासः कमेधा० । कृष्ण प्रतिपद्से पौर्णमासी पर्यंत तोस तिथिकी गौणचान्द्र मास कहते हैं । थोड़े धर्मशास्त्रकार गौणचान्द्रमास स्वीकार नहीं करते, जो कोई स्वीकार करते हैं उनके मतसे भी विंध्य पर्वतके दक्षिणमें इस मासका चलन नहीं है । विन्ध्यदेशके उत्तरमें गौणचान्द्र और मुख्यचान्द्र इन दो प्रकारके मासोंको व्यवस्था है ।

सुवर्णान्द्र देखो ।

गौणिविम्बी (सं० स्त्री०) विम्बीभेद ।

गौणिक (सं० त्रि०) गुणे रूपादौ साधुः गुण-ठक् । १ गुणसाधन । २ सत्व, रज, तम आदि गुणोंसे संबंध रखनेवाला । ३ गुणवेत्ता, गुणी । ४ गुणप्रतिपादक अन्यकी अध्ययन करनेवाला । (पु०) गुण एव गुण अङ्गुल्यादित्वात् स्वार्थं ठक् । ५ गुण ।

गौणी (सं० स्त्री०) गुणं सादृश्यमधिकतया प्रवृत्ता गुण-अण्-ङोप् । १ अस्मी प्रकारकी लक्षणाओंमेंसे एक लक्षणा जिसमें सिर्फ किसी एक वस्तुका गुण ले कर दूसरोंमें

आरोपित किया जाता है। १७७ दक्षा। २ लोणिकायाशक।
३ मन शिला। (वि०) ४ अग्रधान, साधारण, जो मुख्य
न मानी जाय।

गौख्य (स० स्त्री०) गौणस्य भाव गौण यत्। १ गुणता,
गुणत्व, गुणका धर्म। (पु०) २ कश्चिक, कश्चिकधाम।
गौखलपाडेम्—नेलूर जिलेके मध्य समुद्रके उपकूलवर्ती
एक ग्राम। यह नेलूर नगरसे प्राय १७ मोन उत्तरपूर्वमें
अवस्थित है। यहके रहनेवाले इस स्थानको रामतीर्थ
कह कर मानते हैं। यहां एक प्राचीन और भवन शिव
मन्दिर है जिसके प्रवेशद्वारके ऊपर अस्पष्ट अक्षरमें
एक शिनाफलक उलकीर्ण है। वह अक्षर किस भाषाका
है इसका निरूपण नहीं किया जा सकता है। मन्दिरसे
एक मील दूर गावके बीच ही कर वकि हम खाल प्रधा
हित है।

गौतम (स० पु०) गौतमस्य ऋषिरपता गौतम अण्।
१ गौतम ऋषिके य शज। २ भरहाज मुनि। ३ समपि
मण्डलके ताराश्रीमेंसे एक। ४ अहल्याका पुत्र शतानन्द।
५ कृपाचार्य। कृपाचार्य शका। गौतम्या' पालित अपता
गौतमी बाहुनकात् अण्। ६ गौतमोसे प्रतिपालित शाक्य
मुनि। इसका पर्याय—शाक्यमुनि, शाक्यसिंह, सर्वार्थ
सिद्ध, शोडोदन, अर्कवन्धु, मायादेवोसुत, स्वजित, श्वेत
केतु, धर्मकेतु, महासुनि, पञ्चज्ञान, सर्वदर्शी, महायोधि,
महाबल, बहुचम, विमूर्ति, सिद्धार्थ और शक है। ७
रामायण, महाभारत और पुराणों आदिके अनुसार एक
ऋषि जिन्होंने अपनी स्त्री अहल्याको इन्द्रके साथ अनुचित
सम्बन्ध करनेके कारण शाप देकर पत्थर बना दिया था।
बाद अहल्याने भगवान् रामचन्द्रजीके चरणों परगंसे ही
उद्धार पाया था। ८ एक स्मृति शास्त्रकार। कुलमणि,
मस्कोरो, हरदत्त प्रभृति प्रखिलगणने गौतमस्मृतिकी
टीका लिखी है। गौतमका बनाया हुआ पिटलमें धनुष
प्रभृति वैदिक ग्रन्थ पाये जाते। ९ दानचन्द्रिकाके रच
यिता। १० एक न्यायशास्त्रकार। ११ बुद्धदेवका एक
नाम। १२ नासिकके निकटका एक पर्वतका नाम जहाँसे
गोदावरी नदी निकलती है। १३ क्षत्रियोंका एक भेद।
गौतम शाश्वत भी। १४ भूमिहारोंका एक भेद। १५ लिगधर
जैनियोंके चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामीके गणधर।

१६ स्थावर विषमेद। एक जैन गृहस्था। इन्होंने प्रति-
क्रमण टीका (श्लो० ३०००) और सम्बोधनशासिका
नामके दो ग्रन्थ रचे हैं।

गौतमगणधर—दिगम्बर जैन मतानुसार आजसे करीब
२४५० वर्ष पहले जब कि भगवान् महावीर स्वामीकी
केवलज्ञानकी प्राप्ति हुई थी, उस समय इन्द्र समस्त देवीं
सहित मध्यलोकमें आया और उनके समवमरणकी रचना
कराई। इसके बाद भगवान्को दिव्यध्वनि खिरने लगी,
परन्तु विना गणधरके उसका अर्थ कौन समझावे। तब
इन्द्रने अवधिज्ञानमें जाना कि, इन्द्रभृति नामक एक
ब्राह्मण पण्डित जो कि गौतम नामसे प्रसिद्ध है, वह जिन-
धर्ममें विरुद्ध चार वेद, अठारह पुराणादिक समस्त
शास्त्रोंका ज्ञाता है। उसको किमी प्रकारसे बहका कर
यहाँ लाऊ तो भगवान्का दर्शन करते ही वह जौधर्म
धारण करके भगवान्का गणधर बन जायगा। इस पर
इन्द्रने एक कठिन श्लोक बना कर छद्मब्राह्मणका स्वरूप
धारण किया और जहाँ गौतम अपने ५०० शिष्योंकी
पढा रहा था, वहाँ पर गया और बोला—“मैं ब्रह्ममात्र
स्वामीका शिष्य हूँ, वे एक श्लोक बता कर तत्काल ही
ध्यानमें बैठ गये, मुझे इस श्लोकका अर्थ तक नहीं बताया,
नाचार आपका नाम सुन कर आया हूँ, कृपा कर आप
इसका अर्थ बता दीजिये।” गौतमने कहा कि ‘हम
तुम्हारे श्लोकका अर्थ तो बता देंगे, पर तुम्हें हमारा
शिष्य बनना पड़ेगा।’ इन्द्रने ऐसा मञ्जूष कर लिया।
इसी समय एक शिष्य बोल उठा कि—“यदि हमारे एक
श्लोकका तुम्हारे शुक अर्थ बता देंगे तो हम ५०० शिष्य
उनके शिष्य बन जायेंगे।” इसके बाद गौतमने इन्द्रसे
श्लोक पृच्छा। इन्द्र इस प्रकार बोला—

‘वेदाल्य द्रव्यपटु सङ्गमर्षिगिषा शय लो भव न।
विश्वे पश्चिक्वाय ततलभिति वर सर्वतस्मानि पुनः ।
सिद्ध साय म्बुप विधिकनितमम ओरपटुप ११७ श्लो० ।
एतन्व प्रदुधति शिष्यवचन एते मुचिमानो समस्य ११

इस श्लोककी सुन कर इन्द्रभृति (गौतम) बड़े विचार
में पड़ गया। तीन काल कीमते, कुछ द्रव्य और ती पदार्थ
कीमते १ ये सब किस अर्थमें हैं १ आदि गद्गाओंका
कुछ निर्णय न कर सके। बहुत मोच विचारके बाद

गौतमने इन्द्रसे कहा—“उल्ल, तबे गुरुके पास ही इसका अर्थ बताजंगा।” इन्द्र तो यह चाहता ही था कि, किसी प्रकार यह समवसरणमें पहुँचे। इसके बाद गौतम अपने ५०० शिष्यों तथा अपने वायुभूति और अग्निभूति नामके दोनो विद्वान् भ्राताओं सहित समवसरणमें जानकी तयार हो गया। इन दोनों भ्राताओंके भी प्रत्येकके पाँच पाँचसौ शिष्य थे। समवसरणमें पहुँचनेके पहिले ही दरवाजे पर “मानस्ताम” देखा। इसके देखते ही सबका मान गलित हो गया, तब नस्त्रतापूर्वक समवसरणमें जा कर उसकी विभूति और भगवान्की देख कर उनके सिध्या विचार सब नष्ट हो गये। भक्तिसे तीन प्रदक्षिणा दे कर नमस्कार किया और १००८ नामोंसे उनकी स्तुति कर अनुप्रासभार्ये जा कर बैठ गये। इसके बाद इन्द्रभूति (गौतम) ने भगवान्से धर्मोपदेश देनेके लिए प्रार्थना की। इस पर महावीर स्वामीने सनाभङ्गी न्याय जीव, अजीव, आस्रव, बन्ध, भंवर, निर्जरा और मोक्ष इन सात तत्त्वोंका और सम्यक् आदिका सविस्तृत वर्णन किया। उपदेशके सुननेसे गौतम आदिको वैराग्य उत्पन्न हुआ। उसी समय दोनों भ्राता और ५०० शिष्यों सहित गौतमने दिगम्बरी दीक्षा धारण कर साधु हो गये। गौतमको उनी टिन अवधि और मनःपर्ययज्ञानकी प्राप्ति हुई और उन्होने महावीरस्वामीके प्रथम गणधर हो कर द्वादश्यां वाणीकी रचना की। इस प्रकार गौतम गणधरकी इत्यक्तिका इतिहास जैनशास्त्रोंमें पाया जाता है।

महावीरस्वामीके इन्द्रभूति, वायुभूति, अग्निभूति, आदि ११ गणधर थे। महावीरस्वामीके सुक्ति गये पीछे (२४४८ वर्ष हुए है) कुछ वर्ष बाद गौतमस्वामी भी केवलज्ञान पूर्वक श्रीसद्योदशिक्षर (जो कि हजारीबाग जिलेमें है)से मोक्ष गये हैं। इस महान् पर्वत पर इनका मन्दिर भी बना है। (श्रीमहावीरपुराण, मोक्ष कल्याण प्रकरण)

गौतमपुरा—मध्यभारतके इन्दौर राज्यके अन्तर्गत इन्दौर जिलेका शहर। यह अक्षा० २२° ५८' उ० और देशा० ७५° ३५' पू०में इन्दौर शहरसे ३३ मील उत्तर-पश्चिम और राजपूताना-मालवा-रेलवेके अखिल छेशनमें ३ मील पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ३२०३ है। कहा जाता

है कि यह शहर १०५६ में मन्जहारराव होलकरकी स्त्री गौतमवार्ध द्वारा स्थापित किया गया है और उर्हाँके नाम पर शहरका नाम गौतमपुर पड़ा है। यह कपड़े में छोट छापनेके व्यवसायके लिये प्रसिद्ध है। गौतमवाड़का बनाया हुआ यहाँ अपलेश्वर महादेवका एक बृहत्मन्दिर है। इस में अनावा यहाँ स्कूल और चिकित्सालय भी है। गौतमराजपूत—चन्द्रवंशीय राजपूत जातिकी एक शाखा। यह जाति राजपूतोंके कृत्तीस कुलोंमें न्यायी है। बुन्देलखण्ड, बनारस, गाजीपुर आगामा, सूतायूर, कोरा, कुठियागुमीर, विन्दकी, फतेपुर, परगणा, जाजसी, सेलिमपुर, इत्तामनगर, देवगांव, निजामाबाद और गोरखपुरके अन्तर्गत अतरौलिया, मञ्जेली, अरझाबाद आदि स्थानोंमें इनका वास है।

किसी समयमें इन गौतम वंशीयराजपूतोंने निम्न दोआबमें स्वाधीन भावमें राज्य किया था। कोरा परगणाकी विन्दी नदीके किनारेमें जो आर्गल ग्राम है, उसमें इनकी राजधानी थी। वर्तमानमें यद्यपि उनके वंशधरोंकी क्षमताका झंसा ही गया है, पर तो भी वे आज राजमखानसे समाहत होते हैं। ये कहते हैं कि, “हम लोग पहिले ब्राह्मण थे। हमारे पूर्व पुरुष शृङ्गो ऋषि, कन्नौजके गहरवाड़राजके निमन्वण करने पर पुत्रों सहित राजसदनमें पहुँचे। राजाने मुनिके पुत्र शृङ्गीऋषिकी अपनी कन्या व्याह दी, और कन्नौजसे कोरा तकके समस्त ग्राम देहेजमें दिये थे। राजकन्याके साथ विवाह करनेसे वे राजपूतोंमें शामिल किये गए।”

इनमें राजा, राणा, राव और रावत ये चार श्रेणियाँ हैं। राजाश्रेणीके समाजपति आर्गलमें, रावोंके बरहानपुरमें, राणाओंके चित्तौमें और रावतोंके समाजपति भाजपुरमें रहते हैं।

अर्द्धगौतम नामकी और भी एक राजपूतोंकी श्रेणी है, यह श्रेणी पहिले जिनवर राजपूतके नामसे प्रसिद्ध थी। इन लौगीने आर्गलके राजाकी मतरञ्ज खिलना सिखाया था, इस पर राजाने इनकी विन्दकी परगणमें २८ गाँव दिये थे। तब हीसे ये लोग अर्द्धगौतम कहालाते हैं।

गोरखपुरके गौतमराजपूतोंका कहना है कि, किसी

ममय सारा बुद्धे लण्ड जो उनके अधिकारमें था ।

जौनपुर और उसके पूर्वाञ्चलके गौतमराजपूत सोम व श्री, वचगोती, वन्धलगोता, राजवार और राजकुमार आदि अन्यान्य श्रेणियोंके साथ विवाहका सम्बन्ध रखते हैं । और दोषात्रके गौतमराजपूत भादौरिया, कच्छवाह, राठौर, गहलौत, चोहान, तूषार आदि भिन्न भिन्न श्रेणियोंमें कन्या दान करते हैं ।

आजिमगढके गौतमराजपूतोंने इक्ष्वाक धर्म ग्रहण कर लिया है ।

गौतमसम्भवा (स० स्तो०) गौतमाय तदघनागाय सम्भर्वाति स भू अच् । गोदावरो नदी । गोदावरो देखो ।

गौतमस्वामी—नेतनवधपर देखो ।

गौतमी (स० स्त्री०) गौतमस्य द्वय गौतम अण् डोप । १ दुर्गा । २ गौतम ऋषियो स्त्री, अहल्या । ३ राक्षसो विशेष । ४ गोदावरो नदी । ५ गौरोचन । गौतमस्या पत्य स्त्री गौतम अण् डोप । ६ रूपो, गौतमव श्रीय गरहानुको कन्या । (महाभारत ११।२१) ७ गायत्रीस्वरूपा महादेवी । (शंभो मा० १५।१।७०) ८ गौतम प्रणीत न्याय-विद्या ।

गौतमीपुत्र—१ अध्वश्रीय एक राजा, शिवसामीके पुत्र । वायुपुराणके मतसे इन्होंने २१ वर्ष एव ब्रह्माण्डपुराणके मतसे ३४ वर्ष तक राज्य किया । नामिकमें गौतमपुत्रके समकक्ष शिन्धुमय अति सुन्दर एक कन्दरा है । २ वाकाटक व श्रीय एक पराक्रान्त राजा, वाकाटक महाराज रुद्रसेनके पिता । इन्होंने भारगवके महाराज भवनागर को कन्यासे विवाह किया था । (भाटट ३ देखो)

गौतमीय (स० त्रि०) गौतमस्यैट गौतम छ । गौतम सम्बन्धीय ।

गौतमेस्वर (स० पु०) गौतम इस्वर प्रभुर्भूष, बद्धवी० । तोर्यं विगिष्य । (महापुराण)

गोप्त—भारतके दक्षिणपश्चिमका एक प्राचीन राजवंश । ई०को १२वीं और १३वीं शताब्दोंमें ये लोग अपनेको महासामन्तके रूप में अपने परचय दिया करते थे । फ्लोट गण्डवका अनुमान है कि, यह गौत्तवग सोय वश्रीय राजावीकी कौड पन्थतम शायदा है । ये लोग पश्चिमके वायुपुराणके कर देनपाल राजा के और सम्भवत

धारवार जिलेमें तथा महिस्वर राज्यमें इनका वास था । क्योंकि, धारवार जिलेके चोह्टामपुर ग्रामको चारों तरफ और महिस्वरके हानविट नगरमें, चानुक्यके राजा छठे विक्रमादित्यके समयमें (१) १०७५से १२२६ ई०के भीतरके गिलान खीमें और उनके बादके राजाओंके समय में (२) ११७६ से ८० तक, (३) ११८१-८२, (४) ११८७-८८, (५) ११८९-९२, (६) १२१३-१४, (७) १२३७-३८, (८) १२६२ से ६३ ई० तकके सब मिलाकर वारोच श्राट गिलाने खीमें इन गौत्तसामन्त राजाओंका परिचय मिलता है ।

गौत्तम (स० पु०) गच्छतीति ग गात्रमुत्तायति षट् तम अच स्वार्थे अण् । स्यावरविपभेद ।

गौदन्त्य (स० त्रि०) गौदन्त्यस्य ट गौदन्त टक । गौदन्त चन्दनसम्बन्धीय ।

गौदानिक (स० त्रि०) गौदान कर्माभ्य गौदान ठक् । १ गोदानाख्य ब्रह्मचर्य । गौदाने उक्त ठक् । गौदानोक्त कर्म, गौदान करनेका काम ।

गौदुमा (द्वि० वि०) गौवदुम गायकी पृक्के आकारका । गौधार (स० पु०) गोधाया अपत गोधा आरक् । गोधा पुत्र, गोह जन्तुकी मन्तान ।

गौधूम (स० त्रि०) गोधूमस्य विकारः गोधूम अण् । गोधूमका विकार, गेहूँ में तैयार किया हुआ, गेटी इत्यादि । गोधुमी (स० स्त्री०) गोधूमस्य निव गोधूम खञ् । गोधूम उपपन्न होनेका उत्तम चैत गेहूँ उपजनेकी अच्छी जमीन ।

गौधिय (स० पु०) गोधाया अपत गोधा ठक् । गोधिका कज । गोहकी मन्तान ।

गौधिर (स० पु०) गोधाया अपत गोधा टक । गोधि काब्ज, गोह नामक जन्तुका बन्धा ।

गौधिरक (स० पु०) गौधिर एव गौधिर स्वार्थे कन् । गण्डे वना । गौधिरकायणि (स० पु०) गौधिरस्य अपत गौधिर किञ्

कुक्च । गौधिर वना ।

गौन (द्वि० पु०) गौन वना ।

गौनर्द (द्वि० स्त्री०) गायन गान, गीत ।

गौनर्द (स० त्रि०) गौनर्द ट्रेण भय गौनर्द अण् । १ गौनर्द ट्रेणामी, गौनर्द ट्रेणके रत्नदाने । (पु०) २ पतञ्जलि मुनि ।

गौन्दी—दाक्षिणातप्रवासी जातिविशेष जो गवन्दि नाम-
से ख्यात है। गवन्दि देखो।

गौनहार (हिं० वि०) जिसका गौना हालमें हुआ हो।

गौनहार (हिं० स्त्री०) दुलहिनके साथ उसके ससुराल
जानेवाली स्त्री।

गौना (हिं० पु०) हिरागमन, मुकलावा। विवाहके बाद-
को एक प्रथा, जिसमें वर अपने ससुरालमें जाता और
कुछ रीति रस्म पूरी करके वधुकी अपने साथ घर ले
आता है।

गौपत्य (सं० स्त्री०) गौपतिर्भावः गौपति-यक्। गौपतिभाव,
गोस्वामित्व, गौका अधिकार।

गौपवन (सं० पु०) १ एक ऋषिका नाम। इनका जन्म
मधुकान्ठ वंशमें हुआ था। (स्त्री०) २ सामवेद।

गौपाड़ा—सन्ताल परगनेके अन्तर्गत एक प्रधान ग्राम जो
गिरिशृङ्ग पर अवस्थित है। यहाँ सिर्फ पहाड़ी जाति
वास करती है।

गौपायन (सं० पु०) गोपकी सन्तान।

गौपालपशुपालिका (सं० स्त्री०) गोपालपशुपालयोर्भाव,
गोपाल-पशुपाल-बुञ्। १ गोपाल (ग्वाला) तथा पशु-
पालनेका धर्म। २ ग्वाला और पशुपालनेका काम।

गौपिक (सं० पु०-स्त्री०) गौपिकाया अपत्यं गौपिका-अण्।
गौपिकाका अपत्य, ग्वालिनकी सन्तान।

गौपिलेय (सं० त्रि०) गौपिल चातुरर्थिक ढक्। गोश-
क्षिपाने लायक।

गौपुच्छ (सं० त्रि०) गौपुच्छमिव गोपुच्छ-अण्। गायकी
धूँके आकारका।

गौपुच्छिक (सं० त्रि०) गौपुच्छेन क्रीतं गोपुच्छ-ठञ्। जो
गौपुच्छ द्वारा खरीदा गया हो।

गौमेय (सं० पु०-स्त्री०) गुप्ता वैश्यजातीया स्त्री तस्याः
अपत्यं गुप्ता-ढक्। वैश्य जातिकी स्त्रीकी सन्तान।

गोमत (सं० त्रि०) गोमत्यां भवः गोमती-अण्। गोमती
नदीमें उत्पन्न।

गोमतायन (सं० त्रि०) गोमती चातुरर्थिक फञ्। जो
गोमती नदीमें उत्पन्न हो।

गोमथक (सं० त्रि०) गोमथ चातुरर्थिक ठञ्। गोमथ
निवृत्त प्रभृति।

गौमायन (सं० पु०-स्त्री०) गौमिनी गोत्रापत्यं गौमिन्-फञ्,
टिलोपञ्च। गोमोका गोत्रापत्य, गौदडकी सन्तान

गौमुख (हिं० पु०) गौमुख देखो।

गौमुखी (हिं० स्त्री०) गौमुख देखो।

गौसेद (सं० पु०) गौसूत्रके रङ्गका एक तरहका रत्न।

गौर (सं० पु०) गुड् गर्ती र निपातने साधु। १ चन्द्रमा।

२ श्व तमर्षप, उजला मरमां। ३ धववृत्त, धव नामका
पेड़। ४ पीतवर्ण, पीला रंग। ५ श्वेतवर्ण, उजला रंग।

६ अरुणवर्ण, लाल रंग। (त्रि०) ७ पीतवर्ण विशिष्ट,
पोले रंगका। ८ श्वेतवर्णयुक्त। (पु०) ९ चैतन्य महा-
प्रभु। (स्त्री०) १० पद्मकेसर। ११ कुङ्कुम, एक तरहका

पौधा। १२ स्वर्ण, मोना। (पु०) १३ परिमाणविशेष,
याज्ञवल्क्यके अनुसार ८ तमरेणुको १ लिच्छा, ३ लिच्छा-
का एक मरमां, ३ सरसोंका १ गौर होता है। (पु०-स्त्री०)

१४ एक प्रकारका मृग जिमके खुर बोचमे फटे नहीं
होते। १५ एक पर्वत जो ब्रह्माण्डपुराणके मतमें कैलासके
उत्तरमें है। (त्रि०) १६ विशुद्ध, स्वच्छ, निर्मल। (पु०)

१७ करञ्जवृक्ष। १८ खदिर। १९ हरिताल।

गौर (अ० पु०) १ सोचविचार, चिन्तन। २ ध्यान,
ख्याल।

गौरक (सं० पु०) १ गिरिशृङ्गिका, गेरू सिट्टो। २ लाक्षादि
तैल। ३ लावपत्ती, लावा नामकी चिड़िया।

गौरकदम्ब (सं० पु०) कदम्बका पेड़।

गौरक्ष्य (सं० स्त्री०) गौरक्षस्य भावः कर्म वा। १ पाशु-
पाल्य, गोकी रक्षा, धैर्यकर्म विशेष।

गौरखर (सं० पु०) वन्यगर्दभ, जंगली गदहा।

गौरखटी (सं० स्त्री०) श्वेतखटिका, सफेद मट्टी, खड़िया
सिट्टी।

गौरग्रीव (सं० पु०) गौरी ग्रीवा अत्र, बहुव्री०। १ देश-
विशेष जिसका उल्लेख कूर्मविभागके मध्यभागमें है।

(त्रि०) २ तद्देशवासी, उस देशका रहनेवाला।

गौरग्रीवीय (सं० त्रि०) १ गौरग्रीवसम्बन्धीय। २ गौर-
ग्रीववासियोंकी सन्तान।

गौरचणक (सं० पु०) धवलचण्डवृक्ष।
गौरचन्द्र (सं० पु०) महाप्रभु चैतन्यदेव।
गौरचन्द्र गजपतिनारायणदेव—गञ्जामके अन्तर्गत किमी-

दिकाके एक राजा जगन्नाथनारायणदेवके पुत्र ।
 गौरजोरक (स० पु०) गौरद्यामो जोरकचेति । श्वेतजोरक
 सफेद जोरक । इसका संस्कृत पर्याय अजाजी, श्वेतजोरक,
 कणाहा, कणजोर, कणा, मितदोष्य, दोर्घकणा, सिता
 जाजी और गौराजाजी है । इसका गुण—शीतल, रुचि
 कर, कटु, मधुर, दोषण, हृमि, विष और आधाननाशक
 एव चक्षुका हितकर है । (शरत्क ६६) ।

गौरता (स० स्त्री०) १ गौरादे, गौरापन । २ सफेदी ।
 गौरतित्तिरि (स० पु० स्त्री०) श्वेतवर्ण तित्तिरिपत्रो,
 सफेद रङ्गकी तीतर चिडिया ।

गौरत्वच् (स० पु०) गौरीत्वक्यस्य, बहुव्री० । इह दोहच,
 एक तरहका पेड़ ।

गौरट्ट (स० पु०) हरिद्राट्टच, हल्दीका पेड़ ।
 गौरधान्य (स० स्त्री०) शालिधान्यविशेष, एक प्रकारका
 धान ।

गौरपाषाण (स० स्त्री०) श्वेतखटिका, खडिया मिट्टी ।
 गौरष्ट (स० पु०) गौर पृष्ठ यस्य, बहुव्री० । यमराजके
 समासट्ट एक राजा (भारत ६५)
 गौरधाजार—वोरभूमके अन्तर्गत एक गण्डग्राम । टेगा
 वनो नामक संस्कृत भूहत्तान्तमें यह गौराह्वीविधि नामके
 वर्णित है ।

गौरमान्य (स० पु०) गिरिज मधुकहच, पर्वत पर उदय
 भइवेका पेड़ ।

गौरमुख (स० पु०) गौर विशुद्ध सुख्यस्य, बहुव्री० । १
 महर्षि शमोकका एक शिष्य । (त्रि०) गौर मुख्य यस्य,
 बहुव्री० । २ श्वेतवर्ण मुखविशिष्ट, जिसका चेहरा
 सफेद हो ।

गौरमृग (स० पु० स्त्री०) नित्यकर्मधा० । गौरवर्ण मृग
 विशेष, उजले रङ्गका मृग (हरिण) ।

गौररथा (स० स्त्री०) सुवर्णकदम्बोहच, एक तरहका
 केनिका पेड़ ।

गौरव (स० स्त्री०) गुरोर्भाव गुरु धन । १ महत्त्व,
 बलव्यन । २ गुरुता भारोपन । ३ ममान, आदर, इज्जत ।
 ४ उत्कर्ष । ५ श्रेष्ठ ल्यान । ६ गुरुका काम । ७ कफज
 रोग । (त्रि०) गुरोरिद गुरु-धन । ८ गुरु सम्प्रशोय ।
 गौरवर्णवती (स० स्त्री०) हरिद्रा, हल्दी ।

गौरवह्नी (स० स्त्री०) मियङ्गुलता ।
 गौरववत् (स० त्रि०) गौरवमस्यस्य गौरव महत्पुमस्य च
 गौरवविशिष्ट, जिसको गौरव हो ।
 गौरवा (स० पु०) चटकपत्ती ।
 गौरवामन (स० स्त्री०) गौरवेष टत्तमामन मध्यपदलो० ।
 उत्कर्षसूचक धामन ।
 गौरवाहन (स० पु०) गौर गौरवर्ण वाहन यस्य, बहुव्री० ।
 एक राजाका नाम । इनका दूसरा नाम श्वेतगाहन था ।
 गौरवित (स० त्रि०) गौरव मञ्जातमस्य गौरव तारका
 दिवादिदित्त् । पृथ्व, आदरणीय, ममान करनेके लायक ।
 गौरवोहि (स० पु०) गौरव्यालि, सफेद धान ।
 गौरशाक (स० पु०) गौर शाकोऽस्य, बहुव्री० । मधुक-
 हच, एक प्रकारका महुवेका पेड़ ।
 गौरशाखी (स० पु०) जलमधुक, एक तरहका जलमहुवा ।
 गौरशालि (स० पु०) नित्यकर्मधा० । शालिधान्यविशेष,
 एक तरहका सुगन्धित धान ।
 गौरगिरिम् (स० त्रि०) गौर शिरोऽस्य, बहुव्री० । १ श्वेत-
 वर्ण केशयुक्त, जिसके मस्तकका बाल उजला हो गया
 हो । (पु०) २ राजनौतिग्राहके प्रणेता एक मुनि ।
 इनका बनाया हुआ नोतिग्राह वर्तमान समयमें दुष्प्रार्थ्य
 है । महाभारतमें नोतिग्राह-प्रणेतृगणके मध्य इनका
 नाम भी उल्लेख है ।
 गौरपटिक (स० पु०) पट्टिकशालिधान्यभेद, सफेद
 शाओधान । इसका गुण—रूच्य, शोतल, दोषण, वच्य,
 पथ्य, दीपन तथा वीर्यवृद्धिकर है ।
 गौरसर्पप (स० पु०) गौरद्यासौ सर्पपणेति कर्मधा० ।
 १ श्वेतसर्पप, सफेद सरसों । इसका पर्याय—अनन्य
 मिदार्थ, भूतनाशन, कटुखेह, श्रेष्ठ, कण्डू, राजिका
 फल, तीक्ष्णक, दुराधर्ष, रजोघ्न, कुष्ठनाशन, मिहप्रयोजन,
 मिद्धमाधन और मितसर्पप है । इसका गुण—कटु, तिक्त,
 उष्ण, वात, रक्त, ग्रह, त्वक्, दोष, विष और व्रणनाशक
 एव रूपापित और अग्निहृदिकर है । (शरत्क ६६) मनुके
 अनुसार इसके द्वारा घोरमृगहि करकेका विधान है ।
 २ परिमाणविशेष । मनुके मतमें ८ घर्मरंजको १ नित्ता
 ३ नित्ताका १ राज तथा ३ राजसर्पपका १ गौरसर्पप
 माना गया है ।

गौरसुवर्ण (स० ली०) गौर शब्दः सुवर्ण उल्कृष्ट वर्णो यस्य, बहुव्री० । एक प्रकारका माग, जो चित्रकृतके तर स्थानामे अधिकतासे होता है । इसकी पत्तियां सुनहले रंगको छोटी छोटी और सुगन्धित होती है । हाथमें ले कर मलनेसे ये चूर चूर हो जातीं और उससे बहुत अच्छी गन्ध निकलती है । इसका पर्याय—स्वर्ण, सुगन्धिक, भूमिज, वारिज, ऊरुध गन्धगाक, कटशृङ्गाल और चूर्णशाकाङ्क है और गुण—शीतल, कफ, पित्त, ज्वर, दाह, रुचि, भ्रान्ति और भ्रमनाशक तथा पथ्य है ।

गौर (स० स्त्री०) गौर टापु । १ विशुद्धा स्त्री, गौर रंगकी स्त्री । २ पार्वती, गिरिजा । ३ हरिद्रा, हल्दी । ४ सुवर्ण कटलीवृक्ष, एक तरहका केलेका पेड़, जिसका फल सुनहले रंगका होता है । ५ श्वेतसर्पपत्र, सफेद सरसोंका गाछ । ६ एक रागिणी जिसको कुछ मनुष्य औरागकी स्त्री मानते हैं । ७ गौरोचना ।

गौरा—युक्तप्रदेशके गौरखपुर जिलान्तर्गत देवरिया तहसीलका एक शहर । यह अक्षा० २६° १७' उ० और देशा० ८३° ४३' पू०में अवस्थित है । लोकसंख्या प्रायः ७२६५ है । यहां चैनीका व्यवसाय होता है ।

गौराह (स० पु०) गौर श्वेतं पोतं वा अङ्गं यस्य, बहुव्री० । १ विशु । इन्हीने युगावतारमें श्वेत और पोत धर्म शरीर धारण किया था इसीसे इनका नाम गौराह पड़ा । (भागवत० १० स्क०) गौर विशुद्धं अङ्गं यस्य, बहुव्री० । २ श्रीकृष्ण । ३ शचीके पुत्र चैतन्य महाप्रभु । चैतन्यदेव देखा । (त्रि०) । ४ गौरवर्ण देहविशिष्ट, जिसके शरीरका चमड़ा सफेद हो । (क्ली०) गौरश्च तत् अङ्गं चेति कर्मधा० । ५ गौरवर्ण शरीर । गरुडपुराणके मतानुसार कुष्माण्डनालके चार और कुष्माण्डकी छालकी हल्दीके साथ चूर्णकर और सहिषविष्टामें विष्टन करके थोड़ी आगमें उबाल कर लेना चाहिए । इसके लगानेसे शरीर गौरवर्णका हो जाता है ।

गौराहदिहि—बङ्गालमें बाँकुड़ा जिलाको गिरिशैली । यह अक्षा० २३° २६' उ० और देशा० ८६° ४८' ४५' पू०में अवस्थित है । बाँकुड़ासे रघुनाथपुरके रास्ते तक १२ कौमके मध्य तीन पर्वत इसी नामसे ख्यात है । पर्वत प्रायः ३०० फुट ऊँचा और जंगलमय है ।

गौराङ्गी (स० स्त्री०) छोटी इलायची ।

गौराजाजी (स० स्त्री०) श्वेतजीरक, सफेद जीरा ।

गौराट (स० पु०) श्वेतखट्वर, सफेद खैर ।

गौराटिका (स० स्त्री०) शारिकापत्तौ, मैना ।

गौराटि—(स० पु०) गर आदिर्यस्य गणस्य, बहुव्री० ।

पाणिनिका एक गण । इसके उत्तर स्त्रीलिङ्गमें डीप् होता है । गौर, मत्स्य, मनुष्य, शृङ्ग, पिङ्गल, जय, गवय, मुकय, ऋष्य, पुट, तूण, दूण, द्रोण, हरिण, क्रोकण, काकण, पटर, उणक, आमल, आमलक, कुवल, विम्ब, वटर, फर्करक, कर्कर, तर्कार, शर्कार पुष्कर गिखण्ड, शलट, शर्करण्ड, मनन्द, सुपम, सुपव, अनिन्द, गडुल, पाण्डुश, आढक, आनन्द, आश्वत्य सृपाट आश्वक आपच्चिक, शकुल, स्यं, सर्म, शूर्प, सूच, यूप, पूष, यूथ, सूप, मेथवमक, धातक, ममक, मालक, मालत, माल्वक, वेतस, वृक्ष, वृम, अतस, उभय, मृङ्ग, मङ्ग, मठ, क्रेद, पेश, सेट, श्वन्, तत्तन्, अनडुही, अनडुवाही, एण (करणमें), देह, हेलन, काकाटन, गवाटन, सेजन, रजन, लवण, औदगाहमानि, गौतम, गौतम, पारक, अयःस्यृण, अयस्थृण, भौरिकि, भौलिकि, भौलिङ्गि, यान, मध, आलम्बि, आलजि, आलब्धि, आलक्षि, केवाल, आपक, आरट, नट, टोट, नौट, मूलाट, शातन, पोतन, पातन, पाठन, पानठ, आस्तरण, आधिकरण, अग्रहायण, अग्रहायण प्रतग्रवरोहिन्, सेचन, सुमङ्गल, (संज्ञामें) अण्डर, सुन्दर, मण्डल, मन्थर, मङ्गल, पट, पिण्ड, पण्ड, ऊट, गुद, शम, सूद, आद, ऊट, पाण्ड, भाण्ड, लोहाण्ड, कटर, कन्दर, कदल, तरुण, तलुन, कल्माष, वृहत्, महत्, सोम, सौधर्म, रोहिणी (नक्षत्रमें), रवती (नक्षत्रमें), विकल, निष्कल, पुष्कल, कटी, पिप्पल्यादि (पिप्पली, हरितकि, हरीतकी, कोशातकी, शमी, वरी, शरी, पृथिवी, कोट्टी, मातामही, पितामही,) इनको गौराटिगण कहते हैं । गौराटि आकृतिगण ।

(पा० ४ १४१)

गौरार्द्रक (स० पु०) नित्यकर्मधा० । स्थावरविष, यथा-अफोम संख्या और कनेर ।

गौराभ (स० पु०) हरिद्रावृक्ष, हल्दीका पेड़ ।

गौरामलक (स० ली०) १ परिणतामलक, पका अमड़ा ।

२ प्राचीनामलक ।

गौरावस्कन्दिन (स० पु०) गुरेरिट गौरव गुरुपत्नोरूप कान्त तदास्कन्दति गौरव आ स्कन्द णिनि एषोदरादित्वात् वर्णविकारि साधु । अहन्त्याजार इन्द्र ।

गौराव्य (स० पु०) गौरोऽव्योऽस्य बहुव्री० । १ एक राजाका नाम जो यमकी समीकि सभागद है । २ अर्जन । (त्रि०) ३ जिसके गौरवर्णका घोडा हो ।

गौरास्य (स० पु० स्त्री०) गौराम्य यस्य, बहुव्री० । नील वानर, एक तरहका बन्दर, जिसका सुव नाल तथा शेष अन्न क्षणवर्णका होता है ।

गौराङ्गिक (स० पु० स्त्री०) गौराङ्गामौ अङ्गिते कि कर्मधा० म ज्ञाया कन् । विपश्च्य एक तरहका सर्प, विपहीन सांप ।

गौरि (स० पु०) गौरस्यापत्य गौर-इञ् । आङ्गिरस ऋषि ।

गौरिक (स० त्रि०) गोरो वर्णोऽस्तस्य गौर ठन् । १ श्वेतवर्ण युक्त, जिसका शरीर श्वेतवर्णका हो । (पु०) २ श्वेतसर्प सफेद सर्पों ।

गौरिका (स० स्त्री०) १ जलमधुक, जलज महुवा । २ गारिका पत्नी । ३ अष्टवर्षीयकन्या, आठ वर्षकी लडकी ।

गौरिकी (स० स्त्री०) गौर्यैत गोरी स्वार्थे कन् ऋष्य । अष्टवर्षीया कन्या, आठ वर्षकी लडकी ।

गौर्णिगे (स० स्त्री०) क्षुपविशेष एक तरहको भाट ।

गौरिमतु (स० त्रि०) गौरीं मन्यन्ते मन क्तिप् ङ तत् । ऋष्य । गौरीतीर्थ ।

गौरिमती (स० स्त्री०) गौरोमतु स्त्रीप् । गौरीतीर्थस्य एक नदी, गौरीतीर्थमें बहनेवाली एक नदीका नाम । गौरिया (हि० स्त्री०) १ एक प्रकारका जलपक्षी जिसका गिर भूरा और गर्दन सफेद होती है । ऋतुके परिवर्तन के साथ साथ इसकी चोंचका रंग भी बदला करता है । २ मदीका बना हुआ एक छोटा टुकड़ा । ३ एक प्रकारका मोटा घस्त्र ।

गौरिन (स० पु०) गोरो कर्णोऽस्य गौर बाहुलकात् इलच् । १ श्वेतसर्प, उजला सर्प । २ नोहचूण ।

गौरिवीत (स० स्त्री०) गौरिवीतिना दृष्ट गौर वीति षण् । सामविशेष ।

गौरिवीति (स० पु०) गौर्यां वेदवाचि वीतिविशेष गतिरस्यस्य, बहुव्री० । ऋषिविशेष, गति मुनिके पुत्र ।

(मत० १०५१०)

गौरी (स० स्त्री०) गौर डोय् । १ गौरवर्णा, गोरो स्त्री । २ पार्वती, हिमालयकी कन्या । ३ अष्टवर्षीया कन्या, आठ वर्षकी लडकी । ४ ऋषिद्रा, हट्टो । ५ दारुहरिद्रा, दारुहट्टी । ६ गोरोचना, गोरोचन । ७ वरुणपत्नी । ८ प्रियङ्गुहृत् । ९ पृथिवी । १० नदीविशेष । ११ सूर्य-वशीय प्रसन्नित् राजाकी स्त्री जो स्वामीके शापसे नदी हो गई थी । उस नदीका नाम वाहुद्रा रखा गया है ।

(ऋषि०) १२ बुद्धगतिविशेष, बुद्धकी एक गतिका नाम । १३ मञ्जीष्ठा, मजोठ । १४ श्वेतदूर्वा, सफेद दूव । १५ मल्लिका पुष्पचूष । १६ तुलसी । १७ सुवर्ण कदली, सुनहले रंगका केला । १८ आकागमांगी । १९ सफेद रंगको गाय । २० गुहसे बनी हुई शराव, गीडी । २१ चर्मली । २२ रागिणीविशेष । हनुमानके मतसे यह मानव रागकी पत्नी, भरतके मतसे मानकोपकी और ब्रह्माके मतसे शोरागकी पत्नी है । यह आयावरी और जयन्तीके योगसे उत्पन्न हुई है । इसके आरम्भ और समाप्तिका स्वर यह है । इस रागिणीकी मूर्ति—कुमारो, मुख चन्द्रमामा सुन्दर लीवकी नाईं मुखमें टाडिमका वील धारण किये हुए उपवनमें वाम करती है ।

(ब्रह्मसंहिता)

उदाहरण—

स० ग म० ध नि म ।

नि ध प म ग ऋ म । (कञ्जीनाथ)

नि म षट्० म प० । (रा० वि)

स० ग म० ध नि । (ऋ० खी)

स षट् ग म० ध नि ।—(स० ना)

२३ माध्यमिक वाक् । २४ दीप्तिमती स्त्री । २५ गङ्गा २६ शरीरकी एक नाडी ।

गौरीकन्य (स० पु०) कन्यमद, ब्रह्मसामकी लप्या वय' दगी ।

गौरीकान्त (स० पु०) गौर्याकान्त इ तत् । मझाट्टेय, शिवशे ।

गौरीकान्तसार्वभौस भट्टाचार्य—एक वङ्गदेशीय विख्यात पण्डित । इन्होंने अनेक संस्कृत ग्रन्थ रचे हैं । जिनमेंसे आनन्दलहरीटीका, केशवकी तर्कभाषाकी भावायेटीपिका नाम्नी टीका, तर्कसंग्रहटीका, मुक्तावली और गौरीकान्तीय नामक न्यायग्रन्थ प्रसिद्ध हैं ।

गौरीकेश (सं० पु०-क्ली०) अश्वधातु, अवरक ।

गौरीखण्ड—एक पुण्य जनस्थान । (रेखाखण्ड)

गौरीगुरु (सं० पु०) गौर्यागुरुः, ६-तत् । १ हिमालय ।

गौरीचन्दन (सं० पु०) लालचन्दन ।

गौरीज (सं० क्ली०) गौर्यास्तद्रजसो जायते गौरी-जन-उ ।

१ धातुविशेष, अश्वक, अवरक । २ गन्धक । (पु०)

३ कार्तिक । ४ गणेश ।

गौरीजेय (सं० क्ली०) अश्वधातु, अवरक ।

गौरीतक्र (सं० क्ली०) गौर्या विहितं तक्रं, मध्यपदलो० ।

सुगन्धिद्रव्य और मसानायुक्त तक्रविशेष । लवण, मिर्च, शूठ, जीरा, नारङ्गज (नारंगो), दारचोनी और इलायचीके चूर्णको मट्टके साथ मिला कर घृत और हींग द्वारा घृषित करें, इसीको गौरीतक्र कहते हैं ।

गौरीनिज (सं० क्ली०) अश्वधातु, अश्वक, अवरक ।

गौरीदत्त—वाङ्मतीतीर्थयात्राप्रकाश नामक संस्कृत ग्रन्थकार ।

गौरीहार—काठियावाड़के हल्लार प्रदेशके अन्तर्गत एक छुद्र राज्य । एक करद भूम्याधिकारी इस राजकी कुछ ग्रामोंके ऊपर अपना आधिपत्य करते हैं । राजकी आय १३०००, रु०की है जिसमेंसे १०१०, रु० वृष्टिशिवमठको और ६१०, रुपये जुनागड़के नवाबको कर स्वरूप देने पड़ते हैं ।

गौरीनाथ (सं० पु०) गौर्यानाथः, ६-तत् । १ महादेव ।

२ तर्कपल्लव नामक न्यायग्रन्थरचयिता ।

गौरीपति (सं० पु०) गौर्याः पतिः, ६-तत् । १ शिव ।

२ दामोदरके पुत्र जिन्होंने १६४० ई०को आचारादर्शकी टीका रचना की थी ।

गौरीपाषाण (सं० क्ली०) शुक्लपाषाण, फुलखल्ली ।

गौरीपुष्प (सं० पु०) गौरी हरिद्वैव पीतं पुष्पं यस्य, बहुव्री० ।

१ प्रियङ्गु, नामका वृक्ष । २ श्वेत करवीरका पुष्प, सफेद कनेलका फूल ।

गौरीपुत्र (सं० पु०) गौर्याः पुत्रः, ६-तत् । १ कार्तिक । २ गणेश ।

गौरीपुर—आसाममें ग्वालपाड़ा जिलेकी चिरस्थायी प्रवन्धकृत जमोन्दारी । यह अक्षा० २५° ३८' तथा २६° १८' ३०' और देशा० ८८° ५०' एवं ८०° ६' पूर्वमें अवस्थित है । इसमें सुरला, जामौरा, मकरमपुर, कालु मालुपाड़ा तथा और दूसरे दूसरे छोटे परगने लगते हैं । यहाँका भूपरिमाण ५८३ वर्गमील है । जमोन्दारका पारिवारिक वास स्थान गौरीपुर ग्राममें है जो धुवड़ीके ६ मील उत्तरमें पड़ता है । यहाँ एक हाड स्कूल और एक चिकित्सालय है । यहाँ पाट, अनाज और कपड़का व्यवसाय होता है ।

गौरीपूजा (सं० स्त्री०) गौर्याः पूजा, ६-तत् । गौरीमूर्त-धारिणी देवीकी पूजा ।

गौरीवेत (सं० पु०) एक प्रकारका वेत ।

गौरीभट्ट (सं० पु०) गौर्या भर्ता, ६-तत् । शिव ।

गौरीमन्त्र (सं० पु०) गौराका मन्त्र । यथा—

“ॐ गौरि ! रुद्रदयिते ! योगेश्वरि ! सर्वमफट् ।

द्विष्ट ल. पोडश वर्णोऽयं मन्त्रः सद्भिरोहितः ॥”

गौरीरज (सं० क्ली०) गन्धक ।

गौरीललित (सं० क्ली०) गौरी हरिद्वैव ललितं । हरिताल, हड़ताल ।

गौरीवर (सं० पु०) गौर्या वरः, ६-तत् । शिव ।

गौरीवरशर्मा—देवीमाहात्म्यका विद्वन्मनोरमा नामक एक टीकाकार ।

गौरीव्रत (सं० क्ली०) व्रतविशेष । पुराणमें लिखा है कि यदि महिलागण इस व्रतको करके गौरीपूजा करें तो उन्हें आशानुरूप पति लाभ होते हैं । कुशध्वजकन्या वेदवतीने सबसे पहले यह व्रत किया था । व्रतके फलानुसार दूसरे जन्ममें जगत्पति रामचन्द्रजी इसके स्वामी हुवे थे ।

वेदवती देवि ।

गौरीश (सं० पु०) गौर्याः ईशः, ६-तत् । पार्वतीपति, शिवजी ।

गौरीशङ्कर (सं० पु०) १ महादेव । २ हिमालयका सर्वोच्च शृङ्ग जो आज कल एवारेष्ट कहलाता है । हिमालय देवि ।

गौरीशङ्कर उदयशङ्करयाज्ञिक—भावनगरके एक प्रधान राज

मन्त्री। सामान्य अवस्थासे मनुष्य कहा तक अपनी उन्नति कर सकता है, इस घोर कलिकालमें भी मनुष्य आत्मोन्नतिके गुणसे प्राचीन आर्य ऋषियोंक समान उन्नत हट्ट बन सकता है, इस पाश्चात्य सभ्यताके प्रबल श्रोतमें बहते हुए भी मनुष्य किस तरह अपने प्राचीन जातीय भावकी रक्षा कर सकता है, वे सब बातें गौरीगङ्गर उदयगङ्गरको जीवनसे जानी जा सकती हैं। जिस समय भाव नगरके राजा बहुत कर्जदार हो गये थे, जूनागढके नवाब के साथ उनका कुछ झगडा चल रहा था, इटिश गवर्नरको भी भावनगर राज्य पर कडा दृष्टि थी, ऐसे मद्धमय समयमें युवक गौरीगङ्गर भावनगर राज्यके मन्त्री हुए थे। उनको विद्या, बुद्धि और अपूर्व ग्राममनोतिके गुणसे थोडे ही दिनोंमें उक्त राज्यकी ममस्त विपत्तियों का लोप हो गया। देश विदेशके सब ही राजपुरुष उनकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा करने लगे। बम्बईके गवर्नर एनफिन्ट्रीनसे लगा कर लार्ड रिवे (Lord Reay) तक जितने गवर्नर हुए हैं, वे सब ही इनका आदर करते थे। इटिश गवर्नरने उनकी कार्य कुशलता पर प्रसन्न हो कर उन्हें कमाण्डर आफ टी टार आफ इण्डोया (C S I) की उपाधि दी थी।

मिर्क इतना हो नहीं, बल्कि बम्बईके गवर्नर लार्ड रिवे (Lord Reay) ने उनके साथ मुलाकात करके यह भी कहा था कि,—

“यह प्रसिद्ध पुरुष मानो सरलताकी प्रतिमूर्ति ही है। इनके थकपट, निर्मल और पवित्र हृदयके उच्च भावोंसे तथा विशुद्ध प्रतिभासे मैं विमुग्ध हो गया हूँ। राज्यके सुश्रद्धालताकी रक्षाके लिए इन्होंने गावोंमें सिपाहियोंका और विचारका अच्छा बन्दोबस्त किया है और दुष्ट जमोन्दारोंके उल्कीटनसे प्रजाको बचाया है। एक व्यक्तिसे सवमाधारणका जितना उपकार हो सकता है, इन गौरीगङ्गरने उतना कर दिखनाया है।”

करीब पचास वर्ष तक राजकीय कार्योंमें लगे रहने बाद १९०८ ईस्वीमें जनवरीकी १३ तारीखमें इन्होंने मन्त्रित्व छोड़ दिया था। उस समय इनकी उमर ७४ वर्ष की थी। इनसे थोडे ही दिनोंपछिने वे अपने इष्टमित्रोंसे यह कहा करते थे कि,— ‘गृहस्थमें रह कर जो

कुछ करना चाहिये था, सो सब ही कर लिया। अब भूमि कुछ भी आकाचा नहीं, मैंने गृहस्थका सारा सम्बन्ध छोड़ देनेका सक्त्प कर लिया है। इतने दिनों तक मैं दूसरोंके कार्योंमें फंसा हुआ था, मैंने अपना काम कुछ भी न कर पाया। अब मैं अपना ही काम करूंगा। हमारे पूर्वजोंने आखिरी जीवनमें जो पथ अवलम्बन किया था, मैं भी उसी वेदान्त और उपनिषत् प्रदर्शित मार्गका अनुसरण कर आत्मोन्नतिके लिए प्रयत्न करूंगा। मैं इस आखिरी जीवनको निर्जन स्थानमें रह कर मन्त्रासन्नत ग्रहणपूर्वक बिताऊंगा।”

मन्त्रित्व छोड़ कर वे वेदान्त और उपनिषद्को आलोचनामें प्रवृत्त हुए। सब दा हो वे इनमें लीन रहते थे। इस प्रकार १८८७ ई०में उन्होंने सप्तारसे सर्वटाके लिए विदा होनेके लिए अपने इष्टमित्रोंको आह्वान किया। उस दिन उनके इष्टमित्रोंके सिवा बहुतसे अग्रज भी वहाँ आये थे। वह गौरीगङ्गरने सबकी यथायोग्य आगोवाह देते हुए कहा—“वतुर्थ आयुर्म्ममें प्रवेश करूंगा मैं सन्ध्यासो होऊंगा। जिससे भविष्यत्में फिर मुझे इस असार ससारमें न शाना पड़े, जिससे भगवान् मुझे सर्वटाके लिए निर्वाणमुक्ति दें ऐसा प्रयत्न करूंगा।”

उनके मित्रोंने उनसे सैकड़ों वार अनुरोध किया कि आप गृहस्थायुग न छोड़े, मोह बढे, ऐसे दृश्य भी बहुतसे दिखलाये, कितने प्रलोभन दिखलाये, परन्तु उनका उत्साहित उज्वल हृदय विचलित न हुआ। उन्होंने स्तोत्र, पुत्र, इष्टमित्र, धनधायादिका मोह छोड़ वानप्रस्थका अवलम्बन किया। १८९१ ई०में १ नो दिसम्बरमें उन्होंने निर्वाण लाभ किया था।

गौरीगङ्गर (स० क्लो०) गौरीप्रिय गङ्गर, मध्यपटनो०। एक तीर्थस्थान। पार्वती पर्वतके जिस शिखर पर बैठ कर तपस्या करो थी वही गौरीगङ्गरतीर्थ नामसे प्रसिद्ध है। इनका दूसरा नाम गौरीगङ्गर है।

‘ब्रह्मसु पद्मानु प्रवित तदध्वशः भगवान् गौरीगङ्गरः शिवश्चरन् ॥’

(इमार)

• Gauri Ankar Udayanankar C S I by J. U. Varshney

Bombay 1889 इह पन्थमें गौरीगङ्गरको जित नोपनी विलो है।

गौरीसर (पु०) हंसराज नामकी बूटो, संमलपत्ती ।
 गौरीसुत (सं० पु०) गार्थाः सुतः, ६-तत् । १ आठ वष मे
 जिसका विवाह हुआ हो ऐसी स्त्रीके गर्भजात पुत्र ।
 २ कार्तिकेय । ३ गणेश । ४ श्यामालाष्टकके रचयिता ।
 गौरीहार—मध्यभारत एजेन्सीके बुन्देलखण्डके अन्तर्गत
 एक छोटा राज्य । यह अक्षा० २५° १४' तथा २५° २६' उ०
 और देशा० ८०° १२' तथा ८०° २१' पू०के मध्य अवस्थित
 है । इसके पूर्वांशमें बान्दा जिला और हमीरपुर, उत्तर
 और पश्चिममें बान्दा तथा दक्षिणमें छतपुर राज्य है ।
 भूमिपरिमाण ७० वर्ग मील और लोकसंख्या ७७६० है ।
 इस राज्यकी वार्षिक आमदनी २७०००० रुपये है ।
 यहांका सर्दार जिम्नोतिया ब्राह्मण है । पूर्व समयमें
 इस वंशके आदि पुरुष महापुर ग्राममें रहते थे । राजा-
 राम तिवारी अजयगढ़के राजा गुमानसिंहके अधीनमें
 रह कर बान्दा जिलेके भुरगड़ दुर्ग पर शासन करते थे ।
 परन्तु अली बहादुरकी चढ़ाईके समय अर्थात् जब बुन्देल-
 खण्डमें अराजकता फैली थी तब ये गुमानसिंहके
 विरुद्ध हो लुटेरोंके सर्दार हो गये । गुमानसिंह इन्हें
 अपने वशमें न कर सके । बाद बुन्देलखण्ड अङ्गरेजोंके
 हाथ आ जाने पर उन्होंने राजारामको पकड़नेकी चेष्टा
 की । इस पर राजारामने अंगरेजोंसे निवेदन किया कि
 बुन्देला सर्दारोंको जैसा अधिकार मिला है यदि वेमा-
 नी अधिकार मुझे भी मिले तो मैं मन्थि स्थापनकी
 तयार हूँ । गवर्मेण्टने भी इसे स्वीकार कर १८०७ ई०में
 गौरीहारका राज्य इन्हें अर्पण किया । १८४६ ई०में
 राजारामका देहान्त हुआ और उनके उत्तराधिकारी
 राजधर रुद्रसिंह तिवारी राज सिंहासन पर बैठे ।
 उन्होंने १८५७ ई०में सिपाही विद्रोहके समय अङ्गरेजोंकी
 सहायता की थी । इसमें उन्होंने अंगरेज गवर्मेण्टसे राय
 बहादुरकी उपाधि, १००००० रुपयोंको पेंषाक और
 दत्तकग्रहणके लिये भी एक मनद पाई थी । रुद्रसिंहके
 बाद पृथ्वीपालसिंह गद्दी पर बैठे । उनका जन्म १८८६
 ई०में हुआ था और उन्होंने १९०४ ई० तक राज्य किया ।
 इस राज्यमें २२ ग्राम लगते हैं ।

२ उक्त राज्यका प्रधान नगर । यह अक्षा० २५° १६'
 ५०' और देशा० ८०° १४' पू०में अवस्थित है ।

गौरतल्पिक (सं० त्रि०) गुरुतल्पं गुरुपत्नीं गच्छति गुरु-
 तल्प-ठक् । गुरुपत्नीगामी, गुरुकी स्त्रीके साथ सम्भोग
 करनेवाला ।

गौरैया (हि० स्त्री०) गौरिया देवी ।

गौजर (सं० पु०) १ संपृङ्ग, भंडेका सींग । २ गुजर
 देशवासी ।

गौर्य (सं० स्त्री०) तमालपत्र ।

गौर्यश्मा (सं० पु०) शक्रपापाण, खड़िया मटो ।

गौर्यामल (सं० स्त्री०) अभ्रक. अवरक ।

गोलचणिक (सं० त्रि०) गोलचणं वेत्ति गोलचण-ठक् ।
 जो गोरूका लक्षण जानता हो । गोलचणं तत्प्रतिपादकं
 ग्रन्थमधोति गोलचण-ठक् । २ जा गोलचण प्रतिपादक
 शास्त्र अध्ययन करता हो ।

गौलन्द (सं० पु०) गौलन्द ऋषिके काव ।

गौलन्द्य (सं० पु०-स्त्री०) गौलन्दस्य गोत्रापत्यं गौलन्द
 गर्गादि घञ् । गौलन्द ऋषिके वंशज ।

गोला (सं० स्त्री०) गौर टापू, रम्य लत्वं । हिमालय-
 की कन्या, गौरी, पार्वती, गिरिजा ।

गोलाङ्गायन (सं० पु० स्त्री०) गोलाङ्गस्य गोत्रापत्यं गोला-
 ङ्ग-फञ् । गोलाङ्ग ऋषिके वंशज ।

गौलि—बम्बई प्रदेशके खान्देश जिलेके मध्यवर्ती
 एक राज्य । यह नितान्त पर्वतमय और जङ्गलसे परिपूर्ण
 है । यहांके जंगलमें बड़े बड़े काष्ठ पाये जाते हैं ।

२ दक्षिणात्यकी गोपजाति । गायत्री देवी ।

गौलिक (सं० पु०) गुडं माधुः गुड-ठक् । यस्य लः ।
 शुष्ककवच, एक तरहका पेड़ ।

गौलोमन् (सं० त्रि०) गौलोमेव गौलोमन् शकरादि अण् ।
 गौलोमं सदृश, गौके रोएके समान ।

गौलुलव (सं० त्रि०) गुल्गुलु सम्बन्धोय, जो गुग्गुलसे
 उत्पन्न हो ।

गौल्लिक (सं० पु०) गुल्मे नियुक्तः गुल्म-ठक् । गुल्म
 स्थानमें नियुक्त सेनाविशेष, चौकसी देनेवाला एक सिपाही ।

गौल्य (सं० स्त्री०) गुडस्य भावः गुड-घञ् । यस्य लः ।
 १ माधुर्य, मीठारस । २ एक तरहको शराब । ३ चिकनो
 सुपारी । (स्त्री०) ४ विश्वीलता, कंदरुकी नामकी
 लता ।

गौशकटिक (स० त्रि०) गौशकट मन्त्रश्रेय, जिसे बैलकी गाडी हो ।

गोश्रतिक (स० त्रि०) गोश्रतमत्वास्ति गोश्रत ठञ् । जिसके एक सौ गो हो ।

गोश्रज्ञ (स० त्रि०) सामभेद, एक प्रकारका सामगान ।

गोश्र्य (स० पु० स्त्री०) गुश्रिके व श्रज ।

गोपूक्त (स० स्त्री०) सामभेद ।

गोपूक्ति (स० पु०) एक मुनिका नाम ।

गोष्ठ (स० त्रि०) गोष्ठ्या भव गोष्ठी फक्राटि अण्, जो गोश्रालासे उत्पन्न हो ।

गोष्ठीन (स० स्त्री०) पूर्वं भूत गोष्ठं गोष्ठ खञ् । पहले जिस स्थान पर गुहान था, पुराना और त्यक्त गोश्राला ।

गोसम (हि० पु०) कोसम नामका पेड़ ।

गोसहस्त्रिक (स० त्रि०) गोसहस्त्रमस्थास्ति गोसहस्त्र ठञ् । जिसके एक हजार गो हो ।

गोह (स० त्रि०) गुहस्येठ गुह अण् । १ गुहमन्त्रश्रेय । २ जो गुह द्वारा निर्हृत्त हो ।

गोहर (फा० पु०) मोती, मुक्ता ।

गोहलव्य (स० पु०) गुहलोक्तपेर्गोत्तापत्य गुहलु गोर्था द्वि यञ् । गुहलु नामक ऋषिके व श्रज ।

गोहलव्ययानी (स० स्त्री०) गोहलव्य-डीप-लौहिताटि ल्वात् फ । गुहलु नामक ऋषिकी वशीत्पत्ना स्त्री ।

गोहाटी—पूर्वीय बद्राल और आसामके कामरूप जिलेका एक शहर । यह अक्षा २६ ११ उ० और देशा० ८१ ४५ पु० पर ब्रह्मपुत्र नदीके दाहिने किनारे अवस्थित है । आसाममें यह मत्र नगरोंसे बड़ा है । पहले यहीं नगर प्राग्व्योतिषपुर नामसे प्रसिद्ध था । उस प्राचीन नगरके पूर्व कीति का ध्व भावग्रोप ब्रह्मपुत्र नदीके दोनों किन पर विद्यमान है । हिन्दू राजाओंके समयसे लेकर ब्रिटिश गवर्नेटके १७७४ ई० तक यहीं आसाम राज्यका प्रधान सटर था । उक्त वर्षमें यह सटर उठ कर खामो पहाडके मिल्न नगरमें गया । दक्षिणो गोहाटीसे गिल्न तक एक पकी सडक गई है । उत्तर और दक्षिण गोहाटीकी लोकमत्या प्राय १४२४४ है । मोलहर्षी गताब्दीसे पहलेका कोड इतिहास इस शहरका नुर्गो पाया जाता है । मोलहर्षी गताब्दीमें यह कोचराज्यके अन्तर्गत था ।

सतरहवीं गताब्दीमें सुमलमान और अहोमने इस पर आक्रमण किया और लगभग पचाम वर्ष तक शहर उर्हींके अधिकांशमें रहा । १७८१ ई०में सुमलमान कामरूपसे भगाये गये और तभीसे गोहाटी निम्न आसामके अहोम शासकका वासस्थान हो गया । १७८६ ई०में जब मोश्राम रियाने रङ्गपुर टखल किया तब उर्हींने अपनी राजधानी गोहाटीमें स्थापन की । १८२६ ई०में जब आसाम ब्रिटिश गवर्नेटके अधिकारमें आया तब गोहाटी आसाम राज्यका प्रधान सटर था । यह अब भी आसामकी तराई जिलेके कमिश्नर और जजका प्रधान सटर है । यहाँ एक चिकित्सालय, विश्वविद्यालय और कारागार है जिमें केवल २५२ कैदी रखे जाते हैं ।

यहसे सटर उठ जाने पर भी गोहाटी आसाममें प्रधान वाणिज्यस्थानमें गए है । यहांसे कुछ दूर प्रसिद्ध कामाख्या और उमानन्द तीर्थ हैं । कामरूप और शाला देवा । गिध (स० स्त्री०) अद् क्तिन् वेदे घसादेश उपधानोपय । भक्षण, भोजन ।

ग्ना (स० स्त्री०) गम बाहुलकात् ना डिच्च । १ स्त्री, औरत । २ देवपत्नी, देवताओंकी स्त्री । ३ वाक्य । ४ वेद ।

ग्नाघत् (स० त्रि०) ग्ना अख्यप्य ग्ना मतुप् मस्य व । १ स्त्रीयुक्त, सपत्नीक, जो स्त्रोको कहीं साथ ले जाता हो । २ सुतिपाक्यविशिट ।

ग्नास्पति (स० पु०) ग्नाया पति, इ-तत् । निपातनात् सुट् । १ देवपत्नीका पति । २ इन्द्रका पति ।

ग्नास्पती (स० स्त्री०) स्त्रियोंकी पालयित्रीदेवो । स्त्रियोंकी रक्षा करनेवाली देवी ।

ग्मन्—उभ अन् देवा ।

ग्मा (स० स्त्री०) पृथिवी, दुनिया ।

ग्याविर (देश०) कोकरको जातिका एक पेड़ । इस पेड़के पत्तों और लकड़ियोंसे पण्डिया खैर बनाया जाता है ।

ग्यान (हि० पु०) गान् अन् ।

ग्यारम (हि० स्त्री०) एकादशी तिथि ।

ग्यारह (हि० वि०) दश और एक ।

ग्रथन (स० स्त्री०) ग्रथ्य बाहुलकात् क्यु न लोप ।

१ ग्रथन, जोडना, गूथना । २ तन्त्रशास्त्रप्रसिद्ध साध

(अकीर्णा) और बेंतके पत्तोंका चमड़े पर लेप करना चाहिये। अथवा मेकचन्द वृक्षके लणहीन कन्दकी पौस कर सर्वदा लेप करते रहना चाहिये। पक जाने पर उसे फोड़ देना चाहिये और वनस्पतिके कायसे धोना चाहिये। यष्टिमधु (सुलहटी)के साथ तिलकी तुकनीका लेप करा कर घावको साफ करके उस पर काकोल्यादि गण सहित पाचित घृतका प्रयोग करना उचित है।

क्षेप्माजन्य ग्रंथिरोगमें वमन और दस्त करा कर ग्रंथि में गरमी पहुँचानी चाहिये। फिर उसे अंगूठेसे या लोहेसे मटन करके बैठा देना चाहिये। इसके बाद वैची, अमलतास (आरग्वध), श्वेतगुञ्जाकी जड़, कड़ुआ कड़ु, अकवन (मदार), भार्गी (वरङ्गी), और करञ्ज (कण्टकरेजी) इन सबको मिला कर प्रलेप करना चाहिये। मसैस्थानके सिवा दूसरी जगहमें गांठ हो तो उसे तुरत चिरवा कर भीतरका मल निकलवा देना चाहिये।

रक्तजन्य ग्रंथिरोगमें ग्रंथिकी जला कर शीघ्र ही व्रण-चिकित्साके विधानानुसार चिकित्सा करनी चाहिये। मांसकान्दी उन्नत और वृहत् ग्रंथि होने पर इस तरहकी चिकित्सा करें अथवा पक जाने पर उसे चीर कर हितकर कपायसे प्रक्षालित करें। प्रचुर चार, घृत और शहदके साथ घनी संशोधनी वस्तु द्वारा मशोधन करना चाहिये। पोछे विड़ङ्ग-पाठा और हलदीके साथ तैल पाक करके उस पर प्रयोग करना चाहिये।

सेदजन्य ग्रंथिरोगमें तिलकी खरका लेप करके ऊपरसे दुहरे कपड़ेसे बाँध देना चाहिये या लोहेके टुकड़ेकी गरम करके उस पर लगा देना चाहिये। टारुहलदीका लेप कर गरम लाखका सेक देना भी ठीक है। फोड़ कर भीतरका सेक निकाल कर दग्ध करना चाहिये। अथवा पक जानेके बाद फोड़ कर मूत्रद्वारा धोना उचित है। बादमें पिष्ट, तिल, मज्जीमिष्टी आदिकी लवण और हरतालके साथ मिला कर घी और मधुके साथ गाढ़ा करके प्रयोग करना चाहिये। इस प्रकार जब घाव साफ हो जाय, तब उस पर नाटा-करौंदा, उहर-करौंदा, गुञ्जा (श्रीणकांडच चिरमिति), हिङ्गोटा और वंशनील इन सबको गोमूत्रके साथ मिलाकर तैल बनाना चाहिये

और उसे लगाते रहना चाहिये। इस प्रकारकी चिकित्सासे ग्रंथि रोगका नाश होता है। (सुधन चिकित्सा १८५०) ग्रन्थिक (सं० ली०) ग्रन्थिरिव कायति ग्रन्थि-कै-क। १ पिप्पलीमूल, पिपरासूल। २ ग्रंथिपर्ण नामक वृक्ष, गठिवन। ३ गुग्गुलु। ४ करीर। ग्रंथिना कौटिल्येन कायति ग्रंथि-कै-क। ५ देवज। ६ साट्रोके तनय सह-देव। ७ अर्जुनवृक्ष।

ग्रन्थिका (सं० स्त्री०) १ ग्रंथिपर्ण, गठिवन। २ वय। ग्रन्थिकीप (सं० पु०) ग्रंथिपर्ण नामका पेड़। ग्रन्थिखेड़ (सं० ली०) गन्धमात्रिका। ग्रन्थिहेटक (सं० पु०) ग्रंथीनां हेटकः, ६-तत्। जानिक, गांठ काटनेवाला, गांठकटा, गिरहकटा। ग्रंथित (सं० त्रि०) ग्रंथि-क्त। गुम्फित, गूँया हुआ, जोड़ा हुआ, गांठ दिया हुआ। ग्रन्थितक (सं० पु०) शूकरोग। ग्रन्थित्व (सं० ली०) ग्रंथिर्भावः। ग्रंथिका भाव, गूँयनेकी क्रिया।

ग्रन्थिटल (सं० पु०) चोरक नामका गन्धद्रव्यविशेष। ग्रन्थिटला (सं० स्त्री०) ग्रंथिर्दलेऽस्याः, बहुव्री०, टापु। १ मालाकन्दकी जड़। २ चोरक। ३ ग्रंथिपर्ण। ग्रन्थिटुर्वा (सं० स्त्री०) ग्रंथिप्रधाना दुर्वा शाकपार्थिवादि, मधुपदलो०। दुर्वाविशेष, गाँडर दूव। ग्रन्थिन् (सं० त्रि०) ग्रंथस्तदर्थो वा ज्ञेयतया अस्त्यस्य ग्रन्थ-इनि। १ ग्रंथयुक्त, गांठदार, जिसमें गांठ लगी हो। २ ग्रंथार्थवित्, जो ग्रंथका अर्थ समझता हो। ३ ग्रंथकर्ता, किताब बनानेवाला।

ग्रन्थिनी (सं० स्त्री०) कदलीवृक्ष, केलिका पेड़। ग्रन्थिपत्र (सं० पु०-ली०) ग्रन्थिप्रधान पत्रमस्य, बहुव्री०। चोरक नामका गन्धद्रव्य। ग्रन्थिपर्ण (सं० ली०) ग्रंथी पर्णान्यस्य ग्रंथियुक्तानि पर्णान्यस्य वा बहुव्री०। वृक्षविशेष, गठिवन नामका पेड़। इसका संस्कृत पर्याय—शूक, वर्हिपुष्प, स्थौणिय, कुकुर वर्हि, पुष्प वर्हि, शूकवर्हि, स्थौणियक, कुशपुष्प, गुल्मक, विशीर्णाख्य, स्वारासगुच्छक, वर्हि, शुकपुच्छ, शुकच्छद, ग्रंथिक, काकपुष्प, नीलपुष्प, सुगन्ध और तैलपर्णक है। इसका गुण—तिक्त, तीक्ष्ण, कटु, उष्ण, दीपन, लघु,

कफ, वात, विष, श्वाम, कण्डू, धीर, दोग्धनाशक है। इसके लेपन करनेसे शरीरकी रूक्षता, अलक्ष्मी, राक्षस और च्वर नाश हो जाते हैं। (शतभस्म) इस जातिकी वृक्ष नेपाल अञ्चलमें उत्पन्न होता है। इसका वर्तुंलाकार अथिभुक्त अथ बनिचकी टूकान पर बेचा जाता जो गठियाला कहलाता है। इस वृक्षसे नीनवर्ण शुकाकार केशरका गुच्छा निकलता जो देखनेमें बहुत सुन्दर लगता है। इसका पुष्प कुकामिमा पुष्पके जैसा होता और पत्ते शूफपत्तीके छैनेके सदृश होते हैं। इस वृक्षके नीनर गत्ते पुष्प फट कर छत्राकारमें रूईकी तरह उधर उधर हवामें उड़ जाते हैं।

(पु०) २ चौरा नामक गन्धद्रव्य।

ग्रन्थिपर्णक (स० पु०) ग्रन्थिपर्ण सन्नाथे कन्। श्रीवास। ग्रन्थिपर्णा (स० स्त्री०) ग्रन्थिपर्ण टापू। जतुका लता। ग्रन्थिपर्णी (स० स्त्री०) ग्रन्थिपर्णा गौरादित्वात् ङीप्। गण्डदूर्वा, गांडर दूब।

ग्रन्थिफल (स० पु०) ग्रन्थिफल फलमस्य, बहुव्री०। कपित्थवृक्ष, केथका पेड़। २ मदनवृक्ष, मैनफलका पेड़। ३ साकुण्ड वृक्ष।

ग्रन्थिवन्धन (स० स्त्री०) ग्रन्थिवन्धन, ६ तत्। विवाहके समय वर और कन्याके वस्त्रोंके परस्पर गांठ देकर बाधनेकी क्रिया, गांठवन्धन। २ जन्मतिथिमें गौरीचनानुक्त मूल वन्धन।

ग्रन्थिवर्हिन् (स० पु०) ग्रन्थि वर्हिन्ति वर्हं सुतो ग्रन्थि वर्हं णिनि। ग्रन्थिपर्ण वृक्ष, गठिवनका पेड़।

ग्रन्थिभा (स० स्त्री०) ग्रन्थिस्त्रिंशद्द्वय, ६३ जोडाका पेड़।

ग्रन्थिभेद (स० पु०) ग्रन्थि वस्त्रादि ग्रन्थि भिनत्ति। ग्रन्थि भिदु अण् उपपदस०। चौरविषीय, ग ठकटा, गिरहकह। मनुका मत है कि ग ठकटा चौरका प्रथम बार अङ्गुलि छेदन, द्वितीयवार हस्ता और पट छेदन तथा तृतीयवार चौरों करनेसे बंध करना उचित है।

(म० २१००)

ग्रन्थिमत् (स० त्रि०) ग्रन्थिपरस्त्रय ग्रन्थिमत्पू। १ ग्रन्थिभुक्त, गांठदार। (पु०) २ ग्रन्थिस्त्रिंशद्द्वय। इसका मसूत पर्याय—ग्रन्थिस्त्रिंशद्द्वय, वस्त्राङ्गी धीर अस्थि

शृङ्खला है। इसका गुण वात श्लेष्मा, कृमि और दुर्गन्ध नाशक, अस्थियोगकारी, उष्ण, सारक, अस्त्ररोग और पित्तवर्धक, रुच, स्वादु, लघु, हृष्य और पाचन है।।

(भाष्यकार)

ग्रन्थिम फल (स० पु०) ग्रन्थिमत्फल यस्य, बहुव्री०। मान्दारका पेड़।

ग्रन्थिमान् (स० पु०) अस्थिस्त्रिंशद्द्वय।

ग्रन्थिमूल (स० स्त्री०) ग्रन्थि गुणवत् मूलमस्य, बहुव्री०। १ शृङ्खल, मलगम, गाजर, मूलो आदि मूल जो गांठोंके रूपमें पृथ्वीके भीतर होते हैं। २ लहसुन। ३ ताल-मुनी, मूलम।

ग्रन्थिमूला (स० स्त्री०) ग्रन्थिवहुल मूलं अस्याः बहुव्री०। टापू मालादूर्वा, मालादूब।

ग्रन्थिल (स० त्रि०) ग्रन्थिविद्यतेऽस्य ग्रन्थि लच्। १ ग्रन्थिभुक्त, गांठदार, गठीला। (स्त्री०) २ पिप्पलीमूल, पिपरामूल। ३ आर्द्रक, अदरक। (पु०) ४ कटाथ नामका कण्टीला वृक्ष। पूर्व समयमें इसकी लकड़ोंसे यज्ञपात्र बनते थे। ५ करीरका वृक्ष। ६ विन्धवृक्ष, वैनका पेड़। ७ चौरक नामका गन्धद्रव्य। ८ चौराका साग। ९ विकटवृक्ष, वैचोका गाड़। १० अलू।

ग्रन्थिला (स० स्त्री०) ग्रन्थिल टापू। १ भद्रसुस्ता, भद्र मोथा। २ माला दूर्वा, माला दूब। ३ गांडर दूब। ग्रन्थिवर्हि (स० पु०) ग्रन्थिपर्णवृक्ष, गठिवनका पेड़।

ग्रन्थिविषर्प (स० पु०) विषर्पे रोगभेद, गठियाकी बीमारी।

ग्रन्थिसंहता (स० स्त्री०) एक तरहकी लता।

ग्रन्थिहर (स० पु०) ग्रन्थि हरति ह्व-अच्। अमाल्य, मन्ती।

ग्रन्थोक (स० स्त्री०) ग्रन्थिक शपोदरादित्वात् साधु। पिप्पलीमूल, पिपरामूल।

ग्रन्थ—लघु देषा।

ग्रन्थ (स० पु०) ग्रन्थ (वेदिकधातु) अण्। ग्रहण, पकड़।

ग्रन्थण (स० स्त्री०) ग्रन्थ-न्मुट्। ग्रहण, पकड़।

ग्रन्थणवत् (स० त्रि०) ग्रन्थण-विद्यतेऽस्य ग्रन्थण-मत्पू-मस्य व। ग्रहणविगिट।

ग्रन्थीत् (स० त्रि०) ग्रन्थीत्। ग्रन्थीता, ग्रहण करने योग्य, पकड़ने लायक।

ग्रस (सं० क्रि०) १ निगलना । २ मुखसे पकड़ना ।
 ग्रसन (सं० क्री०) ग्रस-भावे ल्युट् । १ भक्षण, निगलना ।
 २ पकड़, ग्रहण । ३ ग्राम, कौर । ४ एक असुरका नाम ।
 ५ राहु द्वारा चन्द्रमा या सूर्यका ग्राम । ६ ग्रहणविशेष ।
 ग्रसना (क्रि० क्रि०) १ ग्रसन करना, बुरीतरह पकड़ना ।
 २ मताना ।
 ग्रमपति (सं० पु०) मनुष्यमुखको आकृतियाँ जो पत्थर पर खींची रहती हैं ।
 ग्रसमान (सं० त्रि०) ग्रस-गानच् । ग्राम करनेवाला,
 जो किसी चीजका पकड़ कर निगल जाता हो ।
 ग्रमिष्ठ (सं० त्रि०) अतिशयेन ग्रसिता ग्रसित-इष्टन् ।
 भक्षयित्तम, जो अधिक निगलता हो ।
 ग्रमिष्णु (सं० त्रि०) ग्रम-इष्णुच् । १ गहनशील ।
 (पु०) २ परब्रह्म ।
 ग्रस्त (सं० त्रि०) ग्रस कर्मणि क्त । १ भक्षित, खाया हुआ ।
 २ पीड़ित । ३ ग्रसित, पकड़ा हुआ । ४ भक्षक, खानेवाला ।
 ग्रस्ताम् (सं० पु०) ग्रस्त एवास्तः । ग्रहण लगने पर
 चन्द्रमा या सूर्यका विना मोक्ष हुए अस्त होना ।
 ग्रस्ति (सं० स्त्री०) ग्रस-क्तिन् । ग्राम, सूर्य या चन्द्रमामें
 ग्रहण लगना ।
 ग्रस्तोदय (सं० पु०) ग्रस्तस्य-उदयः, इ-तत् । राहुग्रस्त
 चन्द्र या सूर्यका उदय होना, चन्द्रमा या सूर्यका उस
 अवस्थामें उदय जाना जब कि उन पर ग्रहण लगा हो ।
 ग्रस्य (सं० त्रि०) ग्रस कर्मणि वाहुलकात् यत् । भक्ष-
 णीय, खाने लायक ।
 ग्रह (सं० पु०) १ ग्रहाति गतिविशेषान् ग्रह-अच् ।
 १ सूर्यादि ज्योतिष्क पदार्थ । हम जो आकाशमें
 ज्योतिष्क देख रहे हैं, वे सब ही प्रवर वायुपर अवस्थित
 हैं । प्रवरवायु लगानार घूमती ही रहती हैं, उसके
 आधार पर ज्योतिष्कमण्डल भी घूमा करता है । प्राचीन
 हिन्दूज्योतिर्विद्वगण इन ज्योतिष्कमण्डलको प्रधानतः
 दो भागोंमें विभक्त कर गये हैं,—एक श्रेणीको ग्रहमें
 और दूसरीको नक्षत्रमें । जो ज्योतिष्क हमारे निकटवर्ती
 हैं और जिनकी गति, उदय, अस्त आदिकी प्राचीन
 ज्योतिर्विद्वान्ओंसे अपने असाधारण प्रतिभावलसे उद्भावित
 ग्रह और गणित द्वारा स्थिर किया है, उनको ग्रह

कहते हैं और जो ज्योतिष्क बहुत दूर हैं तथा जिनकी
 गति आदिका उस समय निर्णय नहीं हुआ था, वे नक्षत्र
 कहलाते हैं । इससे मालुम होता है कि गृह्यत यन्त्रादिना
 यथायथं दृष्टिगोचरो भवति (ग्रह कर्मणि अप्) अर्थात्
 यन्त्रादिसे जिनका स्वरूपादि मालुम पड़ सके, उसका
 नाम ग्रह है—ऐसे व्युत्पत्तिके आधार पर कुछ
 ज्योतिष्कोंको ग्रह नामसे उल्लेख किया गया है । परंतु
 प्रायः किसी ग्रंथमें इसका उल्लेख नहीं मिलता कि,
 जिससे समझा जाय कि प्राचीन ज्योतिर्विद्वान्ओंका
 क्या अभित है और किस व्युत्पत्तिके आधार पर कौनसी
 संज्ञा दी गई है ।

ग्रह कितने हैं, इस विषयमें भी पहिलेसे मतभेद चला
 आ रहा है । वराहमिहिरके मनसे सूर्य, चन्द्र, मङ्गल,
 बुध, बृहस्पति, शुक और शनि ये सात ग्रह हैं । राहु और
 केतु पातविशेष है, ग्रह नहीं । वराहका मत ग्रहण कर
 सारदातिलकमें भी सात ग्रहोंका उल्लेख है ।

“लोकान् अद्रोन् सरान् घातन् मुनोन् कोपान् ग्रहानपि ।

सन्धिः सप्तसङ्घाताः सप्तविधा इविभुं जः ॥” (स.रदाति० १५०)

सूर्यसिद्धान्त और सिद्धान्तशिरोमणि ग्रंथमें खगोलकी
 सात ग्रहकक्षाएं निरूपित की गयी हैं । राहु और केतु
 की कक्षाओंका कोई भी उल्लेख नहीं मिलता ।

खगोल राहु और केतु देवो ।

इस देशमें प्रचलित कुछ फलित ज्योतिषोंके मतसे
 राहु और केतु भी ग्रहोंमें गिने जाते हैं । उनके मतानु-
 सार ग्रह नौ हैं । नीलकण्ठताजकमें इन नौ ग्रहोंके अति-
 रिक्त सुयहा नामके और एक ग्रहका उल्लेख है, परन्तु सब
 फलित ज्योतिषोंमें सुयहाका कोई उल्लेख नहीं पाया
 जाता । सुयहा देखें ।

आर्यभटके मतसे पञ्चर वा ज्योतिष्कमण्डल निश्चल
 है । उनका किसी प्रकारका हलन-चलन नहीं होता ।
 पृथिवीके भ्रमण करनेसे ऐसा मालुम पड़ता है कि
 ज्योतिष्क भ्रमण कर रहे हैं ।

पाश्चात्य ज्योतिर्विद्वान्ओंके वर्तमान सिद्धान्तानुसार
 नभोमण्डलमें जो अनन्त ज्योतिर्गण विद्यमान हैं, उनके
 साधारण नाम ये हैं—Star (तारा), सूर्य, चन्द्र, पृथिवी,
 नक्षत्र इत्यादि इत्यादि । तारागण लक्षणभेदसे Sun

(सूर्य), Planet * (ग्रह), Satellite † (उपग्रह),
 (पारिपार्श्विक वा चन्द्र) Fixed planet ‡ (नक्षत्र या
 अचला तारा), Comet (धूमकेतु), Meteor (उल्का),
 Nebula (निहारिका) इन अणियोंमें विभक्त है ।
 जिन सूर्यके उच्चल आलोकिके प्रकाश और अग्रकागमे
 दिन और रातमा भेट मानूम पड़ता है, वह गतिग्रह
 है और अपने स्थानमें अचल भावसे अवस्थित है । उस
 सूर्यकी पृथिवी और पृथिवीवत् और भी बहुतसे तारा
 सदैव प्रदक्षिण किया करते हैं । इनमें पहिले § बुध
 (Mercury) उसके बाद क्रमसे शुक्र (Venus), पृथिवी
 (Earth) वा (Earth), मङ्गल (Mars), फिर
 बृहस्पत्यका ज्येष्ठ तारे और उसके बाद बृहस्पति (Jup-
 iter), शनि (Saturn) इतरानम् (Uranus) (१) और
 नेपच्युन् (Neptune) (२) है । इन तारोंको (Planet)
 (ग्रह) कहते हैं । उक्त मङ्गल और बृहस्पतिके मध्यमें
 जो ३३१ क्षुद्र तारे आविष्कृत हुए हैं, उन्हें क्षुद्र ग्रह वा
 कनिष्ठ ग्रह (Asteroids, planetoids या Minor
 planets) कहते हैं । जिन तरह पृथिवीको एक चन्द्र
 प्रदक्षिण करता है उसी प्रकार शनिकी आठ, इतरानम्
 और बृहस्पतिकी चार चार तथा नेपच्युन्की एक चन्द्र
 प्रदक्षिण करता है । इन चन्द्रमाओंके दूसरे नाम उपग्रह
 या पारिपार्श्विक ग्रह (Satelites) हैं । ये अपने
 अपने ग्रहोंकी प्रदक्षिणा टैनि समय उन ग्रहोंके साथ मानी

रज्जुवद हो कर सूर्यकी प्रदक्षिण टैनि है । इसी प्रकार
 आठ मुख्य और ३०१ कनिष्ठ या छोटे ग्रह हैं, पर्यात् ३२८
 ग्रह हैं और १८ उपग्रह या चन्द्र हैं । सब समेत ३४७
 ग्रहोपग्रह सूर्यको प्रदक्षिण करते हैं । इन धूमने धारोंको
 सूर्यका ग्रहदल वा परिवार कहते हैं । इसी प्रकार
 अणन्ताकागमें अनन्त सूर्य हैं और उनमें प्रत्येकका
 एक एक ग्रहदल वा परिवार है । यह शो पीत ग्रहदल
 यद्यपि आज तक भली भा त दृष्टिगोचर नहीं हुआ परतु
 तब भी उनका रहना सम्भव जान पड़ता है । काला
 नारमें दूरवीचणयन्त्रकी दृष्टिमौज्य शक्ति दृष्टि होने पर
 उसका आविष्कार हो सकता है । उक्त सूर्यपुत्र अचल
 तारा वा नक्षत्र (Fixed Star) के नामसे प्रसिद्ध है
 और ये ही असंख्य ज्योतिष्करूपसे आकाशमें खचित है ।
 हमारे इस सूर्यके ग्रहदलकी सम्बन्ध निबद्ध और सूर्यके
 साथ उसका सस्रव नियमबद्ध इसकी जो एक प्रणाली
 है, उसे Planetary System (ग्रहक्रम या ग्रहपद्धति)
 कहते हैं । सूर्य, ग्रहदल और धूमकेतु मवसमष्टिकी
 मोरजगत (Solar system) कहते हैं । और अणु देवा ।

बुध, शुक्र मङ्गल, बृहस्पति, शनि इत्यादिकी पुरातन
 ग्रह कहते हैं, क्योंकि, ये प्राय सब ही प्राचीन मध्य-
 जातिके विघ्नात हैं । सर्वसूर्य ग्रहोंको क्रान्तिग्रह
 (Zodiacal planets) कहते हैं, कारण ये क्रान्ति
 रेखाके ऊर्ध्व ८० अग व्याप्त स्थानमें मञ्चानित होते
 हैं । शिरिज (Ceres), पैनेन् (Pallas), जूनो (Juno),
 भेटा (Vesta), आश्टीया (Astraea) आदि कनिष्ठ
 ग्रहोंको अतिक्रान्त ग्रह (Ultra Zodiacal planets)
 कहते हैं, क्योंकि ये क्रान्तिकी उक्त मोमाके बहिर्भूत हैं ।
 पृथिवी और सूर्यके बीचके बुध और शुक्रको अग्रग्रह
 (Inferior) तथा पृथ्वीके बाद अर्थात् पृथिवीकी अग्रणा
 मध्यमें दूरस्थ मङ्गल, बृहस्पति, शनि इतरानम् और
 नेपच्युन्की परग्रह (Superior planets) कहते हैं
 और बृहस्पति आदि ग्रहोंको Major planets कहते
 हैं । पृथिवी तथा उसकी अंतिके बुध और शुक्र ये तीनों
 ग्रह सूर्य और कनिष्ठग्रहोंमें अवस्थित हैं । इनकी पार्थि
 वग्रह (Terrestrial planets) को सत्रा से गद है ।

सूर्य एक महा अद्भुत विद्यान शान्तिपाकाकार पदार्थ

* सूर्य का नाम प्लेनैटा नहीं लग सकता है । इसी प्रकारका

ग्रह का नाम प्लेनैटा नहीं लग सकता है ।

† सैरिल भावोंमें से ग्रहितका अर्थ सड़ोत अर्थात् पारिपार्श्विक है ।

‡ एक ही Fixed Star में एक दो है, पर वास्तवमें सूर्य और मवस

मिवर पदार्थ ही है । सोल का उल्लेख और अन्य मवसोंका उल्लेख तथा

वह सब ही उसकी ही प्रति प्रकाशित होते हैं वह भी आलोकिक है । यह

पृथिवीके वायुके प्रकाशन है और सब सूर्य प्रदक्षिणजनित होता है ।

§ इन सूर्यके बुध भी सूर्य के आसपास ही प्रदक्षिण करते हैं ।

¶ बुध और शनि के केंद्रोंके ही अग्निविन्दु (Volcan) अथवा नू मासके

एक एकका आविष्कार करते हैं, परन्तु इसका स्थिर सिद्धांत नहीं था ।

(१) हुरुवा नाम (Herschel) हमें यह है कि वह हमें सूर्यके

पार्थिव आविष्कार (विद्या वा और ज्योतिष्कान् Cometary and अर्थात्

इसमें वायु है तथा वह वायु नामके अर्थमें ही मवसमें आविष्कृत है ।

(२) अणुबद्ध चक्र विद्युत्के अणु बुध ही अणुका अणुका अणु है ।

वर्तुताका अणु है कि, दोष भी अणुकार बुध ही है ।

है। यह आलोक, उच्चाप और सर्ववैर्य का आधार है। सधराकर्षण (Gravitation) और प्रक्षेपिका (Tangential) की शक्तिद्वारा ग्रहगण स्व स्व कक्षाच्युत न हो कर, चक्राभास (Elliptical) मार्गसे क्रान्तिके समतल देशगत न होते हुए अपनी अपनी कक्षासे क्रान्तिको दो दो बिन्दुमें भेद कर तिर्यगरूपसे घूमते रहते हैं। इस प्रकार घूमते रहनेसे ग्रह एक प्रदक्षिणामें एक बार सूर्यके पास और एकवार दूरतम स्थानमें जाता रहता है।

पृथिवी जिस प्रकार गोल, ज्योतिष्मन् और सूर्यालो- कसे आलोकित है तथा अपनी ध्रुवयष्टिके चारो तरफ फिरती रहते हैं, उसी प्रकारकी चाल ग्रहोपग्रहोंकी भी है।

ग्रहकक्षा और ग्रहसम्बन्धी जितने ज्ञातव्य विषय निर्णयार्थ है, उनके विषयके सात मौलिक तत्त्व जानने पड़ते हैं और उनको Seven elements of the orbit कहते हैं।

१। कक्षाके गरिष्ठव्यासका (Major axis) दैर्घ्य।

२। ग्रहकी केन्द्रापसारिता (Eccentricity) जिससे उसका (कक्षाकी) वास्तविक आकार निर्णीत हो।

३। ग्रह सूर्यके पास रहते समय उस ग्रहकी ध्रुवक (Longitude of the perihelion) कहते हैं।

४। क्रान्तिमें कक्षाके तिर्यक् स्थितिका परिमाण (Inclination of the orbit to the ecliptic)।

५। ग्रहके पातका ध्रुवक (Longitude of the ascending node of a planet)।

६। ग्रहके सूर्यावर्तनका समय (भ्रमण) (Periodic time)।

७। किसी निदिष्ट समयमें ग्रहका ध्रुवक (Longitude of a planet at a given epoch); जिसकी Longitude of the epoch भी कहते हैं।

इन सब बातोंसे ग्रह सम्बन्धी सब गणनाएं हो सकती हैं। इस लिए इनकी सारणी (Synoptical table) बनाना ज्योतिर्विदोंका एक प्रधान कर्तव्य है।

यन्त्रवेधसे जो ग्रहतत्त्व आविष्कृत हुए हैं वह केप्लर के निकाले हुए ग्रहगति सम्बन्धीय नियम (जिसकी कि Kepler's laws कहते हैं) तथा निउटन् द्वारा आविष्कृत सधराकर्षणके नियम है।

केप्लरके तीन नियम इस प्रकार हैं—

१। प्रत्येक ग्रहकी कक्षा एक एक (Ellipse) है, चक्राभास दो (Focal points) हैं और अग्रकरके अन्यतरमें सूर्य अवस्थित है।

२। ग्रहका योजकसूत्र (Radius vector) (अर्थात् सूर्यसे ग्रहलग्नसूत्र) ग्रहकी गति पर सम-काल समायतनकी रचना करता है।

३। किसी ग्रहके (Time of revolution) भ्रमण कालका वर्ग और सूर्यसे माध्यमिक दूरका (Mean distance) घन, इन दोनोंका जो मान (Ratio) है वह सब ग्रहोंके वैसे मानके समान ही है।

मुख्य मुख्य ग्रहोंमें परस्पर तथा सूर्यके साथ तुलना कर उनके विषयोंमें बहुतमी जानने योग्य बातें नीचे लिखी जाती हैं।

ग्रहकी विष्टिका परिमाण १ जोनेसे उसका कितना गुणा हो	३ यष्टिमें चक्रावर्तन	पृथिवीसे दूर, नियुत मील	सूर्यसे दूर, नियुत मील	वर्ष परिमाण	पिण्ड वास्तुकी मील	नाम
१२१०००	६०० घं, ४८ मि	२९.८	८६६४००	सूर्य
०, ५६	९४ ५६	५६.८	५६	८०.८६८	३०३०	बुध
०, ८२०	२३. २१६	५५.०	६०.२	२२४ दिन	७५००	शुक्र
०, १५२	१३. ५६	२२.८	३६५ "	७८१८	पृथिवी
०, १५२	२४. ३०६	४८. ६	१४०	६८० "	४२६३	सहज
२२.८	५५६	२८०.४	४०८	पाश्चिम वर्षका १२ गुणा	८५००	बृहस्पति
८४८	१०. १५६	७८३.९	८०२	से ३० गुणा	७०००	शनि
५८	८. ३०	१६८८	१०५२	से ८५ गुणा	२२०००	इतराधि
१०२	२६८८.४	२०५०	से १०० गुणा	२६०००	नेपचुन

छोटे छोटे ग्रहोंके सम्बन्धमें उनकी क्षुद्रता प्रयुक्त अनेक तत्त्व तो अब तक प्रकाशित नहीं हुए, परन्तु उनमें वृहत्तम २०० और क्षुद्रतम २० मीलनसे ज्यादा न होंगे। बहूनसे लोग अनुमान करते हैं कि, उनमें कोई कोई तो युगके ग्रहके परस्परके आघातमें टूट कर खण्ड खण्ड हो गये हैं। परन्तु यह अनुमानमात्र ही है। ज्योतिर्विदों ने खास खास यन्त्रों और गणनाओंकी सहायतासे सूर्य आदि अनेक ग्रहोपग्रह तथा किम किसौ नक्षत्र निर्णय पदार्थके और उनके भार सम्बन्धी परिचय दिये हैं।

सूर्य आदि ग्रहोंमें विभिन्न रोग ।

२ बालकके अनिष्टकारक स्कन्द आदि रोग । उगार तथा श्लो । ग्रह भावे अप । १ ग्रहण, घादान । ४ अतु ग्रह । ५ निर्वन्ध । "बभ्रव मयो लनववदयहा ।" (नैपथ्य)

६ रगोद्यम । ७ मलबन्ध । ८ चन्द्रग्रहण या सूर्यग्रहण । "वक्रान्तर परिभ्रान् क्रवीत् पविष्टश्च पृथे ।" (ज्योतिषतत्त्व) ९ नव म ख्या, नीकी म ख्या ।

ग्रहक (म० पु०) ग्रह कर्त्तरि अच् स्वायं कन । आहक, ग्रहण करनेवाला ।

ग्रहकक्षा (म० स्त्री०) वह वृत्ताकार पथ जिस पर ग्रह भ्रमण करता है (Orbit) ।

ग्रहकक्षील (म० पु०) ग्रहेषु-कक्षोल इव । राहु नामक ग्रह ।

ग्रहकुपाण्ड (म० पु०) पुराणानुसार एक प्रकारकी देव योनि ।

ग्रहगणित (म० स्त्री०) ग्रहाणां तदुगत्यादीनां गणित यत्त बहुव्री० । ज्योतिषशास्त्रका वह स्कन्ध जिसमें ग्रहोंका विवरण उल्लेख है ।

ग्रहगति (म० स्त्री०) ग्रहाणां गतिः, इ तत् । ग्रहगणका गमन, ग्रहोंका अपनी कक्षा पर घूमना ।

ग्रहगन्ध (म० पु०) ग्रहस्य गन्ध, इ-तत् । एष्वन्त इक्षो

ग्रहगोचर (म० पु०) ग्रहस्य गोचर इ-तत् । जन्म प्रभृति राशिमें ग्रहगणोंकी गतिविशेष । गोचर इक्षो ।

ग्रहचिन्तक (म० पु०) ग्रहान् चिन्तयति चिन्ति शब्द, अ, इ तत् । देवदत्त, ज्योतिषी ।

ग्रहण (म० स्त्री०) ग्रह भावे ल्य, ट् । १ खोकार, मन्त्रूरी २ ज्ञान, समझ । ३ आदर, इज्जत । गृहणतिनेन ग्रह

करणे ल्य, ट् । ४ व्रता, श्राय । ५ इन्द्रिय । गृह्यतेऽसौ, ग्रहे कर्मणि ल्य, ट् । ६ इन्द्र, आवाज । ७ इन्द्रिय । ८ उपराग ।

राहु द्वारा चन्द्र वा सूर्यके आच्छादन या ग्रहणकी ग्रहण कर्त्त है। भारतमें बहुतसे लोगोंकी विश्वास है कि सिंहिका नामकी कोई राक्षसी रही। राहु उसीका पुत्र है। पहले इसके हस्तपदादि सभी अवयव थे। समुद्र मथनेके पीछे कोयलसे इन्होंने अमृत पी लिया। उसीसे विष्णुने चक्रसे इसका मस्तक काटा था। अमृतके गुणसे वही कटा हुआ मत्स्या चिरदिनकी अविकृत रहा। चन्द्र और सूर्यकी बात पर विष्णुने राहुका शिर काटा था। राहुका खण्डितमस्तक पूर्व अपकारकी भूल न सका, मुंह फाड़ करके उन्हें निगल डालनेका भाग बटा। अन्नकी कोई उपाय न देख करके ब्रह्मर्षि विधान किया कि अमावस्याविशेषमें सूर्य और पूर्णिमा विशेषमें चन्द्रको वह एक बार खा भेजेगा, दूसरे किसी भी समय नहीं। खण्डित राहुमस्तककी यही करना पडा। इसीसे उपयुक्त दिनमें वह चन्द्र और सूर्यको ग्रहण करता है। इसीका नाम ग्रहण है। राहु ने ही।

भारतवामो ग्रहणके समय शङ्ख घण्टा बजाते हैं। लोग समझते हैं कि शङ्ख घण्टा बजानेसे राहु डर करके शीघ्र उन्हें छोड़ जावेगा।

गणितवित् पण्डित इसमें कोई बात नहीं मानते। ब्रह्मसंहितामें लिखा है कि आकाशचारी राहु शरीर धारी, मन्त्रकाकृति वा मण्डलमय होनेसे भगवान् पर या इ राशि दूर रहते ग्रहण पड नहीं सकता। राहुकी गतिकी स्थिरता न रहनेसे गणना द्वारा किम प्रकार उसकी उपलब्धि होगी। राहुकी मुख पुच्छ आदि आकार-विशिष्ट माननेसे अभावस्था पूर्णिमा भिन्न अन्न समय भी ग्रहण लग सकता है। वह यदि सर्पाकार रहता, तो कमी मुख और कमी पुच्छ प्रभृति दूसरे किसी अवयव द्वारा ग्रहण पडता। अतएव राहु किमी प्रकार आकार-विशिष्ट अथवा अनियतगामी नहीं होता। वह अन्धकार मय छाया विशेष है । (इन्द्रगणित ४५०)

भास्कराचार्यके मतमें सूर्यप्रभृति सभी ग्रहोंकी एक एक कक्षा होती है। यह नियत गतिसे अपनी अपनी कक्षामें अनवरत भ्रमण करते हैं । सूर्यकी कक्षाके

नोचे चन्द्रकी कक्षा है। अभावस्याके दिन सूर्य और चन्द्र एक ही राशिमें रहते हैं। सोधके सूर्य किरणकी आच्छादन करने पर जैसे सूर्य नहीं देख पड़ता, चन्द्र द्वारा आच्छादित सूर्य भी भूमण्डलवासियोंसे छिपा रहता है। चन्द्रमण्डल द्वारा सूर्यके ऐसे ही आच्छादनका नाम सूर्यग्रहण है। सूर्यकी गतिसे चन्द्रकी गति अधिक होती है। अधस्य चन्द्र पश्चिम दिक्से जा करके क्रमशः सूर्यके निकट पहुँच करके उसकी टांप लेता है। इसीसे सूर्यग्रहणमें पश्चिम दिक्को स्पर्श होता है। चन्द्रकी गति अधिक रहनेसे चन्द्रमण्डल शीघ्र ही उसकी अतिक्रम करके पूर्व और सरक जाता है। अतएव सूर्यग्रहणमें पूर्व दिक्को ही मोक्ष होता है। दृष्टिपरिच्छेदक वा चित्तिज वृत्तसे बाहर कोई पदार्थ देख नहीं पड़ता। एवं चन्द्रमण्डल भी सूर्यमण्डलसे परिमाणमें बहुत छोटा है। स्वगोल देखो। सूर्यग्रहणके समय चन्द्र जिनकी दृष्टिपरिच्छेदक रेखाके बीच रह करके सूर्यकी आच्छादन करता, उनको सूर्य देख नहीं पड़ता। किन्तु उसी समय चन्द्र जिनकी दृष्टिपरिच्छेदक रेखाके बाहर जाता, उनको परिष्कार सूर्य देखनेमें आता है। इसी कारणसे एक देशमें सूर्यग्रहण पड़ते भी अपर देशमें वह नहीं होता। जिस प्रकार मेघमण्डल जिनकी दृष्टिपरिच्छेदक रेखाके अन्तर्वर्ती रहता, उनके लिये सूर्य अदृश्य है और जिनके दृष्टिपरिच्छेदकके बाहर पड़ता, उनको सूर्य देखनेको मिलता है।

अपने मस्तक पर आकाशमण्डलमें उत्तरसे दक्षिण पर्यन्त एक सरल रेखा कल्पना करनेसे उसकी मध्यरेखा ब्रह्म सकता है। कोई ग्रह मध्यरेखाके पूर्व वा पश्चिम जितनी दूर रहता उसको नति और दृष्टिपरिच्छेदकके बाहर जितने अन्तर पर अवस्थिति करता उसको लम्बन कहना पड़ता है। अभावस्याके अन्त समय सूर्य पूर्व वा पश्चिमको भुक्तता और उसी समय चन्द्र उसकी आच्छादन करता है। इसी कारणसे भूमध्यस्थ दर्शक सूर्यको देख नहीं सकते। किन्तु भूपृष्ठस्थ दर्शक दृष्टिपरिच्छेदकके अधोभागमें चन्द्र लम्बित रहनेसे सूर्यको, देखा करते हैं। (विज्ञानगिरोनणि गोलाध्याय ० ग्रहण २५०)

अभावस्या विशेषको पृथिवी, चन्द्र और सूर्य एक

स तमें ग्रहित जैसे ऊर्ध्वोर्धो भावसे अवस्थित करते हैं। पृथिवी और सूर्यके मध्यस्थत चन्द्रमण्डलकी छाया पृथिवीके जिस स्थान पर पड़ती, वहाँके लोगोंके सूर्य देखनेमें नहीं आता। चन्द्र उनकी दृष्टिको यवनिकाकी भाँति अवरोध कर लेता है। अतएव वह सूर्यको ग्रस्त पाते हैं। जिस स्थान पर चन्द्रमण्डलकी छाया नहीं पड़ती, वहाँ लोग सूर्यको देखा करते हैं।

किमी वर्तुलाकार पदार्थका एक भाग सूर्यकिरण से उद्भासित होने पर उसके विपरीत भागमें सूच्याकार छाया पड़ती है। पृथिवी गोलाकार और शून्यभागमें अवस्थित है। राशिचक्रस्थित ग्रह उसीकी गतिके अनुसार उमीके बीचमें घूमते हैं। स्वगोल और भूगोल देखो। जिस समय ज्योतिर्मय सूर्य हमारी दृष्टिपरिच्छेदक रेखाके मध्य रह करके पृथिवीका उपरि भाग आलोकित करता, हमारे दृष्टिपरिच्छेदकके बाहर गगनमण्डलके किमी स्थान पर पृथिवीकी सूच्याकार छाया पड़ती है। ऐसे ही सूर्यके हमारे दृष्टिपरिच्छेदकसे बाहर रह करके भूमण्डलका तलपृष्ठ आलोकित करने पर हमारे दृष्टिपरिच्छेदकके मध्य किसी गगनमें वह छाया पतित होती है। पृथिवी और सूर्य देखा

सूर्यकी गतिके अनुसार पृथिवीकी छाया भी सर्वदा पूर्वाभिमुख चला करती है। इसीसे उसकी गति सूर्यके समान है। पृथिवीच्छाया अपेक्षा शीघ्रगामी चन्द्र स्वोय गतिके अनुसार पृथिवीकी छायामें प्रवेश करने पर उससे यह स्थान पड़ जाता है। इसीका नाम चन्द्रग्रहण है। (वासनाभाय गोलाध्याय, गृहणवासना ४ श्लोक) पूर्णिमाके समय पृथिवी, चन्द्र और सूर्यके मध्य अवस्थान करती है। वह सूर्य जिस ओर रहता, चन्द्र उसके विपरीत भागमें पड़ता अर्थात् पूर्णिमाको सूर्यसे ६ राशि अन्तर पर चन्द्र अवस्थान करता है। चन्द्रका जो भाग जितने देर तक पृथिवीकी छायाके बीच रहता, उसमें उतनी ही देर तक सूर्य किरण नहीं पड़ता, सुतरां वह अदृश्य रहता है। चन्द्र शीघ्रगामी होनेसे पूर्व दिक्से जा करके क्रमशः पृथिवीकी छायामें प्रवेश करता है। इसीसे चन्द्रग्रहणमें पूर्व दिक्को स्पर्श होता है। फिर चन्द्र शीघ्रगतिके क्रमशः पूर्व दिक्को पृथिवीको छायासे निकल जाने पर पश्चिममें मोक्ष पाता

है। चन्द्रग्रहणमें छादक (पृथिवीच्छाया) और छाया (चन्द्र) एक राशिको एक ही कालमें रहनेमें लम्बन वा नति नहीं होती। इसीसे सभी स्थानोंके लोग समान भावमें चन्द्रग्रहण देख सकते हैं। (श्रीगणेशाय नमः) ग्रहणके समय अर्धग्रस्त चन्द्रका विपाण वा कोटिद्वयकी कुण्ठता और अपेक्षाकृत बृहत्तमे समय चन्द्रग्रहणकी स्थिति होनेसे सूर्यच्छादकमें चन्द्रका छादक हृदय् होता है। सूर्यग्रहणमें अर्धग्रस्त सूर्यका विपाण वा कोटिद्वयकी तीक्ष्णता और ग्रहण स्थिति अल्प काल होनेसे सूर्यच्छादक अपेक्षाकृत छोटा पड़ता है।

(श्रीगणेशाय नमः)

वराहमिहिरके मतमें चन्द्रग्रहणमें चंद्र पृथिवीच्छाया और सूर्यग्रहणमें सूर्यमण्डलमें प्रवेश करता है। इसी कारण पश्चिम दिक्से चन्द्रग्रहण और पूव दिक्से सूर्यग्रहण नहीं लगता। जिस प्रकार हलकी छाया सूर्यके आलोकमें क्षमसे एक ओरकी बटती, वैसे ही सूर्यके आवरणसे पृथिवी छाया भी दिन दिन दीर्घ पड़ती है। जब सूर्यके समम राशिमें चंद्र अवस्थान करता और सूर्यसे उत्तर वा दक्षिणकी अधिक नहीं चलता, तब वह पूर्वाभिमुख जा कर पृथिवीकी छायामें घुसता है। सूर्यग्रहणके समय सूर्यमें अध स्थित चंद्र पश्चिमदिक्में आ कर मेघको भाति उसकी टाक लेता है। इसीसे सूर्यग्रहण सब देगोंमें बराबर नहीं पड़ता। यह शास्त्रका सद्भावमात्र लगता कि राहु चंद्र वा सूर्यको ग्राम करता है। (१६१४ विना ५५०)

अब बात यह है कि ज्योतिषकोंका वह मत अर्थात् राहु नामक असुरका चन्द्र वा सूर्यको ग्राम न करना माननेसे प्राचीन शास्त्रोंके साथ विरोध जाता है। वेद तथा पुराण प्रभृति सभी शास्त्रोंमें लिखा है कि राहु, सूर्य और चन्द्रकी ग्राम करता है—

“अनाहुश्च वा वासु” सूर्य तमसा विधातुः” (सायण्यिकी हृत्)

“सर्व महाभूम तीर्थ सर्वं ब्रह्मपत्नी विधातुः”

“सर्व भूमिधर्मदान राहुपत्नी” (पराशर)

यहां विरोध मिथ्यानेके निये गङ्गाचार्य लिखते हैं कि चन्द्रग्रहणके समय राहु पृथिवीकी छायामें घुसने चन्द्रकी और सूर्यग्रहणके समय चन्द्रमण्डलमें प्रवेश करके

सूर्यको आच्छादन करता है। ब्रह्माके वरसे तमोमय राहु ऐसे ही सूर्य और चन्द्रकी टांप लेता है। (श्रीगणेशाय) प्राचीन ज्योतिर्विद्व श्रीपतिने भी इसी मतको माना है। (श्रीपति) हलक हिलके मतमें राहु नामक किमी असुर की ब्रह्माने वर दिया है कि ग्रहणके समय लोग जो होम करेंगे, उसमें अग्रसे तुम मनुष्य होंगे। इसी कारण ग्रहणके समय राहुका मान्निष्य होनेसे यह कल्पना की जाती है कि वह चंद्र वा सूर्यको ग्राम करता है। (१६१५ विना ५५०) वास्तविक पक्षमें यह किमी प्राचीन वैज्ञानिक मतसे भिन्न नहीं होता, किमी जोष वा खडित मस्तकके चन्द्र वा सूर्यको खा जानका नाम ग्रहण है। राहु दक्षिण। सूर्य और चन्द्रमण्डलका व्यास, पृथिवीकी छायाका परिमाण तथा इनकी गति प्रभृति अच्छी तरह न समझनेसे ग्रहणका कारण और सम्बन्ध तथा स्थिति, मोक्ष एव स्वर्ग कर्षों कर मालूम पड़ेगा। सूर्यमिथ्यान्तमें ऐसा लिखित हुआ है—

जो सूर्य मण्डल हमको देख पड़ता उसका व्यास परिमाण ६५०० योजन और चन्द्रका व्यास ४८० योजन है। सूर्य और चन्द्रके व्यासको उनको स्पष्ट गतिसे गुण करके मध्यगति द्वारा भाग करनेसे जो निकलेगा, वृद्धे यथाक्रम सूर्य तथा चन्द्रका स्पष्ट व्यास ठहरेगा। (१६१६ विना ५५०) हमें आकाशमण्डलमें चन्द्रकी छोड़ करके जो ग्रहविषय देख पड़ते, अतिगम्य दूरस्थ होनेसे प्रकृत कक्षमें जोड़े नहीं मिलते। सभी ग्रह अध स्तन चन्द्रकी कक्षामें हट्ट होते हैं। इसीसे चन्द्रकी कक्षामें सूर्यका व्यासपरिमाण स्थिर किया जाता है। वास्तविक पक्ष पर अपनी कक्षामें जीवन चन्द्र ही घूमता है। सूर्य वा दूसरे ग्रहका चन्द्रकक्षामें माय योग नहीं होता। (१६१७ विना ५५०) शो रक्षण) पूर्व प्रदर्शित सूर्यमण्डलके स्पष्ट व्यासको सूर्यमण्डल द्वारा गुण करके चन्द्रमण्डलमें बाटने पर जो लम्ब होता, चन्द्रको कक्षामें सूर्यका व्यासपरिमाण ठहरता है। चन्द्रके व्यास (४८० योजन) और चंद्र कक्षास्थ सूर्य व्यासको १५से बाटने पर जो लम्ब होता, वही चंद्र सूर्यके विषयव्यासको परिमाण कला है। (१६१८ विना ५५०)

भूगोलके परिमाणसे सूर्यमण्डलका परिमाण अधिक है। इसी कारण सूर्यकी विपरीत दिक्की मधोकी

भांति पृथिवीकी छाया क्रमसे बढ़ करके चंद्रमण्डलकी अतिक्रम करती है। इसके परिमाणकी स्थिर करनेका उपाय यह है—चंद्रकी स्पष्ट गतिकी भ्रूव्यास (१५८१ व्याज) द्वारा गुण करके चंद्रकी मध्यागति (०।०।७६०। ३४।५०) से वांटने पर जो लब्ध होगा, वही सूची अर्थात् पृथिवीच्छायाका परिमाण माना जावेगा। (सूर्यसिद्धान्त ४४)

इसी पृथिवीच्छायाका एक भाग घोर अन्धकारमय है। प्राचीन गणितार्थ उमकी तम नामसे उल्लेख करते हैं। अपर भागमें आलोकका थोड़ा बहुत सञ्जाव रहनेसे उतना अन्धकार नहीं रहता।

पृथिवी व्यास और सूर्यका स्पष्ट व्यास दोनोंके अन्तरकी चंद्रविम्बके मध्याव्यास (४८०) द्वारा गुण करके सूर्यके मध्याव्यास (६५००) से वांटने पर जो लब्ध होगा, तम वा भ्रूच्छायाके अन्धकारमय अंशका परिमाण योजन निकलेगा। (सूर्यसिद्धान्त ४५) इसकी १५ से भाग करने पर भ्रूच्छायाका कलापरिमाण आता है।

अमावस्याकी सूर्यग्रहण और पूर्णिमाकी चन्द्रग्रहण लगता है। परन्तु सभी अमावस्याओं वा पूर्णिमाओंकी ग्रहण नहीं पड़ता। इसीसे सूर्यसिद्धान्त प्रभृतिमें यह जाननेका सहज उपाय लिखा है—किस दिनकी ग्रहणकी सम्भावना हो सकती है। ग्रहण गणना करनेकी सबसे पहली देखना होगा, उस दिन ग्रहण लग सकता है या नहीं। सम्भव होनेसे गणना किया करते हैं।

सूर्यके विपरीत भागमें पृथिवीकी छाया पड़ती है। पृथिवीकी यह छाया सूर्यसे ६ राशिके अन्तर पर रहती है। चन्द्रपात (राहु) और पृथिवीच्छाया कुछ अंश न्यूनाधिक वा समान रहनेसे चन्द्रग्रहण और सूर्यके साथ समान वा कुछ अंश न्यूनाधिक होनेसे सूर्यग्रहण पड़ता है। (सूर्यसिद्धान्त ४६) अमावस्याके समय सूर्यस्फुटके माथ पात स्फुटके १० अंश न्यूनाधिक होनेसे सूर्यग्रहण और पूर्णिमाकी चन्द्रस्फुटके मद्धित पात स्फुटका १३ अंश अन्तर आनेसे चन्द्रग्रहण लग सकता है। (ज्योति०)

सूर्यसिद्धान्तके टीकाकार रङ्गनाथने कहा है कि चंद्रग्रहणमें १२ अंश और सूर्यग्रहणमें ७ अंश न्यून वा अधिक होनेसे भी ग्रहण पड़ सकता है। (सूर्यसिद्धान्त ४६ श्लोक १५) आधुनिक अङ्गरेज ज्योतिर्विदोंके मतमें पात

स्थानसे १७ अंश २१ कला दूर सूर्य और ११ अंश ३४ कला दूर चन्द्र रहनेसे ग्रहण होता है। दूसरे ज्योतिषकीं मतमें रवि जिस नक्षत्रमें जिस पाटमें अवस्थित करता, उसी नक्षत्रके उसी पाटके पूर्वापर त्रिपाटके मध्य राहु वा केतु आनेसे सूर्यग्रहण और चन्द्र जिस नक्षत्रके जिस पाटमें अवस्थित होता, उसी नक्षत्रके उसी पाटके चतुष्पाटके मध्य राहु वा केतु पड़नेसे चन्द्रग्रहणकी सम्भावना होती है। (ज्योति०)

मतान्तरसे जिस नक्षत्रमें सूर्य रहता, उससे गणनाके चतुष्टय नक्षत्रमें चन्द्र आनेसे चन्द्रग्रहण और कृष्णपक्षकी तृतीयाकी मास नक्षत्र पड़नेसे उसकी अपेक्षा गणनामें त्रयोदश नक्षत्र जिस दिन पड़ेगा, सूर्यग्रहण लगेगा।

(ज्योति०)

ग्रहणगणना—सुमेरुसे लङ्का पर्यन्त कल्पित सरल रेखाका नाम मध्यरेखा है। गणितके अनुसार ग्रहणका जो समय ठहरता, मध्यरेखाके पूर्वभागमें उस समयसे पहले और उसके पश्चात् भागमें उसी समयसे पीछे ग्रहण देख पड़ता है। (ज्योति०)

ग्रहणगणना करनेमें जिस दिनकी उमकी सम्भावना आती, उस दिनकी पूर्णिमा वा अमावस्याके अन्तिम समयका दिनवृन्द, रवि चंद्रका तात्कालिक स्फुट और गति निरूपण की जाती है। फिर दिनोंकी २०से भाग करने पर जो लब्ध होता, पात वा राहु स्फुटका अंशादि कहलाता है। दिनोंकी दोबारा ६से गुणा करके १८८से वांटने पर जो आवेगा, वह पूर्व प्राग अंशादिमें मिलाया जावेगा। दूसरे किसी स्थान पर लब्धपिण्डको १५०से भाग करके जो लब्ध होता, राहु स्फुट अंशादिकी विकलाओंमें मिलाना पड़ता है। स्फुटके अंशोंकी ३०से वांट करके लब्ध अङ्गकी पुनर्वार १२से भाग करने पर जो अवशिष्ट रहता, राश्यादि ठहरता है। इसी राश्यादिकी ३।३।१२।५२ क्रमसे निकाल डालने पर जो अवशिष्ट बचता, राहुका स्फुट पड़ता है। इसका अपर नाम स्फुटपात है।

(ज्योति०)

चन्द्रग्रहणगणना—पूर्णिमाके अन्तिम समयका राश्यादि स्फुटपात जो आवेगा, उसकी तत्कालके रविस्फुटके राश्यादिसे घटाने पर बचनेवाला अंशादि ०से गुण

करनेके पीछे कलाके साथ मिलानसे आनेवाला अद्द ४१से गुण करके गुणफलकी दो स्थानोंमें रखना चाहिये। फिर उसके एक स्थानोत् अद्दको १६से बाटते हैं। इसमें लब्ध होनेवाले अद्दको द्वितीय स्थानके अद्दसे घटाने पर जो बचता, उसको एक स्थान पर रखना पड़ता है। तत् सामयिक रविगति कलाटिको १३४से गुण करने पर जो फल मिलता उसका पूर्व अद्दके साथ योग लगता है। इस युक्ताद्दसे १८६५ कम करने पर जो अवशिष्ट आवेगा वही अद्द उस कालकी चन्द्रगति द्वारा बाँटा जावेगा। इसमें जो बचता, उसको ४३२०से घटाने पर निकलनेवाला अद्द आस ठहरता है। लब्धाद्द ४३२०से अधिक होने पर ग्रहण नहीं पड़ता। इस ग्रामाद्दकी दो स्थानोंमें रखना चाहिये। फिर उनमें एकको १२से गुण करते और दूसरेमें १० जोड़ देते हैं। इसके बाद १२ और गुणित अद्दको दस युक्त अद्दभाग भाग करने पर जो लब्ध होता वही इस दिनको चन्द्रग्रहणको स्थितिका दण्डादि ठहरता है। (स्व। १०)

प्रकारान्तरमें चन्द्रग्रहणको स्थितिके दण्डादिका जाननेका उपाय—पूर्णिमाके अन्तिम समयमें स्फुटपात तथा रविस्फुटका अन्तर जितने अग्र हो, उसको फला बना करके दो स्थानोंमें रख देना चाहिये। फिर उनमें एकको ८से भाग करने पर जो लब्ध आता, वह मो. दो स्थानों पर रखा जाता है। इसमें एकको क तथा दूसरेको ख चिह्नित करते हैं। क चिह्नित अद्दको ५५से बाँटने पर जो निकलेगा, उसमें ख चिह्नित अद्द मिलाना पड़ेगा। इस युक्ताद्दकी पूर्वस्थापित कलामें घटाना चाहिये। जो अवशिष्ट रहेगा, उसके साथ इस समयको रविगतिको ३से गुण करके जोड़ना पड़ेगा। इस युक्ताद्दसे ४० घटाने पर जो बचता, उसको तत्कालको चन्द्रगतिसे हीन करने पर शेष रहनेवाला अद्द ६से गुण करना पड़ता है। इसका जो फल आवेगा, वही ग्राम कहलावेगा। ग्रामको दो स्थानों पर रख करके ग और घ चिह्न लगाया जाता है। ग चिह्नित अद्दको १२से गुण घ चिह्नित अद्दमें १८३ योग करना चाहिये। योग फल द्वारा गुणफलको बाँटने पर जो लब्ध होगा, उस दिनके चन्द्रग्रहणका स्थितिदण्डादि ठहरेगा। (अगति०)

पूर्णिमाके अन्तिम समयके राश्यादि चन्द्रस्फुटसे राश्यादि स्फुटपातकी हीन करने पर जो राश्यादि आवेगा उसमें २ मिलाया जावेगा। यदि युक्ताद्द ६से अधिक होता, तो ६ छोड़ करके अवशिष्ट अद्द लिया जाता है। फिर देखना चाहिये, वह अद्द ३से अधिक है या नहीं। यदि ३से अधिक हो, तो उससे ३ निकाल करके अवशिष्टकी कला बना डालना चाहिये। फिर उक्त अद्द ३से न्यून रहने पर उसको ३से घटा करके बचनेवाले अद्दकी ही कलाए बनायी जाती है। इसके बाद उक्त कलाओंके ७से गुण करते हैं। इसमें आनेवाले अद्दको ८०से भाग करने पर जो लब्ध आता, वही शर कहलाता है।

चन्द्रको माधित गतिको १७से गुण करके ४२० द्वारा बाँटने पर जो लब्ध होता उसका नाम चन्द्रमान है। चन्द्रमानको १०से गुण करके ३से बाँटने पर जो लब्ध आता, एक स्थान पर रखा जाता है। रविको गतिको ६०से गुण करने पर जो मिलता, उसमें ८७३ निकालना पड़ता है। फिर अवशिष्टको १११से भाग करने पर जो फल आता, वह पूर्वस्थापित अद्दसे घटाय़ा जाता है। इसके अवशिष्ट रहनेवालेका नाम राहुमान है।

लब्धाद्दमें शरका अद्द अधिक आनेसे ग्रहण नहीं पड़ता। ग्रामाद्दको जो मख्या होगी, उसको घनुमार स्थित्यर्ध खण्डा और शब्दियल से करके एक स्थानमें रखना चाहिये। फिर तत्कालके चन्द्रको गतिको ८६०से घटा करके जो अवशिष्ट आता, शब्दियल द्वारा गुण किया जाता है। इस गुणफलको १६०से बाँटने पर जो लब्ध होगा, उसको स्थित्यर्ध खण्डाके अद्दमें मिलानसे शब्द स्थित्यर्ध दण्डादि मिलेगा।

पूर्णिमाके स्थिति दण्डादि दो स्थानोंमें रख करके उसमें एकसे शब्दस्थित्यर्ध दण्डादि घटाने पर आनेवाला अद्द ही चन्द्रग्रहणका स्पर्ग दण्डादि होता है। दूसरेमें शब्दस्थित्यर्ध दण्डादि मिलानसे चन्द्रग्रहणका मोक्ष दण्डादि निकलता है।

चन्द्रस्फुट पातस्फुटमें घटानेमें यदि होनाइ राशिये न्यून आता, तो ईशान कोणमें स्पर्ग तथा यशुकोणमें मोक्ष देखा जाता है। होनाइ ६ राशियोंमें अधिक पड़ने पर अग्निकोणमें स्पर्ग तथा नैऋत कोणमें मोक्ष होता

स्थित्यर्ध खण्डा

ग्राम	स्थित्यर्ध	शुद्धिपल
०१०	०१२१	१
०१२०	०१२८	२
०१३०	०१३६	३
०१४०	०१४१	३
०१५०	०१४६	४
१०	०१५०	४
१३०	११२	५
२०	१११	६
२३०	११२०	६
३०	११२७	६
४०	११४०	७
५०	११५१	८
६०	२११	८
७०	२११	१०
८०	२११८	१०
९०	२१२७	१०
१२०	२१४७	१२
१५०	३४	१३
१६०	३८	१३
२००	३१२८	१२
२४०	३१४४	११
२८०	३१५७	१०
३२०	४१८	८
३६०	४१२८	७
४००	४१२६	५
४४०	४१३२	३
४८०	४१३७	३
५२०	४१४१	५
५६०	४१४३	८
६००	४१४५	८
६४०	४१४७	८

चन्द्रग्रहण—सूर्य ग्रहण गणना करनेके दिन पहले इसी दिनका अर्द्धपिण्ड, दिनवन्द, स्फुटपात, अयनांश अमावस्याके अन्तिम दण्डका तात्कालिक रवि तथा

चन्द्रका स्फुटपात और गति प्रभृति पूर्व प्रक्रियाके अनुसार गिन करके स्थिर करना चाहिये। सूर्य ग्रहण सम्भावनाको अमावस्याके दिन इस दिनकी अमावस्याके स्थिति दण्डादिसे इस दिवसीय दिनमानका अर्ध अन्तर करने पर जो अवशिष्ट आता, नतदण्ड कहलाता है। नतदण्ड दो प्रकारका होता है—प्राङ् नत और पश्चान्त। इस दिवसकी अमावस्याका स्थितिदण्ड इसी दिनाधसे न्यून होने पर प्राङ् नत और अधिक रहनेसे पश्चान्त कहा जाता है। (जाति०)

ग्रहण गणना करनेके दिवस दिवसीय अयनांशके साथ रविस्फुट योग करनेसे जो राश्यादि निकलता, क चिह्नित खण्डाचक्रमें रखना पड़ता है। इसी राशिमें नतदण्डकी आनेवाली खण्डा और अनुखण्डाको परस्पर अंतर करते हैं। इससे होनेवाले भोग्याङ्क द्वारा इसी नत दण्डके शेषाङ्कपलको पूरण करके ६०से भाग करने पर जो लब्ध आता, इसी खण्डामें मिला दिया जाता है। इसके फलका ही नाम लम्बन है।

अयनांशयुक्त तात्कालिक रविस्फुटके राशिसंख्या अनुसार लङ्कोदयखण्डा ले करके इसी खण्डाके भोग्य द्वारा रविस्फुटके अंशादिको पूरण करके एक जातीय बनाते हैं। इससे मिलनेवाले अङ्कको तीससे बांटने पर जो लब्ध आता, इसी लङ्कोदयखण्डामें मिलाया जाता है। फिर पूर्वसाधित लम्बनके साथ नतदण्ड योग करते पर आनेवाले इसी युक्ताङ्कसे हौन करते हैं। किन्तु अमावस्याका स्थितिदण्ड उस दिनके दो प्रहर पछे तक रहने पर युक्ताङ्कमें वही अङ्क मिलाना पड़ता है। इसी प्रकार जोड़ने या घटानेसे आनेवाला अङ्कसे उसी राशिकी संख्यामें लङ्कोदयखण्डाका अङ्क घटाना सम्भव होने पर वही खण्डा इस युक्त किम्बा हीनाङ्कसे निकाल डालते हैं। लब्ध अवशिष्टको पांचसे गुण करने पर जो लब्ध होता, उसको एक स्थानमें रख देना चाहिये। फिर जिस राशिको खण्डा वियोग की गयी है, उसी राशिकी भोग्यखण्डा द्वारा इस पञ्चगुणित अङ्कको बांटते हैं। इसका लब्धाङ्क एक स्थानमें रखा जाता है। फिर जितनी संख्यक राशिकी खण्डाहीनकी गयी है, उसी संख्यक अङ्कको पांचसे पूरण करके पूर्वस्थापित अङ्कमें योग करते हैं। इसी

योगफलका नाम मधोदय वा दृगमोदय है ।

मधोदयके अङ्कमें १५ मिलाना चाहिये । युक्ताङ्क ३० से अधिक होने पर ६०में घटाया जाता है । फिर यदि यह युक्ताङ्क ६० से अधिक हो, तो उसमें ६० निकाल करके शेष अङ्क ग्रहण करना चाहिये । यदि युक्ताङ्क ३० से अधिक न आवे तो उसकी प्रथम अङ्क सख्या क्रान्ति खण्डा और अनुखण्डा ले करके उभयको अन्तर करते हैं इनीका नाम भोग्य है । भोग्यद्वारा मधोदयकी द्वितीय और तृतीय सख्याका अङ्कपूरण करके एक जातीय बनाने पर धानेदानि अङ्कको ६० में भाग देकरके खण्डा में मिलाने पर जो आता, क्रान्ति कहलाता है । इसी क्रान्ति को अक्षाङ्क ७८८३२से अन्तर करते हैं । उसमें जो निकलता, १००से एकवार मान वाटना पड़ता है । इससे लब्ध आता, उसी सख्याकी चारखण्डा और अनुखण्डा को ले करके परस्पर घटा दिया जाता है । इससे होने वाले भोग्य द्वारा जिनकी चारखण्डा अनुखण्डाकी लेते, गुण कर देते हैं । फिर १००से यथारोति भाग देने पर चार निकलता है ।

अथनागयुक्त रविस्फुटके राश्यादिको अशादि बना करके ६से भाग देते हैं । इसमें जो लब्ध आता, पूर्वसाधित मधोदयके माय घटाने पर स्फुटनत कहलाता है । स्फुटनत जो होगा, वह यदि ३०से अधिक हो तो ६०से निकाल डालना चाहिये और यदि १५से अधिक पड़े, तो ३०से घटाने पर जो आवेगा, उसकी प्रथमाङ्क सख्या ज्याखण्डा तथा अनुखण्डा परस्पर अन्तर करने पर जो होगा, उससे स्फुटनतके शेषाङ्कको गुण करके ६०से भाग दे लब्धाङ्क ज्याखण्डा में मिलाने पर जो आवेगा, उसीका नाम ज्या है । इसी ज्याक अङ्कको चारअङ्क द्वारा भाग करने पर जो लब्ध आता, स्थिरलम्बन कहलाता है ।

लम्बन और स्थिर लम्बन दोनोंके अन्तरको एक स्थानमें रखना चाहिये । पद्यान्नतकालको यदि पूर्व लग्न नसे स्थिर लम्बन न्यून आता, तो मधोदयके स्थापित अङ्कमें घटाया और अधिक होनेसे मिलाया जाता है । प्राइजुतकालकी पूर्व लम्बनसे स्थिर लम्बन न्यून होनेपर मधोदयमें योग और अधिक रहनेमें हीन करते हैं । इसी प्रकारसे निकलनेवाले अङ्कका नाम स्फुटदृगमोदय है ।

तात्कालिक दृगमोदयमें १५ मिलाने पर यदि ३०से अधिक आता, तो वह ६०से घटाया जाता है । अवशिष्ट प्रथम अङ्क सख्यामें क्रान्तिखण्डा और उसकी अनुखण्डा ले करके परस्पर अन्तर करने पर जो भोग्य आता, तद्वारा उसके द्वितीय तथा तृतीय अङ्कको पूरण करके एक जातीय बनाया जाता है । इस अङ्कको ६०से भाग दे खण्डा में मिलाने पर जो अङ्क निकलता, उसके साथ १५०० योग करके ७७८३२ अक्षाङ्ककी वियोग करते हैं । अवशिष्टको एक वार मान १००से वाटना चाहिये । भागफल सख्याको नतखण्डा और अनुखण्डा परस्पर घटानेमें भोग्य निकलता है । इसी भोग्य द्वारा शतघत शेषाङ्कको गुण करके १००से भाग देना चाहिये । फिर यही भागफल नतखण्डा में मिलाने पर नत बनता है ।

स्थिरलम्बनको प्राइजुत समय अभावस्थानके स्थिति-दण्डमें घटाने और पद्यान्नत समय मिलाने पर स्फुट दृगदण्ड आता है । (भाति०)

तात्कालिक च दृगमोदिको स्थिर लम्बन द्वारा गुण करके ६०से वाटने पर भागफल कलादि होगा । इसी कलादिको तात्कालिक रविस्फुटमें हीन पद्यान्नतकालमें योग करनेसे नवी अर्थात् स्फुटदृगदण्डका च दृस्फुट निकलता है ।

स्फुटदृगदण्ड ममत्रके च दृस्फुटसे ३ राशि निकाल डालने पर यदि ३ राशिसे न्यून आता तो इसी च दृस्फुटके राशिमें १२ मिला ३ राशि घटानेमें जो होता, उससे इसी दिवसके स्फुटपातकी वियोग किया जाता है । यदि यही अङ्क ६ राशिसे अधिक निकले, तो उसे १२ राशिसे हीन करे । इसमें आनेवाले राश्यादिको कला बना पसे गुण करना चाहिये । गुणिताङ्कमें १५३८० घटाने पर जो शेष रहता, उसको १०३में वाटना पड़ता है । इसी भागफलका नाम शर है ।

शरकी पूर्वसाधित गतिके माय अन्तर करने पर जो अवशिष्ट आता, स्फुटग्रर कहलाता है ।

तात्कालिक रविस्फुटगतिकी ५०में गुण करके १०४ से वाटने पर रविमान निकलता है ।

चद्विमान और रविमानक योगार्थमें स्फुटग्रर घटाने पर शर आता है । भागफलसे स्फुटग्रर अधिक होने पर ग्रहण नहीं पड़ता । यागाङ्क सख्यामें रव्यग्रहणकी

स्थित्यर्ध खण्डोंमें जो होगा, एक स्थानमें रखना पड़ेगा। फिर रविमानको ६०से गुण करना चाहिये। गुणफल १८६८से हीन करने पर जो अवशिष्ट आविगा, वह ग्रासाङ्क संख्याके रविशुद्धिपल द्वारा पूरण किया जानि पर १५१से भाग करके स्थापन किया जावेगा। फिर चंद्रमानको ६० से पूरण करके २०८८में घटाने पर जो अवशिष्ट रहता, उसको इसी ग्रासाङ्क संख्याके चंद्रशुद्धिपल द्वारा पूरण करके ३३८से बाँटना पड़ता है। फिर यह भागफल पूर्वस्थापित रविके भागफलमें जोड़ करके इसी पूर्वस्थापित स्थित्यर्धखण्डोंके साथ मिलानसे स्थित्यर्ध आ जाता है।

पूर्वस्थापित स्फुटदृग् खण्ड पलको दो स्थानोंमें रखना चाहिये। फिर उसमें एकसे स्थित्यर्ध पलको हीन करने पर सूर्यग्रहणका स्पर्शदण्ड हीगा। दूसरेके साथ योग करने पर इसी सूर्यग्रहणका मोक्षदण्ड निकलता है। प्राक् और पश्चान्तदण्ड संख्यामें लम्बन लगानेकी खण्ड।

० राशिमाह नुत	१ राशिमाह ०	२ राशिमाह ०	३ राशिमाह ०
०४०	०४५	०४३	०३८
११३	११४	११२	११४
११८	११६	११७	११७
११६	२१८	२१६	२१८
२१०	२१४	२१८	२१६
२१०	२१६	३१५	३१७
२१८	२१३	३१५	३१४
२१४	२१६	३१०	३१५
२१४	२१७	३१२	३१४
२१०	२१६	३१०	३१४
२१६	२१४	३१७	३१६
२१४	२१०	३१५	३१६
२१४	२१६	३१४	३१०
२१६	२१६	३१५	३१६
२१४	२१६	३१५	३१६
२१८	२१५	२१६	३१६
२१७	२१८	२१७	३१०
२१३	२१३	२१७	२१८
२१७	२१७	२१६	२१३

४ रा० प्रा०	५ रा० प्रा०	६ रा० प्रा०	७ रा० प्रा०
०३८	०४२	०४८	०३८
११४	११३	११८	११८
११७	२१०	२१८	११७
२१७	२२८	२३८	२३३
२१३	२१५	३१५	३१२
३१५	३१३	३१५	३१५
३१६	३१८	३३८	३३८
३३६	३१४	३१८	३१५
३१७	३१५	३१५	३१६
३१३	३१६	३१८	३१८
३१५	३१८	४१०	३१६
३१४	३१८	३१८	३१६
३१०	३१७	३१६	३१२
३१४	३१३	३१६	३१६
३३६	३१६	३१४	३३८
३१५	३३७	३३६	३१६
३१४	३२७	३२७	३१६
३१२	३१५	३१७	३१८

१८	१८	१८	१८
८ रा० प्रा०	८ रा० प्रा०	१० रा० प्रा०	११ रा० प्रा०
०१८	०१२	०१३	०३०
०५७	०४३	०४३	०५५
११७	११५	११२	११६
२१०	११०	१११	११४
२३३	११२	१३६	११८
३१४	२१७	१५५	२१०
३१२	२३६	२१०	२११
३३८	२१६	२१५	२११
३४८	३१३	२४०	२१६
३५४	३३१	२५४	२३०
३५५	३३८	३१५	३४४
३५३	३४२	३१३	२४६
३४८	३४३	३१८	२५३
३४३	३३६	३१२	२५१
३३४	३३४	३१२	२५७
३२५	३२६	३१८	२५६
३१५	३१६	३१२	२५४

१ राशि वशा	२ राशि वशा	३ राशि वशा	४ राशि वशा
०४४	०४२	०३८	०३८
१२८	११३	११४	११४
२१२	२१०	१४७	१४७
२३८	२१८	२१७	२१८
१५	२१३	२४३	२४६
३०५	३१३	३१०	३१७
३३६	३१६	३१०	३१४
०४८	३४१	३३६	३३५
१५०	३५०	३४०	३४१
३५६	३५६	३५३	३४२
४०	३५६	३४५	३४१
३५६	३५६	३५४	३३६
३५६	३५७	३५०	३३०
३५१	३५३	३४५	३२१
३४४	३४६	३३६	३११
३३६	३३७	३२५	३१०
३१७	३१७	३१५	२४८

५ रा० प्रा०	६ रा० प्रा०	७ रा० प्रा०	८ रा० प्रा०
०२३	०२२	०२८	०३८
०४३	०४३	०५७	११८
११८	११५	१२७	१५७
१२१	१२७	२१०	२३३
१३६	१५२	२३३	३१२
१५६	२१७	३१०	३२५
२१०	२३१	३२२	३४०
२२५	२५६	३३३	३५१
२४०	३१०	३४८	३५६
२४५	३३०	३५१	३५६
३१५	३३८	३५५	३५६
३१३	३४२	३५३	३५६
३१६	३४०	३४८	३५२
३२२	३०८	३४३	३४६
३२२	३३४	३३४	३३८
३१८	३२६	३२५	३२८
३१२	३१६	३१५	३१६

१७ १७ १७ १७

उक्त खण्डाको नम्वनखण्डा कहते हैं। प्रक्रियाकालको जहा नम्वन खण्डा निम्ना गया है, वहा उक्त खण्डाका षट्ठ नि करके कार्य किया जाता है।

१७ १७ १७ १७

४ रा० प्रा० ५ रा० प्रा० ६ रा० प्रा० ७ रा० प्रा०

०४३	०४५	०४०	०३०
१२२	१२५	११३	०५५
१५७	१५६	१३६	११६
२१६	२१८	१५६	१२४
२१६	२३४	२१०	१४८
३१५	२४६	२२०	२१०
३२०	२५३	२१८	२११
३२२	२५६	२३४	२२१
३२२	२५७	२३८	२२६
३२०	२५५	२४०	२३७
३१७	२५४	२४१	२४४
३१०	२५०	२४२	२४६
३०४	२४६	२४२	२४३
२५५	२४०	२४१	२५६
२४६	२३५	२३६	२५७
२३७	२२८	२३७	२५६
२३७	२२३	२३३	२५४

१७ १७ १७ १७

१७ १७ १७ १७

उक्त खण्डाको नम्वनखण्डा कहते हैं। प्रक्रियाकालको जहा नम्वन खण्डा निम्ना गया है, वहा उक्त खण्डाका षट्ठ नि करके कार्य किया जाता है।

१७ १७ १७ १७

१७ १७ १७ १७

उक्त खण्डाको नम्वनखण्डा कहते हैं। प्रक्रियाकालको जहा नम्वन खण्डा निम्ना गया है, वहा उक्त खण्डाका षट्ठ नि करके कार्य किया जाता है।

क्रान्तिखण्डः	क्रान्तिखण्डा
३	७२०
८	७४४
२१	७६३
३७	७७८
५६	७८१
८०	७८७
१०७	८००
१३७	
१७०	
२०५	
२४२	
२८०	
३१८	
३५८	
४००	
४४१	
४८१	
५२०	
५५८	
५९५	
६३०	
६६३	
६९६	
२०३	

३०
इन्हीं तीस अङ्कोंको क्रान्तिखण्डा कहते हैं। प्रक्रिया जहां क्रान्तिखण्डा जैसा लिखा है, वहां इसी खण्डाके अङ्कोसे कार्य किया जाता है।

शुक्रादिघर

६०१०
६०१२१
६१२२
६३१६
६५१४२
६८११६
७४१११
८०१४६
८८१४२
१०२१८
१२०१०
१४७१२०

सूर्यसिद्धान्त, सिद्धान्तशिरोमणि, ग्रहलाघव आदि मूल ग्रंथोंमें ग्रहण गणनाकी प्रणाली और उसकी उपपत्ति लिखी है। परन्तु वह सहजमें समझ नहीं पड़ती। उसीसे आजकल इस देशमें जिस सहज नियमसे ग्रहण गणना की जाती, इस ध्यानमें बतलायी है। सिवा इसके भास्करती मतसे भी ग्रहण गणना करते हैं।

खगोल ज्योतिर्मण्डलके साथ प्राणियोंका अनिर्वचनीय सम्बन्ध है। ज्योतिष्कमण्डलीकी गति और अवस्था परिवर्तनसे मानव प्रभृति प्राणियोंकी अवस्था बदलती या शुभाशुभ हुआ करता है। प्राचीन भारतीय ज्योतिर्वेत्ता यह सब शुभाशुभ फल निरूपण कर गये हैं। समयविशेषमें ग्रहण होनेसे भी मानवका मङ्गल वा अमङ्गल होता है। बृहत्संहितामें लिखा है कि ब्रह्मा, चंद्र इन्द्र, कुबेर, वरुण, अग्नि और यम मातो देवता यथाक्रम कः कः महीने पीछे ग्रहणके अधिपति हुआ करते हैं। अधिपतिके अनुसार ग्रहणका अलग अलग फल लगता है। ब्रह्मा ग्रहणके अधिपति होनेसे ब्राह्मण, पशु, मङ्गल, आरोग्य और शस्यकी वृद्धि होती है। इसी प्रकार चंद्र अधिपति होनेसे पूर्वकथित समस्त फल मिलता, पण्डितोंका दुःख बढ़ता और पानी नहीं बरसता है। इन्द्र अधिपति होनेसे राजविरोध, शारदीय शस्यका विनाश एवं अमङ्गल, कुबेरके अधिपत्यमें धनियोंका अर्थनाश तथा सुभिक्ष, वरुण अधिपति होनेसे राजाका अमङ्गल, दूसरे लोगोंका मङ्गल एवं शस्यवृद्धि, अग्नि अधिपति होनेसे अनावृष्टि, दुर्भिक्ष और शस्य हानि होती है। इसकी छोड़ करके अन्य समयमें ग्रहण पड़नेसे क्षुधा, महामारी और अनावृष्टि होती है।

यासके अवस्थामेदसे चन्द्र तथा सूर्यग्रहण दश प्रकार पड़ता है-१ सव्य, २ अपसव्य, ३ लेह, ४ ग्रसन, ५ निरोध, ६ अवमर्द, ७ आरोह, ८ आघात, ९ मध्यतम और १० तमोन्य।

राहु सव्यगत हो अर्थात् वामभागमें रह करके चन्द्र वा सूर्यको यास करनेसे सव्य ग्रहण कहलाता है। इससे जगत् जलस्रुत, आह्लादित और भयशून्य होता है।

राहुके अपसव्य अर्थात् दक्षिणमें रह करके यास करनेसे अपसव्य ग्रहण कहते हैं। इसका फल राजा तथा तस्करकी पीड़ा और प्रजा नाश है।

नाखण्डा	१	२
२५	नतिखण्डा	नतिखण्डा
५०	२२११४	२५०११
७४	२२१३१	२५४१५
९८	२२२१६	२६६५२
१२०	२२३३८	२६४५४
१४१	२२५२८	२७०१०
१६१	२२७१६	२७५१६
१८८	२३०३४	२८०१८
२१४	२३३१६	२८५१४
२३५	२३७२३	२८९१८
२६८	२४१२१	
२९०	२४५२७	

इन्हीं कई एक अङ्कोंकी ज्या खण्डा कहते हैं।

इसका नाम नतिखण्डा है

राहु जत्र जिह्वाकी भांति चंद्रमण्डलकी लेहन करता, लेह ग्रहण लगता है। फल—पृथिवीस्य प्राणिमण्डलको आह्लाद और धरातल पर प्रभूत वारिवर्षण है।

चंद्र वा सूर्यमण्डलके ए० पाट, अर्ध वा त्रिपादग्रस्त होनेका नाम ग्रसन है। इससे गर्वित राजाओंका धन नाश और गर्वित देशोंकी पीडा होती है।

चंद्र वा सूर्यमण्डलकी शेष सीमा पर्यंत ग्रस करके राहु मध्यस्थलमें पिछोकरत जैसा रहनेसे निरोध कहलाता है। इससे सभी प्राणी आह्लादित होते हैं।

राहुके चंद्र वा सूर्यकी सम्पूर्ण ग्रस करके अधिक काल अवस्थित करनेकी अवमर्दन कहते हैं। इससे राजाओंका विनाश, बड़े बड़े देशोंका ध्वंस और अन्य कारका भय होता है।

राहु वतुलाकार ग्रहमण्डलकी आवरण करके तत् क्षणात् पुनर्वाट टूट होनेसे आरोग्य कष्ट जाता है। इससे राजाओंका परस्पर विरोध और भय होता है।

वायुयुक्त निम्नवास वायुसे दर्पणके मध्यभागकी भांति राहुग्रस्त ग्रहमण्डलका एकदेश मलिन होनेसे आघात कहलाता है। फल सुष्टि और मकल विषयोंकी वृद्धि है।

चंद्रमण्डलका मध्यभाग राहुग्रस्त और चारो और वितमस्त अर्थात् परिष्कार रहनेसे मध्यतम कहते हैं। इससे मध्यदेश विगडता और उदरामय रोग बढ़ता है।

ग्रहणके समय चंद्रमण्डलकी शेष सीमा अतिग्रह अन्यकारमय और मध्यभाग अपेक्षाकृत परिष्कृत होनेसे तमोस्त नाम पडता है। फल—मुपिक, ग्लाम प्रभृति ईति और भयानक चौरोंका उत्पात है।

पहले ग्रसमेदसे जैसे दश प्रकार ग्रहणका उल्लेख किया गया है, वैसे ही मोच भी दश प्रकारका है—१ दक्षिणहनुभेद, २ वामहनुभेद, ३ दक्षिणकुचिभेद, ४ वामकुचिभेद, ५ दक्षिणवायुभेद, ६ वामवायुभेद ७ सच्छर्दन, ८ जरण, ९ मध्यविदारण और १० अन्तविदारण।

चंद्रग्रहणका अन्तिकोणमें मोच होना दक्षिणहनुभेद मोच कहलाता है। इससे शस्यनाश, सुखरोग, राज पीडा और सुष्टि होती है। पूर्वोत्तर कोणमें मोच होने का नाम वामहनुभेद है। फल—राजा तथा राजपुत्रका

भय, सुखरोग और सुभिक्ष है। दक्षिण पार्श्वमें मोच होनेकी दक्षिण कुचिभेद कहते हैं। फल—राजपुत्रकी पीडा और दक्षिण देशस्य शत्रुओंका अग्रयोग है। राहु उत्तर पश्यमें रहनेसे वामकुचिभेद नामक मोच होता है। फल—स्त्रियोंकी गर्भविपत्ति और मध्यमरूप ग्रस्य है। नैऋत कोणका मोच दक्षिणवायुभेद और वायुकोणका मोच वामवायुभेद कहलाता है। इस द्विविध सुक्तिमें सामान्यरूप गुह्यपीडा और सुष्टि होती है। किन्तु वामवायुभेदमें विग्रियत रात्रमहिषो पर विपद् पडती है। राहु चन्द्र वा सूर्यमण्डलका पूर्वभाग ग्रस करमा आरम्भ करके यदि पूर्वदिक्की चना जाता, सच्छर्दन मोच कहलाता है। इससे जगत्का मङ्गल और शस्यकी शीघ्रिद्धि होती है। पूर्वदिक्में ग्रहण लग करके पश्चिम में मोच होनेसे जरण नामक मोच कहा जाता है। इससे मानव लुधामे कातर और शस्त्रभयसे उद्विग्न हो जाते तथा कहीं भी आश्रय नहीं पाते। मध्यस्थल प्रथम प्रकाशित होनेसे मध्यविदारण नामक मोच कहते हैं। इससे प्राणियोंका मानसिक कोप, सुचारुवृष्टि और सुभिक्ष होता है। अन्तविदारण नामक मोचमें चंद्रमण्डलकी शेष सीमा पर निर्मलता और मध्यभाग पर अतिग्रह अन्धकार रहता है। इससे मध्यभागका विनाश और शर दीप्य शस्यका क्षय होता है। चंद्रग्रहणमें जिस दश प्रकार के मोचकी बात कही है, सूर्यग्रहणमें भी वही होता है। किन्तु चंद्रके जिस स्थलमें पूर्वदिक्का उल्लेख है, सूर्य विषयमें उसो स्थल पर पश्चिम दिक्की कल्पना करनी पडती है।

ग्रहणके सुक्तिकाल पीछे समाह मध्य पार्श्वपात होनेसे दुर्मिच्छ, नोहारपात होनेसे भोगभय, भूमिकम्प्य होनेसे श्रेष्ठ नरपतिका विनाश, उल्कापात होनेसे मन्त्रिनाश और ग्रहणके पीछे सात दिनोंके बीच नाना वर्णका मेघ देख पडनेसे भय, मेघका भयानक गर्जन होनेसे गर्भनाश, विजली चमकनेसे राजा तथा दूरी जीवकी पीडा, परिवेग होनेसे रोगभय, दिग्दाहसे राजभय तथा अग्निभय, प्रवल रुच वायु चलनेसे चौरभय, निर्घात, इन्द्रधनु वा दण्डदर्मनसे लुब्धय और शत्रुचक्रमें अमद्रल एव ग्रहयुद्ध वा किंतुदर्शनसे राजमग्राम लगता है। परन्तु ग्रहणके

पीछे आत दिनके मध्य सुन्दररूप वृष्टिपात होनेसे किसी प्रकारका अशुभ नहीं पड़ता और सुभिन्न हुआ करता है। चंद्रग्रहण निवृत्त होने पर यदि पदान्तर्का सूर्यग्रहण पड़ जाता, तो प्रजागणकी अनीति और दम्पतीकी परस्पर शत्रुता बढ़ती है। सूर्यग्रहणके पीछे पञ्चदश दिवसमें फिर चंद्रग्रहण पड़नेसे ब्राह्मण लोग अनेक यज्ञोंका फल भोग नहीं कर सकते। किन्तु प्रजा सर्वदा ही आच्छादित रहती है। (ब्रह्मसं० ५२०)

चंद्र और सूर्यकी भांति बुध मङ्गल प्रभृति अपर ग्रहों का भी ग्रहण पड़ता है। किन्तु वह ग्रहण मानव-मण्डलीके नयन गोचर नहीं होते। इसी कारण बहुतसे प्राचीन भारतीय ज्योतिर्विद्वानोंने उनका उल्लेख नहीं किया है। वराहमिहिरने बृहत्संहितामें इन सब ग्रहणोंकी बात लिखी तो है, परन्तु उसकी गणितप्रक्रियाका कोई उल्लेख नहीं मिलता, केवल फलाफल मात्र निरूपित हुआ है। वराहमिहिरके मतमें मङ्गलका ग्रहण होनेसे अवनतीदेश, कावेरी तथा नर्मदाके तटस्थ देश और सब गर्वित नरपतिर्योंका विनाश होता है। बुधके ग्रहणमें अन्तर्वेदी, सरयू, नेपाल, पूर्वसागर और शोण प्रभृति देशके स्त्री, राजा, योद्धा, पण्डित और बालक मर मिटते हैं। बृहस्पतिमें ग्रहण लगनेसे विद्वान्, राजमन्त्री, हस्ती तथा अश्व और सिन्धु नदीके तटस्थ वा उत्तरदिगाग्रित व्यक्तियोंका विनाश होता है। शुक्रके ग्रहणमें दसिरक, कैकेय, यौधेय, आर्यावर्त और शिवि प्रभृति देश, स्त्री और मन्त्री दुःख पाते हैं। शनिग्रहण पड़नेसे मरु-भव, पुष्कर, गौराष्ट्र प्रभृति देशीय लोग, पदातिक अर्बुदादि अन्य जाति और गोमन्त तथा पारियात्र पर्वतस्थ व्यक्तियोंका विनाश होता है। (ब्रह्मसं० ५१६४-६८)

ज्योतिष्शास्त्रमें लिखा है कि सूर्य किंवा मङ्गलके नवांशमें ग्रहण लगनेसे ग्रहणके समय आकाश खुला रहता; बुध वा शनिके नवांशमें ग्रहण पड़नेसे आकाश-मण्डल मलिन दिखलाता और अल्पवर्षण आता है। शुक्रके नवांशमें ग्रहण होनेसे उस समय आकाशमण्डल मेघसे चिर जाता है। वर्षाकालकी शुक्र किंवा शनिके नवांशमें ग्रहण लगनेसे ग्रहणके समय ही भयानक जलपात होता; अपर कालकी चंद्र तथा सूर्यमण्डल आच्छादित रहता है।

राजमार्तण्डके मतमें ग्रहण कालकी चन्द्र जन्मराशि अथवा उसमें ममम, अष्टम, द्वादश, चतुर्थ, दशम और नवम राशियोंमें पड़नेसे ग्रहण देखना न चाहिये।

वशिष्ठके मतानुसार जन्मराशिके जन्मनक्षत्र अथवा पष्ट, अष्टम, चतुर्थ वा द्वादश राशियोंमें चन्द्र आनेसे ग्रहण दर्शन निषिद्ध होता है। उसको देखनेसे अर्थनाश होता है। जन्मनक्षत्रसे गणनामें ममम नक्षत्र पर चन्द्र पड़नेसे भी ग्रहण देखा नहीं जाता, देख लेनेसे रोग, बहुकेश और वित्तक्षय होता है। जो ग्रहण जिनके लिये देखना निषिद्ध है, देवात् उसके वही ग्रहण देख लेने पर चन्द्र-ग्रहणमें चन्द्र और सूर्य ग्रहणमें सूर्यकी अर्चना करके ग्रह-विप्रकी सुवर्ण दान करते हैं। ऐसा करनेसे अशुभ मिट जाता है।

आधुनिक स्मृतिग्रंथकार रघुनन्दनके मतमें जिनके पक्षमें जो ग्रहण देखना निषिद्ध नहीं होता, वही व्यक्ति उस ग्रहणमें पुरश्चरण कर सकता है। परन्तु प्राचीन धर्मशास्त्रवित् पण्डितोंने सभी ग्रहणोंमें पुरश्चरणका विधि रखा है। पुरश्चरण देखो। ग्रहण समयमें विगेष आइ करनेका विधान है। शत्रु देखो।

शिवार्चनचन्द्रिकाके मतमें ग्रहण दिनसे सात दिनोंके बीच आगमोक्त दीक्षा प्रशस्त है। दीक्षा देखो। इन सात दिनों यात्रादि नहीं करते।

ग्रहणके समयमें सभी जल गङ्गाजलके समान होता है। स्नान, दान प्रभृतिका फल अनन्त है। ग्रहणके समय आहार वा मलमूत्र परित्याग करना न चाहिये। इस समयमें उच्छिष्ट वासन वा पक्वान प्रभृति अपवित्र हो जाता है। इसीसे भारतवासी ग्रहणके पीछे उच्छिष्ट वासन व्यवहार ग्रहणसे पहले पक्वान भोजन नहीं करते। ग्रहणके पीछे पाककी हण्डी आदि फेंक करके रसोई घर लीपा पोता जाता है। स्मृतिके मतमें चन्द्रग्रहणसे चार और सूर्यग्रहणसे ३ प्रहर पहले खाना न चाहिये।

युरोपीय मत—ग्रहण शब्दसे भारतमें साधारणतः चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहण ही लिया जाता है। किन्तु युरोपीय ज्योतिर्विद्वानोंने ग्रहणके सुपर्याय अर्थमें उसके तत्त्वकी लिपिबद्ध किया है। अङ्गरेजी भाषामें ग्रहणको इक्लिप्स (Eclipse) कहते हैं। यह शब्द ग्रीक भाषाके

त्याग अर्थवाने 'निपो' धातुजात 'इक्षिप्सि' शब्दसे निकला है। इसका अर्थ अभाव कलङ्क इत्यादि है। सूर्य, चन्द्र, ग्रह, उपग्रह, नक्षत्र किमी भी ज्योतिष्कका आलोक अन्व ख्यातिष्क द्वारा रक्षने वा निष्प्रभ होनेका घटनाभ्यन्त्रक व्यापार ज्योतिषशास्त्रमें 'इक्षिप्स' शब्दसे व्यवहृत होता है। सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, ग्रहग्रहण, उपग्रहग्रहण, नक्षत्रग्रहण नानाविध ग्रहण सम्बन्धमें भिन्न भिन्न तत्त्वनिर्णायक और गणनानिर्देशक प्रबन्ध है। इन विविध ग्रहणों भविष्यत् घटनाके काल और अन्त्यान्व विषय गणनायें तथा ज्योतिर्गण सम्बन्धी विधिये विषय घटना अंशके निर्णायक मौरमारणी, चन्द्रमारणी तारामारणी प्रभृति अनेक मारणियां प्रति वल्सर नाविक पत्रिकामें (Nautical almanac) इङ्ग्लैण्डके ग्रीनविच वेधानलयका (Greenwich Observatory) अध्यक्ष कलक प्रचारित होती हैं।

कोई कोई ग्रहण सुयन्त्रद्वारा उपयुक्त प्रदेशमें सुदृश यन्त्रधकारो ज्योतिषी कलक दृष्ट होनेसे तद्विषयनके ओ विषय आविष्कृत होते, उसमें ज्योतिषशास्त्र, अनेक प्राकृततत्त्व और नौकिक तथा राजकार्यका विशेष उन्नति साधन होता है। इसीसे अनेक युरोपीय राजशाधिप विपुल अर्थव्यय करके ऐसे सुदृश लोगोंको नियुक्त किया करते हैं।

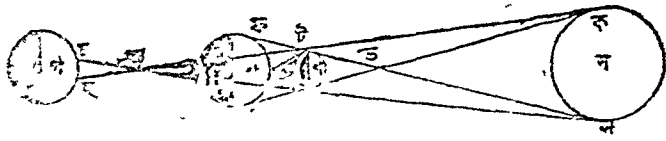
सूर्य और पृथिवी सम्बन्धमें जैसे अभावस्यानादि पडते, तदनुसार अभावस्यासे पूर्णमा पर्यंत चन्द्रकी कला चीण रश्मिसे पूर्ण चक्राकार एव फिर उल्टे हृदिके क्रमानुसार ण्य होते होते नवगगो होती है। इसी परिवर्तनमें चन्द्र और सूर्यग्रहण मजका प्रत्यापत्तन पड़ता है। ६य ग्रहण केवल अभावस्याको लग मजता है। क्योंकि उस समय सूर्य और पृथिवीके बीच चन्द्र जा करके सूर्यांशको अन्तरोध करता है। चन्द्रग्रहण केवल पूर्णिमाको लग मजता है। क्योंकि उस समय सूर्य और चन्द्रके मध्य पृथिवी जा करके सूर्य कायामे चन्द्रको आह्वन करती है। पृथिवी और चन्द्र दोनोंमें अपना अज्ञाति नहीं होता म ग मजके जो मिलता है। उाका आकार भी प्राय गोमण्डल है। मगर सूर्यग्रहण कालमें चन्द्रका जो पृष्ठ म धर्मिसुग रहता उक्त विद्योत पृष्ठादिमें कोई

सुखाकार छाया पडती है। इसी छायामें जब पृथिवी डूब जाती, चन्द्रको वा अन्य ग्रहलोकके दर्शकोंकी भूयग्रहण दिखनाथी देता है और हमलोग सूर्यग्रहण दर्शन करते हैं अर्थात् हमें चन्द्रग्रहणका-क्षणपृष्ठ सूर्य विम्बके ऊपरसे सञ्चानित दृष्टिगोचर होता है।

बुध शुक्रादि ग्रहोंमें व डूबतू जी सूर्यग्रहण होता, बुधमङ्गल शुक्रमङ्गल (Transit of Mercury, Transit of Venus) इत्यादि कहलाता है। राशिकक्षके जिस भागमें चन्द्रकी गति रहती उसी भागके मध्य अनेक ग्रह मञ्चानन और कितने ही नक्षत्र अवस्थान करते हैं। इनमें बहुतेको चन्द्र प्रतिनियत एक प्रकार अक्ष करता है। एसे ही ग्रहणका नाम तारामङ्गल (Occulation of stars) है। चन्द्र यद्यपि सूर्य अपेक्षा अत्यन्त लुप्त है और पृथिवीके इतने मन्विकृतस्य है कि उसके और सूर्यके विम्बव्यास (Apparent diameter) दोनोंका प्रति यत्नमान्य भेद दृष्ट होता है, परन्तु तदुभय व्यासों की इतनी परिहृति (Variation) है, कभी कभी चन्द्र का यह विम्बव्यास सूर्यके इतना विम्बव्यासकी अपेक्षा लघु और कभी छोटा पडता है। किमी दर्शकोंके अन्तु चन्द्र और सूर्यमें ममस्त्वामित होने पर सूर्य अन्त देस पडता है। उस समय चन्द्रका यह विम्बव्यास सूर्यसे बड़ा दीखने पर सूर्यका पूर्णांश दिखनाथी देगा। फिर यही व्यास न् न देस पडनेसे सूर्य विम्बमें चिहित चन्द्रके लक्षण-वर्ण वि वकी चारों ओर कोई आलोक अन्वयवत् लग जाविगा। इसीको अन्वयाकार ग्रहण (annular eclipse) कहते हैं। जब दर्शकोंका अन्तु चन्द्र और सूर्यमें ममस्त्वामित नहीं होते चन्द्र सूर्यका कियदंश मात्र आच्छादन करता है। इसका नाम अंशग्रहण (partial eclipse) है। अतएव अभावस्याको भूकेन्द्रमें चन्द्र सूर्यकी दूरी और चन्द्रपाद स्थानमें चन्द्रकी दूरीके कारण सूर्यग्रहणके कर्क भेद पडा करते है।

सूर्यग्रहण निम्न प्रतिरूपित द्वारा स्पष्ट समझने का जाविगा।

पृथिवी दो स्थानोंमें चिहित दृष्ट है। पृथिवी जब चन्द्रके निकट ममस्त्वामित रहती चन्द्रअन्वयाकार आलोक या तो उसकी अन्तरे दृष्टिता या हमसे दृष्टदेशकी अन्वयवत्



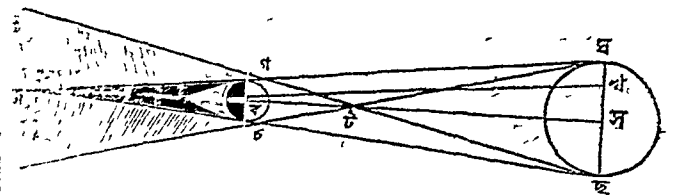
१-पृथिवी २-सूर्य

करता है। चन्द्रच्छायाका प्रान्त पृथिवीपृष्ठ स्पर्श न करके सूर्य और पृथिवीके मध्य (५ स्थानमें) रहनेसे क क तथा ग क वर्धित हो पृथिवीपृष्ठके घ और छ स्थानको स्पर्श कर सकते हैं। इस अवस्थामें घ और छके मध्यवर्ती मव स्थानोंके लोग सूर्यमण्डल परिधिसे एक भागमें गोलाकार ग्रहण और इसी भागकी चारो ओर आलोक देखेंगे। चन्द्र और सूर्य केन्द्रके समसूत्रमें घ तथा छ स्थान अवस्थित है। यहाँके लोगोंको सूर्यके ठीक मध्यभागमें ग्रहण और अवशिष्ट भाग उज्ज्वल बलयाकार जैसा देख पड़ता है। पृथिवी छायाकी भांति चन्द्रच्छायाकी भी खण्डच्छाया होती है, यथा क ट व और ग ट अ इस खण्डच्छायाके मध्य सर्वस्थान पर सूर्यालोक नहीं पहुँचता। सुतरां इन सभी स्थानोंमें आंशिक ग्रहण होता है।

पायाय मतमें चन्द्रग्रहण—चन्द्रग्रहणमें भूच्छायापात होनेमें इसी सूचीके अग्रसे तत्केन्द्रमेंदेी रेखा (Axis of the cone) सूर्य तथा भूकेन्द्रगत अर्थात् समसूत्रस्थ हो जाती है। जहाँ सूर्य और पृथिवीका दृश्य विम्बव्यासः समपरिमाण हो सकता, सूच्य ठीक उसी स्थान पर पड़ता है। पूर्णिमाके समय पृथिवीसे चन्द्र मध्यम दूर (Mean distance) रहनेसे उसका केन्द्र सूर्य विम्बकी १८१४" ३ विकला परिमित कोण रचना करता अर्थात् चन्द्रलोकमें इसी परिमित कोण पर सूर्यव्यास और सूच्यव्यास चन्द्रलोकमें ६८०८ ३ विकला कोण पर दृष्ट होता है। इसी प्रकार पृथिवीसे चंद्रकी जितनी दूर न्यूनकल्पित छायाका दैर्घ्य आता उसका मार्ध तीन गुणको अर्धिका अधिक हो जाता और छायाका जो स्थान भेट करके चंद्र चलता, छायाका प्रत्य चंद्रव्यासका प्राय ६ परिमित लगता है। प्रति पूर्णिमाको चंद्रग्रहण

पड़ सकता था, परन्तु वैसा नहीं होता। कारण चंद्रका कक्षा क्रान्तिके ऊर्ध्वो तिर्यग्भावसे अवस्थान करती है। इसी तिर्यगव्यस्थितिको परमापम (Inclination to the plane of the ecliptic) कहते हैं। ऐसी ही अवस्थितिके कारण साधारणतः पूर्णिमाको चंद्र भूच्छायाके ऊपर या नीचे रहता है, केवल चंद्रपात स्थल पर अर्थात् राहुकेतुगत वा सन्निकित होनेसे वह नहीं पड़ता। पातसे चंद्रकी दूरादूर अवस्थिति पर ही चंद्रग्रहणके नाना भेट देखनेमें आते हैं।

चंद्रग्रहणमें चंद्रपृष्ठकी प्रत्येक कणा पर्यायक्रमसे सूर्यविम्बके भिन्न भिन्नांशका ज्योति क्रम क्रम गंवाया करती है। सुतरां भूच्छायामें मज्जित होनेसे पहले चंद्रकी दीप्ति धीरे धीरे घटती जाती है। सूच्यस्पर्शके पूर्व और उसकी मुक्तिके पछे चंद्र जो क्षीण छायागत होता अर्थात् मलिनत्व पाता, उसी क्षीणछायाको उपच्छाया (Lunumbra) कहा जाता है। उपच्छाया जहाँ पड़ती, उसका प्रत्य चंद्रसे दृश्य सूर्यके विम्बव्यासके (apparent diameter) सामान होता है।



ग क छ पृथिवीकी छाया है। क ग व स्पर्शज्या, पृथिवीपृष्ठ और सूर्यमण्डलका परिधि स्पर्श करके अवस्थित होती है। इसी रेखाको पृथिवी और सूर्यके परिधिकी चारो ओर घुमाकर ले जानेसे व क छ वृत्तसूचीकी वाह्य सीमा बनती है। सूर्यकेन्द्र ग और पृथिवीकेन्द्र क से ग क छ रेखा खींचनेसे यही रेखा उक्त सूचीके मध्यरेखा होगी। अङ्कित चित्रमें ग पृथिवी और चंद्र मानो क स्थानमें पृथिवीकी छायामें घुसते मालुम पड़ते हैं। (क स्थानमें पृथिवीच्छायाका व्यासार्ध निकाला जाता है) चंद्रमण्डलसे छायामण्डल बहुत बड़ा है। इसीसे चंद्रमण्डल अनायास पृथिवीच्छायामें सम्पूर्ण रूपमें और अनेकक्षण तक आच्छादित रह सकता है। सूर्यके दो पादविक्षेप स्थानों घ और छके जो दो सरल रेखाएं तिर्यक विन्दुसे हो करके पृथिवी

* इसी ज्योतिषशास्त्रास पृथिवीसे देखा देखा पड़ता, उसको इसी ज्योतिषका Apparent diameter कहते हैं।

† यह स्थानांतरित यामार्ध परिमाण इसी पृष्ठके सूर्यसे मध्यम दूर होता है।

विपरीत भागमें स्पर्श करती है, पृथिवीकी अपर दिक्में फैल पड़ती है। इन्ही दोना विस्तृत रेखाओंके मध्य पृथिवीच्छाया दो भाग हो जाती है। मूयकार एक भाग प्रकृत छाया और अपर भाग खण्डच्छाया कहनाता है। खण्डच्छाया सम्पूर्ण अन्धकारमय नहीं होती। उसके बोधमें मूर्यके किसी किसी भागका किरण पतित होता। प्रकृत छायामें किसी भागका किरण सीधा नहीं पड़ता। सुतरा वह अपेक्षाकृत अन्धकारमय रहता है। उसीसे चंद्र इस खण्डच्छायामें घुसते घुसते क्रमग दीर्घ होन होते जाता, शेषकी प्रकृत छायामें प्रवेश करने पर ही एककालमें पूर्णग्राम होता है।

हमारे चंद्र अर्थात् पार्थिव उपग्रहका जैसा ग्रहण देख पड़ता, वृहस्पति प्रभृति उपग्रहवाले ग्रहवाले ग्रहों का भी ग्रहण नग करता है। वार्हेस्पत्य चंद्राकी ग्रहण गणनाका बड़ा प्रयोजन है और वह यन्त्रवेध द्वारा दृष्ट होता है।

चन्द्रपात अर्थात् राहु वा केतुके पास किसी भी समयकी मय जैसी अवस्थिति करता और फिर घिसा ही होनिमें जो समय लगता, उसकी पातसम्वन्धीय मूर्या वर्तनकाल (Duration of the revolution of the sun with regard to the node of the lunar orbit) कहना पड़ता है। उसी समयकी और भी घटती बढती होती है। इसकी (गड) माध्यमिक काल (Mean duration) कहा जाता है। इसी माध्यमिककाल और चान्द्रमास (Duration of the synodic revolution of the moon) का सम्बन्ध जैसा २२३ चन्द्रमासका अन्तर चन्द्र और सूर्य चंद्रपात (Node)से एक बार जितनो दूर रहता, बार बार उतनी ही दूर पड़ता है। सुतरा ग्रहण इसी पर्याय क्रममें पुन पुन हो सकते हैं। किन्तु सूर्य चंद्रके गति व्यतिक्रममें ठीक उक्त समय की वैध ही बार बार अवस्थिति नहीं आती।

उक्त २२३ और १८ दोनों अर्द्धोंके अनुपातानुसार गिनने का कारण यह है कि २२३ माध्यमिक चांद्रमासमें ६५ ८५-३२ दिन रहते और १८ बार पातगतिसमें ६५८५-७० दिन पर्याप्त होते हैं। अतएव २२३ चांद्रमासके प्रथम और

शेषकी पातकी मध्यमावस्थितिकी विशेष विभिन्नता नहीं पड़ती। अतएव २२३ माध्यमिक चांद्रमास अर्थात् १८ वत्सर १० दिन ग्रहणगणनार्थ विशेष प्रयोजन होता है। अति प्राचीन सभ्य लोग (कालडियान आदि) इसकी जानते और सारोस (Saros) कहते थे। ग्रहणक्रा प्रकृत कारण समझनेके बहुकाल पूर्व ऐसे ही पुराने लोग ग्रहण गणना करते रहे।

ग्रह कमी कभी एक दूसरेकी यास वा आच्छादन करते हैं। शक्रद्वारा बुध, मङ्गलसे वृहस्पति और हमारे चंद्र द्वारा शनिका आच्छादन दीर्घ कालान्तरकी दर्शित होता आया है। ऐसे दीर्घकालान्तरमें होनेका कारण यह है कि सब ग्रहोंकी बात छोड़ दीजिये, उनमें कितने ही एक बार मूर्यके साथ सममूय अर्थात् नभोमण्डलके एकदेशमें एक ही समय अति विरल दृष्ट होते हैं। इसको मनसे २५०० वत्सराधिक काल पूर्व बुध, शक्र, मङ्गल वृहस्पति और शनिको सममूयता रही थी। ११८६ ई० १० मितभ्ररकी कन्या और तुना राशिके मध्य उक्त प्रकार की समसूयता पडी और १८०१ ई०की चंद्र, वृहस्पति, शनि तथा शक्र मित्र राशिके मध्य एकत्र हुए थे। न्यायैक नामक प्रसिद्ध ज्योतिर्विदने यह देखानेकी गिना था, उस प्रकारकी समसूयता कौसी विरल घटना है। १७ शङ्क वत्सर अन्तर बुध शक्र, मङ्गल, वृहस्पति, शनि और सुरानस वृहो अर्द्धोंका युगपत् मिलन (Conjunction) होता है।

ग्रहणसम्बन्धीय कई छोटे मोटे वांति ज्योतिर्विद वतलाया करते हैं। यथा—
 १ प्रतिवत्सर न्यू नूकल्पमें २ चंद्रग्रहण पड़ने हैं।
 २ किसी वर्ष एक भी सूर्यग्रहण नहीं हो सकता।
 ३ सर्वथास और केंद्रीय एक भी चंद्र ग्रहण पड़नेसे उससे पिछली और अगली शमावस्थाकी एक सूर्यग्रहण हो सकता है। यह घटना राहुकी भांति जेतुमें भी घटित हो सकती है। ऐसा होने पर किसी वर्ष कुछ ग्रहण नग सकते हैं।
 ४ किसी वत्सर जनवरी महीनेके आरम्भमें पहने एक ग्रहण पड़नेसे इसी वत्सरके शेष भागमें फिर कोई सूर्यग्रहण हो सकता है।

५ अतएव एक वर्षमें पांच सूर्य और दो चंद्र अथवा चार सूर्य और तीन चंद्रके सात ग्रहण लग सकती हैं।

६ ऐसे ही चंद्रग्रहण अपेक्षा अधिक सूर्यग्रहण होते हैं। किन्तु किसी निरिष्ट स्थानमें अति अल्प ही सूर्यग्रहण देख पड़ते हैं।

बहुपूर्वकालके ग्रहणोंका ऐतिहासिक तत्त्व मालूम रहनेसे अनेक प्रयोजनीय ऐतिहासिक घटनाओंका काल निर्णय ही सकता है। फिर किसी किसी ज्योतिर्वित्ने यह हिमाव लगा करके रख दिया है, वह दूर भविष्यत् कालको कौन विशेष ग्रहण पड़ेगा। हाइगड माहबने पूर्वकालके १७ ग्रहणोंका तत्त्व लिखा है और १६६६ ई० ११ अगस्तको इङ्ग्लैण्डमें जो सर्वश्रामो सूर्यग्रहण होगा, उसका भी हिमाव लगा रखा है। उनका कहना है कि इस ग्रहणको छोड़ करके २५० वर्षों बीच इङ्ग्लैण्डमें ऐसा ही और एक भी सूर्यग्रहण देख न पड़ेगा।

पापाय सतानुसार यहादिकी ग्रहणगणना तत् तत् सुधा शब्दोंमें दृश्य है।

पुरातत्त्वविदों और ज्योतिर्विदोंकी सुविधाके लिये अतीत तथा भविष्यत् कालके २००० वर्षोंमें जो ग्रहण हुए या-होंगे, उसकी एक तालिका नीचे दी जाती है—

श्रमो सन्	सूर्यग्रहण	चंद्रग्रहण
१	१० जून	२४ जून
२	२३ नवम्बर	१५ मई ८ नवे०
३	—	४ मई, २८ अक्टू
४	८ अप्रैल	२३ अप्रै, १७अ०
५	२८ मार्च, २२सेप्टेम्बर	—
६	११ सेप्टे०	३ मा०, २७ अग०
७	६ फर०, ३१ अग०	२० फर०, १७अग०
८	२६ जन०	८ फर०, ५ अग०
९	१५ जून०, १०जु०	२० दिसं०
१०	३० जू०, २४ नवे०	१५ जून, १०दि०
११	१४ नवे०	४ जून, २६ नवे०
१२	८ मई	२४ मई
१३	२८ अप्रै	१४ अप्रै, ७ अग
१४	१८ अप्रै	४ अप्रै, २७ से
१५	२ से	२४ मार्च, १६ सेप्टे

श्रमोसन्	सूर्यग्रहण	चंद्रग्रहण
१६	२१ अग	—
१७	१५ फर	३० जन, २७ जुला
१८	१ जुला	२० जन, १६ जुला
१९	२१ जून, १५ दि	६ जन, ५ जुला
२०	१० जून, ३ दि	२५ मई, १८ नवे
२१	२३ नवे	१५ मई, ८ न
२२	१६ अप्रै	४ मई, २८ अक्टू
२३	—	—
२४	२१ से	१४ मार्च, ६ से
२५	१० से	३ मा, २७ अग
२६	६ फर	२० फर, १६ अग०
२७	२६ जन, २२जुला	३१ दिस
२८	१० जुला	५ जून, २० दि
२९	२४ नवे	१४ जू, ६ दि
३०	२२ मई, १४ नवे	४ जून
३१	१० मई	२५ अप्रै, १६ अग
३२	२८ अप्रै	१४ अप्रै, ७ अग
३३	१२ से	३ अप्रै, २७ से
३४	८ मार्च, १ से	—
३५	—	११ फर, ७ अग
३६	१६ फर, १२ जुला	३१ जन, २६ जुला
३७	१ जुला, २५ दि०	२० जन, १५ जुला
३८	२१ जून	३० नवे
३९	४ दि	२६ मई, १८ नवे
४०	२८ अप्रै	१५ मई, ७ नवे
४१	१८ अप्रै, १३ अक्टो	—
४२	२ अक्टो	२५ मा, १८ से
४३	२८ फर	१४ मा, ७ से
४४	१७ फर	२ मा, २७ अग
४५	१ अग	—
४६	२२ जुला, १६ दि	{ ११ जन, ६ जुला, ३१ दि०
४७	—	२६ जून, २१ दि
४८	३१ मई, २४ नवे	१४ जून
४९	२० से	६ से, २८ अक्टो

शुक्र	शुक्र	शुक्र	शुक्र	शुक्र	शुक्र
५०	६ मे	२५ घण्टे, १८ मिनट	८४	१६ दि	११ ज, ६ जुना
५१	२३ मे	१४ घण्टे, ८ मिनट	८५	१० जू	२७ मे, २० न
५२	१८ मा	—	८६	३१ मे	६ न १० मे
५३	६ मा	२१ फर १८ घण्टा	८७	१५ मिनट	६ मे, ३० मिनट
५४	२३ जुना, २६ फर	११ फर, ७ घण्टा	८८	१० घण्टे, ३ मिनट	—
५५	१३ जुना	३१ जन, २७ जुना	८९	३० मा	१५ मा, ८ मे
५६	१ जुना, २५ दि	१० दि	९०	२० मा	४ मा, २८ घण्टा
५७	—	५ जू, २८ न	९१	३ घण्टा	२० फ, १७ घण्टा
५८	११ मे	२६ मे, ११ न	९२	२७ ज,	२७ जुना —
५९	३० घण्टे, २५ मिनट	—	९३	—	१ ज, २१ दि
६०	१३ मिनट	४ घण्टे, १८ मे	९४	५ ज, १ जू	१७ जू, १० दि
६१	१० मा, ३ मिनट	२४ मा, १८ मे	९५	२० मे	६ जू
६२	२८ फ	१३ मा, ७ मे	९६	१० मे ३०	२६ घण्टे, २० मिनट
६३	१० फ	—	९७	१ घण्टे	१५ घण्टे, १ मिनट
६४	१ घण्टा	१२ ज १० जुना	९८	२१ मा	४ घण्टे, २६ मे
६५	१६ दि	११ ज, ६ जुना	९९	३ मे	—
६६	—	३१ दि २६ जू	१००	२३ घण्टा	१३ फ, ७ घण्टा
६६	—	२६ जू	१०१	१७ ज, १२ घण्टा	१ फ, २८ जुना
६७	३१ मे	१० मे, ६ न	१०२	२७ दि	२२ न, १७ जुना
६८	१६ मे	६ मे, २६ मिनट	१०३	२२ जू	१ दि
६९	४ मिनट	२५ घण्टे, १८ मिनट	१०४	१० जू	२७ मे, १६ न
७०	२० मे	—	१०५	२५ मिनट	१६ मे ६ न
७१	२० मा	४० मा, २८ घण्टा	१०६	२१ घण्टे	—
७२	७ घण्टा	२० फ, १७ घण्टा	१०७	११ घण्टे	२६ मा, २० मे
७३	२३ जुना	१२ फ ६ घण्टा	१०८	३० मा, २४ घण्टा	१५ मा, ८ मे
७४	१७ जुना	२२ दि	१०९	१४ घण्टा	४ मा, २८ घण्टा
७५	५ ज	२६ दि, १० ज, ११ दि	११०	३ घण्टा	—
७६	२१ मे	५ ज, २१ न	१११	२७ ज	१३ न, ८ जुना
७७	—	—	११२	१० जू	१ ज २७ जू
७८	३० घण्टे २४ मिनट, १६ घण्टे १ मिनट	—	११३	१ जू, २६ न	११ जू
७९	१३ घण्टा	५ घण्टे, २६ मे	११४	२२ मे १५ न	३१ मिनट
८०	१० मा	२४ मा, १० मे	११५	४ न,	२६ घण्टे, २१ घण्टा
८१	२७ फ २३ घण्टा	—	११६	३१ मा,	१४ घण्टा, ६ घण्टा
८२	१२ घण्टा	२ फ, २८ जुना	११७	२१ मा	—
८३	२ घण्टा, २७ दि	२३ ज, २७ जुना	११८	३ मे	२३ फ १० घण्टा

इन्दी सन् ।	सु. संवत्सर्ग	चन्द्रसर्ग	सन् ई०	सु. संवत्सर्ग	व० सु०
११८	—	१३ फ, ८ अग	१५४	३१ मा, २५ मे	१७ मा, ६ मे
१२०	१८ ज	२ फ. २८ जुला	१५५	१४ मे	६ मा, ३० अग
१२१	२ जुला	११ दि	१५६	८ फ	२४ फ, १८ अग
१२२	२१ ज	७ जू, १ दि	१५७	२८ ज, २४ जू	—
१२३	६ न	२८ मे, २९ न	१५८	१३ जुला	{ २ ज, २६ जू, २३ दि
१२४	१ मे, २५ अक्ट	—	१५९	—	१८ जू, १२ दि
१२५	२१ अप्रै,	५ अप्रै, ३० मे	१६०	२३ मे	६ जू
१२६	१० अप्रै, ४ मे	२६ मा, १८ मे	१६१	१२ मे	२२ अक्ट
१२७	५ अग	१६ मा, ८ मे	१६२	२ मे	१७ अप्रै, ११ अक्ट
१२८	—	—	१६३	१६ मे	६ अप्रै, ३० मे
१२९	६ फ	२३ ज, १८ जुला	१६४	४ मे	—
१३०	२७ ज, २३ ज	१२ ज, ८ जुला	१६५	२८ फ	१३ फ, ६ अग
१३१	१२ जू	१ ज, २८ जू	१६६	१८ फ	२ फ, ३० जुला
१३२	१ जू, २५ न	१० न	१६७	४ जुला	२३ ज, १६ जुला
१३३	१४ न	६ मे, ३१ अक्ट	१६८	२३ जू, १७ दि	२ दि
१३४	१२ अप्रै	२६ अप्रै	१६९	६ दि	२८ मे, २२ न
१३५	१ अप्रै, २५ मे	१५ अप्रै	१७०	३ मे	१७ मे, ११ न
१३६	१३ मे	६ मा, २६ अग	१७१	२२ अप्रै	७ मे
१३७	३ मे	२३ फ, १८ अग	१७२	५ अक्ट	२७ मा, १६ मे
१३८	२८ ज,	१२ फ, अग	१७३	—	१७ मा, ६ मे
१३९	१८ ज	२३ दि	१७४	१६ फ	६ मा, ३० अग
१४०	२ जुला	१८ जू, ११ दि	१७५	८ फ, ४ अग	—
१४१	२१ जू, १६ न	७ जू, १ दि	१७६	२३ जुला	१३ ज, ६ जुला
१४२	१३ मे, ५ न	२७ मे	१७७	१३ जुला, ८ दि	{ २ ज, २८ जू, २३ दि
१४३	२ मे	१७ अप्रै, ११ अक्ट	१७८	२७ न	१७ जू
१४४	२० अप्रै,	५ अप्रै, २६ मे	१७९	२४ मे	२ न
१४५	४ मे	२६ मा, १८ मे	१८०	१२ मे	२७ अप्रै, २१ अक्ट
१४६	२८ फ	—	१८१	२६ मे	१७ अप्रै, १० अक्ट
१४७	१७ फ	३ फ, ३० जुला	१८२	—	—
१४८	३ जुला, ७ फ,	२३ ज, १८ जुला	१८३	११ मा	२५ फ, २१ अग
१४९	२३ जू	११ ज, ८ जुला	१८४	२६ फ	१४ फ, ९ अग
१५०	१२ जू, ६ दि	२२ न	१८५	१४ जुला	२ फ, ३० जुला
१५१	३५ न	१८ मे, ११ न	१८६	{ ८ ज, ४ जुला, २८ दि }	१४ दि
१५२	२२ अप्रै	६ मे, ३१ अक्ट			
१५३	११ अप्रै	२६ अप्रै			

क्र. सं.	वर्ष.	च. सं.
१००	१० डि	८ जू, ३ डि
१०८	१४ मे	२८ मे, २१ न
१०८	३ मे, २७ अक्टू.	१७ मे
११०	२७ अग्रे	८ अग्रे
१११	१ अक्टू.	२८ मा, २० मे
११२	१ मा	१६ मा, ६ मे
११३	१६ फ	—
११४	४ अग	२४ न, २० जुना
११५	२४ जुना, १८ डि	१३ ज, १० जुना
११६	० दि	३ ज, २८ जू
११७	३ जू	१२ न
११८	२० मे	८ मे, १ न
११९	७ अक्टू.	२८ अग्रे, २१ अक्टू.
१२०	१ अग्रे	—
२०१	२२ मा,	७ मा, ३१ अग
२०२	११ मा	२४ फ, २० अग
२०३	२५ जुना	१३ फ, १० अग
२०४	१४ जुना	२४ डि
२०५	२८ डि	१८ जू, १३ डि
२०६	० मे	८ जू, ३ डि
२०७	१४ मे	२८ मे
२०८	० मे	१८ अग्रे
२०९	१६ अक्टू.	७ अग्रे १ अक्टू
२१०	१३ मा	२८ मा, २० मे
२११	२ मा, २५ अग	—
२१२	१ अग	४ फ, ३१ जुना
२१३	३ अग	२४ ज, ३० जुना
२१४	—	१३ ज, ६ जुना
२१५	१४ जू	—
२१६	२ जू	१८ मे, १२ न
२१७	१८ अग्रे	८ मे, १ न
२१८	१२ अग्रे, ० अग	२८ अग्रे, २१ अक्टू
२१९	० अग्रे	१८ मा ११ मे
२२०	२२ मे	६ मा, ३१ अग
२२१	५ अग	२४ फ, २० अग
२२२	२० न, २५ जुना	—

क्र. सं.	वर्ष.	च. सं.
२२३	१८ ज	{ ४ ज, ३० जू, २५ डि
२२४	८ ज, ४ जू	१८ जू, १३ डि
२२५	२४ मे, १० न	८ जू
२२६	७ न	—
२२७	—	१८ अग्रे, १२ अक्टू.
२२८	२३ मा	७ अग्रे, १ अक्टू.
२२९	१३ मा	—
२३०	२५ अग	१४ फ
२३१	१५ अग	४ फ, ११ अग
२३२	१० ज २६ डि	२५ ज, १६ जुना
२३३	२५ जू	—
२३४	१४ जू	३० मे, २३ न
२३५	३ जू, २८ अक्टू, २० मे, १२ जुन	—
२३६	३७ अग्रे, १७ अक्टू, ८ मे, २१ अक्टू	—
२३७	—	१२ मे
२३८	२ अग्रे,	१८ मा, ११ मे
२३९	१६ अग	७ मा, १ मे
२४०	५ अग	१० फ
२४१	२६ ज	१५ ज १० जुना
२४२	१५ जू	{ ४ ज २६ जुना १३ डि
२४३	४ जू	१६ जू
२४४	२४ मे	—
२४५	० न	२८ अग्रे, २२ अक्टू.
२४६	३ अग्रे	१८ अग्रे, १२ अक्टू
२४७	२४ मा	० अक्टू.
२४८	४ मे	२६ फ, २१ अग
२४९	२४ अग	१५ फ, १० अग
२५०	२० अ	४ फ, १० जुना
२५१	६ ज, ६ जुना	—
२५२	२४ अ	८ जू, ३ डि
२५३	१४ जू	१० मा २२ न
२५४	४ अग्रे, २१ अग	१८ मा, १२ न
२५५	१० अग्रे	३ अक्टू.
२५६	१३ अग्रे	२० मा

क्र०	सू०	च० वृहगा	क्र०	सू०	च० वृहगा
२५७	२६ अग	१० सा, ११ मे	२८३	१७ मे	८ अग्रे, २ अक्ट
२५८	१६ अग	७ सा	२८४	१४ मा, ० से	२८ मा
२५९	६ अग	२६ ज, २१ जुला	२८५	३ मा	१७ फ
२६०	३० ज	१६ ज, ११ जुल	२८६	—	६ फ, ३१ जुला
२६१	१५ जू	४ ज, २८ ज	२८७	६ जुला, ३१ टि	२५ ज, २१ जुला
२६२	४ जू, २६ न	—	२८८	२५ जू, २० टि	—
२६३	१८ न	१० मे, ३ न	२८९	१० टि	१ जू, २४ न
२६४	१४ अग्रे	२८ अग्रे, २२ अक्ट	३००	५ मे	२० मे १३ न
२६५	३ अग्रे	१० अग्रे, १२ अक्ट	३०१	२५ अग्रे	८ मे, ३ न
२६६	२४ मा, १६ मे	८ मा	३०२	८ अक्ट	—
२६७	५ से	२६ फ, २२ अग	३०३	२७ से	१६ मा, १२ मे
२६८	३१ ज	१५ फ, १० अग	३०४	२२ फ	८ मा, ३१ अग
२६९	१६ जुला	—	३०५	१० फ, ७ अग	२१ अग
२७०	५ जुला	२० जू, १५ टि	३०६	२० जुला	१२ जुला
२७१	२४ जू, २० न	१० जू, ४ टि	३०७	१६ जुला	{ ५ ज, २ जुला { २५ टि
२७२	८ न	३० मे, २२ न	३०८	३० न	२० जुला, १४ टि
२७३	—	४ मे, १३ अक्ट	३०९	२५ मे	४ न
२७४	२४ अग्रे	८ अग्रे, ३ अक्ट	३१०	१५ मे	३० अग्रे, २५ अक्ट
२७५	७ से	२८ मा, २२ से	३११	—	१८ अग्रे, १४ अक्ट
२७६	३ मा, २६ अग	१७ मा	३१२	१७ मे	८ अग्रे
२७७	२० फ	५ फ, १ अग	३१३	७ मे	२७ फ
२७८	८ फ	१२ जू, २१ जुला	३१४	३ मा	१७ फ, २२ अग
२७९	२६ जू, २१ टि	१५ ज, ११ जुला	३१५	१८ जुला	६ फ, १ अग
२८०	१४ जू, ८ टि	—	३१६	६ जुला, ३१ टि	—
२८१	—	२१ मे, १३ न	३१७	२० टि	११ जू, ५ टि
२८२	२५ अग्रे	१० मे, ३ न	३१८	१६ मे	३१ मे, ३४ न
२८३	१५ अग्रे ८ अक्ट	२६ अग्रे, २३ अक्ट	३१९	६ मे	२० मे, १४ न
२८४	३ अग्रे, २६ से	—	३२०	२५ अग्रे, १८ अक्ट	—
२८५	१६ से	८ मा, १ से	३२१	८ अक्ट	३० मा, २३ मे
२८६	११ फ	२६ फ, २१ अग	३२२	४ मा	१८ मा, १२ से
२८७	३१ ज, २७ जुला	१० अग	३२३	२१ फ	१ से
२८८	१६ जुला	१ जुला, २५ टि	३२४	६ अग	२२ जुला
२८९	५ जुला, ३० न	२० जू, १४ टि	३२५	२६ जुला, २२ टि	१६ ज, १२ जुला
२९०	१६ न	१० जू, ३ टि	३२६	११ टि	{ ५ ज, १ जुला { २५ टि
२९१	१५ मे	२५ अक्ट			
२९२	४ मे	१८ अग्रे, १३ अक्ट			

श्लो क्रम	सम ग्रहण	चतुस्र ग्रहण	श्लो क्रम	सर्वग्रहण	चतुस्र ग्रहण
३२७	६ जू	—	३६३	२ ज	१६ ज
३२८	२५ मे	१० मे, ४ न	३६४	१६ जू	१ लू, २६ न
३२९	८ अक्टू	२८ अग्रे, २४ अक्टू	३६५	६ जू	२१ मे, १५ न
३३०	२८ से	१६ अग्रे १३ अक्टू	३६६	२० अक्टू	११ मे ४ न
३३१	२५ मा	१० मा	३६७	१५ अग्रे, १० अक्टू	—
३३२	१३ मा	२८ फ, २२ अग	३६८	३ अग्रे	२१ मा, १३ से
३३३	२८ जुना	१६ फ, १० अग	३६९	—	१० मा, २ से
३३४	१७ जुला	१ अग	३७०	८ अग	—
३३५	११ ज	२२ जू, १५ दि	३७१	२ फ, २८ जुना	१४ जुला
३३६	२७ मे	१० जू, ५ दि	३७२	२० ज	{ ७ ज, २ ज ला २६ दि
३३७	१६ मे	३१ मे, २४ न	३७३	७ जुला	२१ जू, १६ दि
३३८	६ मे	—	३७४	२७ मे, २० न	—
३३९	१८ अक्टू	१० अग्रे, ४ अक्टू	३७५	१० न	२ मे, २६ अक्टू
३४०	१४ मा	३० मा, २२ से	३७६	—	२० अग्रे, १४ अक्टू
३४१	४ मा	१६ मा, ११ मे	३७७	२५ मा	१० अग्रे अक्टू
३४२	१० अग	१ अग	३७८	१५ मा, ८ मे	—
३४३	६ अग	२७ ज, २३ जुला	३७९	२८ अग	१७ फ, १४ अग
३४४	२ ज, २१ दि	१६ ज, १२ जुला	३८०	३४ ज	७ फ २ अग
३४५	१६ जून	४ ज	३८१	१२ ज, ८ जुला	२६ ज
३४६	६ जून	२१ मे, १५ न	३८२	२७ जू	१० जू, ७ दि
३४७	१० अक्टू	११ मे, ४ न	३८३	११ न	१ जू, २६ न
३४८	८ अक्टू	२८ अग्रे २३ अक्टू	३८४	३१ अक्टू	२१ मे, १४ न
३४९	४ अग्रे	२१ मा	३८५	—	—
३५०	२४ मा	१० मा, २ से	३८६	१५ अग्रे	१ अग्रे, २४ से
३५१	८ अग	२७ फ २३ अग	३८७	३० अग	२१ मा, १४ से
३५२	२ फ २७ जुना	१२ अग	३८८	१८ अग	८ मा, २ से
३५३	२२ ज, १० जुला	३ जुना २६ दि	३८९	१२ फ	—
३५४	११ ज, ७ जून	२० जू, १६ दि	३९०	—	१० ज १३ जुला
३५५	१८ मई	११ जू ६ दि	३९१	१८ जू	{ ७ ज, २ जुला ७७ दि
३५६	१६ मई, ८ न	—	३९२	७ जू	—
३५७	२६ अक्टू	२० अग्रे, १४ अक्टू	३९३	२० १	१२ मे, ५ न
३५८	२६ मा	१० अग्रे, ३ अक्टू	३९४	१६ अग्रे	२ मे, २५ अक्टू
३५९	१३ मा	३१ मा, २३ मे	३९५	६ अग्रे	२१ अग्रे, १४ अक्टू
३६०	२८ अग	१३ अग	३९६	—	—
३६१	१७ अग	६ फ, ३ अग	३९७	—	२१ फ, २४ अग
३६२	—	२६ ज, २३ जुला			

दिनांक	वर्ष	सं०	दिनांक	वर्ष	सं०
३६८	३ फा	१७ फा, १४ अग	४३४	२५ फा	११ मा, ४ मे
३६९	२३ ज १६ जुला	७ फा	४३५	१४ फा	२८ फा, २४ अग
४००	८ जुला	२२ जू, १७ दि	४३६	३ फा, २६ जुला	—
४०१	२७ जू	२२ जू, ६ दि	४३७	१३ दि, २६ जुला	{ ८ ज, ३ जुला, ८ दि
४०२	११ न	१ जू, २५ न	४३८	३ दि	२७ जू, १७ दि
४०३	७ मे, ३१ अक्टू	—	४३९	—	—
४०४	२५ अप्रै	११ अप्रै, ४ अक्टू	४४०	१७ मं	३ मे, २६ अक्टू
४०५	१५ अप्रै, ८ से	३१ मा, २४ से	४४१	६ मे, १ अक्टू	२२ अप्रै, १६ अक्टू
४०६	६ मा, २८ अग	२० मा, १४ से	४४२	२० से	११ अप्रै, ५ अक्टू
४०७	२४ फा, १६ अग	—	४४३	१७ मा	—
४०८	१३ फा,	२६ ज, २४ जुला	४४४	—	१६ फा १४ अग
४०९	२३ जू	१७ ज, १३ जुला	४४५	२० जुला	८ फा ३ अग
४१०	१८ जू, १२ दि	७ ज,	४४६	१० जुला	२८ ज, २४ जुला
४११	—	२३ से, १६ न	४४७	२६ जू, २३ दि	१४ जू, ८ दि
४१२	२७ अप्रै	१२ से, ४ न	४४८	—	३ जू, २६ न
४१३	१६ अप्रै	२ से, २५ अक्टू	४४९	८ से	२३ से, १६ न
४१४	६ अप्रै, ३० से	—	४५०	—	—
४१५	१६ से	११ मा, ५ से	४५१	—	२ अप्रै, २६ से
४१६	—	२८ फा, २४ अग	४५२	७ मा	२१ मा, १५ से
४१७	३ फा,	१७ फा, १३ अग	४५३	२४ फा	११ मा, ४ से
४१८	१६ जुला	२६ दि	४५४	१३ फा, १० अग	—
४१९	८ जुला, ३ दि	२३ जुला, १८ दि	४५५	३० जुला	१८ ज, १५ जुला
४२०	—	१२ जू, ६ दि	४५६	१३ दि	६ ज, ३ जुला, २७ दि
४२१	१७ से, ११ न	—	४५७	८ जू, ३ दि	—
४२२	६ से	२२ अप्रै, १६ अक्टू	४५८	२८ से	१४ से, ६ न
४२३	२ अप्रै	१२ अप्रै, ५ अक्टू	४५९	१८ से, १२ अक्टू	३ से, २७ अक्टू
४२४	८ से	३१ मा, २४ से	४६०	३० से	२१ अप्रै, १६ अक्टू
४२५	६ मा, २६ अग	—	४६१	२७ मा, २० से	—
४२६	२३ फा	८ फा, ४ अग	४६२	१७ मा	२ मा, २५ अग
४२७	१० जुला	२६ ज, १४ जुला	४६३	१ अग	१६ फा, १५ अग
४२८	२२ दि	१८ ज, १२ जुला	४६४	२० जुला	६ फा, ३ अग
४२९	१२ दि	३ जू, २७ न	४६५	१३ ज, ६ जुला	२४ जू, १८ दि
४३०	—	२३ से, १६ न	४६६	२ ज	१४ जू, ७ दि
४३१	२७ अप्रै	१३ से, ५ "	४६७	१९ से	३ जू, २७ न
४३२	१६ अप्रै, १० अक्टू	—	४६८	८ से, १ न	—
४३३	२६ से	२१ मा, १५ से			

क्र० सं	सू. सं	विवरण	क्र० सं	सू. सं	विवरण
४६८	२१ अक्टू.	१२ अग्रे, ७ अक्टू.	५०४	२८ अग्रे	—
४७०	१० अक्टू.	१ अग्रे, २६ से	५०५	—	४ अग्रे, २८ अक्टू.
४७१	७ मा	२२ मा, १५ से	५०६	८ अग्रे	२८ अग्रे, १८ अक्टू.
५०२	२० अग	—	५०७	३१ मा	१२ अग्रे ७ अक्टू.
४७३	१८ अग	३० ज, २५ जुला	५०८	१७ मा, ११ से	—
४७४	४ ज	१८ ज, १५ जुला	५०९	३१ अग	२० फ, १६ अग
४७५	१६ जू	८ ज, ४ जुला	५१०	—	८ फ, ५ अग
४७६	७ जू	२४ से, १७ न	५११	१५ ज	२६ ज, २६ जुला
४७७	२८ से	१३ से, ६ न	५१२	२६ जू	१५ ज, ८ दि
४७८	१२ अक्टू.	७ से, २७ अक्टू.	५१३	१८ जू	४ जू, २८ न
४७९	८ अग्रे, १ अक्टू.	—	५१४	२ न	२४ से, १८ न
४८०	२७ मा	१२ मा, ५ से	५१५	२३ अक्ट	—
४८१	११ अग	२ मा, २५ अग	५१६	१८ अग्रे	३ अग्रे, २६ से
४८२	३१ जुला	१८ फ, १४ अग	५१७	७ अग्रे	२७ मा, १५ से
४८३	२४ ज	६ जुला, ३० दि	५१८	२२ अग	१३ मा, ५ से
४८४	१४ ज	२४ जू, १८ दि	५१९	१६ फ, ११ अग	—
४८५	२८ से	१४ जू, ७ दि	५२०	५ फ	२० ज, १६ जुला
४८६	१६ से, १२ न	—	५२१	२ जू	८ ज, ५ जुला, २६ दि
४८७	१ न	२३ अग्रे, १८ अक्टू.	५२२	१० जू, ४ दि	—
४८८	२६ मा	१२ अग्रे ६ अक्टू.	५२३	२३ न	१५ से, ८ न
४८९	१८ मा	१ अग्रे, २५ से	५२४	११ न	३ से, २८ अक्टू.
४९०	७ मा	—	५२५	—	२३ अग्रे, १७ अक्टू.
४९१	२१ अग	१० फ, ५ अग	५२६	२२ से	—
४९२	१५ ज	३० ज, २५ जुला	५२७	११ से	४ मा, २८ अग
४९३	४ ज	१८ ज, १५ जुला	५२८	६ फ	२० फ १६ अग
४९४	१८ जू	५ जू, २८ अ	५२९	२५ ज	९ फ ५ अग
४९५	८ ज, ३ न	२५ से, १८ न	५३०	१५ ज, १० जुला	२० दि
४९६	२२ अक्टू.	१३ से, ६ न	५३१	३० न	१५ जू १० दि
४९७	१८ अग्रे	—	५३२	१३ न	३ जू, २८ न
४९८	७ अग्रे	२३ मा, १६ से	५३३	१० से	—
४९९	२२ अग	१३ मा, ७ से	५३४	२६ अग्रे	१४ अग्रे, ८ अक्टू.
५००	१० अग	१ मा, २५ अग	५३५	१८ अग्रे, १३ से	४ अग्रे, २७ से
५०१	३१ जुला	—	५३६	१ से	२३ मा १५ से
५०२	—	८ ज, ६ जुला, २८ दि	५३७	२५ फ, २१ अग	—
५०३	१० ज	२५ ज, १८ दि	५३८	१५ फ	३१ ज, २८ जुला

क्र.सं.	सूर्य ग्रहण	चंद्र ग्रहण	क्र.सं.	सूर्य ग्रहण	चंद्र ग्रहण
५३६	१ जुला	२० ज, १७ जुला	५७३	२६ मा, १२ से	—
५४०	२० जुला, १४ दि	६ ज, ५ जुला	५७४	८ मा	२१ फ, १८ अग
५४१	३ दि	२५ से, १६ न	५७५	२३ जुला	११ फ, ७ अग
५४२	—	१५ से, ८ न	५७६	१२ जुला	३१ जू, २६ जुला
५४३	२० अप्रै	४ से, २८ अक्टू	५७७	५ ज, २५ दि	११ दि
५४४	८ अप्रै	—	५७८	—	५ जू, ३० न
५४५	२२ से	१४ मा, ६ से	५७९	११ से	२६ म, १८ न
५४६	१६ फ	३ मा, २७ अग	५८०	२६ अप्रै, २४ अक्टू	—
५४७	६ फ	२० फ, १७ अग	५८१	१३ अक्टू	५ अप्रै, २८ से
५४८	२१ जुला	३० दि	५८२	१० मा, २ अक्टू	२५ मा, १८ से
५४९	१० जुला, ५ दि	२५ जू, २० दि	५८३	२८ फ	१४ मा, ७ से
५५०	२४ न	१५ ज, ८ दि	५८४	१७ फ, ११ अग	—
५५१	२१ से	४ जू	५८५	१ अग	२१ ज, १७ जुला
५५२	६ से	२४ जू, १८ अक्टू	५८६	१६ दि	{ ११ ज, ६ जुला, ३१ दि
५५३	२३ से	१४ अप्रै, ७ अक्टू	५८७	११ जू, ५ दि	२५ जू
५५४	—	३ अप्रै, २७ से	५८८	३१ से	१६ से, ८ न
५५५	—	—	५८९	२० से, १४ अक्टू	६ से, २८ अक्टू
५५६	२६ फ	११ फ, ६ अग	५९०	४ अक्टू	२५ अप्रै, ८ अक्टू
५५७	१५ फ, १२ जुला	३० ज, २७ जुला	५९१	३० मा, २३ से	—
५५८	१ जुला	२० ज, १६ जुला	५९२	१८ मा	४ मा, २८ अग
५५९	—	३० न, २१ जू	५९३	२ अग	२१ फ, १७ अग
५६०	३ दि	२५ से, १६ न	५९४	२३ जुला	१० फ, ६ अग
५६१	३० अप्रै	१५ से, ८ न	५९५	१६ जन, १२ जुला	२२ दि
५६२	१६ अप्रै, १६ अक्टू	—	५९६	५ जन, २५ दि	१५ जू, १० दि
५६३	३ अक्टू	२५ मा, १८ से	५९७	२१ से	५ जू, २८ न
५६४	२८ फ, २१ से	१३ मा, ६ से	५९८	११ से	—
५६५	१६ फ	२ मा, २७ अग	५९९	३० अप्रै, २५ अक्टू	१६ अप्रै, ६ अक्टू
५६६	१ अग	—	६००	—	४ अप्रै २८ से
५६७	२२ जुला, १६ दि	{ ११ ज, ७ जुला, ३१ दि	६०१	१० मा	२४ मा, १७ से
५६८	—	२५ जू, २० दि	६०२	२२ अग	—
५६९	२१ से, २४ न	२४ जू	६०३	१२ अग	१ फ, २८ जुला
५७०	२० से,	६ से, २८ अक्टू	६०४	{ १७ ज, १ अग २६ दि	२२ ज, १६ जुला
५७१	९ मई	२५ अप्रै, १८ अक्टू	६०५	२२ जू, १६ दि	११ ज, ६ जुला
५७२	२३ से	१४ अप्रै, ७ अक्टू			

सं.सं.	सु.सं.	स.सं.
६०६	११ जू	२७ मी, २० न
६०७	३१ मी, २६ अक्टू.	१७ मी ६ न
६०८	—	५ मी २६ अक्टू.
६०९	१० अग्रे	—
६१०	३० मा	१५ मा, ८ से
६११	२० मा	४ मा, २८ अग
६१२	२ अग	२७ फ, ११ अग
६१३	२७ जुला	—
६१४	—	{ १ ज, २७ ज, १२ दि
६१५	७ ज, २ जू	१६ जू ११ दि
६१६	२१ मी, १५ न	५ जू
६१७	१ मी, ४ न	२६ अग्रे, २० अक्टू.
६१८	१ अग्रे, २४ अक्टू.	१५ अग्रे ६ अक्टू.
६१९	२१ मा	४ अग्रे २१ मी
६२०	१० मा, ७ से	—
६२१	२२ अग	१२ फ, ८ अग
६२२	१० ज, १२ अग	१ फ, २८ अग
६२३	२७ दि	२२ ज, १७ जुला
६२४	२१ जू	६ जू, ३० न
६२५	१० जू	२७ मी, २० न
६२६	२६ अक्टू.	१७ मी, ६ न
६२७	२१ अग्रे, ५ अक्टू	—
६२८	१० अग्रे	२५ मा, १६ से
६२९	२० मा, २४ अग	१५ मा, ८ मी
६३०	१३ अग	४ मा, २८ अक्टू.
६३१	३ अग	—
६३२	२७ ज	१३ ज ७ जुला
६३३	१२ जू	{ १ ज २७ ज, ११ दि
६३४	१ जू	१६ जू
६३५	१५ न	७ मी ३१ अक्टू.
६३६	११ अग्रे, ३ न	६ अग्रे २० अक्टू.
६३७	१ अग्रे	१५ अग्रे ६ अक्टू.
६३८	२१ मा	—
६३९	३ मी	२३ फ, १६ अग
६४०	—	१३ फ, ७ अग
६४१	१० ज	१ फ, २७ जुला
६४२	२ जुला	१२ दि
६४३	२१ जू	७ जू, १ दि
६४४	५ न	२० मी, १६ न
६४५	१ मी, २५ अक्टू.	—

सं.सं.	स.सं.	स.सं.
६४६	२१ अग्रे	५ अग्रे, ३० मी
६४७	४ से	२६ मा, १६ मी
६४८	२४ अग	१४ मा, ७ से
६४९	१७ फ, १३ अग	—
६५०	६ फ	२३ ज, १८ जुला
६५१	२७ ज, २३ जू	१२ ज, ८ जुला
६५२	११ जू	१ ज, २७ जू
६५३	१ जू, २६ न	१८ मी, १० न
६५४	—	७ मी, ३१ अक्टू.
६५५	१७ अग्रे	२६ अग्रे २१ अक्टू.
६५६	३१ मा, २३ मी	—
६५७	१३ मी	७ मा, २० अग
६५८	८ फ, ३ मी	२३ फ, १८ अग
६५९	२८ ज	१३ फ ८ अग
६६०	१८ ज, १३ जुला	२२ दि
६६१	२ जुला	१८ जू ११ दि
६६२	—	७ जू १ दि
६६३	—	—
६६४	१ मी	१६ अग्रे, १० अक्टू.
६६५	३१ अग्रे	५ अग्रे, ३० मी
६६६	४ से	२६ मा, १६ मी
६६७	२८ फ, २५ अग	—
६६८	१७ फ	३ फ, २९ जुला
६६९	६ फ	२३ ज, १८ जुला
६७०	२३ जू, १८ दि	१७ ज, ८ जुला
६७१	१७ जू, ७ दि	२२ न
६७२	२५ न	१७ मी, १० न
६७३	२७ अग्रे	६ मी, ३१ अक्टू.
६७४	१७ अग्रे ५ अक्टू.	—
६७५	२५ से	१७ मा, ६ से
६७६	१३ से	७ मा, २६ अग
६७७	—	२३ फ, १८ अग
६७८	२३ ज, २४ जुला	—
६७९	१३ जुला	{ २ ज, २८ जू, २३ दि
६८०	२० न	१० ज, ११ दि
६८१	२३ मी १६ न	७ जू
६८२	१७ मी	२७ अग्रे, २२ अग
६८३	२ मी	१६ अग्रे, ११ अक्टू
६८४	१४ मी	१ अग्रे, २१ मी
६८५	४ मी	—
६८६	२८ फ	१४ फ, १ अग

शं० सन्	चंद्रगण	सप्तगण
६८७	१५ जुला	३ फ, ३० जुला
६८८	३ जुला २८ दि	२३ ज, १८ जुला
६८९	२२ जू, १७ दि	२ टि
७९०	६ दि	२८ मे, २२ न
६९१	३ मे	१७ मे, ११ न
६९२	२२ अग्र	१६ मे
६९३	५ अक्टू	२७ मा, २० से
६९४	—	१७ मा, ६ से
६९५	१६ फ	६ मा, २६ अग
६९६	—	—
६९७	२३ जुला, १६ दि	१३ ज, ८ जुला
६९८	१३ जला ८ दि	{ २ ज, २८ जू २२ टि
६९९	३ ज २७ न	१८ जू
७००	२३ मे	१ न
७०१	१२ मे	२७ अग्र, २१ अक्ट
७०२	२६ से	१६ अग्र, १० अक्ट
७०३	२२ मा	—
७०४	१० मा	२५ फ, १६ अग
७०५	२८ फ, २५ जुला	१३ फ, ९ अग
७०६	१४ जुला	२ फ, ३० जुला
७०७	४ जुला, २६ दि	१३ दि
७०८	१७ दि	८ जू, ६ टि
७०९	१४ मे	२८ मे, २२ न
७१०	३ मे, २७ अक्टू	१७ मे
७११	१६ अक्टू	७ अग्र, १ अक्टू
७१२	५ अक्टू	२७ मा, १६ से
७१३	१ मा	१७ मा, ६ से
७१४	१६ फ, १५ अग	—
७१५	४ अग	२४ ज, २१ जुला
७१६	२३ जुला	१३ ज, ६ जुला
७१७	—	२ ज, २८ जू
७१८	३ जू	१२ न
७१९	२ मे	८ मे, २ न
७२०	६ अक्टू	२७ अग्र, २१ अक्टू
७२१	१ अग्र, २६ से	—
७२२	२१ मा	७ मा, ३१ अग
७२३	११ मा	२४ फ, २० अग
७२४	२५ जुला	१३ फ, ६ अग
७२५	१६ ज, १४ जुला	२४ दि
७२६	८ जू, २८ दि	१६ जू, १३ दि
७२७	२५ मे	८ जू, ३ दि

शं० सन्	सप्तगण	चंद्रगण
७२८	१३ मे, ६ न	२७ मे
७२९	२७ अक्टू	१८ अग्र, ११ अक्ट
७३०	१६ अक्टू	७ अग्र, १ अक्ट
७३१	१२ मा	२८ मा, २० मे
७३२	१ मा, २५ अग	—
७३३	१४ अग	३ फ, ३१ जुला
७३४	{ १० ज, ३ अग, ३० दि }	{ २४ ज, २० जुला
७३५	२६ टि	१३ ज, ८ जुला
७३६	—	२३ न
७३७	३ जू	१८ मे, १२ न
७३८	१८ अक्टू	८ मे, १ न
७३९	७ अक्टू	—
७४०	१ अग्र	१८ मा, १० मे
७४१	—	७ मा, ३१ अग
७४२	५ अग	२४ फ, २० अग
७४३	३० ज	—
७४४	१६ ज	{ ४ ज, २८ जू २४ टि
७४५	४ जू	१८ जू, १३ टि
७४६	२५ मे	८ जू
७४७	१४ मे, ७ न	२८ अग्र
७४८	२७ अक्टू	१८ अग्र ११ अक्ट
७४९	२३ मा	७ अग्र, ३० से
७५०	—	—
७५१	२५ अग	१५ फ, ११ अग
७५२	१४ अग	४ फ, ३१ जुला
७५३	६ ज, २६ दि	२४ ज, २० जुला
७५४	२५ जू	४ दि
७५५	१४ जू	३० मे, २३ न
७५६	२८ अक्टू	१८ मे, ११ न
७५७	२३ अग्र	८ मे
७५८	१२ अग्र	२६ मा, २१ से
७५९	२ अग्र	१८ मा, ११ से
७६०	१५ अग	६ मा, ३१ अग
७६१	५ अग	—
७६२	३० ज	१५ ज, १० जुला
७६३	१८ ज, १६ जू	{ ४ ज, ३० जू, २५ दि
७६४	४ जू, २८ न	१८ जू
७६५	२४ मे	६ मे
७६६	७ न	२६ अग्र, २२ अक्ट

क्र.सं.	वृ.सं.	व.सं.
३०४	३ अग्रे	१८ अग्रे, १२ अक्टू
३०५	२२ मा	—
३०६	५ मे	२५ फा, २२ अग
३०७	२५ अग	१४ फा, ११ अग
३०८	—	४ फा, ३१ जुला
३०९	५ जुला	१५ दि
३१०	१४ ज	८ जू, ४ दि
३११	—	३० मे २२ न
३१२	४ मे, २९ अक्टू	११ मे
३१३	—	८ अग्रे, २ अक्टू
३१४	१२ अग्रे	२८ मा, २१ मे
३१५	२६ अग	१० मा, ११ मे
३१६	२१ फा, १६ अग	—
३१७	१० फा	२६ ज, २१ जुला
३१८	२२ ज, २६ जू	१५ ज, १० जुला
३१९	१५ जू	४ ज, २६ जू
३२०	२६ न	—
३२१	१७ न	६ मे, २ न
३२२	१३ अग्रे	२६ अग्रे, २२ अक्टू
३२३	२३ अग्रे, २७ से	१२ अक्टू
३२४	१६ से	८ मा, २ से
३२५	—	२५ फा, २१ अग
३२६	—	१४ फा, १० अग
३२७	३१ ज	२६ दि
३२८	२० ज	२० ज, १५ दि
३२९	६ जुला	८ ज, ३ दि
३३०	२४ जू, १८ न	३० मई
३३१	८ न	१३ अक्टू
३३२	४ मई	६ अग्रे, ३ अक्टू
३३३	२३ अग्रे	२८ मा, २१ मे
३३४	६ से	—
३३५	३ मा	५ फा, १ अग
३३६	२० फा	२६ ज, २१ जुला
३३७	६ फा, ७ जुला	१५ ज, १० जुला
३३८	२६ जू	—
३३९	१५ जू, ९ दि	२१ मे, १३ न
३४०	२६ न	१० मे, २ न
३४१	२५ अग्रे	२२ अक्टू
३४२	१३ अग्रे	१९ मा, १२ मे
३४३	३ अग्रे, २६ से	८ मा, १ मे
३४४	१६ से	—
३४५	११ फा	२६ फा, २१ अग
३४६	३१ ज	२७ जुला

क्र.सं.	वृ.सं.	व.सं.
५०८	१६ जुला	{ ५ ज, १ जुला, २५ दि }
५०९	५ जुला, ३० न	२० ज, १४ दि
५१०	—	१० जू
५११	१४ मे	२३ अक्टू
५१२	४ मे	१६ अग्रे, १३ अक्टू
५१३	१७ मे	८ अग्रे, ३ अक्टू
५१४	७ मे	२८ मा
५१५	३ मा	१७ फा, ११ अग
५१६	१८ फा	५ फा, ३१ जुला
५१७	७ जुला	२६ ज, २१ जुला
५१८	२६ जू	—
५१९	८ दि	३१ मे, २३ न
५२०	५ मे	२० मे, १३ ग
५२१	२५ अग्रे	८ मे, २ न
५२२	८ अक्टू	२४ से
५२३	२६ मे	१८ मा, १० से
५२४	—	८ मा १ से
५२५	७ अग	—
५२६	२७ जुला	१७ ज, १२ जुला
५२७	१५ जुला	{ ६ ज १ जू, २५ दि }
५२८	३० न	२० जू
५२९	२५ मे	४ न
५३०	१० मे	३० अग्रे, २४ अक्टू
५३१	—	१८ अग्रे, १३ अक्टू
५३२	२४ मे, १७ से	८ अग्रे
५३३	१४ मा, ७ से	२७ फा
५३४	३ मा	१७ फा, १२ अग
५३५	१७ जुला	६ फा ३१ जुला
५३६	{ १० ज, १६ जुला, ३१ दि }	—
५३७	—	११ जू, ५ दि
५३८	१६ मे	१ ज, २४ न
५३९	५ मे, २६ अक्टू	२० मे, १३ न
५४०	२५ अग, १८ अक्टू	—
५४१	—	३० मा, २३ मि
५४२	५ मा	१६ मा, १२ मे
५४३	२२ फा	—
५४४	७ अग	२७ ज, २२ जुला
५४५	२७ जुला, २७ दि	११ न १२ जुला

क्र० सन्	संयोग	संयोग
८४७	११ दि	५ ज. २ जुला
८४८	५ जू	१४ न
८४९	२५ से	११ से, ४ न
८५०	२ अक्टू	३० अप्र. २४ अक्टू
८५१	५ अप्र	१२ अप्र
८५२	२४ मा, १७ से	८ मा
८५३	१३ मा	२७ फ, २२ अग
८५४	२८ जू	१६ फ, १२ अग
८५५	१७ जुला	---
८५६	११ ज, २१ दि	२२ जू, १५ दि
८५७	२७ से	२१ जू, ५ दि
८५८	---	३१ से, २४ न
८५९	६ से, २६ अक्टू	---
८६०	१८ अक्टू	८ अप्र, ३ अक्टू
८६१	१५ मा	३० मा, २२ से
८६२	४ मा २६ अग	१६ मा ११ से
८६३	१८ अग	७ फ, ३ अग
८६४	६ अग	२७ ज, २२ जुला
८६५	१ ज, २१ दि	१५ ज. १२ जुला
८६६	१६ जू	२६ न
८६७	६ जू	२२ से १५ न
८६८	१६ अक्टू	१० से, ४ न
८६९	६ अक्टू	२६ अप्र
८७०	---	२१ मा
८७१	२४ मा	१० मा, २ से
८७२	८ अग	२८ फ, २२ अग
८७३	१ फ २८ जुला	१२ अग
८७४	२१ ज, १७ जुला	३ जुला, २६ दि
८७५	११ ज, ७ जू	२२ जू, १६ दि
८७६	२७ से	१० जू, ५ दि
८७७	६ न	---
८७८	२६ अक्टू	२० अप्र, १५ अक्टू
८७९	२६ मा	१० अप्र, ४ अक्टू
८८०	१४ मा, ८ से	३० मा, २२ से
८८१	२८ अग	१० फ, १३ अग
८८२	१७ अग	७ फ, ३ अग
८८३	---	२७ ज, २३ जुला
८८४	२ ज, २६ जू	१६ ज, ६ दि
८८५	१६ जू	१ जू, २६ न
८८६	६ जू	२१ से, १६ न
८८७	२० अक्टू	११ से
८८८	१५ अप्र, ६ अक्टू	३१ मा

क्र० सन्	संयोग	संयोग
८८९	४ अप्र	२१ मा, १३ से
८९०	१६ अग	१० मा, २ से
८९१	१२ फ	२३ अग
८९२	२ फ	१३ जुला
८९३	१७ जू	(६ ज, २ जुला, २६ दि
८९४	७ ज	२२ जू, १६ दि
८९५	२८ से, ३० म	---
८९६	---	१ से, २५ अक्टू
९९७	५ अप्र	२० अप्र, १४ अक्टू
९९८	२६ मा	१० अप्र, ३ अक्टू
९९९	१५ मा	२४ अग
९००	---	१८ फ, १३ अग
९०१	२३ ज	६ फ, ३ अग
९०२	१२ ज ८ जू	२६ ज, १७ दि
९०३	२७ जू	१२ ज, ७ दि
९०४	१६ जू १० न	३१ से, २५ न
९०५	---	२१ से
९०६	२६ अप्र	---
९०७	१५ अप्र	१ अप्र, २४ से
९०८	२८ अग	२० मा, १३ से
९०९	१८ अग	२ से
९१०	१२ फ	२४ जुला
९११	२ फ	१७ ज, १४ जुला
९१२	१७ जू	७ ज, २ जुला २६ दि
९१३	७ जू	---
९१४	२० न	१२ से, ५ न
९१५	१७ अप्र	२ म २५ अक्टू
९१६	५ अप्र	२० अप्र, १३ अक्टू
९१७	१८ से	---
९१८	८ से	२८ फ, २४ अक्टू
९१९	३ फ,	१७ फ १४ अग
९२०	२४ ज, १८ जुला	७ फ, २८ दि
९२१	८ जुला	२३ जू, १७ दि
९२२	२७ जू, २१ न	१२ जू, ७ दि
९२३	११ न	१ जू
९२४	६ से	---
९२५	२५ अप्र	११ अप्र ४ अक्टू
९२६	१० से	१ अप्र २४ से
९२७	६ मा, ३ अग	१४ से
९२८	२४ फ, १८ अग	४ अग

ई० मन्	सु. गहथ	ब. गहथ
८२८	१२ फ	२७ ज, २४ जुना
८३०	२८ जू	१७ ज, १३ जुना
८३१	१८ जू, १२ टि	७ ज,
८३२	३० न	२२ मा, १६ न
८३३	२७ अग्रे	१२ मे, ५ न
८३४	१६ अग्रे, ११ अक्ट	२ मे, २५ अक्टू
८३५	६ अग्रे, ३० से	—
८३६	१८ से	११ मा, ४ से
८३७	१३ फ	२८ फ, २४ अग
८३८	३ फ	१० फ,
८३९	१८ जुना	{ ८ ज, ४ जुना, २६ दि
८४०	८ जुना	२२ जू, १० दि
८४१	२१ न	१७ जू
८४२	१० मे, ११ न	—
८४३	७ मे	२३ अग्रे, १६ अक्टू
८४४	२५ अग्रे, २० से	११ अग्रे, ४ अक्टू
८४५	१६ मा, ८ से	२४ से
८४६	६ मा, २६ अग	—
८४७	—	८ फ ४ अग
८४८	६ जुना	२८ ज २३ जुना
८४९	२८ जू, २२ दि	१० ज
८५०	१२ दि	३ जू, २७ न
८५१	८ से	२३ मे, १६ न
८५२	२६ अग्रे	१२ मे, ४ न
८५३	१६ अग्रे	—
८५४	—	२२ मा, १५ से
८५५	—	११ मा, ४ से
८५६	१४ फ, ८ अग	२८ फ
८५७	२६ जुना	१८ ज
८५८	१६ जुना, १३ दि	{ ८ ज, ३ जुना, २८ दि
८५९	२ दि	२७ जू
८६०	२८ मे	—
८६१	१० मे	३ से, २६ अक्टू
८६२	१ अक्टू	२२ अग्रे, १६ अक्टू
८६३	१० से	११ अग्रे, ५ अक्टू
८६४	१६ मा	—
८६५	६ मा	१८ फ, १५ अग
८६६	२० जुना	८ फ ४ अग
८६७	१० जुना	२८ ज

ई० मन्	सु. गहथ	ब. गहथ
८६८	२७ दि	१३ जू, ७ दि
८६९	१६ मे	३ जू, २६ न
८७०	८ से	२३ मे, १५ न
८७१	२७ अग्रे, २२ अक्टू	—
८७२	१० अक्टू	१ अग्रे, २५ से
८७३	७ मा	२१ मा, १५ से
८७४	२५ फ, २० अग	११ मा ४ से
८७५	१० अग	—
८७६	२६ जुना	१६ ज, १४ जुना
८७७	१३ दि	{ ८ ज, ३ जुना, १८ दि
८७८	८ जू	—
८७९	२८ से	१४ मे, ६ न
८८०	१७ मे	३ मे, २६ अक्टू
८८१	३० से	२२ अग्रे, १६ अक्टू
८८२	२८ मा, २० से	—
८८३	१७ मा	१ मा, २६ अग
८८४	३० जुना	१८ फ १४ अग
८८५	२० जुना	८ फ, ३ अग
८८६	१३ ज	२४ जू १६ दि
८८७	—	१४ ज, ८ दि
८८८	१८ मे	२ जू, २६ न
८८९	८ म १ न	—
८९०	२१ अक्टू	१२ अग्रे, ७ अक्टू
८९१	१८ मा, १० अक्टू	१ अग्रे, २६ से
८९२	७ मा	२७ मा, १४ से
८९३	२४ फ, २० अग	—
८९४	६ अग	३० जन, २५ जुना
८९५	४ ज	१६ जन, १४ जुना
८९६	—	८ जन
८९७	७ जन	२४ मे, १७ न
८९८	२८ मे, २३ अक्टू	१४ मे, ६ न
८९९	१२ अक्टू	३ मे, २७ अक्टू
९००	७ अग्रे, ३० से	—
९००१	—	१२ मा, ५ से
९००२	११ अग	१ मा, २५ अग
९००३	३१ जुना	१८ फ, १४ अग
९००४	२१ ज, २० जुना	४ जुना, २६ दि
९००५	१३ ज,	२४ जू, १८ दि
९००६	२८ से	७ दि
९००७	१८ मे	—
९००८	—	२३ अग्रे, १० अक्टू

क्र० सन्	सर्वगृहण	कंडयण	क्रिमी सन्	सर्वगृहण	कंडयण
१००६	२६ मा	१२ अप्रै, ६ अक्टू	१०४६	५ फ	२० फ, १५ अग
१०१०	१८ मा	१ अप्रै २६ से	१०५०	—	८ फ; ५ अग
१०११	७ मा, ३१ अग	—	१०५१	१५ ज. १० जुला	२६ ज. २० टि
१०१२	२० अग	१० फ, ४ अग	१०५२	२० ज. २४ न	१५ ज. ८ टि
१०१३	१४ ज	२८ ज, २५ जुला	१०५३	१३ न	४ ज, २८ न
१०१४	४ ज, ३० ज	१८ ज, १४ जुला	१०५४	१० से	—
१०१५	१६ जू	५ जू, २८ न	१०५५	२८ अप्रै	१४ अप्रै, ८ अक्टू
१०१६	७ जू, २ न	२४ से, १७ न	१०५६	१२ से	२ अप्रै, २६ से
१०१७	२२ अक्टू	१३ से, ६ न	१०५७	—	२३ मा, १५ से
१०१८	१८ अप्रै	—	१०५८	२५ फ, २२ अग	—
१०१९	२१ अग	२३ मा, १६ से	१०५९	१५ फ	३१ ज, २७ जुला
१०२०	—	१० मा, ४ से	१०६०	३० जू	२० ज, १६ जुला
१०२१	११ अग	१ मा, २५ अग	१०६१	२० जू	८ ज
१०२२	३१ जुला	१६ जुला	१०६२	—	२५ से, १८ न
१०२३	२४ ज	{ ६ ज, ५ जुला, २९ टि	११६३	१ से	१५ से, ८ न
१०२४	६ जू	२४ जू, १८ टि	१०६४	८ अप्रै	३ से, २८ अक्टू
१०२५	२६ से, २३ न	—	१०६५	४ अप्रै	—
१०२६	१२ न	४ से, २८ अक्टू	१०६६	२२ से	१४ मा, ६ से
१०२७	६ अप्रै, १ न	२३ अप्रै, १८ अक्टू	१०६७	१६ फ	३ मा, २७ अग
१०२८	२८ मा	१२ अप्रै, ६ अक्टू	१०६८	६ फ	२१ फ, १५ अग
१०२९	११ से	—	१०६९	२१ जुला	७ जुला, ३० टि
१०३०	३१ अग	२० फ, १६ अग	१०७०	१० जुला, ५ टि	२६ जू, २० टि
१०३१	—	१० फ, ५ अग	१०७१	२४ न	१५ जू, ८ टि
१०३२	१५ ज, १० जुला	३० ज, २५ जुला	१०७२	२० से	—
१०३३	४ ज, २८ ज	१५ जू, ८ टि	१०७३	८ से	२४ अप्रै, १८ अक्टू
१०३४	१८ जू	४ जू, २८ न	१०७४	२६ अप्रै	१४ अप्रै, ७ अक्टू
१०३५	—	२४ से, १८ न	१०७५	१३ से	३ अप्रै, २७ से
१०३६	२६ अप्रै, २२ अक्टू	—	१०७६	१ से	—
१०३७	१८ अप्रै	२ अप्रै, २७ से	१०७७	२५ फ	१० फ, ६ अग
१०३८	१ से	२३ मा, १६ से	१०७८	११ जुला	३० ज, २७ जुला
१०३९	२२ अग	१३ मा, ५ से	१०७९	१ जुला, २६ टि	२० ज
१०४०	१५ फ	—	१०८०	२० जू, १४ टि	५ जू, २६ न
१०४१	—	२० ज, १६ जुला	१०८१	३ टि	२५ से, १९ न
१०४२	२० जू	{ ९ ज, १६ जुला, २६ टि	१०८२	३० अप्रै	१४ से, ८ न
१०४३	८ जू, ४ टि	—	१०८३	१४ अक्टू	—
१०४४	२२ न	१४ से, ८ न	१०८४	२ अक्टू	२४ मा, १६ से
१०४५	१६ अप्रै, ११ न	३ से, २८ अक्टू	१०८५	—	१४ मा, ६ से
१०४६	६ अप्रै	२३ अप्रै १७ अक्टू	१०८६	१६ फ	३ मा, २७ अग
१०४७	२६ मा, २२ से	—	१०८७	१ अग	—
१०४८	१० से	३ मा, ६ अग	१०८८	२० जुला	{ ११ ज, ६ जुला, ३० टि
					२५ जू, २० टि

क्र. सं.	सं. सं.	वर्ष	क्र. सं.	सं. सं.	वर्ष
१०६०	२४ न	—	११३०	४ अक्टू.	—
१०६१	२१ मे	४ मे, ३० अक्टू.	११३१	३० मा	१५ मा, ८ मे
१०६२	८ मे	२४ अग्रे, १८ अक्टू.	११३२	१६ मा	३ मा, २८ अग
१०६३	२३ मे	१४ अग्रे, ७ अक्टू.	११३३	२ अग	२१ फ, १७ अग
१०६४	१८ मा	—	११३४	२७ ज, २३ ज	—
१०६५	—	२० मा, १८ अग	११३५	१६ ज	{ १ ज २० जू, २२ दि
१०६६	२२ जुला	११ फ, ६ अग	११३६	५ ज, १ ज	१५ ज, १० दि
१०६७	—	३० ज, २७ ज ना	११३७	२१ मे १५ न	५ जू
१०६८	{ ५ ज १ जुला, } २५ दि	११ दि	११३८	४ न	२६ अग्रे, २० अक्टू.
१०६९	—	५ ज, ३० न	११३९	—	१६ अग्रे, ६ अक्टू.
११००	११ मे	२५ मे, १८ न	११४०	२० मा	४ अग्रे, २८ मे
११०१	३० अग्रे, २४ अक्टू	—	११४१	१० मा, २ से	—
११०२	—	५ अग्रे, २८ मे	११४२	—	१२ फ, ८ अग
११०३	१० मा	२५ मा, १० मे	११४३	१२ अग	१ फ, २८ जुला
११०४	—	१३ मा, ६ मे	११४४	६ ज २६ दि	२० ज, १६ जुला
११०५	१६ फ	—	११४५	२२ जू	६ ज, १ दि
११०६	१ अग, २७ दि	२१ ज १७ जुला	११४६	११ ज, ६ न	२० मे, २० न
११०७	१६ दि	{ ११ ज ६ जुला ३१ दि	११४७	२६ अक्टू.	१७ मे, ६ न
११०८	११ जू	२५ जू	११४८	२० अग्रे, २४ अक्टू.	—
११०९	३१ मे	१८ मा, ६ न	११४९	६ अग्रे	२६ मा, १८ मे
१११०	२० मे, १५ अक्टू.	५ मे, २६ अक्टू.	११५०	२४ अग	१५ मा, ८ मे
११११	—	१५ अग्रे, १८ अक्टू.	११५१	१२ अग	४ मा, २८ अग
१११२	२६ मा, २२ मे	—	११५२	७ फ, २ अग	—
१११३	१८ मा	४ मा २८ अग	११५३	२६ ज	१२ ज, ७ जुला
१११४	२ अग	२१ फ, १८ अग	११५४	१२ जू	{ १ ज, १७ ज, २१ दि
१११५	२३ जुला	१० फ, ७ अग	११५५	१ जू, २६ न	१६ जू
१११६	—	२१ दि	११५६	२१ मे	० मे, ३० अक्टू.
१११७	—	१६ जू, ११ दि	११५७	११ अग्रे, ४ न	२६ अग्रे, १८ अक्टू.
१११८	२२ मे	५ जू, ३० न	११५८	—	१० अग्रे, ६ अक्टू.
१११९	११ मे	—	११५९	२१ मा	—
११२०	२४ अक्टू.	१५ अग्रे ८ अक्टू.	११६०	२ मे	१३ फ, १८ अग
११२१	२० मा, १३ अक्टू.	४ अग्रे, २८ मे	११६१	२८ ज	१२ फ, ७ अग
११२२	१० मा	२४ मा, १७ मे	११६२	१७ ज	१ फ, २० जुला
११२३	२२ अग	—	११६३	६ ज ३ जुला	१८ जू, १२ दि
११२४	११ अग	१ फ, २८ जुला	११६४	२१ जू, १६ न	६ जू, ३० न
११२५	६ ज, २६ दि	२१ ज, १७ जुला	११६५	—	२८ मे, १६ न
११२६	२० जू	११ ज ६ जुला	११६६	१ मे	—
११२७	११ जू	२० मे, २० न	११६७	२१ अग्रे	६ अग्रे, १० मे
११२८	३० मे, २५ अक्टू.	१६ मे, ८ न	११६८	४ अग्रे, ३ मे	२५ मा ११ मे
११२९	१५ अक्टू.	५ मे २६ अक्टू.	११६९	२४ अग	१४ मा, ८ मे
			११७०	—	—

फलोसन	सूर्यग्रहण	चंद्रग्रहण	३० मन्	सूर्यग्रहण	चंद्रग्रहण
११७१	—	२३ ज, १८ जुला	१२१२	२ मे	१७ मे, १० न
११७२	२७ ज, २३ जू	१३ ज	१२१३	२२ अप्रै	—
११७३	१२ जू	१ ज, २७ जू	१२१४	५ अक्टू	२७ मा, २० मे
११७४	१ जू, २६ न	१८ मे, १० न	१२१५	२ मा	१७ मा, ६ मे
११७५	१५ न	७ मे, ३१ अक्टू	१२१६	१८ फ	५ मा, २८ अक्टू
११७६	११ अप्रै	२५ अप्रै, १६ अक्टू	१२१७	७ फ, ४ अग	—
११७७	२३ से	—	१२१८	२४ जुला, १६ दि	१३ ज, ६ जुला
११७८	१३ से	४ मा, ३० अग	१२१९	—	{ २ ज, २८ जू, २ दि
११७९	८ फ, ३ से	२३ फ, १६ अग	१२२०	२ जू	—
११८०	२८ ज	१३ फ, ७ अग	१२२१	२३ मे	८ मे १ न
११८१	१७ ज, १३ जुला	२२ दि	१२२२	१२ मे, ६ अक्टू	२७ अप्रै, २२ अक्टू
११८२	२ जुला	१८ जू, ११ दि	१२२३	२६ से	१६ अप्रै, ११ अक्टू
११८३	१७ न	७ जू, १ दि	१२२४	२१ मा	—
११८४	५ न	—	१२२५	—	२४ फ, १६ अग
११८५	१ मे	१६ अप्रै, १० अक्टू	१२२६	२८ फ, २५ जुला	१४ फ, ६ अग
११८६	२१ अप्रै	५ अप्रै, ३० से	१२२७	१५ जुला	३ फ, ३० जुला
११८७	४ से	२६ मा, १६ मे	१२२८	३ जुला, २८ दि	१२ दि
११८८	२१ फ, ४ अग	—	१२२९	—	८ जू, २ दि
११८९	१७ फ	३ फ २६ जुला	१२३०	१४ मे	२८ मे, २२ न
११९०	६ फ, ४ जुला	२३ ज, १८ जुला	१२३१	३ मे, २६ अक्टू	—
११९१	२३ जू, १८ दि	१२ ज, ८ जुला	१२३२	१५ अक्टू	६ अप्रै, १ अक्टू
११९२	११ जू, ६ दि	२८ मे, २१ न	१२३३	५ अक्टू	२७ मा, २० से
११९३	—	१८ मे, १० न	१२३४	१ मा	१७ मा, ८ से
११९४	२२ अप्रै	७ मे, ३१ अक्टू	१२३५	१६ फ, १५ अग	—
११९५	१२ अप्रै, ५ अक्टू	—	१२३६	३ अग	२४ ज, २० जुला
११९६	—	१६ मा, ६ से	१२३७	१६ दि	१२ ज, ६ जुला
११९७	१३ से	५ मा, २६ अग	१२३८	८ दि	२ ज, २६ जू
११९८	७ फ	२३ फ, १८ अग	१२३९	३ ज	१२ न
११९९	२८ ज, २४ जुला	—	१२४०	२३ मे	७ मे, १ न
१२००	१२ जुला, ८ दि	{ ३ ज, २८ जू, २२ दि	१२४१	६ अक्टू	२७ अप्रै, २१ अक्टू
१२०१	२७ न	१८ जू, ११ दि	१२४२	२६ से	—
१२०२	२३ अप्रै	—	१२४३	२२ मा	८ मा, ३१ अग
१२०३	१२ मे	२७ अप्रै, २२ अक्टू	१२४४	१० मा, ५ अग	२५ फ, २६ अग
१२०४	१ मे	१६ अप्रै, १० अक्टू	१२४५	२५ जुला	१३ फ, ६ अग
१२०५	—	५ अप्रै २६ से	१२४६	१६ ज, १४ जुला	२४ दि
१२०६	११ मा, ४ से	—	१२४७	८ ज	१६ जू, १३ दि
१२०७	२८ फ	१४ फ, ६ अग	१२४८	२४ मे	७ जू, २ दि
१२०८	१४ जुला	३ फ, २६ जुला	१२४९	१४ मे, ६ न	२८ मे
१२०९	३ जुला, २८ दि	२२ ज, १८ ज ला	१२५०	—	१८ अप्रै, १२ अक्टू
१२१०	१७ दि	८ ज, २ दि	१२५१	१६ अक्टू	७ अप्रै, १ अक्टू
१२११	—	२६ मे, २२ न	१२५२	११ मा,	२७ मा, १८ से

क्र.सं	सूचक	व.सं
१२५३	१ मां, २५ अग	—
१२५४	१४ अग	४ फा, ३१ जुला
१२५५	१० ज, २० दि	२४ ज, २० जुला
१२५६	१८ दि	१३ ज, ८ जुला
१२५७	१३ ज	२३ न
१२५८	३ जू	१८ मे, १० न
१२५९	—	८ मे, १ न
१२६०	१२ अग्रे, ६ अक्टू	—
१२६१	१ अग्रे	१८ मां, १० से
१२६२	—	७ मां, ३१ अग
१२६३	५ अग	२४ फा, २० अग
१२६४	३० ज	—
१२६५	१६ ज	{ ३ ज, ३० जू, १२४ दि
१२६६	८ ज, ४ जू	१८ जू, १३ दि
१२६७	२५ से	८ जू
१२६८	१३ मे, ६ न	२८ अग्रे, २२ अक्टू
१२६९	—	१८ अग्रे, ११ अक्टू
१२७०	२७ मां	७ अग्रे, ३० से
१२७१	१२ मां, ६ से	—
१२७२	२५ अग	१५ फा, १० अग
१२७३	२० ज, १४ अग	३ फा, ३१ जुला
१२७४	—	२३ ज, २० जुला
१२७५	२५ जू	४ दि
१२७६	१३ जू	२६ मे, २३ न
१२७७	२८ अक्टू	१८ मे, १० न
१२७८	२३ अग्रे	८ मे
१२७९	१२ अग्रे	२८ मां, ११ से
१२८०	१ अग्रे	१८ मां, १० से
१२८१	१५ अग	७ मां ३१ अग
१२८२	५ अग	—
१२८३	३० ज	१४ ज, ११ जुला
१२८४	१६ ज १५ जू	{ ४ ज, २८ जू, ७४ दि
१२८५	४ जू, २८ न	१८ ज
१२८६	१० न	८ मे, २ न

क्र.सं	सूचक	व.सं
१२८७	७ न	२९ अग्रे, २२ अक्टू
१२८८	२ अग्रे	१८ अग्रे, ११ अक्टू
१२८९	२३ मां, १६ से	—
१२९०	५ से	२५ फा, २२ अग
१२९१	२५ अग	१४ फा, ११ अग
१२९२	२१ ज	४ फा, ३० जुला
१२९३	६ ज, ५ जुला	१५ दि
१२९४	२५ जू	६ जू ४ दि
१२९५	८ न	३० मे, २३ न
१२९६	२८ अक्टू	१८ मे
१२९७	२३ अग्रे	६ अग्रे, २ अक्टू
१२९८	१२ अग्रे	२६ मां, २१ से
१२९९	२७ अग	१८ मां, ११ से
१३००	२१ फा, १५ अग	—
१३०१	६ फा	२५ ज, २१ जुला
१३०२	२६ जू	१४ ज, १० जुला
१३०३	१५ जू, ६ दि	४ ज, २६ जू,
१३०४	४ जू, २८ न	२० मे, १३ न
१३०५	१७ न	६ मे, २ न
१३०६	१३ अग्रे	२६ अग्रे २२ अक्टू
१३०७	३ अग	—
१३०८	१५ से	८ मां, १ से
१३०९	११ फा	२५ फा, २१ अग
१३१०	३१ ज	१४ फा, ११ अग
१३११	२० ज, १६ जुला	२६ दि
१३१२	५ जुला	१९ जू, १४ दि
१३१३	—	६ जू, ३ दि
१३१४	१५ मे, ८ न	३० मे
१३१५	४ मे	२० अग्रे, १३ अक्टू
१३१६	२२ अग्रे	८ अग्रे, २ अक्टू
१३१७	६ से	२८ मां, २१ से
१३१८	३ मां	—
१३१९	२१ फा	५ फा, १ अग
१३२०	१० फा, ६ जुला	२६ ज, २० जुला
१३२१	२६ जू	१४ ज, १० जुला
१३२२	१५ जू, ६ दि	२४ न

क्र० सन्	सूर्यग्रहण	चन्द्रग्रहण	क्र० सन्	सूर्यग्रहण	चन्द्रग्रहण
१३२३	२८ न	२१ से, १३ न	१३५६	२८ जुला	१६ फ, ११ अग
१३२४	२४ अप्रे	८ से, १ न	१३५७	१७ जुला	१५ फ, २१ जुला
१३२५	१३ अप्रे, ७ अक्ट	—	१३५८	{ १० ज, ७ जुला, } { ३१ दि }	१६ दि
१३२६	२६ से	१८ मा, १२ से	१३५९	—	११ जू, ५ दि
१३२७	१६ से	८ मा, २ से	१३६०	१५ से	३१ से, २३ न
१३२८	—	२५ फ, २१ अग	१३६१	५ से	२० से
१३२९	२७ जुला	—	१३६२	१८ अक्टो	४ अक्टो
१३३०	१६ जुला	{ ५ ज, १ जुला } { २६ दि }	१३६३	—	७० मा, २३ से
१३३१	३० न	२० जू, १५ दि	१३६४	४ मा	१८ मा, १२ से
१३३२	२५ से	८ जू	१३६५	२१ फ	—
१३३३	१४ से	३० अप्रे, २३ अक्टो	१३६६	७ अग	२७ ज, २२ जुला
१३३४	४ से	१६ अप्रे, १३ अक्टो	१३६७	२७ जुला, २२ दि	१६ ज, १२ जुला
१३३५	—	८ अप्रे, ३ अक्टो	१३६८	१० दि	५ ज, १ जुला
१३३६	६ से	—	१३६९	५ जू	१४ न
१३३७	३ मा	१५ फ, १२ अग,	१३७०	२५ से	११ से, ४ न
१३३८	२० फ, १८ जुला	५ फ, १ अग	१३७१	६ अक्टू	३० अप्रे, २४ अक्टू
१३३९	७ जुला, २१ दि	२६ ज, २१ जुला	१३७२	४ अप्रे, २७ से	—
१३४०	—	४ दि	१३७३	२४ मा, १७ से	६ मा, २ से
१३४१	६ दि	३१ से, २३ न	१३७४	१४ मा, ८ अग	२८ फ, २२ अग
१३४२	५ से	२१ से, १३ न	१३७५	२६ जुला	१६ फ, १२ अग
१३४३	२५ अप्रे, १९ अक्टू	—	१३७६	१७ जुला	२६ दि
१३४४	७ अक्टो	२८ मा, २३ से	१३७७	१० ज, ३१ दि	२२ जू, १५ दि
१३४५	२६ से	१८ मा, १२ से	१३७८	२७ से	११ जू, ४ दि
१३४६	२२ फ	८ मा, १ से	१३७९	१६ से	३१ से, २४ न
१३४७	११ फ, ७ अग	—	१३८०	५ से	१४ अक्टू
१३४८	२६ जुला	१७ ज, ११ जुला	१३८१	१८ अक्टू	६ अप्रे, ४ अक्टू
१३४९	१० दि	{ ५ ज, १ जुला, } { २५ दि }	१३८२	—	२६ मा, २३ से
१३५०	३० न	२० जू	१३८३	२८ अग	—
१३५१	—	४ न	१३८४	१७ अग	७ फ, २ अग
१३५२	१४ से	३० अप्रे, २३ अक्टू	१३८५	६ अग	२७ ज, २२ जुला
१३५३	२८ से	१९ अप्रे, १३ अक्टू	१३८६	१ ज, २२ दि	१६ ज, १२ जुला
१३५४	२५ मा, १७ से	—	१३८७	१६ जू	२५ न
१३५५	१४ मा, ६ से	१७ फ, २३ अग	१३८८	५ जू	२१ से, १४ न
			१३८९	—	१० से, ४ न
			१३९०	६ अक्टू	२६ अप्रे

क्र० सं०	सं० सं०	व्यवस्था	व्यवस्था	क्र० सं०	सं० सं०	व्यवस्था
१३२१	५ अग्रे	२० मा	१४२४	२६ जू	१२ जू, ६ दि	
१३२२	२५ मा	६ मा, २ से	१४२५	१० न	१ जू, २५ न	
१३२३	८ अग	२७ फ, २२ अग	१४२६	७ म	२१ म	
१३२४	२८ जुला	—	१४२७	२० अक्टू	११ अग्रे	
१३२५	—	{ ६ ज, ३ जुला, २६ दि	१४२८	१४ अग्रे	३१ मा, २३ से	
१३२६	११ ज ६ जू	२१ जू १५ दि	१४२९	१० अग	२० मा, १३ से	
१३२७	२५ म	११ ज, ४ दि	१४३०	१६ अग,	० से	
१३२८	१६ म, ६ न	२६ अक्टू	१४३१	१२ फ, ८ अग	२४ जुला	
१३२९	२८ अक्टू	२० अग्रे, १५ अक्टू	१४३२	२ फ, २७ जू	१० ज, १३ जुला	
१४००	२६ मा	६ अग्रे, ३ अक्टू	१४३३	१७ ज	{ ६ ज, २ जुला २६ दि	
१४०१	१५ मा, ८ से	३० मा	१४३४	७ जू, ३० न	१६ न	
१४०२	४ मा	१३ अग	१४३५	२० न	१२ से, ६ न	
१४०३	१८ अग	७ फ, २ अग	१४३६	१६ अग्रे	३० अग्रे, २५ अक्टू	
१४०४	—	२७ ज, २२ जुला	१४३७	५ अग्रे, ३० से	२० अग्रे, १४ अक्टू	
१४०५	१ ज, २६ जू	६ दि	१४३८	१६ से	११ मा, ३ से	
१४०६	१६ जू	२ जू, २५ न	१४३९	८ से	१ मा, २४ अग	
१४०७	३१ अक्टू	२२ से, १५ न	१४४०	३ फ,	१८ फ, १३ अग	
१४०८	२६ अग्रे, १८ अक्टू	१० म	१४४१	२३ ज, १८ जुला	२७ दि	
१४०९	१५ अग्रे, ६ अक्टू	३१ मा	१४४२	७ जुला	२३ जू, १७ दि	
१४१०	४ अग्रे	२१ मा, १३ से	१४४३	२७ जू	१२ जू, ७ दि	
१४११	१६ अग	१० मा, २ से	१४४४	१० न	३१ से	
१४१२	१० फ, ७ अग	२२ अग	१४४५	७ म	—	
१४१३	१ फ	१७ ज, १३ जुला	१४४६	२६ अग्रे	११ अग्रे, ५ अक्टू	
१४१४	१७ जू	{ ६ ज, ३ जुला २६ दि	१४४७	१० से	१ अग्रे, २४ से	
१४१५	७ जू	२२ जू, १६ दि	१४४८	५ मा, २५ अग	१२ से	
१४१६	२७ से, १६ न	५ न	१४४९	१८ अग	४ अग	
१४१७	—	१ से, २५ अक्टू	१४५०	१२ फ,	२८ फ, २४ जुला	
१४१८	६ अग्रे	१० अग्रे, १४ अक्टू	१४५१	२८ जू	१७ ज, १३ जुला	
१४१९	२६ मा	१० अग्रे,	१४५२	१७ जू ११ दि	७ ज, २० न	
१४२०	१४ मा, ८ से	२५ फ, २३ अग	१४५३	३० न	२२ से, १६ न	
१४२१	२८ अग	१७ फ, १३ अग	१४५४	२७ अग्रे	१२ से, ५ न	
१४२२	२३ ज	६ फ, २ अग	१४५५	१० अग्रे, ११ अग	१ से, २५ अग	
१४२३	८ जुला	१७ दि	१४५६	५ अग्रे	२० मा	
			१४ ७	१८ से	११ मा, ३ से	

श्लोकन	सूर्यग्रहण	चंद्रग्रहण	श्लोकन	सूर्यग्रहण	चंद्रग्रहण
१४५८	—	२८ फा, २४ अग	१४६१	८ न	२३ फा, १६ न
१४५९	३ फा, २९ जुला	—	१४६२	२६ अप्रै, २१ अक्टू	—
१४६०	१८ जुला	१८ ज, ३ जुला, १२८ दि	१४६३	१० अक्टू	२ अप्रै, २५ मे
१४६१	७ जुला, २ दि	२२ जू, १७ दि	१४६४	७ मा	२२ मा, १५ मे
१४६२	२१ न	१२ जू	१४६५	२५ फा, २० अग	११ मा, ४ मे
१४६३	१८ मे, ११ न	—	१४६६	१४ फा, ८ अग	३ ज, २५ जुला
१४६४	६ मे	२२ अप्रै, १५ अक्टू	१४६७	२९ जुला	१८ ज, १४ जुला
१४६५	२० मे	११ अप्रै. ४ अक्टू	१४६८	१३ दि	८ ज, ३ जुला
१४६६	१६ मा	२४ मे	१४६९	८ जू	—
१४६७	६ मा	१५ अग	१५००	२८ मे	१३ मे, ६ न
१४६८	—	८ फा, ४ अग	१५०१	१२ अक्टू	३ मे, २६ अक्टू
१४६९	१ जुला	२७ ज, २४ जुला	१५०२	७ अप्रै, १ अक्टू	२२ अप्रै, १५ अक्टू
१४७०	२१ जू, २२ दि	१७ ज, ८ दि	१५०३	२७ मा, २० मे	६ मे
१४७१	—	३ जू, २७ न	१५०४	१६ मा	१ मा, २५ अग
१४७२	८ मे	२२ मे, १५ न	१५०५	३० जुला	१८ फा, १४ अग
१४७३	२७ अप्रै	१२ मे, ४ न	१५०६	२० जुला	८ फा
१४७४	१६ अप्रै, ११ अक्टू	—	१५०७	१३ ज	२४ जून १६ दि
१४७५	३० मे	२२ मा, १५ मे	१५०८	२ ज, २६ मे	१३ जून, ७ दि
१४७६	२५ फा	१० मा, ३ मे	१५०९	१८ मं	२ जून, २६ न
१४७७	८ अग	—	१५१०	८ मे	—
१४७८	२६ जुला	१८ ज, १५ जुला,	१५११	—	१३ अप्रै, ६ अक्टू
१४७९	१६ जुला, १३ दि	{ ८ ज, ४ जुला २६ दि	१५१२	१७ मा	१ अप्रै, २५ मे
१४८०	—	२२ जू	१५१३	७ मा	३० ज, २५ जुला
१४८१	२८ मे	—	१५१४	२० अग	८ फा
१४८२	१७ म	३ मे, २६ अक्टू	१५१५	६ अग	३० ज, २५ जुला
१४८३	२ अक्टू	२२ अप्रै, १६ अक्टू	१५१६	४ ज, २३ दि	१८ ज, १३ जुला
१४८४	२० मे	४ अक्टू	१५१७	१८ जू	—
१४८५	१६ मा, ८ मे	२५ अग	१५१८	८ जू	२४ मे, १७ न
१४८६	६ मा	१८ फा, १५ अग	१५१९	२८ मे,	१४ मे, ६ न
१४८७	२० जुला	८ फा, ४ अग	१५२०	११ अक्टू	२ मे, २६ अक्टू
१४८८	८ जुला	२८ ज	१५२१	७ अप्रै	—
१४८९	१ ज २२ दि	१७ जू, ८ दि	१५२२	२७ मा	१२ मा, ५ मे
१४९०	—	२ जू, २७ न	१५२३	११ अग	१ मा, २६ अग
			१५२४	३० जुला	१८ फा
			१५२५	२३ ज,	४ जुला, २६ दि

क्र० नम्	व्यवस्था	व्यवस्था
१२२६	१३ ज	२४ जू, १८ दि
१५२७	३० मे	१४ जू, ७ दि
१५२८	१८ मे, १२ न	—
१५२९	१ न	२३ अग्रे, १० अक्टू.
१६३०	२६ मा	१२ अग्रे, ६ अक्टू.
१५३१	—	१ अग्रे, २६ मे
१५३२	३० अग	—
१५३३	१० अग	६ फ, ४ अग
१५३४	१४ ज	३० ज, २५ जुला
१५३५	३ ज, ३० जू	—
१५३६	१८ जू	४ जू, २७ न
१६३७	७ जू	२४ मे, १० न
१५३८	२३ अक्टू.	१४ मे, ६ न
१५३९	१८ अग्रे, १२ अक्टू.	—
१५४०	७ अग्रे	२२ मा, १६ मे
१५४१	२१ अग	१० मा, ४ मे
१५४२	११ अग	१ मा, २५ अग
१५४३	३ फ	१६ जुला
१५४४	२४ ज	{ १० ज, ४ जुला, २६ दि
१५४५	६ जू	२४ जू, १८ दि
१५४६	२९ मे, २३ न	—
१५४७	१२ न	४ मे, २८ अक्टू.
१५४८	८ अग्रे	२२ अग्रे, १० अक्टू.
१५४९	२६ मा	१२ अग्रे, ६ अक्टू.
१५५०	१८ मा	—
१५५१	३१ अग	२० फ, १६ अग
१५५२	—	१० फ, ४ अग
१५५३	१४ ज	२५ जुला
१५५४	२८ जू	१५ जू, ६ दि
१५५५	११ जू, १४ न	५ जू, २८ न
१५५६	२ न	२४ मे, १० न
१५५७	२८ अग्रे, २२ अक्टू.	—
१५५८	१८ अग्रे	२ अग्रे, २७ मे
१५५९	—	२० मा, १६ मे

क्र० नम्	व्यवस्था	व्यवस्था
१५६०	२१ अग	१२ मा, ४ मे
१५६१	१४ फ, ११ अग	२६ जुला
१५६२	—	२० जू, १६ जुला
१५६३	२० जू	{ ६ ज ५ जुला, २८ दि
१५६४	८ जू	—
१५६५	—	१५ मे, ८ न
१५६६	१६ अग्रे	४ मे, २८ अक्टू.
१५६७	८ अग्रे	२० अग्रे, १८ अक्टू.
१५६८	२८ मा, २१ मे	—
१५६९	—	३ मा, २६ अग
१५७०	५ फ	२० फ, १५ अग
१५७१	२५ ज, २२ जुला	१० फ, ५ अग
१५७२	१५ ज, १० जुला	२५ जू, १८ दि
१५७३	२६ जू २४ न	१५ जू, ८ दि
१५७४	१३ न	४ जू, २८ न
१५७५	१० मे	—
१५७६	२८ अग्रे	१३ अग्रे, ७ अक्टू.
१५७७	१२ मे	२ अग्रे, २७ मे
१५७८	—	२३ मा, १६ मे
१५७९	२५ फ, २२ अग	—
१५८०	१५ फ	३१ ज, २६ जुला
१५८१	३० जू	१६ ज, १६ जुला
१५८२	२० जू, २५ दि	८ ज
१५८३	१४ दि	५ जू, २६ न
१५८४	१० मे	२४ मे, १८ न
१५८५	२८ अग्रे	१३ मे, ७ न
१५८६	११ अग्रे, १२ अक्टू.	—
१५८७	२ अक्टू.	२४ मा, १६ मे
१५८८	२६ फ,	१३ मा, ५ मे
१५८९	१५ फ, ११ अक्टू.	२ मा, २५ अग
१५९०	४ फ, ११ जुला	१७ जुला
१५९१	२० जुला, १५ दि	{ १ ज, १ जुला १० दि
१५९२	३ दि	२५ जू, १८ दि

क्र० सन्	सूर्यग्रहण	चन्द्रग्रहण
१५६३	३० मे, २३ न	—
१५६४	२० मे	४ मे, २६ अक्टू
१५६५	३ अक्टू	२४ अप्रै, १८ अक्टू
१५६६	२२ से	१२ अप्रै, ६ अक्टू
१५६७	१७ मा	—
१५६८	७ मा	२१ फा, १६ अग
१५६९	२२ जुला	१० फा, ६ अग
१६००	१० जुला	३० ज
१६०१	{ ४ ज, ३० जू }	{ १५ जू, ८ दि }
१६०२	२१ मे	४ जू, २६ न
१६०३	११ मे	२४ मे, १४ न
१६०४	२६ अप्रै,	—
१६०५	१२ अक्टू	३ अप्रै, २७ से
१६०६	—	२४ मा, १६ से
१६०७	२६ फा	१३ मा, ६ से
१६०८	१० अग	२७ जुला
१६०९	३० जुला, २६ दि	२० ज, १६ जुला
१६१०	१५ दि	{ ६ ज, ६ जुला }
		{ ३० दि }
१६११	४ दि	—
१६१२	३० मे	१४ मे, ८ न
१६१३	—	४ मे, २५ अक्टू
१६१४	३ अक्टू	२४ अप्रै, १७ अक्टू
१६१५	२८ मा, २२ से	—
१६१६	—	३ मा, २७ अग
१६१७	१ अग	२० फा, १६ अग
१६१८	—	६ फा, ६ अग
१६१९	११ जुला	२६ जू, २१ दि
१६२०	३१ मे	१५ जू, ९ दि
१६२१	२१ मे	४ जू, २८ दि
१६२२	१० मे, ३ न	—
१६२३	—	१५ अप्रै, ८ अक्टू
१६२४	१८ मा	३ अप्रै, २६ से
१६२५	—	२४ मा, १६ से
१६२६	२६ फा, २१ अग	७ अग

क्र० सन्	सूर्यग्रहण	चन्द्रग्रहण
१६२७	११ अग	३१ ज, २८ जुला
१६२८	६ ज, २५ दि	२० ज, १६ जुला
१६२९	२१ जू, १४ दि	६ ज
१६३०	१० जू	२६ मे, १६ न
१६३१	३१ मे, २५ अक्टू	१५ मे, ८ न
१६३२	—	४ मे २७ अक्टू
१६३३	८ अप्रै, ३ अक्टू	—
१६३४	२६ मा	१४ मा, ७ से
१६३५	१२ अग	३ मा, २८ अग
१६३६	१ अग	२० फा, १६ अग
१६३७	२६ ज	७ जुला, ३१ दि
१६३८	१५ ज	२६ ज, २१ दि
१६३९	१ जू	१५ जू, १० दि
१६४०	—	—
१६४१	३ न	२६ अप्रै, १८ अक्टू
१६४२	३० मा	१५ अप्रै, ८ अक्टू
१६४३	२० मा	४ अप्रै, २७ से
१६४४	१ से	—
१६४५	२१ अग	१० फा, ७ अग
१६४६	१७ ज	३१ ज, २७ जुला
१६४७	{ ५ ज, २ जुला }	{ २० ज }
	{ २६ दि }	
१६४८	२१ जू	५ जू, ३० न
१६४९	१० जू, ४ न	२६ मे, १६ न
१६५०	२५ अक्टू	१५ से, ८ न
१६५१	—	—
१६५२	८ अप्रै	२५ मा, १७
१६५३	२८ मा	१४ मा, ७ से
१६५४	१२ अग	३ मा, २७ अग
१६५५	६ फा, २ अग	—
१६५६	२६ ज	{ ११ ज, १६ जुला, }
		{ ३१ दि }
१६५७	११ जू	२५ जू, २० दि
१६५८	— १ जू, २४ न	—
१६५९	१४ न	६ मे, ३० अक्टू
१६६०	३ न	२५ अप्रै, २८ अक्टू

क्र०सं	व्यवस्था	२० शुद्ध	श्लो सं	संख्या	व्यवस्था
१६६१	३० मा	४ अग्ने, ८ अक्ठू	१६६६	—	१६ सो, ६ न
१६६२	२० मा, १२ से	—	१६६७	२१ अग्ने	६ सो, २८ अक्ठू
१६६३	—	२२ फ, १८ अग	१६६८	४ अक्ठू	—
१६६४	२८ ज, २१ अग	११ फ, ६ अग	१६६९	२३ से	१५ मा, ६ से
१६६५	१६ ज	३१ ज, २६ जुला	१७००	१८ फ	५ मा, २६ अग
१६६६	५ ज, २ जुला	६ जू, ११ दि	१७०१	७ फ, ४ अग	२२ फ, १८ अग
१६६७	२१ जू	६ जू, १० न	१७०२	२४ जुला	—
१६६८	४ न	१६ सो, १८ न	१७०३	१४ जुला, ८ दि	{ ३ ज, २६ जू, २३ दि
१६६९	३० अग्ने	—	१७०४	२७ दि	१० जू, ११ दि
१६७०	१६ अग्ने	५ अग्ने, २६ से	१७०५	—	—
१६७१	३ से	२५ मा, १८ से	१७०६	१२ सो	२८ अग्ने, २१ अक्ठू
१६७२	२० अग	१३ मा, ७ से	१७०७	२ सो	१७ अग्ने, ११ अक्ठू
१६७३	१२ अग	—	१७०८	१४ से	५ अग्ने, २६ से
१६७४	—	२२ ज, १७ जुला	१७०९	११ सो, ४ से	—
१६७५	२३ जू	११ ज ७ जुला	१७१०	२८ फ	१३ फ, ६ अग
१६७६	११ जू ५ दि	१ ज, २१ जू	१७११	१५ जुला	३ फ, २६ जुला
१६७७	२४ न	१७ सो, ६ न	१७१२	३ जुला, २८ दि	२३ ज, १८ जुला
१६७८	२१ अग्ने, १४ न	६ सो, २६ अक्ठू	१७१३	१७ दि	८ जू, २ दि
१६७९	११ अग्ने	२५ अग्ने, २६ अक्ठू	१७१४	७ दि	२६ सो, २१ न
१६८०	३० मा	—	१७१५	३ से	१८ सो, ११ न
१६८१	१२ से	४ मा, २८ अग	१७१६	२२ अग्ने, १५ अक्ठू	—
१६८२	१ से	२१ फ, १८ अग	१७१७	—	२७ मा, २० से
१६८३	२७ ज, २४ जुला	११ फ, ७ अग	१७१८	२ मा २४ से	१६ मा, ६ से
१६८४	१२ जुला	२७ ज, २१ दि	१७१९	१८ फ	६ मा, २८ अग
१६८५	१ जू	१६ जू, १० दि	१७२०	८ फ, ४ अग	—
१६८६	—	६ जू, २६ न	१७२१	२४ जुला, १६ दि	१३ ज, ८ जुला
१६८७	११ सो, ५ न	—	१७२२	८ दि	{ २ ज, २६ जू, १६ दि
१६८८	३० अग्ने	१५ अग्ने, ० अक्ठू	१७२३	३ न	—
१६८९	१३ से	४ अग्ने २६ से	१७२४	२२ सो	८ सो, १ न
१६९०	३ से	२४ मा, १८ से	१७२५	१२ सो, ६ अक्ठू	२७ अग्ने, २१ अक्ठू
१६९१	२८ फ	२ फ, २८ जुला	१७२६	२५ से	१६ अग्ने, ११ अक्ठू
१६९२	१७ फ	२२ ज, १७ जुला	१७२७	१५ से	—
१६९३	१ जुला	११ ज ७ ज मा	१७२८	—	२५ फ, १३ अग
१६९४	२२ जू, १६ दि	२८ सो, २० न			

क्रमांक	मूल्य	वस्तु	दि०सन्	मूल्य	वस्तु
१०२६	२६ जुला	१३ फा, ६ अग	१७६३	१३ अप्रे, ७ अकट्ट	—
१०२७	१५ जुला	३ फा, २६ जुला	१७६४	१ अप्रे	१८ मा, १० से
१०२८	१८ ज, ४ जुला, १२६ टि	२० ज, १३ दि	१७६५	१६ अग	७ मा, ३० अग
१०२९	१० टि	८ ज, १ दि	१७६६	५ अग	२४ फा, २० अग
१०३०	१० से	२८ से, २१ न	१७६७	३० ज	—
१०३१	३ से	—	१७६८	—	४ ज, २३ दि
१०३२	१६ अकट्ट	७ अप्रे, २ अकट्ट	१७६९	८ ज, ४ जू	१६ ज, १३ दि
१०३३	४ अकट्ट	२६ मा २० से	१७७०	२५ से, १७ न	—
१०३४	१ मा	१६ मा, ६ से	१७७१	—	२८ अप्रे, २३ अकट्ट
१०३५	१५ अग	—	१७७२	३ अप्रे, २६ अकट्ट	१७ अप्रे, ११ अकट्ट
१०३६	४ अग, ३० दि	२४ ज, २० जुला	१७७३	२३ मा	७ अप्रे, ३० से
१०३७	१८ दि	१३ ज, ६ जुला	१७७४	१२ मा, ६ से	—
१०३८	१३ ज, ८ दि	१ ज	१७७५	२६ अग	१५ फा, ११ अग
१०३९	३ ज	१६ से, १२ न	१७७६	२१ ज,	२४ फा, ३१ जुला
१०४०	२३ से, १७ अकट्ट	८ से, ७ न	१७७७	६ ज, ५ जुला	२३ ज २० जुला
१०४१	८ अकट्ट	२६ अप्रे, २१ अकट्ट	१७७८	१० जू, ४ दि	—
१०४२	२ अप्रे	—	१७७९	१४ जू, ८ न	३० से, २३ न
१०४३	२२ मा	७ मा, ३० अग	१७८०	२७ अकट्ट	१८ से, १२ न
१०४४	११ मा, ६ अग	२५ फा, २० अग	१७८१	२३ अप्रे, १७ अकट्ट	—
१०४५	२५ जुला	१४ फा, ८ अग	१७८२	१२ अप्रे	२३ मा, २१ से
१०४६	१४ जुला	३० ज, २३ दि	१७८३	—	१८ मा, १० से
१०४७	८ ज	१२ जू, १३ दि	२७८४	१६ अग	७ मा, ३० अग
१०४८	२५ से	६ जू, २ दि	१७८५	६ फा, ५ अग	—
१०४९	१३ से, ६ न	—	१७८६	२५ अकट्ट	१४ ज, ११ जुला
१०५०	२६ अकट्ट	१७ अप्रे, १२ अकट्ट	१७८७	३ ज, ३० जू	२४ दि
१०५१	२३ मा, १६ अकट्ट	७ अप्रे, १ अकट्ट	१७८८	४ जू	—
१०५२	१२ मा	२८ मा, २० से	१७८९	१७ न	१६ से, ३ न
१०५३	१ मा	—	१७९०	—	२६ अप्रे, २३ अकट्ट
१०५४	२४ अग	४ फा, ३० जुला	१७९१	३ अप्रे	१८ अप्रे, १२ अकट्ट
१०५५	३० टि	२४ ज, २० जुला	१७९२	१६ से	—
१०५६	२५ दि	१३ फा, १० जुला	१७९३	५ से	२५ फा, २१ अग
१०५७	१३ ज	२८ से २२ न	२७९४	३१ ज	१४ फा, ११ अग
१०५८	३ ज	२८ से, १२ न	१७९५	२१ ज, १६ जुला	४ फा, ३१ जुला
१०५९	१७ अकट्ट	८ से, १ न	१७९६	१० ज, ४ जुला	१४ दि

क्र० सं०	व्यय	वृत्त	क्र० सं०	व्यय	वृत्त
१०२७	२४ जू	८ जू, ४ दि	१०३०	२७ जुना	—
१०२८	८ न	२८ मे, २३ न	१०३३	१७ जुना	{ ६ ज, २ जुना, २६ दि
१०२९	—	—	—	—	२१ जू, १६ दि
१०३०	२४ अग्रे	१ अग्रे, २ अक्टू	१०३४	—	२७ मे, २० न
१०३१	१३ अग्रे, ८ मे	३० मा, २२ मे	१०३५	१५ मे	१० जू
१०३२	२८ अग	१८ मा, २१ मे	१०३६	४ मे	१ मे, २४ अक्टू
१०३३	१३ अग	—	१०३७	—	२० अग्रे, १३ अक्टू
१०३४	११ फ	२६ ज २० जुना	१०३८	—	१० अग्रे ३ अक्टू
१०३५	२६ जू	१५ ज, ११ जुना	१०३९	१५ मा, ७ से	—
१०३६	१६ जू १० दि	५ ज, १० जू	१०४०	४ मा	१७ फ, १३ अग
१०३७	६ जू, २६ न	२१ मे, ५ न	१०४१	२१ फ, १८ जुना	६ फ, २ अग
१०३८	१८ न	१० मे, ३ न	१०४२	८ जुना	२८ ज २२ जुना
१०३९	—	३० अग्रे २३ अक्टू	१०४३	२१ दि	१० जू, ७ दि
१०४०	४ अग	—	१०४४	—	३१ मे, २५ न
१०४१	—	१० मा, २ से	१०४५	६ मे	२१ मे, १४ न
१०४२	—	२७ फ, २२ अग	१०४६	२५ अग्रे, २० अक्टू	—
१०४३	१ फ,	१५ फ, २० अग	१०४७	३ अक्टू	३१ मा, २४ से
१०४४	२१ ज, १७ जुना	२६ दि	१०४८	२० से	१६ मा, १३ मे
१०४५	७ जुना	२१ जू, १६ दि	१०४९	२३ फ	६ मा, २ मे
१०४६	१६ न	१० अग्रे, ४ दि	१०५०	१२ फ, ७ अग	—
१०४७	१६ मे, ० न	३० मे	१०५१	२८ जुना	१० ज, १३ जुना
१०४८	५ मे,	२१ अग्रे, १४ अक्टू	१०५२	११ दि	{ ७ ज, १ जुना २६ दि
१०४९	२६ अग्रे, १६ से	१० अग्रे, ३ अक्टू	१०५३	—	२१ जू
१०५०	७ से	२८ मा, २२ मे	१०५४	—	१२ मे ४ न
१०५१	४ मा	—	१०५५	१६ मे	२ मे, २५ अक्टू
१०५२	—	६ फ, ३ अग	१०५६	२८ मे	२० अग्रे, १३ अक्टू
१०५३	११ फ, ८ जुना	२६ ज, २३ जुना	१०५७	१८ मे	—
१०५४	२६ ज, २० दि	१६ ज, ११ जुना	१०५८	१५ मा	२७ फ, २४ अग
१०५५	१६ जू	१ जू, २५ न	१०५९	२६ जुना	१७ फ, १३ अग
१०५६	२८ न	११ मे, १४ न	१०६०	१८ जुना	७ फ, १ अग
१०५७	२६ अग्रे	११ मे, ३ न	१०६१	{ ११ ज, ८ जुना, ३१ दि }	१० दि
१०५८	१४ अग्रे, ६ अक्टू	—	१०६२	२१ दि	१२ जू, ६ दि
१०५९	२८ मे	२० मा १३ मे	१०६३	१७ मे	२ जू २५ न
१०६०	२३ फ	६ मा, २ मे	१०६४	१६ अक्टू, १ मे	—
१०६१	—	२६ फ, २३ अग			

शंखन	सूर्यग्रहण	चंद्रग्रहण	ईस्वी मन्	सूर्यग्रहण	चन्द्रग्रहण
१८६५	१८ अक्टू	११ अप्रे, ४ अक्टू	१८६६	११ ज, ८ जू	२३ जू, १७ दि
१८६६	१६ मा, ८ अक्टू	३१ मा, २४ से	१८००	२८ मे, २२ न	१३ जू
१८६७	६ मा	२० मा, १४ से	१८०१	१८ मे, ११ न	३ मे, २७ अक्टू
१८६८	२३ फ, १८ अग	—	१८०२	३ अक्टू	२२ अप्रे, १७ अक्टू
१८६९	७ अग	२८ ज, २३ जुला	१८०३	२६ मा, २१ से	११ अप्रे, ६ अक्टू
१८७०	२२ दि	१७ ज, १२ जुला	१८०४	१७ मा	—
१८७१	१८ जू, १२ दि	६ ज, २ जुला	१८०५	३० अग	१८ फ, १५ अग
१८७२	६ जू	२२ मे, १५ न	१८०६	२० अग	६ फ, ४ अग
१८७३	२६ मे	१२ मे, ४ न	१८०७	१४ ज	२६ ज, २५ जुला
१८७४	१० अक्टू	१ मे, २५ अक्टू	१८०८	२७ जू, २३ दि	७ दि
१८७५	६ अप्रे, २८ से	—	१९०६	१७ जू	४ जू, २७ न
१८७६	—	१० मा, ३ से	१९१०	२ न	२४ म, १७ न
१८७७	१५ मा, ६ अग	२७ फ, २३ अग	१८११	२२ अक्टू	—
१८७८	२६ जुला	१७ फ, १३ अग	१९१२	१७ अप्रे, १० अक्टू	१ अप्रे, २६ से
१८७९	२२ जुला, १६ जुला	२८ दि	१९१३	—	२२ मा, १५ से
१८८०	१५ ज, ३१ दि	२२ जू, १६ दि	१९१४	२१ अग	११ मा, ४ से
१८८१	२८ मे	१२ जू, ५ दि	१९१५	१४ फ, १० अग	—
१८८२	१७ मे, ११ न	—	१८१६	३ फ,	१८ ज, १५ जुला
१८८३	३१ अक्टू	२२ अप्रे, १६ अक्टू	१९१७	२३ ज, १६ ज	{ ८ ज, ४ जुला २८ दि
१८८४	२७ मा, १६ अक्टू	१० अप्रे, ४ अक्टू	१८१८	८ जू, ३ दि	२४ जू
१८८५	—	३० मा, २४ से	१९१९	२६ मे, २२ न	८ न
१८८६	२६ अग	—	१९२०	३० न	३ मे, २७ अक्टू
१८८७	१६ अग	८ फ, ३ अग	१९२१	८ अप्रे, १ अक्टू	२२ अप्रे, १६ अक्टू
१८८८	—	२६ ज, २३ जुला	१९२२	२८ मा	—
१८८९	२२ दि	१७ ज, १२ जुला	१८२३	१७ मा, १० से	३ मा, २६ अग
१८९०	१७ ज	३ जू, २६ न	१९२४	३० अग	२० फ, १४ अग
१८९१	६ जू	२३ मे, १६ न	१९२५	२४ ज	८ फ, ४ अग
१८९२	—	११ मे, ४ न	१९२६	१४ ज, ८ जुला	१८ दि
१८९३	१६ अप्रे	—	१९२७	२६ जू	१५ जू, ८ दि
१८९४	६ अप्रे, २६ दि	२१ मा, १५ से	१९२८	११ मे, १२ न	३ जू, २७ न
१८९५	२६ मा, २० अग	११ मा, ४ से	१८२९	८ मे, १ न	२३ मे
१८९६	८ अग	२८ फ, २३ अग	१९३०	—	१३ अप्रे, ७ अक्टू
१८९७	—	—	१९३१	१७ अप्रे	२ अप्रे, २६ से
१८९८	२२ ज,	{ ८ ज, ३ जुला, २७ दि	१८३२	—	२२ मा, १४, से

क्र.सं.	व्य.सं.	व्य.सं.	व्य.सं.	व्य.सं.	व्य.सं.
१६३३	२४ फ, २१ अग	—	१६६७	६ मे	२४ अग, ११ अक्टू
१६३४	१४, फ, १० अग	३० ज, २६ जुला	१६६८	—	{ १३ अग, २२ से ६ अक्टू }
१६३५	—	१८ ज, १६ जुला	१६६९	१८ मा	—
१६३६	१६ जू	८ ज, ४ जुला	१६७०	७ मा	२१ फ, १० अग
१६३७	२ टि	१८ न	१६७१	२५ फ, २० जुला	१० फ ६ अग
१६३८	२२ न	१४ मे, ७ न	१६७२	—	३० ज, २६ जुला
१६३९	१ अग	३ मे, २८ अक्टू	१६७३	{ ४ ज, ३० जू }	१० दि
१६४०	१ अक्टू	२२ अग	१६७४	१३ दि	४ जू, २६ न
१६४१	२१ मे	१३ मा ५ मे	१६७५	२१ मे	२५ मे, १८ न
१६४२	१० मे	२ मा, २६ अग	१६७६	२६ अग २६ अक्टू	१३ मे
१६४३	४ फ	२० फ, १५ अग	१६७७	१८ अग	४ अग २७ मे
१६४४	२५ ज, २० जुला	२६ जू, १८ दि	१६७८	२ अक्टू	२४ मा, १६ मे
१६४५	१४ ज, ६ जुला	१४ जू, ८ दि	१६७९	२६ फ	१३ मा, ६ मे
१६४६	२८ जू	३ ज	१६८०	१६ फ	—
१६४७	२० मे	२३ अग, ८ अक्टू	१६८१	३१ जुला	१० जुला
१६४८	६ म, १ न	१२ अग, ७ अक्टू	१६८२	२० जुला, १५ दि	{ ८ ज, ६ जुला, ३० मे }
१६४९	२८ अग	२ अग, २६ मे	१६८३	११ ज, ४ दि	२५ ज
१६५०	१२ मे	—	१६८४	३० मे	—
१६५१	१ मे	१० फ, ५ अग	१६८५	१७ न	४ मे, २८ अक्टू
१६५२	२१ फ, २० अग	२६ ज २६ जुला	१६८६	—	२५ अग, १७ अक्टू
१६५३	१४ फ, ११ जुला	१६ ज, १६ जुला	१६८७	२६ मा, २३ मे	—
१६५४	३० जू, २५ दि	२६ न	१६८८	१८ मे, ११ मे	२७ अग
१६५५	२० जू, १४ दि	२४ मे, १८ न	१६८९	—	२० फ, १७ अग
१६५६	२ दि	१३ मे, ७ न	१६९०	२७ जुला	८ फ ६ अग
१६५७	२३ अक्टू	३ मे	१६९१	—	३० ज, ३१ दि
१६५८	१६ अग	२४ मा, १७ मे	१६९२	२४ टि	१५ जू, ८ टि
१६५९	२ अक्टू	१३ मा, ५ मे	१६९३	२१ मे	४ न, २० न
१६६०	२० म	२ मा २६ अग	१६९४	१० मे, ३ न	२१ मे
१६६१	१७ अग	—	१६९५	२८ अग, २४ अक्टू	१५ अग
१६६२	४ फ, ३१ जुला	{ ६ ज, ६ जुला, ३० टि }	१६९६	१७ अक्टू	३ अग, २० मे
१६६३	२५ ज	२ जू, १६ दि	१६९७	८ मा	१६ मे
१६६४	६ जुला, ४ टि	१४ जू	१६९८	२६ फ, २० अग	—
१६६५	२३ न	४ मे, २३ अक्टू			
१६६६	२० म, २३ न				

प्रखी सन	सूर्य ग्रहण	चंद्रग्रहण
१६८८	१६ फ, ११ अग	२५ जुला
२०००	३१ जुला	२१ ज, १६ जुला

ऊपर जो ग्रहणकी सूची दी गई है, उसमें सब ग्रहण एक स्थान वा देशमें नहीं देखे गये वा नहीं देखे जायेंगे।

ग्रहणक (सं० स्त्री०) गृह्यतिनेन ग्रह करणे ल्य, ट्, ततः स्वार्थे कन्। ग्रहणक शास्त्र।

ग्रहणान्त (सं० स्त्री०) ग्रहणस्यान्तः ङ-तत्। ग्रहणका अवसान, ग्रहणका अस्त होना, राहुसे चन्द्रमा या सूर्यका मोक्ष पाना।

ग्रहणि (सं० स्त्री०) गृह्णाति आक्रमते, रोगीणां देहं ग्रह-अग्नि। १ ग्रहणीरोग। २ सृष्टुतके अनुसार उदरके मध्य पक्वाशय और आमाशयके बीचकी एक नाड़ी जो अग्नि या पित्तका मुख्य आधार है। इसी नाड़ीके दूषित होनेसे ग्रहणी रोग उत्पन्न होता है।

ग्रहणी (सं० स्त्री०) ग्रहणि-डीप्। १ अग्न्याधिष्ठान नाड़ी, पित्ताधार, एक नाड़ी जो अग्नि या पित्तका प्रधान आधार है। ३ अपने नामसे प्रसिद्ध एक रोग, उदरभङ्ग रोग, एक प्रकारका रोग जिसमें खाया हुआ अन्न पचता नहीं, ज्योंका त्यों दस्तकी राहसे निकल जाता है। (Diarrhoea) इस रोगमें वैद्यक चिकित्सा ही ज्यादा उपकारी है। सृष्टुतमें इस रोगके निदान और लक्षणादि इस प्रकार लिखे हैं,—

पक्वाशय और आमाशयके बीचमें पित्तधरा नामकी एक नाड़ी है, उसको ग्रहणी कहते हैं। इस ग्रहणीका वल अग्नि है, परन्तु वह अग्नि ग्रहणीका आश्रय ले कर रहती है। इस लिए अग्निके दूषित होनेसे ग्रहणी भी दूषित हो जाती है। फिर धीरे धीरे एक या समस्त दोष बढ़ कर ग्रहणीको दूषित कर डालते हैं। इसमें ज्यादा भोजन करनेसे पचता नहीं। खाया हुआ पदार्थ ज्योंका त्यों दस्तकी राहसे निकल जाता है। अथवा पच कर दुर्गन्धयुक्त मल यन्त्रणके साथ निकलता है और कभी कभी दम्व बन्द भी हो जाता है। इसीको ग्रहणी रोग कहते हैं। अतीसारके दूर होने पर जो अहितकर भोजन करता है उसकी अग्नि मन्द हो जाती है। अग्निके

दूषित हो जानेसे ग्रहणी भी दूषित होने लगती है। इस लिए अतीसार रोगके अच्छे हो जानेके बाद, जब तक शरीर पहिले जैसा स्वाभाविक न हो जाय तब तक खाने पीनेका खूब परहेज रखना चाहिये। ग्रहणीके प्रारम्भमें गलेमें जलन, देहमें ह्रारत, आलस, प्यास, क्लान्ति, वल चय, अरुचि, खाँसी, कानमें पीड़ा और आँतोंमें गुड़गुड़ाहट, ये सब लक्षण प्रगट होते हैं। रोग होनेके बाद हाथ पैरमें सूजन, दुर्बलता, गाँठोंमें पीड़ा और शिथिलता, प्यास, वमन, ज्वर, अरुचि, कडुई और खट्टी उकार, मुँहमें पानी आना, मुँहका स्वाद विगड़न और गुस्सा, ये सब लक्षण टिखाई देते हैं। ग्रहणी वायुजन्य होनेसे गुदा, हृदय, वगल, उदर और मस्तकमें शूल, पित्तजन्य होनेसे दाह और कफजन्य होनेसे देह भारो हो जाती है। तथा मान्निपातज होनेसे तोनों हो लक्षण प्रगट होते हैं। नख, मल, मूत्र, मुख और आँखोंमें दोषका वर्ण प्रगट हो जाता है। इसमें हृदरोग, पाण्डुरोग उदररोग गुल्मारोग, बवासीर और तिल्ली होनेको आशङ्का रहती है। ऊपर और नोचेके हिस्सेको साफ करके दोषानुसार अग्निवर्द्धक द्रव्योंसे पेय आदि बना देना चाहिये। वादमें पाचन, संग्राहक और अग्निकर पदार्थ या त्रिविध सुरा, अरिष्ट (काढ़ा), स्नेह (तेल), मूत्र या गरम पानीके साथ पीना चाहिये। ये सब चोर्जे मठाके साथ भी पोयी जा सकती हैं। सिर्फ मठा पीनेसे भी ग्रहणीरोग शान्त हो जाता है। कृमि, गुल्म, उदररोग और बवासीरको नाश करनेवाली औषध भी ग्रहणीरोगमें प्रयोज्य है। हिंवादिचूर्ण वा श्लीहानाशक घृत अथवा पिप्पल्यादि गण और चूका (खट्टासाग)-के रसके साथ पका हुआ घो सेवन करना चाहिये। चौगुणे दहीमें घी पका कर पीनेसे ग्रहणी रोग अच्छा होता है। ग्रहणी रोगमें अग्निवर्द्धक औषधियोंका सेवन करना चाहिये। ज्वर आदिका उपद्रव हो, तो दोषोंकी चिकित्साप्रणालीके अनुसार उन उपद्रवोंकी चिकित्सा कराना चाहिये, परन्तु जो औषधि अतीसार रोगमें न दी जाती हो वह न देने चाहिये। (सृष्टुत उदरतन्त्र ४० अ०)

इसके सिवा ग्रहणीरोगमें लघुलाईचूर्ण, वृहत्लाईचूर्ण, जातोफलदिचूर्ण, चित्रकादिबटिका, विल्वकल्का, वार्त्ताकुं

गुटिका, कल्याणगुड, महाकल्याणगुड और सुभाण्ड-
कल्याणगुण आदि औषधियां भी प्रयोजनीय है। यदि
ज्वर न रहे, तो रोज पानी और थोड़ा लवण मिला कर
मठा पीना चाहिये। इससे खूब फायदा पट्ट चता है।

बिना कुछ खाये हुए खाली पेटमें, कच्चे बेन्को भूज
कर मिथीके साथ खाना चाहिये, इससे खूब फायदा
होता है। इसमें राति जागरण मैथुन, स्नान, मननूव-
के वेगको रोकना, नस्य, तमाकू, परियम, गीहू, यव,
कुम्हडा, लोको, मधु या शहद, पान ईख आम सुपारी
लहसुन, दूध, गुड, काञ्चीवटक आदि नही खाना चाहिये,
क्यों कि ये पदार्थ इस रोगके लिए बहुत हानिकारक
होते हैं। पत भार देखा।

ग्रहणोक्तपट्ट पोट्टनी—एक औषध। को-को भस्म, पारा,
गन्धक, लोहेको चूर् और सुहागा, इन सबको समान
भागसे ले कर सिद्धिसमें एक दिन तक (खरहडमें) पीस
कर गोलियां बनानी चाहिये। इसीका नाम 'ग्रहणी
कपट्ट पोट्टनी' है। यह वातज ग्रहणीरोगमें सेवनीय है।

(रसेन्द्रसार०)

ग्रहणीकपाट—१ एक प्रकारकी दवा। समान पारा और
गन्धककी बुरानी बना कर अदरखक रसमें भिगो दो
जिये। फिर सभसे दुगुणी कुटजकी छालकी राख मिला
कर ४ रत्तीके तोलको गोलियां बना लें। इसीका नाम
'ग्रहणोक्तपाट' है। यह बकरीके दूध, कुटजके काटे
या दहीके साथ दो रत्तासे लगा कर १० रत्ती तक खाईं
जाते हैं और १० रत्तीसे फिर क्रमशः घटाई जाते हैं।
इसके सेवन करनेसे ग्रहणारोग शान्त हो जाता है।

(रसेन्द्रसार०)

२ लोहा, पारा, हस्ताल, स्वर्णमात्रिक, सुहागा
प्रत्येक १२ तोला, कोडीकी भस्म ४० तोला गन्धक १६
तोला, इनको ज बोर नोचूके रसमें घोट कर पुटपाक
बनता है। इसके सेवन करनेसे ग्रहणी, गुल्म, त्रय, कुष्ठ
और प्रमथ ये रोग अच्छे हो जाते हैं।

३ पारा एक भाग, अम्र (अबरक) दो भाग, गन्धक
तीन भाग, इनकी काकजहाके रसमें तीन दिन रख कर
जयन्ती, शूद्रराज और ज बोर नोचूके रसमें एक दिन
घोटना चाहिये, फिर गन्धकके बराबर यवचार और

सुहाग दे कर अण्डोके तीनके साथ पुटपाक करना
चाहिये। बादमें गिलीय, सेमल और भाङ्गके रसमें पुन,
घोट कर आधे तोलके गोलियां बनानी चाहिये। इसीका
नाम ग्रहणीकपाट है। यह मरिचचूर्ण और मधुके साथ
सेवनीय है। इसमें ग्रहणी रोगका प्रतीकार होता है।

४ चाँदी, मोतो, सुवर्ण और लोह प्रत्येकका एक
भाग, गन्धक दो भाग और पारा तीन भाग, इनकी कैय-
के पत्तके रसमें घोटना चाहिये, फिर गाटा होने पर
सुगन्धकभस्मके साथ मन्सरो पुटपाक करना चाहिये।
बादमें वद्यानिका (बरियारा) के रसमें सातवार, लट-
जौराके रसमें तीनवार, लोध, अतिविषा, सुन्दक, धावई
के फूल और इन्द्रयवके काठेमें तीन तीन बार भापरा दे
कर एक मासकी गोलियां बनानी चाहिए। यह भी
एक प्रकारका ग्रहणीकपाट है। यह अग्निवर्धक होता
है। गोलमिचके साथ या शहदके साथ सेवन करनेसे
सब तरहका अतिसार और ग्रहणीरोग दूर हो जाता
है। (रसेन्द्रसार०)

ग्रहणीकपाटरस—एक प्रकारका औषध। पारा, गन्धक,
जायफल, लवङ्ग प्रत्येकका अर्धतोला एकत्र चूर्ण कर
सूर्यावर्त्त, बेल पानीफलके पत्तके रसमें भावना दे कर
सूर्यास्तामें सुड़ा ले और तब दो रत्ती परिमित हरएक
गोली प्रस्तुत करें। यह विल्वपत्र रसके साथ सेवन कर
नेसे ग्रहणी, अतिसार, शोथ और ज्वर इत्यादि रोग नाश
हो जाते हैं।

ग्रहणीगजेन्द्रवटिका—एक तरहका औषध। पारा, गन्धक,
लोह, सोहागा, शङ्ख, हिरण, शटी, तालिगपत्र, मोथा,
धान्यक (धनिया), जौरा सैन्धवलवण, धातकी प्रति
विषा, शुण्ठी, गृहधूम (भोल) हरोतकी, रक्तचन्दन,
तेजपत्र, जायफल, लवङ्ग, टालचीनी, इलायची, वाला
(वानक) विल्वगलाट्ट मैथी और भाङ्ग समान भाग ले
कर छागदुग्धमें मदन कर दो मासा परिमाणकी प्रत्येक
गोली बनावें। इसका सेवन करनेसे नाना प्रकारकी
ग्रहणी ज्वर, अतिसार, शूल, गुल्म, चन्द्रपित्त कामना
जन्तुमरु, कण्टू, कुष्ठ, विसर्प, गुदभ्रम और किमि
प्रभृति रोग नाश होते हैं। यह बलकर, अग्निवर्धक
और रसायन है।

ग्रहणोदोष (सं० पु०) ग्रहणोरोगसे उत्पन्न दोष ।

ग्रहणोप्रदोष (सं० पु०) ग्रहणोदोष ।

ग्रहणोमिहिरतैल (सं० स्त्री०) ग्रहणी रोगके लिए उपयुक्त तैल । तिलतैल ४ शराव (३ सेर १६ तोला), मठ ४ शराव, कुटजत्वक् २ शराव, जल १६ शराव, शेष ४ शराव, धनियौ २ शराव, जल १६ शराव, शेष ४ शराव, इन सबको मिला कर शरीर पर मालिस करनेसे ग्रहणी रोग दूर हो जाता है ।

ग्रहणोय (सं० त्रि०) ग्रह-अनीयर । ग्रहण करने योग्य, जो ग्रहण किया जा सके ।

ग्रहणोरुक् (सं० स्त्री०) संग्रहणी रोग ।

ग्रहणोरोग (सं० पु०) स्वनामख्यात रोग । ग्रहणी देखो ।

ग्रहणोवज्रकपाट—ग्रहणी रोगका एक तरहका औषध । पारा, गन्धक, यवचार, सिद्धि, वच, अभ्र और सोहागा, समभाग जयन्तो, भृङ्गराज और जम्बीर नीबूके रस द्वारा तीन दिन पीस कर अग्निके मृदु सन्तापसे चार दण्ड स्वेद दे । उसके बाद भाङ्ग, शिमूल और जयन्तीके रसमें सात सात बार भापरा दे कर दो या तीन मासा परिमित गोली बनावें । इसीको ग्रहणीवज्रकपाट कहते हैं । मधुके साथ सेवन करनेसे ग्रहणी दोष दूर हो जाता है ।

ग्रहणीशार्दूलवस-रुद्रदेवसे आविष्कृत एक तरहका औषध । दो तोला पारा और दो तोला गन्धककी कज्जली कर सुवर्ण १६ भाग, लवङ्ग, नीमका पत्ता, जावित्री, छोटी इलायची प्रत्येक दो तोला, इन समस्त द्रव्योंको घोंघामें भर कर ढाँक दे । पाँच रत्तीकी मात्रा प्रतिदिन सेवन करनेसे सूतिका, ग्रहणी, अर्श, काश, श्वास, अतिसार और आमशूल प्रभृति रोग नाश हो जाते हैं । यह दीपन, क्षलवीर्य और पुष्टिकारक है ।

ग्रहणीशार्दूलवटिका (सं० स्त्री०) ग्रहणी रोग । जायफल, लवङ्ग, कुष्ठ, टङ्गण (सोहागाका फूला), द्वितलवण, जीरा, गुडत्वक्, एला, धतुराका बीज, अफीम समान भाग ले कर प्रसारणी रससे मर्दन करें । पाँच रत्ती परिमाणकी गोली बना कर प्रतिदिन सेवन करनेसे भी ग्रहणी रोग हट जाता है ।

ग्रहणीहर (सं० स्त्री०) ग्रहणीं हरति, ह-अच । १ लवङ्ग । (त्रि०) २ ग्रहणीनाशक, वह जिससे ग्रहणी रोग नाश हो ।

ग्रहता (सं० स्त्री०) ग्रहस्य भावः ग्रह-तल टाप् । ग्रहका भाव, ग्रहका धर्म ।

ग्रहदक्षिणा (सं० पु०) ग्रहाणां ग्रहोद्देशेन देया दक्षिणा, ६-तत् । ग्रहयज्ञमें देने लायक दक्षिणा । य० २३ देखो ।

ग्रहदशा (सं० स्त्री०) १ गोचर ग्रहोंकी स्थिति । २ ग्रहोंकी स्थितिके अनुसार किसी मनुष्यकी भलो या बुरी अवस्था । ३ अभाग्य, कमवसूती ।

ग्रहदान (सं० स्त्री०) ग्रहाणां दानं, ६-तत् । १ ग्रहके लिये दान, ग्रह दूर करनेका दान । २ ग्रहमें जो जो द्रव्य दान किया जा सकता । ग्रहविष देखो ।

ग्रहदाय (सं० स्त्री०) जन्मकालके ग्रहोंकी स्थितिके अनुसार किसीकी आयु, उम्र ।

ग्रहदृष्टि (सं० स्त्री०) ग्रहाणां दृष्टि, ६-तत् । ग्रहगण जिस जगह अवस्थान करें, वहाँसे स्थानान्तरमें उनकी दृष्टि रहती है । यह दृष्टि चार प्रकारकी होती है,— पूर्ण, त्रिपाद, अर्ध और एकपाद । ग्रहगणकी दृष्टिके अनुसार फलाफलका भेद होता है । शुभग्रहोंको पूरी दृष्टि रहनेसे शुभफल और अशुभग्रहोंकी पूरी दृष्टि हो तो अशुभफल होता है । दृष्टिकी हीनतासे यथाक्रमसे फलमें हीनता होती है । किस ग्रहको किस स्थानमें कौसी दृष्टि है इस बातको जाननेके लिए नीचे ग्रहदृष्टिचक्र दिया जाता है । जिस स्थानमें ग्रह रहता है, उसे प्रथम स्थान और उसका परवर्त्तो राशिओंको क्रमसे द्वितीयादि स्थान जानना चाहिये । पूर्ण दृष्टिकी संख्या ६०, त्रिपाद दृष्टिकी ४५, अर्धदृष्टिकी २० और एकपाद दृष्टिकी संख्या १५ है । ग्रहचक्रमें जो दृष्टियां लिखी गई हैं, वे साधारण कार्यके लिए उपयोगी हैं । (१)

१) “दशमे द्वात्रिंशे चैव पाददृष्टिरुदाहता ।

अर्धदृष्टय नवमे पक्षमे परिकीर्त्तताः ॥

चतुर्थे लष्टमे चैव पादोना परिकीर्त्तता ।

सप्तमे परिपूर्णां च फलमे वं प्रकल्पते ॥

द्वितीय दशमे वार्तिकः पञ्चन पूर्ण फलप्रदः ।

त्रिकीर्णगान् गुरुश्च चतुर्थोऽसगान् कुजः ॥

सुतभवन्तवान्यो पूर्णदृष्टिः सुरारे -

गुरुलक्ष्मराशौ दृष्टिपादमार्दः ।

सहजरेपुचतुर्थे षष्टमे चाइदृष्टिः ।

स्थितिभवनसुपान्यं न व दश हि राष्टिः ॥” (ज्योतिषज्ञ)

(क) ग्रहद्विष्टचक्र।

ग्रह	शनि	शुक्र	गुरु	बुध	शुक्र	शनि	शुक्र
शुक्र	०	०	०	०	०	०	०
शुक्र	०	०	०	०	०	०	४५
शुक्र	१५	१५	१५	१५	१५	१५	६०
शुक्र	४५	४५	४५	४५	४५	४५	३०
शुक्र	३०	३०	३०	३०	३०	३०	६०
शुक्र	०	०	०	०	०	०	३०
शुक्र	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०
शुक्र	४५	४५	६०	४५	४५	४५	३०
शुक्र	३०	३०	३०	३०	३०	३०	६०
शुक्र	१५	१५	१५	१५	१५	१५	४५
शुक्र	०	०	०	०	०	०	०
शुक्र	०	०	०	०	०	०	६०

(ख) ग्रहद्विष्टचक्र।

ग्रह	शनि	शुक्र	गुरु	बुध	शुक्र	शनि
शुक्र	६०	६०	६०	६०	६०	६०
शुक्र	०	०	०	०	०	०
शुक्र	४०	४०	४०	४०	४०	४०
शुक्र	१५	१५	१५	१५	१५	१५
शुक्र	४५	४५	४५	४५	४५	४५
शुक्र	०	०	०	०	०	०
शुक्र	६०	६०	६०	६०	६०	६०
शुक्र	०	०	०	०	०	०
शुक्र	४५	४५	४५	४५	४५	४५
शुक्र	१५	१५	१५	१५	१५	१५
शुक्र	१०	१०	१०	१०	१०	१०
शुक्र	०	०	०	०	०	०

नीलकण्ठताजकर्म वर्ष प्रवेशकालमें ग्रहोंको दृष्टिका उल्लेख दूसरी तरफसे है। उसके अनुसार (ख) चिह्नित ग्रहद्विष्ट चक्र दिया गया है। इसके दूसरे नियम (क) चिह्नित ग्रहद्विष्टचक्रके समान ही है। वर्ष प्रवेशमें (ख) चिह्नित चक्रके अनुसार ग्रहोंको दृष्टिस फलाफल निरूपण किया जाता है।

दूसरे विवरण वर्ष प्रवेश और काशी यात्रा शक्योंमें देवता चारित्र्ये।

नीलकण्ठताजकर्म मतसे वर्ष प्रवेशकालमें सात ग्रहोंकी दृष्टिका तारतम्य देवनेमें आता है। इस लिए (ख) चिह्नित चक्रमें सात ग्रहोंका उल्लेख किया गया है। ग्रहदेवता (स० स्त्री०) ग्रहाणा देवता, ६ तत्। ग्रहगण का अधिष्ठात्री देवता रुद्र प्रभृति। * एवम देवी।

ग्रहद्रुम (स० पु०) ग्रहनायकी द्रुम, मध्यपदलो०। शाक-वृक्ष, काकडासींगी।

ग्रहधूप (स० पु०) ग्रहाणा धूप, ६ तत्। ग्रहोद्देशसे प्रदिय धूपविशेष, ग्रहोंकी टेनेनायक धूप। एवम देवा। ग्रहनायक (स० पु०) ग्रहाणा नायक, ६ तत्। १ सूर्य। २ शनिश्चर। ३ अर्कवृक्ष, मन्दारका पेड़।

ग्रहनाग (स० पु०) ग्रह मलवन्म नागयति नग णिच् श्रण, उपम। शाकवृक्ष, सतिवन नामका पेड़।

ग्रहनेमि (स० पु०) ग्रहाणां ग्रहकक्षाणां निमिरिव। १ मूल और मृगशिरा नक्षत्रोंके मध्याका चन्द्रमाका मार्ग। २ चन्द्रमा। ३ आकाश।

ग्रहपति (स० पु०) ग्रहस्य पति, ६ तत्। १ सूर्य। २ अर्कवृक्ष। ३ शनि। ४ गृहस्वामी, घरका मानिक। ५ चन्द्र। (भारत १०१६५३१)

ग्रहपीडा (स० स्त्री०) ग्रहजन्या पीडा, मध्यपदलो०। अशुभ ग्रह शारीरिक या मानसिक यातना देता है। इस लिये इसका नाम ग्रहपीडा पडा है।

ग्रहपीडन (स० स्त्री०) ग्रहस्य पीडन, ६ तत्। ग्रह पीडा।

ग्रहपुप (स० पु०) ग्रहान् चन्द्रादीन् पुण्याति स्वतेजसा ग्रहपुप-क। सूर्य।

ग्रहपूजा (स० स्त्री०) ग्रहस्य पूजा, ६ तत्। ग्रहोंकी प्रार्थना, यज्ञीय पूजा।

ग्रहप्रत्यधिदैवत (स० स्त्री०) ग्रहाणां प्रत्यधिदैवत, ६ तत्। ग्रहोंका अधिपति देवता।

ग्रहवज्र (सं० ली०) ग्रहस्य वज्रं, इ-तत् । ग्रहका वज्र, ग्रहको सासर्थ्य ताकत या कार्यदक्षता । वृहज्जातकके मतानुसार—ग्रहोंका वज्र चार प्रकारका है—स्थानवज्र, टिकवज्र, चेष्टावज्र और कालवज्र । ग्रहगण अपने अपने उच्च, नवांश त्रिकोण या सिक्वेटलमें अथवा अपने भवनमें रहनेसे बलवान् होते हैं इसीको स्थानवज्र कहते हैं । पूर्वमें अर्थात् लग्नमें बुध और वृहस्पति दक्षिण या दशम स्थानमें रवि और मङ्गल पश्चिम या मगस राशिमें शनि तथा उत्तर या चतुर्थ राशिमें शुक्र और चन्द्र रहनेसे बलवान् होते हैं । इसका नाम टिकवज्र है । जो ग्रह जिस राशिमें रहनेसे बलवान् होता है, वह वह उस राशिमें गणनामें मगस राशिमें रहे, तो वह विष्कूल बलशून्य हो जाता है । वीचका वज्र अनुपातके अनुसार निरूपण करना चाहिये ।

मकर आदि ऋह राशियोंको उत्तरायण और कर्कट आदि ऋह राशियोंको दक्षिणायन कहते हैं । रवि और चन्द्र उत्तरायणमें रहनेसे तथा मङ्गल, बुध, वृहस्पति, शुक्र और शनि वक्रगामी या चन्द्रके साथ रहनेसे बलवान् होते हैं । इसीको चेष्टावज्र कहते हैं । युद्धमें जोतने वाले ग्रह भी बलवान् होते हैं । ग्रहयुद्ध देखो ।

चन्द्र, मङ्गल और शनि रातमें सूर्य, वृहस्पति और शुक्र दिनमें तथा बुध रात-दिन दोनों समयमें बलवान् होते हैं । पापग्रह क्षणपक्षमें और शुभग्रह शकपक्षमें बलशाली होते हैं । जो ग्रह जिस वर्ष, जिस मास, जिस दिन और जिस घड़ोका अधिपति है, उसी वर्षमें, उसी मासमें, उसी दिनमें और उसी घड़ीमें उसे बलवान् समझना चाहिये । इसको कालवज्र कहते हैं । वृहज्जातकके मतसे शनि सब ग्रहोंसे कमजोर है । शनिसे ज्यादा बलवान् मङ्गल है, मङ्गलसे ज्यादा बुध, बुधसे ज्यादा वृहस्पति, वृहस्पतिसे ज्यादा शुक्र, शुक्रकी अपेक्षा चन्द्र और चन्द्रकी अपेक्षा सूर्य ज्यादा बलवान् है । लघुजातकके मतसे, यही ग्रहोंका नैसर्गिक बल है ।

बलके अनुसार ग्रहोंके फलोंका तात्पर्य जाननेके लिये भावफल आदि ग्रन्थ देखो ।

ग्रहवलि (सं० पु०) ग्रहाणां वलिः, इ-तत् । ग्रहोंका पूजोपहार । ग्रहयज्ञमें ग्रहके लिए देने योग्य गुड़ोटनादि । ग्रहयज्ञ देखो ।

ग्रहभक्ति (सं० स्त्री०) ग्रहाणां भक्तिर्भागः, इ-तत् । ग्रहोंका भाग, अंश या अधिपति स्वर्गोत्तममें अवस्थित ग्रहगण अंशक्रमसे समस्त देव, द्रव्य पार, पुरुष आदिका भाग करते हैं । जो जिस ग्रहका भाग्य है, उभय उभय ग्रहोंकी भक्ति करते हैं । वृहज्जातकमें ग्रहभक्तिके विषयमें ऐसा लिखा है -

ग्रहभक्ति—नमो टाको पूर्वादि शोण. भद्र, वज्र, मङ्गल, कलिङ्ग, वाहिक, गक, यवन, मगध, गवर, प्राग, ज्योतिष, चीन, काञ्चीन, मेकाल, किरात, विकट, पर्वतके भीतर और बाहर रहनेवाला. पुलिन्द, द्रविडका पूर्वादि, यमुनाका दक्षिण किनारा, जम्पा, उदुम्बर, काशास्वी, चेदि, विन्ध्याटवी, पुण्ड्र, गोलाद्र, ल. त्रौपर्वत. वर्तमान और उन्नतनी ये सब देव, तस्कर, पारत, कान्तार, गाप, बीज, तप, धान्य, कटकवृक्ष, कनक, अग्नि, विप, आपध, समर, शर, वैश, चतुष्पद, कृषिकर वृष, हिंस्र, पदातिक, चौर, कृणामर्ष तथा यग्योयुक्त तोष्ण अरण्यद्रव्य, इन सबका अधिपति सूर्य है ।

चन्द्रग्रहकी भक्ति—गिरि, मलिन, दुर्ग, कीर्ण, मरुकच्छ, मसुद्र, रोमक, तुपार, वनवासो, तद्वण, हण, खीराज्य, महागर्गवहोप, मधुसरम, कुसुम, फल, लवण, मणि, शङ्ख, मौक्तिक, पद्म, शालि, यव, आपध, गेहूँ, यजमान, राजाके वशीभूत ब्राह्मण, सफेद घोड़ा, रतिकरो शुवती, चमूपति, भोग्यवस्त्र, शृङ्गयुक्त पशु, निशाचार, कर्षक और यज्ञविद, ये सब चन्द्रके भोग्य हैं

मङ्गलग्रहकी भक्ति—शोण, नर्मटा और भोमरश्रीके पश्चिमाईमें स्थितराज्य. निविन्ध्या, वैशवती, गोटावरो, शिप्रा, वेण्वा, मन्दाकिनी, पयोणी, महानदी, शिन्धु, मालती और पाग आदि नदी, उत्तरपाण्ड्य, महेंद्रादि, विन्ध्यमलयके निकटवर्ती स्थान, चीन. द्रविड, विदेह, अश्व, अशमक, भांसापुर, कोङ्कण, ऋषिक, कुन्तल, केरल, दण्डक, कान्तिपुर, स्नेच्छ, मुद्गरज, नामिक, भोगवर्द्धन विगट विन्ध्याद्रिपार्ववर्ती देश तापी और गोमती नदीका मीठा पानी पीनेवाले मनुष्य, नगरवासी, कृषिकर, पारत हुनाशनाजीवी शम्बाजीवी, अरण्यचर, दुर्ग, चन्द्रनगर, घातक, गर्वित, नरपति कुमार, हस्ती, दाम्भिक, बालक, पशुपालक, लाल फल और फूल, विद्रुम, चमूपालक,

गुह, शराव, कोपागार अग्निहोमो, धातुको खान, चोर, शठ, टीर्घवैर और बहुभोजी, इन सबका अधिपति मङ्गल है।

बुधको भक्ति—नोहित्य और सिन्धुनद, सरयू, गम्भीरिका, रथाहा, गङ्गा और कोशिकी आदि नदी, काम्बोज, वैदेह, मधुराका पूर्वाक्ष, हिमालय, गोमन्त और चित्रकूटके तमाम राज्य, मोराङ्ग, सेतु, जलमार्ग, पण्य, गुफा और पर्वतके जोवजन्तु, कूप, यन्त्र, गायन, लिखनेकी चीज, मार्ण, अङ्गराग, गन्धयुक्तिमित पण्डित, चित्रकर, शाब्दिक गणितज्ञ प्रमाधक प्रायुष्कर, शिल्पशास्त्राभिज्ञ, चर, मायागो, शिशु, कवि, शठ, सूचक, अभिचाररत, दूत, नपुंसक, हास्यप्र, भूततन्त्र, इन्द्रजालज्ञ, रत्नक, नट, नर्तक, घृत तैल खेडके बीच, तिलक, व्रतचारी, रमायनकुशल और अश्वतर इन सबका अधिपति बुध है।

शुक्रकी भक्ति—सिन्धु नदीका पूर्वभाग, मधुराका पश्चात्तर्ध, भरत, सोवीर, स्र ह्नको उत्तरदिशा विपाशा और शतद्रु नदी, रामठ, मान्धव नैर्गर्त, पोरव, अश्वथ, पारत, वाटधान यौधेय सारस्वत आर्जुनायन तथा मत्स्यदेशके अर्धभागके ग्राम और मारि राज्य, हप्तो घोडा, पुरोहित राजा, मन्त्री, माङ्गय अर पौष्टिक कार्यमें आमक्त व्यक्ति, कारुण्य, सतर, शीघ्र, व्रत, विद्या दान और भ्रम आचरण करनेवाला व्यक्ति, धीर, धनगाली, शाब्दिक, वैदिक अभिचार और नीतिज्ञ, ऊन्न, ध्वजा और धामर आदि उपकरण, शेलज, मासी, तगर कुंड, पारद सैन्धव, लतासि उत्पन्न हुई चोज, मधुररम, मोम तथा चोरक नामका गन्धद्रव्य, ये सब हृष्टपतिके भोग्य हैं।

शुक्रकी भक्ति—तक्षगिन, मार्त्ति कावत, बहुगिरि, गाम्भार, पुष्कनावत, प्रखल, मालव, कैकय, दगार्ण, उशीनर और त्रिविदेय, वितप्ता, शरावतो और चन्द्रमागा नदीका पानी पीनेवाले मनुष्य, रथ, कुञ्जर, रजताकर, माहुत, धनुर्धारी, सुरभीकुसुम, अतुनेवन, मणियन्त्रादि विभूषण, पत्र, शय्या, नवीन युवती, सुपन्न अथ और मधुर रमवाने भोजनकी ग्राहेयाने प्राणी, उद्यान, वन, कामी, यय, सुख, पादाय और रूपगान्, विद्वान्, भस्वी, वणिज, कुम्हार, चित्राण्डज, हर्ष, वहेडा ईगमो कपडा, मनका कपडा, कम्बल, पटा, भौणिक लोभपत्र, चोरक, जायफल,

अगुक, बच, पापल और चन्दन, इन सबका अधिपति शुक है।

शनिकी भक्ति—आनर्त्त, अर्तुद पुष्कर, सौराष्ट्र अमीर, शूद्र, रैवतक, जिस देशमें भरस्वती नदी न हो यह देश, पश्चिमके देश, कुर्बन्त प्रभाम, विदिशा, वेदभृतिके पाषको चोज, खल्हड, मलिन, नीच, सेनो, विहीनमत्त, उपहतपु स्व, बन्धनकारो, व्याध, अशुचि, कौवट (धीवर), विरूप, हृद, शौकरिक, गणपुत्र्य, स्वल्पितव्रत भोल, पुलिन्द, दरिद्र, कटु, तिक्त, रमायन, विधवा स्त्री, सर्प, चोर, राणो, खर, करभ (हातीका बच्चा), चना, पागल और निष्पाप द्रव्य, इन सबका शनि अधिपति है।

राहकी भक्ति—पर्वतकी चोटी, गुफा, गुहाके निवासी, खेच्छ, शूद्र, गोमायुमत्त, शूलिक, वोकान, अश्वमुख, विकलाङ्ग, कुलाङ्गार, हि स्र, कृतघ्न, चोर, माव, शीघ्र और दानमें वर्जित खरचर, मन्त्रयुक्तकारो, तीव्ररोपयुक्त, नीच, उपहत, दाम्बिक, राजस, निद्रालु, धर्महीन, मूग और तिल इन सबका अधिपति राहु है।

केतुकी भक्ति—गिरिदुर्ग, पङ्कज, श्वेतहण, चीन, अश्वगान, मरु, चीन, प्रत्यन्तदेश, धनो, उदारस्वभाव, रजगारी, पराक्रमी, परदाररत (लम्पट), भगडेनु, भटगर्वित मूर्ख और अधार्मिक विजयाभिलाषी, इनका अधिपति केतुग्रह है।

जो ग्रह प्रकृतिस्य सिन्ध्याश तथा निर्वात चल्का रज वा यह मर्द न द्वारा हत नहीं होता, स्वभवनगत स्वोद्यम्यित है और शुभयहसे देखे जानि पर उदित होता है उम यहको जिनका अधिपति कहा गया है, उनका मङ्गल होता है। इमके विपरीत लक्षण हो तो अमङ्गल होता है। (१४५५ चिन्ता १६५०)

ग्रहभौतिजित् (म० पु०) ग्रहभौति जयति जि क्षिपु ।
चीडा नामका गन्धद्रव्य ।

ग्रहभोजन (म० क्ली०) ग्रहाणां भोजन, ६ तत् । यहके लिये देने लायक गुह षोडन प्रभृति । १४५५ प ६५१ ।

ग्रहमण्डल (म० क्ली०) ग्रहाणां मण्डल, ६-तत् । १ ग्रह ममूह, चर्होका भण्ड । २ ग्रहपूजाके लिये षटटन पत्राकार स्थानभेद । १४५५ ६५१ ।

ग्रहमैत्र (म० क्ली०) ग्रहयोर्दम्पति राग्यधिपयोर्मैत्र,

६-तत्। वर और कन्याके ग्रहोंके स्वामियोंकी मितता।

इसका विचार विवाहके समय किया जाता है।

विवाह टीकी।

ग्रहमैत्री (सं० स्त्री०) ग्रहमेव टीकी।

ग्रहयज्ञ (सं० पु०) ग्रहाणां यज्ञः, ६-तत्। शान्ति और

पुष्टि आदिकी कामनाके लिए ग्रहके उद्देश्यसे जो यज्ञ किया जाता है। इसका प्रारम्भ काल इत्यादि संस्कार-

तत्त्वमें लिखा है। टीपिकाके मतसे शुभग्रहके दिनमें या

रविवारमें चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, पुष्या,

अश्विनी, हस्ता, रोहिणी, उत्तरफाल्गुनी, उत्तराषाढा

और उत्तरभाद्रपदचतुर्थमें, शुभराशिसमें तथा विलग्नमें शुभ

होनेसे शान्तिक और पौष्टिक ग्रहयज्ञ करना चाहिये।

जन्मलग्नमें और गोचरमें जो ग्रह अशुभसूचक होते हैं,

ग्रहयज्ञमें उन्हींकी पूजा की जाती है। भावी अमङ्गल-

का निवारण करना ही ग्रहयज्ञका उद्देश्य है। शान्तिके

लिए जो ग्रहयज्ञ किया जाता है, उसमें समयका विचार

नहीं करना पड़ता। मलमास (लौटका महोना) आदि-

में भी किया जा सकता है, परन्तु पौष्टिक ग्रहयज्ञ शुद्ध

समयमें किया जाता है।

प्रयोग—जिस दिन ग्रहयज्ञ करना हो, उस दिन यज-

मानकी सबसे पहिले स्नान और नित्यक्रिया करके गोवर-

से लिपे हुए शुद्ध स्थानमें उत्तरकी तरफ मुंह कर कुशा-

सन पर बैठना चाहिये, फिर स्वस्तिवाचन करना चाहिये।

ब्राह्मणोंका वरण करके मङ्गलपूर्वक मन्त्रोच्चारणके साथ

साथ सफेद मरसों जेपण कर विघ्नकारी असुरोंकी दूर

करना चाहिये। इसके बाद गणाधिप और षोडश मातृ

काकी पूजा, वसोधारा और आभ्युदयिक आह करती

हैं। यजमानके अशक्त होनेसे प्रतिनिधि रूपसे ब्राह्मण

वरण कर सकते हैं। मण्डपके उत्तरपूर्वभागमें २४

अङ्गुल या एक हात विस्तीर्ण और १२ अङ्गुल या आधा

हात जंची वेदी बनानी पड़ती है। वेदीके बीचमें

लालचन्दनसे गोलाकार सूर्य बनाया जाता है, अग्निकोण-

में सफेद रंगका अर्धचन्द्राकृति चन्द्र, दक्षिणकी तरफ

द्विकोण लाल संगल, ईशानकोणमें पीला चम्पाकृति बुध,

उत्तरमें पीतवर्णका पद्माकार बृहस्पति, पूर्वमें श्वेतवर्ण-

का चौकीन शुक, पश्चिममें काला सर्पाकृति शनि, नैऋत-

कोणमें क्षणवर्णका मकराकृति राहु तथा वायुकोणमें

खन्नाकार ध्रुमवर्णका केतु बनाया जाता है। अपने गृह्य-

सम्मत विधिके अनुसार अग्निस्थापनसे ले कर ब्रह्मस्थापन

तक कर्मका अनुष्ठान कर ग्रहोंका ध्यान और आवाहन

पूर्वक यथोक्त गन्धपुष्पादि द्वारा ग्रहोंको पूजा की जाती है।

१-सूर्यको लालचन्दन, चन्द्रको श्वेतचन्दन, मङ्गल-

को कुङ्कुम, बुधको सरलकाष्ठ, बृहस्पतिको मद्दान भाग-

से मिश्रित लालचन्दन, श्वेतचन्दन, कुङ्कुम और सरल

काष्ठ, शुकको श्वेतचन्दन, शनिको कस्तूरी तथा राहु

और केतुको पद्मकाष्ठकी गन्ध देनेी पड़ती है।

२-सूर्यको गुग्गुलु, चन्द्रको सरलकाष्ठ, मङ्गलको

देवदारु, बृहस्पतिको दशाङ्ग, शुकको अशुभ शनिको

कालागुरु, राहुको टारचीनी, तथा केतुको मधुमिश्रित

टारचीनीकी धूप दी जाती है। ग्रहपूजाके बाद ग्रहके

अधिदेवता और प्रताधिदेवताकी पूजा करके ग्रहोंको

वलि प्रदान किया जाता है

३-सूर्यको गुड़ोदन, चन्द्रको सरलकाष्ठ, मङ्गल-

को पक्क यवचूर्णका यावक, बुधको चीराग्न, बृहस्पतिको

दध्योदन शुकको घृतादन, शनिको यव और तिलतण्डुल-

की मिचरो, राहुको कागमांस, केतुको बकरीके दूधकी

ग्वीरके साथ अजकणेरक मिश्रित यव और तिलतण्डुल

दिया जाता है।

इसके बाद चरुपाक कर कुण्डिका मसापनपूर्वक

रवि आदि ग्रहोंका चर्चहेम किया जाता है। यथाशक्ति

जप और मधु व घृतयुक्त समिधमें होम करना पड़ता है।

समिध—सूर्यको अकवन, चन्द्रको पलाश, मङ्गलको

खदिर (कल्येका पेड़), बुधको लटजोरा, बृहस्पतिको

पौपल, शुकको उदुखर, शनिको अग्निगर्भा (यमी या

छिन्नुर), राहुको दूब और केतुके लिए कुशाकी लकड़ी-

से अग्नि जलाई जाती है। (ग्रहयागत्य)

मत्स्यपुराणमें लिखा है कि, ग्रहवेदीके पूर्वोत्तर

कोणमें एक भरा हुआ घड़ा रख कर, उसे दहो, अक्षत,

फल, वस्त्रयुगल, पञ्चरत्न, पञ्चभङ्ग और आमके पत्तोंसे

सुशीमित कर फिर उस पर गज, अश्व, अश्विनौ, वल्मीक,

सङ्गम और गोशालाको सिद्धी तथा यजमानके स्नानके

लिए सर्वौषधि निक्षेप की जाती है।

यहाँके अधिदेवता—सूर्यका इंद्र, चन्द्रमाकी उमा, मङ्गल
का स्कन्द, बुधका इंद्रि, वृहस्पतिका ब्रह्मा शुक्रका इन्द्र,
शनिका यम, राहुका काल और केतुका चित्रगुप्त ।

घड़ोके प्रत्यक्षदेवता—सूर्यका अग्नि, चन्द्रमाकी जल, मङ्गल
का चित्ति, बुधका विष्णु, वृहस्पतिका इन्द्र, शुक्रकी
शची या इन्द्राणी, शनिका प्रजापति, राहुका सर्प और
केतुका ब्रह्मा । (मन्थपु० २१५)

ग्रहध्यान—मन्थपुराण और ग्रहयागतत्त्वके मतानुसार—

सुव ध्यान—

“सविद्य काम्ये रत्नं कालिङ्गं शाश्वतुलम् ।

पद्ममण्डपं पूर्वात्न भस्माभ्युपसृजम् ।

सिद्धिं धिमेव स य इन्द्रप्रथमधिदेवतम् ॥”

बुधका ध्यान—

“मासु वेद्याभ्येयं फलमानं मिताम्बरम् ।

भूते हिताय धरन् नक्षिणं मण्डपतरुम् ॥

दृग्वायं येतन्मन्त्रं विधित्वोमाधिदेवतम् ।

जनप्रथमिदेवस्य स योऽन्माद्रियेत् तथा ॥

मङ्गलका ध्यान—

“सामन्व्यं सतिष्ठं ब्रह्म मीयस्य चतुर्दशम् ।

चारुमाल्यभरणं मारुताजं चतुर्भुजम् ॥

नक्षिणार्धेऽङ्गमाच्छिन्निभराभयमशङ्करम् ।

सामिन्त्रं सिंहाय नमः तद्वदेव समाह्वयेत् ॥

सन्ध्याध्यायेन ध्यायेत् सितिप्रथमिदेवतम् ॥”

बुधका ध्यान—

“मास्यं द्वाभ्यामेव योगे पतिं चतुर्भुजम् ।

बाहोर्ध्वेऽक्षतन्त्रं मण्डपमण्डपं निरुम् ॥

सूर्याय निरु रत्नं सोम्यं पीतवस्त्रं तयाह्वयेत् ।

मातापिताधिदेवस्य विष्णुप्रथमिदेवतम् ॥

वृहस्पतिका ध्यान—

“विष्णुसामिन्त्रं पीतं मेघवस्त्रं चक्रं गुणम् ।

ध्यात्वा पीताम्बरं शोभं सुवचस्यं चतुर्भुजम् ॥

दक्षोऽङ्गं चक्रं चक्रं शोभाह्वयेत् ।

ब्रह्माग्निदेवस्य सूर्याग्निं द्रव्यमधिदेवतम् ॥”

शुक्रका ध्यान—

‘ शुक्रं भास्वरं विद्मः सासु चक्रं त्रयभुजम् ।

पद्ममण्डपं दधेत् सूर्याय नमः चतुर्भुजम् ॥

सोमं चक्रं चक्रं शोभाह्वयेत् मिताम्बरम् ।

सामिन्त्रं पीतं ध्यायेत् सोमं प्रथमिदेवतम् ॥”

शनिका ध्यान—

“सौराष्ट्रं काम्यं यद्दत्तं सूर्याय चतुर्भुजम् ।

तृष्णुं कृष्णाम्बरं यद्दत्तं शौरिं चतुर्भुजम् ॥

तद्वद्वत्पुत्रं यद्दत्तं शोभं समाह्वयेत् ।

यमाधिदेवस्य मन्त्रापतिप्रथमिदेवतम् ॥”

राहुका ध्यान—

“राहुं सप्तदशं यद्दत्तं पीताङ्गं त्रयभुजम् ।

कृष्णं कृष्णाम्बरं सिंहाय नमः ध्यात्वा तयाह्वयेत् ॥

चतुर्भुजं तद्वद्वत्पुत्रं यद्दत्तं शोभं समाह्वयेत् ।

सामिन्त्रं पीतं सूर्याय सप्तप्रथमिदेवतम् ॥”

केतुका ध्यान

“कौमदीयं केतुगणं कौमिनीयं पञ्चभुजम् ।

धूमं यद्दत्तं यद्दत्तं माद्रोऽङ्गं त्रयभुजम् ॥

सूर्याय धूमं यद्दत्तं नमः सितं तथा ।

धियं प्रथमिदेवस्य ब्रह्मप्रथमिदेवतम् ॥”

विष्णुधर्मोत्तरमें यहाँके अधिदेवता और प्रत्यक्षदेवता
के ध्यान लिखे हैं । जानना ह्यो तो उस ग्रन्थकी देवना
चाहिये ।

यहाँकी देवता—सूर्यको दक्षिणा कपिलाधेनु है । दान-
मन्त्र इस प्रकार है—

“कपिले सर्वभूतानां पुण्योपासि रोहिणे ।

स्वर्गवशी यथात्तं यानि प्रथमं मे ॥”

चन्द्रकी दक्षिणा शङ्ख है । दानमन्त्र इस प्रकार
है—

‘ पुण्यं शङ्खं पुण्यलाभं यथात्तं स गन्तुम् ।

निष्कं विभूतशक्तिं तदात्तं शान्तिं प्रथमं मे ॥’

मङ्गलकी दक्षिणा है—भार टोनिवान्ना मानर गका
वैल । दानमन्त्र—

“धनं स इवदेव जगदानन्ददायक ।

चष्टुत्तरविधानमगं शान्तिं प्रथमं मे ॥”

बुधकी दक्षिणा है—स्वर्ण । दानमन्त्र—

‘ विष्णुसाम्यं यद्दत्तं चक्रं शोभाह्वयेत् ।

चक्रं यद्दत्तं सितं यानि प्रथमं मे ॥’

वृहस्पतिका दक्षिणा—पीतवस्त्र । दानमन्त्र—

‘ पीतवस्त्रं यद्दत्तं सितं यानि प्रथमं मे ॥’

शुक्रकी दक्षिणा—धूम । दानमन्त्र—

“विष्णुसाम्यं यद्दत्तं चक्रं शोभाह्वयेत् ।

चक्रं यद्दत्तं सितं यानि प्रथमं मे ॥’

शनिकी दक्षिणा धेनु है । दानमंत्र—

“यथात्वं शयिवी सर्वा ध नः श्रेयससन्निभा ।
सर्वपापहरा नित्यमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥”

राहुकी दक्षिणा अयम है । दानमन्त्र—

“यथादायसकर्माणि तवाधोदानि सर्वदा ।
सांगनादायुधादोमि तपाच्छान्तिं प्रयच्छ मे ॥”

केतुकी दक्षिणा—अज । दानमन्त्र—

“यथात्वं सर्वयज्ञानां सन्तुष्टे न वावर्षियतः ।
दानं विभादसौ नित्यमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥”

ग्रहोंको सन्तुष्ट करनेके लिए गाय, पलङ्ग और भूमि दान करनेका भी विधान है । सब तरहके ग्रहयज्ञमें अयुक्त जोस करना पड़ता है । अभीष्ट कामनाको पूर्तिके लिए नारद जप किये जाते हैं ।

ग्रहयज्ञ समाप्त होने पर पूर्णाहुति दे कर पूर्वस्थापित पूर्णकुम्भसे चार ब्राह्मण यजमानको स्नान कराते हैं ।

स्नानका मन्त्र इस प्रकार है—

“सुरास्नानमिमिषन्तु प्रप्रविशन्तु देवरा ।
वासुदेवो जनत्रायन्मघा शदर्षो विशुः ॥
प्रथम्ययानिरुहय मवन्तु विजशाय नै ।
आखण्डनोऽग्निर्म गथान् यसां वे निरुत् तिषथा ॥

वदन्तः पयस्ये त भवाऽश्वत्थमा जिपः ।
प्रज्जना सद्वितः श्रेयो दिव्यान्वाद्यामवन्तु मे ॥
कोर्ति लंको सुतमे भा पुष्टिः दत्ता श्रिया मतिः ।
सुदिनं च्छा तपुः नीति मृष्टि कान्तिद्य भारतः ॥
एशास्नाममिषियन्तु पयं पदः समानताः ।
कारिष्यन्तमा भीमो वृषभासो सितार्थे यः ॥
सुदान्वास्नाममिषियन्तु राहुः ईश्वर तपि ताः ॥
ईश्वरानुभवसर्वां शस्यन्तु पयस्यताः ।
अथवा सुमयो गावो देवसात्वर यव व ॥
दे गपत्त्या दृमा भाग दे श्वासात्वरणी मयाः ।
यथायि सभं गान्वादि राजाने वाश्रयानि अ ॥
शोषयानि य मन्नादि कामकावयवाद्ये ।
सरिताः मानराः देवाभोर्दीम कन्दाम्बदाः ।
एते स्नानमिषियन्तु सर्वशामार्थेमिहये ॥”

स्कन्दपुराणमें लिखा है कि, ग्रहोंकी जन्मभूमि, गोत, अग्नि, वर्ण और मुख आदिको बिना जाने ही शास्त्रि करनेसे ग्रहगण अपमानित होते हैं । इस लिए उमका कुछ फल भी नहीं होता, अतएव शान्ति करनेसे पहिले ग्रहोंकी जन्मभूमि आदि भी जानना आवश्यकीय है । ग्रहोंकी जन्मभूमि आदि जाननेका सरन तरीका नीचे दिया जाता है—

नाम	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	शुक्र	बृहस्पति	शनि	राहु	केतु
जन्मभूमि	कलिङ्ग	यमुना	अवन्तो	मगध	सिन्धुव	नोजकट	माराट्ट	वज्रैरज	अन्तर्वेदी
शेत	कश्यप	अत्रि	भरद्वाज	अत्रि	अङ्गिरा	भृगु	कश्यप	पैठनमि	जैमिनि
अग्नि	कपिल	पिङ्गल	धूमकेतु	जाठर	शिखी	झाटक	महातेजा	हुताशन	हुताशन
विष्णुदिवर्ग	क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	वैश्य	विप्र	विप्र	शूद्र	शूद्र	शूद्र
दर्ग (रूप)	रक्त	शुक्ल	रक्त	पीत	पीत	शुक्ल	कृष्ण	कृष्ण	चित्त
मण्डलमेस्थान	मध्य	पूर्वदक्षिण	दक्षिण	पूर्वोत्तर	उत्तर	पूर्व	पश्चिम	दक्षिणपश्चिम	पश्चिमोत्तर
दृष्टि	ऊर्ध्वदृष्टि	अधोदृष्टि	दक्षिणदृष्टि	वामदृष्टि	वामदृष्टि	ऊर्ध्वदृष्टि	अधोदृष्टि	दक्षिणदृष्टि	दक्षिणदृष्टि
आकार	गोल	अर्धचन्द्र	त्रिकोण	चाप	पद्म	चतुष्कोण	सर्प	मकर	खड्ग
वाहन	समाश्वरथ	दशाश्वरथ	मेघ	सिंह	हस्ती	घोड़ा	गृध्र	सिंह	गृध्र
सृष्टिद्रव्य	ताम्र	स्फटिक	श्वेतचन्दन	स्वर्ण	स्वर्ण	चाँदी	लोहा	सीसा	काँसा
गन्ध	लालचन्दन	श्वेतचन्दन	लालचन्दन	कुङ्कुम	कुङ्कुम	श्वेतचन्दन	कस्तूरी	कस्तूरी	कस्तूरी
पुष्प	कानेर	कुमुट	जवा	चम्पा	पद्म	मालती	चमेली	कुन्द	चमेली
धूप	शुगुल	घृताक्त	सर्जरसयुक्त	पीला अगुरु	दशाङ्ग	घृतयुक्त	विल्वागुरु	पद्मकाष्ठ	यक्षधूप
यतान्तरमे धूप	कुंदरु	घृताक्षत	सर्जरस	पीलाअगुरु	सिन्धुज	विल्वागुरु	शुगुलू	लाख	लाख
फल	अङ्गूर	ईख	सुपारी	नारङ्गी	जम्बीरोनीवू	बीजौरा	जायफल	नारियल	अनार
वस्त्र	रक्त	श्वेत	रक्त	पीला	पीला	श्वेत	कृष्ण	काला	चित्त

नाम	गुरु	चंद्र	मंगल	शुभ	शुक्र	बृहस्पति	शनि	राहु	केतु
रत्न	माणिक्य	मोती	सूगा	पत्रा	पुखराज	हीरा	नीलक	नोहितमणि	वेदुर्यमणि
वनि	गुडौटन	छतपायस	यावक	कीरयष्टिक	दधौदन	छतौदन	कमर	अजमाम	चित्रात्र
ममिध	अकवन	पलाश	कल्याण	पेड़	लटजोरा	पोपल	उदुम्बर	शमी	दुर्वात्रय
दक्षिणा	कपिलाधेनु	शङ्ख	नाल	बैल	स्वर्ण	पोतवस्त्र	श्वताश्व	क्षयधेनु	खड्ग
जपमठ्या	६०००	१००००	७०००	१७०००	१६०००	२००००	१८०००	१८०००	७०००
अधिदेवता	शिव	उमा	स्कन्द	नारायण	ब्रह्मा	इन्द्र	यम	काल	चित्रशुभ
प्रत्यधिदेवता	अग्नि	जल	चित्ति	विशु	इन्द्र	इन्द्राणी	प्रजापति	सर्प	ब्रह्मा

यज्ञमान अर्थात् जिसके त्रिए ग्रहयज्ञजा अनुष्ठान किया जाता है, उसको वेदके अनुसार वैदिक मन्त्र द्वारा ग्रह, अधिदेवता और प्रत्यधिदेवताका होम करना पड़ता है। भिन्न भिन्न वेदमन्त्रके आदिके कुछ शब्द और किस वेदमें किस जगह वृह मन्त्र लिखा है उसके चिह्न नीचे लिखे जाते हैं—

सूर्यके होममन्त्र। ऋक—“आहृष्णीण रजसा ।” १३५२; यजु—“आहृष्णीण रजसा ।” (वा०) १४०, साम—“उदुत्य जातवेदस” ११११३११, अथर्व—“विषामहि षष्ठमान” १७१११ ।

चन्द्रके होममन्त्र। ऋक—“आप्यायन्व मनेतुते १६११६, यजु—“इम देवा असपत्र” (वा०) ८४०, साम—“सन्ते पर्यासि” (वा०) १२११३, अथर्व—“शक्रध म नक्षत्राणि” ६१२२१ ।

मङ्गलके होममन्त्र। ऋक—“अग्निमूर्धा दिा” ८४४१६; यजु—“अग्निमूर्धा दिव” (वा०) ११२०, साम—“अग्निमूर्धाग्निव” ११११३१७, अथर्व—“त्वया मन्यो सरयम्” ४३१११ ।

बुधके मन्त्र। ऋक—“अग्ने विवस्वत्” १४४१ यजु—“उद्बुध्यस्वाम्ने” (वा०) १५५४; साम—“अग्ने विवस्वत्” ११११४१, अथर्व—“यद्राजानोविभजन्ता” ३२६११ ।

बृहस्पतिके मन्त्र। ऋक—“बृहस्पते परिदीया” १०१०३३, यजु—“बृहस्पते अतिवदथ्य” (वा०) २६३; साम—“बृहस्पते परिदीया २६३१२१, अथर्व—“बृहस्पतिर्न परिपातु” ७५१११ ।

शुक्रके मन्त्र। ऋक—“शुक्र ते अन्त्यत् १५०११; यजु—“अन्त्यात् परिस्रुत” (वा०) १६७५; साम—“शुक्र तेअन्त्यत् ११११४३, अथर्व—“हिरण्यवर्णा शुच्य १३३११ ।

शनिके मन्त्र। ऋक—“शत्रोदेवीरभोष्टये” १०६१४, यजु—“शत्रोदेवीरभीष्टये” (वा०) ३६१२; साम—“शत्रो ” २१११३१३, अथर्व—“महस्त्र वाहु पुरय” १६६११ ।

राहुके मन्त्र। ऋक—“कयानश्चित” ४३१११; साम—वैसा ही, यजु—“काण्डात् काण्डात्” (वा०) १०११०, अथर्व—“दिश्य चित्र मृत्तुधा” ।

केतुके मन्त्र। ऋक—“केतु हणवकेतवे” १६३; उमा ही यजु में है—(वा०) २६१७, साममें उमाही—२१३१२३, अथर्व—“यस्ते पृथु स्तानतिवु” ७११११। ग्रहाधिदेवताके होमके मन्त्र। इंद्रके मन्त्र। ऋक—“गौरैर्मिमाय” ११६४४१, यजु—“श्रीयते नक्षत्रोद्य” (वा०) ३१२२; साम—“आपोहिष्ठा” २६२१०१; अथर्वमें ऐसा ही है—१५१११ ।

२ उमाके मन्त्र। ऋक—“आवी राजानम्” ४३११; यजु—“व्रभ्यक यजामहे” (वा०) ३६०; साम—११११२७ अथर्व—मनोविदन विव्याधिन.” ११६११ ।

३ स्कन्दके मन्त्र। ऋक—“कुमार माता” ५२११; यजु—“यदकन्द प्रथमम्” (वा०) २६११; साम—“श्वीना पृथिवी” (वा०) ३०२१; अथर्व—“अग्नि-रिव मापोल्लिपित” ४३११२ ।

४ हरिके मन्त्र। ऋक—“इद विश्वविधक्रमे” १०२१७७ साममें भी ऐसाही है—१३११३६; यजु—“विश्वोरराटममि” (वा०) ५२; अथर्व—“प्र तद्विश्वु भावते” ७२६१० ।

५ ब्रह्माके मन्त्र। ऋक—“त्वमित् सप्रथा” ८०११५ यजु—“आ ब्रह्मन् ब्राह्मण” (वा०) २२०२, साम—“त्वमित्प्रथा” ११११४५; अथर्व—“ब्रह्मज ज्ञानम्”-४११११ ।

६ इन्द्रके मन्त्र । ऋक्—“इन्द्रं वो विखतः” १।७।१० ; यजुः—“सजोपा इन्द्रः” (वा०) ७।३७ ; साम—“इन्द्रमित् देवतातये” १।३।२।१७ ; अथर्व—“इन्द्रे मं प्रतरं” ६।५।२।

७ यमके मन्त्र । ऋक्—“यमाय सोमं सुनुत” १।०।१।४।३ ; यजुः—“यमाय त्वाङ्गिरस्वते” (वा०) ३।८।६ ; साम—“आय गौः पृथिसः” २।६।१।१।१ ; अथर्व—“यः प्रथमं प्रवतमामसाद” ६।२।८।३।

८ कालके मन्त्र । ऋक्—“ब्रह्मज ज्ञान” ; साममें क्षी ऐसा है—१।४।१।३।६ ; यजुः—“कार्पिरसि समुद्रस्य” (वा०) ६।२।८ ; अथर्व—“रोहितः कालः” १।२।२।३।६।

९ चित्रगुप्तके मन्त्र । ऋक्—“उपो वाजं हि” १। ४।८।११ ; यजुः—“चित्रावमो स्वप्ति (वा०) ३।१८ ; साम—“चित्र इच्छिगोः” १।१।२।२।२ ; अथर्व—“आज्ञातं यदनाज्ञातम्”

प्रत्यधिदेवताओंके मन्त्र । १ अग्निके मन्त्र । ऋक्—“अग्निं दूतं वृषीमहे” १।१२।१ और साममें १।१।१।१।३ ; यजुः—“अग्निं दूतं पुरोदधे” (वा०) २।२।२७ ; अथर्व—“समास्त्वान्ने ऋतवः” २।६।१।

२ जलके मन्त्र । ऋक्—“अप्सु मे सोमः” १।२।३।२० ; यजुः—“आपो हिष्ठा” (वा०) १।१।५० ; साम—“उदुत्तमं वरुण पाशम्” (वा०) १।२।१२ ; अथर्व—“शन्नो देवोरभीष्टये” (वा०) ३।६।१२।

३ चित्तिके मन्त्र । ऋक्—“स्योना पृथिवि” १।२।५।२५ ; यजुः (वा०) ३।५।२१ ; साम—“पृथिव्यन्तरोक्षम्” (तै० आ०) ७।७।३ ; अथर्व—“भूमि मातर्निधेहि” १।२।१।६३।

४ विष्णुके मन्त्र । ऋक्—“महस्त्रशोर्पा पुरुष” १।०।८।०।१ ; साममें भी ऐसा है ; यजुः—“इदं विष्णुर्विचक्रामे” (वा०) ५।१।५ ; अथर्वमें भी ऐसा है—७।२।६।४।

५ इन्द्रके मन्त्र । ऋक्—“इन्द्रायिन्दो मरुत्वते” १।६।४।२२ ; यजुः—“इन्द्र आसां नेता” (वा०) १।७।४० ; साम—“इन्द्रायिन्दो” १।५।२।४।६ ; अथर्व—“इन्द्र जुषस्व प्रवहा” २।५।१।

६ शचीके मन्त्र । ऋक्—“उत्तापर्णि सुभगि” १।०।१।४।२ ; यजुः—“अदित्यै रास्नासि” (वा०) १।३० ; साम—“एकाष्टका तपसे” (अ० ३।१०।१२) ; अथर्व—“प्रेतं पादौ” १।२।७।४।

७ प्रजापतिके मन्त्र । ऋक्—“प्रजापते न त्वद्” १।०।१२।१।१० ; साममें भी ऐसा है ; यजुःमें भी ऐसा है—(वा०) १।०।२०। अथर्व—“नक्तं जानस्योपधे” १।२।३।१।

८ सपके मन्त्र । ऋक्—“आयं गौः पृथिसः” १।०।१।८।१ ; यजुः—“नमोऽस्तु सपेभ्यः” (वा०) १।३।६ ; साम—“तवेन्द्रिद्रावमम्” १।३।२।३।८ ; अथर्व—“शेरभक शेरभ” २।२।४।१।

९ ब्रह्माके मन्त्र । ऋक्—“ब्रह्मजज्ञानम्” (वा०) १।३।३।८ ; यजुमें भी ऐसा ही है (वा०) १।३।३ ; साम—“एष ब्रह्मा य ऋत्विजः” १।५।२।१।२ ; अथर्व—“ये दिशामन्तर्देशेभ्यः” ४।४।०।८।

ग्रहयाग (म० पु०) ग्रहाणां यागः, ६-तत् । यद्यत्र देवा । ग्रहयामल—ज्योतिष सञ्चर्याय एक यामल ग्रन्थ । ग्रहयाव्य (स० त्रि०) ग्रह-ण्णिच्-आव्य । आहक, लेनेवाला । ग्रहयातु (स० त्रि०) ग्रह-ण्णिच्-आतु । १ आहक, ग्रहण करनेवाला । २ खरोटनेवाला, मोल लेनेवाला ।

ग्रहयुति (स० पु०) ग्रहाणां युतिः, ६-तत् । सूर्यादि ग्रहोंको स्थितिविशेषमें कल्पनीय योगविशेष । ग्रह मवदा अपनी अपनी कक्षामें रहते हुए भ्रमण करते हैं, इनका योग या मिलन नहीं हो सकता । परन्तु जब दो ग्रह ठीक समसूत्रपात होते हैं अर्थात् जब एक सूत्रमें गुंथ जाते हैं, तब वे मोतीकी तरह तरङ्गपर ठहर रहते हैं । उस समय उन्हें ग्रहयुति कहते हैं ।

सूर्यमिद्धान्तके मतमें—बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि और मङ्गल इन पांचोंका नाम ताराग्रह है । ताराग्रहके साथ चंद्र और सूर्यका योग अर्थात् समसूत्रमें स्थिति होती है । सूर्यके साथ ताराग्रह या चन्द्रका योग होनेमें उनका पूर्ण अस्त होता है । चन्द्रके साथ ताराग्रहका परस्परमें योग होनेसे, उसे ग्रहयुद्ध कहते हैं । ग्रहयुद्ध देखी, गणितको प्रक्रियाके अनुसार ग्रहोंके श्रुत या भविष्यत्के योग स्थिर किये जा सकते हैं । सूर्यमिद्धान्तके मतानुसार जिन दो ग्रहोंका योग निर्णय करना हो, उनमेंसे जो शीघ्रगामी हो उसके स्फुटसे मन्दगतिवालेका स्फुट-थोड़ा हो तो समझना चाहिये कि, कुछ दिन पछिले ही उन दोनों ग्रहोंका संयोग हो गया है और यदि शीघ्रगतिवाले ग्रहकी अपेक्षा मन्दगतिवाले ग्रहका स्फुट अधिक

हो, तो समझना चाहिये कि, थोड़े ही दिनोंमें उन दोनोंका स योग हो जायगा । दोनों ग्रहोंको स्वाभाविक गति पूर्व की तरफ हो, तब ऐसा होता है । वक्रगतित्वाने दो ग्रहोंमेंसे ग्रीष्मगामी ग्रहका स्फुट मन्दगामी ग्रहमें अधिक हो, तो दोनोंका योग भविष्यमें होता है और शीघ्रगामी ग्रहसे मन्दगामी ग्रहका थोड़ा हो तो योग हो चुका है—ऐसा निर्णय करना चाहिये । दो ग्रहोंमेंसे एककी गति वक्र और एककी मोघो होनेसे वक्रगति वालेसे पूर्वगामी ग्रहका स्फुट अधिक होनेसे योग हो गया और पूर्वगामीसे वक्रगामी ग्रहका स्फुट अधिक हो तो योग होगा—ऐसा नियम करना चाहिये ।

ग्रहयुतिके समय निश्चय करनेका तरीका—गणितवत्ता प्रयत्नी दृष्टानुसार ज्ञव चाहें तब गणना द्वारा पूर्ववत्तो और परवत्तो ग्रहयोगका समय निर्णय कर सकते हैं । जिस समय ग्रहयोगोंकी गणना करनी हो, उस समय अश्लेष ग्रहद्वयका तात्कालिक स्फुट निर्णय करके दोनोंके अन्तरकी कला करनी चाहिये । बादमें उमके दोनों ग्रहोंकी गतिको कलासे पृथक पृथक गुणा करनेसे जो दो राशि उपलब्ध होगी, उनमेंसे जिस ग्रहको गतिको कलामें गुणा करे जो राशि उपलब्ध हुई हो उस राशिको उस ग्रहके आदिमें अक्षरसे चिह्नित कर अलग रखना चाहिये । फिर दोनों ग्रहोंकी वक्रगति होने पर उनका वियोग और एकके पूर्वगामी व दूररेके वक्र होनेसे दोनोंके योगफलसे चिह्नित दोनों राशिका भाग करना चाहिये । उपलब्ध दोनों फलोंको भी यथाक्रमसे ग्रहके आदिके अक्षरसे चिह्नित करना चाहिये । स्वाभाविक गतित्वाने ग्रहोंका योग भावो हो, तो दोनों ग्रहके स्फुटमें श्वेय श्वेय आद्यक्षर चिह्नित दोनों फलोंका जोड़ देना पड़ता है और अतोत होनेसे बाकी निकालनी पड़ती है । इस प्रकार वक्रगतित्वाने दोनों ग्रहोंके भावो योगमें लभ्यद्वयका वियोग और भूत योगमें जोड़ लगाया जाता है । दो ग्रहोंमेंसे एककी वक्रगति और दूररेका सरलगति हो तो पश्चिमीकी प्रक्रियाके चतुर्गार लभ्यको अतोत योगमें स्वाभाविक गतित्वाने ग्रहमें घटाना चाहिये । फिर वक्रगतित्वाने ग्रहमें जोड़ तथा भावो योगमें वक्रगति वाले ग्रहमें घटाना और स्वाभाविकगतित्वाने ग्रहमें

जोड़ना चाहिये । इस प्रकारसे प्रक्रिया करनेसे जो दो राशि उपलब्ध होंगे उनको दोनों ग्रहोंका समकालात्मक फल कहते हैं । पूर्व प्रक्रियानुसार ग्रहके आदिके अक्षरसे चिह्नित दोनों राशिको भाग करनेसे जो फल उपलब्ध होगा, उनको दिन आदि समझना चाहिये । भूत योगका निर्णय करना हो तो गणनाके समयसे लभ्य दिनान्दि वाद दे कर जो समय हो, उस समयमें उक्त दोनों ग्रहोंका योग हुआ या—ऐसा समझना चाहिये और भावी योगका निर्णय करना हो तो गणनाके समयके साथ लभ्य दिनान्दि जोड़ कर जो समय हो, उस समयमें ग्रहोंका योग होगा—ऐसा समझे । (पृ. विद्यालय ७: १)

दृक्कम देलो ।

ग्रहयुद्ध (म० ली०) ग्रहयुद्ध युद्ध, ६ तत् । मणल आदि पाँच तारा ग्रहोंमेंसे कोई दो तारे तरजपर स्थित होनेसे, उनकी किरण आपसमें स्पर्श करती हैं, इसीका नाम ग्रहयुद्ध है । स्थितिके अनुसार ग्रहयुद्धके चार भेद हैं—उल्लेख, भेट, अश्विमर्द और अपसव्य ।

तारकास्पर्श अर्थात् भिन्न छाया मात्रसे दोनों ग्रहोंका स्पर्श हो जाना सो उल्लेख है । फल—मन्त्रोंकी पोडा ।

दोनों ग्रहोंका परिमाण यदि योगफलके अधिसे ग्रहद्वयका अन्तर ज्यादा हो ; तो उस युद्धको भेट कहते हैं । फल—धनक्षय ।

दो ग्रहोंकी किरणका सघट्ट या योग होना ; सो अश्विमर्द है । फल—भयद्वार सपाम ।

दो ग्रहोंके अन्तरका अथ अर्थात् साठ कलामें न्यून होनेसे उसको अपसव्य कहते हैं । यह युद्ध दो प्रकारका होता है—१ व्यक्त और २रा अव्यक्त । दोनों ग्रहोंके बीच में एक चण हो तो उसका अपसव्य युद्ध मनुष्योंके दृष्टि गोचर होता है, इस लिए इसका नाम व्यक्त है और इसमें विपरीत अर्थात् अणुके न रहने पर जो अपसव्य युद्ध होता है वह मनुष्योंके दृष्टिमें नहीं आता, इस लिए उसका नाम अव्यक्त अपसव्य युद्ध है ।

(अ. वि. ०१८१८)

ग्रहका क्षिताके मतानुसार तरजपर अणो अपने कक्षामें अवस्थित ग्रहोंमें अति दूरत्वनिश्चयन देखनेमें

विषयमें जो समता होती है, उसे ही ग्रहयुद्ध कहते हैं। धेदयुद्धका फल—सूखा पड़ना और मित्रों तथा कुलीनीयोंमें भद्र ग्राह्य होना। उल्लेखयुद्धका फल—शस्त्रभय, भवि-विरोध और दुर्भिक्ष। अंशुमर्दयुद्धका फल—राजविरोध, शस्त्रयुद्ध, रोग, प्रजाश्रीका भूखों मरना और दुःख पाना। अपसव्य युद्धसं राजविरोध होता है। (बृहत् ० १५१-५)

सूर्यभिडान्तके मतानुसार—अपसव्य युद्धमें एक ग्रह की जय और दूसरेकी पराजय हुआ करती है। पराजित ग्रहका लक्षण, ग्रहयुद्धके बाद जो ग्रह अव्यक्त, लुप्तविंश, दीप्तिभूय, विवर्ण और दक्षिण दिशामें देखे : उसे पराजित समझना चाहिये।

जयी ग्रहके लक्षण—ग्रहयुद्धके बाद जो ग्रह दूसरेसे स्थूल, दीप्तिमान् और उत्तर दिशामें देखे, उसे विजयी समझना चाहिये। ग्रहोंकी जय और पराजयमें जिस दिशामें उनकी संस्थिति लिखी गई है वह निश्चित नहीं है। तेजस्वी और बलवान् ग्रह उत्तर या पश्चिमसे चाहे जिस दिशामें क्यों न हो, वह जयी ही समझा जायगा। उभय ग्रहयुद्ध लक्षणाक्रान्त, दीप्तियुक्त, बलवान् और श्रामन् अर्थात् एक भाग अन्तरमें अवस्थित होनेसे जो युद्ध होता है, उसका नाम समागम है और ग्रहोंके पराजय लक्षणाक्रान्त अथवा लुप्तविंशयुक्त होनेसे यथाक्रमसे सूट और विग्रह नामका युद्ध होता है। उत्तर या दक्षिणमें अवस्थित शुक्र प्रायः जयलाभ करता है।

जो ग्रह परस्पर बहुत दूरी पर अवस्थित हों, उनका कभी भी योग नहीं होता। परन्तु समय समयमें तर-ऊपर हो जाते हैं, उस समय भूमिके दर्शकवन्द उनको युक्त सराफ लेते हैं। शास्त्रकारोंने उनहीमें ग्रहयोग अथवा अवस्थाविशेषसे ग्रहयुद्धकी कल्पना की है। मनुष्यके शुभाशुभका निरूपणही ऐसी कल्पनाओंका एक मात उद्देश्य है। (ह्यंसि० ७२०-२४ ।) बृहत्संहिताका मत है कि, ग्रहयोग वा ग्रहयुद्धमें ग्रहोंकी तीन नामोंसे उल्लेख किया जाता है,—आक्रन्द, पौर और यायी। सूर्य पूर्वाङ्गमें पौर लक्ष्माङ्गमें आक्रन्द और अपराङ्गमें यायी कहलाता है। बुध, बृहस्पति और शनि, ये सब समय पौर कहलाते हैं। इसी प्रकार चन्द्र आक्रन्द तथा केतु, मङ्गल, शुक्रे और शुक्रे ये भी सब समयमें यायी कहलाते हैं।

इन तीन जातिके ग्रहोंमेंमें कोई एक, दूसरे जातिके ग्रहसे पराजित होने पर वह नामके अनुसार आक्रन्द, यायी वा पौरोंका विनाश करता है। परन्तु पौरग्रहद्वारा अगर पौरग्रह ही पराजित हो तो पुरवासो या राजाश्रीका विनाश होता है। ऐसे ही यायी ग्रह तथा आक्रन्दग्रह द्वारा आक्रन्दग्रह पराजित होनेसे अपने अपने अधिकारोंको विनाश करते हैं। गुरुशक्ति देवी। जो ग्रह दक्षिणमें स्थित हो, रूज्म, कम्पित, टेढ़ा, झोटा, दूसरे ग्रहसे आच्छादित, विकृत और प्रभाहीन हो ; उसे पराजित तथा इससे विपरीत लक्षणवालोंकी विजयी समझना चाहिये। ग्रहयुद्धके समय दोनों ग्रह रश्मियुक्त, विपुलमण्डल और स्निग्ध होनेसे, उसे अन्योन्यप्रीति कहते हैं। ऐसा होनेसे पृथिवीके राजाश्रीकी भी युद्धके समय समता होती है। इससे उल्टा होनेसे आत्मपक्ष नष्ट होता है।

बृहस्पतिके द्वारा मङ्गलकी पराजय होनेसे वाञ्छीक, यायी और अग्निजोवियोंको कष्ट पहुँचता है। बुधद्वारा मङ्गलके पराजित होनेका फल—शूरसेन, कलिङ्ग और साख्देशमें पीड़ा होती है। शनिद्वारा मङ्गलके पराजित होनेका फल—पौरोंको जय प्रजाश्रीका अघसाट और विनाश होता है। शुक्रेद्वारा मङ्गलके पराजित होनेका फल—फौष्टागार, स्नेच्छ और क्षत्रियोंको परिताप होता है।

मङ्गलद्वारा बुधके पराजित होनेका फल - वृक्ष, नदी, तापस, अश्वकदेशके राजा और उत्तर दिशाके रहनेवालों या अश्वकोंको सन्ताप होता है। बृहस्पति द्वारा मङ्गलके पराजित होनेका फल स्नेच्छ, शूद्र, चौर, धनशाली, पुरवामी, त्रिगत और पार्वतीय मनुष्योंको पीड़ा तथा भूमिकम्प होता है। शनिद्वारा बुधके पराजित होनेका फल - नाविक, योद्धा, जलज, धनी और गर्भिणीओंका विनाश होता है। शुक्रेद्वारा बुधके पराजित होनेका फल अग्नि-कोप, अनाज, मेघ और वायियोंका विनाश होता है।

शुक्रेद्वारा बृहस्पतिके पराजित होनेका फल—कूलूत गान्धार, कैकेय, मद्र, माल्व, वक्स और वङ्गदेशके लोगोंका, गीसमूहका तथा अनाजका विनाश है।

मङ्गलद्वारा बृहस्पति पराजित हो, तो मध्यदेश,

राजा और गो समुहका क्षय होता है। बुधद्वारा वृहस्पति पराजित हो तो मन्त्र, मन्त्र आर ग्रन्थजीवी तथा मध्य देशका विनाश होता है। शनिद्वारा वृहस्पतिके पराजित होनेका फल—आर्जुनायन, वसाति, याधिय, शिवि और ब्राह्मणोका भ्रमद्गल है। वृहस्पति अगर शुककी पराजित करे, तो थोड़े याधोका विनाश, ब्राह्मण और अधि यमें विरोध, अनादृष्टि, कौशल, कलिङ्ग, बङ्ग, वल्ल, मत्स्य मध्यदेशके लाग, शूरसेनगण और नपु मर्काकी घोर पीड़ा होती है। मङ्गलद्वारा शुककी पराजय हो तो वीरोंकी मृत्यु और राजाओंमें युद्ध होता है। बुधद्वारा शुककी पराजय हो तो पावर्तीय देशमें पीडा, दूधनी हानि और थोड़े वर्षा हाती है। शनि द्वारा शुकपराजय का फल गणप्येष्ठ, ग्रन्थाजीवी, चतुर्विध और जलजीवी पोडा होती है। शुकद्वारा शनिके पराजित होनेका फल मह मो होती है तथा सर्प, पक्षी और मानियोंका कष्ट होता है। बुधद्वारा शनिके पराजयका फल—टङ्गण, अध, उड्ड, काशी और बाह्योके देशके रहनेवालोंको कष्ट होता है। बुधद्वारा शनिके पराजित होनेका फल—अह्न देश, वणिक्, विहङ्ग, पशु और सर्पोंको सन्नाप होता है। (अह्न देश १० अथाय) मङ्गल, बुध, वृहस्पति, शुक और शनि, इनके परस्परके पराजयका फल निखा गया है। नक्षत्र आदिके साथ यहके युद्धमें यहभुक्तिके समान हो फल होता है। प्रस्ताव देखा।

ग्रहयुद्धम् (स० श्लो०) यहयोर्युद्धं यत्र, बहुशो तादृशं भ कर्मधा० । जित नक्षत्रं रह कर दो यहाँका युद्ध हो जाता है। विवाह देखा।

ग्रहयोग (स० पु०) १ युक्ति देखा।

ग्रहराज (स० पु०) ग्रहाणा राजा, ६ तत् । तत् टच् । १ सूर्य । २ चन्द्र । ३ वृहस्पति ।

ग्रहवमनू—मोक्षगीव शके कान्यकुब्ज देशका एक राजा, भवन्तिवर्माका पुत्र और प्रभाकरवर्द्धनका जामाता। इन्होंने छप देवकी सहोदरा (वरुण) राज्यसे विवाह किया था। प्रभाकरवर्द्धनके मृत्युके बाद मानवराजने यह वर्माकी विनाश कर राज्यश्रीको कान्यकुब्जके कारागारमें आवद्ध किया था। १५५५ ई०।

ग्रहवर्षादिफल (स० श्लो०) ग्रहस्य वर्षादि तस्य फल,

६ तत् । १ फलित ज्योतिष शास्त्रके अनुसार ग्रहगण अवस्थानुसार क्रमय वर्षा, मास और दिनके अधिपति हुआ करते हैं। अधिपतिके भेदसे जो प्राणीगणका शुभा शुभ फल हुआ करता है, उसीका नाम ग्रहवर्षादिफल है। ग्रहवर्षादि फल यत्र, बहुश्री० । २ वह शास्त्र जिसमें ग्रहवर्षादिका फल लिखा हो, वृहत्संहिताके उद्योतवर्षा अथाय।

ग्रहवर्षा (स० पु०) ग्रहस्य वह्नि ६ तत् ग्रहके लिये स्थापित वह्नि, ग्रहके निमित्त रखी हुई आग।

ग्रहयत्र देखो।

ग्रहविप्र (स० पु०) ग्रहाचार्य, गणक या ज्योतिषी।

ग्रहक और देवक ग्रहमें हव शुकके ग्रहविप्रों का विवरण देखो।

दाक्षिणात्यके ग्रहविप्र कानियार पण्डितके नामसे प्रसिद्ध हैं, ये लोग पतित हैं। इनको उत्पत्तिके विषयमें दाक्षिणात्यमें ऐसा प्रवाद है कि, 'पान्तरभक्तरी' नामके एक ज्योतिषशास्त्रके पारदर्शी ब्राह्मण पैदल नदीकी पार कर रहे थे देवयोगसे वे उसीमें बह गये। वादमें बड़ी मुश्किलसे किनारे लग कर किसी धियारजानिके "पायल" पर (चतुर्तर पर) मो गये। घरका मानिक अपनी स्त्रीके साथ लड कर चला गया था। धियारकी स्त्रीने अपने पतिके आगमन जान दरवाजा खोला और उस ब्राह्मणको पति समझ कर घरमें ले गई। ब्राह्मण बेचारे मोता नदीमें थे, हम लिए धियारकी स्त्रीकी अभीष्ट सिद्धिमें कुछ भी वाधा न आई। जब ब्राह्मण होशमें आये तब उन्होंने अपनेको किसी स्त्रीके साथ मोते पाया। इससे उनने अपनेको पतित समझा और घर नहीं लौटे। वहाँ रह कर उस स्त्रीके साथ महवाम करने लगे। इससे थोड़े दिनोंमें उस स्त्रीके एक पुत्र पैदा हुआ। ब्राह्मणने उसे संपूर्ण ज्योतिषशास्त्र पदाया जिससे वह बालक ज्योतिषशास्त्रमें पूर्ण दन हो गया। यह "गणकान्" नामसे प्रसिद्ध हो गया, योद्धे यह शब्द अथर्व श्रुति होते हैं "कनिकान्" "कनियान्" और "कनियार" हो गया। कनियार लोग यथाचार्यका काम करते हैं। जन्मपक्षे वनाने और शुभाशुभा गणना करनेमें इनकी जीविका चलती है। यिने पारी आदि मह कार्मिक प्रारम्भ इनको पाना मो जाता है।

अगर ये सना कर दें तो कोई भी किसी कामको छोड़ता नहीं। इसी लिए दक्षिणमें कनियारोंका खूब आदर होता है। ये लोग जमीन पर खड़ियाकी रेखा करके शुभाशुभकी गणना करते हैं। इनमें बहुस्वामिक-प्रथा प्रचलित है, अर्थात्—ये लोग दो-तीन चार भाई मिल कर एक स्त्रोको ग्रहण करते हैं। कनियारोंमें बहुतमी कन्याएं अविवाहित ही रह जाती हैं। वे नार्थ्यर जातिकी कन्याओंकी तरह सम्बन्ध कर लेतीं हैं और हमसे पैदा हुई सन्तान नानाके अन्नसे प्रतिपालित होतीं है।

ग्रहवेध (सं० स्त्री०) ग्रहकी स्थिति आदिका जानना।
ग्रहनृङ्गाटक (सं० स्त्री०) ग्रहयोगविशेष। इसमें भी मानवमण्डलीका शुभाशुभ फल हुआ करता है। इसका विशेष विवरण बृहत्संहिताके २० अध्यायमें देखो।

ग्रहसमागम (सं० पु०) ग्रहाणां समागमः, ६-तत्।
चन्द्रमाके साथ मङ्गल, बुध आदि ग्रहोंका योग।
ग्रहस्वर (सं० पु०) किसी रागमें वह स्वर जिससे वह राग आरम्भ होता है।

ग्रहागम (सं० पु०) भूत मञ्चार।
ग्रहाचाये (सं० पु०) ग्रहविग्र देखो।
ग्रहादि (सं० पु०) ग्रह आदिर्यस्य, बहुव्री०। पाणिनिके मतसे सिद्ध एक धातुगण।

ग्रहाधार (सं० पु०) ग्रहाणां आधारः आश्रयः, ६-तत्।
ध्रुवनक्षत्र। इसी नक्षत्र पर ग्रहमण्डलकी अवस्थिति होनेके कारण ध्रुवका नाम ग्रहाधार पडा। (संगोल देखो)
ग्रहाधिकरण (सं० स्त्री०) ग्रहस्य अधिकरणं, ६-तत्।
आधिकरणविशेष, न्यायरूप पञ्चाङ्ग। (सोमामा २५० १५०)
ग्रहाधीश (सं० पु०) ग्रहाणामधीशः, ६-तत्। ग्रहोंके स्वामी सूर्य।

ग्रहापहा (सं० स्त्री०) गौरीचना, गौरीचन।
ग्रहामय (सं० पु०) ग्रहकृत आमय, मधुपदलो०।
ग्रहका आवेश, ग्रहपीडा। यथा मिरगो, पंठन प्रभृति।
ग्रहावमर्दन (सं० पु०) ग्रही चन्द्रसूर्यौ अवमृज्जाति
ग्रह-अव-मृद-ल्यु। १ राहु। मृद भावे ल्युट्, ६-तत्।
२ ग्रहयुद्ध।

ग्रहाग्नि (सं० पु०) ग्रहं ग्रहजन्मदोषं अग्नाति दूरी-

करोति अग्निनि। ग्रहनाशकवृक्ष मद्यपर्ण या मतीवन नामका पेड़।

ग्रहाश्रय (सं० पु०) ग्रहाणामाश्रयः, ६-तत्। ग्रहाधार देखो।
ग्रहाक्षय (सं० पु०) ग्रहान् आक्षयति ग्रह-आ-क्षे-ञ।
भूताङ्गुश नामका वृक्ष।

ग्रहिल (सं० त्रि०) ग्रहोऽस्यस्य ग्रह-कागाटिं इलच्।
निर्वन्धयुक्त। आग्रहातिशयविशिष्ट।

ग्रहीत (सं० त्रि०) ग्रहीतृ देखो।
ग्रहीतव्य (सं० त्रि०) ग्रह-तव्य। ग्रह, जो ग्रहण करने-
का योग्य हो, जो लेनेके लायक हो।

ग्रहीतृ (सं० त्रि०) ग्रह-तृच् डटो दीर्घता च। १ ग्रहण-
कर्ता, जो ग्रहण करता हो, लेनेवाला।

ग्रहेग (सं० पु०) ग्रहाणां ईशः, ६-तत्। ग्रहोंका अधिपति, सूर्य।
ग्रहीपराग (सं० पु०) ग्रहोंका ग्रहण।

ग्रह (सं० पु०) ग्रहः हविः पात्रमेत एव ग्रह स्वार्थे यत्।
यज्ञीय पात्रविशेष, यज्ञका एक पात्र।

ग्रंडोल (अं० वि०) ऊंचे कदका, बहुत बड़ा या ऊंचा।
ग्राम (सं० पु०) ग्रह ण छान्दसत्वात् ऽस्य भः। ग्रामक,
लेनेवाला।

ग्राम (सं० पु०) ग्रम्-मन् धातो रकारान्तादेशश्च।
१ लोकालय, बहुत मनुष्योंका वासस्थान, ग्राम,
गांव, छोटी बस्ती। २ स्वर्गमण्डविशेष, जिसमें पड़ज
प्रभृति सात स्वर रहे। यह ग्राम तीन प्रकारका है—
पड़ज, मध्यम और गान्धार। प्रत्येक ग्राममें सात,
सूक्ष्मनाएँ होती हैं। ३ महुात, समूह, ढेर। ४ जनपद,
अवादी। ५ शिव। ६ आसवासी, कृषक प्रभृति साधारण
मनुष्य। ७ ग्राम सदृश सहत पदार्थ। ग्रामस्येदं ग्राम-
अण्। ८ ग्राम्यधर्म, ग्रामवासीका कर्तव्य। (त्रि०) ९ ग्राम-
सम्बन्धीय, गांवके सम्बन्ध रखनेवाला।

ग्रामक (सं० पु०) ग्राम स्वार्थे कन्। ग्राम देखो।
ग्रामकाम (सं० त्रि०) ग्रामं स्वकीयत्वेन कामयति कम-
णिङ्-अण् उपपदस०। १ जो ग्राम लेनेकी कामना करता
हो। २ जो ग्राममें रहना पसन्द करता हो।

ग्रामकुक्कुट (सं० पु० स्त्री०) ग्रामे कुक्कुटः, ७-तत्। घराल
सुरगा, पालतू सुरगा। मनुके मतसे इसका मांस खाना
निषिद्ध है। (सुत ५।१८) प्रायश्चित्त देखो।

ग्रामकुमार (म० पु०) ग्रामेषु सर्वेषु कुमार सुन्दर ।
ग्रामसुन्दर, यह जिसका सोन्दर्य ग्रामके सब लोगोंसे
अधिक हो । सुवसूत लडका ।

ग्रामकुमारक (स० स्त्री०) ग्रामकुमारम्य भाव कर्म वा
ग्रामकुमार वृत् । १ ग्रामकुमारका धर्म, सोन्दर्यातिशय ।
२ ग्रामकुमारका कर्म ।

ग्रामकुलाल (म० पु०) ग्रामे कुलाल, ७ तत् । ग्राम्य
कुलाल, कुम्भकार, कुम्हार ।

ग्रामकुलालक (स० स्त्री०) ग्रामकुलालम्य भाव कर्म
वा ग्रामकुलाल वृत् । १ कुम्हारका धर्म । २ कुम्हारका
काम ।

ग्रामकूट (स० पु०-स्त्री०) ग्रामस्य कूट इव वक्षणा प्रधान
त्वात् । शूद्र ।

ग्रामकोल (स० पु०) घरालू शूकर ।

ग्रामक्रोड (स० पु० स्त्री०) ग्रामे क्रोड, ७ तत् । ग्राम्य
शूकर, पालतू सुधर ।

ग्रामरुष्ट (स० त्रि०) ग्रह वाह्यार्थं क्वपु ग्रामात् रुष्टश्च,
५ तत् । ग्रामवाह्य, ग्रामसे बहिर्गत, गाँवका बाहर ।

ग्रामरुष्टा (स० स्त्री०) ग्राम रुष्टा टापु । ग्रामके बाहर
अवस्थित सेना, गाँवके बाहर ठहरी हुई सेना ।

ग्रामगीय (स० स्त्री०) एक प्रकारका साम ।

ग्रामगोदुह (स० पु०) ग्रामे गोधुक, ७ तत् । ग्राम्य गोप,
गाँवका खाला ।

ग्रामघात (स० पु०) ग्रामस्य घात, ६ तत् । १ ग्राम्य
द्रव्यका लूटना, जस्तोके धनका लूटना । २ ग्रामवासीका
असङ्गल ।

ग्रामघातिन् (स० त्रि०) ग्रामार्थं ग्रामवासिना भक्षणार्थं
हन्तिपशून् हन् गिति । १ बहुत मनुष्योंके खानेके लिये
पशुके माकारी । २ ग्रामकी लूटनेवाला ।

ग्रामघोषिन् (स० पु०) ग्रामे क्षपके घोषोद्यम्य ग्राम
घोष इति । १ इन्द्र, देवराज । किसान वर्षाके लिये
इन्द्रकी प्रार्थना करते हैं । इस लिए उनका नाम ग्राम
घोषिन् पडा है । २ मनुष्य तथा सेनाके मध्य उत्पन्न
शब्द ।

ग्रामचर्या (स० स्त्री०) ग्रामस्य चर्या, ६ तत् । ग्राम्यधर्म,
स्त्रीका सम्भोग ।

ग्रामचैत्य (स० पु०) ग्रामस्य पवित्र हृत्त, गाँवका पवित्र
हृत्त । यथा, पीपल, बट, तुलसी प्रभृतिका गाँव ।

ग्रामज (स० त्रि०) ग्रामे जायते ग्राम जन ड । ग्राम्य
जो गाँवमें पैदा होता हो ।

ग्रामजननिष्पावी (स० स्त्री०) ग्रामजा चासौ निष्पावी
चेति कर्मधा०, पूर्वस्य पु वट्टमावच । नक्षनिष्पावी एक
तरहका धान । धान २७० ।

ग्रामजा (स० स्त्री०) खजूरहृत्त, खजूरका पेड़ ।

ग्रामजात (स० त्रि०) ग्रामे जातः, ७ तत् । ग्रामोत्पन्न,
जो गाँवमें पैदा हुआ हो ।

ग्रामजाल (स० स्त्री०) ग्रामस्य जाल, ६ तत् । ग्राम
समूह, ब्रह्मदेशमें बस्तिर्वा, जिला ।

ग्रामजानिन् (स० पु०) किसी देगका ग्रामक ।

ग्रामजित् (स० त्रि०) ग्राम सङ्गत जयति जि-क्तिप् ।
१ सङ्गत पदाथका विशेषकारी, सूकृतिव चीजकी
छितर बितर करनेवाला । २ ग्राम-जा लूटनेवाला ।
३ सेना । जीतनेवाला ।

ग्रामण (स० त्रि०) ग्रामण इद ग्रामणी अणु । ग्रामणी
सम्बन्धीय, मानिकके लगावका ।

ग्रामणी (स० त्रि०) ग्राम समूह नयति प्रेरयति ख ख
कार्थेषु ग्रामणी-क्तिप् णत्व । १ प्रधान, अगुथा । २
ग्रामका अधिपति, गाँवका मानिक । ग्राम ग्रामधर्मे
नयति प्रापयति ग्राम नो क्तिप् । ३ भोगिक, यह जो सदा
ग्रामोद प्रमोदमें लीन हो । (पु०) ४ नापित, तीथा ।
५ सेनाका मानिक । ६ विष्णु । ७ यत् । (स्त्री०) ग्रामेण
मैद्युन्व्यापारिण नयति काल । ८ वेग्या, रङ्गो ।
९ नीलिका, नीलकी गोटी ।

ग्रामणीय (स० स्त्री०) ग्रामण्य भाव ग्रामणी-त्व
कान्दमत्वात्-त्वस्य थराट्टेग । अधिपत्य, स्वामित्व, प्रभुत्व,
अधिकार ।

ग्रामणीपुत्र (स० पु०) वग्गाका पुत्र, चारज, नरामीका
जना ।

ग्रामणीय (स० त्रि०) ग्रामणीरिवाचरति ग्रामणी कश्च
कर्त्तरि अच् । ग्रामणीके महद्य, मानिकके मानिद ।

ग्रामणीमद (स० पु०) एकाङ्ग्यागमिणीय एक प्रकारका
याग जो एक दिनमें होता है ।

ग्रामतल्ल (म० पु०) ग्रामस्य तल्ला, ई-तत् । ततल्लत् ।
 ग्रामसूत्रधर, ग्रामका वड्डहो, देहातो कमार ।
 ग्रामता (म० स्त्री०) ग्रामाणां समूहः ग्राम-तल्ल ।
 १ ग्रामसमूह । ग्रामस्य भावः ग्राम-तल्ल । २ ग्रामत्व,
 ग्रामका भाव ।
 ग्रामदेवता (म० स्त्री०) ग्रामस्य देवता, ई-तत् ।
 १ ग्रामस्य माधारणसे प्रतिष्ठित देवमूर्ति, गांवके किमो
 माधारण मनुष्यसे स्थापित वी हुडे देवमूर्ति । २ ग्राम
 की रक्षा करनेवाला देवता ।
 ग्रामदेशाधिपति (म० पु०) ग्रामका अधिपति, गांवका
 मालिक ।
 ग्रामदौत्य (म० स्त्री०) ग्रामदूतस्य भावः ग्रामदूत-प्यञ् ।
 ग्रामस्य संवाद्वाहकता, वह जो ग्रामको खबर
 लाता हो ।
 ग्रामद्रुम (म० पु०) ग्रामका एक पवित्र वृक्ष ।
 ग्रामधरा (म० स्त्री०) गिरिभेद, एक पहाड़का नाम ।
 ग्रामधर्म (म० पु०) ग्रामे भवः ग्राम-अण्, ग्रामधामो
 धर्मश्चेति यहा ग्रामस्य धर्म, ई-तत् । ग्राम्यधर्म, म० युन ।
 ग्रामनापित (म० पु०) ग्रामस्य नापित, ई-तत् । ग्रामस्य
 माधारण नापित, देहातो नौथा ।
 ग्रामनिवासिन् (म० स्त्री०) ग्रामे निवसति नि-वस-
 णिनि । जो ग्राममें वास करना हो, देहातो ।
 ग्रामपाल (म० पु०) ग्रामं पालयति पालि-अण्, उपपठम० ।
 १ ग्रामरक्षक सैन्यविशेष, गांवकी रक्षा करनेवाला
 सेना । २ ग्रामाध्यक्ष, गांवका मालिक ।
 ग्रामपुत्र (म० पु०) ग्रामस्य ग्रामस्य बहुजनस्य पुत्र इव ।
 १ वह लड़का जिसको ग्रामवासी पुत्रस्त्रीहसे पालन
 करते हैं । २ देहातो लड़का ।
 ग्रामपुत्रक (म० स्त्री०) ग्रामपुत्रस्य भावः कर्म वा । ग्राम-
 पुत्रका धर्म वा कर्तव्य ।
 ग्रामप्रेष्य (म० पु०) ग्रामस्य प्रेष्यः, ई-तत् । वह जो गांवके
 सब लोगीकी सेवा करता हो, ग्रामटास । मनुके अनुमार
 ऐसे मनुष्यको यज्ञ और याज्ञ आदि कार्योंमें सम्मिलित न
 करना चाहिए । (मनु १।१५३)
 ग्रामप्रेष्यक (म० स्त्री०) ग्रामप्रेष्यस्य भावः ग्रामप्रेष्य मनो-
 ष्यादिं बुञ् । ग्रामटासका धर्म वा कर्तव्य ।

ग्रामभूत (म० पु०) ग्रामेण ग्रामस्य समूहिन भूतः भरणोयः,
 उ-तत् । वह मनुष्य जो बहुतसे मनुष्योंकी सेवा करता
 हो । ऐसा मनुष्य यदि ब्राह्मण भी हो तो अत्राह्मण हो
 जाता है । अण्डाद ई-तत् ।
 ग्राममदुरिका (म० स्त्री०) ग्रामस्य प्रिया मदुरिका
 मधुरपटनी० । यहा ग्रामस्य मदुरिकेव । १ रङ्गोमख्य,
 एक तरलकी मछली । २ ग्रामयुद्ध, गांवकी लड़ाई ।
 ग्राममहिषी (म० स्त्री०) ग्रामस्य महिषी, ई-तत् ।
 १ ग्रामकी अधिष्ठात्री, गांवकी स्वामिनी । २ ग्रामकी
 भैंस, पालनू भैंस ।
 ग्राममुख (म० पु०) ग्रामो ग्रामस्य जनो मुखमिवाप्य,
 वक्षुव्री० । बाजार, छाट ।
 ग्रामसृग (म० पु०) ग्रामस्य सृगः, ई-तत् । बुद्ध, र-
 कुत्ता ।
 ग्रामसौख्य (म० पु०) ग्रामका प्रधान व्यक्ति, मुखिया,
 अग्र्या ।
 ग्रामयाजक, (म० पु०) ग्रामस्य याजकः, ई-तत् । वह
 ब्राह्मण जो जंच नीच सभी जातिके मनुष्योंका पुरोहित
 हो । शानातपके मतमें ग्रामयाजक ब्राह्मण अत्राह्मणोमें
 गिना जाता है । अण्डाद ई-तत् । महाभारतके अनुसार ऐसे
 ब्राह्मणकी टान देनेका कोई फल नहीं होता ।
 ग्रामयाजिन् (म० पु०) ग्रामान् ग्रामस्य नाना वर्णान्
 याजयति यञ् णिच् णिनि । ग्रामयाजक इति ।
 ग्रामयुद्ध (म० स्त्री०) ग्रामस्य युद्ध, ई-तत् । युद्ध युद्ध,
 ग्रामवासियोंका आपसमें विरोध, भगड़ा, लड़ाई ।
 ग्रामरथ्या (म० स्त्री०) ग्रामस्य रथ्या, ई-तत् । वृहत्-
 ग्राम रास्ता, गांवका बड़ा रास्ता ।
 ग्रामलून्तन (म० स्त्री०) ग्रामवा लून्तना, गांवका उजा-
 डना ।
 ग्रामवत् (म० स्त्री०) ग्रामो ऽस्त्वस्य ग्राम-मनुष्य-स्य
 वः । १ ग्रामका स्वामी जिसके अन्तर्गत ग्राम हो ।
 २ ग्रामविशिष्ट ।
 ग्रामवल्लभा (म० स्त्री०) १ वैश्या, रण्डो, कसवी । २
 पालकौका साग ।
 ग्रामवास (म० पु०) ग्रामे वासः, उ-तत् । ग्राममें अव-
 स्थित, वह मनुष्य जो ग्राममें रहता हो, देहातो ।

ग्रामवासिन् (स० त्रि०) ग्रामे वसति वस णिनि ।
 ग्रामका रहनेवाला, जो गाँवमें वास करता हो ।
 ग्रामवास्तव्य स० पु०) ग्रामे वास्तव्य, ७ तत् । ग्राम
 वासी, गाँवका वासिन्दा ।
 ग्रामयत (स० स्त्री०) एक सौ ग्राम, देग, मुक्त ।
 ग्रामयतीग (स० पु०) देगका ग्रामक, मुक्तका दृकुम्भत
 करनेवाला ।
 ग्रामपण्ड (स० पु०) ग्रामे ग्राम्यधर्म पण्ड । ग्राम्यधर्म-
 रहित स्त्रीव, गाँवका धर्मज्ञान नपु सक ।
 ग्रामपण्डक (स० स्त्री०) ग्रामपण्डस्य भाव ग्रामपण्ड
 मनोज्ञादि वृज् । नपु सक्का धर्म वा कर्त्तव्य ।
 ग्रामसङ्कर (स० पु०) ग्रामकी साधारण प्रणाली, जन
 निर्गम नली ।
 ग्रामसिंह (स० पु०) कुं, कुत्ता ।
 ग्रामसुख (स० स्त्री०) ग्राम्यसुख देखो ।
 ग्रामस्थ (स० त्रि०) ग्रामे तिष्ठति स्थाक । ग्रामवासी,
 देहाती । -
 ग्रामहासक (स० पु०) ग्राम हासयति हस णिच्, खल्, ल् ।
 भगिनोपति, वहनोय, वहनका स्वामी ।
 ग्रामाचार (स० पु०) ग्रामस्य आचार, ६ तत् । ग्राम्य
 व्यवहार, गाँवकी रचन सङ्ग ।
 ग्रामाधान (स० स्त्री०) ग्रामस्य ग्रामपोषणार्थं आधीयते
 आ धा ल्युट् । मृगया, शिकार, आखेट ।
 ग्रामाधिकृत (स० पु०) ग्रामका मालिक, मुखिया ।
 ग्रामान्त (स० स्त्री०) ग्रामस्थान्त, ६ तत् । ग्रामका समीप,
 गाँवका निकट ।
 ग्रामान्तर (स० स्त्री०) नित्यकर्म० । अन्यग्राम, दूसरा
 गाँव ।
 ग्रामान्तीय (स० त्रि०) ग्रामान्ते भवः । ग्रामान्त ह् ।
 ग्रामसमोपमं उत्पन्न, वह जो ग्रामकी नजदोकरमें अवस्थित
 हो ।
 ग्रामिक (स० पु०) ग्रामे तद्रूपे नियुक्त ग्राम ठक् ।
 १ वह मनुष्य जिसे ग्रामवासी अपनी रक्षाकी निम्न अपन्ना
 प्रधान चने । २ ग्रामसम्बन्धोय, गाँवका ।
 ग्रामिक्य (स० स्त्री०) ग्रामिकस्य भाव ग्रामिक पुरो
 हितादि० यक । ग्रामिकका धर्म वा कर्त्तव्य, ग्रामाध्यक्षता ।

ग्रामिणी (स० स्त्री०) ग्रामिन् डोप । १ नीलीवृक्ष,
 नीलका गाछ ।
 ग्रामिन (म० त्रि०) ग्राम स्वामित्वेन आधारत्वेन वास्य-
 स्य ग्राम इनि । १ ग्रामस्वामी, गाँवका मुखिया । २ ग्राम
 वासी, गाँवका रहनेवाला, देहाती । ३ ग्रामधर्मयुक्त,
 जो गाँवके समस्त धर्मोंको जानता हो ।
 ग्रामिण (स० पु० स्त्री०) ग्रामे भव, ग्राम खज् । १ ग्राम्य
 कुङ्कुर, कुत्ता । २ मुरगा । ३ कौवा । ४ मूअर । (त्रि०)
 ५ ग्रामोत्पन्न, देहाती, गवार ।
 ग्रामोणा (स० स्त्री०) ग्रामिण स्त्रिया टाप । १ पालङ्क-
 शाक, पालकी नामका साग । २ नीलका पेड़ । इसका
 पयाय—नीली, नीलिनो, तृनी, कालटोला, नीलिका,
 रजनी, शोफली, तुच्छा, मधुपर्णिका, स्तोतका कालकेशी
 और नीलगुण्य ह् ।
 ग्रामीय (स० त्रि०) ग्राम ह् । ग्रामसम्बन्धोय, गाँवका ।
 ग्रामीयक (स० पु०) ग्रामीय स्वार्थे कन । ग्रामवासी
 वह मनुष्य जो गाँवमें रहता हो ।
 ग्रामेय (स० त्रि०) ग्रामे भव ग्राम ठक् । ग्रामोत्पन्न,
 देहाती, गवार ।
 ग्रामेयक (स० त्रि०) ग्रामे भव; ग्राम ठक् । ग्राम ।
 ग्रामेयी (स० स्त्री०) ग्रामेय डोप । वेश्या, कसबी,
 रण्डी ।
 ग्रामेवास (स० पु०) ग्रामे वाम, अलुक्कस० । ग्रामवास,
 गाँवमें रहना ।
 ग्रामेवामिन् (स० त्रि०) ग्रामे वसति वस णिनि, अलुक्कस० ।
 ग्रामवासी, जो गाँवमें रहता हो ।
 ग्रामोफोन (अ० पु०) एक तरहका बाजा जिसमें गीत
 आदि भरि और इच्छानुसार समय समय पर सुने जा
 सकते हैं । कोशिका देखो ।
 ग्राम्य (म० त्रि०) ग्रामे भव ग्राम य । १ ग्रामोत्पन्न,
 ग्रामवासी, ग्रामोण । २ मूठ, वैवकूप । ३ प्राकृत, अस्त्री ।
 (पु०) ४ मैथुन, स्त्री-प्रसव । ५ स्त्रीकार । ६ एक
 प्रकारका रतिवन्ध । ७ अज्ञान शब्द या वाक्य ।
 न काव्यका एक दोष । वह काव्य जिसमें गवारु शब्दोंकी
 अधिकता हो अथवा जिसमें गवारु विषयोंका वर्णन
 हो, इस दोषमें दूषित समझा जाता है । ८ मैथुन

राशि । १० रात्रिकालमें मेष और वृष राशिकी आसरा कहते हैं । (स्त्री०) ११ पशुविशेष । पैठीनसिके मतानुसार गोरू, भेड़ा, पाठा, घोड़ा, खच्चर, गदहा और वनमानुष इन सातोंको आसरापशु कहते हैं । १२ सुश्रुतानुसार एक तरहका पशु । इसके मांसका गुण—वातनाशक, वृंहण, कफ और पित्तवर्धक, मधुर, दीपन और बलकार है ।

ग्राम्यकान्द (सं० पु०) ग्राम्यश्चासौ कान्दश्चेति, कर्मधा० । कान्दविशेष, वनशूल ।

ग्राम्यककटी (सं० स्त्री०) ग्राम्या चासौ कर्कटीचेति, कर्मधा० पुं० वद्भावश्च । कुष्माण्ड, कुम्हड़ा ।

ग्राम्यकमनू (सं० स्त्री०) ग्राम्यस्य प्राकृतस्य कर्म, ई-तत् । मैथुन, स्त्रीप्रसंग ।

ग्राम्यकुक्कुट (सं० पु०) पालतू मुरगा ।

ग्राम्यकुङ्कुम (सं० स्त्री०) ग्राम्यश्च तत् कुङ्कुमश्चेति, कर्मधा० । कुसुं० वपुष्प ।

ग्राम्यकोशा (सं० स्त्री०) हस्तिकोशातकी, एक तरहका पेड़ ।

ग्राम्यगज (सं० पु०) पालतू हाथी ।

ग्राम्यता (सं० स्त्री०) ग्रामस्य भावः ग्राम्य-तल् । १ जव-न्यता, निकृष्टता, नीचता । २ असभ्यता, गंवारपन, नाशा इस्तगी । ३ अश्लीलता, गन्दापन, भद्दापन ।

ग्राम्यदेवता (सं० स्त्री०) ग्रामदेव देखो ।

ग्राम्यधर्म (सं० पु०) ग्राम्यस्य प्राकृतस्य धर्मः, ई-तत् । मैथुन, स्त्रीप्रसंग ।

ग्राम्यधर्मिन् (सं० त्रि०) ग्राम्यधर्मोऽस्त्यस्य ग्राम्यधर्म-इनि । ग्राम्यधर्म विशिष्ट, जो मैथुनमें रत हो ।

ग्राम्यपशु (सं० पु०) नित्यकर्मधा० । पशुविशेष ।

ग्राम्य देखो ।

ग्राम्यबुद्धि (सं० त्रि०) मूढ़, गंवार ।

ग्राम्यमहुरिका (सं० स्त्री०) ग्राम्या चासौ महुरिकाचेति, कर्मधा० पुं० वद्भावश्च । शृङ्गीमत्स्य, एक तरहका मछली ।

ग्राम्यमांस (सं० स्त्री०) पालतू पशुका मांस ।

ग्राम्यमृग (सं० पु०-स्त्री०) ग्राम्यश्चासौ मृगश्चेति कर्मधा० । कुङ्कुर, कुत्ता ।

ग्राम्यराशि (सं० पु०) ग्राम्यश्चासौ राशियेति, कर्मधा० । मिथुन प्रभृति कई एक राशि । ग्राम्य देखो ।

ग्राम्यवराह (सं० पु०) वरालू मूअर ।

ग्राम्यवल्गुभा (सं० स्त्री०) ग्राम्यस्य वल्गुभा, ई-तत् । १ पालङ्कशाक पालकी नामका भाग, ग्राम्य अश्लील वल्गुभां प्रियं यस्याः, बहुव्री० टाप । २ वेश्या, कसबी, रण्डी ।

ग्राम्यवादिन् (सं० त्रि०) ग्राम्यं वदति वद-णिनि । जो ग्राम्यशब्द बोलता हो, अश्लीलशब्द बोलनेवाला ।

ग्राम्यशूकर (सं० पु०-स्त्री०) ग्राम्यश्चासौ शूकरश्चेति, कर्मधा० । ग्राम्यवराह, पालतू मूअर । इसका संस्कृत पर्याय—विडुवराह, ग्रामोण, ग्रामक्रीड, ग्रामकील, विष्फल और दारक है । इसके मांसका गुण—गुरु, मेट, बल और वीर्यवृद्धिकार है ।

ग्राम्यसुख (सं० स्त्री०) १ मैथुनसुख । २ ग्रामवासियोंका सुख ।

ग्राम्या (सं० स्त्री०) ग्रामे भवा ग्राम-यत्-टाप् । १ नीलका पेड़ । २ तुलसी वृक्ष । ३ निष्पावो, मटर ।

ग्राम्यायनि (सं० पु०-स्त्री०) ग्राम्यस्थापत्यं ग्राम्य-निकादिं फिज् । प्राकृत मनुष्यकी सन्तान ।

ग्राम्याश्व (सं० पु०) नित्यकर्मधा० । गर्दभ, गधा ।

ग्राम्योदक (सं० स्त्री०) ग्राम्यजल, गाँवका पानी ।

ग्रावग्राभ (सं० पु०) ग्रावाणमभिषवणपाषाणं स्तुत्या गृह्णाति ग्राव-ग्रह-अण-हस्यभः उपपदस० । ऋत्विज् विशेष ।

ग्रावन् (सं० पु०) १ पत्थर । २ ओला, विनोरी । ३ पर्वत, पहाड़ । ४ मेष, बादल । (त्रि०) ५ दृढ़, मजबूत ।

ग्रावरोहक (सं० पु०) ग्रावणि रोहति रुहण्वुल्-७ तत् । अश्वगन्धका वृक्ष ।

ग्रावस्तुत (सं० पु०) ग्रावाण स्तौति स्तु क्तिप्, ई-तत् । सोलह ऋत्विजोंमेंसे तेरहवाँ ऋत्विज जिसे अच्छावाक भी कहते हैं । अच्छावाक देखो ।

ग्रावस्तौल (सं० पु०) ग्रावस्तुत देखा ।

ग्रावस्तौत्रिय (सं० त्रि०) ग्रावस्तौत्रस्येदं ग्रावस्तौत्र घ ।

ग्रावस्तौत्र सखन्धीय

ग्रावस्तौत्रैय (सं० त्रि०) ग्रावस्तौत्राय हितं ग्रावस्तौत्र-क । ग्रावस्तौत्रका हितकार ।

यावहस्त (म० पु०) प्राचा अभिपन्नमाधन पापाणा इन्तो
 ५५५ बहुरो० । यन्मि एक ऋत्विक् जिमके हायमें अभि
 पवका पत्थर रक्ता है ।
 यावायण (म० पु०) एक प्रवरका नाम ।
 यावारो (म० पु०) एक प्रवारका पत्थर ।
 यास (म० पु०) प्रच्यते प्रम कम णि घञ । १ कीर
 निवाला, एकवार सुखमें चितना भोजन डाला जाय । २
 पकड़नेको क्रिया, पकड़, गिरफ्त । ३ सूर्य या चन्द्रमाका
 ग्रहण लगना । ४ दण्ड, घाम ।
 यामक (म० प्रि०) १ पकड़नेवाला । २ निगलनेवाला ।
 ३ छिपाने या बानेवाला ।
 यामकट (म० पु०) घाम काटनेवाला, घसियाटा ।
 यासना (वि० क्रि०) १ पकड़ना, धरना, निगलना ।
 २ कट देना, मताना ।
 यामगन्ध (म० स्त्री०) प्रासे गन्ध, ७ तत् । यामस्थित मख्यादि
 का काँटा, काँरेमें मछलीका काँटा, जो निगलनेके समय
 गलेमें अटक जाता है ।
 यामीकृत (म० वि०) 'यामसी याम' कृत याम-च कृत् ।
 जो निगला गया जो ।
 याह (म० पु०) १ प्रहण, पकड़ । २ ज-चर जन्तुविशेष,
 मगर, घड़ियाल । ३ प्रहण, उपराग । ४ ज्ञान, यज्ञ ।
 ५ प्राग्रह, अनुरोध, ईश, जिद । ६ स्वीकार । (वि०)
 यह ण । ७ प्रहोता प्रहण करनेवाला । ८ शिशुमार ।
 याहक (म० पु०) प्रहण करनेवाला । १ ज्येनपक्षी, बाज चिहिया ।
 २ विपदार्थ, गरोरेमें प्रविष्ट विपकी चिकित्साएँ द्वारा
 दूर करनेवाला रथ । ३ चौपतिया नामका माग । ४
 एक तरहका पौध जिसमें सेवन करनेमें पतला दस्त
 बन्द हो जाता पर्यं यथा पैवाना होने लगता है । (वि०)
 ५ प्रहोता, प्रहण करनेवाला । ६ मील लेनेवाला, खरीद
 टार । यह णिच । ७ प्रापक चाहनेवाला ।
 याहलोमगा (म० स्त्री०) बध ।
 याहयत् (म० प्रि०) यानी इत्यत्र याह मातृप मध्य म ।
 याहविमिन्, मगरके मटग
 याहि (म० स्त्री०) गृह्णाति म्याधिन् पुरुषं यह वाचनकात्
 इत् । प्रहणमाना, य-पदरुपा देयता ।
 याहिका (म० स्त्री०) सिद्धलीका तीमगावन ।

याहिन (म० पु०) यह णिनि । १ कपित्थ, काँय । (वि०)
 २ मलवन्धकारक, मल रोकनेवाला । ३ याहक, ग्रहण
 करनेवाला । ४ प्रतिकूल, उच्छटा ।
 याहिणी (म० स्त्री०) याहिन डौप । १ सुदूरुरानभा,
 छोटी जवामा, धमामा, हि शुवा । २ ताम्बूना हव,
 चीरिणी, छिरनी । ३ ज्वेन लज्जावती ।
 याहिकल (म० पु०) याहि मलवन्धक फल यस्य,
 बहुलो० । कपित्थवृक्ष, कौवका पेड़ ।
 याहिक (म० वि०) याह व-पुनकात् उकड । ग्रहणमानो,
 पक-ने योग्य ।
 याह्य (म० वि०) यह ख्यन् । १ जिमका ग्रहण करना
 उचित हो, लेने लायक । २ स्वीकार्य स्वीकार करने
 लायक अहोकार करने योग्य । ३ उपादेय । ४ अर्थ,
 जानने योग्य । ५ अस्त्रवैतस ।
 योक (म० वि०) १ यूनान देशम यन्मी यूनान देशका ।
 (स्त्री०) २ यूनान देशकी भाषा । (पु०) ३ यूनान
 देशका निवासो । मी० यो ।
 श्रीनगैण्ड—यमेरिका महाद्वीप और आइसलैण्ड नामक
 द्वीपके बीचमें अवस्थित एक बड़ा द्वीप । इसका सर्व
 दक्षिण मोरामें फ्रेंचपोपेलिन् अन्तरोप अक्षा० ५६ ४८
 उ० और देशा० ४३ ५४ प में अवस्थित है । इसका
 उत्तराग हमेशा बरफसे ढका रहता है । इस द्वीपके
 उत्तर पूर्व कूलमें अक्षा० ७८ में एडामण्डन नामक
 स्थान और पश्चिममें मार्चिसन साउण्ड तक आविष्कृत
 हो गया है । प्राय समस्त पश्चिमकूल दृष्टिग, मोल्लन्दाज
 और दिनेमारक नाविकों द्वारा पुढातुपुदरूपसे आनोदित
 हुआ है । परन्तु इसका पुव उपकूल अनाविष्कृत है ।
 समस्त द्वीपकी जनगणना या वृहत् पूर्वतत्पण भी
 कहा जा सकता है । इस प्रदेशकी एक ममुद्रउपकूल
 वर्तो मौमा ऊचा सममान और अनुवर है । कूलके
 किनारेमें लक प्रन्तरागि ऊचे पयतक आकारमें तथा
 तुइयुद्गादिमें परिणत हो गई है । ये गिराएँ प्राय ६०
 मील दूर ममुद्रमें दीगती हैं । इसकी पश्चिम मोरामें
 समभावसे उत्तरपश्चिम और दक्षिण पूर्वका पार गड
 है । दक्षिण और पूर्व उपकूलके कुछ प मोमें लगभग अन्त
 म्यन्पवाही ममुद्रकी खाई देहमें जाती है । जन गण

योंमें कोई-कोई प्रायः १०० मील तक स्थानको और प्रविष्ट हुई है।

इस पार्वतीय स्तूपके जिम स्थान पर उपत्यका है, उसके पासकी ऊँचाई प्रायः २००० फुट होगी। इसके सिवा पर्वत शिखरोंकी उच्चता प्रायः ४००० फुट होगी। ये ऊँचे स्थान हमेशा बरफसे ढके रहते हैं। होपका पूर्वांग बरफसे ढकी हुई अधित्यका भूमि है। नदीगर्भ और पर्वतादि बरफसे ढके कार समतल बरफ-क्षेत्रमें परिणत हो गये हैं। इस लिए लोग ऐसा अनुमान किया करते हैं कि, ग्रीनलैण्ड बरफका स्तूप है। पश्चिमांगके बरफसे ढके हुए स्थानमें दो एक शिखर टीख पड़ते हैं। किन्तु उस पर वृक्ष लतादि कुछ भी नहीं हैं; हाँ पास जानसे एक तरहकी छोटी घास अवश्य टिखलाई देती है। पश्चिममें अक्षा० ६२° से ६३° उ० में समुद्रके किनारे प्रायः २० मील तक पानीके ऊपर ऐसी उम्हा (देखने लायक) बरफ जमा करती है, कि जिमसे किनारे का काम चले। दिनेमारवासी उस स्थानको "आइस विल्ड" कहते हैं।

ग्रीनलैण्डके परिमरमें बहुतसी प्रणालियाँ हैं, जिमसे बर्फ छुद्र छुद्र हीपपुञ्जमें खण्डित हो गया है। वर्तमानमें "प्रिन्स क्रिश्चियन साउण्ड" के सिवा सभी प्रणालियाँ बरफसे ढकी गई हैं।

ग्रीनलैण्डके चारों तरफका समुद्र कुछ आश्चर्यजनक है। उत्तर केन्द्रसे तुषारागारको साथ ले कर समुद्र-स्रोत—कुछ इस हीपके पूर्वांगमें हो कर और कुछ डेभिस प्रणाली तक प्रवाहित हो कर फोरओयेल अन्तरीपमें १२० से १६० मील दूरके समुद्रमें आ कर मिलता है। जब समुद्रसे हवाका चलना शुरू होता है, तब दक्षिण और पूर्व दिशाकी खाइयोंमें बरफ जम कर टुकड़े हो जाती है। उस समय दिनेमारोकी औपनिवेशिक जहाज आदि कुछ भी किनारे नहीं लग सकती। फोरओयेल अन्तरीपके पास तथा पश्चिम कूल पर नेल्सोस्वर माससे बरफ-स्रोतका झाना बन्द हो जाता है और फिर जनवरी माससे पहलेकी तरह बह निकलता है। यह स्रोत क्रमशः दक्षिणकी तरफ जा कर औपसागरिक स्रोतमें परिणत हो जाता है।

ग्रीनलैण्डके निम्नप्रदेशमें वहाँके अधिवासी और

दिनेमारोका घास है। इसके सिवा उत्तरांगमें मर्मा जगह इतना शीत है कि वर्षा आदमी जाते ही मर जाता है। फरवरी और मार्च मासमें इतना अधिक शीत पड़ता है कि, उस समय पहाड़ फट जाते हैं तथा घरेमें आग जनाते रहने पर भी अट्टरक शीतल ही कर जम जाता है। जुलाईके मर्मेनेमें यहाँ विन्तुल ही बरफ नहीं गिरती। जून मासमें थोड़ा थोड़ा बरफ गलता रहता है। अग्रे लेमें अगस्त तक यहाँ घोर कुहरा होता है और समय समय पर थोड़ा पानी भी बरसता है। उत्तर केन्द्रस्थ नोसगिरे नामक उज्ज्वल आनोकमय पर्वत (Aurora-borealis) सब ऋतुओंमें विशेषतः शीतऋतुमें अचे-चाकत साफ दोग्वता है।

यहाँ फसल अच्छी नहीं होती। इसके दक्षिणांगमें आलकी खेती होती है। यरोपीय मूनी, छोटे छोटे गोविन्धा कभी कभी अण्डकी तरहके छोटे छोटे गानधाम लेते हैं। यहाँ एक तरहकी भाड़ो देगनेमें आते हैं जिमका फल तृंत-फल जैसा सुखादु है। जुनिपाग, उइलो, वार्च और एल्डार वृक्ष कभी मनुष्यसे ऊँचे होते नहीं देखे गये।

ग्रीनलैण्डके लोग बकरी पाला करते हैं। शीतऋतुमें खाद्यके अभावमें बकरियोंकी संख्या घट जाती है। गृहपालित जन्तुओंमेंसे एस्कुइमो जातिके लोग कुत्ते पालते हैं। यहाँ पहाड़ी हिरण, खरगोस, शृगाल और सफेद भानू जङ्गली अवस्थामें दिखलाई देते हैं। वेफिन प्रणालीके पास सिन्धुघोटकोंका वास है। मकरमें ही एस्कुइमो जातिका समस्त अभाव दूर हो जाते हैं। मकली पकड़ना ही ग्रीनलैण्डवासियोंकी प्रधान उपजीविका है। डेभिस, वेफिन आदि प्रणालियोंमें बहुत तिभि मत्स्य देखनेमें आते हैं।

१८५२ ई०में ग्रीनलैण्डकी स्वाभाविक अवस्थाका निरूपण करनेके लिए भूतत्त्वविदोंके एक समूहने कोपेनहेगनसे इस देशमें आगमन किया। उनके मतसे ग्रीनलैण्डके सभी पत्थर ग्रेनाइट, निस, पोरफिर, कोचड्युक्त और भस्म सम्बन्धी पत्थरोंसे गठित है। डिस्कोहीपमें कोयलेकी खानें और इसके उत्तरांगमें बहुमूल्य ताँबेकी खानें हैं। इसके अलावा यहाँ सीसा, "एसबेष्टस", सार्पेण्टाइन

गान्धे और दानेदार कांच-पत्थर मिलता है। मि० मर्चिमनसे लिखा है कि, १८५३ ई०में कप्तान इन्नलफिटडने अरबा ७७ ल०में बैसा पत्थर देना है

८७० ई०में गुनविघोरन नामक आइसलैण्डवासी किसी व्यक्तिने पहले ग्रीनलैण्डके उपकूल देखा। एरिक् रोडा नामके एक व्यक्ति जो कि आइसलैण्डके राजा अथविन्ड्र हारा कुछ दिनोंके लिए राज्यमें निकाला गया था, गुनविघोरन-आविष्कृत उक्त देशमें रहने लगा। गुनविघोरनने इसका घोर्नलैण्ड नाम रख कर इसके विषयमें बहुतमो वार्ताका प्रचार किया। इसके बाद फिर १८६६ ई०में एरिक्ने अपने देशके कुछ आदिमियोंको लेकर यहा उपनिवेश स्थापन किया। तदनन्तर और भी कुछ लोग ग्रीनलैण्डके दक्षिणागम जा बसे।

घोर्नलैगडके लोग ईसा वर्षमें दोचित है। ११२१ ई०में मि० आनटड पहले पहल विश्वप् हो गये थे। १४०६ ई०में घोर्नलैण्ड दक्षिण और पश्चिमागमें २८० यार्डमें विभक्त हो गया। १५८५ ई०में डेभिस साहबने घोर्नलैण्डका पुन आविष्कार किया। १६०५ ई०में दिनेमारके राजा ४४थं खूट्टीयनेन घोर्नलैण्ड जय करनेके लिए मो सेनापति गोडविन्क निनडनेको तीन युद्ध-जज्ञान दे कर रवाना किया। १८-१९ ई०में दिनेमारके राजा ६८ फ्रेडारिकके आदेशमें कप्तान ग्रे घोर्नलैण्डका पर्यवेक्षण कर पाये। ये साहबने उक्त द्वीपके दक्षिण पूर्वमें ६५ १८ ल० अचांग तक आविष्कार किया। इसके बाद किसी जातिकी वास करते नहीं देखा गया।

दिनेमारके उपनिधेगके जाद यह द्वीप उपारनाधिक भूमि नाक याकीयमाभम, मृष्टीयनगायर इगोडिस, मिग्रे, गडाभन, हनटिनवर्ग, सुकारटोपन, गठप्रायय, फिस्कारनेगट, फेडारिकगायर और तुनियानगायर आदि कई एक जिलोंमें विभक्त हो गया है।

घोर्नलैण्डके लोग ताम्रवर्ण, परन्तु इनके मिरके बाल राब ग्याह है। शरीर दि गना, नाक चपटी और ओठ मोटे होते हैं। ये विग्नमघातक होती है। किसीमें दुग्मना होने पर उरुका प्रतीकार जिये जिना इनमें जियता नहीं रफा पाता। ये विनक्षण यनगानी और

धीर्य हृत्तिमें अत्यन्त पटु है। शीतऋतुमें ये समुद्रतीरस्थ पर्वतकी गुहाओंमें जा कर रहते हैं। उस समय गुहाए एक एक ग्रामरूपमें परिणत हो जाती हैं। कहीं कहीं मगरमच्छके चमडेके तम्बूओंमें भी रहते हैं। तिमि मच्छकी हड्डीमें शिशुककी खाल मड कर ये उसके दरवाजे बनाते हैं। देशमें उत्पन्न कोमल शैवालदाम इनकी शय्या है। इनमें मन्तानका छेह अत्यन्त प्रबल होता है।

घोर्नलैण्ड इस समय दिनेमारके अधीन है। इसके दक्षिण और पश्चिम भागमें प्राय दो मो टिनेमार रहते हैं। ये शिशुकका चिमडा, सि धुवोटक और जल गै डाके दातीकी युरोपके नाना देशोंमें बेचा करते हैं।

घोवा (म० स्त्रो०) गौर्यते उनया ग्ट वन् निपातने माधु। १ कन्धरा, गर्दन इसका मस्कृत पर्याय—गिरोधि, कन्धि, गिरोधरा और कन्धरा है। २ मन्था, गटनकी नस।

घोवाच (म० पु०) ऋषियिगेय, एक ऋषिका नाम।

घोवाघण्टा (म० स्त्रो०) घोवाघा घण्टा, ७ तत्। घोवा स्थित घण्टा घोडेकी गर्दनमें लटकता हुआ घंटा।

घोवारोग (म० पु०) घोवाजातरोग, गलेका रोग।

घोवाविल (म० स्त्री०) घोवाघा विलम्, ६ तत्। घोवाके अन्तर्गत गर्त, गर्दनके भीतरका गडहा।

घोवास्थि (म० स्त्री०) गर्दनकी हड्डी।

घोविन् (म० पु० स्त्री०) प्रगप्ता घोवा अस्त्यस्य घोवा-इति। १ उद्ग, जट। (त्रि०) २ दीर्घ घोवायुक्त, जिसके गर्दन लंबो हो।

घोष (म० पु०) श्रमते रमान् श्रम मक। १ गरमोकी ऋतु, गरमोका समय। इसका पर्याय—उष्णक, निदाघ, उष्णीपगम, उष्ण, उष्मागम, तप, घर्म, तापन, उष्णागम और उष्णकाल है। प्राचीन पण्डितोंके मतमें ऋषि ऋषि और आषाढ ये ही दो मास गरमो ऋतु माना गया है, किन्तु आधुनिक ऋतुनिर्णायकगणके अनुसार वैशाख और जेठ ही घोष ऋतु है। २ उष्ण, गरम।

घोषकर्कटो (म० स्त्री०) घोषजकर्कटो, घोषऋतुमें होने वाली कज्जी या कज्जुं।

घोषका (म० स्त्री०) पुष्पविशेष, मजिका, नैवारोका फूल।

ग्रीष्मकाल (सं० पु०) ग्रीष्मऋतु, गरमीका मोसिम ।

ग्रीष्मकालीन (सं० त्रि०) जो ग्रीष्मकालमें उत्पन्न होता हो ।

ग्रीष्मज (सं० त्रि०) ग्रीष्मे जायते ग्रीष्म-जन-ड । ग्रीष्म-जात, गरमी समयमें उत्पन्न होनेवाला ।

ग्रीष्मजा (सं० स्त्री०) ग्रीष्मज-टाप । १ लवनीवृक्ष, हर-फरीका गाछ । २ नवमल्लिका, नेवारिका फूल ।

ग्रीष्मधान्य (सं० स्त्री०) ग्रीष्मे जातं धान्यम् धान्यविशेष ।

ग्रीष्मपुष्पी (सं० स्त्री०) ग्रीष्मे पुष्यं यस्याः, बहुव्री०, ग्रीष्म-पुष्प-डोप । करुण पुष्पवृक्ष, करवौर फूलका गाछ ।

ग्रीष्मभवा (सं० स्त्री०) ग्रीष्मे भवति भू अच्-टाप । १ नव-मल्लिका, नेवारिका फूल । (त्रि०) २ ग्रीष्मजात, जो गरमी कालमें पैदा होता हो ।

ग्रीष्मसुन्दर (सं० पु०) ग्रीष्मे सुन्दरः, ७-तत् । शाकविशेष, एकतरहका साग ।

ग्रीष्मसुन्दरक (सं० पु०) ग्रीष्मे सुन्दर इव कायते शोभते कै-क । यद्वा ग्रीष्मसुन्दर स्वार्थे कन् । एक तरहका साग । इसका गुण—तिक्त, लघु, कफ और पित्तदोष-नाशक तथा रुचिकर है ।

ग्रीष्महास (सं० स्त्री०) ग्रीष्मे हासो विकाशो यस्य, बहुव्री० । इन्द्रतुला, रूईका बीज, कपास ।

ग्रीष्मो (सं० स्त्री०) १ लोध्रवृक्ष, लोधका पेड़ । २ नव-मल्लिका, नेवारिका फूल ।

ग्रीष्मी (सं० स्त्री०) ग्रीष्मः कालः कारणत्वे नास्त्यस्य ग्रीष्म-अच्च गौरादित्वात् डोप । नवमल्लिका, नेवारिका पुष्प ।

ग्रीष्मोद्भव (सं० त्रि०) ग्रीष्म उद्भवोऽस्य, बहुव्री० । १ ग्रीष्मजात, जो ग्रीष्मकालमें उत्पन्न होता हो । (स्त्री०)

२ नवमल्लिका, नेवारिका फूल ।

ग्रीस—युरोपकी दक्षिण-पूर्व सीमाका एकराज्य और बाल्कन प्रायोद्वीपका अन्तिम दक्षिण भाग । इसको हिन्दीमें यूनान भी कहते हैं । इसके उत्तरको युरोपीय तुर्कस्थान और पूर्व-दक्षिण तथा पश्चिम ईजियन, मेडिटरेनियन और इयोनियन सागर है । (प्राचीन) अक्षांश ३५° से ४०° उत्तर मध्य पुराना ग्रीस राज्य स्थापित था । इसकी उत्तर सीमा इलिरिया और मकदूनियाका राज्य थी । ग्रीसके उत्तर-पूर्व कोणस्थ थेसलीसे ओलिम्पास पर्वत

और उत्तर-पश्चिमस्थ एपिरास राज्यके निकटसे एको-सारीवनीय पर्वत परस्पर विस्तृत हो उक्त दोनों राज्योंको पृथक् रखते हैं ।

आरिष्टलने अपने निज ग्रन्थमें एपिरामवासी पुराने 'ग्रीकाई' लोगोंका उल्लेख किया है । किसी समय इन लोगोंने ग्रीसके पश्चिम कूल पर्यन्त पहुँच करके वासस्थापन किया और इटली देशवासियोंने उक्त जातिके नाम पर ही देशका नाम भी 'ग्रीस' रख लिया । यूनानी ग्रन्थोंमें पूर्वकथित सीमान्तवर्ती प्रदेशको 'हेलास' लिखा है । प्राचीन ग्रीस राज्यसे हेलास अधिक विस्तृत रहा । हेलास शब्दसे 'हेलेनिस' लोगोंका बोध होता है । इसी कारण अफ्रीकाका साइरेन राज्य, एशियाखण्डका मिले-टास और सिसिली द्वीपका सिराक्यूज प्रभृति सभी यूनानी उपनिवेश इसी हेलास राज्यके अन्तर्भूत रहे । हिरोदतसने लिखा है कि मिसरपति आमसिमने यूनान राजको बहुतसा उपद्वीकन और साइरेस, लिनडास तथा श्यामाम द्वीप दान किया था ।

भूगोलवित् पुराने यूनान राज्यको दो भागोंमें विभक्त करते हैं । उत्तरांशमे थेसली, एपिरास, अकाटनानिया, इटोलिया, लोक्रीश (ओपानटियाल, एपिकनेमाडिया एवं ओजालियान), डोरिस, फोसिग, विशोटिया, मेगा-टिश और आटिका प्रभृति छोटे छोटे राज्य थे । दक्षिणांश पिलोपनिसास कहलाता है । लाकीनिया, मे मोनिया, आर्केडिया, एलिश, आरनेलिश, एकिया, सिकिओनिया और करिन्य आदि लुद्र लुद्र विभागोंमें उक्त दक्षिण राज्य बंटा है ।

उपद्वीपके पूर्वांशमें अवस्थित इजीय सागरका द्वीप-पुञ्ज यूनानके अधिकारमें रहा । सिवा इसके भूमध्य सागरका रोडस, साइप्रास और साइक्लेडिज द्वीपावली थी । इसके दक्षिणांशमें सिधेरा (वर्तमान सेरिगो) और क्रोट द्वीप रहा । पश्चिममें आयोनीय सागरस्थ करसिरा (वर्तमान करक्यू), सिफालोनोय और इयाका था । एतदुच्यतीत सिसिली द्वीपमें और दक्षिण इटालीमें और एशिया माइनरमें ग्रीक उपनिवेश रहा । यूनानियोंके एशिया अधिकारमें आइयोनोय राज्य ही प्रधान था । इफेसिस नगरमें इस राज्यकी राजधानी रही ।

३२११—कहते हैं कि मिस्र राज्यको उन्नतिके साथ ही खूटजन्मसे प्राय १८०० वसत्र पहले ग्रीस राज्यका इतिहास आरम्भ हुआ है। किन्तु ई० ८८४ से पहलेका समुद्राय जाण्ड गय पैसा समझ पडता है।

यूनानो काथ्यम लिखा है कि पहले उक्त राज्यके पर्वत गुहादिमें पेलासगो नामक असभ्य लोग रहते थे। वह कपडोंके बदले जङ्गलो जन्तुओंके चमड़ेसे अपना अङ्ग आच्छादन करते थे। यूरेनेस नामक मिस्रके राज पुत्रने ग्रीस देशमें जा टिटान नामक राक्षसके घर अपना विवाह किया। फिर इन्हीं टिटानोंने विद्रोही हो उनकी राज्यच्युत बनाया। यूरेनेसके पुत्र मिटारनने राज्यभार लिया और बापकी भाति दुरदृष्टमें पडनेके भयसे अपने लहकोंकी मार डालनेका आदेश दिया था। किन्तु उनकी पत्नीने तत्वपुत्र जुपिटरको चुपकेसे ले जा क्रीट द्वीपमें लालन पालन किया। वय प्राप्त होने पर जुपिटरने पिताकी राज्यसे हटाया और विद्रोही टिटानोंको दबाया तथा राज्यसे निकाला था।

जुपिटरने अपना राज्य भाई नेपचुन और झुटोकी बांट दिया। वह बड़े विलक्षण भावसे राजकी शासन कार्यकी देख भाल करते थे। धिमेनोके निकटवर्ती ओलिम्पस पर्वत पर उनका विचार भवन रहा। ग्रीककाथ्यम मिटारन आदि देवता जैसे वर्णित हुए और ओलिम्पस पर्वतके शिखर देश देवताओंके वासभवन जैसे ठहराये गये हैं। दर्शनशास्त्र चर्चाके बहुकाल पीछे भी सिटारन, जुपिटर प्रभृति जातीय देवता जैसे पूजे जाते रहे हैं।

इसके बहुत पीछे किसी समयको एशियाखण्डसे हेलेनिस लोग जा करके ग्रीसमें बसे थे। पेलासगो लोगोंके मेलमें रहनेसे किसी समय समस्त ग्रीसवासी हेलेनिस नामसे अभिहित हुए।

पाश्चात्य भूतत्ववित् कहा करते हैं कि वही हेलेनिस नामक यूनानो प्राचीन आर्यशाखा अभूत है। जिस प्रकार भारतके आर्योंने सप्तमिन्धुके उत्पत्तिस्थानसे क्रमग दक्षिणामिस्र भारत आ उपनिवेश स्थापन किया। यूनानियोंने भी मध्य एशियाख्य आदि वासस्थान छोड़ करके सुदूर पश्चिम समुद्रतीरे यूनान देशमें पहुच करके वास लिया है। बहुत पुराने समयकी मध्यएशियामें

आर्योंके साथ ग्रीक लोगोंके पूर्वतन आदि पुरुष रह करते थे। उस समय आर्य और ग्रीक दोनों एक ही भाषा बोलते थे। बहुतसी गताव्दियाँ जोत चुकी, वह परस्पर सम्बन्धस्व मिच्छन्न करके अपने अपने निर्दिष्ट पथमें जा पडे हैं। देशभेद, आचारभेद और विभिन्न लोगोंके सम्प्रयसे उनको पुरानी अवस्था और भाषा बटल गयी है। इतना परिवर्तन रहते भी उनकी पुरानी भाषामें ऐसे बहुतसे शब्द मिले हैं, कि पाश्चात्य विद्वान् दोनोंको एक आर्य जाति समूह जैसा माननेमें कुण्ठित नहो होते। भाषा देखो। बात यह है कि ग्रीक और आर्य एकवर्ग सम्भूत ही या न हों सिन्धुतोरवासो प्राचीन आर्याके प्रथम अवस्थामें भारतके आदिम अधिवासी दस्यु, असुर प्रभृति असभ्य लोगोंके साथ सर्वदा युद्ध विग्रहमें लिप्त रहनेको तरह पुराने यूनानियोंने भी ग्रीस देशसे पेलासगी नामक लोगो को दमन करके नाना स्थानोंमें आधिपत्य फैलाया था।

हेलेनिस लोग अपने रहनेके स्थानकी 'हेलाम' कहते थे। ग्रीसका अधिकांश पर्वतमय, बन्दुर और नदीहीन है। इसमें नदीमालक धिसेली नामक जनपट ही कुछ उपजाऊ था। सुतरा यहाके लोग थोडा बहुत सुख पाते, दूसरे स्थानोंके लोग उपयुक्त साहारादिके अभावसे कष्ट उठाते थे। इसीसे वह अपने सुखवर्धनार्थ धीरे धीरे नाना स्थानोंको जाने लगे।

इनमें दूसरे भी कई एक श्रेणी विभाग रहे। उसमें डोरिय इथोलीय और आर्योनीय प्रधान थे। इनकी कथित भाषाका कुछ अर्थ मिलते भी परस्पर अनेक्य रहा, सुतरा वह स्वतन्त्र भाषा जैसो समझो जातो थी।

ई०से १८५६ वर्ष पहले इनाकाम नामक कोई फिनीकीय परिव्राजक स्वजातिके साथ ग्रीस देखने पहुचे और पिनीपिनिसामके निपोनो उपसागर कुनमें आर्यम नामक एक नगरी स्थापन की। उक्त घटनाके ३०० वर्ष पीछे ई०से १५५६ वर्ष पहले मिस्रवासो मित्रपलने जा करके आटिका प्रदेशमें उपनिवेश और अधिन्तमें महानगरो बसायी थी उन्हींमें अमथ्य आटिका वामिर्नाको बहुतमो विद्याएँ पढायी और अपनेको उनकी राजा जैसा बत लाया। उन्हींमें अपने पायतोय आवामको रक्षाके लिये

आथेनी नामक ग्रीक देवी स्मृतिंकी स्थापन किया था। फिर लाटिन लोग आथेनी नामके बदले मिनार्भा नामसे उसे पूजने लगे। उक्त आथेनीदेवीके नामानुकरण पर भी आथेन्स सहानगरीका नामकरण हुआ है। फिनिकीय लोगसे ही यूनानियोंको मिस्र देगजा सम्बन्धन लगा और उन्हींके यत्नसे इन्होंने समुद्रमें पोतपरिचालनकोशन तथा वाणिज्य विपद्यादि सोख लिया।

ग्रीस और पिलोपनिसासके मध्यवर्ती योजकके बीच कोरिन्थ नगर समुद्रके उपकूल पर ई०से १५२० वर्ष पहले बना था। लाकोनियाकी राजधानी विख्यात स्पार्टा वा लेसिडेमन नगर उसी वर्ष लेलेक्स नामक जनैक मिस्र-वामी कर्तृक स्थापित हुआ।

ई०से १४६३ वर्ष पहले फिनिकीयवामो काडमासने थियोटियाका थेबिस नगर बसाया था। इन्हींने मत्रसे पहले यूनानियोंको अक्षरलिखनेका ढङ्ग सिखलाया।

ई०से १४५५ वर्ष पहले इनायुस नामक कोई मिस्र-वामी खटलके भाय आर्गस नगर पहुँचे और वहाँके अविवासियों कर्तृक राजपद पर अभिषिक्त हुए।

एक शताब्दी पीछे ई०से प्रायः १३५० वर्ष पूर्वको फ्रेजियाराजपुत्र पेलपस ग्रीसके पिलपनिसास विभागमें जा करके वसे और वहाँकी राजपुत्रीका पाणियग्रहण करके राजमिंहासन पर बैठ गये।

होमर-लिखित द्रय युद्धके सेनानायक माइकिनीराज आगामे मनन और स्पार्टाराज मानिलास दोनोंने पेलपसके वंशमें जन्म लिया था। उस समय हेलिपगट और इजीय सागरके तीर द्रय वा इलियस नामक कोई राजधानी-रही। द्रय-राजकुमार पारिसने घटनाक्रमसे ग्रीस देशको जा करके कुछ काल स्पार्टाके मानिलासकी सभामें अतिवाहित किया था। स्पार्टाराजके अनुपस्थिति कालको पारिस स्पार्टाको राजमहिषी हेलनके रूपमें सुगंध हुए और उन्को ले करके द्रयराज्य भाग गये। मानिलासने राजधानी लौट करके पारिसके दुर्व्यवहारको कथा सुनी और रौद्रस्मृति धारण कर ली। उन्होंने ग्रीसके समस्त राजाओंको द्रयराजके विपक्षमें उभाड़ा था। कोई अनुमान करता कि उक्त घटना ई० ११८४ वर्ष पहले हुई थी।

माइकिनीराज आगामे मनन, इयाकांति राजा प्राञ्ज यूनिमिस, पाइन्सके राजा नेटर, थेमेलोके राजपुत्र आकिनिम, सलामिसके आजाकम्, इटोनियाके ओमिडिम, क्रीटके इटोमिनियाम आदि बहादुरोंने बटला लेनेकी स्पार्टाराजका पत्रावलम्बन किया था। लगभग १२०० अर्णवपोत और एक लाख लोग द्रय ध्वंस करनेकी चल पड़े। द्रयराज प्रायम विपक्षकी गति रोकनेकी एगिया माइनर थेम, अमोरिया आदिके राजाओंका साहाय्य लिया था। १० वर्ष बराबर द्रयमें लड़ाई हुई। इस युद्धमें दोनों और सैकड़ों योद्धा खेत रहें। फिर अथोप चेष्टाके पीछे ग्रीक लोग जोते, द्रय नगर विध्वस्त हो गया। इसी आख्यायिका पर सुप्रसिद्ध कवि होमरने 'इलियड' नामक बहिया काव्य बनाया है।

लड़ाई जोतने पीछे बहृत छोड़े लोग ही ग्रीस लौट सके थे। महात्मा यूनिमिसने युद्ध बन्द होने पर बहुतसे टापुओंमें घूम फिर करके कोई १० माल पीछे ग्रीसको प्रत्यागमन किया। उनके भ्रमण वृत्तान्त पर होमरने 'ओडेसी' नामक काव्य लिख डाला।

द्रययुद्धके समय ग्रीसकी स्त्रियां अम्र शस्त्र ले करके राज्यरक्षा करती थीं। अनेक रमणियां परपुरुषों पर आसक्त हो गयीं। ग्रीक-सेनापति आगामे मनन दोर्वकाल पीछे स्वराज्यको लौट तो आये, परन्तु शान्तिसे बैठने न पाये। उनकी मन्त्रिणी भी परपुरुष पर आसक्त हो गयी थीं। उस भ्रष्टाने अति घृणित भावसे पतिको मार डाला और उनके पुत्र अरेटिसको लोगोंने देशसे निकाला। कुछ दिनों पीछे अरेटिसने आर्गस पहुँच अपनी माता और उसके प्रणयियोंको विनाश करके पैतृक राज्य उद्धार किया।

द्रय युद्धके प्रायः ८० वर्ष पीछे ग्रीसमें एक दारुण विद्रोहान्त भड़का था। उस समय चारक्यूलिसके वंशधर पिलपनिसासके सब स्थान अधिकार कर बैठे। माइकिनी वा आर्गसके राजपुत्र सबके सब निर्वामित हुए। ई०से ११०४ वर्ष पहले चारक्यूलिस-पुत्र हेलारसके प्रपौत्र तेमेनास, क्रोसफण्टिस और अरिष्टडिमास लोगोंके साहाय्यसे आर्केडिया छोड़ करके पिलपनिसासका अधिकांश अधिकार किया था। उसमें तेमेनास,

प्रागैस और क्रोमफिगम मेमिनोयाके राजा हुए। अरिष्ट डिमामने युद्धमें प्राणत्याग किया था। उनके पुत्र यरिस्थि निम और प्रोक्लिमने स्यार्टा राज्य वांट लिया।

ई०स १०० वर्ष पहले पिलपनिमीयोंने आटिका आक्रमण किया था। उस समय आथेसराज नेट्रुपेन अपना जीवन उत्सर्ग करके राज्यको रक्षा को।

इसके कुछ समय पीछे क्रोट्रमके वैर्टिम राज्य पर गृहविवादका सूत्रपात हुआ। उसमें आथेसवासियोंने एककाल राजपद उठा करके क्रोट्रमके बड़े लड़के मिट्रन को प्रजा साधारणके प्रधान व्यक्तित्व जैसा चुना था। क्रोट्रम के दूमरे दो लड़केनि कई आथेसवासियोंके साथ एगिया माइनर पहुँच करके उपनिवेश स्थापन किया। यहाँ पहले उन्होंने १२ नगर बनाये और प्रेट्रेगका नाम आइयो दिया रख दिया। इसी आइयोन शब्दमें फारसोका यूनान और मस्कृतका यवन शब्द निकला है। आइयोनियाके ग्रीक भी पूर्वकालकी भारतवासियोंके निकट यवन कहलाते थे। वसन्त ऋतु, उस समय ग्रीक लोग एगिया और युरोपके नाना स्थानोंमें जा करके उपनिवेश लगा रहे थे।

पाश्चात्य पुराविदोंके मतमें उसके बाद समय ग्रीस साम्राज्य तीन भागोंमें विभक्त हुआ। प्रथम उत्तर ग्रीस द्वितीय पिलपनिमाम और तृतीय द्वीपपुञ्ज था। साइक्रेडिम, स्पेरोडिम और यूविया आदि द्वीप भी उसमें लगते थे। उत्तर ग्रीसके दक्षिण करिन्थ उपसागर, उत्तर तुर्कस्थान, पूर्व इजोय सागर और पश्चिमको आइयोनिय रुमुड है। इसी राज्यके अन्तर्भूक्त एकामोनिया और इटो निया राज्य पश्चिम ग्रीस, डोरिस, फीसिग विथोटिया, आटिका, मेगारिस, लोकरी तथा पानतियाइर्याका राज्य एवं स्पार्किाकी उपत्यका पूर्व ग्रीस कहलाती है।

उत्तर ग्रीसका अधिकांग स्थान पहाडी है। उसमें इटा नामक पर्वत की प्रधान है। यह पूर्व उपरून यूरिया प्रणालीके तटमें क्रमान्वयमें पश्चिमाभिमुखकी धटोनियाको टिमकेमटाम पर्वत श्रेणियोंमें जा मिलता है। डीचमें एमरोपोटामम उपत्यका, इटा पर्वत, फरनानिया और एपिराम पर्वतके साथ उसका मिलान होन सका। इटा पर्वतकी दक्षिणगामी शाखा फोसिगके पारनामिस और करिन्थ उपसागरके उत्तरक्रममें अवस्थित पहाडमें

मिल गयी है। ग्रीस विभागके दक्षिण पूर्व दिशुको फेनि कोन, मिडिरोन और पारनिग पर्वत है। गेपोक्त पर्वतने आटिकामें विथोटिकाको अलग कर रखा है।

ग्रीसके अपर विभागका नाम पिलपनिमाम या मोरिया टापू है। इसके मध्य आकिया, आर्केनिया, आगोलिम, करिन्थ, एलिया, लाकोनिक प्रभृति कई सुदृष्ट राज्य हैं। इस विभागकी मध्यभूमि अधित्यकामय है। अमन्य पर्वतोंमें आच्छादित होनेके कारण बीच बीच उसमें विस्तीर्ण श्रववाहिका, जनमय भूमि और छोटे छोटे झरदेख पडते हैं। मोरिया उपद्वेपका उत्तरस्थित टेगे-टाम और दक्षिणका मेनोनी पहाड समुद्रतटमें प्राय ५००० फुट ऊँचा है। एलिस इनाकाम और आर्गिस नामक स्थानमें विष्णोर्ण ममत्तल क्षेत्र है। अफ्रियाम यूरोटाम, पमिमास और पेनियास नदीमें बत्सरके समो समयको जल रहता है।

यूविया व्यतीत ग्रीस राज्यको द्वीपान्तरोंमें साइक्रेडिम और स्पेरोडिम द्वीपपुञ्जके बीच जो द्वीप जनमानव परिपूर्ण है, वह निम्नलिखित रूपसे विभक्त हुए हैं—

१ पश्चिम स्पेरोडिम—हाइड्रो, स्पेजिया, इजोना, पोरस, सालामिस, आइड्रा।

२ उत्तर स्पेरोडिम—स्कोपेलस, खिनिड्रोमी, स्क्रियायोम, स्काइरस।

३ उत्तर साइक्रेडिम—एगड्रोम, जिया, थारमिया, टिनो, मिकोनी, साइरा।

४ मध्य साइक्रेडिम—नाखम, परोम पाण्डिपरोम, मिफाएटी, सेरिफोम, मोनो किमोलेम, पोसिकागड्रो, मिकिनो निथो अमगो।

५ दक्षिण साइक्रेडिम—माण्टेरिन, चानाकी, एटी पानिया काण्डिया वा क्रीट, कियम, मामम, लेमत्रम। एतदव्यतिरिक्त एगिया माइनरके तीरयतो बहुतेम द्वीप उस समयकी दोमने अधीन रहे।

ग्रीस राज्यके मध्य किभी नदीमें नावमें व्यवसाय वाणिज्य करनेकी सुविधा नहीं पडती। नदियोंकी सामान्य पार्यन्तीय अवस्थित भी कष्ट मजते हैं। जो कुछ कुछ विस्तीर्ण है, घाफ्तके प्रादुर्भावमें वृक्ष भी मृत

जाती हैं। होमरने अपने ग्रंथमें आक्विनाम नदीको नदी-राज जैसा बतलाया है। आज भी यही आक्विनाम नदी सबसे बड़ी है। सिवा इसके सिफिसाम, इल्लिमास, आकारोन, स्पार्किंगस, अलफेडियाम, पामिसाम इना कास युरोटाम प्रभृति नदियोंकी वर्तमान आवण्यकता जितनी अधिक है, प्राचीन काव्यमें उनके सखन्ध पर उतनी ही आश्चर्यचर्य घटनाओंका उल्लेख है। करिन्य उपसागरको छोड़ करके एमत्रामिया, भोलो, इजिना, आर्गस वा नौप्लिया, कोलोकीली कोरोन आदि उपसागर भी विद्यमान हैं। फिर कोपाई वा टोपोनिया, अपोकुरो, भलटो, निकुरिया नामक भील हो बड़े हैं। अपरापर जो ढूट दिखलाते, ग्रीष्मकालको सूख जाते हैं।

भूतल—इटा, पारनामाम और इलिकोन पर्वतमें धूसर वर्णके चूनेका पत्थर भरा है। जैसे हुए पत्थरकी देखते ही अनुमान कर सकते कि वह बहुत समय पीछे किसी पदार्थसे वर्तमान आकारमें रूपान्तरित हुआ है। इस पर्वतमें पत्थरका कोई अंश ग्रेनाइट कोई चकमकसे मिला सांप जैसा वक्राकार हरिद्रा चिह्नयुक्त, कहीं हरा पत्थर और कहीं अवरकका पत्थर देख पड़ता है। पिलोपनिमामके उपकूलमें मृत शस्त्रकाटिके जम जानेमें एक रूप पदार्थ उत्पन्न हो गया है। ग्रीसके प्रायः सभी स्थानोंमें आग्नेय पर्वतका चिह्न और कार्याटिका लक्षणानि दृष्टिगोचर होता है। पहाड़की खोह या गुहाके बीचसे गन्धकमय धूम और अपरापर दुर्गन्धमय वाष्प नाना स्थानों पर निकला करता है। यही भाप प्राचीन कालको डेलफीके धर्मकर्मोद्देशमें व्यवहृत होता था। शीतल और उष्णप्रसवण वृत्त हैं। आटिका, सेरिफोस और सिफाण्टो द्वीपमें सोना, चांदी और सौसा मिलता है। इसमें सुर्मा, मनःशिला, तांबा और गन्धक भी उपजता है। युविया, स्काडरस, लाकोनिया और एन्डिम नामक स्थानमें लोहा और बहुनमा कीयज्ञा होता है। यहां पिलपनिसासके स्थान स्थान पर अत्युत्कृष्ट श्वेत पेर्यालिक और लाल तथा हरे रंगका मर्मर मिलता है। पिलपनिसाससे उत्तर ग्रीसमें अनाज आदिकी खेतो अच्छी होती है आर्गस और माराथनके समतलक्षेत्रमें तथा उपकूलकी निकटवर्ती सजल भूमिमें

धान बोते हैं। आर्गस और कालामाटा नामक स्थानमें खूब तस्वाजू और रुई उपजती हैं। पिलपनिसामके उत्तर-कूलवर्ती जिनाग्रोंमें अन्न और किगमिग पैदा होता है। सेमिना, लाकोनिया टिनोस और अन्यान्य द्वीपमें रेशमकी उपज है। यहाँमें प्रचुर मधु बाहर भेजा जाता है। उममें हेमिटाम और आटिकाका मधु बहूकालमें विख्यात है। वाटाम, अर्ज़ीर, अग्वरोट, नारंगी, कागजौ-नावू, अनार आदि फल वृद्धत होते हैं।

ग्रीसमें जो समस्त वाणिज्य द्रव्य बनता ग्रीक लोगोंके व्यवहारमें लो लगता है। किमी किमी बन्दरमें जहाज और पाल तैयार होता है। सिमोलोनीके निकटवर्ती छोटे छोटे भीलोंमें नमक निकलता है। नौपिया, सिमोलोनी, पाद्राम, गालाकमाडडी, हाडडो, मोजिया, माइरा आदि निवाण्ट सागरस्य द्वीपोंमें टीमर द्वारा वाणिज्य सम्पन्न हुआ करता है।

ग्रीस साम्राज्यमें जा लोग रहते, स्थानके अनुसार उनकी शारीरिक गठनप्रणाली भिन्न भिन्न लगती है। उत्तर ग्रीसमें रोमिनियोटिस लोगोंका वाम है। यह योडा और साहमी है। तुर्क बड़ी चेष्टा करके भी इनकी अधीन न कर सके। पश्चान्तरमें पिलपनिसामवासी मोरियोटिस लोगोंने तुर्कोंको वश्यता स्वीकार की।

रोमिनिया प्रदेशके पारनामाम, एगराफा, वालटो, जारोमनस पर्वतवासी तथा इटोलियाके मध्यस्थलवासी हिलेनिम और समतलक्षेत्रवासी किमानोंमें भालासीय, तुलगेरीय वा अलवानीय वंशमश्रूत हैं।

पिलपनिसामके आर्गोलिम और टिफिलियावासी अलवानीन जाति है। अपरापर सभी लोग ग्रीक भाषामें बात किया करते हैं।

द्वीपोंमें अलवानीय, ग्रीक और मध्ययुगके रोमकोंके आक्रमण समय लाटिनरक्तमिश्रित सङ्कर जाति रहते थे। हाडडो और स्पेजियावासी अलवानीय जाति है। इयो प्रकार वर्तमान माइराके कियटी और सेरिटी लोग हिलेनिक वंशमश्रूत है। एतद्व्यतिरिक्त ग्रीक विद्रोहके पीछे युरोपके नाना स्थानोंसे नाना जाति आ करके बसे हुए हैं।

अति प्राचीन कालसे ग्रीक लोगोंमें समाज-संसारका

भार गृहणामो पिताके अग्रमं यस्तु है। पुत्रो के साथ परामर्श न करके वह स्वेच्छानुसार उनका विवाह और किसी ध्ववभाय वा कर्मादिमें उन्हे नियुक्त कर सकता था। प्राचीन समयको यनानियो के बीच एक ही बात पर पुत्रके अट्टका फनाफन पिताके इच्छाधीन था। यथा तक कि कभो कभो निकट अट्टस्वको एकत्र करके पारिवारिक सभामें लडकेके कर्मफल पर जीवनरक्षा वा जीवननाशका विचार होता था। वह निर्विघ्न तथा परस्पर रक्षित हो ग्रामादिमें रहते थे। प्रति वर्ष गृह-स्वामी किमो धर्ममन्दिरमें एकत्र हो प्रति ग्रामके एक जन और नगरके तीन लोगो को स्युनिमिपाल मजिस्ट्रेट मनोनीत करते थे। यह पद प्राय धनो व्यक्ति या गावके जमीन्दारको मिलता था। वह लोग दण्डनायक और धनाध्यक्षका काम करते थे। म्यानीय करनिर्धारण और स अह करनेकी सभामें उक्त स्युनिमिपाल मजिस्ट्रेट तथा अपरापर बडे लोगो का मत ले करके कार्य चलता था। इसो सभासे महकारी वा दण्डनायक निर्वाचित हो हरिक जिलाके प्रधान नगरमें रखे जाते थे।

प्रथम इतिहास—प्राचीन इतिहास-कालको कुछ टिकामें अपसृत हुआ है। जिन देवदेवियों और वीर पुरुषो की इतिहासगत आश्चर्य घटना सम्बन्धित कथा सुनो जाती, उस पर केवल दूम्हे लोगो का ही विश्वास जम सकता है। पूर्वको जो पुराणकथा लिखित हुई है और मिश्रप, क्याडमास टनायुस, सेमियाम, हिराक्लिस प्रभृतिका जो उपाख्यान तथा आर्गोन्टिक युद्धयात्रा, द्रययुद्ध एव कालिडोनिय सूधर गिकार आदिका जो अतिवृत्त कथा है, उनके सम्बन्धमें प्रकृत तथ्य उद्धार करनेकी ऐतिहासिक विन्तुमात्र भी भाशा नहीं रखते कि वह कल्प तक ठीक है। ग्रौममें अद्भुत पराक्रमशाली वीरोके जन्म वृण्णता समय (Heroic age) १४०० से १२०० पृष्ट पूर्वाब्देके साथ निरूपित हुआ है।

(प्राय ८८० अष्ट पूर्वाब्दको) स्पार्टा राजवशमें लाए जायमानने जन्म लिया था। मिश्र भारत प्रस्थात नाना स्थान पर्यटन और नाग्यानो की गतिनिति दर्शन करके उनसे मनमें धारणा हुई कि विरम्यायो चालोग गतिकी एकता अग्रमं यष्ट करनेक मिया कोई आति।

जगत्में प्राधान्य नहीं पा सकती, सुतरां सर्वसाधारणकी पहने ही दैहिक उन्नति आवश्यक थी। लाइकारगामने इस पक्षमें नये नियम प्रवर्तन किये थे कि स्पार्टाका प्रत्येक अग्रिवासी माहमी तथा बलशाली होता और स्पार्टाको सभो रमणिया बलवान् पुत्र प्रमव करतीं। उक्त नियम यह है—

१ मन्तनको विकलाङ्ग होने पर पर्वतकी गुहामें डाल दिया जावे।

२ जो कोई मत्रह वर्षका होने पर थापका घर छोड निराले शिक्षागारमें अपरापर युवकोंके साथ लामित पालित और शिक्षित होगा, पितामाताके साथ कोई स म्त्रव न रहेगा।

३ देशके अक्षर पत्रिचयको छोड करके कोई माहित्य विज्ञानादि पढ न सकेगा, खो कि उससे साहम तथा युद्धोत्साह घट सकता है।

४ मन्तानको बडा होने पर डियाना (रणदेवी) के उत्सवमें दैहिक बलपरीक्षाके समय कशाघात (कोठेकी मार) सहना पडेगा।

५ स्त्रियो की वीम वर्ष तक पुरुषो की भाति कठोर शिक्षा दी जावेगा। वीरप्रमविनी और वीरसङ्गिनी होनेके लिये उनकी ऐसी शिक्षाका प्रयोजन है।

६ पुरुष ३० वर्ष और स्त्री २० वर्षसे पहने विवाह कर न सकेगो।

७ विवाहके पीछे भी साठ वर्ष तक समाजकी मङ्गलकामनामें कोई अधिक स्त्री सहवास कर न सकेगा, करने पर भी ऐसे करना पडेगा जिमसे कोई ममभ न मके।

८ कोई अपरिचित अतिथिको घरमें रख न सकेगा।

९ कोई मर्यापान वा यथेच्छा व्यवहार कर न सकेगा। इस वारमें घृणा उत्पन्न करानेके लिये नीचको मराब पिन्ना करके उस पर शत्वना निष्ठुर व्यवहार करना चाहिये।

उक्त नियमोंके आधार पर ही पुरुषने अपने रवोको उसकी अपेक्षा बलवान् पुरुषके साथ सहवास करनेका उपदेश दिया और अननीन अट्टचित्तमें अपने शीणकाय तथा दुर्बल मन्तानको परित्याग किया है।

उसीसे कुमारियां और युवतियां युद्ध काँगल मीखती थीं ।

पहले ग्रीसके भिन्न भिन्न स्थानीय लोग सुविधा मिलने पर परस्पर युद्ध करके एक दूसरे पर कर्तृत्व करनेकी यत्नवान् रहते थे । उसमें एकता न थी । सुतरां विदेशी वर्णिक जब आ करके यूनानियोंका यथामर्ग स्वकीय नै जाते, वह प्रति विधान कर न पाते थे । इसी प्रकार बार बार उत्पन्न और परधनलोपुप ही जातीय एकता अन्धनके लिये प्रधान प्रधान व्यक्तियोंने मिल करके ओलिम्पीय (Olympian), इस्थमीय आदि उत्सवोंका आयोजन किया । ७७६ खृष्टपूर्वकी सर्वप्रधान ओलिम्पीय उत्सव आरम्भ हुआ । इस जलसेमें राजाधिराजने ली करके दीन दरिद्र पर्यन्त सभी शामिल होते थे । उस समय समस्त ग्रीस जातीय एकतास्वरुमें आवृद्ध हो जाता, शत्रुताको कोई स्थान न दिखलाता था । ग्रीसके सब ग्रन्थकार, कवि, मन्त्र, योद्धा, अश्वारोही आदि उत्सवके त्रमें उपस्थित होते थे । वहां सभोको परीक्षा लो जाती थी । इसमें जो जयी हो जाता, राजाधिराजकी अपेक्षा समधिक सम्मान पाता और कवि अपनी शक्ति भर उसका यश गाता था । ओलिम्पीय उत्सवके प्रारम्भ कालकी ग्रीसके महाकवि होमर आविर्भूत हुए । उनका ग्रन्थ पढ़नेसे जान पड़ता कि उस समय ग्रीसके लोग वीरका समधिक आदर करते, यथेष्ट दैहिक बल रहनेसे उसको देवता जैसा सम्भते थे । भीरु व्यक्तिको सभी छुणा करते थे । यहाँ तक कि जिस मुन्दरीके लिये ट्रयका महासमर हुआ, उसी हिलेनेने जिसके लिये पति पुत्र, ऐश्वर्य, राजभोग प्रभृति तुच्छ समभा और जिसको अपना सर्वस्व मान जन्मभूमि छोड़ चली गयी, उसी पारिसकी भीरुता देख इसने भी अति छुणाके साथ भर्त्सना की थी । वीरपूजाका यह प्रकट निदर्शन है ।

ओलिम्पीय उत्सवके पीछेसे ग्रीसका प्रकृत इतिहास समभा जा सकता है । ७७६ खृष्टपूर्वकी स्पार्टावासियोंके साथ सेमिनियांका युद्ध हुआ । इसी लड़ाईके बाद ग्रीसवासियोंने नाना देशोंमें जा करके उपनिवेश स्थापन किया । यह युद्ध क्रमान्वयसे तीन शताब्दीकाल चला था । परिशिप पर ४५५ खृष्टपूर्वकी तृतीय

सेमिनिया युद्धमें आर्हीथॉस ध्वंस होनेसे दोनों जातिवर्ग चिर वैगिता दूर हुई ।

६२४ खृष्टपूर्वकी ड्रेकीने ग्रीसका विधिमसूह लिख करके चनाया था । पीछे ५८४ खृष्टपूर्वकी सोलनने आथिन्स सज्जानगरमें बैठ करके नये और पुराने कानूनको सुधारा । ५६० और ५१० खृष्टपूर्वके मध्य पिनिट्रोटास तथा छिपियाम और छिपारकास नामक उनके दो लड़कोंने आथिन्स नगरमें एकच्छत्रराज उपाधि ग्रहण पूर्वक राजत्व किया था ।

५६०-५४० खृष्टपूर्वके मध्य लिडियाराज क्रिसामर्के माथ ईरानके राजा वीर काइरामकी लड़ाई लगी । ५४७ खृष्टपूर्वकी क्रिसामने कापाडोकिया आक्रमण किया था । फिर उन्होंने निज राजधानी सारडिस नगर लौट करके साहाय्यकारियोंमें सैन्य भेजनेको कहा । वह फौज जानेसे पहले ही काइरामने समैन्य पहुंच करके सारडिस अधिकार किया था ४८८ खृष्टपूर्वकी आथिनीयों और आइयोनीयों कर्तृक सारडिस नगर भस्मीभूत होने पर पारस्यराजने तीन बार ग्रीस पर धावा मारा ।

पहले ४८२ खृष्टपूर्वकी मार्टीनियाम ग्रीस आक्रमण को जा आथिनीय पर्वतके निकटस्थ समुद्रमें समैन्य डूबे थे । दूसरी बार ४८० खृष्टपूर्वकी डेटिस और आर्टाफारनिस ग्रीस अधिकार करनेकी पहुंचे और यूनानियों कर्तृक माराथान युद्धमें पराजित हो करके लौट पड़े । तृतीय युद्ध स्वयं पारस्यराज जरकसेस कर्तृक परिचालित हुआ था । कहते हैं कि वह ५ लाख सिपाही और ४०० जहाज इकट्ठा करके ग्रीस पर चढ़नेकी चले, परन्तु थारमोपिलो, मलासिस और प्रार्टियाको लड़ाईमें रक्षा करके स्वदेशको लौट जाने पर बाध्य हुए । उसी समय आथिनीय ४०४ खृष्टपूर्व पर्यंत वेरोकटोक राजत्व करते रहे । फिर ४३१ खृष्टपूर्वकी पिलोपनीसीयकी लड़ाई लगी । क्रमान्वयसे २७ वर्ष तक यूनानियोंका बल त्रय होता रहा । परिशिपमें ४०४ खृष्टपूर्वकी आथिन्स नगर ध्वंस होने और आथिन्सवासियोंके अधीनता स्वीकार करने पर भगड़ा निवृत्ता ।

४१५ खृष्टपूर्वकी सिसिलीका विख्यात युद्ध हुआ । ४२८ खृष्टपूर्वकी आथिनीय नायक पेरिक्लिस मरे थे ।

उस समयसे पहले यूनानियोंने जो यद्दुत भास्कर कार्य-युक्त सुन्दर सुन्दर श्रद्धानिकाए बनायीं थीं, उनका ध्व सावशेष देखनेसे आज भी मानवका मन विस्मयरस और आनन्दमें नाचने लगता है ।

४०१ ख० पू०की आर्टार्जरकसेसको राज्यच्युत करनेके लिये छोटे काइरासने युधवादा की थी । किन्तु वह इसी वर्ष कुनाकमाकी लडाइमें पराजित और निरुत हुए । इस युद्धके लिये काइरासने यूनानो फोज जोडी थी । किन्तु ४०१ ४०० ख० पू०की ग्रीक नायक जेनोफन सगर्व प्रत्यावृत्त हुए । ३८८ ख० पू०की जेनोफन और ब्रेटोके अध्यापक विख्यात दार्शनिक सफ्रो टिस मर गये ।

पिलोपनिसीयो कर्तव्य आर्थेनीय पराजित होने पर स्पार्टाकाले धीरे धीरे बलशाली बने थे । प्रथम एलिय (३८८—३८८), द्वितीय कारिथीय (३८५ ३८०), त्रय ओलिनथिय (३८० ३७८) और चतुर्थ थिय (३७८—३६२) युद्धमें उनका वोरत्व समग्र प्रकाशित हुआ । इस युध्विग्रहके समय अद्वितीय योद्धा एजिसिनास स्पार्टाके सेनानायक थे । उसी समय (३६४) फारोनिया तथा करिन्थ, (३७५) अरफोमिनास (३०१) ल्यूकट्रा और (३६२) सानटिनियाको लडाइं हुई । इसमें थिरीय वीर इफामिनानास मारे गये । ३५८ ख० पू० की फिलिप मकडूनियाके सिंहासन पर बैठे थे । कुछ काल पीछे वह रोमके सब कार्मिमें हाथ डालने लगे । इसीसे आद्येसके दूसरे सित्र राजाभीने उनका वैसा एकाधिपत्य माना न था । क्रमश विद्रोहमूल पर रोम राज्यमें (३५७ ३५५ ख० पू०) सामाजिक युद्ध उपस्थित हुआ । उस लडाइमें आर्थेमराज अपने अधिगत अनेक गण्य खो बैठे । इसके पाछे (३५५-३४६ ख० पू०) ऋद्ध वर्षा तक धर्म युद्ध होता रहा उस लडाइमें मकडूनिया अधिपति फिलिप मरगया, था । इस समयको (३५२ ख० पू०) डिममयनिसने फिलिपके विरुद्ध मुदीर्घ यद्दुता को उसका 'फिलिपियन' कहते हैं । ३३८ ख० पू०को किरानियाको लडाइमें आधनाय और द्वितीय नोग फिलिप फल पराजित हुए । ३३० ख० पू०की फिलिप करिन्थका महासभामें इरानके विरुद्ध

युद्धोत्सुख योक्त सैन्यके अधिनायक चुने गये । किन्तु उसी वर्ष मकडूनियाको विवाहसभामें किसी दम्य ने उनका गला जाट डाला ।

फिलिपके मरने पर बहुतसे लोग उनके पुत्र अलेक-सन्दर (सिकन्दर)के विपचमें विद्रोहो हुए । पीछे यूनानियोंने वाध्य हो उन्ही वोर युवकको ईरान जानेवाले अपने सैन्यना अधिनायक बना दिया । अलेकसन्दर ३३० ।

मकडूनियाराजकी श्रौतदिके साथ ही समस्त ग्रीस राज्य भीभागशाली बना था पीछे जब रोमकोंने जा करके मकडूनिया अधिकार किया, योक्त नोग स्वाधीनता खो अनेक काट उठाने लगे । इन्हीने अपने स्वाधीनता वचानेको पिलपनिमामके सभी नगरवासियोंको 'एकियान नोग' नामसे दलबद्ध करके रोमकोंके विरुद्ध युद्ध किया था । परन्तु अपने दुर्भाग्यक्रमसे यह स्वदेशकी रक्षा कर न सके ।

१४६ ख० पू०की रोमक सेनापति कनमाल सुमिया सने करिन्थ अधिकार करके समस्त ग्रीस देशकी रोम-साम्राज्यभुक्त बनाया था । रोम ६७० ।

करिन्थ अधिकारके पीछे रोसका इतिहास रोमक इतिहासमें मिलित हुआ है । अन्तिमोकाम तथा सिथि-टाइडिसके साथ रोमकों, एण्टनो एव अकटेडियानासके साथ मित्रा, पम्पो वूटाग तथा केसाम और अकटेडियानासका युद्ध प्रभृति घटनावली रोमके इत्तमध पर अभिनीत हुई । उस समय अभागे यूनानियोंकी बहुतमा काट उठाना पडा था । आगाटासके राज्यारोहणको दो गता-व्यियों चाट रोसमें शान्तिराज स्थापित हुआ । उस समय ईसाई धर्म ने धीरे धीरे अधिवासियोंमें प्रवेश लाग किया था । जगह जगह गिर्जा बने और बहुतमे यूनानो ईसाकी उत्थिया फालानेको अपना जीवन उत्सर्ग करके नाना देशोंको चल गए ।

इसके अनतिकाल पीछे ही शीतप्रधान उत्तर टिकसे आभोनोय, चलजानोय चादि असभ्य नोग दलके टन था करके रोसमें लूट मार मचाने लगे ।

कनटानटाइवनर अपना साम्राज्य चाटते समय ग्रीस उनका पूय विभाग ठहरा था । परन्तु १२०४ ई०की जब भिनियोयोंने मित्राज दुर्बल व शर्तोंका राजा अधिकार किया, ग्रीस भी उर्ध्वक हाथ लग गया ।

१३५५ ई०को उसमान वंशोय तुर्क युरोपखण्डमें जा करके रहे और थ्रेस, मकडूनिया, थेसैली आदि बहुतसे स्थान टवा बैठे। १४५३ ई०को उन्होंने कनस्तान्तिनोपल जय किया था। उन्ही समयसे गत गताव्दी पर्यन्त ग्रीस मुसलमानो राजाके अन्तर्गत रहा। शेषमें १८२० ई०को तुर्की राजाके विरुद्ध ग्रीक लोगोंने विद्रोह किया था। किमीने स्वप्नमें भी न समझा था कि वन्ही पुराना ग्रीस फिर स्वाधीन हो जावेगा। परन्तु ग्रीसका अदृष्ट हंस पड़ा। अन्यान्य ईसाई राजाके साहाय्यसे १८२६ ई०को परपटलित ग्रीस राजा पुनर्वाग स्वाधीन हो गया। १८३१ ई०को ग्रीसकी स्वाधीनताके प्रतिष्ठाता क्यापा-टि-ड्राय्य मारे गये। उस समय बहुतसे लोगोंने सिंहासन पर बैठना चाहा था। किन्तु ब्रिटेन, फ्रान्स और रूसकी अनुमतिसे वावेरियाराजके द्वितीय पुत्र अथो १८३२ ई०को सिंहासन पर अभिषिक्त हुए। अथो राजा हो करके भी सुखसे राजकार्य चला न सके। अनेक बाधा विघ्नोंको अतिक्रम करके १८३५ ई०को वह ग्रीस राजाके गान्तिस्थापन और सुशुद्धलापूर्वक राजकार्य निर्वाह करनेमें समर्थ हुए।

डेनमार्कके द्वितीय राजपुत्र जार्जने १८६३ ई०को ग्रीसमें राजारोहण किया था। फिर क्रोट द्वीपमें विद्रोह भड़का, जो १८६६ ई०को टवा दिया गया। १८७० ई०को आथेन्सके पड़ोसमें डाकुओंने कई अंगरेजोंको मार डाला। १८८१ ई०को ग्रीस और तुर्कीके बीच नयो सीमा बनो। पेनेउम और लाटेमोना सुखके मध्य एक विन्दुसे पश्चिमकी क्लितीरो तथा जिगोस पर्वतके शिखर तक कोई रेखा खींची गयी जो आर्टा नदीके साथ उसीके मुख तक चली गयी। इससे ग्रीसका राजा बहुत बढ़ गया। १८८६ ई०को जातीय आन्दोलनने जोर पकड़ा और १८८७ ई० ४ फरवरीको केनियामें विद्रोह उठ खड़ा हुआ। २८ मार्चको तुर्कीसे ग्रीसका युद्ध होने लगा। १७ अप्रैलको तुर्कीने युद्धघोषणा की थी। २४ अप्रैलको ग्रीक सेना लारिसासे पीछे हटी। परन्तु १८ मईको शक्तियोंके बोचमें पड़नेसे सन्धि हो गयी।

५वें विषय—आजकल सभी यूनानी ईसाई धर्मावलम्बी हैं। ईसाई दसो। परन्तु ईसा मसीह आविर्भाव-

के बहुत पहलमें यह जर्ध लोकावासो देवी, पातान्म रहनेवाले उपदेवताओं और प्रधान प्रधान व्यक्तियोंके प्रेतात्माओंको उपासना करते रहे हैं। प्राचीन ग्रीक और रोमक प्रायः तोम हजार देवताओंकी मानते थे। वह सभी देवता मानवधर्माक्रान्त और मनुष्योंकी ही भांति पाप-पुण्यके फलभोगी हैं। फिर अनेक देवता मिसरसे गृहीत हुए हैं। कोई कोई समझता है कि उक्त मकल देववंश प्राकृतिक शक्तिसमूहके रूपककी कल्पना मात्र ठहरता है। परन्तु ग्रीसके प्रधान इतिवृत्तलेखक ग्रीट साइव इसको स्वीकार नहीं करते। उनके मतसे मानवके प्रथम ज्ञानोदयकालको अतर्कित तथा अपरिज्ञात भावसे जिस पर भक्ति, अज्ञा और भय लगा है, उसीमें देवत्वका आरोप किया गया है। इसी प्रकार बहुतसे जघन्य चरित्र लोग भी ग्रीक समाजमें देवता जैसे गण्य हुए हैं। पहले हिंसियट, उसके पीछे अर्फीयमने (७०० पू० ख्र०) देवतत्व प्रचार किया। ५३५ ख्र० पू०को जिनोफनने देवतत्वकी नितान्त अलोक आख्यायिका और ईश्वर अपना अज्ञात जैसा स्वीकार कर गये हैं। किन्तु परवर्तीकालके प्रधान प्रधान व्यक्तियोंने देवोंके अस्तित्वमें मन्देह किया। पहले यूनानो आध्यात्मिक तत्त्व कुछ भी न समझते, सभी लोग वाह्य जगत् सुखसुखच्छन्द और विलासमें व्यस्त थे। प्रायः ६०० ख्र० पू०को इनमें केवल महात्मा थैलिस कथञ्चित् अध्यात्मतत्त्व समझ सके, उन्होंने प्रथम ईश्वर और जन्ममृत्यु, अभिन्नताकी बात बतलायो थी। फिर सक्लेटिस, प्रुटो, इपिक्यूरस और एरोडक आदि अज्ञातभावसे थैलिसका अनुसरण करके दार्शनिक विषयको आलोचनामें प्रवृत्त हुए। वह सभी जनसाधारणके भ्रान्त और दूषित मतका विरोध करते थे। स्थानमंदसे ग्रीसमें भिन्न भिन्न देवदेवियोंकी पूजा होती थी। जैसे थ्रेसमें वाकासुदेव, आथेन्समें आथेनो उत्तर ग्रीसमें आपोलो, कारिन्य मागरके उपकूलमें नेपचुन, आर्गसमें जूनो और इफेमासमें डियानाकी उपासना प्रसिद्ध थी। इसके मध्य वाकासदेवके उत्सवमें ग्रीसके नर और नारी साथ साथ मद्यपानमें लगे रहते थे। स्त्री-पुरुष सम्बन्धीय सब प्रकारका चीभत्स व्यापार होता था। सिवा इसके इत्युसोय नामक एक नवरात्र उत्सव रहा।

इसका अनुष्ठानादि अति निगूढ और गम्भीर रजनोको सुप्त भावसे होता था। द्रव्यता नहीं थी, उसमें कितना कुकाण्ड किया जाता। देवके पर्वारिमें नानाप्रकार पूजा, नृत्यगीत, कविको लडाई, मन्त्र तथा युद्धकीडा होती थी। फिर उपयुक्त लोगोंको पुरस्कार दिया जाता था। योसके रोमकोंकी अधीनता स्वीकार करने पर उन्होंने भी इनकी देवदेवियोंकी ग्रहण किया। वर्तमान पाश्चात्य पौराणिकोंने निम्नलिखित ग्रीक, रोमक और भारतीय देवदेवियोंका मोमादृश्य स्वीकार किया है—

अग्निनी	Caster,	कृष्ण	Apollo
कुमारहृदय	Pollux	दुर्गा	Juno
अरुण	Aurora	नारद	Mercury
इन्द्र	Jupiter	पृथिवी	Cybele
अन्नपूर्णा	Annaperenna	राम	Dionysius
काली	Proserpine	लक्ष्मी श्री)	Ceres
काम	Cupid, Eros	वरुण	Neptune
कुमार (कार्तिक)	Mars	वायु	Aeolus
कुवेर	Plutus	विश्वकर्मा	Vulcan
यम	Pluto	स्वाहा	Vesta
यमका कुकुर	Cerberus	हतुमान्	Pan
सूर्य	Sol		

पाश्चात्य लोग इसी प्रकार अनेक देवदेवियोंकी कथा लिख गये हैं। उनके मतानुसार यूनानी ज्यूस (Zeus) "झीस" और एरिनिस् (Friny) "सरण्यु" जैसा वेद में वर्णित है।

किन्तु हमारी विवेचनामें हिन्दू और यूनानी देवादि को उक्त आस्थायिका पद्धतिसे परम्पर विशेषरूप मन्देह निर्णय करनेकी विमलक्षण मन्देह उठता है। शक्य हो।

वर्षादि साध लोगका सम्बन्ध—भारतवर्षको कथा ग्रीसमें बहुज्ञानमें प्रचलित है। ग्रीसके प्राचीन ऐतिहासिकोंके मध्य हीकीटियास और मिल्डियासके ग्रन्थमें इस देवकी बात रपट रूपसे कही गयी है। यह दोनों ग्रन्थकार ४४६ से ४८६ ख० पू०के लोग थे। उनके पीछे हिरोडोटामने भारतवर्षके सिन्धुतीर पर्यन्त स्थानका विशेष भवाद् ग्रहण किया। हिरोडोटामके समय ४५० ख० पू० को उनके पर चिकित्सक टिसियामने (४०१ ख० पू०)

अपने वामस्थान पारम्य देशसे भारतके रङ्ग, 'कपडे, वानर, शूद्रपत्तो प्रभृति विषयोंका विवरण मग्रह किया था। सिन्धुके परवर्ती स्थानका संवाद अलेक्सन्दरके सहायत्री ऐतिहासिकों और विद्वज्जनों कर्टक (३२७ ख० पू०) युरोपमें प्रथम प्रचारित हुआ। इनका मण्डहोत विवरण नष्ट तो हो गया है, परन्तु उसका मार-भाग द्रावो, झिनि, एरियान आदि ग्रन्थोंमें मिलता है। मगधराज चन्द्रगुप्तके सभास्य ग्रीकदूत मेगास्थिनिसने (३०६-२६६ ख० पू०) युरोपमें भारततत्त्व विशेष रूपसे प्रचारित किया था। उन्होंने अनुसन्धिकाके फलसे ग्रीक और रोमकोंने भारतवर्षीय मर्वविषयके ज्ञानज्योतिषकी कथा सुनी। अलेक्सन्दर और मेगास्थिनिस देवा।

अलेक्सन्दरके पूर्वको ग्रीक देशीय विद्वान् एशिया के विषयसे परिचित थे। सुसम्मान ऐतिहासिकोंके ग्रन्थादिमें निम्नलिखित ग्रीक रोमक विद्वानोंके नाम मिलते हैं—

हिरोडोटाम	४५० ख० पू०
टिसियस	४०० "
ओनिमिक्रिटास	३२५ "
मेगास्थिनिस	३०० "
द्रावो	२० "
पम्पोनियास मेला	२० "
झिनि	७७ "
पेरिप्लस मरि	८० "
एरिथ्रुई	८० "
डोयोनिमियास	८६ "
पेरिजिटिस	८६ "
टलेमि	१३० "
एरियान	१५० "
क्लेमिस पालेक	२०० "
सान्ड्रिनास	२०० "
युमिवियाम	३२० "
फेसटाम एवियेनास	३८० "
मार्सियान	४२० "
कसमाम इगिकीपुटस	५२५ "
टिकेन (बाइजान्टियामवासी)	५६० "

रामेन्नोटिस आनोनिमि-

कसमोग्राफिया ७म शताब्दी

जर्जियास सिनसिलास ८००

यष्टेथियाम १२ शताब्दी

यह नहीं कि उक्त सभी नाम मुसलमानोंके ग्रंथोंमें अविलकृत भावसे गृहीत हुए हैं। अलेकसन्दरका नाम उन्होंने मिकन्दर जैसा लिखा है। इसी प्रकार आरिष्टटल 'अरस्तू', सक्रोटिस 'शुकरात', हिपोक्रेटिस 'बुकरात' और प्लेटो 'अफलातू' नामसे वर्णित है।

सिकन्दरने सिन्धुके तीर पर उपनीत हो बाक्ट्रिया (बाह्लीक) नामक स्थानमें एक स्कान्यावार स्थापन किया। सिकन्दरके मरने पर जब उनके सेनापतियोंने उनका विशाल राज्य आपसमें बांट लिया, यही जनपद एक स्वतन्त्र राज्यमें परिणत हुआ। २५७ ख० पू० से २०७ शताब्द पर्यन्त बाक्ट्रियाका बड़ा प्रादुर्भाव रहा। लासेनके मतानुसार एशियामें ४ ग्रीक राज्य स्थापित हुए। उनके मध्य मिनान्दार नामक सेनापतिने बाक्ट्रियाके पूर्वांशमें एक राज्य स्थापन किया। आपोलोडोटासने काबुल, पञ्जाब और सिन्धुकूलमें राज्य बनाया। धीरे धीरे आर्कोमिया (कन्दाहार) भी इसीमें मिल गया। दूसरा राज्य हेरातमें स्थापित हुआ। चतुर्थ राज्य परोपामिसासके अधीन (निषध पर्वतके) मध्यस्थलमें उभर गया। प्रतत्त्ववित् प्रिन्सेप उमीको बाक्ट्रिया राज्य बतलाते हैं। अधिकसे अधिक उस समयको एशियामें नीचे लिखे ग्रीक राज्य बने थे—बाक्ट्रिया (बाह्लीक), सोगदियाना, मोज़र्याना, परोपानिसिडी (निषध), लाइसा, आरिया, ड्रंगा, आर्कोसिया (आर्कोद), गान्दारिटिस (गान्धार), प्युकैल्योटिस (पुष्कलावती), तक्शिला (तक्षशिला), पात्तलिन (पाताल), सुराष्ट्रीन (सौराष्ट्र) और लैरिस (लाट)। इन सकल राज्योंकी सीमा निरूपण करना सहज नहीं है। इनके राजाओंके मध्य चार राज्योंके विशेष विख्यात हैं। नीचे तत्त्वज्ञके राजाओंके नाम दिये गये हैं—

१म—मिरीयाराजगण

१ अलेकसन्दर (३६५-३२३ ख० पू०)

२ सिल्यूकस १म निकैटर (३१२ ")

३ अन्तियोकस १म मोटार	(२८० ख० पू०)
४ " २य थियम	(२६१ ")
५ सिल्यूकस २य कालिनिंकाम	(२४६ ")
६ " ३य केरोनास	(२२६ ")
७ " अन्तियोकस ३य मागनाम्	(एकियम) (२२३ ")
८ सिल्यूकस ४र्थ क्लियोपेटार	(१८७ ")
९ अन्तियोकस ४र्थ एपिफेनिम	(१७५ ")
१० " ५म यूपेटर	(१६४ ")
११ डिमिट्रियास १म मोटार	(१६२ ")
१२ अलेकसन्दर १म कथित	(१५० ")
१३ डिमिट्रियास २य निकैटर	(१४७ ")
१४ अन्तियोकस ६ठ थियम	(१४४ ")
१५ त्रिफन	(१४२ ")
१६ अन्तियोकस ७म सिडेसिस	(१३७ ")
१७ अलेकसन्दर २य जेविना	(१२८ ")
१८ सिल्यूकस ५म	(१२५ ")
१९ अन्तियोकस ८म ग्राइपाम	(१२५ ")
२० " ८म साइजिकेनास	(११२ ")
२१ सिल्यूकस ६ठ एपिफेनिम	(६६ ")
२२ अन्तियोकस १०म थ्यूसिर्विस	(६५ ")
२३ " ११थ एपिफेनिम	(८५ ")
२४ फिलिप	(८५ ")
२५ डिमिट्रियास ३य थ्यूकिरास	(८४ ")
२६ अन्तियोकस १२थ ड्युनिसियास	(८८ ")
२७ तिग्रानिस (अर्मेनियावासी)	(८३ ")
२८ अन्तियोकस १३ एसियाटिकास	(६८ ")

उसके पीछे मिरीया राज्य रोमकोंके हस्तगत हुआ।

आर्सेकेस नामक किसी सिथियावासीने ग्रीक आजफ सागरके तीरसे जा करके ईरानियोंको ग्रीक अधीनता छोड़नेका परामर्श दिया और पार्थिया (पारद) साम्राज्य स्थापन किया। थियोडोटासके बाक्ट्रियामें स्वाधीन राज्य स्थापनके समय ही उक्त स्थापना हुई थी। थियोडोटासके अभ्युदयका मूल भी वही पारस्यविद्रोह था। वह सिरीयाके अधीन बाक्ट्रियाके शासनकर्ता थे।

आर्सेकेसको मुसलमान ऐतिहासिकोंने अस्तू जैसा

अभिहित किया है। इनके मतमें वह फारसके प्राचीन राजवशोद्धत थे। इन्होंने राज्यलाभ करके प्रजासे कर न लेने जैसी प्रतिज्ञा की थी और छोटी छोटी राजाओं पर आधिपत्य जमाया। फारस्य इतिहासकी मुख्य उत्तु लोक गणना अभी समयसे प्रवर्तित हुई।

२५—शासि शा (फारस) राजगण।

१	आसिनेस	१म	२५५	(ख० पृ०)
२	तिरिडोटिम	१म	२५३	"
३	आर्टाविनास	१म	२१६	"
४	फ्रापेटियास		१८६	"
५	फ्राहटिम	१म	१८१	"
६	मिथ्रिडोटिम	१म	१७३	"
७	फाहटिम	२य	१३६	"
८	आर्टाविनास	२य	१२६	"
९	मिथ्रिडोटिम	२य	१२३	"
१०	मिनास्किरेस		९७	"
११	मिनाट्रोकेस		७७	"
१२	फ्राहटिस	२य	७०	"
१३	मिथ्रिडोटिस	३य	६०	"
१४	ओरोडिस	१म	५४	"
१५	फ्राहटिम	४थ	} ३७	"
१६	तिरिडोटिम	२य		
१७	फ्राहटिम	४थ		
१८	ओरोडिस	२य	सन् ५ ई०	
१९	मोनेनेस	१म	५	"
२०	आर्टाविनास	३य	१३	"
२१	तिरिडोटिम	३य	"	"
२२	सिन्नामाम		"	"
२३	आर्टाविनास	३य	"	"
२४	वरडानिस		४२	"
२५	गोटार्जेस		६५	"
२६	मेहेरडोटिन		५०	"
२७	भोनानिस	२य	५१	"
२८	भोनोजेमेस	१म	५१	"
२९	आर्टाविनास	४थ	६२	"
३०	पाकोराम		७०	"

३१	चोसरोज	१म	१०८	ई०
३२	पार्थामासपटिम		११५	"
३३	चोसरोज	२य	११६	"
३४	भोलोजेमेस		१०१	"
३५	"	३य	१४८	"
३६	"	४थ	१६२	"
३७	"	५म	२०६	"
३८	आर्टाविनास	५म	२०६	"
३९	आर्टाजिरकसेस			
			१म (शासनवशीय राजा)	२३५

३५—बाक्ट्रिया (बाक्ट्र) राजगण।

बाक्ट्रियाके इतिहासमें बड़ी गड़बड़ी है। वह कभी स्वाधीन, कभी मीरियाके अधीन रहा। इनका प्राचीन इतिहास अधिक नहीं मिलता। सम्प्रति उन राजाओंकी बहसख्यक सुद्राए प्रकाशित होनेसे इस वंशकी छोटी मोटी तालिका पायी जाती है। अध्यापक विल्सनने १म थियोडोटाससे एक सक्षिप्त तालिका लगायी है। इस वंशके राजा लोग मकन स्यानेके अधिकाारी न रहे। प्रव्रतस्ववित् कनिङ्गहामने इस प्रकार तालिका दी है—

२५६	ख० पृ० डिथोडोटास	१म	} बाक्ट्रियाना (सोम-डियाना, बाक्ट्रिया और माजियानासह)
२४३	"	२य	
२४७	आगाथोक्लिस		} परोपमिमिडि और नाइसा
२२७	पाण्टोनोन		
२२०	यूथिडिमाम—बाक्ट्रियाना, आरियाना, (आरिया, इरिया, आर्को-मिया, परोपमिमिडि) नाइसा, गान्दारिटिस, प्येकेनाथोटिस, और तद्वत् गिना।		
१८६	डिमिडियाम—यह मकन स्यान और राजत्व कानके ग्रेपको पात्तानिन, सुराडियाना, नेरिस।		
१८०	फिनथोक्लिस—बाक्ट्रियाना और परोपमिमिडि।		

- १८० आण्टिमोकास थ्योस—नाइसा, गान्दारिटीस
प्यूकेलाओटिस और तकशिला ।
- १८५ यूक्नेटाइडिस—वाक्द्रियाना, आरिया,
पात्तालिन, सुराट्रीन, लेरिस,
नाइसा, गान्दारिटीस,
प्यूकेलाओटिस, तकशिला ।
- १७३ आण्टिमोकास न्यूक्फोरोस—नाइसा, गान्दा-
रिटीस, प्यूकेलाओटिस, तक-
शिला और पूर्वोक्त राज्य ।
- १६५ { फिलोकसेनिस—यही सब राजा
निसियास—तकशिला व्यतीत यह सब ।
आपोलोडोटास—यूक्नेटाइडिस राजाके बीच
आरियाना, पात्तालिन, सुरा-
ट्रीन और लेरिस ।
- १६५ { जोर्डिलास }
डोमिडिस } केवल आरियाना
डोनिशियास }
- १५८ { निसियास—उत्तराधिकारित्वसे परोपमि-
सिडि प्राप्त हुए, निसियासके राजा
मध्य नाइसा, गान्दारिटीस, प्यूके-
लाओटिस ।
आण्टियालसाइडिस—लौसियासका
राज्य ।
आमिण्टास
आर्चिवियास—आण्टियाल साइडिसका
राज्य ।
- १६१—१४० मिनान्दार—परोपमिसिडि नाइसा,
गान्दारिटीस, प्यूकेलाओ-
टिस, तकशिला, पात्तालिन,
लेरिस, सुराट्रीन इत्यादि ।
- १३५ { द्राटो—पात्तालिन, सुराट्रीन और लेरिस
भिन्न सब ।
हिपोट्रेटास } द्राटोर राजा ।
टेलिफास }
थियोफिलास }
- यूक्नेटाइडिसके बाद आपोलोडोटास और मिना-
न्दारका नाम काव्यादिमें विख्यात है । मिनान्दार

भारतवर्षके मध्य मथुरा तक सम्भवतः आये थे । क्या कि
कावुनसे यमुनातीर पर्यन्त स्थानमें उनको मुद्रा देख पड़ती
है । यह भारतीय ग्रन्थमें मिलिन्द नामसे ख्यात है ।

इसके पीछे कुछ अमथ्य राजाओंने प्रधान हो करके
वाक्ट्रियाके राजाओंको निर्वासित किया ।

४४ वर्ष रिज राजगण ।

- १२६ { हारमियास—परोपमिसिडि, नाइसा,
गान्दारिटीस, प्यूकेलाओटिस,
आरिया, इड्रिया आर्कोमिया,
(पाथियोसे शकजातिने ग्रहण किया)
मौयस—तकशिला, पात्तालिन, सुरा-
ट्रीन, लेरिस इत्यादि ।
काडफिमिस (यु-चि) हारमियासका
राजा और तकशिला ।
१५० { भोनोनेम }
स्थालिगिस } परोपमिसिडि ।
स्थालिरिजिम }
- २१० आजास—मौयसका राजा, नाइसा, गान्दा-
रिटीस, प्यूकेलाओटिस ।
- ५० { आजिलाम—आजासके राजा बीच शेष
तीन और तकशिला, परोपमिसिडि ।
सोटारमेगास—आजास और आजिलाम-
का राजा ।
- ६० यु-चि (फिर) परोपमिसिडि, नाइसा, तकशिला
इत्यादि ।
- २६ { गार्डेफिरिस—आरियाना ।
आवडागासिम } यही परोपमिसिडि-
सिन्नोकेस वा } को छोड़ करके ।
अडिडनिगेणस }
- ४४ ई० । आर्सकेम यही
- १०७ ,, पाकोरिस—मोन्नेसिम वाक्द्रियाना
- २०७ ,, आर्टिमन—आरिया, इड्रिया, आर्को-
मिया ।

अलेकमन्दर आगमनके बाद काकिशस पर्वतस्थ अल
कजन्द्रिया, अरिगम, वजोरा, नाइसा, थोरा, मस्सग
(मथक) प्यूकेलाओटिस, अथोरनिस (वरणा) आदि

स्थानोंमें मकदूनियावालीने जा करके उपनिवेश स्थापन किया । मन्त्रट अगोकके खोदित अनुशासनमें पाच ग्रीक राजकुमारोंका उल्लेख है । यन्त्र—अन्तियोक (Antiochus of Syria), तुलमय (Ptolemy Philadelphos of Egypt), अन्तियोन (Antigonos वा Gonatas of Macedon), मन्त्र (Magas of Cyrene) अलमन्त्र (Alexander of Epirus)

डिओडोराम और जट्टाके यथपाठसे समझ पडता, अनेकसन्त्र य डिमम और तचगिन्गकी पञ्चावके किमो किमो स्थानका शासनका भार टे गये थे । किन्तु उनके मरने पर युडिमामने पुरराज (Porsus) को निहत्त करके स्वाधीन बननेकी चेष्टा की । इस इत्याकाण्डमें मगधराज चन्द्रगुप्त भी लिप्त थे । उन्होंने ग्रीक सेनापति मिन्त्र कामकी कन्यासे विवाह किया था । परन्तु ग्रीक और युडिममकी आशा सफल न हुई । पुरराजके अध-पतनमें चन्द्रगुप्त मिन्त्र नदी तीर पर्यन्त अधिकार करके राजचक्रवर्ती बने थे ।

पञ्चावके नानास्थानोंमें आपनोडोदास और मिन्त्र (Menander) नामक ग्रीक राजाओंको अनेक मुद्राएँ प्राविष्कृत हुई हैं । यह मुद्राएँ एक और यूनानी और दूसरी और गामनीय वा असमन सस्कृत भाषाओंमें लिपि हैं । सौराष्ट्रमें शाह राजाओंकी जो स्मृति और रोपा मुद्राएँ मिली हैं, वह भी एक दिक् पर यूनानी और अण्डर दिक् पर सस्कृत वर्णमालामें खोदित हैं । ग्रीक राजा अपनो अपनो मुद्राओंमें भारतवासियोंके धनुकरणमें स्वस्तिव्यवहार करते थे । राजकल भी ताजक और थोडे बहुत लज्जक लोग सुमनमान होते हुए भी अपनोको भिक्कर रूमिके व गधर जैसा बतलाते हैं । वद्वय शाकं ताजक भिक्करको एक पैगम्बर जैसा समझते हैं । इस न, मिन्त्र अथवा अन्तियोक यूनानियों का दस नाम 'सन्त्र' के विरुद्ध है।

यु प (चं० पु०) कुण्ड, मन्त्र, गरीह ।

ये टप्राइमर (य० पु०) टापाणानिका एक तरहका थडा अण्डर ।

ये टप्रीटन (चं० पु०) है गण्डे और स्काटनेड देग ।

ये न (चं० पु०) एक जयके बराबर चंग जो तोन ।

ये नाइट (अ० पु०) एकतरहका कठिन आग्नेय प्रस्तर । इसका वर्ण पीले और कुछ कुछ भूरे रंगका होता है । -य डे तरहके ये नाइट सगरमरकी नाई उजले होते हैं । पुनको कोठिया अथवा जहाँ मजबूतीकी आवश्यकता हो वहाँ पर ये नाइट काममें लाया जाता है । गरमी लगनेसे ही यह पथर बहुत जल्द चटक जाता । यह कठे और सुरदे होनेके कारण इसकी मूर्त्तिया बन नहीं सकतीं और सुदाईका कुछ कार्य भी इसपर नहीं हो सकता ।

यैलुपट (अ० पु०) अथ जो विद्यामें दो० ए० को डिग्री प्राप्त विद्वान ।

यैन (अ० पु०) एक अथ जो तोन जो १५ रतिसे कुछ ज्यादा होते हैं ।

यैव (स० वि०) यौवाया भव यौवा अण्ड । १ जो गदन पर उत्पन्न हो । (स्त्री०) २ एक तरहका आभूषण जो गलेमें पहना जाता है ।

यैवाच (स० पु०) एक ऋषिका नाम ।

यैवैय (स० वि०) यौवाया भव यौवा ठज् । वैवैयो ।

यैवैयक (स० स्त्री०) यौवाया वद अनङ्कार, यौवा ठकज् ।

१ यौवाभूषण, गलेमें पहननेका गहना । यथा—हार, माला हैकल, हौमली प्रभृति । २ हाथोंको हैकल । ३ जैन मतानुसार—मोलह स्वर्गके ऊपरके नौ विमान । इनमें अहमिद्र देव रहते हैं । जिन प्रकार अन्य स्वर्गमें इद्र सामानिक प्रादि देवोंके भेद हैं और विभूति प्रादिसे हौनाधिक है उस प्रकार इन विमानोंके देव नहीं होते । सबको समान शक्ति और इन्द्रियजनित सुख होता है । ये विमान तोन तीनकी पक्षिसे तिम जन्मे हैं । उनमें सद्रूपायी जोव हो पैदा होते हैं । (तन्त्रायण ४२०३)

यैव्य (स० वि०) यौवाया उत्पन्न यौवा अण्ड । वैवैयो ।

यैष्म (स० वि०) यौष्म भव । १ जो यौष्म ऋतुमें उत्पन्न होता है । २ दम्भ स वन्ध्याय, गरमीका ।

यैषक (स० वि०) यौष्म ऋती भव यौष्म वृज् । जो गरमियोंमें उत्पन्न होता है ।

यैष्मयण (स० पु० स्त्री०) यौष्मय ऋते गौवापत्य यौष्म अण्डादि फज् । यौष्म नामक ऋषिके वधन ।

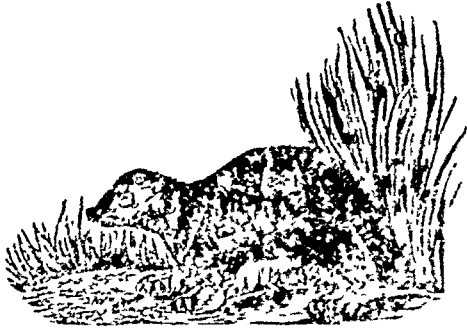
यैषिक (स० वि०) यौष्म यौष्मय वैष्मि तपप्रतिपादकं

ग्रन्थमधीति ग्रीष्म-ठञ्। जो ग्रीष्म ऋतुका धर्म जानता हो, जो ग्रीष्म-दिवरणप्रतिपाटक शास्त्र अध्ययन करता हो।

ग्रीष्मिका (सं० स्त्री०) नवमल्लिका, सेवती।

ग्लटन (Glutton) एक भयानक मांसाहारो पशु। इसका शरीर बहुत स्थूल, किन्तु मस्तक बहुत छोटा होता है। आंख छोटी और दांत तथा चारों पांशुओं नख बहुत कठिन होते हैं। इसके शरीरके बाल कोमल होनेके कारण यह बहुमूल्यमें बेचे जाते हैं। चार ही मासमें गर्भधारण कर एक समयमें २ या तीन बच्चे प्रसव करती है।

यह भालूकी जातिका पशु है। उत्तर महासागरके निकटवर्ती देशमें यह अधिकतासे पाया जाता है। यह दौड़नेमें बहुत तेज एवं चतुर है। छागादिकी पकड़नेके लिये वृक्षके ऊपर चढ़ कर कृप बैठना और जब छाग या हरिणकी वृक्षके नीचे आया देखता तो बहुत चलाकीसे उसके ऊपर कूद पड़ता है एवं दांत और नख द्वारा



मजबूतीसे पकड़ कर मांस निचोड़ लेता और तब रक्त पान करने लगता है। लुधाकी लसि हो जाने पर चला जाता अथवा दो या तीन दिन तक उसी स्थल पशुके निकट सीया रहता और अन्तको उसका मांस और हड्डी खा डालता है।

ग्लपन (सं० स्त्री०) ग्लै गिच् पुक् ङ्खश्च ततो भावे ल्युट्। १ ग्लानिकरण, निन्दा, शिकायत। २ शिथिलता, अम, खेद। (त्रि०) ग्लै गिच् कर्तरि ल्यु। ३ ग्लानिकारक निन्दा करनेवाला। ४ जो मनुष्यके शरीरमें शिथिलता वा खेद उत्पन्न करता हो।

ग्लपित (सं० त्रि०) ग्लै गिच् कर्मणि क्त। १ ग्लानीकृत, अनुत्साहित, लज्जित। २ दग्ध, जला हुआ, भुलसा हुआ।

ग्लष्प (सं० पु०) गुच्छ, स्तवक, गुच्छो, समूह।

ग्लस्त (सं० त्रि०) ग्लस कर्मणि क्त। भस्मिन्, आया कृशा, निगला हुआ।

ग्लह (सं० पु०) ग्रह-अप-निपातने साधु। १ पागा खिन्न का पण, टाव, बाजा। (क्रि०) २ जूथा खिन्न। ३ लेना। ४ स्वीकार करना।

ग्लहन (सं० स्त्री०) ग्लह भावे ल्युट्। व्युत्तिक्रीडा, जूथाका खिन्न।

ग्लाल (सं० त्रि०) ग्लै लृच्। १ ग्लानियुक्त, जिसकी खेद हो। २ जो थका गया हो।

ग्लान (सं० त्रि०) ग्लै कर्तरि क्त। १ रोगसे जिसका शरीर क्षीण हो गया हो, बीमार, रोगी २ थका हुआ। ३ कमजोर। (स्त्री०) ग्लै भावे क्त। ४ दैन्य, दीनता, दरिद्रता।

ग्लानि (सं० स्त्री०) ग्लै भावे नि। १ दौर्बल्य, दुर्बलता। साहित्यदर्पणके अनुसार ग्लानि व्यभिचारिभावके अन्तर्गत है। रति, परिश्रम, मनस्ताप, लुधा और पिपासादि द्वारा उत्पन्न दौर्बल्यका नाम ही ग्लानि है। इसमें शारीरिक वा मानसिक शिथिलता, अनुत्साह और खेद हुआ करता है। २ स्वकार्यमें अचमता, अपने कार्यकी बुराई या दोष आदिको देख कर अनुत्साह, अस्वच्छि और विव्रता होनेवाली मनकी वृत्ति।

ग्लान्य (सं० स्त्री०) ग्लै भावे नि। १ दौर्बल्य, दुर्बलता।

ग्लान्य (सं० स्त्री०) ग्लै भावे नि। १ दौर्बल्य, दुर्बलता।

ग्लान्य (सं० स्त्री०) ग्लै भावे नि। १ दौर्बल्य, दुर्बलता।

ग्लान्य (सं० स्त्री०) ग्लै भावे नि। १ दौर्बल्य, दुर्बलता।

ग्लान्य (सं० स्त्री०) ग्लै भावे नि। १ दौर्बल्य, दुर्बलता।

ग्लान्य (सं० स्त्री०) ग्लै भावे नि। १ दौर्बल्य, दुर्बलता।

ग्लान्य (सं० स्त्री०) ग्लै भावे नि। १ दौर्बल्य, दुर्बलता।

ग्लान्य (सं० स्त्री०) ग्लै भावे नि। १ दौर्बल्य, दुर्बलता।

ग्लान्य (सं० स्त्री०) ग्लै भावे नि। १ दौर्बल्य, दुर्बलता।

ग्लान्य (सं० स्त्री०) ग्लै भावे नि। १ दौर्बल्य, दुर्बलता।

डो। १ चन्द्र, चाँद। २ कर्पूर, कपूर। ग्वायन्ति ग्नी डी।
 ३ हृदयकी नाडी।
 ग्लोचुकायनक (स० वि०) ग्लुचुकायनि भक्ति सेव्यो
 इत्य ग्लुचुकायनि वुज। ग्लुचुकायनिका सेवक।
 ग्वाडा (सि० पु०) १ गुण्ड, घेगा, हत्त। २ घरके चारो
 ओरका बाडा।
 ग्वार (हि० स्त्री०) गौराणी, एक तरहका पोधा। इसके
 फलकी तरकारी ओर बीजको दाल होती है। चोपाए
 इसके पत्ते बहुत रचिसे खाते है। यह वर्षाके आरम्भमें
 बोई जाती ओर जाड़ेके मध्यमें तैयार हो जाती है।
 इसके फलका गुण—बादो, मधुर भारी, दस्तावर, पित्त
 नाशक, टीपक ओर कफनाशक है। इसके सेवन
 करनेसे रतौंधी दूर होती है। कौरो, खुरयो।
 ग्वारनट (अ० स्त्री०) एक तरहका सुन्दर रगोन रेश्मी
 वस्त्र।
 ग्वारपाठा (हि० पु०) घृतकुमारी, घोकुआर।
 ग्वारिन (हि० स्त्री०) गोपकी स्त्री, ग्वानिन्।
 ग्वारो (हि० स्त्री०) ग्वार देवा।
 ग्वान (हि० पु०) अक्षर, गोप।
 ग्वान—एक पुराने हिन्दी कवि। १६५८ ई०को उनका
 जन्म हुआ।
 ग्वानककडो (हि० स्त्री०) एक तरहका जगली चिचडा।
 इसके बीज, जल और पत्ते औषधके काम आते है। लाल
 रगके इममें एक तरहके छोटे फल भी लगते है।
 ग्वानककरो (हि०) ग्वानककडो इत्यो।
 ग्वानकवि—गुजरातदेशके मथुरा नगरवासी एक भाट।
 १८१४ ई०को उनका देर देगा था। साहित्यमें वह बड
 प्रवीण थे। उनके प्रधान ग्रन्थ यह है—१ साहित्यभूषण,
 २ साहित्यदर्पण, ३ मन्त्रिभाष, ४ शृङ्गारदोहा, ५ शृङ्गार
 कवित्त। उन्होंने नयगिरि, गोपीपचोधी, यमुनानन्दरो
 (१८२२ ई०) पाटि हिन्दीको छोटी मोटी किताबों भी
 लिखी है। यह देवदत्त ओर पद्माकरके समसाम
 यिक थे।
 ग्वानराडिम (सि० पु०) एक तरहका लुप या पेठ।
 यह मानसार्गनीको रोचना पीता और अफगानिस्तान,
 पञ्जाब तथा उत्तर भारतवर्षमें होता है।

ग्वानपाडा—१ आसाम प्रदेशके पश्चिममें एक जिला। यह
 अक्षा० २५ २८ तथा २६ ५४ उ० और देशा० ८८ ४२'
 एव ६१ ई' पृ०के मध्य ब्रह्मपुत्र नदीके दोनों कूल पर
 अवस्थित है। इसके उत्तर भूटान राज्यस्य पर्वतमाला
 तथा दक्षिणमें पार्वतीयगारो जिला, पूर्वमें कामरूप ओर
 पश्चिममें रङ्गपुर जिला, जलपाइगुडी जिला तथा कोच-
 विहार राज्य है। भूपरिमाण लगभग ३६६१ वर्गमील
 है। लोकसंख्या प्राय ४६२०५२ है। ब्रह्मपुत्र नदीके
 बायें तट पर ग्वालपाडा नगर है। यहा जिलाके
 विचार विभाग ओर सट्टर अदालत है।

जिस स्थान पर ब्रह्मपुत्र नद वक्रगतिमें क्रमश
 दक्षिणामुखे घुई है, ब्रह्मपुत्रको उमी छोटी उपतारका
 पर बहुतसे मनुष्योंके वासस्थान है। नदीके बायें कूल
 पर आठ मीलमें अधिक विस्तृत समतलभूमि देखी
 नहीं जाती। नदीके उत्तरतोरवर्ती भूमिसमूहमें खेती
 होती है। ग्रामकी चारो ओर धान्यजैवके मध्य बहुतसे
 फलशाली वृक्ष देखे जाते है। जिलाकी उत्तरी सोमामें
 जगलमय गिरिमाला है, जिनके ऊपर दूरस्य बर्फसे
 ढकी हुई हिमालयको चोटी है। ये सब दृश्य एमें सुन्दर
 है कि देखनेमें हो नयन और मन लप होते है। पहाडके
 ऊची भूमि पर गुरुमट्टी, येनाइट और बालूके पत्थर
 देखनेमें आते है।

इस जिलाके उत्तर भूटान पर्वतश्रेणीसे मानस,
 गदाधर ओर शद्वोग नामकी नदिया पूर्वाधारके मध्य
 प्रवाहित हो ग्वालपाडा जिलामें ब्रह्मपुत्र नदीमें मिली
 है। इन नदियोंमें सव ऋतुमें वाणिज्य द्रव्य ले जानेके
 लिये बडी बडी नाव आती जाती है। खरस्रोता ब्रह्मपुत्र
 नदीने अपने प्रबलवेगमें बहुत स्थानको काट लानशायित
 कर दिया है तथा कहीं बालू जमा हो कर नदीके बीच
 छोटे छोटे टापूमें बन जाता है। इस नदीमें प्रतिवर्ष
 भयानक बाढ आती जिस कारण बहुतसे ग्राम भंग जाते
 और नावोंको क्षति होती है।

पूर्वाधारमें गवर्मेण्टके अधिकृत वन समूहका भूपरि
 माण लगभग ७८० वर्गमील है। ग्वानपाडा जिलामें
 याघ, गैडा और नक्षिपाटि नामा प्रकारके जङ्गली जन्तु
 लेने जाते है। प्राय तोस वर्ष पक्षी राजघाघिभागसे

आदेश हुआ था कि जो मनुष्य जंगली जानवरको मार सकेगा उसे पारितोषिक दिया जायगा।

इस जिलाके बहुतांश प्राचीन कामरूप राज्यके अन्तवर्ती थे। उस समयमें निर्मित ठाकेश्वरके प्रधान मंदिरका श्वंशावशेष देखा जाता है। कोचविहार-राजवंशकी वृद्धिके साथ साथ यह राज्य क्रमशः बहुतेरे कोटे कोटे विभागमें परिणत हुआ है। जिलाके मध्य वर्तमान विजनीद्वारके राजाकी एक बड़ी जमींदारी है। वे अपनेकी कोचविहार राजाके कनिष्ठ पुत्रके वंशधर बतलाते तथा उक्त सम्पत्ति राजवंशीयगणोंकी भरणपोषणाथे प्राप्त वृत्ति कह कर दावा करते हैं।

१६वीं शताब्दीमें दोनों ओरसे दो शत्रु सैन्यदल खालपाड़ा आक्रमण करनेके लिये आये थे। पूर्वार्धसे असभ्य आहोम जाति घोर घोर ब्रह्मपुत्रकी उपत्यकाभूमिमें आ पहुँची। इसी जातिके नाम पर इस प्रदेशका नाम आसाम हुआ है। पश्चिमसे मोगल दिल्ली साम्राज्यमें इस्लाम धर्म बढ़ानेके लिये क्रमशः अग्रवर्ती हुए थे। अफगानोंके हाथसे मानसिंह द्वारा बङ्ग अधिकृत होनेके २७ वर्ष पीछे १६०३ ई०को मोगलने पहले पहल आसाम उपत्यकासे दरङ्ग जिला तककी भूमि दिल्लीमें मिला दी थी। शीघ्रही आहोम जातिके साथ उन्हें लड़ाई छिड़ी।

१६६२ ई०में गौहाटीके निकटवर्ती प्रदेशमें मोगल-सैनाके अध्यक्ष भीरजुमला आहोमसे पराजित और विशिष्ट रूपसे क्षतियुक्त हो भागनेके लिये बाध्य हुए थे। इस नगरमें तथा ब्रह्मपुत्रके उस पार अवस्थित राजामट्टी नामक स्थानमें सैनिकवास निरूपित हुआ। स्थानीय जङ्गलभूमिका देखभाल और आहोम जातिसे इस प्रदेशकी रक्षा करनाही उक्त सैनिकोंका प्रधान कार्य था।

मोगल राज्याधिकारके समय इस जिलाके प्रायः २२ अंश मनुष्य इस्लामधर्ममें दोषित हुए थे। १७६३ ई०को चिरस्थायी प्रबन्धके समय इस जिलाका राजस्व (११७००) रुपये निरूपित हुये थे। ब्रिटिश शासनके समयसे ही रङ्गपुर जिलाके साथ इस जिलाका शासनकार्य स्वतन्त्र भावसे चला आता था, किन्तु १८२२ ई०से एक कमिश्नरके अधीन इसका शासनकार्य स्वाधीन रूपसे चला आ रहा है।

बहुतेरे दिनोंसे 'खालपाड़ा' नगर राजनीतिक और वाणिज्य-विषयमें प्रधान स्थानके जैसा गण्य था। १७८८ ई०को मिटर रउत्र नामक एक अङ्गरेज वणिक्ने मोआ-मारियोंका विद्रोह दमनके लिये अपने स्वचरमे सात सौ मशह्व व्यक्ति के आमाभराजका सहायता की थी। १८२५ ई०में आसाम प्रदेश अङ्गरेजके हाथ आने पर खालपाड़ा जिला उक्त नव अधिकृत प्रदेशमें मिला दिया गया था। किन्तु यहाँका राजस्व बटल करनेका कार्य बङ्गालके नियमानुसार चलता है। १८६४ ई०को भूटान युद्धके बाद भूटीयाने हारराज्य अङ्गरेजोंके हाथ सौंप दिया था। १८६८ ई०में खालपाड़ाको दोवानी और फौजदारी विचारकार्य आसामके जुडिमियन कमिश्नरके हाथ अर्पित हुआ। १८७२ ई०में आसाम प्रदेश बङ्गालमें स्वतन्त्र भावमें संगठित हुआ था। यहाँ एक डिप्टी कमिश्नर है। तीन मजिस्ट्रेट, कलेक्टर और सवरडिनेट जजका काम करते हैं।

इस शताब्दीके प्रथमभागमें हामिल्टन बुकानन माहवने खालपाड़ा माप कर इसका भूपरिमाण २६१५ वर्गमील स्थिर किया था। इसके बाद इसका भूपरिमाण २५७१ वर्गमील निरूपित हुआ।

इस प्रदेशमें राभा, मेच, कछाड़ी, गारो प्रभृति आदिम जातिका वाम है। इन्हे कौड़ कोच जातिकी संख्या भी अधिक है।

धान्य यहाँको प्रधान फसल है। हैमन्तिक, शाली या आमन धान आषाढ़में तथा आडम धान फाल्गुन मासमें बोया जाता है। जलभूमिमें बाव नामक एक तरहका धान्य फाल्गुनमासमें बोया जाता और कार्तिकमासमें काटा जाता है। यहाँ जोतदारी बन्दोवस्तुमें अधिकांश जमीन है १८६३ ई०में टिड्डिने यहाँको समस्त फसल नष्ट कर दी थी। इसके अलावे प्रतिवर्ष बाढ़के समय जिलाका उत्तरांश जलसे डूब जाता है, किन्तु इस तरहकी बाढ़से दुर्भिक्ष नहीं होता।

यहाँ कौड़के गोलीसे एड़िया और मुगा रेशस निकाले जाते और इससे वस्त्रादि निर्मित होते हैं, इसके सिवा सरसों, पाट, कपाम, बहादुरी काष्ठ, आसामी अण्डी वस्त्र, भारतीय रवर और चाय प्रभृतिकी रफ्तनी होती

है। यहाँके खालपाडा, धुवडो, योगोगोफा विज्जानो, गोरौ पुर तथा मिडिमारे नगर जौ प्रधान वाणिज्यस्थान है।

सूचाक रूपमे विचारकार्य चलानिके लिये यह जिला दो उपविभागमे विभक्त हुआ है। यहाँ मध मिलाकर ८ घाना है।

० उक्त जिलेका एक विभाग। यह आसाम प्रदेशमे गारो पर्वत और ब्रह्मपुत्र नदके मध्य अक्षा० २५° ५२' तथा २६° ३०' उ० और देशा० ९० ६ एव ९१ ६ प०में अवस्थित है। इसका दक्षिण पूर्वांग उक्त नदीके ऊपर कूल तक विस्तृत है तथा कहीं कहीं छोटी छोटी पहाडियोंमे सुशोभित है। खालपाडाकी अधिकांश जमीन नीचे और जलाशयोंमे परिपूर्ण है। यहाँके कामारकाटा और तामराडा नामके दो बड़े जलाशय ग्रीष्मकालमें भी जलमे भरे रहते हैं। आसाम प्रदेशके अन्यान्य स्थानों की तरह खालपाडा भी विषैलेरूपमे प्रसिद्ध कालाञ्जर द्वारा आक्रान्त होता है। इसी लिए १८८१मे १८८१ तक दस वर्षोंमें लोकमर्यादा फीसदो १८ घट जाती है।

नदीके किनारे धान और मरसोंकी फसल बढ़त होती है, परन्तु १८६७ ई०के भीषण भूमिकम्पके बादसे बाढ़के कारण यहाँकी फसल विगड जाती है। खाल पाडा विभागकी जनसंख्या ६२४७ है। इसका शासन एक भारतीय शासनकर्ताके द्वारा परिचालित होता है। शासनकर्ताके सुभौतिके लिए यह खालपाडा, दुधनिया, लक्ष्मीपुर और उत्तर सालमारा इन ६ थानोंमें विभक्त कर दिया गया है। इसमें ३८५ ग्राम लगते हैं।

३ उक्त जिलेका एक प्रधान शहर। यह ब्रह्मपुत्र नदके दक्षिण तट पर अक्षा० २६° १०' उ० और देशा० ९०° १८' प०में अवस्थित है। आसामके साथ मयुक्त होनेसे पहले खालपाडा इट इण्डियन कम्पनीके अधिकृत सीमांत स्थान मसूरुमें प्रधान नगर था और यहाँके रहनेवाले पदजे अमानमें वाणिज्यका पूर्णाधिकार प्राप्त कर देगीय बणिर्कीक साथ नाममूलक व्यवसायमे एक प्रकार बन गये तथा देगीय व्यापारियोंमे भी आसाममें व्यवसाय मध्यमेी कर्तृत्व लाभ कर बहुत वर्षे उपाडेन करने लगे थे। पद्ये ज गवर्मेणने सबसे पहले १७८८ ई०में आसाम गवर्मेण्ट के वैयक्तिक व्यापारमें द्रव्यस्व करनेका प्रवय

किया था। इसी वर्षमे राउय नामक किमी एक लवण व्यवसायमे विरोहकी दवानिके लिए खालपाडाके राजा की ७०० सिपाहीकी महाजता दी, किन्तु दुर्भाग्यवश उनमेंसे कीडे भी जीता नहीं लाटा। राउयके दो शिशु सन्तानोंकी स्मृति स्वरूप एक कुटोरका खण्डहर नदीके किनारे अभी तक पडा है।

उम स्थानमे दक्षिणकी और ब्रह्मपुत्रकी अधिव्यकार्म वनउच्चशोभित सुदृ पर्वतमाला और उत्तरमें वरफमे टके हुए हिमालयकी शोभा टील पडती है। १८७६ ई०से जिलेका प्रधान कार्यालय खालपाडासे धुवडीको चला गया और तभीमे यह एक उपविभागमें गिना जाता है। खाला (हि०) नो० ६७०।

खालिन (हि० स्त्री०) १ खालाको स्त्री : २ खार, सुरघी, कीरी।

खालियर—१ मध्यभारत एजिप्तीका मुल्की इकुम्पत। (Residency) इसमें मध्यभारतके पश्चिमीय विभागका उत्तरी हिस्सा सामिल है। यह उत्तरमें चम्बलमे दक्षिण भिमला तक और पूर्वमें बुन्देलखण्ड तथा युक्तप्रदेशमे पश्चिममें राजपुताना एजिप्ती तक फैला हुआ है। या अक्षा० २३ २१' तथा २६ ५२' उ० और देशा० ७६ २८ एव ७६ ८० प०में पडता है। इसका भूपरिमाण १७८२५ वर्गमील है।

यहाँ लगभग २१८७६१२ मनुष्य बसते हैं, जिनमेंसे १८८३०३८ हिन्दू और शेषमें मुसलमान तथा जैन हैं।

२ भारत गवर्मेण्ट तथा मध्यभारत एजिप्तीके राज नैतिक सन्धयमें चावट देगी राजाके अधीन एक विस्तृत राज्य। प्रसिद्ध महाराष्ट्र सदाँर सेन्धियाके वगधर यहाँ राज्य करते थे। कई एक विभिन्न जिला ले कर यह राज्य संगठित है। इसके पूर्वमें युक्तप्रदेशका जालोन और भाँसी जिला तथा मध्यप्रदेशका भागल जिला, दक्षिणमें भूपाल, खिन्धीपुर और राजगढ़, पश्चिममें भानावार और कीटाराज्य है, तथा उत्तर, उत्तर-पूर्व और उत्तर-पश्चिममें चम्बल नदीने राजपुतानाके दोनपुर और करौली नामक स्थानोंको विभक्त किया है। इसी चम्बल नदीने पागरा और इटायाकी विभक्त कर दिया है। १८६० ई०के पहले नर्मदा नदीके दक्षिणमे प्रदेश सेन्धियाके अधिकांशमें

या। किन्तु १८६१ ई०में इन्होंने उक्त प्रदेशकी सिन्धु और वेतावा नदीकुलस्थ प्रदेशके साथ बदल लिया था। प्राचीन आगरा और मालव प्रदेशका बहुतांश ग्वालियर राज्यामें मिलता है। यह अक्षा० २२° १०' तथा २६° ५२' ७०' और देशा० ७२° ३८' एवं ७६° ८' पूर्वमें अवस्थित है। भूपरिमाण २५०४१ वर्गमील है।

ग्वालियरके उत्तर-पूर्व सीमामें आगराकी निकटवर्ती जमीन साधारणतः समतल और कुछ कुछ उर्वरा है। जलस्रोतके निकट स्थान स्थान पर गहरा गड़हा देखा जाता। इसके दक्षिण ग्वालियर नगरके निकट जमीन क्रमशः ऊँची होती आड़े है। समतल क्षेत्रकी जगह जगह यह पहाड़ हैं। जिनमेंसे एकके ऊपर विख्यात ग्वालियर दुर्ग स्थापित है। इस राज्यके मालव अधित्यकाका अंश लगभग १५०० फीट ऊँचा होगा। मन्दु-शिखरका उपरिस्थ शैलगड़ नगर समुद्रपृष्ठसे २६२८ फीट ऊँचा है।

मन्दु शिखरसे यह अधित्यका उत्तर पूर्वमें कुछ कुछ ढाल हो गई है। उस ढाल हो कर बहुतसे जलस्रोत चम्बल नदीमें जा गिरे हैं। इसका दक्षिण अंश उत्तरकी नाईं ढाल नहीं है।

बहुतसी नदिया इस राज्य ही कर बहती हैं। इनमेंसे नर्मदा, चम्बल और सिन्धु प्रधान हैं। इन्हें छोड़ कुवारी, असर, शङ्ख प्रभृति कई एक छोटे जलस्रोत राज्यके उत्तरांशसे निकल सिन्धु नदीमें जा गिरे हैं।

ग्वालियरके दक्षिण-पश्चिममें बहुत अफीम उत्पन्न होता जो मालवा ओपियम (Malwa Opium) नामसे मशहूर है। यहां यव, गेहूँ, जौआर, वजरा, मूड़, भुटा, धान, हट्टी, अदरक, जख, नील, उक्तृष्ट तम्बाकू और कपास होते हैं।

बुर्हानपुर नामक स्थानमें सुन्दर कपास और रेशमीका कारवार है। चन्देरी नगरमें पहले अच्छे अच्छे सुती वस्त्र तैयार होते थे; अभी विलायती वस्त्रकी आमतनी होने पर उक्त व्यवसायकी कमी हो गई है।

श्रीषकालमें यहाँका जलवायु उतना अस्वास्थ्यकर नहीं है। वर्षाऋतुमें इस राज्यके उत्तरांशमें ज्वरका प्रादुर्भाव देखा जाता है। जङ्गली जंतुओंमें व्याघ्र, चीता,

भालु, बथरा, जायना, जङ्गली कुत्ता, गीदड़, जनमाजोर, नकुल (नैवला), इन्दूर, जङ्गली शूकर, नीलगाय, छुंछुंटर, नानाजातिके हरिण, मरुपि, इन्दूर, गन्ध (स्वारपुत्र), खरगोश, अनेक तरहके पक्षी और मछलियाँ पाये जाते हैं।

इतिहास—ग्वालियर नगर कब स्थापित हुआ इसमें मतभेद है। कवि खड्गरायके मतमें कर्नाल्युगके प्रारम्भमें तथा फजल अलि और हीरामनके मतानुसार ३३६ विक्रम संवत्में अर्थात् २०१ ई०को बह नगर सूर्यसेनने स्थापित हुआ था। प्रवृत्तत्वविद् कनिंङमने लिखा है कि "तीरमाणके पुत्र राजा पशुपतिके राज्यकालमें उनके मन्त्रीने सूर्यमन्दिर स्थापित किया था। उसी समय ग्वालियरका दुर्ग स्थापित और सूर्यकुण्ड खोदा गया था।"

ग्वालियरके दुर्गमें प्राप्त मिहिरकुलके १५वीं संवत्-सरज्ञापक शिलालिपिमें लिखा है कि मादचेट नामक एक मनुष्यने उक्त सूर्यमन्दिर प्रतिष्ठा की थी।

तीरमाण और मिहिरकुल देवो।

प्राचीन ग्वालियर नगर किस समय निर्मित हुआ था यह ठोक कहा नहीं जाता। महाभारतमें यह जनपद गोपराष्ट्र नामसे तथा मिहिरकुल प्रभृतिके समय उल्कीर्ण शिलाफलकमें "गोपाद्यय भूधर", "गोपाचल", "गोपाद्रि" इत्यादि नामसे अभिहित हुआ है।

खड्गरायने लिखा है कि—कच्छवाह वंशीय कुन्तल पुरीके राजा सूर्यसेनको कुष्ठरोग हुआ था। एक दिन ये गोपगिरिके निकट आखेटके लिये गए थे। यहां इन्होंने लष्णार्त ही ग्वालिया नामक एक मिडके गुहामें जा जलके लिये प्रार्थना की। मिडने कमण्डलुसे जल ला कर राजाको पीनेके लिये दिया था। जल पीते ही सूर्यसेन कुछ रोगसे मुक्त हो गये। उस समय राजाने क्षतज हृदयसे हाथ जोड़ मिडका कोई अभीष्ट पूर्ण कर देनेकी प्रार्थना की। मिड पुरुषने उन्हें गोपगिरिके ऊपर दुर्ग निर्माण और कुण्डको बड़ा आकारमें बना देनेके लिये कहा। सूर्यसेनने भी उनकी आज्ञानुसार दुर्ग निर्माण कर उसका नाम "ग्वाल-आवर" या "ग्वालियर" और बड़ा कूप काट कर उसका नाम सूर्यकुण्ड रखा। मिडने सूर्य-

सेनका दूमरा नाम सुहनपाल दिया। खड्गाराय और फजल अलिके मतमें सुहनपालसे ले ८४वीं पीढीमें तेजकर्णने जन्म लिया था उन्हींके समयमें श्वानियर दूसरेके हाथ आ गया था। खड्गाराय, वटलीदास प्रभृतिका मत है कि तेजकर्ण राजा रणमनकी कन्यासे विवाह करनेके लिये देवास गये थे। जानिके समय अपने भानजे परमानदेवके ऊपर राज्यभार सौंप गये थे। रणमनकी कोई पुत्र न होनेसे जामाता तेजकर्णको ही अपना राज्य अर्पण किया था। इधर परमानने मामाको मधुर बचनमें लिख भेजा कि श्वालियरका राज्य उसे ही प्रदान करें। तेजकर्णने इसे अश्लोकार न किया। इस पर परमानने विद्रोही हो मामाको कहला भेजा कि वे अब श्वानियरके दुर्गका अधिकार पा नहीं सकते। इस तरह श्वालियर परिहार वशोय परमान या परमर्दीदेवके हाथ आया था। खड्गाराय प्रभृतिके मतानुसार परमान १२२६ ई०में राजमिहामन पर बैठे थे। टाड माहवने लिखा है कि, 'श्वालियरके अन्तिम कच्छवाह राजा डोलारायने १०२३ मख्तुकी राज्य छोड़ दिया था।' खड्गारायने लिखा है कि दुल्हाराय श्वानियरमें मिरफे एक वर्ष राजा कर विवाह करनेके लिये चले गये थे और विवाहके एक वर्ष बाद इन्होंने श्वशुरका राज्य पाया था। इसके बाद ही परमान विद्रोही हो गया था। सुतरा परमानने जब ११८६ मख्तुमें राजागरोहण किया है तब दुल्हाराय या तेजकर्णने १०२३, १०६३ या ११६०में राजा छोड़ा, यह बात ठीक नहीं जचती। खड्गारायने दुल्हाराय और उनके पूर्ववर्ती कच्छवाह राजाओंके सम्बन्धमें लो कुष्ठ लिखा है उसका अधिकार काव्यनिक मानूस पढ़ता है, क्योंकि श्वानियरसे आविष्कृत गिनालिपि द्वारा जाना जाता है कि १३वीं गताब्दीमें श्वानियर महाराज रामदेव और उनके पुत्र महाराज भोजदेवके अधीन था। भोजदेव ८६२ से लगभग ८८२ ई० तक विद्यमान थे। प्रद तत्त्वविद् कनिष्कका मत है कि पहलसे ही बराबर स्वाधीनभावसे न हो करट रूपसे ही कच्छवाहवय गालियरमें राजत्व करते थे। उक्त भोजदेवके कनिष्ठ पुत्र विनायकपालके बाद कच्छवाहवशीय वज्रदामा गालियरको अधिकार कर नवराजवशके प्रतिष्ठातो

हुये थे। यहांके जेनदेवमूर्तिके पवित्र अङ्गमें उल्कीर्ण वज्रदामाकी गिनालिपि पढनेसे जाना जाता है कि ये लक्ष्मणके पुत्र थे और इन्होंने ही पहले गोपगिरिदुर्गमें जयटका बजाया था। सामवहृके मन्दिरमें ११५० और ११६० मख्तुको उल्कीर्ण उभ वशके राजा महिपालको दी गिनालिपिसे जाना जाता है कि वज्रदामाके पुत्र मङ्गल, मङ्गलके पुत्र कीर्तिपाल, कीर्तिपालके पुत्र भुवनपाल, भुवनपालके पुत्र देवपाल, देवपालके पुत्र पद्मपाल, पद्मपालके पुत्र सूर्यपाल तथा सूर्यपालके पुत्र महाराज महीपाल थे। वे सबके सब गालियरमें राजा करते थे। इसके बाद एक वृहत् मर्मर प्रस्तारमें ११६१ मख्तुको उल्कीर्ण गिनालिपिमें भुवनपालके पुत्र कच्छवाहव शोय मधुसूदन नामक एक राजाका नाम पाया जाता है। मधुसूदनके बाद उनके व शके और किसी दूसरे राजाके नाम गिनालिपिमें नहीं पाये जाते। मभवत मधुसूदनके राज्यावसानमें कच्छवाह व शिवीके हाथसे गालियर राज्य अच्युत हुआ था। इसके अनन्तर १२०७ मख्तुमें उल्कीर्ण परिहारव शोय रामदेव और गीविन्दचन्द्रके नाम पाये जाते हैं। खड्गाराय और वटलोदासके ग्रन्थमें लिखा है कि परमानदेव (परमर्दीदेव) के पुत्र रामदेव थे। परमान ही गालियरके परिहारवशीय प्रथम राजा थे। ये ११८६ मख्तु (१२२८ ई०)में और इनके पुत्र रामदेव १२०५ मख्तु (११४८ ई०)में मिहामन पर बैठे थे। रामदेवके बाद क्रमातुमार १२१२ मख्तुमें इनके पुत्र हमीरदेव, १२२५ म०में हमीरदेवके पुत्र कुवेरदेव, १२३६ मख्तुमें इनके पुत्र रवदेव, १२५१ मख्तुमें इनके पुत्र लोहदेव तथा इनके बाद १२६८ म०में इनके पुत्र मारह देवने राजा प्राप्त किया था। विख्यात मुसलमान ऐतिहासिक फारिस्ताने लिखा है कि "वशउद्दीन तुशीनने प्राय एक वर्ष गालियर अचरीध किया था। इस समय इन्होंने पर्वतकी चारो ओर बदनमे छोटे छोटे दुर्ग निर्माण किये थे। गालियरके राशाने राजारसामें अममय हो अन्तमें गुप्तदुर्गमे कुतबुद्दीन आरबेगको बुनाया। तदनुसार आरबेगने सैन्य भेज कर गालियरकी अधिकारमें कर लिया। इनके पुत्र आरामने थोड़े दिन तक यहां राजा किया था। इसके बाद १२१० ई०की

हिन्दुओंने मुसलमानोंके हाथसे इस स्थानका पुनरुद्धार किया। खड्गरायने लिखा है कि १२८६ सं० (१२३२ ई०)में अलतमामने गालियर पर आक्रमण किया था। बहुत काल युद्ध कर गालियरके राजा बलहीन हो गये। जब इन्होंने देखा कि अब कोई निस्तार नहीं है तब राज-महिलायोंने कठिन जहरव्रतका अनुष्ठान किया। जिस सरोवर-तीर पर जहरव्रत हुआ था, अभी वह "जहर ताल" नामसे विख्यात है। महिलाओंके जलती हुई आगमें कूटने पर राजा डेढ़ हजार सन्नचरोंको साथ ले दुर्गका द्वार खोलते हुए बाहर निकले। ये ५३६० मुसलमान सैनिकोंको विनाश कर अन्तमें आप भी सन्नचरोंके साथ रणक्षेत्रमें मर मिटे। उनके साथ साथ गालियरके परिहारवंशका भी अंत हो गया। यह युद्ध कन्नानी पत्थरके ऊपर चार पंक्तिमें खोदी हुई थी, सम्राट् वावरने इसे देखा था।*

इसके बाद १३६८ ई० तक गालियर दिल्लीके मुसलमान राजाओंके अधीन था। उस समय गालियर दुर्गमें राजकीय सम्भ्रान्त कैदी रखे जाते थे। फेरिस्ताने फिर भी लिखा है कि ६६५ हिजरी या १२६५ ई०में जलालउद्दीन फिरोजने यहां एक बड़ा गुम्बज निर्माण किया था। १३१६ ई०में सुवारकने यहां अपने तीन बन्दे भ्राताओंको मार डाला था। १३३६ ई० में इवन-बतुताने गालियरके दुर्गको देख कर लिखा है कि दिल्ली-सम्राट् जिनसे कुछ भय खाते, उन्हें इस दुर्गमें बन्दे कर रखते हैं।

उनके पिता वीरसिंहदेव गालियरके राजा हुए थे। वीरसिंह पहले गालियरके उत्तर दन्दरोली नामक परगनाके एक जमींदार थे। ये दिल्लीके प्रधान मंत्रीके अधीन काम करते थे। भाग्यवश सम्राट्की कृपादृष्टि इन पर पड़ी। सम्राट् इनकी कार्यपटुता और विचक्षणता देख संतुष्ट हुए और उन्हें गालियर दुर्गके शासनकर्ताके पद पर नियुक्त किया। उस समय सैयटके अधीन गालियर दुर्ग था। उसने सम्राट्को आज्ञा उल्लङ्घन कर दी। इस पर वीरसिंहने कौशलक्रमसे उनको और प्रधान कर्मचारियोंको निमन्त्रण कर बुला अफीम

युक्त भोजन कराया और अन्तमें उन सबको बन्दे कर किला अधिकारमें कर लिया था। वीरसिंह २५ वर्ष तक दुर्गाधिपति थे, उसके बाद १४५७ संवत् (१४०० ई०) में इनके पुत्र विरमदेवने शासनभार प्राप्त किया।

गालियरके त्रिकोणियानाल और सुझानियाकी अम्बिकादेवके मन्दिरसे १४६५ संवत् (१४०८ ई०) और १४६७ संवत् (१४१० ई०)में लिखी हुआ विरमदेवकी गिलालिपि पाई जाती है। खड्गरायने इनका नामोल्लेख कहीं नहीं किया। उन्होंने वीरसिंहके बाद उदरणदेव, धीरमदेव, लक्ष्मीसेन और गणपतिदेवके नाम वर्णन किये हैं। फिर तोमरवंशावलिमें विरमदेवके बाद यथाक्रमसे उदरण, दोलमहाय और गणपतिदेवके नाम मिलते हैं, परन्तु गणपतिदेवके पुत्र दुङ्गदेवके समयमें लिखा हुआ ४ गिलालेखमें गणपतिके सिवा दूसरे किसीका नाम नहीं पाया जाता। इससे अनुमान किया जाता है कि विरमके बाद गणपति राजा हुए थे। पूर्व समयमें दुर्गाधिपति सम्राट्को कर देते थे। १४२४ ई०में दुङ्गदेवसिंह दुर्गाधिपति हुए। इस वर्ष मालवाके होमङ्गाने गालियरके दुर्ग पर आक्रमण किया। अन्तमें उनके हाथसे दिल्लीपतिने पुनः ले लिया था। १४२६ ई०में दिल्लीश्वर सुवारकगंगह गालियर जा राजाश्रमि कर ले लीट आये थे।* इसी तरह १४२७, १४२८ और १४३२ ई०में भी दिल्लीपति गालियर गये थे। इससे जाना जाता है कि दुङ्गदेवसिंह अपने मनसे कर देना नहीं चाहते, दिल्लीश्वरके समन्य वहां पहुंचने पर कर देनेमें बाध्य होते थे। राजा दुङ्गदेवसिंह ३० वर्ष तक गालियरमें राज्यशासन करते रहे। उनके समयमें यहां शिल्प और पत्थरके कामकी बड़ी उन्नति थी। दुङ्गदेवसिंहकी गिलालिपि पढनेसे जाना जाता है कि उनके समयमें गालियर आर्यावर्तमें एक पराक्रान्त राज्यके जैसा गिना जाता था। तथा दिल्ली, मालवा और जौनपुरके मुसलमानराज भी समय समय पर उनसे सहायता लिया करते थे।

दुङ्गदेवसिंहके बाद उनके लड़के कीर्तिसिंह राजा हुए। कीर्तिसिंहके समयमें पर्वत काट कर जो सुन्दर

* Babor's Memoirs, by Erskine, p. 384.

गिन्ध्याकार्य किया गया था वह बहुत प्रशंसीय है। उनके समयमें १५३५ और १५३० सम्बत्की लिखी हुई गिन्ध्यालिपि पाई गई है। उस समयके मानव, जोनपुर और दिल्लीके इतिहासमें भी गालियरके राजका पुरा पुरा छान जाना जाता है। ये मुसलमान इतिहासमें "किरणराय" नामसे मगहर है। दिल्लीश्वर बहलोल लोदीके साथ जोनपुरके महसुद सरकीके भोपण युद्धकालमें किरण और उनके भाई पृथ्वीराय भी सम्मिलित थे। उस युद्धमें फतेखान् हारिसे पृथ्वीरायके मारे जाने पर किरणने इसका बदला लेनेके लिये उसी समय फतेखान्का मुण्ड दो खड कर दिल्लीश्वरके निकट भिजवा दिया था। तमोसे जोनपुरके मुसलमान गालियर राजासे उमका बदला लेनेका मोका टूट रहे थे। फिरस्ताने लिखा है कि, "७०० हिजरी या १४६५ ई०में जोनपुरके हुमेन सरकीने गालियरके दुर्ग पर आक्रमण करनेके लिये एक बड़ी भारी सेना भेजी थी। घोरतर युद्धके बाद गालियरके राजाने सन्धि कर ली और कर देनेके लिये राजा हुए।" इस समयसे गालियरके राजाने दिल्लीके विरुद्ध जोनपुरका पक्ष धरलम्बन किया था। जोनपुराधिपति हुमेनकी माता बेबी राजीकी मृत्यु होने पर किरणरायने १४७३ ई०में सरकी राजाको मानवना देनेके लिये अपने लडके कन्याणकी भेजा था। इसके बाद १४७८ ई०में हुमेन सरकी दिल्लीश्वर बहलोलसे पराजित हो गालियर भाग आये थे। यहाँ आने पर किरणराय लाखों रुपये और तम्बू, चाटि नाना द्रव्य भेंट दे कालिकी पहुँचा आये थे। दूसरे वर्ष कीर्तिसिंह या किरणरायकी मृत्यु हुई। इनके बाद इनके पुत्र कन्याणमलने ७ वर्ष निर्बलवादा राजा शासन किया। १४८६ ई०में इनके पुत्र मानसिंहने पितृपद प्राप्त किया। इसी वर्ष बहलोल लोदीने उन पर चढ़ाई की थी। इन्होंने दिव्यी श्वरकी ८० नाव १०० देकर अपना छुटकारा पाया। १४८८ ई०में बहलोलके पुत्र मिकदरलोदीने मानसिंहकी एक सुदर पीशाक और घोडा भेंट स्वरूप भेजा। मानसिंहने महम्मद अश्वारोहियोंके साथ अपने भतीजेकी बयाना नामक स्थानमें भेज कर मिकदरकी सम्मान रक्षा की थी। इसके बाद १५०० ई० तक गालियरमें कोई

विशेष घटना नहीं हुई। १५०१ ई०में राजा मानसिंहने दिल्लीश्वरके निकट निहाल नामके एक दूतकी भेजा था। दूतको अनुपयुक्त कथासे दिल्लीश्वर क्रोधित हो उठे तथा थोडे समयके बाद हो समेन्य गालियर राजाके विरुद्ध युद्ध करनेके लिये चल पड़े। इस समय राजा मानसिंहने मैयट खाँ, बाबर खाँ और राय गणेश नामके तीन भाग हुए मनुष्योंकी एकद दिल्लीश्वरके निकट भेज दिया और बहुत भेंट देकर अपने पुत्र विक्रमादित्यकी भेज कर सन्धिम्यापन कर ली। १५०५ ई०में सिख दरने फिर भी एक सेना भेजी थी, किन्तु इस बार गालियरवासियोंने अदम्य उत्साहसे विपक्षकी गति रोक दी थी। १५ लडाईमें दिल्लीपति विशेष क्षतिग्रस्त हो रणक्षेत्रसे भागनेके लिये बाध्य हुए थे। इस समय मानसिंह यथाथमें स्वाधीन राजा हुए। १५१७ ई०में मन्दरने गालियरके राजाको पराजित करनेके लिये दूर दूरके यमौर उमरावोंकी आगरामें बुलाया था। किन्तु थोडे ही समयके बाद उनको मृत्यु हो जानेसे अभीष्ट सिद्ध नहीं हुआ। इसके बाद सुलतान इब्राहिमलोदी अपने पिताके पद पर आरूढ हुए। मानसिंहने इब्राहिमके भाई जनालवाको गालियरके दुर्गमें आश्रय दिया था। इसीसे इब्राहिमने प्रतिहिंसा और उच्च आशामें उत्पन्न हो गालियर जीतनेके लिये अजीम हुमायूँके अधीन तोमरजार अश्वारोही, तीन सौ गजारोही तथा अनेक तरहके यन्त्रादि भेजे थे। उनने सात सर्दारोंकी भी हुमायूँको मदद देनेकी अनुमति दी थी। उस समय महावीर और तीक्ष्णबुद्धि मानसिंह दोनों कालधाममें फस गये। इन्हीं तोमर राजाओंके समयमें गालियरकी विशेष उन्नति हुई थी उन्होंने कृषिकार्यको सुविधाके लिये अनेक स्थानोंमें भीने खुदवाई थीं। वे गिन्ध्यास्तके एक प्रगाढ़ अनुरागी थे गालियरके दुर्गमें उन्होंने जो मानसिंह नामक सुन्दर पत्थरका प्रासाद निर्माण किया था, मांगल सम्राट वापर, राजमन्त्री धनुन फजल प्रभृति सुतकण्ठसे उम प्रासादके गिन्ध्यापुष्पको बहुत प्रशंसा कर गये हैं। उनमेंसे एक सद्गीतासुगामी और दूसरे सुगायक थे, जिनको रची हुई कविता आजन्तों भी प्रचलित है। मुसलमान ऐतिहासिक निर्यामत उल्लाने मान

सिंहको बहुत प्रशंसा कर अन्तमें लिखा है "वे कभी भी किसी मनुष्यके ऊपर अत्याचार नहीं करते। हिन्दू होने पर भी वे इस्लाम धर्मानुरागी थे।" फजल अलीने लिखा है 'मानसिंहके महेश उदार राजा विरले ही होंगे, उनके समयमें ग्वालियरवासी उन्नतिके शिखर पर पहुँच गये थे।"

यानसिंहके पुत्र विक्रमादित्यने सिर्फ दो या तीन वर्ष राज्य किया था। इमो समय अजीम हुमायूँने ग्वालियर अवरोध किया था। कई एक मास अविरल चेष्टाके बाद इन्होंने बादलगड़ द्वारको जला दिया। दग्धावशेष होने पर एक सुवहत् पीतलकी वृषभ मूर्ति पायी गई थी। वह मूर्ति दिल्लीमें ला कर दिल्लीके बोगटाद्वार पर रखी गई। १५२३ ई०में अकबर उम प्रसिद्ध मूर्तिको फतेपुरसिकरीमें ले आये थे। अजीम हुमायूँने बहुत दिन अवरोध और बहुतसे सैन्यके मारे जानिके बाद एक एक करके सब द्वार अधिकार कर लिये थे। लक्ष्मणपुरद्वार आक्रमणके समय ताज खां नामक सुलतान इब्राहिमके एक प्रधान अमीर मारे गये थे। उम द्वारके निकट उनकी कब्र है। इस तरह एक वर्ष अवरोधके बाद जब सिर्फ हथियापुर नामक द्वार जीतनेके लिए रह गया था, विक्रमादित्यने देखा कि अब कोई निस्तार नहीं है और शीघ्र ही मुसलमानोंके हाथसे मानसंभ्रम नष्ट हो जायगा तब शीघ्र ही उनसे युद्ध छोड़ सन्धिका प्रस्ताव किया। इस तरह ग्वालियर फिर भी मुसलमानोंके अधीन हो गया। विक्रमादित्यने दिल्ली जा सुलतान इब्राहिमसे भेंट की। इब्राहिमने उन्हें संभावाद जिला जागीर और दिल्ली साम्राज्यके मध्य एक उच्च अमीरपद प्रदान किया।

१५२६ ई०को पानीपथकी लड़ाई तक ग्वालियर दिल्लीके लोदीवंशके अधीन था। पानीपथके भौषण रणक्षेत्रमें इब्राहिमके साथ ग्वालियरके अन्तिम तोमर राजा विक्रमादित्य भी मारे गए थे। सम्राट् वावरने भी विक्रमादित्यके वीरत्वकी तारीफ की थी। कौहिन्दूर शब्दमें विक्रमादित्य सब धीय विवरण देखो। दिल्ली साम्राज्य मोगल-वीर वावरके हस्तगत होने पर ग्वालियर राज्य भी उन्हींके अधिकारमें आया। जब वावरने आगरा

अधिकार किया था, उस समय मङ्गलराय नामके एक तोमरवंशीय राजा ग्वालियरमें अपना प्रभुत्व जमाये हुए थे। ग्वालियरके पठान दुर्गाधिपति तातार खाने तोमर राजाके आक्रमणसे भयभीत हो वावरको यों लिख भेजा,—“यद्यपि आप भी पठानके शत्रु हैं तथापि जातिके मुसलमान हैं, विधर्मकी वश्यता स्वीकार करनेकी अपेक्षा आपहीकी अधीनता स्वीकार करनेकी मैं प्रस्तुत हूँ।” वावरने रहिमदादखानको समन्य ग्वालियरको भेजा। रहिमदाद खानके यहां आने पर पठान-दुर्गाधिपने उन्हें दुर्ग प्रवेश न करने दिया। इसके बाद सुहम्माद घाउस् नामके एक सम्पत्तिशाली मुसलमान माधुके कौशलसे रहिमदादने ग्वालियर पर दखल किया। १५२७ ई०में तोमरराजा मङ्गलरायने ग्वालियरका दुर्ग अवरोध किया। किन्तु उनकी आशा सफल न हुई। १५२८ ई०में रहिमदाद विद्रोही हुए इस पर सम्राट् वावरने आ उनके हाथसे ग्वालियरका दुर्ग छीन लिया।

१५३० ई०में वावरकी मृत्युके बाद हुमायूँ राजा हुए। ये ग्वालियरका दुर्ग देखने आये थे तथा यहां हुमायूँ-मन्दिर नामसे एक प्रासाद निर्माण किया था। १५४२ ई०को शेरसाह ग्वालियर अधिकार कर यहां कुछ काल तक रहे थे। इन्होंने यहां एक शेरमन्दिर निर्माण किया था। इस समय विक्रमादित्यके पुत्र रामशाहने मोगलोंके हाथसे ग्वालियर दखल नहीं करने पर शेरसाहका पक्ष अवलंबन किया। शेरसाहकी मृत्युके बाद १५४५ ई०में उनके पुत्र सलीमने चुनारसे पिताकी समस्त धनसम्पत्ति ग्वालियर दुर्गमें ला रखी। १५४६ ई०में नियाजियोंको पराजित कर सलीम ग्वालियरमें आ कर रहने लगे। उस समय ग्वालियर दिल्ली साम्राज्यकी राजधानीके रूपमें गिना जाता था। १५५३ ई०में सलीमके देहान्त होनेके बाद शेरसाहके कतदास वहवलके हाथ ग्वालियरका दुर्ग सौंपा गया। इस समय विक्रमादित्यके पुत्र रामशाहने राजपूत-सैन्यकी सहायतासे ग्वालियर अधिकारमें लानेकी चेष्टा की। उसी समय कावरखान नामक अकबरके एक सेनापति ग्वालियरका दुर्ग जीतनेके लिये आये। पहले पहल रामशाहके साथ उनका तीन दिन तक घोर युद्ध हुआ, जिममें मोगल

मन्वको जीत हुई। इसके बाद वाहवल्की साथ सामान्य युद्धके बाद गालियरका दुर्ग अकबरके अधिकारमें आया। रामशाहने मेवाड़ जा आश्रय ग्रहण किया। वहा उनके पुत्र शालिवाहनके साथ शिगोदियाराजकुमारोका विवाह हुआ। रोहितासक प्राग एक शिलालिपि पढनेसे जाना जाता है कि शालिवाहकके पुत्रश्यामशाह और मित्रमैमने अकबरका आनुगत्य स्वीकार किया था। श्यामके दो पुत्र थे। श श्यामशाह और नारायणदास। श श्याम १६७० ई०में नाममात्र स्वालयिरके राजा हुए। इनके पुत्रका नाम राजा कृष्णसिंह था १७१० ई०में कृष्णकी मृत्यु हुई। उनके पुत्र विजयसिंह और हरिसिंहने उदयपुर जा आश्रय लिया। हरिसिंहके वंशधर आज लो भी उदयपुरमें बाम करते है।

मोगल राजाओंक अध पतन कालमें गोहदके जाट मर्दारने स्वालयिर अधिकार किया था, किन्तु थोडे समयके बाद हो यह महाराष्ट्रके हाथ आया।

भारतके इतहासमें अमी जो स्वालयिरका राजव श प्रसिद्ध है महाराष्ट्रधोर रणजो मिन्धिया ही उम व शके आदिपुरुष है। ये बालाजो पेशवाको पादुकावाहक तथा इनके पिता दक्षिणात्यके किमो ग्राममें पटगरी थे। पेशवाके घरमें रणजोकी श्री और सोभाग्यकी वृद्धि दिन दूनो और रात चायुनी होनि लगी। क्रमश ये पेशवाके रक्षदलके प्रधान व्यक्ति हो गये। मालवके मध्य ही कर हिन्दुस्थानमें महाराष्ट्रेश्वर सैन्य ले जा कर बहुत बार युद्ध करके मृत्युके कुछ पहले वर्तमान स्वालयिर राज्यके अधिकारी हुए थे। उनको मृत्युके बाद उनके द्वितीय पुत्र माधजो सिन्धिया राजसिंहासन पर बैठे। राजनैतिक मन्वन्ध और युद्धविद्यामें ये अहि तोय थे। १७६१ ई०में पानोपथको लडाईमें माधजोने अपने वोरल और युद्धकोयलका अक्षी तरह परिचय दिया था। ये नाममात्र पेशवाके अधीन थे, किन्तु सब समय स्वाधीन भावसे राज्यशासन करते थे। दिल्लीके मन्त्राटने भी उनसे चामा प्रार्थना को थी तथा राजपूत मर्गर प्रसिद्ध अग्वारोडो योद्धा भी योडो देर तक भो उनके सैन्य सम्मुखमें ठहर नहीं सकत थे। १७६३ ई०में पेशवाके साथ मलवाइ नगरमें जो युद्ध हुआ था, उसमें ये

हो नायक थे। १७८४ ई०में अपने भाईके पोत्र दौलतराय मिन्धियाको राज्यभार भौप श्राप परलोकको सिधारे। मधुरावनारायण पेशवाकी मृत्युके बाद (प्रजाविद्रोहके समय) दौलतरायने अपने प्रभुत्व फैलानेको चेष्टा की थी। इन्होंने वाजोरावको अपने अधीन कर लिया और होलकरके अधिकृत राज्यके वहतमें अश पर दखल जमाया। इसके बाद इन्होंने दक्षिणात्यमें अहमदाबादके दुर्गको जय कर पेशवा और निजाम राजा हो कर जानिका रास्ता माफ कर दिया। दौलतरायकी सेना फरामोसो मैनिक द्वारा परिचालित होतो देख अ गरेज नोग डरने लगे थे। वेसिनकी सन्धिक अतुसार अ गरेजोने भारत के छोटे छोटे राजाओंके कपर अपने ही खर्चसे मेना रख नेकी जो व्यवस्था को थी, पुना नगरमें इसो तरह सैन्य-दल रखतेदेख दौलतरायने बरारके राजा राधोजी भोंसलेके साथ मिल कर उक्त व्यवस्थाको खण्डन करनेकी चेष्टा को थी। १८०३ ई०में दोनोने निजाम राजा पर आक्रमण किया। इसी वर्ष २३वीं सितम्बरको सर अर्थर वेल्सिलीने असाई नगरमें महाराष्ट्र पर चढाई की। बहुत दिन घोर युद्धके बाद महाराष्ट्रसेनाकी डार हुई। फिर भो उक्त वर्षके २८वीं नवम्बरको वेल्सिलोने अरगाव नगरमें महाराष्ट्रको शक्ति पूर्ण रूपसे चूर कर डाली। उक्त वर्षमें दिल्लीको दूसरे पार फरामोसो नायक बुकसि परिचालित मिन्धियाको सना लौड लेकसे अच्छी तरह परास्त हुई थी। इसके बाद लखरीकी लडाईमें जैनेरल लेकने मिन्धियाकी अर्वाग्रष्ट सेनाको नाश किया। इस तरहका चमता ज्ञाम होने पर दौलतरायने सर्जि अ जे गावकी सधिक अनुसार अपने अधिकृत हिन्दुस्थान के प्रदेश समूह और अजन्टा पर्वतके दक्षिणस्थ भूभाग छोड दिये। इस मन्विसे मिन्धियाके गोहद और ग्वालियर इस्तायुत होने पर ये बहत चुन्व हुए थे तथा होलकरके साथ मिल कर फिर भी अ गरेजोंके उपर आक्रमण करनेको चेष्टा करने लगे। थोडे समयके बाद हो इन्होंने रसिडिंगरहा तबू जला कर उन्हें बन्दे कर लिया। नाड कोन ग्वालिनमें गोहद और ग्वालियर टखन कर रखना नितान्त अन्याय समझ कर उक्त सन्धिपत्रकी फाड दिया और १८०५ ई०के नवम्बर महोनेमें एक दूसरो

सन्धि की गई, जिसमें अजिगांवका सन्धिको सब शर्तें थीं, सिर्फ यही बदला गया कि गोहद और शालियर सिन्धिया राजाको लौटा दे तथा चम्बल नदी शालियर राजाकी उत्तरी सीमारूपसे निर्दिष्ट हो।

१८१७ ई०में पिण्डारी युद्धके समय पिण्डारी डाकू दलने धीरे धीरे महाराष्ट्राय सेनाओंके ऊपर अत्याचार करना आरम्भ किया। जब पेशवाने जाना कि दौलतराय शुभरूपसे पिण्डारियोंकी सहायता दे रहे हैं तो इन्होंने दौलतरायको ऐसा कार्य छोड़ देनेका अनुरोध किया, किन्तु दौलतरायने उनकी बात पर कुछ भी ध्यान न दिया। अतएव गवर्नर जनरल मार्किम ओफ हेटिंग्स बहुतसी सेना साथ ले सिन्धियाके विरुद्ध चम्बल नदीके तीरे पथन्त अग्रसर हुए। इस समय एक और सन्धि स्थापित की गई, जिससे १८०५ ई०में लिखे हुये सन्धिपत्रको कुल शर्तें रद्द की गईं और एक नया प्रस्ताव लिखा गया जिसमें था कि "सिन्धिया राजा पिण्डारियोंके विरुद्ध अङ्गरेजका पक्ष ले साहाय्य करे और उक्त प्रस्तावकी माननेके लिये वे आशीरगढ़ और हिन्दियाके दुर्ग अङ्गरेजोंके हाथ सौंप दें।" पहले सिन्धियाराज किमो हालतसे अंगरेजोंके हाथ आशीरगढ़ छोड़ देनेकी स्वीकृत न हुए थे, किन्तु अन्तमें अङ्गरेजोंने वलपूर्वक उक्त दुर्ग अधिकारमें कर लिये। दुर्गके मध्य एक पत्रमें लिखा था कि सिन्धियाके राजाने वहाँके शासनकर्ताको पेशवाकी अनुमति पालन करनेका आदेश दिया। पेशवाहीने पूर्वाकी रेसिडेन्सी पर आक्रमण कर अंगरेजोंके साथ युद्ध घोषणा कर दी। सिन्धियाकी इस तरह विश्वासघातकता देख अंगरेजने सदाके लिये आशीरगढ़ दुर्ग अपने अधिकारमें कर लिया।

१८२७ ई०में दौलतरायकी मृत्यु हुई। शपुतक होने और दत्तकपुत्र ग्रहण न करनेके कारण मृत्युकाल ये राज्यका समस्त भार ब्रिटिश गवर्मेण्टके हाथ सौंप गये और अपनी छोटी स्त्री बाइजावाईकी यथारीति व्यवहार करने कह गये थे। दौलतरायके इच्छानुसार अंगरेज गवर्मेण्टने मृगतराव नामक एक बालकको सिंहासन पर बिठाया तथा राजकीय समस्त कार्यका भार बाइजाके हाथ अर्पित कर दिया। नये महाराजने दौलतरायकी

दोहिलीमे विवाह किया तथा जनकजी सिन्धिया नाममें मगहर हुये। १८३३ ई०में बाइजावाईका राज्यकार्य मिश्रित हो पड़ा। बानक राजा बाइजाके व्यवहारमें अत्यन्त असन्तुष्ट हो उनकी अधीनतामे निकल भागे। जनकजीके राजत्वकालमें यद्यपि बाइजरम मत्र, आंक्षा कोई उपद्रव न था, तोभी मोमान्त प्रदेशमें निव्यप्रति कोई न कोई उपद्रव हुआ हो करता था।

१८४३ ई०में जनकजीने पुत्रहीन अवस्थामें प्राणत्याग किया। उनको विधवा स्त्रीने राज्यके मन्त्रान्त मन्त्रियोंके साहाय्यसे बाजीराव नामक एक आठवपके बालक को दत्तकपुत्र ग्रहण किया। ब्रिटिश गवर्मेण्टके समर्थन करने पर बालक बाजीराव सिन्धिया नाममें राजगद्दी पर बैठाये गये। इस समय राज्यमें विशेष अशांति फैल गई थी। शांति स्थापन करनेके लिये अंगरेजोंने शालियरकी सेना भेजी। १८४३ ई०के २६ दिसम्बरमें महाराजपुर और पल्लियर नामक स्थानमें अंगरेजी सेना और विद्रोहियोंमें लड़ाई छिड़ी। अन्तमें विद्रोहो दल पराजित हो भाग चले। अंगरेजोंने फिर भी इन नव शिशुकी राज्याभिषिक्त किया। इनको रक्षाके लिए ३००० प्याटे और ३२ तोपें रखी गईं और धीरे वहाँको सैन्य संख्या घटा दी गई। इससे सेनाओंके मनमें अंगरेजोंके विरुद्ध एक दूररा हो भाव उत्पन्न हो आया। १८५७ ई०में मिर्जापुर विद्रोहके समय ये प्रकाश्यरूपसे अंगरेजोंके विरुद्ध हो गये। १८५८ ई०में जब विद्रोहो तांतिया तोपो वहाँ पहुंचा तब सिन्धियाके मिर्जापुरीने तोपोके साहाय्यसे बाजीरावकी सिंहासनसे उठा दिया। वे तथा उनके मन्त्रो दिनकराव आत्मरक्षाके लिये आगराको चले गये थे। इसी वर्षके जून महीनेमें सर हिउरोजने शालियर देखल कर महाराजको फिर वहाँके प्रासादमें स्थापन किया। सिन्धियाके कार्यसे खुश हो गवर्मेण्टने उन्हें दत्तक पुत्र लेनेको अनुमति दी तथा ३००००० रुपये आयकी संपत्ति और सैन्य संख्या वृद्धि करनेका आदेश प्रदान किया। महाराज ब्रिटिश-सैन्यके एक प्रधान सेनापति हुए और इन्हें नाइट ग्राण्ड क्रस ओफ वाय (K. G. C. B.) तथा नाइट ग्राण्ड कमाण्डर ओफ दि एर ओफ इण्डिया (K. G. C. S. I.) की उपाधियां मिलीं। सिन्धिया

अपने राज्यमें २१ और वृष्टिग राज्यमें १६ तोपोंसे सम्मानित होती थी। किन्तु महाराज जयाजीराव (साजीराव) को सम्मानसुवक २१ तोपध्वनि मिलती थी। १८८६ ई०में जयाजीरावका स्वर्गवाम हो गया। १० वर्षकी उम्रमें वर्तमान महाराज माधवराव मिन्धिया सिंघानन पर बैठे। नाजालिगी अवस्था होनेके कारण १८८४ ई० तक राजकार्य अश्रेष्ठ रसिडेंट द्वारा परिचालित हुआ। राजकीय विभागोंके परिचालन विषयमें इनका विशेष लक्ष्य रखनेसे इन्होंने विशेष उन्नति की है। १९०० ई०में सुबके समय महाराज चीनदेशको गये थे और घायलोंकी सेवाके लिए इन्होंने एक बड़ा जहाज भेजा था। ये महाराज और हिज्ज हाइवेमें उपाधिसे विभूषित हैं। इनके सम्मानार्थ २१ तोपें टांगी जाती हैं। वर्तमान महाराज भारतसम्राटके G C V O, G C S I, A D C और अश्रेष्ठी सेनाके सेनापतियोंमें अन्यतम (Honorary Colonel) हैं। इन्हें केगर ए हिन्द नामक स्वर्णपदक तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयसे सम्मानसूचक L L D की उपाधि मिली है।

यह राज्य विचारके सुभीतेके लिये दो विभागोंमें विभक्त किया गया है—एक उत्तर खालियर और एक मालवप्रान्त। उत्तर खालियरमें मात जिले हैं—खालियर गिर्द, भिण्ड, खोपुर, लनवारगढ़ ईसागढ़, मेलसा और नरवर। मालव प्रान्तमें चार जिले हैं—उज्जैन, मन्द मोर, माजापुर और अमरकौर। महाराज खुद सदर बोर्डकी सहायतासे न्यायकार्य सम्पादन करते हैं। उक्त बोर्ड मात सदस्योंसे सगठित हुआ है। महाराज स्वयं उसके महामद हैं, अन्य सदस्यों पर राजस्व पाटि विभिन्न कार्योंका भार सौंपा गया है। इनके कोई मन्दा नहीं हैं, किन्तु मेक्रेटरी बहुत हैं और उनके कार्यकी देखरेख करनेके लिए एक प्रधान मेक्रेटरी भी है। मेक्रेटरीयोंका काम यह है कि, वे महाराजको अन्तिम आज्ञा देनेके लिए फागजात तयार कर रखते हैं। छोटे दीयानी अदालतमें ५०० तककी नालिगी होती है, जिनका फौजना कामादर करते हैं और ३००० रुपये तककी नालिगीका फौजना सदर अमीन द्वारा तथा पचास हजार रुपये तककी नालिगीका फौजना प्रान्तीय

जन करते हैं। इससे ज्यादाकी नालिगी सदर अदालत अर्थात् हाईकोर्टमें होती है। फौजदारी अदालतमें कामसदार २५ या ३५ मजिस्ट्रेटका अधिकार पाते हैं। सदर अमीन प्रथम मजिस्ट्रेटका अधिकार पाते हैं। राज्यकी आमदनी डेढ़ से लाखको है।

२ खालियर राज्यको राजधानी। यह अक्षा० २६ १६ उ० और देशा० ७८ १२ पू० पर आगरा नगरसे ६५ मील दक्षिणमें अवस्थित है। मिन्धिया महाराजका यहां एक दुर्ग है, जो एक डेढ़ मील ऊंचे पहाड़ पर अवस्थित है। यह उत्तरागमें खालियर नगरसे ३०० फीट ऊंचा है, परन्तु इससे प्रधान दुर्गद्वारको ऊंचाई २७७ फीट है। इस दुर्गके नीचे उत्तरागमें प्राचीन खालियर नगर तथा दक्षिणागमें प्राय एक मीलकी दूरी पर नया खालियर या लम्कार नगर अवस्थित है। दुर्गके दक्षिण जहा दोलतराय मिन्धियाने स्तम्भावार स्थापन किया था, वही म्यान लम्कार या स्तम्भावार नामसे प्रसिद्ध है। मिन्धियाने यहाँ पर प्रधान नगर स्थापन किया है। दिना दिन इसकी उन्नतिके साथ प्राचीन खालियरकी मसृष्टि क्षय होती गई है। जो कुछ ही, इन दोनों नगरोंको एकत्र रखनेसे भारतक मध्य एक बहुत जनाकीर्ण प्रधान नगर जंहा समझ पड़ता है। यहां सब मिला कर दो लाख मनुष्य रहते और लगभग पैंतीस हजार घर लगते हैं।

यहां देखनेको बहुतसो चीज है। हिन्दू और जैन शिल्पनैपुण्यके लिये बहुत दिनसे यह स्थान प्रसिद्ध है। दुर्ग प्रवेश करनेमें एक हस्त तोरण (वृद्धिहार) पार होने पड़ते हैं। इन दरवाजोंके नाम अलमगिरिपुर, वादलगढ़ या हिन्दोलानपुर, भैरी या वांकोरपुर, गणेशपुर, लक्ष्मणपुर और प्रतियापुर हैं।

दुर्ग के समने नीचे फाटकका नाम अलमगिरि है। १६६० ई०में आंग्लसेनाके नाम पर मोतामिदपुराने यह द्वार प्रस्तुत किया था।

राजा कन्यानसलके भाई वादलमिहिके नाम पर वादलनगढ़ स्थापित था। इसका वाद यहा बहुतसे हिन्दोल पत्ती देखे गये थे इसा कारण इसका दूसरा नाम हिन्दोलपुर हुआ है।

खजुरायक मतमें पूवकालमें भेखपाल नामक एक

कच्छवाह राजा ग्वालियरमें राज्य करते थे। उन्होंने अपने नाम पर भैरों द्वार निर्माण किया था। मराठाके अधीन एक मनुष्यने यह स्थान वामकी लकड़ी (लाठो)से बचाया था, इसी कारण इसका नाम वामोरपुर रहा।

१४२४ से १४५४ ई०में राजा दुर्गासिंहने गणेशपुर द्वार बनाया गया था। इस दुर्गके बाहर नुरसागर नामका एक सरोवर है। १६६७ ई०में मोतासिदखाने इसका संस्कार किया था। गणेशद्वारके भीतर ग्वानिपा सिद्धका एक छोटा मन्दिर है। पहले जिस स्थान पर ग्वानिपा सिद्धका मन्दिर था वहां मोतासिदखाने उस मन्दिरको ध्वंस कर मस्जिद निर्माण कर दी थी। उस मस्जिदके एक पारसो शिलालिपिमें ये सब बातें लिखी हुई हैं।

लक्ष्मणपुर द्वार जानिके रास्ते पर एक छोटा चतुर्भुजमन्दिर है। इस मन्दिरमें गोर्णगरि स्वामी भोजदेवके राजत्व कालमें ८३३ मस्वतमें उत्कीर्ण एक बड़ी शिलालिपि देखी जाती है। फजलअलीने लिखा है कि कच्छवाह वंशके १७ वें राजा लक्ष्मणपालने यह फाटक निर्माण किया था। सुहानियासे प्राप्त कच्छवाहके राजा वज्रदामाकी शिलालिपिसे जाना जाता है कि उनके पिताका नाम लक्ष्मण था। मालूम पड़ता है कि अपने पिता लक्ष्मणके ही नाम पर वज्रदामाने यह द्वार निर्माण किया होगा। लक्ष्मण फाटकके ऊपर एक स्थानमें बहुतसे शिवलिङ्ग, हरगौरी, गणेश प्रभृतिकी पाषाण मूर्तियां देखी जाती और उनके मध्यमें १५६ फीट ऊंची एक सहत् वराह अवतारकी मूर्ति रखी हुई है।

ग्वालियरके राजा मानसिंहने हतियापुर द्वार निर्माण किया था। यहां एक पूर्णयतन हस्तीमूर्ति थी जिसकी पीठ पर सामनेमें माहमत और पीछे राजा मानसिंह बैठे हुए थे। सम्राट् वावर, अबुलफजल आदि उस मूर्तिकी यथेष्ट प्रशंसा कर गये हैं। इसी हाथीकी मूर्तिसे हथियापुर नाम हुआ है। अभी उस हाथी मूर्तिकी चिह्न मात्र भी न रहा है। शायद मोतासिदखाने उसका ध्वंस किया होगा। यह फाटक मानसिंह-निर्मित मानसिद्धका एक अंश है। मानसिद्धका शिल्पनैपुण्य ऐसा सुन्दर और चमत्कार है कि समस्त उत्तरभारतमें वैसा शायद ही होगा। दुर्गके उत्तर-पश्चिमार्थके प्रवेश

द्वार पर तीन फाटक हैं, इस द्वारका नाम दुर्गदपुर है। यहां मानसिंह प्रतिष्ठित दुर्गदेवका एक प्राचीन मन्दिर है। इसी मन्दिरमें इस द्वारका नाम हुआ है। परन्तु मानसिंहके पहले भी उक्त द्वार विद्यमान था यह यहांके १५०५ मस्वतमें उत्कीर्ण शिलालिपिसे जाना जाता है।

दुर्गके दक्षिण पश्चिममें मानसिंहका बनाया हुआ घरगजपुर द्वार है। यहां भी बहुतसी पत्थरकी देवमूर्ति रखी हुई हैं।

ग्वालियरके सद्यः दुर्ग उत्तरभारतमें कहीं भी देख नहीं पड़ता है। कालञ्जर और अजयगढ़के दुर्ग दुर्गके जैसे ख्यात हैं मन्ती किन्तु उमें बहुत दिन अवरोध करने पर जलाभाव हो जाता था, परन्तु ग्वालियरके दुर्गमें कभी जलाभाव नहीं होता ना कभी होनेकी सम्भावना ही है। मोरार देवा।

ग्वालियर दुर्गमें कई एक प्रासाद हैं। यथा—करणमन्दिर, मानसिंह, पूजारणिमन्दिर, विक्रममन्दिर, शेरमन्दिर या जहाङ्गिरी महल और शाहजहान मन्दिर।

मुसलमानकी कोर्तियोंमें यहां मुहम्मद घाउसकी कब्र, जुम्मा मस्जिद और प्रसिद्ध गायक तानसेनकी कब्र है। भिन्न भिन्न स्थानसे प्रधान प्रधान गायक तानसेनका कब्रस्थान देखने आया करते हैं। यहां एक इमलीका वृक्ष है, कब्रकी अपेक्षा इसका आदर अधिक होता है। लोगोंको विश्वास है कि इस इमली वृक्षके पत्ते चिवानेसे कण्ठस्वर मधुर हो जाता है। इसी कारण आजलों भी बहुतसी गायिका, नर्तकी चाहे तानसेनके सम्मानार्थ आवे या न आवें परन्तु इमलीके पत्ते खानेके लिये तो आती ही हैं। इसी उत्पातसे पूर्वका गाछ मर गया। पुनः एक नवीन गाछ उसी स्थान पर उगा हुआ है।

३ ग्वालियर राज्यकी शहर। इसमें दो शहर लगती हैं, पहला उत्तरोय शहर जो ग्वालियर दुर्गके पास ही अवस्थित है। दूसरा लस्कर जो प्रधान राजधानी है, २ मील दक्षिणमें अवस्थित है।

दोनों स्थानकी लोकसंख्या प्रायः ११८४३३ है। जिनमें हिन्दुओंकी संख्या आधिक है। १६वीं शताब्दीमें

ग्वालियर मानव सूवाके एक महारका प्रधान शहर था।

प्राचीन ग्वालियर शहर अभी उजाड़सा दीग्व पड़ता है। यहाको ममजिद मदिदर तथा यडे बडे घर भग्न अवस्थामें पड़े है। यहा एक बहुत लम्बी चौड़ी मडक है जिमके किनारे बहुतसे अच्छे अच्छे भवन बने है, जिनमेंसे सुमा ममजिद प्रसिद है। इसके अलावा खान दीलतख्वा और उनके लडके नजोरी खां, पूर्वमें मुहम्मद गोम और तानसेनके समाधिभवन देखने योग है।

ग्वालियर दुर्गसे २ मील दक्षिणमें लस्कर शहर पड़ता है। यह एक बडा और सौन्दर्यगानी शहर है। यहाकी जनसख्या प्राय ८११५४ है। सिपाहीविद्रोहके समय यहाके सिन्धिया तातिया तोपी और भासोको रानीसे आगरेकी भगाये गये। बाद सर ह्युरोज (Sir Hugh Ross) ने जब विद्रोहियों पर आक्रमण कर उन्हें परास्त किया तब सिन्धिया पुन लौट कर लस्कर को आये।

ई०की पठ शताब्दीमें यह शहर इनके राजा तोरमग्न और उनके लडके मिहिरकुलके अधीन था। इस वशका गिनालेख दुर्गमें पाया जाता है। अष्टम शताब्दीमें यह कन्नौजके राजा भोजके अधिकारमें आया। कहा जाता है कि दशवीं शताब्दीके मध्य यह कच्छवाह राजपूतके हाथमें था। जिन्होंने ११२८ ई० तक राज्य किया। बाद वे परिहारसे परास्त किये गये। इनके अधिकारमें यह

११८६ ई० तक रहा। कुछ काल तक मुहम्मद गजनोने इस पर अपना अधिकार जमाया। १२१० ई०में कुतुबुद्दीनके लडकेके शासनकालमें यह फिर परिहारके हाथमें आया और १२३२ ई० तक उन्हींके अधीन रहा। १२३२ ई०में अलतमासने इस पर चढाई की और इसे अधिकार कर लिया। ग्वालियर शहर १३८८ ई० तक मुगल मानोंके दखलमें रहा बाद तोमर राजपूतने इस पर अपना आधिपत्य जमाया और १५१८ ई० तक इसी अवस्थामें रहा। तोमरके समय यह शहर उन्नतिगिखर पर पहुच गया था। १५४२ ई०में यह शेरशाह सुरोके अधिकारमें आया। १५५८ ई०में अकबरने सभी छोटे छोटे राजाओंको परास्त कर ग्वालियर शहर अपने कब्जेमें कर लिया और अठारहवीं शताब्दी तक यह मुगल वशके अधिकारमें रहा। १८ जून १८५८ ई०में सर ह्युरोजजी सेनाने लेफटेनाण्ट वालर और रोजके अधीन ग्वालियर पर चढाई कर उसे अपने हाथ कर लिया और १८८६ ई० तक यह उन्हींके दखलमें रहा बाद उन्होंने सिन्धियासे भासो ले कर यह शहर उन्हें सौंप दिया।

ग्वै ठना (हि० कि०) मरोडना, पठना।

ग्वै ठा (हि० पु०) गोंडा श्लो।

ग्वै डा (हि० पु०) ग्रामके सामपासको जमीन।

ग्वै डे (हि० कि० वि०) निकट, पास, करीब, समीप।

ग्वै या (हि० स्त्री०) मार या पीना।

घटपर्यसन (सं० लो०) घटस्य पर्यसनं, ६ तत् । धर्मशास्त्रानुसार पतित मनुष्यके प्रायश्चित्त न करने पर उसको परित्याग करनेके लिए उसके जातिवर्गोंकी करने योग्य क्रिया, जीवित दशमें पतितका प्रेतकार्य । मिताक्षराका मत है कि पतित मनुष्य यदि उद्धतवश प्रायश्चित्त न करे तो जाति और मातृपक्षके वाम्बवोंको चाहिए कि ग्रामके बाहर उसकी जीवित दशमें ही पिण्ड दे कर प्रेत कार्य करें । सब मिल कर एक दासी द्वारा जलपूर्ण घड़ा संग कर स्थापन करावें । इसके बाद सब एकल हो कर विधानानुसार उसका उदकपिण्डदानादि ममस्तु प्रेतकार्य समाप्त करें । कार्यकी समाप्ति होने पर दासी दक्षिणको और मुख कर उस जलपूर्ण पात्रको पैरसे गिरा दें । कुम्भसे जल निकल जानेसे ही इसका नाम घटपर्यसन पड़ा । रिक्ता प्रभृति निन्दित तिथिमें सन्ध्याकी इसका अनुष्ठान करना होता है । अन्तमे मुक्तशिव हो स्नान कर ग्राममें प्रवेश करना चाहिए । पतित व्यक्तिको सब कोई मिल कर प्रायश्चित्त करनेको कहें । यदि वह प्रायश्चित्त न करे तो उक्त रीतिके अनुसार उसे छोड़ देना उचित है । इसके बाद उम पतितके साथ सम्भाषण और एक आसन पर बैठ कर कोई कार्य न करें तथा उसके साथ किसी तरहका संबंध न रखना चाहिए । स्नेहवश बातचित्त करनेसे भी प्रायश्चित्त करना पड़ता है । मनुके टीकाकार कुल्लुकभट्टके मतसे घटपर्यसनके बाद समानोदक और सपिण्ड सबको एक रात्र अशौच मानना पड़ता है ।

विशेष विवरण पतित शब्दमें देखो ।

घटप्रक्षेप (सं० पु०) घटस्य प्रक्षेपः, ६-तत् । प्रायश्चित्तके बाद करने योग्य कर्म विशेष । पतित मनुष्य प्रायश्चित्त कर किसी पुण्यप्रद जलाशयमें स्नान करे । उस जलाशयसे एक घड़ा जल ला कर सपिण्डगणके सामने आ अपवर्जन करे । इसीका नाम घटप्रक्षेप है ।

गौतमके मतसे प्रायश्चित्त कर शूद्र होनेके बाद एक सुवर्ण घड़ामें किसी पवित्र ऋद्धसे जल भर कर लाना चाहिए । कृतप्रायश्चित्त मनुष्य उम घड़ेकी स्पर्श कर "शान्तापीः शुद्धी" इत्यादि मन्त्र जप और होम कर ब्राह्मण को दक्षिणा देवे ।

किसी संग्रहकारका मत है कि सब तरहके प्राय

श्चित्तके बाद ही घटप्रक्षेप विधि करने योग्य है । फिर कोई कोई संग्रहकार सिर्फ पतित-प्रायश्चित्तके बाद ही इसका अनुष्ठान स्वीकार किया करते हैं । प्रायश्चित्त देखो ।

घटवट (हिं० स्त्री०) न्यूनाधिकता. कमोवेगी ।

घटभव (सं० पु०) घटे भवः, ७-तत् । घटज, कुम्भयोनि, जो घड़से उपजा, अगस्त्य मुनि । (लि०) २ जो घड़ेसे उत्पन्न हुआ हो ।

घटभेटनक (सं० पु०) घटस्य भेटनकः, ६-तत् । वह यन्त्र जिससे घड़ा बनाया जाता हो, घड़ा बनानेका श्रौजार । घटयितव्य (सं० त्रि०) घट-णित्-तव्य । १ घटनाके योग्य, होने लायक । २ जिसका होना उचित हो ।

"कथमेतत् मणिक्रदं घटयितव्यम् ।" (पञ्चमल)

घटयोनि (सं० पु०) घटः योनिः उत्पत्तिस्थानं यस्य, बहुव्री० । कुम्भयोनि, अगस्त्यमुनि । कुम्भयोनि देखो ।

घटराज (सं० पु०) घटेन योजनेन राजते राज-अच् । कुम्भ, वड़ा घड़ा, कलसा ।

घटराशि (सं० पु०) एक द्रोण जो प्रायः सोलह सेरका होता है ।

घटरिका (सं० स्त्री०) एक प्रकारका वीणा, एक तरहका बाजा ।

घटवाना (हिं० क्ति०) घटानेका काम करना, कम करना ।

घटवाई (हिं० पु०) १ घाटवाला, वह मनुष्य जो घाटका कर लेता हो । २ रोकनेवाला, वह जो विना कर वा तलाशी लिए न जाने देता हो ।

घटवार (हिं० पु०) १ घाटका महसूल लेनेवाला । २ मलाह, केवट, मांभी । ३ वह ब्राह्मण जो घाट पर बैठ कर दान लेता हो, घाटिया । ४ घाटका देवता ।

घटवारिया (हिं० पु०) घटवालिया देखो ।

घटवालिया (हिं० पु०) वह पण्डा जो तीर्थस्थानोंमें नदी या सरोवरके घाट पर बैठ कर दान लेता हो, तीर्थपण्डा, घाटिया ।

घटसम्भव (सं० पु०) घटः सम्भव उत्पत्तिस्थानमस्य, बहुव्री० । कुम्भसम्भव, अगस्त्य मुनि ।

घटसञ्जय (सं० पु०) दक्षिणस्थ जनपदविशेष, दक्षिणमें एक गण्डग्राम । महाभारतके भीष्मपर्वमें इस जनपदका उल्लेख है ।

घटस्थापन (स० क्री०) घटस्थ स्थापन, ६ तत् । मन्त्रपूर्वक
'घडे की स्थापना, मन्त्र पढ कर घडे को रखना ।

पूजा मन्त्र-को ।

घटड़ा (हि० पु०) १ घाटका ठेकेदार, वह मनुष्य जो
घाटका ठेका नेता हो । २ वह नाव जो इस पारसे उस
पार जाती हो ।

घटा (स० स्त्री०) घट अर्द्ध टाप । १ समूह, भुण्ड, ढेर ।
२ घटना, कोई बात जो अचानक ही जाय, वाक्या
हादसा । ३ गोठी, परिवार । ४ वहनसे लीगोका समूह,
सभा । ५ युद्धस्थलमें हाथियोंका भुण्ड । ६ धूमधाम,
ममारोह, लखव । ७ मैथीका घना समूह, लमडे रूप
बादलोंका समूह, मधमना । ८ मोठा नौवू ।

घटाई (हि० स्त्री०) हीनता, अप्रतिष्ठा, वैद्वज्जती ।

घटाकाय (स० पु०) आकाशका उत्तनाभाग जितना
एक घडेके भीतर था जाय, घडेके भीतरकी खाली
जगह ।

घटाग्र (स० पु०) वास्तु स्तम्भका अष्टम भाग, वास्तुविद्या
में खभेके नौ विभागोंमेंसे आठवाँ भाग ।

घटाटोप (स० पु०) घट्या आटोप, ३ तत् । १ आडम्बर,
पाखण्ड तडक भडक, गरूर । २ गाड़ी या पालकोको
ढक लेनेवाला शीहार, किसी वस्तुकी पृणत ढक लेनेवाला
कपडा । ३ चारों तरफसे थिरी हुई बादलोंकी घटा ।
४ बादलोंको तरह चारों ओरसे घेर लेनेवाला दल या
समूह ।

घटाना (हि० क्री०) १ न्य न करना, कम करना । २
वाकी निकालना, काटना । ३ अप्रतिष्ठा करना, वैद्व
ज्जती करना ।

घटाम (स० पु०) हिरण्यकशिपुका सेनापति असुरविशेष
एक दैत्यका नाम जो हिरण्यकशिपुका सेनानायक था ।

घटामिधा (स० स्त्री०) सफेद कुण्डला, गोल लौकी ।

घटान (स० वि०) घटा निन्दिता घटना अकस्म्य । 'घटा
नच । कुम्भित घटनायुक्त, वह जो खराब तोरसे आई हो ।
घटानातु (स० स्त्री०) घट हुआ नातु । कुम्भतुम्बी,
गोम कद, गोल घीया, तिसलीकी ।

घटानिका (स० स्त्री०) मोठा नौवू टाम नौवू ।

घटाप (हि० पु०) १ कम होनेका भाव, न्यूनता, कमी ।
२ अपनति, गमज्ज-नो ।

घटिक (स० वि०) घटेन तरति घट ठन । १ जो घडा
हाग नदी पार होता हो । (पु०) घटि कायति वादयति
'प्रदिवादनैन समय प्रापयतीति यावत् कै क पूर्व' इत्य' ।
२ घट्टा बजानेवाला सिपाही । (क्री०) ३ नितम्ब, कमरके
नोचेका भाग, चूतड ।

घटिका (स० स्त्री०) १ कालका परिमाणविशेष, एक दड
या २४ मिनटका समय । घटयति विहितकार्यकरणाय
घट णिच् ग्वुल् टाप । सुहृत्, दो टण्ड । अन्वोघट घट-
डोप-स्वार्ये कन । ३ छोटा घडा गरगी । ४ पाषाण्य
मतसे २३ दण्डकी एक घटिका होती है । ५ घडो,
टाइमपीस ।

घटिकाचल—मन्दाज नगरके पूर्व चितौर नगरके पामका
एक पर्वत । यहा एक नुमिह मन्दिर है । घटिकाचल
माहात्म्यमें इसका विशेष विवरण लिखा है ।

घटिकायन्त्र (स० क्री०) समयनिर्णायक यन्त्रविशेष,
समय बतलानेवाली घडो ।

घटिकालवण (स० स्त्री०) विडम्बण, विट नमक ।

घटिघट (स० पु०) घट्या घटते घट अच् सप्राल्वात् ङ्ल' ।
महाटव, गिव ।

“अनो घटाय घट्यय ननो घटिघटाय च ।” (हरि० १०८५०)

घटित (स० वि०) घट णिच् ङ् । १ योजित, बना हुआ ।
२ रचित, रचा हुआ । ३ सक्रान्त, निर्मित । ४ न्याय-
प्रसिद्ध पारिभाषिक पदार्थ । जिसका ज्ञान ही जानिसे
दूसरेका ज्ञान होना जरूरी है उसको दूसरेका घटित
कहते हैं । जैसे 'विज्ञान' इत्यादि । इसका ज्ञान करनेसे
अवग्य ही वक्ति और पयतका ज्ञान हुआ करता है । इस
निये “विज्ञानं पयत” यह वक्ति और पयत दोनोंसे
घटित है ।

घटिन्यय (स० वि०) जो घटेगा, जिसके होनेको
सम्भावना हो ।

घटिन् (स० पु०) घटमहाकारो प्रथम्य घट इति । १
कुम्भराशि । (वि०) २ कुम्भयुक्त, जिसके पास घडा हो ।
घटिन्यय (स० वि०) घटी धमति घटी धा ण्वम् मुम्
ङ्ग्वर । जो मुपसे घडो बजाता हो ।

घटिन्यय (स० वि०) घटी घयति घटी घट् ण्वम् मुम्
ङ्ग्वय । जो छोटा घडामे पीता हो ।

घटियन्त्र—घटोपन्न देखो।

घटिया (हि० वि०) १ जो अच्छे मोलका न हो, खराब, कम मूल्यका, सस्ता। २ अधम, तुच्छ, नीच।

घटियारी (देश०) खड़ी नामकी एक तरहकी घास। यह पंजाबमें होती और इसकी सुगन्ध अदरककीसी होती है।

घटिल (स० त्रि०) घटोऽस्यस्य घट पिच्छादिं इलच्। घटयुक्त, जिसकी पास घड़ा हो।

घटिसेवड़ा—एक तरहका छोटा पेड़।

घटिहा (हि० वि०) १ घात लगानेवाला, ढाव पा कर अपना स्वार्थ साधनेवाला। २ चालाक, मक्कार। ३ धे खे-वाज, बेईमान। ४ व्यभिचारी, लंपट। ५ दुष्ट, दुःख देनेवाला, खल।

घटी (स० स्त्री०) घटः कालमानज्ञापकः सच्छिद्रः कुम्भः घापकतया अस्यस्यां घट-अच् गौरादित्वात् ङीप्। १ दण्डपरिमाणकाल। मिद्धान्तशिरोमणिके मतसे १० गुरु अक्षर उच्चारण करनेमें जितना समय लगता हो, उसका नाम असु, ६ असु या ६० गुरु अक्षरका एक पल और ६० पलका एक दण्ड होता है।

घट अल्पार्थे ङीप्। २ लुद्रकुम्भ, छोटा घड़ा, गगरी। ३ समयसूचक यन्त्र, टाइम्मीस, क्लॉक।

घटी (हि० स्त्री०) १ कमी, न्यूनता। २ हानि, क्षति। नुकसान, घाटा।

घटीकार (स० पु०) घटीं करोति घटी-क-अण् उपपट-समा०। कुम्भकार, कुम्हार।

घटीग्रह (स० त्रि०) घटीं गृह्णाति घटी-ग्रह-अच्। घटी ग्राहक, जो छोटा घड़ा लेता हो, जो पानी ढोता हो।

घटीयन्त्र (स० स्त्री०) घट्याः दण्डरूपकालस्य ज्ञापकं-यन्त्रं। समयसूचक यन्त्र, घड़ी। प्राचीन भारतवामो आर्य अपनी प्रतिभाशक्तिसे अनेक तरहके कालसूचक यन्त्र आविष्कार कर गये है। जब दूसरे दूसरे देशके मनुष्य घटीयन्त्र या कालमानज्ञापक किसी यन्त्रके विषयमें कुछ भी नहीं जानते तथा दूसरे किसी देशमें घटीयन्त्रका आविष्कार नहीं हुआ था, उस समय भी हिन्दुस्थानमें घटीयन्त्रका प्रचार था। अनेक प्राचीन ग्रन्थमें घटी-यन्त्रका उल्लेख देखा जाता है। सूर्यमिद्धान्तके मतसे

इसका दूसरा नाम कपालकयन्त्र है। घड़े के नीचे भागको नाईं एक तांबेका पात्र बना कर उसके तलेमें एक ऐसा छिद्र बनावं जिसमेंसे धीरे धीरे जल प्रवेश करने पर ठीक एक दण्ड समयमें वह पात्र जलपूर्ण हो जाय। किन्तु स्मरण रहे कि प्रथम जल प्रवेशसे जल पूर्ण हो जाने तकका समय एक दण्डसे अधिक न हो। जो पात्र दिन रातमें ६० बार जलमग्न हो जाय, वही पात्र उपयुक्त है। इसके बाद एक जलपूर्ण बरतनमें उस तास्त्रमय पात्रको रख दें, पात्रके जलमें निमज्जनानुसार कालका परिमाण स्थिर करना चाहिए।

सूर्यमिद्धान्त-टीकाकार रङ्गनाथके मतसे दण्ड पल तास्त्रसे घड़ेके नीचे भागके सदृश एक पात्र बनावं। पात्रकी ऊंचाई ६ अंगुल और मुखकी चौड़ाई उसका द्विगुण करना होता है। ३६ मापे परिमाणके स्वर्णसे चार अंगुल परिमाणकी एक शलाका बना कर उस तास्त्रपात्रमें घुसेड़ दें। इसीका नाम घटीयन्त्र है। इस पात्रको किसी दूसरे जलपूर्ण पात्रमें रखनेसे एक दण्डमें वह जलसे भर जाता है।

मिद्धान्तशिरोमणिका मत है कि घड़ेके निम्नभागके जैसा एक तांबेका पात्र बनावं। उसमें एक छिद्र करके एक जलपूर्ण पात्रमें रख छोड़ें। इस पात्रका कोई नियत परिमाण नहीं है। इसे इच्छानुसार छोटे या बड़े आकारका बना सकते हैं। इसके बाद विशेष ध्यान रखना चाहिए कि यह दिन रातमें कै बार निमज्जित होता है। यह जितनी बार डूबे उसका अनुपातके अनुसार प्रत्येक बार कितना समय लगता है, उसका स्थिर कर लें। इसीका नाम घटीयन्त्र है। किसी किसीके मतसे इस यन्त्रका निर्दिष्ट परिमाणका उल्लेख देखा जाता है, किन्तु यह असङ्गत है क्योंकि कि उसमें कोई युक्ति नहीं है।

विष्णुपुराणके मतानुसार १२६ पल तास्त्रका एक पात्र बनावं। चार मापे सुवर्णसे चार अंगुल परिमाणकी एक शलाका तैयार कर पात्रमें छिद्र कर दें, इसकी नाम घटीयन्त्र है। इसको जलमें रख देनेसे यह ठीक एक दण्डमें जलसे भर जाता है। भारतके गौरवके साथ दिन दिन इन ममस्त भारतीय यन्त्रोंका व्यवहार भी घटने

नगा है। वर्तमान समयमें पाद्याल्य कालसूचक यन्त्र ही विद्यमान प्रचलित है। किसी किसी जगह वर्तमान समयमें इस घटोत्कचका व्यवहार देखा जाता है।

१ यंत्र व विवरण यत्र यन्त्रे २ धा।

२ ऋषि जेजु निकालनेका यन्त्र रक्त ३ मय=यो रोगका एक भेद जो असाध्य माना जाता है। सुपुत्रि, पार्थशूल और पेटके भीतर जलपूर्ण लोटेकी नाई शब्द होनेको ही घटोत्कचरूपी रोग कहते हैं।

घटोत्कच (म० पु०) भोम और हि डि बाके म भोगसे उत्पन्न एक राक्षस। महाभारतमें लिखा है—लाह घरके जलनेके बाद पाण्डव गुप्तराह हो कर जंगलकी भांगे थे। वे हि डि वा नामकी एक राजसके राज्यको पहुँचे। राजसने उन्हें स हार करनेकी इच्छासे अपनी बहन हि डिम्बाकी भेजा। हि डिम्बाने वनगानो भीमके रूपसे मुख हो उनसे विवाह कर लिया। उसके गर्भसे घटोत्कचकी उत्पत्ति हुई। जन्मकालमें ही घटोत्कच राजस रूपमें एक भयानक वीर हो उठा। किसी दिन बालकके मातापिताके पास आने पर हि डिम्बा "घटो हास्योत्कच" यह शब्द बोली, इसीसे उस बालकका नाम घटोत्कच रहा। इनकी दोनों आँखें विवर्ण, मुख बहुत बड़ा, कान दोनों खुटेकी नाई, मोठ ताम्रवर्ण और शरीर कुक्ष कक्ष वलित था। कुक्षत्रकी लडाईमें कर्णके हाथसे इनको मृत्यु हुई। भोग चोर ७७ श्लो।

घटोत्कचान्तक (म० पु०) घटोत्कचस्यान्तक, इ तत् । कर्ण । घटोत्कचारि शब्द भी इसी अर्थमें व्यवहृत होता है।

घटोदर (म० पु०) घट इय उदरमय्य, घटुद्री० । एक अमुरका नाम, हिरण्यकशिपुका एक सेनापति।

घटोद्वज (म० पु०) घटउद्वज उत्पत्तिम्यान यम्य, वटुद्री० । अगन्त्य मुनि।

घटोर (हि० पु०) मेघ, मेड़ा, मेड़ा।

घट (म० पु०) घटने इमिन् घट प्रज् । जिम स्थानमें पुंकरणो प्रवृत्ति जलाशयमें उत्तरा जा सकती है, घट। २ घटका महद्युज नेनेका स्थान। घट भाषे प्रज् । ३ म चान्न चनाना।

घटकुटीमभात (म० ली०) घटम्या कुटी तत्र प्रभाति-मिष । न्यायका एक भेद। भाव ६४।

घटगा (स० स्त्री०) दाक्षिणात्यकी एक नदी।

घटोविन्द (म० पु०) घट्टेन घट्टे द्रियतरपखेन शुक्ल-दिना जीवति जीव षिति। वर्णम कर जातिविशेष, घट वार। विवादा,र्णवसेतुके मतानुसार वैश्या और रजकके म भोगसे इस जातिकी उत्पत्ति है। घटनी देवा।

घटन (म० ली०) घट ल्यु ट् । म चालन, चलाना।

घटना (स० स्त्री०) घट युव टाप् । १ स चालन । २ वृत्ति, जीविका, पेशा।

घटानन्द (म० पु०) कन्दका एक भेद।

घटिका (म० स्त्री०) घटिका श्लो।

घटित (स० त्रि०) घट कर्मणि क्त । १ निर्मित, बनाया हुआ । २ चालित चनाया हुआ । ३ कल्प दिया हुआ । ४ नृत्यमें पैर चलानेका एक प्रकार जिसमें एडोकी जमीन पर दबा कर प जा नोचे जप रिलाने हैं।

घटोह (स० त्रि०) घट ट् च् । चालक, चलानेवाला।

घटो (म० स्त्री०) घट अन्वार्थे डौप । सुट्ट घाट, छोटा घाट । ७६ श्लो।

घटा (हि० पु०) शरीर पर उभडा हुआ चिह्न जो किसी वस्तुको रगड़ लगते लगते पड़ जाता है।

घटघट (हि० पु०) बादल गरजन या गाड़ी चलनेकी आवाज।

घटघटाना (हि० क्ति०) गडगडका शब्द करना।

घटघडाहट (हि० स्त्री०) १ घटघट आवाज होनेकी क्रिया । २ बादल गरजने या गाड़ी चलनेका शब्द।

घटत (हि० स्त्री०) गटत श्लो।

घटनैन (हि० पु०) छोटी छोटी नदियाँ पार होनेके लिए बाँसमें घड़े बांध कर बनाया हुआ टाँचा, घनई।

घटा (हि० पु०) घट मिट्टीका बना हुआ गगरा, जनपात, बडी गगरी, कलमा, घना, कुम्भ।

घटाई (हि० स्त्री०) गटाई श्लो।

घडिया (हि० स्त्री०) १ मोनारका एक वरतन जिसमें रख कर बड़ मोना चाँदी गमाता है। २ मिट्टीका छोटा प्याना। ३ शहदका छत्ता। ४ घघाटान, गभाशय। ५ मोहारके मोरि गलनेका मिट्टीका पात्र।

घडियाल (हि० पु०) १ पुनाके समयमें बज्राय जानेवाला चण्ड। २ एक बड़ा चोर हि मक अन्नजत्तु, घाट।

घड़ियाली (हि० पु०) १ वह मनुष्य जो समयकी सूचना-
के लिये घंटा बजाता है, घंटा बजानेवाला। (स्त्री०)
२ देवालयेमें लगा हुआ एक तरहका घंटा जो पूजनके
समय बजाया जाता है, विजयघंटा।

घड़ी—(घटी शब्द) १ समय बतलानेवाला एक यंत्र।

आज तक काल-विभागज्ञापक जितने उपाय और
यंत्र प्रकाशित हुए हैं, उनमें इङ्गलैण्डकी बनी हुई घड़ी
ही सबसे उत्कृष्ट है। घड़ीकी इस उन्नतिका अर्थ किसी
एक ही व्यक्ति पर नहीं है। विलायती घड़ीका इतिहास
देखनेसे यह ज्ञात होता है कि, करीब ४५० वर्षके
उद्योगसे आज घड़ीकी ऐसी उन्नति हो पाई है।

घटीयन्त्र देखो।

ग्रह आदिकी गतिके आधारसे समयकी प्रथमतः वर्ष
मास और दिन-इन तीन स्थूल विभागोंमें विभक्त किया
गया, पीछे दिनको फिर लुद्रांशमें विभक्त करनेकी जरूरत
हुई, तब तरह तरहके उद्योग जारी हुए। सबसे पहिले
खड़ा किया हुआ एक स्तम्भ, ध्वज वा बांस या काठसे
बनी हुई सीधी लम्बी लकड़ीकी छाया देख कर दण्ड
आदिका निश्चय किया जाता था। पाश्चात्य देशोंमें दिन-
को इसी तरह कई एक समभागोंमें विभाग कर
लिया जाता था। इसके बाद ही सूर्य-घड़ी (Sundials)
या रविचक्र, जल-घड़ी (Clepsydra) और बालू-घड़ी
(Sand-glass) आविष्कृत हुईं। रविचक्रसे सूर्यके
उदयकालसे ले कर अस्तकाल तक उसकी छाया देख कर
समयका निश्चय किया जाता था। जल-घड़ी और बालू-
घड़ीसे कोई एक निर्दिष्ट समयका निश्चय किया जाता
था। जलघड़ीके दो आधार (पात्र) रहते थे; जिसमें
एक तो करीब भरा हुआ रहता था और दूसरा
खाली रहता था। ये दोनों पात्र इस तरह संयुक्त रहते
थे कि, जिसमें बाहरकी वायु या तापादि प्रवेश नहीं कर
सकती थी। दोनों पात्रोंके जोड़की जगहमें एक ऐसा
सूक्ष्म छिद्र रहता था कि जिसके द्वारा एक पात्रका पानी
क्रमशः खतम हो कर दूसरे पात्रमें आ जमता था। एक
पात्रसे दूसरे पात्रमें पानी जानिके समयको, समयका कोई
भी एक निश्चय किया हुआ अंश मान लिया जाता था।
बालू-घड़ी भी इस-वह ऐसी ही बनती थी, सिर्फ फर्क

इतना ही रहता था कि, उसमें पानीकी जगह सूखी
बालू रहती थी। पर इससे सूक्ष्मतासे समयका निर्णय
नहीं होता था, क्यों कि जल-घड़ीमें जलका भार, वाष्प-
तापादि, जलकी घनता व तरलता होती थी और इसमें
बालूकी शुष्कता, सूक्ष्मता और मयोगस्थलमें छिद्रके विध-
की घट बढके अनुसार बहुतमा फर्क पड़ जाता था।

रविचक्र, जलघड़ी और बालूघड़ी देखो।

आजकल जिसको हम माधारणतः घड़ी कहते हैं, वे
सब ही पाश्चात्य देशोंकी बनी हुई हैं और वह एकमात्र
गतिविज्ञानकी सहायतासे ही बनी हैं। घड़ी पांच
प्रकारकी देखनेमें आती हैं,—(१) घड़ी (Clock) इस-
में यन्त्रसंयुक्त लौहशलाकाओंकी सहायतासे दिनके
वारह समान अंश (घण्टा, होरा) होते हैं, और उस
खदेशांशके प्रत्येक अंशका पद्यांश (सेकेण्ड) निर्धारित
और प्रदर्शित होता है, तथा प्रत्येक द्वादशांश उत्तीर्ण होते
समय घंटाकी आवाजसे प्रत्येक उत्तीर्ण द्वादशांशकी
संख्या बतलाई जाती है। (२) टाइम्पीस (Time-
piece) इसमें भी उस ही एक ही उपायसे दिनके वैसे
ही विभाग निरूपित होते और दिखाए जाते हैं। फर्क
इतना ही है कि, इसमें घण्टी नहीं बजती। (३)
जैब-घड़ी (Watch or pocket-timepiece) यह
बहुत छोटी होती है, आदमी इसे चलते फिरतेमें भी
काममें ला सकते हैं। इसमें भी पहिले कहे हुए उपायों-
से और अपचाक्षत बहुत छोटे छोटे कल पुर्जाँकी सहा-
यतासे दिनके वैसे ही विभाग निरूपित होते और दर्शाये
जाते हैं। इसमें भी घण्टी नहीं बजती। (४) क्रोनोमिटर—
इसमें दिनके सब ही विभाग निरूपित और प्रदर्शित होते
हैं और साथही समुद्र आदिमें देशान्तर निरूपित
होता है। स्थान और समयके तारतम्यके भेदसे इस घड़ी-
की गतिमें फर्क न पड़े, अर्थात् समय निर्देशमें जरासा भी
पार्थक्य न होने पावे, इस लिए उसका उपाय भी साथ ही
में लगा हुआ रहता है। इसके सिवा घड़ी और जैब-
घड़ीमें मास, वार और दिनका नाम तक जाननेके लिये
यंत्र लगे हुए रहते हैं। घड़ीमें दिनके वारहवें अंशमेंसे
प्रत्येक अंशके एकचतुर्थांशमें घण्टा बजनेकी भी व्यवस्था
की जाती है। जैब घड़ीमें भी इच्छानुसार बजानेकी

व्यवस्था की जा सकती है। इस तरहको जैव घड़ियोंका नाम रिपिटर (Repeater) है। घड़ो और टाइम्पोममे घण्टा बजनेके बजावा एक ठेका भी निर्माप यन्त्र लगाया जा सकता है कि, जिकके द्वारा अपने कोई एक भाव एक समय पर उस घण्टेकी वज्रा लिया जा सके। इस नै मोते हुए चन्द्रमनस्क और भानसो आदमियोंको बड़ी सुविधा होती है। इस यन्त्रके महारके वे भावग्रकतानुसार समय पर यन्त्रकी द्रुत और करुण गण्ट सुन कर कार्यमें प्रवृत्त हो सकते हैं। इस यन्त्रका नाम "चैतन्योत्पादक" (Alarm) है। (५) हाथ घड़ी (Wrist Watch) यह जैव घड़ोके महद्य पर उसमे कुछ छोटी होती है। शायकी कक्षीमें चमड़े, कपड़े या मोने चट्टीकी बैण्डमे बांधी जाती है। इसके नाना आकार है गोल चौखट्टी, कूककीरो आदि।

मनुष्ये पहिले किनने इस यन्त्रकी स्थापना की, इसका निगण्य करना कठिन है। पहिले यूरोपके नाना स्थानोंमें एक वा टाइम्पोम गण्टके बन्दने घड़ो समभानिके लिए 'होरोलोजियम्' (Horologium) गण्ट काममें लाया जाता था कीं कि समयविभाजकशास्त्रकी एक देशीमें 'होरो लजो' (Horoljy) कहते हैं। घण्टा बजानेवाली घड़ियों का व्यवहार प्राचीन समयमें यूरोपके जिन चिन देशोंमें होता था उनमेंमे इटाली देशके इतिहासमें मनुष्ये ज्यादा प्राचीनकालका विवरण पाया जाता है। वहा तेरहवीं शताब्दीके मध्यके समयमें घड़ोका प्रचार था, ऐसा जाना जाता है। इङ्ग्लैण्डके इतिहासमें जाना जाता है कि, १३८८ ई०में 'किंगमबेंच' (King's Bench) नामक अदालतके प्रधान विचारकको जो अपेदेण्ट हुआ था, उसमें घेटमिनिटर हान नामक प्रामादक घाम जो सुविद्यत घलि घर : Clock ho. n) है, उसमें मनुष्ये पहिले घड़ो बने थे। इङ्ग्लैण्डका राजा हर्टोरा मगरटिकेस गिर्जाके प्रधान याज्ञक विनियम बोदाविको म घड़ोके लिए प्रतिदिन ६ पेंस धन दिया करत थे। पोमन्नाकी पहिली घड़ी १३५० ई०में स्थापित ७८ थी। हेन्रीडा वादक नामका एक अमेर शिल्पीने प्रायक राजा पंचम चार्लसके प्रामाट से १६६४ ई०म तक घड़ो स्थापित की थी। इसमें पहिले

जो मनुष्ये पहिले अर्थात् जिन नियमने घड़िया बनती थीं, इन्होंने उसमें बहुत ज्यादा उन्नति की। राइमार नामक कविके 'फिडरा' नामके काव्यमें ऐसा है कि,—३५ एडवर्ड तीन तीन घटियाशास्त्रवित् भौलन्दानोंकी प्रतिपालना करतें थे। ये लोग डेफ्ट' (Delft) से १६६८ ई०में इङ्ग्लैण्ड आये थे। १३७० की सामने ड्रामवर्ग नगरमें एक घड़ो बनो थी कनूरेडाम डामिपोडियाम इस घड़ोका विशेष विवरण लिख गये हैं। प्रइमाटके मतमें इसी समयमें फ्रेंडकी भी एक घड़ो थी और उस घड़ोको १३८२ ई०में डिउक श्रीफारगिड हान लाये थे। १३९५ ई०में स्थायारमें एक घड़ो जो, नेमानने इसका विवरण लिखा है।

नरगवर्गमें १४६२ ई०में, अकजियारमें १४८३ ई०में और मिनिममें १४८७ ई०में एक एक घड़ो थी—ऐसा ज्ञात हुआ है। पाम्रोमियाम कामाल घुलेमिसुने पनोरक नगरमें निकोनामके जो पत्र लिखा था, उस पत्रमें (Lib ry opus) जाना जाता है कि, १५वीं शताब्दीके पीछने समयमें यूरोपके प्राय समस्त देशोंमें बहुतांकि घर में घड़ोका व्यवहार प्रचलित हुआ था। इनमे ही पनुमान किया जा सकता है कि हेनरी डी घोयाइककी घड़ोके बाद और भी डेड मो टोमी वर्षके घीचके समयमें यूरोप में कोई भी घड़ोकी दुर्लभ य थायर्जनक पटार नहीं समभते थे, माधारण स्थितिके मोर्गके घर भी घड़ोका व्यवहार जारो था। फेनरो डी घोयाइकके बाद घड़ोको जो इतरो उन्नति हुई है, यह किमी एकके जरिये नहीं; बल्कि एकके बाद दूसरेक बहु लघोयसे और तरकोवधि इतनी उन्नति हो पाई है। घोयाइके समयमें जहाँ पर घड़ो स्थापन करनेकी साम्यकता होती थी, वहीं वा बनाने भी जातो थे। वहाँ कि बनारें दूर घड़ी एक जगहसे दूसरी जगहमें नै जाने मायक नहीं होती थी। फिर जब यह १५वीं शताब्दीके शेषभागमें सर्वमाधारवर्क काम में आने लगे, मान्युम होता है तब यह उभी बनारें आने लगा, मगनातरित की जा सक। इस पनुमानमें यह भी मान्युम होता है कि, हेनरी डी घोयाइकको घड़ो, उसमें पहिलेक घड़ो बनानेवालीकी समर्थत जेहा का और एट्ट परियमका प्य है।

उस समयमें घड़ीमें पेंगुलम् वा टोलक नहीं था। उसकी जगह घड़ीकी गतिकी रक्षाके लिए एक मोटा रोलर या मिलिंगडरके मुंह पर रस्सी लपेट कर घड़ीकी एक तरफ एक भार लटका दिया जाता था। इसी भारके जरियेसे रोलर वा मिलिंगडरमें रस्सीकी घंठ खुलते समय उसमें लगे हुए अन्यान्य चक्रोंमें गति पैदा होती थी।

१६ वीं शताब्दी तक इसी ढंगकी कुछ कुछ उन्नति होती रही और उसीके अनुसार घड़ी बनती रहीं। घड़ी बनानेवालोंमें जो जितने जितने पीछे होते गये हैं, वे ही इसकी उन्नति करते हुए घड़ी बनाते गये हैं। इस दर्जेकी घड़ियोंकी साधारणतः बैलेंस क्लक (Balance clock) संज्ञा थी। इसमें स्प्रिङ्ग वा पेंगुलम नहीं था, परन्तु इस लिए उसके कार्यमें कोई बाधा नहीं आती थी। ज्योतिषतत्त्वकी आलोचनाके लिए १४५४ ई०में ओयायारने इसी बैलेंस क्लककी व्यवहार किया था, इसके बाद ज्योतिर्वित् लै गड्ये भने भी इसी उद्देश्यसे व्यवहार कीये। जेम्स फ्रिसियमने १५२० ई०में समुद्रमें दृशांतर निरूपणार्थ स्थानांतर करने लायक घड़ी बनानेके लिए प्रस्ताव किया था। १५६० ई०में ताडकोब्रे हिको चार घड़ी थीं, उसमें घंटा, मिनिट और सेकेण्ड अलग अलग जाने जा सकते थे। इसमेंसे जो सबसे बड़ी थी, उसमें सिर्फ तीन चक्के थे, उनमें एकका व्यास ३ फीट था। इस चक्केमें १२०० दांत थे। ताडकोब्रेहिने इन घड़ियोंमें शीत और उष्णताकी घट-बढके कारण समय निरूपणमें गड़बड़ होते देखा, पर उस समय वे भी इसका कारण नहीं समझ पाये थे कि, क्यों ऐसा होता है; पीछे मालूम हुआ था। १५७७ ई०में मीएटलिनकी एक घड़ी थी, जिसमें २५२८ वार आघात (टिक टिक शब्द) होता था। सूर्य उदयके बाद और अस्तसे पहिले इस घड़ीकी शब्द संख्या गिन कर सूर्यका व्यास निरूपण किया गया था। इससे यह स्थिर हुआ कि, सूर्यका व्यास ३४' १३" है। यह किस समयसे प्रारम्भ हुआ था, वह ठीक मालूम नहीं हुआ, किन्तु यह निश्चय है कि १५४४ ई०से पहिले ही प्रारम्भ हुआ है। क्यों कि उस सालमें पारी नगरके घड़ी-निर्माताओने १५ फ्रान्सिस-

के पासमें यह मनुमति ली थी कि, जो घटा निर्माणघट, उस निश्चयमें स्थिति न लींगे, वे घड़ी या जेथरुटे बड़ी वा छोटी घड़ी कैसे भी न बना सकेंगे। स्थानांतरित की जानेवाली घड़ी बननेके साथ साथ ही या उसमें कुछ टिन पड़िले, भार लटका कर घड़ीकी गति रक्षा करनेके स्थानमें स्प्रिंग आविष्कृत और व्यवहृत हुआ था। स्प्रिंग व्यवहारके समयसे ही घड़ीकी उन्नति का द्वितीय युग प्रारम्भ समझना चाहिये। इसी समयमें स्प्रिंगका गतिप्रदायक 'फ्रिमि' नामक चक्रका व्यवहार प्रारम्भ हुआ था। *

घड़ीकी जब इतनी उन्नति हो चुकी थी, तब गैलिलियोने भी स्थिर किया कि, कोई भार यदि उसके समान लंबे सूत्रमें लम्बित हो, तो वह एक दर्फरे हिलानेमें जितनी आगे घड़ेकी गति पैदा कर सकता है, उसमें जितना परिमित काल अतीत जाता है द्वितीय वार हिलानेके समयमें भी कालका परिमाण प्रायः समान ही रहता है। इसमें पेंगुलमकी गति हुई है। लण्डन नगरमें रिचार्ड हरिस नामक एक गिन्याने १६४१ ई०में सबसे पहिले पेंगुलम बनाया था। उन्होंने उसी सालमें पेंगुलमयुक्त घड़ी भी बनाई था। पेंगुलम आविष्कृत होनेके बाद हाइवेन्स नामक एक व्यक्तिने जेम्स फ्रिसियानका मत अवनमन करके नाविकाके व्यवहारके लिए देगान्तरनिरूपक घड़ी निर्माण की थी। उन्होंने घड़ीकी सहायतासे पृथिवीका आकार भी निर्णय किया था। उनको वह घड़ी विपुलस्वाके जितने नजदीक पहुंचती थी, उसके पेंगुलमकी गति भी उतनी ही कम होती जाती थी। इसमें ही उन्होंने यह स्थिर किया था कि पृथिवी ठीक वतलाकार नहीं है, मरुदण्डके उत्तर-दक्षिणको तरफ कुछ चपटी है। उसके बाद १६७६ ई०में लण्डनके बर्ली नामक एक गिन्याने घड़ीमें वजनका यंत्र लगाना प्रारम्भ किया। फिर घड़ीमें समयका निर्णय ठीक होता रहे इसके लिए तरह तरहके उपाय किये गये। १६८० ई०में लण्डन-

* Beckmann's History of Inventions, Vol. I. p. 340-355.

घड़ीका पुगतत्व देखने योग्य है।

निवामो क्लेसेण्ट नामक गिन्पनी 'ए कर एक्सेपमेण्ट' चक्रका आविष्कार किया, इसके जरिये पेंग्डुलमके बदले पतला इस्पातका स्प्रिंगका व्यवहार चालू हुआ। सेकेण्ड निरूपणका पेंग्डुलम ऐसे स्प्रिंगके साथ संयुक्त होने पर उसका नाम हुआ, — 'रयान पेंग्डुलम'। उसके बाद १७१५ ई०में जार्ज ग्रैहाम द्वारा पेंग्डुलमका एक बड़ा दोष न शोधित हुआ। उन्होंने देखा कि, गीत उष्णताके परिवर्तनके साथ साथ पेंग्डुलमके धातुके प्राक्चन और प्रसारणसे उसकी गतिमें तारतम्य पाई जाती है, अतएव समय निरूपण विशुद्ध भावमें नहीं होता। उनमें बहुत अनुसंधान करके इस दोषको निकाल बाहर किया। फिर कैरिसन नामक दूसरे एक गिन्पनी उसकी और भी अधिक उन्नति की। इसके बाद ग्रैहामने अपने आविष्कृत किये हुए शब्दहीन एक्सेपमेंट चक्र (Deadbeat escapement) व्यवहार किया। इसको जगहसे घड़ीकी उन्नतिका तृतीय युग समझना चाहिये।

उसके बाद इस एक सौ वर्षके भीतर भीतर घड़ोके कल-पुर्जोंको इतनी उन्नति हुई है कि, उनमें सेकेण्डमें भी सूक्ष्म काल विभागका निर्णय किया जा सकता है। इसके अलावा एक वर्षके भीतर घड़ोसे ऋतु, मास, पक्ष, दिन, घंटा, मिनिट, तिथि, वार, मासकी तागेष तक जाननेकी व्यवस्था की गई है। जहाजमें रेन्गाडीमें, हिमालयके गिण्डर पर वा विषुवरेखाकी उपरिस्थित मकभूमिमें ले जाने पर भी आज कलकी घड़ीमें समयमें तारतम्यता नहीं होती। गिजा और प्रामादके स्तम्भ पाटि पर व्यवहारके लिए एक तरहकी बड़ी घड़ी बनी है, उसका नाम है, — 'टाग्रेट क्लक'। यह क्लक घड़ियोंके यंत्रमें स्वतंत्र प्रणालीसे बनती है। टेलिफोन विभागमें अथवा ज्योतिर्वेदीके व्यवहार करने योग्य एक तरहकी घड़ी बनी है। यह विज्ञानोंके जरिये बनती है। इसकी विज्ञानियोंकी घड़ी कहते हैं। विज्ञानियोंकी महायत्तासे दिनक किये एक समय विशेषकर निरूपणके लिए 'टायम यन्' या समय गोलककी सृष्टि हुई है।

रातमें गिजा या घड़ो पर स्थापित घड़ीयांका टायम रेगुलैण्डे लिए उनमें स्थिर डायल काममें ला कर

आलोक पदु चानेकी भी व्यवस्था की गई है। यह घड़ी इस तरीकेसे संयोग की जाती है कि, जिससे घड़ोके यंत्रोंको काया डायल पर न पड़ने पावे। इसके सिवाय घड़ोके साथ तरह तरहके दृश्या भी लगाये जाते हैं। किसी किसी घड़ोमें घंटा बजते समय घड़ोके एक स्थानमें कोटोमें छेदका टुकड़ा खुल कर उसमेंसे एक घुग्घु चिड़िया निकल पड़ती है और जितनी दफे घंटा बजेगा उतनी दफे वह 'धू' 'धू' शब्द करता है। किसी घड़ोमें प्रति घण्टाके आधे घण्टामें एक बन्दर या मनुष्यकी मूर्ति निकल कर एक लम्बे छंटे पर हतोडांसि मार कर बजाता है और किसीमें प्रति घंटामें गीत बजता रहता है। किसीमें बरात या ठाकुरविमजन और किसीमें वाद्य भाण्डमहिन मनुष्य मूर्ति निकलती है। किसी घड़ोमें एक फाटकदार काठका घर बना हुआ रहता है, उसके सामने एक द्वारवानकी मूर्ति बनी हुई रहती है, प्रति सेकेण्डकी गतिके साथ साथ वह एक तरफसे दूसरी तरफ आता जाता रहता है और फाटक एक बार पूरा बंद हो कर फिर पूरा खुल जाता है। इस प्रकारकी तरह तरहके दृश्यावालो घड़ी देखनेमें आते हैं।

यूरोपमें जिन जिन देशोंमें घड़ो बनते हैं, उनमेंसे लण्डनकी घड़ो ही सबसे अच्छी और सूक्ष्मवान् समझे जाते हैं। परन्तु सुइस् लण्ड और जर्मनीमें भवने ज्वादा घड़ी बनती हैं। आजकल घड़ोका व्यवहार इतना चालू है कि, सुइजर्लैण्डके किसी एक कारखानेमें सालभरमें २ लाख जेब घड़ो बना करतो हैं।

कलकत्तेमें कई एक प्रसिद्ध मसजिद, पटानिका और गिजाओंको गिखर पर बड़े बड़ी घड़ो लगे हुए हैं। उनमें रास्तागोरीका बड़ा लाभ है। अमेरिकामें सियॉ और ब्रानक बानिकायें 'साधारणतः' घड़ोका तरह तरहके काम करती हैं। भारतमें यद्यपि सब गांवोंमें घड़ीका व्यवहार अभी तक नहीं हुआ है तब भी इतना जरूर है कि, कमसे कम सगानके कोई भी गांवमें पुगने हिमावसे टण्ड पलादि न कष्ट कर घंटा मिनिटके सिमावसे दिनका परिमाण बताने पर समझ आते हैं।

० एक टण्ड। ३ पायाव्य सतमे टाई टण्ड ।

घड़ीदिशा (हिं० पु०) एक तरहका घड़ा जो किसी मनुष्यके मरने पर घरमें रखा जाता है। यह घड़ा १०।१२ दिनों तक रहता है। घड़ेके तलेमें एक छेद रहता जिसमें हो कर बूंद बूंद पानी टपकता है और इसके मुख पर एक दीपक जला कर रख दिया जाता है।

घड़ीसाज (हिं० पु०) घड़ीकी मरम्मत करनेवाला।

घड़ीसाजी (हिं० स्त्री०) घड़ी साजका कार्य या व्यवसाय।

घड़ीला (हिं० पु०) छोटा घड़ा, भंभर।

घड़ीचो (हिं० स्त्री०) एक तिपाई जिसपर जलपूर्ण घड़ा रखा जाता है।

घण्ट (सं० पु०) घण्टा-कृत। १ दीप्तियुक्त, कान्तिवाला। २ एक तरहकी मछली। ३ शाक प्रभृतिका व्यञ्जन। इसका गुण—बलवर्द्धक, रुचिकार और वातनाशक है।

घण्टक (सं० पु०) घण्ट संज्ञायां कन्। लुपविशेष, कोई छोटा पौधा। इसके मूलका गुण—कफनाशक, कटुपाक और पित्तवृद्धिकार है।

घण्टकर्ण (सं० पु०) घण्टो दीप्तः कर्ण इव पत्रमस्य, बहुव्री०। लुपविशेष, एक तरहका छोटा पौधा जिसके पत्ते बड़े बड़े अरुईकी तरह होते हैं।

घण्टा—(सं० स्त्री०) घटि शब्द करणे अच्। १ कांस्यादि निर्मित वाय्ययन्त्रविशेष।

“घण्टां वा परशं वापि वामतः सन्निवेशयेत्।” (दुर्गाध्यान)

स्नान और पूजनके समयमें इसका वजना प्रशस्त है। स्कन्दपुराणके मतसे,—जो वासुदेवके पास पूजाके समयमें घण्टा बजाता है, उसका एक सौ करोड़ हजार वर्ष देवलोकमें वास होता है और मनोहारिणी अप्सराएं उसकी परिचर्या करती हैं। घण्टा सर्ववाद्यमयी, विष्णुका अतिप्रिय प्रिय है। दूरमें वादिकोंके अभावमें सिर्फ घण्टा बजानेसे ही पूजाकी सिद्धि होती है। घण्टाके दंडके उपर गरुड़ मूर्ति और चक्र बनाया जाता है। ऐसा घण्टा बजानेसे विष्णु सर्वदा वहाँ उपस्थित रहते हैं।

विष्णुधर्मोत्तरके मतसे—गरुड़मूर्तियुक्त घण्टा बजानेसे उसको फिर जन्म मृत्युका डर नहीं रहता। घण्टाके दण्ड पर चक्रयुक्त गरुड़मूर्ति स्थापित करनेसे त्रिभुवन स्थापन करनेका फल होता है। जिस घरमें गरुड़मूर्ति-

वाला घण्टा रहता है, उस घरमें सर्पका भय नहीं रहता। जिसके यहां घण्टा नहीं, उसे विष्णुभक्त वा भागवत नहीं कह सकते। अतएव ममस्तु वैष्णवोंको चाहिये कि, वह घण्टा पासमें रखें। इसका विशेष विवरण स्कन्दपुराण, विष्णुधर्मोत्तर और हरिभक्ति-विलास आदिसे जानना चाहिये।

घण्टा दो प्रकारके देखनेमें आते हैं। एक तो थाली जैसा गोल होता है, जो हिन्दू, बौद्ध आदि आरतीके समयमें बजाते हैं। और जैनो लोग दमन्ताक्षिणी पूजाके अंतमें स्वयम्भू स्तोत्रके साथ साथ बजाते हैं और दूसरा मंदिरोंके दलानोंमें तथा वेदीगृहके सामने टंगा हुआ रहता है, इसका आकार ओंधा ग्लाम जैसा होता है और भीतरमें एक भारी किसी भी धातुका टुकड़ा लटकता रहता है। इसको हिन्दू, जैन, बौद्ध आदि सब ही मन्दिरमें सुसती समय बजाते हैं। इसमेंसे एक हाथसे बजानेका भी होता है, जिसके ऊपरकी तरफ एक पकड़नेके लिए हन्ल रहता है, इसी पर गरुड़ आदिका मूर्ति बनाई जाती है।

मन्दिरोंमें घण्टा लटकानेकी प्रथा यद्यपि भारतमें अति प्राचीनकालसे ही जारी है। पर तब भी यूरोपमें गिर्जा आदिमें जैसा बड़े आकारका घण्टा देखनेमें आता है, इस देशमें वैसा नहीं है।

मिसरवासी, प्राचीन ग्रीक और रोमकीमें भी हाथसे बजाने योग्य घण्टाका यथेष्ट प्रचार था। मिसरमें ‘ओरिसिसका भोज’ नामक उत्सवका समय घण्टा बजा कर सबको जनाया जाता था। प्राचीन इहूदियोंमें आरन नामके प्रधान याजकगण छोटी छोटी सोनेकी घण्टियां अंगरखामें सिलवा कर पहना करते थे। आथेन्स नगरमें सिविलिके याजकगण पूजामें घण्टा काममें लाते थे। ग्रीक लोग शिविरमें चौर छावणीमें घण्टा (कोड़ा) व्यवहार करते थे। रोमक लोग ‘टिनटिन्ना-बुलाम्’ बजा कर नहानेका और धन्धेके काममें लगनेका समय सर्वसाधारणको बतलाता था।

४०० ई०में कैम्पानियाके अन्तर्गत नोलाके विश्वपलिनियाने सबसे पहिले बड़ा घण्टा व्यवहार किया था। कैम्पानियामें सबसे पहिले घंटा बना था, इस लिए कुछ दिन तक घण्टाको “कैम्पानि” भी कहते थे और उस

होमे यहाँ जो गिर्जा घरमें बड़े घण्टे टंगे रहते हैं, उनको 'कैम्पेनाइल' कहते हैं।

फ्रांसमें ५५० ई०में घटाका वजना चालू हुआ था। उद्यारमथका आवट वेनेडिक्ट ६८० ई०में घटालीसे एक घटा अपने गिर्जाके लिए लाये थे। पोप माविनियानने (६०० ई०में) यह नियम कर दिया था कि, घण्टा घण्टामें गिर्जासे बड़ा घण्टा वजना चाहिये, जिससे सर्व साधारण उपासनाका वस्त्व जान सकें। ये सब बड़े बड़े घण्टे टखिण यूरोपमें ही देखनेमें आते थे। यूरोप के प्रवागमें ८वीं शताब्दीमें और सुइजलैंड और जर्मनीमें ११वीं शताब्दीमें घण्टा प्रचलित हुआ था। आयरलैंड, स्कॉटलैंड, तथा डेवेलूमस कुछ पुगने घण्टा सुरचित रखे हुए हैं, सुनते हैं, वे सब ६वीं शताब्दीके बने हुए हैं। मोडेकी चहरको टेटी करके चोसुखी (अर्थात् बीचमें गहरासा और चारो कोन चठे हुए) करके रिमेटसे जोड़ कर ये सब घण्टा बनाये गये हैं, इनके ऊपर पीतलको कलई की जाती है। इनमेंसे एकका नाम 'सेण्ट पैट्रिकका' घण्टा, और यह ६ इंच लंबा, ५ इंच चौड़ा तथा ४ इंच गहरा है। यह एक पीतलके डिब्बेमें सुरचित रखा हुआ है। यह डिब्बा रत्न अ कित है और उस पर चाँदीका काम किया हुआ है। आइरिश शूज (Irish Shews) के एक गिलानिखसे जाना जाता है कि, यह घण्टा १०६१से ११०५ ई०के भीतर भीतर बना है। "The Annals of Ulster" नामक पुस्तकमें ऐसा भी उल्लेख पाया जाता है कि, यह घण्टा ५५० ई०में भी था। सेण्टपल नामके एक आइरिस-मिगनरीके पास (६४६ ई०में) एक चापला घण्टा था। यह घण्टा अब भी सुइजलैंड नगरमें (मठमें) मौजूद है और सर्व साधारणको दिखलाया जाता है।

आरलिम्ब नगरके गिर्जाके लिए किसी राजाने एक घण्टा टान स्वरूप दिया था। खुट्टीय ग्यारहवीं शताब्दीमें इस घण्टाने बहुत प्रसिद्धि पाई थी। इसका वजन २८०० पौण्ड अर्थात् १३०० सेरके करीब था। १३वीं शताब्दीमें इससे भी बड़े बड़े घण्टे बनने लगे। १४०० ई०में पारी नगरमें 'जैकेलिन्' नामका एक घण्टा बाँचेमें टाला गया था जो कि वजनमें १५००० पौण्ड

अर्थात् १८१॥ मन था। पारी नगरमें और भी एक १४७२ ई०में टाला गया था, वह भी वजनमें २५००० पौण्ड अर्थात् ३१२॥ मन था। रुथा नगरका भी प्रसिद्ध घटा है, वह १५०१ ई०में टाला गया था। उसका वजन था ३६२६० पौण्ड अर्थात् करोड़ ४५५॥ मन १ सेर।

रूसियाके मस्काउ नगरमें जो बड़ा भारी घण्टा है, उससे बड़ा या उसके समान दूसरा घण्टा यूरोपमें इससे पहिले नहीं था। यह घण्टा पहिले पहल कब बना था, उसका निश्चय नहीं। पर १५वीं शताब्दीमें ही बना है, यह ठीक है। इसका नाम था, 'जार कोलोकोल' अर्थात् 'घण्टाराज'। ऐसा सुननेमें आता है कि, मस्काउ नगरमें किसी समयमें १७०६ घण्टे थे। इन में से एक घण्टा इतना बड़ा था कि, उसके भीतरका लटकन हिला कर बजानेमें २४ आदमियोंको जरूरत होती थी। इसका वजन २८८००० पौण्ड अर्थात् ३६०० मन था। यह एक दफे टूट गया था और फिर १६५४ ई०में, बना था। इसके बाद फिर भी एक दफे गिर पड़ा था, उस समय उसकी तोड़ ताड़ कर और भी धातु मिला कर फिरसे (१७३४ ई०में) इसमें वह साँचेमें टाला गया था। तबहीसे इसका नाम "जार कोलोकोल" पड़ा था। यह घण्टाराज १८ फुट ३ इंच लम्बा ६० फुट ८ इंच घेर और २ फुट मोटा था। इस घण्टेमें ६७००० पौण्ड अर्थात् (१०) दश रुपयेका अगर एक पौण्ड माना जाय) ६७००००, रु० खर्च पड़ा था। १६८ टन अर्थात् १०३६ मनके करोड़ इसका वजन था। बहुत दिन तक ऐसा भ्रम था कि, यद्यो घण्टा किमो वरत व्यवहृत होता था, फिर १७३७ ई०में यह अग्निजाडमें गिर कर जमोनेमें प्राय घुस गया था। पर पीछे यह भ्रम दूर हो गया। बहुतसे सुखदूर्मी और धीरबुद्धियोंकी विवेचनासे यह निश्चय हुआ है कि यह कभी भी लटकाया नहीं गया और न कभी बाँचेमेंसे निकाला ही गया था। ऐसा जो १० टन वजनवाला और भी एक घण्टा मस्काउ नगरमें मौजूद है। इससे धनावा यूरोपक नामा देगोके गिर्जाघोमें १८से मे कर ५ टन तकका घण्टा पाया जाता है।

मस्काउकी "घण्टाराज"के विषयमें लार्कके भ्रमण-वृत्तान्तसे यह मालूम होता है कि, जिस समय इसकी धातु गलाई जाती थी, उस समय साधारण और संभ्रान्त लोगोंने धार्मिक उद्देश्यसे इसमें इतना मोना, मुद्रा, अलङ्कार और तैजसादि डाला है कि, वह देखनेमें चांदी जैसा मालूम पड़ता है। मस्काट् 'निकोलस'ने इस घंटेकी जमीनसे निकलवा कर एक ग्रेनाइट नामकी पत्थरकी बेटी पर स्थापित किया था। उसी समय इसका एक तरफका थोड़ासा भाग टूट गया था और फिर वह घंटेमें घुमनेका दरवाजा सरोखा हो गया; जो अब छोटा गिर्जा (Chapel) कहलाता है। टटा हुआ अंशका वजन ११ टनके करीब होगा।

इसाई लोग इसी तरह बहुत दिनोंसे घण्टा व्यवहार करते आये हैं। मुसलमानोंमें घंटेका व्यवहार नहीं है। उपासनाका समय होने पर इसाई लोग जिस प्रकार गिर्जामें घण्टा बजा कर साधारणको सूचित करते हैं, मुसलमान लोग उसी तरह मसजिदमें जा कर "आजान" दिया करते हैं। यह "आजान" देनेकी व्यवस्था शायद हिन्दू और इसाईओंके घण्टा व्यवहारके प्रति विद्वेष दिखलानेके लिए की गई होगी। हिन्दुओंमें जिस प्रकार घण्टाके बहु-व्यवहारसे उसकी पवित्रता, लक्षणालक्षण और उसमें देवप्रियता बतलाई है, उस ही प्रकार प्राचीन इसाईओंमें भी घण्टाके बहु व्यवहारमें उसकी पवित्रता और घण्टापवित्रीकरण प्रचलित था। घण्टा बनाते समय नाना प्रकारके धर्मानुष्ठान होते थे और फिर उसका मनुष्योंकी भांति अभिषेक (बैप्टाइज) कर नामकरण और सुगन्धि द्वारा लेपन होता था और सफेद या लाल रङ्गके टोप वा दूसरे कोई तरहके सुदृश्य आच्छादनसे ढक दिया जाता था। यह सब व्यवहार आलकुइनके समयसे चला आया है और १८वीं शताब्दीमें भी रोमन् कैथलिकोंमें प्रचलित था। इसाई लोग घंटेको इतना पवित्र मानते हैं कि, उस पर पवित्र श्लोक आदि खुदाते हैं। उनका विश्वास है कि, घंटेमें आघात करनेसे उसकी आवाजके साथ खुदे हुए मंत्रोंके अंशसे उत्पन्न हुए शब्द मिल कर मङ्गल विधान करते हैं। तथा आंधी, मड़क और शत्रुकी दुरभिसन्धि, अग्नि-भय यह सब भी घंटाकी ध्वनिसे नष्ट

हो जाते हैं। मध्ययुगमें प्रायः सब ही घंटोंमें 'नम्रनिहित श्लोक खुदा हुआ रहता था—

"Funera plango, fulgura frango, Sabbata pango, Excito lentos, dissipo ventos, paco cruentos."

इस तरहके बहुतसे कुसंस्कार उस समयके आदमियोंके हृदयमें घुम गये थे, इसका फोटो वाशिंगटन प्रार-भिगने अपने Sketch book नामक पुस्तकमें खूब अच्छा उतारा है। घण्टाके बजनेमें आंधी रुकती है ऐसा विश्वास १६वीं शताब्दीमें भी सुसभ्य सुशिक्षित यूरोपियोंके हृदयसे नहीं निकला था। १८५२ ई०में जब मानटाके उपकूलमें बड़ी भारी आंधी आई थी तब मानटाके विशपने खुद समस्त गिर्जाओंमें ऐसा आदेश भेजा था कि आंधी बन्द करनेके लिए लगा तार कड़े घंटे तक बड़े बड़े घंटे बजाये जायं।

पहिले किसी इसाईकी मृत्यु होने पर घंटा बजाया जाता था। फिर धीरे धीरे मृत्युके ठीक अव्यवहितसे पहिले घण्टा बजानेकी व्यवस्था हुई। इस घंटाकी मृत्यु-घण्टा अर्थात् Passing bell कहते थे : इस रीतिके प्रचारके समय लोगोंका ऐसा विश्वास था कि, घण्टाकी आवाज सुननेसे मुसुर्षुकी देह पवित्र हो जाती है और पिशाचादि भाग जाते हैं। १७वीं शताब्दीमें यह प्रथा बन्द हो गई और "मृत्यु-घण्टा" नामका भी लोप हो गया। परन्तु मरे हुए व्यक्तिको ले कर गोरस्थानमें पहुंचने तक तथा जब तक उसकी समाधिक्रिया पूरी न हो पाती थी, तब तक घंटा बजाता रहता था। इसमें कोई कुसंस्कार नहीं था, मरे हुएके प्रति सम्मान दिखलाना ही इसका उद्देश्य था। अब भी यह प्रथा कहीं कहीं जारी है। रोमन कैथलिकोंमें अब भी दूसरे प्रकारसे घंटा बजानेकी रीति मौजूद है। गिर्जामें उपासना शुरू होते समय घंटा बजा कर लोगोंकी इकट्ठा किया जाता और उपासनामें प्रवृत्त होनेसे पहिले मेरीकी उपासना करके तथा उपासना खतम होने पर जमा प्रार्थनापूर्वक उपासना करते समय फिर घण्टा बजाया जाता था। इन दो प्रकारके वाक्यकी "क्षमा-वादन" वा Pardon-bell कहते थे। ख्रिष्टीय समाज

संस्कारसे (Reformation) पहिले यह प्रथा सब गिर्जासिं थी। पर यह प्रोटिस्टाण्ट गिर्जासिं बन्द हो गई थी, परन्तु इससे यह न समझना चाहिये कि, 'मृत्यु घण्टा' एक ही समयमें उठ गया था।

११वीं शताब्दीकी शुरु आतमें इङ्गलैण्डके 'कार्फिड वेल्' नामका एक प्रकारका घंटा बजाना प्रचलित हुआ था। इससे धार्मिक कीर्ति सम्बन्ध नहीं था। रातके आठ बजे सबको वसिया बुझा देने हींगो ऐसा प्रथम विनि यमने हुका दिया था, इसी आदेशके अनुसार सबमाधा रणको हीगियार ही जानेके लिए शहरमें ययासमय घंटे बजाये जाते थे। विलियम रुफासके समय तक वह नियम जारी रहा, फिर उठ गया था। अब भी इङ्गलैंड में और स्कोटलैण्डमें बहुत जगह रातके आठ बजे घण्टा बजते हैं परन्तु उसका साथ साथ अधिवासियोंको वसिया नहीं बुझानो पडती।

आखिरमें घंटानों में गीतकी ध्वनि उत्पन्न करनेको तरकीब निकाली गई। यह आविष्कार सबसे पहिले नेदरलैण्डके नोगोनि निकाला था। उस देशके बहुतसे गिर्जाघोंमें हमेशा मृदु सुस्वरसे घण्टा बजते हैं और घंटा घंटानों में घंटीकी भांति घंटे भरमें घंटे घंटोंमें धाव घंटोंमें बजते रहते हैं। इनमें कई एक बैरेल लगे हुए घण्टे नामक यंत्रकी तरह बजते हैं और कुछ ऐसे भी हैं, जिनको चाबोकी सहायतासे वादक था कर बजाते हैं। फ्रांसीसी लोग इस प्रकारके बाजेकी "कैरिलोन" कहते हैं। इङ्गलैंडमें भी ऐसे घंटे हैं, पर यह एक नहीं, ५६ घंटे सुर मिना कर ऐसे कोणलमे रखे जाते हैं कि बजते समय उन घण्टोंसे तरह तरहके सुर उत्पन्न हो कर बहुत ही मनोमोहिनी ध्वनि उत्पादन करते हैं। पञ्जैज लोक ऐसे ही घण्टोंको "कैरिलोन" कहते हैं। बार्सेल नगरके 'लि होने' नामक प्रामादके छिखर पर ऐसा "कैरिलोन" नामका घण्टा है। ऐसा सर्वग सुन्दर और सुस्वर वाद्यवाजा घंटा सारे यूरोपमें और दूसरा नहीं है। नण्डनमें और बहुतसे घण्टोंमें कैरिलोन घण्टाकी भांति ५६ घण्टोंका सुर मिनाया गया है, परन्तु उसकी तुलना नहीं कर सकता टिंग टांग टंग टंग टांग टंग टांग टांग टांग बजता रहता है। इसका सुर भीटा

और दूरसे सुननेमें आता है। इस बाजेको यहा तक तरकीब हुई है कि, १२ घण्टा मिना देनेसे ४०८,००१,६०० प्रकारके भिन्न भिन्न सुस्वर बजते रहते हैं। चिय-साईडू नामक स्थानके 'सेण्टमेरि लि बो' नामके गिर्जासिं इसी तरहका घण्टा इतना प्रसिद्ध है कि, उसके विषयमें, इङ्गलैंडमें एक कथावत हो गई है कि, किसोको अगर नण्डनमें जन्म स्थान है—ऐसा परिचय देना होता था; तो वह कहता था—“Born within the sound of bowbells.” ये सब घंटे कोई एक निर्दिष्ट समय पर बजानेके लिए प्रति दिन भोग अर्घदान करते थे। पूर्वील (Bowbell-) प्रति दिन सुबह गन्धीर आवाजसे बजता है। नण्डनवासी एक ब्यक्ति इस वाद्यके लिए यथेष्ट धन दे गये हैं। उनका यह उद्देश्य था कि, इससे नण्डनको गिर्जासि सम्प्रदाय इसके नादको सुन कर जंगों और अपने अपने कार्यमें तत्पर होयंगे।

यूरोपमें रोमकोने घोडे आदि पशुओंके गलेमें छोटे छोटे घण्टा बांधनेका नियम चलाया था। घोडेकी गर्दनमें सामको घण्टी लटका देनेसे अंधिरमें रास्मानोरीकी घोडेके आगमनका ज्ञान हो जाता था। गाय, बकरो, भेड आदि पशुओंके गलेमें घण्टी रहनेसे पहाड व जंगलोंमें उनके खो जानेसे टूटनेमें सुविधा होती है। साहजके मकान पर किनीके आगमन होनेपर उसकी सूचनाके लिए जो घंटा बजता है, वह इ गलैण्डकी राष्ट्री एनिके राजत्वजानोंमें नहीं था उसके बार प्रचलित हुआ है। अ गरेज नोग नौकरकी बुलानेके लिए हिन्दुस्तानियोंकी तरह हजा नहीं करते, एक तरहकी घण्टी बजाते हैं। इस घण्टीको 'चाङ्गन घण्टा' (Calling bell) या 'गुहूघ टा' (Room bell) या 'टेबिल-घ टा' (Table-bell) कहते हैं। साहज नोग हीटनॉसिं, रहनेके घरमें इत्यादि स्थानोंमें प्रत्येक कमरेमें मवादादि देनेके लिए एक तरहकी तारमें बंधी कई घंटी फाममें जाते हैं। इन तारोंका एक मुच तो नौकरोंके घरमें और एक मुच दरवाजेके पास रहता है। इन तारोंमें किमी एक तारके खी उनेमें अभीष्कित घरमें घंटी बज जाती है। एगियाके दक्षिणपूर्वाशमें बडे घंटोंका अधिक प्रचार है। ब्रह्मदेशमें बहुतसे घंटोंमें अज्ञानके लिए

टोलक (लटकन) नहीं रहता, हिरण्यके सींगकी हथौड़ी द्वारा वे वजाये जाते हैं। ब्रह्मदेशमें करीब करीब सब मंदिरोंमें घण्टा है। रेगूनके 'शुयेदागुन' नामक मन्दिरमें १८४२ ई०का ठला हुआ एक घण्टा है। इसका वजन ४२ टन ५ हन्टर ४० पौण्ड है। यह जं चाई-में १॥ हाथ है, इसका व्यास ५ हाथ और सुटाई १५ इंचकी है। मंगूनका घण्टा १८ फुट जं चा है, वजनमें ८८ टन ७ हन्टर १०६ पौण्ड अर्थात् करीब २५०० टन है।

पिकिन चीनदेशकी राजधानी है। यहाँ एक छोटेसे नगरमें १ घण्टा है, जिसका वजन ५३॥ टन है। इस पर चीन भाषामें बौद्धधर्मके हजारों उपदेश खुदे हुए हैं। इससे उस 'मठ'का इतिहास जाना जा सकता है। क्यों कि प्रत्येक मठ-स्वामी अपनी मृत्युसे पहिले इस पर कुछ न कुछ लिख गये हैं। पिकिनमें ७ घण्टा ऐसे हैं, जो वजनमें ५० टन या इससे कुछ अधिक होंगे। इनमें एक 'घण्टाराज' पृथिवी भरमें सबसे बड़ा है और मस्काजका 'घण्टाराज' दीयमें नखर है।

हिन्दू लोग भी देवमन्दिरोंमें घण्टा लटकाते हैं। प्रत्येक दर्शनार्थी इसको वजाते हैं। विलायती 'कैरिलीन्स'की भांति ५-७-१२ घंटे एकत्र बनानेकी प्रणाली हिन्दुओंमें भी बहुत दिनसे है। किसी किसी मंदिरमें ऐसे १०८ घण्टा भी देखनेमें आये हैं। परन्तु इंगलैण्डके 'कैरिलीन्स'में जैसा सुर मिलाया जाता है, वैसा यह नहीं होता।

नेपालके किसी किसी प्राचीन मंदिरमें हजार डेढ़ हजार वर्षके पुराने घण्टा पाये जाते हैं।

देवपूजामें धूप और दीप दानके बाद बांये हाथसे घण्टाका हस्तन पकड़ कर घण्टा वजाना चाहिये। तंत्र-शास्त्रके मतानुसार अक्षमंत्रमें (फट्) घण्टाकी पूजा करनेका विधान पाया जाता है।

२ घण्टापाटली वृक्ष। ३ अतिवला। ४ नागवला। (राजनि०) ५ जंवापुष्पवृक्ष।

घण्टाक (स० पु०) घण्टादेव कायति कै-क। घण्टा-घाटलीवृक्ष, मोरवा नामका पेड़।

घण्टाकरण (स० पु०) घण्टावत् कर्णं यस्य, बहुव्री०।

१ शिवका एक अति प्रिय अनुचर। मौन संक्रातिमें स्रष्टृकी जड़में इसको पूजा होती है। पूजाका मंत्र—

“घण्टाकरणः । महावीरः । सर्ववाधिविनाशनः ।

विष्णोटकामधे प्राप्ते रच रच महाबलः ॥” (शिवादिपत्र)

घण्टाकरणके शिवानुचर होनेकी ऐसी कथा प्रचलित है,—ये मंगलके पुत्र हैं, मेधाके गर्भसे उत्पन्न हुए हैं। इनका दूसरा नाम घण्टेश्वर है। इन्होंने अभिशप्त हो कर उज्जयनी नगरीमें मनुष्य रूपमें जन्मग्रहण किया और महाराज विक्रमादित्यकी सभामें प्रधान रत्न होनेके लिए शिवकी आराधना की। शिवने मंतुष्ट हो कर वर भी देना चाहा, पर इनके अभीष्टकी सिद्धि नहीं हुई। शिवने वर दिया कि,—“तुम कालिदासके सिवाय और सबकी पराजित कर सकोगे। कालिदास सरस्वतीका वरपुत्र है, उसको पराजित कर सको ऐसा वर मैं नहीं दे सकता। यदि उसको पराजित करनेकी इच्छा हो, तो सरस्वतीकी आराधना करो।” घण्टाकरण इसमें राजी न हुआ। उन्होंने फिर भी शिवकी आराधना करनी शुरू की। पर उससे भी उनके अभीष्टकी सिद्धि न हो सकी। तब फिर उन्होंने भक्तमार कर ऐसी प्रतिज्ञा ली कि, देह रहते हुए अब शिवका नाम भी न लूंगा। पर इससे शिवके प्रति जो उनकी भक्ति और श्रद्धा थी, वह न घटी। आखिर विक्रमादित्यकी सभाके सभ्योंको पराजित करनेके लिए वे राजधानीकी तरफ जाने लगे। उनको इस बातका विश्वास था कि, शिवमें भक्ति रखनेसे मैं अवश्य ही कालिदास आदिको भी पराजित कर सकूंगा। देवादिदेव महादेव भी परोक्ष भावसे उनके पीछे पीछे चल दिये।

इधर यह भी प्रसिद्ध हो चुका था कि, घण्टाकरण ने महादेवका नाम परित्याग कर दिया है। उन्होंने राजसभामें प्रवेश कर कालिदासके अतिरिक्त सब पण्डितोंको पराजित कर दिया। कालिदासने देखा कि, मामला तो गड़बड़ाता है। उन्होंने विचार करनेसे पहिले यह कह दिया कि, “अगर आप दीर्घ छन्दसे, महादेवका स्तव कर सकें; तो हम भी आपके साथ विचार करेंगे, अन्यथा नहीं।” ऐसा कहनेका तात्पर्य शाब्दिक ही था कि, न तो यह शिवका स्तव करेगा और न मेरेको पराजित कर

मक्रीगा । पर इससे कागिदामकी अभोष्ट मिडि न दुई ।
घण्टाकर्ण महद्दिवमें भक्ति तो रखते हो थे, सिर्फ मान
मिक कष्टसे लहनेसे ऐसी प्रतिज्ञा ली थी । अतएव उनमें
नामशून्य स्तव पढ़ना शुरू किया । जैसे—

‘ कि ताथा महिमा महाजगन्निध यत्केन्द्रव्यापति
स्वकी मधुसूक्तम्भुजिबन्धे कीजिरयोतामति ।
मेनाका इतिमभेरनीविसं सन् पाठोमप्रशोभसन्
शेवानाकुकोटिकोरकुटे मृद्य तरि निष्ठ त ॥
तावन् सतसमुद्रदुहितमहोम धेइवधु कथे
गायत्रि परिवारिभा इय इय होवा समतायिन् ।
यस्य स्मारकचासौ विमुक्ति धर्ते कल काजति
शेष स्याजगमस्य गन्प लक्षोचिदर्श नम ॥

इस स्तवकी सुन कर मपूर्ण मभा उनको प्रशंसा
करने लगी । महाराज भी सन्तुष्ट हुए । कालिदासने
विना विचारके जो अपनी पराजय स्वीकार की । घण्टा
कर्ण श्रापमुक्त हुए । महादेवने इनकी अचला भक्ति देख
कर इनको अपना प्रिय पार्श्व दे बनाया ।

२ घण्टकक्षुप ।

घण्टागार (स० पु०) घण्टाया आगार ६ तत् । जिस
घरमें घण्टा रखा जाता है ।

घण्टाताड (स० पु०) घण्टा कालज्ञापकघण्टा ताडयति
घण्टा ताडि अण, उपपदम० । कालसूचक घण्टा बजाने
वाला, वर्णमकर जातिविशेष । जो लडाइमें घंटा
बजाता हो उसीकी धंटाटाड कहते हैं ।

घण्टाताडन (स० स्त्री०) घण्टा बजानेकी क्रिया या भाव ।
घण्टानाद (स० पु०) घण्टाया नाद, ६ तत् । १ घण्टाका
शब्द, घंटीकी आवाज । घण्टा या नाद इव नादोऽस्य,
बहुव्री० । २ कुवेरके एक मंत्रोका नाम ।

घण्टायथ (स० पु०) घण्टानां घण्टादिवाद्यानां घण्टायुक्त
इत्यादीनां वा पत्या, ६ तत् । समा पथ । बड़ा
राजपथ, प्राची ज्ञाने लायक आसमार्ग, गायकी वह राह
जिस पर प्राची जा या सकता हो ।

घण्टाघाटलि (स० स्त्री०) घण्टा चानी पाटलियेति
कर्मैवा० । वृत्तविट्टेय सोषा नामका एक पेड़ ।
(Bignoniu Suavolens) इसका मरुत पर्याय—
गौनीद्र, भाटल, मोन, मुक्कक गोलिह, चारहु, कान

मुक्कक, पाटलि, घण्टाक, भाट, तीच्छ, घण्टक, मोचक,
काष्ठपाटनो, कालस्थालो और काचस्थली है । (भाष्य०)
घण्टाभ (स० त्रि०) घण्टाया इव आभा यस्य, बहुव्री० ।
एक देखका नाम । घटाभ इवा ।

घण्टारवा (स० स्त्री०) घण्टारववत् रव पक्षफलेषु
यस्य, बहुव्री० टाप । वनशण्डुवृक्ष, भनभनियाका
पेड़ । इसका पर्याय—शण्डुपिका और शण्डुपती है ।

घण्टारवी (स० स्त्री०) घण्टारव बाहुलकात् डीप् ।
घण्टारवा देखो ।

घण्टाल (स० पु०) मदनवृक्ष ।
घण्टालिका (स० स्त्री०) घण्टाली स्वार्थे कन् टाप पूर्व-
ङ्ङस्वस्य । घण्टाली देना ।

घण्टालो (स० स्त्री०) घण्टा तच्छब्द अनति अन-घण्ट-
टोप् । कीपातकी, एक तरहका पौधा, सोंफ । घण्टाला-
मालो, ६ तत् । २ घण्टायोषी ।

घण्टावत् (स० त्रि०) घण्टा मतुप् मस्य व । घण्टायुक्त,
। जमकी घण्टा हो ।

घण्टावाय (स० स्त्री०) घंटाका शब्द, घंटीकी आवाज ।
घण्टाबीज (स० पु०) घण्टेव बीज यस्य, बहुव्री० ।
१ जैपालवृक्ष, जायफलका पेड़ । २ जायफलकी गुठली ।

घण्टाशब्द (स० पु०) घण्टाया शब्द, ६ तत् । १ घण्टा
रव, घण्टाकी आवाज । घण्टाया शब्द इव शब्दो यस्य,
बहुव्री० । २ कास्य, कामा धातु ।

घण्टायोता (स० स्त्री०) अतिब्रला ।
घण्टायोना (स० स्त्री०) महाशयन वृक्ष ।

घण्टिक (स० पु०) जनजन्तुविशेष घण्टियान्, प्राच ।
कुशोर पीकी ।

घण्टिका (स० स्त्री०) घण्टा चत्वार्यो डीप् तत स्वार्थे
कन् ङ्ङस्वस्य । १ बहुत छोटा घण्टा । २ तालुस्थ जिह्वा,
वह छोटी जिह्वा जा तालुमें लगी रहती है, काग । ३
धूपरु । ४ गनरीगविशेष, गनिका एक तरहका रोग ।
५ शण्डुपत्र, भनभनियाके फूल । ६ - मरिच मरचाद्र ।

घण्टिन (स० त्रि०) घण्टाऽभ्यादि घण्टा इनि । १ घंटा
युक्त, जो घण्टावे सुसजित हो, जिसकी घण्टा हो ।

घण्टिनोबीज (स० स्त्री०) घण्टिन्या बीज, ६-तत् ।
जैपाल, जायफल ।

घराटु (सं० पु०) घटि-उण् । १ गजघराटा, हाथीके गले-
का घराटा । २ प्रताप, उष्णता, गरमो, ताप ।

घराटेश्वर (सं० पु०) मङ्गल और शिवाके संभोगसे उत्पन्न
देवताविशेष । इन्होंने व्रण दान किया था । इनकी पूजा
करनेसे व्रणरोग आरोग्य होता है ।

घराटोटर (सं० पु०) घटीटर शब्दों ।

घण्ड (सं० पु०) घणिति शब्दं कुर्वन् उयते उड्डीयते घण-
डो-ड् । १ भ्रमर, भौरा । (त्रि०) हन्ति हन् सुम् निपा-
तने साधुः । २ मारक, हिंसा करनेवाला, मारनेवाला,
कत्ल करनेवाला । ३ मधुमक्षिका ।

घतर (द्वेष०) प्रभातकाल, तड़का ।

घतिया (हिं० वि०) घात करनेवाला, धोखा देनेवाला ।

घतियाना (हिं० क्ति०) १ अपनी घात या टाँवमें लाना ।
२ चुराना, छिपाना ।

घन (सं० पु०) हन् अप-घनादेशश्च । सूक्तो घनः । पा ३।३।०० ।
१ मेघ । "माकुरे घनगन्नाशसमीपोपगतान् घनान् ।" (भारत १।१२।२४)

२ सुस्तक, सुधा । ३ समूह । ४ टाड्य । ५ विस्तार
लोहसुन्दर । (नोहिनी)

"प्रतिजघान घनं रिव सुष्टिभिः ।" (भारवि १।८।१)

६ शरीर । ७ कफ । ८ अभ्रक, अवरक । (त्रि०) ९
निविड़, निरंतर ।

"तदलक्ष्यपदं हृदि शोकघने प्रतिघातमिवातिकमस्य गुरोः ।"

(रघु ८।२१)

१० टट्ट । "यच्चकार विवरं शिलाघने ।" (रघु १।१।१८)

११ पूर्ण ।

"किं विशयपूर्वं ते वेदाम जनघारा घने घनैः ।" (भारत १।१६।२८)

१२ सम्पूट । (शब्द०) १३ करतालादि कांस्यवाद्य ।

१४ मध्यम नृत्य । (नदिनी) १५ लोहा । १६ त्वच ।

(राजनि०) १७ मोटा, स्थूल । १८ अविरत, अविच्छिन्न ।

(पु०) १९ वेदपाठविशेष ।

"कटासुक्तां विपर्यस्य घनमाहमं नोदिषः ।"

(ऋक् शब्दमें दिसात विवरण द्रष्टव्य) २० नागरसुस्तक,

नागरमोथा । २१ बड़, मीसा । २२ गुड़ । २३ गणित-

विशेष, समान तीन अंकका धातु अर्थात् गुणा करके
गुणफलको पुनः उससे गुण करनेसे जो संख्या

होती है, उसे भी राशिका घन कहते हैं । जैसे
३ का घन करना है, तो ३ की ३ में गुणा करने पर
फल हुआ ९ । इस गुणफलको पुनः ३ से गुणा करनेसे
फल हुआ २७ ; इस लिए तीनको घन राशि मत्ताईम
हुई । दो या इससे अधिक संख्याका घन करनेका मन्त्र
नियम लीलावतीमें लिखा हुआ है ।

सिर्फ एक राशिका घन करना ही तो, उस राशिका
उसीसे गुणा करके गुणफलको पुनः उसी राशिसे गुणा
करनेसे जो संख्या होगी, वह ही उस राशिका घन है ।
दो या उससे अधिक राशिका घन निकालनेका यही
नियम है ।

१म नियम—जिन दो राशिका घन करना होगा,
उसकी दाहिनी ओरकी राशिकी अन्त्य और बाईं ओरकी
राशिकी आदि कहते हैं । पहिले अन्त्य अंकका घन बैठाना
होगा । उसके बाद अन्त्यके वर्गको ३ और आदिके द्वारा
गुणा करके पहिले बैठाने हुए अंकके नीचे एक स्थान
छोड़ कर बैठाना होगा और आदिके वर्गको ३ और
अन्त्यसे गुणा करके दूसरी पंक्तिके नीचे एक स्थान छोड़
कर शुरु घन करना चाहिए । बादमें आदिके घनकी
तीसरी पंक्तिके नीचे एक स्थान छोड़ कर लिखो और
फिर उसका जोड़, लगाओ । यह योगफल ही उन दो
राशियोंका घन होगा । इसकी बाईं तरफ और भी राशि
रहने पर जिन दो राशिका घन किया गया है, उसकी
अन्त्य और उससे पहिलेकी एक राशिकी आदि कल्पना
करके पूर्व नियमसे प्रक्रिया करने चाहिये । तीसरे
अंककी आदि कल्पना करके प्रक्रिया करना चाहें तो
ऊपरको पंक्तिके दो अंकको छोड़ कर उसके नीचे
दूसरी पंक्तिको स्थापना करने चाहिये । इस प्रकारसे
तत्परवर्ती राशि होने पर उनकी भी प्रक्रिया करने
चाहिये ।

उदाहरण—२७ और १२५, इसका घन निश्चित
करी ।

प्रक्रिया—२७, इन दो राशिका घन करना ही तो
७की अन्त्य समझना चाहिये और २ की आदि समझना
चाहिये । ७के घन ३४३की एक पंक्तिमें स्थापन करो ।
अन्त्यवर्ग ४९ (को) आदि २×३से गुणा करनेसे २९४

फल हुआ, इसकी पहिली पत्तिके नीचे एक स्थान छोड़ कर रखो और आदि २के वर्ग ४को अन्वय ७×३से गुणा करने पर ८४ फन हुआ, इसकी द्वितीय पत्तिके नीचे एक स्थान छोड़ कर रखो। फिर आदिके घन ८को एक स्थान छोड़ कर रखो, फिर उसका जोड़ देनेसे १८६८३ फन होगा। इस लिए २७ की घन राशि १८६८३ हुई। दो राशिको घन प्रक्रिया चार प क्रियाओंमें होती है। उसकी प्रणाली निम्न प्रकार समझनी चाहिये—

$$२७^३ = १६६८३।$$

३४३

२८४

८४

८

१६६८३

प्रक्रिया—पहिली प्रक्रियाके अनुसार ५ अन्वय और दो आदि कल्पना करके प्रक्रिया करनेसे २५, घन होगा १५६२५। फिर २५को अन्वय और २१की आदि कल्पना करके प्रक्रिया करनी चाहिये। अन्वय २५के वर्ग १५६२५ को एक प त्तिमें रखो। अन्वयके वर्ग ६२५को आदि १×३ द्वारा गुणा करनेसे फल १८७५ होता है, इसको पहिली प त्तिके दो स्थान छोड़ कर रख दो। आदिके वर्ग १को २५×३ द्वारा गुणा करने पर फल ७५ होगा, इसको दूसरी प त्तिके नीचे दो स्थान छोड़ कर रखो फिर १के १को तीसरी प त्तिके नीचे दो स्थान छोड़ कर रखो और जोड़ लगाओ। इसका फल १६५३१२५ होगा। अत १२५का घन १६५३१२५ हुआ। प त्ति रखनेकी प्रणाली इस प्रकार है—

$$१२५^३ = १६५३१२५।$$

१५६२५

१८७५

७५

१

१६५३१२५

इस नियमसे आदि अहमसे प्रक्रिया शुरू करनेसे भी काम चल सकता है।

२रा नियम—जिस राशिका घन करना होगा, इच्छानुसार उसके दो टकड़े कर दोनों खण्डके घातको उस हों राशिसे पूरण करने पर जो कुछ होगा, उसकी ३ द्वारा गुणा करके रखो, प्रत्यक् रूपसे दोनों खण्डोंका घन करके उसके योगफलकी पूर्वस्थापित राशिके साथ योग करनेसे जो होगा वह ही उक्त राशिका घन है। ऐसे जगह राशिको जिन दो खण्डोंमें विभक्त करनेसे प्रक्रिया सहजमें हुई उसी तरह खण्डमें विभक्त करना चाहिये।

उदाहरण—६ और २७ इन दो राशिका घन नियम करो।

१ प्रक्रिया—६ की ५ और ४ ऐसे दो खण्डोंमें विभक्त करो। दोनोंके घात २०से ६को पूरण करो, फिर उसकी ३से गुणा करनेसे फल ५४० होगा। दोनों खण्डोंका घन ६४ और १२५का योगफल १८६को पूर्वस्थापित ५४०के साथ जाड़ देनेसे फल ७२८ हुआ। इस प्रकार २५ नियम के अनुसार ६का घन ७२६ हुआ।

२ प्रक्रिया—२७को २० और ७ इन दो खण्डोंमें विभक्त करो। दोनोंका घात १४० हुआ, इससे २७को पूरण करो, फिर उसे ३से गुणा करनेसे ११३४० उपलब्ध होगी। दोनोंका घन ८००० और ३४३का जोड़ हुआ— ८३४३। इसको पहिली रखी हुई राशिके साथ जोड़ देनेसे १६६८७ होगा। इस तरह २७का घन १६६८७ होता है।

३य नियम—जिस राशिका घन करना होगा वह राशि अगर वर्ग राशि हो तो वर्गमूलकी प्रक्रियाके अनुसार उसका मूल निकालना होगा। उस मूलका घन, उसके वर्गहीको वगाराशिका घन समझना चाहिये।

उदाहरण—४ और ११का घन कितना होता है ?

प्रक्रिया—४का वर्गमूल २ है, २का घन ८ और ८ का वर्ग ६४ होता है। इस लिए तीसरे नियमके अनुसार ४का घन ६४ हुआ। ११का वर्गमूल ४ है, ४का घन ६४ है, और ६४का वर्ग ४०८६ है। अत तीसरे नियमके अनुसार ११का घन ४०६६ होता है।

घनकफ (म० पु०) घनस्य मघस्य कफ इव, ६ तत् । करका, शोला, वर्षाका पत्थर ।

घनकाल (सं० पु०) घनस्थ कालः, इतत् । वर्षा ऋतु, वर्षा सीमिन् ।
 घनकीदण्ड (सं० पु०) इन्द्रधनुष, मदाइन ।
 घनक्षेत्र (सं० स्त्री०) जिम क्षेत्रकी लखाई, चौड़ाई तथा ज चाई समान रहे उसे घनक्षेत्र बोलते हैं ।
 घनगरज (हिं० स्त्री०) १ बादलके गरजनेकी ध्वनि । २ आषाढ या वर्षारम्भमें उत्पन्न होनेवाली एक तरहकी खुसी । ऐसा कहा जाता है कि बादलके गरजने पर इसकी बीज जमीन फोड़ गाँठके रूपमें निकल पड़ते हैं । इसकी तरकारी बनाई जाती है । ३ एक तरहकी तोप ।
 घनगोलक (सं० पु०) घनेन मूर्त्या गोल-इव कायति कै- ३ । स्थित स्वर्ण पीप्य, सोना और चाँदीका मिला हुआ द्रव्य ।
 घनघन— अतिशय निरन्तर, परस्पर मिलान, जिसके बीचमें फाँक न हो ।
 घनघनाना (हिं० क्ति०) घनघन शब्द होना, घंटेके जैसा शब्द निकलना ।
 घनघनाहट (हिं० स्त्री०) घन घन शब्द निकलनेकी आवाज ।
 घनघोर (हिं० पु०) १ घनघनाहट, भीषण ध्वनि, भारी आवाज । २ बादलकी गरज । (वि०) ३ बहुत घना, गहरा । ४ जिमका दर्शन और अवगण भयानक हो, जिसे देख और सुन हृदय दहल जाय, भीषण, भयावना ।
 घनचक्र (हिं० पु०) १ चञ्चल बुद्धिका मनुष्य, वह मनुष्य जिमकी बुद्धि सदा चञ्चल रहे । २ मूर्ख, बेवकूफ, मूढ़ । ३ वह मनुष्य जो निष्प्रयोजन इधर उधर भ्रमण करता हो, निठला, आवारागर्द । ४ एक तरहकी आतशबाजी, चकरी, चरखी । ५ सूर्य सुखीका पुष्प । ६ गर्दिश, चक्र । ७ फेरफार, जञ्जाल ।
 घनचतुष्कोण (सं० पु०) लम्बाई, चौड़ाई, तथा ज चाई चतुष्कोणका नाम घनचतुष्कोण है ।
 घनचन्द्रनादि (सं० पु०) वातपित्तज्वरका काथ (काढ़ा) । शीथा, रक्तचन्दन, पपड़ी, कटकी, वेणाका मूल, परवल

लता, वाला, प्रत्येकको १४ रत्तो ले कर आधमेर जलमें उन्हे उबाने जब जल आधा पाव बच जाय तो उसे उतार ४ मापा चीनी डाल दें । इसे छान कर पेनिसे वातपित्त-ज्वरनाश हो जाता है ।

घनच्छट (सं० पु०) घना निविडाम्छटा यस्य, बहुव्री० । १ शिग्रु, महिजनका दरन्त । २ तालीशपत्र ।
 घनजम्बाल (सं० पु०) घनश्यामी जम्बालश्चेति, कर्मधा० । चुल्क, गण्डप, मुख भवने लायक पानो, चुम् ।
 घनज्वाल (सं० स्त्री०) घनस्य ज्वालेव । १ वज्राग्नि, विजलीकी तड़क । २ मेघकी दीप्ति, मेघही चमक दमक ।
 घनता (सं० स्त्री०) घनस्य भावः घन-तल्-टाप् । घना होनेका भाव, ठोसपन, घनापन ।
 घनताल (सं० पु०) घनतायां निविडतायां श्रुति पर्याप्नोति अल्-अच् । १ सारङ्ग पत्नी, चातक चिड़िया, पपीहा । (पु०) घनश्यासी तालश्चेति, कर्मधा० । वाद्यादिका तालविशेष, करताल । गान देवो ।
 घनतिमिर (सं० पु०) गहरा अन्धकार ।
 घनतोय (सं० पु०) ऋद्विशेष, कोई भील ।
 घनतोल (सं० पु०) घनं मेधं तोलयति उर्ध्वं नयति आघ्ना- नेन घन-तुल् अण्, उपपदम० । चातकपत्नी, पपीहा ।
 घनत्व (सं० स्त्री०) घनस्य भावः घन-त्व । १ घनता, घनापन, घना होनेका भाव । २ लम्बाई, चौड़ाई, और मोटाई तीनोंका भाव ।
 घनत्वच् (सं० पु०) घना निविडा त्वक् यस्य, बहुव्री० । शिग्रु, महिजनका पेड़ ।
 घनद्रुम (सं० पु०) घनश्यासी द्रुमश्चेति, कर्मधा० । विकण्टकावृक्ष, जवामा ।
 घनघातु (सं० पु०) घनश्यासी घातुश्चेति, कर्मधा० । चर्वी, मेद ।
 घनध्वनि (सं० पु०) मुस्तक, मोथा ।
 घननाद (सं० पु०) १ बादलोंकी गरज । २ रावणका पुत्र मेघनाद ।

